

प्राकृत ग्रन्थ परिषद् ग्रन्थाङ्क १

पुव्वायरियविरइथा अंगविज्जा

[मणुस्सविविहचेट्ठाइणिरिक्खणदारेण भविस्साइफलणाणविण्णाणरूवा]

परिसिट्ठाइविभूसिया



संशोधकः सम्पादकश्च

मुनिपुण्यविजयः

[जिनागमरहस्यवेदि-जैनाचार्यश्रीमद्विजयानन्दसूरिवर (प्रसिद्धनाम-श्रीआत्मारामजीमहाराज)
शिष्यरत्न-प्राचीनजैनभाण्डागारेद्वारक-प्रवर्तकश्रीकान्तिविजयान्तेवासिनां श्रीजैन-
आत्मानन्दग्रन्थमालासम्पादकानां मुनिप्रवरश्रीचतुरविजयानां विनेयः]

प्रकाशिका

प्राकृत ग्रन्थ परिषद्

अहमदाबाद-१

वीरसंवत् २५२६

विक्रमसंवत् २०५६

ईस्वीसन् २०००

Prakrit Text Society Series No. 1

AṆGAVIJJĀ

(Science of Divination through Physical Signs & Symbols)

EDITED BY

Muni Shri PUNYAVIJAYAJI

: GENERAL EDITORS :

D. D. MALVANIA

H. C. BHAYANI

PRAKRIT TEXT SOCIETY

AHMEDABAD-9

2000

प्रकाशक:—

हरिवल्लभ भायाणी : अध्यक्ष : प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी
C/o एल. डी. इन्स्टिट्यूट ओफ इन्डोलोजी,
अमदाबाद—३८० ००९.

प्रथमावृत्ति : १९५७

द्वितीय पुनर्मुद्रण : २००० ई.

प्रति : ५००

© सर्वाधिकार स्वाधीन

पुनः प्रकाशन—प्रेरणा :

आचार्य श्री विजयशीलचन्द्रसूरि:

प्राप्तिस्थान : १. प्रा. टे. सो. कार्यालय
C/o एल. डी. इन्स्टिट्यूट ओफ इन्डोलोजी
गुजरात युनिवर्सिटी परिसर,
अमदाबाद—३८० ००९.

२. सरस्वती पुस्तक भण्डार
श्री अश्विनभाई बी. शाह
११२, रतनपोल, हाथीखाना,
अमदाबाद—३८० ००९
फोन नं. : (०७९) ५३५ ६६ ९२

मूल्य : रु ३५०/—

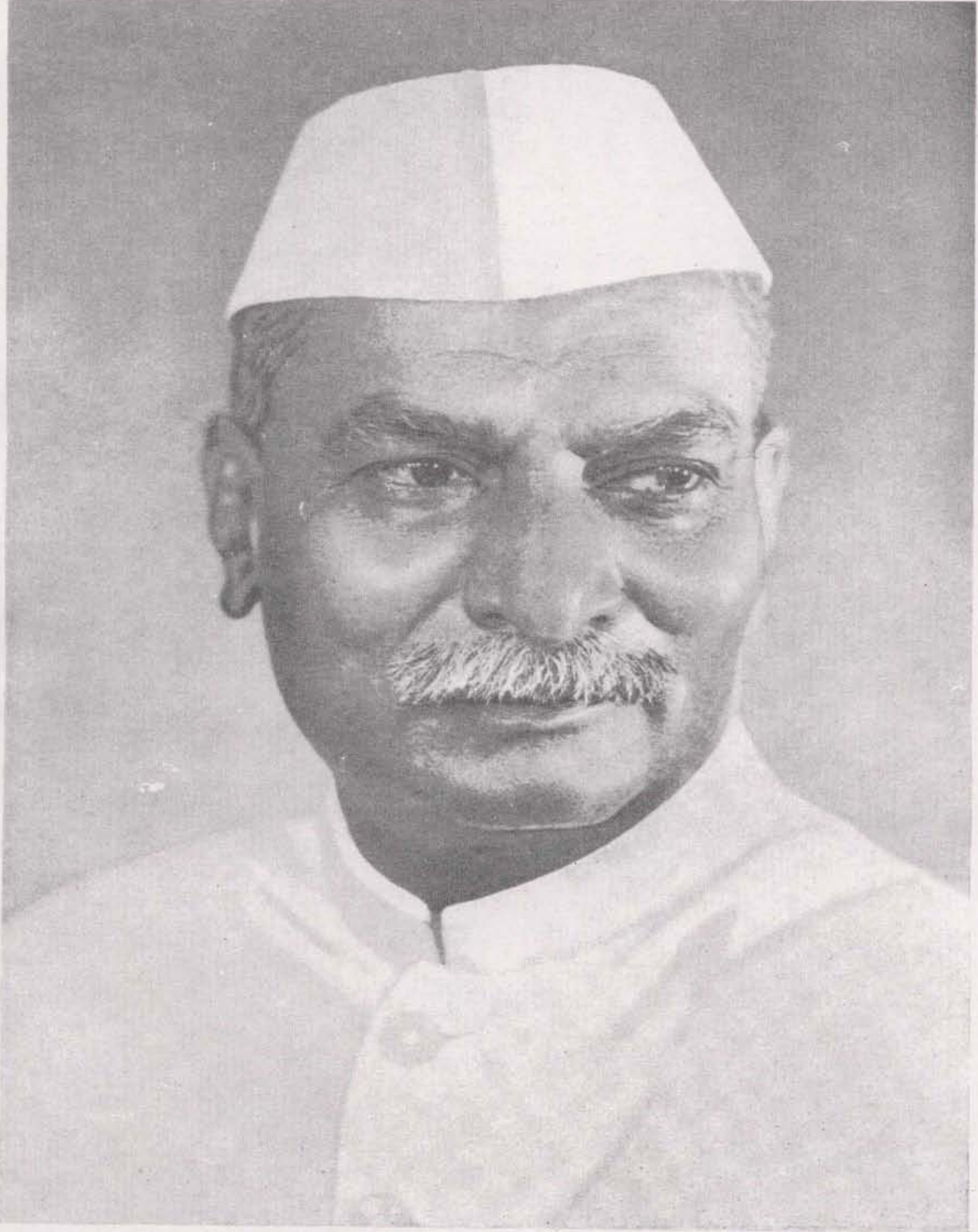
मुद्रक : मनन टाईप सेटर्स,

दिलीप आई. पटेल

घर नं. ८५६, तीसरी गली, नारणपुरा गाम,

अमदाबाद—३८० ०१३.

स्वतंत्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति



श्रीमान् डॉ. राजेन्द्रप्रसाद

स म र्प ण

जिस भूमि में भगवान् महावीर ने जन्म लेकर अहिंसा धर्म की स्थापना की,
जिस भूमि में भगवान् बुद्ध ने आकर बौद्ध धर्म का प्रचार किया,
उसी बिहार की पुण्यभूमि में जन्म लेने वाले
स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति
भारतीय वाङ्मय के उपासक

श्रीमान् डॉ. राजेन्द्रप्रसाद
के

करकमलोंमें

भारत की प्राचीन प्राकृत - मागधी भाषा का

“प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी”

द्वारा प्रकाशित यह प्रथम ग्रन्थ

अंगविज्जा

समर्पित है ।

मुनि पुण्यविजय

ग्रन्थानुक्रम

Foreword	vii
द्वितीयमुद्रणके अवसर पर : निवेदन	viii
मुनि पुण्यविजयजी का किञ्चित् परिचय — ले. लक्ष्मणभाई भोजक	ix-x
१. श्री पुण्यविजयजी के संपादित ग्रन्थों की सूचि	xi
२. Preface (प्राक्कथन)	xii-xiv
३. प्रस्तावना (मुनि श्री पुण्यविजयजी)	१-१४
४. विषयानुक्रम	१५-२८
५. Introduction (Dr. Moti Chandra)	२९-४५
६. अंगविज्जा (हिन्दी भूमिका—श्री वासुदेवशरण अग्रवाल)	४६-७८
७. हस्तलिखित प्रतियों के फोटोचित्र	७९-८०
८. अंगविज्जा पङ्कणयं—मूलग्रन्थ	१-२६९

परिशिष्टानि

प्रथम परिशिष्ट—सटीकम् अंगविद्याशास्त्रम्	२६९-२७८
द्वितीय परिशिष्ट—अंगविज्जा-शब्दकोष	२७९-३२२
तृतीय परिशिष्ट—अंगविज्जान्तर्गतप्राकृतधातुप्रयोगाणां संग्रहः	३२३-३३२
चतुर्थ परिशिष्ट—(१) अंगविज्जानवमाध्यायमध्यगतानामङ्गनाम्नां कोषः	३३३-३३५
(२) अंगविज्जानवमाध्यायप्रारम्भे निर्दिष्टानां २७० अङ्गविभाजकद्वाराणां संग्रहः	३३६-३३८
(३) अंगविज्जानवमाध्याये विभागशो निर्दिष्टानामङ्गनाम्नां यथाविभागं संग्रहः	३३८-३४५
पञ्चमपरिशिष्ट—अंगविज्जामध्यगतानां विशिष्टवस्तुनाम्नां विभागशः संग्रहः	३४६-३६५

FOREWORD

The *Am̐gavijjā-paiṇṇaya* (Sk. *Am̐gavidyā-prakīrṇaka*) is a unique work of its own kind preserved only in the Śvetāmbara Jain Āgamic tradition. It is a science of divination from bodily signs, conditions, gestures etc. But incidentally it presents hundreds of classified lists of realia pertaining to the socio-cultural life of India of the period upto (and several centuries prior to) the fourth century. The data that thus becomes available is encyclopaedic in its range as is shown by the various word indexes given in the book, covering ninety large-sized pages. The work is also a mine of lexicographical data. The list of contents and the scholarly introduction of the late doctors Vasudevsharan Agrawal and Moti Chandra gives an adequate idea of the subject matter and cultural significance.

It is to the credit of Late Muni Punjyavijayaji who, in the midst of his numerous activities and untiring work, prepared a critical edition of this difficult Prakrit text, and gave to the Prakrit Text Society and its secretary Pt. Dalsukh Malvania for starting publication of the books under Prakrit Text Society Series. It is very unfortunate that no full-length studies of the various aspects of this work of unparallel importance have appeared even though some fifty years have lapsed after its publication.

The work was out of print for several years. We are grateful to Acharya VijayaShilchandrasuriji, who as an active well-wisher of the Society arranged for this reprint.

H. C. Bhayani
President,
Prakrit Text Society.

द्वितीय मुद्रणके अवसर पर : प्रकाशकीय निवेदन

स्वतंत्र भारतके प्रथम राष्ट्रपति महामहिम डॉ. राजेन्द्रप्रसाद महोदयके प्रोत्साहक पथदर्शन में, ई. १९५३ के वर्षमें कार्यरत 'प्राकृत ग्रन्थ परिषद्' (PTS) नामक संस्थान के ४८ वें वर्षमें पदार्पण के सुअवसर पर, इसी संस्थान द्वारा प्रकाशित प्रथम महाग्रन्थ 'अंगविज्जा' का पुनः प्रकाशन करते हुए मैं आनन्द अनुभव कर रहा हूँ ।

दिवंगत आगमप्रभाकर मुनि श्री पुण्यविजयजीने सख्त परिश्रम उठाकर इस ग्रन्थका संशोधन व सम्पादन किया और इसकी प्रथम आवृत्ति ई. १९५७ में PTS. द्वारा प्रकाशित की गई । पिछले कई सालोंसे उक्त आवृत्ति अलभ्य हो चुकी थी, और उसका पुनः प्रकाशन अपेक्षित था ।

संस्थाके सौभाग्य से, आचार्य श्री विजयशीलचन्द्रसूरिजी का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ, और इस ग्रन्थ के पुनः प्रकाशन के लिए उन्होंने 'पूर्व-ग्राहक योजना' का आयोजन किया । इस योजना में भाग लेनेवाले दाताओं का मैं अभिवादन करता हूँ ।

पहले सोचा था कि आधुनिक फोटो-इरोक्स-पद्धतिसे ग्रन्थ का पुनर्मुद्रण बहुत आसानीसे हो सकेगा । परंतु तदर्थ किया गया प्रयत्न असफल रहा । अतः पुनः टाइप-सेटिंग (कम्पोज) करना ही शेष रहा । फिर वह कार्य बहुत कष्टदायक व श्रमसाध्य था । किंतु मुझे आनन्द है कि मनन टाइप सेटर्स के श्री दिलीपभाई पटेलने यह मुश्किल कार्यको हाथ में ले लिया, और बहुत अच्छे ढंगसे मुद्रणका कार्य कर दिखाया है । एतदर्थ उन्हें शतशः धन्यवाद ।

पूफवाचन के कार्य में मुनि श्री धर्मकीर्तिविजयजी तथा मुनि श्रीकल्याणकीर्तिविजयजीका भी काफी योगदान रहा है; मैं उनका आभारी हूँ ।

यह मुद्रणव्यवस्थामें अश्विन शाह के सहयोग के लिए आभारी हूँ ।

मुझे उम्मीद है कि इसी प्रकार से PTS. के अन्य अलभ्य प्रकाशनों भी पुनः प्रकाशनाधीन बनेंगे ।

PTS. की भूमिका, कार्यक्षेत्र एवं प्रारंभ — इत्यादिकी जानकारी प्रथम आवृत्तिके प्रधान सम्पादकों के निवेदन PREFACE द्वारा प्राप्त हो सकेगी ।

अंत में, आज जब प्राकृत भाषा एवं साहित्यको एक उपेक्षित चीज मानी-मनायी जाने की व्यापक साजिश पैदा हो रही है, ऐसे समय में PTS. जैसी संस्था की खूब खूब व शीघ्र उन्नति हो और उसके माध्यम से प्राकृत भाषा एवं साहित्य का खूब प्रचार-प्रसार हो, ऐसी शुभकामना के साथ ।

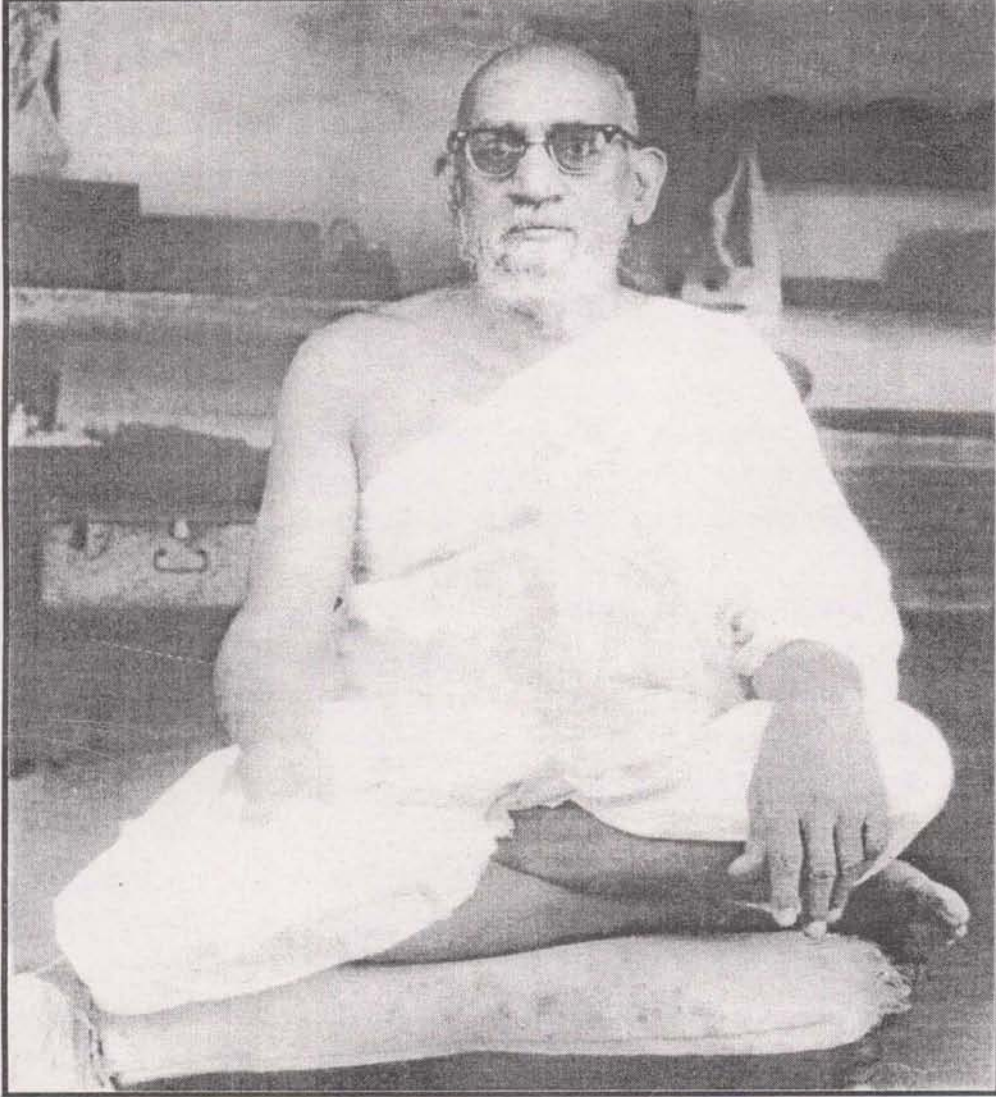
दि. १-१-२०००

— हरिवल्लभ भायाणी

अध्यक्ष

प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी

अमदाबाद



आगमप्रभाकर श्रुतशीलवारिधि मुनिराजश्री पुण्यविजयजी
जन्मशताब्दी ई. स. १८९७ – १९९७

पूज्यपाद आगमप्रभाकर मुनिराजश्री पुण्यविजयजी महाराजजी का संक्षिप्त परिचय

स्वनामधन्य पूज्य मुनिश्री पुण्यविजयजी महाराज का जन्म गुजरात के कपडवंज गाँव में विक्रम संवत् १९५२ कार्तिक शुक्ला पंचमी (ज्ञानपञ्चमी) के शुभ दिन हुआ था। उनकी माता का नाम माणिकबेन और पिता का नाम डाह्याभाई दोशी था। उनका संसारी नाम मणिलाल था। उन्होंने विक्रम संवत् १९६५ में महामास के कृष्ण पक्ष की पञ्चमी के शुभ दिन पू. मुनिराजश्री चतुरविजयजी महाराज के पास गुजरात में छाणी गाँव में प्रव्रज्या ग्रहण की और उन्हें पुण्यविजयजी नाम प्रदान किया गया। उनका कालधर्म विक्रम संवत् २०२७ ज्येष्ठमास कृष्ण पक्ष षष्ठी के दिन बम्बई में हुआ।

दादागुरु पूज्य प्रवर्तक मुनि श्री कान्तिविजयजी महाराज से प्रकरण-ग्रन्थों का, पण्डित श्री भाइलालभाई से संस्कृत मार्गोपदेशिका का, पण्डित नित्यानन्दजी से सिद्धहैम-लघुवृत्ति, हैमलघुप्रक्रिया इत्यादि का और जैन दर्शन सहित सर्व भारतीय दर्शनों के प्रखर विद्वान् पंडितवर्य श्री सुखलालजी संघवी से अध्ययन किया। उन्होंने संशोधनकार्य की शिक्षा पूज्य गुरुदेव मुनिश्री चतुरविजयजी के साथ कार्य करते हुए प्राप्त की। उन्होंने ग्रन्थ-भण्डारों के संरक्षण और ग्रन्थ-संशोधन में अपना समग्र जीवन व्यतीत किया। वे संशोधन-कार्य में इतने अत्यन्त परिश्रमी थे कि जिसके लिये यह एक ही दृष्टांत काफी है कि जब उन्हें प्रोस्टेट ग्लैंड के ओपरेशन के लिए बम्बई में अस्पताल ले जाने की परिस्थिति पैदा हुई, तब भी उन्होंने मुझे आवश्यक निर्युक्ति-चूर्ण की प्रेसकापी साथ लेने की सूचना दी थी।

जैन ज्ञानभण्डारों के उद्धार और आगमसंशोधन के कार्यों में उन्होंने जो परिश्रम किया है, उससे विद्वज्जगत् सुपरिचित है। मुझे उनके साथ रहने का सु-अवसर अतिदीर्घ काल पर्यंत (ई. १९५७ से १९७१ तक) मिला है। वे स्वाध्याय में अप्रमत्त थे। मैंने कदापि उन्हें दिन में विश्राम लेते नहीं देखा। वे किसी भी विद्वान् को स्वाध्याय-सामग्री शीघ्र ही लभ्य कराते थे और संशोधनकार्य में तो वे स्वयं ही अत्यन्त परिश्रम करते थे।

लालभाई दलपतभाई विद्यामन्दिर, अमदावाद के लिए हस्तलिखित ग्रन्थ संगृहीत करने का कार्य चल रहा था, तब यतिश्रीयों, महात्माओं, पण्डितों और व्यापारियों द्वारा लाए हुए हर एक ग्रन्थ को वे पूर्णतया दृष्टिसे सोचकर, पूरी परीक्षा कर और शारीरिक श्रम की परवाह किये बिना स्वयं निर्णय करते थे।

किसी भण्डार में ग्रन्थ बिखर गये हों, तब उनके भिन्न-भिन्न पत्रों को पढ़कर वे उनको व्यवस्थित करते थे। ऐसे कार्य यथाशीघ्र सम्पन्न करने पड़ते थे। फिर भी वे कभी आक्लान्त नहीं होते, बल्कि बहुत आनन्दपूर्वक करते थे।

आगम-प्रकाशन हेतु प्राचीन संशोधित और शुद्ध प्रति की खोज में वे ग्रन्थभण्डारों की तलाश करते रहते थे। जब कभी भी उन्हें अच्छी-शुद्ध प्रति मिली, तो उन्होंने तुरंत प्रतिलिपि करवाई थी। इस तरह उन्होंने लाखों श्लोकों की प्रतिलिपि करवाई है और पाठान्तर एकत्रित किये हैं। मुद्रित ग्रन्थों में से पाठान्तर अंकित करना, भ्रष्ट पाठ की शुद्ध करना इत्यादि निरन्तर चलता ही रहता था। यही कारण है कि उनके पास मुद्रित-संशोधित ग्रन्थों का भी एक सङ्ग्रह बन गया।

पूज्य मुनिजीने ग्रन्थों पर लगी रज की सफाई से लेकर पोथी बांधने तक के सभी कार्य स्वयं किये हैं। जेसलमेर किले के भण्डार के ताडपत्रीय ग्रन्थों को बहुत लोगों ने अस्तव्यस्त कर दिया था, जिन्हें पुनः मुनिश्रीने व्यवस्थित किये।

सूचीकरण में ग्रन्थ का नाम, कर्ता, रचनाकाल, लेखनकाल, भाषा, पत्रसंख्या, श्लोकसंख्या के अलावा, पत्रक्रमानुसार प्रतियोंको संपूर्ण व्यवस्थित करना, अच्छे कागज से आवृत करना, नाम-नम्बर लिखकर लकड़ी के बक्से में रखना, कपाट बनवाना, कपाट में पुस्तक रखवाना, इत्यादि सब कार्य समाविष्ट होते हैं। यह सब कार्य वे स्वयं करते व करवाते थे।

कभी कोई ज्ञानभण्डार के ट्रस्टी पुस्तक देने में विलम्ब करे या बारबार समय दे कर भी न देवे, तो भी वे व्याकुलता महसूस नहीं करते थे। कई बार वे मुझे कहते थे, “इनके पूर्वजों ने यह सामग्री कितने परिश्रम से संभालकर रखी है, उनका यह गुण हम नजरअंदाज नहीं कर सकते।”

वे आगामी काल में भी ग्रन्थोंकी परम्परा अविच्छिन्न रहे इसके लिए भी यत्नशील थे । लेखकारों से काश्मीरी देशी कागज पर ग्रन्थों को लिखाकर उनकी क्षतियों भी वे स्वयं ही सुधारते थे । बृहत्कल्पसूत्र निर्युक्ति, लघुभाष्य, सटीक — पत्रसंख्या १७६७, उद्देशक १ से ६ ग्रंथाग्र ४२६०० (प्रकाशक—आत्मानंद जैन सभा भाग १ से ६) — यह प्रति पूज्यश्रीने स्वयं कलम लेकर हरताल (Yellow-arsenic) से शुद्ध की है और अद्यापि लालभाई दलपतभाई विद्यामन्दिर अमदावाद के हस्तप्रत विभाग में (भेंटसूचि क्र. १०४९ से १०५६) सुरक्षित है ।

हस्तलिखित पुस्तकों के रक्षण के लिए साग की लकड़ी के डिब्बों में रखने की परम्परा बहुत पुरानी है, परन्तु मुनिश्रीने सर्वप्रथम बार उन डिब्बों को Air-tight बनाने की परिकल्पना की । फलतः लकड़ी के डिब्बों में रज के प्रवेश की शक्यता बहुत ही कम हो जाती है और ग्रन्थों को कपड़े से नहीं बांधने पर भी हवा—धूल आदि से रक्षण मिलता है ।

जैसलमेर में किया गया ज्ञानभण्डार का कार्य तो बहुत ही कष्टप्रद था । अत्यन्त ठंडी, अत्यन्त गर्मी और रणप्रदेशकी सतत आंधियाँ और ऐसे में अस्तव्यस्त हुए ताडपत्रों को व्यवस्थित मिलाने के लिए कमरे की खिड़कियाँ और दरवाजे बन्द कर के कार्य करने में हम सब जो परेशानी महसूस करते थे, उसका अंश भी पूज्यश्रीमें दिखता नहीं था, बल्कि वे तो पूरे दिन उत्साह से कार्य करते थे । यही उनके समत्व का प्रमाण है ।

वडोदरा में श्री आत्मानन्द जैन ज्ञानमन्दिर में पूज्यपाद मुनिश्री हंसविजयजी शास्त्रसङ्ग्रह में एक सुवर्णाक्षरीय सचित्र कल्पसूत्र की जौनपुर (प्रायः १६वीं शताब्दी)में लिखी गई प्रति जीर्ण हो जाने से बम्बई भेजी गई थी, जो सुधारकर अमदावाद पूज्यश्रीको लुणसावाडा उपाश्रयमें पहुँचाई गई । यह प्रति पूज्यश्री के पास ही थी । उसे बम्बई जाते समय वडोदरा श्री संघ को वापस दे दी । उस समय ज्ञानभण्डार के ट्रस्टी महाशयों और संघ के अग्रणियों को वे एक-एक पत्र स्पष्ट दिखाते थे । उस समय मेरे मनमें विचार आया कि इसकी यहाँ कौन संभाल लेगा ? वे मेरे इस विचारको समझ गये और तुरन्त मेरे सामने देखा और पूछा कि क्या सोच रहे हो यह पोथी कौन संभालेगा ? क्या ५०० वर्ष तक तुमने संभाली थी ? श्रीसंघ के पुण्य से इसकी संभाल लेनेवाले मिल जाएँगे । प्रति ट्रस्टी महोदयों को सौंप दी गई । मैंने सुना है कि आज भी वह बेन्क के लोकर में सुरक्षित है ।

‘भारतीय जैन श्रमणसंस्कृति और लेखनकला’ (Gujarati)—नामक पुस्तक लिखकर पूज्यश्रीने हस्तप्रत भण्डार, उनकी लेखनपद्धति और संरक्षण पद्धतिकी जानकारी समाज के आगे रखी । गलित पाठदर्शक चिह्न आदि १६ प्रकार के प्राचीन हस्तप्रतों में प्राप्त चिह्नों का परिचय दिया । गण्डी, कच्छपी, मुष्टि, संपुटफलक और छीवाडी पुस्तकों का परिचय कराया । कागज की पोथियों के सूड, त्रिपाठ, पंचपाठ, हुंडी, जिब्बा, रिक्तलिपिचित्र, चौरअङ्क इत्यादि की समजूती दी । पुस्तकलेखन के उपकरण ओळियुं, फांटियुं, कांठां, बरू, वतरणां, जुजवळ, प्राकार, कम्बिका और पुस्तक—संरक्षण के उपकरण ग्रन्थिका, पाठाँ, चाबखी, झलमल, वींटामणुं, कवळी इत्यादि विस्मृत हुए शब्दों के अर्थ प्रकाश में लाए ।

महावीर जैन विद्यालय की जगविख्यात जैन आगम ग्रन्थमाला तथा प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी की विद्वन्मान्य ग्रन्थश्रेणियों के मुख्य सूत्रधार भी वे ही थे । इसके उपरान्त, एल. डी. इन्स्टीट्यूट, अमदावादकी सुप्रसिद्ध ग्रन्थावली में भी उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । इस तरह पूरे ६२ वर्ष तक ज्ञानसाधना करते करते उन्होंने वि.सं. २०२७ के ज्येष्ठ मास की कृष्ण षष्ठी के दिन बम्बईमें अंतिम सांस लिये ।

वि.सं. २०५३ उनकी जन्मशताब्दी का वर्ष था । इस सु-अवसर की स्मृति में प्राकृत ग्रन्थ परिषद् की ग्रन्थश्रेणि के प्रथम पुष्प—‘अङ्गविज्जा’ (पूज्यश्री द्वारा सम्पादित ग्रन्थ) का पुनर्मुद्रण करके प्राकृत टेक्स्ट सोसायटी के कार्यवाहकों ने पूज्यश्री को समुचित अञ्जलि दी है ।

पूज्यश्री के सतत सहवास से मुझमें अविरत कार्य करने की वृत्ति उत्पन्न हुई, जिससे आज पर्यन्त (८३ वर्ष की उम्र में भी) मैं कार्यरत हूँ । मैं यहाँ उनका पवित्र स्मरण कर उनके चरणोंमें वन्दन करता हूँ ।

पूज्य मुनि श्री पुण्यविजयजी द्वारा सम्पादित ग्रन्थों की सूचि

	मुद्रणवर्ष		मुद्रणवर्ष
१. मुनि रामचन्द्रकृत कौमुदीमित्रानन्दनाटक	१९१७	२०. सोमेश्वरकृत उल्लाघराघवनाटक	१९६१
२. मुनि रामभद्रकृत प्रबुद्धरौहिणेय नाटक	१९१८	२१. Descriptive Catalogue of palm-leaf MSS. in the Shantinath Bhandar	१९६१-१९६६
३. श्रीमन्मेषप्रभाचार्यविरचित धर्माभ्युदय (छाया नाटक)	१९१८	२२. Catalogue of Sanskrit and Prakrit MSS. of L. D. Institute of Indology, Parts I-IV	१९६३, १९६५, १९६८, १९७२
*४. गुरुतत्त्वविनिश्चय	१९२५	२३. (श्रीनेमिचन्द्राचार्यकृत) आख्यानकमणिकोश, आप्रदेवसूरिकृत वृत्ति सहित	१९६२
५. (उपाध्याय श्री यशोविजयकृत) ऐन्द्रस्तुतिचतुर्विंशतिका	१९२८	×२४. (श्री हरिभद्रसूरिकृत) योगशतक स्वोपज्ञवृत्तियुक्त; तथा ब्राह्मसिद्धान्तसमुच्चय	१९६५
*६. (वाचक संघदासगणिविरचित) वसुदेव-हिण्डि	१९३०-३१	२५. (सोमेश्वरकृत) रामशतक	१९६६
*७. कर्मग्रन्थ (भाग १-२)	१९३४-४०	२६. नन्दीसूत्र-चूर्णिसहित	१९६६
*८. बृहत्कल्पसूत्र-निर्युक्तिभाष्यवृत्तियुक्त (भाग १-६)	१९३३-३८ तथा १९४२	२७. नन्दीसूत्र-विविध वृत्ति युक्त	१९६६
९. भारतीय जैन श्रमणसंस्कृति अने लेखनकला	१९३५	+२८. (आचार्य हेमचन्द्रकृत) निघण्टुशेष, श्री श्रीवल्लभगणिकृत टीका सहित	१९६८
१०. (पूज्य श्री जिनभद्रगणिकृताश्रमणविरचित) जीतकल्पसूत्र स्वोपज्ञभाष्य सहित	१९३८	+२९. नन्दिसुत्तं अणुओगद्वाराई	१९६८
११. (कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्यप्रणीत) सकलार्हत्स्तोत्र श्रीकनककुशलगणिविरचित वृत्तियुक्त	१९४२	३०. ज्ञानाञ्जलि (महाराजश्रीना दीक्षापर्यायषष्टिपूर्ति समारोह प्रसंगे प्रगट थयेल महाराजश्रीना लेखोनो तथा महाराजश्रीने अंजलि आपता लेखोनो संग्रह)	१९६९
१२. (श्री देवभद्रसूरिकृत) कथास्तोत्र	१९४४	+३१. पन्नवणासुत्त (प्रथम भाग)	१९६९
१३. (श्री उदयप्रभसूरिकृत) धर्माभ्युदयमहाकाव्य	१९४९	+३२. पन्नवणासुत्त (द्वितीय भाग)	१९७१
१४. (कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्यप्रणीत) त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र-महाकाव्य (पर्व २, ३, ४)	१९५०	३३. जेसलमेरज्ञानभाण्डारसूचिपत्र	१९७२
१५. जेसलमेरनी चित्रसमृद्धि	१९५१	३४. पत्तनज्ञानभाण्डारसूचिपत्र भाग-१	१९७३
१६. कल्पसूत्र-निर्युक्ति, चूर्णि, टिप्पण, गुर्जर अनुवाद सहित	१९५२	३५. दसकालीयसुत्त अगस्त्यसिंह चूर्णि सहित	१९७३
१७. अंगविज्जा	१९५७-२०००	३६. सूत्रकृतांग चूर्णि भाग-१	१९७३
१८. (सोमेश्वरकृत) कीर्तिकौमुदी तथा (अरिसिंहकृत) सुकृतसंकीर्तन	१९६१	३७. कवि रामचन्द्रकृत नाटकसंग्रह	
१९. सुकृतकीर्तिकल्लोलिन्यादि वस्तुपाल-प्रशस्तिसंग्रह	१९६१		

एतदुपरान्त, मुनिश्रीने अनेक आगमग्रन्थ व अन्य ग्रन्थों की पाण्डुलिपियाँ (Press copy) करवा रखी है और उनमें स्वयं पाठान्तर भी ले रखे हैं। उसी तरह, मुद्रित आगम व आगमेतर ग्रन्थों के पाठान्तर भी उन्होंने ले रखे हैं; इस प्रकार उन्होंने विपुल मुद्रणार्ह सामग्री विद्वानों के लिए उपलब्ध कर दी है।

* इस चिह्नानिर्दिष्ट ग्रन्थों का सम्पादन स्वर्गीय गुरुवर्य श्रीचतुरविजयजीके साथ किया है।

× इस चिह्नवाले ग्रन्थों का सम्पादन स्व. डॉ. भोगीलाल जे. सांडेसरा के साथ किया है।

+ इस चिह्नवाले ग्रन्थों का सम्पादन पं. दलसुखभाई मालवणिया तथा पं. अमृतलाल मो. भोजक के साथ किया है।

PREFACE

The current of Indian literature has flown into three main streams, viz, Sanskrit, Pāli and Prakrit. Each of them witnessed an enormous range of creative activity. Sanskrit texts ranging in date from the Vedic to the classical period and belonging to almost all branches of literature have now been edited and published for more than a century beginning with the magnificent edition of the R̥gveda by Prof. Max Müller. The Pāli literature devoted almost exclusively to the teaching and religion of the Buddha was even more lucky in that the Pāli Text Society of London planned and achieved its comprehensive publication in a systematic manner. Those editions of the Pāli Vinaya, Sutta and Abhidhamma Pitakas and their commentaries are well known all the world over.

The Prakrit literature presents an amazing phenomenon in the field of Indian literary activity. Prakrit as a dialect may have had its early beginnings about the seventh century B.C. From the time of Mahāvīra, the last Tīrthāṅkara who reorganised the Jaina religion and church in a most vital manner and infused new life into all its branches, we have certain evidence that he, like the Buddha, made use of the popular speech of his time as the medium of his religious activity. The original Jaina sacred literature or canon was in the Ardhamāgadhī form of Prakrit. It was compiled sometime later, but may be taken to have retained its pristine purity. The Prakrit language developed divergent local idioms of which some outstanding regional styles became in course of time the vehicle of varied literary activity. Amongst such Śaurasēnī, Mahārāṣṭrī and Pāisācī occupied a place of honour. Of these the Mahārāṣṭrī Prakrit was accepted as the standard medium of literary activity from about the first century A.D. until almost to our own times. During this long period of twenty centuries a vast body of religious and secular literature came into existence in the Prakrit languages. This literature comprises an extensive stock of ancient commentaries on the Jaina religious canon or the Āgamic literature on the one hand, and such creative works as poetry, drama, romance, stories as well as scientific treatises on Vyākaraṇa, Kośa, Chhanda etc. on the other hand. This literature is of vast magnitude and the number of works of deserving merit may be about a thousand. Fortunately this literature is of intrinsic value as a perennial source of Indian literary and cultural history. As yet it has been but indifferently tapped and is awaiting proper publication. It may also be mentioned that the Prakrit literature is of abiding interest for tracing the origin and development of almost all the New Indo-Aryan languages like Hindi, Gujarati, Marathi, Panjabi, Kashmiri, Sindhi, Bangali, Uriya, Assamese, Nepali etc. A national effort for the study of Prakrit languages in all aspects and in proper historical perspective is of vital importance for a full understanding of the inexhaustible linguistic heritage of modern India. About the eighth century the Prakrit languages developed a new style known as Apabhraṃśa which has furnished the missing links between the Modern and the Middle Indo-Aryan speeches. Luckily several hundred Apabhraṃśa texts have been recovered in recent years from the forgotten archives of the Jaina temples.

With a view to undertake the publication of this rich literature some coordinated efforts were needed in India. After the attainment of freedom, circumstances so moulded themselves rapidly as to lead to the foundation of a society under the name of the Prakrit Text Society, which was duly registered in 1953 with the following aims and objects :

- (1) To prepare and publish critical editions of Prakrit texts and commentaries and other works connected therewith.
- (2) To promote studies and Research in Prakrit languages and literature.
- (3) To promote Studies and Research of such languages as are associated with Prakrit.
- (4) (a) To set up institutions or centres for promoting Studies and Research in Indian History and Culture with special reference to ancient Prakrit texts.
(b) To set up Libraries and Museums for Prakrit manuscripts, paintings, coins, archaeological finds and other material of historical and cultural importance.

- (5) To preserve manuscripts discovered or available in the various Bhandars throughout India, by modern scientific means, *inter alia* photostat, microfilming, photography, lamination and other latest scientific methods.
- (6) To manage or enter into any other working arrangements with other Societies having any of their objects similar or allied to any of the objects of the Society.
- (7) To undertake such activities as are incidental and conducive, directly or indirectly, to and in furtherance of any of the above objects.

From its inception the Prakrit Text society was fortunate to receive the active support of His Excellency Dr. Rajendra Prasad, President, Republic of India, who very kindly consented to become its Chief Patron and also one of the six Founder Members.*

The Prakrit Text society has plainly taken inspiration from the Pali Text society of London as regards its publication programme, of which the plan is as follows :

I Āgamic Literature

- अंग—आचार, सूत्रकृत, स्थान, समवाय, व्याख्याप्रज्ञा, ज्ञाताधर्मकथा, उपासक, अन्तकृत, अनुत्तरौपपातिक, प्रश्नव्याकरण, विपाक ।
- उपांग—औपपातिक, राजप्रश्नीय, जीवाजीवाभिगम, प्रज्ञापना, सूर्यप्रज्ञप्ति, चन्द्रप्रज्ञप्ति, कल्पिका, कल्पावतंसिका, पुष्पिका, पुष्पचूलिका, वृष्णिदशा ।
- मूलसूत्र—आवश्यक, दशवैकालिक, उत्तराध्ययन, पिण्डनिर्युक्ति, ओघनिर्युक्ति ।
- छेदसूत्र—निशीथ, महानिशीथ, बृहत्कल्प, व्यवहार, दशाश्रुतस्कन्ध, कल्पसूत्र, जीतकल्प ।
- प्रकीर्णक—चतुःशरण, आतुरप्रत्याख्यान, भक्तपरिज्ञा, तन्दुलवैचारिक, चन्द्रवेध्यक, देवेन्द्रस्तव, गणिविद्या, महाप्रत्याख्यान, संस्तारक, मरणसमाधि, गच्छाचारप्रकीर्णक, ऋषिभाषित, आदि ।

II Āgamic Commentaries

निर्युक्ति, संग्रहणी, भाष्य, चूर्ण, वृत्ति, टीका, बालावबोध आदि ।

III Āgamic Prakaraṇas समयसार आदि

IV Classical Prakrit Literature

काव्य (पउमचरिय आदि), नाटक (कर्पूरमंजरी आदि), आख्यान—कथा (वसुदेवहिण्डी, धम्मिल्लहिण्डि, समराइच्चकहा आदि), पुराण (चउपनमहापुरिस आदि)

V Scientific Literature

Grammar, Lexicography, Metrics, Rhetorics, Astronomy, Mathematics, Arts and other Sciences.

The Society has selected as the first item of its publication programme an ancient text known as the *Angavijjā*. It had not been published so far and is an exceptionally rich source of Indian cultural history. Like Buddhist *Mahāvīyutpatti* it has preserved valuable lists appertaining to the *realia* of Indian life. The readers can form an idea of its contents from the Introduction in English and in Hindi printed in the beginning of the text.

* Other Founder Members are – Shri Muni Punyavijayji, Acharya Vijayendra Suri, Shri V. S. Agrawala, Shri Jainendra Kumar, Shri Fatechand Belaney.

Shri Belaney acted as Society's Secretary from the beginning upto May 1957 and displayed great organising ability in founding the Society.

This edition has been prepared by Muni Shri Punyavijayji, the venerable doyen of Prakrit language and literature in India today. He has devoted a whole life-time to the preparation of critical editions of the Āgamic texts. His ascetic discipline and rigorous critical faculties have enabled him to cope single-handed with a problem of vast magnitude in the domain of Prakrit text criticism. The Prakrit Text Society has been fortunate to receive his blessings and also the fruits of his lifelong labours in the form of those critical editions which like the *Aṅgavijā* now being presented will be published by the Society in due course. On behalf of ourselves and our countrymen we offer our most respectful gratitude to Muni Shri Punyavijayji.

The Programme of work undertaken by the Society involves considerable expenditure, towards which liberal grants have been made by the following Governments :-

Government of India	10,000/-	Madras	Rs. 10,000/-
Government of Assam	2,500/-	Orissa	Rs. 10,000/-
Government of Bombay	10,000/-	Mysore	Rs. 5,000/-
Government of Bihar	10,000/-	Punjab	Rs. 10,000/-
Government of Delhi	1,000/-	Rajasthan	Rs. 5,000/-
Government of Hyderabad	3,000/-	Saurashtra	Rs. 1,250/-
Madhya Pradesh	10,000/-	Travancore Cochin	2,500/-
Madhya Bharat	10,000/-	Uttar Pradesh	10,000/-
		West Bengal	Rs. 10,000/-
		Kerala	Rs. 2,500/-

To these have been added grants made by the following Trusts and individual philanthropists :-

Sir Dorabji Tata Trust	Rs. 10,000/-
Seth Lalbhai Dalpatbhai Trust	Rs. 5,000/-
Seth Narottam Lalbhai Trust	Rs. 5,000/-
Seth Kasturbhai Lalbhai Trust	Rs. 8,000/-
Shri Ram Mills, Bombay	Rs. 5,000/-
Girdhar Lal Chhotalal	Rs. 5,000/-
Tulsidas Kilachand	Rs. 2,500/-
Laharchand Lalluchand	Rs. 1,000/-
Nahalachand Lalluchand	Rs. 1,000/-
Navjivan Mills	Rs. 1,000/-

The Society records its expression of profound gratefulness to all these donors for their generous grants-in-aid to the Society. The Society's indebtedness to its Chief Patron Dr. Rajendra Prasad has been of the highest value and a constant source of guidance and inspiration in its work.

BANARAS HINDU UNIVERSITY,

14th September, 1957.

General Editors

VASUDEVA S. AGRAWALA,

DALSUKH MALVANIA.

अंगविज्जा

**SCIENCE OF DIVINATION
THROUGH
PHYSICAL SIGNS & SYMBOLS**

॥ जयन्तु वीतरागाः ॥

प्रस्तावना

अंगविज्जापड़णयग्रन्थ की हस्तलिखित प्रतियाँ

प्रस्तुत अंगविज्जापड़णयग्रन्थ के संशोधन के लिये निम्नलिखित प्राचीन सात हस्तलिखित प्रतियों का साद्यन्त उपयोग किया गया है, जिनका परिचय यहाँ पर कराया जाता है —

१ हं० प्रति—यह प्रति बड़ौदा—श्री आत्मागमजी जैन ज्ञानमंदिर में रखे हुए, पूज्यपाद जैनाचार्य श्री १००८ विजयानन्द सूरेश्वरजी महाराज के प्रशिष्य श्री १००८ श्री हंसविजयजी महाराज के पुस्तक—संग्रह की है। भंडारमें प्रति का क्रमांक १४०१/२ है और इसकी पत्रसंख्या १३८ है। पत्रके प्रति पृष्ठ में १७ पंक्तियाँ और हरएक पंक्ति में ५८ से ६५ अक्षर लिखे गये हैं। प्रति की लंबाई—चौड़ाई १३। × ५।। इञ्च है। लिपि सुंदर है और प्रति की स्थिति अच्छी है। प्रति के अंत के तीन—चार पत्र नष्ट हो जाने के कारण इसकी पुष्पिका प्राप्य नहीं हैं, फिर भी प्रति के रंग—ढंग को देखते हुए यह प्रति अनुमानतः सोलहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्धमें या सत्रहवीं सदी के प्रारम्भ में लिखित प्रतीत होती है। प्रति शुद्धि की दृष्टि से बहुत ही अशुद्ध हैं और जगह-जगह पर पाठ और संदर्भ भी गलत हैं। प्रति हंसविजयजी महाराज के संग्रह की होने से इस का संकेत मैंने हं० रखा है। यह प्रति पंन्यास मुनिवर श्री रमणीकविजयजी द्वारा प्राप्त हुई है।

२ त० प्रति—यह प्रति पाटण (उत्तर गूजरात) के श्री हेमचन्द्राचार्य जैन—ज्ञानमंदिर में, वहाँ के तपागच्छीय श्रीसंघ की सम्मति से रखे हुए तपागच्छ ज्ञानभंडार की है। भंडार में प्रति का क्रमांक १४८६५ है और इसकी पत्रसंख्या १३३ है। पत्र के प्रतिपृष्ठ में १५ पंक्तियाँ और प्रतिपंक्ति ६३ से ६९ अक्षर लिखे गये हैं। प्रति की लंबाई—चौड़ाई १३ × ४।। इञ्चकी है। लिपि भव्य है। प्रति के अंत में निम्नोद्धृत पुष्पिका है —

“णमो भगवईए सुयदेवयाए ॥ छ ॥ ग्रंथाग्रं० ८८०० ॥ संवत् १५०५ वर्षे श्रावण वदि ८ भौमे ॥ अंगविद्यापुस्तकं समाप्तम् ॥ छ ॥ शुभं भवतु ॥ श्रीश्रमणसंघस्य कल्याणमस्तु ॥ ले० देवदत्तलिखितम् ।

श्री वीरदेवमतसुप्रभावको वीरदेवसाधुवरः ।

ऊकेशकुलाकाशप्रकाशने सोमसंकाशः ॥ १ ॥

तज्जाया निर्माया विल्हणदेव्यत्र धर्मकर्मरता ।

समजनि कलाधरोज्ज्वलशीलगुणालंकृता सततम् ॥ २ ॥

विजपालदेव आसीदनयोस्तनयो विराजितनयश्रीः ।

तज्जाया वरजाईनाम्नी श्रुतभक्तियुक्तमनाः ॥ ३ ॥

स्वजनकगूर्जर—जननी पूरां—वरबंधुपूनपालयुताः ।

श्रीजैनशासननभः प्रभासने तरुणतरणीनाम् ॥ ४ ॥

बाणखबाणधरामितवर्षे १५०५ श्रुत्वोपदेशवाचमिमाम् ।

श्री जयचंद्रगुरुणां समलीलिखदंगविद्यां ताम् ॥ ५ ॥

संवत् १५०५ वर्षे सा० गूर्जरभार्या पूरांपूच्या सा० पूनपालभगिन्या श्रा० [व] रजाई नाम्या श्रीतपागच्छाधिराज श्री सोमसुंदरसूरिपट्टालंकार भट्टाकार प्रभु श्री जयचंद्रसूरिसुगुरुणामुपदेशेन लिखिता श्री अंगविद्या जीयात् ।”

पुष्पिका को देखने से प्रतीत होता है कि प्रति विक्रम सं० १५०५ में लिखी हुई है। प्रति उद्देहिका से खाई हुई होने से अतिजीर्ण दशा में पहुँच गई होने पर भी किसी कलाधरने कुशलतापूर्वक साँधकर इसको पुनर्जीवन दिया

है, अतः वह दीर्घायुष्क हो गई है। हं० प्रति और त० प्रति ये दोनों प्रतियाँ एक कुल की हैं। शुद्धि की दृष्टि से यह नितान्त अशुद्ध है और जगह-जगह पर इसमें पाठ, पाठसंदर्भ गलित है, फिर भी हं० प्रति से यह प्रति बहुत अच्छी है। यह प्रति तपागच्छ भंडार की होने से इसकी संज्ञा मैंने त० रखी है।

३ सं० प्रति—यह प्रति पाटन के श्री हेमचंद्राचार्य जैन ज्ञानमंदिर में स्थित श्रीसंघ के भंडार की है। भंडार में प्रति का क्रमांक ६९९ है और इसकी पत्रसंख्या १४८ है। पत्र के प्रतिपृष्ठ में १५ पंक्तियाँ और प्रति पंक्ति ५५ से ६३ अक्षर लिखे गये हैं। प्रति की लंबाई-चौड़ाई ११॥ × ४॥ इञ्चकी है। लिपि सुंदर है किन्तु इसकी अवस्था इतनी जीर्णातिजीर्ण हो गई है कि इस को हाथ लगाना या पत्र उठाना बड़ा कठिन कार्य है; फिर भी संपूर्णतया मृत्युमुख में पहुँची हुई इस प्रति का उपयोग, प्रति की हिंसा करने के दोष को सिर पर ऊठा करके भी मैंने संपूर्णतया किया है। प्रति अति अशुद्ध होने के साथ, इस में स्थान-स्थान पर पाठ, पाठसंदर्भ आदि गलित हो गये हैं। यह प्रति संघ के भंडार की होने से इसकी संज्ञा मैंने सं० रखी है। प्रति के अंत में निम्नोल्लिखित पुष्पिका है —

“जमो भगवतीए सुतदेवताए । श्री । थाराप्रद्रजगच्छभूषणमणेः श्री शान्तिसूरिप्रभोः चंद्रकुले ॥ छ ॥ एताओ गाधाओ संलावजोणीपडले आदिदितिकाओ ।

पुढवगतजा काया समायुता कधा भवे ।

आधारितणिसित्ठे कधेत्ताण व पुच्छति ॥

पसत्था अप्सत्था वा अत्था णिद्धा सुभाऽसुभा ।

णिग्गुणा गुणसु (जु) ता वा सम्मत्ता वा असम्मत्ता ॥

दुरा इति आसन्ना दीह हस्सा धुवा चला ।

संपताऽणागताऽतीता उत्तमाऽधम-मज्झिमा ॥

जारिसी जाणमाणेण पुढवीसंकधा भवे ।

तेणेव पडिरूवेण तं तधा वग्गमादिसे ॥

श्रीअंगविद्यापुस्तकं संपूर्ण ॥ छ ॥ ग्रंथाग्रं ९००० ॥ छ ॥ संवत् १५२१ वर्षे आषाढ वदि ९ भौमे श्रीपत्तने लिखितमिदं चिरं जीयात् ॥ छ ॥ ९ ॥ शुभं भवतु लेखकपाठकयोः ॥ छ ॥

४ ली० प्रति—यह प्रति पाटन के श्री हेमचंद्राचार्य जैन ज्ञानमंदिर में स्थित श्री संघ के भंडार के साथ जुड़े हुए लीबडीपाडाभंडार की है। भंडार में इसका क्रमांक ३७२१ है और पत्रसंख्या इसकी १३१ है। इसकी लंबाई-चौड़ाई ११॥ × ४॥ इञ्च है। इसकी लिपि सुंदर है, किन्तु इसकी दशा सं० प्रति की तरह जीर्णातिजीर्ण है; इसका भी उपयोग इस ग्रन्थ के संशोधन में पूर्णतया किया गया है। प्रति अति अशुद्ध है और इसमें भी स्थान स्थान पर पाठ, पाठसंदर्भ आदि गलित हैं। प्रति लीबडीपाडा भंडार की होने से इसका स्मृत ली० रखा है। प्रति के अंत में निम्नोद्धृत पुष्पिका है —

“जमो भगवतीए सुतदेवताए । श्री थाराप्रद्रजगच्छभूषणमणीः श्री शान्तिसूरिप्रभोः चंद्रकुले ॥ छ ॥ एताओ गाधाओ संलावजोणीपडले आदिदितिकाओ ।

पुढवीगतजा काया समायुता कधा भवे ।

आधारितणिसित्ठे कधेत्ताण व पुच्छति ॥

पसत्था अप्सत्था वा अत्था णिद्धा सुभाऽसुभा ।

णिग्गुणा गुणसुत्ता वा सम्मत्ता वा असम्मत्ता ॥

दुरा इति आसन्ना दीह हस्सा धुवा चला ।

संपताऽणागताऽतीता उत्तमाऽधम-मज्झिमा ॥

जारिसी जाणमाणेण पुढवी संकधा भवे ।

तेणेव पडिरूवेण तं तधा वग्गमादिसे ॥ छ ॥

श्री अंगविद्यापुस्तकं संपूर्ण ॥ छ ॥ ग्रंथाग्रं १००० ॥ छ ॥ संपूर्ण ॥ ल ॥ श्रीः ॥ ग्रंथाग्रं १००० ।
संवत् १५२७ वर्षे आश्विन वदि सप्तमी रवौ लिखितं श्रीश्री अणहिलपुरपत्तने ॥ छ ॥ श्रीः ॥ शुभं भवतुः ॥ श्रीस्तुः ॥
मंगलमस्तुः । श्री । छ ॥ श्रीसीमंधरस्वामिने नमः ॥

अस्ति स्वस्तिकरश्रीगूर्जरधरणीसुलोचनाकारम् ।

अणहिलपाटकं पुरम्परपुरप्रवरशृंगारम् ॥ १ ॥

सौधश्रेणिमनोहरे प्रतिपदप्रासादशोभाकरे,

श्रीमत्श्रीअणहिलपाटकपुरे पुण्यैकरत्नाकरे ।

श्रीश्रीमालविशालवंशतिलकः प्रौढः प्रतिष्ठास्पदं,

जातः श्रीमदनः सहर्षवदनः साधुः सदानंदनः ॥ २ ॥

तदंगजो विश्रुतनामधेयस्त्रैलोक्यलोकाद्भुतभागधेयः ।

बभूव भूवल्लभरूपधेयः श्रीदेवसिंहः स्वकुलैकसिंहः ॥ ३ ॥

तत्सुतः सकलविश्वविश्रुतः संघभक्तिगुरुभक्तिसंयुतः ।

धीरिमादिकगुणैरलंकृतः शोभते शरब्णाभिधस्ततः ॥ ४ ॥

तस्य शीलगुणनिर्मलगात्रं सत्कलत्रयुगलं गुणपात्रम् ।

आदिमा शुभति तत्र हि टिवू स्त्रीषु रत्नमपरा खलु लक्ष्मीः ॥ ५ ॥

असूत सुनुद्वयमद्वयश्रीनिकेतनं सा समये तदाद्या ।

आद्यः सदाचारपरः सदाख्यो हेमाभिधो हेमसमो द्वितीयः ॥ ६ ॥

दीनेषु दानं सुजनेषु मानं पात्रेषु वित्तं सुकृतेषु चित्तम् ।

तदा तदाद्यस्तु सदा ददानः सदाभिधः कं न चमत्करोति ॥ ७ ॥

शत्रुंजयाद्रौ गिरिनारशृंगे रणेण यात्रां किल यश्चकार ।

परोपकारैकपरायणश्रीः श्रीमान् सदाह्वानसुधीः सुधीरः ॥ ८ ॥

कल्याणकत्रयविहारविशालभद्रप्रासादपुण्यसफलीक्रियमाणवित्तः ।

श्रीपातसाहमहिमुंदसभासु मान्यः सोऽयं सदाभिधसुधीः समभूद् वदान्यः ॥ ९ ॥

यस्याभंगुरभाग्यभंगिसुभगस्यादत्त वच्छेरेके—

त्याख्यां श्रीमदहिम्मदामिधसुत्राणः स्वयं सोत्सवम् ।

दुष्प्रापान्नकणेऽपि यो वसुवियत्तिथ्यंकिते १५०८ वत्सरे

सत्रागारमर्मण्यच्च वसुधाधारः कृपासागरः ॥ १० ॥

अपर कलत्रसुतश्रीअहिम्मदाबादनगरवास्तव्यः ।

गुरुसेवाकरणरतिर्देवाकः पुण्यहेवाकः ॥ ११ ॥

तज्जाया लज्जायाः सदनं वदनेन विजितरजनिकरा ।

देवश्रीर्देवश्रीरेव श्रीकारणं जयति ॥ १२ ॥

तस्यास्तनुजस्त्रिजगति शुभति श्रीअमरदत्त इत्याख्यः ।

श्रीहेमसुतः सुचिरं जयति जगज्जीवजीवाकः ॥ १३ ॥

तस्य प्रशस्याऽजनि मुक्तमाया जाया रमाईरित नामधेया ।
 एवं परीवारविराजमानो मानोज्झितो राजति देवराजः ॥ १४ ॥
 अनेन जैनागमभक्तिभाजा राजादिमान्येन धनीश्वरेण ।
 वस्वग्निबाणक्षितिमानवर्षे १५३८ हर्षेण देवाभिधसाधुनाऽत्र ॥ १५ ॥
 श्रीमत्तपागणेन्द्रश्रीलक्ष्मीसागराहसूरीणां ।
 श्रीसोमजयगुरुणामुपदेशाल्लेखितः कोशः ॥ १६ ॥ युग्मम् ॥
 चित्कोशचिन्ताकरणे सुधीरैः परोपकारप्रथनप्रवीणैः ।
 गणीश्वरैः श्रीजयमंदिराह्वैर्भक्त्या भूशोपक्रम एष चके ॥ १७ ॥
 विबुधैर्वाच्यमानोऽसौ शोध्यमानः सुबुद्धिभिः ।
 ज्ञानकोशश्चिरंजीयादाचंद्रार्कं जगत्त्रये ॥ १८ ॥

॥ इति प्रशस्तिः समाप्ता ॥ छ ॥

५ मो० प्रति—यह प्रति पाटण श्रीहेमचन्द्राचार्य जैनज्ञानमंदिरस्थ मौका मोदीके भण्डार की है । भण्डार में प्रति का नम्बर १००८२ है और इसकी पत्रसंख्या १२७ है । पत्र के प्रतिपृष्ठ में १७ पंक्तियाँ और प्रतिपंक्ति ६२ से ६६ अक्षर लिखे गये हैं । प्रति की लम्बाई—चौड़ाई १३॥ × ५। इंच की है । प्रति की लिपि अच्छी है । शुद्धि की दृष्टि से प्रति बहुत ही अशुद्ध है, एवं स्थान स्थान पर पाठ और पाठसंदर्भ गलित हैं । प्रति मोदी के भंडार की होने से इसका संकेत मो० रक्खा गया है । इसका समाप्ति भाग सं० प्रति के समान है, सिर्फ लेखनकाल में फर्क है । जो इस प्रकार है—श्रीअंगविद्या पुस्तकं सम्पूर्णा ॥ ० ॥ ग्रंथाग्रं ९००० ॥ छ ॥ संवत् १५७४ वरषे मार्गशीर्ष शुद्धि १० शनौ लिषापितम् ॥ छ ॥

६ पु० प्रति—यह प्रति मेरे निजी संग्रह की है । संग्रह में इसका क्रमाङ्क १८ है । इसकी पत्रसंख्या १३२ है । पत्र के प्रतिपृष्ठ में १७ पंक्तियाँ हैं और प्रतिपंक्ति ५८ से ६६ अक्षर हैं । प्रति की लम्बाई—चौड़ाई १३॥ × ५। इंच है । लिपि सुन्दर है । इसकी स्थिति जीर्णप्राय है और उद्देहिका ने प्रति के सभी पत्रोंको छिद्रान्वित किया है, फिर भी प्रति के अक्षरों को पढ़ने में कोई कठिनाई नहीं है । शुद्धि की अपेक्षा प्रति अति अशुद्ध है और स्थान—स्थान में पाठ व पाठसंदर्भ गलित हैं । प्रति मेरे संग्रह की होने से मेरे नाम के अनुरूप इसकी पु० संज्ञा रक्खी गई है । इसके अन्त की पुष्पिका सं० प्रति के समान ही है, सिर्फ लेखनसंवत् में अन्तर है—

संवत् १५७३ आषाढादि ७४ प्रवर्तमाने मार्गशीर वदि १ रवौ लष्यतं ॥ छ ॥

७ सि० प्रति—यह प्रति पूज्यपाद शान्तमूर्ति चरित्रचूडामणि श्रीमणिविजयजी दादाजीके शिष्यरत्न महातपस्वी चिरंजीवी महाराज श्री १००८ श्रीविजयसिद्धिसूरीश्वरजी महाराज के अहमदाबाद—विद्याशालास्थित ज्ञानभण्डार की है । इसकी पत्रसंख्या १५३ है । पत्र के प्रतिपृष्ठ में १४ पंक्तियाँ और प्रतिपंक्ति ६६ अक्षर लिखित हैं । लिपि सुन्दर है और प्रति नई लिखी होने से इसकी स्थिति भी अच्छी है । शुद्धि की दृष्टि से प्रति बहुत ही अशुद्ध और जगह जगह पर इस में पाठ एवं पाठसंदर्भ छूट गये हैं । प्रति श्रीविजयसिद्धिसूरीश्वरजी महाराजश्री के संग्रह की होने से इसकी संज्ञा मैंने सि० रक्खी है । इसके अन्त में सं० प्रति के समान ही पुष्पिका है । सिर्फ लेखनसंवत् में अन्तर है—

लि० भावसार भाईलाल जमनादास गाय वसोना संवत् १९५८ ना आषाढ शुदि १३ दिने पंन्यास श्रीसिद्धविजयजी ने काजे लिखी सम्पूर्ण करी छे ॥ छ ॥ श्री ॥ छ ॥ : ॥ : ॥ छ ॥

संशोधन और संपादन पद्धति

उपरि निर्दिष्ट सात प्रतियों के अतिरिक्त युगप्रधान आचार्य श्रीजिनभद्रसूरि महाराज के जैसलमेर के प्राचीन ज्ञानभण्डार की ताडपत्रीय प्रति, बड़े उपाश्रय की ताडपत्रीय प्रति और थिरूशाह के भण्डार की कागज की प्रति, एवं बीकानेर, बड़ौदा, अहमदाबाद आदि के ज्ञानभण्डारों की कई प्रतियों का उपयोग इस ग्रन्थ के संशोधन के लिए किया गया है। किन्तु इन प्रतियों में से एक भी प्रति में कोई भी ऐसा पाठ प्राप्त नहीं हुआ है कि जिससे ग्रन्थ के संशोधन में विशिष्टता प्राप्त हो। अतः जिन प्रतियों का इस संशोधन में साद्वन्त उपयोग किया गया है उन्हीं का परिचय यहाँ दिया गया है। जैसलमेर आदि स्थानों में पादविहार करने के पूर्व ही मैंने इस ग्रन्थ को सांगोपांग तैयार कर लिया था, किन्तु जब अन्यान्य ज्ञानभण्डारों में इस ग्रन्थ की प्रतियाँ मेरे देखने में आईं तब उनके साथ मेरी प्रतिकृति की मैंने शीघ्र ही तुलना कर ली, परन्तु कोई खास नवीनता कहीं से भी प्राप्त नहीं हुई है। इस प्रकार अन्यान्य ज्ञानभण्डारोंकी जो संख्याबंध प्राचीन—अर्वाचीन प्रतियाँ आज दिन तक मेरे देखने में आई हैं, उनसे पता चला है कि प्रायः अधिकतर प्रतियाँ—जिनमें जैसलमेर की ताडपत्रीय प्रतियों का भी समावेश हो जाता है,—एक ही कुलकी और समान अशुद्धि एवं समान गलित पाठवाली ही हैं। हं० और त० ये दो प्रतियाँ भी ऐसी ही अशुद्ध एवं गलित पाठवाली ही हैं, फिर भी ये दो प्रतियाँ अलग कुल की होने से इन प्रतियों की सहायता से यह ग्रन्थ ठीक कहा जाय ऐसा शुद्ध हुआ है—हो सका है। तथापि यह ग्रन्थ अन्य प्राचीन कुल की प्रत्यन्तों के अभाव में पूर्णतया शुद्ध नहीं हो सका है, क्योंकि इसमें ऐसे बहुत से स्थान हैं जहाँ प्रतियों में रिक्तस्थान न होने पर भी अर्थानुसन्धानके आधार से जगह—जगह पर पाठ एवं पाठसंदर्भ खण्डित प्रतीत होते हैं। इन स्थानों में जहाँ पूर्ति हो सकी वहाँ करने का प्रयत्न किया है। और जहाँ पूर्ति नहीं हो सकी है वहाँ रिक्तस्थानसूचक " " ऐसे बिन्दु किये हैं। ये पूर्ति किये हुए पाठ और रिक्तस्थानसूचक बिन्दु मैंने [] ऐसे चतुस्त्र कोष्ठक में दिये हैं। देखो पूर्ति किये हुए पाठपृष्ठ पंक्ति ९-१३, ११-८, १४-८, ४१-१५, ४६-२५, ५८-६, ७२-२४, ८५-११, ८६-२५, ९३-८, ९६-२८, ९७-६, ९७-१४, १०३-१३, १०६-३, १०९-५, २०७-१२, २१३-२३ आदि। और खंडित पाठसूचक रिक्तबिन्दुओं के लिए देखो, पृष्ठपंक्ति १८-९, २८-८, ६२-२४, ६३-४, ६७-२१, ७०-१३, ७४-२८, ७९-११, ८५-३, ९८-१५, ११६-२१, १२०-२८, १२७-२६, १२८-५, १२९-१५, १४१-१० आदि, १४२-१९, १५१-६, १५५-२०, २३३-३१, २३६-५, २४५-१५, २५०-१३, २६१-३, २६७-२४ आदि।

जहाँ सभी प्रतियों में पाठ अशुद्ध मिले हैं वहाँ पूर्वापर अनुसंधान एवं अन्यान्य ग्रंथादि के आधार से ग्रंथ को शुद्ध करने का प्रयत्न बराबर किया गया है। कभी कभी ऐसे स्थानों में अशुद्ध पाठ के आगे शुद्ध पाठको () ऐसे वृत्त कोष्ठक में दिया गया है। देखो पृष्ठ-पंक्ति २-६, ५-६, ९-१४, ३०-२२, ८१-१२, १२८-३१, १८३-६, १९६-२८ प्रभृति।

मैं ऊपर अनेकबार कह आया हूँ कि प्रस्तुत ग्रन्थ के संशोधन के लिये मेरी नजर सामने जो हाथपोथियाँ हैं वे सब खंडित—भ्रष्ट पाठ की एवं अशुद्धि शय्यातररूप या अशुद्धि भाण्डागार स्वरूप हैं। फिर भी ये प्रतियाँ दो कुल परम्परा में विभक्त हो जाने के कारण इन प्रतियों ने मेरे संशोधन में काफी सहायता की है। एक कुल की प्रतियों में जहाँ अशुद्ध पाठ, गलित पाठ या गलित पाठसंदर्भ हो वहाँ दूसरे कुल की प्रतियों ने सैकड़ों स्थानों में ठीक ठीक जवाब दिया है। और ऐसा होने से यह कहा जा सकता है कि दोनों कुल की प्रतियों ने जगह जगह पर शुद्ध पाठ, गलित पाठ और पाठसंदर्भों को ऐसे सँभाल रक्खे हैं, जिससे इस ग्रंथ की शुद्धि एवं पूर्ति हो सकी है। मेरी नजरके सामने जो दो कुल की प्रतियाँ हैं उनमें से दोनों कुलों की प्रतियों ने कौन से कौन से शुद्ध पाठ दिये, कौन से कौन से गलितपाठ और पाठसंदर्भ की पूर्ति की? — इसका पता चले इसलिये मैंने प्रतिपृष्ठ में पाठभेदादि देने का प्रयत्न किया है। जो पाठ या पाठसंदर्भ हं० त० प्रतियोंमें से प्राप्त हुए हैं और वे सं० ली० मो० पु० सि० प्रतियों में गलित

है, वे मैंने दो हस्तचिह्नों के बीच में रखे हैं। देखो पृष्ठ-पंक्ति-३-३, ४-२४, १२-११, १४-११, २६-१५, ३२-१६, ३३-२०, ४२-२५ आदि, ४९-९ आदि, ५१-१२, ५२-२५, ६१-३१, ६६-४, ७३-१७ आदि, ७४-११ आदि, ७८-९, ८०-४, ८६-१, ८८-१६, ९७-७, आदि, ९९-६, १००-५ आदि, १०५-१३, १०६-१७, १०९-१४, ११०-१५, १११-२७, ११३-१३, ११५-२८, ११९-३०, १२०-२, १२९-५ आदि, १३१-८, आदि, १३२-१७, १३५-१ आदि, १५२-९, १६७-१२ आदि, १७२-६, १७७-२ आदि, १७८-२, १८५-१०, १८९-२०, १९०-२५, १९१-१७ आदि, १९४-११ आदि, १९६-१२, १९९-६, २००-३२, २०१-१५ आदि, २०८-२७, २१०-२९, २११-२४, २१५-७, २१६-२५, २१७-९ आदि, २१८-८ आदि, २२५-२४, २२८-३३, २२९-१४, २४०-१६ आदि, २४३-५, २५२-१२, २५९-२८, २६०-३, २६१-८, २६२-९, २६६-१७ प्रभृति। इन सब स्थानों में श्लोकार्ध एवं संपूर्ण श्लोक गलित है। इनके अतिरिक्त इन स्थानों को भी देखें, जहाँ कि दो, तीन, चार और पाँच श्लोक जितना पाठ गलित है—पृष्ठ-पंक्ति १४-६, ४६-२३, ४९-१६, ९५-२५, ९८-३, ९८-१४, १०८-२५, १३३-१७, १३७-१, १४२-२४, १५७-२९, १९३-२३, २०१-१५, २१३-१६, २५५-१२। छोटे-छोटे गलितपाठ तो बहुत हैं।

जो पाठ एवं पाठसंदर्भ सं० ली० मो० पु० सि० प्रतियों में उपलब्ध होते हैं किन्तु हं० त० प्रतियों में गलित है, वे मैंने < > ऐसे त्रिकोण चिह्न के बीच में रखे हैं। देखो पृष्ठ-पंक्ति १२-६, २१-२८, ३४-७, ३७-६, ४३-१०, ४७-३ आदि, ४८-२५, ४९-१२ आदि, ५४-१२, ६७-२२, ७४-१५, ८२-१७, ८५-५ आदि, १०२-२२, १३१-१ आदि, १३३-४ आदि, १५२-१०, १६९-१४, १७०-४, १७३-३, १८९-२५, १९१-१८, १९२-११, १९६-१८, २०५-२२ आदि, २०८-२४, २११-१, २२९-१२, २४५-३, २४८-१०, २५६-६, २५८-९, २६२-९, २६५-१५, २६८-१६, प्रभृति। इन स्थानों में श्लोकार्ध एवं संपूर्ण श्लोक गलित है। इनके अतिरिक्त इन स्थानों को भी देखिये, जहाँ दो-तीन-चार-पाँच श्लोक जितना संदर्भ गलित है—पृष्ठ-पंक्ति २४-२२, १०७-१५, १३७-८, १६६-१०, २३२-२१, २३६-१८, २६०-२५। छोटे छोटे गलित पाठ तो अत्यधिक हैं।

कहीं कहीं एक-दूसरे कुल की प्रतियों में एक दो अक्षरादि गलित वगैरह हुआ है वहाँ उपरिनिर्दिष्ट चिह्न नहीं भी किये गये हैं।

संपादन में मौलिक आधारभूत प्रतियाँ

ऐसे तो इस ग्रंथ के संशोधन में यथायोग्य सब प्रतियाँ आधारभूत मानी गई हैं, फिर भी जहाँतक हो सका है, मैंने सं० ली० मो० पु० सि० प्रतियों को ही मौलिक स्थान दिया है। जैसलमेर की चौदहवीं एवं पंद्रहवीं शताब्दी लिखित ताडपत्रीय प्रतियाँ एवं अन्यान्य भंडार की सोलहवीं एवं पिछली शताब्दीयों में लिखित प्रतियों का इसी कुल में समावेश होता है। इन प्रतियों को मौलिक स्थान देने का खास कारण यह है कि—जैन आगमिक प्राकृतभाषा जो प्रायः तकार बहुल एवं ह के स्थानमें ध का प्रयोग आदिरूप है, वह इस कुल की प्रतियों में अधिकतया सुरक्षित है। हं० त० प्रतियों में आपवादिक स्थानों को छोड़कर सारे ग्रंथ में इस प्राचीन प्राकृत भाषा का समग्रभाव से परिवर्तन कर दिया गया है। ऐसा परिवर्तन करने में कहीं कहीं त आदि वर्णों का परिवर्तन गलत भी हो गया है, जो अर्थ की विकृतता के लिये भी हुआ है। अतः मुझे यह प्रतीत हुआ कि इस ग्रंथ की मौलिक भाषा जो इस कुल की प्रतियों में है वही होनी चाहिए। इस कारण से मैंने सं० ली० मो० पु० सि० प्रतियाँ मौलिक मानी हैं और इन्हीं प्रतियों की भाषा एवं पाठों को मुख्य स्थान इस संशोधन एवं संपादन में दिया है। किन्तु जहाँ पर सं० ली० आदि प्रतियों में छूट गया पाठ हं० त० प्रतियोंमें से लिया गया है वहाँ पर हं० त० प्रतियों में जो और जैसा पाठ है उसको विना परिवर्तन किये लिया गया है।

ग्रन्थका बाह्य स्वरूप

यह ग्रन्थ गद्य-पद्यमय साठ अध्यायों में समाप्त होता है और नव हजार श्लोक परिमित है। साठवाँ अध्याय दो विभाग में विभक्त है, दोनों स्थान पर साठवें अध्याय की समाप्तिसूचक पुष्पिका है। मेरी समझ से पुष्पिका अन्त में ही होनी चाहिए, फिर भी दोनों जगह होने से मैंने पुष्पिकों को उद्भेद रूप से विभाग किया है। पूर्वार्ध में पूर्वजन्म विषयक प्रश्न-फलदेश है और उत्तरार्ध में आगामि जन्म विषयक प्रश्न-फलदेश है। आठवें और उनसठवें अध्याय के क्रम से तीस और सत्ताईस पटल (अवान्तर विभाग) है। नववाँ अध्याय, यद्यपि कहीं कहीं पटलरूपमें पुष्पिका मिलने से (देखो पृ. १०३) पटलों में विभक्त होगा परन्तु व्यवस्थित पुष्पिकायें न मिलने से यह अध्याय कितने पटलों में समाप्त होता है यह कहना शक्य नहीं। अतः मैंने इस अध्याय को पटलों से विभक्त नहीं किया है किन्तु इसके प्रारंभिक पटलमें जो २७० द्वार दिये हैं उन्हींके आधार से विभाग किया है। मूल हस्तलिखित आदर्शों में ऐसे विभागों का कोई ठिकाना नहीं है, न प्रतियों में पुष्पिकाओं का उल्लेख कोई ढंगसर है, न दोसौ-सत्तर द्वारों का निर्देश भी व्यवस्थित रूप से मिलता है, तथापि मैंने कहीं भ्रष्ट पुष्पिका, कहीं भ्रष्ट द्वारांक, कहीं पूर्ण घट का चिह्न जो आज विकृत होकर अपनी लिपि का “हठ” सा हो गया है, इत्यादि के आधार पर इस अध्याय के विभागों को व्यवस्थित करने का यथाशक्य प्रयत्न किया है। इस ग्रन्थ में पद्यों के अंक, विभागों के अंक, द्वारों के अंक वगैरह मैंने ही व्यवस्थित रूपसे किये हैं। लिखित आदर्शों में कहीं कहीं पुराने जमाने में ऐसे अंक करने का प्रयत्न किया गया देखा जाता है, किन्तु कोई भी इसमें सफल नहीं हुआ है। सब के सब अधबिच में ही नहीं किन्तु शुरू से ही पानी में बैठ गये हैं, फिर भी मैंने इस ग्रन्थ में साद्यंत विभागादि करने का सफल प्रयत्न किया है।

ग्रन्थ की भाषा और जैन प्राकृत के विविध प्रयोग

जैन आगमों की मौलिक भाषा कैसी होगी—यह जानने का साधन आज हमारे सामने कोई भी नहीं है। इसी प्रकार मथुरा-वल्हभी आदि में आगमों को पुस्तकारूढ किये तब उसकी भाषा का स्वरूप कैसा रहा होगा इसको जानने का भी कोई साधन आज हमारे सामने नहीं है। इस दशा में सिर्फ आज उन ग्रन्थों की जो प्राचीन-अर्वाचीन हस्तप्रतियाँ विद्यमान हैं—यह एक ही साधन भाषानिर्णय के लिये बाकी रह जाता है। इतना अनुमान तो सहज ही होता है कि जैन आगमों की जो मूल भाषा थी वह पुस्तकारूढ करने के युगमें न रही होगी, और जो भाषा पुस्तकारूढ करनेके जमाने में थी वह आज नहीं रही है—न रह सकती है। प्राचीन-अर्वाचीन चूर्णिव्याख्याकारादि ने अपने चूर्णि-व्याख्याग्रन्थों में जो सारे के सारे ग्रन्थ की प्रतीकोंका संग्रह किया है, इससे पता चलता है कि सिर्फ आगमों की मौलिक भाषामें ही नहीं, किन्तु पुस्तकारूढ करने के युग की भाषा में भी आज काफी परिवर्तन हो गया है। प्राकृत वृत्तिकार अर्थात् चूर्णिकारों ने अपनी व्याख्याओं में जो आगमग्रन्थों की प्रतीकोंका उल्लेख किया है उससे काफी परिवर्तनवाली आगमग्रन्थों की प्रतीकोंका निर्देश संस्कृत व्याख्याकारोंने किया है इससे प्रतीत होता है कि आगमग्रन्थों की भाषा में काफी परिवर्तन हो चुका है। ऐसी परिस्थिति में आगमों की प्राचीन हस्तप्रतियाँ और उनके ऊपर की प्राकृत व्याख्यारूप चूर्णियाँ भाषानिर्णय के विधान में मुख्य साधन हो सकती हैं। यद्यपि आज बहुत से जैन आगमों की प्राचीनतम हस्तलिखित प्रतियाँ दुष्प्राप्य हैं तो भी कुछ अंगआगम और सूर्यप्रज्ञप्ति आदि उपांग वगैरह आगम ऐसे हैं जिनकी बारहवीं-तेरहवीं शताब्दी में लिखित प्राचीन हस्तप्रतियाँ प्राप्य हैं। कितनेक आगम ऐसे भी हैं जिनकी चौदहवीं और पन्द्रहवीं शताब्दी में लिखित प्रतियाँ ही प्राप्त हैं। इन प्रतियों के अतिरिक्त आगमग्रन्थों के ऊपर की प्राकृत व्याख्यारूप चूर्णियाँ आगमों की भाषा का कुछ विश्वसनीय स्वरूप निश्चित करने में महत्त्व का साधन बन सकती हैं, जिन चूर्णियों में चूर्णिकारोंने जैसा ऊपर मैं कह आया हूँ वैसे प्रायः समग्र ग्रन्थ की प्रतीकों का संग्रह किया है। यह साधन अति महत्त्व का एवं अतिविश्वसनीय है। यद्यपि चूर्णिग्रन्थों की अति प्राचीन प्रतियाँ लभ्य नहीं हैं तथापि

बाह्यवी तेरहवीं चौदहवीं शताब्दी में लिखित प्रतियाँ काफी प्रमाण में प्राप्य हैं। यहाँ एक बात ध्यान में रखने की है कि भले ही चूर्णिग्रन्थों की अति प्राचीन प्रतियाँ प्राप्य न भी होती हों, तो भी इन चूर्णिग्रन्थों का अध्ययन—वाचन बहुत कम होने से इसमें परिवर्तन विकृति आदि होने का संभव अति अल्प रहा है। अतः ऐसे चूर्णिग्रन्थों को सामने रखने से आगमों की भाषा का निर्णय करने में प्रामाणिक साहाय्य मिल सकता है। यह बात तो जिन आगमों के ऊपर चूर्णि—व्याख्याएँ पाई जाती हैं उनकी हुई। जिनके ऊपर ऐसे व्याख्याग्रन्थ नहीं हैं ऐसे आगमों के लिये तो उनके प्राचीन—अर्वाचीन हस्तलिखित प्रत्यन्तर और उनमें पाये जानेवाले पाठभेदों का—वाचनान्तरों का अति विवेकपुरुष पृथक्करण करना—यह ही एक साधन है। ऐसे प्रत्यन्तरों में मिलनेवाले विविध वाचनान्तरों का पृथक्करण करने का कार्य बड़ा मुश्किल एवं कष्टजनक है, और उनमें से भी किसको मौलिक स्थान देना यह काम तो अतिसूक्ष्मबुद्धिगम्य और साध्य है। भगवती सूत्र की विक्रम संवत् १११० की लिखी हुई प्राचीनतम ताडपत्रीय प्रति आचार्य श्रीविजयजम्बूसूरिमहाराज के भंडार में है, तेरहवीं शताब्दी में लिखी हुई दो ताडपत्रीय प्रतियाँ जैसलमेर में हैं, तेरहवीं शताब्दी में लिखी हुई एक ताडपत्रीय प्रति खंभात के श्रीशान्तिनाथ ज्ञानभंडार में है और एक ताडपत्रीय तेरहवीं शताब्दी में लिखी हुई बड़ौदे के श्रीहंसविजयजीमहाराज के ज्ञानभंडार में है। ये पाँच प्राचीन ताडपत्रीय प्रतियाँ चार कुल में विभक्त हो जाती हैं। इनमें जो प्रायोगिक वैविध्य है वह भाषाशास्त्रियों के लिये बड़े रस का विषय है। यही बात दूसरे आगमग्रन्थों के बारे में भी है। अस्तु, प्रसंगवशात् यहाँ जैन आगमों की भाषा के विषय में कुछ सूचन कर के अब अंगविज्जा की भाषा के विषय में विचार किया जाता है।

इस ग्रंथ की भाषा सामान्यतया महाराष्ट्री प्राकृत है, फिर भी यह एक अबाध्य नियम है कि जैन रचनाओं में जैन प्राकृत—अर्धमागधी भाषा का असर हमेशा काफी रहता है और इस वास्ते जैन ग्रन्थों में प्रायोगिक वैविध्य नजर आता है। इसका कारण यही प्रतीत होता है कि जैन निर्ग्रन्थों का पादपरिभ्रमण अनेक प्रान्तों में—प्रदेशों में होने के कारण उनकी भाषा के ऊपर जहाँ तहाँ की लोकभाषा आदि का असर पड़ता है और वह मिश्र भाषा हो जाती है। यही कारण है कि इसको अर्धमागधी कहा जाता है। यहाँ पर ध्यान रखने की बात है कि जैसे जैन प्राकृत भाषा के ऊपर महाराष्ट्री प्राकृत भाषा का असर पड़ा है वैसे महाराष्ट्री भाषा के ऊपर ही नहीं, संस्कृत आदि भाषाओं के ऊपर भी जैन प्राकृत—अर्धमागधी भाषा का असर जरूर पड़ा है। यही कारण है कि ऐसे बहुत से शब्द इधर तिधर प्राकृत—संस्कृत आदि भाषाओं में नजर आते हैं।

अस्तु, इस अंगविज्जा ग्रन्थ की भाषा महाराष्ट्री प्राकृत प्रधान भाषा होती हुई भी वह जैन प्राकृत है। इसी कारण से इस ग्रंथ में ह्रस्व—दीर्घस्वर, द्विर्भाव—अद्विर्भाव, स्वर—व्यंजनों के विकार—अविकार, विविध प्रकार के व्यंजनविकार, विचित्र प्रयोग—विभक्तियाँ आदि बहुत कुछ नजर आती हैं। भाषाविदों के परिचय के लिये यहाँ इनका संक्षेप में उल्लेख कर दिया जाता है।

क का विकार—परिक्लेश सं० परिक्लेश, निक्खुड सं० निष्कृत आदि।

क का अविकार—अकल्ल, सकण्ण, पडाका, जूधिका, नत्तिका, पाकटित आदि।

क्ष का विकार—वुख सं० वृक्ष, लुक्काणि सं० रुक्काणि, छीत सं० क्षुत, छुधा सं० क्षुधा, आदि।

ख का विकार—कज्जुरी सं० खज्जुरी, साधिणो सं० शाखिनः आदि।

ख का अविकार—मेखला, फलिखा आदि।

ग का विकार—छंदोक, मक सं० मृग, मकतण्हा सं० मृगतृष्णा आदि।

घ का विकार—गोहातक सं० गोघातक, उल्लंहित सं० उल्लङ्घित, छत्तोध सं० छत्रौघ आदि।

घ का अविकार—जघन, चोरघात आदि।

च का अविकार—अचलाय, जाचितक आदि।

ज का अविकार—जोजयितव्व, पजोजइस्सं आदि।

ड का विकार—छलंगवी सं० षडङ्गवित्, दमिली सं० द्रविडी आदि।

त का विकार—उदुसोभा, अणोदुग, पदोली, वदंसक, ठिदामास, भारधिक, पडिकुंडित सं० प्रतिकुंचित आदि।

त का अविकार—उतु, चेतित, वेतालिक, पितरो, पितुस्सिया, जूतगिह, जूतमाला, जोतिसिक आदि ।

थ का विकार—आमधित, वीधी, कधा, मणोरध, रधप्पयात, पुधवी, गूध, रायपध, पाधेज्ज, पधवावत, मिधो, तध, जूधिका आदि ।

थ का अविकार—मधापथ, रथगिह आदि ।

द का विकार—कतंब, कातंब, रापप्पसात, लोकहितय, रातण सं. राजादन, पातव, मुर्निग सं. मृदङ्ग, वेतिया आदि ।

द का अविकार—ओदनिक, पादकिंकणिका, अस्सादेहिति, पादखडुयक आदि ।

ध का विकार—परिसाहसतो सं. पर्षद्धर्षकः आदि ।

ध अविकार—ओधि, ओसध, अविधेय, अवाबाध, खुधित, पसाधक, छुधा, सं. क्षुधा आदि ।

प का विकार—वडत्थ आदि ।

प का अविकार—अपलिखित, अपसारित, अपविद्ध, अपसकंत, पोरेपच्च सं० पुरःपत्य, चेतितपादप आदि ।

भ का अविकार—परभुत सं० परभृत आदि ।

य का विकार—असव्वओ जसवओ सं. यशस्वतः आदि ।

र का विकार—दालित सं. दारित, फलिखा सं. परिखा, लसिया सं. रसिका आदि ।

व का विकार—अपमक सं. अवमक, अपमतर, अपीवर सं. अविवर, महापकास सं. महावकाश आदि ।

ह का विकार—रमस्स सं. रहस्य, बाधिरंग सं. बाह्याङ्ग, प्रधित सं. प्रहित, णाधिति प्रा. णाहिति सं. ज्ञास्यति आदि ।

लुप्त व्यंजनों के स्थान में महाराष्ट्री प्राकृत में मुख्यतया अस्मष्ट य श्रुति होती है, परन्तु जैन प्राकृत में त, ग, य, आदि वर्णों का आगम होता है ।

त का आगम—रातोवरोध सं. राजोपरोध, पूता सं. पूजा, पूतिय सं. पूजित, आमतमत सं. आमयमय, गुरुत्थाणीत सं. गुरुस्थानीय, चेतितागत सं. चैत्यगत, पातुणंतो सं. प्रगुणयन्, जवातू सं. यवागू, वीतपाल सं. बीजपाल आदि ।

ग का आगम—पागुन सं. प्रावृत, सगुण सं. शकुन आदि ।

य का आगम—पूयिय सं. पूजित, रयित सं. रचित, पयुम सं. पद्य, रयतगिह सं. रजतगृह, सम्मोयिआ सं. सम्मुद् आदि ।

जैन प्राकृत में कभी कभी शब्दों के प्रारम्भके स्वरों में त का आगम होता है । ये प्रयोग प्राचीन भाष्यचूर्णि और मूल आगम सूत्रों में भी देखे जाते हैं । तोपभोगतो सं. उपभोगतः, तूण सं. ऊन, तूहा सं. ऊहा, तेतेण सं. एतेण, तूका सं. यूका आदि ।

अनुस्वार के आगमवाले शब्द—गिंधी सं. गृद्धि, संली सं. श्याली, मुंदिका सं. मृद्वीका, अप्पणि सं. आत्मनि आदि ।

अनुस्वार का लोप—सस्सयित सं. संशयित आदि ।

प्राकृत भाषा में ह्रस्व-दीर्घस्वर एवं व्यंजनों के द्विर्भाव-एकीभाव का व्यत्यास बहुत हुआ करता है । इस ग्रंथ में ऐसे बहुत से प्रयोग मिलते हैं—आमसती सं. आमशति, अप्पणी सं. आत्मनी, णारिए सं. नार्याः, वुख सं. वृक्ष, णिखुड, णिकूड, कावकर, सयाण सं. सकर्ण आदि ।

जैसे प्राकृत में शालिवाहन शब्द का संक्षिप्त शब्दप्रयोग सालाहण होता है वैसे ही जैन प्राकृत में बहुत से संक्षिप्त शब्दप्रयोग पाये जाते हैं—साव और साग सं. श्रावक, उज्झा सं. उपाध्याय, कयार सं. कचवर, जागू सं. यवागू, रातण सं. राजादन आदि ।

इस ग्रन्थ में सिद्ध संस्कृत से प्राकृत बने हुए प्रयोग कई मिलते हैं—अभ्युत्तिष्ठति सं. अभ्युत्तिष्ठति, स्सा और सा सं. स्यात्, केयिच्च केचिच्च, कचि वचित्, अधीयता, अतप्परं सं. अतः परम्, अस सं. अस्य, याव सं. यावत्, वियाणीया सं. विजानीयात्, पस्से सं. पश्येत्, पते और पदे सं. पतेत्, पणिवते सं. प्रणिपतति, थिया सं. स्त्रियाः, पंथा, पेच्छते सं. प्रेक्षते, णिच्चसो, इस्सज्ज सं. ऐश्वर्य, ण्हाउ सं. स्नायु आदि ।

इस ग्रन्थ में नाम और आख्यात के कितनेक ऐसे रूप—प्रयोग मिलते हैं जो सामान्यतया व्याकरण से सिद्ध नहीं होते, फिर भी ऐसे प्रयोग जैन आगमग्रन्थों में एवं भाष्य—चूर्णि आदि प्राकृत व्याख्याओं में नजर आते हैं ।

अत्थाय चतुर्थी एकवचन, अचलाय थिय एनाय ण्हुसाय उदुणीय स्त्रीलिङ्ग तृतीया एकवचन, जारीय चुडिलीय णारीय णरिए णासाय फलकीय स्त्रीलिङ्ग षष्ठी एकवचन, अचलाय गयसालाय दरकडाय पमदायं विमुक्कायं दिसांज स्त्रीलिङ्ग सप्तमी एकवचन, अप्पणि अप्पणी लोकम्हि युत्तग्घम्हि कम्हियि सप्तमी एकवचन, सकाणि इमाणि अब्भंतराणि प्रथमा बहुवचन । पवेक्खयि सं. प्रवीक्षते, गच्छहि सं. गच्छ, जाणेज्जो सं. जानीयात्, वाइज्जो वाएज्जो सं. वाचयेत् वादयेत्, विभाएज्जो सं. विभाजयेत्, पवेदेज्जो सं. प्रवेदयेत् । ऐसे विभक्तिरूप और धातुरूपों के प्रयोग इस ग्रन्थ में काफी प्रमाण में मिलते हैं ।

इस ग्रन्थ में—पच्छेलित सं. प्रसेण्डित, पज्जोवत्त सं. पर्यपवर्त्त, पच्चोदार सं. प्रत्यपद्दार, रसोतीगिह सं. रसवतीगृह, दिहि सं. धृति, तालवेट तालवोट सं. तालवृन्त, गिंधि सं. गृद्धि, सस्सयित सं. संशयित, अवरण्ण सं. अपराह्ण, वगैरह प्राकृत प्रयोगों का संग्रह भी खूब है । एकवचन द्विवचन बहुवचन के लिये इस ग्रन्थ में एकभस्स दुभस्स—विभस्स और बहुभस्स शब्द का उल्लेख मिलता है ।

णिक्खुड णिक्खुड णिक्खुड णिक्खुड सं. निष्कुट, संली सल्ली सल्लिका सं. श्यालिका, विलया विलका सं. वनिता, सम्मोई सम्मोदी सम्मोयिआ सं. सम्मुद, वियाणेज्ज—ज्जा—ज्जो वियाणीया—वियाणेय विजाणिता सं. विजानीयात् धीता धीया धीतर धीतरी धीतु सं. दुहितृ वगैरह एक ही शब्द के विभिन्न प्रयोग भी काफी हैं । आलिग्गेनेस्स सं. आलिङ्गेदेतस्य वुत्ताणेकविंसति सं. उक्तान्येकविंशतिः जैसे संधिप्रयोग भी हैं । कितनेक ऐसे प्रयोग भी हैं जिनके अर्थ की कल्पना करना भी मुश्किल हो जाय; जैसे कि परिसाहसतो सं. पर्वद्धर्षकः आदि ।

यहाँ विप्रकीर्णरूप से प्राचीन जैन प्राकृत के प्रयोगों की विविधता एवं विषमता के विषय में जो जो उदाहरण दिये गये हैं उनमें से कोई दो—पाँच उदाहरणों को बाद करके बाकी के सभी इस ग्रन्थ के ही दिये गये हैं जिनके स्थानों का पता ग्रन्थ के अन्त में छपे हुए कोश को (परिशिष्ट २) देखने से लग जायगा ।

अंगविज्जाशास्त्र का आंतर स्वरूप

अङ्गविज्जाशास्त्र यह एक फलादेश का महाकाय ग्रन्थ है । यह ग्रन्थ ग्रह—नक्षत्र—तारा आदि के द्वारा या जन्मकुण्डली के द्वारा फलादेश का निर्देश नहीं करता है किन्तु मनुष्य की सहज प्रवृत्ति के निरीक्षण द्वारा फलादेश का निरूपण करता है । अतः मनुष्य के हलन—चलन और रहन—सहन आदि के विषय में विपुल वर्णन इस ग्रन्थ में पाया जाता है ।

यह ग्रन्थ भारतीय वाङ्मय में अपने प्रकार का एक अपूर्वसा महाकाय ग्रन्थ है । जगतभर के वाङ्मयमें इतना विशाल, इतना विशद महाकाय ग्रन्थ दूसरा एक भी अद्यापि पर्यंत विद्वानों की नजर में नहीं आया है ।

इस शास्त्र के निर्माता ने एक बात स्वयं ही कबूल कर ली है कि इस शास्त्र का वास्तविक परिपूर्ण ज्ञाता कितनी भी सावधानी से फलादेश करेगा तो भी उसके सोलह फलादेशों में से एक असत्य ही होगा, अर्थात् इस शास्त्र की यह एक त्रुटि है । यह शास्त्र यह भी निश्चितरूप से निर्देश नहीं करता कि सोलह फलादेशों में से कौनसा असत्य होगा । यह शास्त्र इतना ही कहता है कि “सोलस वाकरणाणि वाकरेहिसि, ततो पुण

एकं चुक्किहिसि, पण्णरह अच्चिड्डाणि भासिहिसि, ततो अजिणो जिणसंकासो भविहिसि” पृष्ठ २६५, अर्थात् “सोलह फलादेश तू करेगा उनमें से एकमें चूक जायगा, पनरहको संपूर्ण कह सकेगा—बतलाएगा, इससे तू केवलज्ञानी न होने पर भी केवली समान होगा ।”

इस शास्त्र के ज्ञाता को फलादेश करने के पहले प्रश्न करनेवालेकी क्या प्रवृत्ति है ? या प्रश्न करनेवाला किस अवस्था में रहकर प्रश्न करता है ? इसके तरफ उसको खास ध्यान या खयाल रखने का होता है । प्रश्न करनेवाला प्रश्न करने के समय अपने कौन-कौन से अङ्गों का स्पर्श करता है ? वह बैठ के प्रश्न करता है या खड़ा रहकर प्रश्न करता है ? रोता है या हँसता है ? वह गिर जाता है, सो जाता है, विनीत है या अविनीत ? उसका आना-जाना, आलिंगन-चुम्बन करना, रोना, विलाप करना या आक्रन्दन करना, देखना, बात करना वगैरह सब क्रियाओं की पद्धति को देखता है; प्रश्न करनेवाले के साथ कौन है ? क्या फलादि लेकर आया है ? उसने कौन से आभूषण पहने हैं वगैरह को भी देखता है और बाद में अङ्गविद्या का ज्ञाता फलादेश करता है ।

इस शास्त्र के परिपूर्ण एवं अतिगंभीर अध्ययन के बिना फलादेश करना एकाएक किसी के लिये भी शक्य नहीं है । अतः कोई ऐसी सम्भावना न कर बैठे कि इस ग्रन्थ के सम्पादक में ऐसी योग्यता होगी । मैंने तो इस वैज्ञानिक शास्त्र को वैज्ञानिक पद्धति से अध्ययन करने वालों को काफी साहाय्य प्राप्त हो सके इस दृष्टि से मेरेको मिले उतने इस शास्त्र के प्राचीन आदर्श और एतद्विषयक इधर-उधर की विपुल सामग्री को एकत्र करके, हो सके इतनी केवल शाब्दिक ही नहीं किन्तु आर्थिक संगतिपूर्वक इस शास्त्र को शुद्ध बनाने के लिये सुचारु रूप से प्रयत्नमात्र किया है । अन्यथा मैं पहिले ही कह चुका हूँ कि काफी प्रयत्न करने पर भी इस ग्रन्थ की अति प्राचीन भिन्न भिन्न कुल की शुद्ध प्रतियाँ काफी प्रमाण में न मिलने के कारण अब भी ग्रन्थ में काफी खंडितता और अशुद्धियाँ रह गई हैं । मैं चाहता हूँ कि कोई विद्वान् इस वैज्ञानिक विषय का अध्ययन करके इसके मर्म का उद्घाटन करे ।

ऊपर कहा गया उस मुताबिक कोई वैज्ञानिक दृष्टिवाला फलादेश की अपेक्षा इस शास्त्र का अध्ययन करे तो यह ग्रन्थ बहुत कीमती है—इसमें कोई फर्क नहीं है । फिरभी तात्कालिक दूसरी दृष्टि से अगर देखा जाय तो यह ग्रन्थ कई अपेक्षा से सहत्व का है । आयुर्वेदज्ञ, वनस्पतिशास्त्री, प्राणीशास्त्री, मानसशास्त्री, समाजशास्त्री, ऐतिहासिक वगैरह को इस ग्रन्थ में काफी सामग्री मिल जायगी । भारत के सांस्कृतिक इतिहासप्रेमियों के लिये इस ग्रन्थ में विपुल सामग्री भरी पड़ी है । प्राकृत और जैन प्राकृत व्याकरणज्ञों के लिये भी सामग्री कम नहीं है । भविष्य में प्राकृत कोश के रचयिता को इस ग्रन्थ का साद्यन्त अवलोकन नितान्त आवश्यक होगा ।

सांस्कृतिक सामग्री

इस अंगविद्या ग्रन्थ का मुख्य सम्बन्ध मनुष्यों के अंग एवं उनकी विविध क्रिया-चेष्टाओं से होने के कारण इस ग्रन्थ में अंग एवं क्रियाओं का विशदरूप में वर्णन है । ग्रन्थकर्त्ताने अंगों के आकार-प्रकार, वर्ण, संख्या, तोल, लिङ्ग, स्वभाव आदि को ध्यान में रखकर उनको २७० विभागों में विभक्त किया है [देखो परिशिष्ट ४] । मनुष्यों की विविध चेष्टाएँ, जैसे कि बैठना, पर्यस्तिका, आमर्श, अपश्रय-आलम्बन टेका देना, खड़ा रहना, देखना, हँसना, प्रश्न करना, नमस्कार करना, संलाप, आगमन, रुदन, परिदेवन, क्रन्दन, पतन, अभ्युत्थान, निर्गमन, प्रचलायित, जम्भाई लेना, चुम्बन, आलिंगन, सेवित आदि; इन चेष्टाओं को अनेकानेक भेद-प्रकारों में वर्णन भी किया है । साथ में मनुष्यके जीवन में होनेवाली अन्यान्य क्रिया-चेष्टाओं का वर्णन एवं अनेक एकार्थकों का भी निर्देश इस ग्रन्थ में दिया है । इससे सामान्यतया प्राकृत वाङ्मय में जिन क्रियापदों का उल्लेख-संग्रह नहीं हुआ है उनका संग्रह इस ग्रंथ में विपुलता से हुआ है, जो प्राकृत भाषा की समृद्धि की दृष्टि से बड़े महत्व का है [देखो तीसरा परिशिष्ट] ।

सांस्कृतिक दृष्टि से इस ग्रंथ में मनुष्य, तिर्यच अर्थात् पशु-पक्षि-क्षुद्रजन्तु, देव-देवी और वनस्पति के साथ सम्बन्ध रखनेवाले कितने ही पदार्थ वर्णित हैं [देखो परिशिष्ट ४] ।

इस ग्रन्थ में मनुष्य के साथ सम्बन्ध रखनेवाले अनेक पदार्थ, जैसे कि—चतुर्वर्ण विभाग, जाति विभाग, गोत्र, योनि—अटक, सगपण सम्बन्ध, कर्म—धंधा—व्यापार, स्थान—अधिकार, आधिपत्य, यान—वाहन, नगर—ग्राम—मंडब—द्रोणमुखादि प्रादेशिक विभाग, घर—प्रासादादि के स्थान—विभाग, प्राचीन सिक्के, भाण्डोपकरण, भाजन, भोज्य, रस सुरा आदि पेय पदार्थ, वस्त्र, आच्छादन, अलंकार, विविध प्रकार के तैल, अपश्रय—टेका देने के साधन, रत—सुरत क्रीडा के प्रकार, दोहद, रोग, उत्सव, वादित्र, आयुध, नदी, पर्वत, खनिज, वर्ण—रंग, मंडल, नक्षत्र, काल—वेला, व्याकरण विभाग, इन सब के नामादि का विपुल संग्रह है। तिर्यग्विभाग के चतुष्पद, परिसर्प, जलचर, सर्प, मत्स्य, क्षुद्रजन्तु आदि के नामादि का भी विस्तृत संग्रह है। वनस्पति विभाग के वृक्ष, पुष्प, फल, गुल्म, लता आदिके नामोंका संग्रह भी खूब है। देव और देवियों के नाम भी काफी संख्या में हैं। इस प्रकार मनुष्य, तिर्यच, वनस्पति आदि के साथ सम्बन्ध रखनेवाले जिन पदार्थों का निर्देश इस ग्रंथ में मिलता है, वह भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता की दृष्टि से अति महत्त्व का है। आश्चर्य की बात तो यह है कि ग्रंथकार आचार्य ने इस शास्त्र में एतद्विषयक प्रणालिकानुसार वृक्ष, जाति और उनके अंग, सिक्के, भाण्डोपकरण, भाजन, भोजन, पेयद्रव्य, आभरण, वस्त्र, आच्छादन, शयन, आसन, आयुध, क्षुद्रजन्तु आदि जैसे जड़ एवं क्षुद्रचेतन पदार्थों को भी इस ग्रन्थ में पुं—स्त्री—नपुंसक विभाग में विभक्त किया है। इस ग्रंथ में सिर्फ इन चीजों के नाममात्र ही मिलते हैं, ऐसा नहीं किन्तु कई चीजों के वर्णन और उनके एकार्थक भी मिलते हैं। जिन चीजों के नामों का पता संस्कृत—प्राकृत कोश आदि से न चले, ऐसे नामों का पता इस ग्रन्थ के सन्दर्भों को देखने से चल जाता है।

इस ग्रंथ में शरीरके अङ्ग, एवं मनुष्य—तिर्यच—वनस्पति—देव—देवी वगैरहके साथ संबंध रखनेवाले जिन—जिन पदार्थों के नामों का संग्रह है वह तद्विषयक विद्वानों के लिये अति महत्त्वपूर्ण संग्रह बन जाता है। इस संग्रह को भिन्न भिन्न दृष्टि से गहराईपूर्वक देखा जायगा तो बड़े महत्त्व के कई नामों का तथा विषयों का पता चल जायगा। जैसे कि—क्षत्रप राजाओं के सिक्कों का उल्लेख इस ग्रन्थ में खत्तपको नाम से पाया जाता है [देखो अ० ९ श्लोक १८६]। प्राचीन खुदाईमेंसे कितने ही जैन आयागपट मीले हैं, फिर भी आयाग शब्द का उल्लेख—प्रयोग जैन ग्रन्थों में कहीं देखने में नहीं आता है, किन्तु इस ग्रन्थ में इस शब्द का उल्लेख पाया जाता है [देखो पृष्ठ १५२, १६८]। सहितमहका नाम, जो श्रावस्ती नगरी का प्राचीन नाम था उसका भी उल्लेख इस ग्रन्थ में अ० २६, श्लो. १५३ में नजर आता है। इनके अतिरिक्त आजीवक, दुपहारक आदि अनेक शब्द एवं नामादिका संग्रह—उपयोग इस ग्रन्थ में हुआ है जो संशोधकों के लिये महत्त्व का है।

परिशिष्टों का परिचय

इस ग्रन्थ के अन्त में ग्रन्थ के नवीनतमरूप पाँच परिशिष्ट दिये गये हैं। उनका संक्षिप्त परिचय यहाँ दिया जाता है।

प्रथम परिशिष्ट—इस परिशिष्ट में अङ्गविद्या के साथ सम्बन्ध रखनेवाले एक प्राचीन अङ्गविद्या विषयक अपूर्ण ग्रन्थ को प्रकाशित किया है। इस ग्रन्थ का आदि—अन्त न होने से यह कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ है या किसी ग्रन्थ का अंश है—यह निर्णय मैं नहीं कर पाया हूँ।

दूसरा परिशिष्ट—इस परिशिष्ट में अङ्गविज्जा शास्त्र के शब्दों का अकारादि क्रम से कोश दिया गया है जिसमें अङ्गविज्जा के साथ सम्बन्ध रखनेवाले सब विषयों के विशिष्ट एवं महत्त्व के शब्दों का संग्रह किया है। प्रायोगिक दृष्टि से जो शब्द महत्त्व के प्रतीत हुए हैं इनका और देश्य शब्दादिका भी संग्रह इसमें किया है। जिन शब्दों के अर्थादि का पता नहीं चला है वहाँ (?) ऐसा प्रश्नचिह्न रखा है। इसके अतिरिक्त प्रायः सभी शब्दों का किसी न किसी रूप में परिचयादि दिया है। सिद्धसंस्कृत प्रयोगादि का भी संग्रह किया है। इस तरह प्राकृत भाषा एवं सांस्कृतिक दृष्टि से इसको महद्भिक बनाने का यथाशक्य प्रयत्न किया है।

तीसरा परिशिष्ट—इस परिशिष्ट में अङ्गविज्जाशास्त्रमें प्रयुक्त क्रियारूपोंका संग्रह है । जो संग्रह प्राकृत भाषाविदोंके लिये बहुमूल्य खजानारूप है । प्राकृत वाङ्मयके दूसरे किसी भी ग्रन्थमें इतने क्रियापदों का संग्रह मिलना सम्भावित नहीं है ।

चौथा परिशिष्ट—इस परिशिष्ट में मनुष्य के अङ्गों के नामों का संग्रह है, जिसको मैंने औचित्यानुसार तीन विभागों में विभक्त किया है । पहले विभाग में स्थाननिर्देशपूर्वक अकारादिक्रम से अङ्गविज्जा शास्त्र में प्रयुक्त अङ्गोंके संग्रह हैं । दूसरे विभागमें अङ्गविज्जाशास्त्रप्रणेताने मनुष्यके अङ्गोंके आकास-प्रकारादि को लक्ष्य में रखकर जिन २७० द्वारों में—प्रकारों में उनको विभक्त किया है उन द्वारोंके नामोंका अकारादिक्रम से संग्रह है । तीसरे विभाग में ग्रन्थकर्ताने जिन अङ्गोंका समावेश किया है, उनका यथाद्वारविभाग संग्रह किया है । यथाद्वारविभाग यह अङ्गनामोंका संग्रह अकारादिक्रमसे नहीं दिया गया है, किन्तु ग्रन्थकारने जिस क्रमसे अङ्गनामोंका निर्देश किया है उसी क्रमसे दिया है । इसका कारण यह है कि इस शास्त्रमें अङ्गोंके कितने ही नाम ऐसे हैं जिनका वास्तविक रूपसे पता नहीं चलता है कि इस नाम से शरीरका कौनसा अंग अभिप्रेत है । इस दशामें ग्रन्थकारका दिया हुआ क्रम ही तद्विदोंके लिये कल्पना एवं निर्णयका साधन बन सकता है ।

पाँचवाँ परिशिष्ट—इस परिशिष्टमें अङ्गविज्जा शास्त्रमें आनेवाले सांस्कृतिक नामोंका संग्रह है । यह संग्रह मनुष्य, तिर्यच, वनस्पति व देव-देवी विभागमें विभक्त है । ये विभाग भी अनेकानेक विभाग, उपविभाग प्रविभागोंमें विभक्तरूपसे दिये गये हैं । सांस्कृतिक दृष्टिसे यह परिशिष्ट सब परिशिष्टोंसे बड़े महत्वका है । इस परिशिष्टको देखनेसे विद्वानोंको अनेक बातें लक्ष्यमें आ जायेंगी ।

इस परिशिष्टको देखनेसे यह पता चलता है कि प्राचीन काल में अपने भारतमें वर्ण-जाति-गोत्र-सगण-सम्बन्ध-अटक वगैरह किस प्रकारके होते थे, लोगोंकी नामकरण विषयमें क्या पद्धति थी, नगर-गाँव-प्र(प्रा)कारादि की रचना किस ढंगकी होती थी, लोगोंके मकान शाला और उनमें अवान्तर विभाग कैसे होते थे, कौनसे रंग-वर्णमृत्तिका आदिका उपयोग होता था, लोगोंकी आजीविका किस-किस व्यापारसे चलती थी, प्रजामें कैसे-कैसे अधिकार और आधिपत्यका व्यवहार था, उनके स्थान-शयन-आसन-तकिया-यान-वाहन-बरतन-गृहोपस्कर कैसे थे, लोगोंके वेष-विभूषा अलंकार-इत्र-तैलादिविषयक शौक किस प्रकार का था, लोगोंका व्यापार किस किस प्रकारके सिक्कोंके आदान-प्रदान से चलता था, लोगोंके खाद्य पेय पदार्थ क्या क्या थे, लोकसमूह में कौन से उत्सव प्रवर्तमान थे, लोगोंको कौनसे रोग होते थे ? ये और इनके अतिरिक्त दूसरी बहुतसी बातों का पृथक्करण विद्वद्गण अपने आप ही कर सकता है ।

अंगविज्जा ग्रन्थ का अध्ययन और अनुवाद

कुछ विद्वानों का कहना है कि इस ग्रन्थ का अनुवाद किया जाय तो अच्छा हो । इस विषय में मेरा मन्तव्य इस प्रकार है —

फलादेशविषयक यह ग्रन्थ एक पारिभाषिक ग्रन्थ है । जबतक इसकी परिभाषाका पता न लगाया जाय तबतक इस ग्रन्थके शाब्दिक मात्र अनुवाद का कोई महत्व नहीं है । इसलिये इस ग्रन्थके अनुवादक को प्रथम तो इसकी परिभाषाका पता लगाना होगा और एतद्विषयक अन्यान्य ग्रन्थ देखने होंगे । जैसे कि इस ग्रन्थ के अंतमें प्रथम परिशिष्ट रूपसे छपे हुए ग्रन्थ और उसकी व्याख्यामें निर्दिष्ट पराशरी संहिता जैसे ग्रन्थोंका गहराईसे अवलोकन करना होगा । इतना करने पर भी ग्रन्थकी परिभाषाका ज्ञान यह महत्वकी बात है । अगर इसकी परिभाषाका पता न लगा तो सब अवलोकन व्यर्थप्राय है और तात्त्विक अनुवाद करना अशक्य-सी बात है । दूसरी बात यह भी है कि यह ग्रन्थ यथासाधन यद्यपि काफी प्रमाण में शुद्ध हो चुका है, फिर भी फलादेश करने की अपेक्षा इसका संशोधन अपूर्ण ही है । चिरकालसे इसका अध्ययन-अध्यापन न होने के कारण इस

ग्रन्थ में अब भी काफी त्रुटियाँ वर्तमान हैं । जैसे कि ग्रन्थ कई जगह खंडित है, अङ्ग आदि की संख्या सब जगह बराबर नहीं मिलती और सम-विषम भी हैं, इसमें निर्दिष्ट पदार्थोंकी पहचान भी बराबर नहीं होती है, अङ्गशास्त्र के साथ सम्बन्ध रखनेवाले पदार्थोंका फलादेशमें क्या और कैसा उपयोग है ? इसकी परिभाषा का कोई पता नहीं है । इस तरह इस ग्रन्थका वास्तविक अनुवाद करना हो तो इस ग्रन्थका साद्यन्त अध्ययन, अनुषङ्गिक ग्रन्थोंका अवलोकन और एतद्विषयक परिभाषा का ज्ञान होना नितान्त आवश्यक है ।

आभार स्वीकार

इस ग्रन्थ के संशोधनके लिये जिन महानुभावोंने अपने ज्ञानभंडारोंकी महामूल्य हाथपोथियाँ भेजकर और चिरकाल तक धीरज रखकर साहाय्य किया है उनका धन्यवाद पुरःसर मैं आभारी हूँ । साथ साथ पाटली निवासी पंडित भाई श्री नगीनदास केशलशी शाह, जिन्होंने इस ग्रन्थ की प्राचीन प्रतियों के आधार पर विश्वस्त नकल (प्रेसकोपी) करना, कई प्रतियों के विश्वस्त पाठभेद लेना, एवं प्रूफपत्रों को प्रेसकापी और हाथपोथियों के साथ मिलाना आदि द्वारा काफी साहाय्य किया है, उनको मैं अपने हृदय से कभी नहीं भूल सकता हूँ । इसका साहाय्य मेरेको आदि से अन्त तक रहा है, जिसकी याद मेरे अन्तःकरण में जीवनभर रहेगी ।

अन्त में मेरा इतना ही निवेदन है कि इस ग्रन्थ के संशोधनादि के लिये मैंने काफी परिश्रम किया है, फिर भी इस ग्रन्थ में त्रुटियाँ रह ही गई हैं, जिनका परिमार्जन विद्वद्गण करें और जिन त्रुटियोंका उन्हें पता चले उनकी सूचना मेरे को देने की कृपा करें ।

जैन उपाश्रय

मुनि पुण्यविजय

लूणसावाडा—अहमदाबाद

॥ जयन्तु वीतरागाः ॥

अंगविज्जापइण्णय—विषयानुक्रम

पद्य	विषय	पत्र
१-३६	१ पहला अंगोत्पत्ति अध्याय	१-३
१-९	अंगविद्या की उत्पत्ति	१
१०-२०	अंगविद्या का स्वरूप	१-२
२१-३६	अंगविद्या प्रकीर्णक ग्रन्थ के अध्यायों के नाम	२-३
	२ दूसरा निजसंस्तव अध्याय	३
१-५४	३ तीसरा शिष्योपख्यापन अध्याय	३-५
	अंगविद्याशास्त्र को पढ़नेवाले शिष्यों की योग्यायोग्यता, उनके गुण-दोष और अंगशास्त्र पठन के योग्य और अयोग्य स्थान-जगह का वर्णन	
	४ चौथा अंगस्तव अध्याय	५-६
	अंगविद्या का माहात्म्य	
	५ पाँचवाँ मणिस्तव अध्याय	६
	अंगविद्या के पारंगत मणिस्वरूप महापुरुषों की स्तुति	
	६ छठा आधारण अध्याय	७
	अंगविद्याशास्त्रज्ञ गंभीर होकर प्रश्न करनेवाले के प्रश्न का श्रवण एवं अवधारण करे-इस विधिका वर्णन ।	
	७ सातवाँ व्याकरणोपदेश अध्याय	७
	अंगविद्याशास्त्रज्ञ गंभीर होकर फलादेश करे - इस विधि का कथन ।	
	८ आठवाँ भूमीकर्म अध्याय	८-५६
	(१) गद्यबंध संग्रहणीपटल	८-९
	अंगविद्या की भूमी को साध्य करने की विद्यायें एवं भूमीकर्म अध्याय के पटलोंमें वर्णनीय विषयों का निर्देश ।	
१-१८	(२) पद्यबंध संग्रहणीपटल	९-१०
	भूमीकर्म अध्याय के पटलों में वर्णनीय विषयों का निर्देश ।	
१-२८	(३) भूमीकर्म सत्त्वसमुद्देश पटल	१०-११
	भूमीकर्म अध्याय के ज्ञान में ध्यान रखने योग्य वस्तु का निर्देश ।	

१-४८

(४) आत्मभावपरीक्षा पटल

११-१३

अंगविद्या शास्त्रज्ञ की फलादेश करने के समय अपनी दश प्रकार की परिस्थिति और तदनुसार प्रश्न का फलादेश ।

१-११

(५) निमित्तोपधारणा पटल

१३

१-१२६

(६) आसनाध्याय पटल

१३-१८

१-४० बत्तीस प्रकार के आसन-बैठने के प्रकार और तदनुसार प्रश्न का फलादेश ।

१३-१५

४१-१२६ बैठने के प्रकारान्तर, बैठने की दिशा, एवं बैठने के मंचक, पल्यंक, भद्रासन आदि साधनों का निर्देश और तदनुसार प्रश्न का फलादेश ।

१५-१८

१-९४

(७) पर्यस्तिका पटल

१८-२१

बाईस प्रकार की पर्यस्तिकायें, उनके भेद-उपभेद तदनुसार प्रश्न का फलादेश ।

१-१६२

(८) आमासगंडिका पटल

२१-२६

एकसौ आठ आमर्ष-स्पर्श के प्रकार और तदनुसार प्रश्न का फलादेश ।

१-१५८

(९) अपश्रय पटल

२६-३१

सत्रह प्रकार के अपश्रय-टेका लेने के प्रकार, उसके उपभेद और तदनुसार प्रश्न का फलादेश ।

१-६०

(१०) स्थित पटल

३१-३३

अट्ठाईस खड़े रहने के प्रकार और तदनुसार प्रश्न का फलादेश

१-३१

(११) प्रेक्षितविभाषा पटल

३४-३५

दस देखने के प्रकार और तदनुसार प्रश्न का फलादेश

१-३०

(१२) हसितविभाषा पटल

३५-३६

चौदह प्रकार का हँसना और तदनुसार प्रश्न का फलादेश

१-७५

(१३) पृष्ठ पटल

३६-३८

पृष्ठ के-प्रश्न करने के तीन, चार, आठ, चौबीस वगैरह प्रकार और तदनुसार प्रश्न का फलादेश

१-३३

(१४) वंदितविभाषा पटल

३८-३९

सोलह प्रकार के वंदन-नमस्कार और तदनुसार प्रश्न का फलादेश

१-३७

(१५) संलापविधि पटल

४०-४१

बीस प्रकार के संलाप और तदनुसार प्रश्न का फलादेश

१-३६

(१६) आगतविभाषा पटल

४१-४२

आगमन-आने के सोलह प्रकार और तदनुसार प्रश्न का फलादेश

१-२६

(१७) रुदतविभाषा पटल

४२-४३

रोने के बीस प्रकार और तदनुसार प्रश्न का फलादेश

१-१	(१८) परिदेवितविभाषा पटल	४३
	परिदेवितके तेरह प्रकार और तदनुसार प्रश्न का फलादेश	
१-७	(१९) विक्रंदित पटल	४४
	विक्रंदित के आठ प्रकार और तदनुसार प्रश्न का फलादेश	
१-३७	(२०) पतितविभाषा पटल	४४-४५
	पतन के आठ प्रकार और तदनुसार प्रश्न का फलादेश	
१-२१	(२१) आत्मोत्थितविभाषा पटल	४५-४६
	अपने आप उठने के इक्कीस प्रकार और तदनुसार प्रश्न का फलादेश	
१-८	(२२) निर्गत पटल	४६
	निर्गम के ग्यारह प्रकार और तदनुसार प्रश्न का फलादेश	
१-९	(२३) प्रचलायितविभाषा पटल	४६-४७
	प्रचलायितके सात प्रकार और तदनुसार प्रश्न का फलादेश	
१-१८	(२४) जृम्भितविभाषा पटल	४७
	जृम्भित-जम्भाई के सात प्रकार, उसके उपभेद और तदनुसार प्रश्नका फलादेश	
१-७	(२५) जल्पितविभाषा पटल	४७-४८
	जल्पित के सात प्रकार और तदनुसार प्रश्न का फलादेश	
१-४२	(२६) चुंबितविभाषा पटल	४८-४९
	सोलह प्रकार का चुंबन, एवं चुंबन के दूसरे अनेक प्रकार और तदनुसार प्रश्न का फलादेश	
१-६७	(२७) आर्लिगित पटल	४९-५१
	आर्लिगन के चौदह प्रकार और तदनुसार प्रश्न का फलादेश	
१-४२	(२८) निपन्नविभाषा पटल	५१-५३
	निपन्न के बारह प्रकार और तदनुसार प्रश्न का फलादेश	
१-७९	(२९) सेवितविभाषा पटल	५३-५६
	सेवित के बत्तीस प्रकार और तदनुसार प्रश्न का फलादेश	
१-१६	(३०) भूमीकर्मसत्त्वगुणविभाषा पटल	५६
	भूमिकर्म अध्याय के अधिकारी के गुण और योग्यता	
१-१८६८	९ नववाँ अंगमणी अध्याय	५७-१२९
	मणिसूत्र	५७-५९
	अंगमणि अध्याय में वर्णनीय २७० द्वारों का निर्देश	
१-१९२	(१) पिचत्तर पुण्णाम	५९-६६
१-५९	पिचत्तर पुण्णामक-पुरुषजातीय अङ्गों के नाम और उनके स्पर्शानुसार फलादेश	
६०-६५	पुरुषजातीय मनुष्यनाम	
६६-७३	पुरुषजातीय देवयोनिकनाम	

७४-८०	पुरुषजातीय	चतुष्पद तिर्यग्योनिकनाम
८१-८८	पुरुषजातीय	पक्षि तिर्यग्योनिकनाम
८९-९४	पुरुषजातीय	जलचर पस्सिर्प तिर्यग्योनिक मत्स्यजातिके नाम
९५-९७	पुरुषजातीय	स्थलचर पस्सिर्प तिर्यग्योनिक सर्पजातिके नाम
९८-११०	पुरुषजातीय	वृक्ष के नाम
१११-११५	पुरुषजातीय	गुल्म के नाम
११६-१२४	पुरुषजातीय	पुष्प के नाम
१२५-१३०	पुरुषजातीय	फल के नाम
१३१-१३४	पुरुषजातीय	पेयद्रव्य आसन-घृत आदि के नाम
१३५-१४०	पुरुषजातीय	भोज्यपदार्थों के नाम
१४१-१४६	पुरुषजातीय	वस्त्रों के नाम
१४७-१६२	पुरुषजातीय	आभूषणों के नाम
१६३-६९	पुरुषजातीय	भाजनों के नाम
१७०-७३	पुरुषजातीय	शयन आसन और यान के नाम
१७४-८२	पुरुषजातीय	भाण्डोपकरण के नाम
१८३-८४	पुरुषजातीय	धान्य के नाम
१८५-८६	पुरुषजातीय	धन-सिक्कों के नाम
१८७-९२	पिचत्तर पुरुषजातीय	समानार्थक शब्द

१९३-३७४

(२) पिचहत्तर स्त्रीनाम

६६-७२

१९३-२४४	पिचत्तर स्त्रीनामक-स्त्रीजातीय अङ्गों के नाम और उनके स्पर्शानुसार फलादेश
२४५-७०	स्त्रीजातीय मनुष्यनाम
२७१-८०	स्त्रीजातीय देवयोनिकनाम
२८१-८६	स्त्रीजातीय चतुष्पद तिर्यग्योनिक नाम
२८७-९२	स्त्रीजातीय पक्षि तिर्यग्योनिक नाम
२९३-९५	स्त्रीजातीय जलचर पस्सिर्प तिर्यग्योनिक मत्स्यजातिके नाम
२९६-३००	स्त्रीजातीय स्थलचर पस्सिर्प तिर्यग्योनिक जन्तुओंके नाम
३०१-१२	स्त्रीजातीय वृक्ष गुल्म लताओं के नाम
३१३-२२	स्त्रीजातीय पुष्पों के नाम
३२३-२७	स्त्रीजातीय फलों के नाम
३२८-३५	स्त्रीजातीय भोज्यपदार्थों के नाम
३३६-४१	स्त्रीजातीय वस्त्रों के नाम
३४२-५०	स्त्रीजातीय आभूषणों के नाम
३५१-५३	स्त्रीजातीय शयन आसन और यान के नाम
३५४-५६	स्त्रीजातीय भाजनों के नाम
३५७-६२	स्त्रीजातीय भाण्डोपकरण के नाम
३६३-६५	स्त्रीजातीय आयुधों के नाम
३६६-७४	स्त्रीजातीय एकार्थक शब्द

३७५-४०५	(३) अट्टावन नपुंसक नाम	७२-७३
३७५-९९	अट्टावन नपुंसकजातीय अंगों के नाम और उनके स्पर्शानुसार फलादेश	
४००-४०५	नपुंसकजातीय नामों का निर्देश	
४०६-४४१	(४) सतरह दक्षिण	७३-७४
	सतरह दक्षिण-दाहिने अंगों के नाम, स्पर्शानुसार फलादेश, और दक्षिण के एकार्थक-समानार्थक	
४४२-७९	(५) सतरह वाम	७५-७६
	सतरह वाम-बायें अंगों के नाम, स्पर्शानुसार फलादेश और वाम के एकार्थक	
४८०-५२१	(६) सतरह मध्यम	७६-७६
	सतरह मध्यम अङ्गों के नाम, स्पर्शानुसार फलादेश और मध्यम के एकार्थक-समानार्थक	
५२२-६४	(७) अट्टाईस दृढ	७७-७९
	अट्टाईस चल अंगों के नाम, स्पर्शानुसार फलादेश और दृढ के समानार्थक	
५६५-६१६	(८) अट्टाईस चल	७९-८०
	अट्टाईस चल अंगों के नाम, स्पर्शानुसार फलादेश और चल के समानार्थक ६०१-६१० इन पद्यों में प्राकृत क्रियापदों का विपुल संग्रह है	
६१७-५६	(९) सोलह अतिवृत्त	८१-८२
	सोलह अतिवृत्त-अतिक्रान्त अंगों के नाम, स्पर्शानुसार फलादेश और उनके समानार्थक ६४४-५० इन पद्यों में प्राकृत क्रियापदों का विपुल संग्रह है	
६५७-९६	(१०) सोलह वर्तमान	८२-८३
	सोलह वर्तमान अंगों के नाम, उनके स्पर्शानुसार फलादेश और उनके समानार्थक ६८४-९१ इन पद्यों में प्राकृत क्रियापदों का विपुल संग्रह है	
६९६-७३४	(११) सोलह अनागत	८३-८४
	सोलह अनागत अंगों के नाम, स्पर्शानुसार फलादेश और समानार्थक ७२०-२९ इन पद्यों में प्राकृत क्रियापदों का विपुल संग्रह है	
७३५-७१	(१२) पचास अभ्यन्तर	८४-८६
	पचास अभ्यन्तर अंगों के नाम, स्पर्शानुसार फलादेश और समानार्थक	
७७२-८०६	(१३) पचास अभ्यन्तराभ्यन्तर	८६-८७
	पचास अभ्यन्तराभ्यन्तर अंगों के नामों का अतिदेश, स्पर्शानुसार फलादेश और एकार्थक ७९७-८०१ इन पद्यों में प्राकृत क्रियापदों का संग्रह है	
८०७-३६	(१४) पचास बाहिराभ्यन्तर	८७-८८
	पचास बाहिराभ्यन्तर अंगों के नामों का अतिदेश, स्पर्शानुसार फलादेश और एकार्थक	

८३७-५६

(१५) पचास अभ्यन्तर बाहिर

८८

पचास अभ्यन्तर बाहिर अंगों के नामों का अतिदेश, स्पर्शानुसार फलादेश और एकार्थक

८५७-७६

(१६) पचास बाहिर

८९

पचास बाहिर अंगों के नामों का अतिदेश, उनके स्पर्शानुसार फलादेश और समानार्थक

८७७-९९

(१७) पचास बाहिर बाहिर

८९-९०

पचास बाहिर अंगों के नामों का अतिदेश, स्पर्शानुसार फलादेश और समानार्थक

९००-१६

(१८) पचास ओवात-अवदात

९०-९१

पचास ओवात अंगों के नामों का अतिदेश, स्पर्शानुसार फलादेश और समानार्थक

९१७-३२

(१९) पचास सामोवात-श्यामावदात

९१

पचास सामोवात अंगों के नामों का अतिदेश, स्पर्शानुसार फलादेश और एकार्थक

९३३-४६

(२०) पचास श्याम

९१-९२

पचास श्याम अंगों के नामों का अतिदेश, स्पर्शानुसार फलादेश और एकार्थक

९४७-६५

(२१-२२) पचास श्यामकृष्ण और कृष्ण

९२

पचास श्यामकृष्ण और कृष्ण अंगों के नामों का अतिदेश, स्पर्शानुसार फलादेश और समानार्थक

(२३-२४) पचास अध्यवदात और अतिकृष्ण

९२

९६६-९६

(२५) बीस उत्तम

९३

बीस उत्तम अंगों के नामों का अतिदेश, उनके स्पर्शानुसार फलादेश और एकार्थक

९९७-१०१०

(२६) चौदह मध्यम

९४

चौदह मध्यम अंगों के नाम, स्पर्शानुसार फलादेश और एकार्थक

१०११-१४

(२७) चौदह मध्यमानन्तर

९४

चौदह मध्यमानन्तर अंगों के नाम, स्पर्शानुसार फलादेश और समानार्थक

१०१५-३७

(२८) दस जघन्य

९४-९५

दस जघन्य अंगों के नाम, स्पर्शानुसार फलादेश और समानार्थक

१०३८-५४

(२९) दो उत्तम मध्यम साधारण

९५-९६

दो उत्तम मध्यम साधारण अंगों के नाम, उनके स्पर्शानुसार फलादेश और समानार्थक

१०५५-५८

(३०) दो मध्यम मध्यम साधार

९६

दो मध्यम मध्यम साधारण अंगों के नाम, स्पर्शानुसार फलादेश और समानार्थक

१०५९-६६

(३१) दो मध्यमानन्तर मध्यम साधारण

९६

दो मध्यमानन्तर मध्यम साधारण अंगों के नाम, स्पर्शानुसार फलादेश और समानार्थक

१०६७-७२

(३२) दो मध्यमानन्तर जघन्य साधारण

९६

दो मध्यमानन्तर जघन्य साधारण अंगों के नाम, स्पर्शानुसार फलादेश और समानार्थक

१०७३-९५

(३३) दस बालेय

१७

दस बालेय अंगों के नाम, स्पर्शानुसार फलादेश और समानार्थक
१०८६-८९ इन षष्ठों में मनुष्य के संस्कारोत्सवों के नाम हैं

१०९६-११२७

(३४) चौदह यौवनस्थ

१७-१८

चौदह यौवनस्थ अंगों के नाम, स्पर्शानुसार फलादेश और समानार्थक

११२८-४८

(३५) चौदह मध्यमवयस्क

१९

चौदह मध्यमवयःस्थ अंगों के नाम, स्पर्शानुसार फलादेश और समानार्थक

११४९-७४

(३६) बीस महावयस्क

१९-१००

बीस महावयःस्थ अंगों के नाम, उनके स्पर्शानुसार फलादेश और समानार्थक

११७५-८०

(३७-३९) वयः साधारण

१००

३७ दो बाल यौवनस्थ साधारण, ३८ दो यौवनस्थ मध्यमवय साधारण,
३९ दो मध्यमवय महावय साधारण अंगों के नाम और फलादेश का अतिदेश

११८१-९३

(४०) बीस ब्रह्मेय

१०१

बीस ब्रह्मेय अंगों के नाम, फलादेश और एकार्थक

११९४-९९

(४१) चौदह क्षत्रेय

१०१

चौदह क्षत्रिय अंगों के नाम, फलादेश और समानार्थक

१२००-५

(४२) चौदह वैश्येय

१०१-२

चौदह वैश्य अंगों के नाम, फलादेश और समानार्थक

१२०६-११

(४३) दस शूद्रेय

१०२

दस शूद्र अंगों के नाम, फलादेश और एकार्थक

१२१२-४१

(४४-४६) चतुर्वर्णविधान

१०२-४

१२४२-४५

(४७-५३) आयुःप्रमाणनिर्देश पटल

१०४

१२४६-७१

(५४) बहत्तर शुक्लवर्णप्रतिभोग

१०४

बहत्तर शुक्लवर्ण प्रतिभोग अंगों के नाम, स्पर्शानुसार फलादेश और समानार्थक

१२७२-७४

(५५-६२) वर्णप्रतिभोगपटल

१०४

१२७४-९७

(६३-७३) स्थितामासवर्णयोनिपटल

१०४-५

अंगों के वर्ण का निर्देश और गजतालुक, ब्रह्मराम, सूर्योद्गमवर्ण, मनःशिलावर्ण,
मेचकवर्ण, कोरेंटकवर्ण आदि रंगों की पहचान

१२९८-१३३०

(७४-७९) स्निग्धरूक्ष पटल

१०५-७

१२९८-१३०३.७४ दस स्निग्ध अंगों के नाम, फलादेशादि, ७५ स्निग्ध-स्निग्ध,
७६ रूक्ष, ७७ रूक्षरूक्ष, ७८ रूक्षस्निग्ध, ७९ स्निग्धरूक्ष अंगों के नाम, फलादेश
और समानार्थक का अतिदेश और निर्देश

१३३१-४७

(८०) दस आहार

१०७

दस आहार अंगों के नाम, फलादेश और एकार्थक शब्द
१३४०-४५ इन पद्यों में प्राकृत क्रियापदों का संग्रह है

१३४८-६७

(८१-८५) नीहारपटल

१०७-८

१३४८-५८. ८१ दस नीहार अंगों के नाम, फलादेश और समानार्थक
१३५४-५७. प्राकृत क्रियापदों का संग्रह
१३५९-६७. ८२ दश आहाराहार आहारनीहार नीहाराहार
नीहारनीहार अंगों के नामादि का अतिदेश

१३६८-१४४८

(८६-९५) दिक्पटल

१०८-११

८६ सोलह पौरस्त्य, ८७ सोलह पाश्चात्य, ८८ सतरह दक्षिणात्य, ८९ सतरह
औत्तराह, ९० सतरह दक्षिणपूर्व, ९१ सतरह दक्षिणपाश्चात्य, ९२ सतरह
उत्तरपाश्चात्य, ९३ सतरह उत्तरपौरस्त्य, ९४ बारह ऊर्ध्वभागीय, ९४ तेरह अधोभागीय
अंगों के नामों का अतिदेश, स्पर्शानुसार फलादेश और समानार्थक

१४४९-६८

(९६-९९) प्रसन्नाऽप्रसन्नपटल

१११-१२

९६-९९ पचास प्रसन्न, अप्रसन्न, अप्रसन्नप्रसन्न, प्रसन्नअप्रसन्न,
अंगों के नामों का अतिदेश, फलादेश और एकार्थक

१४६९-९७

(१००-३) वामपटल

११२-१३

सोलह वामप्राणहर, सोलह वामधनहर, अद्वावन वाम सोपद्रव और तीस
संख्यावाम अंगों के नाम, फलादेश और एकार्थक

१४९८-९९

(१०४) ग्यारह शिव

११३

ग्यारह शिव अंगों के नाम और फलादेश

१५००-८

(१०५) ग्यारह स्थूल

११३-१४

ग्यारह स्थूल अंगों के नाम, फलादेश और एकार्थक

१५०९

(१०६) नव उपस्थूल अंग

११४

१५१०

(१०७) पचीस युक्तोपचय अंग

११४

१५११

(१०८) बीस अल्पोपचय अंग और (१०९) बीस नातिकृश अंग

१५१२-१८

(११०) सतरह कृश

११४

सतरह कृश अंगों के नाम और समानार्थक

१५१९-२०

(१११) ग्यारह परंपरकृश

११४

ग्यारह परंपरकृश अंगों के नाम और फलादेश

१५२१-२८

(११२) छब्बीस दीर्घ

११४-१५

छब्बीस दीर्घ अंगों के नाम, फलादेश और समानार्थक

१५२९-३०	(११३) छब्बीस युक्तप्रमाण दीर्घ अंग	११५
१५३१	(११४) सोलह ह्रस्व किंचिदीर्घ अंग	११५
१५३२-३७	(११५) सोलह ह्रस्व	११५
	सोलह ह्रस्व अंगों के नामों का अतिदेश और समानार्थक	
१५३८-५२	(११६) दस परिमंडल	११५-१६
	दस परिमंडल अंगों के नाम और एकार्थक	
१५५३-५७	(११७) चौदह करणमंडल	११६
१५५८-६२	(११८) बीस वृत्त	११६
	बीस वृत्त अंगों के नाम और समानार्थक	
१५६३-६८	(११९) बारह पृथु	११६-१७
	बारह पृथु अंगोंके नाम और एकार्थक	
१५६९-७०	(१२०) इकतालीस चतुरस्र अंग	११७
१५७१	(१२१) दो त्र्यस्र अंग	११७
१५७२-७६	(१२२) पांच काय अंग	११७
१५७७-८२	(१२३) सत्ताईस तनु और (१२४) इक्कीस परमतनु	११७
	सत्ताईस तनु और इक्कीस परमतनु अंगोंके नाम और समानार्थक	
१५८३-८५	(१२५) दो अणु (१२६) एक परमाणु अंग	११७
१५८६-९०	(१२७) पांच हृदय और समानार्थक	११८
१५९१-९८	(१२८) पांच ग्रहण	११८
	पांच ग्रहण अंगों के नाम, फलादेश और समानार्थक	
१५९९-१६००	(१२९) पांच उपग्रहण अंग और एकार्थक	११८
१६०१-७	(१३०) छप्पन रमणीय	११८
	छप्पन रमणीय अंगों के नाम, फलादेश और समानार्थक	
१६०८-१२	(१३१) बारह आकाश अंग और एकार्थक	११८-१९
१६१३-२२	(१३२) छप्पन दहरचल और (१३३) छप्पन दहरस्थावर	११९
	छप्पन दहरचल और छप्पन दहरस्थावर अंगों के नाम, फलादेश और समानार्थक	
१६२३-३०	(१३४) दस ईश्वर (१३५) दस अनीश्वर	११९
	दस ईश्वर और दस अनीश्वर अंगों के नाम, फलादेश और समानार्थक	

१६३१	(१३६) चौदह ईश्वरभूत अंग	११९
१६३२-४०	(१३७) पचास प्रेष्ठ (१३८) पचास प्रेष्ठभूत पचास प्रेष्ठ और पचास प्रेष्ठभूत अंगों के नाम, फलादेश और एकार्थक	११९-२०
१६४१-५६	(१३९) छब्बीस प्रिय और (१४०) छब्बीस द्वेष्य छब्बीस प्रिय और छब्बीस द्वेष्य अंगों के नाम, फलादेश और समानार्थक	१२०
१६५७-६२	(१४१) छब्बीस मध्यस्थ अंग और समानार्थक	१२०-२१
१६६३-६४	(१४२-४६) पृथ्वीकायिकादि अंगों के नामों का अतिदेश	१२१
१६६५-६६	(१४७) बीस जंगम अंगों के नाम	१२१
१६६७-७०	(१४८) तेत्तीस आतिमूलिक अंगों के नाम	१२१
१६७१-७२	(१४९) तेत्तीस मज्झविगाढ अंगों के नाम	१२१
१६७३-७४	(१५०) तेत्तीस अंत अंगों के नाम	१२१
१६७५-८६	(१५१) पचास मुदित और (१५२) पचास दीन पचास मुदित और पचास दीन अंगों के नाम, फलादेश और समानार्थक	१२१-२२
१६८७-९१	(१५३) बीस तीक्ष्ण अङ्ग और समानार्थक	१२२
१६९२-९५	(१५४) पिचत्तर उपद्रुत (१५५) पिचत्तर व्यापन्न अङ्ग	१२२
१६९६-९७	(१५६) दो दुर्गन्ध और (१५७) दो सुगन्ध अङ्ग	१२२
१६९८-१७०३	(१५८) नव बुद्धिरमण (१५९) चार अबुद्धिरमण अंग और समानार्थक ।	१२२
१७०४-५	(१६०) ग्यारह महापरिग्रह (१६१) चार अपरिग्रह अङ्ग	१२२
१७०६-७	(१६२) उन्नीस बद्ध और (१६३) सत्ताईस मोक्ष अङ्ग	१२२
१७०८	(१६४-१६६) पचास स्वक, परकीय और स्वकपरकीय अङ्ग	१२३
१७०९-१६	(१६७-७२) दो शब्देय, दो रूपेय, दो गन्धेय, एक रसेय, दो स्पर्शेय, और एक मणेय अङ्ग और फलादेश	१२३
१७१७-१९	(१७३-७५) चार वातमण, दो सहमण और दश वर्णेय अङ्ग	१२३
१७२०-२२	(१७६) दस अग्नेय अङ्ग	१२३
१७२३	(१७७) दस जण्णेय अङ्ग	१२३
१७२४	(१७८-७९) दो दर्शनीय और अदर्शनीय	१२३
१७२५	(१८०) दस थल अङ्ग	१२३

१७२६-२७	(१८१) बारह निम्न अङ्ग	१२३
१७२८	(१८२-८३) नव गम्भीर और निम्न गम्भीर अङ्ग	१२४
१७२९-३२	(१८४-८९) पन्द्रह विषम, चौदह उन्नत, बारह सम, दस उष्ण, दस शीतल, दस आवुणेय अङ्ग	१२४
१७३३-३४	(१९०-९१) चौरासी पूर्ण और पिचत्तर तुच्छ अङ्ग	१२४
१७३५-७४	(१९२-२३८) उन्नीस विवर, अविवर आदि अङ्ग	१२४-२६

१९२ उन्नीस विवर, उन्नीस अविवर, अट्ठाईस विवृतसंवृत, सात सुकुमार, १९६ चार दारुण, पांच मृदु, चार पत्थीण-प्रस्थान, छप्पन श्लक्ष्ण, चौबीस खर, २०१ दस कुटिल, दस ऋजुक, छत्तीस चण्डानत, छ आयत, छ आयतमुद्रित, २०६ बीस दिव्य, चौदह मानुष्य, चौदह तिर्यग्योनिक, दस नैरयिक, २१० पिचत्तर (पंचाणवें) रौद्र, दो सौम्य, बाईस मृदुभाग, दो पौत्रेय, दो कन्येय, चार स्त्रीभाग, दो युवतेय, २१७ छब्बीस दुर्गस्थान, बारह (चौदह) ताम्र, चार रोगमण, छ पूति, २२१ छ चपल, सात अचपल, चार गुह्य, पांच उत्तानाक्ष५७न्मस्तक, दस (बारह) तत, दस मत, २२७ बारह (ग्यारह) महंतक, अट्ठाईस शुचि, दस क्लिष्ट, पिचत्तर वर, २३१ पिचत्तर नायक, पिचत्तर अनायक, पचास (अट्ठावन) नीच, पिचत्तर निरर्थक, २३४ पचास अन्यजन, सोलह अम्बर (अन्तर), ग्यारह शूर, तीन भीरु अंगोंके नाम

१७७५-१८१४	(२३९-७०) पचास एककादि अङ्गों के नाम	१२६-२७
१८१५-६८	दो सौ सत्तर द्वारों का समुच्चित फलादेश और नववें अध्याय की समाप्ति	१२८-२९
	१० दसवाँ आगमन अध्याय	१३०-१३५

आगमन विषयक फलादेश

पृष्ठ १३० पंक्ति ५-७, पं० १७-१८, पृष्ठ १३२ पं० १४,

पृष्ठ १३३ पं० ९ में प्राकृत धातुओं का संग्रह है

११ ग्यारहवाँ पृष्ठ अध्याय	१३५-१३८

प्रश्नपृच्छ के प्रकार और तदनुसार फलादेश इस अध्याय में अनेकानेक प्रकार के गृह, शालायें और वैभागिक एवं प्रादेशिक स्थानों का संग्रह है

१२ बारहवाँ योनि अध्याय	१३८-१४०

अंगविद्या द्वारा अनेक प्रकार की मानसिक, व्यावहारिक, जाति विषयक एवं औपाधिक जीवन प्रवृत्तियों के आधार स्वरूप योनियों का फलादेश

१३ तेरहवाँ योनिलक्षण व्याकरणाध्याय	१४०-१४४

१४ चौदहवाँ लोमद्वाराध्याय	१४४-१४५

१५ पनरहवाँ समागमद्वाराध्याय	१४५

१६ सोलहवाँ प्रजाद्वाराध्याय	१४५
१७ सतरहवाँ आरोग्यद्वाराध्याय	१४५
१८ अठारहवाँ जीवितद्वाराध्याय	१४५-१४६
१९ उन्सवाँ कर्मद्वाराध्याय	१४६
२० बीसवाँ वृष्टिद्वाराध्याय	१४६
२१ इक्कीसवाँ विजयद्वाराध्याय	१४६
२२ बाईसवाँ प्रशस्ताध्याय	१४६-१४८
इस अध्याय में अनेक जातीय प्रशस्त नाम, क्रियाएँ, पूजा, उत्सव, स्थान, ऋतु आदि का उल्लेख और तदनुसार फलादेश का कथन है	
२३ तेईसवाँ अप्रशस्त अध्याय	१४८-१४९
इस अध्याय में अनेक प्राकृत क्रियापदों का संग्रह है	
२४ चौबीसवाँ जातिविजयाध्याय	१४९
इस अध्याय में अङ्गविद्या के अनुसार जातिविषयक फलादेश कथन है	
२५ पच्चीसवाँ गोत्राध्याय	१४९-५०
अंगविद्या अनुसार गोत्रविषयक फलादेश इस अध्याय में प्राचीन गोत्रों का विपुल उल्लेख है	
२६ छब्बीसवाँ नामाध्याय	१५०-१५८
इस अध्याय में व्याकरणविभाग, नामविषयक विचार और अंगविद्या अनुसार फलादेश है	
२७ सत्ताईसवाँ स्थान अध्याय	१५९
अंगविद्या अनुसार अधिकारविषयक फलादेश इस अध्याय में अनेक प्रजा के अधिकारियों का निर्देश है	
२८ अट्ठाईसवाँ कर्मयोनि अध्याय	१५०-१६१
अंगविद्या अनुसार कर्म एवं शिल्पविषयक फलादेश इस अध्याय में अनेक प्रकार के कर्म, शिल्प एवं व्यापारों का उल्लेख है	
२९ उनतीसवाँ नगरविजयाध्याय	१६१-१६२
३० तीसवाँ आभरणयोनि अध्याय	१६२-१६३
इस अध्याय में प्राचीन विविध आभरण एवं अंगरचना के नामों का उल्लेख है	
३१ इकतीसवाँ वस्त्रयोनि अध्याय	१६३-१६४
इस अध्याय में वस्त्र के प्रकारों का उल्लेख है	

३२ बत्तीसवाँ धान्ययोनि अध्याय

१६४—१६५

इस अध्याय में विविधजातीय धान्य-अनाज के नामोंका उल्लेख है

३३ तेत्तीसवाँ यानयोनि अध्याय

१६५—१६६

इस अध्याय में प्राचीन काल में काम में लाये जानेवाले अनेकविध जलयान और स्थलयानों के नामों का उल्लेख पाया जाता है

३४ चौत्तीसवाँ संलापयोनि अध्याय

१६७—१६८

३५ पैत्तीसवाँ प्रजाविशुद्धि अध्याय

१६८—१७०

संततिविषयक फलादेश

पृ० १६८—६९ में प्राकृत क्रियापदों का विपुल संग्रह है

३६ छत्तीसवाँ दोहद अध्याय

१७०—१७२

पृ० १७१ में प्राकृत क्रियापदों का संग्रह है

३७ सैंतीसवाँ लक्षण अध्याय

१७३—१७४

३८ अड़तीसवाँ व्यंजनाध्याय

१७४—१७५

३९ उणचालीसवाँ कन्यावासनाध्याय

१७५—१७६

४० चालीसवाँ भोजनाध्याय

१७६—१८२

इस अध्याय में विविध प्रकार के भोज्य पदार्थ एवं उत्सवादि के नाम हैं

४१ इकतालीसवाँ वरियगंडिकाध्याय

१८२—१८६

इस अध्याय में मूर्तियों के प्रकार, प्राकृत क्रियापद, आभरण और अनेक प्रकार के रत्न-सुरत क्रीडाओं के नामों का संग्रह है

४२ बयालीसवाँ स्वप्नाध्याय

१८६—१९१

४३ तैंतालीसवाँ प्रवासाध्याय

१९१—१९२

४४ चौवालीसवाँ प्रवास अद्धाकालाध्याय

१९२—१९३

४५ पैतालीसवाँ प्रवेश अध्याय

१९३—१९४

इसमें अनेक प्रकार के यान भाण्डोपकरणादि के नामों का संग्रह है

४६ छियालीसवाँ प्रवेशनाध्याय

१९५—१९७

४७ सैंतालीसवाँ यात्राध्याय

१९८—१९९

४८ अड़तालीसवाँ जयाध्याय

१९९—२०१

४९ उनचासवाँ पराजयाध्याय

२०१—२०२

५० पचासवाँ उपद्रुताध्याय	२०२-२०४
इस अध्याय में कितनेक रोगों के नाम उल्लिखित हैं	
५१ इक्कावनवाँ देवताविजयाध्याय	२०४-२०६
५२ बावनवाँ नक्षत्रविजयाध्याय	२०६-२०९
इसमें नक्षत्रों के नाम हैं	
५३ त्रेपनवाँ उत्पाताध्याय	२१०-२११
५४ चौपनवाँ सारासार अध्याय	२११-२१३
५५ पचपनवाँ निधान अध्याय	२१३-२१४
विविध प्रकार के निधानस्थान और निधान रखने के भाजनों के नाम	
५६ छप्पनवाँ निर्विसूत्राध्याय	२१४-२१६
५७ सत्तावनवाँ नष्टकोशकाध्याय	२१६-२२१
इसमें आहार, अनाज, भाजन, धातु, भाण्डोपकरण और गृहादि के नामों का संग्रह है	
५८ अट्ठावनवाँ चिंतिताध्याय	२२३-२३४
इस अध्याय में उत्सव, देवता, मनुष्य, तिर्यग्जातीय जीवों के नाम भेद-प्रभेद वर्णित हैं। इस अध्याय में उत्सव, देवता, मनुष्यजाति के नामादि हैं; तिर्यग्योनिक क्षुद्रजन्तु, छोटे मोटे जलचर, स्थलचर, पशु-पक्षी, मत्स्यजाति, सर्पजाति, चतुष्पद, द्विपद, अपद प्राणियों के नामों का संग्रह है, अनेक प्रकार के आसन, भाण्डोपकरण, पुष्प-फल वृक्ष, रसद्रव्य, तैलभेद, अनाज, वस्त्रप्रकार, भाजन, धातुभेद, प्रादेशिकविभाग, आभरण आदि को द्योतित करनेवाले नाम एवं शब्दों का विपुल संग्रह है।	
५९ उनसठवाँ कालाध्याय	२३५-२६२
सत्ताईस पटलों में-विभागों में कालाध्यायका कालविषयक फलादेश का निरूपण चतुर्थ और पंचम पटल में क्षुद्रजन्तु और वृक्ष-लतादिके नाम हैं	२३७-३८
छठे और सातवें पटल में पशु-पक्षी एवं वृक्षादिके नाम हैं	२३८
सतरहवें पटल में भोज्यपदार्थों के नाम हैं	२४६
अठारहवें पटल में भक्तवेला, मागधवेला, दूधवेला, आलोलीवेला, कूरवेला, गंडीवेला, प्रातराशवेला, भक्तवेला, यवागूवेला आदि वेलाओं के अर्थात् कार्यकाल के नाम हैं	२४७
बाईसवाँ अर्धप्रमाण पटल	२५०-२५३
चौबीसवाँ वर्षावास-वृष्टिपटल	२५४-२५७
६० साठवाँ पूर्वमेवविपाकाध्याय-पूर्वार्ध	२६२-२६३
६० साठवाँ उपपत्तिविजयाध्याय-उत्तरार्ध	२६४-२६९
इस अध्याय में जीवजाति के अनेक प्रकार, उनके नाम और जन्मान्तर में उत्पत्ति विषयक फलादेश वर्णित हैं। अंगविद्याविषयक जप्यविद्या भी है।	

INTRODUCTION

The science of prognostication is one of the oldest sciences. It must have flourished in ancient India, there is no doubt, but being an unorthodox science its notice has come down to us in scrappy references. For instance Manu, VI. 20 condemns science of utpāta, nimitta, nakshatra and āṅgavidyā and ordains that a Brāhmaṇa should not receive alms from those practising the above mentioned arts. The Buddhists also condemned these and disallowed the monks their practice. The Brahmajāla Sutta (Tr. by Rhys Davis, 16–18) mentions in the category of the condemned sciences Nimitta, Uppādo, Āṅgavijjā, Vatthuvijjā (architecture) and Khattavijjā (art of warfare), Supinapāthakas (interpreters of dreams) and Nemittas (fortune-tellers). They are frequently referred to in the Jātakas and are accused of fraudulent practices. The Jainas were equally strong in their condemnation of false sciences. Thus in Thānāṅga, Sū. III, 6. 78, the list of sinful sciences (pāpaśrutas) includes utpāta (rain, flood and other natural disturbances), nimitta (divination), mantra (magical formulas), ākhyakas (Science of the Mātāṅgas), chikitsā (medicine), kalā (art), āvaraṇa (clothes), ajñāna (traditional lore), mithyāpravachana (non-Jain texts). The Samavāyāṅga's list includes bhauma (terrestrial disturbances), utpāta (natural disturbance), svapna (dream), antarariksha (atmospheric omens), āṅga (prognostication from the limbs of the body), svāra (omen from articulation), vyañjana (foretelling from mole etc. on the body), lakṣhaṇa (auspicious marks on the body), vikathānuyoga (science of artha and kāma), mantrānuyoga (magical formulas), yogānuyoga (science of controlling others), and any atīrthikānuyoga (texts of other religions). The Uttarādhyayana Sū. 8 expresses forcibly that those who practice Āṅgavijjā are not Śramaṇas (āṅgavijjāṃ cha je paṇḍanti nahi te samaṇā).

But inspite of the great condemnations heaped on the so-called false sciences by the Jainas, Buddhists and Brahmanas, these sciences continued to exist and had a large number of followers among the people. The sacrifice of eight Virūpas, namely very tall, very fat, very lean, very fair, very black, very bald, very hairy (Vāj.Sam. XXX, 22), shows that a certain magical significance was attached to human body and its various physical aspects. What significance these physical aspects had with reference to the science of prognostication we are not informed. Pāṇini, III, 2, 53 as pointed out by Dr. Agrawala (*India as known to Pāṇini*, pp. 326–27), refers to the belief in divination from bodily signs and also to fortune-telling by soothsayers (I. 4. 39); the mention of utpāta, sarivatsara, muhūrta and nimitta subjects of study in the Rigayanādi-gaṇa (IV. 3.73) indicates the study of astronomy and omens. It is mentioned in the Jātakas (J. I. 290; II. 21, 200, 250; III. 122, 158, 215; V. 211, 458) that the Brāhmaṇas were well-versed in predicting the future of a child from the signs (lakṣhaṇa) on his body. Also they were well-versed in the science of prognostication from the movements of the limbs (āṅgavijjāsampāthakāḥ) and thus were supposed to be in a position to foretell not only one's past but also one's worth and character. The Ummadanti Jātaka (J. II.211 ff.) has a fling at such prognosticators and diviners. The Brāhmaṇas come to examine the auspicious signs of Ummadanti, but they are so much overpowered by her beauty that they make a mess of the food they were eating. When the girl sees their conduct she asks her attendants to drive them away.

Howsoever popular Āṅgavijjā might have been, little was known about the contents of that science, before the publication of the *Āṅgavijjāpaiṇṇayam*. The Bṛihat Saṃhitā in chapter 51 describes certain details of that science. According to Varāhamihira the prognosticators after studying the movements of their own limbs and those of their questioners prognosticated good or bad results. They were also fully conversant with the nature of movable and immovable objects, gesticulations and conversations. They chose a suitable place to practise their art. It had to be a garden inhabited by Brāhmaṇas, Siddhas and other divine beings. It was not to be situated at a crossing. The proper time and duration for the questioner were ordained. Auspicious and inauspicious results about a journey were prognosticated by seeing the hand or a cloth held up by the questioner. The limbs, after the manner of Āṅgavijjā are divided into masculine, feminine and neuter genders and the prognostications resulting from them recounted. The naming of certain spices foretold no omens but naming of certain fruits and full vessel foretold good omens. The sight of certain animals foretold riches including valuable textiles. The results accruing from the sight of Jaina and Buddhist monks, diviners, bankers, wine-sellers etc., are recounted. The prognostication depended on the way questions were asked and stretching of limbs etc. In a nutshell, the Bṛhatsaṃhitā gives the contents of the Āṅgavijjā much as we find in the published text.

The commentary of the Uttarādhyayana Sū. 8 also mentions Aṅgavijjā as a book dealing with prognostications by means of the movements of limbs, terrestrial and astronomical sciences, mantras as *hili mātaṅgiṇī svāhā* and other *vidyās*.

There is no definite evidence to determine the date of the text of the Aṅgavijjā. But taking into account the mention of Khattapaka or Kshtrapa coins and also the details of costumes and furniture its compilation should have taken place in the fourth century A. D., though by its very nature it is also a repository of earlier material.

The Aṅgavijjā opens with the usual salutations to Siddhas, Āchāryas, Upādhyāyas, Sādhus, Jinas and Mahāvira. The science is said to have been enunciated by Mahāpurisa. The nimittas are divided into eight classes, namely (1) aṅga (limbs or gestures), (2) svara (articulation), (3) lakṣhaṇa (signs), (4) vyañjana (moles etc.), (5) svapana (dream), (6) chhinna (wear and tear), (7) bhauma (terrestrial omens), and (8) antariksha (astrology). Among the *nimittas*, aṅga is supposed to occupy a prominent position. This science formed a part of Dīṭhivāya supposed to have lost since the days of Sthūlabhadra, a disciple of Bhadrabāhu. We are further informed that it formed the twelfth part of Dīṭhivāya and that it was taught by Mahāvira to his Gaṇadharas. The author claims that the Aṅgavijjā records faithfully the nimittas as were enumerated by Mahāvira to his disciples. It is supposed to describe the title, the etymology and the chapter headings as described by Mahāvira (pp. 1-2).

The purpose of nimitta is senses visualizing objects for personal satisfaction. Aṅga is defined as the science of prognostication by means of external and internal manifestation of signs. After this, a list of chapter headings is given. (2-3).

Chapter II (p. 3) contains the laudation of Jina (Jina santhavajjhāo). Chapter III (3-5) is devoted to the selection and training of a disciple (sissopakkhāvaṇa). It is ordained that an expert in Aṅgavijjā should impart the knowledge of the science to deserving Brāhmaṇas, Kshatriyas and Śūdras. It was also expected that they came of a good family and bore sound character. Stress is also laid on their comely appearance, sound health, sweet speech, religiosity, humbleness, intelligence, obedience to teacher and ability to understand the significance of gestures, etc. The non-believer had no right to learn the science. Aṅgavijjā was to be taught in a Gurukula to those who led the life of celibacy and honoured gods, guests and monks. The use of collyrium, tooth-brush, perfumes, flowers, ornaments, fish, flesh, honey, wine and butter was forbidden to the initiates. The lessons on Aṅgavijjā were not to be given in stormy weather, hot summer, at the time of an earthquake, fall of meteors, bathing time, at the time of an invasion, in the vicinity of a burning place or graveyard (eḍḍaka), mṛitasūta, and at a place soiled by flesh, blood and fat or strewn with rocks, pebbles and ashes. The appropriate places for such occasion were in the proximity of clean waters, green fields, auspicious trees, peaceful gods, soft sands, a stone slab in a cattle pen and in a white-washed house with the initiate dressed in white garments. The lessons began after salutations to gods, Jinas and Āchāryas. Chapters IV-VII (5-7) deal with a short panegyric on Aṅgavijjā. The author after praising the magical formulae (maṇi) and the basic principles (ādharaṇa) tells us that training in Aṅgavijjā imparted the knowledge of victory and defeat, a king's death or recovery from illness, anarchy, profit and loss, happiness and misery, life and death, famine and good harvest, drought or good rainfall, etc.

The VIIIth Chapter (8-9) entitled bhūmikarma contains many magical incantations for the attainment of Aṅgavijjā. In one mantra its relationship with Khīriṇi, Udumbara and Virāṇa trees is emphasised. A three-day fast under a Kshira tree to be broken with rice-pudding is enjoined. For bhūmikarma one-day fast on the fourteenth of the black half of the month is ordained. Wearing uncalendered garment and seated on a kuśa mat, a two-day fast resulted in the attainment of the Vidyā. The mantras were to be repeated 800 times.

The importance of bhūmikarma is further stressed. It is said to be the very foundation of the house of the Science which was laid down with the help of magical formulae. Twenty-three items for prognostication are recorded namely—(1) the manner of sitting (upavavīṭṭhavihi), (2) squatting (palhatthiga-vihi), (3) touching (āmāsa-vihi), (4) bolstered position (apassya-vihi), (5) posing up (thiyavihi), (6) seeing (vipikkhiya-vihi), (7) laughing (hasita), (8) questioning (puchchiya), (9) paying respect (vandiya), (10) conversing (samlaviya), (11) coming (āgama), (12) weeping (rudita), (13) wailing (paridevita), (14) moaning (kandiya), (15) kayotsarga pose (peḍima), (16) standing up for respect (abbhuṭṭhiya), (17) going out (niggaya), (18) stamping while standing or sleeping (pailāiya), (19) the manner of yawning, (20) kissing, (21) embracing (22) opulence (samiddhi), (23) service.

The author then subdivides the Chapters into Sections. In the second section the various postures in sitting, laughing, sleeping, etc. are described (9-10). In third section a list of qualifications of a disciple are enumerated. The place of past, present and future in prognostication by āmāsa, time, perfume, beauty and voice are given. While questioning the present, the manner of question asked and its purpose, the congregation and the appearance of the questions are taken into consideration. In the six categories mentioned above presentation is the cause, one who presents the symbol. The manifestations are external and internal. The sub-varieties of the twenty-three items recounted above (p. 9) are then enumerated. (10-11).

In the fourth section the purposes and moods of prognostication are recounted. The list contains moods and state of health, anger, happiness, suppliancy, health, sickness, emaciation, fatness, steadiness and unsteadiness. It is enjoined that one should not foretell about separation, loss of fortune, insult, quarrel, warfare etc. He should only foretell about impending happiness, good fortune, festivities, honour etc. As a matter of fact the writer prescribes what should be foretold and what should be withheld under the heading enumerated above.

Section fifth describes in detail the virtues of a prognosticator. He controlled his senses, prognosticated only at the right moment, did not believe in adventurous life, did not hustle matters, was bereft of jealousy and greed, was an expert analyst, fully understood time, spoke little, was steady, polite etc. (13).

Section sixth recounts thirty-two kinds of the manners of sitting which also include seat made of wood, straw, cowdung, panels etc. Then follows a tedious list of good and bad results prognosticated from the different ways of sitting, their directions, and the seats used. The following interesting list of seats is given : (1) pallaṅka (cot), phalaka (bench), kaṭṭha (a piece of wood), piḍhikā (wooden panel), āsandaka (chair), phalaki (a small wooden seat), bhisi (a cushioned seat), chimphalaka (?), mañcha (tered benches, dias), masṭraka (round cushion), bhaddāsana (an elaborate type of seat), piḍhaga (wooden panel, modern piḍhā), kaṭṭhakhoḍa (wooden pegs), nahatṭhikā. They were made of stone, metals, yarn, bone, earth, grass, cowdung, flowers, seeds, branches of trees, etc. (p. 45). Good or bad results from their use were prognosticated considering their state of preservation and the direction in which they were placed. (13-18).

Twenty-two varieties of squatting are recounted. The help of arms, belts made of cloth, yarn, rope, leather and string was taken while squatting. We are informed that belts were made of cotton, wool and bark, their quality depending on their strength. For yarn-belt woolen and cotton yarn, cotton pieces (chelika), fibre, etc. were used. Leather belts were obtained from the skin of cattle and reptiles. The bark belts were made from the fibres of roots and barks. In the end squatting in different positions and directions and the prognostications made from them are recounted at great length. (18-21).

Then the positions of a belly (āmāsa) are fixed as eight-ummatṭha, vimatṭha, nimmatṭha, appamajjita, sammajjita, ṭhitāmāsa, āmatṭha and atimajjita. These positions are further subdivided into one hundred and eight classes and prognostications accruing from them are recounted. (21-26).

In the ninth section seventeen kinds of rests are mentioned. They are seats, beds (sejjā), conveyance (jāṇa), crutch (apassata), box (piḍāya), door pins (dārappidhana), wall (kuḍḍa), column (khambha), tree, chaitya, grass, utensils, rests (avatthambha) made of earth or metals, dry rests, bone rests.

Under the āsana class nine types of seats mentioned on page p. 15 are recounted with the addition of certain new terms such as ḍimphara, māsāla (thickly padded), mañchikā (small moḍhā or machiā) and khaṭṭā (cot). 26.

Among the conveyances are mentioned siyā (litter), asandana (sedan chair), jānaka (car), horse-palanquin (gholi), elephant litter (gallikā), Sagaḍa (bullock cart), Sagadi (small bullock cart), open car (yāṇa), elephants, horses, bullocks and camels. (26.)

Under the heading apassaya are mentioned various members of the household architecture such as small door (kiḍikā), wooden door (dārakavāḍa), small covering (harssāvaraṇa). The walls are said to be whitewashed or plain (litto alitto vā), curtained (chelima), made of wooden planks (phalakamaya) or trellised (phalaka-pāsiya). The varieties of columns, poles and beams are central columns (gihadhāraṇa), beams (dhāriṇi), masts (nāvākhambha), capitals columns of pipal, column sheltered from sunshine (chhāyā khambha), pillars for chandeliers (diva-rukkha-khambha) and water poles (dagalaṭṭhi). The columns and poles were made of stone, metal, bone etc. (27).

Under the heading tree, thorny and milky trees are termed inauspicious; on the contrary green and flowering, trees are auspicious. The platforms (piḍhikā) of the auspicious trees were made of earth or stone. (27).

Under the heading images (paḍimā) the images of men and gods are mentioned. The images were made of stone, metal, wood, painted or of stucco (pothakamma). These are said to be of superior, middling or low quality according to their appearance. (27).

Under the heading 'green rests' heaps of grass, leaves, flowers and fruits are mentioned. (27). Utensils (bhāyana) were made by potter and metalsmiths. They included cups or tiles (paḍala), grain receptacles (kotthakāpala), boxes (mañjūsā) and wooden utensils. They were filled with liquids, food, water and riches. (27.) Receptacles (avatthambha) were also made of earth, stone and metals. Dry receptacles were made of grass, leaves, twigs, cloth, flowers and fruits. Utensils were also made of ivory and bones of cattle and fishes. (27).

The items described above are divided into masculine, feminine and neuter genders and the prognostications resulting from their different positions are recounted at great length. (28-31.)

The tenth section describes various positions of the body in proximity to seats, beds, seats and beds combined, cattle, human being, conveyance, palaces, staircase, tree stands, garlands, treasures, utensils, clothings, precious stones, pearls, emeralds, silver, ornaments, articles of food, contour of the lands, pure earth, stone, slabs, water, marshes, wet cow dung, path, drainage (paṇāli-niddhamāṇa), dry place, dusty place, hair, nails and bones, and cremation ground and the prognostications resulting from such proximities. (31-33).

The eleventh section deals at great length with various positions of the eyes and the prognostication made from them. (34-35). In the twelfth section laughter is divided into fourteen types, each betokening different results (35-36). The thirteenth section deals in detail with the body-postures of the questioner by which events could be foretold (36-38). In section fourteenth different kinds of salutation, the manner and direction in which they were made and the prognostications resulting from them are enumerated. (38-39).

The prognostications made from conversation of different topics form the subject matter of the fifteenth section. The conversation could veer round the topics of profit and loss, happiness and misery, sickness and death, professions, amusements, family love, enmity, union and separation, rains, and drought, playfulness, increase in power or loss of fortune, victory and defeat and praise and reviling. (40-41).

Section sixteenth enumerates different kinds of approaches which prognosticated different results (41-42). Sections seventeenth to thirtieth deal with different kinds of weeping, crying, sobbing, lying down, silence, going out, sleeping, yawning, prattling, kissing, embracing, sitting in meditation, service, etc. (43-56).

The ninth chapter is named as aṅgamaṇi or magical formulas and recounts 270 items of interest (57-59) touching many walks of life. The first section enumerates seventy-five names of the different parts of the body and the prognostications resulting from them (59-60). Then various categories of men and their relatives are named. The names of planets, cattle, birds, reptiles, fishes, frogs, worms, shrubs, creepers, trees, flowers and fruits and vegetables follow. (61-64).

In the flower section various kinds of garlands, such as kaṇṭhagaṇa, saṁvitānaka, devamālya, uraṇā, chumbhala, āmelaka, matthaka, gochhaka are mentioned (64). Then follows a list of drinks which includes wines and liquors besides milk and its products, malasses, oils, water, soup, juices, etc. The intoxicating drinks are ariṭṭha, āsava, meraka, madhu. It is followed by a list of foods, which includes rice and its preparations, such as boiled rice, rice pudding, curd and rice, milk and rice, rice and ghi, rice pulao, etc. (64).

The list of textiles and clothing material (achchhādaṇa and pachchhādaṇa) mentions paḍasāḍaga (silken dhoti), linen (khoma and dugulīa), gossamer, Chinese silk (chiṇaṁsuga), ordinary Chinese silk (Chiṇapaṭṭa), wrapper (pāvāra), bedspread, sāri (sāḍaka), white dhoti (seḍasāḍa), sāri with silk border (koseyapāraa), different kinds of shawl (paḍa), upper cloth (uttarijja), lower cloth (antarijja), turban (ussisa), turban made of a long strip (veḍhaṇa), jacket (ka(ku)pāssa), coat (kañchuka), vāravāṇo (perhaps quilted coat), coat with ties (vitānaka), pacchata (scarf), padded coat (saṇṇahapaṭṭa), wrestler's shorts (maṭṭasāḍaga). (64).

The list of clothes and clothing mentioned is followed by a fairly long list of ornaments (bhūsaṇa). Diadem and crown are called tiriḍa, mauḍa and siha-bhaṇḍaka. The tiara is called parikkheva or matthaka-kaṇṭaka. Apparently these head ornaments were decorated with the figures of eagle, makara, bullock, stuka (?), elephant, pair of Brahmany ducks, fish, rings and spirals. It is noteworthy that these ornaments appear on the figures of the Kushāṇa period in the art of Mathurā and Gandhāra. The temple mark (piḍālamāsaka,

modern *ṭikā*), forehead ornament (*tilaka*, perhaps shaped like *triratna*), *muhaphalaka* (perhaps decorative panels attached to turbans as in the sculptures of the *Kushāna* period), *visesaka* (a specially designed forehead decoration), and the elongation of the eye with *collyrium* (*avaṅga*). The names of the ear-ornaments include several varieties such as *kuṇḍala*, *baka* (jasmine shaped), *matthaga*, *talapattaka* (palmyra-leaf-shaped), *kurabaka* (*kurabaka*-flower shaped), *kaṇṇakovaga* (beautifying the ear), *kaṇṇapila* (tight-earring), *kaṇṇapūra* (a kind of earring), *earnail* (*kaṇṇa-khila* or *kaṇṇ-loḍa*). In the ornaments for hands are mentioned armlet (*keūra*), *talabha* (armlet with palmyra-shaped leaves), *kandūga* (armlets with round beads), *pariherga* (perhaps circular armlet), *oveḍhaga* (light bangles). The other names are *khaḍḍuga*, *ananta* (endless bangles or armlets), *khuddaya* (small bangle), *kaṅkaṇa* (jingling bangle) and *veḍhaga*. In the ornaments for neck *hāra* had eighteen strands and *addhahāra* nine strands, *phalahāra* (had apparently fruit-shaped beads), *vekachchhaga* (a necklace worn across the chest), *gevejja* (short necklace or collar), *kaṭṭha* (wooden collar), *kaḍaga* (necklet), *suttaka* (golden chain worn cross-wise on the chest), *sovaṇṇa suttaga* (golden chain). The exact nature of the *tigīṇchhiga* and *hidayattānaka* is not known; the latter may however be something like modern *urbasi*. The necklaces as often found in early terracottas were decorated with beads or plaques shaped like *Svastika*, *Śrīvatsa* and eight auspicious symbols (*Śrīvatsa*, *Svastika*, *Nandyāvartya*, *Minayugala*, *Vardhamānka*, *Darpaṇa*, *Bhadrāsana* and *Pūrnaghata*). Others were *soṇisutta* (necklace hanging on the haunches), *gaṇḍūpaka* and *khattiyadhammaka* (probably some sort of necklace used by the *Kshatriyas*). For the feet *ṇipura* (anklet), *aṅgajaka*, *pāpaḍha* (var. *pāeḍha*, modern Hindi *pāyal*), *pādakhaḍuyaga* (thick anklets), *padamāsa* (anklet made by stringing coins), *pādakalāvaga* (tinkling anklets). Then ornamental nets for arms and feet are mentioned. They are *sarajālaka*, *bāhujālaka* (ornamental net for arms), *urujālaka* (ornamental nets for the thighs) and *pādajālaka* (net for the feet). Among the girdles are mentioned *akkhaka* (made of beads), *pussakokila* (making noise like the male cuckoo), *kañchikalāva* (many stranded zone), and *hasuḍolaka* (slightly moving). (64-65).

The list of utensils for keeping food is interesting though difficult to interpret. Under the *thāla* class are mentioned *tattaka* (perhaps made of bronze), *saraka*, *thāla* and *sirikunḍa*. In the bowl class appear *paṇasaka* which had its outer body granulated like that of a jack fruit¹, *addhakaviṭṭhaga* was probably a semicircular bowl and *supatiṭṭhaka* was one which had a ring at the base, *pukkharapattaga* had scalloped body imitating lotus petals, *saraga*, was a wine cup (cf. *Jivābhigama*), *muṇḍaga* had straight edge without outspreading lips, and *siri-kaṇṇasaga* was made of bronze, *dālīma-pūsika* was perhaps shaped like a pomegranate, *nālaka* had a handle, and the *mallakamūlaka* was a flat bowl with tapering end. Then follow the cups of various forms. *Karoda* is a modern *katorā*, *vattamānaga* is a deep saucer, *alandaka*, a water cup, and *jambūphalaka*, a cup with ovaloid body. *Khoraka* is an ordinary *purvā* or *khora* and *muṇḍaka* seems to have been a rimless water cup, and *vattaga* round cups used for *ghi* at the time of dinner (*Jivābhigama*), finally *piṇaka* seems to have been a square cup. (65).

The list of seats also given elsewhere (15, 26) has some new names as *savvatobhadda*, *pādaphala* (foot-rest), *vattapiḍhaka* (round seat), *sathika* (*Svastika*-shaped), *taliya* (bed), *attharaka* (bed-cover), *koṭṭīma* (tiled) and *silātala* (paved) are mentioned. (65).

The list of seats is followed by a list of storage jars. They are *arañjara*, *alinda*, *kuṇḍaga*, *mānaka*, *ghataka* (small pitcher), *kuḍhāraka vāraka* (broad-mouthed auspicious pitcher of *Marudeśa*, *Jivā.*), *kalasa* (big pitcher), *gulamaga*, *piḍharaga*, *mallagabhaṇḍa* (ring-well), *pattabhaṇḍa* (storage receptacle made of leaves). 65.

In the list of precious materials gold, silver, sandalwood, *agallochum* (*agaru*) cloths made of silk (*aṇḍaja*), *ponḍaja* (cotton), *chamma* (leather), *vālaya* (hair) and *vakkaya* (bark-fibre) are mentioned.. (65).

The list of grains contains cereals, oil-seeds etc. (66).

The names of coins, *suvaṇṇamāsaka*, *rayayamāsaka*, *diṇāramāsaka*, *ṇāṇa-māsaka*, *kaḥapaṇa*, *khattapaka*, *purāṇa* and *sateraka* are interesting and point to the early date of the text when these coins were either current or their memory was still fresh.

In the second section in the list of feminine names at first the names of the various parts of the human body are recounted and various prognostications resulting from them are enumerated (66-67). Then

1. V. S. Agrawala, *Harshacharita*, p. 180. f. n. 1. The same as *kaṇṭakita karkari* of *Bāṇa*. Specimens of *paṇasaka* have been found in the excavations at *Ahichchhatra*, *Hastinapur* and *Rajaghat* near *Banaras*.

follow the synonyms for women—ahomahilā, sumahilā, ahoitthi, suitthi, dāriyā, baliyā, siṅgikā, pillikā, vachchhikā, tannika, potikā, kaṇṇā, kumārī, dhijjā, patti-vadhu, vadhū, upavadhū, itthiyā, pamadā, anganā, mahilā, nāri, pohatti, juvati, jositā, dhanitā, vilaka, vilāsini, itthā, kantā, piyā, hita-icchhitā, issari, sāmini, vallabhikā, pajjiyā, ajjiyā, nānika, mahāmātuyā, mātā, chullamātā, māussiyā, pitussiyā, bhajjā, jāri, sahi, natti, paṇattini, ramā, suhṇā, sāvatti, sallikā, medhuṇā, bhātujjāyā, sagottā, bhagini, bhāginejje—bhajjā, koḍumbini, pitussahā, māussahā, peyātukāsahā. The list contains the names of women according to their age, virtue, relationship etc. (68).

The queen is called itthirayaṇa, mahādevī, rāyapatti, rāyaggamahisi, rāyopajjāyapatti. Then come seṇāyapatiṇi (wife of the commander-in-chief), bhoyani (wife of a bhoga), talavari (wife of a talavara), ratthiṇi (wife of a rāshtrika), gāmini (wife of a village headman), amacchi (wife of a minister), vallabhi (wife of the king's brother-in-law), paḍihāri (wife of the chamberlain), issarigini (wife of feudal chief), bhogini, (wife of a bhoga), gharini (wife of a house-holder), satthavāhi (wife of a caravan-leader), ibbhi (wife of a member of the guild or Śreshthi—wealthy person), bhogamitti (perhaps courtesan), bhaḍi (wife of a warrior), ṇaḍi (actress), kārugini (wife of an artisan), sahinini (wife of Sāhi ?), Lāḍi (a Gujarati woman), Jonikā (a Greek woman), Chilāti (a Kirāta woman), Babbari (a Barbara woman), Sabari (a Śabara woman), Pulindi (a Pulinda woman), Andhi (an Andhra woman), Dimiḷi (a Tamil woman). We are further informed that feminine names were formed after the caste, provenance, profession, vidyā and silpa. Some examples are cited (68).

Then follow the names of the womenfolk of the Asuras, Nāgas, Gandharvas, Rākshasas, Yakshas, Vegetation Spirits, Stars etc. (69).

The following goddesses are mentioned : Hiri, Siri, Lachchi, Kitti, Medhā, Sati (Smṛiti). Dhiti, Buddhi, Ilā, Sitā, Vijjā, Vijjatā, Chandaleshā, Ukkosā, Abbharāyā, Ahodevi, Devī, Devakaṇṇā, Asurakaṇṇā, Indaggamahisi, Asuraggamahisi, Airikā, Bhagavati, Alambusā, Missakisi, Miṇakā, Miyadamsanā, Apalā, Aṇāditā, Airāṇi, Rambhā, Ttimissakesi, Tidhiṇi, Sālimāliṇi, Tilottamā, Chittaradhā, Chittalehā, Uvvasi. (69).

In the above list the names of certain foreign goddesses are of great interest. Apalā may be identified with the Greek goddess Pallas Athene. Aṇāditā is the Avestic goddess Anahita whose cult was later on mixed with the cult of Nana or Nanaia. Airāṇi may be the Roman goddess Irene, Ttimissakesi may be the nymph Themis from whom her son Evander learned his letters, Tidhiṇi can not be identified, Sālimāliṇi may be identified with the Moon-goddess Selene. From what source this tit-bit of information came in Aṅgavijjā is not known, but it must be fairly early when the Greek influence was not completely lost from North-Western India and Mathura.

Then follows a list of quadrupeds, birds, aquatic animals, worms and insects, trees, creepers, flowers, tubers, etc. coming under feminine class. (69–71).

Four kinds of food, boiled, mixed with spices, rolled into balls and fumigated with spices are mentioned. (71).

Some names of chādars or coverings are recounted : paṇṇa or patrōṇa (made from bark fibre or silk), paṇi or praveṇi (made from twisted yarn), vaṇṇā (coloured), somittiki (perhaps *sagmotogene* of the Periplus, 24), addhakosijjikā (same as modern baftā in which half silk and half cotton are used), kosejjikā (made of silk), pasara (large), pigāṇādi (thick stuff), lekha (perhaps painted), vaukāṇi (stuff as light as wind, *baft-havā ventus* textiles), velavikā (patterned with creeper motive), parattikā (perhaps may be some stuff from Parthia), Māhisika (cotton cloth manufactured in South Hyderabad Deccan) or Mysore, illi (a kind of soft stuff), kaṭutari, (a hard one), jāmilikā was (a pair of sash cloth called yamali in the Divyāvadāna). The stuffs were smooth, thick, well woven, badly woven, costly, cheap, uncalendered and bleached. (71).

In the list of ornaments sirisa-mālikā (the string of beads shaped like sirisha flower), ṇaliyamālikā (the beads shaped like reed) are necklaces. In the earring class are mentioned makarikā, orāṇi (unidentified), pupphitika (flower shaped), makaṇṇi, lakaḍa (wooden slugs), vālikā (circlet), kaṇṇikā, kaṇṇavālikā. Kuṇḍamālikā is a necklace. Siddhatthika (adorned with mustard seed design) and āṅgulimuddikā (signets) are finger rings. Akkhamālikā (rosary), saṅgha-mālikā (interconnected necklace), payukā (necklace with plaques), ṇitarāṅgi (?), kaṇṭaka-mālikā (necklace with granulated beads), ghanapichchhulikā (heavily decorated with peacock feathers), vikāliya (serpentine necklace), ekāvali (necklace with one strand), pippalamālika (necklace with pippla-shaped beads), hārāvali, muttāvali (pearl-necklace) are necklaces. In zones kañchi, rasaṇā, jambukā (zone with jambu-fruit-shaped beads), mekhalā, kaṇṭikā, saṃpaḍikā are mentioned. Pāmuddika is toe-ring, vammikā, pāsūchikā, pāghaṭṭikā and khinkhiṇika are all foot ornaments. (71).

In the beds and seats, and conveyances, the usual names are repeated (72). In the list of pots and pans *alandika* (storage jar), *patti* (cup), *ukkhala* (mortar), *thālika*, *kālāñchi*, *karaki* (spouted pot), *kuthārika* (small storage jar), *thāli* (tray), *mañdi*, *ghaḍi* (small pitcher), *davvi*, *kelā* (perhaps oblong jar) *uṭṭika-mānikā* (measuring pot), *ṇisakā* (pot with stand ?) *āyamaṇi* (ladle), *chulli* (some kind of small pot), *phūmaṇāli* (blow pipe ?), *samañchhaṇi* (?), *mañjūsikā* (small box), *muddikā* (sealed pot), *salākāñjaṇi* (collyrium stick), *pellikā* (grain measure), *dhūtullika*, *piñchola* (some earthen musical instrument), *phanikā* (a pot with combed decoration), *doṇi* (trough), *ukkuliṇi* (perhaps a pot with outspread lip), *pāṇi*, *amilā* (polished ?), *budhā*, *paḍalikā* and *vatharikā*. (72).

The names of some implements are also mentioned : *kuddāli* (spade or hoe), *kuthāra* (axe), *chhurikā* (knife), *davvi* (ladle), *kavalli* (big *kaḍāha*), *diviga* (oven or lamp). (72).

Some coins are also named : *Suvaṇṇa-kakaṇi*, *māsaka-kakaṇi*, *suvaṇṇaguṇja*, and *dināri*. (72).

In section 3, names of the limbs under neuter category are recounted (72-73). In section 4, seventeen right side limbs, in section 5, seventeen left side limbs, in section 6, 17 central limbs, in section, 7, twenty-eight firm limbs, and in section 8, 28 mobile limbs and the prognostications resulting from them are enumerated (72-80). Section seven also gives a list of the mountains : *Himavanta*, *Mahā-himavanta*, *Nisadha*, *Ruppi*, *Merū*, *Mandara*, *Nelavanta*, *Kelāsa*, *Vassadhara*, *Veyadḍha*, *Achchhadanta*, *Sajjha*, *Vīñjha*, *Manta*, *Malaya*, *Pāriyatta*, *Mahinda*, *Chittakūḍa*, *Ambāsaṇa*. This list is followed by the various synonyms of a mountain and its constituents. (78).

In sections 9 to 270, follows a very complicated system of prognostication by means of words pertaining to limbs and their connotations to the present and future, external and internal division and their classifications into castes and various other topics. (80-129).

The tenth chapter deals with the arrival of the questioner and the prognostications made from the objects of different categories held by him or her and the position of the limbs of the questioner. As usual much of the information previously given is repeated. (130-135).

The eleventh chapter describes in detail the states of the questioner and the different places where the questions were asked. In this connection various architectural terms : *Gabbhagiha* (sleeping room), *abbhantaragiha* (inner apartment), *bhattagiha* (dining room), *vachcha* (lavatory), *ṇakūḍa*, *udagagiha* (water pavilion), *aggi* (fire house), *bhūmi* (cellar), *vimāṇa*, *chachhara* (lane), *sandhi* (railing joint), *samara* (Kāma's temple), *kaḍikatoraṇa* (thatched toraṇa), *pāgara* (city-wall), *charikā* (road between the fort and the city), *veti* (railing), *gayavāri* (elephant stable), *saṇkama* (ferry), *sayana* (rest room), *valabhi* (pinnacle of the house or caves), *rāsi*, *paṇsu*, *ṇiddhamāṇa* (drain), *nikūḍa* (female apartment), *phalikha* (moat), *pāvira*, *peḍhikā* (room), *mohaṇagiha* (sleeping room), *osara* (open square before the main gate), *somāṇa* (steps), *abbhantara-pariyaraṇa* (inner circle), *duvārasālā* (room on the door), *gihaduvārabāha* (side frame of the outer door), *uvattḥāṇajālagiha* (trellised assembly-hall), *achchhaṇaka* (rest-room), *sippa* (workshop), *kammagiha* (workroom), *rayata* (white room), *odhi-uppala*-(lotus-painted room), *himagiha* (cold room), *ādaṇsa*-(room decorated with mirrors, modern *sismahal*), *tala*-(ground floor), *āgama*-(reception room), *chatukka*-(square building), *rachchā*-(protected building), *dania*-(ivory room), *kaṇsa*-(bronze room), *paḍikamma*-(room for religious rites), *kaṇkasālā*, *ātavagiha* (summer room), *paniya*-(shop), *āsaṇa*-(drawing room), *bhojaṇa*-(dining room), *rasoti*-(kitchen), *haya*-(horse stable), *radha*-(chariot stable), *gaja*-(elephant stable), *pupha*-(flower house), *jūta*-(gambling house), *pātava*-(house with trees), *khalīṇa*-(stable where the horses' bit and bridle were stored), *bandhanagiha* (prison), *jāna-giha* (garage) (135-136).

Further on some fresh architectural terms are given : *koṭṭha* (granary), *aṅgaṇa* (courtyard), *bhagga* (plastered house), *siṅghādaga* (public square), *aṭṭāla* (bastion), *vappa* (earthen rampart), *khambha* (column), *duvārasālā* (portico), *jalagiha* (water pavilion), *mahānasagiha* (kitchen), *bhaṇḍa* (storehouse), *osadhagiha* (drug store), *chitta*-(picture gallery), *latā*-(bower), *kosa*-(treasury), *vātṭha*-(boudoir), *pāṇava*-(business house), *levaṇa*-(room for storing perfume), *savaṇa-ujjāṇa*-(garden house), *āesa*-(audience hall), *vesagiha* (brothel), *koṭṭhākāra* (store house), *pavā* (water booth), *setukamma* (dyke), *ṇhāṇagiha* (bathroom), *ātura* (sickroom), *saṇsarana* (working room), *saṇkasālā* (customs house), *kaṇasālā* (secretariat), *parohaḍa* (courtyard at the back of the house). (137-138).

Chapter twelfth describes at length the forms of existence. Dhammajoṇi is connected with religion; athajoṇi with the acquisition of wealth; kāmajoṇi with the enjoyment of garlands and perfumes etc.; saṃgama with sexual intercourse; mitta with friendship; vivada with acts of enmity; pavāsika with those proceeding to gāma (village), nagara (city), nigama (banking town), janapaya (district town), paṭṭaṇa (emporium), nivesa (encampment), khandāvāra (military encampment), forest and hills, or engaged on the mission of an envoy (dūta, sandhivāla); pavuttha with the act of travelling; āgamaṇa with the act of returning; niggama with going out and āgama with coming; rāja and rājanupāya with the paraphernalia of royalty; rājapurisa with the officers of a king; vaṇiyappadha with trade and commerce; kāruka with artisans; anujoga with questions; ajja with noble profession; sissa with the bowing disciples; pessa with servants; bandhana with securely held prisoners; mokha with release; mudita with the happiness at the recovery from illness; ātura with illness; maraṇa with death; sayitavva with sleeping; chhinṇa with broken asunder; naṭṭha with cessation; viṇaya with discipline; Bambhaṇa, Khattiya, Vessa and Sudda with respective castes; bāla, jovvaṇa and vuḍḍha with childhood, youth and old age respectively. The forms of existence are also connected with various states of the body, time, gender, directions, etc. (138-144).

In chapter thirteenth prognostication from various states of existence is described. In chapter fourteenth entitled Lābhaddāra (means of acquisition) the whole topic is divided under six headings : athadāra (means of acquiring wealth), samāgama (means of getting desired result), payā (starting on a journey), āroga (recovery from sickness), jivita (saving life), kamma (work of the artisans), vuṭṭhi (rains) and vijaya (victory) (144-145). The atha was prognosticated from flowers and fruits, valuable cloths and jewels, furniture, food, unguents, perfumes, etc. In chapter fifteenth samāgama is prognosticated by amorous behaviour of certain birds and men and women, talk about way-faring and the topics such as rivers, seas, mountains, etc. connected with it. Results could be prognosticated from it about marriage, friendship, etc. (145). Chapter sixteenth deals with certain prognostications about travel means of children, fruits, animals, etc. (145). Chapter seventeenth deals with prognostications from fruits, valuable clothes and ornaments, and signs of enjoyment which foretold recovery from illness (145). In the eighteenth chapter prognostications on death are enumerated (145-146). In chapter nineteenth it is said that certain omens foretold the loss of work or the workshop (146). Chapter twentieth deals with prognostications about rain and good farm yields from water, aquatic animals, boats as ṇāvā, koṭimba, ḍaālua, lotuses, oil, milk, rains, lightning, thunder etc. (146). In chapter twenty-first the prognostication about victory with the help of a fan, utensils, flags, conveyances, costly cloths and garlands, drums, jungle, enemy territory, encampment, etc. were foretold. (146).

In the twenty-second chapter the prognostication of good omens is concerned with marriage, the attainment of success, tasting certain fruits and grains, harvesting, welcoming a friend as a guest, putting on certain ornaments and accomplishments, protecting certain animals and human beings while asleep, decorating the body, the appearance of clouds, lightning and certain furniture, the appearance of birds and beasts on lotus ponds and trees, murder and imprisonment, laughter and laying the ghost, use of old garments in different seasons, biting by the fish, comforting the confused, catching the horse and boar, panyegyries of the bards, serving an officer in opulent circumstances, offering of flowers and perfumes, coming of a traveller after a long time after completing the journey successfully (siddhayāttā), the appearance of ghosts ?, hearing the wail of trumpet in a chaitya, giving back the stolen goods, making of gold designs in flags ?, giving of umbrella, shoes etc., obtaining wealth for protecting someone, honour at the completion of some clever art, seeing the setting in a tank, the rise of some mystic thought in mind, the filling of tank and vessel with water, kindling of sacred fire at jātakarma etc., auspicious occasion at the recovery from illness, getting wealth, etc., the worship of monks, the appointments of jeṭṭha and anujeṭṭha of a gosṭhī (Nisītha, 264), the manifestation of certain forces of nature, the enjoyment at birth, the respect of good people, medication, restoring old dilapidated buildings for religious merits, seeing about oneself, looking at yajña, seeing the shaking of Nivāra tree, hearing the jingling of ornaments, kissing stage property, goods carried by land and sea routes, animals and food taken by Sādhus and their praise, the growth or riches and fame, slight rise of fortune, column, seat, bed, trees etc., ascending a tree, house, horse and hill, prosperity of the village and town etc., arranging chaplets, mukuta, etc., clapping in various positions, metal decoration, etc., coming of a group of people intoxicated with passion, pleasure at seeing the people giving one another, seeing the youth, fruits and grains, hearing loud happy voice

from outside, playing with pet birds, seeing the satisfying meals, depositing of jewels, fruits etc., seeing the rescue of the people from the ravages of Rudra, realising the force of form, taste etc., determining the results from the naming of the sūtras, seeing the blooming lotus, foretelling prosperity hearing the half-spoken words, appearance of bali, maṅgala and yajña, seeing the lotus, forest and animals, construction of the palace of a Vaiśya, seeing the procession of a king coming out in haste, release from prison, tying the ornaments, circumambulation, belching, seeing the filling of utensils, seeing the *mast* elephant, the coming of *mithuna*, seeing and enjoying music and dancing, seeing the washing of impure things, seeing the erection of tiered benches, hearing the rumbling of clouds, determining the date for travel, the accumulation of jewels, building of yūpa, chiti, and dykes, beholding yogic powers, increase of wealth, defeat of enemies, unhealing of the wound, entering the city while weeping, victorious expedition of a king, entering a garden and watershed without fatigue, etc. (146–148).

In chapter twenty-third the prognostications about loss etc. are called unpraiseworthy. Under this class come weeping, anger, hunger, seeing birds of ill-omens, and other states of mind and body showing dejection. (148–149).

The twenty-fourth chapter is entitled jātivijaya. The people are divided into two classes : Āryas and Mlechchhas. Under the first category Brahmanas, Kshatriyas, Vaiśyas are placed, while the Śūdras are counted as Mlechchhas. The brāhmaṇas are described as white, the Kshatriyas red, the Vaiśyas yellow and the Śūdras black. Their colours are pure, śyāma and black. They are very tall and short. They lived by trade (vavahāropajivi) or military profession (satthopajivi), or agriculture. They lived in pleasure groves, mountains, islands, rural areas, as Chakka-chara, in cities. They are also named after the directions they lived in. They are also called ajjadesanissita, living in the Arya land; when they went out they were known as ajjadesāntara. Those living in garden land (nikkhuda) (?) were known as anajjadesijja. (149).

The twenty-fifth chapter is devoted to gotras (See also, Sūrya-Paṇṇatti, 10–16, p. 149 b). Gotras are said to be of two kinds—gahapatigotta and dijātigotta. In the first category are mentioned Maḍha, Gola, Hārta, Chaṇḍaka, Sakita (Kasita), Vāsula, Vachchha, Kochchha, Kosika and Koṇḍa (149). The Brahman gotras are based on four conditions—Sagotta, Sakavigotta, Bambhachāraka and Pavara. The following gotras are named Maṇḍava, Setṭhina, Saṇḍilla, Kumbha, Māhaki, Kassava, Gotama, Aggirasa, Bhagava, Bhāgavata, Saddayā, Oyama, Hārta, Lokakkhia, Kachakkhi, Chārāyaṇa, Pārāyaṇa, Aggivessa, Moggalla, Atṭhiseṇa, Purimaṇsa, Gaddabha, Varāha, Kaṇḍusi, Bhāgavati, Kākuruḍḍi, Kaṇṇa, Majjhāṇḍiṇa, Varaka, Mūlagotta, Saṅkhāgotta, Kaḍha, Kalava, Vālamva, Setassatara, Tettirika, Mahajjharasa, Bajjhasa Chhandoga, Mujjāyaṇa, Katthalāyaṇa, Ggahika, Nerita, Bambhachcha, Kāppāyaṇa, Kappa, Appasattabha, Sālaṅkāyaṇa, Yaṇāṇa, Āmosala, Sākija, Upavati, Dohha, Thambhāyaṇa, Jivantayaṇa, Daḍhaka, Dhanajāya, Saṅkheṇa, Lohichchha, Antabhāga, Piyobhāga, Saṇḍilla, Pavvayava, Āpurāyaṇa, Vāvadāri, Vagghapada, Pila, Devahachcha, Vāriṇiḷa, Sughara. (150).

Chapter twenty-sixth is devoted to proper names. The list includes the names of stars, planets, directions, meteors, forests, wells, rivers, oceans, Nāgas, Varuṇa, sea-ports (samudrapaṭṭana), foods and drinks, animals, trees and creepers, fruits, gods, cities, men, almost everything on the earth. (150–152).

The names of constellations are of two kinds—Nakkhattanissita, Devatānissita. The names of men were formed from gottanāma, ayaṇāma (constellation ?), kamma (profession), sarira (body) and karaṇa (office). Under aya are quoted the examples Kiṇṇaka, Kataraka Chhaddilaka. Sarira names are good or bad. They are Saṇḍa (bull), Vikāḍa (terrible), Kharāḍa (lowest), Khallāḍa (bald) Vipīṇa (forest).

The friendly names ended with the suffixes ṇandi, nanda, diṇṇa, ṇandaka and nandikā.

The names indicating defects of the body are Khaṇḍasisa (broken head), Kāṇa (blind of one eye), Pillaka (discarded), Kujja (hunchback), Vāmaṇaka (dwarf), Kuvi(ni)ka (lame), Sabala (spotted), Khaṇja (lame), Vaḍabha (distorted). Proper names were also formed on the basis of complexion; fair complexion being denoted by Avadātaka, Seda and Sedḷa, light black by Sāma, Sāmali and Sāmaka—Sāmālā and black by Kālaka and Kālīkā. Names based on beauties of the human body are : Sumuḥa (handsome), Sudāṇsaṇa (pleasing personality), Surūva (beautiful), Jāta (well-born), Sugata (pleasing gait). The names based on age are Bālaka (child), Dhāraka (boy), Majjhima (middle-aged), Thavira—thera (old). The following endings of proper names are

mentioned : tāta, datta, diṇṇa, mitta, gutta, bhūta, pāla, pāli, samma, yāsa, rāta, ghosa, bhāṇu, viddhi, nandi, nanda, māna, uttarā, pālita, rakhi, ṇandaṇa, ṇandaka, sahitamahaka. (153).

Chapter twenty-seven describes the names of officers : rāyakammika and amachcha (minister), nāyaka (leader); āṣaṇattha bhāṇḍāgārika (treasurer), abbhāgārika (chamberlain), mahāṇasika (chief cook), gayādhīyakkha (chief of elephant forces); majjaghariya (chief of the royal booth), pānaghariya (officer in charge of water-house), nāvādhīyakkha (admiral of the navy), suvaṇṇādhīyakkha (officer in charge of gold), hatthi-adhigata (officer in charge of elephant stable), assa° (officer in charge of horse stables), yoggāyariya (officer in charge of conveyances), govayakkha (superintendent of herds), paḍihāra (chamberlain), gaṇikākhaṇsa (officer in charge of courtezans), balagaṇaka or nāyaka (officer in charge of a section of army), pachchantapāla (warden of the marches), varisadhara (head of eunuchs), āramapāla (garden-officer), sandhipāla (member of war and peace), sisārakkha (chief of the bodyguards), patiārakkha (body-guard), suṅka-sāliya (superintendent of customs), rajjaka or padhavavata (washerman), āḍavika (superintendent of forests), nagarādhīyakkha (city-magistrate), susāṇavāvata (superintendent of cemetery), sūṇāvavata (incharge of slaughter-houses), chāraka-pāla (superintendent of spies), phalādhīyakkha (superintendent of fruits), puppha° (superintendent of flowers), purohita (royal priest), āyudhākārika (artificer of weapons), koṭṭhakārika (tresurer). (159).

In the twenty-eighth chapter a fairly long list of professions is given. There are five kinds of professions : rayaporisa (government officers), vavahāra (trade and commerce), kasi-gorakkha (agriculture and animal husbandry), kārukamma (art and crafts) and bhati (work on daily wages or labour). In the first class of government officials are mentioned rāyamaccha, amaccha, assavārika, āsavāriya, abbhantarāvachara (spy), abbhākāvachara (superintendent of the harem), bhāṇḍāgāriya, sisārakkha, paḍihāraka, sūta, mahāṇasika, majjaghariya or pāṇiyaghariya (officer in charge of wine cellars), hatthādhīyakkha or mahāmatta or hattimēṭha. The officers in charge of cavalry are assādhīyakkha, assārodha, assabandhaka, officer in charge of sheep (chhāgalika), officer in charge of cows (gopāla), officer in charge of buffaloes (mahisipāla), superintendent of camels (uttapāla), hunter (magaluddhaga), shephard (orabbhika), ahinipa. Superintendents of royal stables are assātiyakkha, hatthādhīyakkha, elephant-rider (hatthāroha), elephant-driver (hatthimahāmatta), lord of elephants (gajādhipati) and cattle enumerator (gosankhi) are also officers. Bhāṇḍāgārika or kosarakkha was an officer in charge of stores and custom duties; savvādhikata received all kinds of royal tributes; lekhaḥa had all scripts at his finger tips (aṅgulisu savvalipigate); sarivachchhara, the royal astrologer, dārādhigata and dārapāla controlled the entrance and exit of the visitors; balagaṇaka or seṇāpati was commander of the army; abbhāgārika or gaṇikākhaṇsaka looked after the courtezans; varisadhara is eunuch; vatthādhigata was in charge of royal wardrobe; nagaraguttiya the city superintendent of police. The messenger is dūta, jainaka, pesanākārka, and patihāraka. The following officers are connected with water navigation : tarapaatta (officer in charge of ferry charges), nāvādhigata (admiral), titthapāla (warden of the river crossings). Then there are officers in charge of water (pāṇiyaghariya), bath-room (pāṇāghariya) and wine cellars (surāgharita). Officers in charge of wood, grass (kaṭṭhādhikata, taṇa) are there; biyapāla was in charge of seeds. Opasejjika was in charge of the royal beds; sisarakkha, the head body-guard. The superintendent of garden (āramādhigata), superintendent of police (nagararakkha), officer in charge of aśoka garden (asokavaṇikāpāla), officer in charge of arrows (vāṇādhigata), officer in charge of ornaments (ābharanādhigata). (159-160).

Then follows a long list of professions : trader (vavaharin), naval architect (udakavaḍḍhaki), fishermen (macchabandha), boatmen (nāvika), oarsmen (bāhuvika), goldsmith (suvaṇṇakāra), lac dyemaker (alittakakāra), dyer specialising in red (rattarajjaka), image-maker (devaḍa), dealer in wool (uṇṇavāṇiya), dealer in yarn (suttavāṇiya), lacquer-worker (jatukāra), painter (chittakāra), player on instruments (chittavāḍi) ?, utensil-maker (taṭṭhakāra), ironsmith (lohakāra), sitapeṭṭaka ?, dyer (suddharajaka), potter (kumbhakāra), bronzesmith (kāmsakāraka), silkweaver (kosakāra), cloth-dealer (dussika), dyer (rayaka), silk-weaver (kosejja), bark-fibre-weaver (vāga), butcher of sheep and buffaloes (orabbhika-mahisaghātaka), sugarcane crusher (ussaṇika), umbrellamaker (chhattakāraka), earning livelihood by cloth-trade (vatthopajivika), dealers in fruits, roots and grains (phalavāṇiya, mūla, dhaṇṇa), boiled-rice seller (odanika), meat-seller (maṇsa-vāṇijja), bean-seller (kammāsa-vāṇijja), maker of groats (tappana), dealer in salt (loṇa), cake maker (apūpika), maker of khājā sweet (khajjakāraka), green grocer (paṇṇaka), dealer in ginger (siṅgare-vāṇiya), profession of toiletmaking (pasādhaka), aggi-upajivi or āhitaggi, actor (kusilava) or raṅgavachara, perfumer (gandhika), garland-maker (mālākāra), maker

of perfumed powder (chuṇṇikāra). Those living by their tongue are sūta, māgadha, pussamāṇava (panygerists), purohita (priest), dhammatṭha mahāmanta (officer in charge of religious endowments ?), gandhika, gāyaka (singer), dapakāra, bahussaya. The metal-workers also include lapidary (maṇikār), kottaka (inlayer), vaṭṭaki, vatthāpāḍhaka, vatthuvāpatika, mantika, bhaṇḍavāpata, titthavāpata and āramavavata were perhaps small officers in charge of vastrāpatha, treasury, ferry boats, garden etc. Superintendent of wood in dārūka-ādhikārika and radhakāra in charge of chariots. Bandhanāgārika is jailor, policeman is choralopahāra. Basic works were in charge of mūlakkhāṇaka mūlika and mūlakamma. The rich merchants were those dealing in wrought gold, unwrought gold (heraṇṇika sauvaṇṇika), sandal-wood, cloth and were called devaḍa. There was an officer in charge of animal fodder (govajjhabhatikārka), oyakāra-oḍḍa (diggers of soil), mūlakhāṇaka (the foundation diggers), iḍḍkāra (the brick layers), bālepatunda, suttavatta, architect, the relief-carver (rūvapakkhara) phalakāraka (engraver of sword blades) sikāhāraka, amaḍḍahāraka are all terms connected with building industry. The weavers are of silk (kosajjavāyaka), shawl (dipaṇḍakambalavāyaka) and kolika. In the class of doctors are physicians (vejja), healers of the body (kāyategichchhaga), surgeon (sallakatta), eye-surgeon (sālāki), witch doctor (bhūtavijjika), physician for children (komārabhichcha), poison doctor (visatitthika). Then illusionist (māyākāraka), goripāḍhaka, pole-dancers (laṅkhaka), boxers (muṭṭhika), ballad singers (lāsaka), jesters (velambak), barber (gaṇḍaka) and criers (ghosaka) are mentioned. (160-161).

In the twenty-ninth chapter certain details about ancient Indian cities are given. The cities are divided according to the four varṇas : i.e. Brāhmaṇa, Kshatriya, Vaiśya and Śūdra. The capital is rājadhāni, the suburb sākhānagara. The city was permanently or temporarily inhabited and it had heavy or scanty rainfall and was either inhabited by thieves (choranagara) or gentlemen. The city was either one's own or others. It was either long, round or square, was provided with the city-wall made of wood, or brick. It was oriented to the south or left, surrounded by a forest, garden, hill etc. Emphasis is also laid on its climatic conditions and due stress is laid on its prosperity or adversity. (161-162).

In the thirtieth chapter ornaments are described. The ornaments are of three kinds-(1) made of chank-shell, pearls, ivory, buffalo-horn, hair and bone; (2) made of wood, flowers, fruits and leaves; and (3) made of gold, silver, copper, lead, iron, tin, brass (ārakūḍa), pig iron (kāla-loha) ?, hyacinth, carnelian (lohitakka) coral, garnet (rattakkhāra maṇi). In white class comes white crystal, vimalaka, setakkhāramāṇi; in black class pig iron, antimony and black khāramāṇi, in blue class, sapphire (nilakkhāramāṇi); in red class gold, silver, metals, carnelian and masarakalla. The metals were beaten, the khāramāṇis were perhaps scalloped, precious coral and chank were rubbed (ghaṭṭha), and the pearls were smoothened (parimaddita). The ornaments for the head are ochūlaka, nandivānaddhaka, apalokanika and sisopaka; for the ears talapattaka, kaṇṇuppilaka. The eyes were decorated with collyrium, the brows with the lampblack, the temple with orpiment, hīṅgula (cinnabar) and realgar (manahsilā); the lips with lac dye. The neck ornaments are vaṇṇasutta, tipisāchaka (three goblins), vijjādhara, asimālikā (row of swords), hāra, addhahāra, puchchhalaka, āvalikā, maṇisomaṇaka (stepped ornament), aṭṭhamāṅgalaka (a necklace of eight auspicious signs), pechukā, vāyumuttā, vuppasutta, paḍisārā-khāramāṇi, kaṭṭhevaṭṭaka; for arms āṅgaja; for hands hatthakaḍaga, kaḍaga, ruchaga, sūchika; for fingers āṅguleyaka, muddeyaka, veṇṭaka; for the waist kaūchi-kalāpaka and mekhalā; for legs gaṇḍū-payaka, nīpura and pariheraka; for the feet khinkhinika, khattiyadhammaka and pādāmuddikā. (162-163).

In chapter thirty-one the textile materials are divided into three classes-(1) made of hair etc.; (2) made of silk, patijja (v.l. paṇṇa-patroma) and wool. Wool was obtained from quadrupeds and silk and patroma from insects. The basic textile materials are linen (khoma), dukulla, chinese silk (chiṇapaṭṭa) and cotton (savvakappāsika). Linen and dukulla and chiṇapaṭṭa are said to have been made from the fibre. The cotton cloth includes materials made from cotton pod, arka-cotton, goat's wool (pahmagatapaksamagata). The textiles made from metals are lohajālika (chain armour) suvaṇṇapaṭṭa (gold brocade) and tinsel printing (suvaṇṇa-khasita, var.-khachiya). Then the various conditions of a textile piece are re-counted. It is uncalendered (āhata), old (parijunṇa), very costly (paraggha), reasonably costly (juttaggha), fairly costly (samaggha), thick (thūla), thin (aṇuka), broad (diha), small (hrassa), bearing border (sakaladasada), plaited borders (chhinnadasa), used (vivāḍita), sewn (sivita), cut-piece (chhidda), wrapper (pāvāraka), fluffy blanket (kotava), woollen (uṇṇika), lining (attharaka), short-haired (taṇuloma), bridal trousseau (vadhūyavatttha), shroud (matakavatttha), vilāta, one's own (saka), one's own or other's (ātavitaka), others (paraka), given away (nikkhitta), stolen (apahita), begged (yāchitaka), lost (naṭṭha), gained (laddha). Cloths were white, black, red, yellow, green, peacock-green (mayurakaggiva), elephant grey (kareṇūyaka), two-coloured (vitta), gamboge, lotus red (payumarattaka), realgar

shaded (maṇosilaka), deep black (mechaka). The dyes are said to be of the best, middle and as desired classes. Red is viratta or half red (addharatta); it was of the colour of jātipatta. The truban is named is jālaka (net), paṭṭika, vaṭṭhaṇa (vesṭhana) and sisekaraṇa. Uttarijja was wrapped above the navel and antarijja below the navel. Pachchattharṇa was a carpet, vitānaka the ceiling canopy and parisaraṇaka a floor cover. (163-164).

Chapter thirty-two gives a long list of food grains and their place in prognostications. (164-165).

Chapter thirty-three is devoted to conveyances. Of the conveyances playing on the roads the following are mentioned : Sibikā, bhaddāsana, pallaṅkasikā (litter), radha (chariot), saṇḍamāṇikā, gilli, jugga, goliṅga, sakaḍa and sakaḍi. Sibikā and bhaddāsana were of equal superior rank. The chariots were used in war and accompanied the caravans. One could stretch fully in pallaṅkasikā; it was long and covered. Sakaḍa, sandamāṇikā and gilli are placed in the same class; a waggon of middle size is sagaḍi. The chariot's and goliṅga's front part is raised (ullāyita), the back part lowered (anullāyita). (165-166).

The names of boats are more interesting : They are nāva, pota, koṭṭimba, sālikā, tappaka, plava, piṇḍikā (round boat), kāṇḍevelu, dati (water-skin). Nāva and pota had ample room while koṭṭimba, sālikā, saṇḍhāḍa, plava and tappaka were middle sized boats. Kaṭṭho (kaṇḍa) and velu were small, so also tumba, kumbha and dati. It is interesting to note that the Periplus (44) while describing Barygaza (Broach) says—"Native fishermen in the King's service, stationed at the very entrance in well-manned large-boats called trappaga and cotymba go up the coast as far as Syrastrène." These boats could now be safely identified with the koṭṭimba and tappaga of the Āṅgavijjā. Speaking about the boats playing on the Eastern coast of India the Periplus (60) observes—"and other very large vessels made of single logs bound together, called *sangara*; but those which make the voyage to Chryse and to the Ganges are called *colandia*, and are very large." The first were no doubt, the crafts made of hollowed logs with plank sides and outriggers such as are still used in South India and Ceylon; the larger types *sangara*, were probably made of two such canoes joined together by a deck platform admitting of a fair sized deck house. According to Dr. Taylor (JASB, Jan. 1847, pp. 1-78) the name *jangar* was in his time being used for these double canoes. Caldwell gives the form *changādam* in Malayalam, *jāṅgāla* in Tulu, and *saṇḍhāḍam* is Sanskrit. Benfey derives it from Sanskrit *saṅgara* 'trade'; Lassen, however, thinks the word of Malay origin (Schoff, *The Periplus of the Erythrean Sea*, p. 243). All doubt about its derivation is now set at rest by the mention of *saṇḍhāṭa*, as a kind of craft by the Āṅgavijjā.

In the above list sālikā was probably provided with a cabin-house; piṇḍikā was a round boat, kāṇḍa was made of rushes, velu from bamboo, tumba from gourd floats; dati is a float made of bloated skins; kumbha is a float made of pitchers. (166).

Horses, elephants, oxen, buffaloes, asses and sheep were also used as conveyances. (166).

Chapter thirty-four is devoted to *saṁlāpa* or conversation. It deals with the conversations of the human, animal and heavenly world. It describes in detail the position of the talker, the place and time. (167-168).

Chapter thirty-fifth deals with *payāvisuddhi*. Payā is defined as the visit of relatives, welcome, toilet, kissing and embracing and other physical acts and how such arts prognosticated good or bad results. (168-170).

Chapter thirty-six is devoted to *dohala* or pregnancy longing. The longing manifests itself in kissing and various other acts in the presence of relatives, desire for flowers, ornaments, conveyances, seats, utensils etc., love for children, decoration, bathing, etc. The *dohalas* pertain to sound, shape, taste, smell and touch. The *rūvagata* class of *dohala* is confined to men, animals, birds, insects, flowers, seas, rivers, tanks, forests, hills, earth, gods, cities, encampment, war etc. The *saddagata* *dohala* is concerned with different kinds of noise made by men, animals, birds, ornaments, musical instruments and gatherings. The *gandhagata* *dohala* pertains to different kinds of fragrance emanating from flowers, fruits, leaves, perfumes, incense, etc. The *rasagata* pertains to food and drinks and *phāsagata* pertains to contacts with furniture, conveyances, houses, clothes and ornaments. The *dohalas* are divided according to the seasons and the dates and times in which they occurred. (170-172).

The thirty-seventh chapter is devoted to *lakṣaṇas* or favourable signs. The signs are good or bad. They are divided into twelve classes (1) colour (*vaṇṇa*), (2) sound (*sara*), (3) movement (*gati*), (4) place (*saṇḥāṇa*), (5) collective body (*saṇḥayaṇa*), (6) length measure (*māṇa*), (7) weight measure (*ummaṇa*),

(8) power (*satta*), (9) shape (*āṇuka*), (10) progress (*pagati*), (11) shadow (*chhāyā*) and (12) riches (*sāra*). In the first class come some colours, sandal-wood, agallochum, conch-shell planets, clouds, lightning, lotus, fruits, eatables. In the second class are mentioned the different kinds of noise created by gold, cloud, drum, certain animals and birds, musical instruments, songs, small bells etc.; the third class includes the movements of animals like lion, tiger, etc., birds such as peacock etc.; the fourth class includes the group of animals and birds etc.; the fifth class includes undivided emplacement; the sixth class requires requisite measurements; the seventh class includes the objects that have no proper measurements; the eighth concerns adventurers, soldiers etc.; the ninth is concerned with gods, men and animals and birds; the tenth is concerned with the shadows of heavenly bodies, fire and lightning; the eleventh (*pagati*) deals with the human nature depending on mucus, *kashāya*, wind and bile, and the twelfth with the riches. Prognostications concerning each class are described. (173–174).

In the thirty-eighth chapter are described the modes and other peculiarities of the body, and how results could be prognosticated from them. (174–175).

In the the thirty-ninth chapter named *Kaṇṇāvāsana* or ear-ornaments is stated how prognostications could be made from it in different states of the body. (175–176).

In the fortieth chapter, what constitutes food is described. Food is divided into three classes. The *pāṇajōṇi* is divided into *saṅkhyā* such as milk, curds, molasses, sugar and honey; in *aggeya* class come ghi, flesh, milk and fat and in *anaggeya* class milk, curds, butter etc. The materials for food are white, yellow, red, black and their tastes are classified. Foods were also obtained from root, bulbs, bark, young leaves, flowers, fruits. A number of cereals are described. Then follows a description of the tastes of food, such as sweet, sour etc. In the animal food are mentioned the flesh of birds, animals, fish, etc. Dinners were thrown out at the festivals (*ussava*), after death (*mataka bhoyāṇa*), after two-day fast (*satṭha*). Slaves were fed. Dinners were also held at the sacred thread ceremony, *devayāga*, *jāti yajña*, after funeral rites, at the beginning or end of studies, picnic (*abhinavabhoyāṇa*) etc. Dinner was taken at one's own place, at a friend's house, as a guest, at one's own will or forcibly etc. Among the drinks are mentioned sugarcane juice, juices of fruits and leaves and grains. Among the wines are mentioned *yavā* (beer), *pasanna*, *ayasa*, *ariṭṭha*, (medicinal wine) and white wine (*seta-surā*). *Yavāgu* was made with milk, ghi, oil and also vegetables. Some vegetables are mentioned. Among the varieties of molasses and sugar are mentioned *sakkara*, *machchandaika*, *khajjakagula* and *ikkāsa*. Power or pastes of badara, wheat, rice and sesamun were used as food. Among the salts are mentioned *samudda*, *sindhava*, *sovacchala*, *paṇisukhāra*, *jave-khāra* etc. Among the sweetmeats are mentioned *modaka*, *peṇḍika*, *pappaḍa*, *moreṇḍaka*, *sālākālika*, *ambatṭhika*. Among the savouries are mentioned *povalika*, *vokkitakka*, *povalakka*, *papaḍa*, *sakkulikā*, *pūpa*, *phenaka*, *akkhapūpa*, *apaḍihata*, *pavitallaka*, *velātika* (perhaps *chilātika-chilā*), *pattabhajjita*, *ullopika*, *siddhatthikā*, *biyaka*, *ukkarikā*, *mandillikā*, *dihasakkulika*, *khāravattikā*, *khodaka*, *divālika*, *dasirikā*, *bhisakanṭaka*, *matthataka*. Most of the terms can not be identified. *Modaka* is modern *laddū*; *peṇḍikā* *peḍā*, *pappaḍa* may be *pāpaḍa* or some kind of crisp cake; *moreṇḍaka* the modern *tilladdū*; and *ambatṭhika* probably *āmṭi*, *povālika* and *sakulikā* are *pūris*, *pūpa* cake, *phenaka* *pheni*, *pavitallaka* is a cake-like *parāthā*, *pattabhajjaka*, the well-known *bhajiā*, *bijaka* cakes with seeds, *ukkarika* like modern *shoāla* etc. (176–182).

Chapter forty-one is devoted to the topic of sexual intercourse, kissing and embracing. The topic of sexual intercourse is divided into three categories : *Divva* or love-making of the gods in which use is made of *chhatra*, *bhūṅāra*, beacon (*lāullopika*) ?, bedspread (*vāsakaḍaga*), *jakkhopāyaṇa* (presenting *yaksha* perfume) etc. In *tiryakjōṇi* class come the copulation of birds and animals. The sexual intercourse of men is divided into two classes—known (*vigata*) and unknown (*avigata*). In human copulation clothes, ornaments, shoes, conveyances, garlands, mukuta, brushes, combs (*phanalikhāvaṇa*), bathing, applying *viśeshaka*, curling (*okuntana*), applying cinnabar, collyrium, perfumed powder, perfumes, colours (*vaṇṇaka*), earwax-cleaner (*kaṇṇasodhanaka*), collyrium rod, needles, incense, food of all kinds, ornaments, mouth perfumes (*muhāvāsak*) were used. After that varieties of sexual poses are described. (182–186).

Chapter forty-two is devoted to dreams. The dreams are seen (*diṭṭha*), unseen (*adiṭṭha*), and of trance variety (*avatta diṭṭha*). They are auspicious or inauspicious. They are further classified as *śruta* or heard in which the rumbling of clouds, tinkling of ornaments and gold coins, singing and playing on musical instruments

are included. In *gandha* class come various kinds of scent. Similarly dreams pertain to touch, sexual intercourse, *rūḍha*, *avarūḍha*, *jaṅgama*, aquatic creatures, gods, men, birds and animals. Under the category 'gods in dream', come *devas* and *devis*. In human variety come the dead, the living and the unborn. It is followed by the names of the kins who appear in dreams. In the class of 'animal dreams' come all birds and animals. They are divided in auspicious and inauspicious class. The dreams are also classified on the basis of *rūpa*, *rasa*, *gandha* and *sparsa*. Apparently coins like *suvāṇṇaka*, *ruppa* and *kāhavaṇa* had to do something with dreams (189). The prognostications of the dreams depended on the place, duration, and time. (186–191).

The forty-third chapter deals with *pavāsa* or travel. The essential requisites of travelling are the mode of walking, use of shoes, umbrellas, conveyances, *sattū*, knife (*kattarikā*), *kuṇḍi* and pounder. The travellers passed tanks, rivers, mountains and different types of human habitations (*gāma*, *ṇagara*, *paṭṭaṇa*, *sannivesa*, and included itinerant actors, monks, messengers and runners (*dūta-paridhāvaka*). Short or long journey was undertaken. It is also said how different colours and *rūpa*, *rasa*, *gandha* and *sparsa* prognosticated different results in travelling. (191–192).

Chapter forty-fourth deals with the prognostications which determine the directions, the duration and the destination of the journey. (192–193).

Chapter forty-fifth deals with the prognostications about homecoming. A well-fed person, his ears oiled, his body anointed (*abbhaṅgaṇa*) and painted and decorated with lac dye, the forehead decorated with *viśeshaka* and his clothes fumigated, wearing ornaments indicated a person returned from journey. The congregation of conveyances also indicated the arrival of a person from a long journey. Milk and its products, oil, molasses, sugar, fish, flesh, sprouts, leaves, jewels and precious metals and stones and articles of luxury etc. indicated the arrival of a traveller. (193–194).

Chapter forty-sixth deals with the topic of entering the house. The prognostications take into account auspicious or inauspicious events. For instance, seeing certain birds and animals in the doorway brought good results. The sight of curds, garlands, fruits, flowers, etc. forebode prosperity. The sight of a dry rotten tree foretold failure. If standing to the right of a person something is presented to the left it foretold doom; if the pile of the wood is loose it foretold the same result. If the open door lingered onwards, the fortune earned with difficulty is lost. In this way the topic proceeds. Where children smeared with dirt toddle on the ground bad fortune results, but if they wear ornaments the result is otherwise. If the flowers and fruits growing in the courtyard suffer from frost loss occurs, but if they prosper good fortune results. Similar is the case if one weeps in the courtyard or is happy. Similarly wearing of dirty torn clothes foretold misfortune. The same happens in the case of the appearance of a broken pot or furniture in the courtyard. The appearance of well clad men and women foretold good fortune. The appearance of bitter fruits foretold the control of his life by the householder. The sight of rolling fruits by girls and boys caused trouble. If the Śramaṇas and Brāhmaṇas did not visit the house, it resulted in misfortune. Then prognostications from *araṇjara*, depending on its strength or weakness are given. The breaking of *Bahmatthala* and conveyance foretold doom. The offering of a rough seat to a Śramaṇa with dirty or white covering or placing his seat in a dilapidated house had their consequences. Prognostications were also made from certain types of food, hair, straw, curtains, formation of *añjali* etc. The absence and position of food in the kitchen, the chirping of certain birds, the emptiness of water pots, the appearance of vegetables, sweet fruits etc. had their own place in the science of prognostication. (195–197).

In the forty-seventh chapter military expedition is described. It required the presence of umbrella, *bhṛṅgāra*, fans, weapons and armour, and people engaged in war preparation, the war chariots and waggons being put in trim and moving in and out, shoes being put on. An expedition is divided into victorious (*vijaya*), for pleasure (*sammodi*) and of long duration (*chira*), it brought great success (*mahā phala*) or was full of troubles or of hazards (*pamāḍavati*). It was undertaken for food and drinks, for gaining riches (*dhaṇalambhabahula*), for more income (*āyabahula*), and for conquering a city, district or village. An expedition proceeded to *kheḍa*, forest country, garden country, low lands (*ṇiṇṇadesa*) or for besieging a city etc. Victory gave pleasure and defeat resulted in cleavage of opinion. Expeditions were also taken out to conquer merchants. Victorious expeditions resulted in the acquisition of beasts of burden and conveyances. Expedition was made up also of

caravan parties or was taken out for war, encroachment or it was just a peaceful one. It was taken to all directions and in all seasons. (198–199).

Chapter forty-eighth deals with the topic of victory. It included victory over kings, gaṇas, cities etc. Victorious expeditions were undertaken in spring when the trees were green, and flowers, fruits, furniture, cloths, ornaments, conveyances etc. were auspicious to the occasion. (199–201).

Chapter forty-ninth deals with prognostications about defeat. (201–202).

Chapter fiftieth deals with the various defects of the body and diseases and the prognostications concerning them. (202–203).

Chapter fifty-one is devoted to the propitiation of gods and goddesses. They are : Sura, Gandhavva, Vasava, Jakkha, Pitara, Peta, Ādichcha, Assiṇa, Arittṭha, Avvābādhā, Devadūta, Sārassata, Gaddatoya; Vahṇi, Achchharāta, Varuṇakāiya, Vesamaṇakāiya, Jakkha, Aggikāiya, Soma, Chanda, Ādichcha, Gaha, Baldeva, Vāsudeva, Siva, Vessamaṇa, Khanda, Visāha, Aggi, Mārūya, Sāgara, Nadi, Indaggi, Brahma, Inda, Kāma, Udalādala, Giri, Jama, Ratti, Divasa, Airāṇi, Siri, Puḍhavi, Ekaṇāsā, Navamigā, Surādevi, Nāgi, Suvannā, Divakumāra, Samuddakumāra, Aggikumāra, Vāukumāra, Thaṇita, Vijjukumāra, Vemāṇikadeva. The gods are said to be adhipati, sāmāṇiya and ābhiyogika, parisovavanna. Vessavana, is said to be the patron god of the merchants and richmen; Varuṇa the lord of the seas; Indra as suzerain lord; Siva as lord of cows, buffaloes and sheep; Senāpati Kārtikeya is associated with the cock and peacock; Khandha with a boy; Visāha with sheep, ram, boy and sword; Aggi with flames etc. Then there are goddesses of vegetation (vaṇassati-kannā), of hills (pavvata-devatā), of the seas, rivers, wells, tanks, ditch (samudda-ṇaḍi-talāga-pallala-devayāto), of directions (disā), of intellect (buddhi), and of creepers (latā), of objects (vatthu), of city (nagaradevatā). It also refers to ārya-devatas and mlechchadevatās. (204–206).

Chapter fifty-second deals with the prognostications made from the rainbow, lightning, thunder, sun, moon, planets, stars, yuga, samvatsara, month, fortnight, ukkāpāta (falling comet), disādāha, eventide etc. Then follows a detailed description of the Nakshatras and the prognostications made with their help. (206–209).

Fifty-third chapter deals with heavenly portents boding calamity (uppatana). These portents come from the unusual behaviour of planets, day, night, earth, sky, comets, clouds, directions, rainfall of blood and flesh, lightning, rainfall, eventide. These all come under atmospheric disturbances. The terrestrial disturbances pertain to men, animals, birds, vegetation, rivers and hills, houses, furniture, utensils, etc. Also within the scope come disturbances in the city or district, breaking of certain architectural member, falling of lightning on buildings, or Indradhvaja, absence or otherwise of the rainfall, portent in certain utensils, conveyances and forest etc. (210–211).

Chapter fifty-fourth deals with valuable and valueless objects. The valuable objects are said to be of four categories-dhaṇasāra (riches), mittasāra (friendship), issariyasāra (kingship), and vijjāsāra (knowledge). The first pertains to the possession of land, field, garden, village, city. House with furniture etc. is gīhasāra. Dhaṇasāra is further subdivided into maṇussasāra and tirikkhajoṇigata-sāra. Under the latter category come elephants, cows, buffaloes, sheep, camels, donkeys etc. Dhaṇasāra is of twelve kinds (1) vīttasāra, (income), (2) suvaṇṇa (gold), (3) ruppa (silver), (4) maṇi (precious stones), (5) muttā (pearls), (6) vattha (clothes), abharana (ornaments), (7) sayanaśana (beds and furniture), (8) bhāyana (utensils), (9) davvopakarana (means of making money), (10) abbhupahajja (11) dhaṇṇa (grain), (12) jāṇa (conveyance). Mittasāra is divided into five classes—(1) sambandhi (relatives), (2) mitta (friend), (3) vayassa (confidant), (4) women (5) kammakāra-bhichcha (workmen and servants). In issariyasāra come adhikarana (official), nāykattā (leadership), amachchatta (ministership), and rayatta (kingship). (212–213).

Chapter fifty-fifth is devoted to treasures. At first the names, numbers and various units are given. It is said that treasures were hidden in many places such as the palace (pāsāya), story of a building (māla), central beam (paṭṭhivariṇsa), ālagga ?, city-gate (gopura), aṭṭālagga (towers), city-wall (pāgāra), trees, hills, temple (devatāyatana), house, well, garden, forest, fountain, field, King's highway, wall of a house etc. The treasures were buried in the receptacles made of wood, metal and earth. (213–214).

Chapter fifty-six deals with the classification of certain materials. They are pāṇajonī gata, mūla and dhātu. The mūla is further subdivided in mūlagata (roots), khandha (trunk), agga (branch) and patta (leaves). Dhātujonīgata is subdivided into maṇidhātugata (precious stone) and loha (metals). Under the first class are named pulaa, lohīyakkha, masaragalla. In the second class are mentioned coins, kāhavaṇa and ṇaṇaka. The kahavaṇas are said to be old (porāṇa) and new (ṇava). Then come māsa and kākaṇi. (215-216).

In fifty-seventh chapter the topic of Naṭṭha Kosaya is dealt with. It is divided into sajjiva (living) and ajjiva (non-living). The former dealt with men and animals. In the category of men come ajja (noble), pessa (servant), varṇas, elders, friends, relatives, etc. For father petara, ajjaya, āyariya, for uncle petijja, for teacher uvajjhāya. The following terms occur : bhātā, vayassa, bhagini, samla (brother-in-law), pati, medhuna, devara, patijetṭha, bhātu-vayassa, vayassa-vayassa, bhagini-pati, mātula-putta, mātusiya-putta, bhajja, sāli, mātusiya-dhītara, pitusiya-dhītara, pittiya-dhītara, jātara, paṇandara, sahi, jāri, bhujjā, bhātujjā, sahi, salli, sodari, mahāpituka, dhītara, pittiya-dhītara, mātula-dhītara, jonibhagini, sodariya, bhagini, jāmāta, jāmātuyabhāyā, ṇhusā, bhāṇeja etc. It is followed by a description of prognostications from where one had gone. The ajiva class is divided into pāṇajonī, mūla and dhātu. In mūla are enumerated a number of grains and sugar etc. and milk products and wines such as pasañṇā, nīṭṭhitā, madhuraka, āsava, jagala, madhura-meraka, ariṭṭha, āsavāsava, aṭṭakālikā, surā, kusukunḍi and jayakālikā (22). In dhātu class come objects made of pearls, conch, horn, ivory, bone, hair, metals, etc. The list also includes textiles with a new name vālavira. (217-221).

Another section deals with the emplacement of objects in aranjara, utṭiyā, palla, kuḍḍa (wall), kijjara, ukhalikā (mortar), ghaḍa (pitcher), pelikā, karaṇḍa, sayanāsana, māla (storey of a house), vātapāṇa (window), chamma, kosa (leather bag), bila (hole), nāli (drain), thambha (column), antariā (corner), pessantariya, koṭṭhāgāra, bhattaghara (kitchen), vāsaghara (living room), arassaghara (glass house), paḍikamuna ghara (house for ceremonies), asokavaṇiyāgata, paṇāligata, udakachāragata, vachchāḍakagata (lavatory), ariṭṭhagahanagata, chittagihagata (picture gallery), sirighara, agghottagaha, ṇhānaghara (bath room), pussaghara, dāsighara, vesanagaha. There are recounted certain architectural parts and rivers, mountains, etc. Thūbha and eluya (i.e. eḍūka) are mentioned. (221-222).

The fifty-eighth chapter is devoted to reflections (chintita). Reflections come by steadfast heart and calmness of body and spirit. Reflection is divided into reflection on worldly gods, reflection on non-worldly gods and both. Reflection on gods (deva chintā) constitutes the requisites of worship. The gods mentioned are Suvanna, Vessamaṇa, Veṇhu (Vishṇu), Siva, Kumāra Chanda, Visāha, Bambhā, Baladeva-Vasudeva, Pajjuna etc. In the list of goddesses appear Alaṇā, Ajjā, Airāṇi, Māuyā (Mātrikā), Saṇṇi, Ekāṇasā etc. It is said that different beings should be invoked in different conditions of mind.

In reflection regarding human beings a list of kinship is given. Similarly, long lists of birds, quadrupeds, reptiles, aquatic animals, insects, various constituents of the human body, flowers, fruits, creepers, grains, oils etc. are mentioned. Among articles of perfume appear guggula (bdellium), sajjalasa (resin of Vatica Robusta), chandanarasa (oil of sandalwood), telavaṇṇika (olebanum), kāleyaka, sahakāra-rasa (mango oil), mātuliṅga-rasa (lemon oil), karamaṇḍa-rasa, sālapala-rasa (oil of Sāla fruit). (232). Further lists of cloths, utensils, ornaments, metals, precious stones, colours, different kinds of earth are given. For white sudhā, seḍikā, palepaka (plaster), ṇelakata (bluish white), and kaḍasakkara (grit); for red geruga (red ochre), hiṅgulaka (cinnabar), pajjani and vaṇṇamattikā (red earth), for yellow haritāla (orpiment) and maṇosilā, for blue ṇilaka dhātu (ultramarine ?), and sassakachunṇa (green malachite powder); for black añjaṇa (collyrium) and kaṇhammattikā (black earth). It is followed with a list of different topographical features of the land. (223-234).

Chapter fifty-nine on Time (Kāla), is divided into twenty-seven Sections (paḍalas). In the first Section divisions of time are mentioned. In the second Section the guṇas and their relationship with time are enumerated. In the third Section utpātā vidhis are described; in the fourth Section are described small units, grains etc. and their relationship with muhūrta. In Sections fifth to seventh the relationship of animate and inanimate objects with time is defined. In this way the sections roll on and their meaning is rather obscure and difficult to interpret. (235-262).

Chapter sixtieth deals with pūrvabhava, devabhava, maṇussabhava, tirikkhajonika and nerayikabhava etc. (263–269).

The above summary of the chapters gives rather an inadequate idea of the contents of the Aṅgavijjā. The difficulties of interpretation are manifold. The language is full of technical terms and until their import is fully understood it is difficult to interpret the text. The author adopts in it a terse style which more often becomes a headache. The absence of any commentary and the lack of proper Prakrit dictionaries add further to our difficulties. This obscurity could only be removed if in future more literature on the subject becomes available. But inspite of all its shortcomings the text is a treasure-house for the cultural history of the early centuries of the Christian era. It does not confine itself to prognostications only, but gives long lists of objects of daily use which are important for understanding certain features of Indian life that appear nowhere else in literature. It is hoped that some scholar in future will take up a serious study of the Aṅgavijjā and apply critical testimonia to the understanding of its rich cultural glossary.

Prince of Wales Museum,
Bombay.

MOTI CHANDRA.

अंगविज्जा

जैन साहित्य में अंगविज्जा नामक एक प्राचीन ग्रन्थ है। यह कुषाण-गुप्त युग के संधि-काल का ज्ञात होता है, किन्तु अभी तक कहीं प्रकाशित नहीं हुआ। प्राकृत टैक्स्ट सोसाइटी नई दिल्ली की ओर से अब यह मूल्यवान् संग्रहग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है, जिसका सम्पादन मुनि श्री पुण्यविजयजी ने किया है।

अंगविद्या प्राचीनकाल की एक लोकप्रचलित विद्या थी। शरीर के लक्षणों से अथवा अन्य प्रकार के निमित्त वा चिह्नों से किसी के लिए शुभाशुभ फल का कथन इस विद्या का विषय था। पाणिनि ने ऋग्यनादि गण (४.३.७३) में अंगविद्या, उत्पात, संवत्सर, मुहूर्त, निमित्त आदि विषयों पर लिखे जानेवाले व्याख्यान ग्रन्थों का उल्लेख किया है। ब्रह्मजाल सुत्त (दीर्घनिकाय) में निमित्त, उप्पाद और अंगविज्जा के अध्ययन को भिक्षुओं के लिए वर्जित माना है। किन्तु यह अंगविद्या क्या थी, इसको बताने वाला एक मात्र प्राचीन ग्रन्थ यही जैन साहित्य में 'अंगविज्जा' नाम से बच गया है, जिसकी गणना आगम साहित्य के प्रकीर्णक ग्रन्थों में की जाती है। इसमें कहा है कि दृष्टिवाद नामक बारहवे अंग में अर्हत् वर्धमान महावीर ने निमित्त ज्ञान बताने वाले इस विषय का उपदेश किया था।

अंग, स्वर, लक्षण, व्यञ्जन, स्वप्न, छौक, भौम, अन्तरिक्ष—इस प्रकार निमित्त कथन के ये आठ आधार माने जाते थे। इन महानिमित्तों से अतीत और अनागत के भाव जानने का प्रयत्न किया जाता था। इनमें भी अंगविद्या सब निमित्तों में श्रेष्ठ समझी जाती थी। जैसे सूर्य सब रूपों को साफ दिखा देता है, ऐसे ही अंग से अन्य सब निमित्तों के बारे में बताया जा सकता है।

यहाँ इस ग्रन्थ के अंगज्ञान के विषय में लिखने का उद्देश्य नहीं है, वरन् इसमें जो ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्त्व की शब्दावली है उसकी कुछ सूचियों की ओर ध्यान दिलाना उद्दिष्ट है। इस ग्रन्थ में तत्कालीन जीवन के अनेक क्षेत्रों से सम्बन्धित लम्बी-लम्बी शब्द-सूचियां उपलब्ध होती हैं। ये सूचियां बौद्ध ग्रन्थ महाव्युत्पत्ति की सूचियों के समान अति महत्त्वपूर्ण हैं। इन दोनों ग्रन्थों का तुलनात्मक दृष्टि से सांस्कृतिक अध्ययन भी आवश्यक है।

ग्रन्थ में कुल साठ अध्याय हैं। कहीं कहीं लम्बे अध्यायों में पटल नामक अवान्तर विभाग हैं, जैसे आठवें अध्याय में विविध विषय संबंधी तीस पटल और नौवें अध्याय में १८६८ कारिकाएं जिनमें २७० विविध विषयों का निरूपण है।

आरम्भ के अध्यायों में अंगविद्या की उत्पत्ति, स्वरूप, शिष्य के गुण-दोष, अंगविद्या का माहात्म्य आदि प्रास्ताविक विषयों का विवेचन है। पहले अध्याय में अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु—इन्हें नमस्कार किया गया है। इस विद्या का उपदेश महापुरुष ने किया था और ये भगवान् महावीर ही ज्ञात होते हैं। निमित्तों के आठ प्रकार हैं—अंग, स्वर, लक्षण, व्यञ्जन अर्थात् तिल आदि चिह्न, स्वप्न, छिन्न, भौम (पृथिवी सम्बन्धी निमित्त) और अन्तरिक्ष। इन निमित्तों में अंग का विशेष महत्त्व है। यह विद्या बारहवे अंग दिट्ठिवाय के अन्तर्गत मानी जाती थी, जिसका भद्रबाहु के शिष्य स्थूलभद्र के समय से लोप हो गया था। उसके बाद ग्रन्थ के साठ अध्यायों के नामों की सूची दी गई है।

दूसरे अध्याय में जिन भगवान् की स्तुति है। अध्याय तीसरे से पांचवें तक में शिष्य के चुनाव और शिक्षण के नियम बताये गये हैं। ब्रह्मचर्य पूर्वक गुरुकुल में वास करनेवाले श्रद्धालु शिष्य को ही इस शास्त्र का उपदेश करना चाहिए। चौथे अध्याय में अंगविद्या की प्रशंसा की गई है। लेखक के अनुसार अंगविद्या के द्वारा जय-पराजय, आरोग्य, लाभ-अलाभ, सुख-दुःख, जीवन-मरण, सुभिक्ष-दुर्भिक्ष, अनावृष्टि-सुवृष्टि, धनहानि,

काल-परिमाण आदि बातों का ज्ञान हो सकता है। आठवां भूमिकर्म नामक अध्याय ३० पटलों में विभक्त है और उनमें महत्त्व की सामग्री है।

आसनों का उल्लेख करते हुए उनके कई प्रकार बताये गये हैं, जैसे सस्ते (समग्घ), मंहगे (महग्घ), और औसत मूल्य के (तुल्लग्घ), टिकाऊ रूप से एक स्थान में जमाए हुए (एकट्ठान), इच्छानुसार कहीं भी रखे जाने वाले (चलित), दुर्बल और बली अर्थात् सुकुमार बने हुए या बहुत भारी या संगीन। आसनों के भेद गिनाते हुए कहा है पर्यंक, फलक, काष्ठ, पीढ़िका या पिढ़िया, आसन्दक या कुर्सी, फलकी, भिसी या बृसी अर्थात् चटाई, चिफलक या वस्त्रविशेष का बना हुआ आसन, मंचक या माँचा, मसूरक अर्थात् कपड़े या चमड़े का चपटा गोल आसन, भद्रासन अर्थात् पायेदार चौकी जिसमें पीठ भी लगी होती थी, पीढग या पीढ़ा, काष्ठ खोड़ या लकड़ी का बना हुआ बड़ा पेटीनुमा आसन। इसके अतिरिक्त पुष्प, फल, बीज, शाखा, भूमि, तृण, लोहा, हाथीदांत से बने आसनों का भी उल्लेख है। उत्पल का अर्थ संभवतः पद्मासन था। एक विशेष प्रकार के आसन को नहट्टिका लिखा है, जिसका अभिप्राय गेंडे, हाथी आदि के नख की हड्डियों से बनाया जाने वाला आसन था (पृष्ठ १५)। पृष्ठ १७ पर पुनः आसनों की एक सूची है, जिसमें आस्तरक या चादर, प्रवेणी या बिछवन और कम्बल के उल्लेख के अतिरिक्त खट्वा, फलकी, डिप्पर (अर्थ अज्ञात), खेडु खंड (संभवतः क्रीड़ा या खेल तमाशे के समय काम में आने वाला आसन), समंथणी (अर्थ अज्ञात) आदि का उल्लेख है।

कुषाणकालीन मूर्तियों में जो मथुरा से प्राप्त हुई हैं, यक्ष, कुबेर या साधु आदि अपनी टांग या पेट के चारों ओर वस्त्र बांध कर बैठे हुए दिखाए जाते हैं। उसे उस समय की भाषा में पल्लित्थिया (पल्लौथी) कहते थे। ये दो प्रकार की होती थीं, समग्र पल्लित्थिया या पूरी पलथी और अर्ध पल्लित्थिया या आधी पलथी। आधी पलथी दक्षिण और वाम अर्थात् दाहिना पैर या बाँया पैर मोड़ने से दो प्रकार की होती थी। मथुरा संग्रहालय में सुरक्षित सी ३ संख्यक कुबेर की विशिष्ट मूर्ति वाम अर्ध पल्लित्थिया आसन में बैठी हुई है। पलथी लगाने के लिए साटक, बाहुपट्ट, चर्मपट्ट, वल्कलपट्ट, सूत्र, रज्जु आदि से बंधन बांधा जाता था। मध्यकालीन कायबन्धन या पटकों की भाँति ये पल्लित्थिकापट्ट रंगीन, चित्रित अथवा सुवर्ण-रत्न-मणि-मुक्ता खचित भी बनाये जाते थे (पृ० १९)। केवल बाहुओं को टांगों के चारों ओर लपेट कर भी बाहु-पल्लित्थिका नामक आसन लगाया जाता था।

नववें पटल में अपस्सय या अपाश्रय का वर्णन है। इस शब्द का अर्थ आश्रय या आधार स्वरूप वस्तुओं से है। शय्या, आसन, यान, कुड्य, द्वार, खंभ, वृक्ष आदि अपाश्रयों का वर्णन किया गया है। इसी प्रकरण में कई आसनों के नाम हैं, जैसे आसंदक, भद्रपीठ, डिप्पर, फलकी, बृसी, काष्ठमय पीढ़ा, तृणपीढ़ा, मिट्टी का पीढ़ा, छगणपीढ़ग (गोबर से लिपा-पुता पीढ़ा)। कहा है कि शयन, आसन, पल्लंक, मंच, मासालक (मसारक), मंचिका, खट्वा, सेज-ये शयन सम्बन्धी अपाश्रय हैं। ऐसे ही सीया, आसंदणा, जाणक, घोलि, गल्लिका (मुंडा गाड़ी के लिए रजस्थानी में प्रचलित शब्द गल्ली), सगड, सगड़ी नामक यान सम्बन्धी अपाश्रय हैं। किडिका (खिड़की), दारुकपाट (दरवाजा), हस्वावरण (छेद्य पल्ला), लिपी हुई भीत, बिना लिपी हुई भीत, वस्त्र की भीत या पर्दा (चेलिम कुडु), फलकमय कुड्य (लकड़ी के तख्तों से बनी हुई भीत), अथवा जिसके केवल पार्श्व में तखते लगे हों और अन्दर गारे आदि का काम हो (फलकपासित कुडु) ये भीत सम्बन्धी अपाश्रय हैं। पत्थर का खम्भा (पाहाण खंभ), धत्री (गृहस्थ धारिणी धरणी), प्लक्ष का खंभ (पिलक्खक थंभ), नाव का गुनरखा (णावाखंभ), छाया खंभ, झाड़फानूस (दीवरुक्ख या दीपवृक्ष), यष्टि (लट्टी), उदकयष्टि (दग लट्टी)—ये स्तम्भ सम्बन्धी अपाश्रय हैं। पिटार (पडल), कोथली (कोत्थकापल), मंजूषा, काष्ठभाजन-ये भाजन सम्बन्धी अपाश्रय हैं (पृ० २७)।

इसी प्रकरण में कई प्रकार की कुड्या या दीवारों का उल्लेख आया है; जैसे, राङ्कर चिकनी दीवार (मट्ट), चित्रयुक्त भित्ति (चित्त), चटाई से (कडित), या फूस से बनी हुई दीवार (तणकुडु), या सरकंडे आदि की तीलियों से बनी हुई दीवार, कणगपासित (जिसके पार्श्वभाग में कणग या तीलियाँ लगी हुई हों)। किन्तु

इस प्रकार की भीतें अच्छी नहीं समझी जाती थीं । मृष्ट, शुद्ध और दृढ़ दीवारों को प्रशस्त माना जाता था । घृत तेल रखने की बड़ी गोल (केला = कयला = अलिङ्गर), मणि, मुक्ता, हिरण्य मंजूषा, वस्त्रमंजूषा, दधि, दुग्ध, गुड़-लवण आदि रखने के अनेक पात्र—ये सब नाना प्रकार के अपाश्रयों के भेद कहे गये हैं (पृ० ३०) ।

स्थित नामक दसवें पटल में अट्ठाईस प्रकार से खड़े रहने के भेद कहे गये हैं । फिर आसन, शयन, यान, वस्त्र, आभूषण, पुष्प, फल, मूल, चतुष्पद, मनुष्य, उदक, कर्दम, प्रासादतल, भूमि, वृक्ष आदि के सान्निध्य में खड़े होकर प्रश्न करने के फलाफल का निर्देश किया गया है (पृ० ३१-३३) ।

ग्यारहवें पटल में नेत्रों की भिन्न भिन्न स्थिति और उनके फलाफल का विचार है (पृ० ३४-३५) ।

बारहवें पटल में चौदह प्रकार के हसित या हँसने का निर्देश करते हुए उनके फल का कथन है (पृ० ३५-३६) ।

तेरहवें पटल में विस्तार से पूछनेवाले या प्रश्नकर्ता की शरीर-स्थिति और उससे संबंधित शुभाशुभ फल का विचार किया गया है (पृ० ३७-३८) ।

चौदहवें पटल में वंदन करने की विधि को आधार मानकर इसी प्रकार का विचार है (पृ० ३८-३९) ।

प्रश्नकर्ता व्यक्ति जिस प्रकार का संलाप करे उसे भी फलाफल का आधार बनाया जा सकता है — इस बात का पन्द्रहवें पटल में निर्देश है (पृ० ४०-४१) ।

इस प्रकार के बीस संलाप कहे गये हैं जो अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष—इन चार भागों में बाँटे जा सकते हैं । पुष्प, फल, गन्ध, माल्य आदि मांगलिक वस्तुओं के संबंध की चर्चा अर्थसिद्धि की सूचक है । ऐसी ही अनेक प्रकार की कथा या बातचीत के फल का निर्देश किया गया है ।

सोलहवें पटल में आगत अर्थात् आगमन के प्रकारों से शुभ-अशुभ फल सूचित किये गये हैं (पृ० ४१-४२) ।

सत्रहवें पटल से तीसवें पटल तक रोने-धोने, लेटने, आने-जाने, जंभाई लेने, बोलने आदि से फलाफल का कथन है (पृ० ४२-५६) । किन्तु सांस्कृतिक दृष्टि से इस अंश का विशेष महत्त्व नहीं है ।

नौवें अध्याय की संज्ञा अंगमणी है । इसमें २७० विषयों का निरूपण है । पहले द्वार में शरीर सम्बन्धी ७५ अंगों के नाम और उनके शुभाशुभ फल का कथन है । विभिन्न प्रकार के मनुष्य, देवयोनि, नक्षत्र, चतुष्पद, पक्षी, मत्स्य, वृक्ष, गुल्म, पुष्प, फल, वस्त्र, भूषण, भोजन, शयनासन, भाण्डोपकरण, धातु, मणि एवं सिक्कों के नामों की सूचियाँ हैं । वस्त्रों में पटशाटक, क्षौम, दुकूल, चीनांशुक, चीनपट्ट, प्रावार, शाटक, श्वेत शाट, कौशेय और नाना प्रकार के कम्बलों का उल्लेख है । पहनने के वस्त्रों में इनका उल्लेख है—उत्तरीय, उष्णीष, कंचुक, वारखाण (एक प्रकार का कंचुक), सत्राह पट्ट (कोई विशेष प्रकार का कवच), वितानक और पच्छत (संभवतः पिछौरी जो पीठ पर डाल कर सामने की ओर छाती पर गठिया दी जाती थी, जैसा मथुरा की कुछ मूर्तियों में देखा जाता है), मल्लाडक (पहलवानों का लंगोट) (पृ० ६४) ।

आभूषणों के नामों की सूची अधिक रोचक है (पृ० ६४-६५) । किरीट और मुकुट सिर पर पहनने के लिए विशेष रूप से काम में आते थे । सिंहभंडक वह सुन्दर आभूषण था जिसमें सिंह के मुख की आकृति बनी रहती थी और उस मुख में से मोतियों के झुगे लटकते हुए दिखाए जाते थे । मथुरा की मूर्तियों में ये स्पष्ट मिलते हैं । गरुडक और मगरक ये दो नाम मथुराकला में पहचाने जा सकते हैं । मथुरा के कुछ मुकुटों में गरुड की आकृति वाला आभूषण पाया जाता है । मगरक वही है जिसे बाणभट्ट और दूसरे लेखकों ने मकरिका या सीमंत-मकरिका कहा है । दो मकरमुखों की आकृतियों को मिलाकर यह आभूषण बनाया जाता था और दोनों के मुख से मुक्ताजाल लटकते हुए दिखाए जाते थे । इसी प्रकार बैल की आकृति वाला वृषभक, हाथी की आकृति वाला हत्थिक, और चक्रवाक मिथुन की आकृति से युक्त चक्रकमिथुनक (चक्रकमिहणग)

नामक आभूषण होता था। हाथ के कड़े और पैरों के खड्डे, णिडालमासक (माथे की गोल टिकुली), तिलक, मुह फलक (मुख फलक), विशेषक, कुण्डल, तालपत्र, कर्णापीड, कर्णफूल, कान की कील और कर्णलोढक नामक आभूषण ठेठ कुषाणकाल में व्यवहार में आते थे। इनमें से कर्णलोढक बिलकुल वही आभूषण है जिसे अंग्रेजी में वोल्व्यूट (Volute) कहते हैं और जो मथुरा की कुषाणकालीन स्त्रीमूर्तियों में तुरन्त पहचाना जा सकता है। यह आभूषण फिर गुप्तकाल में देखने में नहीं आता। केयूर, तलव, आमेटक, पारिहार्य (विशेष प्रकार का कड़ा), वलय, हस्तकलापक, कंकण ये भी हाथ के आभूषण थे। हस्तकलापक में बहुत सी पतली चूड़ियों को किसी तार से एक में बाँध कर पहना जाता था, जैसा मथुरा शिल्प में देखा जाता है। गले के आभूषणों में हार, अर्धहार, फलहार, वैकक्षक, ग्रैवेयक का उल्लेख है। सूत्रक और स्वर्णसूत्र, स्वस्तिक और श्रीवत्सनामक आभूषण भी पहने जाते थे। किन्तु इन सब में महत्वपूर्ण और रोचक अष्टमंगल नाम का आभूषण है। बाण ने इसे ही अष्टमंगलकमाला कहा है, और महाव्युत्पत्ति की आभूषणसूची में भी इसका नाम आया है। इस प्रकार की माला में अष्टमांगलिक चिह्नों की आकृतियाँ रत्नजटित स्वर्ण की बनाकर पहनी जाती थी और उसे विशेष रूप से संकट से रक्षा करने वाला माना जाता था। सांची के तोरण पर भी मांगलिक चिह्नों से बने हुए कटुले उत्कीर्ण मिले हैं। मथुरा के आयागपटों पर जो अष्टमांगलिक चिह्न उत्कीर्ण हैं वे ही इन मालाओं में बनाए जाते थे। श्रोणि सूत्र, रत्नकलापक—ये कटिभाग के आभूषण थे। गंडूपक और खत्तियधम्मक पैरों के गहने थे। खत्तियधम्मक वर्तमान काल का गुजरी नामक आभूषण ज्ञात होता है जो एक तरह का मोटा भारी पैरों से सटा हुआ कड़े के आकार का गहना है। पादक (पादवेष्टक), पैरों के खड्डे, पादकलापक (लच्चे), पादमासक (सुतिया कड़ी जिसमें एक गोल टिकुली हो) और पादजाल (पायल), ये पैरों के आभूषण थे। मोतियों के जाले आभूषणों के साथ मिलाकर पहने जाते थे जिनमें बाहुजालक, उरुजालक और सरजालक (कटिभाग में पहनने का आभूषण, जिसे गुजराती में सेर कहते हैं) का विशेष उल्लेख है।

बर्तनों (पृ० ६५) में थाल, तश्तरी (तट्टक), कुंड (श्रीकुंड) का उल्लेख है। एक विशेष प्रकार का बर्तन पणसक होता था जो कटहल की आकृति का बनाया जाता था। इस प्रकार के एक समूचे बर्तन का बहुत ही सुन्दर नमूना अहिच्छत्रा की खुदाई में मिला है। हस्तिनापुर और राजघाट की खुदाई में भी पणसक नामक पात्र के कुछ टुकड़े पाये गये हैं। यह पात्र दो प्रकार का बनाया जाता था। एक बाहर की ओर कई पत्तियों से ढका हुआ और दूसरा बिना पत्तियों के हूबहू कटहल के फल के आकार का और लगभग उतना ही बड़ा। अर्धकपित्थ वह प्याला होना चाहिए जो आकृति में अति सुन्दर बनाया जाता था और आधे कटे हुए कैथ के जैसा होता था। ऐसे प्याले भी अहिच्छत्रा की खुदाई में मिले हैं। सुपतिट्टक या सुप्रतिष्ठित वह कटोरा या चषक होता था जिसके नीचे पेंदी लगी रहती थी और जिसे आजकल की भाषा में गोडेदार कहा जाता है। पुष्करपत्रक, मुंडक, श्रीकंसक, जंबूफलक, मल्लक, मूलक, करोटक, वर्धमानक—ये अन्य बर्तनों के नाम थे। खोरा, खोरिया, बाटकी (वट्टक नामक छोटी कटोरियाँ) भी काम में आती थीं। शयनासनो का उल्लेख ऊपर आ चुका है। उनमें मसूरक उस तकिये को कहते थे जो गोल चपटा गाल के नीचे रखने के काम आता था, जिसे आजकल गलसूई कहा जाता है।

मिट्टी के (पृ० ६५) पात्रों में अलिंजर (बहुत बड़ा लंबोतरा घड़ा), अलिन्द, कुंडग (कुण्डा नामक बड़ा घड़ा), माणक (ज्येष्ठ माट नाम का घड़ा) और छोटे पात्रों में वारक, कलश, मल्लक, पिठरक आदि का उल्लेख है।

इसी प्रकरण में धन का विवरण देते हुए कुछ सिक्कों के नाम आये हैं, जैसे स्वर्णमासक, रजतमासक, दीनारमासक, णाणमासक, काहापण, क्षत्रपक, पुराण और सतेरक। इनमें से दीनार कुषाणकालीन प्रसिद्ध सोने का सिक्का था जो गुप्तकाल में भी चालू था। णाण संभवतः कुषाण सम्राटों का चलाया हुआ मोटा गोल बड़ी आकृति का तांबे का पैसा था जिसके लाखों नमूने आज भी पाये गये हैं। कुछ लोगों का अनुमान है कि ननादेवी की आकृति सिक्कों पर कुषाणकाल में बनाई जाने लगी थी और इसीलिए चालू सिक्कों को नाणक कहा जाता था। पुराण शब्द महत्वपूर्ण है जो कुषाणकाल में चाँदी की पुरानी आहत मुद्राओं (Punch-market) के लिए प्रयुक्त होने

लगा था, क्योंकि नये ढाले गये सिक्कों की अपेक्षा वे उस समय पुराने समझे जाने लगे थे यद्यपि उनका चलन बे-रोक-टोक जारी था। हुविष्क के पुण्यशाला लेख में ११०० पुराने सिक्कों के दान का उल्लेख आया है। खतपक संज्ञा चाँदी के उन सिक्कों के लिए उस समय लोक में प्रचलित थी जो उज्जैनी के शकवंशी महाक्षत्रपों द्वारा चालू किये गये थे और लगभग पहली शती से चौथी शती तक जिनकी बहुत लम्बी शृंखला पायी गई है। इन्हें ही आरम्भ में रुद्रदामक भी कहा जाता था। सतेरक यूनानी स्टेटर सिक्के का भारतीय नाम है। सतेरक का उल्लेख मध्यएशिया के लेखों में तथा वसुबन्धु के अभिधर्म कोश में भी आया है।

पृष्ठ ७२ पर सुवर्ण—काकिणी, मासक—काकिणी, सुवर्णगुञ्जा और दीनार का उल्लेख हुआ है। पृ० १८९ पर सुवर्ण और कार्षापण के नाम हैं। पृ० २१५—२१६ पर कार्षापण और णाणक, मासक, अट्टमासक, काकणी और अट्टभाग का उल्लेख है। सुवर्ण के साथ सुवर्ण—माषक और सुवर्ण—काकिणी का नाम विशेष रूप से लिया गया है (पृ० २१६)।

दूसरे द्वार में (पृ० ६६—७२) पिचहतर स्त्री नामों की सूचियाँ हैं जिनमें मनुष्य, देवयोनि, चतुष्पद, पक्षी, जलचर, थलचर, वृक्ष, पुष्प, फल, भोजन, वस्त्र, आभूषण, शयनासन, यान, भाजन, भाण्डोपकरण और आयुधों के नाम हैं। स्त्रीजातीय मनुष्य नामों में निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं—अमच्ची, वल्लभी, प्रतिहारी, भोगिनी, तलवरी, रट्टिनी (राष्ट्रिक नामक उच्च अधिकारी की पत्नी), सार्थवाही (सार्थवाहक नामक व्यापारी की पत्नी), इब्बी (इभ्य नामक श्रेष्ठी की पत्नी); देश के अनुसार लाटी, किराती, बब्बरी (बर्बर देश की), जोणिका (यवन देश की) शबरी, पुलिन्दी, आन्त्री, दिमिलि (द्रमिल या द्राविड़ देश की स्त्री) (पृ० ६८)।

देवयोनि (पृ० ६९) के अन्तर्गत कुछ देवियों के नाम महत्त्वपूर्ण हैं, जैसे इन्द्रमहिषी, असुरमहिषी, अइरिका, भगवती। किन्तु इस सूची में कुछ विदेश की देवियों के नाम भी आ गये हैं, उनमें अपला, अणादिता, अइराणी, सालि—मालिणी उल्लेखनीय हैं। अपला यूनानी देवी पलास अथिनी और अणादिता ईरान की अनाहिता ज्ञात होती है। सालि—मालिनी की पहचान चन्द्रमा की यूनानी देवी सेलिनी से संभवतः की जा सकती है। तिधणी या तिधणी संज्ञा स्पष्ट नहीं है। हो सकता है यह रोम की देवी डायना का भारतीय रूप हो। अइराणी नाम पृ० २०५ और २२३ पर भी आया है। इसकी पहचान निश्चित नहीं। किन्तु प्राचीन देवियों की सूची में अफ्रोदिती का नाम इसके निकटतम है। यदि अइराणिति का पाठ अइरादिती रहा हो तो यह पहचान ठीक हो सकती है। रंभति मिस्सकेसिति का पाठ भी कुछ बदला हुआ जान पड़ता है क्योंकि मिश्रकेशी का नाम पहले आ चुका है। मोतीचन्द्र जी को प्राप्त एक प्रति में रब्धं तिमिस्सकेसिति पाठ मिला था। इनमें तिमिस्सकेसी अस्तेमिस नामक यूनानी देवी जान पड़ती है और रब्ध की पहचान इस्तर से संभव है जो प्राचीन जगत् में अत्यन्त विख्यात थी और जिसे रायी, रीया भी कहा जाता था।

स्त्रीजातीय वस्त्रों के नामों में ये शब्द उल्लेखनीय हैं—पत्रोर्ण, प्रवेणी सोमितिक (अर्थशास्त्र की सौमित्रिका जिसकी पहचान श्री मोतीचन्द्र जी ने पेरिप्लस के सगमोतोजिन से की है), अर्धकौशेयिका (जिसमें आधा सूत और आधा रेशम हो), कौशेयिका (पूरे रेशमी धागेवाला), पिकानादित (यह संभवतः बहुत महीन अंशुक था जिसे स्त्रियाँ पिकनामक केशपाश सिर पर बनाते समय बालों के साथ गुंथती थीं; पिक नामक केशपाश का उल्लेख अश्वघोष के सौन्दरानन्द ७/७ में शुक्लांशुकाट्टाल नाम से एवं पद्मप्राभृतक नामक भाण में कोकिल केशपाश नाम से आया है और उसका रूप मथुरा वेदिकास्तंभ संख्या जे० ५५ के अशोक दोहद दृश्य में अंकित हुआ है), वाउक या वायुक (बाफ्त हवा), वेलविका (बेलदार या बेलभांत से युक्त वस्त्र) माहिसिक (महिष जनपद या हैदराबाद के बुने हुए वस्त्र), इल्लि (कोमल या कृष्ण वर्ण के वस्त्र), जामिलिक (बौद्ध संस्कृत में इसे ही यमली कहा गया है, दिव्यावदान २७६।११; पादताडितक नामक भाण के श्लोक ५३ में भी इसका उल्लेख हुआ है, जिससे ज्ञात होता है कि यह एक प्रकार का कायबन्धन या पटका था जिसमें दो भिन्न रंग के वस्त्रों को एक साथ बटकर कटि में बाँधा जाता था—समयुगलनिबद्धमध्यदेशः)। विशेषतः ये वस्त्र चिकने मोटे अच्छे बुने हुए सस्ते या मंहगे होते थे (पृ० ७१)।

स्त्रीजातीय आभूषणों में ये नाम हैं—शिरीषमालिका, नलीयमालिका (नलकी के आकार के मनकों की माला) मकरिका दो मगर मुखों को मिलाकर बनाया हुआ मस्तक का आभूषण), ओराणी (अवारिका या धनिए के आकार के दानों की माला), पुष्पिका (पुष्पाकृति गहना), मकण्णी (संभवतः लिपटकर बैठे हुए दो बंदरों के अलंकरण वाला आभूषण), लकड़ (कान में पहनने के चन्दन आदि काष्ठ के बुन्दे), वालिका (कर्णवल्लिका), कर्णिका, कुण्डमालिका (कुंडल), सिद्धार्थिका (वह आभूषण जिस पर सरसों के दाने जैसे रवे उठाये गये हों), अंगुलि मुद्रिका, अक्षमालिका (रुद्राक्ष की आकृति के दानों की माला), पयुका (पदिक की आकृति से युक्त माला), णितरिणी (संभवतः लहरियेदार माला), कंटकमाला (नुकीले दानों की माला), घनपिच्छलिका (मोस्-पिच्छी की आकृति के दानों से घनी गूथी हुई माला), विकालिका (विकालिका या घटिका जैसे दानों की माला), एकावलिका (मोतियों की इकलड़ो माला जिसका कालिदास और बाण में उल्लेख आया है), पिप्पलमालिका (पीपली के आकार के दानों की माला जिसे मटरमाला भी कहते हैं), हारावली (एक में गूथे हुए कई हार), मुक्तावली (मोतियों की विशेष माला जिसके बीच में नीलम की गुरिया पड़ी रहती थी) ।

कमर के आभूषणों में काँची, रशना, मेखला, जंबूका (जामुन की आकृति के बड़े दानों की करधनी जैसी मथुरा कला में मिलती है, कंटिका (कंटीली जैसे दानों वाली), संपडिका (कमर में कसी या मिली हुई करधनी) के नाम हैं ।

पैर के गहनों में पादमुद्रिका (पामुद्रिका), पादसूचिका, पादघट्टिका, किंकिणिका (छोटे घूँघरूवाला आभूषण) और वर्मिका (पैरों का ऐसा आभूषण जिसमें दीमक की आकृति के, बिना बजने वाले घूँघरू के गुच्छे लगे रहते हैं, जिन्हें बाजरे के घूँघरू भी कहते हैं) (पृ० ७१) ।

शयनासन और यानों में प्रायः पहले के ही नाम आये हैं । बर्तनों के नामों में ये विशेष हैं—करोडी (करोटिका—कटोरी), कांस्यपात्री, पालिका (पालि), सरिका, भृंगारिका, कंचणिका, कवचिका । बड़े बर्तनों (भाण्डोपकरण) के ये नाम उल्लेखनीय हैं—आलिन्दक (बड़ा पात्र), पात्री (तश्तरी), ओखली (थाली), कालंची, करकी, (टोंटीदार करवा), कुठारीका (कोष्ठागार का कोई पात्र) थाली, मंडी (माँड पसाने का बर्तन), घड़िया, दब्बी (डोई), केला (बड़ा घड़ा), ऊष्टिका (गगरी), माणिका (माणक नामक घड़े का छोट्टा रूप), णिसका (मिट्टी का सिलौटा), आयमणी (आचमनी या चमची), चुल्ली, फुमणाली (फुँकनी), समंछणी (पकड़ने की सडसी), मंजूषिका (छोटी मंजूषा), मुद्रिका (ऐसा बर्तन जिसमें खान—पान की वस्तु मोहर लगाकर भेजी जाँय), शलाकाञ्जनी (आंजने की सलाई), पेल्लिका (रस गारने का कोई पात्र), धूतुल्लिका (कोई ऐसा पात्र जिसमें धूता या पुतली बनी हो), पिछेला (मुँह से बजाने का छोटा बाजा), फणिका (कंधी), द्रोणी, पटलिका, वत्थरिका, कवल्ली (गुड़ बनाने का बड़ा कड़ाह) आदि (पृ० ७२) ।

तीसरे द्वार में नपुंसक जाति के अंगों का परिगणन है । चौथे द्वार में दाहिनी ओर के १७ अंगों के नाम हैं । पाँचवें द्वार में १७ बाईं ओर के अङ्ग, छठे द्वार में १७ मध्यवर्ती अंग, सातवें द्वार में २८ द्वांग, आठवें द्वार में २८ चल अंग और उनके शुभाशुभ फलों का कथन है । नवें द्वार से लेकर २७० वें द्वार तक शरीर के भिन्न भिन्न अंग और उनके नाना प्रकार के फलों का बहुत ही जटिल वर्णन है । इन थका देने वाली सूचियों से पार पाना इस विषय के विद्वानों के लिए भी दूधर काम रहा होगा (पृ० ७२—१२९) ।

दसवें अध्याय में प्रश्नकर्ता के आगमन और उसके रंग—ढंग, आसन आदि से फलाफल का विचार है (पृ० १३०—१३५) ।

पुच्छत नामक ग्यारहवें अध्याय में प्रश्नकर्ता की स्थिति एवं जिस स्थान में प्रश्न किया जाय, उसके आधार पर फलाफल का कथन है । सांस्कृतिक दृष्टि से यह अध्याय महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें तत्कालीन स्थापत्य संबंधी अनेक शब्दों का संग्रह आ गया है; जैसे कोट्टक (कोष्ठक या कोठा), अंगण (आंगन या अजिर) अरंजरमूल (जलगृह), गर्भगृह (आभ्यंतरगृह या अन्तःपुर) भत्तगिह (भोजन शाला), वच्चगिह (वर्च कुटी, या मार्जनगृह),

णकूड (संभवतः नगकूट या क्रीडापर्वत), उदकगृह, अग्निगृह, भूमिगृह (भोंहरा), विमान, चत्वर, संधि (दो घरों की भीतों के बीच का प्रच्छन्न स्थान), समर (स्मरगृह या कामदेवगृह), कडिक तोरण (चटाई या फूस से बनाया हुआ अस्थायी तोरण), प्राकार, चरिका (प्राकार के पीछे नगर की ओर की सड़क), वेती (संभवतः वेदिका), गयवारी (गजशाला), संकम (संकम या परिखा के ऊपर बनाया हुआ पुल), शयन (शयनागार), वलभी (मंडपिका), रासी (कूड़ी), पंसु (धूल), णिद्धमण (पानी का निकास मार्ग, मोरी), णिकूड (निष्कुट या गृहोद्यान), फलिखा (परिखा), पावीर (संभवतः मूल पाठ पाचीर = प्राचीर), पेढिका (पेढी या गद्दी), मोहण गिह (मदनगृह, स्मरशाला), ओसर (अपसरक—कमरे के सामने का दालान, गुजराती ओसरी, हिन्दी ओसारा), संकड़ (निश्छिद्र अल्प अवकाश वाला स्थान), ओसधि गिह, अभ्यन्तर परिचरण (पाठान्तर परिवरण—भीतरी परिवेष्टन—परकोटा), बाहिरी द्वारशाला, गृहद्वार बाहा (गृहद्वार का पार्श्वभाग), उवट्टाण जालगिह (वह उपस्थानशाला जहाँ गंवाक्ष जाल बने हों; यह प्रायः महल के ऊपरी भाग में बनी होती थी), अच्छणक (आसनगृह या विश्रामस्थान), शिल्पगृह, कर्मगृह, रजतगृह (चांदी से मांडा हुआ विशिष्ट गृह), ओधिगिह (पाठान्तर उवगिह = उपगृह), उप्पलगृह (कमलगृह), हिमगृह, आदंस (आदर्शगृह, शीशमहल), तलगिह (भूमिगृह), आगमगिह (संभवतः आस्थायिका या आस्थानशाला), चतुक्कगिह (चौक), रच्छागिह (रक्षागृह), दन्तगिह (हाथीदांत से मंडित कमरा), कंसगिह (कांसे से मंडित कमरा), पडिकम्मगिह (प्रतिकर्म या धार्मिक कृत्य करने का कमरा), कंकसाला (कंक = विशेष प्रकार का लोहा, उससे बना हुआ कमरा) आतपगिह, पणिय गिह (पण्यगृह), आसण गिह (आस्थानशाला), भोजनगृह, रसोती गिह (रसवतीगृह, रसोई) हयगृह, रथगृह, गजगृह, पुष्पगृह, द्यूतगृह, पातवगिह (पादपगृह), खलिण गिह (वह कमरा जहाँ घोड़े का साजसामान रखा जाता है), बंधनगिह (कारागार) जाणगिह (यानगृह) (पृ० १३६) । इस सूची के हिमगृह का विस्तृत वर्णन कादम्बरी में आया है ।

कुछ दूर बाद स्थापत्य संबंधी शब्दों की एक लम्बी सूची पुनः आती है जिसमें बहुत से नाम तो ये ही हैं और कुछ नये हैं, जैसे भग्ग गिह (लिपा पुता घर, देशी भग्ग शब्द = लिपा पुता, देशी नाममाला ६।९९), सिंघाडण (शृंगाटक = सार्वजनिक चतुष्पथ), रायपथ (राजपथ), द्वार, क्षेत्र, अट्टालक, उदकपथ, वय (वज), वप्प (वप्र), फलिहा (परिघ या अर्गला), पउली (प्रतोली, नगरद्वार) अस्स मोहणक (अश्वशाला), मंचिका (प्राकार के साथ बने हुए ऊँचे बैठने के स्थान), सोपान, खम्भ, अभ्यन्तर द्वार, बाहरी द्वार, द्वारशाला, चतुरस्सक (चतुष्क), महाणस गिह, जलगिह, रयणगिह (रत्नगृह, जिसे पहले रयत गिह या रजत गृह कहा है वही संभवतः रत्नगृह था), भांडगृह, ओसहि गिह (ओषधिगृह), चित्तगिह (चित्रगृह), लतागिह, दगकोट्टक (उदक कोष्ठक), कोसगिह (कोषगृह), पाणगिह (पानगृह), वत्थगिह (वस्त्रगृह, तोशाखाना), जूतसाला (द्यूतशाला), पाणवगिह (पण्य या व्यवहारशाला), लेवण (आलेपन या सुगंधशाला), उज्जाणगिह (उद्यानशाला), आएसणगिह (आदेशनगृह), मंडव (मंडप), वेसगिह (वेशगृह, शृंगारस्थान), कोट्टागार (कोठार), पवा (प्रपाशाला), सेतुकम्म (सेतुकर्म), जणक (संभवतः जाणक = यानक), ण्हाणगिह (स्नानगृह), आतुरगिह, संसरणगिह (स्मृतिगृह), संकशाला (शुल्कशाला), करणशाला (अधिष्ठान या सरकारी दफ्तर), परोहड (घर का पिछवाड़ा) । अन्त में कहा है कि और भी अनेक प्रकार के गृह या स्थान मनुष्यों के भेद से भिन्न भिन्न होते हैं, जिनका परिचय लोक से प्राप्त किया जा सकता है (पृ० १३५-१३८) ।

बारहवें अध्याय में अनेक प्रकार की योनियों का वर्णन है । धर्मयोनि का संबंध धार्मिक जीवन और तत्संबंधी आचार-विचारों से है । अर्थयोनि का संबंध अनेक प्रकार के धनागम और अर्थोपार्जन में प्रवृत्त स्त्री-पुरुषों के जीवन से है । कामयोनि का संबंध स्त्री-पुरुषों के अनेक प्रकार के कामोपचारों से एवं गन्धमाल्य, स्नानानुलेपन, आभरण आदि की प्रवृत्तियों और भोगों से है । सत्त्वों के पारस्परिक संगम और मिथुन भाव को संगमयोनि समझना चाहिए । इसके प्रतिकूल विप्रयोगयोनि वह है जिसमें दोनों प्रेमी अलग अलग रहते हैं । मित्रों के मिलन और आनंदमय जीवन को मित्रयोनि समझना चाहिए । जहाँ आपस में अमैत्री, कलह आदि हों और दो व्यक्ति अहि-नकुल भाव से रहें वह विवादयोनि है । जहाँ ग्राम, नगर, निगम, जनपद, पत्तन, निवेश, स्कन्धावार, अटवी, पर्वत आदि प्रदेशों में मनुष्य

दूत, सन्धिपाल या प्रवासी के रूप में आते-जाते हों, उस प्रसंग को प्रावासिक योनि मानना चाहिए। ये ही लोग जब उठे हुए हों तो उसे पवुत्थ या गृहयोनि समझना चाहिए।

तेरहवें अध्याय में नाना प्रकार की योनियों के आधार पर शुभाशुभ फल का कथन है। सजीव, निर्जीव और सजीव-निर्जीव तीन प्रकार की योनि हैं और तीन ही प्रकार के लक्षण हैं, अर्थात् उदात्त, दीन और दीनोदात्त। (पृ० १४०-१४४)

चौदहवें अध्याय में यह विचार किया गया है कि यदि प्रश्नकर्ता लाभ के सम्बन्ध में प्रश्न करे तो कैसा उत्तर देना चाहिए। लाभ सम्बन्धी प्रश्न सात प्रकार के हो सकते हैं—धनलाभ, प्रियजनसमागम, सन्तान या पुत्रप्राप्ति, आरोग्य, जीवित या आयुष्य, शिल्पकर्म, वृष्टि और विजय। इनका विवेचन चौदहवें से लेकर २१ वें अध्याय तक किया गया है। वृष्टिद्वार नामक बीसवें अध्याय में जल सम्बन्धी वस्तुओं का नाम लेते हुए कोटिम्ब नामक विशेष प्रकार की नाव का उल्लेख आया है, जिसका परिगणन पृष्ठ १६६ पर नावों की सूची में पुनः किया गया है। धनलाभ के सम्बन्ध में फलकथन उत्तम वस्त्र, आभरण, मणि-मुक्ता, कंचन-प्रवाल, भाजन-शयन, भक्ष्य भोजन आदि मूल्यवान् वस्तुओं के आधार पर और प्रश्नकर्ता द्वारा उनके विषय में दर्शन या भाषण के आधार पर किया जाता था (पृ० १४४-१४५)।

पन्द्रहवें अध्याय में हंस, कुरी, चक्रवाक, कारण्डव, कादम्ब आदि पक्षियों की कामसम्बन्धी चेष्टाओं अथवा चतुष्पथ, उद्यान, सागर, नदी, पत्तन आदि की वार्ताओं के आधार पर समागम के विषय में फलकथन किया गया है। इसमें संमोद, संप्रीति, मित्रसंगम या विवाह आदि फलों का उल्लेख किया जाता था।

सोलहवें अध्याय में सन्तान के सम्बन्ध में प्रश्न का उत्तर कहा गया है, जो बच्चों के खिलौनों या तत्सदृश वस्तुओं के आधार पर कहा जाता था।

सत्रहवें अध्याय में आरोग्य सम्बन्धी प्रश्न का उत्तर पुष्प, फल, आभूषण आदि के आधार पर अथवा हास्य, गीत आदि भावों के आधार पर करने का निर्देश है।

अठारहवें अध्याय में जीवन और मरण सम्बन्धी प्रश्नकथन का वर्णन है।

कर्मद्वार नामक उन्नीसवें अध्याय में राजोपजीवी शिल्पी एवं उनके उपकरणों के सम्बन्ध में प्रश्नकथन का उल्लेख है।

वृष्टिद्वार नामक बीसवें अध्याय में उत्तम वृष्टि और सस्यसम्पत्ति के विषय में फलकथन का निर्देश है, जो नावा, कोटिम्ब, डआलुआ नामक नौका, पद्म उत्पल, पुष्प, फल, कन्दमूल, तैल, घृत, दुग्ध, मधुपान, वृष्टि, स्तनित, मेघगर्जित, विद्युत् आदि के आधार पर किया जाता था।

विजयद्वार नामक इक्कीसवें अध्याय में जय-पराजय सम्बन्धी कथन है। तालवृन्त, भृङ्गार, वैजयन्ती, जय-विजय, पुस्समाणव, शिबिका, रथ, मूल्यवान् वस्त्र, माल्य, आभरण आदि के आधार पर यह फलकथन किया जाता था। उसमें पुस्समाणव (पुष्यमाणव) शब्द का उल्लेख महाभाष्य ७।२।२३ में आया है (महीपालवचः श्रुत्वा जुघुषुः पुष्यमाणवाः)। आगे पृष्ठ १६० पर भी सूत मागध के बाद पुष्यमाणव का उल्लेख हुआ है, जिससे सूचित होता है कि ये राजा के बन्दी मागध जैसे पार्श्वचर होते थे। इसी सूची में जय-विजय विशेष रूप से ध्यान देने योग्य है। वराहमिहिर की बृहत्संहिता के अनुसार (अ० ४३, श्लोक ३९-४०) राज्य में सात प्रकार की ध्वजाएं शक्र-कुमारी कहलाती थीं। उनमें सब से बड़ी शक्रजनित्री या इन्द्रमाता, उससे छोटी दो वसुन्धरा, उनसे छोटी दो जया-विजया और उनसे छोटी दो नन्दा-उपनन्दा कहलाती थीं (पृ० १४६)।

बाइसवाँ प्रशस्त नामक अध्याय है। इसमें उन उत्तम फलों की सूची है जिनका शुभ कथन किया जाता था। उनमें से कुछ विषय इस प्रकार थे—क्रय-विक्रय में लाभ, कर्म द्वारा प्राप्त लाभ, कीर्ति, वन्दना, मान, पूजा, उत्कृष्ट और कनिष्ठ शब्दों का श्रवण, सुन्दर केशविन्यास और मौलिबन्धन, केशाभिवर्धन, विवाह, विद्या,

इक्षु, सस्य फल आदि का लाभ, खेती में सुभिक्ष, बन्धुजन-समागम, गेय काव्य, पादबन्ध (= श्लोकरचना), पाठ्य काव्य, गौ आदि पशु एवं नर-नारी और स्वजनों की रक्षा, गन्ध-माल्य, भाजन-भूषण आदि का संजोना, यान, आसन, शयन, कमलवन, भ्रमर, विहग, द्रुम आदि का समागम, घात, वध, बन्ध एवं हास्य परिमोदन आदि की प्राप्ति, ग्रीष्म, वर्षा, हेमन्त, वसन्त, शरद आदि ऋतुओं की प्राप्ति, घोड़े, शूकर आदि का पकड़ना, घंटिक (राजप्रासाद में घंटावादन करने वाले), चक्कि (चाकिक, घोषणा करने वाला बंदीविशेष, अमरकोष २।८।१८), सत्थिक (स्वस्ति वाचन करने वाला), वैतालिक (प्रातःकाल स्तुतिपाठ द्वारा जागरण कराने वाला), मंगलवाचन, मूल्यवान रत्न आदि का ग्रहण, गन्ध, माल्य, आभरण, चिरप्रवास से सफलयात्रा या सिद्धयात्रा के साथ लौटने पर स्वजन संबंधियों से समागम, भूताधिपत्य, पुण्य उत्पत्ति, चैत्य पूजा के महोत्सव (महामहिक) में तूर्य शब्दों का श्रवण, चोरी हुए, भ्रष्ट या नष्ट धन की पुनःप्राप्ति, अष्टमांगलिक चिह्नों (चिधट्टय) को सुवर्ण में बनाकर उनका उच्छ्रित करना, छत्र, उपानह, भृंगार का संप्रदान, रक्षा और सम्पत्ति की प्राप्ति, इच्छानुकूल आनन्द प्राप्त होना, किसी विशेष शिल्प के कारण संपूजन और अभिवन्दन, स्वच्छ जल की उत्पत्ति और दर्शन, मन में उत्तम विचार की उत्पत्ति, जलपात्र या जलाशय का पूर्ण होना, जातकर्म आदि संस्कारों में प्रशस्त अग्नि का प्रज्वलित करना, आयुष्य, धन, अन्न, कनक, रत्न, भाजन, भूषण, परिधान, भवन आदि सुखकारी संपदा की प्राप्ति, आर्जव युक्त साधुओं का पूजन, ज्येष्ठ और अनुज्येष्ठ की नियुक्ति, ज्योति, अग्नि, विद्युत्, वज्र, मणि, रत्न आदि से तृप्ति, जन्म आदि अवसरों पर होने वाले मंडन या शोभा, आर्यजनों का संमान और पूजा, ध्यान की आराधना, पुरानी वस्तुओं का नवीनीकरण, अध्यात्म-गति विषयक दर्शन, किसी आढ्य पुरुष का याग, आभूषणों का इंकृत शब्द इत्यादि अनेक प्रकार के प्रशस्त या उत्तम भाव लोक में है। जहाँ मन की रुचि हो, जो इन्द्रियों को इष्ट जान पड़े, एवं लोक जिसकी पूजा करता हो, उसे ही प्रशस्त जानना चाहिए (पृष्ठ १४६-१४८)।

तेइसवें अध्याय में अप्रशस्त वस्तुओं का उल्लेख है जिसमें रुदन, क्रोध, बुभुक्षा आदि नाना प्रकार के हीन और विनाशकारी भावों की सूची है (पृ० १४८-१४९)।

चौबीसवें अध्याय की संज्ञा जातिविजय है। आर्य और म्लेच्छ दो प्रकार के मनुष्य हैं। आर्य के अन्तर्गत ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्यों की गणना है। म्लेच्छवर्ग की गिनती शूद्रों में है। यह कथन पतंजलि के उस कथन से मिलता है जहाँ महाभाष्य में उन्होंने शक-यवनों का परिगणन शूद्रों में किया है। ज्ञात होता है कि भारतीय इतिहास के उस युग का यह सामाजिक तथ्य था जिसका उल्लेख अंगविज्जा के लेखक ने भी किया है। इन जातियों में कुछ महाकाय (लम्बे शरीर वाले), कुछ मज्झिमकाय (मझले कद के) और कुछ छोटे कद के होते थे। कुछ लोग व्यवहारोपजीवी, कुछ शस्त्रोपजीवी और कुछ क्षेत्रोपजीवी या कृषि से जीविका करते थे। उनके रहने के स्थान नगर, अरण्य, द्वीप, पर्वत, उद्यान (निक्खुड-निष्कुट) आदि थे। पुरन्धिमदेसीय, दक्खिणदेसीय, पच्छिमदेसीय, उत्तरदेसीय-इस प्रकार से चार दिशाओं में रहने वाले जन कहे गए हैं। एक दूसरा विभाग आर्य-देश और अनार्य-देश निवासियों का था (पृष्ठ १४९)।

पच्चीसवाँ अध्याय गोत्र नामक है। गोत्र दो प्रकार के थे। पहले गृहपतिक गोत्र और दूसरे द्विजातीय। इस वर्गीकरण में गृहपति शब्द का अर्थ ध्यान देने योग्य है। गृहपति उस वर्ग की संज्ञा थी जो बौद्ध और जैन धर्म के अनुयायी थे। उन धर्मों में अनागरिक या गृहहीन व्यक्ति तो श्रमण या मुंडक होते थे, और गृही या अनागरिक सामान्य रूप से गृहपतिक कहलाते थे। उनमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य का भेद उन धर्मों को मनःपूत न था। किन्तु ब्राह्मण धर्मानुयायी गृहस्थ द्विजाति कहलाते थे। गृहपतियों के गोत्रों में माढ, गोल, हारित, चंडक, सकित (कसित), वासुल, वच्छ, कोच्छ, कोसिक, कुंड ये नाम हैं (पृ० १४९-१५०)।

ब्राह्मण गोत्र चार प्रकार के कहे गये हैं—(१) सगोत्र (ऋषि गोत्र) (२) सकविगत गोत्र (इसका तात्पर्य लौकिक गोत्रों से ज्ञात होता है, जो ऋषि गोत्रों से अतिरिक्त थे।) (३) बंधचारिक गोत्र (उन नैष्ठिक ब्रह्मचारियों के गोत्र जिन्होंने ने ऊर्ध्वरेता होने के कारण गृहस्थ धर्म धारण नहीं किया और शान्तनव भीष्म के समान जिन्होंने

अन्य सब लोगों ने अपना मान लिया था), (४) एवं प्रवर गोत्र । इसी प्रसंग में कुछ गोत्रों के नाम भी दिये गये हैं, जैसे—मंडव (मांडव्य), सेट्टिण, वासेट्ट, सांडिल (शांडिल्य), कुम्भ, माहकी, कस्सव (काश्यप), गोतम, अगिरस, भगव (भार्गव), भागवत, सद्या, ओयम, हारि, लोकक्खी (लौगाक्षि), पचक्खी, चारायण, पारावण, अग्निवेस्स (अग्निवेश), मोग्गल (मोद्गल्य), अट्टिसेण, (आट्टिषेण), पूरिमंस, गदभ, वराह, डोहल (काहल), कंडूसी, भागवाती (भागवति), काकुरुडी, कण्ण (कर्ण), मज्झंदीण (माध्यन्दिन), वरक, मूलगोत्र, संख्यागोत्र, कढ (कठ), कलव (कलाप) वालंब (व्यालम्ब), सेतस्सतर (श्वेताश्वतर), तेत्तिरीक (तैत्तिरीय), मज्झरस, बज्झस (संभवतः बाध्व), छन्दोग (छान्दोग्य), मुज्जायण (मौज्जायन), कत्थलायण, गहिक, णेरित, बंभच्च, काप्पायण, कप्प, अप्पसत्थभ, सालंकायण, यणाण, आमोसल, साकिज, उपवति, डोभ, थंभायण, जीवंतायण, दढक, धणजाय, संखेण, लोहिच्च, अंतभाग, पियोभाग, संडिल, पव्वयव, आपुरायण, वावदारी, वग्घपद (व्याघ्रपाद), पिल (पैल), देवहच्च, वारिणील, सुघर । इस सूची में स्पष्ट ही प्राचीन ऋषि गोत्रों के साथ साथ बहुत से नये नाम भी हैं जो पाणिनीय परिभाषा के अनुसार गोत्रावयव या लौकिक गोत्र कहे जायेंगे । इस तरह के बांक या अल्ल समाज में हमेशा बनते रहते हैं और उस समय के जो मुख्य अवटंक रहे होंगे उनमें से कुछ के नाम यहाँ आ गए हैं । इसके अतिरिक्त कुछ विद्वानों और शास्त्रों के नाम भी आये हैं जैसे वैयाकरण, मीमांसक, छन्दोग, पण्णायिक (प्रज्ञावादी दार्शनिक), ज्योतिष, इतिहास, श्रुतवेद (ऋग्वेद), सामवेद, यजुर्वेद, एकवेद, द्विवेद, त्रिवेद, सव्ववेद (संभवतः चतुर्वेदी), छलंगवी (षडंगवित्), सेणिक, णिरागति, वेदपुट्ट, श्रोत्रिय, अज्झायी (स्वाध्यायी), आचार्य, जावक, णगति, वामपार (पृ० १५०) ।

छब्बीसवां अध्याय नामों के विषय में है । नाम स्वरादि या व्यंजनान्ति, अथवा ऊष्मान्ति, व्यंजनान्ति या स्वरान्ति होते थे । कुछ नाम समाक्षर और कुछ विषमाक्षर, कुछ जीवसंसृष्ट और कुछ अजीवसंसृष्ट थे । स्त्रीनाम, पुंनाम, नपुंसक यह विभाग भी नामों का है । अतीत, वर्तमान और अनागत काल के नाम यह भी एक वर्गीकरण है । एक भाषा, दो भाषा या बहुत भाषाओं के शब्दों को मिला कर बने हुए नाम भी हो सकते हैं । और भी नामों के अनेक भेद संभव हैं । जैसे नक्षत्र, ग्रह, तारे, चन्द्र, सूर्य, वीथि या मंडल, दिशा, गगन, उल्का, परिवेश, कूप, उदपान, नदी, सागर, पुष्करिणी, नाग, वरुण, समुद्र, पट्टन, वारिचर, वृक्ष, अन्नपान, पुष्प, फल, देवता, नगर, धातु, सुर, असुर, मनुष्य, चतुष्पद, पक्षी, कीट, कृमि इत्यादि पृथिवी पर जितने भी पदार्थ हैं उन सब के नामों के अनुसार मनुष्यों के नाम पाये जाते हैं । वस्त्र, भूषण, यान, आसन, शयन, पान, भोजन, आवरण, प्रहरण—इनके अनुसार भी नाम रखे जाते हैं । नरकवासी लोक, तिर्यक् योनि में उत्पन्न, मनुष्य, देव, असुर, पिशाच, यक्ष, राक्षस, किन्नर, किंपुरुष, गन्धर्व, नाग, सुपर्ण इत्यादि जो देव योनियाँ हैं उनके अनुसार भी मनुष्यों के नाम रखे जाते हैं । एक, तीन, पाँच, सात, नौ, ग्यारह अक्षरों के नाम होते हैं, जो विषमाक्षर कहलाते हैं । अथवा दो, चार, आठ, दस, बारह अक्षरों के नाम समाक्षर कहलाते हैं । संकर्षण, मदन, शिव, वैष्णव, वरुण, यम, चन्द्र, आदित्य, अग्नि, मरुत्संज्ञक देवों के अनुसार भी मनुष्य नाम होते हैं ।

मनुष्य नाम पाँच प्रकार के कहे गये हैं—(१) गोत्रनाम, इनके अन्तर्गत गृहपति और द्विजाति गोत्र दो कोटियाँ थीं जिनका उल्लेख ऊपर हो चुका है । (२) अपनाम या अधनाम—जैसे उज्झितक, छड्डितक । इनके अन्तर्गत वे नाम हैं जो हीन या अप्रशस्त अर्थ के सूचक होते हैं । प्रायः जिनके बच्चे जीवित नहीं रहते वे माता—पिता अपने बच्चों के ऐसे नाम रखते हैं । (३) कर्मनाम । (४) शरीर नाम जो प्रशस्त और अप्रशस्त होते हैं, अर्थात् शरीर के अच्छे बुरे लक्षणों के अनुसार रखे जाते हैं; जैसे सण्ड, विकड, खरड, खल्वाट आदि । दोषयुक्त नामों की सूची में खंडसीस, काण, पिळ्ळक, कुब्ज, वामणक, खंज आदि नाम भी हैं । यह स्पष्ट रूप से कहा गया है कि प्राकृत भाषा में भी नाम रखे जाते हैं । उसमें प्रशस्त नाम वे हैं जो वर्ण गुण या शरीर गुण के अनुसार हों—जैसे अवदातक और उसे ही प्राकृत भाषा में सेड या सेडिल, ऐसे ही श्याम को प्राकृत भाषा में सामल या सामक और कृष्ण को कालक या कालिक कहा जायगा । ऐसे ही शरीर गुणों के अनुसार सुमुख, सुदंसण, सुरूप, सुजान, सुगत आदि नाम होते हैं । (५) करण नाम वे हैं जो अक्षर संस्कार के विचारसे

रखे जाते हैं। इनमें एक अक्षर, द्वि अक्षर, त्रि अक्षर आदि कई तरह के नाम हैं। दो अक्षरों वाले नाम दो प्रकार के होते हैं—जिनके दोनों अक्षर गुरु हों, जिनका पहला अक्षर लघु और बाद का अक्षर गुरु हो। इनके उदाहरणों में वे ही नाम हैं जो कुषाण काल के शिलालेखों में मिलते हैं—जैसे तात, दत्त, दिण्ण, देव, मित्त, गुत्त, भूत, पाल, पालि, सम्म, यास, रात, घोस, भाणु, विद्धि, नंदि, नंद, मान। और भी, उत्तर, पालित, रक्खिय, नंदन, नंदिक—नंदक, ये नाम भी उस युग के नामों की याद दिलाते हैं जिन्हें हम कुषाण और पूर्वगुप्त काल के शिलालेखों में देखते हैं।

इसके बाद वर्णमाला के प्रत्येक अक्षर को लेकर विस्तृत ऊहापोह की गई है कि नामों में उनका प्रयोग किस किस प्रकार किया जा सकता है।

इस अध्याय के अन्त में मनुष्य नामों की कई सूचियाँ दी गई हैं जिनमें अधिकांश नाम कुषाणकालीन संस्कृति के प्रतिनिधि हैं। उस समय नक्षत्र देवताओं के नाम से एवं नक्षत्रों के नाम से मनुष्य नाम रखने की प्रथा थी। नक्षत्र देवताओं के उदाहरणों में चंद्र (चन्द्र), रुद्र (रुद्र), सम्प (सर्प), अज्ज (अर्यमा), तट्टा (त्वष्टा), वायु, मित्त (मित्र), इन्द्र (इन्द्र), तोय, विस्से (विश्वदेव), ऋजा, बंभा (ब्रह्मा) विण्हु (विष्णु), पुस्सा (पुष्य) है। यह ध्यान देने योग्य है कि उस समय प्राकृत भाषा के माध्यम से नामों का जो रूप लोक में चालू था, उसे ज्यों का त्यों सूची में ला दिया है; जैसे, अर्यमा के लिये अज्जो और विश्वदेव के लिये विस्से। नक्षत्र नामों में अद्द, पूसो, हत्थो, चित्ता, सात्ती, जेट्टा, मूला, मघा ये रूप हैं। दाशार्ह या वृष्णियों के नाम भी मनुष्य नामों में चालू थे जैसे, कण्ह, राम, संब, पज्जुण (प्रद्युम्न), भाणु। नामों के अन्त में जुड़नेवाले उत्तर पदों की सूची विशेष रूप से काम की है क्योंकि शुंग और कुषाण काल के लेखों में अधिकांश उसका प्रयोग देखा जाता है; जैसे त्रात, दत्त, देव, मित्त, गुत्त, पाल, पालित, सम्म (शर्मन्), सेण (सेन), रात (जैसे वसुरात), घोस, भाग।

नामों के चार भेद कहे हैं :—प्रथम अक्षर लघु, अन्तिम अक्षर गुरु, सर्वगुरु एवं अन्तिम अक्षर लघु। इनके उदाहरण ये हैं—अभिजि(अभिजित्), सवण (श्रवण), भरणी, अदिती, सविता, णिरिती (निर्ऋति), वरुण। और भी कत्तिका, रोहिणी, आसिका, मूसिका, वाणिज। मगधा, मधुरा, प्रातिका, फग्गुणी, रेवती, अस्सयो (अश्वयुक्), अज्जमा (अर्यमन्), अश्विनौ, विसाहा, आसाढा, धणिट्टा, ईदगिरि। सर्वगुरु नामों की सूची में रोहत्रात, पुस्सत्रात, फग्गुत्रात, हत्थत्रात, अस्सत्रात। उपान्त्य लघुनामों में रिघसिल (पाठ० रिषितिल) श्रवणिल, पृथिविल—इन नामों में स्पष्ट ही उत्तरपद का लोप करने के बाद इल प्रत्यय जोड़ा गया है जिसका विधान अष्टाध्यायी में आया है (धनिलचौ ५।३।७९)। इलवाले नाम साँची के लेखों में बहुत मिलते हैं—अगिल (अग्निदत्त), सातिल (स्वातिदत्त), नागिल (नागदत्त), यखिल (यक्षदत्त), बुधिल (बुद्धदत्त)। ससित्रात, पितृत्रात, भवत्रात, वसुत्रात, अजुत्रात, यमत्रात—ये प्रथम लघु अक्षरवाले नाम थे। शिवदत्त, पितृदत्त, भवदत्त, वसुदत्त, अजुदत्त, यमदत्त, उपान्त्यगुरु नामों के उदाहरण हैं। अंगविज्जा के नामों का गुच्छ इस विषय की मूल्यवान् सामग्री प्रस्तुत करता है। आगे चलकर गुप्तकाल में जब शुद्ध संस्कृत भाषा का पुनः प्रचार हुआ तब मनुष्य नाम भी एकदम संस्कृत के साँचे में ढल गये, जैसे सत्यमित्र, धृतिशर्मा आदि। अंगविज्जा में उनकी बानगी नहीं मिलती (पृ० १५०—१५८)।

सत्ताइसवें अध्याय का नाम ठाणज्जाय है। इसमें ठाण अर्थात् स्थान या सरकारी अधिकारियों के पदों की सूची है। राज्याधिकारियों की यह सूची इस प्रकार है—राजा, अमच्च, नायक, आसनस्थ (संभवतः व्यवहारसन का अधिकारी), भांडागारिक, अभ्यागारिक (संभवतः अन्तःपुर का अधिकारी जिसे दौवारिक या गृहचिन्तक भी कहते थे), महाणसिक (प्रधान रसोइया), गजाध्यक्ष, मज्जघरिय (मद्यगृहक), पाणियघरिय (जिसे बाण ने जलकर्मान्तिक लिखा है), णावाधियक्ख (नावाध्यक्ष), सुवर्णाध्यक्ष, हत्थिअधिगत, अस्सअधिगत, योग्गायरिय (योग्याचार्य अर्थात् योग्या या शस्त्राभ्यास करानेवाला), गोवयक्ख (गवाध्यक्ष), पडिहार (प्रतिहार), गणिक खंस (गणिकाओं या वेश का अधिकारी), बलगणक (सेना में आर्थिक हिसाब रखनेवाला) वरिसधर (वर्षधर या अन्तःपुर में कार्य करनेवाला),

वत्थुपारिसद (वास्तुपार्षद), आरामपाल (उद्यानपाल), पच्वंतपाल (प्रत्यंत या सीमाप्रदेश का अधिकारी), दूत, सन्धिपाल (सान्धिविग्रहिक), सीसारक्ख (राजा का सबसे निकट का अंगरक्षक), पतिआरक्ख (राजा का आरक्षक), सुंक्सालिअ (शौल्कशालिक या चुंगीघर का अधिकारी), रज्जक, पधवावत (पथव्यापृत), आडविक (आटविक), णगराधियक्ख (नगराध्यक्ष), सुसाणवावट (श्मशान व्यापृत) सूणावावत, चारकपाल (गुप्तचर अधिकारी) फलाधियक्ख, पुप्फाधियक्ख, पुरोहित, आयुधाकारिक, सेणापति, कोट्टाकारिक (कोष्ठागारिक) (पृ० १५९) ।

अट्ठाईसवें अध्याय में उस समय के पेशेवर लोगों की लम्बी सूची आई है। आरंभ में पाँच प्रकार के कर्म या पेशे कहे हैं जैसे रायपुरिस (राजपुरुष), ववहार (व्यापार वाणिज्य), कसि गोरक्ख (कृषि और गोरक्षा) कारुकम्म (अपने हाथ से उद्योग धन्धे करने वाले शिल्पी ओर पेशेवर लोग), भतिकम्म (मजदूरी पेशा) राजपुरुषों के ये नाम हैं—रायामच्च (राजामात्य), अस्सवारिक (अश्वाध्यक्ष जैसा उच्च अधिकारी), आसवारिय (घुड़सवार जैसा सामान्य अधिकारी जिसे पउमचरिय ६।८७ में असवार कहा गया है), णायक, अब्भंतारावचर, अब्भाकारिय (अभ्यागारिक), भाण्डागारिय, सीसारक्ख, पडिहारक, सूत, महाणसिक, मज्जघरिय, पाणीयघरिय, हत्थाधियक्ख (हस्त्यध्यक्ष), महामत्त (महामात्र), हत्थिमेंटु, अस्साधियक्ख अस्सारोध, अस्सबन्धक, छागलिक, गोपाल, महिसीपाल, उट्टपाल, मगलुद्धग (मृगलुब्धक), ओरब्भिक (औरभ्रिक), अहिनिप (संभवतः अहितुंडिक या गारुडिक) । राजपुरुषों में विशेष रूप से इनका परिगणन है—अस्सातियक्ख, हत्थाधियक्ख हत्थारोह (हस्त्यारोह), हत्थिमहामत्तो, गोसंखी (जिसे पाणिनि और महाभारत में गोसंख्य कहा गया है), गजाधिपति, भाण्डागारिक, कोषरक्षक, सव्वाधिकत (सर्वाधिकृत), लेखक (सर्वलिपिओं का ज्ञाता), गणक, पुरोहित, संवच्छर (सांवत्सरिक), दाराधिगत (द्वारपाल, दौवारिक), बलगणक, सेनापति, अब्भागारिक, गणिकाखंसक, वरिसधर, वत्थाधिगत (वस्त्राधिकृत, तोशाखाने का अध्यक्ष), णगरगुत्तिय, (नगरगुप्तिक, नगरगुप्ति या पुरस्क्षा का अधिकारी), दूत, जइणक (जविनक या जंघाकर जो सौ सौ योजन तक संदेश पहुँचाते या पत्रवाहक का काम करते थे), पेसणकारक, पतिहारक, तरपअट्ट (तरप्रवृत्त), णावाधिगत, तित्थपाल, पाणिघरिय, ण्हाणघरिय, सुराघरिय, कट्टाधिकत (काष्ठाधिकृत), तणाधिकत (तृणाधिकृत), बीजपाल, ओपसेज्जिक (औपशय्यिक—शय्यापाल, राजा की शय्या का रक्षक), सीसारक्ख (मुख्य अंगरक्षक), आरामाधिगत नगरक्ख, अब्भागारिय, असोकवणिकापाल, वाणाधिगत, आभरणाधिगत । राज्य के अधिकारियों की इस सूचि के कितने ही नाम पहले भी आ चुके हैं । कुछ नये भी हैं । प्राचीन भारतीय शासन की दृष्टि से यह सामग्री अत्यन्त उपयोगी कही जा सकती है । प्रायः ये ही अधिकारी राजमहलों में और शासन में बहुत बाद तक बने रहे ।

इसके बाद सामान्य पेशों की एक बड़ी सूची दी गई है; जैसे ववहारि (व्यवहारी), उदकवड्डिक (नाव या जहाज बनाने वाला), मच्छबन्ध, नाविक, बाहुविक (डाँड चलाने वाले), सुवण्णकार, अलित्तकार (आलता बनाने वाला), रतरज्जक (लाल रंग की रंगाई का विशेषज्ञ), देवड (देवपटविक्रेता), उण्णवाणिय, सुत्तवाणिय, जतुकार, चित्तकार, (चित्रकार), चित्तवाजी (चित्रवाद्य जानने वाला), तट्टकार (ठठेरा), सुद्धरज्जक, लोहकार, सीतपेट्टक (संभवतः दूध दही के भाँडोंको बरफ में लपेट कर रखने वाला), कुंभकार, मणिकार, संखकार, कंसकार, पट्टकार (रेशमी वस्त्र बनाने वाला) दुस्सिक (दूष्य नामक वस्त्र बनानेवाले), रज्जक, कोसेज्ज (कौशेय या रेशमी वस्त्र बुनने वाला), वाग (वल्कल बनाने वाला), ओरब्भिक, महिसघातक, उस्सणिकामत्त (उख पेरेने वाले), छत्तकारक, वत्थोपजीवी, फलवाणिय, मूलवाणिय, धान्यवाणिय, ओदनिक, मंसवाणिज्ज, कम्मासवाणिज्ज (कम्मास या घुघरी बेचने वाला), तप्पणवाणिज्ज (जौ आदि के सत्तू बेचने वाला), लोणवाणिज्ज, आपूपिक (हलवाई), खज्जकारक (खाजा बनाने वाला); इससे सूचित होता है कि खाजा नामक मिठाई कुषाण काल में भी बनने लगी थी, पण्णिक (हरी साग—सब्जी बेचनेवाला), फलवाणियक, सिंगरेवाणिया (सिंगेरे या अदरक बेचने वाला) ।

इसके अनन्तर राजपुरुष और पेशेवर लोगों की मिली-जुली सूची दी गई है, जिनमें से नये नाम ये हैं—छत्तधारक, प्रसाधक (प्रसाधक, प्रसाधन कर्म करने वाला), हत्थिखंस (एक प्रति के अनुसार हत्थिसंख), अस्सखंस (एक प्रति के अनुसार अस्ससंख; संभवतः यही मूलरूप था जो उच्चारण में वर्णविपर्यय से खंस बन गया), अग्गि उपजीवी (आहिताग्नि), कुसीलक, रंगावचर (रंगमंच पर अभिनय करने वाला), गंधिक, मालाकार, चुर्णिणकार

(स्नान—चूर्ण बनानेवाला जिसे चुण्णवाणिय भी कहते थे), सूत मागध, पुस्समाणव, पुरोहित, धम्मड्ड (धर्मस्थ), महामंत (महामात्र), गणक, गंधिक—गायक, दपकार, बहुस्सुय (बहुश्रुत) । इस सूची के पुस्समाणव का उल्लेख पृष्ठ १४६ पर भी आ चुका है, और यह वही है जिसका पतंजलि ने 'महीपालवचः श्रुत्वा जुघुषुः पुष्यमाणवाः' इस श्लोकार्ध में उल्लेख किया है । ये पुष्यमाणव एक प्रकार के बन्दीजन या भाट ज्ञात होते हैं जो राजा की प्रशंसा में कुछ श्लोकपाठ करते या सार्वजनिक रूप से कुछ घोषणा करते थे । यहाँ 'महीपालवचः श्रुत्वा' यह उक्ति संभवतः पुष्यमित्र शृंग के लिए है । जब उसने सेना—प्रदर्शन के व्याज से उपस्थित अपने स्वामी अंतिम मौर्य राजा बृहद्रथ को मार डाला, तब उसके पक्षपाती पुष्यमाणवों ने सार्वजनिक रूप से उसके राजा बन जाने की घोषणा की । पतंजलि ने यह वाक्य किसी काव्य से उद्धृत किया जान पड़ता है; अथवा यह उसके समय में स्फुट उक्ति ही बन गई हो । पुष्यमाणव शब्द द्व्यर्थक जान पड़ता है । उसका दूसरा अर्थ पुष्य अर्थात् पुष्यमित्र के माणव या ब्राह्मण सैनिकों से था (पृष्ठ १६०) ।

दर्पकार का अर्थ स्पष्ट नहीं है । संभवतः दर्पकार का आशय अपने बल का घमंड करने वाले विशेष बलशाली व्यक्तियों से था जिन्हें वंठ कहते थे और जो अपने भारी शरीर बल से शेर—हाथियों से लड़ाए जाते थे । गन्धिक—गायक भी नया शब्द है । उसका आशय संभवतः उस तरह के गवैयों से था जिनमें गान विद्या के ज्ञान की सगन्धता या कौशल अभिमान रहता था ।

सूची को आगे बढ़ाते हुए मणिकार, स्वर्णकार, कोट्टक (बढई; यह शब्द आचारांग २।१।२ में भी आया है, तुलना—संस्कृत कोटक, मानियर विलियम्स), वट्टकी (संभवतः कटोरे बनाने वाला), वत्थुपाढक (वास्तु पाठक, वास्तुशास्त्र का अभ्यासी), वत्थुवापतिक (वास्तुव्यापृतक—वास्तुकर्म करनेवाला) मंतिक (मान्त्रिक), भंडवापत (भाण्ड व्यापृत, पण्य या क्रय—विक्रय में लगा हुआ), तिथ्यवापत (घाट वगैरह बनाने वाला), आरामवावट (बागबगीचे का काम करने वाला), रथकार, दारुक, महाणसिक, सूत, ओदनिक, सामेलक्ख (संभवतः संभली या कुट्टिनीओं की देख—रेख करने वाला विट्), गणिकाखंस, हत्थारोह, अस्सारोह, दूत, प्रेष्य, बंदनागरिय, चोरलोपहार (चोर एवं चोरी का माल पकड़ने वाला), मूलकक्खाणक, मूलिक, मूलकम्म, सव्वसत्थक (सब शस्त्रों का व्यवहार करनेवाला, संभवतः अयःशूल उपायों से वर्तने वाले जिन्हें आयःशूलिक कहा जाता था) ।

सारवान व्यक्तियों में हेरणिणक, सुवणिणक, चन्दन के व्यापारी, दुस्सिक, संजुकारक (संजु अर्थात् संज्ञा द्वारा भाव ताव या मोल—तोल करनेवाले जौहरी, जो कपड़े के नीचे हाथ रखकर रत्नोंका दाम पक्का करते थे), देवड (देवपट अर्थात् देवदूष्य बेचनेवाले सारवान व्यापारी), गोवज्झभतिकारक (= गोवह्यभतिकारक, बैलगाड़ी से भृति कमाने वाला, वज्झ = सं० वह्य), ओयकार (ओकसूकार—घर बनाने वाला), ओड (खनन करनेवाली जाति) । गृहनिर्माण संबंधी कार्य करनेवालों में ये नाम भी हैं—मूलखाणक (नींव खोदनेवाले), कुंभकारिक (कुम्हार जो मिट्टी के खपरे आदि भी बनाते हैं), इड्डुकार (संभवतः इष्टका, ईंटे पाथने वाले), बालेपतुंद (पाठान्त—छावेषवुंद अर्थात् छोपने वाले, फलस्तर करने वाले), सुत्तवत्त (रस्सी बटने वाले; वत्ता = सूत्रवेष्टन यंत्र, पाइयसदमहणवो), कंसकारक (कसेरे जो मकान में जड़ने के लिए पीतल—तांबे का सामान बनाते थे), चित्तकारक (चित्तेरे जो चित्र लिखते थे), रूपक्खर (रूप = मूर्ति का उपस्कार करने वाले), फलकारक (संभवतः लकड़ी के तख्तों का काम करने वाला), सीकाहारक और मड्डुहारक—इनका तात्पर्य बालू और मिट्टी ढोनेवालों से था; सीक = सिकता, मड्डु = मृत्तिका । कोसज्जवायक (रेशमी वस्त्र बुनने वाले), दिअंडकंबलवायक (विशेषनाप के कम्बल बुनने वाले); कोलिका (वस्त्र बुनने वाले), वेज्ज (वैद्य), कायतेगिच्छका (काय—चिकित्सक), सल्लकत्त (शल्यचिकित्सक), सालाकी (शालाक्य कर्म, अर्थात् अक्षि, नासिका आदि की शल्य चिकित्सा करने वाले), भूतविज्जिक (भूतविद्या या ग्रहचिकित्सा करने वाले) कोमारिच्च (कुमार या बालचिकित्सा करने वाले), विसतिथिक (विषवैद्य या गारुडिक), वैद्य, चर्मकार, ण्हाविय—स्नापक, ओरब्भिक (औरभ्रिक गडरिये), गोहातक (गोघातक या सूना कर्म करने वाले), चोरघात (दंडपाशिक, पुलिस अधिकारी), मायाकारक (जादूगर), गौरीपाढक (गौरीपाठक, संभवतः गौरीव्रत या गौरीपूजा के अवसर पर पाठ करने वाले), लंखक (बांस के ऊपर नाचने वाले), मुट्टिक (मौष्टिक, पहलवान), लासक (रासक, रास गाने

वाले), वेलंबक (विडंबक, विदूषक), गंडक (गंडि या घंटा बजाकर उद्घोषणा करने वाले), घोषक (घोषणा करने वाले)—इतने प्रकार के शिल्पियों का उल्लेख कर्म-योनिनामक प्रकरण में आया है (पृ० १५९-१६१) ।

उन्तीसवें अध्याय का नाम नगरविजय है । इस प्रकरण में प्राचीन भारतीय नगरों के विषय में कुछ सूचनाएँ दी गई हैं । प्रधान नगर राजधानी कहलाता था । उसीसे सटा हुआ शाखानगर होता था । स्थायी नगर चिरनिविष्ट और अस्थायी रूप से बसे हुए अचिरनिविष्ट कहलाते थे । जल और वर्षा की दृष्टि से बहूदक या बहुवृष्टिक एवं अल्पोदक या अल्पवृष्टिक भेद थे । कुछ बस्तियों को चोरवास कहा गया है (जैसे सौराष्ट्र के समुद्र तट पर बसे वेरावल के पास अभी भी चोरवाड़ नामक नगर है) । भले मनुष्यों की बस्ती आर्यवास थी । और भी कई दृष्टियों से नगरों के भेद किये जाते थे—जैसे परिमंडल और चतुस्त्र, काष्ठप्राकार वाले नगर (जैसा प्राचीन पाटलिपुत्र था) और ईंट के प्राकार वाले नगर (इट्टिकापाकार), दक्षिणमुखी और वाममुखी नगर, पविट्ट नगर (घनी बस्ती वाले), विस्तीर्ण नगर (फैलकर बसे हुए), गहणनिविट्ट (जंगली प्रदेश में बसे हुए), उससे विपरीत आरामबहुल नगर (बाग-बगीचोंवाले; अं० पार्क सिटी), ऊँचे पर बसे हुए उद्धनिविट्ट, नीची भूमि में बसे हुए, निव्विगंदि (सम्भवतः विशेष गन्ध वाले), या पाणुप्पविट्ट (चांडालादि जातियों के वासस्थान; पाण = श्वपच चांडाल, देशीनाममाला ६।३८) । प्रसन्न या अतीक्ष्ण दंड और अप्रसन्न या बहुविग्रह, अल्प परिक्लेश और बहुपरिक्लेश नगर भी कहे गये हैं । पूर्व, पश्चिम, दक्षिण, उत्तर दिशाओं की दृष्टि से, अथवा ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र वर्णों की दृष्टि से भी नगरों का विभाग होता था । बहुअन्नपान, अल्पअन्नपान, बहुवतक (बहुवात या प्रचंड वायु के उपद्रव वाले), बहुउष्ण (अधिक उष्ण), आलोपणकबहुल (बहु आदीपन या अग्नि वाले), बहूदक, बहुवृष्टिक, बहूदकवाहन नगर भी कहे गये हैं (पृ० १६१-१६२) ।

तीसवाँ अध्याय आभूषणों के विषय में है । पृ० ६४, ७१ और ११६ पर भी आभूषणों का वर्णन आ चुका है । आभूषण तीन प्रकार के होते हैं । (१) प्राणियों के शरीर के किसी भाग से बने हुए (पाणजोणिय), जैसे शंखमुक्ता, हाथीदंत, जड़ली भैंसे के सींग आदि, बाल, अस्थि के बने हुए; (२) मूलजोणिमय अर्थात् काष्ठ, पुष्प, फल, पत्र आदि के बने हुए; (३) धातुयोनिगत जैसे—सुवर्ण, रूपा, ताँबा, लोहा, त्रपु (रौंदा), काल-लोह, आरकुड (फूल, काँसा), सर्वमणि, गोमेद, लोहिताक्ष, प्रवाल, रक्तक्षार-मणि (तामड़ा), लोहितक आदि के बने हुए । श्वेत आभूषणों में चांदी, शंख, मुक्ता, स्फटिक, विमलक, सेतक्षार मणि के नाम हैं । काले पदार्थों में सीसा, काललोह, अंजन और कालक्षार मणि; नीले पदार्थों में सस्सक (मरकत) और नीलखार मणि; आग्नेय पदार्थों में सुवर्ण, रूपा, सर्वलोह, लोहिताक्ष, मसारकल, क्षारमणि । धातुओं को पीटकर, क्षारमणि को उत्कीर्ण करके और रत्नों को तराशकर तथा चीरकोर कर बनाते हैं । मोतियों को रगड़ कर चमकाया जाता है ।

इसके बाद शरीर के भिन्न भिन्न अवयवों के गहनों की सूचियाँ हैं । जैसे सिर के लिये ओचूलक (अवचूलक वा चोटी में गूँथने का आभूषण, चोटीचक्र), णंदिविणद्धक (कोई मांगलिक आभूषण, सम्भवतः मछलियों की बनी हुई सुनहली पट्टी जो बालों में बाईं ओर सिर के बीच से गुद्दी तक खोंसकर पहनी जाती थी जैसे मथुरा की कुषाण कला में स्त्री मस्तक पर मिली है), अपलोकणिका (यह मस्तक पर गवाक्षजाल या झरोखे जैसा आभूषण था जो कुषाण और गुप्तकालीन किराटों में मिलता है), सीसोपक (सिर का बोर); कानों में तालपत्र, आबद्धक, पलिकामदुघनक (दुघन या मुंगरी की आकृति से मिलता हुआ कान का आभूषण), कुंडल, जणक, ओकासक (अवकाशक कान में छेद बढ़ा करने के लिये लोढ़े या डमरू के आकारका), कण्णोपुरक, कण्णुष्पीलक (कान के छेद में पहनने का आभूषण)—इन आभूषणों का उल्लेख है । आँखों के लिए अंजन, भौहों के लिए मसी, गालों के लिये हरताल, हिंगुल और मैन्सिल, एवं ओठों के लिए अलक्तक राग का वर्णन है । गले के लिए आभूषणों की सूची में कुछ महत्वपूर्ण नाम हैं; जैसे सुवर्णसुत्तक (= सुवर्णसूत्र), त्रिपिसाचक (त्रिपिशाचक अर्थात् ऐसा आभूषण जिसके टिकरे में तीन पिशाच या यक्ष जैसी आकृतियाँ बनी हों), विज्जाधारक (विद्याधरों की आकृतियों से युक्त टिकरा), असीमालिका (ऐसी माला जिसकी गुरियाँ या दाने खड़्ग की आकृतिवाले हों),

पुच्छलक (संभवतः वह हार जिसे गोपुच्छ या गोस्तन कहा जाता है, देखिये अमरकोष—क्षीरस्वामी), आवलिका (संभवतः इसे एकावली भी कहते थे), मणिसोमाणक (विमानाकृति मनकों का बना हुआ ग्रैवेयक । सोमाणक पारिभाषिक शब्द था । लोकपुरुष के ग्रीवा भाग में तीन-तीन विमानों की तीन पंक्तियाँ होती हैं जिनमें से एक विमान सोमणस कहलाता है), अटुमंगलक (अष्ट मांगलिक चिह्नों की आकृति के टिकरों की बनी हुई माला जिसका उल्लेख हर्षचरित एवं महाव्युत्पत्ति में आया है । इस प्रकार की माला संकट से रक्षा के लिए विशेष प्रभावशाली मानी जाती थी), पेचुका (पाठान्तर पेसुका, संभवतः वह कंठाभूषण जो पेशियों या टिकरों का बना हुआ हो), वायुमुत्ता (विशेष प्रकार के मोतियों की माला), वुप्प सुत्त (संभवतः ऐसा सूत्र जिसमें शेखर हो; वुप्प = शेखर), कट्टेवट्टक (अज्ञात) । भुजाओं में अंगद और तुडिय (= टड्डे) । हाथों में हस्तकटक, कटक, रुचक (निष्क), सूची, अंगुलियों में अंगुलेयक, मुद्देयक, वेंटक, (गुजराती वीटी = अंगूठी) ।

कटी में कांचीकलाप, मेखला और जंघा में गंडूपदक (गेंडोए की भांति का पैर का आभूषण), नूपुर, परिहेरक (= पारिहार्यक—पैरों के कड़े (और पैरों में खिखिणिक (किंकिणी—धूंघरू), खत्तियधम्मक (संभवतः वह आभूषण विशेष जिसे आजकल गूजरी कहते हैं), पादमुद्रिका, पादोपक । इस प्रकार अंगविज्जा में आभूषणों की सामग्री बहुत से नये नामों से हमारा परिचय कराती है और सांस्कृतिक दृष्टि से महत्त्व की है (पृ० १६२-३) ।

वत्थजोणी नामक एकतीसवें अध्याय में वस्त्रों का वर्णन है । प्राणियों से प्राप्त सामग्री के अनुसार वस्त्र तीन प्रकार के होते हैं—कौशेय या रेशमी, पतुज्ज, पाठान्तर पडण्ण = पत्रोर्ण और आविक । आविक को चतुष्पद पशुओं से प्राप्त अर्थात् अविके बालों का बना हुआ कहा गया है, और कौशेय या पत्रोर्ण को कीड़ों से प्राप्त सामग्री के आधार पर बना हुआ बताया गया है । इसके अतिरिक्त क्षौम, दुकूल, चीनपट्ट, कार्पासिक—ये भी वस्त्रों के भेद थे । धातुओं से बने वस्त्रों में लोहजालिका—लोहे की कड़ियों से बना हुआ कवच जिसे अंगरी कहा जाता है, सुवर्णपट्ट—सुनहले तारों से बना हुआ वस्त्र, सुवर्णखसित—सुनहले तारों से खचित या जरीके काम का वस्त्र । और भी वस्त्रों के कई भेद कहे गये हैं जैसे परगध—बहुत मूल्य का, जुत्तगध—बीच के मूल्य का, समगध—सस्ते मूल्य का, स्थूल, अणुक या महीन, दीर्घ, ह्रस्व, प्रावारक—ओढ़ने का दुशाला जैसे वस्त्र, कोतव—रोएंदार कम्बल जिसे कोचव भी कहते थे और जो संभवतः कूचा या मध्य एशिया से आता था, उण्णिक (ऊनी), अत्थरक—आस्तरक या बिछाने का वस्त्र महीन रौएंदार (तणुलोम), हस्सलोम, वधूवस्त्र, मृतक वस्त्र, आतवितक (अपने और पराये काम में आनेवाला), परक (पराया), निक्खित्त (फेंका हुआ) अपहित (चुराया हुआ), याचितक (माँगा हुआ) इत्यादि ।

रंगों की दृष्टि से श्वेत, कालक, रक्त, पीत, सेवालक (सेवाल के रंग का हरा), मयूरग्रीव (नीला), करेणूयक (श्वेत—कृष्ण), पयुमरत्त, (पद्मरक्त अर्थात् श्वेतरक्त), मैन्सिल के रंग का (रक्तपीत), मेचक (ताम्रकृष्ण) एवं उत्तम मध्यम रंगोंवाले अनेक प्रकार के वस्त्र होते थे । जातिपट्ट नामक वस्त्र भी होता था । मुख के ऊपर जाली (मुहोपकरणे उद्धभागेसु य जालकं) भी डालते थे । उत्तरीय और अन्तरीय वस्त्र शरीर के ऊर्ध्व और अधः भाग में पहने जाते थे । बिछाने की दरी पच्चवत्थरण और वितान या चंदोवा वितानक कहलाता था (पृ० १६३-४) ।

३२ वें अध्याय की संज्ञा धण्णजोणी (धान्ययोनि) है । इस प्रकरण में शालि, ब्रीहि, कोदों, रालक (धान्य विशेष, एक प्रकार की कंगु), तिल, मूँग, उड़द, चने, कुल्थी, गेहूँ आदि धान्यों के नाम गिनाये हैं । और स्निग्ध, रूक्ष, श्वेत, रक्त, मधुर, आम्ल, कषाय आदि दृष्टिओं से धान्यों का वर्गीकरण किया है (पृ० १६४-५) ।

३३ वें जाणजोणी (यानयोनि) नामक अध्याय में नाना प्रकार के यानों का उल्लेख है । जैसे शिबिका, भद्दासन, पल्लंकसिका (पालकी), रथ, संदमाणिका (स्यन्दमानिका एक तरह की पालकी), गिल्ली (डोली), जुग (विशेष प्रकार की शिबिका जो गोह्व या आन्ध्र देश में होती थी), गोलिंग, शकट, शकटी इनके नाम आए हैं । किन्तु जलीय वाहनों

की सूची अधिक महत्वपूर्ण है। उनके नाम ये हैं—नाव, पोत, कोट्टिम्ब, सालिक, तप्पक, प्लव, पिण्डिका, कंडे, वेलु, तुम्ब, कुम्भ, दति (दति)। इनमें नाव और पोत महावकाश अर्थात् बड़े परिमाणवाले जहाज थे जिनमें बहुत आदमियों के लिये अवकाश होता था। कोट्टिम्ब, सालिक, संघाड, प्लव और तप्पक मझले आकार की नावें थीं। उससे छोटे कट्ट (कंड) और वेलू होते थे। और उनसे भी छोटे तुम्ब, कुम्भ और दति कहलाते थे। जैसा श्री मोतीचन्दजी ने अंग्रेजी भूमिका में लिखा है पेरिप्लस के अनुसार भरुकच्छ के बन्दरगाह में त्रप्पग और कोट्टिम्ब नामक बड़े जहाज सौराष्ट्र तक की यात्रा करते थे। यही अंगविज्जा के कोट्टिम्ब और तप्पग हैं। पूर्वी समुद्र तट के जलयानों का उल्लेख करते हुए पेरिप्लस ने संगर नामक जहाजों का नामोल्लेख किया है जो कि बड़े-बड़े लट्टों को जोड़कर बनाये जाते थे। येही अंगविज्जा के संघाड (सं० संघाट) हैं। वेलू बाँसों का बजरा होना चाहिए। कांड और प्लव भी लकड़ी या लट्टों को जोड़कर बनाये हुए बजरे थे। तुम्बी और कुम्भ की सहायता से भी नदी पार करते थे। इनमें दति या दति का उल्लेख बहुत रोचक है। इसे ही अष्टाध्यायी में भस्त्रा कहा गया है। भेड़-बकरी या गाय-भैस की हवा से फुलाई हुई खालों को भस्त्रा कहा जाता था और इस कारण भस्त्रा या दति उस बजड़े या तमेड़ के लिये भी प्रयुक्त होने लगा जो इस प्रकार की खालों को एक दूसरे में बाँधकर बनाये जाते थे। इन फुलाई हुई खालों के ऊपर बाँस बाँधकर या मछुओं का जाल फैलाकर यात्री उन्हीं पर बैठकर लगभग आठ मील की घंटे की रफ्तार से मजे में यात्रा कर लेते हैं। इस प्रकार के बजरे बहुत ही सुविधाजनक रहते हैं। ठिकाने पर पहुँचकर मल्लाह खालों को पटकाकर कन्धे पर डाल लेता है और पैदल चलकर नदी के ऊपरी किनारे पर लौट आता है। भारत, ईरान, अफगानिस्तान और तिब्बत की नदियों में भस्त्रा या दति का प्रयोग पाणिनि और दारा के समय से चला आया है। ईरान में इन्हें मशका कहते थे। शालिका संभवतः उस प्रकार की नाव थी जिसमें शाला या बैठने उठने के लिये मंदिर (केबिन) पाटातान के ऊपर बना हो। पिण्डिका वह गोल नाव थी जो बेटों की टोकरी को चमड़े से मढ़कर बनाई जाती थी (पृ० १६५-६)।

३४ वें संलाप नामक अध्याय में बातचीत का अंगविज्जा की दृष्टि से विचार किया है जिसमें स्थान, समय एवं बातचीत करनेवाले की दृष्टि से फलाफल का विचार है।

३५ वें अध्याय का नाम पयाविसुद्धि (प्रजाविशुद्धि) है। इसमें प्रजा या संतान के सम्बन्ध में शुभाशुभ का विचार किया गया है। छोटे बच्चे के लिये वच्छक और पुत्तक की तरह पिल्लक शब्द भी प्रयुक्त होने लगा था जो कि दक्षिणी भाषाओं से लिया हुआ शब्द ज्ञात होता है।

३६ वें अध्याय में दोहल (दोहद) के विषय में विचार किया गया है। दोहद अनेक प्रकार का हो सकता है। विशेष रूप से उसके पाँच भेद किये गये हैं—शब्दगत, गन्धगत, रूपगत, रसगत, स्पर्शगत। रूपगत दोहद के कई भेद हैं, जैसे पुष्प, नदी, समुद्र, तडाग, वापी, पुष्करिणी, अरण्य, भूमि, नगर, स्कन्धावार, युद्ध, क्रीडा, मनुष्य, चतुष्पाद, पक्षी आदि के देखने की इच्छा होती तो उसे रूपगत दोहद कहेंगे। गन्धगत दोहद के अन्तर्गत स्नान, अनुलेपन, अधिवास, स्नान चूर्ण, धूप, माल्य, पुष्प, फल आदि के दर्शन या प्राप्ति की इच्छा समझनी चाहिए। रसगत दोहद में पान, भोजन, खाद्य, लेह्य; और स्पर्शगत दोहद में आसन, शयन, वाहन, वस्त्र आभरण आदि का दर्शन और प्राप्ति समझी जाती थी।

३७ वें अध्याय की संज्ञा लक्षण अध्याय है। लक्षण बारह प्रकार के कहे गये हैं—वर्ण, स्वर, गति, संस्थान, संघयण (निर्माण), मान या लंबाई, उम्माण (तोल), सत्त्व, आणुक (मुखाकृति), पगति (प्रकृति), छाया, सास्—इन बारहों भेदों की व्याख्या की गई है, जैसे वर्ण के अन्तर्गत ये नाम हैं—अंजन, हरिताल, मैनसिल, हिंगुण, चाँदी, सोना, मूँगा, शंख, मणि, हीरा, शुक्ति (मोती), अगुरु, चन्दन, शयनासन, यान, चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र, ग्रह, तारा, उल्का, विद्युत्, मेघ, अग्नि, जल, कमल, पुष्प, फल, प्रवाल, पत्र, मंड, तेल, सुरा, प्रसन्ना, पद्म, उत्पल, पुंडरीक, चम्पक, माल्याभरण आदि। फिर इनमें से प्रत्येक लक्षण का भी शुभाशुभ फल कहा गया है (पृ० १७३-४)।

३८ वें अध्याय में शरीर के व्यंजन या तिल, मसा जैसे चिन्हों के आधार पर शुभाशुभ का कथन है।

३९ वें अध्याय की संज्ञा कण्णावासण है। इसमें कन्या के विवाह एवं उसके जन्म के फलाफल एवं कर्मगति का विचार है कि वह अच्छी होगी या दुष्ट होगी (पृ० १७५-६)।

भोजन नामक चालीसवें अध्याय में आहार के सम्बन्ध में विस्तृत विचार किया गया है। आहार तीन प्रकार का होता है—प्राणयोनि, मूलयोनि, धातुयोनि। प्राणयोनि के अन्तर्गत दूध, दही, मक्खन, तक्र, घृत, मधु आदि हैं। उसके भी संस्कृत, असंस्कृत, आग्नेय, अनाग्नेय भेद किये गये हैं।

कंद, मूल, फल, फूल, पत्र आदि से भी आहार उपलब्ध होता है। कितने ही धान्यों के नाम गिनाये गये हैं। उत्सवों के समय भोज किये जाते थे। उपनयन, यज्ञ, मृतक, अध्ययन के आदि, अन्त एवं गोष्ठी आदि के समय भोजों का प्रबन्ध होता था। भोजन अपने स्थान पर या मित्र आदि के स्थान पर किया जाता था। इक्षुरस, फलरस, धान्यरस आदि पानों का उल्लेख है। यवा, प्रसन्ना, अरिष्ट, श्वेतसुरा ये मद्य थे। यवागू, दूध, घृत, तैल आदि से बनाई जाती थी। गुड़ और शर्करा के भेदों में शर्करा, मच्छंडिका, खज्जगगुल (खाद्यक गुड़) और इक्कास का उल्लेख है। समुद्र, सैन्धव, सौवर्चल, पांसुखार, यवाखार आदि नमक के भेद किये गये हैं। मिठाईयों में मोदक, पिंडिक, पप्पड, मोरेंडक, सालाकालिक, अम्बट्टिक, पोवलिक, वोक्कितक, पोवलक, सक्कुलिका, पूष, फेणक, अक्खपूष, अपडिहत, पवितल्लक (पोतलग), वेलातिक, पत्तभज्जित, सिद्धत्थिका, बीयक, उक्कारिका, मंदिल्लिका, दीह सक्कुलिका, खारवट्टिका, खोडक, दीवालिक (दीवले) दसीरिका, मिसकण्टक, महन्थतक, आदि तरह तरह की मिठाईयाँ और खाद्यपदार्थ होते थे। अम्बट्टिक (अमचुर या आम से बनी हुई मिठाई हो सकती है जिसे अवधी में गुलम्बा कहते हैं)। पोवालिक पौली नाम की मीठी रोटी और मुरण्डक, छेने का बना हुआ मुरंडा या तिलके लड्डू होने चाहिएँ। फेणक फेणी के रूप में आज भी प्रसिद्ध है।

४१ वाँ वरियगंडिका अध्याय है। इसमें मूर्तियों के प्रकार, आभरण और अनेक प्रकार की रत्न-सुत की क्रीडाओं के नामों का संग्रह है। सुत क्रीडाओं के तीन प्रकार कहे गये हैं—दिव्य, तिर्यक् योनि और मानुषी। दिव्य क्रीडाओं में छत्र, भृंगार, जक्खोपयाण (संभवतः यक्षकर्दम नामक सुगंध) की भेंट का प्रयोग होता है। मानुषी क्रीडा में वस्त्र, आभूषण, यान, उपानह, माल्य, मुकुट, कंधी, स्नान, विशेषक, गन्ध, अनुलेपन, चूर्ण, भोजन, मुखवासक आदि का प्रयोग किया जाता है (पृ० १८२-६)।

४२ वें अध्याय (स्वप्नाध्याय) में दिट्ठ, अदिट्ठ और अवत्तदिट्ठ नामक स्वप्नों का वर्णन है। ये शुभ और अशुभ प्रकार के होते हैं। स्वप्नों के और भी भेद किये गये हैं—जैसे श्रुत जिसमें मेघगर्जन, आभूषणों का या सुवर्णमुद्राओं का शब्द या गीत आदि सुनाई पड़ते हैं। गंधस्वप्नों में सुगन्धित पदार्थ का अनुभव होता है। ऐसे ही कुछ स्वप्नों में स्पर्शसुख, सुत, जलचर, देव, पशु, पक्षी आदि का अनुभव होता है। अनेक सगे सम्बन्धी भी स्वप्नों में दिखाई पड़ते हैं जो कि मानुषी स्वप्न कहलाते हैं। स्वप्नों में देव और देवियाँ भी दिखाई पड़ती हैं (पृ० १८६-१९१)।

४३ वें अध्याय में प्रवास या यात्रा का विचार है। यात्रा में उपानह, छत्र, तप्पण (सत्तू), कत्तरिया (छुरी), कुंडिका, ओखली आवश्यक हैं। यात्री मार्ग में प्रपा, नदी, पर्वत, तडाग, ग्राम, नगर, जनपद, पट्टन, सन्निवेश आदि में होता हुआ जाता था। विविध रूप-रस-गन्ध-स्पर्श के आधार पर यात्रा को शुभाशुभ कहा जाता था। उससे लाभ, अलाभ, जीवन, मरण, सुख-दुःख, सुकाल, दुष्काल, भय, अभय आदि फल उपलब्ध होते हैं (पृ० १९१-१९२)।

४४ वें अध्याय में प्रवास के उचित समय, दिशा, अवधि और गन्तव्य स्थान आदि के सम्बन्ध में विचार है (पृ० १९२-९३)।

४५ वें प्रवेशाध्याय नामक प्रकरण में प्रवासी यात्री के घर लौटने का विचार है। भुक्त, पीत, खड़त, लीढ, कर्णतैल, अभ्यंग, हरिताल, हिंगुल, मैनसिल, अंजन, समालभणक (= विलेपन), अलत्तक, कलंजक, वण्णक,

चुण्णक, अंगराग, उर्लसघण (सुगन्धि सूधना), मक्खण (मक्षण—मालिश), अब्भंगण, उच्छंदण (संभवतः आच्छादन), उव्वट्टण (उद्धर्तन—उबटन), पधंस (प्रघर्षण द्वारा तैयार सामग्री), माल्य, सुरभिजोगसंविधानक (विविध गन्ध युक्ति), आभरण और विविध भूषणों की संजोयणा (अर्थात् सँजोना) एवं अलङ्कारों का मण्डन—इनके आधार पर प्रवासी के आगमन की आशा होती थी। इसी प्रकार शिबिका, रथ, यान, जुग, कट्टुमुह, गिल्ली, संदण (स्यंदन) सकट (शकट), शकटी और विविध वाहन, हय, गज, बलीवर्द, करभ, अश्वतर, खर, अजा, एडक, नर, मरुत, हरित, वृक्ष, प्रासाद, विमान, शयन आदि पर अधिरोहण, ध्वजा, तोरण, गोपुर, अट्टालक, पताका समारोहण, उच्छ्रयण के आधार पर भी विचार किया जाता था। दूध, दधि, घी, नवनीत, तेल, गुड़, लवण, मधु आदि दिखाई दें तो आगमन होने की आशा थी। ऐसे ही पृथिवी, उदक, अग्नि, वायु, पुष्प, धान्य, रत्न आदि से भी आगमन सूचित होता था। अंकुर, प्ररोह, पत्र, किसलय, प्रवाल, तृण, काष्ठ एवं ओखली, पिठर, दविउलंक (सम्भवतः द्रव का उदंचन) रस, दर्वी, छत्र, उपानह, पाउगा (पादुका), उब्भुभंड (ऊर्ध्व भाँड सम्भवतः कमण्डलु), उभिखण (अज्ञात), फणख (कंधा), पसाणग (= प्रसाधनक), कुव्वट्ट (सम्भवतः कुप्यपट्ट, लंगोट), वणपेलिका (= वणपेटिका—शृङ्गारदानी), विवट्टणय—अंजणी (सुरमेदानी और सलाई), आदंसग (दर्पण), सरगपतिभोयण (मद्य—आहार), वाधुज्जोपकरण (वाधुक्य = विवाह; विवाह की सामग्री), माल्य—इन पदार्थों के आधार पर आगमन की सम्भावना सूचित होती थी। फिर इसी प्रसंग में यह बताया गया है कि कौन—सा लक्षण होने पर किस वस्तु का प्रवेश या आगमन होता है। जैसे, चतुस्त्र चित्र सारवंत वस्तु दिखाई पड़े तो कार्षापण; रक्त, पीत सारवान वस्तु के दर्शन से सुवर्ण; श्वेत सारवंत से चाँदी, शुक्ल शीतल से मुक्ता; घन सारवंत और प्रभायुक्त वस्तु से मणि का आगमन सूचित होता है। ऐसे ही नाना भाँति की स्त्रियों के आगमन के निमित्त बताये गये हैं— (पृ० १९३—४)।

४६ वें पवेसण अध्याय में गृहप्रवेश सम्बन्धी शुभाशुभ का विचार किया गया है। अंगचिन्तक को उचित है कि घर में प्रवेश करते समय जो शुभ—अशुभ वस्तु दिखाई पड़ें उनके आधार पर फल का कथन करे। जैसे—बलीवर्द, अश्व, ऊष्ट, गर्दभ, शुक, मदनशलाका या मैना, कपि, मोर ये द्वारकोष्ठक या अलिन्द में दिखाई पड़ें तो शुभ समझ कर घर में प्रवेश करना चाहिए। ब्रह्मस्थल (सम्भवतः देवस्थान—पूजास्थान) में, अंजंर या जहाँ जल का बड़ा पात्र रखा जाता हो, उव्वर (धर्मस्थान या जहाँ धूल या भट्टी हो), उपस्थान शाला में बैठने पर, उलूखलशाला में या कपाट या द्वार के कोने में, आसन दिये जाने पर और अंजलिकर्म द्वारा स्वागत किये जाने पर और ऊपर महानस या रसोई घर में, या मकान के णिकुड अर्थात् उद्यान प्रदेश में यदि अङ्गविद्याचार्य वस्तुओं को अस्त—व्यस्त या टूटी—फूटी या गिरी—पड़ी देखे तो बाहर से सम्बन्ध रखनेवाली वस्तुओं की हानि बतानी चाहिए। रसोई घर में कंबा (करछुल या दर्वी) को गिरी पड़ी देखे और मल्लक या मिट्टी के शराव आदि को फैले हुए (ओसरित = आकीर्ण) देखें तो कुलभङ्ग का फल कहना चाहिए, अथवा अपने दास कर्मकरों से कष्ट या अर्थों की अप्राप्ति कहनी चाहिए। दधि, मङ्गल, पुष्प, फल, अक्षत, तंडुल आदि से वृद्धि का फल बताना चाहिए। तुष, पंसु, अङ्गार, भग्न वृक्ष से हानि और कुलभंग सूचित होता है। लकड़ी का रोगन उखड़ गया हो और संधि या जोड़ यदि ढीले हों तो कुटुम्ब की हानि और अर्थ की अस्थिरता समझनी चाहिए। यदि द्वार की सन्धि शिथिल हो और उसकी देहली—सिरदल (उत्तरंवर = उतरंगा; गुजराती में देहली या नीचे की लकड़ी को अभी तक उम्बर कहते हैं) भग्न हो तो इष्ट वस्तु को हानि होगी। यदि द्वारकपाट खुला हुआ हो तो दुःख से अर्जित धन चला जाता है। द्वार के नीचे की देहली और ऊपर का उत्तरंगा (अधरुत्तरुम्भिर) टूटे या निकले हुए हों तो घर में क्लेश होगा। तिल, वेल्हव (वेलु या बांस) और वाक (छाल) ये कोठे में रखे हुए जब खराब हो जाय या कीड़े दिखाई पड़ें तो व्याधि समझनी चाहिए। कोठे में बांधा हुआ एलक—भेड़ा, अश्व, पक्षी, यदि कुछ विपरीत निमित्त प्रकट करें तो उससे भी हानि सूचित होती है। यदि घर के भीतर बालक धरती में लोटते हुए, मूत्र, पुरीष ये सब दिखाई पड़ें तो हानि, और इसके विपरीत यदि वे अलंकृत दिखाई पड़ें तो वृद्धि जाननी चाहिए। आंगन में लगे हुए पुष्प और फलों को आंगन के भीतर लाया जाता

देखा जाय तो वृद्धि सूचित होती है। ऐसे ही आंगन में भाजन या बर्तनों को अखंड और परिपूर्ण देखा जाय तो आय-लाभ सिद्ध होता है। आंगन के आधार पर कई प्रकार के फलों का निर्देश किया गया है। आंगन में यदि पोत्ती (वस्त्र) और णंतक (एक प्रकार का वस्त्र, पाइयसदमहणवो) बिखरे हुए दिखलाई पड़े और आसंदक (बैठने की चौकी) आदि भग्न हों तो हानि और रोग सूचित होता है। यदि आंगन में अलंकृत और हृष्ट नर-नारी दिखाई दें तो संप्रति और लाभ, यदि कुद्ध दिखाई दें तो हानि सूचित होती है। यदि भग्न हुआ अरंजर (जल का बड़ा घड़ा) अकारण टूट जाय, अथवा कौवे या कुत्ते उसे भ्रष्ट कर दें तो गृहस्वामी का नाश सूचित होता है। इसी प्रकार अलिंजर अर्थात् जल का घड़ा और उसकी घटमंचिका (पेढिया) के नये पुरानेपन से भी विभिन्न विचार किया जाता है। श्रमण को प्रदत्त आसन और सिद्ध अन्न से भी निमित्त सूचित होते हैं। ओदन में कीट, केश, तृण आदि से भी अशुभ सूचित होता है। श्रमण के घर आने पर उससे जिस भाव और मुँह से कुशल प्रश्न (जवणीय) पूछा जाय उसके आधार पर वह सुख-दुःख का कथन करे। जैसे पराङ्मुख हो कर पूछने से हानि और अभिमुख हो कर पूछने से लाभ मिलेगा। रिक्तभाजन, उदकपूर्ण भांड, फल आदि जो जो वस्तुएँ घर में दिखाई पड़े वे सब अंगविद् के लिए इष्ट और अनिष्ट फल की सूचक होती हैं (पृ० १९५-७)।

४७ वाँ यात्राध्याय है। इसमें राजाओं की सैनिक यात्रा के फलाफल का विचार किया गया है। उस सम्बन्ध में छत्र, भृङ्गार, व्यजन, तालवृन्त, शस्त्र प्रहरण आयुध, आवरण वर्म कवच-इनके आधार पर यात्रा होगी या नहीं यह फलादेश बताया जा सकता है। यात्रा कई प्रकार की हो सकती है-विजयशालिनी (विजयिका), आनन्ददायिनी (संमोदी), निरर्थक, चिरकाल के लिये, थोड़े समय के लिए, महाफलवाली, बहुत क्लेशवाली, बहुत उत्सववती, प्रभूत अन्नपानवाली, बहुत खाद्यपेय से युक्त, धन लाभवती, आयबहुला, जनपद लाभवाली, नगर लाभवाली, ग्राम, खेड लाभवती, अरण्यगमन भूयिष्ठा, आराम, निम्नदेश आदि स्थानों में गमन युक्त इत्यादि। यात्रा के समय प्रसन्नता के भाव से विजय और अप्रसन्नता के भाव से पराजय या विवाद (झगड़ा) सूचित होता है। यात्रा के समय नया भाव दिखाई पड़े तो अपूर्व जय की प्राप्ति होगी। ऐसे ही वाहन-लाभ, अर्थलाभ आदि के विषय में भी यात्राफल का कथन करना चाहिये। किस दिशा में और किस ऋतु में किस निमित्त से यात्रा सम्भव होगी यह भी अंगविज्जा का विषय है (पृ० १९८-१९९)।

४८ वें जय नामक अध्याय में जय का विचार किया गया है। राजा, राजकुल, गण, नगर, निगम, पट्टण, खेड, आकर, ग्राम, संनिवेश-इनके संबंध में कुछ उत्तम चर्चा हो तो जय समझनी चाहिए। ऐसे ही ऋतुकाल में अनुकूल वृक्ष, गुल्म, लता, वल्ली, पुष्प, फल, पत्र, प्रवाल, प्ररोह आदि जय सूचित करते हैं। वस्त्र, आभरण, भाजन, शयनासन, यान, वाहन, परिच्छद आदि भी जय के सूचक हैं। छत्र, भृङ्गार, ध्वज, पंखा, शिबिका, रथ, प्रासाद, अशन, पान, ग्राम, नगर, खेड, पट्टण, अन्तःपुर, गृह, क्षेत्र सन्निवेश, आपण, आराम, तड़ाग, सर्वसेतु आदि के संबंध में उस शब्द या रूप का प्रादुर्भाव हो तो जानना चाहिए कि विजय होगी। इन्हीं के संबंध में यदि विपरीत भाव अथवा हीन दीन शब्द रूप की प्रतीति हो तो पराजय सूचित होती है। विजय के भी कितने ही भेद कहे गये हैं। जैसे अपने पराक्रम से, पराये पराक्रम से, विना पुरुषार्थ के सरलता से विजय, राज्य की विजय, राजधानी या नगर की विजय, शत्रु के देश की विजय, आय बहुल विजय, महाविजय, जोणिबहुलविजय (जिसमें धन का लाभ न हो किन्तु प्राणियों का लाभ हो), शस्त्रनिपात द्वारा विजय, प्राणातिपातबहुल विजय, अहिंसा द्वारा मुदित विजय आदि (पृ० १९९-२०१)।

४९ वें अध्याय में इसी प्रकार के विपरीत चिह्नों से पराजय का विचार किया है (पृ० २०१-२)।

५० वें उवहुत (उपद्रव) नामक अध्याय में शरीर के विविध दोष और रोग आदि का विचार किया गया है। इसमें भी फलकथन का आधार वे ही वस्तु हैं जिनका यात्रा और जय के संबंध में परिगणन किया गया है। हाँ शारीरिक दोषों और रोगों की अच्छी सूची इस प्रकरण में पायी जाती है। जैसे काण, अन्ध, कुंट (टोंटा), गंडीपाद (हल्थीपगा, फील पाव), खंज, कुणी (टेढ़े हाथ वाला), आतुर, पलित, खरड़ (सिर में रुक्षता या मैल की पपड़ीवाला, गुजराती-खोडो), तिलकालक, विपण्ण (विवर्णता), चम्मक्खील (मस्सा), किडिग

(सीप या श्वेत दाग, संस्कृत—किटिभ), दट्ट (दष्ट—देश), किलास (कुष्ठ), कट्ट (संभवतः कुट्ट या कुष्ठ), सिब्ध (रिग्द या श्लेष्म) कुणिणह (कुनख—या टेढ़े मेढ़े नख), खत (क्षत), अरूव (अरूप) कामल (कामला) णच्छक (अप्रशस्त), पिलक (पिल्ल नामक मुख रोग), चम्मक्खील, गलुक (गलगंड), गंड (गूलर के आकार की फुडिया), कोढ, कोट्टित (अस्थिभंग), वातंड (वात के कारण अण्डवृद्धि), अम्हरि (अश्मरी पथरी), अरिस (अर्श), भगंदर, कुच्छि—रोग (अतिसार, जलोदर आदि), वात गुम्म (वातगुल्म), शूल, छड्डि (छर्दि—वमन), हिक्क (हिचकी), कंठे अवयि (कंठ का अपची नामक रोग = कंठमाला), गलगंड (घेंघा या गिलहड), कंठसालुक (कंठशालुक), शालुक = कण्ठ की जड़, अंग्रेजी (येन्सिलाईटिस), पट्टिरोग (पृष्ठिरोग), खण्डोड्ड (खण्डौष्ठ—कटा हुआ ओष्ठ), गुरल करल (बड़े और कराल या टेढ़े—मेढ़े दांत), खंडंत (टूटे हुए दांत), सामदंत (श्याम—दंत, दाँतों का कालापन), ग्रीवा रोग, हत्थछेज्ज (हस्तच्छेद), अंगुलि छेज्ज, पाद छेज्ज, शीर्ष व्याधि, वातिक, पेटिक, श्लेष्मिक, सान्निपातिक आदि ।

५१ वें अध्याय का नाम देवताविजय है । इसमें अनेक देवी—देवताओं के नाम हैं जिनकी पूजा उपासना उस युग में होती थी । जैसे यक्ष, गन्धर्व, पितर, प्रेत, वसु, आदित्य, अश्विनौ, नक्षत्र, ग्रह, तारा, बलदेव, वासुदेव, शिव, वेस्समण (वैश्रवण), खंद (स्कंद), विसाह (विशाख), सागर, नदी, इन्द्र, अग्नि, ब्रह्मा, उपेन्द्र, यम, वरुण, सोम, रात्रि, दिवस, सिरी (श्री), अइरा (अचिरा = इन्द्राणी) (देखिये पृ० ६९), पुढवी (पृथिवी), एकणासा (संभवतः एकानंशा), नवमिगा (नवमिका), सुरादेवी, नागी, सुवर्ण, द्वीपकुमार, समुद्रकुमार, दिशाकुमार, अग्निकुमार, वायुकुमार, स्तनितकुमार, विद्युत्कुमार (द्वीपकुमार से लेकर ये भवनपति देवों के नाम हैं) ।

लता देवता, वत्थु देवता, नगर देवता, श्मशान देवता, वच्चदेवता (वर्चदेवता), उक्करुडिक देवता (कूड़ा—कचरा फेंकने के स्थान के देवता) । देवताओं की उत्तम, मध्यम, अवर ये तीन कोटियाँ कही गई हैं; अथवा आर्य और मिलक्खु या म्लेच्छ देवता । म्लेच्छ देवता हीन हैं (पृ० २०४—६) ।

५२ वें अध्याय का नाम णक्खत्तविजय अध्याय है । इसमें इन्द्र—धनुष, विद्युत्, स्तनित, चंद्र, ग्रह, नक्षत्र, तारा, उदय, अस्त, अमावास्या, पूर्णमासी, मंडल, वीथी, युग, संवत्सर, ऋतु, मास, पक्ष, क्षण, लव, मुहूर्त, उल्कापात, दिशा, दाह आदि के निमित्तों से फलकथन का वर्णन किया गया है । २७ नक्षत्र और उनसे होनेवाले शुभाशुभ फल का भी विस्तार से उल्लेख है (पृ० २०६—९) ।

५३ वें अध्याय की संज्ञा उप्पात अध्याय है । पाणिनि के ऋग्यनादि गण (४।३।७३) में अंगविद्या, उत्पात, संवत्सर, मुहूर्त और निमित्त का उल्लेख आया है, जो उस युग में अध्ययन के फुटकर विषय थे । ग्रह, नक्षत्र, चन्द्र, आदित्य, धूमकेतु, राहु के अप्राकृतिक लक्षणों को उत्पात मानकर उनके आधार पर शुभाशुभ फल का कथन किया जाता था । इनके कारण जिन जिन वस्तुओं पर विपरीत फल देखा जाता था उनका भी उल्लेख किया गया है—जैसे प्रासाद, गोपुर, इन्द्रध्वज, तोरण, कोष्ठागार, आयुधागार, आयतन, चैत्य, यान, भाजन, वस्त्र, परिच्छद, पर्यंक, अरंजर, आभरण, शस्त्र, नगर, अंतःपुर, जनपद, अरण्य, आराम—इन सब पर उत्पात लक्षणों का प्रभाव बताया जाता था (पृ० २१०—२११) ।

अध्याय ५४ वें में सार—असार वस्तुओं का कथन है । सार वस्तुएँ चार प्रकार की हैं—धनसार, मित्रसार, ऐश्वर्यसार और विद्यासार । इनमें भी उत्तम, मध्यम और अवर—ये तीन कोटियाँ मानी गई थीं । धनसार के अन्तर्गत भूमि, क्षेत्र, आराम, ग्राम, नगर आदि के स्वामित्व की गणना की जाती थी । शयनासन—पान—भोजन—वस्त्र—आभरण की समृद्धि को सार कहते थे । धनसार का एक भेद प्राणसार भी है । यह दो प्रकार का है—मनुष्यसार या मनुष्य समृद्धि और तिर्यक्योनिसार अर्थात् पशु आदि की समृद्धि । जैसे—हाथी, घोड़े, गौ, महिष, अजा, एडक, खर, उष्ट्र आदि का बहुस्वामित्व । धनसार के और भी दो भेद हैं—अजीव और सजीव । अजीव के १२ भेद हैं — वित्तसार, स्वर्णसार, रूप्यसार, मणिसार, मुक्तासार, वस्त्रसार, आभरणसार, शयनासनसार, भाजनसार, द्रव्योपकरणसार (नगदी), अब्धुपहज्ज सार (अभ्यवहार—खान—पान की सामग्री), और धान्यसार । बहुत प्रकार की सवारी की संपत्ति यानसार कहलाती थी ।

मित्रसार या मित्रसमृद्धि पांच प्रकार की होती थी—संबंधी, मित्र, वयस्क, स्त्री एवं भृत्य की । बाहर और भीतर के व्यवहारों में जिसके साथ साम्य या सख्यभाव हो वह मित्र और जिसके साथ सामान्य मित्रभाव हो वह वयस्क कहा जाता है ।

ऐश्वर्य सार के कई भेद हैं—जैसे, नायकत्व, अमात्यत्व, राजत्व, सेनापतित्व आदि ।

विद्यासार का तात्पर्य सब प्रकार के बुद्धिकौशल, सर्वविद्या एवं सर्वशास्त्रों में कौशल या दक्षता से है (पृ० २११-२१३) ।

५५ वें अध्याय में निधान या गड़ी हुई धनराशि का वर्णन है । निधान, संख्या या राशि की दृष्टि से कई प्रकार का हो सकता है—जैसे शतप्रमाण, सहस्रप्रमाण, शतसहस्रप्रमाण, कोटिप्रमाण अथवा इससे भी अधिक अपरिमित प्रमाण । एक, तीन, पांच, सात, नौ, दस, तीस, पचास, सत्तर, नव्वे, शत आदि भी निधान का प्रमाण हो सकता था । किस स्थान में निधान की प्राप्ति होगी इस विषय में भी अंगवित् को बताना पड़ता था । जैसे प्रासाद में, माल या ऊँचे खंड में, पृष्ठ वंश या बँडिरी में, आलग (आलग्न अर्थात् प्रासाद आदि से मिले हुए विशेष स्थान खिड़की, आले आदि), प्राकार, गोपुर, अट्टालक, वृक्ष, पर्वत, निर्गमपथ, देवतायतन, कूप, कूपिका, अरण्य, आराम, जनपद, क्षेत्र, गर्त, स्थ्या, निवेशन, राजमार्ग, क्षुद्रस्थ्या, निकुड (गृहोद्यान), स्थ्या (मार्ग), आलग (आलमारी या आला), कुड्या, णिव्व (= नीन्न, छज्जा), प्रणाली, कूपी (कुइया), चर्वकुटी, गर्भगृह, आंगन, मकान का पिछवाड़ा (पच्छावत्थु) आदि में ।

निधान बताते समय इसका भी संकेत किया जाता था की गड़ा हुआ धन किस प्रकार के पात्र में मिलेगा; जैसे, लोही (लोहे का बना हुआ गहरा डोलनुमा पात्र), कड़ाह, अरंजर, कुंड, ओखली, वार, लोहीवार (लोहे का चौड़े मुँह का बर्तन) । इनमें से लोहा, कड़ाह और उष्ट्रिक (उष्ट्रिका नामक भाजन विशेष बहुत बड़े निधान के लिए काम में लाये जाते थे । कुंड, ओखली, वार और लोहवार मध्यम आकृति के पात्र होते थे । छोटों में आचमनी, स्वस्ति आचमनी, चरुक ओर ककुलुंडि (छोटी कुलंडिका या कुल्हड़ी; कुल्हड़िया = घटिका, पाइयसदमहणवो) ।

अंगवित् को यह भी संकेत देना पड़ता था कि निधान भाजन में रखा हुआ मिलेगा या सीधे भूमि में गड़ा हुआ, अथवा वह प्राप्य है या अप्राप्य—पृ० २१३-२१४ ।

अध्याय ५६ की संज्ञा णिधिसुत्त या निधिसूत्र है । पहले अध्याय में निधान के परिमाण, प्राप्तिस्थान और भाजन का उल्लेख किया गया है । इस अध्याय में निधान द्रव्य के भेदों की सूची है । वह तीन प्रकार का हो सकता है—प्राणयोनिगत, मूलयोनिगत और धातुयोनिगत । प्राणयोनि संबंधित उपलब्धि मोती, शंख, गवल (= सींग), बाल, दन्त, अस्थि आदि से बने हुए पात्रों के रूप में संभव है । मूलयोनि चार प्रकार की कही गई है—मूलगत, स्कन्धगत, पत्रगत, फलगत । धातुयोनि का संबंध सब प्रकार के धातु, रत्न, मणि आदि से है; जैसे लोहिताक्ष, पुलक, गोमेद, मसारगल्ल, खारमणि—इनकी गणना मणियों में होती है । घिस कर अथवा चीर कर और कोर करके बनाई हुई गुरियाँ और मणके मणि, शंख और प्रवाल से बनाये जाते थे । वे विद्ध और अविद्ध दो प्रकार के होते थे । उनमें से कुछ आभूषणों के काम में आते थे । गुरिया या मनके बनाने के लिये खड़ पत्थर भिन्न भिन्न आकृति या परिमाण के लिये जाते थे । जैसे अंजण (रंगीन शिला), पाषाण, शर्करा, लेदुक (डला) डेल्लिया (डली), मच्छक (पहलदार छोटे पत्थर), फल्ल (खेदार संग या मनके)—इन्हें पहले चीर कर छोटे परिमाण का बनाते थे । फिर चिरे हुए टुकड़े को कोर कर (कोडिते) उस शकल का बनाया जाता था, जिस शकल की गुरिया बनानी होती थी । कोरने के बाद उस गुरिया को खोडित अर्थात् घिस कर चिकना किया जाता था । कडे संग या मणियों के अतिरिक्त हाथीदांत और जंगली पशुओं के नख भी (दंतणहे) काम में लाये जाते थे । इन दोनों के कारीगरों को दंतलेखक और नखलेखक कहा जाता था । बड़े टुकड़ों को चीरने या तराशने में जो छोटे टुकड़े या रेजे बचते थे उन्हें चुण्ण कहा जाता था जिन्हें आज कल चुन्नी कहते हैं । इन सब की गणना धन में की जाती थी ।

इसके अतिरिक्त कुछ प्रचलित मुद्राओं के नाम भी हैं, जो उस युग का वास्तविक द्रव्य धन था; जैसे काहावण (कार्षापण) और णाणक । काहावण या कार्षापण कई प्रकार के बताये गये हैं । जो पुराने समय से चले आते हुए मौर्य या शुंग काल के चाँदी के कार्षापण थे उन्हें इस युग में पुराण कहने लगे थे, जैसा कि अंगविज्जा के महत्त्वपूर्ण उल्लेख से (आदिमूलेसु पुराणे बूया) और कुषाणकालीन पुण्यशाला स्तम्भ लेख से ज्ञात होता है (जिसमें ११०० पुराण मुद्राओं का उल्लेख है) । पृ० ६६ पर भी पुराण नामक कार्षापण का उल्लेख है । पुरानी कार्षापण मुद्राओं के अतिरिक्त नये कार्षापण भी ढाले जाने लगे थे । वे कई प्रकार के थे, जैसे उत्तम काहावण, मज्झिम काहावण, जहण्ण (जघन्य) काहावण । अंगविज्जा के लेखक ने इन तीन प्रकार के कार्षापणों का और विवरण नहीं दिया । किन्तु ज्ञात होता है कि वे क्रमशः सोने, चाँदी और ताँबे के सिक्के रहे होंगे, जो उस समय कार्षापण कहलाते थे । सोने के कार्षापण अभी तक प्राप्त नहीं हुए किन्तु पाणिनि सूत्र ४.३.१५३ (जातरूपेभ्यः परिमाणे) पर हाटक कार्षापण यह उदाहरण काशिका में आया है । सूत्र ५.२.१२० (रूपादाहत प्रशंसयोर्यप) के उदाहरणों में रूप्य दीनार, रूप्य केदार और रूप्य कार्षापण—इन तीन सिक्कों के नाम काशिका में आये हैं । ये तीनों सोने के सिक्के ज्ञात होते हैं । अंगविज्जा के लेखक ने मोटे तौर पर सिक्कों के पहले दो विभाग किए—काहावण और णाणक । इनमें से णाणक तो केवल ताँबे के सिक्के थे । और उनकी पहचान कुषाणकालीन उन मोटे पैसों से की जा सकती है जो लाखोंकी संख्या में वेमतक्षम, कनिष्क, हुविष्क, वासुदेव आदि सम्राटों ने ढलवाये थे । णाणक का उल्लेख मृच्छकटिक में भी आया है, जहाँ टीकाकार ने उसका पर्याय शिवाङ्क टंक लिखा है । यह नाम भी सूचित करता है कि णाणक कुषाणकालीन मोटे पैसे ही थे, क्योंकि उनमें से अधिकांश पर नन्दीवृष के सहारे खड़े हुए नन्दिकेश्वर शिव की मूर्ति पाई जाती है । णाणक के अन्तर्गत ताँबे के और भी छोटे सिक्के उस युग में चालू थे जिन्हें अंगविज्जा में मासक, अर्धमासक, काकणि और अट्टा कहा गया है । ये चारों सिक्के पुराने समय के ताँबे के कार्षापण से संबंधित थे जिसकी तौल सोलह मासे या अस्सी रत्ती के बराबर होती थी । उसी तौल माप के अनुसार मासक सिक्का पांच रत्ती का, अर्धमासक ढाई रत्ती का, काकणि सवा रत्ती की और अट्टा या अर्धकाकणि उससे भी आधी तौल की होती थी । इन्हीं चारों में अर्धकाकणि पच्चवर (प्रत्यवर) या सबसे छोटा सिक्का था । कार्षापण सिक्कों को उत्तम, मध्यम और जघन्य इन तीन भेदों में बाँट गया है । इसकी संगति यह ज्ञात होती है कि उस युग में सोने, चाँदी और ताँबे के तीन प्रकार के नये कार्षापण सिक्के चालू हुए थे । इनमें से हाटक कार्षापण का उल्लेख काशिका के आधार पर कह चुके हैं । वे सिक्के वास्तविक थे या केवल गणित अर्थात् हिसाब किताब के लिये प्रयोजनीय थे इसका निश्चय करना संदिग्ध है, क्योंकि सुवर्ण कार्षापण अभी तक प्राप्त नहीं हुए । चाँदी के कार्षापण भी दो प्रकार के थे । एक नये और दूसरे मौर्य शुंग काल के बत्तीस रत्ती वाले पुराण कार्षापण । चाँदी के नये कार्षापण कौन से थे इसका निश्चय करना भी कठिन है । संभवतः यूनानी या शक—यवन राजाओं के ढलवाये हुए चाँदी के सिक्के नये कार्षापण कहे जाते थे । सिक्कों के विषय में अंगविज्जा की सामग्री अपना विशेष महत्त्व रखती है । पहले की सूची में (पृ० ६६) खतपक और सतेरक इन दो विशिष्ट मुद्राओं के नाम आ भी चुके हैं । मासक सिक्के भी चार प्रकार के कहे गये हैं—सुवर्णमासक, रजतमासक, दीनारमासक और चौथा केवल मासक जो ताँबे का था और जिसका संबंध णाणक नामक नये ताँबे के सिक्के से था । दीनार मासक की पहचान भी कुछ निश्चय से की जा सकती है, अर्थात् कुषाण युग में जो दीनार नामक सोने का सिक्का चालू किया गया था और जो गुप्त युग तक चालू रहा, उसी के तौल—मान से संबंधित छोटा सोने का सिक्का दीनार मासक कहा जाता रहा होगा । ऐसे सिक्के उस युग में चालू थे यह अंगविज्जा के प्रमाण से सूचित होता है । वास्तविक सिक्कों के जो नमूने मिले हैं उनमें सोने के पूरी तौल के सिक्कों के अष्टमांश भाग तक के छोटे सिक्के कुषाण राजाओं की मुद्राओं में पाये गये हैं (पंजाब संग्रहालय सूची संख्या ३४, ६७, १२३, १३५, २१२, २३७), किन्तु संभावना यह है कि षोडशांश तौल के सिक्के भी बनते थे । रजतमासक से तात्पर्य चाँदी के रौप्यमासक से ही था । सुवर्णमासक यह मुद्रा ज्ञात होती है जो अस्सी रत्ती के सुवर्ण कार्षापण के अनुपात से पांच रत्ती तौल की बनाई जाती थी ।

इसके बाद कार्षापण और णाणक इन दोनों के निधान की संख्या का कथन एक से लेकर हजार तक किन लक्षणों के आधार पर किया जाना चाहिए यह भी बताया गया है। यदि प्रश्नकर्ता यह जानना चाहे कि गड़ा हुआ धन किसमें बँधा हुआ मिलेगा तो भिन्न भिन्न अंगों के लक्षणों से उत्तर देना चाहिए—थैली में (थविका), चमड़े की थैली में (चम्मकोस), कपड़े की पोटली में (पोटलिकागत) अथवा अट्टियगत (अंटी की तरह वस्त्र में लपेटकर) सुत्तबद्ध, चक्कबद्ध, हेत्तिबद्ध—पिछले तीन शब्द विभिन्न बन्धनों के प्रकार थे जिनका भेद अभी स्पष्ट नहीं है। कितना सुवर्ण मिलने की संभावना है इसके उत्तर में पाँच प्रकार की सोने की तौल कही गई है, अर्थात् एक सुवर्णभर, अष्ट भाग सुवर्ण, सुवर्णमासक (सुवर्ण का सोलहवाँ भाग), सुवर्ण काकिणि (सुवर्ण का बत्तीसवाँ भाग) और पल (चार कर्ष के बराबर)।

अध्याय ५७ का नाम णट्टकोसय अध्याय है जिसमें कोश के नष्ट होने के संबंध में विचार किया गया है। नष्ट के तीन भेद हैं—नष्ट, प्रमृष्ट, (जबरदस्ती छीन लिया गया) और हारित (जो चोरी हुआ हो)। पुनः नष्ट के दो भेद किये गये हैं—सजीव और अजीव। सजीव नष्ट दो प्रकार के हैं—मनुष्य योनिगत और तिर्यक् योनिगत। तिर्यक् योनि के भी तीन भेद हैं—पक्षी, चतुष्पद और सरिसर्प। सरिसर्पों में दव्वीकर, मंडलि और राजिल (राइण्ण) नामक सर्पों का उल्लेख किया गया है। मनुष्य वर्ग में प्रेष्य, आर्य, ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि का उल्लेख है। इनमें भी छोटे-बड़े अनेक भेद होते थे। संबंध की दृष्टि से भ्राता, वयस्य, भगिनी, श्याल, पति, देवर, ज्येष्ठ, मातुलपुत्र, भगिनीपति, भ्रातृव्य, भ्रातृश्वसा, पितृश्वसा आदि के नाम हैं। अजीव पदार्थों की सूची में प्राणयोनि के अन्तर्गत दूध, दही, तक्र, कूचिय (कूर्चिक = खड़ी), आमधित (= आमधित = मट्ठा या दूध में मथी हुई कोई वस्तु), गुड़दधि, रसालादधि, मंथु (सं० मंथ), परमण्ण (परमान्न, खीर), दधिताव (छोँकी हुई दही या कढ़ी), तक्कोदण (तक्रौदन), अतिकूरक (विशेष प्रकार का भात, पुलाव) इत्यादि। मूलयोनिगत आहार की सूची में शालि, व्रीहि, कोद्रव, कंगू, रालक (एक प्रकार की कंगनी), वरक, जौ, गेहूँ, मास, मूँग, अलसंदक (धान्य विशेष), चना, णिप्फावा (गुज० वाल, सेम का बीज), कुलत्था (कुलथी), चणविका (= चणकिका चने से मिलता हुआ अन्न, प्राकृत चणइया, ठाणांग सूत्र ५, ३), मसूर, तिल, अलसी, कुसुम्भ, सावां।

इस प्रकरण में कुछ प्राचीन मद्यों के नाम भी गिनाये हैं। जैसे पसण्णा (सं० प्रसन्ना नामक चावल से बना मद्य, काशिका ५.४.१४, संभवतः श्वेत सुरा या अवदातिका), णिट्ठिता (= निष्ठिता, मद्यविशेष मंहगी शराब, संभवतः द्राक्षा से बनी हुई), मधुकर (महुवे की शराब) आसव, जंगल (ईख की मदिरा), मधुरमेरक (मधुरसेरक पाठान्तर अशुद्ध है। वस्तुतः यह वही है जिसे संस्कृत में मधुमैरेय कहा गया है, काशिका ६.२.७०), अरिट्ठ, अट्टकालिक (इसका शुद्ध पाठ अरिट्ठकालिका था जैसा कुछ प्रतियों में है, कालिका एक प्रकार की सुरा होती है, काशिका ५.४.३, अर्थशास्त्र २२५, आसवासव (पुराना आसव), सुरा, कुसुकुंडी (एक प्रकार की श्वेत मधुर सुरा), जयकालिका।

धातु के बने आभरणों में सुवर्ण, रुप्य, तांबा, हारकूट, त्रपु (रांगा) सीसा, काललोह, वट्टलोह, सेल, मत्तिका का उल्लेख है। धातुनिर्मित वस्त्रों में सुवर्णपट्ट (किमखाब) सुवर्णखचित (जरी का काम) और लौहजालिका (पृ० २२१)—ये हैं। इसी प्रसंग में तीन सूचियाँ रोचक हैं—घर, नगर और नगर के बाहर के भाग के विभिन्न स्थानों की। घर के भीतर अरंजर, ऊष्टिका, पल्ल (सं० पल्य, धान्य भरने का बड़ा कोठा), कुड्य, किज्जर, ओखली, घट, खड्डुभाजन (खोदकर गड़ा हुआ पात्र), पेलिता (पेलिका संभवतः पेटिका), माल (घर का ऊपरी तल), वातपाण (गवाक्ष), चर्मकोष (चमड़े का थैला), बिल, नाली, थंभ, अंतरिया (अंत के कोने में बनी हुई कोठी या भंडरिया), पस्संतरिया (पार्श्वभाग में बनी हुई भंडरिया), कोट्टागार, भत्तघर, वासघर, अरस्स (आदर्श भवन या सीसमहल), पडिकम्मघर (शृंगारगृह) असोयवणिा (अशोकवनिका नामक गृहोद्यान), आवुपध, पणाली, उदकचार, वच्चाडक (वर्चस्थान), अरिट्ठगहण (कोपगृह जैसा स्थान), चित्तगिह (चित्रगृह), सिरिगिह (श्री गृह), अग्निहोत्रगृह, स्नानगृह, पुस्सघर, दासीघर, वेसण।

नगर के विभिन्न भागों की सूची इस प्रकार है—अन्तःपुर या राजप्रासाद, भूमन्तर (भूम्यन्तर संभवतः भूमिगृह), सिंघाडक (शृङ्गाटक), चउक्क (चौक), राजपथ, महारथ्या, उस्साहिया (अज्ञात, संभवतः परकोटे के पीछे की ऊँची सड़क), प्रासाद, गोपुर, अट्टालक, पकंठा (प्रकंठी नामक बुर्ज), तोरण, द्वार, पर्वत, वासुरुल (अज्ञात), थूथ (स्तूप), एलुय (एडुक), प्रणाली, प्रवात (प्रपात, गड्ढा), वप्प, तडाग, दहफलिहा (हृदपरिखा), वय (व्रज—गोकुल अथवा मार्ग या रास्ता) ।

नगरबाह्य स्थानों की सूची इस प्रकार है—ध्वज, तोरण, देवागार, वुक्ख (वृक्ष), पर्वत, माल, थंभ, एलुग (द्वार की लकड़ी), पाली (तलाव का बांध), तडाग, चउक्क, वप्प, आराम, श्मशान, वच्चभूमि (वर्चभूमि), मंडलभूमि, प्रपा, नदी—तडाग, देवायतन, दड्डवण (दग्धवन), उट्ठियपट्टग (ऊँचा स्थान), जण्णवाड (यज्ञपाटक), संगाम भूमि (संग्राम भूमि) ।

५८ वाँ चिन्तित अध्याय है । जैनधर्म में जीव-अजीव के विचार का विषय बहुत विस्तार से आता है । यहाँ धार्मिक दृष्टिकोण से उस सम्बन्ध में विचार न करके केवल कुछ सूचियों की ओर ध्यान दिलाना इष्ट है । जीव, अजीव—इसमें जीव दो प्रकार का है—एक संसारी और दूसरा सिद्ध । संसारी जीव के सम्बन्ध में याचन विवृद्धि, भोग, चेष्टा, आचास्-विचार, चूड़ाकर्म (चोल), उपनयन, तिथि (पर्वविशेष), उत्सव, समाज, यज्ञ आदि विशेष आयोजनों का उल्लेख है । संसार चार प्रकार के होते हैं—दिव्य, मानुष्य, तिर्यच, नारकी । देवताओं की सूची में निम्नलिखित नाम उल्लेखनीय हैं—वैश्रवण, विष्णु, रुद्र, शिव, कुमार, स्कन्द, विशाख (इन तीन नामों का पृथक् उल्लेख कुषाण काल की मुद्राओं पर भी पाया जाता है), ब्रह्मा, बलदेव, वासुदेव, प्रद्युम्न, पर्वत, नाग, सुपर्ण, नदी, अलणा (एक मातृदेवी), अज्जा, अइराणी (पृ० ६९, २०४ पर भी यह नाम आ चुका है), माउया (मातृका), सउणी, (शकुनी, संभवतः सुपर्णी देवी), एकाणसा (एकानंसा नामक देवी जो कृष्ण और बलराम की बहिन मानी जाती है), सिरी (श्री—लक्ष्मी), बुद्धि, मेधा, कित्ती (कीर्ति), सरस्वती, नाग, नागी, राक्षस—राक्षसी, असुर—असुरकन्या, गन्धर्व—गन्धर्वी, किंपुरुष—किंपुरुषकन्या, जक्ख—जक्खी, अप्सरा, गिरिकुमारी, समुद्र—समुद्रकुमारी, द्वीपकुमास्—द्वीपकुमारी, चन्द्र, आदित्य, ग्रह, नक्षत्र, तारागण, वातकन्या, यम, वरुण, सोम, इन्द्र, पृथ्वी, दिशाकुमारी, पुरदेवता, वास्तुदेवता, वर्चदेवता (दुर्गन्धि स्थान के अधिष्ठाता देवता), सुसाण देवता (श्मशान देवता), पितृदेवता, चारण, विद्याधरी, विज्जादेवता, महर्षि आदि । इस सूची में कई बातें ध्यान देने योग्य हैं । एक तो देवताओं की यह सूची जैनधर्म की मान्यताओं की सीमा में संकुचित न रहकर लोक से संगृहीत की गई थी । अतएव इसमें उन अनेक देव-देवियों के नाम आ गये हैं जिनकी पूजा—परम्परा लोक में प्रचलित थी । इसमें एक ओर तो प्रायः वे सब नाम आ गये हैं जिनकी मान्यता मह नामक उत्सवों के रूप में पूर्वकाल से चली आती थी; जैसे—वेस्समण मह, रुद्धमह, सिवमह, नदीमह, बलदेवमह, वासुदेवमह, नागमह, जक्खमह, पव्वतमह, समुद्रमह, चन्द्रमह, आदित्यमह, इन्द्रमह आदि; दूसरे कुछ वैदिक देवता, जैसे—वरुण, सोम, यम; कुछ विशेष रूप से जैन देवता जैसे द्वीपकुमारी, दिशाकुमारी; अग्निदेवता के साथ अग्निघर और नागदेवता के साथ नागघर का उल्लेख विशेष ध्यान देने योग्य है । नागघर या नागभवन या नागस्थान, नागदेवता के मन्दिर थे जिनकी मान्यता कुषाण काल में विशेष रूप से प्रचलित थी । मथुरा के शिलालेखों में नागदेवता और उनके स्थानों का विशेष वर्णन आता है । एक प्रसिद्ध नागभवन राजगृह में मणियार नाग का स्थान था जिसकी खुदाई में मूर्ति और लेख प्राप्त हुए हैं । स्कन्द, विशाख, कुमार और महासेन ये चार भाई कहलाते थे जो आगे चलकर एक में मिल गये और पर्यायवाची रूप में आने लगे, पर हुविष्क के सिक्कों पर एवं काश्यप संहिता में इनका अलग-अलग उल्लेख है, जैसा कि उनमें से तीन का यहाँ भी उल्लेख है । श्री-लक्ष्मी की पूजा तो शुंगकाल से बराबर चली आती थी और उसकी अनेक मूर्तियाँ भी पाई गई हैं । किन्तु मेधा और बुद्धि का देवता रूप में उल्लेख यहाँ नया है ।

मनुष्य योनि के सम्बन्ध में पहले स्त्री, पुरुष और नपुंसक—इन तीन भेदों का विचार किया गया है और फिर पिता, माता आदि सम्बन्धियों की सूची दी है । तदन्तर पक्षी, चतुष्पद, परिसर्प, जलचर, कीट, पतंग,

पुष्प, फल, लता, धान्य, तैल, वस्त्र, धातु, वर्ण, आभरण आदि की विस्तृत सूचियां दी गई हैं जिनसे तत्कालीन संस्कृति के विषय में उपयोगी सूचना प्राप्त होती है। जलचर जीवों में कुछ ऐसे नाम हैं जिनका अंकन मथुरा की जैन कला में विशेष रूप से पाया जाता है। इन्हें सामुद्रिक अभिप्राय (Marine Motifs) कहा जाता है; जैसे हत्थिमच्छ (हाथी का शरीर और मछली की पूछ मिली हुई, जिसे जलेभ या जलहस्ति भी कहा जाता है), मगमच्छ (मृगमत्स्य), गोमच्छ (गौमत्स्य), अस्समच्छ (आधी अश्व की आधी मत्स्य की), नरमत्स्य (पूर्वकाय मनुष्य का और अधःकाय मत्स्य का, अं० Triton)। मछलियों की सूची में कुछ नाम विशेष ध्यान देने योग्य हैं। जैसे सकुचिका (सकची माछ), चम्मिरा (चर्मज, मानसोल्लास), घोहणु, वडरमच्छ (वज्रमच्छ), तिमितिमिगिल, वालोण, सुंसुमार, कच्छभमगर, गदभकप्पमाण (Shark), रोहित, पिचक (पिच्छक, मानसोल्लास), णलमीन (नलमीन, eel), चम्मिराज, कल्लाडक, सीकुंडी, उप्पातिक, इंचका, कुडुकालक, सित्तमच्छक (पृ० २२८)।

वृक्षों की सूची में चार प्रकार के वृक्ष कहे गये हैं—पुष्पशाली, पुष्पफलशाली, फलशाली, न पुष्पशाली न फलशाली। पुष्पशाली तीन प्रकार के हैं—प्रत्येकपुष्प, गुलुकपुष्प, मंजरी। एक एक फल अलग लगे तो प्रत्येक पुष्प, फूलों के गुच्छे हों तो गुलुकपुष्प और पुष्पों के लम्बे लम्बे झुगगे लगे तो मंजरी कही जाती है। रंगों की दृष्टि से पुष्पों के पांच प्रकार हैं—श्वेत, रक्त, पीत, नील और कृष्ण पुष्प। गंध की दृष्टि से पुष्पों के तीन प्रकार हैं—सुगंध पुष्प, दुर्गन्ध पुष्प, अत्यंत गंध पुष्प। फलदार वृक्ष फलों के परिमाण की दृष्टि से चार वर्गों में बांटे गये हैं—बहुत बड़े फल वाले (कायवंत फल जैसे कटहल, तुम्बी, कुष्मांड; मज्झिमकाय (मझले आकार के फल वाले), कैथ, बेल; बिचले (मज्झिमाणांतर) फल वाले जैसे आम, उदुम्बर; और छोटे फल वाले जैसे बड, पीपल, पीलू, चीरोजी, फालसा, बेर, करौदा। वर्गीकरण की क्षमता का और विकास करते हुए कहा गया है कि भक्ष्य और अभक्ष्य दो प्रकार के फल होते हैं। पुनः वे तीन प्रकार के हैं—सुगंध, दुर्गंध और अत्यन्त सुगंध। रस या स्वाद की दृष्टि से फलों के पांच प्रकार और हैं—तीते, कडुवे, खट्टे, कसैले और मीठे। अशोक, सप्तवर्ण, तिलक—ये पुष्पशाली वृक्षों के उदाहरण हैं। आम, नीम, बकुल, जामुन, दाडिम—ये ऐसे वृक्ष हैं जो पुष्प और फल दोनों दृष्टिओं से सुन्दर हैं। गंध की दृष्टि से वृक्षों के कई भेद हैं—जैसे मूलगंध (जिनकी जड़ में सुगंध हो), स्कंधगत गंध, त्वचागत गंध, सारगत गंध (जिसके गूदे में गन्ध हो), निर्यासगत गंध (जिसके गोंद में सुगंध हो), पत्रगत गंध, फलगत गंध, पुष्पगत गंध, रसगत गंध। रसों में कुछ विशेष नाम उल्लेखयोग्य हैं—गुग्गुलु विगत (गुग्गुलु से बनाई गई कोई विकृति), सज्जलस (सर्ज वृक्ष का रस), इक्कास (संभवतः नीलोत्पल कमल से बनाया हुआ द्रव; देशीनाममाला १-७९ के अनुसार इक्कास = नीलोत्पल या कमल), सिरिवेदुक (श्रीवेष्टक—देवदार वृक्ष का निर्यास), चंदन रस, तेलवण्णिकरस (तैलवर्णिक लोबान अथवा चंदन का रस), कालेयकरस (इस नाम के चन्दन का रस), सहकार रस (इसका उल्लेख बाण ने भी हर्षचरित में किया है), मातुलुंग रस, करमंद रस, सालफल रस। उस समय भाँति-भाँति के तैल भी तैयार होते थे जिनकी एक सूची दी हुई है—जैसे कुसुंभ तेल, अतसी तेल, रुचिका तेल (= एरंड तैल), करंज तेल, उण्हिषुण्णामतेल (पुत्राग के साथ उबाला हुआ तैल), बिह्ल तेल (बिल्व तैल), उसणी तेल (उसणी नामक किसी ओषधि का तेल), वल्ली तेल, सासव तेल (सरसों का तेल), पूतिकरंज तेल, सिग्गुक तेल (सोंहजन का तेल), कपित्थ तेल, तुरुक्क तेल (तुरुक्क नामक सुगंधी विशेष), मूलक तेल, अतिमुक्तक तैल। नाना प्रकार के तेल वृक्ष, गुल्म, वल्ली, मुच्छ, वलय (झुगगे) और फल आदि से बनाये जाते थे। घटिया बढ़िया तैलों की दृष्टि से उनका वर्गीकरण भी बताया गया है। तिल, अतसी, सरसों, कुसुंभ के तैल प्रत्येक वर्ग के; रेड—एरंड, इंगुदी, सोंहजन के मज्झिमाणांतर वर्ग के; मोतिया और पधकली (बेला) के तैल मध्यम वर्ग के, और कुछ दूसरे तैल श्रेष्ठ जाति के होते हैं। चंपा और चांदनी (चंदणिका) के फूलों (पुस = पुष्प) से जाही और जूही के तैल भी बनाये जाते थे। अनेक प्रकार के कुछ अन्नों के नाम भी गिनाये गये हैं (पृ० २३२, पं० २७)। वस्त्र, भाजन, आभरण और धातुओं के नाम भी गिनाये हैं। सुवर्ण, त्रपु, तौबा, सीसक, काललोह, वट्टलोह, कंसलोह, हारकूट (आरकूट), चाँदी ये कई प्रकार

की धातुएँ बर्तन बनाने के काम में आती थीं । इसके अतिरिक्त वैदूर्य, स्फटिक, मसारकल्ल, लोहिताक्ष, अंजनपुलक, गोमेद, सासक (पन्ना), सिलप्पवाल, प्रवाल, वज्र, मरकत और अनेक प्रकार की खारमणि इनसे कीमती बर्तन बनाये जाते थे । कृष्ण मृत्तिका, वर्ण मृत्तिका, संगमृत्तिका, विषाणमृत्तिका, पांडुमृत्तिका, ताम्रभूमि मृत्तिका (हिरमिजी) मुरुम्ब (मोरम) इत्यादि कई प्रकार की मिट्टियाँ बर्तन बनाने और रंगने के काम में आती थीं । इस प्रकार मृत्तिकामय, लोहमय, मणिमय, शैलमय कई प्रकार के भाजन बनते थे ।

वस्तुतः इस अध्याय में दैनिक जीवन से सम्बन्ध रखनेवाली मूल्यवान् सामग्री का संनिवेश पाया जाता है (पृ० २२३-२३४) ।

५९ वें अध्याय का नाम काल अध्याय है जिसमें २७ पटल हैं । पहले पटल में काल विभाग के नाम हैं । दूसरे में गुणों का विवेचन है । तीसरे पटल में उत्पात और चौथे में काल के सूक्ष्म विभागों का उल्लेख है । पांचवें पटल से २७ वें पटल तक जीव-अजीव पदार्थों और प्राणियों का काल के साथ सम्बन्ध कहा गया है । बारहवाँ पटल महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें छह ऋतु और बारह महीनों के क्रम से प्रकृति में होनेवाले वृक्ष, वनस्पति, पुष्प, सस्य, ऋतु आदि के परिवर्तन गिनाये गये हैं । उदाहरण के लिये फाल्गुन महीने के सम्बन्ध में कहा है—फाल्गुन मास में नरनारिओं के मिथुन मिलकर उत्सव मनाते हैं और मुदित होते हैं । उस समय शीत हट जाता है और कुछ उष्ण भाव आ जाता है । जिस समय आप्रमंजरी निकलती और कोयल शब्द करती है उस समय गाने बजाने और हँसी खुशी के साथ स्त्रीपुरुष आपानक प्रमोद में मस्त होते हैं । जपा, इन्दीवर, श्यामाक के पुष्पों से आंदोलित ऋतु का नाम वसंत है, जिसमें मनुष्य मस्त होकर नाचने लगते हैं, घूमने लगते हैं । स्त्री पुरुषों के मिथुन मैथुन कथाप्रसंगों में लगे हुए नाना भांति से अपना मंडन करते हैं उसका नाम फाल्गुन मास है । इन ४२ श्लोकों को अपने साहित्य का सबसे प्राचीन बारामासा कहा जा सकता है (पृ० २४३-४४) ।

सत्रहवें पटल में प्रातःकाल से लेकर संध्याकाल तक के भिन्न भिन्न व्यवहार बताये गये हैं । जिसमें प्रातराश, मध्याह्नभोजन, उद्यानभोजन आदि हैं । बीसवें पटल में रामायण, भारत और पुराणों की कथाओं का भी उल्लेख है ।

साठवें अध्याय में पूर्वभव अर्थात् देवभव, मनुष्यभव, तिर्यक् भव और नैरयिकभव के जानने की युक्ति बताई गई है । इसी के उत्तरार्ध में आगामी भव जानने की युक्ति का विचार है ।

इस प्रकार यह अंगविज्जा नामक प्राचीन शास्त्र सांस्कृतिक दृष्टि से अतिमहत्त्वपूर्ण सामग्री से परिपूर्ण है । निःसन्देह इसकी शब्दावली अनेक स्थलों में अस्पष्ट और गूढ़ है । इस ग्रन्थ की कोई भी प्राचीन या नवीन टीका उपलब्ध नहीं है । प्राकृत कोष भी इन शब्दों के विषय में सहायता नहीं करते । वस्तुतः तो स्वयं अंगविज्जा के आधार पर वर्तमान प्राकृत कोषों में अनेक नये शब्दों को जोड़ने की आवश्यकता है । इस ग्रंथ पर विशेष रूप से स्वतंत्र अर्थ अनुसंधान की आवश्यकता है । तुलनात्मक सामग्री के आधार पर एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से यह संभव हो सकेगा कि इसकी शब्दावली एवं वस्त्र, भाजन, आभूषण, शयनासन, गृहवस्तु, फल, मूल, पुष्प, वृक्ष, यान, वाहन, पशुपक्षी, धातु, रत्न, देवी-देवता, पर्व, उत्सव, व्यवहार आदि से संबंधित जो मूल्यवान् शब्दसूचियाँ इस ग्रन्थ में सुरक्षित रह गई हैं, उनकी यथार्थ व्याख्या की जा सके । आशा है कि इस ग्रन्थ के प्रकाशन के बाद सांस्कृतिक इतिहास के विद्वान् लेखक इस सामग्री का समुचित उपयोग कर सकेंगे । यहाँ हमने कुछ शब्दों पर विचार किया है, बहुत से अभी अस्पष्ट रह गये हैं । फिर भी जहाँ तक संभव हो सका है, सांस्कृतिक अर्थों की दृष्टि से अंगविद्या के अध्ययन को आगे बढ़ाने का कुछ प्रयत्न यहाँ किया गया है ।

COIN NAMES IN THE AṅGAVIJJĀ

The *Aṅgavijjā* contains extremely valuable lists of textiles, containers and utensils, seats and furniture, ornaments and jewellery, gods and goddesses, conveyances and boats, government officers, articles of food and drink, arms and weapons, birds and animals, personal names of men and women, architectural terms, etc. Similar to the lists of the Buddhist *Mahāvvyutpatti*, these are replete with cultural material of great importance. Here it is proposed to record the numismatic data incorporated in this text in the form of lists of coins¹ constituting the wealth during that period, which served as the basis of foretelling the fortune of a person. The following passages are noteworthy :

I

.....धणमतो परं ॥ १८४

सुवण्णमासको व त्ति तद्वा रथय मासओ । दीणारमासको व त्ति तद्वा णाजं च मासको ॥ १८५

काहावणो खत्तपको पुराणे त्ति व जो वदे । सत्तेसु त्ति तं सव्वं पुण्णामसममादिसे ॥ १८६

[अङ्गविज्जा, ch. IX, p. 66]

II

सुवण्णकाकणी व त्ति तद्वा मासककाकणी । तद्वा सुवण्णगुञ्ज त्ति दीणारि त्ति व जो वदे ॥ ३६६

[अङ्गविज्जा, ch. IX, p. 72]

III

तत्थ कोडिते खोडिते दंतणहे अंजण—पासाण—सक्करा—लेटुक—ढेल्लिया—मच्छक फल्लादिसु सव्वकडिणगते सव्वकडगए सव्वचुण्णगते सव्वधणपडिरूव उवकरणगते चेव धणं बूया ।

उद्धं णाभीय काहावणे बूया ।

अधो णाभीय णाणकं बूया ।

तत्थ अब्भंतरामासे सव्वसागते सव्वकाहावणोपकरणगते य काहावणो बूया ।

तत्थ काहावणेषु पुव्वाधारितेषु उत्तमेषु उत्तमयत्तिए बूया, मज्झिमेसु मज्झिमयत्तिए बूया, जहण्णेषु जहण्णयत्तिए बूया, साधारणेषु उत्तममज्झिमजहण्णेषु साधारणयत्तिए बूया, आदिमूलेसु पुराणे बूया, बालेसु णवाए बूया ।

तत्थ बज्झामासेसु असागगते य सव्वण्णकपडिरूवगते य णाणकं बूया ।

तत्थ णाणए पुव्वाधारिते कायमतेसु सव्वमासकपडिरूवगते य मासए बूया, मज्झिमकाएसु अद्धमासकपडिरूवसद्पादुब्भावे य अद्धमासए बूया, मज्झिमाणंतरकाएसु सव्वकाकणिपडिरूवगते य काकणि बूया, पच्चवरकाएसु सव्वअट्ठपडिरूवगते य अट्ठतो बूया ।

IV

सेतेसु जिद्धेसु य रुपं बूया चउरंसेसु जिद्धेसु चित्तेसु दढेसु काहावणं बूया ।

[अङ्गविज्जा, Ch. X, p. 134]

V

तंभेसु सुवण्णकं दिद्धं बूया सुक्के रुपं वा काहावणे वा बूया । सुक्केसु दढेसु रुपं बूया । चित्तेसु सुक्केसु दढेसु य काहावणे बूया ।

[अङ्गविज्जा, Ch. XLII, p. 189]

1. See also for a casual discussion, Umakant P. Shah, *JNSI*, XIV, 107-110, and *Journal of Oriental Research*, M. S. University, of Baroda, III, 55-60.

It is evident from the above that a full contingent of coin-names as presented here is the following :

1. सुवण्ण मासक	(सुवर्ण माषक)
2. रयय मासक	(रजत माषक)
3. दीणार मासक	(दीनार माषक)
4. णाण मासक	(नाणक माषक)
5. काहावण	(कार्षापण)
6. खत्तपक	(क्षत्रपक)
7. पुराण	(पुराण)
8. सतेरक	(Stater)
9. सुवण्ण काकणी	(सुवर्ण काकणी)
10. मासक काकणी	(माषक काकणी)
11. सुवण्ण गुंज	(सुवर्ण गुंजा)
12. दीणारि	(दीनार Denarius)
13. आदिमूल काहावण also called पुराण	
14. उत्तमकाहावण	(उत्तमकार्षापण)
15. मज्झिम काहावण	(मध्यम कार्षापण)
16. जहण काहावण	(जघन्य कार्षापण)
17. बाल काहावण	(बाल कार्षापण, also called नवकार्षापण)
18. णाणक	(नाणक)
19. मासक	(कायमंत, of big size)
20. अद्धमासक	(मज्झिमकाय, of medium size)
21. काकणि	(मज्झिमाणंतर काय, of small size)
22. अट्टा	(पच्चवर काय, of minute size)

We may now offer some explanation of these coin denominations.

1. सुवण्णमासक—This seems to refer to the gold माषक coin which was a submultiple of the standard gold coin called सुवर्ण. According to the traditional weight standard the सुवर्ण coin was of 80 *rattis* and a माषक was one-sixteenth part of it, hence weighing 5 *rattis* :

पञ्च कृष्णलको माषस्ते सुवर्णस्तु षोडश । (मनु. ८।१३४)

Kautilya had laid down that a सुवर्ण and कर्ष each was equal to 16 सुवर्णमाषकs and that the latter was 5 *rattis* in weight :

सुवर्ण माषकः पञ्च वा गुज्जाः । ते षोडश सुवर्णः कर्षो वा । (अर्थशास्त्र H. 19)

The gold coins of the Guptas are mentioned both as दीनार and सुवर्ण in their inscriptions.¹ The सुवर्ण standard of 80 *rattis* was frankly adopted in the reign of Skandagupta only, whose coins were struck to two standards, viz. an average of 131 grains and that of 142 grains. The latter has been unanimously accepted as conforming to the ancient सुवर्ण weight of 144 grains (taking 1 *ratti* = 1.8 grains). What could have been the standard followed by the Gupta mint-masters when they were minting to an average of 131 grs. has remained an unsolved problem so far.

An important fact is brought to light by the अंगविज्जा, viz. that besides the दीनार-सुवर्णs which were the standard gold coins, their sub-multiples were also minted, and these are specifically called सुवर्णमाषक and दीनारमाषक. No specimen however, of such small gold coins of the Guptas has yet been found.

1. J. Allan, *Catalogue of the Coins of the Gupta Dynasties*, p. cxxxiv ; cf. Fleet, *C II*, iii, No. 64.

2. रय्यमासक — This is obviously the silver माषक coin which Manu mentions as रौप्यमाषक. Its weight was 2 *rattis* :

द्वे कृष्णले समधृते विज्ञेयो रौप्यमाषकः । (मनु. ८।१३५)

Punch-marked specimens of the silver माषक coins are well known and it may be taken for granted that they were current in the Kushāṇa and Gupta periods, since no other type of silver माषकs have ever been found. Again, the Kushāṇas hardly minted any silver and the Guptas also gave scant attentions to coins in this metal because earlier punch-marked coins were still current.

3. दीनारमाषक — As pointed out above it should have been a sub-multiple of the standard *denarius* coin, weighing 121 grains which was the standard adopted by the Kushāṇas in imitation of the Roman *aurei*.

4. नाणकमाषक — The अंगविज्जा is specific that the नाणक was an unsubstantial coin (असार गत), i.e. much inferior in value to the कार्षापण of silver referred to as सर्वसारगत. The determining of the weight standard of the copper coins of the Kushāṇas is still in a state of confusion. Its range extends from 31 grs. to 270 grs. as recorded by Whitehead in the *PMC*. The नाणक coin is also mentioned in the मृच्छकटिक (एशा नाणकमूशिका मकशिका, I. 17) where the commentary, obviously on some good old authority, explains it as a शिवांक टंक, i.e. a coin bearing the figure of Śiva, which induces us to identify the नाणक with the copper money of the Kushāṇas, since it was Wema Kadphises who issued the most abundant currency of this type and caused it to be marked with the figure of Śiva or one of his emblems. Buddhaghosha has an important passage¹ in the कंखावितरणी commentary on the पातिमोख, in which he mentions after कहापण a coin called लोहमासक, which seems to signify the copper माषक coin and was the same as the नाणक माषक of the अंगविज्जा list. According to the traditional weight system, a copper कार्षापण weighed 80 *rattis* or 144 grs. and a माषक 5 *rattis*. The standard weight of the नाणक coin being uncertain, that of the माषक also remains problematical. The heavy नाणक coins of the Kushāṇas were struck either equal to the tetradrachma wt. standard of 268.8 grs. (67.2) (being the wt. of a drachma), or the double stater wt. of 266.4 (133.2 grs. being the wt. of a stater), or double of the Suvrṇa wt. of about 290 grs. (146 or 144 being the wt. of a Suvrṇa); or there is also the possibility of the heavy wt. of the ancient त्रिशूक्त coins mentioned by Pāṇini (150 *rattis* or 270 grs.) still being familiar with respect to the copper currency and officially accepted. The exact weight of the नाणक and its sub-multiples in copper remains a matter of conjecture.

5. कहापण — The कार्षापण coin was of ancient denomination well-known from the time of Pāṇini. Its history is full of vicissitudes.

The कहापण of the अंगविज्जा had wide ramifications. It is distinguished as a coin of substantial value (सारगत), in comparison to the copper नाणक which was of inferior value (असारगत). The same distinction is indicated by the कहावण corresponding to the upper part of the body (उर्द्ध णाभीय) and the णणक to the lower part (अधो णाभीय) from the point of view of prognosticating the fortune of some person.

The अंगविज्जा further distinguishes the original Kārshāpaṇas (आदिमूल कहावण) from the new coins of the same name (बाल कहावण and णव कहावण, both meaning the 'young' or recent coins). Fortunately the current name of the आदिमूल कहावण is also recorded, viz. पुराण (आदिमूलेसु पुराणे बूया), which was well-known during the Śāka-Sātavāhana and the Kushāṇa periods, as will be seen below.

Further the कार्षापण coin was of three classes, superior (उत्तम), middle (मज्झिम) and जघन्य (inferior), and it is essential to understand clearly these distinctions, as shown later.

6. खतपक—It is a new coin-name added by the अंगविज्जा and is of exceeding interest. Obviously it denoted the coins issued by the Kshatrapa rulers of Ujjain and Western India. In this connection it is relevant

1. जातरूपरजतन्ति सुवर्णं चैव रूपियं च । अपि च कहापणो लोहमासक दारुमासक जतुमासकादयो पि ये वोहारं गच्छन्ति सव्वे ते इध रजतन्ति एव उता (कंखावितरणी, p. 84).

to recall the evidence of the Pali commentaries to which Prof. C. D. Chatterji had drawn attention.¹ There the ancient punch-marked silver Kārshāpanas are called नीलकहाण पुराण and the same is distinguished from रुद्रदामक, viz. the coins which were minted by Rudradaman, the Great Satrap who ruled in 150 A.D. According to the साख्यदीपनी a रुद्रदामक coin was three-fourth in value of a नीलकहाण. It may be taken for granted that in weight also it was three-quarters of the standard silver Kārshāpana of 32 rattis, i.e. of 24 ratti (= 40 grs.) weight. These silver coins were apt to excessive wear and tear, and due to the deposit of verdigris on the surface they were graphically nicknamed as नीलकहाण. We find in the available specimens a good deal of variation in weight; e.g. Rapson has recorded wts. ranging from 28 grs. to 38 grs. (specimen no. 320 is 37 grs. and no. 324, 38 grs.).

We may also make a distinction between the रुद्रदामक coins, i.e. ones minted by Rudradāman himself, and the रुद्रदामकादि coins, i.e. others which were minted by his successors on the model of the original रुद्रदामकs. For all practical purposes they were indetical in weight, fabric and value. The general name for all such coins of the Western Kṣatrapas must have been खत्तपक as revealed by the अंगविज्जा.

7. पुराण—These were the आदिमूल or the original Kārshāpana coins of ancient mintage which continued to remain in circulation from circa sixth century B. C. to circa 6th century A. D. These are now known as coins of the punch-marked series and are of many Classes and Varieties. Fortunately once put into circulation, they were never withdrawn by subsequent rulers, even when new coins were cast and minted. During the Śaka-Kushāna period (C. 1st Cent. B.C. – 3rd Cent. A.D.) they served as the standard money of the day and public endowments were made and recorded in terms of the 'Purāṇa' or the ancient Kārshāpanas of the punch-marked variety. In the Puṇyaśāla Pillar Inscription of Huvishka at Mathura an endowment of 1100 Purāṇa coins was deposited with two guilds which undertook to make certain provisions of public benefaction in consideration of the interest accruing on the original sum.

The implication of the समन्तासादिका passage cited above, seems to be that the term कहाण was of very wide application and included all kinds of old and new silver coins, under which each class was distinguished by its special name like पुराण, रुद्रदामक, खत्तपक, etc. At any rate the word पुराण was of unmistakable denotation to the common man in the Śaka-Kushāna period when most of the material for the अंगविज्जा was compiled. Manu also mentions the coin under the name of राजत पुराण, i.e. a पुराण coin of silver, which was equal in wt. to 16 raupya-māshakas (Manu, VIII. 135, 136). In passage no. IV above, the reference to the चरसं

1. In view of Prof. C. D. Chatterji's article, Some Numismatic Terms in Pali Texts, being published in a rather out of the way Journal (*Journal of the U. P. Historical Society*, Vol. VI, Pt. I, January 1933, pp. 156-173) and the exceptional importance of that evidence for comparative study, the three original passages are cited here :

(I) तदा राजगहे वीसतिमासको कहाणो होति, तस्मा पञ्चमासको पादे । एतेन लखणेन सव्वजनपदेसु कहाणस्स चतुत्थो भागो पादा' ति वेदितव्वो । सो च खो पुराणस्स नीलकहाणस्स वसेन न इत्थेसं रुद्रदामकादीनं । (समन्तासादिका on सुत्तविमंग, पराविक H. 1.6, विनयपिटक, P.T.S., Vol. III, p. 45).

At that time at Rājagaha one Kahāṇa was equal to twenty māśakas; wherefore one Pāda was equal to five māśakas. By this standard it is to be understood that, in all the provinces the quarter of a Kahāṇa, is a Pāda. But this is in respect of the ancient Nilakahāṇa (and) not of these (latter-day) Rudradāmaka (coins) and these have been modelled after it ;

II इमिना व 'सव्वजनपदेसु कहाणस्स वीसतिमो भागो मासको' ति, इदञ्च वुत्तमेव होती'ति दट्ठव्वं । पुराणसत्थानुरूप लखणसम्पन्ना उप्पादिता नीलकहाणमति वेदितव्वी । रुद्रदामेन उप्पादतो रुद्रदामको । सो किर नीलकहाणस्स तिभागं अण्णति । (साख्यदीपनी comm. on the समन्तासादिका, Sirīhalese edn., Vol. I, p. 493).

It must be borne in mind that by this (referring to the समन्तासादिका passage cited above) it has been said that in all the provinces the twentieth part of a कहाण is a मासक. A नीलकहाण is to be understood as being manufactured with marks following the ancient (numismatic) treatises. A रुद्रदामक (coin) is one which has been manufactured by Rudradāma. This (money-piece) is said to be equivalent to three-quarters of a नीलकहाण.

III 'पुराणकस्स' ति पुराणसत्थानुरूपमुप्पादितस्स लखणसम्पन्नस्स नीलकहाणसदिसस्स कहाणस्स एतेन रुद्रदामकादीनि पठिक्खिपति.....मासको नाम पुराणकस्स कहाणस्स वीसतिमो भागो, या लोके 'मज्जेद्वी' तिपि वुच्चति ।

'(The expression) पुराणकस्स (i.e. of the ancient) applies to the कहाण manufactured with marks according to the ancient (numismatic) treatises and resembling the नीलकहाण. By this (expression) are excluded the रुद्रदामक (coin) and those which have been modelled after it.....मासक is, indeed, the twentieth part of an ancient कहाण, which is also called Mañjeṭṭhi in current usage.'

काहवण, i.e. the square Kārshāpaṇa must be to the ancient punch-marked coins, which owing to the presence of a variety of symbols were also described as चित्त (Skt. चित्र).

8. सतेरक—This word was derived from the Greek term 'stater', which became familiar in India from the time of the Indo-Greeks, and continued to be current during the Kushāṇa period, and probably in the Gupta epoch also. The stater was a gold coin weighing 133.2 grs. In the Central Asian Kharoshthi documents mention is often made of the सुवर्न सतेर or सुवर्न सदेर coin, i.e. the gold stater, which was current along with silver coins called द्रख्म or त्रख्म, the drachm.¹ Shri Ratna Chandra has also drawn attention to an important evidence from the स्फुटार्था commentary on the अभिधर्म कोष of वसुबन्धु in which a specific reference is found to the सतेर coin with the remark that 2 *dināras* were equal to 1 सतेर.² This raises several problems, e.g. (1) what was this particular दीनार coin which had the exchange value of 2 : 1 with the stater coin ? (2) Whether the दीनार was of silver or gold ? The literary references acquaint us with the *dināra* coin both of silver (रौप्य दीनार) and gold (सुवर्ण दीनार), but we are not yet in a position to determine the nature of the *dināra* affiliated to the stater. The probability is that the silver *dināra* may have been the name applied to the silver Drachm (wt. 67.2 grs.) in India, and then the weight of the stater (133.2 grs.) would stand to the *dināra* in the ratio of 2 : 1, as recorded by महावीरचार्य in the गणितसार संग्रह—द्वौ दीनारौ सतेरं स्यात् प्राहुर्लोहिष्ठे सूर्यः, i.e. in the case of metallic weights 2 दीनारस are equal to 1 सतेर.³

It may be safe to assume that सतेरक was not a new coin minted in the Kushāṇa period, but the old Indo-Greek gold stater which continued to be in free circulation for several hundred years after the end of that dynasty.

9. सुवर्ण काकणी—We know from ancient literature that the माषक coin existed in gold, silver and copper, as the one-sixteenth part of the standard coin. So also the काकणी. It was one-fourth of a माषक. The *Arthaśāstra* furnishes definite evidence about the ratio of a काकणी to a माष.⁴ The सुवर्ण coin being 80 *rattis*, its माषक would be 5 *rattis* and a सुवर्ण काकणी 1.25 *rattis* (= 2.25 grs.). We have of course, no actual specimens of such minute gold coins either for the Kushāṇa or for the Gupta period.

10. मासक काकणी—This seems to refer to the काकणी coin related as a submultiple to the silver माषक coin, although there is nothing to preclude a काकणी of copper from being known by this name. On Pāṇini VI. 3.79, the काशिका commentary has the following examples :

(a) समाषः कार्षापणः ।

(b) सकाकणीको माषः ।

i.e., a (silver) कार्षापण exceeded by a (silver) माषक coin, and a (silver) माष coin exceeded by a (silver) काकणी coin.

11. सुवर्ण गुंज—It signifies a गुंजा or 1 *ratti* of gold, and it is uncertain whether the reference is to a coin, or merely a wt., but the probability is in favour of the former. The विष्णुस्मृति does refer to a gold कृष्णल coin (ch. 9).⁵

12. दीनार—The name was derived from Roman *denarius*.⁶ A coin of this designation was first introduced in Rome in B.C. 269–268. It was a *silver* coin and its original weight was 70 grs., but within about fifty

1. Ratna Chandra Agrawala, Numismatic Data in the Kharoshthi Documents from Chinese Turkestan, *JNSI*, XIV, p. 103. The writer refers there, on the authority of Prof. Granwedel to a stater of silver, but the point is left undeveloped. We do not yet know of any other firm reference to a silver सतेरक coin.

2. Ratna Chandra Agrawala, Greek Stater in Ancient Indian Epigraphs and Literature, *JNSI*, XV, pp. 153–154.

3. Ratna Chandra, *ibid*, *JNSI*, XV, p. 154.

4. पणमर्धपणं षडमष्टभागमिति । पादाजीवं तत्प्ररूपं माषकमर्धमाषकं काकणीम् अर्धकाकणीमिति (अर्थशास्त्र II. 12, Text, p. 84, Mysore edn.).

5. सर्वेष्वेवार्थेषु मूल्यं कनकं प्रकल्पयेत् । तत्र कृष्णलोचनं शुद्धं दूर्वाकरं ज्ञापयेत् ॥ (स्मृतिसंदर्भ, Vol. I, p. 426, विष्णुस्मृति, ch. 9)

6. See however, for a contrary view, K. V. Rangaswami Iyengar, *Brhaspati Smṛti*, Introduction, pp. 152–156.

years it began to decline; between 210 B. C. and the time of Augustus its wt. was reduced to 60 grs. and after Nero (A. D. 54–68) to 52 grs.¹ Its value sank steadily. In 210 B. C. 1 *aureus* was equal to 15 *denarii*, in the time of Augustus to 25 *denarii*, till in the beginning of the third century A. D. it was only worth three pence and the name applied to a copper coin. It appears that the name was introduced in the realm of Indian coinage during the reign of the Imperial Kushānas who applied it to their gold issues. The Indian literary evidence shows that the दीनार was generally a coin of gold. In the Jaina *Kalpasūtra* a necklace is said to be strung with gold *dīnāras*.² The नास्मृति refers to a दीनार as a synonym of a सुवर्ण which was equal to 12 धानक³. The वासवदत्ता of सुबन्धु (c. 5th century A.D.) mentions दीनार to have been a gold coin, where the sun is compared to a gold दीनार seen in the eastern horizon (प्राचीकाञ्चनदीनारचक्रे इव);⁴ the दशकुमास्चरित (c. 7th cent. A. D.) refers to 16,000 *dīnāras* without specifying the metal.⁵ The gold coins of the Guptas are mentioned in a number of inscriptions as *dīnāras*,⁶ and in one place both the दीनार and the सुवर्ण coins are mentioned together.⁷

There is, however, a reference in the original *Pañchatantra*, as reconstructed by Edgerton, to the *dīnāra* coins of silver, but it may there be a generic term for coins.⁸

The reference in the अंगविज्जा seems to be a gold coin of the Kushāna period, the form of the name दीनारि in the female gender (थीणामाणि = स्त्रीनामानि) being nearer to the original *denarii*, where as in the Gupta period the form everywhere is the masculine *dīnāra* (cf. षड्दीनारान् अष्ट च रूपकानायीकृत्य).⁹

13. आदिमूल कार्षापण—The term is explained by the अंगविज्जा itself as denoting the पुराण or ancient punch-marked silver coins, which were still current as the standard money for revenue assessment during the Gupta period, as shown by the *Śukranīti*.¹⁰

14–16. उत्तम, मध्यम, जघन्य कार्षापण—It mentions the कार्षापण coin as of high, middle and inferior value. It is difficult to be precise about the denotations. But in the कशिका commentary (जातरूपेभ्यः परिमाणे, IV. 3.153) we have a mention of a gold Kārshāpaṇa (हाटकं कार्षापणम्) which very likely was the उत्तमकार्षापण of the अंगविज्जा. Taking कार्षापण as a general term for a coin, the gold कार्षापण of the *Kāśika* would be the same as the सुवर्ण or दीनार. The मध्यम कार्षापण would refer to coins of silver and the जघन्य कार्षापण to those of copper, viz, the नाणक pieces.

17. बाल कहावण—The अंगविज्जा explains it as the new coins, distinguished as such from the old (पुराण) Kārshāpaṇas. These must have been the cast coins, and not punch-marked. As a matter of fact, the खत्तपक, the रुद्रदामक would all come under this general class of 'recent' coins.

1. F. Warr Cornish, *Concise Dictionary of Greek & Roman Antiquities*, p. 768.

2. *Kalpasūtra*, Eng. Translation by H. Jacobi. S. B. E., XXII. p. 233; in the जीवाभिगमसूत्र, दीनारमालिका (a necklace of *dīnāra* coins) is an ornament produced by the माणिकांग कल्पवृक्ष.

3. कार्षापणो दक्षिणस्यां दिशि रूढः प्रवर्तते । पणैर्विद्धः पूर्वस्यां षोडशैव पणः स तु ॥ ११६ ॥

पञ्चनद्याः प्रदेशे तु या संज्ञा व्यावहारिकी । कार्षापणप्रमाणं तु निबद्धमिह वै तथा ॥ ११७ ॥

कार्षापणोऽब्धिका त्रेयश्चतस्रोऽस्त्वधानकम् । ते द्वादश सुवर्णं स्याद् दीनारो ॥ ११८ ॥

(नास्मृति १८ अ०; स्मृतिसंदर्भ, Vol. I, p. 330)

For अब्धिका the v. l. is अण्डिका, which was probably the correct reading.

4. वासवदत्ता, जीवानन्द edn., Calcutta, 1933, p. 121

5. मया जितक्षसौ षोडशसहस्राणि दीनाराणाम्, *Nirnaya Sagar* edn., II, p. 97.

6. Fleet C. II., III, Nos. 5, 7, 8, 9, 62, 64.

7. Ibid., No. 64, cf. Allan, *Coins of the Gupta Dynasties*, p. cxxxiv.

8. अथ तत्र धर्मबुद्धिर्नाम यः सार्थवाहसुतस्तेन कस्यचित् साधोः पूर्वस्थापितं कलशिकागतं स्वपायप्रचोदितं सौवर्णदीनारसहस्रं प्राप्तम् । (धर्मबुद्धि—दुष्टबुद्धि कथा, मूलपञ्चतंत्र, Poona edn., p. 42).

9. Baigrām Copperplate Inscription of the Gupta year 128 (= 448 A.D.), *Ep. Ind.* XXI, p. 81 f., D. C. Sarkar, *Select Inscriptions*, p. 344.

10. लक्षकर्षमितो भागो राजतो यस्य जायते । सामन्तः स नृपः प्रोक्तः । शुक्रनीति, I. 181–182 ff.

18. नाणक—It was both a generic term for all kinds of coins and a specific denomination of the copper coin which was much inferior in value (असागत) to a कार्षापण mentioned as सागत. As an instance of the former meaning, we may refer to the याज्ञवल्क्यस्मृति where one who counterfeits coins is called कूटकुत् नाणकस्य and an examiner of coins as नाणकपरीक्षी.¹ This evidence may almost have been of the same age as the अंगविज्जा. The बृहत्कल्पसूत्रभाष्य (II. 1969) also employs the term नाणक for copper (ताम्रमय), silver (रूपमय) and gold (सुवर्ण) coins, but this evidence should be assigned to about the seventh century A.D.²

The नाणक coin of lesser value, as pointed out above, was the name for the copper money of the Kushāṇas, which according to the commentator of the मृच्छकटिक was also called, शिवाङ्कटङ्क, i.e. the money bearing the figure of Śiva.

19–22. The अंगविज्जा mentions 4 other names of coins of lower denomination, which were once current as sub-multiples of the silver कार्षापण and also of the copper पण, as I have shown elsewhere.³ These were the माषक, अर्धमाषक, काकणी and अट्टा, all referred to in the अर्थशास्त्र, the last one called अर्धकाकणी.⁴

In the अंगविज्जा passage, the context seems to indicate that these were names of the sub-multiples of the copper नाणक. The माषक would be 5 rattis, अर्धमाषक 2.5 rattis, काकणी 1.25 rattis and अर्धकाकणी or अट्टा (i.e. one-eighth माषक) 5/8th ratti or 1.125 grs. Of course these were very minute coins, but their existence may be taken for granted. As I have discussed elsewhere,⁵ the actual finds of silver punch-marked coins have brought to light specimens of even lesser weight. Of course it is rare to find them along with other coins in hoards.

The evidence of the अंगविज्जा, a text originally compiled in the Kushāṇa period and substantially retouched during the Gupta period, thus furnished important data about current coinage in that age. We learn that coins of gold, silver and copper were in circulation, that in gold both the सुवर्ण and the दीनार were minted as distinct coins, that the older and new coins were current side by side, the older (पुराण) ones being the square or irregular shaped (चउरंस) punch-marked (चिह्न) Kārshāpaṇas of silver of which the great antiquity was very well understood as shown by the designation आदिमूल काहावण applied to them, that the new copper नाणक coins of the Kushāṇas presented a rich series with several inferior coins of lower denominations like the मासक, अट्टमासक, काकणी and अट्टा, and finally that the old Indo-Greek gold staters (सतेरक) of an earlier age and the new contemporary coins of the Western Kshatrapas known as the खरपक were also current at one and the same time.

BANARAS HINDU UNIVERSITY

Vasudeva S. Agrawala

1. याज्ञवल्क्यस्मृति, II. 240–241.

2. ताम्रमयं वा नाणकं यद् व्यवह्रियते यथा दक्षिणापथे काकणी । रूपमयं वा नाणकं भवति यथा पिछ्माले दुष्मः । पीतं नाम सुवर्णं तमयं वा नाणकं भवति यथा पूर्वदिशे दीनारः । केवटिको नाम यथा तत्रैव पूर्वदिशे केतराभिधानो नाणकविशेषः । बृहत्कल्पसूत्र भाष्य on the कारिका II. 1969.

3. India as known to Pāṇini p. 266, see the Table of Kārshāpaṇa.

4. पादाजीवं ताम्ररूपं माषकमर्धमाषकं काकणीमर्धकाकणीमिति । Arthaśāstra, II, 12, Text p. 84.

5. A note on some minute Silver Punch-marked Coins of the Raupya Māshaka Series, JNSI, XII, 164–171.



॥ णमो त्थु णं महइमहावीरवद्धमाणसामिस्स ॥

पुव्वायरियविइयं

अंगविज्जापइणायं ।

[पढमो अंगुप्पत्ती अज्झाओ]

॥ ६० ॥ नमः सर्वज्ञाय ॥

णमो अरहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आयरियाणं । णमो उवज्जायाणं । णमो लोए सव्वसाहूणं ।
णमो जिण्णाणं । णमो ओधिजिण्णाणं । णमो परमोधिजिण्णाणं । णमो सव्वोधिजिण्णाणं । णमो अणंतोहिजिण्णाणं ।
णमो भगवओ अरहओ असव्वओ महापुरिसस्स महावीरवद्धमाणस्स । णमो भगवईय महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय
सहस्सपरिवाराय ८० सपरिवाराय ८० ।

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय अंगुप्पत्ती णामज्झाओ पढमो । तं खलु भो !
तमणुवक्खामि । तं जधा—

अणादिणिधणं णाणं सव्वण्णूहिं पवेदियं । णिमित्तसंगहे उक्कं अट्ठधा उ विभज्जए ॥ १ ॥

अंगं १ सरो २ लक्खणं ३ च वंजणं ४ सुविणो ५ तहा ।

छिण्ण ६ भोम्मं ७ उतलिवक्खाए ८ एमेए अट्ठ आहिया ॥ २ ॥

एए महानिमित्ता उ अट्ठ संपरिकित्तिया । एएहिं भावा णज्जंति तीता-उणागय-संपया ॥ ३ ॥

एएसिं पवरं णेयं णिमित्तं अंगमेव तु । सव्वसुत्त-उत्थविण्णाणे एवं संपरिकित्तियं ॥ ४ ॥

रूवाणं जधा सव्वेसिं रवी सिद्धो पगासणे । एवं अंग निमित्ताणं सव्वेसिं तु पगासणे ॥ ५ ॥

जधा णदीओ सव्वाओ ओवरंति महोदधिं । एवं अंगोदधिं सव्वे णिमित्ता ओतरंतिह ॥ ६ ॥

अंग सिद्धं णिमित्ताणं णाणाणमिव केवलं । अजिणो जिणसंकासो अहिआणो भवे णरो ॥ ७ ॥

तस्स सव्वण्णुदिट्ठस्स णिमित्तपवरस्स उ । आगमो आणुपुव्वीए इमो केवलदेसिओ ॥ ८ ॥

चउव्वीसेण अरहया वद्धमाणेण देसियं । णवण्हं गणजेट्ठाणं बारसंगे सुउत्तमो ॥ ९ ॥

तत्थ बारसमे अंगे दिट्ठिवाए जिणेण उ । सुयोदधिम्मि पण्णत्तं णिमित्तण्णाणमेव उ ॥ १० ॥

वद्धमाणेण अरहया जधा तेसिं पवेदियं । णिमित्तणाणं सिस्साणं तेहिं सुत्तकियं तओ ॥ ११ ॥

१ ए ८० नमः श्रीवर्द्धमानाय ॥ ६० त० । ६० श्रीपार्श्वनाथाय नमः ॥ सि० ॥ २ 'हओ[५]सव्वओ ६० त० विना ।
'असव्वओ' यशस्वत इत्यर्थः ॥ ३ ८० ८० एतच्चिह्नान्तरातः पाठः ६० त० नास्ति ॥ ४ उक्तं सं३ पु० ॥
५ 'ए ८ मए सं ३ पु० । 'ए ८ ते मए सि० ॥ ६ 'णणाणा ६० त० विना ॥ ७ अंग इति लुप्तविभक्त्यन्तं पदम्, अङ्गशास्त्रमित्यर्थः ॥
८ ओरुमंति सं ३ पु० । ओतरंति सि० ॥ ९ दृश्यतां टिप्पणी ७ ॥ १० णाणीण' सं३ पु० विना ॥ ११ अधियाओ ६० त०
विना । 'अहिआणो' अधीयानः ॥ १२ आगमोऽणाणु' ६० त० विना ॥ १३ 'या उ वद्ध' ६० त० ॥
१४ सुवुत्तमा ६० त० ॥ १५ सुओअहम्मि ६० त० ॥ १६ सुत्तुक्कियं ६० त० विना ॥

5

10

15

1

2

3

4

5

6

7

8

9

10

11

12

13

14

15

16

17

18

19

20

21

22

23

24

25

26

27

28

29

30

31

32

33

34

35

36

37

38

39

40

41

42

43

44

45

46

47

48

49

50

51

52

53

54

55

56

57

58

59

60

61

62

63

64

65

66

67

68

69

70

71

72

73

74

75

76

77

78

79

80

81

82

83

84

85

86

87

88

89

90

91

92

93

94

95

96

97

98

99

100

101

102

103

104

105

106

107

108

109

110

111

112

113

114

115

116

117

118

119

120

121

122

123

124

125

126

127

128

129

130

131

132

133

134

135

136

137

138

139

140

141

142

143

144

145

146

147

148

149

150

151

152

153

154

155

156

157

158

159

160

161

162

163

164

165

166

167

168

169

170

171

172

173

174

175

176

177

178

179

180

181

182

183

184

185

186

187

188

189

190

191

192

193

194

195

196

197

198

199

200

201

202

203

204

205

206

207

208

209

210

211

212

213

214

215

216

217

218

219

220

221

222

223

224

225

226

227

228

229

230

231

232

233

234

235

236

237

238

239

240

- तेहिं णामं च णेरुतं अज्झायाणं इमो कमो । जिणाणं वरणाणीहिं णिमित्ताणं पवेदियं ॥ १२ ॥
 इंदिएहिंदियत्थेहिं समाधाणं च अप्पणो । णाणं पवत्तए जम्हा णिमित्तं तेण आहियं ॥ १३ ॥
 अंतरंगम्मि उट्टेइ बाहिरंगे अ लक्खणं । तेण जाणंति जम्हा उ णेयं अंगं तु तेण तं ॥ १४ ॥
 अंगस्स णामं णेरुतं एवं संपरिकित्तियं । मेहप्पुरिसदिण्णाय लक्खणं तु णिबोधतं ॥ १५ ॥
 5 सव्वे आवेदिया भावा सरीरे पुरिसस्स उ । समासा गमसंजुत्ता अप्पमेया जिणेण उ ॥ १६ ॥
 णाम णिरुतं अंगं ति अंगविज्जाय तं धा व्वए (थए ?) । महापुरिसदिण्णं तं लोगस्सुज्जोयणित्तिया ॥ १७ ॥
 तम्हा णाम णिरुतं एवं संपरिकित्तियं । महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय उत्तमं ॥ १८ ॥
 महापुरिसदिट्ठस्स सयसाहस्ससाधिणो । सहस्सदारजुत्तस्स सयसाहस्समुखस्स य ॥ १९ ॥
 वागरणओ अणंतस्स अप्पमेयागमस्स य । महापुरिसदिण्णाए अज्झायाणं इमो कमो ॥ २० ॥
 10 अंगुप्पत्ती ति अज्झाओ १ तहा य जिणसंथवो २ । सिस्सोवक्खावणे चेव ३ अंगस्स य तहा थवो ४ ॥ २१ ॥
 मणित्थवो य अज्झाओ ५ णेयो आधारणे तधा ६ । वागरणोवदेसो य ७ भूमिकम्मं तहेव य ८ ॥ २२ ॥
 मणि ९ आगमणज्झाओ १० पुच्छियम्मि तहेव य ११ । जोणीसु यावि अज्झाओ १२ कमसो परिकित्तिओ ॥ २३ ॥
 जोणिलक्खणवागरणे १३ अट्ठ दारा तओवरि । अट्ठेवण्णे य अज्झाया तेसिं वा वि इमो कमो ॥ २४ ॥
 अत्थदारं १४ संगहदारं १५ पैयादारं १६ आरोगगदारं १७ जीवियदारं १८ कामदारं १९ बुद्धिदारं २०
 15 विजयदारमिति २१ ॥

- आणुपुव्वीए अट्ठेए अज्झाया दारसणिया । तओवरिं पसत्थो य २२ अप्पसत्थो य आहिता २३ ॥ २५ ॥
 अज्झाओ जातिविजयो २४ गोत्तज्झाओ तहेव य २५ । णामज्झाओ य २६ ठाणे य २७ कम्मजोणी तहेव य २८ ॥ २६ ॥
 णगराणं च विजये २९ जोणी आभरणेण य ३० । वत्थजोणी ३१ धणजोणी ३२ जाणजोणी य कित्तिया ३३ ॥ २७ ॥
 संलावे य तहा जोणी ३४ विसुद्धी य पजासु य ३५ । दोहले ३६ लक्खणे चेव ३७ अज्झाओ वंजणम्मि य ३८ ॥ २८ ॥
 20 कणवासनयज्झाओ ३९ भोयणो ४० यरियगंडिया ४१ ।
 सुविणे य ४२ पवासे य ४३ अट्ठा ४४ पावासियम्मि य ४५ ॥ २९ ॥
 पवेसे चेव ४६ जत्ताय अज्झाओ ४७ य तहा जयो ४८ । पराजयो य अज्झाओ ४९ तहेव य उवहुओ ५० ॥ ३० ॥
 देवयाविजयो चेव ५१ णक्खत्तविजयो ति य ५२ । उप्पाए चेव अज्झाओ ५३ सारासारे तहेव य ५४ ॥ ३१ ॥
 णिधाणे ५५ णिव्विसुत्ते य ५६ णट्टे य तह कोसओ ५७ । चितिए चेव अज्झाओ ५८ कालज्झाओ तहेव य ५९ ॥ ३२ ॥

१ 'णेण लं० सं ३ पु० ॥ २ महापु' हं० तं० सि० ॥ ३ आवसिआ हं० तं० । आवसिआ सि० ॥ ४ तथा जुए हं० । तच्चा जुए तं० ॥ ५ 'साहिणो हं० तं० ॥ ६ 'स्स पसाहस्स सुखस्स य हं० तं० विना ॥ ७ 'रणं उ अ' हं० तं० विना ८ अज्झाओ सप्र० ॥ ९ पयमदारं सप्र० ॥ १० भुविदारं सप्र० ॥ ११ 'णा ४० रिय' हं० तं० विना ॥ १२ तथा ठाणेसियम्मि य सं ३ पु० सि० । तहा वायासियम्मि य हं० तं० ।

तहा वायासियम्मि य ४४ ॥ २९ ॥

पवेसे चेव ४५ जत्ताय ४६ अज्झाओ अ तहा जओ ४७ । पराजओ अ अज्झाओ ४८ तहेव य उवहुओ ४९ ॥ ३० ॥
 देवताविजओ चेव ५० णक्खत्तविजओ ति अ ५१ । अप्पाए चेव अज्झाओ ५२ सारासारे तहेव य ५३ ॥ ३१ ॥
 णिहाणे ५४ णिव्विसुत्ते य ५५ णट्टे अ तह कोसओ ५६ । चितिए चेव अज्झाओ ५७ कालज्झाओ तहेव य ५८ ॥ ३२ ॥
 विजओ पुरिमभावाणं ५९ पवित्तिविजओ तहा ६० । सट्ठि एए अज्झाया संगहे परिकित्तिया ॥ ३३ ॥

इत्थं अध्यायाङ्क-पाठादिविपर्यासो हं० तं० आदर्शयोः दृश्यते । अन्यासु प्रतिषु अध्यायाङ्का एव न वर्तन्ते । मया तु यथायोग्यमङ्क-पाठादिपरिवर्तनं विहितमस्ति, तदत्र तज्ज्ञा एव प्रमाणम् ॥

विजयो पुरिमभावाणं ६०/१ उववत्तिविजओ तओ ६०/२ । सव्वे वि सट्ठि अज्झाया संगहे परिकित्तिया ॥ ३३ ॥

महापुरिसदिण्णाय सव्वभावपरूवणा । अणाययमतिकंता भावा तह य संपया ॥ ३४ ॥

जे जीवा-ऽजीवसंजुता सव्वे एयं पवेइआ । हिअयं सव्वभावाणं सव्वण्णूहिं पवेइअं ॥ ३५ ॥
संगहो सट्ठिमज्झाया अंगविज्जाय एस उ । एयं सम्ममधिज्जिता अणंतगमवित्थरं ।

महापुरिसदिण्णं तु सव्वण्णू व वियागरे ॥ ३६ ॥

5

॥ अंगुप्पत्ति त्ति अज्झाओ सम्मत्तो ॥ १ ॥ छ ॥

[बित्तिओ जिणसंथवज्झाओ]

॥ जेमो अरिहंताणं ॥ अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय जिणसंथवो णामऽज्झाओ ।
तं खलु भो ! तमणुव्वक्खस्सामो । तं जहा-सयंसंबुद्धा वीतराग-दोसा सयंभुणो तमरयोधमलणा सव्वण्णू सव्वदरिसिणो
सव्वलोगपवरा संजम-तवविपुलमंडणा पवस्तेयस्सया दित्तरस्सी केवलणाणसंभवो लोकम्मि वित्तिमिरकरा लोगस्सुज्जोयगरा 10
जिणसूरा सव्वजोइपवरा । जेहिं इमं बारसंगमखिलं सुयणाणं देसियं, पदीवो अक्खयो, दीवणं असेसस्स जगतीभावाणं,
सव्वभावदंसीहिं भासियं बारसंगसुयणाणभूसणं भूमिकम्मवरभूमिसुप्पइट्ठियं मणिकरुयकसट्ठियज्झायविचित्तं
बंधविहचारुकडभिसुद्धपओदग्गविमलच्छे णेकवागरणंतमसंधीय पाक्कडपडाकुदये सव्वलोकदीपे आदिकरे धुतरये
लोगायरिए सव्वविदू पवरमहिं णिमित्तवरदेसके जिणवरे । गइं पवरं पत्ते वंदामि सव्वसिद्धे । अंते मज्जे असंगो
चतुमतीणिउणबुद्धि अणगारा संथुया लोगसंथवारिहा ॥

15

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाए अंगविज्जाए जिणसंथवो णामऽज्झाओ ॥ २ ॥ छ ॥

[तइओ सिस्सोपक्खावणअज्झाओ]

बंधणं खत्तियं वेस्सं तओ वण्णे यथाविहिं । अंगमज्झावए सिस्सं अंगविज्जाविसारदे ॥ १ ॥
एतेसुं दिज्जवण्णेसु भिण्णाचार-पलाविणो । जे दुम्मेहा य थद्धा य ण ते अज्झावए विदू ॥ २ ॥
रायणं उगग भोगं वा राजवंसकुलुगयं । सिस्सं सिस्सगुणोपेयं अंगविज्जं तु गाहए ॥ ३ ॥
पिइवंस-माइवंसेहिं विसुद्धे भद्दगे विणीए य । कुलीणकुलसंभूए सीलवंते गुणणिणए ॥ ४ ॥
जाईइ कुल-रूवेण सीला-ऽऽचारुणोण य । पदक्खिणेण विणएण मैअ य अलंकिए ॥ ५ ॥
जाईमंते अणुस्सित्ते कुलीण-विणयणिणए । सुअवं ण य चाउल्ले सोडीरो ण य कोधणो ॥ ६ ॥

20

१ हस्तचिह्नान्तर्गतोऽयं श्लोकः हं० त० आदर्शयोरेव वर्तते ॥ २ सट्ठि एए अज्झाया हं० त० ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः
हं० त० एव वर्तते ॥ ४ 'वक्खइस्सा' हं० त० ॥ ५ सव्वण्णू सव्वजोइपवरा संजम' हं० त० विना ॥ ६ लोगम्मि हं० त०
सि० ॥ ७ जिणुत्तरा हं० विना ॥ ८ 'भूसियं भूमि' हं० त० विना ॥ ९ 'च्छणे । कवा' हं० त० ॥ १० तमबीअपा... डपडागुदए
हं० । तमबीअपाक्कडपडागुदए त० ॥ ११ 'कदेवीआ' हं० त० ॥ १२ 'ज्जे य सं' हं० त० विना ॥
१३ 'गा भवतु सप्र० ॥ १४ जहाविहिं हं० त० ॥ १५ गुणणिणए हं० त० ॥ १६ गुणोहि य हं० त० विना ॥
१७ सईअ सि० ॥ १८ अक्कलंकिए हं० त० ॥ १९ सुयवण्णाए य चापल्ले हं० त० विना ॥

- पिया-ऽभिरामो कंतीए जुत्तो रूवेण रूपवं । अखुयाचार-सीलेणं चारित्तगुणसालिणा ॥ ७ ॥
 पसत्थलक्खणोपेए उत्तमा-ऽभिजणागई । सर-सत्तसमाउत्तो गइ-गारवसारवं ॥ ८ ॥
 अलुद्धो धिइमंतो य धम्मिक्को धम्मजीवणो । धम्मसुई धारयिता धम्मो धणियणिच्छयो ॥ ९ ॥
 अकोधणो अफरुसो अत्थद्धो ण य कक्कसो । अपरोवयावी णियओ अतिण्हो ण य ओइलो ॥ १० ॥
 ५ अपरिसावी थिमिओ अपावो अणुसूरको । आयरियमोवादकरो रिजू अपरिभावको ॥ ११ ॥
 जिणसासणाणुरत्तो सौम्मो दंसणकोविदो । णिच्चोपजुत्तो आभोगे जुत्तजोगो समाहिओ ॥ १२ ॥
 मधुसलाव-संलावपेरो णिट्ठियभासओ । आदेयवक्को सुगिरो वायो-गइविसारदो ॥ १३ ॥
 णिधाणं सुरहस्साणं अत्थे अभिणिवेसवं । तच्चित्तो तम्मणो णिच्चं ओधारे दोसणिच्छयो ॥ १४ ॥
 णिम्ममो णिरहंकारो णापमाणी परम्मि य । देवे य सम्माणइता गुरुं माणइता सया ॥ १५ ॥
 १० उगेण्हंतो य ऊहाय अपायोपायधारको । चउप्पकाराय वि हु जुत्तो बुद्धीय बुद्धिमं ॥ १६ ॥
 दक्खो दक्खिण्णवं णिउणो णीयावत्ती पियंवदो । परस्स चित्तगहणे उपायपरिणिट्ठिओ ॥ १७ ॥
 जियमाणो जियकोहो जियमाई जियसंसओ । जियलोभो जियभयो जियणिदो जिइदिओ ॥ १८ ॥
 असाहसो अचवलो अवत्थियमवेगिओ । अणुब्भडो अरभसो अणुज्जलमचंचलो ॥ १९ ॥
 समयाधिगओ पुव्वं जिणसासणणिच्छिओ । उव्वत्तजोव्वणो किंचि विज्जागहणपच्चलो ॥ २० ॥
 १५ बुद्धिमं गूढमंतो य गुरूणं वयणे रओ । चित्तमुत्तममेधावी धारणोपायकोविदो ॥ २१ ॥
 विणीयविणओ दंतो साधुजुत्तो दढव्वयो । णीरोगो साहुसंपन्नो सच्चसंधो यदाणओ ॥ २२ ॥
 विज्जा-चरणसंपन्नो आसुं गंधविसारदो । आदेज्जवयणो सूरु कयणू णयकोविदो ॥ २३ ॥
 इंगियाकारकुसलो पंडिओ पइभाणवं । अहिणंदियंसवगो जितसाहस-मच्छरी ॥ २४ ॥
 पंडिपुण्णंग-पच्चंगो देस-कालविसारदो । खिप्पकारमसंभंतो तव्विज्जाणुमओ सया ॥ २५ ॥
 २० परिसाहसतो लज्जो तहा बहुगयागमो । सदा गुरुहिते जुत्तो मधुरो परमण्वुओ ॥ २६ ॥
 अभीओ हीणलोभो य ण प्पमायी तहेव य । जो विरुद्धाणि साहूणं णायरे ण ई मुज्झइ ॥ २७ ॥
 सुहसीलमदंतं वा अभत्तीण व जो सुणे । साहसीमप्पसंतं वा विज्जामेए ण गाहए ॥ २८ ॥
 थद्धो चंडो पमादी य रोगी अविणीओ तहा । मिच्छदिट्ठी व जो मिच्छे अंगं से णाभिजाणइ ॥ २९ ॥
 अरहंता-ऽऽयरिअपरो सम्मदिट्ठी चरित्तवं । सुई अमाई मेहावी सीसो से परिकित्तिओ ॥ ३० ॥
 २५ समहत्थ-पादो समगतो समसंठाणसंठिओ । सुतवित्तेहिं सोतेहिं अंगं सो अभिजाणई ॥ ३१ ॥
 मिदुहत्थ-पादो मिदुगई मिदुलोमो मिदुच्छवी । मिदुआलाव-संलावो अंगं से अभिजाणई ॥ ३२ ॥
 हस्सेण हत्थ-पादेण मिदुणा सप्पभेण य । उजु-वट्ट-दीहगत्ते य अंगं से अभिजाणई ॥ ३३ ॥
 सुहुम-प्पसण्णदिट्ठी य अणिट्ठुरे मणवित्तओ । एवंलक्खणसंपण्णे अंगं समभिजाणई ॥ ३४ ॥

१ अक्खुताचा° हं० त० । अक्खयाचा सि० ॥ २ धम्मिओ धम्मजीवओ हं० त० ॥ ३ हस्तचिह्नमध्यगतः पाठः हं० त० एव ॥ ४ अक्कोहणो हं० त० ॥ ५ आविलो सि० ॥ ६ अपरिभावी विसिओ अपावोऽणसूरए हं० त० ॥ ७ सोमो हं० त० ॥ ८ जोगजुत्तो सि० ॥ ९ परिणि° हं० त० ॥ १० नायोगइ° हं० त० ॥ ११ णिधाणमरह° सि० विना ॥ १२ आहारो दोस° हं० त० ॥ १३ ओगिण्हितो हं० त० ॥ १४ य जहाय सप्र० ॥ १५ अप्पाओपा° हं० त० ॥ १६ जियकोधो सि० । जियकोधी सं ३ पु० ॥ १७ गुरुणो सि० ॥ १८ संपत्तो सं ३ पु० ॥ १९ पइसावणं हं० त० विना ॥ २० यमव्वंगो सि० । यमव्वगो हं० त० ॥ २१ परिपु° हं० त० ॥ २२ कारीम° हं० त० ॥ २३ लज्जू हं० त० ॥ २४ तहा तम्मगगाहगो सि० । तहा त...मगा..... । सं ३ पु० ॥ २५ य हं० त० ॥ २६ लमुदंतं सप्र० ॥ २७ सहसी° हं० त० विना ॥ २८ हस्तचिह्नान्तर्गतं पूर्वाद्धं हं० त० एव वर्तते ॥ २९ मुसवित्तेहिं हं० त० विना ॥

एवमादीहिं अण्णेहिं गुणजुत्तो गुणणिओ । स सिस्सो सिक्खवेयव्वो जिणोत्तं अंगमेव उ ॥ ३५ ॥
 तेण चाऽधीयता अंगं वसया गुरुकुलम्मि य । कैओ उ इमो णियमो जाव विज्जं समाणए ॥ ३६ ॥
 सुची सुचिसमायारो बंभचारी जित्तिदिओ । अच्चए य जहासत्ति देवता-ऽतिथि-साहवो ॥ ३७ ॥
 अंजणं दंतपवणं गंधं मल्लं विभूसणं । मच्छं मंसं महुं मज्जं णवणीयं विवज्जए ॥ ३८ ॥
 कालापरण्णपिंडीओ विमिलीसेलणालिकं । सणं कुसुंभकं कण्णिवल्लीबंधं च यगिकं ॥ ३९ ॥ 5
 जाणि विक्ख-रुखादीणि कंटका(की?)णि कडूणि य । असुईसंगठाणा य सव्वाणि परिवज्जए ॥ ४० ॥
 आहारसुद्धिहेउ य इमारिणं वज्जए सदा । सूतिकाभत्त-पाणं च खरुद्धिऽण्णवज्जए ॥ ४१ ॥
 पेतभत्तकलाओ य कुच्छियाओ[ऽ]सुचीणि य । वज्जइता चरे दंतो साधूणिज्जेसु गोयरं ॥ ४२ ॥
 थणिए विज्जुयायं च णीघाए भूमिकंपए । उक्कापाए दिसीघाए आपाके अंधिकंतणे ॥ ४३ ॥
 सुसाणब्भासमेलूगे अमेज्झ-मंतसूतके । अदे य मच्छ-मंसम्मि वसायं सोणियम्मि या ॥ ४४ ॥ 10
 कंटकी-खाणु-कम्मण्णे पासाण-ऽट्टिअसंकुले । करीस-च्छारसंकिण्णे णंगमज्झावए विदू ॥ ४५ ॥
 सुक्कवासाजलब्भासे सदले हरिए तणे । खीरविक्खसमब्भासे मंगल्ला जिणपादवा ॥ ४६ ॥
 सोमम्मि देवतब्भासे पुलिणे सण्हवालुगे । गोट्ठाणम्मि सिलापट्टे समे देसे सुभम्मि य ॥ ४७ ॥
 सुचिम्मि सुचिसामंते अगारे सुक्किले सुभे । अंगमज्झावए सिस्सं सुइ-सुक्किलवाससं ॥ ४८ ॥
 अरहंतमंगविज्जाय पणामो चेव कायव्वो । णमोक्कारअधीए य अणण्णमणसा यव ॥ ४९ ॥ 15
 आयरिय-गुरु-देवाणं पजायविणएण य । उवायणिदेसवया लहुं विज्जा विवद्धए ॥ ५० ॥
 एवं सुस्सवमाणस्स विज्जागुरुजणं तधा । आयरियाण गुरुणं च अंगविज्जा समिज्झए ॥ ५१ ॥
 एएण विधिकप्पेण सिस्समज्झावए तु जो । मणुज्जो णिव्वुइं किर्त्ति जसं वा वि स पावइ ॥ ५२ ॥
 एवंगुण-समायारो सीसो एवं तु सिक्खइ । आदेसपागडजसो पूयं पावइ उत्तमं ॥ ५३ ॥
 इति परिकहियजधोवदेस - जधविणएण सुउत्तमं सुसिस्सो । 20
 अरिहइ मणुएसु देवपूयं, विउलफलं सुयमंगमागमिता ॥ ५४ ॥
 ॥ महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय सिस्सोपक्खावणो [णामऽज्झाओ सम्मत्तो] ॥ ३ ॥ छ ॥

[चउत्थो अंगत्थवऽज्झाओ]

णमो अरहंताणं । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय अंगत्थवो णामऽज्झाओ । तं खलु
 भो ! तमणुव्विक्खयिस्सामि । तं जधा-गुणगणधारए धुरय-कलुसे णित्थिण्णजरा-मरणे सव्वदुक्खाणं णभमिव 25
 अंतपारं सव्वगए अणत्तेनाणविसए सव्वामरा-ऽसुर-मणुयमहिं सिरसा सतोसो अभिवंदिरुण सिद्धे, जिणजाणवसभे
 वित्तिमिरे धुतरये वरणाणणाणणी य णमंसिरुणं, आभिणिबोहियणाणी-सुयणाण-मणपज्जवणाण-ओहिणाण-परमोहिणाण-
 केवलणाणी य सव्वभावणुणो वीयरए जे अणगारे वंदिरुण, सततं सुर-सुर-पवरणरवइ-पतगपति-भुजगपणि-
 वतियसंपूइयमंगमभिवंदहे उड्डमहो-तिरियदिसि-विदिसिणिगयजसे विधूरय-मले समे समणे ।

१ य हं० तं० ॥ २ कहिओ य इमो सि० ॥ ३ दंतवणं हं० तं० सि० ॥ ४ च वज्जए हं० तं० ॥ ५ कालायरण्णपिं
 सं ३ पु० । कालायरण्णो पिं सि० ॥ ६ विमलीसेणाणां सि० ॥ ७ णिणपल्लीं हं० तं० विना ॥ ८ गवाणा य हं० ।
 गवाणी य सं ३ पु० तं० ॥ ९ पत्तभत्तं सं ३ पु० । जिपअभत्तं हं० तं० ॥ १० अधिविकं हं० तं० ॥ ११ मयलूतगे
 हं० तं० विना ॥ १२ खीरवच्छस्समं हं० तं० ॥ १३ षणमो हं० तं० ॥ १४ रियसुभदेवाणं सि० विना ॥ १५ गुरुणं सि०
 विना ॥ १६ णाममज्झाओ हं० तं० ॥ १७ वक्खाइस्सामि हं० तं० ॥ १८ णधराण (धस्से ?) धुयं हं० तं० विना ॥
 १९ मिय अंतं सं ३ पु० ॥ २० तविन्नाणं सि० ॥ २१ पन्नगं हं० तं० ॥ २२ इयं संगमभिं सं ३ सि० पु० ॥

जल-अणिलजगतिजगभूयं लोकाऽलोकबहुभावभावियविमिसितं वितिमिरकरणं सु(सू)रमभिवंदियं ।

तमभिवंदहे सिरसा वागरणमगरचरियं अणंतपारमप्यमेयं धिइसुविधिविपुलवेलं मतिसलिलमंगमुदधि ।

ठाणम्मि अप्पमेधायं सण्णासुजातमूलविण्णाणविपुलमेधं आमासविविहसाह-प्पसाहविडिअं विविधणयपवाल-रुचिरसोभिं वागरणपुप्फ-फलसुरभिसरसं विइतविपुलजसपत्ताकवितड्डीकं अंगवरवेइअं ।

5 वंदहे सुमणसौणयविविहबहुहातुकंदुकसिहरं सज्जायसुतोघविपुलप्पसूए सणप्पवायमणिकवरविपुले समणुगयसव्व-भाववागरणवालपविचरियं णिपुणणयविपुलकंदरगुहं सुयपव्वयतुंगमंगं ।

अभिवंदहे मिंगवरअणंतपडिपुण्णसुभसरीरं ववसायविपुलवेगं वागरणविविह-सुद्ध-घणतिकखदाढं मणिकवरबलोघ-अजिअगइविण्णाणविमुद्धदिहिं तत्तत्थसुद्धिदीवोतुणिगयजसविपुलसीहणादं कणयमंगायुधमेलणं मिंगराजमंगसीहं ।

वंदामि असरिसबलपुरिसमणिकवरविपुलकायं ववसायधिईहत्थं अपरिमियकालवागरणणाणचक्खुं सुपतिट्ठियं
10 णिट्ठियत्थसज्जायचारुगम्भचरणं गोल(लु)ण्णयविहिसुविभत्तउच्छंगविपुलदंतं वागरणविविहगम्मीरम्मं वाआलापमधुरवि-
घुट्टणाययप्पसूयं मदसुगंधगंधी णाणवरणयमंगवरवारणं उदगं ।

अभिवंदहे विविधसज्जायसुतोघणिचियकोसं मणिकवररयणसारणयविहिचउरंगवाहिणिलोपवेयं अणंतगममखिल-विपुलविसयं वागरणसुप्पसायं सुजायबलसव्वणाणविसए सुलद्धविसयं विण्णाणविपुलअपडिहयविजयकेतुं सुयराय[मंगं]
चउरंगअप्पइमो ति

15 ॥ यथा खलु [भो !] महापुरिसदिण्णाय० अंगत्थवो णामऽज्झाओ. चउत्थो ॥ ४ ॥ छ ॥

[पंचमो मणित्थवज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय मणित्थवो णामऽज्झाओ । [तं खलु भो ! तमणु-
वक्खइस्सामि] । तं जधा-तमतिमिरपडलविधुतरय-मले जर-मरणकिलेससंगतिण्णे णाणवरपवरोवधिपणतमिव
समणुगयसव्वणाणविसए सिरसा सयओ अभिवंदिरुण सिद्धे, जिणवसभमपच्छिमं धुतरयं संतिण्णसव्वदुक्खं वंदिय,
20 पवरमप्यमेयणाणं वरधम्मबारसंगसुयदेसकं वरजसं लोगायरियं वेदितु वद्धमाणं केवलं अट्ठपयदेसकं सव्वलोक-
समणुगयसव्वभावदयापरं रयणाणमागरं वागरणोदधिं, उप्पायणिमित्तणाणवरसागरं अणंतमेरुमिव विविधधातुचित्तं
वागरणजोणिवरधातुणाणसिहरं अचलं जसण्णाणणाणवरमेरुलोकं हिययं भावाणं अणंतगमसंपयुत्तं अंगसारभूयं अंगहिययं
मणिवरं वंदामि सुज्झियमणसो विणएण वीसत्थं । जेण भगवया परित्तपदसंगहेण गहिया अणंतगमवित्थडा जसपदा,
तं अंगसारभूयं लोकहिययं असेसं अणंतजिणदेसियं मणिवरं अणंतचित्तासव्वभावविण्णाणपत्तविसए सुलद्धविसयं वंदामि
25 णिययं वरजसं सुविहियमणगारसंपूइयं ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय मणित्थवो णामऽज्झाओ सम्पत्तो ॥ ५ ॥ छ ॥

१ 'जगइजग' हं० त० ॥ २ 'भाववियमिसितं' हं० त० विना ॥ ३ 'डिअ विवि' हं० त० विना ॥ ४ 'सुरसं विपत्त' हं० त० विना ॥ ५ 'तजसविपुलपता' हं० त० ॥ ६ 'ताकं वितरीकं' हं० त० विना ॥ ७ 'सोइयवि' हं० त० ॥ ८ 'कंदुक' हं० त० ॥ ९ 'प्पावाय' हं० त० विना ॥ १० 'वरवल्लुप्पअजिअगइविण्णा' हं० त० । 'वरबलौघअइतराइविण्णा' सं ३ पु० सि० ॥ ११ 'सुद्धदिद्धिदिद्धिं तत्त' हं० त० ॥ १२ 'दिहदीवोतुणिगयजणससिविपुल' हं० त० विना ॥ १३ 'मलणमिंग' हं० त० विना ॥ १४ 'वाआलोयमधुरविप्पुद्धणातयप्प' हं० त० विना ॥ १५ 'नामाज्झाओ' हं० त० ॥ १६ 'पवसेवयेणभमिव' हं० । 'पवरोवयेणभमिव' त० ॥ १७ सतओ हं० त० विना । 'सयओ' सयतः, प्रयत इत्यर्थः ॥ १८ 'गमुवएसकं' हं० त० ॥ १९ 'वंदिअ वद्ध' हं० त० ॥ २० 'अट्ठपरिदे' हं० त० विना ॥ २१ 'ण सागरं' हं० त० विना ॥ २२ 'जसण्णाणगोणवर' हं० त० विना ॥ २३ 'मुणि' हं० त० विना ॥ २४ 'मुज्झिय' सप्र० ॥ २५ 'भगवंतं प' हं० त० विना ॥ २६ 'लोकहियं' सि० ॥ २७ 'संभूइयं' हं० त० विना ॥ २८ 'णाम अज्झा' हं० त० ॥

[छट्ठो आधारणज्झाओ]

णमो अरहंताणं । [अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय] आधारणो णामऽज्झाओ । तं खलु भो ! तमणुवक्खइस्सामि । तं जधा—जिणवरमयाणुरतो णिगंथसासणरओ असंको आयरिओवदिट्ठसुत्तत्थणि-
च्छियमई इरिएसणा-ऽऽदाण-भास-ग्गहणपसाससमिइजुतो पंडिपुण्णअंगविज्जासुणयसुपरिणिच्छियकरणजोगो अंगर-
क्खाणिगमणिणिच्छियमई अप्पाणे बाहिरे तदुभये वा सण्णं निवेसइत्ता थी-पुं-णपुंसगेसु आमासत्थसयं सम्मं 5
अवियक्खयाणं णिगुणम्मि अणुरागं सह-फरिस-रस-रुव-गंधादिके व गुणे दुविहम्मि य बाहिर-ऽब्भंतरम्मि अंगे
अविक्खियाणं णिस्संकिंयमुप्पण्णं आधारणाय उपायं अंगवी ववसिओ अण्णाइलोयणओ अत्तमाणो अभीओ ण वि य
पडिनिवेसा ण वि पेम्मा सब्बसमत्थमाधारए गु(उ) णाणी ॥

। महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय [आधारणो णामऽज्झाओ सम्पत्तो] ॥ ६ ॥ छ ॥

[सत्तमो वागरणोपदेसऽज्झाओ]

10

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाए अंगविज्जाए वागरणोपदेसो णामऽज्झाओ । तं खलु भो ! तमणुव-
क्खाइस्सामि । तं जधा—आधारिय णाणी सम्मं जीव-अजीव-बाहिर-ऽब्भंतरं अंगं कारण-णिमित्तविसए अणागया-
ऽतीत-वट्टमाणगुणलद्धविसयो दसदिसासमणुगयभावो उप्पण्णुप्पायलद्धक्खु एकत्त-पुहत्तउवट्ठियणाणविसयोवलद्धीयं
अप्पणो सुतबलोघज्जिओहासो णाणी तु वियागरिज्ज एवं—पयहिरुण राग-दोसे मुख्खपधगवेसओ पवयणस्स
णाणगुणभावभावणट्ठयाय परोवघातवागरणा जीवमज्झत्थभावभूओ से पत्थावइत्तु सोहं अभीओ ण वि य सम्पहासं 15
सुद्धवसिईओ अदीणो तत्तत्थं उट्ठियं न वि य संकिंयं ण वि यऽणुप्पणं वागरणपागडं बहुजणबहुगुणिव्वुईकरं
पच्चक्खघातिकं पवयणस्स दीवणा न खलु लघु समत्थ वियागरेज्जा । इमा य पुच्छ उप्पण्णे कारणंसि आधारयित्तु
ववसिए अणिरुद्धे काले अणुरतो जयं परजयं वा राजमरणं वा आरोग्गं वा रण्णो आतंकं वा उवहवं वा मा पुण
सहसा वियागरिज्ज णाणी । लाभा-ऽलाभं सुह-दुक्खं जीवितं मरणं वा सुभिक्षं दुब्भिक्षं वा अणावुट्ठि सुवुट्ठि
वा धणहाणि अज्झप्पवित्तं वा कालपरिमाणं अंगहियं तत्तत्थणिच्छियमई सहसा उ ण वागरिज्ज णाणी । अंगं गवेसिऊण 20
णं णाणी एयाणि कारणाणि तु परेण परिपुच्छिउ सयं वा गवेसिऊण सम्मं उप्पन्नं पिक्खिय उप्पायं तत्तत्थगवेसणाय
सम्मं गवेसिऊण उप्पायं पवत्तयकारणगुणोववण्णो णाओपवण्णयअणुप्पन्नं कारणं किंचि समुप्पायं ॥

॥ महापुरिसदिण्णाए० वागरणोपदेसो णामऽज्झाओ सम्पत्तो ॥ ७ ॥ छ ॥

१ 'वक्खाइ' हं० त० ॥ २ परिपुं हं० त० विना ॥ ३ अभक्खा' हं० त० ॥ ४ वा सइण्णं (= सइं णं) निवेसइत्ता
हं० त० ॥ ५ अमोस' हं० त० विना ॥ ६ 'यक्खिणाआणं णि' हं० त० ॥ ७ 'तत्थियम्मि सि० ॥ ८ णिण्णंस्संकिमु' हं०
त० ॥ ९ उवप्पायं हं० त० ॥ १० अणायलो' हं० त० विना ॥ ११ णाम अज्झा' हं० त० ॥ १२ अंगकारणं सं ३ ॥
१३ हं० त० विनाऽन्यत्र—'णिमित्तपरिण्णायणाणीण णाणागुणलद्धि' सि० । सं ३ पु० प्रतिषु रिक्तं पाठस्थानम् ॥
१४ 'जणिअहा' हं० त० सि० ॥ १५ 'गुणभावणट्ठ' हं० त० ॥ १६ पत्थावइत्तु मोहं हं० त० विना ॥ १७ अदीणोत्तत्थं
हं० त० ॥ १८ 'णिव्वुइत्तीकरणं पच्च' हं० त० ॥ १९ काले रण्णा जयं हं० त० ॥ २० विआकरिज्ज हं० त० ॥
२१ 'लाभं दुःखं सुखं वा जी' हं० त० विना ॥ २२ नामं अज्झा' हं० त० ॥

[अट्टमो भूमिकम्मऽज्झाओ]

[तत्थ पढमं गज्जबन्धेणं संगहणीपडलं]

णमो अरहंताणं, णमो सव्वसिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं, णमो महापुरिसस्स महतिमहावीरस्स सव्वण्णू-सव्वदरिसिस्स । इमा भूमिकम्मस्स विज्जा-इंदियाली इंदियालि माहिंदे मारुदि 5 स्वाहा, णमो महापुरिसदिण्णाए भगवईए अंगविज्जाए सहस्सवागरणाए खीरिणिविरणउदुंबरिणिए सह सर्वज्ञाय स्वाहा ॐ सर्वज्ञानाधिगमाय स्वाहा ॐ सर्वकामाय स्वाहा सर्वकर्मसिद्धये स्वाहा ।

क्षीरवृक्षच्छयायां अष्टमभक्तिकेन गुणयितव्या क्षीरेण च पारयितव्यम्, सिद्धिरस्तु । भूमिकर्मविद्याया उपचारः-चतुर्थभक्तिकेन कृष्णचतुर्दश्यां ग्रहीतव्या, षष्ठेन साधयितव्या अहतवत्येण कुससत्थरे १ ॥

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आयरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं, णमो आमोसहिपत्ताणं, 10 णमो विण्णोसहिपत्ताणं, णमो सव्वोसहिपत्ताणं, णमो संभिनसोयाणं, णमो खीरस्सवाणं, णमो मधुस्सवाणं, णमो कुट्टुबुद्धीणं, णमो पदबुद्धीणं, णमो अक्खीणमहाणसाणं, णमो रिद्धिपत्ताणं, णमो चउद्दसपुव्वीणं, णमो भगवईय महापुरिसदिन्नाए अंगविज्जाए सिद्धे सिद्धाणुमए सिद्धासेविए सिद्धचारणाणुचिन्ने अमियबले महासारे महाबले अंगदुवारधरे स्वाहा ।

छट्ठगहणी, छट्ठसाधणी, जापो अट्टसयं, सिद्धा भवइ २ ॥

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाए, णमोक्कारयित्ता इमं मंगलं पयोजयिस्सामि, 15 सा मे विज्जा सव्वत्थं पसिञ्जउ, अत्थस्स य धम्मस्स य कामस्स य इसिस्स आदिच्च-चंद-णक्खत्त-गहगण-तारा-गणाण जोगो जोगाणं णंभम्मि य जं सच्चं तं सच्चं इधं मज्झं इध पडिरूवे दिस्सउ, पुढवि-उदधि-सलिल-अग्गि-मारुएसु य सव्वभूएसु देवेसु जं सच्चं तं सच्चं इध मज्झ पडिरूवे दिस्सउ ।

अवेतु माणुसं सोयं दिव्वं सोयं पवत्तउ । अवेउ माणुसं रूवं दिव्वं रूवं पवत्तउ ॥ १ ॥

20 अवेउ माणुसं चक्खुं दिव्वं चक्खू पवत्तउ । अवेउ माणुसे गंधे दिव्वे गंधे पवत्तउ ॥ २ ॥

अवेउ माणुसो फासो दिव्वो फासो पवत्तउ । अवेउ माणुसा कंती दिव्वा कंती पवत्तउ ॥ ३ ॥

अवेउ माणुसा बुद्धी दिव्वा बुद्धी पवत्तउ । अवेउ माणुसं जाणं दिव्वं जाणं पवत्तउ ॥ ४ ॥

एएसु जं सच्चं तं सच्चं इध मज्झ पडिरूवे दिस्सउ त्ति, णमो महतिमहापुरिसदिण्णाए अंगविज्जाए जं सच्चं तं सच्चं इध मज्झ पडिरूवे दिस्सउ, णमो अरहंताणं, णमो सव्वसिद्धाणं, सिञ्जंतु मंता स्वाहा ।

25 एसा विज्जा छट्ठगहणी, अट्टमसाधणी, जापो अट्टसयं ३ ॥

णमो अरहंताणं, णमो सव्वसिद्धाणं, णमो सव्वसाहूणं, णमो भगवतीय महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय, उभयभये णतिभये भयमाभये भवे स्वाहा ।

स्वाहा डंडपडीहारो अंगविज्जाय उदकजत्ताहिं चउहिं सिद्धि । णमो अरहंताणं, णमो सव्वसिद्धाणं, णमो भगवईय महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय भूमिकम्म० ।

30 सच्चं भणंति अरहंता ण मुसा भासंति खत्तिया । सच्चेण अरहंता सिद्धा सच्चपडिहारे उ देवया ॥ १ ॥

अत्थसच्चं कामसच्चं धम्मसच्चयं सच्चं तं इह दिस्सउ त्ति, अंगविज्जाए इमा विज्जा उत्तमा लोकमाता बंभाए ठाणथिया पयावइअंगे, एसा देवस्स सव्वअंगम्मि मे चक्खु ।

१ नमो सिद्धाणं हं० त० ॥ २ कम्मसविज्जा-इंदियाली इंदियालि हं० त० विना ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ४ सिद्धि स्वाहा हं० त० विना ॥ ५ भक्तेन हं० त० ॥ ६ ताणं, णमो अक्खीणमहाणसाणं, णमो पदबुद्धीणं, णमो सिद्धाणं, सि० ॥ ७ पउजइस्सामि हं० त० ॥ ८ त्थ समिओ अत्थस्स हं० त० विना ॥ ९ णभविय जं हं० त० विना ॥ १० माणुसो गंधो दिव्वो गंधो सि० ॥ ११ चाणपिया हं० विना ॥

सव्वलोकम्मि य सच्चं पव्वज्ज इसिसच्चं च जं भवे । एएण सच्चवइणेण इमो अट्टो [प]दिस्सउ ॥ १ ॥

उंतं पवज्जे, भुवं पवज्जे, स्वं पवज्जे, विजयं पवज्जे, सव्वे पव्वज्जे, उंतदुंबरमूलीयं पव्वज्जे, पवविस्सामि तं पवज्जे, मेघडंतीयं पवज्जे, विज्जे स्वरपितरं मातरं पवज्जे, स्वरविज्जं पव्वज्जेति स्वाहा ।

आभासो अभिमंतणं च उदकजत्ताहिं चउहिं सिद्धं ४ ॥

णमो अरहंताणं, णमो सव्वसिद्धाणं, णमो केवलणाणीणं सव्वभावदंसीणं, णमो आधोधिकानं, णमो आभिणिबोधिकाणं, 5 णमो मणपज्जवणाणीणं, णमो सव्वभावपवयणपाराणं बारसंगवीणं अट्टमहानिमित्तायरियाणं सुयणाणीणं, णमो पण्णाणं, णमो विज्जाचारणसिद्धाणं, तवसिद्धाणं चैव अणगारसुविहियाणं णिगंथाणं, णमो महानिमित्तीणं सव्वेसिं, आयरियाणं, णमो भगवओ जसवओ महापुरिसस्स महावीरवद्धमाणस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय भूमीकम्मं णामऽज्झाओ ! तं खलु भो ! तमणुवक्खाइस्सामि । ...तं तु भो ! महापुरिसस्स मणिस्स सयसाहस्स सहस्सदारस्स अपरिमियस्स अपरिमियसुसंगहियस्स पच्चोदारागमसंजुत्तस्स अपरिमियस्स अपरिमियगइविसयस्स भगवओ 10 उवविट्ठविहिविसेसेणं १ पल्लहत्थिगाविहिविसेसेणं २ आमासविहिविसेसेणं ३ अपस्सयविहिविसेसेणं ४ ठियविहिविसेसेणं ५ विपिक्खियविहिविसेसेणं ६ हसितविधिविसेसेणं ७ पुच्छियविहिविसेसेणं ८ वंदियविहिविसेसेणं ९ संलावियविहिविसेसेणं १० आगमविधिविसेसेणं ११ रुदितविधिविसेसेणं १२ [परिदेवितविधिविसेसेणं १३] कंदियविधिविसेसेणं १४ पडिमविधिविसेसेणं १५ अब्भुट्ठिय(अप्पुट्ठिय)विधिविसेसेणं १६ णिगयविधिविसेसेणं १७ पइलाइयविधिविसेसेणं १८ जंभियविधिविसेसेणं १९ चुंबियविधिविसेसेणं २० आलिंगियविधिविसेसेणं २१ समिद्धविहिविसेसेणं २२ सेवियविहिविसेसेणं 15 २३ अत्तभावओ बाहिरओयओ वा अंतरंग-बाहिरओहि वा सह-फरिस-रूव-गंधेहि वा गुणेहि पडिरूवसमुप्पाएहि वा उवलद्धीवीहिसुभा-ऽसुभाणं संपत्ति-विपत्तिसमायोगेण उक्करिसा-ऽवकरिसा उवलद्धवा भवंति ॥

॥ इति खं पुं संगहणीपडलं सम्पत्तं ॥ १ ॥ छ ॥

[बिइअं पज्जबंधेणं संगहणीपडलं]

सव्वनुअरहंतेहिं सव्वदंसीहिं देसियं । अणंतरं जिणेहिं ता णिमित्तण्णाणमुत्तमं ॥ १ ॥

20

तरस्स सव्वण्णुदिट्ठस्स अप्पमेयागमस्स उ । भूमिकम्ममिहऽज्झाओ पइट्ठाणं पवेदिया ॥ २ ॥

चराचराणं भूयाणं, पइट्ठा जगई जधा । तहा णिमित्तभवणस्स भूमीकम्मं णिवेदियं ॥ ३ ॥

पवट्ठियाणि भूमीकं जधा बीयाणि वट्ठए । मूल-खंधविरोधेहिं साल-साह-प्पसाहओ ॥ ४ ॥

पवालप्पविरोधेहिं पत्त-पुप्फ-फलेहिं य । णाणासंठाण-वण्णेहिं रस-गंधविधाणओ ॥ ५ ॥

एव प्पमेयसारं तु णिमित्तं मणिसंगहा । भूमिकम्मपइट्ठाणे वइए बीजमागमे ॥ ६ ॥

25

मणिसण्णियस्स पुरिसस्स मयाऽऽगमवित्थरो । जगं सव्वमिदं वंतं सगुणा दव्वसिया जधा ॥ ७ ॥

एवमेयं जसवओ मणिस्स पुरिसस्स उ । वत्ताए मणिवियारभूमिकम्मे पकित्तिया ॥ ८ ॥

१ उंतं हं ॥ २ काणं, पवज्ज णमो सप्रं । पवज्ज इति पदं सर्वासु प्रतिषु विद्यमानमपि लेखकप्रमादप्रविष्टमाभातीति नाहतं मूले ॥ ३ विहिविहिविसेसेणं सिसं विना ॥ ४ यद्यपीह समिद्धविहिविसेसेणं इत्यत्र समिद्धपदं वर्तते, तथाऽनन्तरवर्त्तिनि द्वितीये पद्यसङ्ग्रहणीपटले “आलिंगियविसेसा २१ य संविद्धविधी २२ तथा ।” [श्लोक १४] इत्यत्र संविद्धपदं दृश्यते, अष्टविंशतितमे पुनः णिपण्णपटले स्थानस्थानेषु “बारसणं णिवण्णाणं” [श्लो० १] “उक्किट्ठियं णिवण्णं च” [श्लो० ३] “परिवेडितं णिवण्णं च” [श्लो० ४] इत्यादिषु णिवण्णपदं आकल्यते, तदत्र समिद्ध-संविद्ध-णिवण्णपदैकार्थसङ्गतिस्तज्ज्ञैर्विचार्या ॥ ५ रउपओ वा हं । ‘बाहिरओयओ’ बाह्ययोगतः इत्यर्थः ॥ ६ ‘खं पुं’ खलु भो ! महापुरिसदिण्णाए अंगविज्जाए भूमीकम्मे इत्यर्थः ॥ ७ वंतं परिदेवितविधिविसेसेणं सगुणा हं तं सं ३ पुं । वंतं परिदेवितवित्थडं विधिविसेसेणं सगुणा सिं ॥

- उपविट्ठविधिविसेसा य १ तथा पल्हत्थियाय य २ । आमासविधी चेव ३ अपस्सयविधी तथा ४ ॥ ९ ॥
 ठियपत्थियविधी चेव ५ विपेक्खियविधी तथा ६ । हसियाणं विधी चेव ७ पुच्छियाणं विधी तथा ८ ॥ १० ॥
 वंदियाणं विधी चेव ९ संलावियविधी तथा १० । आगयाणं विसेसा य ११ रुदिताण विधी तथा १२ ॥ ११ ॥
 परिदेवियविधीओ य १३ कंदियाणं विधी तथा १४ पडियाणं विसेसा य १५ अप्पुट्टियविधी तथा १६ ॥ १२ ॥
 5 णिग्गयाणं विसेसा य १७ पइलाइयविधी तथा १८ । जंभियाणं विसेसा य १९ विसेसा चुंविएसु या २० ॥ १३ ॥
 आलिंगियविसेसा य २१ संविट्ठविधी तथा २२ । सेवियाणं विसेसा य २३ तेवीसं वत्थुसंगहा ॥ १४ ॥
 अप्पणी बाहिरे चेव संजुत्ते लक्खणे तथा । विसए पंचविधे चेव तन्निभौवनिभा तथा ॥ १५ ॥
 उक्करिसाऽपगरिसा चेव तीता-ऽणागय-संपदा । सुभा-ऽसुभाणं भावाणं विपत्ती संपदं सिया ॥ १६ ॥
 भूयो भूमीकम्माणि उ समग्गे सम्मईमयं । मैए पवेदिओऽज्झाओ णिमित्ते संपकित्तिओ ॥ १७ ॥
 10 भूमीकम्मविही एसो संगहेण पकित्तिओ । समुदेसं भरस्सं (रभस्सं) च अतो अट्ठं पवक्खइ ॥ १८ ॥

॥ भूमीकम्मस्स संगहणीपयं ॥ २ ॥ छ ॥

[तइयं भूमीकम्मसत्तसमुदेसपडलं]

- वसुं निमित्तं पवदंति लोके, वसुं निमित्तस्स य अंगमाहु । वसुं च अंगस्स मणिं वदंति महेसिणो जेण वियागरंति ॥ १ ॥
 केवलं अंगविज्जाए मणिओ अंगदौपणा । अंगस्सरविणिव्वत्तो अंगस्स रयणं मणी ॥ २ ॥
 15 मणिओ अंगहिययं णिमित्तहिययं तथा । तइयं लोगहिययं ति तस्स णामं विधीयति ॥ ३ ॥
 ताणि सज्जायम्मि रओ णिच्चमाधारए नरो । अणणमइमं दच्छे तरे वागरणोदधि ॥ ४ ॥
 णाकयन्नुमसिस्सं वाऽणोउत्तं णासहस्सदिं । णाऽणप्पभूयं वाइज्जो भैगवंतं महामणिं ॥ ५ ॥
 भत्तिमंतं विणीयं च सुस्सूसाणिरतिदियं । कयण्णुं मइमं दंतं धिइमंतमणुसूयकं ॥ ६ ॥
 दक्खिणं मिदु सूरं च विज्जागुरुपरं सदा । सिस्समेयगुणुज्जुत्तं विदू अंगं तु वायए ॥ ७ ॥
 20 दंतो गुरुसगासम्मि अधीयंतो ये रूवओ । पारं गच्छे णिमित्तस्स आवज्ज वयणं जेधा ॥ ८ ॥
 अधिज्ज विज्जं पडिपुण्णं अट्ठक्खाणंसि कोविदो । गुरुणा अब्भणुणाओ अणुस्सित्तो अगव्विदो ॥ ९ ॥
 ऐयमासज्ज हि णरो अणंतजिणचक्खुमा । अजिणो जिणसंकासो पच्चक्खं देवतं भवे ॥ १० ॥
 सुभो य असुभो येऽत्थो तईओ णाभिगम्मई । संपया य विपत्ती य दुविहा तस्स मग्गणा ॥ ११ ॥
 अतीतं १ वट्ठमाणं च २ पुरत्थाय अणागयं ३ । तिण्णि अत्थस्स ठाणाणि चउत्थं णाभिगम्मई ॥ १२ ॥
 25 आमासे १ सेविए २ गंधे ३ पडिरूवे ४ सरे ५ तथा । ऐयं अत्थगयं सव्वं समुदीरेति पंचसु ॥ १३ ॥
 अप्पणो १ जो य पुच्छिज्ज २ जस्सत्थाय व पुच्छइ ३ । जा यऽत्थ परिसा भवति ४ पडिरूवे य पंचमे ५ ॥ १४ ॥
 बाहिरे आवि सद्दम्मि लक्खणं समुदीरइ ६ । छ व्वागरणजोणीओ सत्तमी नाभिगम्मइ ॥ १५ ॥
 छसु एयासु जोणीसु अप्पा भवइ कारणं । अणाधारयमाणस्स अप्पमाणं हि लक्खणं ॥ १६ ॥

१ 'भोयणतिभा सप्र० ॥ २ विभत्ति सप्र० ॥ ३ महा पवे' सप्र० ॥ ४ त० विनाऽन्यत्र 'सं च तस्सं च सं ३ पु०
 सि० । 'सं वत सं च हं० ॥ ५ 'रभस्सं' रहस्यमित्यर्थः ॥ ६ हस्तचिह्नमध्यगतः पाठः हं० त० सिसं० वत्तते ॥
 ७ 'दीपिणो हं० विना ॥ ८ 'णित्तत्थो हं० त० विना ॥ ९ धणी हं० त० ॥ १० 'णापुत्तं अणासहस्सदं हं० त० ॥
 ११ भगवति म' हं० त० सि० ॥ १२ 'गुणाजुत्तं हं० त० ॥ १३ अ हं० त० ॥ १४ यथा हं० त० ॥ १५ एसमा' हं०
 त० ॥ १६ अत्थो हं० त० ॥ १७ एवं अत्थं गयं हं० त० ॥ १८ यावि सिद्धम्मि हं० त० विना ॥

आधारए जया णाणी अप्पणी बाहिरम्मि वा । तं लक्खणं तओ गिज्झं जत्थ सँम्मं निवेसए ॥ १७ ॥
 अंगवी जाहे सुयपुव्वि आधारयइ अप्पणि । उदीरणा बाहिरिका सव्वा भवइ अकारणं ॥ १८ ॥
 णिवेसिआय सन्नाय बाहिरे लक्खणम्मि य । अप्पणीओ समुप्पाओ सव्वो भवइ अकारणं ॥ १९ ॥
 उदीरिए बहुविधे जावऽत्थो णोवलब्भइ । अप्पणीयं विदू अत्थं सुणे वा वि णिवेसए ॥ २० ॥
 अप्पणी बाहिरे वा वि जत्थ सण्णं निवेसए । तं लक्खणं तओ गिज्झं दुविण्णेयमलक्खणं ॥ २१ ॥ 5
 उवविट्ठविधिविसेसा य बत्तीसं मणिए मया १ । पत्तहत्थिकायो बावीसं २ आमासट्ठसयं तथा ३ ॥ २२ ॥
 अपस्सया सत्तरस ४ अट्ठावीसं ठियाणि य ५ । दस विप्पेक्खियाणगे ६ हसिर्याणि चउद्दस ७ ॥ २३ ॥
 [पुच्छिताणि चउव्वीसं ८ बंदिताणि य सोलस ९ । संलाविताणि वीसं च १० सोलसेवाऽऽगताणि ११ य ॥ २४ ॥]
 वीसं रुदियाणि मणिए १२ तेरसं च परिदेवणा १३ । अट्ठ विक्कंदियाणगे १४ अट्ठेव पडियाणि य १५ ॥ २५ ॥
 अप्पुट्ठिताणिक्कवीसं १६ एक्कारस य णिगमा १७ । पंचलाइयाणि सत्ताऽऽहु १८ सत्त जंभाइयाणि या १९ ॥ २६ ॥ 10
 चुंबणी सोलसंगम्मि २० चउद्दसाऽऽलिंगियाणि २१ य । बारसाऽऽहु णिपण्णाणि २२ सेविआणि बत्तीसइ २३ ॥ २७ ॥
 इच्चेसा संखेवविही भूमीकम्मस्स कित्तिया । एयं पुणोइ वित्थरओ कित्तइस्सामि भागसो ॥ २८ ॥

॥ भूमीकम्मसत्तसमुद्देशो पडलं तइयं सम्मत्तं ॥ ३ ॥ छ ॥

[चउत्थं अत्तभावपरिक्खापडलं]

अत्तभावपरीणामं पुच्छिओ अंगचित्तओ । आभोगेण परिकखेतू अत्ताणं दसहा विदु ॥ १ ॥ 15
 अत्तभावेण अत्ताणं परिक्खेइ वियक्खणो । दीणयं १ कुद्धयं चेव २ हिट्ठयं च ३ पसण्णयं ४ ॥ २ ॥
 आरोगत्तं ५ आउरत्तं ६ छायत्तं ७ पीणितत्तणं ८ । विक्खित्तं च ९ एकत्तं १० दसधा संपधारए ॥ ३ ॥
 पसन्नत्तं १ मुदितत्तं २ मारुग्गं ३ पीणियत्तणं ४ । एकगमणसत्तं च ५ पंचऽत्तम्मि पसस्सए ॥ ४ ॥
 दीणया १ कुद्धया चेव २ छातत्तं ३ आतुरत्तणं ४ । विक्खित्तमणसत्तं च ५ पंचऽत्ते ण पसस्सए ॥ ५ ॥
 जाणित्ता दीणमप्पाणं सुत्तत्थेण वियागरे । अप्पिएहि य संजोगं विप्पओगं पिएहि अ ॥ ६ ॥ 20
 संपत्तिं च अणिट्ठाणं इट्ठाणं च असंपदं । आसा-पणयभंगं वा पंडिसायणमेव य ॥ ७ ॥
 अप्पमाणमसक्कारं अप्पइट्ठमणिव्वुइ । जं चऽण्णं एरिसं किंचि दीणे अप्पणिमादिसे ॥ ८ ॥
 अप्ससत्थं च जं किंचि सव्वमित्थं वियागरे । जं किंचि पसत्थं सो सव्वं दीणे ण णिदिसे १ ॥ ९ ॥
 जाणे अदीणमत्ताणं सुत्तत्थेण वियागरे । पियसंगमं वा जाणीया वियोगं अप्पिएहि य ॥ १० ॥
 अणिट्ठाणं असंपत्ती इट्ठाणं वा वि संपदं । उस्सयं वा विलासं वा सोभग्गं वा वि णिदिसे ॥ ११ ॥ 25
 मइजुत्तं च जं कज्जं पौइजुत्तं च जं भवे । तथा हाससमाउत्तं बहुमाणस्सियं च जं ॥ १२ ॥

१ आसधए यदा हं० त० विना ॥ २ संतं निवे० हं० त० ॥ ३ अंगविजाए हेऊ य आधारेई अप्पाणो सि० ॥
 ४ जाघे [.....] पुव्वि आधा० हं० त० । जाहे सुय [.....] आधा० सं ३ पु० ॥ ५ यो व० हं० त० विना ॥ ६ विदू
 यण्णं (पण्णं) सुण्णे हं० त० ॥ ७ सुण्णे सप्र० ॥ ८ मणिये मत्ता हं० त० ॥ ९ बत्तीसं हं० त० विना ॥
 १० याणि अ वादस (चोद्दस) हं० त० ॥ ११ [.....] एतत्कोष्ठकान्तर्गतोऽयं श्लोकः कस्मिंश्चिदप्यादर्शे नास्ति, केवलं
 खण्डितपाठपूर्त्यर्थं मयैव निर्मितोऽस्ति ॥ १२ अट्ठेव कंदि० सि० ॥ १३ पवलाउयाणि सत्थाहु सत्त लंभाणिजिआणि अ
 हं० त० ॥ १४ णा चउद्दसंगं सं ३ पु० सि० । णा चोद्दसंगं हं० त० । सर्वासु प्रतिषु मूलगतः पाठो नास्ति ॥
 १५ सीवियाणि य वीसई सं ३ पु० सि० । सेविआणि अ तीसई हं० त० ॥ १६ एवं पुणो वित्थ० हं० त० सि० ॥
 १७ णायं पुच्छिउं हं० त० विना ॥ १८ परिकित्ति विय० हं० त० विना ॥ १९ वक्खि० हं० त० ॥ २०-२१ पसंसए
 हं० त० विना ॥ २२ पिएसि व हं० त० विना ॥ २३ पडिआसणं हं० त० ॥ २४ अप्पयट्ठमणिव्वुइ हं० त० विना ॥
 २५ 'सा' स्यादित्यर्थः ॥ २६ उस्सुयं हं० त० विना ॥ २७ सोभयं वा हं० त० ॥ २८ पंतिजुत्तं हं० त० ॥

पमोदसंसियं वा वि जं वा सम्मोइसंसियं । एवमाइ उ जं सव्वं हिट्ठे अप्पणिमादिसे ॥ १३ ॥

जं तु किंचि पसत्थं वा सव्वमित्थं वियागरे । अप्पसत्थं तु जं किंचि सव्वं हिट्ठे ण णिदिसे २ ॥ १४ ॥

जाणित्ता कुद्धमप्पाणं सुत्तत्थेण वियागरे । आयासं कलहं वा वि संतासं आविलं तहा ॥ १५ ॥

विग्गहं वा विवादं वा विप्पियं वा अणिव्वुइं । जुद्धं णिजुद्धं संगमं संपरागं च दारुणं ॥ १६ ॥

5 भेदणं संपहारं च मिच्छोवालंभमेव वा । जं चऽण्णं एवमाइयं कुद्धे अप्पणिमादिसे ॥ १७ ॥

अप्पसत्थं तु जं किंचि ८ सव्वमित्थं वियागरे । जं किंचि १० पसत्थं वा सव्वं कुद्धे न निदिसे ३ ॥ १८ ॥

पसन्नम्मि य अप्पाणे सुत्तत्थेण वियागरे । संधी संपीइ सम्मोइ मिति णिव्वाणिमेव वा ॥ १९ ॥

रोसक्खयं खमं वा वि पियागमणमेव वा । इट्ठं वा धम्मचरणं विज्जाणं धारणं पि वा ॥ २० ॥

इच्छियोरंभसंपत्ती दुक्खाणं खयमेव य । जं चऽण्णं एरिसं सव्वं पसन्ने अप्पणि व्वदे ॥ २१ ॥

10 सव्वं पसत्थं जं किंचि एवमाइ विआगरे । अप्पसत्थं च जं किंचि पसंते ण उ णिदिसे ४ ॥ २२ ॥

आउरम्मि य अप्पाणे सुत्तत्थेण उ णिदिसे । ६ आउरं वा वि जाणीआ वहोपहतमेव वा ॥ २३ ॥

तहोसहपउत्तं वा किच्छप्पाणं व णिदिसे । ७ दुक्खत्तं वेयणत्तं वा जीविकखयमेव वा ॥ २४ ॥

अण्णं वा विरुत्तं जाणे तहेव पेरितावणं । जं चऽण्णं एरिसं सव्वं आउरे अप्पणि व्वदे ५ ॥ २५ ॥

आरुग्गम्मि य अप्पाणे सुत्तत्थेण वियागरे । आरोगं वा वि जाणीया तधा वा वि प्सम्मणं ॥ २६ ॥

15 आउणो वा पमाणं तु कित्तिमूलं तधेव य । दिग्घकालिकमत्थं वा सुभत्ता दिग्घकालियं ॥ २७ ॥

सिद्धि ओसधजोगस्स संपत्ति ओसधस्स वा । सुभावहं च जं चऽण्णं आरोगे अप्पणि व्वदे ॥ २८ ॥

पसत्थं जत्तियं किंचि सव्वमित्थं वियागरे । अप्पसत्थं च जं किंचि आरोगेण न निदिसे ६ ॥ २९ ॥

जाणित्ता छायमप्पाणं सुत्तत्थेण वियागरे । अवुट्ठिं सस्सणासं वा दुब्भिकेवभयमेव वा ॥ ३० ॥

वित्तिक्खयं खुधा मारं इति वा छायमेव वा । अत्थहाणिमसंपत्तिं कम्मरंभमसंपदं ॥ ३१ ॥

20 अलाभं अण्ण-पाणस्स धण-पाणक्खयं तधा । जं चऽण्णं एरिसं किंचि छाए अप्पणि णिदिसे ॥ ३२ ॥

अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वमित्थं वियागरे । जं किंचि पसत्थं वा सव्वं छाए ण णिदिसे ७ ॥ ३३ ॥

पीणियम्मि य अत्ताणे सुत्तत्थेण वियागरे । सुवुट्ठिं सस्ससंपत्तिं सुभिक्खं धातकं तधा ॥ ३४ ॥

णिरीतीकं च सस्साणं अण्ण-पाणसमागमं । वुट्ठिमिस्सरीकं लाभं सव्वत्थाणं च आगमं ॥ ३५ ॥

पउरण्ण-पाणयं चेव सुप्पियं धण्णमेव वा । सव्वं तु एवमाइयं अप्पणी पीणिए व्वदे ॥ ३६ ॥

25 जं किंचि पसत्थं वा सव्वमित्थं वियागरे । अप्पसत्थं च जं किंचि पीणिणं न निदिसे ८ ॥ ३७ ॥

विकिखत्तचित्ते अप्पाणे सुत्तत्थेण वियागरे । अप्पकम्मपमादे वा अत्थाय गममेव य ॥ ३८ ॥

चिरकालपवासं वा विप्पवासं अणागमं । विसंपत्तिमसंजौगं अप्पइट्ठमणिव्वुइं ॥ ३९ ॥

अरतिं सोगपागं वा अप्पीइमत्तिसं तहा । जं चऽण्णं एरिसं किंचि विकिखत्ते अप्पणि व्वदे ॥ ४० ॥

अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वमित्थं वियागरे । जं किंचि पसत्थं वा विकिखत्तेण ण णिदिसे ९ ॥ ४१ ॥

१ विपीइं वा हं ॥ २ संपहाणं च मो ॥ ३ ८ १० एतच्चिह्नमध्यगतः पाठः हं तं नास्ति ॥ ४ निव्वाणमेव हं तं विना ॥ ५ यारंभसपत्तं हं तं ॥ ६ हस्तचिह्नमध्यगतः पाठः हं तं एव वर्तते ॥ ७ परिणावणं हं तं विना ॥ ८ आरोगं ति य हं तं विना ॥ ९ या विहा वा हं तं । 'विहा' द्विधा इत्यर्थः ॥ १० आयुणो हं ॥ ११ आरोगे न सं ३ पुं ॥ १२ क्खयमेव सं ३ पुं ॥ १३ बुद्धिक्खयं कुधा मारं हं तं ॥ १४ सुबुद्धि सप्रं ॥ १५ बुद्धिमि सप्रं ॥ १६ पीणिते न सं ३ पुं ॥ १७ विकिख हं तं ॥ १८ म्मसमाए वा हं तं ॥ १९ कालं पवा हं तं ॥ २० वीसंपत्ति हं तं ॥

एगग्गम्मि य अप्पाणे सुत्तत्थेण वियागरे । पइलाभं थिया बूया भज्जालाभं नरस्स उ ॥ ४२ ॥
 पुत्तलाभऽत्थलाभं च वत्थलाभं नरस्स वा । सव्वेसामेव इट्ठणं विट्ठि लाभं च णिहिसे ॥ ४३ ॥
 चोलोपणयणं गोदाणं जगयाणं छणुसयं । [प]वसियाऽऽगमणं वा वि भज्जा-पुत्तसमागमं ॥ ४४ ॥
 इट्ठेहि संगमं वा वि सव्वत्थाणं च आगमं । एवमाई उ जं सव्वं एगग्गे अप्पणि वदे ॥ ४५ ॥
 एवं अप्पणि एकग्गे सव्वमिट्ठं सुभं भवे । अप्पसत्थमणिट्ठं वा सव्वं णत्थि ति णिहिसे १० ॥ ४६ ॥ 5
 अत्तभावपरीणामं एवं दसविहं विदू । सम्मं समणुगतूणं तओ बूया सुभा-ऽसुभं ॥ ४७ ॥
 पिम्मा १ पडिणिवेसा वा २ आगमा ३ दुव्विभाविया ४ । अत्थे दुरुवदिट्ठे वा ५ पंचधा णाभिजाणइ ॥ ४८ ॥
 ॥ अत्तभावपरिक्खा णामं पडलं सम्पत्तं ॥ ४ ॥ छ ॥

[पंचमं णेमिच्चमुपधारणापडलं]

छिण्णासे[ऽ]कयदोसे विदू सव्वत्थसाधए । जिइंदिए जुत्तजोगे स णिमित्तं वियागरे ॥ १ ॥ 10
 असाहसे अरभसे अलद्धे अणसूयके । समिक्खकारी कालणू मियवक्के अवत्थिए ॥ २ ॥
 लाभा-ऽलाभे सुहे दुक्खे जीविए मरणे तधा । महप्पाणविसेसी य सहसा ण वदे उ जो ॥ ३ ॥
 पभावणा पवयणस्स आयरियगुणदीवणा । तित्थ-प्पवयणहेऊ वा पबूया जो वियक्खणो ॥ ४ ॥
 विसयाणमग्गिंधी य सुदिट्ठत्तदरिसणो । बूया अमूढो णेमिच्चो चक्कवट्ठि पि पत्थिवं ॥ ५ ॥
 एवं गुणसमायुतो जुत्तो विणएण भासइ । णिमित्तजायमधीत्तता ण विऊसयते कया ॥ ६ ॥ 15
 जं दिसं च विपिक्खिज्ज ततो लक्खणमादिसे । पडिरूवाणि विण्णाय तण्णिभोवणिभाणि या ॥ ७ ॥
 जं च वायमुदीरिज्जा तं सहमवधारये । अणन्तचित्तो धिमिओ तओ भवइ लक्खणं ॥ ८ ॥
 आमास-सद-रूवेहि ततो लक्खणमादिसे । सयाहिजुत्तो णेमिच्चो आदीसंतो ण मुज्झइ ॥ ९ ॥
 अप्पणी बाहिरे चेव सम्मं समुपलक्खिअ । अंतरंगसमुत्थेहि बाधिरंगविधीसु य ॥ १० ॥
 अणागयमइक्कंतं संपयं च वियागरे । अणाइलो णिव्विसंको विसत्थो लक्खणं वदे ॥ ११ ॥ 20
 ॥ नैमित्तमुपधारणापडलं ॥ ५ ॥ छ ॥

[छट्ठं आसणऽज्झाओ पडलं]

ठाणा-ऽठाणैविसेसेणं आसणाभिगहेसु य । उपविट्ठणि बत्तीसं कित्तइस्सं विभागसो ॥ १ ॥
 णेमिच्चियस्साऽऽसणमिह पुच्छकस्स य आसणे । उपविट्ठणि बत्तीसं इक्किक्कम्मि विभावए ॥ २ ॥
 गिहप्पविट्ठे सक्कारं थी पुमं वा वि युजइ । आसणेण य छंदेति वियत्तेण णिवेसह ॥ ३ ॥ 25
 आसणं वा वि पण्णत्तं पडिविक्खिज्ज अप्पणा । अव्वगमणसो णेमिच्चो बत्तीसविधिसंधियं ॥ ४ ॥
 अक्खितरं व १ मज्जे वा २ बहिं वा संपकप्पियं ३ । णीयं ४ सम्मं वा अण्णेणं ५ आसणं णिप्पकप्पियं ६ ॥ ५ ॥
 संथाणओ य ७ सारओ य ८ जहणुत्तम १० मज्झिमं ११ । समग्ग १२ मसमग्गं वा १३ अभिण्णं १४ भिण्णमेव वा १५ ॥ ६ ॥

१ वसित्तागमं हं तं ॥ २ सव्वं सव्वाणगतूणं हं तं विना ॥ ३ विज्जं सिं ॥ ४ जइंदिए जत्तं हं तं विना । 'जइंदिए' यतेन्द्रियः ॥ ५ असहासे हं तं विना ॥ ६ कालयणू हं तं विना ॥ ७ णविएसी हं तं ॥ ८ पभूया हं तं विना ॥ ९ मग्गधी हं तं ॥ १० इट्ठहदरिं सिं ॥ ११ एस पुण समां सं ३ पुं । एसो पुण समां सिं ॥ १२ विदूसतए कयि हं तं विना ॥ १३ जइ संधविपिं हं तं ॥ १४ नेउ लं हं तं विना ॥ १५ आसत्तो ण हं तं ॥ १६ लक्खइ हं तं विना ॥ १७ मुत्थे य बाहिरंगं हं तं विना ॥ १८ णेमिच्चमु हं तं ॥ १९ णविसेसणू हं तं ॥ २० इस्सामि विं हं तं ॥ २१ एकक्कम्मि हं तं विना ॥ २२ जुजइ हं तं ॥ २३ पडिदिक्खिं हं तं ॥ २४ सम्मं हं तं विना ॥

बद्धं १६ तहा अबद्धं वा १७ अदद्धं १८ दद्धमेव य १९ । चलं २० अकंपमाणं वा २१ संधियं वा २२ असंधियं २३ ॥ ७ ॥
 सक्कारणाय पण्णत्तं २४ दीणं वा वि असक्कयं २५ । भूमिमयं २६ कट्टमयं २७ तणं २८ छगण २९ पीढणं ३० ॥ ८ ॥
 सामण्णं वा ३१ परक्कं वा ३२ एवं भवइ आसणं । पडिपेक्खिज्ज नेमिती तव्वसो अंगचितओ ॥ ९ ॥

अब्भितरे आसणम्मि सक्कारेणुवणामिए । मज्झिमे बाहिरे चेव एवं बूया वियक्खणो ॥ १० ॥

- 5 अब्भितरे आसणम्मि वड्ढी अब्भंतरा भवे । मज्झिमे मज्झिमा वड्ढि बाहिरम्मि य बाहिरा ॥ ११ ॥
 अब्भितरे आसणम्मि असक्कारेण छंदिए । मज्झिमे बाहिरे वा वि एवं बूया वियक्खणो ॥ १२ ॥
 अब्भितरे असक्कारे हाणी अब्भंतरा भवे । मज्झिमे मज्झिमा हाणी बाहिरम्मि य बाहिरा ॥ १३ ॥
 पुव्वामुहे आसणम्मि सक्कारेणुवणामिए । वेद्धिमिस्सरियं दव्वं खिप्पमेवऽस्स णिदिसे ॥ १४ ॥
 एतम्मि आसणे चेव असक्कारोवणामिते ।] वेद्धिमिस्सरियं दव्वं खिप्पमेवऽस्स हायति ॥ १५ ॥
 10 दक्खिणाभिमुहे चेव आसणे संपकप्पिए । सयणं आसणं वत्थं कामभोगे य णिदिसे ॥ १६ ॥
 एयम्मि आसणे चेव असक्कारेणुवणामिए । सयणा-ऽऽसण-वत्थाणि काम-भोगा य हायते ॥ १७ ॥
 अवरम्मुहे आसणम्मि सक्कारेणुवणामिते । कुडुंबवड्ढि सोहगं खिप्पमेवऽस्स णिदिसे ॥ १८ ॥
 एयम्मि आसणे चेव असक्कारोवणामिए । कुडुंबहाणि केसं च खिप्पमेवऽस्स णिदिसे ॥ १९ ॥
 उत्तराभिमुखे चेव आसणे उवणामिए । हिरण्ण-रुप्पसंठाणं वड्ढि लाभं च णिदिसे ॥ २० ॥
 15 एयम्मि चेव ठाणम्मि असक्कारोवणामिए । हिरण्ण-रुप्पसंठाणं वड्ढि णासं च णिदिसे ॥ २१ ॥
 तत्थुत्तरादिसाहुतो सक्कारेणुवणामिए । णिव्वुइ अत्थलाभं च णारीणमभिणिदिसे ॥ २२ ॥
 एयम्मि आसणे चेव असक्कारोवणामिए । अणिव्वुइ अत्थहाणि णारीणमभिणिदिसे ॥ २३ ॥
 विदिसाभिग्गहिए य आसणम्मि वियाणिया । विवादं गणसंजुतं पुरिसस्सऽत्थ वियागरे ॥ २४ ॥
 एवं दिसासु विदिसासु बूया दिण्णे उ आसणे । आसणे पडिरूवाणं सेसाणं सुण भासणं ॥ २५ ॥
 20 आसणस्स उ दाणेणं तिरिच्छेणस्स अंगवं । विगहं अंगवी बूया अत्थस्स य असंपयं ॥ २६ ॥
 उच्चासणे पसत्थे वड्ढी मज्झं लाभं समे सुभे । हीणे य बूया परिहाणी उस्सेहे आसणस्स उ ॥ २७ ॥
 संधियम्मि महासारे उत्तमं लाभमादिसे । मज्झिमे मज्झिमं बूया अप्पसारे असंपदा ॥ २८ ॥
 समग्गे अत्थसामग्गी खंडे हाणि पवेदये । भिण्णे भेदं विजाणीया अभिन्ने संगहं वदे ॥ २९ ॥
 बद्धे बद्धं विजाणीया अबद्धे सुभमादिसे । दहे अणिव्वुइ बूया अदहे णिव्वुइ वदे ॥ ३० ॥
 25 अप्पइट्ठणमत्थस्स चले बूया उ आसणे । अकंपे य पइट्ठणमप्पणो आसणे वदे ॥ ३१ ॥
 संधिए भोगसंपत्ती असंपत्ती असंधिए । सक्कारदिण्णे वड्ढी य असक्कारे पराजए ॥ ३२ ॥
 भूमी-धातुमए वड्ढी उक्कट्टं संपवेदये । मज्झिमे मज्झिमं बूया जहण्णे हाणिमादिसे ॥ ३३ ॥
 [तथा] कट्टमए बूया सारओ पवियक्खणो । तणे य गोमये चेव असारं संपवेदये ॥ ३४ ॥
 उदगतण-पत्तमए फल-पुप्फमए तहा । पसत्थं आसणे बूया हाणी सुक्खमलाणसु ॥ ३५ ॥
 30 साधारणे आसणम्मि अत्थं बूया सविगहं । असामण्णे असामण्णं अत्थं बूया उ आसणे ॥ ३६ ॥

१ संधितं वा असंधितं हं० त० । संघयं वा असंघयं मो० ॥ २ परिपे० हं० त० ॥ ३ रेण पणा० हं० त० ॥
 ४ हस्तचिह्नान्तर्गतः श्लोकसन्दर्भः हं० त० एव वर्तते ॥ ५ चतुस्त्रकोष्ठकान्तर्गते उत्तरार्ध-पूर्वार्द्धे प्रतिषु गलिते इति सम्बन्धानुसारेण
 सन्धिते ॥ ६ क्कारेव० सि० ॥ ७ हस्तचिह्नान्तर्गते उत्तरार्ध-पूर्वार्द्धे हं० त० एव ॥ ८ ॥ ९ एतच्चिह्नमध्यवर्ति पद्यं
 हं० त० नास्ति ॥ १ भायणं हं० त० ॥ १० स्सऽत्थ वा० हं० त० ॥ ११ अंगयं हं० त० ॥ १२ अन्नविन्नु या
 हं० त० विना ॥ १३ इत आरभ्य त्रयस्त्रिंशत्पद्यपूर्वार्द्धं यावद् ॥ १४ ॥ १५ एतच्चिह्नमध्यगतः पद्यसंदर्भः हं० त० नास्ति ॥
 १४ सि० विनाऽन्यत्र-संधिए सं ३ पु० ॥ १५ सि० विनाऽन्यत्र-असंधिए सं ३ पु० ॥ १६ य सामण्णं हं० त० विना ॥

उक्कस्स मज्झिमे चेव हीणे य पविभागसो । अंतो मज्झे य बाहिं च वद्धी हाणि च थाणतो ॥ ३७ ॥
 एवं तु आसणे वद्धी अप्पणो उवलक्खए । पुच्छितस्स य जाणिज्जो आसणाण विभत्तिओ ॥ ३८ ॥
 पडिविक्खिउं व नेमिती अप्पणो आसणे विही । उववित्तो पडिपिक्खिज्जा पुच्छगस्स य आसणं ॥ ३९ ॥
 बत्तीसतिविहं तं पि उवविट्ठविधिकोविदो । इमाहिं पडिपिक्खाहिं अवेक्खइ समाहिओ ॥ ४० ॥
 पुरिमं १ पच्छिमं चेव २ वामओ ३ दक्खिणेण या ४ । पुव्वदक्खिणभागे य ५ दक्खिणेण य पच्छिमे ६ ॥ ४१ ॥ 5
 पच्छिमे वामभागम्मि ७ वामभागे पुरत्थिमे ८ । अट्ट आसणस्स हु दिसा णवमी णाऽभिगम्मति ॥ ४२ ॥
 अइदूरे अविक्खित्तं १ अच्चासणं च पीलियं २ । णाइदूरे ण वाऽऽसणे ३ तिविहं भवइ आसणं ॥ ४३ ॥
 णौयतरं वा अंगविणो १ सैमं वा भवताऽऽसणं २ । उच्चयरं वा भवइ ३ चउत्थं णाऽभिगम्मइ ॥ ४४ ॥
 जधण्णतरयं वा वि १ तुल्लरूवं च आसणं २ । विसिट्ठतरयं वा वि ३ रूवेणऽग्घेण वा पुणो ॥ ४५ ॥
 सामण्णं वा १ परक्कं वा २ सैगं वा ३ भवताऽऽसणं । तिरिच्छीणं भवे यावि १ अभिमुहं वा २ परम्मुहं ३ ॥ ४६ ॥ 10
 पोराणयं वा भवइ १ णवं वा भवताऽऽसणं २ । समग्घं वा १ महग्घं वा २ तुल्लग्घं वा वि ३ आसणं ॥ ४७ ॥
 दुट्ठियं १ सुट्ठियं वा वि २ ठाणा १ ऽठाणा व २ साहियं ।
 एकट्ठाणं १ चलियं वा २ दुब्बलं १ बलियं तहा २ ॥ ४८ ॥
 पल्लंको १ फलकं २ कट्ठं ३ पीढिका ४ ऽऽसंदके तधा ५ ।
 फलकी ६ भिस्सी ७ चिंफलको ८ मंचको ९ ऽथ मसूरको १० ॥ ४९ ॥ 15
 भद्दासणं ११ पीढगं वा १२ कट्ठखोडो १३ नैहट्टिका १४ ।
 उप्पलो १५ लोहसंघातो १६ तंतो य १७ तह अट्ठिकं १८ ॥ ५० ॥
 भूमीमयं १९ तणमयं २० तधा छगणपीढगं २१ ।
 पुष्पाणि २२ फल २३ बीयाणि २४ तणं २५ साहा २६ मही तधा २७ ॥ ५१ ॥
 एवमादीणि जाणीया आसणाणि वियक्खणो । समासओ य तिविहा आसणाणं विधी भवे ॥ ५२ ॥ 20
 धातुजोणीसमुत्थाणा १ बिइया पाणजोणिया २ । आसणाणं विही चेव तइया मूलजोणिया ३ ॥ ५३ ॥
 समगमसमगं वा फुडियं अप्फुडियं तधा । अजज्जरं जज्जरं च अइदं दइमेव य ॥ ५४ ॥
 दिसाहिदेसओ चेव उच्च-णीयविधीहि य । संथाणओ सारओ य गुणा-ऽगुणविधीहि य ॥ ५५ ॥
 आसणाणं विधिं चेव जोणीहिं पडिपिक्खिया । परक्कं सगं सामण्णं विजाणे अंगचित्तओ ॥ ५६ ॥
 आसणाभिगहविही इति वुत्ता जहा तहा । विभत्तिफलओ चेव कित्तइस्सं विभागसो ॥ ५७ ॥ 25
 पुरिमं १ दक्खिणं चेव २ तधा पुरिमदक्खिणं ३ । तिण्णाऽऽसणाणंगगए उत्तमाणि पसस्सए ॥ ५८ ॥
 आसणं वामभागं जं जं वा वामपुरत्थिमं । एयाणि मज्झिमत्थम्मि थीलाभे य पसस्सए ॥ ५९ ॥
 आसणाभिगहा एए विण्णेया पुरिसस्स वि । थीसंसिएसु अत्थेसु निप्फत्ती अनुमज्झिमा ॥ ६० ॥
 दक्खिणं पच्छओ चेव पच्छिमं वामतो तहा । एयाणि ण पिसंसंति समजुंजं च वामओ ॥ ६१ ॥
 पुरत्थिमं सैमक्खं जं तं वरं भवउत्तमं । अप्पसत्थं च परमं सैमुज्जो पच्छिमेण जं ॥ ६२ ॥ 30
 पुरत्थिमे आसणाम्मि अत्थं बूया अणागयं । उभेसु यावि पस्सेसु वत्तमाणं वियागरे ॥ ६३ ॥
 अतीतमत्थं जाणिज्जा पच्छिमेणाऽऽसणे थिते । अणावल्लोइयते यावि पच्छिमेण य पुच्छए ॥ ६४ ॥

१ च यामओ हं० त० विना ॥ २ 'विट्ठ विधि' सप्र० ॥ ३ णीअयरं हं० त० ॥ ४ सम्मं हं० त० विना ॥ ५ समं
 वा हं० त० विना ॥ ६ तिरियत्थाणं हं० त० विना ॥ ७ ठाणाठाणं व हं० त० ॥ ८ चिंफरको हं० त० ॥ ९ तहिट्टिका हं०
 त० ॥ १० दंतो हं० त० ॥ ११ अददं ददमे' हं० त० विना ॥ १२ 'चिंधओ हं० त० ॥ १३ प्यसम्मंति समजुंजणा बीमओ
 हं० त० ॥ १४ सपुष्कं जं हं० त० विना ॥ १५ सपुष्कं पच्छि' हं० त० विना ॥ १६ 'सणोत्थिए हं० त० ॥

- अइदूरे पमुहओ जया भवइ आसणं । अणागयं तं जाणिज्जा अत्थं परमदुल्लभं ॥ ६५ ॥
 णाइदूरे पमुहओ जदा भवति आसणं । णाइसिग्घं ण य चिरा अत्थं बूया अणागयं ॥ ६६ ॥
 अच्चासनं पमुहओ जदा भवति आसणं । उवत्थितं तओ बूया अत्थं खिप्पं पुरेखडं ॥ ६७ ॥
 आसणं दक्खिणे भागे पुरिसस्साऽऽसणं भवे । अब्भन्तरं कुडुंबत्थं वत्तमाणं वियागरे ॥ ६८ ॥
 5 आसणं दक्खिणे भागे पमदायाऽऽसणं भवे । अत्थं पैइमिह्णि णिययं वत्तमाणं वियागरे ॥ ६९ ॥
 दक्खिणं णाइदूरे य पमदायाऽऽसणं भवे । पइमित्तंतरेणऽत्थं वत्तमाणं वियागरे ॥ ७० ॥
 दक्खिणं जं अपक्खित्तं पमदायाऽऽसणं भवे । अत्थं जारम्मि णिययं वत्तमाणं वियागरे ॥ ७१ ॥
 आसनं वामभागे उ पुरिसस्साऽऽसणं भवे । अत्थं भज्जाय णिययं वत्तमाणं वियागरे ॥ ७२ ॥
 आसणं अत्तमाणं तु वामतो पुरिसस्स य । मित्तभज्जंतरेणऽत्थं वत्तमाणं वियागरे ॥ ७३ ॥
 10 वामओ जं अवक्खित्तं पुरिसस्साऽऽसणं भवे । अत्थं जारीय णिययं वत्तमाणं वियागरे ॥ ७४ ॥
 वामओ जं अपक्खित्तं पमदायाऽऽसणं भवे । पतिजारिणीयत्तं णिदिसे तं वियक्खणो ॥ ७५ ॥
 आसणं पच्छिमे भागे उपसन्नत्थियं भवे । अचिराइवत्तं अत्थं णिदिसे अत्थचित्ता ॥ ७६ ॥
 पच्छिमे णाइदूरेण भवेया आसणत्थितं । चिराइवत्तं तं अत्थं बूया परमदुल्लभं ॥ ७७ ॥
 पुरत्थिमे व ओगट्ठे तधा पुरिमदक्खिणे । अत्थं अणागयं बूया आसणाभिग्गहेसु य ॥ ७८ ॥
 15 पुक्कुत्ते व ओकट्ठे अत्थं बूया अणागयं । आसणाभिग्गहे ठाणं सव्वत्थेसऽत्थसाधणं ॥ ७९ ॥
 दक्खिणे आसणत्थाणे उक्किट्ठे थाविए सुहं । वामे वा आसणत्थाणे मज्झिमत्थो पसस्सइ ॥ ८० ॥
 पच्छिमे दक्खिणे अत्थो अतिवत्तो सुभो भवे । मज्झिमो पच्छिमो अत्थो हीणो सौ पच्छिमुत्ते ॥ ८१ ॥
 तंधंतरदिस्सा सव्वा वियाणैय विभागओ । उक्किट्ठ मज्झिमं हीणं पडिरूवेण णिदिसे ॥ ८२ ॥
 उच्चतरकं महतरकं परगघतरकं तधा । पुच्छंतस्साऽऽसणं भवइ अत्थहाणि पवेदये ॥ ८३ ॥
 20 सैमं वा तुल्लरूवं वा तुल्लघं वा वि आसणं । पुच्छंतस्साऽऽसणं भवति ण जओ ण पराजओ ॥ ८४ ॥
 उच्चयरकं महतरकं परगघतरकं तधा । अंगविस्साऽऽसणं भवइ अत्थसिद्धी पवेदए ॥ ८५ ॥
 पोराणेण य पोराणं अत्थं बूया विचितियं । सौ णवे णवकं बूया आसणेणंगचितओ ॥ ८६ ॥
 फलमप्पं परिजुण्णे सुभं वा यदि वाऽसुभं । नवे महप्फलं हवइ आसणमिह महप्फलं ॥ ८७ ॥
 पागयं पागएणऽत्थं आसणेण पवेदए । परगघमिह महगघमिह जुत्तगघमिह य मज्झिमं ॥ ८८ ॥
 25 णिव्वत्तियागए अप्पा युत्तगघमिह य मज्झिमा । परगघमिह महासारा णिव्वत्ती भवताऽऽसणे ॥ ८९ ॥
 सामण्णेण य सामण्णं सगेण सगमादिसे । अण्णायकं पैरक्केण आसणेण पवेदये ॥ ९० ॥
 आसणमिह तिरच्छीणे विवादं तत्थ णिदिसे । परम्मुहे णिराकारं अणुलोमं अभिमुहे ॥ ९१ ॥
 उवसक्किए आसणमिह महाअत्थो विधीयते । अवसक्किए आसणमिह अत्थहाणी पवेदए ॥ ९२ ॥

१ अणागइं हं० त० विना ॥ २ अइदूरे हं० त० विना ॥ ३ खिप्पे पुरेकडं हं० त० विना ॥ ४ पयम्मि णिं हं० त० विना ॥ ५ अत्तमातं तु हं० त० ॥ ६ य हं० त० विना ॥ ७ वउक्कुट्ठे हं० त० विना ॥ ८ गगहे थीणं स हं० त० ॥ ९ अक्कुट्ठे घातिए सुहं हं० त० विना ॥ १० अतिवुत्तो हं० त० विना ॥ ११ 'सा' स्यादित्यर्थः ॥ १२ तत्थुत्तरं हं० त० ॥ १३ 'णे पइभा' हं० त० ॥ १४ 'सणं तत्ती तं अत्थ' हं० त० ॥ १५ सम्मं हं० त० विना ॥ १६ यासणं हं० त० विना ॥ १७ सारं णवेण णवकं हं० त० ॥ १८ जइ हं० त० ॥ १९ 'णम्मि' हं० त० ॥ २० परत्थेण हं० त० ॥

उवसक्किए मज्झिमहि मज्झिमत्थो विधीयते । अवसक्किअमहि तम्मेय मज्झिमत्थोऽस्स हायइ ॥ ९३ ॥
 उवसक्किए पच्चवरे अत्थो पच्चवरो भवे । अवसक्किअमहि तम्हेव सो अत्थो परिहायइ ॥ ९४ ॥
 दूरे अवसक्किए अत्थो आसणे उत्तमे महा । अवसक्किए उ दूराओ उत्तमत्थोऽस्स हायइ ॥ ९५ ॥
 आसणमहि अकट्टमहि चिरा अत्थो पुरत्थिमे । तम्हेव उवकट्टमहि खिप्पमत्थं पवेदए ॥ ९६ ॥
 पक्खासण्णे अकट्टमहि संपतत्थोऽस हायइ । तम्हेव उवकट्टमहि वत्तमाणो विधीयते ॥ ९७ ॥ 5
 पच्छिमेणुवकट्टमहि अतिवुत्तो चिरा भवे । उवकट्टमहि तम्हेव ण चिरा अत्थो अइच्छिओ ॥ ९८ ॥
 उवसक्किअमहि दुँखुत्तो इट्ठो अत्थो विधीयते । अवसक्किए व दुँखुत्तो सो चेव परिहायति ॥ ९९ ॥
 उवसक्किएसु बहुसो वद्धी [य] आसणे महा । अवसक्किएसु बहुसो अत्थहाणी महा भवे ॥ १०० ॥
 दुब्बले दुब्बलं अत्थं ददेण दढमादिसे । दुत्थिणं चलं जाणं सुत्थिणं य थावरं ॥ १०१ ॥
 तथा—उवसक्किए आसणमहि इट्ठे इट्ठं वियाणिया । अवसक्किए आसणमहि विप्पओगो पिण्ण उ ॥ १०२ ॥ 10
 उवसक्किए अणिट्टमहि इट्ठाणं तु असंपदा । अवसक्किए उ तम्हेव अणिट्ठेणं असंपदा ॥ १०३ ॥
 दक्खिणापक्कमं धनं पुरिसस्साऽऽसणं भवे । अवसक्किए उ वामेणं अधन्नं भवयाऽऽसणं ॥ १०४ ॥
 विवरीयं तु नारीय आसणावक्कमं वदे । तिण्णि ठाणाणि संकन्त ण कम्हियि पसस्सते ॥ १०५ ॥
 पीढिकाऽऽसंदको चेव पल्लंको डिप्फरो [तथा] । भद्दासणं जुत्तमेसु अचलं जं च आसणं ॥ १०६ ॥
 समागमं घरावासं ठाणमिस्सरियं तहा । पँइट्ठं निव्वुइं वड्ढिं सव्वमेएहिं णिदिसे ॥ १०७ ॥ 15
 पीढकं फलकी खट्ठा मज्झिमेसु पवेदए । मज्झिमेसु य एएसु मज्झिमं फलमादिसे ॥ १०८ ॥
 बद्धेण बद्धं जाणिज्जो मिथो भेदं च जज्जरे । विणिवायं च भग्गम्मि खंडे हाणी पवेदए ॥ १०९ ॥
 फुडिए भेदं विजाणीया दट्ठे बूया अणिव्वुइं । जुत्ते विगयसंठाणे जाणीया अत्थवापदं ॥ ११० ॥
 णीलासणं तणं णीलं पुप्फाणि य फलाणि य । बीयाणि य उदग्गाणि आसणेसु पसस्सए ॥ १११ ॥
 हिरण्णं वा सुवण्णं वा मणि-मुत्त-र[य]यं तहा । अकिलिट्ठो तहा छाओ आसणत्थो पँसस्सई ॥ ११२ ॥ 20
 मसूको अत्थरको पवेणी तह कंबलो । सुभा वा अचला भूमी आसणे अत्थसाधिया ॥ ११३ ॥
 आसणेसु तु एएसु पसत्थं अंगवी बुवी । सव्वत्थ-साधणं इट्ठं पसत्थं णर-णारिणं ॥ ११४ ॥
 सुहस्सहा तणं कट्ठं पासाणो इट्ठ-(ट्ठ-)-कट्ठिगं । कट्ठ-च्छगणपीढं वा खेडुखंडं समंथणी ॥ ११५ ॥
 बद्धं धिण्णं च दट्ठं च जज्जरं परिखंडियं । दुब्बलं परिजुण्णं च विखंडं वा वि संठियं ॥ ११६ ॥
 मरणं बंधणं रोगो अप्पइट्ठमणिव्वुइं । विवादं विप्पयोगं च हाणी एएसु णिदिसे ॥ ११७ ॥ 25
 अप्पं बंधं अवक्खित्ते रोगं चेव अणिव्वुइं । कलहं विप्पयोगं च हाणि चेव वियागरे ॥ ११८ ॥
 सुट्ठियमहि अभिण्णम्मि समग्गम्मि अजज्जरे । सुसिलिट्ठे सुदढे व सारवंते वऽवत्थिए ॥ ११९ ॥
 संठियम्मि समे वा वि आसणे उजुकम्मि य । आच्छण्णे य उदग्गे य पँहट्ठे अणहे तहा ॥ १२० ॥
 अप्पणागे असाण्णे णेवणेमिप्पिपीलिए । पसत्थदिसिणिक्खित्ते आसणे सुविकंपिए ॥ १२१ ॥
 णेमिप्पिक्कस्साऽऽसणाओ ण उक्किट्ठे गुणेहि उ । न य हीणे अंगविदो आसणेण पकंपिए ॥ १२२ ॥ 30
 एवंविहे आसणे उ उवविट्ठो जइ पुच्छई । अत्थे विसिट्ठे पुच्छिज्ज विसिट्ठं ति वियागरे ॥ १२३ ॥
 अप्पसत्थं य पुच्छिज्ज उवविट्ठो एरिसम्मि जो । अणिट्ठसंपया णत्थि पसत्थे चेव णिदिसे ॥ १२४ ॥

१ तम्हे [व] मं हं० त० ॥ २ व सासत्थो हं० त० ॥ ३ क्किरे अं हं० त० ॥ ४ क्किरे तु हं० त० ॥ ५ अहा
 हं० त० ॥ ६-७ दुक्खत्तो हं० त० विना ॥ ८ नारीणं आसणोवक्कमो हं० त० ॥ ९ कुत्तएसुं हं० त० ॥ १० परिट्ठिं हं०
 त० ॥ ११ फलकं हं० त० विना ॥ १२ जण्णे विगयसंवाओ जाणीया हं० त० ॥ १३ पसंसइ हं० त० ॥ १४ अत्थरणो
 हं० त० विना ॥ १५ अंगवी जयं हं० त० विना ॥ १६ अप्पं विट्ठे अवक्खित्ते रेकं चेव हं० त० ॥ १७ आकण्णे हं० त० ॥
 १८ पयट्ठे य णवे तहा सं ३ पु० ॥ १९ णवे णे सि० ॥ २० उक्कट्ठे सं ३ पु० । उक्कट्ठे सि० ॥

पसत्थेसु य सव्वेसु आसणेसु वियक्खणो । तज्जायपडिरूवेणं गुणाणं सुभमादिसे ॥ १२५ ॥

अप्पसत्थेसु सव्वेसु आसणेसु तु अंगवी । तज्जायपडिरूवेणं दोसाणं असुभं वदे ॥ १२६ ॥

॥ भगवतीय महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय आसणज्झाओ सम्मत्तो ॥ ६ ॥ छ ॥

[सत्तमं पल्हत्थियापडलं]

- 5 इति वुत्ताणि सव्वाणि आसणाणि जधा तथा । पल्हत्थिकाओ बावीसं कित्तइस्सं जधा तथा ॥ १ ॥
बाहू १ वत्थं च २ वामत्तो (वागतो) ३ सुत्तं ४ रज्जू य पंचमं ५ । चम्मपट्टो ६ वक्कपट्टो ७ सत्त वुत्ता परिगहा ॥ २ ॥
कप्पासियं १ आविकं च २ वक्कयं च ३ वियाणिया । तिविहो वत्थेण संजोगो वित्थारो छव्विहो भवे ॥ ३ ॥
उक्कस्स १ मज्झिम २ जहण्णो ३ सारओ तिविहो भवे । णवो १ जुण्णो य २ विण्णेओ दुब्बलो ३ बलिओ तथा ४ ॥ ४ ॥
किलिट्ठो ५ अकिलिट्ठो य ६ एवं वत्थपरिगहे । [.....] णेओ सुत्तपरिगहो ॥ ५ ॥
- 10 उण्णा १ सुत्तामओ चेव २ तथा चेलिकसुत्तीजा ३ । वक्कजा ४ बोंडजा चेव ५ रज्जू चम्ममयी तथा ६ ॥ ६ ॥
चउप्पयचम्ममओ १ परिसप्पचम्ममओ पि वा २ । दुविहो पल्हत्थिकापट्टो चम्मिओ परिकित्तिओ ॥ ७ ॥
मूलया खंधया चेव दुविहा वाकपट्टिका । परिगहेसु एसु मज्झे पल्हत्थिका विदू ॥ ८ ॥
अण्णायगं १ अप्पणोकं २ तथा साधारणामवि ३ । विज्जा पल्हत्थियापट्टं तिविहं एवं विभागसो ॥ ९ ॥
एयं परिगहविहिं बुज्जे पल्हत्थियासु जो । पल्हत्थिकाओ बावीसं तासिं विज्जा इमं विधिं ॥ १० ॥
- 15 पल्हत्थिया समग्गा य अद्धपल्हत्थिया तथा । दक्खिणा चेव वामा य दुविहा य पवेदिया ॥ ११ ॥
सुट्ठिया दुट्ठिया चेव दद्धा अबलिआ भवे । उक्कस्सा मज्झिमा चेव जधण्णा चेव सारओ ॥ १२ ॥
किण्हा पीला य लोहितिआ हालिद्धा सुक्किला तथा । अकिलिट्ठा किलिट्ठा य णवा जुण्णा य कित्तिया ॥ १३ ॥
चित्ता ये बिविहा णेया खईआ अखई तथा । पुरिमाऽवाइमा चेव वण्णसंजोगओ तथा ॥ १४ ॥
चित्ता चउव्विहा एसा वित्थरेण विभासिया । अट्टारसमी एसा णेया पल्हत्थिया विहिं ॥ १५ ॥
- 20 चलिया १९ अचलिया चेव २० मुक्का २१ तध पलोलिया २२ । पल्हत्थिकाओ बावीसं ईच्चेया परिकित्तिया ॥ १६ ॥
दुविहा अचलिआ णेया दुविहा य पलोलिया । छिण्णा चेव अछिण्णा य जुण्णा य दुविहा भवे ॥ १७ ॥
एवं पल्हत्थिया एया बावीसं परिकित्तिया । जहाणुप्पव्वि चेतासिं बूया उ गुणवित्थरं ॥ १८ ॥
साट्टकं बाहुपट्टो य चम्मओ सुत्तमेव या । पल्हत्थिकासु चउरो पसत्था उ परिगहे ॥ १९ ॥
अकिलिट्ठा णवा चेव परधा य परिगहा । पसत्था उत्तमेसेते अप्पसत्थेसु गरहिया ॥ २० ॥
- 25 सामण्णम्मि य सामण्णं सकमत्थं सकेण य । अत्ताभकं परक्केणं अजोगे णाभिणिहिसे ॥ २१ ॥
पल्हत्थिकाय गहितेसु जाणूसु उभयेसु य । अत्थं ठियंतियं बूया इत्थीयं पुरिसस्स य ॥ २२ ॥
सध्वपल्हत्थिका चेव इट्ठं संयोगसंपदं । अचलाय सुट्ठियायं च सव्वमेवाभिणिहिसे ॥ २३ ॥
अद्धपल्हत्थिका वामा थीणं अत्थो पसस्सए । संजोगत्थे असत्थम्मि अवसेसे ण प्सस्सए ॥ २४ ॥
अद्धपल्हत्थिका वामा आउत्ता जस्स तू भवे । भज्जं ण्हुसं धूयरं [च] अंतरा ण प्सस्सए ॥ २५ ॥

१ अस्मिन् पल्हत्थियापटलके हं० त० प्रतौ सर्वत्र पल्हत्थियास्थाने पल्हत्थिया पाठ एव भूम्ना दृश्यते ॥ २ वामंतो हं० त० विना ॥ ३ चम्मपट्टो चक्कपट्टो अग्न वुत्ता हं० त० ॥ ४ आविकं च हं० त० विना ॥ ५ वत्थुपरिगहो हं० त० विना ॥ ६ सुत्थपं हं० त० ॥ ७ सुत्तोमओ सं ३ पु० । सुत्तोमए सि० ॥ ८ सुत्तीका हं० त० ॥ ९ जा । जा त चम्मसमुब्भवा वक्कजा सि० ॥ १० चम्मओ हं० त० विना ॥ ११ पबद्धो च हं० त० विना ॥ १२ खंखया सं ३ पु० । कंकया सि० ॥ १३ लोहइया हं० त० विना ॥ १४ य तिविहा हं० त० ॥ १५ सुक्कालेह पलो हं० त० विना ॥ १६ अच्चित्ता परि हं० त० ॥ १७ चेवाऽऽसिं हं० त० विना ॥ १८ साडको त० । सादुको हं० ॥ १९ परिथाओ हं० त० ॥ २० लिट्ठिया ण वा हं० त० विना ॥ २१ अण्णातकं परक्केणं अजोगे हं० त० ॥ २२ अत्थं बिइअं तं बूया हं० त० ॥ २३ त्थे य सव्वम्मि हं० त० विना ॥ २४ अवुत्ता हं० त० विना ॥

अट्टपल्लत्थिका जा य भवे पस्सम्मि दक्खिणे । पुरिस्सस्सऽत्थेसु सव्वेसु सव्वे सुद्धाण इत्थिसु ॥ २६ ॥
 अट्टपल्लत्थिका जस्स आयुत्ता दक्खिणा भवे । पुत्तं पेसुं पई दारं अंतरेण प्सस्सए ॥ २७ ॥
 विप्पमुक्कासु एयासु मरणं विप्पजोजणं । मोक्खं च विप्पयोगं च रोगं सोगं च णिद्दिसे ॥ २८ ॥
 पल्लत्थिकायं वामायं थीय अत्थो पस्ससइ । दक्खिणासु य पुरिस्सस्स भुक्कं मुक्काय णिद्दिसे ॥ २९ ॥
 पइट्ठियायं तु बूया सव्वं अत्थं पइट्ठियं । अप्पइट्ठणमत्थस्स अट्ठिआसु वियागरे ॥ ३० ॥ 5
 अट्टपल्लत्थिका जस्स दक्खिणा सुट्ठिया भवे । तं चेव सेवए अत्थं अत्थसिद्धिं तु णिद्दिसे ॥ ३१ ॥
 वामाय य फलं वा वि सव्वपल्लत्थिकाय या । तस्सत्थस्स पइट्ठणं सुट्ठियासु वियागरे ॥ ३२ ॥
 सव्वपल्लत्थियं जं च अट्टपल्लत्थियं च [जं] । अट्ठियासंठियं अत्थं जधुत्तं संपवेदए ॥ ३३ ॥
 पल्लत्थिकासु अचलासु अचलं अत्थमादिसे । सुभं सुभासु सव्वासु असुभं असुभासु य ॥ ३४ ॥
 समागमं घरावासं बंध-वैत्थुपरिग्गहं । अवत्थियायं अचलायं बूया पल्लत्थिकाय उ ॥ ३५ ॥ 10
 अणवत्थियासु चलियासु सव्वपल्लत्थिकासु य । गिहवास-खेत-वत्थूहिं विप्पओगं सुहीसु य ॥ ३६ ॥
 पागया पागया जं च मज्झिमा मज्झिमाउ य । अत्थस्स संपया भवइ महासारा य उत्तमा ॥ ३७ ॥
 पल्लत्थिकाणुसारेहिं अप्पसंठाणसारओ । अत्थजाएण कप्पेत्ता तिविहं फलमादिसे ॥ ३८ ॥
 उक्किट्ठ मज्झिमं चेव बूया पेच्चवरं तथा । पसत्थासु फलं इट्ठमप्पसत्थासु गरहियं ॥ ३९ ॥
 खित्त-वत्थुगए बूया केण्ह-नीले परिग्गहे । पसुलाभं पेस्सलाभं उभयं तत्थ णिद्दिसे ॥ ४० ॥ 15
 पीय-लोहियए बूया पल्लत्थियपरिग्गहे । लाभं सुवण्ण-रय्याण मणि-मुत्तस्स वाऽऽदिसे ॥ ४१ ॥
 सुक्के पल्लत्थिकापट्टे अकिलिट्ठे सुभोदये । संयोगे अत्थधम्मो य बूया संपदमुत्तमं ॥ ४२ ॥
 पल्लत्थिकासु सव्वासु अकिलिट्ठासु वण्णओ । जेहुत्तासंकिलिट्ठस्स बूया अत्थस्स संपयं ॥ ४३ ॥
 पल्लत्थिकासु सव्वासु संकिलिट्ठासु वण्णओ । जधुत्ताणं किंलिट्ठाणं अत्थाणं फलमादिसे ॥ ४४ ॥
 पोराणके परिक्खेवे अत्थो पोराणको भवे । सुभम्मि य सुभो णेओ असुभम्मि असुभो भवे ॥ ४५ ॥ 20
 णवे पल्लत्थिकापट्टे णवं अत्थं पवेदये । सुभम्मि य सुभं अत्थं असुभम्मि असुभं तथा ॥ ४६ ॥
 अणवे पल्लत्थिकापट्टे असुभे पोराणकम्मि य । दुब्बले जिण्ण दट्ठे वा अणिट्ठं फलमादिसे ॥ ४७ ॥
 अकिलिट्ठे अहए चेव णिद्दिसे उत्तमं फलं । सावज्ज दुब्बले छिण्णे अहए असुभं फलं ॥ ४८ ॥
 एवं वियाण पोराणं गुण-दोससमण्णिणए । सुभा-ऽसुभं फलं णाणी पट्टे पल्लत्थिकाय उ ॥ ४९ ॥
 चित्ते पल्लत्थिकापट्टे चित्तो अत्थो विधीयते । दढम्मि य महासारे अप्पसारो य दुब्बले ॥ ५० ॥ 25
 पुरिमेऽवाइमे वा वि महासारे परिग्गहे । चित्तम्मि बूया विपुलं विचित्तं अत्थमादिसे ॥ ५१ ॥
 वण्णओ उक्कड्डा वा वि चित्तोदिट्ठ परिग्गहा । अत्थजाएण कप्पेत्ता जधुत्तं फलमादिसे ॥ ५२ ॥
 चलिताय य आउत्तो दुक्खेणऽत्थस्स संपया । उज्जुसमाय आउत्तो खिप्पं अत्थस्स संपया ॥ ५३ ॥
 विप्पमुक्कासु चलियासु णत्थी अत्थस्स संपया । पल्लत्थिकासु सव्वासु जा पुव्वं परिकित्तिया ॥ ५४ ॥

१ सुद्धा हं० त० विना ॥ २ पसंसई दारं हं० त० विना ॥ ३ णाय य हं० त० ॥ ४ वित्थस्स हं० त० ॥
 ५ वत्थय हं० त० ॥ ६ माय य हं० त० ॥ ७ कायासारेहिं अगघसंथाण हं० त० विना ॥ ८ अप्पजा हं० त०
 विना ॥ ९ पत्थवरं हं० त० विना ॥ १० कणहे नीले हं० त० विना ॥ ११ रय्याण हं० त० विना ॥ १२ जस्सेत्ताणं
 किलिट्ठाणं अत्थाणं फलमादिसे हं० त० विना ॥ लेखकप्रमादपरिवर्तितमिदमुत्तरार्द्धमसङ्गतमेव ॥ १३ किलित्ताणं हं० त०
 विना ॥ १४ वुत्तमं हं० त० सि० ॥ १५ सावज्जे हं० त० विना ॥ १६ छण्णे हं० त० ॥ १७ विहीअति हं० त० ॥
 १८ वाइमे वा हं० त० विना ॥ १९ डा सव्वचित्तोदट्ठा परिग्गहे हं० त० विना ॥ २० वेलियाय सं ३ पु० । विलियाय
 सि० ॥ २१ उज्जुस्समाइ आउत्तो हं० त० विना ॥

- विप्पमुक्कासु जाणिज्जो पसत्थासय अंगवि । पसत्थेसु य सव्वेसु विप्पयोगं विणिहिसे ॥ ५५ ॥
 समागमं संपयोगं खित्तं वत्थुस्स वाहणं । पुत्तेहि तथा दव्वेण जेणेण य असंपया ॥ ५६ ॥
 अप्पसत्थासु एयासु बूया पल्लित्थिकासु य । संरोधो मौक्ख उग्गमणं दुक्खस्स य परिक्खयं ॥ ५७ ॥
 संखित्तो जो उ आजोगो ण यावि चलिओ भवे । पसत्थम्मि पसत्थस्स अत्थस्स बहुसंपदा ॥ ५८ ॥
 5 अप्पसत्थम्मि आयोगे संखित्तम्मि अपत्थिए । अप्पसत्थम्मि अत्थम्मि बूया णाणी असंपदं ॥ ५९ ॥
 आयुत्ताय पलोलोहं विमुच्चे हं पलोलिया । वड्ढि विप्पयोगं वा णिग्गमं वा णिग्गच्छई ॥ ६० ॥
 आयुत्ताय पलोलोहं ण विमुच्चे पलोलिया । बंधं वा सण्णिरोधं वा धणापचयं बूहि से ॥ ६१ ॥
 मइला दुब्बला यावि छिड्डा पल्लित्थिका भवे । संखित्ता वट्ठिता वा वि सोभते अणपूइया ॥ ६२ ॥
 अप्पण्णिणया णवा वा वि उत्तमा सुपइड्डिया । चलिया पुराणी अठिया अप्पसत्था पवेदिया ॥ ६३ ॥
 10 बाहुपल्लित्थिका इट्ठा सव्वत्थेसु सुभेसु य । रज्जू [य] चम्मपट्टे य बंधेण असुभेसु य ॥ ६४ ॥
 एयाणि चेव सव्वाणि अत्थि ति अभिणिहिसे । चलियासु विप्पमुक्कासु सया पल्लित्थिकासु य ॥ ६५ ॥
 समागमं घरावासं बंध-वत्थपरिग्गहं । पल्लित्थिकाय अचलाय संजोगं च पवेदे ॥ ६६ ॥
 कण्णप्पयाण मुक्खं च तथा णिग्गमणाणि य । मरणं च पवासं च सव्वमेयासु णिहिसे ॥ ६७ ॥
 पल्लित्थिकेविप्पमोक्खे अत्थि एतं ति णिहिसे । अप्पसत्थे पसत्थे य विप्पयोगं पवेदे ॥ ६८ ॥
 15 अर्ब्भितरपसत्थायं अत्थो अर्ब्भितरो भवे । बाहिरायं पसत्थायं अत्थो सो बाहिरो भवे ॥ ६९ ॥
 पल्लित्थिकाय गहिएसु जाणूसु उभयेसु य । अत्थं विचित्तियं बूया पुरिसस्स महिलाय य ॥ ७० ॥
 एयाणि चेव सव्वाणि णत्थिकाणि पवेदये । चलियाय विप्पमुक्काय सव्वं पल्लित्थिकाय उ ॥ ७१ ॥
 पोरणम्मि तु आयोगे पुराणत्थस्स चित्तितं । णवेण तु णवं बूया चित्तियं तु परिग्गहे ॥ ७२ ॥
 कसिणे णीले य आयोगे अयले सुत्थितम्मि य । लाभं सखेत-वत्थूणं वासं च अभिणिहिसे ॥ ७३ ॥
 20 विप्पमुक्कासु उ एतासु खेत-वत्थुय होयणं । अवुट्ठि मरणं रोगं विप्पयोगं च णिहिसे ॥ ७४ ॥
 लोहिता पीतिका वा पि दढा पल्लित्थिका भवे । सुट्ठियायं भवे सिद्धि खेत वत्थू धणं लभे ॥ ७५ ॥
 विप्पमुक्कासु चेतासु अवुट्ठि सस्सणासणं । खित्त-वत्थु-हिरण्णेहि विप्पयोगं वियागरे ॥ ७६ ॥
 अहया सेता व अकिलिड्डा दढा पल्लित्थिका भवे । सुवण्णलाभं अत्थायं सव्वं चेतासु णिहिसे ॥ ७७ ॥
 एयासिं चेव आओगो पुच्छतो जति मुंचति । पल्लित्थिकाय इट्ठाय सुभो अत्थोऽस्स हायति ॥ ७८ ॥
 25 पागतं पागतायऽत्थं वदे पल्लित्थिकाय उ । परग्घाय महासारं जुत्तग्घाय य मज्झिमं ॥ ७९ ॥
 साधारणत्थं सामण्णे सकमत्थं सकेण तु । अण्णातकं परक्केण आयोगेणाभिणिहिसे ॥ ८० ॥
 अचलायं धुवो अत्थो चलिताय चलो भवे । णत्थि अत्थो विमुक्कायं दुट्ठिताय य दुट्ठितो ॥ ८१ ॥
 सुआउत्ता पलोलत्थं यदा पल्लित्थिकाय तु । अप्पसत्थं तहि बूया पसत्थं तु ण णिहिसे ॥ ८२ ॥
 समा पल्लित्थिया इट्ठा वण्णेण य समायुता । सव्वत्थेसु पसंसते विद्धि चेव अणागतं ॥ ८३ ॥
 30 एतेणेव तु कप्पेण सुद्धा पल्लित्थिका भवे । अत्थसिद्धी विवद्धीसु असुभाय असुभं बहुं ॥ ८४ ॥

१ पुत्तेहि सं ३ पु० । पुण्णेहिं सि० ॥ २ गणेण हं ० त० विना ॥ ३ मुख्ख ओगमणं हं ० त० ॥ ४ णाणी ण संपदं हं ० त० ॥ ५ अप्पत्थिआ हं ० त० ॥ ६ रज्जूअं च हं ० त० ॥ ७ बंधणे हं ० त० ॥ ८ णत्थि हं ० त० विना ॥ ९ वत्थुं सि० ॥ १० मोक्खो स तथा णियमणाणि य हं ० त० विना ॥ ११ काय वि हं ० त० ॥ १२ वदे हं ० त० विना ॥ १३ सुपरि हं ० त० विना ॥ १४ कसणे हं ० त० विना ॥ १५ हाणयं हं ० त० विना ॥ १६ अवुट्ठि सप्र० ॥ १७ विणिहिसे हं ० त० ॥ १८ मुदियायं भवे सं ३ पु० सि० । अट्ठिआरं भवे हं ० त० ॥ १९ धणं भवे हं ० त० विना ॥ २० अहतवे अकिलिड्डा दढा सं ३ पु० । अहतवेअत्थि लद्धा दढा सि० ॥ २१ आयामे हं ० त० विना ॥ २२ सुयावुत्ता हं ० त० विना ॥ २३ जहा हं ० त० ॥ २४ समाजुआ हं ० त० ॥

पसत्थ-सुद्धिते इट्ठा अप्पसत्था वि दुद्धिता । अचला पसत्था कल्लाणे असुभा वा सुभे चला ॥ ८५ ॥
 उत्तमा पूयिते सिद्धा अप्पसारे अपूयिता । सुभं पसत्थवण्णायं पसत्थेसु पसंसते ॥ ८६ ॥
 एगवण्णा य चित्ता य अकिलिद्धा दढा य जा । सुभा पसत्था अत्थेसु उत्तमेसु पसंसते ॥ ८७ ॥
 पसत्था विप्पमुक्का य सुभे हाणिं करोति तु । अप्पसत्था विमुंचित्थ दुक्खसारे त्थ मोइया ॥ ८८ ॥
 पलोल्याओ सव्वाओ इट्ठा-ऽणिट्ठेण पूयिता । विप्पमुक्का विसेसेणं सव्वपल्लत्थिया विदू ॥ ८९ ॥ 5
 चलितासु य किच्छेणं सुभं सुभासु णिदिसे । असुभा य चलितासु दुक्खं बूया विसेसतो ॥ ९० ॥
 विप्पमुक्कासु सव्वासु असंखित्तासु णिदिसे । विविहाएसु णाणत्ता विप्पवासो विवज्जे ॥ ९१ ॥
 असंखित्तासु मुक्कासु बूया पल्लत्थियासु य । असुभा असुभऽत्थस्स विवड्ढिं तु विसेसओ ॥ ९२ ॥
 पल्लत्थितासु सव्वासु सुभासु तु सुभं वदे । असुभासु तु सव्वासु असुभं फलमादिसे ॥ ९३ ॥
 पल्लत्थियासु सव्वासु विसेसा इसिभासिया । वित्थारतो य विंधिता फलाणं परिभासणं ॥ ९४ ॥ 10

॥ इति [पल्लत्थिया] पडलं सम्मत्तं ॥ ७ ॥

[अट्टमं आमासगंडिकापडलं]

पल्लत्थिकाओ बावीसं वक्खाताओ जधा तथा । आमासऽट्टसयं भूयो पवक्खामऽणुपुव्वसो ॥ १ ॥
 उम्मट्ठं च १ विमट्ठं च २ णिम्मट्ठं ३ अप्पमज्जितं ४ । सम्मज्जितं ५ ठितामासो ६ आमट्ठं ७ अभिमज्जितं ८ ॥ २ ॥
 आमासा अट्ट इच्चेते समासेण पवेदिता । भेअ अट्टसु भेएसु एक्केक्खस्स विभावये ॥ ३ ॥ 15
 उम्मट्ठं चोदसविधं १४ विमट्ठं चोदसेव य १४ । भेदा भवंति विण्णेया णिम्मट्टस्स वि चोदस १४ ॥ ४ ॥
 अपमज्जिते चोदस य १४ तथा सम्मज्जितम्मि य । चोदसेव य विण्णेया १४ ठितामासा य बारस १२ ॥ ५ ॥
 भेदा बारस आमट्ठे आमासम्मि पवेदिता १२ । अभिमज्जिते य आमासे भेदा चोदस आहिता १४ ॥ ६ ॥
 एवं अट्टसयं वुत्तं आमासा संगहेण तु । अधापुव्वं च एतेसिं इमं भेदं वियाणिया ॥ ७ ॥
 इसुम्मट्ठं तु उम्मट्ठं १ जुत्तमट्ठं तथेव य २ । आमट्ठं चेव विण्णेयं ३ उम्मट्ठे ततिओ विधि ॥ ८ ॥ 20
 पीलितं चेव उम्मट्ठं ४ तथेव य अपीलितं ५ । अब्भंतरं च ६ बाहिरं च ७ मज्झं ८ साधारणं तथा ९ ॥ ९ ॥
 पुरिमं १० पच्छिमं चेव ११ दक्खिणं १२ वाममेव य १३ ।
 साधारणं च १४ एतेसु उम्मट्ठं चोदसं भवे ॥ १० ॥
 एवं चोदसधा एस उम्मट्टस्स विधी भवे । संगहेण तु विण्णेया संजोगे बहुधा भवे ॥ ११ ॥
 संविमट्ठे वि एसेव णेयो चोदसधा विधी । णिम्मट्टम्मि वि १८ एसेव १० तथा य अपमज्जिते ॥ १२ ॥ 25
 सम्मज्जिते वि एसेव विज्जा चोदसधा विधि । आमट्टम्मि य आमासे एमेव अभिमज्जिते ॥ १३ ॥
 ठितामासे य जो वुत्तो आमट्टे य तथा विधी । एक्केक्को बारसविधो तस्स भेदविधी इमो ॥ १४ ॥
 अवट्ठितो ठितामासो पीलितो य १ अपीलितो २ । अब्भितरो ३ बाहिरो य ४ पीलितो य ५ अपीलितो ६ ॥ १५ ॥ २०
 पुरिमो ७ पच्छिमो चेव ८ दक्खिणो ९ वामगो तथा १० । साधारणो य ११ एतेहिं एवं एक्कारसाऽऽहिता ॥ १६ ॥
 विकप्पितो ठितामासो चलितो बारसो भवे १२ । ठितामासस्स एमेते भेदा बारस आहिता ॥ १७ ॥ 30
 छट्ठे ठाणे ठितामासे जधा बारसधा विधी । तथ सत्तमम्मि ठाणम्मि आमट्टे बारसाऽऽहिया ॥ १८ ॥

१ 'तथा पमुंचे तु दुक्ख' हं० त० विना ॥ २ 'सारे समोइया' हं० त० विना ॥ ३ अविमुक्का हं० त० विना ॥ ४ विजज्जे
 हं० त० ॥ ५ विहिया हं० त० ॥ ६ 'भासणे' हं० त० ॥ ७ णिमट्ठं सि० विना ॥ ८ समज्जितं हं० त० सि० ॥ ९ अट्टमं
 अभि' हं० त० ॥ १० भेदा अट्टसु ते(भे)तेसु एक्केक्क' हं० त० विना ॥ ११ चउदस साहिता हं० त० ॥ १२ च तम्मट्ठं हं०
 त० विना ॥ १३ १८ २० एतच्चिह्नगतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १४ १८ २० एतच्चिह्नान्तर्गतमिदमुत्तरार्द्धं हं० त० नास्ति ॥

- एवं अट्टसु ठाणेसु भेदा मे संपवेदिता । आमसऽट्टसतं सम्मं विण्णेयं पविभागसो ॥ १९ ॥
 एवं संगहतो उतो आमसऽट्टसते विधी । अप्पमेया व विण्णेया एस संजोयणागमो ॥ २० ॥
 उदत्ता १ अणुदत्ता य २ दुविधा एते समासतो । जघन्नु १ तम २ मज्झ ३ ति एवं च तिविधा भवे ॥ २१ ॥
 जहण्णु १ तम २ मज्झ ३ ति तेहिं साधारणा तथा ४ । चउव्विधं भवे णेयं आमसट्टसयं पुणो ॥ २२ ॥
 5 थी-पुमंस-णपुंसेसु देवता-कण्ह-सामसु । सुक्कपक्खे य काले य संधीणं पविभागसो ॥ २३ ॥
 रत्ती दिवा य संज्ञासु पच्चूसे पुव्वरत्तसु । मज्झंतिके अट्टरत्ते एतेसिं तु विभासणा ॥ २४ ॥
 अतीते वट्टमाणे य तधेव य अणागते । लाभा-ऽलाभे सुहे दुक्खे जीविते मरणम्मि य ॥ २५ ॥
 एतेसऽत्थेसु सव्वेसु आमसऽट्टसते फलं । विण्णेयं संगहेणेतं अप्पमेयं च भेदसो ॥ २६ ॥ छ ॥
 ईसुम्मट्टं तथा जुत्तं दुरुम्मट्टं समं तथा । पीलिता-ऽपीलितं ईसि जुत्तसंपीलितं तथा ॥ २७ ॥
 10 ईसुम्मट्टेसु गतेसु ईसिसंपीलितेसु य । सव्वो अत्थो जधाभूतो ईसिसंपीलितो भवे ॥ २८ ॥
 जुत्तुम्मट्टेसु गतेसु जुत्तसंपीलितेसु य । जुत्तं लाभं वियाणीया मज्झिमत्थं पवेदये ॥ २९ ॥
 दुरुम्मट्टेसु गतेसु धणितं पीलितेसु य । सुभस्सऽत्थस्स पायो सा पीलिते पीलितो भवे ॥ ३० ॥
 समुम्मट्टेसु गतेसु समम्मि य अपीलिते । महासारे य उम्मट्टे सुभं अत्थं वियागरे ॥ ३१ ॥
 ईसिहीणम्मि उम्मट्टे ईसिसंपीलितम्मि य । सव्वमत्थं वियाणीया हीणमत्थेण केणयि ॥ ३२ ॥
 15 पैळितं पीलीते यावि मज्झं ईसिं च पीलिते । उक्कस्स मज्झिम जहन्नं अत्थपीलं वियाणीया ॥ ३३ ॥
 अब्भितरम्मि उम्मट्टे अत्थो अब्भितरो भवे । बाहिरब्भंतरे मज्झो बाहिरम्मि य बाहिरो ॥ ३४ ॥
 अब्भंतरम्मि उम्मट्टे सकं अत्थं पवेदये । साधारणं च मज्झम्मि परक्कं बाहिरम्मि य ॥ ३५ ॥
 साधारणम्मि उम्मट्टे बज्झ-ऽब्भंतर-मज्झिमे । साधारणो भवे अत्थो विण्णेयो पविभागसो ॥ ३६ ॥
 दक्खिणम्मि य उम्मट्टे सकं अत्थं पवेदये । वामतो य थीया अत्थं पच्छतो य णपुंसके ॥ ३७ ॥
 20 पुरत्थिमम्मि उम्मट्टे अत्थं बूया अणागतं । वट्टमाणं च पस्सेसु अंतिकंतं च पच्छतो ॥ ३८ ॥
 साधारणम्मि उम्मट्टे उभयो वामदक्खिणे । पुरिमे पच्छिमे वा वि अत्थं साधारणं वदे ॥ ३९ ॥
 अपीलितम्मि उम्मट्टे सव्वे अत्थे पसस्सते । पीलिते संकिलिट्टम्मि ण कम्मि वि पसस्सते ॥ ४० ॥
 अब्भंतरे बाहिरे वा उम्मट्टे मज्झिमम्मि वा । सेसे सेसं वियाणिज्जा असेसे य असेसां ॥ ४१ ॥ १ ॥ छ ॥
 ईसिं च संविमट्टम्मि ईसिं संपीलितम्मि वा । सव्वो अत्थो जधाभूतो ईसिल्लाभेसु जुज्जति ॥ ४२ ॥
 25 मज्झिमे संविमट्टम्मि मज्झिमम्मि य पीलिते । मज्झिमत्थो भवे णेयो किंचि लंढे तु पीलिते ॥ ४३ ॥
 अच्चत्थसंविमट्टम्मि अपव्वामं च पीलिते । जं किंचि अत्थं पुच्छेज्जा पीलितं तेण णिदिसे ॥ ४४ ॥
 समे सुभे संविमट्टे पदक्खिणमपीलिते । उम्मट्टम्मि महासारे महाअत्थं पवेदये ॥ ४५ ॥
 अब्भंतरे संविमट्टे अत्थो अब्भितरो भवे । बाहिरब्भंतरो मज्झो बाहिरम्मि य बाहिरो ॥ ४६ ॥
 अब्भितरे संविमट्टे उक्कस्सा अत्थसंपदा । मज्झिमे मज्झिमा वद्धी हीणा भवति बाहिरे ॥ ४७ ॥
 30 अब्भंतरे संविमट्टे सकं अत्थं पवेदये । साधारणं मज्झिमे य परक्कं बाहिरेण य ॥ ४८ ॥

१ परिभागसो हं० त० ॥ २ ट्टसते सप्र० ॥ ३ ट्टसम्मं तथा सं ३ पु० । ट्टसयं तथा हं० त० सि० ॥
 ४ जुत्तमट्टेसु सप्र० ॥ ५ अट्टमट्टेसु हं० त० ॥ ६ सम्ममट्टेसु सप्र० ॥ ७ पीलितं पी० हं० त० ॥ ८ अत्थं पीलं हं०
 त० सि० ॥ ९ थीया पुच्छं पच्छतो हं० त० ॥ १० अइयंतं वा पयच्छतो हं० त० ॥ ११ लाभे तु जुज्जए हं० त० ॥
 १२ लंढे तु सं ३ पु० ॥

साधारणम्मि उम्मट्टे बज्जे अब्भंतरम्मि वा । साधारणो भवे अत्थो विण्णेयो पैविभागसो ॥ ४९ ॥
 दक्खिणे संविमट्टम्मि पुरिसस्सऽत्थो विधीयते । वामतो य थिया अत्थो पच्छतो य णपुंसके ॥ ५० ॥
 साधारणे संविमट्टे उभयो वाम-दक्खिणे । पुरिमे पच्छिमे चेव अत्थो साधारणो भवे ॥ ५१ ॥
 पुरिमे संविमट्टम्मि अत्थं बूया अणागतं । वत्तमाणं च पस्सेसु अतिक्रंतं च पच्छिमे ॥ ५२ ॥
 अपीलिते संविमट्टे सव्वो अत्थो पसस्सते । पीलिते य अपव्वामं ण कम्मि वि पसस्सते ॥ ५३ ॥ 5
 अब्भितरे बाहिरे य संविमट्टे य मज्झिमे । सेसे सेसं वियाणीया असेसे य असेसगं ॥ ५४ ॥ २ ॥ छ ॥
 ईसिगतम्मि णिम्मट्टे ईसिसंपीलितम्मि य । सव्वो अत्थो जधाभूतो ईसि हीणो तु लब्धति ॥ ५५ ॥
 मज्झिमम्मि य णिम्मट्टे मज्झिमम्मि य पीलिते । मज्झिमा अत्थहाणी तु बूया लाभं च मज्झिमं ॥ ५६ ॥
 दुरागते य उम्मट्टे धणितं पीलितम्मि य । हायते ससुभो अत्थो अवसेसं विवड्डुए ॥ ५७ ॥
 समणिम्मट्टेसु गतेसु समम्मि य अपीलिते । मज्झिमा सव्वहाणी णं मज्झिमा लाभसंपदा ॥ ५८ ॥ 10
 निम्मट्टं पीलितं जं तु तत्थ वा वि पुणो भवे । ईसि-मज्झविलगेषु थीणं बूया विभागसो ॥ ५९ ॥
 हाणी पुणो पुणो वड्ढी सव्वमत्थगतेसु य । णिम्मट्टम्मि य गतम्मि उम्मट्टम्मि पुणो पुणो ॥ ६० ॥
 णिम्मट्टेसु तु गतेसु णिडुतेसु य जाणिया । सव्वत्थीगगते हाणी मरणं पपतणं तधा ॥ ६१ ॥
 अब्भंतरम्मि णिम्मट्टे हाणी अब्भंतरा भवे । बाहिरब्भंतरा मज्जे बाहिरम्मि य बाहिर ॥ ६२ ॥
 अब्भंतरम्मि णिम्मट्टे महासारस्स णासणं । मज्झं मज्झिमसारस्स अप्पसारं च बाहिरे ॥ ६३ ॥ 15
 अब्भंतरम्मि णिम्मट्टे सकत्थस्सऽत्थस्स णासणं । साधारणो य मज्झम्मि परक्कं जाण बाहिरे ॥ ६४ ॥
 साधारणम्मि णिम्मट्टे बज्जे-ऽब्भंतर-मज्झिमे । साधारणस्स अत्थस्स णासं बूया सुभा-ऽसुभं ॥ ६५ ॥
 दक्खिणम्मि तु णिम्मट्टे पुरिसत्थे हाणिमादिसे । थीआ अत्थं च वामम्मि णपुंसत्थं च पच्छिमे ॥ ६६ ॥
 पुरत्थिमम्मि णिम्मट्टे अत्थहाणी अणागता । वत्तमाणी य पस्सेहि अतिक्रंता य पच्छतो ॥ ६७ ॥
 साधारणम्मि उम्मट्टे उभतो वामदक्खिणे । पुरत्थिमे पच्छिमे वा हाणी साधारणा भवे ॥ ६८ ॥ ३ ॥ छ ॥ 20
 ईसिमपमज्जिते गते ईसि संपीलितम्मि य । ईसि हाणी वियाणीया अत्थतो तस्स णो सुहं ॥ ६९ ॥
 अपमज्जिते मज्झिमम्मि मज्झिमं वा वि पीलिते । मज्झिमत्थं पवेदेज्जा किंचि सेसं तु लाभतो ॥ ७० ॥
 अपमज्जितम्मि सव्वम्मि धणितं पीलितम्मि य । हायते ससुभो अत्थो असुभो य विवद्धते ॥ ७१ ॥
 पमज्जितापमट्टेसु हाणी सव्वत्थ णिदिसे । अपमज्जितापमट्टेसु हाणी पावे पुणो सुभं ॥ ७२ ॥
 अपमज्जिते बाहिरम्मि हाणी सां बाहिरा भवे । अब्भंतरे य विण्णेयो मज्झिमम्मि य मज्झिमो ॥ ७३ ॥ 25
 अपमज्जितायं वज्झायं अप्पसारस्स णासणं । अब्भंतरे सारवतो मज्झासारं च मज्झिमे ॥ ७४ ॥
 अपमज्जिते बाहिरम्मि परत्थस्स तु णासणं । अब्भंतरे सकत्थस्स मज्जे साधारणस्स तु ॥ ७५ ॥
 अपमज्जिते बाहिरम्मि मज्झिम-ऽब्भंतरे तधा । साधारणो भवे अत्थो विण्णेयो पैविभागसो ॥ ७६ ॥
 अपमज्जितम्मि वामम्मि थिया अत्थस्स णासणं । पुरिसस्स दक्खिणे पासे पच्छतो य णपुंसके ॥ ७७ ॥
 अपमज्जितम्मि सामण्णे उभयो वामदक्खिणे । पुरिमे दक्खिणे चेव हाणी साधारणा भवे ॥ ७८ ॥ 30
 अपमज्जितम्मि पुरिमम्मि हाणि बूया अणागतं । वत्तमाणं च पस्सेहि अतिक्रंतं च पच्छतो ॥ ७९ ॥
 अब्भितरे बाहिरे वा मज्झिमे अपमज्जिते । सेसे सेसं वियाणेया असेसे य असेसयं ॥ ८० ॥ ४ ॥ छ ॥
 ईसि सम्मज्जिते गते ईसि संपीलितम्मि य । ईसि हाणि पवेदेज्जो अत्थऽत्थो तस्स णो सुहं ॥ ८१ ॥

१ परिभागसो हं० त० ॥ २ विहीयाए हं० त० ॥ ३ अथो साधा हं० त० विना ॥ ४ मज्झिममज्झिमपीलिते हं० त०
 विना ॥ ५ 'ट्टे चलियं पीलि' हं० त० ॥ ६ अवसेसम्मि य वं सं ३ पु० ॥ ७ सव्वसंपदा ॥ निम्मट्टी हं० त० ॥ ८ तरो
 मज्जे सप्र० ॥ ९ यतिक्रया य पच्चओ हं० त० ॥ १० स्यादित्यर्थः ॥ ११ परिभागसो हं० त० ॥ १२ पक्खेहि हं० त० ॥

- सम्मज्जिते मज्झिमस्सि मज्झिमे वा वि पीलिते । मज्झिमत्थं पवेदेज्जो किंचि लाभेण पीलिते ॥ ८२ ॥
 दूरं सम्मज्जिते यावि धणितं पीलितमि य । सुभस्सऽत्थस्स हाणिस्सा असुभत्थो विवद्धते ॥ ८३ ॥
 सम्मज्जिते य उम्मट्टे हाणि पावे सुहं भवे । तम्मेव य णिम्मट्टे हाणि पावेदये ॥ ८४ ॥
 अब्भंतरमि सम्मट्टे हाणी अब्भंतरा भवे । मज्झिमा मज्झिमे हाणी बाहिरमि य बाहिरा ॥ ८५ ॥
 5 अब्भंतरमि सम्मट्टे महासारस्स णासणं । मज्झिमे मज्झिमं सारं अप्पसारं च बाहिरे ॥ ८६ ॥
 अब्भंतरमि णिम्मट्टे सकस्सऽत्थस्स णासणं । साधारणं च मज्झमि परक्कं तध बाहिरे ॥ ८७ ॥
 सम्मज्जितमि सामण्णे बज्झ-ऽब्भंतर-मज्झिमे । साधारणस्स अत्थस्स णासं बूया विभागसो ॥ ८८ ॥
 सम्मज्जियमि वाममि अत्थहाणी थिया भवे । पुरिसस्स दक्खिणे पासे पच्छतो य णपुंसके ॥ ८९ ॥
 साधारणमि उम्मट्टे उभओ वामदक्खिणे । पुरिमे पच्छिमे वा वि हाणी साधारणा भवे ॥ ९० ॥
 10 पुरिथिममि सम्मट्टे अत्थहाणी अणागता । वत्तमाणी य पस्सेहि अतिकंता य पच्छतो ॥ ९१ ॥
 सम्मज्जितेसु सव्वेसु सव्वगतगतागते । सव्वहाणी अलाभं च अप्पसत्थं च णिदिसे ॥ ९२ ॥
 अब्भंतरे बाहिरे वा सम्मट्टमि य मज्झिमे । सेसे सेसं वियाणिज्जो असेसे य असेसगं ॥ ९३ ॥
 थीय णामेसु सव्वेसु थीणं अत्थं पवेदये । पीलितं पीलिते यावि अपीला य अपीलिते ॥ ९४ ॥ ५ ॥ छ ॥
 थितामासेसु सव्वेसु थितं अत्थं पवेदये । ईसिं पि चलिते तमि थावरं किंचि हायति ॥ ९५ ॥
 15 थितामासे दढे सव्वे थावरो अचलो भवे । चलामासे दढे सव्वे थावरो चलितो भवे ॥ ९६ ॥
 थितामासे चले सव्वे अत्थं पचलियं वदे । चलामासे य चलिते चलमेव पवेदये ॥ ९७ ॥
 अब्भंतरथितामासे अत्थो अब्भंतरो भवे । बाहिरब्भंतरो मज्झे बाहिरमि य बाहिरो ॥ ९८ ॥
 अब्भंतरे थितामासे उक्कट्ठा सस्ससंपदा । मज्झिमे मज्झिमा वद्धी बाहिरमि य बाहिरा ॥ ९९ ॥
 अब्भंतरठितामासे सकत्थं सारिकं वदे । साधारणं मज्झिममि परक्कं बाहिरमि य ॥ १०० ॥
 20 साधारणठितामासे बज्झ-ऽब्भंतर-मज्झिमे । साधारणस्स अत्थस्स वद्धि बूया विभागसो ॥ १०१ ॥
 दक्खिणमि ठितामासे पुरिसस्सऽत्थो ति णिदिसे । वामतो य थिया अत्थो पच्छतो य णपुंसके ॥ १०२ ॥
 साधारणे ठितामासे उभओ वामदक्खिणे । पुरिमे पच्छिमे वा वि अत्थो साधारणो भवे ॥ १०३ ॥
 अपीलिते ठितामासे सव्वो अत्थो पसस्सति । पीलिते संकिलिट्टमि ण केम्हीय पसस्सते ॥ १०४ ॥
 पुरिथिमे ठितामासे अत्थं बूया अणागतं । वत्तमाणं च पस्सेहि अतिकंतं च पच्छतो ॥ १०५ ॥
 25 णपुंसके ठितामासे णत्थि अत्थस्स संपदा । चले चलातो विण्णेयो उदत्ते अत्थमादिसे ॥ १०६ ॥
 ठितामासेसु सव्वेसु थी-पुमंस-णपुंसके । दीणोदत्तेसु संजोगे विभत्तीय वियागरे ॥ १०७ ॥
 पुण्णाममि ठितामासे सव्वो अत्थो पसस्सति । थितामासे य थीणामे संयोगत्थे पसस्सति ॥ १०८ ॥
 ईसुम्मट्टे उदत्ते च ईसिं अत्थस्स संपदा । मज्झिमत्थे उदत्ते य मज्झिमत्थस्स संपदा ॥ १०९ ॥
 संविमट्टे उदत्ते य उक्कट्ठा सस्ससंपदा । णपुंसक-थी-पुमंसेसु पुच्छंतस्स वियागरे ॥ ११० ॥ ६ ॥ छ ॥
 30 ईसिं हीणमि आमट्टे ईसीहीणं पवेदये । मज्झिमे मज्झिमा हाणी उक्कट्टे य महंतिया ॥ १११ ॥
 अब्भंतरमि आमट्टे अत्थो अब्भंतरो भवे । बाहिरब्भंतरो मज्झे बाहिरमि य बाहिरो ॥ ११२ ॥
 अब्भंतरमि आमट्टे उक्कट्ठा अत्थसंपदा । मज्झिमे मज्झसारा तु अप्पसारा तु बाहिरे ॥ ११३ ॥
 अब्भंतरमि आमट्टे वद्धी अब्भंतरा भवे । मज्झिमे मज्झिमा वद्धी बाहिरमि य बाहिरा ॥ ११४ ॥
 अब्भंतरमि आमट्टे सकस्सऽत्थस्स संपदा । साधारणा य मज्झमि बाहिरमि य बाहिरा ॥ ११५ ॥

१ मज्झिमत्तं पं सि० विना ॥ २ 'हाणिस्सा' हानिः स्याद् इत्यर्थः ॥ ३ थिता अत्थो हं० तं० विना ॥ ४ उभयतो वामं हं० तं० विना ॥ ५ केम्हीय पसंसए हं० तं० ॥ ६ पत्तेयं अति हं० तं० ॥ ७-८ पसंसए हं० तं० ॥

साधारणम्मि उम्पट्टे बज्झ-ब्भंतर-मज्झिमे । साधारणस्स अत्थस्स लाभं बूया विभागसो ॥ ११६ ॥
 दक्खिणे पुण आमट्टे पुरिसस्सऽत्थं पवेदये । वामम्मि य थिया अत्थं पच्छतो य णपुंसके ॥ ११७ ॥
 साधारणम्मि आमट्टे उभतो वामदक्खिणे । पुरिमे पच्छिमे वा वि अत्थो साधारणो भवे ॥ ११८ ॥
 अपीलितम्मि आमट्टे सव्वो अत्थो पसस्सते । पीलिते संकिलिट्टम्मि ण किंचि वि पसस्सते ॥ ११९ ॥
 पुरत्थिमम्मि आमट्टे अत्थं बूया अणागतं । वत्तमाणं च पस्सेसु अतिकंतं च पिट्ठतो ॥ १२० ॥ 5
 दढं णिद्धं च पुण्णं च आणामं सुक्किलं तथा । सुभं सच्चं उदत्तं वा आमासे अत्थसाधणं ॥ १२१ ॥
 चलं लुक्खं च तुच्छं च किलिट्ठं च णपुंसकं । असुभं दीणं च अणुदत्तं आमासेणऽत्थसाधणं ॥ १२२ ॥
 कंपिते चलितामासे चलमत्थं पवेदये । अकंपिते अचलिते आमट्टे अचलं वदे ॥ १२३ ॥
 अब्भंतरे मज्झिमे वा आमट्टम्मि य बाहिरे । सेसे सेसं वियाणेज्जा असेसे य असेसयं ॥ १२४ ॥ ७ ॥ छ ॥
 अभिमज्जितं ति वा सद्दा तथा उम्पज्जितं ति वा । एकत्था तु भवतेते सद्दा पज्जायवायगा ॥ १२५ ॥ 10
 ईसाभिमद्विते गते ईसि अत्थस्स संपदा । मज्झाभिमद्विते गते मज्झिमऽत्थस्स संपदा ॥ १२६ ॥
 सव्वाभिमज्जिते गते उक्कट्ठा अत्थसंपदा । अपमज्जितापमट्टेसु अत्थहारिणं पवेदये ॥ १२७ ॥
 अब्भंतरापमट्टम्मि अत्थो अब्भंतरो भवे । बाहिरब्भंतरो मज्झे बाहिरम्मि य बाहिरो ॥ १२८ ॥
 अब्भंतरावमट्टम्मि उक्कट्ठा अट्टसंपदा । मज्झे य मज्झिमा वद्धी हीणा भवति बाहिरे ॥ १२९ ॥
 अब्भंतरावमट्टेसु सकमत्थं पवेदये । साधारणं मज्झिमम्मि बाहिरम्मि य बाहिरं ॥ १३० ॥ 15
 साधारणम्मि य आमट्टे बज्झऽब्भंतरमज्झिमे । साधारणस्स अत्थस्स लाभं बूया विचित्तितं ॥ १३१ ॥
 दक्खिणे अभिमट्टम्मि पुरिसत्थं पवेदये । वामम्मि थिया अत्थं पच्छतो य णपुंसके ॥ १३२ ॥
 साधारणम्मि अभिमट्टे उभयो वामदक्खिणे । पुरिमे पच्छिमे वा वि अत्थो साधारणो भवे ॥ १३३ ॥
 अब्भंतराभिमट्टे य लाभं सव्वत्थ णिदिसे । अपमज्जियापमट्टे य अत्थसिद्धिं ण णिदिसे ॥ १३४ ॥
 अपीलितम्मि आमट्टे सव्वो अत्थो पसस्सति । पुरत्थिमम्मि अभिमट्टे अत्थं बूया अणागतं ॥ १३५ ॥ 20
 उभेसु यस्स पस्सेसु वत्तमाणं वियाकरे । पच्छतो समतिकंता णिदिसे अंगचितका ॥ १३६ ॥
 उदत्ते अभिमट्टम्मि उत्तमा अत्थसंपदा । दीणे य अभिमट्टम्मि दीणा अत्थस्स संपदा ॥ १३७ ॥
 अब्भंतरे मज्झिमे वा अभिमट्टे बाहिरे पि वा । सेसे सेसं वियाणेज्जा असेसे य असेसयं ॥ १३८ ॥ ८ ॥ छ ॥
 उम्पट्टं १ संविमट्टं च २ णिम्मट्टं ३ अपमज्जितं ४ । संमज्जितं ५ ठितामासे ६ आमट्टं ७ अभिमज्जितं ८ ॥ १३९ ॥
 इच्चेते अट्ट आमासा एक्केक्को पविभागसो । पविभत्तासु संजुता आमासा सैतअट्ट १०८ या ॥ १४० ॥ 25
 मूलामासा य अट्टेमे संजोगपविभागसो । अण्णोण्णसमायोगेणं बहवो होंति मिस्सगा ॥ १४१ ॥
 मिस्सका वि य आमासा मूलामासगमेण तु । नेतव्वा कमसो सव्वे जधुत्तेणं सतीमता ॥ १४२ ॥
 अपीलिता पीलिता य बज्झ-ऽब्भंतर-मज्झिमा । पुरिमा पच्छिमा वा वि वामा य तध दक्खिणा ॥ १४३ ॥
 साधारणा य एतेसि दढा चलित-कंपिता । उदत्ता अणुदत्ता य थी-पुंस-णपुंसगं ॥ १४४ ॥
 उत्तमा मज्झिमा वा वि जधण्णा मिस्सया तथा । इस्सराऽणिस्सरा य स्सा तेहि साधारणा वि य ॥ १४५ ॥ 30
 बंधणा खत्तिया वेस्सा सुद्धा बाला समज्झिमा । महावया य ओवाता काला सामा य मिस्सका ॥ १४६ ॥
 रार्तिदियविभागेहि कालजातेहि संधिहि । भूत-भव्वेहि भावेहि वत्तमाणगुणेहि य ॥ १४७ ॥

१ आगासे सत्थ सावणं हं० तं० ॥ २ सिद्धा हं० तं० ॥ ३ मज्झे अत्थस्स सप्र० ॥ ४ अभिमज्जितं सप्र० ॥
 ५ अट्टमं अभिमज्जति सप्र० ॥ ६ सत्तं सप्र० ॥ ७ समयोगेण सप्र० ॥ ८ तेण मयीमया हं० तं० ॥ ९ एतेहि दढा हं०
 तं० विना ॥ १० णपुंसगा हं० तं० ॥ ११ 'स्सा' स्यादित्यर्थः ॥

- एतेसि आमासगमो अप्पमेयो त्ति आहितो । सुभा-ऽसुभेसु भावेसु णेयो णेमिस्सिणा सदा ॥ १४८ ॥
 चित्तया अंतरंगम्मि बाहिरंगे य चित्तका । विभत्ति उवधारेता ततो सम्मं वियागरे ॥ १४९ ॥
 अब्भंतरे दिवा जातं सुक्कपक्खे य णिद्दिसे । रत्तिजातं च बज्जेसु कालपक्खे य णिद्दिसे ॥ १५० ॥
 अब्भंतरम्मि उम्मट्ठे ओवातं तु वियागरे । सामा सामेण णातव्वा बाहिरेण तु कालया ॥ १५१ ॥
 5 बालामासेसु बालो य तरुणेसु तरुणो भवे । मज्झिमो मज्झिमंगेसु उतमेसु महव्वओ ॥ १५२ ॥
 उद्धं णाभीय गत्तेसु विण्णेओ इस्सरो भवे । अणिस्सरो अधोभागे पेस्सो पाए व जंधासु ॥ १५३ ॥
 सिरो-मुहम्मि आमासे बंभणो जातिया भवे । बाहूदरे य आमट्ठे खत्तिओ जातिया भवे ॥ १५४ ॥
 पस्से उरे परामट्ठे वेस्सो जातीय वा भवे । पाद-जंधपरामासे सुहो जातीय णिद्दिसे ॥ १५५ ॥
 सिरो-मुहपरामासे तथा अब्भंतरेसु य । जातिमंतं वियाणीया जाणितं पितुणा तथा ॥ १५६ ॥
 10 मज्झिमंगेसु जाणीया विण्णेयो मज्झिमव्वयो । हेट्ठा जहण्णो जातीय बज्जंगे जारकेण तु ॥ १५७ ॥
 अब्भंतराणं बज्जाणं मज्झिमाणं तधेव य । साहारणेसु संधिसु संज्ञा पुव्वावरा भवे ॥ १५८ ॥
 पुरिमे पुरिमं जाणीया दक्खिणे दक्खिणं वदे । अवसरजमगत्तेसु विज्जा वामेसु उत्तरं ॥ १५९ ॥
 तधंतरदिसा वा वि पुव्वपच्छिमसंधिसु । वामदक्खिणजंतोहि विज्जा साधारणेहि तु ॥ १६० ॥
 पुण्णामेहि पुमं जाणे थीणामंगेहि थी वदे । अंगुलंतरसंधीहि णपुंसत्थो पकित्तितो ॥ १६१ ॥
 15 अप्पसत्थेसु सब्बेसु पसत्थं णाभिणिद्दिसे । आमासेसु पसत्थेसु अप्पसत्थे ण णिद्दिसे ॥ १६२ ॥
 ॥ आमासगंडिका सम्मत्ता महापुरिसदिण्णाय० ॥ ८ ॥ छ ॥

[णवमं अपस्सयपडलं]

- आमासदुसतं अंगे इति वुत्तं विभागसो । अपस्सये सत्तरस कित्तयिस्समऽतो परं ॥ १ ॥
 आसणापस्सते चेव १ सेज्जा २ जाणे अपस्सतो ३ । अपस्सतो य पुरिसे ४ इत्थीय ५ तध णपुंसके ६ ॥ २ ॥
 20 अपस्सयो य पिडायं ७ दारप्पिधणे तथा ८ । कुडुम्मि ९ खंभे १० रुक्खम्मि ११ चेतिते य अपस्सयो १२ ॥ ३ ॥
 अपस्सतो य हरितेसु १३ भायणापस्सतो तथा १४ । भूमीधातुमयो चेव अवत्थंभो पकित्तितो १५ ॥ ४ ॥
 मूलजोणीगते सुक्खे १६ अट्ठीसु य अपस्सतो १७ । अपस्सया सत्तरस दढो चेव पकित्तितो ॥ ५ ॥
 आसंदओ १ भद्दपीठं २ डिप्फरो ३ फेलकी तथा ४ । भिसि ५ कट्टमयं पीढं ६ तथा य तणपीढकं ७ ॥ ६ ॥
 ८ मट्ठियापीढयं चेव ८ तथा छगणपीढगं ९ । १० एवमादि भवे णेयं आसणप्ससए विधि ॥ ७ ॥
 25 उक्कस्स मज्झिमो यावि जहण्णो वा वि सारतो । आसणापस्सओ तिविधो असुभो य सुभो तथा १ ॥ ८ ॥
 सुयणा १ ऽऽसणं च २ पल्लंको ३ मंच ४ मासालके तथा ५ ।
 मंचिका चेव ६ खट्ठा य ७ सेज्जा य ८ तधेव य ॥ ९ ॥
 एवमादी तु विण्णेया सयणे वि अपस्सता । सारतो तिविधा चेव दुविधा पुज्ज-णिदिता २ ॥ १० ॥
 सीया १ ऽऽसंदणा वा वि २ जाणकं ३ घोलि ४ गेल्लिका ५ । सगडं ६ सगडी ७ याणं ८ जं चऽण्णं एवमादियं ॥ ११ ॥
 30 जाणापस्सए एसो पविभागविधी भवे । सारतो दुविधा चेव सुभा चेवाऽसुभा तथा ३ ॥ १२ ॥
 मणुस्सो चेव पुरिसो, गय १ वाजी २ वसभो तथा ३ । करभो ४ सुभादयो चेव ५ पुरिसा तिज्जजोणिसु ॥ १३ ॥

१ अप्पनेये त्ति हं० त० विना ॥ २ महव्वतो हं० त० विना ॥ ३ पस्सोपादवजंधासु सं ३ पु० । पस्सोपावदजंधसु
 सि० । पोस्सापायवजंधासु हं० त० ॥ ४ परामुट्ठे हं० त० ॥ ५ वेसो हं० त० विना ॥ ६ जणितं सि० ॥ ७ अवसरजेमगं
 सं ३ पु० । अवसरजमगं सि० ॥ ८ णजुत्तेहि सं ३ पु० सि० ॥ ९ रमत्तीहि सं ३ पु० ॥ १० हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः
 हं० त० एव वर्तते ॥ ११ फलही तथा हं० त० ॥ १२ ८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १३ मंचियगा चेव
 हं० त० ॥ १४ सीका संदं हं० त० ॥ १५ गत्तिका हं० त० ॥ १६ पसस्सए हं० त० विना ॥

पुरिसावस्सये चेव विधी णेयो विभागसो । बाल जोव्वण दीणो य विण्णेया उ विधीहि य ४ ॥ १४ ॥
 महिलापस्सए चेव एस णेया विधी भवे ५ । णपुंसके अवत्थंभे विधी एस विभागसो ६ ॥ १५ ॥
 वामाय दक्खिणायं वा विद्दयंतु अपस्सयो । वज्जा-ऽवज्जेहि विण्णेयो तथा थाणविधीहि य ७ ॥ १६ ॥
 किडिका १ दारुकवाडं वा २ ह्रस्सावरणं भवे ३ । णेयं सावज्जमणवज्जं दुब्बलं बलियं तथा ८ ॥ १७ ॥
 कुड्डो लित्तो १ अलित्तो वा २ चेलिमो दुविधो भवे । कुड्डो फलकमयो चेव ३ तथा फलकपासितो ४ ॥ १८ ॥ 5
 णवो जुण्णो य विण्णेयो दुब्बलो बलितो तथा । मेहासाया विणभत्ती णिव्वज्जे वा कुतो भवे ॥ १९ ॥
 सावज्जो चंचलो यावि णिप्पकंपो धिरो तथा । कुड्डापस्सयविधी जघण्णुत्तम-मज्झिमो ९ ॥ २० ॥
 पाहाणस्स खंभो य मज्झिमो गिहधारणो १ । गिहस्स धारिणी धरणी चेवं २ थंभो पिलक्खकस्स य ३ ॥ २१ ॥
 णावाखंभो य खंभो ४ छायाखंभो तथेव य ५ । दीवरुक्खस्स लट्ठी य ६ दगलट्ठी तथेव य ७ ॥ २२ ॥
 खंभा य एवमादीया जे भवंति समुद्धिता । खंभावस्सए एस विण्णेया तु विधी भवे ॥ २३ ॥ 10
 सेल-कट्ट-ऽट्टिकमया विण्णेया मिस्सया तथा । अपस्सएसु जे खंभा जघण्णुत्तम-मज्झिमा १० ॥ २४ ॥
 असुभा कंटकीरुक्खा १ खीरुक्खा तथेव य २ । उत्तमा य भवे रुक्खा पत्त-पुप्फ-फलोपगा ३ ॥ २५ ॥
 हिट्ठपत्त-पवाले तु फलापस्सवसालिणो । उदत्ता कित्तिया रुक्खा दीणेषु य असंपदा ११ ॥ २६ ॥
 महिरासी य उवलो य रुक्खे य तथ पेडिका । मणुस्स-तिज्जजोणीणं सालसा पडिमा तथा ॥ २७ ॥
 सेल-लोह-ऽट्टि-कट्टेहि णिमित्तं पडिमा भवे । पोत्थकम्मे य चित्ते य अधोगागारसंथिता ॥ २८ ॥ 15
 मिंतु-दारुण सोम्मा तु उत्तमा अधम मज्झिमा । सुभा य असुभा चेव पडिमावस्सया भवे १२ ॥ २९ ॥
 तणस्स भारो हरितो १ पत्तभारो तथेव य २ । भारो य फल ३ पुप्फाणं ४ हरितावस्सए विधी ॥ ३० ॥
 सुभा य असुभा चेव पच्चुदगाण वा तथा । मिलाणा पडिजुण्णा य हरितावस्सया भवे १३ ॥ ३१ ॥
 कुंभकारकतं चेव १ तथा लोहमयं भवे २ । पडलं ३ कोत्थकापलं ४ मंजूसा ५ कट्टभायणं ६ ॥ ३२ ॥
 भायणा एवमादीया अवत्थंभे पकित्तिता । अणवज्जा य सावज्जा पुण्णामा तुच्छका तथा ॥ ३३ ॥ 20
 रसेण केणयि पुण्णा परिपुण्णा भोयणस्स वा । उदगस्स वा भवे पुण्णा धण-धण्णेहि पूरिता ॥ ३४ ॥
 एतेहि वा भवे रिक्खं एतेसामेव भायणं । ऊणकं वा वि एतेहि भायणापस्सते विधिं १४ ॥ ३५ ॥
 सोलोयाण (सेलेयो वा १) भूमिमयो २ तथा लोहमयो भवे ३ ।

भूमी-धातुमयो एसो अवत्थंभो सुभा-ऽसुभो १५ ॥ ३६ ॥

तण १ पत्ताणि २ कट्टाणि ३ चेल ४ पुप्फ ५ फलाणि य ६ । मूलजोणिगते सुक्खे विधि एस अपस्सते १६ ॥ ३७ ॥ 25
 चतुप्पदाणं मच्छाणं दंत-संग-ऽट्टिकाणि तु । एस अट्टिगते णेयो विधि सुक्खे अपस्सते १७ ॥ ३८ ॥

भूमिधातुपरिदड्डो मूलजोणिगतो वि वा । झामितो अट्टिधातू वा झामितापस्सए विधि ॥ ३९ ॥

सजीवमजीवो वा [वि] दुविधो णेयो अपस्सयो । जंगमो थावरो चेव सजीवो दुविधो भवे ॥ ४० ॥

धातुजोणीसमुत्थाणो १ मूलजोणिसमुत्थितो २ । पाणजोणिसमुत्थाणो ३ अजीवो तिविधो भवे ॥ ४१ ॥

एते अपस्सया सव्वे विण्णेया विविधफला । पसत्था १ अप्सत्था य २ मिस्सगा य ३ विभागसो ॥ ४२ ॥ 30

१ फलह.....सिओ हं० त० ॥ २ मेधासाया विणभित्ती सं० वा० । मेधासाया वि ण भत्ती मो० । मधासिया विणभित्ती
 सि० ॥ ३ उवन्ना हं० । उवत्ता त० ॥ ४ सातला मो० ॥ ५ 'मितु' मृत्तिकेत्यर्थः ॥ ६ वधस्स हं० त० ॥ ७ पत्तसारो सप्र० ॥
 ८ पव्व उद० हं० त० ॥ ९ तत्थका हं० त० विना ॥ १० पुणो परि० हं० त० ॥ ११ तूणकं हं० त० ॥ १२ सेलोतडो भूमिं
 हं० त० विना ॥ १३ अपस्सतु सप्र० ॥ १४ सुक्खे हं० त० ॥ १५ पि वा हं० त० ॥ १६ अट्टधातू हं० त० विना ॥

- पुण्णामा चेव सुद्धा य दढा चेव असंथिता । पुण्णामा मुदिता उदत्ता य पूयिता तु अपस्सया ॥ ४३ ॥
 णपुंसका चला दुक्खा किलिद्धा य ण संथिता । दीणा तुच्छा पसन्ना य अप्वसत्था अपस्सया ॥ ४४ ॥
 थीणं अत्थेसु थीणामा विण्णेया तु अपस्सया । पुण्णामा पुरिसत्थेसु णपुंसत्थे णपुंसका ॥ ४५ ॥
 अपस्सयेसुदत्तेसु सुभस्सऽत्थस्स संपदा । असुभस्स यावि अत्थस्स असंपत्तिं वियागरे ॥ ४६ ॥
 5 अणुपत्ते अपत्थंभे असुभऽत्थस्स संपदा । सुभस्स यावि अत्थस्स असंपत्तिं वियागरे ॥ ४७ ॥
 सुभा-ऽसुभेसु सव्वेसु अपत्थंभेसु अंगवी । तज्जातपडिरूवेण इद्वाऽणिट्ठफलं वदे ॥ ४८ ॥
 अपस्सयविधी एसो संगहेण पकित्तितो । पिधप्पिधं च एतेसिं विभागे वित्थरो इमो ॥ ४९ ॥
 आसणापस्सयो चेव पल्लं-सयणा-ऽऽसणे । [..... ॥ ५० ॥]
 सयणा-ऽऽसणऽपत्थंभे जहण्णुत्तम-मज्झिमे । तज्जातपडिरूवेण विभत्तीय वियागरे ॥ ५१ ॥
 10 पुरिसं जो अपत्थद्धो पुरिसो पुच्छति अंगवि । पुत्तं पसुं व मित्तं वा महिसं हत्थि तधोसमं ॥ ५२ ॥
 पुण्णामधेयं जं किंचि तस्स लाभं समागमं । विवद्धि अत्थसिद्धिं च सव्वमत्थि ति णिद्दिसे ॥ ५३ ॥
 पमदं जो अपत्थद्धो पुरिसो पुच्छति अंगवि । सुण्हं दुहितरं दासी गावी महिसि तधेव य ॥ ५४ ॥
 थीणामधेयं जं किंचि तस्स लाभं समागमं । विवद्धि अत्थसिद्धिं च सव्वमत्थि ति णिद्दिसे ॥ ५५ ॥
 महिलाय अपत्थद्धो पुरिसो पुच्छति अंगवि । पुण्णामधेयं जं किंचि तस्स णत्थि ति णिद्दिसे ॥ ५६ ॥
 15 थियायं पुरिसे वा वि पुरिसो जो अपस्सिओ । णपुंसकत्थं पुच्छेज्जा णत्थि तेवं वियाकरे ॥ ५७ ॥
 पुरिसं जा अपत्थद्धा महिला पुच्छेज्ज अंगवि । पत्तिं पुत्तं च मित्तं च हत्थि अस्सं तधोसभं ॥ ५८ ॥
 पुण्णामधेयं जं किंचि तस्स लाभं समागमं । विवद्धि अत्थसिद्धिं च सव्वमत्थि ति णिद्दिसे ॥ ५९ ॥
 पुरिसं जा अपत्थद्धा महिला पुच्छति अंगवि । सुण्हं दुहितरं दासी पसुका-महिसि-गाविओ ॥ ६० ॥
 थीणामधेयं जं किंचि तस्स लाभं समागमं । अत्थसिद्धिं विवद्धि च सव्वमत्थि ति णिद्दिसे ॥ ६१ ॥
 20 पमदायं अपत्थद्धा महिला पुच्छति अंगवि । पत्तिं पुत्तं च महिसं च हत्थि अस्सं तधोसभं ॥ ६२ ॥
 पुण्णामधेयं जं किंचि तस्स लाभं समागमं । अत्थसिद्धिं विवद्धि च सव्वमत्थि ति णिद्दिसे ॥ ६३ ॥
 पमदायं अपत्थद्धा पमदा पुच्छति अंगवि । सुण्हं दुहितरं दासी पसुका-महिसि-गाविओ ॥ ६४ ॥
 थीणामधेयं जं किंचि तस्स लाभं समागमं । अत्थसिद्धिं विवद्धि च सव्वमत्थि ति णिद्दिसे ॥ ६५ ॥
 पमदायं च पुरिसो पुरिसे व पमदा सितो । णपुंसकत्थं पुच्छेज्ज णत्थित्तेण वियागरे ॥ ६६ ॥
 25 णपुंसके अपत्थद्धो पुरिसो अत्थं तु पुच्छति । पुण्णामधेयं जं किंचि सव्वं णत्थि ति णिद्दिसे ॥ ६७ ॥
 णपुंसके अपत्थद्धो पुरिसो अत्थं तु पुच्छति । थीणामधेयं जं किंचि सव्वमत्थि ति णिद्दिसे ॥ ६८ ॥
 णपुंसके अपत्थद्धा महिला अत्थं तु पुच्छति । थीणामधेयं जं किंचि सव्वमत्थि ति णिद्दिसे ॥ ६९ ॥
 पुरिसम्मि अपत्थद्धो अत्थं पुच्छे णपुंसको । पुण्णामधेयं जं किंचि सव्वमत्थि ति णिद्दिसे ॥ ७० ॥
 पुरिसम्मि अपत्थद्धो अत्थं पुच्छे णपुंसको । थीणामधेयं जं किंचि सव्वमत्थि ति णिद्दिसे ॥ ७१ ॥
 30 पमदायं अपत्थद्धो अत्थं पुच्छे णपुंसको । पुण्णामधेयं जं किंचि सव्वं णत्थि ति णिद्दिसे ॥ ७२ ॥
 पमदायं अपत्थद्धो अत्थं पुच्छे णपुंसको । थीणामधेयं जं किंचि सव्वमत्थि ति णिद्दिसे ॥ ७३ ॥
 णपुंसके अपत्थद्धो अत्थं पुच्छे णपुंसको । णपुंसकं तु जं किंचि सव्वं णत्थि ति णिद्दिसे ॥ ७४ ॥

१ पुरिसं सप्र० ॥ २ णहुसं हं० त० ॥ ३ महागमं हं० त० विना ॥ ४ णहुसं दु० हं० त० ॥ ५ 'सिता' स्यादित्यर्थः ॥
 ६ सव्वमत्थि ति त० ॥

णपुंसके अपत्थद्धो अत्थं पुच्छे णपुंसको । पुण्णामधेयं जं किंचि सव्वं णत्थि ति णिद्दिसे ॥ ७५ ॥
 णपुंसके अपत्थद्धो अत्थं पुच्छे णपुंसको । धीणामधेयं जं किंचि सव्वमत्थि ति णिद्दिसे ॥ ७६ ॥
 पमदायं च पुरिसे च पंडको जो अपस्सितो । णपुंसकत्थं पुच्छेज्ज अत्थि ति अभिणिद्दिसे ॥ ७७ ॥
 पुरिसो पमदा वा वि पंडकं जे अपस्सिते । अत्थि ति परिपुच्छेज्ज सव्वं णत्थि ति णिद्दिसे ॥ ७८ ॥
 पडिपुण्णम्मि बालम्मि उदगगे जोव्वणत्थिते । विगाढे मज्झिमवये जुण्णे आतंकिते तथा ॥ ७९ ॥ 5
 आरोगं वाधिपुट्टम्मि हीणे दीणे व अंगवि । उदत्तदेसे मुदिते हीणालंकारभूसिते ॥ ८० ॥
 पुरिसे य पमदायं च तधेव य णपुंसके । मणुस्स-तिज्जजोणीसु अपत्थद्धेसु अंगवी ॥ ८१ ॥
 सुभा-ऽसुभं फलं सव्वं तज्जातपडिरूवतो । इट्ठे इट्ठं वियाणीया अणिट्ठे वि य गरहियं ॥ ८२ ॥
 जाणम्मि तु अपत्थद्धो जदि पुच्छति अंगवि । जहण्णुत्तम-मज्झम्मि फलं बूया विभागसो ॥ ८३ ॥
 अचले उत्तमे जाणे उत्तमत्थो पसस्सते । मज्झिमे मज्झिमो अत्थो एत्थ मे णत्थि संसतो ॥ ८४ ॥ 10
 जुत्तम्मि [य] अपत्थद्धे जाणे जो तु पुच्छति । सव्वसंगमणं बूया ततो चेवऽत्थसंपदा ॥ ८५ ॥
 पिट्ठं णरो व णारी वा दक्खिणं जो अपस्सितो । अब्भंतरामुहो पुच्छे गिहस्सऽब्भंतराठितो ॥ ८६ ॥
 आगामी पवसियं बूया पुत्तमावण्णमादिसे । पतिणा समागमं बूया पुत्तेण य समागमं ॥ ८७ ॥
 पिट्ठं णरो व णारी वा दक्खिणं जो अपस्सितो । बाहिराभिमुहो पुच्छे गिहमब्भंतरा ठितो ॥ ८८ ॥
 कण्णा य पतिलाभा य गब्भिणी य पजायति । पवासं णिग्गमं मोक्खं सव्वं बूया अणागतं ॥ ८९ ॥ 15
 पिट्ठं णरो व णारी वा दक्खिणं जो अपस्सितो । बाहिराभिमुहो पुच्छे उम्मरस्स बहि ठितो ॥ ९० ॥
 कण्णा य पतिलाभा य गब्भिणी य पजायति । पवासं णिग्गमं मोक्खं सज्जकालं पवेदये ॥ ९१ ॥
 पिट्ठं णरो व णारी वा दक्खिणं जो अपस्सितो । अब्भंतरामुहो पुच्छे उम्मरस्स बहि ठितो ॥ ९२ ॥
 आगामी पवसियं बूया कण्णा वा वि उवट्ठितं । पतिणा समागमं बूया पुत्तेण य समागमं ॥ ९३ ॥
 पिट्ठं णरो व णारी वा वामं जो अपस्सितो । अब्भंतरामुहो पुच्छे गिहस्सऽब्भंतरा ठितो ॥ ९४ ॥ 20
 ण्हुसं पतिट्ठियं बूया कण्णं वा वि पतिट्ठियं । ण्हुसाय संगमं बूया भज्जाय य समागमं ॥ ९५ ॥
 पिट्ठं णरो व णारी वा वामं जो अपस्सितो । बाहिराभिमुहो पुच्छे गिहस्सऽब्भंतरा ठितो ॥ ९६ ॥
 ण्हुसं पतिट्ठियं बूया कण्णं वा वि पतिट्ठियं । ण्हुसाय संगमं बूया भज्जाय य समागमं ॥ ९७ ॥
 पिट्ठं णरो व णारी वा वामं जो अपस्सितो । बाहिराभिमुहो पुच्छे बहि ठातुत्तरुंबरे ॥ ९८ ॥
 पवासं णारिणं बूया गब्भिणीय पयायणं । मोक्खं वि या णिग्गमणं सज्जकालं पवेदये ॥ ९९ ॥ 25
 पिट्ठं णरो व णारी वा वामं जो अपस्सितो । अब्भंतरामुहो पुच्छे बहि ठातुत्तरुंबरे ॥ १०० ॥
 पवस्सिस्साऽऽगमं बूया कण्णं वा वि उवट्ठियं । ण्हुसाय भज्जाय समं संगमो समुवत्थितो ॥ १०१ ॥
 सुक्कं तण व कट्ठं वा कवाडं कडिकं तथा । जज्जरं तध भिण्णं वा अप्पसत्थं अपस्सते ॥ १०२ ॥
 णवं जुण्णं च णिव्वज्जं चेतितं दुविधं पि वा । अपस्सये कवाडाणि सुभेणऽत्थेण जोजये ॥ १०३ ॥
 अब्भंतरकवाडे जो पुच्छेज्जऽणुपस्सितो । आगमो णिग्गमो णत्थि संरोधं वा वि णिद्दिसे ॥ १०४ ॥ 30
 बाहिरेण कवाडस्स पुच्छेज्ज अणुपस्सितो । आगमं णिग्गमं बूया संरोधं च ण णिद्दिसे ॥ १०५ ॥

१ सव्वमत्थि ति त० ॥ २ अरोगं वावियुद्धम्मि हं० त० ॥ ३ अपत्थंभेसु सप्र० ॥ ४ उम्बरस्य इत्यर्थः ॥
 ५ दक्खिणं हं० त० ॥ ६ राभिमुहो हं० त० ॥ ७ भज्जाइ य हं० त० ॥ ८ पुच्छे गिहस्सऽब्भंतरा ठितो सप्र० ॥
 ९ उम्मरे हं० त० ॥ १० सुक्खत्तणं हं० त० विना ॥ ११ जज्जरंतराभिन्नं वा हं० त० ॥ १२ ज्जं चितितं सप्र० ॥
 १३ योजयेत् इत्यर्थः ॥ १४ भावि णि हं० त० ॥

- जुण्णो वि जज्जरो कुड्डो सव्वत्थीके गिरत्थको । णवो दढो उज्जुको य सव्वत्थीके पसस्सते ॥ १०६ ॥
 मेढ्रो चित्तो य सुद्धो य दढो वा वी सुभो तथा । अपस्सयत्थे कुड्डो सव्वत्थे पूयितो सदा ॥ १०७ ॥
 केडितो अलितो तणकुड्डो तथा कणगपासितो । कुड्डापस्सया एते असारं ण प्ससस्सते ॥ १०८ ॥
 चित्तिको मैज्झयक्खंभो उज्जुक्कस्सो पसस्सति । जज्जरो फलितो भिण्णो सव्वत्थेसु ण पूयितो ॥ १०९ ॥
 5 पासादस्स तथा खंभो धारणो य गिहस्स जो । णावाखंभो झयक्खंभो दगलट्ठी य पूयिता ॥ ११० ॥
 दीवरुक्खस्स लट्ठी [य] णिव्वज्जा उज्जुका थिरा । एते अत्थगते इट्ठा पसत्था य अपस्सता ॥ १११ ॥
 पौडोलकस्स खंभो छायाखंभो मतस्स य । चल भग्गो य भिण्णो य सव्वे थंभा ण पूयिता ॥ ११२ ॥
 पुप्फिया फलिया णीला चेतिता खीरपादपा । अपस्सते पसत्था या सव्वत्थीगगते सुभा ॥ ११३ ॥
 णिपुप्फो णिप्फलो सुक्खो जो य कंटकिपायवो । दड्डो भिण्णो य भग्गो य सव्वत्थीके ण पूयितो ॥ ११४ ॥
 10 सोम्मा उ अवक्खित्ता उदत्ता सव्वचेतितपादवा । अपस्सया पसस्संते सव्वत्थीके कते सुभे ॥ ११५ ॥
 अणभियिता चला भिण्णा उच्छुद्धा झामिता तथा । खंड-भग्गा विस्सिण्णा य अपत्थंभे ण पूयिता ॥ ११६ ॥
 तणभारो वि वा णीलो णीलो वा पण्णवोट्टलो । पोट्टलो फल-मूलानं पुप्फाणं च पसस्सते ॥ ११७ ॥
 पहट्ठा अकलिट्ठा य सव्वत्थीके पसस्सते । हरितापस्सता सव्वे मित्ताणा ण प्ससस्सते ॥ ११८ ॥
 केला घतस्स तेल्लस्स सुराकुंभो अरंजरो । भायणं बीयपुण्णं वा सव्वत्थीगे पसस्सते ॥ ११९ ॥
 15 मणि-मुत्त-हिरण्णाणं तथा अच्छादणस्स य । मंजूसा पडिपुण्णा वा अपत्थंभेसु पूयिता ॥ १२० ॥
 दधि-दुद्धस्स पुण्णा य परिपुण्णा भोयणस्स य । गुल-लवणस्स मज्जस्स परिपुण्णाऽपस्सया सुभा ॥ १२१ ॥
 एते अपस्सया सव्वे भायणेसु सुपूयिता । णिव्वुत्तीणं पसत्थाणं सत्थाणं अत्थसाधका ॥ १२२ ॥
 पुण्णाणि तु एताणि उत्तमत्थकराणि तु । ऊणेषु किंचि परिहाणी उत्तमस्स पक्कित्तिता ॥ १२३ ॥
 रित्तकेसु तु एतेसु मज्झिमा अत्थसंपदा । पलोद्धितं वा भिण्णं वा सव्वत्थीके गिरत्थकं ॥ १२४ ॥
 20 थलिका सिला तडं वा वि थावरेसु पसस्सते । आगमे णिग्गमे वा वि चैरेसु णि (ण) पसस्सते ॥ १२५ ॥
 तणस्स भारो सुक्खो [वा] सुक्खो वा पण्णवोट्टलो । फल-पुप्फवोट्टला सुक्खा सव्वत्थीके ण पूयिता ॥ १२६ ॥
 विसाणं अट्ठिकं कट्ठं सव्वत्थीके ण पूयितं । इंगाल-छारिका पुंसु (पंसु) सव्वत्थीके ण पूयितं ॥ १२७ ॥
 कट्ठं वा सयणं वा वि आसणं जाणमेव य । सेलो तडो व भित्ति वा दड्डु चेते ण पूयिता ॥ १२८ ॥
 पराजयमणारोग्गं अत्थहाणिमणिव्वुत्ति । विसंजोगं च जाणीया झामियापस्सये विदू ॥ १२९ ॥
 25 सजीवेसु य सज्जीवं अत्थं बूया वियक्खणो । अज्जीवेसु य अज्जीवं अपत्थद्वेसु णिहिसे ॥ १३० ॥
 चउप्पदे अपत्थद्वो अत्थं पुच्छति अंगवि । चउप्पयं वा जाणं वा अत्थि तेवं विथागरे ॥ १३१ ॥
 धण्णम्मि य अपत्थद्वो अंगवी परिपुच्छति । वासारत्तं व अग्घं वा सव्वमेत्थं पवेदये ॥ १३२ ॥
 जाणम्मि [य] अपत्थद्वो अंगवि परिपुच्छति । गमणं वा पवासं वा सव्वमत्थि ति णिहिसे ॥ १३३ ॥
 अपस्सयेसु सव्वेसु अत्थो स-परसंसितो । अणापस्सयरूवेसु भवे अत्थो असंसितो ॥ १३४ ॥
 30 जाणे वा वाहणे वा वि अपत्थद्वो तु पुच्छते । चले पवासं मोक्खं च अचले अत्थमादिसे ॥ १३५ ॥

१ मत्तो चित्तो य मुद्धो य हं० तं० ॥ २ कलितो अलितो तणकुड्डो तथा कडमपासितो हं० तं० ॥ ३ मज्झकुंभो य उ० हं० तं० ॥ ४ भो य पक्खंभो हं० तं० ॥ ५ पड्डोलकस्स खंभा मो० ली० सि० । पड्डोलक्खस्स खंभा सं० ॥ ६ चलरुक्खा य हं० तं० ॥ ७ के हथे सुभे हं० तं० ॥ ८ उच्छुद्धा हं० तं० ॥ ९ सामिता हं० तं० विना ॥ १० लवणं समणुज्जस्स हं० तं० ॥ ११ णिव्वत्तीणं हं० तं० ॥ १२ अत्थाणं हं० तं० विना ॥ १३ चरणे पुण पस० हं० तं० ॥ १४ सामियावसये हं० तं० विना ॥ १५ अप्पसत्थेसु सप्प० ॥ १६ सपरसंसितो सं ३ । समरसंसितो सि० ॥ १७ असंसितो सि० ॥

सोमाणे वा सितीयं वा अपत्थद्धो तु पुच्छति । पवासं अत्थहाणि च चलेसु चलसंपदा ॥ १३६ ॥
 आसंदगे अपत्थद्धो अंगवि परिपुच्छति । वरसंसितइक्कस्सं अत्थसिद्धिं च णिदिसे ॥ १३७ ॥
 सापस्सते अपत्थद्धो आउत्तो जदि पुच्छति । भज्जं ण्हुसं कुडुंबं च खेत्त वत्थुं च अत्थितं ॥ १३८ ॥
 आसणे सव्वतोभदे अपत्थद्धो तु पुच्छति । कुडुंबवद्धिं इस्सरियं काम-भोगे य णिदिसे ॥ १३९ ॥
 सयणा-ऽऽसणे अपत्थद्धो अत्थं जं किंचि पुच्छति । भज्जं पुत्तघरा-ऽऽवासं अत्थत्ताभं च णिदिसे ॥ १४० ॥ 5
 दारपिडायऽपत्थद्धो वामायं जति पुच्छति । भज्जाणिमित्तं अत्थस्स हाणी सोगं च णिदिसे ॥ १४१ ॥
 दारपिडं अपत्थद्धो दक्खिणं जति पुच्छति । मातुणिमित्तं सोकं च अत्थहाणि च णिदिसे ॥ १४२ ॥
 कवाडम्मि अपत्थद्धो अत्थं जं किंचि पुच्छति । पितुणिमित्तं सोकं च अत्थहाणि च णिदिसे ॥ १४३ ॥
 अरंजरस्स पुण्णस्स पेढिकं जो अपस्सितो । जं किंचि सुभं पुच्छेज्ज सव्वमत्थि ति णिदिसे ॥ १४४ ॥
 सापस्सते सअत्थारे इट्ठम्मि जति पुच्छति । अत्थसिद्धिं कुडुंबस्स अत्थसिद्धी य णिदिसे ॥ १४५ ॥ 10
 ददं कुडु सुभं गेहं पुच्छे जति अपस्सितो । अंतो अब्भंतरो अत्थो सुभो वज्जो(बज्जो) य हायति ॥ १४६ ॥
 अपत्थद्धो ठितो दारे अत्थं च जति पुच्छति । कण्णापवाहणे मोक्खं पवासं च^१ऽत्थ णिदिसे ॥ १४७ ॥
 अपत्थद्धो ठितो खंभे अत्थं च जति पुच्छति । मणुस्सजाता वणजाता अप्पसत्थं च णिदिसे ॥ १४८ ॥
 उग्घाडं वा कवाडं वा अपत्थद्धो तु पुच्छति । कुडुंबहाणी धणहाणी केसं सोगं च णिदिसे ॥ १४९ ॥
 वेइयं पेढियं वा वि णिस्सेणिं वा अपस्सितो । जं किंचि अत्थं पुच्छेज्ज बाहिरत्थे पसस्सते ॥ १५० ॥ 15
 चेतिके जो अपत्थद्धो अत्थं जं किंचि पुच्छति । दिव्वमिस्सरियं भोगे उदत्तमिति णिदिसे ॥ १५१ ॥
 बद्धे अपस्सते बंधं मिधो भेदं च जज्जरे । विणिपातं च^२ खंडम्मि हाणि भंगं विणिदिसे ॥ १५२ ॥
 जाणे वा वाहणे वा वि अवत्थद्धो तु पुच्छति । चले पवासं मोक्खं च अचले अत्थमादिसे ॥ १५३ ॥
 सोमाणे सीतिअं वा वि अपत्थद्धो तु पुच्छति । पवासं अत्थहाणि च चलेसु चलसंपदा ॥ १५४ ॥
 अपस्सयमिह सज्जीवे सज्जीवत्थं वियागरे । अज्जीवम्मि य अज्जीवं विभत्तीय वियागरे ॥ १५५ ॥ 20
 अपस्सये उत्तमम्मि उदत्ता अत्थसंपदा । मज्झे य मज्झिमा बद्धी दीणे दीणं पवेदये ॥ १५६ ॥
 अपस्सतेसु सव्वेसु तज्जातपडिरूवणं । अपेक्ख सम्मं बूया जघण्णुत्तम-मज्झिमं ॥ १५७ ॥
 अप्पसत्थेसु सव्वेसु पसत्थं णाभिणिदिसे । पसत्थेसु य सव्वेसु अप्पसत्थं ण णिदिसे ॥ १५८ ॥

॥ अपस्सयाणि सम्पत्ताणि ॥ १ ॥ छ ॥

[दसमं ठियपडलं]

25

अपस्सया सत्तरस इति वुत्ता विभागसो । अट्ठावीसं ठिताणंगे कित्तइस्सं विभागसो ॥ १ ॥

पुरतो १ दक्खिणतो चेव २ पच्छतो ३ वामतो तथा ४ ।

विदिसासु चेव ठाणाणि ८ उट्ठं ९ तध अघे य तु १० ॥ २ ॥

एवं दिसाविभागेण ठाणं दसविधं भवे । अट्ठावीसविधीजुत्तं पतिट्ठाणं विधीयते ॥ ३ ॥

30

१ सोमासे हं० त० विना ॥ २ 'सितीयं' शिबिकायामित्यर्थः ॥ ३ वरसंसितइसिक्खं हं० त० विना ॥ ४ आगुत्तो जति हं० त० ॥ ५ मेत्तणिं सि० । सामूणिं हं० त० ॥ ६ सोकस्स अत्थं सप्र० ॥ ७ 'स्स पदिकं हं० त० ॥ ८ 'तो असत्थारे हं० त० ॥ ९ य आहति हं० त० विना ॥ १० तत्थ हं० त० ॥ ११ 'जाती धणुजाती हं० त० विना ॥ १२ रोगं सोगं सि० ॥ १३ दव्वमिं हं० त० ॥ १४ विणीघातं हं० त० विना ॥ १५ च खुडुम्मि हं० त० ॥ १६ सोमाणसेतीअं हं० त० विना ॥ १७ 'यम्मि जीवेसु जीवत्थं हं० त० ॥ १८ 'पडिग्घायणं सं ३ पु० । 'पडियायणं सि० ॥ १९ हस्तचिह्नमध्यवर्ती अयं पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २० 'त्तयस्सं हं० त० ॥

पतिट्ठाणविसेसेहिं विभंगा वीसमट्ठ य । ठाणे अणेया अंगविणा जघण्णुत्तम-मज्झिमा ॥ ४ ॥

आसणे १ सयणे चेव २ तधेव सयणाऽऽसणे ३ । चतुप्पदे ४ मणुस्सेसु ५ ठाणा जाणविधीसु य ६ ॥ ५ ॥
गेहम्मि पासादतले ठाणं ७ सौपाणसेणिसु ८ । रुक्खट्ठाणे य हरितम्मि ९ मालायोगिगते सुभे १० ॥ ६ ॥
धण्ण ११ भोयणजोणीयं ठाणं १२ वैत्थुपरिच्छदे १३ । मणि-मुत्त-पण्ह-रजते १४ भूसणा-ऽऽभरणेसु वा १५ ॥ ७ ॥

- 5 भोयणोपक्खरे चेव ठाणं संपरिकित्तियं १६ । उच्चणीचे व देसम्मि ठाणाणि संविजाणिया १७ ॥ ८ ॥
ठाणं च सुद्धपुढवीयं १८ ठाणं तध सिलायले १९ । उदगे २० कद्दमे चेव २१ अद्दे य तध गोमये २२ ॥ ९ ॥
पंथे य तधा ठाणं २३ पणाली-णिद्धमेसु य २४ । मूलजोणिगते सुक्खे ठाणं २५ असुच्चिकेसु य २६ ॥ १० ॥
केस-रोम-ण्ह-ऽट्ठीसु ठाणं २७ ठाणं च झामिते २८ । अट्ठावीसं विधीजुत्ता ठाणा एवं विभावये ॥ ११ ॥

पसत्थमपसत्थं च दुविधं ठाणं समासतो । एक्केकं दुविधं ततो जीवा-ऽजीवविभागसो ॥ १२ ॥

- 10 सजीवं दुविधं ततो जंगमं थावरं तधा । अज्जीवं तिविधं भवति जोणीण पविभागसो ॥ १३ ॥
पाणजोणिगतं चेव मूलजोणिगतं तधा । धातुजोणिसमुत्थाणं अज्जीवं एव जाणिया ॥ १४ ॥
दढं चलं च लुक्खं च असुरियं सुयिरेव य । रमणीयमरम्मं च णिण्णं उण्णतमेव य ॥ १५ ॥
उदत्तमणुदत्तं च जहण्णुत्तम-मज्झिमं । ठाणमेवं भवे णेयं समासा वित्थरेण य ॥ १६ ॥

पुच्छकस्संगचेट्ठाहिं दीणोदत्तविधीहि य । तज्जातपडिरूवेहिं थाणं जहण्णुत्तम-मज्झिमं ॥ १७ ॥

- 15 पुरओ ठितं दक्खिणतो तधा पुरिमदक्खिणं । दक्खिणं पच्छिमे भागे ठितं पच्छिमतो तधा ॥ १८ ॥
पच्छिमं वामभागम्मि वामे पस्से ठितं तधा । पुरिमं वामभागम्मि ठितं उद्ध अधो तधा ॥ १९ ॥
पुरत्थिमं ठितं जं तु तधा पुरिमदक्खिणं । ठितं दक्खिणतो जं च पुरिस्सऽत्थे पसस्सते ॥ २० ॥
थिया वामं पसत्थं तु जं च वामपुरच्छिमं । पुरिस्सस्स वि धेताणि पमदत्थं पसस्सते ॥ २१ ॥
दक्खिणे पच्छिमे भागे वामभागे य पच्छिमे । पच्छिमाणि यं ठाणाणि पसत्थाणि णपुंसके ॥ २२ ॥
20 पुरिमे अणागतो अत्थो वत्तमाणो य पस्सतो । ठाणेसु अत्थो विण्णेयो अतिकंतो य पच्छतो ॥ २३ ॥
पुरत्थिमं दक्खिणतो जं च वामपुरत्थिमं । एतेसु पत्थितं विज्जा अत्थलाभं पुरेक्खडं ॥ २४ ॥
पच्छिमं दक्खिणं चेव जं वा वामेण पच्छिमं । एतेसु समतिकंतं विज्जा अत्थस्स संपदा ॥ २५ ॥
उपरि ठितो दिसाजं तु जो तु पुच्छति अंगविं । अत्थं विभत्तिसंजुत्तं पसत्थमभिणिहिसे ॥ २६ ॥
अधट्ठितो दिसायं तु जो तु पुच्छति अंगविं । पसत्थमपसत्थं वा वद्धी णत्थि ति णिहिसे ॥ २७ ॥
25 एवं दिसासु विदिसासु ठाणाणि समपेक्खिया । थी-पुमंस-णपुंसाणि दीणोदत्ताणि णिहिसे ॥ २८ ॥
आसणे सयणे जाणे वत्थे आभरणे तधा । पुप्फेसु फल-मूलेसु धण्णे भोयणजातिसु ॥ २९ ॥
चतुप्पदे मणुस्से वा ठितो तु जदि पुच्छति । अत्थं अत्था पवेदेहिं अप्पियं च पुणो लहुं ॥ ३० ॥
उदगं कद्दमो चेव पासादस्स तलो तधा । मेदिणी-पादपत्थाणे पसत्था गोमयं तधा ॥ ३१ ॥
णीला साहा तैणं नीलं परिसुक्खं गोमयं तधा । उपरिग्गहे व जाणे वा ण जयो ण पराजयो ॥ ३२ ॥
30 सुक्खसाहा तणं सुक्खं इंगाला छारिया तधा । एतेसु ठितो पुच्छेज्जा सव्वं णत्थि ति णिहिसे ॥ ३३ ॥
सुट्ठिते सुट्ठितो अत्थो सुभे देसे सुभो भवे । चले ठिते चलो अत्थो दुट्ठितम्मि य दुट्ठितो ॥ ३४ ॥
अंतोघरे ठितो पुच्छे सकमत्थं पवेदये । साधारणं मज्झिमम्मि बाहिरम्मि य बाहिरो ॥ ३५ ॥

१ पासाणतले सप्र० ॥ २ सोमाणं हं० त० ॥ ३ मामयो हं० त० विना ॥ ४ धणभा हं० त० विना ॥

५ वत्थपरि हं० त० ॥ ६ पण्णरं सि० ॥ ७ तिविधं सप्र० ॥ ८ हस्तचिह्नमध्यवर्त्ति पूर्वाद्धं हं० त० एव वर्त्तते ॥

९ 'धेताणि' हेयानि वर्जनीयानित्यर्थः ॥ १० य धण्णाणि सप्र० ॥ ११ पुरेक्खडं हं० त० ॥ १२ अट्ठाणाणि हं० ॥

१३ सणं सि० ॥ १४ साहा सणं सं ३ पु० सि० ॥ साहा रणं हं० त० ॥

सोमाणे सीतियं वा वि ठितो अत्थं तु पुच्छति । अत्थलाभो विरोहंते ओरुभंते य हायति ॥ ३६ ॥
 अंतोघरे ठितो पुच्छे अत्थो अर्ब्भितरो भवे । बाहिरऽब्भंतरे मज्झो बाहिरम्मि य बाहिरो ॥ ३७ ॥
 अंतोघरे ठितो पुच्छे उक्कट्ठा अत्थसंपदा । मज्झे य मज्झिमा वड्डी जहण्णा वा वि बाहिरे ॥ ३८ ॥
 उण्णमंतो ठितो पुच्छे सव्वत्थ य विवद्धते । विणमंतो ठितो पुच्छे अत्थहाणिऽस्स णिद्दिसे ॥ ३९ ॥
 ओणते उण्णते यावि ठितो अत्थं तु पुच्छति । हाणि वा हायमाणि वा अत्थहाणि च णिद्दिसे ॥ ४० ॥ 5
 परम्मुहो ठितो पुच्छे अत्था तस्स परम्मुहा । अभिमुहम्मि पुच्छंते अत्था तस्स अभिमुहा ॥ ४१ ॥
 पक्खवेट्ठितो वा वि तेरिच्छीणं च जो ठितो । मिच्छाजुत्त विवादेणं अत्थं बूया विचितितं ॥ ४२ ॥
 ठितो जाणे य पत्थे वा वाहणे वा वि पुच्छति । सव्वसंगमणं मोक्खं विप्पयोगं च णिद्दिसे ॥ ४३ ॥
 फल-पुप्फ-पवालेसु ठितो धण्णे व पुच्छति । दीणोदत्तं वियाणीया तथा लाभं पवेदये ॥ ४४ ॥
 उदत्ते तु ठितो पुच्छे वासं अत्थं च णिद्दिसे । णिद्धेसु कहमे वा वि सुभिकखं सुसमं वदे ॥ ४५ ॥ 10
 कुट्टंतरेठितो पुच्छे पणाली-णिद्धमेसु वा । मरणं विप्पयोगं च अत्थहाणि च णिद्दिसे ॥ ४६ ॥
 आसणम्मि ठितो पुच्छे पल्लकं सयणासणे । खिप्पमिस्सरियं बूया ओतिण्णे चलितो भवे ॥ ४७ ॥
 पाणजोणिगतं अत्थं गैब्भं तु परिपुच्छति । धातुमूलगतं वा वि दीणोदत्तेण णिद्दिसे ॥ ४८ ॥
 ठितो उदत्ते देसे तु अत्थं तु परिपुच्छति । सुभं उदत्तमत्थस्स ठाणाहि अभिणिद्दिसे ॥ ४९ ॥
 ठितो दीणे [प]देसे तु अत्थं तु परिपुच्छति । असुभं दीणमत्थस्स ठाणाहि अभिणिद्दिसे ॥ ५० ॥ 15
 उदत्ते वा वि ओमम्मि ठितो अत्थं तु पुच्छति । सुभम्मि तु सुभा वड्डी असुभे असुभा भवे ॥ ५१ ॥
 णिण्णे देसे ठितो यावि अत्थं तु परिपुच्छति । णिण्णे सुभे य णिद्धे य वड्डी लाभं च णिद्दिसे ॥ ५२ ॥
 णिण्णे असुभे य लुक्खे य विसमे कंटकालके । परिदट्ठे य पुच्छेज्जा अणिट्ठं तत्थ णिद्दिसे ॥ ५३ ॥
 चलाणि छल-णिण्णाणि सुक्ख-लुक्खाणि जाणि य । मिलाणाणि य थाणाणि असुयीणि तथेव य ॥ ५४ ॥
 खंड-जज्जर-भिण्णाणि भंत-भग्गाणि जाणि य । ~~वि~~ विसमाणि निरुद्धाणि बद्ध-दट्ठाणि जाणि य ॥ ५५ ॥ 20
 खराणि कक्खडालाणि छारिगाला तुंसे तथा । लौयको दहणमेलूको जे वऽण्णे एवमादिया ॥ ५६ ॥
 एवंविधेसु ठाणेसु ठितो जो परिपुच्छति । विणासमत्थहाणी य असुभं च पवेदये ॥ ५७ ॥
 एगपादट्ठितो वा वि चलंतो दुट्ठितो तथा । विणमंतो ओणमंतो वा दीणो वा जो तु पुच्छति ॥ ५८ ॥
 अप्ससत्थं तर्हि बूया पसत्थं णाभिणिद्दिसे । ठाणठाणविसेसेणं अंगवी पविभज्जतु ॥ ५९ ॥
 पसत्थेसु य सव्वेसु अप्ससत्थं ण णिद्दिसे । अप्ससत्थेसु सव्वेसु पसत्थं णाभिणिद्दिसे ॥ ६० ॥ 25

॥ [ठिय] पडलं सम्मत्तं ॥ १० ॥ छ ॥

१ अत्थभाणिं हं० तं० विना ॥ २ हाणं सि० ॥ ३ माणं वा हं० तं० विना ॥ ४ पक्खवितठिते वा वि हं०
 तं० विना ॥ ५ फले पुप्फे पवालेसु हं० तं० ॥ ६ बज्झं तु हं० तं० ॥ ७ ओगम्मि हं० तं० ॥ ८ असुयाणि हं०
 तं० विना ॥ ९ हस्तचिह्नमध्यवर्ति उत्तरार्धं हं० तं० एव वर्तते ॥ १० तुज्झा तथा सि० । तुज्झा वधा सं ३ पु० ॥
 ११ छायाकोट्टहणमेल्लंको हं० तं० ॥ १२ ठाणे ठाणविसें हं० तं० ॥

[एगारसमं पेक्खितविभासापडलं]

- अट्टावीसं ठिताणगे कित्तिताणि जथा तथा । दस विप्येक्खियाणगे कित्तियिस्सं विभागसो ॥ १ ॥
 पदक्खिणं च १ वामं च २ पुरतो ३ पच्छतो तथा ४ । ओलोकितं पंचमं च ५ छट्ठमुल्लोकितं तथा ६ ॥ २ ॥
 मुदितं पेक्खितं वा वि ७ अट्टमं दीणमेव य ८ । अभिहारि णवमं भवति ९ णीहारि दसमं भवे १० ॥ ३ ॥
 ५ थिआ वामं पसंसंति पिक्खितं अत्थसाधणं । थीलाभे वा वि पुरिस्स पसत्थं वामपेक्खियं ॥ ४ ॥
 पुरिस्स दक्खिणं पत्थं पुरिस्सत्थेसु पेक्खितं । थिआ य पूयितं भवति पुत्तस्सऽत्थे पत्तिस्स वा ॥ ५ ॥
 ८ ओलोइते पिक्खितम्मि अत्थहाणी पवेदये ९ । उल्लोइते विवद्धि च पेक्खितम्मि वियागरे ॥ ६ ॥
 मुदिते पेक्खिते वा वि उत्तमत्थं पवेदये । पेक्खितम्मि य दीणम्मि अणिट्ठा अत्थसंपदा ॥ ७ ॥
 आहारिपेक्खिते वा वि आगमं संपवेदये । णीहारिपेक्खिमाणे य णिग्गमं संपवेदये ॥ ८ ॥
 १० पेक्खितं उमुकं पुरिमं दक्खिणं पुव्वदक्खिणं । ओहितं णिव्वतं हिट्ठं पसत्थं अत्थसाधकं ॥ ९ ॥
 थिआ वामं पसंसंति जं च वामपुरत्थिमं । णपुंसके पसत्थं वा पेक्खितं पच्छिमेण तु ॥ १० ॥
 उल्लोइतं उत्तमेसु पेक्खितं तु पसस्सते । आहारि मुदितं वा वि सव्वत्थीककतेसु य ॥ ११ ॥
 ओलोइतं पच्छिमं वा अप्पसत्थं विपेक्खितं । णीहारि परिणेओ य सव्वत्थीगकते सुभं ॥ १२ ॥
 समुज्जुगं पच्छिमतो यं च वामेण पच्छतो । पच्छतो दक्खिणं वा वि णपुंसत्थेसु पूयितं ॥ १३ ॥
 १५ पुरिस्स थिया वा वि तयो एते उ पेक्खिया । पसत्थेण प्सस्सते अप्पसत्था तु ते सदा ॥ १४ ॥
 उट्ठमुल्लोगिते उज्जु खिप्पमिस्सरियं वदे । अभिवद्धिते य अत्थाणं जयत्थाणं च णिदिसे ॥ १५ ॥
 ओलोइतं च जं हेट्ठा दीणं वा वि विलोचितं । रुण्णारुतं च णिज्झायं सव्वं गरहियं भवे ॥ १६ ॥
 उल्लोइतं च पुरतो तथा पुरिमदक्खिणं । तं चोवपेक्खितं उज्जु अत्थसिद्धि पवेदये ॥ १७ ॥
 उल्लोइते दक्खिणम्मि दक्खिणे य पलोइते । सव्वत्थस्स विवद्धंते सव्वतो उत्तमा सुभा ॥ १८ ॥
 २० उल्लोइतं च जं वामं जं च वामं पलोइतं । पुव्वुत्तरं च जं जोगे मज्झिमत्थे पसस्सते ॥ १९ ॥
 उज्जुउल्लोइते दिग्घे उप्पुतं तुरियं तथा । पवासगमणं खिप्पं खिप्पवासं च णिदिसे ॥ २० ॥
 दीणं दूरं च दिग्घं च पवासे ण पसस्सते । हिट्ठं मुदितं च थोवं च आगमम्मि पसस्सते ॥ २१ ॥
 पहट्ठपेक्खितं दिग्घं दिग्घा अत्था सुभा भवे । पासे दीणं च णिज्झाति आगमो असुभो भवे ॥ २२ ॥
 पीतिउल्लोगितं जं च हासेण य विलोगितं । अवत्थितमणुव्विग्गं सव्वत्थेसु पसस्सते ॥ २३ ॥
 २५ दीणं उल्लोगितं जं वा दीणं वा वि पलोगितं । अणवत्थितं समुव्विग्गं अप्पसत्थेसु कित्तितं ॥ २४ ॥
 अपेक्खियं दिसा सव्वा भूमीलोकमपेक्खति । तुरितं उवणिमिल्लंते विपुला अत्थसंपदा ॥ २५ ॥
 अविपेक्खमाणो उज्जुकं पस्सेणं जो तु पेक्खति । विसमं चिराभिमिल्लंते अत्थं बूया अवत्थितं ॥ २६ ॥
 णिज्झाइते दक्खिणम्मि पुरिस्सऽत्थं पवेदये । वामतो य थिआ अत्थं पच्छतो य णपुंसके ॥ २७ ॥
 पेक्खितम्मि उदत्तम्मि उक्कट्ठा अत्थसंपदा । मज्झिमा मज्झिमे वट्ठी हीणं दीणेसु णिदिसे ॥ २८ ॥
 ३० पेक्खिते पुरतो उज्जु अत्थं बूया अणागतं । वत्तमाणं च पस्सेसु अतिक्कंतं च पच्छतो ॥ २९ ॥

१ थीलाभो हं० तं० ॥ २ णं पसत्थं हं० तं० । णं सत्थं सि० ॥ ३ ८ ९ एतच्चिह्नमध्यवर्ति पूर्वार्द्धं हं० तं० नास्ति ॥
 ४ उहितं णिव्वति हिट्ठं हं० तं० ॥ ५ समुज्जगं हं० तं० ॥ ६ एते सुपेक्खिणं हं० तं० ॥ ७ उल्लोइतं सि० ॥ ८ ओलोइको
 व पुं हं० तं० ॥ ९ ओलोइतं हं० तं० ॥ १० जोगो हं० तं० ॥ ११ ओलोइते दिग्घे मुप्फरितं हं० तं० ॥ १२ विप्यवासं
 हं० तं० सि० ॥ १३ पासंदाणं हं० तं० ॥ १४ णिस्साति हं० तं० विना ॥ १५ तं च हं० तं० विना ॥ १६ विभासितं हं०
 तं० ॥ १७ विप्येक्खित दिसा हं० तं० ॥ १८ पेक्खितो पुरतो अत्थं अत्थं हं० तं० ॥

पेक्खितेसु य सव्वेसु थी-पुमंस-णपुंसके । दीणोदत्तेहिं अत्थो तु पुच्छंतस्स विआकरे ॥ ३० ॥
पेक्खितेसु पसत्थेसु अप्पसत्थं ण णिदिसे । पेक्खिते अप्पसत्थे य पसत्थं णेव णिदिसे ॥ ३१ ॥

॥ भूमीकम्मे पेक्खितविभासापडलं सम्मत्तं ॥ ११ ॥ छ ॥

[बारसमं हसितविभासापडलं]

दस विप्पेक्खियाणं इति वृत्ताणि भागसो । हसिताणि चोदसंगे कित्तयिस्सामि भागसो ॥ १ ॥ 5
पुरिमं देक्खिणे चेव वामतो पच्छिमेण य । अकामहसितं १ दीणं २ भट्टाहसितं ३ दारुणं ४ ॥ २ ॥
णिस्सद् ५ विलितं वा वि ६ पेम्मा ७ मुदितं ८ जंघियं ९ । अच्चत्थहसितं वा वि १० भवेत्तहसितं तथा ११ ॥ ३ ॥
बहुमाणहसितं वा वि १२ णिमिल्लहसितं तथा १३ । हसितं सअंसुगं वा वि १४ संगहा चोदसाऽऽहिता ॥ ४ ॥
अब्भंतरं तु हसितं सव्वत्थेसु पसस्सते । णिब्बाहिरं च हसितं अप्पसत्थेसु कित्तितं ॥ ५ ॥
हेसंतो जति पुच्छेज्जा बाहिरं विगतस्सरो । बंधं व अत्थहाणि वा अप्पसत्थं च णिदिसे ॥ ६ ॥ 10
हसंतो य णिमिल्लंतो अत्थं जं किंचि पुच्छति । अदिट्ठकमणत्थं च खिप्पमेव पवेदये ॥ ७ ॥
हसंतं तु सअंसुगं जं अत्थं परिपुच्छति । पियस्स मरणं खिप्पं अणत्थं चऽस्स णिदिसे ॥ ८ ॥
ओहत्थहसियं कुद्धं हीलया फड्डितं तथा । पीलिया हसियं दुट्ठं अप्पसत्थेसु कित्तितं ॥ ९ ॥
पीतीअ हसितादुट्ठं अत्थतो मधुरं मयु । देसे वा अंगविदिट्ठं पुच्छंतो वा पसस्सति ॥ १० ॥
बहुमाणेण हसितं वंदते पुच्छणाय वा । पहसंतो पीतिआ पुच्छे अत्थसिद्धी स णिदिसे ॥ ११ ॥ 15
उच्चस्सरेण णीहारी अट्टहासाय बाहिरा । हसते हसितं चेव सव्वं गरहितं भवे ॥ १२ ॥
समत्थं मुदितं भवति जं नातिविपुलं भवे । अंतोहसीयमाणं तु सततं उत्तमं भवे ॥ १३ ॥
उत्थितं हसितं वंते सुभं तं हासहासितं । पुण्णा मयुं अणीहारी सव्वत्थेसु पसस्सते ॥ १४ ॥
अभिमुहम्मि हसिते अत्थो अब्भंतरो भवे । बाहिरब्भंतरे मज्झो बाहिरम्मि य बाहिरो ॥ १५ ॥
अब्भंतरम्मि हसिते उक्कट्ठा अत्थसंपदा । मज्झिमे मज्झिमा वद्धी हीणा भवति बाहिरे ॥ १६ ॥ 20
अब्भंतरम्मि हसिते सकमत्थं पवेदये । साधारणं मज्झिमगे बाहिरम्मि य बाहिरं ॥ १७ ॥
पदक्खिणम्मि हसितम्मि पुरिसस्सऽत्थं पवेदये । वामतो इत्थिआ अत्थं पच्छतो य णपुंसके ॥ १८ ॥
पुरत्थिभम्मि हसिते अत्थं बूया अणागतं । वत्तमाणं च पस्सेसु अतिकंतं च पच्छतो ॥ १९ ॥
आसण्णकालं चाऽऽसण्णं अंतकालं च मज्झिमे । अव्वक्खितं च हसिते चिरकालं पवेदये ॥ २० ॥
हसिते य उदत्तम्मि उक्कट्ठा अत्थसंपदा । मज्झिमे मज्झिमा वद्धी दीणे हाणि तु णिदिसे ॥ २१ ॥ 25
अणीहारि पसत्थं च णिद्धं दितं अविस्सरं । बहुमाणा पमोदा वा हसितं संपसस्सते ॥ २२ ॥
णेमिन्ती दिस्स सोमं तु तहाऽट्ठं अविरोधितं । उद्धम्मुहं पहसति सव्वत्थीयेसु पूयितं ॥ २३ ॥
बहुमाणपेक्खिणायुत्तं आणाणतमकंपितं । अंतोमुहं पहसितं पुच्छंतेण पसस्सति ॥ २४ ॥
णीहारि चेव दीणं च अकामं विस्सरं तथा । हीला वा हासदोसा य सव्वत्थीके ण पूयितं ॥ २५ ॥

१ दक्खिणं हं तं सि० ॥ २ हीणं सि० ॥ ३ णिस्सद् हं तं विना ॥ ४ जंघियं तं ॥ ५ हसंतो भूमि
पुं हं तं ॥ ६ आदिट्ठं सि० ॥ ७ आणित्थ वऽस्स सं ३ पु० ॥ अणिच्छंतस्स सि० ॥ ८ कुट्ठं हं तं ॥
९ दसे वा सप्र० ॥ १० उद्धितं हं तं विना ॥ ११ सोमत्तं तहां हं तं ॥ १२ अवरोधितं सप्र० ॥ १३ अणोणतं
हं तं विना ॥

- अकामहसितं हीलाय अप्ससदं तुक्कगहे । सव्वंगकंपितं चेव हसितं सा ण पूयितं ॥ २६ ॥
 हसितेसु य सव्वेसु थी-पुमंस-णपुंसके । दीणोदत्तविसेसेण ततो अत्थं वियागरे ॥ २७ ॥
 पुरिसस्स पुरिमे भागे थिया वामे तधेव य । सके अत्थे पसंसंति पहासं मधुरं मयुं ॥ २८ ॥
 पुरिसकारं थिआ हसितं थिआय पुरिसस्स वा । विप्पयोगे पसंसंति णिव्विकारं अविस्सरं ॥ २९ ॥
 5 अप्ससत्थेसु हसितेसु पसत्थं तु ण णिहिसे । पसत्थेसु य सव्वेसु अप्ससत्थं ण णिहिसे ॥ ३० ॥

॥ हसितविभासाणामऽज्झायो ॥ १२ ॥ छ ॥

[तेरसमं पुच्छितपडलं]

- हसिताणि चोदसेताणि कित्तियाणि विभागसो । पुच्छिताणि चउव्वीसं कित्तयिस्समतो परं ॥ १ ॥
 पुरतो १ पच्छतो चेव २ वामतो ३ दक्खिणेण य ४ । पुरिमदक्खिणभागं तु ५ दक्खिणं पच्छिमेण तु ६ ॥ २ ॥
 10 पच्छिमं वामभागमि ७ जं च वामपुरत्थिमं ८ । पुच्छिताणाऽऽहु अट्टेव संखेवेण महेसयो ॥ ३ ॥
 अतिदूरं अवखित्तं १ अच्चासण्णं च पीलितं २ । पुच्छितं णातिदूरं च ३ तिविधं संविभावये ॥ ४ ॥
 उदत्तपुच्छितं चेव १ दीणं च परिपुच्छितं २ । दीणोदत्तविसेसेहिं ३ तिविधं तु वियाणिया ॥ ५ ॥
 पुच्छिताणि विसेसेहि एवं विज्जा विक्खणो । चतुव्विधविधीजुत्तं सुण तस्स विभासणं ॥ ६ ॥
 ठितेणा १ ऽऽगच्छतो चेव २ तधेव परिसकतो ३ । चतुत्थपुच्छितं चेव अपत्थद्वेण पुच्छितं ४ ॥ ७ ॥
 15 ओणमंते व पुच्छेज्जा १ उण्णमंतो य पुच्छति २ । णिसीदंते व पुच्छेज्जा ३ णिसण्णे व विधीयते ४ ॥ ८ ॥
 पंतंते व विभासा तु ५ णिवज्जंतं व पुच्छति ६ । णिवण्णे व विभासा तु ७ पासुत्ताणाणि कुव्वते ८ ॥ ९ ॥
 उडुंते ९ जंभमाणे वा १० रीदंते व विभासणा ११ । हसंते १२ गायमाणे वा १३ परिदेवंते व पुच्छके १४ ॥ १० ॥
 थणंते १५ विणिक्कोलंते १६ कंपंते उ १७ णिमीलिते १८ । आहारं करते व १९ णीहारं च विभासणा २० ॥ ११ ॥
 पहट्ठे वा वि २१ कुट्ठे वा २२ भीते वा परिपुच्छति २३ । आवातंते य पुच्छंते तमेवऽत्थं पुणो पुणो २४ ॥ १२ ॥
 20 दिसाविसेसा आसण्णा दीणोदत्तविधीहि य । पुच्छिताणि चउव्वीसं एताणि संविभावये ॥ १३ ॥
 पुरिमं १ दक्खिणं चेव २ तधा पुरिमदक्खिणं ३ । पुच्छिताणि सदा तिण्णि उत्तमाणि पसस्सते ॥ १४ ॥
 पच्छिमं वामभागं वा जं च वामं पुरत्थिमं । थीणामेतं पसंसंति णाउं पौथमकं पि वा ॥ १५ ॥
 पच्छिमे दक्खिणे भागे पच्छिमं वामतो यकं । एताणि ण पसंसंति समुज्जं जं च पच्छतो ॥ १६ ॥
 पुरत्थिमं समुज्जं जं पुच्छितं पवरुत्तमं । अप्ससत्थं च परमं समुज्जं पच्छिमेण जं ॥ १७ ॥
 25 पुरत्थिमे पुच्छितमि अत्थं बूया अणागतं । उभेसु जस्स पस्सेसु वत्तमाणं पवेदये ॥ १८ ॥
 अतीतमत्थं जाणेज्जो पुच्छते पच्छिमेण तु । अव्वत्तपुच्छिते वा वि दूरमत्थं पवेदये ॥ १९ ॥
 अतिदूरपमुहतो अत्थत्थी जदि पुच्छति । अणागतं च जाणेज्जो अत्थं परमदुल्लभं ॥ २० ॥
 उवत्थितं च अत्थं च अच्चासण्णमि पुच्छते । पुच्छिते णातिदूरे य जुत्तकालं पवेदये ॥ २१ ॥
 पासेसु पच्छतो चेव पुच्छिते अविभागसो । दूरे वाऽऽसण्णजुत्तेसु कालं बूया विभागसो ॥ २२ ॥

१ 'सा' स्यादित्यर्थः ॥ २ पुरिसं कारं सं ३ पु० ॥ ३ 'भासणायमज्झाय' हं० त० ॥ ४ दुविधं सप्र० ॥ ५ पंतंते चेव भासा तु सप्र० ॥ ६ 'तेसु पु' हं० त० ॥ ७ कुज्जके हं० त० ॥ ८ उदत्ते हं० त० ॥ ९ रोहंते हं० त० ॥ १० 'कोलंभे कंपति उ' हं० त० ॥ ११ कुट्ठे वा हं० त० विना ॥ १२ आवण्णा हं० त० ॥ १३ पुच्छितं वाम० हं० त० विना ॥ १४ पावमकं हं० त० विना ॥ १५ य जं हं० त० । 'यकं' यकद् यदित्यर्थः ॥ १६ 'ण वा सि० । 'ण मा सं ३ पु० ॥ १७ जाणेज्जा हं० त० ॥ १८ 'तपच्छिमे वा' हं० त० ॥ १९ जाणेज्जा हं० त० ॥ २० जत्त' हं० त० विना ॥ २१ पुच्छतो हं० त० विना ॥ २२ दूरं हं० त० विना ॥ २३ काले हं० त० विना ॥

उदत्ते आसणे पुच्छे उदत्ता अत्थसंपदा । मज्झा य मज्झिमे वद्धी हीणे हीणं पवेदये ॥ २३ ॥
 उदत्ते सयणे पुच्छे उक्कट्ठा अत्थसंपदा । मज्झिमे मज्झिमा वद्धी हीणे हीणं च णिद्दिसे ॥ २४ ॥
 जाणम्मि ठितो पुच्छे उक्कट्ठा अत्थसंपदा । मज्झिमे मज्झिमा वद्धी हीणे हीणं च णिद्दिसे ॥ २५ ॥
 उदत्तम्मि य देसम्मि आमासे पेक्खितम्मि य । उदत्तम्मि य पुच्छंते उक्कट्ठा अत्थसंपदा ॥ २६ ॥
 मज्झिमेसु य एतेसु मज्झिमा अत्थसंपदा । हीणेषु हीणं जाणेज्जा अत्थसिद्धिं विभागसो ॥ २७ ॥ 5
 उत्तमेण सरीरेण वत्थेणाऽऽभरणेण य । ८८ उदत्तमत्थं पुच्छेज्ज अत्थसिद्धिं वियागरे ॥ २८ ॥
 दीणेण सरीरेण वत्थेणाऽऽभरणेण य । ८९ दीणो अत्थं च पुच्छेज्ज अत्थहाणिं से णिद्दिसे ॥ २९ ॥
 वंदमाणो य पुच्छेज्ज सक्कतं गारवेण य । बहुमाणं च पुच्छेज्जा अत्थसिद्धिं से णिद्दिसे ॥ ३० ॥
 अवंदंतो य खिंजंतो असक्कारेण हीलया । पुच्छे अबहुमाणेणं अत्थहाणिं पवेदये ॥ ३१ ॥
 ठिते उदत्ते देसंसि सुद्धितम्मि य पुच्छिते । अत्थस्स संपयं बूया चले थाणे चलं वदे ॥ ३२ ॥ 10
 अमणुण्णम्मि देसम्मि णिरुद्धे असुगंधि य । पुच्छे ठितो दढं जो तु अप्पसत्थं दढं वदे ॥ ३३ ॥
 अरहस्सेसु विणासं तथा य असुयीसु य । णिरुद्धं सण्णिरुद्धं वा देसे ठाणेहिं णिद्दिसे ॥ ३४ ॥
 चले थाणे चलो अत्थो पसत्थो णिदितो वि वा । दुद्धिते दुद्धितो अत्थो सुद्धिते य धुवो भवे ॥ ३५ ॥
 गच्छंतो जति पुच्छेज्जा अत्थं खलु सुभाऽसुभं । अप्पसत्थो भवे अत्थो पसत्थं णाभिणिद्दिसे ॥ ३६ ॥
 पवासं णिगमं वा वि विप्पयोगं च जं तथा । विसंजोगं च गच्छंते पुच्छिते अभिणिद्दिसे ॥ ३७ ॥ 15
 परिसक्कंतो व पुच्छेज्जा अत्थं जति सुभाऽसुभं । पसत्थस्स असंपत्ती अप्पसत्थं पवेदये ॥ ३८ ॥
 अपत्थद्धे य पुच्छंते अत्थो स-परसंसितो । उदत्तापस्सये लाभो अणुदत्ते विपज्जओ ॥ ३९ ॥
 उप्पत्तो जति वा मत्तो अत्थं तु परिपुच्छति । परस्संतं परस्सत्थं णिद्दिसे परसंतियं ॥ ४० ॥
 पुच्छिते पुरतो उज्जुं अत्थं बूया अणागतं । वत्तमाणं च पस्सेसु अतिकंतं च पद्धितो ॥ ४१ ॥
 अभिमुहे पुच्छितम्मि अणुलोमा अत्थसंपया । तिरिच्छीणे विविधां सा तु पराहुता परम्मुहे ॥ ४२ ॥ 20
 अणुद्धितो वा पुच्छेज्जा ठितो वा पुरतो समं । अच्छाइकं सुभं अत्थं णिद्दिसे स अणागतं ॥ ४३ ॥
 समाणयंतो गत्ताणि उण्णमंतो व पुच्छति । उण्णामेण य पुच्छेज्जा सुभे सऽत्थे पवेदये ॥ ४४ ॥
 विर्लिपंतो य गत्ताणि ओणमंतो य ओणतो । विणमंतो चलो पुच्छे अत्थहाणिऽस्स णिद्दिसे ॥ ४५ ॥
 पुच्छंतो अप्पणामंतो अवकरिसेंतो व पुच्छति । णीहारं वा करेमाणो पुच्छे हाणिं स णिद्दिसे ॥ ४६ ॥
 गेण्हंतो उवणामंतो उवसक्कंतो तधेव य । आहारं च करेमाणो पुच्छे वद्धिं स णिद्दिसे ॥ ४७ ॥ 25
 कासंतो णिदुभंतो वा णिस्सिधंतो व पुच्छति । छडुंतो [वा] णिमिलंतो अलाभं हाणिमादिसे ॥ ४८ ॥
 अभिहट्ठं च पुच्छेज्जा १ चुंबिता-ऽऽलिगितेहि य । अतिमासे च गुज्झाणं थीलाभो दव्वसंपया ॥ ४९ ॥
 णिकुंचिमिट्ठि करेमाणो पुच्छे उक्कुडुको पि वा । मिच्छा जंतं विवादेणं अत्थहाणिं से णिद्दिसे ॥ ५० ॥
 मुत्तं पुरिसं वातं वा उस्सासेंतो व पुच्छति । पयलायंतो वियंभंतो अत्थहाणिऽस्स णिद्दिसे ॥ ५१ ॥
 भंडमाणो व संभंतो रोवंतो वा वि पुच्छति । दुम्भणो उप्पुतो रुद्धो अप्पसत्थं स णिद्दिसे ॥ ५२ ॥ 30
 पाणजोणिगतं गंभं सक्कारंगारपूयितो । अत्थं पयाणगमणं पुच्छतोऽस्स वियागरे ॥ ५३ ॥

१ वण्णेणां हं० त० ॥ २ ८८ ८९ एतच्चिह्नमध्यगते उत्तरार्द्ध-पूर्वार्द्धे हं० त० न स्तः ॥ ३ सक्कतं हं० त० ।
 ४ माणे य पु हं० त० ॥ ५ सि हं० त० ॥ ६ देसम्मि हं० त० सि० ॥ ७ असुगम्मियं हं० त० सि० ॥ ८ स्सऽत्थं
 सि० ॥ ९ उज्जं हं० त० । अज्जं सं ३ पु० सि० ॥ १० थो से तु पराहुते परम्मुहो सं ३ सि० । थो सो तु पराहुतो
 परम्मुहो हं० त० ॥ ११ उत्ताणि हं० त० ॥ १२ सीलाभो हं० त० ॥ १३ णिकुंठिमिट्ठि हं० त० विना ॥ १४ जुत्तं
 हं० त० ॥ १५ हाणिं स णि हं० त० ॥ १६ व सोभंतो हं० त० सि० ॥ १७ दुमुणो उज्जुतो रुद्धो हं० त० ॥
 १८ गंभसंगारंगं हं० त० ॥ १९ पुच्छंतोऽस्सा वियां सं ३ पु० सि० । पुच्छतो सा वियां हं० त० ॥

- णिसीदंतो णिसण्णो वा पुरतो पुच्छे अभिमुहो । अत्थलाभं कुडुंबस्स वद्धि चऽस्स वियागरे ॥ ५४ ॥
 छिंदंतो वा डहंतो वा फालितो वा वि पुच्छति । तच्छेमाणो विणासितो हाणि रोगं च णिदिसे ॥ ५५ ॥
 खणंतो उक्खणंतो वा अवाहणंतो य पुच्छति । भंजंतो वा पवलितो वा हाणि मरणं च णिदिसे ॥ ५६ ॥
 बंधंतो वा थक्केतो वा णिक्खणंतो व पुच्छति । बंधं च सण्णिरोधं च अत्थहाणि च णिदिसे ॥ ५७ ॥
 5 अपावुणंतो मुंचंतो संपादंतो व पुच्छति । मोक्खं वा विप्पयोगं वा अत्थसिद्धीऽस णिदिसे ॥ ५८ ॥
 धसेंतो उव्वलेंतो वा धोवमाणो व पुच्छति । पगलेंतो ण्हायमाणो वा अत्थहाणि स णिदिसे ॥ ५९ ॥
 एतेसु चेव भावेसु अंगवि जो तु पुच्छति । विप्पयोगं च मोक्खं च णीरोगत्तं च अत्थितं ॥ ६० ॥
 पातुणंतो णिवासंतो पिण्णिधंतो पिण्णिधणं । पुच्छे अलंकरमाणो ईदुमत्थस्स संपदा ॥ ६१ ॥
 ओमुंचमाणो पुच्छेज्ज वत्थं आभरणाणि य । अवणेतो वा अलंकारं अत्थहाणिऽस्स णिदिसे ॥ ६२ ॥
 10 इंदियत्थेसुदत्तेसु उक्कट्ठा अत्थसंपदा । मज्झिमेसु भवे मज्झा हीणा हीणेण आदिसे ॥ ६३ ॥
 तुट्ठे य तुट्ठं पुच्छेज्ज सुभं अत्थं पवेदये । पसण्णो य पसण्णं सा णिव्वुती अत्थसंपदा ॥ ६४ ॥
 पीणितो पीणितं पुच्छे अत्थलाभो धुवं भवे । अरोगं च अरोगं तु सुहेणऽत्थस्स संपदा ॥ ६५ ॥
 अवक्खित्तो अवक्खित्तं पुच्छे एकगगमाणसे । इस्सरियमत्थलाभं च महंतमभिणिदिसे ॥ ६६ ॥
 दीणो य दीणं पुच्छेज्जा अत्थहाणी धुवा भवे । कुद्धो य कुद्धं पुच्छेज्जा बूया हाणिमणेवुत्ति ॥ ६७ ॥
 15 छांतो छातं पुच्छेज्ज णत्थि अत्थस्स संपदा । आतुरो आतुरं पुच्छे वाधी हाणि धणक्खयो ॥ ६८ ॥
 विक्खित्तो जति विक्खित्तं पुच्छे हीला यं णिच्छित्तो । परिकेसो धणहाणी हाणी इस्सरिते धुवं ॥ ६९ ॥
 उत्ते उत्तं तु जाणीया अप्पणो पुच्छकस्स य । पसत्थस्स वदे लाभं अप्पसत्थे असंपदा ॥ ७० ॥
 दीणत्तं अप्पणो दिस्स पुच्छकस्स य णिदिसे । अप्पसत्थं वदे अत्थं पसत्थस्स असंपदं ॥ ७१ ॥
 अप्पणी य प्पहिदुम्मि दीणो य परिपुच्छे । संकिलिट्ठं वदे अत्थं अणिट्ठं दारुणं वदे ॥ ७२ ॥
 20 अप्पणी पुच्छते चेव जधत्थाणं पवेदये । दीणोदत्तविभागेहि फलं बूया विभागसो ॥ ७३ ॥
 पुच्छिताणि चउव्वीसं संगहेणं वियक्खणो । दीणोदत्तविभागेहि अप्पमेयाणि जाणिया ॥ ७४ ॥
 पुच्छित्तेसु पसत्थेसु अप्पसत्थं ण णिदिसे । पुच्छित्ते अप्पसत्थम्मि पसत्थं णाभिणिदिसे ॥ ७५ ॥

॥ पुच्छितपडलं सम्मत्तं ॥ १३ ॥ छ ॥

[चोदसमं वंदियविभासापडलं]

- 25 पुच्छिताणि चउव्वीसं इति वुत्ताणि भागयो । वंदियाणि पवक्खामि सोलसंगे विभागसो ॥ १ ॥
 वंदितं तु उदत्तेणं १ सक्कारेण व वंदितं २ । वंदितं गारवा वा वि ३ अमणुण्णं च वंदितं ४ ॥ २ ॥
 असक्कारेण ५ हीलाय पणामे ६ ईसिवंदियं ७ । तुरियं ८ सहसा चेव ९ गहणेण व वंदितं १० ॥ ३ ॥
 अव्वगं वंदियं वा वि ११ विक्खित्तेण य वंदियं १२ । सज्जीवं गेज्झ वंदिज्ज १३ अज्जीवं गेज्झ वंदति १४ ॥ ४ ॥
 उदत्तं गेज्झ वंदेज्ज १५ अणुदत्तं गेज्झ वंदति १६ । वंदिता सोलसा एते संगहा परिकित्तिया ॥ ५ ॥

१ वा हुहंतो हं० त० ॥ २ भजंतो य व भंतो वा हाणि हं० त० विना ॥ ३ थक्केतो हं० त० ॥ ४ णिक्खमणंतो सं ३ पु० । णिक्खमंतो सि० ॥ ५ थासंतो हं० त० ॥ ६ एतेसेव भावेसु सप्र० ॥ ७ अंगविज्जो तु हं० त० ॥ ८ इहमत्थं हं० त० विना ॥ ९ अधणं वा हं० ॥ १० हाणि स हं० त० ॥ ११ धुवो हं० त० ॥ १२ माणत्तं हं० त० विना ॥ १३ छावो छावं हं० त० । 'छातो' क्षुधित इत्यर्थः ॥ १४ य णत्थितो सि० विना ॥ १५ दिस्सं हं० त० विना ॥ १६ अत्थं अप्सं हं० त० विना ॥ १७ भागयं हं० त० विना ॥ १८ वंदितुं हं० त० ॥ १९ ईसि हं० त० ॥ २० गहत्तेण सं ३ पु० । गहत्ते सि० ॥

पुस्तो १ पच्छतो चेव २ पस्सेहिं ३ उभयो तथा ४ । दिसाविभागा विण्णेयं वंदितं सा चतुर्विधं ॥ ६ ॥

उदत्त १ अणुदत्तं च २ वंदितं दुविधं भवे । ठाणा-ऽऽगारविसेसेहिं संपधाए मतिमता ॥ ७ ॥

उदत्तमणुदत्ताणं तथ सक्कारटिताणि य । अणुदत्तं तु जाणीया एतेसिं तु विवज्जए ॥ ८ ॥

वंदिताणं विधि एवं समासा संविभावितं । वित्थरेणऽस्स णिद्दिसे पवक्खामि जधातेधं ॥ ९ ॥

अभिहट्ठं वंदितं चेव सक्कारेण य वंदितं । गारवेण य सीसेणं सव्वत्थेसु पसस्सते ॥ १० ॥

ईसिं वंदितं चेव असक्कारेण हीलया । विक्खित्ते अवहट्ठे य सव्वत्थीए ण पूयितं ॥ ११ ॥

तुरितं वंदितं चेव अतिच्छंतेण वंदितं । सहसा वंदितं चेव ८ गमणेण संपसस्सते ॥ १२ ॥

भीतेण वंदियं चेव ८ कलहंतेण व वंदितं । संलाववंदितं चेव सव्वत्थेसु पराजये ॥ १३ ॥

पदुमुप्पले हत्थगते फुल्ले फले व उत्तमे । वंदमाणे ण पाडेति अत्थसिद्धिं स णिद्दिसे ॥ १४ ॥

हिरण्णम्मि सुवण्णम्मि मणि-मोत्तियभूसणे । हत्थकतेण वंदेज्जा अत्थसिद्धिं स णिद्दिसे ॥ १५ ॥

पुप्फुच्छंमे फलुच्छंमे धणुच्छंमे धणस्स वा । वंदंतो जति पुच्छेज्जा लाभो पुत्त-धणेहि से ॥ १६ ॥

णपुंसकगोज्जयो तु अंगारे छारिअं तुसे । वंदंतो जति पुच्छेज्जा कलहं वाधि व णिद्दिसे ॥ १७ ॥

सिप्पोवगरणं गेज्ज वंदंतो जति पुच्छति । तस्स तेणेव सिप्पेण अत्थलाभो अणागतो ॥ १८ ॥

पधंसंतो पधोवंतो ण्हाणहत्थगतो तथा । वंदंतो जति पुच्छेज्जा अत्थहारिणि स णिद्दिसे ॥ १९ ॥

जाणं ओरुज्ज वंदेज्ज आसणं सयणं तथा । घरा वा णिगतो वंदे जं पुच्छे हीणगे तथा ॥ २० ॥

उण्णमंतो य वंदेज्जा सीसे णुमज्जु पुच्छति । अब्भुट्ठेति व हासेणं लाभो इस्सरिते धुवो ॥ २१ ॥

उपविट्ठं वंदितं चेव एक्कगेण य वंदितं । सम्मोयिआ तु विण्णेया लाभे सूये तधेव य ॥ २२ ॥

पुण्णामधेयं घेतूणं वंदंतो जति पुच्छति । लाभं पुण्णामधेयस्स दीणाउत्तं वियागरे ॥ २३ ॥

पुत्तमिट्ठं गहेतूणं वंदंतो जति पुच्छति । थीलाभं तु पवेदेज्जो थीणामस्स य संपदं ॥ २४ ॥

णपुंसगं गहेतूणं वंदंतो जति पुच्छति । णपुंसकत्थे अत्थो अणत्थो थी-पुमंसयो ॥ २५ ॥

रुंदंतो जति सोयंतो दीणो वा जति वंदति । जं किंचि अत्थं पुच्छेज्ज अप्सत्थं पवेदये ॥ २६ ॥

बहुमाण-गारवा वा विणयवंतोऽभिवादये । अत्थं च जति पुच्छेज्ज सव्वमत्थीति णिद्दिसे ॥ २७ ॥

पुरत्थिमेणं वंदंतो पच्छतो दक्खिणजेण य । वंदंते पुरिसत्थस्स संपदो सऽभिणिद्दिसे ॥ २८ ॥

वंदिते वामपस्सेणं थीलाभेसु पसस्सते । पच्छतो वंदिते चेव अणिट्ठं संपवेदये ॥ २९ ॥

हत्थुण्णमंतो सुठितो सुवेसो दक्खिणज्जुतो । वंदेज्ज विणया अत्थि तस्स लाभं पवेदये ॥ ३० ॥

एमेव आसणत्थम्मि णिसण्णे सयणम्मि वा । वंदंतम्मि उदत्तम्मि विणया उत्तमं वदे ॥ ३१ ॥

जाणे यावि वंदंते उदत्ताकारभूसणे । अत्थस्स संपयं बूया उज्जुत्ते य जयं वदे ॥ ३२ ॥

वंदितेसु पसत्थेसु अप्सत्थं ण णिद्दिसे । अप्सत्थेसु सव्वेसु पसत्थं णाभिणिद्दिसे ॥ ३३ ॥

॥ भूमीकम्मे वंदियविभासा[पडलं] ॥ १४ ॥ छ ॥

१ 'तथा हं० त० विना ॥ २ अभिहट्ठं हं० त० विना ॥ ३ पूयं हं० त० ॥ ४ ८ ८० एतच्चिह्नमध्यगतः पाठः
हं० त० नास्ति ॥ ५ फुल्ले फुल्ले व सप्र० ॥ ६ धणुस्स हं० त० सि० ॥ ७ आसणा सयणा तथा हं० त० ॥ ८ हीणमेव
तथा सं ३ पु० । हाणि से तथा सि० ॥ ९ णुपुज्ज पु० सं ३ पु० । णुमुज्ज पु० सि० ॥ १० पुत्तमट्ठं सं ३ पु० ।
उत्तमट्ठं सि० ॥ ११ 'कत्थो अत्थो अणघो थी' हं० त० ॥ १२ वंदंतो जति सोयंतो हं० त० ॥ १३ तु हं० त० ॥
१४ थी विणि' हं० त० ॥ १५ 'दामभि' हं० त० ॥ १६ 'व अणत्थ' हं० त० ॥

[पण्णरसमं संलावविधिपडलं]

- सोलसेताणि वुत्ताणि वंदिताणि समासतो । वीसं संलावजोणीओ कित्तयिस्सामि भागसो ॥ १ ॥
- लाभे १ अलाभे य कधा २ सुह ३ दुक्खेसु य कधा ४ । जीवाधाओकसंपत्ति ५ मरणातंककधामवि ६ ॥ २ ॥
- वसणा ७ पमोदेसु कधा ८ सामोई-पीतिसंकधा ९ । विप्पीतिसु कधा चेव १० विसंजोगे कधा तथा ११ ॥ ३ ॥
- 5 संजोगेसु कधा चेव १२ सुबुद्धी-सुसमाकधा १३ । दुक्काल-दुबुद्धिकधा १४ विलासे किल संकधा १५ ॥ ४ ॥
- वद्धी-उदयसमाजुत्ता १६ हाणी-विणिपातसंकधा १७ । जयो १८ पराजयो चेव १९ पसत्थार्णिदितासु य २० ॥ ५ ॥
- वीसं संलावजोणीयो एया वित्थरतो मया । चतुर्विधा य एताओ सव्वा संगहतो वदे ॥ ६ ॥
- अत्थे १ धम्मे य २ कामे य ३ मोक्खे ४ त्ति य चतुर्विधा । कधाओ एव णातव्वा संपत्तीहि विपत्तिसु ॥ ७ ॥
- दुविधं संलावजोणीओ समासेण विभावये । सुभं च १ असुभं चेव २ जीवाऽजीवसमायुतं ॥ ८ ॥
- 10 दुविधं संलावजोणिं तु एवं भण्णंतु वीसधा । आधारयित्ता सव्वाओ तज्जातेण वियागरे ॥ ९ ॥
- धन्नागमणसंजुत्ता लाभजुत्ता य जा कधा । धणागमं अत्थसिद्धि उभयं तासु णिदिसे ॥ १० ॥
- सम्मोइसंजुत्तकधा याणुस्सयकधा य जा । समागमं इस्सरियं सम्मोइ चऽत्थ णिदिसे ॥ ११ ॥
- दुक्कालदुब्बिक्खकधा भुक्खायं चेव जा कधा । अणिव्वुत्ती गिराकारं अलाभं तासु णिदिसे ॥ १२ ॥
- सभंडणमुल्लर्काणं बालसदं सुणितु य । भंडणं सप्पहारं च उभयं तासु णिदिसे ॥ १३ ॥
- 15 अपिधावधिकधा चेव रोग-सोगकधा य जा । मरणं विप्पयोगं च उभयं तासु णिदिसे ॥ १४ ॥
- वण-पुप्फ-फले जुत्ता मधुरे पक्खि-चउप्पदे । संगमं पिअसंजोगो पयालाभं च णिदिसे ॥ १५ ॥
- गंध-मल्लेसु वत्थेसु कधा वा वि पिणंधणे । तासु लाभं पवेदेज्जो अत्थसिद्धि च णिदिसे ॥ १६ ॥
- जाणे वा आसणे वा वि सयणे वा कधा सुभा । अत्थलाभं कुडुंबे य खिप्पमेवाभिणिदिसे ॥ १७ ॥
- खेत्त-वत्थुकधा चेव गिहेसु य कधा सुभा । पुण्णामा सरसंजुत्ता सव्वा तस्स पसस्सते ॥ १८ ॥
- 20 णिरोध-बंधणकधा वा णंसता लाभसंजुता । बंधणं विणियोगं च जाणी चेवऽत्थ णिदिसे ॥ १९ ॥
- बद्धे वा सण्णिरुद्धे वा गहिते मारिते तथा । छिण्णे भिण्णे विणट्ठे वा पडिरूवेण णिदिसे ॥ २० ॥
- गते वा णिगते मुक्के अतीते आगते तथा । भक्ख-भोज्जकधा चेव पडिरूवेण णिदिसे ॥ २१ ॥
- हिते णट्ठे पलाते वा कधा व पदसंसिता । मिधोसंलावजुत्ता य पडिरूवेण णिदिसे ॥ २२ ॥
- सम्मोइसंपयुत्ता माता-पुत्तसमागमे । सैमा य बाधुज्जकधा एता सव्वा पसस्सते ॥ २३ ॥
- 25 पुण्णामधेयजुत्ता वा तथा इत्थी-णपुंसगे । सुभा वा असुभा वा वि विभत्तीअ वियाकरे ॥ २४ ॥
- पव्वज्जसहिता जा य जा य धम्मत्थिया भवे । दाण-सीलकधाओ य तज्जातेण विआगरे ॥ २५ ॥
- बंधीअ व कधा सव्वा दव्वोपकरणेसु य । समत्था लोकिके वेदे पडिरूवेण णिदिसे ॥ २६ ॥
- णक्खत्त-जोतिसकधा आकासे उदगम्मि वा । णगे जलचरे यावि वासं तासु वियागरे ॥ २७ ॥

१ जीवातडंकं सं ३ पु० । जो वातडंकं सि० ॥ २ सुबुद्धीसुसमां हं० त० विना ॥ ३ दुबुद्धिकधा हं० त० विना ॥ ४ वद्धीउद्धीउदं सप्र० ॥ ५ चेव सजीवां सप्र० ॥ ६ एव भिन्नं तु हं० त० विना ॥ ७ धा सुक्खायं हं० त० विना ॥ ८ कारं बालं हं० त० विना ॥ ९ धावकधा चेव रोगरोसकधा हं० त० ॥ १० धणं हं० त० विना ॥ ११ लाभा उ णि हं० ॥ १२ कथासु य हं० त० ॥ १३ जाणी ज्ञानीत्यर्थः ॥ १४ भोक्खभोज्जं हं० त० विना ॥ १५ संसितो सं ३ पु० । संसितो सि० ॥ १६ जुत्तो य हं० त० विना ॥ १७ समायुधा धुज्जं हं० त० विना ॥ १८ सगा हं० त० ॥ १९ ज्जसद्धिता हं० त० ॥ २० अथकधा हं० ॥ २१ तीसु हं० त० विना ॥

केसे कट्ठे य सुक्खम्मि उण्हे अगिघरे तथा । अणावुट्ठी भयं रोगं अवायं ताहि णिद्दिसे ॥ २८ ॥
 भेरी-मुयंग-पणवाणं संख-उक्कुट्ठिणिस्सणे । पिसाय-रक्खसकधा सुभमेतासु णिद्दिसे ॥ २९ ॥
 अत्थाभिगमणे लाभे विवट्ठीसु य जा कधा । अत्थस्स य विणासम्मि तज्जातेण वियागरे ॥ ३० ॥
 कामिते संपयोगम्मि अभिरामविवट्ठिसु । विगते यावि कामम्मि कथा तज्जाततो वदे ॥ ३१ ॥
 धम्माभिलासे विणये दाणे जैण्णिक्कियासु य । धम्मोवघाते य तथा तज्जातेण वियागरे ॥ ३२ ॥ 5
 कंधासऽज्झप्पजुत्तासु मोक्खमंतकधासु य । सुसंगमितरागाणं कधा तज्जाततो वदे ॥ ३३ ॥
 अत्थे धम्मे य कामे य कधा इस्सरिए तथा । सद्दा विवायसंजुत्ता तज्जातेण वियागरे ॥ ३४ ॥
 मणोरमा सुहा सोम्मा कधा या धम्मसंसिता । सुहासं भावजोगं वा सव्वत्थीए पसस्सते ॥ ३५ ॥
 पतिकूला य सोतु ज्जे कधा उव्वेदयंतिया । सविग्गहा य संलावा सव्वत्थीगे ण पूयिता ॥ ३६ ॥
 कधासु य पसत्थासु अप्पसत्थं ण णिद्दिसे । कधासु य अणिट्ठासु पसत्थं णाभिणिद्दिसे ॥ ३७ ॥ 10

॥ भूमीकम्मे [संलावविधि] पडलं सम्पत्तं ॥ १५ ॥ छ ॥

[सोलसमं आगतविभासापडलं]

वीसं संलावजोणीओ इति वुत्ता विभागसो । सोलसेवाऽऽगताणंगे कित्तियिस्सं विभागसो ॥ १ ॥
 आगतं हत्थसंलग्गं १ सपरीवारं च आगतं २ । असहायं च अवत्थाणं आगतं ३ सुत्थियागतं ४ ॥ २ ॥
 [आगतं पंचमं] चेव वीमंसा व विचेट्ठियं ५ । इट्ठि-उदयिजुत्तं च आगतं छट्ठमुच्चते ६ ॥ ३ ॥ 15
 ण्हायालंकारसंछण्णं सत्तमं आगतं भवे ७ । णिस्सोयमइलं दीणं अट्टमं धिवलागतं ८ ॥ ४ ॥
 आधावितं च तुरितं ९ दसमं चेतितगतं । भया वा संभवा वा वि तध अव्वाइकेण वा १० ॥ ५ ॥
 पसत्थाणि य गिण्हित्ता आगतं संपकित्तियं ११ । अप्पसत्थाणि गेण्हित्ता आगमे बारसो विधि १२ ॥ ६ ॥
 पुरतो १३ पच्छतो यावि १४ दक्खिणेण १५ तरेण य १६ । चतुव्विधं आगमणं इच्चेते सोलसाऽऽहिता ॥ ७ ॥
 सुभं १ चेवाऽसुभं चेव २ आगतं दुविधं भवे । थी १ पुमंसं २ णपुंसत्थे ३ एवेतं तिविधं भवे ॥ ८ ॥ 20
 अप्पत्थं च १ परत्थं च २ तथा साधारणत्थियं ३ । णिस्सत्थं ४ हेलणत्थं च ५ आगते पंचधा विधि ॥ ९ ॥
 दिसाणं विदिसाणं च पविभागं वियक्खणो । अट्ठधा आगतं णेच्चा ततो बूया सुभाऽसुभं ॥ १० ॥
 आगताणं विधी एसो समासा वासतो तथा । सम्मं संपडिपेक्खित्ता ततो बूया अणाविलो ॥ ११ ॥
 जमले हत्थसहगते संबंधेण य आगते । समागमं घरावासं वधं बंधं च णिद्दिसे ॥ १२ ॥
 आधाविते य तुरितम्मि वेगिते आगतम्मि य । खिप्पमंच्चाइतं अत्थं पवासं वा वि णिद्दिसे ॥ १३ ॥ 25
 सुत्थितम्मि य पज्जंते तथा एकगमोणसे । महासारसुभं अत्थं वदे एवं तु आगमे ॥ १४ ॥
 पधप्पवेसे कंदप्पे चंचले अणवत्थिते । आगयम्मि अणोक्कंते असारं अत्थमादिसे ॥ १५ ॥
 एकगमणुव्विग्गं [जं] जं च मालितभूसियं । पाउतं हत्थसंलग्गं आगतं अत्थसाधगं ॥ १६ ॥
 तुरिते अं हित्थतं विच्छे मोक्खणे अलिस्स य । विक्खित्तविकधाजुत्तं आगतं अत्थणासणं ॥ १७ ॥
 विग्गहेण विवादेण कलहेणेति दुवे जणा । भंडणं अत्थहारिणं च आगतेणाभिणिद्दिसे ॥ १८ ॥ 30

१ भेरीसुद्धंगं सं ३ पु० ॥ २ रागवि सि० ॥ ३ जण्णुक्किं हं० त० विना ॥ ४ कधामज्झं सं ३ पु० । 'कधासऽज्झप्पजुत्तासु' कथासु अध्यात्मयुक्तासु इत्यर्थः ॥ ५ सुहासंलाव हं० त० ॥ ६ उव्वेद हं० ॥ ७ अत्थिआगतं हं० ॥ ८ चेव वीमंसा च विवे वीमंसासु पडिट्ठियं सि० ॥ ९ णिम्मोइमइलं सि० । णिमोयमइलं सं ३ पु० ॥ १० हीणं हं० त० ॥ ११ विवलागतं हं० त० विना ॥ १२ रोहिता हं० विना ॥ १३ णुत्ता ततो सं ३ पु० । णुव्वा ततो हं० त० ॥ १४ मत्ताइतं हं० त० विना ॥ १५ माणुसे हं० त० विना ॥ १६ अणेक्कंते सं ३ पु० सि० । अणाक्कंते हं० त० ॥ १७ अहत्थितं वित्थे हं० त० विना ॥ १८ मोक्खाण हं० त० विना ॥

- पेक्खवेदाय एज्जंतं बाहुपंगुरणेण वा । उक्खंभमाणो दंडं वा अत्थहाणिऽस्स णिदिसे ॥ १९ ॥
 सिप्पोवकरणं गेज्झ आगतो पुरतो ठितो । तस्स तेणेव सिप्पेण अत्थलाभं पवेदये ॥ २० ॥
 पुप्फुच्छंगे फलुच्छंगे धणुच्छंगेण आगते । धणल्लभं पयालाभं उभयं तेषु णिदिसे ॥ २१ ॥
 पाणजोणिगतं गेज्झ आगते पुरतो ठिते । दीणोदत्तं विजाणीया तधा अत्थं पवेदये ॥ २२ ॥
 5 मूलजोणिगतं गेज्झ आगते पुरतो ठिते । दीणोदत्तं विजाणिता विभत्तीय वियागरे ॥ २३ ॥
 धातुजोणिगतं गेज्झ आगते पुरतो ठिते । दीणोदत्तं विजाणिता विभत्तीय वियागरे ॥ २४ ॥
 पुण्णामधेयं गेण्हत्ता आगते पुरतो ठिते । अत्थलाभं विजाणिता थी-पुमंस-णपुंसके ॥ २५ ॥
 थीणामधेयं गेण्हत्ता आगते पुरतो ठिते । थीलाभं पुरिसे विज्जा अलाभं थी-णपुंसके ॥ २६ ॥
 णपुंसकं गेज्झ तु जो आगतो पुरतो ठितो । अलाभो अत्थहाणी य थी-पुमंस-णपुंसके ॥ २७ ॥
 10 पुरतो आगते चेव दक्खिणेण य उज्जुयं । पुव्वदक्खिणओ वा वि सुभमत्थं पवेदये ॥ २८ ॥
 पुव्वुत्तरेणाऽऽगतम्मि उत्तरेण य उज्जुयं । थीणामधेयं संसंति थीणामे पुरिसस्स य ॥ २९ ॥
 पच्छिमेणाऽऽगते उज्जुं पच्छिमम्मि य दक्खिणे । पच्छिमे वुत्तरं भागे अत्थलाभो णपुंसके ॥ ३० ॥
 अभिमुहे आगतम्मि अप्पट्ठायाऽऽगतं वदे । साधारणत्थं पस्सेहिं पच्छिमेण परस्स तु ॥ ३१ ॥
 आगते अवयक्खंते परत्थायाऽऽगतं वदे । आगते हेलणत्थाय संकंतेण इमे विदू ॥ ३२ ॥
 15 ओकूणंते विकूणंते गेण्हंते य अणामियं । आगतम्मि अणोक्तं हेलणत्थाय णिदिसे ॥ ३३ ॥
 अब्भंतंरं आगयम्मि अंतो अब्भंतरो भवे । साधारणो भवे मज्जे बाहिरे बाहिरो भवे ॥ ३४ ॥
 उदत्ते आगते यावि उदत्तत्थस्स संपदा । आगते अणुदत्तम्मि असुभं संपवेदये ॥ ३५ ॥
 आगतेसु पसत्थेसु अप्पसत्थं ण णिदिसे । अप्पसत्थाऽऽगते यावि पसत्थं णाभिणिदिसे ॥ ३६ ॥

॥ भूमीकम्मि आगतविभासा णामं पडलं विभागसो विक्खातं ॥ १६ ॥ छ ॥

- सोलसेवाऽऽगताणंगे इति वुत्ताणि भागसो । वीसं रुदिताणंगे तु कित्तयिस्समतो परं ॥ १ ॥
 ओलोएंतो व रोदेज्जा १ उल्लोएंतो व रोदति २ । पेक्खंतो उज्जुअं पुरतो ३ पेक्खंतो तध दक्खिणं ४ ॥ २ ॥
 पच्छतो अवलोएंतो रुदिते पंचधा (मा) विधिं ५ । वामतो पेक्खित्ते छट्ठं ६ विलोक्तं व सत्तमं ७ ॥ ३ ॥
 पलोएंतो व रुदितं अट्ठमं तु पवेदये ८ । आहारकरणे णवमं ९ णीहारे दसमं भवे १० ॥ ४ ॥
 25 ॐ दीणं मधुरनिग्घोसं रुदितं एक्कादसं भवे ११ । ॐ दीणक्खामं अमधुरं बारसं परिकित्तियं १२ ॥ ५ ॥
 ॐ अंतो य रुदितं मंदं तेरसं परिकित्तियं १३ । ॐ महासंदं च णीहारि रुदितं चोदसं भवे १४ ॥ ६ ॥
 ओणमंते य रोदंते ॐ भवे पण्णरसो विधिं १५ । ओणते वा वि रोदंते ॐ विधी सोलसमो भवे १६ ॥ ७ ॥
 सोताणि पिधयित्ता य रुदिते सत्तरसो विधिं १७ । अपावितेहिं सोतेहिं रुण्णमट्ठारसं भवे १८ ॥ ८ ॥
 ॐ अपस्सिएण रुदियं भवे ॐ एकूणवीसकं १९ । अणपस्सितेण रुदितं भवे वीसतिमं सता २० ॥ ९ ॥

१ पेक्खवेदा य हं० तं० ॥ २ उभक्खमाणो हं० तं० विना ॥ ३ आगतो । धणलाभं सि० ॥ ४ आगतो पुरतो ठितो हं० तं० ॥ ५ आगतो हं० तं० सि० ॥ ६ थीणामत्थे पसंसंति हं० तं० विना ॥ ७ अवयक्खंते हं० तं० ॥ ८ आगतो हेलणट्ठाय संकंतेण इमो विदु हं० तं० ॥ ९ उक्खणंते विकूणुत्ते हं० तं० ॥ १० मो० विनाऽन्यत्र-म्मि य णोक्ते सं० ३ पु० सि० । अणाक्ते हं० तं० ॥ ११ आगमम्मि य तो हं० तं० ॥ १२ आगमे हं० तं० ॥ १३ कम्मपुच्छित्तिं सप्र० ॥ १४ पेक्खित्तो हं० तं० ॥ १५ विलोक्तो व हं० तं० विना ॥ १६ पलोएंतो हं० तं० ॥ १७-१८ हस्तचिह्नमध्यवर्त्ति पूर्वार्द्धयुगलं हं० तं० एव वर्त्तते ॥ १९ सत्तं ध (थ) णीहारि हं० तं० ॥ २० उण्णमंतो हं० तं० ॥ २१ हस्तचिह्नमध्यगतः पाठः हं० तं० एव वर्त्तते ॥ २२ वा वि रुदंतो हं० तं० ॥ २३ थोवाणि हं० तं० ॥ २४ सोमेहिं हं० तं० ॥ २५ हस्तचिह्नगतः पाठः हं० तं० एव वर्त्तते ॥

एवमेसो विधी वुत्तो वीसधा रुदितेसु तु । वित्थारओ जधादिट्ठा समासा दुविधा भवे ॥ १० ॥
 हासेण रुदितं चेव १ रुदितं दुम्पणस्स तु २ । दुविधं णेयं समासेण वित्थरेण य वीसधा ॥ ११ ॥
 रुदिताणं विधी एसो समासा वासतो तथा । फलतो उदाहरिस्सामि तज्जातपविभागसो ॥ १२ ॥

ओलोइतं पच्छिमं च रुदितं ण प्सस्सति । णीहारि परिहीणं च सव्वत्थीककते सदा ॥ १३ ॥
 उल्लोमितं च मुदितं च सव्वत्थीगे प्सस्सति । आहारमुदितं वा वि रुण्णमंगे गुणणितं ॥ १४ ॥ 5
 थिया वामं पसंसंति थीलाभो पुरिस्स य । णरस्स दक्खिणं पुज्जं थिआ पुत्त-पतिम्मि य ॥ १५ ॥
 दुम्पणेज्जो विलोएंतो णरो णारी व रोदति । विप्पओगं वियाणेज्जो रुदिते पुच्छकस्स तु ॥ १६ ॥
 रुण्णं च पलोएंतो आगमं से पवेदये । दुक्खं सैदुम्पणे रुण्णे सुहं सुमुदितम्मि य ॥ १७ ॥
 हासेण रुदिते मंदे मंदं लाभं पवेदये । दुक्खिते रुदिते मंदे बूया मंदं अणिव्वुत्ती ॥ १८ ॥
 महाणादं सुमधुरं अक्खामं च पसस्सते । ॐ नामं भिन्नमणोघोसं विस्सरं ण पसस्सते ॥ १९ ॥ 10
 अब्भंतरम्मि रुदिते णिरुद्धे मंदणिस्सणे । मंदं अत्थं पवेदेज्जो सुभं वा जदि वाऽसुभं ॥ २० ॥
 अब्भंतरम्मि रुदिते अंतोणादम्मि जाणिया । हासं अब्भंतरं इहुं दुक्खे अब्भंतरे दुहं ॥ २१ ॥
 ओणतं रुदितं चेव सव्वमेयं ण पूयितं । उदत्तं रुदितं चेव पूयितं अत्थिए भवे ॥ २२ ॥
 अपत्थद्धे य रुदिते तज्जातपडिरूवतो । दीणोदत्तविभागोहिं विभत्तीए विभावए ॥ २३ ॥
 हासेण रुदितं सव्वं आहारी मुदितं सुभं । महाणादी य मधुरं सव्वत्थीएहिं पूयितं ॥ २४ ॥ 15
 वेमणंसा तु रुदितं महाणादि खरस्सरं । उल्लोएंतो णते वा वि सव्वत्थेसु ण पूयितं ॥ २५ ॥
 रुदितेसु पसत्थेसु अप्सत्थं ण णिदिसे । अप्सत्थे य रुदिते पसत्थं णेव णिदिसे ॥ २६ ॥

॥ रुदितविभासापडलं सम्मत्तं ॥ १७ ॥ छ ॥

[अट्टारसमं परिदेवितविभासापडलं]

॥ नमो जिनेभ्यः ॥

20

वीसं रुदिताणंगे कित्तियाणि विभागसो । परिदेविताणि अंगगते कित्तियिस्सामि तेरसा ॥ १ ॥
 भिण्णस्सरं खरं पढमं १ बीतियुं सुस्सरं सुभं २ । साधारणं च ततिगं भवे तु परिदेवितं ३ ॥ २ ॥
 पुरतो ४ पच्छिमतो चेव ५ दक्खिणेणु ६ तरेण य ७ । विदिसेसु ११ अथे १२ उद्धं १३ एते तेरस आहिता ॥ ३ ॥
 परिदेविताणि एताणि तेरसेव विभागसो । जधोदिट्ठाणि वक्खामि गुणा-ऽगुणविभत्तिहि ॥ ४ ॥
 अणुस्सरं अप्सत्थं सुस्सरं तु पसस्सते । मज्झिमे मज्झिमेवाऽऽहु सव्वत्थीगगते वदे ॥ ५ ॥ 25
 परिदेवितेण सव्वेण विभत्ताणं दिसाहि तु । दसण्ह वि फलं बूया जधुत्तं पुव्ववत्थुसु ॥ ६ ॥
 समागमे वेदणाय मंदंसि परिदेवणा । विप्पवासणिमित्तं वा दव्वणासे तथेव य ॥ ७ ॥
 सराणं पविभागोहिं दीणोदत्तविधीहि य । दिसाणं च विसेसेणं णिदिसे तं सुभा-ऽसुभं ॥ ८ ॥
 परिदेविते पसत्थे तु अप्सत्थं ण णिदिसे । परिदेविते अप्सत्थे पसत्थं णाभिणिदिसे ॥ ९ ॥

॥ [परिदेवितविभासा] पडलं सम्मत्तं ॥ १८ ॥ छ ॥

30

१ थीलाभे हं० त० ॥ २ दुम्पणेयो विलोएउ हं० त० ॥ ३ वियाणिज्जा हं० त० ॥ ४ पलोएंतो आगमं संपं हं० त० ॥ ५ सुहुं हं० त० ॥ ६ ॐ ॥ ७ एतच्चिह्नमध्यगतमुत्तरार्धं हं० त० नास्ति ॥ ८ पवेदिज्जा हं० त० ॥ ९ महाणादी सप्र० ॥
 १० णेणं ६ उक्तं हं० त० ॥ ११ णं सिद्धाणं हं० त० विना ॥

[एगूणवीसइमं विक्कंदियपडलं]

परिदेविताणि वुत्ताणि जधोदिट्ठाणि भागसो । विक्कंदियाणि अट्टेव कित्तयिस्सं जधाविधि ॥ १ ॥

समागमे १ भया वा वि २ कोधाए ३ वेदणाए वा ४ । मदे वा ५ विप्पवासे य ६ दब्बणासे व तारिसे ७ ॥ २ ॥

विक्कंदियं भवे यावि आकारणपवत्तणा ८ । उक्कट्टं वा वि वुज्जेहं विक्कंदितस्स लक्खणं ॥ ३ ॥

5 सरा-ऽसरविसेसेहिं विज्जा विक्कंदिताणि वि । दीणोदत्तविधाणाणि तव्वसो अंगचित्तओ ॥ ४ ॥

आसण्णे अपकट्टे य णातिदूरे तधेव य । पुव्वुद्दिट्ठेहिं वत्थूहिं फलं विक्कंदिते वदे ॥ ५ ॥

विक्कंदियाणि सव्वाणि जधवुत्ताणि णिदिसे । दिसासु जधजुत्ताणि फलाणि पुव्ववत्थुसु ॥ ६ ॥

विक्कंदिताणं अट्ठाणं एस वुत्ता विधी गमे । पुव्ववत्थुसु णिदिट्ठा इट्ठा-ऽणिट्ठफलं पति ॥ ७ ॥

॥ [विक्कंदिय] पडलं सम्मत्तं ॥ १९ ॥ छ ॥

10

[वीसतिमं पडितविभासापडलं]

विक्कंदिताणि अट्टेव इति वुत्ताणि तच्चसो । पडिताणं तु अट्ठण्हं पविभत्ति इमं सुण ॥ १ ॥

पुरिमं १ पच्छिमं चेव २ वामतो ३ दक्खिणेण य ४ । दक्खिणं पुरिमे भागे ५ दक्खिणं पच्छिमेण य ६ ॥ २ ॥

पच्छिमं वामभागम्मि ७ वामतो य पुरत्थिमं ८ । पडितस्स अट्ठ ठाणाणि णवमं णाभिगम्मति ॥ ३ ॥

वामभाणं थिआ बूया पुरिस्सस्स य दक्खिणं । पुरिमेसु दोसु संधीसु अत्थं साधारणं वदे ॥ ४ ॥

15 पच्छिमेसु य संधीसु पच्छिमे पडितम्मि य । णपुंसकत्थं जाणेज्जो पडितो सुवियक्खणो ॥ ५ ॥

पुरत्थिमम्मि पडिते सव्वं बूया अणागतं । उभेसु जस्स पासेसु वत्तमाणं पवेदये ॥ ६ ॥

अतीतमत्थं जाणेज्जो पच्छिमे पडितम्मि य । अण्णावल्लोको वत्तं वा पच्छिमेण य पुच्छिते ॥ ७ ॥

खलितं तु पडणं विज्जा १ विब्भंसा २ दुट्ठितेण य ३ ।

मदा वा ४ पित्तमुच्छा वा ५ दोबल्ला ६ पचलायणा ७ ॥ ८ ॥

20 परणोल्लणाय पडणं ८ अट्ठमं पविभावये । तज्जातपविभागेण फलं बूया वियक्खणो ॥ ९ ॥

सव्वत्थीगगते णिच्चं पडणं ण पसस्सते । सुभे पतिविसेसं तु जधाजातेण कप्पते ॥ १० ॥

पडिते सव्वगतेहिं दसधा पडिते तधा । पडिबाहमहापडिते १ णिस्सट्ठं पडितम्मि य २ ॥ ११ ॥

विलिते पडिते यावि ३ मुच्छिते पडितं तधा ४ । उट्ठिते वा लहुं पडिते चिरा वा उट्ठिते तधा ५ ॥ १२ ॥

छाणा ६ कद्दमा वा वि ७ पंसुणा वा वि मक्खिते ८ । मक्खिते वा अमेज्जेणं ९ उदगा वाऽवमक्खिते १० ॥ १३ ॥

25 भूमीभागविसेसेण णेमिती पविभज्जतु । सयणा-ऽऽसण-जाणगये फल-पुष्फ-हरितेसु य ॥ १४ ॥

णारी-णराणं उच्छंगे तधेव य चउप्पदे । पडियाणि विभाएज्जो अव्वगो अंगचित्तको ॥ १५ ॥

अपेक्ख एतेसु पडिएसु अवायं तु पवेदये । विब्भट्ठपडिते वा वि पमादा हाणिमादिसे ॥ १६ ॥

मज्जप्पमादा पडिते मंदहारिण पवेदये । मुच्छाय पडिते वा वि वाधिसासं पवेदये ॥ १७ ॥

दोब्बले पडिते वा वि हारिण सत्तुगतं वदे । पयलायमाणे पडिते दुण्णया हाणिमादिसे ॥ १८ ॥

30 परणोल्लणाय पडणे हारिण बूया पराजये । दुट्ठाणपडिते वा वि पग्गहा हाणिमादिसे ॥ १९ ॥

सव्वगतेहिं पडिते उत्ताणे पुच्छकम्मि उ । सव्वत्थ हारिण बूया तधेव य पराजयं ॥ २० ॥

१ अक्कोरपूरुवणा सं ३ पु० । आकासपूरुवणा सि० ॥ २ जहवुत्ताणि हं० त० ॥ ३ सुणु हं० त० ॥

४ "भागम्मि आबूया सप्र० । ५ अणायलोओ घतं वा हं० त० ॥ ६ "ल्लयाण प" हं० त० सि० ॥ ७ "भागदो हं०

त० ॥ ८ पुच्छिण पडणं तधा हं० त० ॥ ९ उदगाधावम" सप्र० ॥

दक्खिणपस्सपडणे पुरिसापायं पवेदये । वामपस्सेण पडणे थियाऽपायं पवेदये ॥ २१ ॥
 पडिते णिकुज्जके वा वि संपत्ते वि य मेदणिं । पराजए जयं बूया भूमीलाभं च अंगवी ॥ २२ ॥
 पडिबाहमाणे पडिते हारिणं चेद्वा य णिदिसे । णिस्सट्ठपडिते वा वि चौर-मच्चुभयं भवे ॥ २३ ॥
 पडणा वि खलियं वा वि बूया अंगविभागसो । पडणा मुच्चित्ते वा वि वाधि-मच्चुभयं भवे ॥ २४ ॥
 मक्खिते वा वि अंगाणं इद्वा-ऽणिट्ठेहि अंगवी । मक्खितप्पविभागेणं फलं बूया सुभासुभं ॥ २५ ॥ 5
 सयणे पवडणे कीडं आसणे आसणं वदे । जाणे जाणगतं बूया पवयणपडिरूवतो ॥ २६ ॥
 पुप्फ-फलेसु बीएसु हरिते संधण-भूसणे । अच्छादणे वाहणे वा यो पते तु णिकुज्जको ॥ २७ ॥
 तेसु लाभं वियाणीया पडिते इस्सरियम्मि य । पासिकुत्ताणके विज्जा वयंतेहि तु संसियं ॥ २८ ॥
 उच्छंगे णर-णारीणं जो पते परिपुच्छको । धी-पुमंसविभागेणं संजोगं पतिवेदये ॥ २९ ॥
 चतुप्पदे पदे जो तु आलिगे पडितो तु जो । तस्स लाभं पवेदिज्जा पंसुठाणे विपज्जयो ॥ ३० ॥ 10
 दव्वमण्णतरं गज्ज यो पडेज्ज तु पुच्छको । हारिणं सत्तनिमित्ताकं अत्थहारिणं च णिदिसे ॥ ३१ ॥
 गहितम्मि पतज्जणट्ठे वा वज्जते भिण्ण-लोलिते । हारिणं हारिणं पवेदेज्जो तज्जातपडिरूवतो ॥ ३२ ॥
 गहितम्मि अविणट्ठम्मि अणिकुज्जे अलोलिते । अमुत्ते सुपरिगहीतम्मि हाणितो वद्धिमादिसे ॥ ३३ ॥
 पडंतो जाणि मिल्हेति विक्खरइ जो णियं वयं । जं उवगेण्हे तं ते य तस्स भागी भवे तु सो ॥ ३४ ॥
 जाणि जाणि य पीडेति पडंतो जाणि वा खिरे । तेहि ते य जाणिस्स पडंतो जाणि विक्खरे ॥ ३५ ॥ 15
 इट्ठम्मि य पडे जो तु सुहं लेसं अपीलये । तस्स तेणं गुणं बूया विवरीते विवज्जयो ॥ ३६ ॥
 पडिताणं विधी एसो तच्चसो पविभावये । पुव्वुहिट्ठेहि वत्थूहि ततो बूयांगचित्तको ॥ ३७ ॥

॥ भूमीकम्मे पडितविभासाणामज्झाओ ॥ २० ॥ छ ॥

[एकवीसतिमं अप्पुट्टितविभासापडलं]

पडिताणं विधी एसो उत्तो सव्वो समासतो । अप्पुट्टिताणेकवीसं कित्तयिस्सं विभागसो ॥ १ ॥ 20
 पुरिमं १ पच्छिमं चेव २ वामतो ३ दक्खिणेण य ४ ।
 दक्खिणं पुरिमे भागे ५ पच्छिमं दक्खिणेण य ६ ॥ २ ॥
 पच्छिमं वामभागम्मि ७ वामेण य पुरत्थिमं ८ । दिसाणं पविभागेहि अट्ट अप्पुट्टिताणि तु ॥ ३ ॥
 अकामकं च ९ दीणं च १० कुट्टेणऽप्पुट्टितं च जं ११ ।
 विलितं अप्पुट्टितं चेव १२ तथा संकुचणुट्टितं १३ ॥ ४ ॥ 25
 आसत्थं च १४ उदगं च १५ पहट्टं च तधुट्टितं १६ ।
 गारवा १७ बहुमाणेणं १८ असल्लीणुट्टितं तथा १९ ॥ ५ ॥
 सदे इट्ठे तधामासे भवे अप्पुट्टितं तथा २० । असुयामाससद्धम्मि २१ इति वुत्ताणेकवीसति ॥ ६ ॥

१ पडिणिं हं० तं० ॥ २ मेदिणं सप्र० ॥ ३ जयं जये बूया हं० तं० विना ॥ ४ चार-मच्चुभयं हं० तं० विना ॥
 ५ पुच्छित्ते यावि हं० तं० ॥ ६ सज्जणो पवज्जणे हं० तं० ॥ ७ सवणं हं० तं० ॥ ८ संहितं हं० तं० विना ॥
 ९ पए परिपुच्छ हं० तं० ॥ १० पवेदेज्जो पसुं दाणे पविज्जयो हं० तं० विना ॥ ११ वज्जिए भिण्ण-लोहि (ट्टि) ए
 हं० तं० ॥ १२ जो वयं सि० विना ॥ १३ उवगेण्हं तं हं० तं० विना ॥ १४ वोखरे हं० तं० विना ॥ १५ जाण विक्खरे
 हं० तं० ॥ १६ उच्चसो हं० तं० विना ॥ १७ भागं तु वा हं० तं० ॥ १८ असण्णीणु हं० तं० विना ॥

- पुरिथिमं दक्खिणतो तथा पुरिमदक्खिणं । अप्पुट्टिताणि तिण्णगे उत्तमाणि वियाणिया ॥ ७ ॥
 अप्पुट्टितं वामभागं जं च वामपुरिथिमं । ताणि साधारणाणाऽऽहु णातं एव [प]कप्पिते ॥ ८ ॥
 धिया वामं पसंसंति थीलाभे पुरिसस्स य । णरस्स दक्खिणं पुज्जं धिया पुत्ते पतिस्स य ॥ ९ ॥
 पच्छिमं वामभागं तु दक्खिणेण य पच्छिमं । अप्पुट्टितं ण प्सत्थं समुज्जं पच्छिमं च जं ॥ १० ॥
 5 अकामकं वा दीणं वा कुद्धमप्पुट्टितं तथा । विलितं चलितं चेव सव्वमेव ण पूयितं ॥ ११ ॥
 आसत्थमं उदत्तं च पहट्टमुदितं तथा । गारवा बहुमाणेणं असल्लीणं च पूयियं ॥ १२ ॥
 तल-तालुयघोसेसु सुभे छेलित-घोडिते । संख-दुदुभिघोसेसु उट्टितं तु पसस्सते ॥ १३ ॥
 रुदिते कंदिते वा वि अट्टस्सरणिणादिते । विग्गहेण विवादेणं उट्टितं ण पसस्सते ॥ १४ ॥
 अब्भंतराणि णिद्धाणि पुण्णामाणि दढाणि य । एताणि आमसंतुट्ठे अत्थसिद्धिं स णिद्दिसे ॥ १५ ॥
 10 साधारणाणि सामाणि थीणामाणि तणूणि य । एताणि आमसंतुट्ठे मज्झिमत्थं स णिद्दिसे ॥ १६ ॥
 णपुंसकाणि बज्झाणि लुक्काणि य चलाणि य । एताणि आमसंतुट्ठे हीणमत्थं पवेदये ॥ १७ ॥
 गमणं वा पवासं वा मोक्खेण य विमोयणं । जयं ठाण्डिते विज्जा थावरं ण तु पूयितं ॥ १८ ॥
 अप्पुट्टितम्मि पुरिमे अत्थं बूया अणागतं । उभेसु यस्स पस्सेसु वत्तमाणं पवेदये ॥ १९ ॥
 अप्पुट्टिते पच्छिमम्मि अत्थं बूया अत्तिच्छितं । अणावलोइते यावि उच्चत्तम्मि य पच्चतो ॥ २० ॥
 15 उट्टितेसु पसत्थेसु अप्पसत्थं ण णिद्दिसे । अप्पसत्थेसु सव्वेसु पसत्थं णेव णिद्दिसे ॥ २१ ॥

॥ भूमीकम्मे अप्पुट्टितविभासा सम्मत्ता ॥ २१ ॥ छ ॥

[बावीसतिमं णिग्गयविभासापडलं]

- अप्पुट्टिताणेक्कवीसं कित्तियाणि जधा तथा । णिग्गमे संपवक्खामि एक्कारस जधाविधि ॥ १ ॥
 पुरतो णिगतो चेव १ पच्छतो २ दक्खिणेण य ३ । वामतो निग्गओ चेव ४ [वि]दिसा भवतु तह च्चिय ८ ॥ २ ॥
 20 इट्ठामासे तथाऽऽगारे णवमो णिग्गमो सुभो ९ । एतेसु य अणिट्ठेसु णिग्गमो दसमो भवे १० ॥ ३ ॥
 साधारणेसु चेतेसु उभयेसु वि णिग्गमो । एक्कारसो वि वक्खातो ११ इति वुत्ता उ संगहा ॥ ४ ॥
 जधा अप्पुट्टिताणगे दिसासु विदिसासु य । आमासा-ऽऽगार-सदेहिं विभत्ताणि विभागसो ॥ ५ ॥
 पसत्थमप्पसत्थाणि थी-पुमंस-णपुंसके । थावरम्मि चले चेव निग्गमे वि तहा वदे ॥ ६ ॥
 निदि ए य पसत्थे य विभत्तीय वियागरे । पुव्ववत्थुगमे बूया एक्कारस वि णिग्गमे ॥ ७ ॥
 25 णिग्गमेसु पसत्थेसु अप्पसत्थं ण णिद्दिसे । [अप्पसत्थेसु सव्वेसु पसत्थं णेव णिद्दिसे ॥ ८ ॥] छ ॥

[॥ भूमीकम्मे णिग्गयविभासापडलं ॥ २२ ॥]

[तेवीसइमं पयलाइतविभासापडलं]

- णिग्गमा दस एक्को य कित्तिया पविभागसो । पयलाइताणि सत्तंगे कित्तियिस्समयो परं ॥ १ ॥
 अप्पुट्टितं १ ओणतं च २ पयलाइत दक्खिणं ३ । पयलाइतं तथा वामं ४ ओहीणं पंचमं भवे ५ ॥ २ ॥
 30 उदगं च उदत्तं वा छट्ठं सा पयलाइतं ६ । अणुदत्तमप्पहट्ठं च सत्तमं पयलाइतं ७ ॥ ३ ॥

१ तिण्हंगे हं० त० ॥ २ णातुं हं० त० ॥ णो तं सि० ॥ ३ कुद्धमं हं० त० सि० ॥ ४ पूयियं हं० त० ॥ ५ असल्लीणं च पूयितं हं० त० विना ॥ ६ सं उट्ठे हं० त० ॥ ७ ण णि हं० त० विना ॥ ८ सं उट्ठे हं० त० ॥ ९ णवरं काणि हं० त० ॥ १० अइचिरं हं० त० ॥ ११ तव्विधा सि० ॥ १२ हस्तचिह्नगतः सार्द्धश्लोकः हं० त० एव वर्तते ॥ १३ पयलाइतं च तथवा ओहीमं पच्छिमं भवे सं ३ पु० सि० । पयलाइयं तत्थव्वाउहीनं पच्छिमं भवे हं० त० ॥ १४ लाइया हं० त० ॥ १५ अणाउत्तमं हं० त० ॥

अप्पुद्धितं पसत्थं सा ओणयं ण प्सस्सते । अणावलोइतं चेव सैताणं ण प्सस्सति ॥ ४ ॥
 थिया वामं पसंसंति थीलाभे पुरिसस्स य । णरस्स दक्खिणं पुज्जं थिया पुत्ते पतिम्मि य ॥ ५ ॥
 ओहीणं ण प्संसंति ८ अंगवि पयलाइतं । उदत्तं च पसंसंति ७ सव्वत्थीककते सदा ॥ ६ ॥
 पयलाइतविधी एतं दीणोदत्तविधीहि य । ओहित्थोदग्गभावेहि विभावैतो वियाकरे ॥ ७ ॥
 पयलायंते जयो णत्थि अट्टाणगमणं तथा । अत्थलाभं पवेदेज्जो णिव्वत्ती य विभागसो ॥ ८ ॥ 5
 पयलाइते पसत्थम्मि अप्सत्थं ण णिदिसे । ८ अप्सत्थेसु सव्वेसु पसत्थं णाभिणिदिसे ॥ ९ ॥ ७

॥ भूमीकम्मे पयलाइतविभासापडलं सम्मत्तं ॥ २३ ॥ छ ॥

[चउवीसइमं जंभितविभासापडलं]

पयलाइताणि सत्ते वुत्ताणि पविभागसो । संत जंभाइताणं कित्तइस्समतो परं ॥ १ ॥
 पुरिमं १ पच्छिमं चेव २ वामतो ३ दक्खिणेण य ४ । उदत्तं चेव ५ दीणं च ६ सैसंताणं च सत्तमं ७ ॥ २ ॥ 10
 उड्डं संजंभियं चेव १ तथा ओसीसजंभियं २ । जंभितं समभागं च ३ अणिरुद्धं च जंभितं ४ ॥ ३ ॥
 आसकं सवरेत्ता य णिरुद्धं जंभितं तथा ५ । सम्मीलइत्ता वयणं अंतोसंजंभियामपि ६ ॥ ४ ॥
 पसारयंतो बाहाओ सीहो वा पविजंभति ७ । एक्केक्कं सत्तधा विभजे पुव्वुद्धिद्वं विजंभियं ॥ ५ ॥
 एवं विभावयित्ता य जंभियं स वियक्खणो । अंगवी पविभागं तु विभत्तीय वियागरे ॥ ६ ॥
 पुरिमं दक्खिणं चेव पुरिसस्सत्थे पसस्सते । थिया य पूयितं तं तु सता पुत्ते पतिम्मि य ॥ ७ ॥ 15
 वामतो जंभियं जं च जं च वामपुरत्थिमं । थिया पसस्सते तं तु थीणामत्थे णरस्स य ॥ ८ ॥
 पच्छतो जंभियं जं तु णपुंसत्थे तु तं भवे । उदत्तं जंभियं चेव सव्वत्थीके पसस्सति ॥ ९ ॥
 जंभिते अणुदत्तम्मि दीणे बूया पराजयं । विक्कमस्स असंपत्ती तथा अत्थस्स आदिसे ॥ १० ॥
 जंभियम्मि ससंताणे ससंगं अत्थमादिसे । जंभिते अणुदत्तम्मि णत्थि अत्थस्स संपदा ॥ ११ ॥
 णिगमे याविलालाभं पयं सो संपवेदये । जंभिते य सअंसूके एवमेव पवेदये ॥ १२ ॥ 20
 उड्डं संजंभिते वद्धि हाणी ओसीसजंभिते । समं संजंभिते यावि वद्धी तु ण महालिया ॥ १३ ॥
 अणिरुद्धे जंभिते वा वि सैअंगा जय-वद्धिओ । संगं च जय-वद्धीणं णिरुद्धे जंभिते वदे ॥ १४ ॥
 अंतोसंजंभिते चेव वद्धी अब्भंतरा भवे । सीहविजंभिते चेव अत्थसिद्धिमुदाहरे ॥ १५ ॥
 पुरत्थिमे जंभितम्मि जयं बूया अणागतं । वत्तमाणं च पस्सेसु अतिक्रंतं च पच्छतो ॥ १६ ॥
 दिसाणं पविभागेहि दीणोदत्तविधीहि य । आगारपविभागेहि जंभियाणि विआकरे ॥ १७ ॥ 25
 जंभितेसु पसत्थेसु अप्सत्थं ण णिदिसे । अप्सत्थे य सव्वम्मि पसत्थं णाभिणिदिसे ॥ १८ ॥

॥ [जंभितविभासापडलं] ॥ २४ ॥ छ ॥

[पणुवीसतिमं जंपितविभासापडलं]

एवेस जंभितविधी पविभत्ता विभागसो । जंपिताणि तु सत्तेव पवक्खामऽणुपुव्वसो ॥ १ ॥

१ उण्णतं हं० त० विना ॥ २ सयाणं हं० त० ॥ ३ ८ ७ एतच्चिह्नगतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ४ त्थीककएसु
 य हं० त० ॥ ५ ८ ७ एतच्चिह्नगतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ६ ससंगयाणं च हं० त० ॥ ७ पविभंजति सं० ली० सि० ।
 पविभंजति मो० । पविजंति हं० त० पु० ॥ ८ नियमे यामित्तालावतयं सो हं० त० ॥ ९ लातं वयं सि० ॥ १० असंगा
 हं० त० विना ॥ ११ त्थेसु (तु) स० हं० त० विना ॥

पेम्मा १ पडिणिवेसा वा २ विलिगं ३ विक्खित्तमाणसं ४ ।

मज्झत्थं ५ गुहितं वा वि ६ सामण्णं सत्तमं भवे ७ ॥ २ ॥

जधा दिसाणं पविभागा विभत्ता पुव्ववत्थुसु । पर्जपितेसु वि तथा विभत्तीय वियाकरे ॥ ३ ॥

जधा संलावजोणीओ वुत्ताओ पविभागसो । पसत्था अप्पसत्था य तथा संजंपिताण वि ॥ ४ ॥

५ एवं संलावजोणीयं संजंपितविधिं वदे । वेयणप्पविभागत्थं संगहेसुमुदाहितं ॥ ५ ॥

जंपिताणं तु सत्तण्हं विभत्ताणं विभागसो । संलावजोणीहिं फलं णिदिसे अंगचित्तको ॥ ६ ॥

संजंपिताणं सत्तण्हं विधी वित्थास्तोऽधिता । संलावविधिजोणीयं पडले पण्णरसम्मि तु ॥ ७ ॥

॥ जंपितविभासापडलं सम्मत्तं ॥ २५ ॥ छ ॥

[छव्वीसतिमं चुंबितविभासापडलं]

१० संजंपितेसु य विधी वुत्ता संजंभितेसु य । चुंबिते सोलसंगम्मि पवक्खामि विभागसो ॥ १ ॥

पुरिसं चुंबे १ धियं वा वि २ ततियं च णपुंसकं ३ । पाणजोणिगतं चुंबे ४ मूलजोणिगतं पि वा ५ ॥ २ ॥

धातुजोणिगतं वा वि ६ चुंबियं छट्ठकं भवे । पुरिसं ७ दक्खिणं चेव ८ पच्छिमं ९ वाममेव य १० ॥ ३ ॥

अब्भंतरं ११ बाहिरं च १२ मज्झिमं चुंबितं तथा १३ ।

उदगं १४ मज्झिमं चेव १५ जघणं वा वि १६ सोलसं ॥ ४ ॥

१५ चुंबिताणं विधी एसो सोलसण्हं पि आदितो । अणुयोगविधिं चेव संगहेण य मे सुण ॥ ५ ॥

सज्जीवं १ तध अज्जीवं २ चुंबियं दुविधं भवे । णामतो तिविधं चेव थी १ पुमंस २ णपुंसकं ३ ॥ ६ ॥

अब्भितरं १ बाहिरं च २ मज्झिमं वा वि चुंबितं ३ । उदत्त ४ मणुदत्तं च ५ पंचधा स विधीयति ॥ ७ ॥

मत्थके १ वदणे चेव २ बाहुसीसे ३ उरे तथा ४ । बाहुम्मि ५ पाणिमज्झम्मि ६ अंगुट्ठे ७ अंगुलीसु य ८ ॥ ८ ॥

उयेरे ९ बाहुमज्झम्मि १० गोज्झंगे चेव चुंबितं ११ ।

२० चुंबितं पादसंडीए १२ तले १३ पादंगुलीसु य १४ ॥ ९ ॥

चुंबितं चैतरंगम्मि एवमादि वियाणिया । फल-पुप्फातिणं चेव दक्काणं परिचुंबणा ॥ १० ॥

चुंबितं चैतरंगम्मि १ बाहिरंगे तधेव य २ । एक्केक्कं दुविधं णेयं वित्थारो सोलसाऽऽगमा ॥ ११ ॥

चुंबितं कामरागा वा १ पीतीअ तध चुंबितं २ । वीमंसणद्धा ३ उवहासा ४ हेलणद्धाय चुंबितं ५ ॥ १२ ॥

चुंबियाण विधी एतं समास-वासदेसितं । पंजाणवं चुंबितं चेव विभत्तीअ विआगरे ॥ १३ ॥

२५ कामरागा व हासा वा चुंबियं उत्तमं भवे । ७ वीमंसणा महासत्थं मज्झिमत्थे पसस्सते ॥ १४ ॥ १०

चुंबितं हेलणत्थाय सव्वत्थीके ण पूयितं । चत्तारि तु पसत्थाणि उत्तमाणि तु चुंबिते ॥ १५ ॥

पुरिसो पुरिसं चुंबेज्ज मत्थकम्मि उरम्मि य । अण्णम्मि वा वि पुण्णामे अत्थसिद्धिं स णिदिसे ॥ १६ ॥

पुरिसो इत्थियं चुंबे मत्थकम्मि उरम्मि वा । अण्णम्मि वा वि थीणामे थीलाभं तस्स णिदिसे ॥ १७ ॥

पुरिसो णपुंसकं चुंबे मत्थकम्मि मुहम्मि वा । णपुंसके वा अण्णम्मि अत्थहारिं स णिदिसे ॥ १८ ॥

३० इत्थी पुरिसं चुंबेज्ज मत्थकम्मि मुहम्मि वा । अण्णम्मि वा वि पुण्णामे अत्थलाभं स णिदिसे ॥ १९ ॥

इत्थी इत्थी तु चुंबेज्ज मत्थकम्मि मुहम्मि वा । अण्णम्मि वा वि थीणामे अत्थलाभो स मज्झिमो ॥ २० ॥

इत्थी णपुंसकं चुंबे मत्थकम्मि मुहम्मि वा । णपुंसके वा अण्णम्मि अत्थहारिं स णिदिसे ॥ २१ ॥

१ विलित्तं ३ हं० त० विना ॥ २ वयणत्थविं हं० त० ॥ ३ चित्तिहं० त० विना ॥ ४ वित्थरओ तहा हं० त० ॥
५ उरे य बाहुं सप्र० ॥ ६ च तरंगं हं० त० विना ॥ ७ चुंबणे हं० त० विना ॥ ८ च तरंगं हं० त० विना ॥ ९ जयावणं
चुं हं० त० ॥ १० ७ १० एतच्चिह्नगतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ११ स हं० त० विना ॥ १२ ण हं० त० विना ॥

पुरिसं णपुंसको चुंबे मत्थकम्मि मुहम्मि वा । अण्णम्मि वा वि पुण्णामे अत्थसिद्धी धुवा भवे ॥ २२ ॥
 इत्थीं णपुंसको चुंबे मत्थकम्मि मुहम्मि वा । अण्णम्मि वा वि थीणामे अत्थलाभोऽस मज्झिमो ॥ २३ ॥
 अपुमं णपुंसको चुंबे मत्थकम्मि मुहम्मि वा । णपुंसके वा अण्णम्मि अत्थहाणिऽस्स णिद्दिसे ॥ २४ ॥
 चुंबिते पाणमज्झम्मि पुरिसत्थो पसस्सते । अब्भंतरं कुडुंबत्थं वत्तमाणं पवेदये ॥ २५ ॥
 पुप्फं फलं च चुंबेज्जा वत्थं आभरणाणि य । समागमं घरावासं अत्थसिद्धिं च णिद्दिसे ॥ २६ ॥ 5
 हिरण्णं च सुवण्णं च मणि-मुत्त-पवालयं । पसण्णो जति चुंबेज्जा अत्थलाभं पवेदये ॥ २७ ॥
 चुंबिते पाणजोणीयं मूलजोणिगते तथा । धातुजोणिगते चेव दीणोदत्तेण णिद्दिसे ॥ २८ ॥
 अंगोट्टुचुंबिते बूया पुरि[स]त्थं पुत्तसंसितं । अंगुलीयं थिया अत्थं ण्हुसं दुहितरं तथा ॥ २९ ॥
 बाले पुप्फ-फले बूया चुंबियम्मि पजागमं । जुण्णे पुप्फे फले बूया गुरु-बुद्धसमागमं ॥ ३० ॥
 पाणजोणि-मूलजोणि-धातुजोणिगतेसु वा । बाले पजागमे वद्धी विदित्ता लक्खणं वदे ॥ ३१ ॥ 10
 सुक्खे तणे व कट्ठे वा सुक्खे पुप्फ-फलम्मि य । रोग-सोकं समरणं चुंबिते संपवेदये ॥ ३२ ॥
 पुप्फे फले उदत्तम्मि बूया पिअसमागमं । जिण्णे य अणुदत्तम्मि अप्पियेहि समागमं ॥ ३३ ॥
 पुरत्थिमे सुभो अत्थो दक्खिणे यावि चुंबिते । थीसंसितो भवे वामे मज्झिमत्थो तु चुंबिते ॥ ३४ ॥
 पच्छिमे चुंबिते यावि अत्थोऽस्स असुभो भवे । अंगंतरम्मि विण्णेयो दीणोदत्तविभागसो ॥ ३५ ॥
 पुरत्थिमे चुंबितम्मि अत्थं बूया अणागतं । वत्तमाणं च पस्सेसु अतिक्रंतं च पच्छतो ॥ ३६ ॥ 15
 पुरत्थिमे दक्खिणे य पुरिसत्थं णिवेदये । वामे य थिया अत्थं पच्छतो य नपुंसए ॥ ३७ ॥
 चुंबियम्मि उदत्तम्मि उक्कट्ठा अत्थसंपदा । मज्झिमे मज्झिमा वद्धी हीणे हीणं निवेदये ॥ ३८ ॥
 पुण्णामे चुंबिते विज्जा पुरिसत्थस्स संपदा । थीणामे इत्थिसंपत्ती णत्थि लाभो णपुंसके ॥ ३९ ॥
 अब्भितरे चुंबितम्मि अत्थो अब्भितरो भवे । बाहिरब्भितरे मज्झो बाहिरम्मि य बाहिरो ॥ ४० ॥
 बाहिर-ऽब्भंतर-मज्झेहि दीणोदत्तविधीहि य । थी-पुं-णपुंसर्लगेहि चुंबिआणि विआगरे ॥ ४१ ॥ 20
 चुंबितेसु पसत्थेसु अप्पसत्थं ण णिद्दिसे । अप्पसत्थेसु सव्वेसु पसत्थं णेव णिद्दिसे ॥ ४२ ॥

[चुंबितविभासा] पडलं सम्पत्तं ॥ २६ ॥ छ ॥

[सत्तावीसतिमं आर्लिगितपडलं]

चुंबिताणि तु अंगम्मि इति वुत्ताणि सोलस । चोद्दसाऽऽर्लिगिताणगे पवक्खामि विभागसो ॥ १ ॥
 पुरिमं १ पच्छिमं चेव २ दक्खिणं ३ वाममेव य ४ । आर्लिगितं तु पुण्णामं ५ थीणामं ६ तु णपुंसकं ७ ॥ २ ॥ 25
 उदत्तं ८ मणुदत्तं च ९ दसमं चेव अवीलितं १० । आर्लिगितं पीलियं च एक्कारसमं उच्चते ११ ॥ ३ ॥
 आर्लिगितं बारसमं चला-ऽचलविभागसो १२ । सव्वंगतोपगूढेसु तेरसो विधि उच्चति १३ ॥ ४ ॥
 गत्तमूलम्मि उवगूढे देसार्लिगितमेव य । आर्लिगितं चोद्दसमं १४ संगहा इति कित्तिया ॥ ५ ॥
 पुरिसे य थिया जं च तथेव य णपुंसके । बाल-जोव्वण-बुद्धेसु आरोगेसाऽऽतुरेसु य ॥ ६ ॥
 पाणजोणिगते चेव मूलजोणिगतेसु य । धातुजोणिगते चेव दीणोदत्तविधीहि य ॥ ७ ॥ 30
 दव्वोपकरणाणं वा विभत्तीय वियाणिया । अचलाचले य विण्णाय पीलिता-ऽपीलितं तथा ॥ ८ ॥

१ पुरत्थं हं० त० विना ॥ २ हस्तचिह्नगतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ३ ०८ १० एतच्चिह्नगतः पाठः हं० त० नास्ति ॥
 ४ पुरिमे दक्खिणे चेय हं० त० ॥ ५ ण वेदये हं० त० विना ॥ ६ हस्तचिह्नमध्यगतः सार्द्धश्लोकः हं० त० एव वर्तते ॥
 ७ हस्तचिह्नगतः पाठः हं० त० एवास्ति ॥ ८ 'लगे वि चुं' सप्र० ॥ ९ ०८ १० एतच्चिह्नगतः पाठः हं० त० नास्ति ॥

पडिरूवेहि एतेहि दिसाणं वा विभागसो । चोदसाऽऽलिगितान्गे विभत्तीय वियागरे ॥ ९ ॥

आलिगितम्मि पुरतो सुभं अत्थं पवेदये । दक्खिणम्मि य गूढम्मि अत्थसिद्धिं पवेदये ॥ १० ॥

आलिगिते पच्छिमम्मि अत्थं बूया णपुंसकं । वामे य उवगूढम्मि थिया अत्थं पवेदये ॥ ११ ॥

आलिगितम्मि पुरतो अत्थं बूया अणागतं । वत्तमाणं च पस्सेसु अतिक्रंतं च पच्छतो ॥ १२ ॥

5 पुरिसो पुरिसं आलिगे अत्थसिद्धिऽस्स उत्तमा । पुरिसो इत्थिमालिगे इत्थीलाभंऽस णिहिसे ॥ १३ ॥

पुरिसो णपुंसकं वा वि ८० आलिगेत्ताण मेण्हति । ८० अत्था तस्सऽवहायंति ण य सिज्झंतिऽणागता ॥ १४ ॥

इत्थी य पुरिसमालिगे संजोगं च धणागमं । इत्थी य इत्थिमालिगे मज्झिमा अत्थसंपदा ॥ १५ ॥

इत्थी णपुंसमालिगे अत्थलाभोऽस मज्झिमो । उभो णपुंसमालिगे अत्थलाभोऽस कण्णसो ॥ १६ ॥

पुरिसो पुरिसमालिगे पुण्णामम्मि कम्हियि । अत्थसिद्धीऽस जाणीया पुरिसत्थं च णिहिसे ॥ १७ ॥

10 पुरिसो जो तु आलिगे इत्थिमध णपुंसकं । पुण्णामकम्मि अंगम्मि अत्थसिद्धीऽस णिहिसे ॥ १८ ॥

पुरिसो इत्थि पुमं वा वि तहेव य णपुंसकं । थोणामकम्मि अंगम्मि उवगूढे कथंचि तु ॥ १९ ॥

थीलाभं संपवेदेज्जो उवगूढम्मि एरिसे । अवसेसेसु अत्थेसु मज्झिमं अत्थसंपदं ॥ २० ॥

पुरिसो जो तु आलिगे इत्थी तध णपुंसकं । णपुंसकम्मि अंगम्मि तत्थ एतारिसं वदे ॥ २१ ॥

संजोगं च पदं चेव णत्थि एवं वियागरे । अवसेसेसु अत्थेसु अत्थाहारिणं पवेदये ॥ २२ ॥

15 इत्थी इत्थि च पुरिसं च तधेव य णपुंसकं । पुण्णामकम्मि अंगम्मि आलिगे तैरुबंधणं ॥ २३ ॥

आलिगितम्मि एतम्मि अत्थसिद्धिऽस णिहिसे । सव्वत्थेसु पजातं च भावा किड्ढागतेसु य ॥ २४ ॥

इत्थी तु जति आलिगे थो-पुमंस-णपुंसकं । थोणामकम्मि अंगम्मि तत्थ एवं वियागरे ॥ २५ ॥

आलिगितम्मि एतम्मि मज्झिमा अत्थसंपदा । अत्थो साधारणो कज्जो विभत्तीय वियागरे ॥ २६ ॥

इत्थी इत्थि णरं चेव तधेव य णपुंसकं । णपुंसकंगे अण्णतरे उवगूढे कथंचि वि ॥ २७ ॥

20 आलिगितम्मि एतम्मि हीणमत्थं पवेदये । पुरिसत्थं पमदत्थं च णपुंसत्थं तधेव य ॥ २८ ॥

णपुंसो पुरिसो वा वि इत्थि तध णपुंसकं । पुण्णामेसु य आलिगे ततो एवं वियागरे ॥ २९ ॥

आलिगितम्मि एतम्मि पुरिसत्थं पवेदये । संजोगमत्थसिद्धिं वा बूया पुरिससंसियं ॥ ३० ॥

णपुंसं पुरिसं वा वि इत्थी तध णपुंसकं । थोणामकम्मि आलिगे अंगम्मि जति कम्हियि ॥ ३१ ॥

आलिगितम्मि एतम्मि अत्थसिद्धिऽस णिहिसे । समागमं तधा लाभं इत्थीयं संपवेदये ॥ ३२ ॥

25 णपुंसो पुरिसो वा वि इत्थी तध णपुंसकं । णपुंसकंगे आलिगे तस्स विज्जा इमं फलं ॥ ३३ ॥

आलिगितम्मि एतम्मि अत्थहारिणं पवेदये । थो-पुमंससमाउते लाभो वा वि णपुंसके ॥ ३४ ॥

आलिगितम्मि उवगूढे पुण्णाममवलंभए । पसत्थसव्वमंगम्मि विवरीते विवज्जतो ॥ ३५ ॥

आलिगितेसु सुक्केसु सव्वं तु ण पसस्सते । कन्नापदाणे मोक्खे य पवासे य पसस्सते ॥ ३६ ॥

आलिगिते सव्वगते अणुव्विगगे अपीलिते । सुभा अत्थाऽस वद्धंते असुभं च परिहायति ॥ ३७ ॥

30 अपीलिते सुभो अत्थो पीलिते पीलितो भवे । चले यावि चलं बूया अत्थमालिगितम्मि उ ॥ ३८ ॥

पाणजोणिं च आलिगे मूलजोणिं तधेव य । धातुजोणिगतं वा वि दीणोदत्तेण णिहिसे ॥ ३९ ॥

पुण्णामधेये उक्कट्ठो थोणामे मज्झिमो भवे । णपुंसके पच्चवरो अत्थो आलिगिते सदा ॥ ४० ॥

आलिगिते उदत्तम्मि उक्कट्ठा अत्थसंपदा । मज्झा य मज्झिमे वद्धी हीणं हीणेण णिहिसे ॥ ४१ ॥

१ ८० ८० एतच्चिह्नान्तर्गतं चरणं हं० त० नास्ति ॥ २ संभोगं बंधणागयं (व धणागयं) हं० त० ॥ ३ अत्थसिद्धिं विजां हं० त० ॥ ४ इत्थिमध सप्र० ॥ ५ गूढे जहण्णिआओ हं० त० ॥ ६ तक्कं सं ३ पु० सि० । तहक्कं हं० त० ॥ ७ भागा किन्नागं हं० त० विना ॥ ८ गमिच्छसिद्धिं सं ३ पु० ॥ ९ ममचलं भवे हं० त० विना ॥

पुष्पं फलं च पुण्णामं आलिगेत्ता तु पुच्छति । अत्थसिद्धी य लाभं च सव्वमेतेहि णिद्दिसे ॥ ४२ ॥
 थीणामधेयं जं किंचि आलिगितो तु पुच्छति । पुरिसस्स थिया लाभं थिया अत्थस्स संपदा ॥ ४३ ॥
 मणि आभरणं वत्थं आलिगितो तु पुच्छति । मणि आगमणं लाभं सव्वमेतेहि णिद्दिसे ॥ ४४ ॥
 अब्भंतरेसु णिद्देसु पुण्णामेसु दढेसु य । पुण्णे सुकेसु तथा आहारमुदितेसु य ॥ ४५ ॥
 आलिगितेसु चेतसु उक्कट्ठा अत्थसंपदा । अमणुण्णाणं च भावाणं णत्थि लाभो त्ति णिद्दिसे ॥ ४६ ॥ 5
 णपुंसकेसु सव्वेसु बज्जेसु य चलेसु य । उवहुतेसु एतेसु वावण्णेसु य णिच्छता ॥ ४७ ॥
 आलिगितेसु एतेसु पसत्थं णभिणिद्दिसे । असुभाणं च भावाणं लाभमत्थं पवेदये ॥ ४८ ॥
 थिआ वामं पसंसंति थीलाभो पुरिसस्स य । णरस्स दक्खिणं पुज्जं थिया पुत्ते पतिम्मि य ॥ ४९ ॥
 पुष्पं फलं च आलिगे वत्थमाभरणं तथा । समागमं अत्थलाभं उभयं तत्थ णिद्दिसे ॥ ५० ॥
 आलिगिते पाणितले पुरिसस्सज्जत्थे पसस्सते । अब्भंतरं कुडुंबत्थं वत्तमाणं पवेदये ॥ ५१ ॥ 10
 आलिगितम्मि अंगुट्ठे पुरिसत्थो पुत्तसंसितो । अंगुलीसु थिआ अत्थे ण्हुसत्थे धूतुसंसितो ॥ ५२ ॥
 बाले पुष्प-फले बूया पयालाभं चज्जागमं । जुण्णे पुष्प-फले बूया धुवं गुरुसमागमं ॥ ५३ ॥ 15
 हिरण्णं वा सुवण्णं वा मणि-मुत्त-पवालयं । गेण्हत्ता जति आलिगे अत्थलाभं पवेदये ॥ ५४ ॥
 पाणजोणिगते चेव मूलजोणीगते तथा । अणुवहुतम्मि अकिलिद्दे उदत्ते पवरम्मि य ॥ ५५ ॥
 आलिगितम्मि एतम्मि थिया [वा] पुरिसेण वा । इट्ठलाभं पवेदेज्जो असुभस्स असंपदं ॥ ५६ ॥ 15
 किलिद्देसु य एतेसु तहा सोवह्वेसु त । अप्पसत्थं पवेदेज्जो पसत्थं णाभिणिद्दिसे ॥ ५७ ॥
 पुष्पे फले वुदग्गम्मि बूया थिअ समागमं । अणुदत्ते य दीणम्मि विवरीतं पवेदये ॥ ५८ ॥
 सुक्खं तणं व कट्ठं वा सुक्खं पुष्प-फलं तथा । रोगं सोगं च मरणं च आलिगेतस्स णिद्दिसे ॥ ५९ ॥
 पुष्पितं फलितं रुक्खं चेतितं खीरपादवं । आलिगितो तु पुच्छेज्जा बूया पिअसमागमं ॥ ६० ॥
 जे खीरमतो फलिता य रुक्खा, मज्जे य वंका ण व छिण्णसाहा । 20
 अभिज्झिता सारवंतो य जे सा, आलिगिते उत्तममत्थसंपया ॥ ६१ ॥
 आगम्मि पवसियं बूया आगतस्स य णिव्वुत्ति । समागमे सुंभे लाभे सव्वत्थीके पसस्सति ॥ ६२ ॥
 भंडोवगरणे चेव सिप्पोवकरणे तथा । कीलणीये य उवगूढे विभत्तीय विआगरे ॥ ६३ ॥
 आलिगिताणं सुयणे वियोगं तेसु णिद्दिसे । कण्णापदाण गमणं मोक्खं वा तत्थ णिद्दिसे ॥ ६४ ॥
 पुण्णामेसु य पुण्णामं थीणामं थीणामकेसु य । णपुंसके णपुंसं तु दिट्ठेण विआगरे ॥ ६५ ॥ 25
 आलिगितम्मि मुक्कम्मि अविमुक्के व अंगवी । दीणोदत्तविधी दिट्ठा विभत्तीय विआगरे ॥ ६६ ॥
 आलिगिते पसत्थम्मि अप्पसत्थं ण णिद्दिसे । आलिगिते यापसत्थे पसत्थं णेव णिद्दिसे ॥ ६७ ॥

॥ सम्मत्तं आलिगितं ॥ २७ ॥ छ ॥

[अद्वावीसतिमं णिवण्णविभासापडलं]

चोद्दसाज्जलिगिताणंगे विभत्ताणि विभागसो । बारसण्हं णिवण्णाणं पविभत्तिविधिं सुणु ॥ १ ॥ 30
 उत्ताणकं णिवण्णं च १ तधेव य णिकुज्जकं २ । दक्खिणेण य पस्सेणं संविट्ठं ३ वामकेण य ४ ॥ २ ॥

१ आहारेमुदितेसु या हं० तं० ॥ २ वावण्णे सयणं तहा हं० तं० ॥ ३ लाभद्वुनागमं हं० ॥ ४ हस्तचिह्नान्तर्गतमिदमुत्तरद्धं
 हं० तं० एवास्ति ॥ ५ आलिगितस्स हं० तं० विना ॥ ६ रुक्खं विडयं खीरं हं० तं० ॥ ७ आलिगितो हं० तं० विना ॥
 ८ उत्तमा अत्थं सिं० ॥ ९ आगमिपविसियं बूया आगमस्स हं० तं० ॥ १० सुते लाभे हं० तं० ॥ ११ वियोगतेसु
 स णिं हं० तं० विना ॥ १२ तस्स णिं हं० तं० ॥

उक्कट्टियं णिवण्णं च ५ तथाऽऽरुभितपादगं ६ । अद्धप्पसारितं चेव णिवण्णं सत्तमं भवे ७ ॥ ३ ॥

परिवेदितं णिवण्णं च ८ णवमं संकुडितं भवे ९ । विच्छुद्धगतं दसमं णिवण्णं विप्पसारितं १० ॥ ४ ॥

अद्धसंविट्ठसंजुत्तं ११ संविट्ठं तिरिओगतं १२ । णिवण्णाण विसेसे य इति बारसधा मता ॥ ५ ॥

बारसेव णिवण्णाणि विण्णातव्वाणि संगहा । सेज्जाभागविसेसाय बत्तीसमुपधारये ॥ ६ ॥

5 सयणा-ऽऽसणं च १ पल्लंको २ तथा मसारओ भवे ३ । मंचको ४ तं ध खट्ठा य ५ फलिकं ६ मंचिकं तथा ७ ॥ ७ ॥

कणके ८ तलियं च ९ भूमी य १० तधेव य सिलातलं ११ ।

फल-पुप्फ-हरिता सेज्जा १२ तिणसेज्जा तधेव य १३ ॥ ८ ॥

सुक्ककट्टेसु १४ जाणेसु सेज्जाय १५ तध आसणे १६ । बीयेसु १७ धण-धण्णेसु १८ तथा वत्थपरिच्छदे १९ ॥ ९ ॥

पहरणाऽऽवरणे २० सेले २१ तुस २२ लोह २३ णहेसु य २४ ।

10 अंगारैछारिकादीसु २५ झामसज्जा तथाऽवरा २६ ॥ १० ॥

सत्थिण्णा य २७ असत्थिण्णा २८ परक्का य २९ सका तथा ३० ।

सामण्णा य ३१ असामण्णा ३२ एवं बत्तीसमाहिता ॥ ११ ॥

णिवण्णाणं विधी एस सज्जाणं च विधी तथा । दीणोदत्तेहिं णेमिन्ती विभत्तीय वियागरे ॥ १२ ॥

सावज्ज-अणवज्जेसु महासारे तधेव य । अप्पसारा य विण्णेया सेज्जा य पविभागसो ॥ १३ ॥

15 उताणके निवण्णम्मि स३मं जं संपसारिते । सुभमत्थं सुभे बूया विसमं विसमे वदे ॥ १४ ॥

दक्खिणेण णिवण्णम्मि सुभो अत्थो महा भवे । णिकुज्जे असुभो अत्थो वामपस्सेण मज्झिमो ॥ १५ ॥

उक्कुडितणिवण्णम्मि तथा अद्धप्पसारिते । परिवेदिते संकुडिते अत्थहाणि पवेदये ॥ १६ ॥

तिरिच्छीणं णिवण्णे य अद्धसंविट्ठके तथा । एकारुभितपादे य अत्थहाणि पवेदये ॥ १७ ॥

विच्छुद्धगते आसत्थे णिवण्णे विप्पसारिते । णिच्चेट्टे वि य उताणे अत्थहाणि पवेदये ॥ १८ ॥

20 दक्खिणे सविते पस्से पुरिमे वा सुभो भवे । थीसंपयोगं वामम्मि णिवण्णे तु वियागरे ॥ १९ ॥

उताणके निवण्णम्मि अत्थं बूया अणागतं । वत्तमाणं च पस्सेसु णिकुज्जम्मि अतिच्छियं ॥ २० ॥

णिकुज्जको पराहुत्तो पुच्छे संकुडितो तथा । विवादं वा णिरागारं अत्थहाणि च णिहिसे ॥ २१ ॥

अणुलोमं निवण्णो जो भूमियं सयणाऽऽसणं । महासारे च सयणे अच्छण्णे वऽत्थ पुच्छति ॥ २२ ॥

तिरिच्छणो णिवण्णो जो खट्ठायं फलकीय वा । णिराकारं विवादं वा पुच्छंतस्स विआगरे ॥ २३ ॥

25 सयणाऽऽसणे व फलगे वा मंच-मासालगेसु वा । खट्ठायं मंचिकायं वा ६ भूमिकं च सिलायले ॥ २४ ॥

भूमियं पेडिकायं वा ७ पल्लंके सुक्खदारुगे । सयणाऽऽसणेसु तलिए कडगे तध तणच्छते ॥ २५ ॥

णवे य तध जुत्ते व १० खंडभगे व जज्जरे । दीणोदत्तविधी दिट्ठा विभत्तीय वियागरे ॥ २६ ॥

फल-पुप्फेसु संविट्ठे हरिते वा सदले तणे । समागमं च लाभं च वड्ढि चेतेशु णिहिसे ॥ २७ ॥

विजज्जरे जुणसयणे सुक्के वा तणसत्थरे । सयणाऽऽसणे य विद्धत्थे अत्थहाणि पवेदये ॥ २८ ॥

१ उक्कट्टियं हं० त० ॥ २ अधप्पसां हं० त० विना ॥ ३ परिवेदितं सं ३ पु० । परिवेदितं सि० ॥ ४ विसुद्धं हं० त० विना ॥ ५ आगमं हं० त० ॥ ६ सेसाय सि० ॥ ७ तध खट्ठा य फालिकं हं० त० ॥ ८ कणके तेलियं च सं ३ पु० । कणके पंच सि० ॥ ९ सेज्जा तथा तूलसुणिम्मिया ॥ ८ ॥ तिणसेज्जा सुक्कं सि० ॥ १० सेलो सि० विना ॥ ११ स्कारिगादीं हं० त० ॥ १२ सु समसज्जा हं० त० विना ॥ १३ सम्मं जं हं० त० । सम्मं सं ३ पु० सि ॥ १४ ओकुडितं सि० । उक्कट्टितं हं० त० ॥ १५ अधप्पं सि० ॥ १६ पुच्छेयं खुभिओ तथा हं० त० ॥ १७ हस्तचिह्नगतं पादयुगलं हं० त० एव वर्त्तते ॥ १८ तणुच्छते हं० त० ॥ १९ खंडे भगे य हं० त० ॥ २० संविट्ठे हं० त० ॥

जुणं तु फुडितं खंडं भगं दट्ठं च सेवति । मरणं हाणिं च जाणिं च सयणे एरिसे वदे ॥ २९ ॥
 सुक्ककट्टेसु झामेसु तुस-रोम-णहेसु य । सत्थावरणेसु संविट्ठे हाणि मा चेव णिदिसे ॥ ३० ॥
 जधुत्तं आससा ये आसणाणं गुणा-ऽगुणा । सयणेसु वि तथा जाणे गुण-दोसं सुभा-ऽसुभं ॥ ३१ ॥
 महासारं मज्झिमं च अट्टमं सयणं विदु । अवेक्ख सम्मं नेमिती अत्थं इह वियागरे ॥ ३२ ॥
 णिवण्णो पुरिसो पुच्छे पुण्णाम-थी-णपुंसके । दीणोदत्तं वियाणित्ता विभत्तीय वियागरे ॥ ३३ ॥ 5
 णिवण्णा महिला पुच्छे पुण्णाम-थी-णपुंसके । दीणोदत्तं वियाणित्ता विभत्तीय विआगरे ॥ ३४ ॥
 अपुमं णिवण्णो पुच्छे पुण्णाम-थी-णपुंसके । दीणोदत्तं वियाणित्ता विभत्तीय विआगरे ॥ ३५ ॥
 तिविधेण य णामेणं दीणोदत्तविधीहि य । सारतो य विदित्ताणं सयणं अत्थमादिसे ॥ ३६ ॥
 समाधिते आसणम्मि णिवण्णं उज्जुमभिमुहं । णिव्वुत्तं च उदत्तं च सव्वत्थेसु पसस्सते ॥ ३७ ॥
 अचलं सममकुचितं अणुक्खित्तेकपादकं । अविच्छुद्धेहिं गतेहिं णिवण्णं संपसस्सते ॥ ३८ ॥ 10
 चलं विच्छुद्धगतं वा विसमं चलितपादकं । उक्कुदुत्तं संकुचितं णिवण्णमसमाहितं ॥ ३९ ॥
 अद्धप्पसारितं दीणं तिरिच्छाणमपुज्जुगं । णिवण्णमत्थहाणी य णिदिसे असुहावहं ॥ ४० ॥
 णिवण्णेसु तु एतेसु सयणेसु तु भागसो । पसत्थमप्पसत्थं च फलं बूया विभागसो ॥ ४१ ॥
 पसत्थेसु तु एतेसु अप्पसत्थं ण णिदिसे । अप्पसत्थेसु सव्वेसु पसत्थं णेव णिदिसे ॥ ४२ ॥

[॥ णिवण्णविभासापडलं ॥ २८ ॥ छ ॥]

15

[एगूणतीसइमं सेवितविभासापडलं]

बारसेव णिवण्णाणि इति वुत्ताणि भागसो । सेविताणि तु बत्तीसं पवक्खामऽणुपुव्वसो ॥ १ ॥
 पुरिमं १ पच्छिमं चेव २ दक्खिणं ३ वाममेव य ४ । [वि] दिसासु चउरो भूया ८ उद्धं ९ हेट्ठा १० य ते दस ॥ २ ॥
 सजीवं सेवितं चेव तिरिक्खं देव-माणुसं ११ । अजीवं सेवितं वा वि जोणीहिं तिविधं भवे ॥ ३ ॥
 पाणजोणी-मूलजोणी-धातुजोणीगतं तथा । अजीवं सेवितं तिविधं १२ एवमेते दुवालसा ॥ ४ ॥ 20
 सेवितं अत्थजोणीय १३ धम्मजोणीय सेवितं १४ । कामजोणीय १५ मोक्खे य १६ सेवितं सोलसं भवे ॥ ५ ॥
 थीणामं सेवितं अंगे १७ पुण्णामं च १८ णपुंसकं १९ । आहारो २० तध णीहारो २१ दढं च २२ चलमेव य २३ ॥ ६ ॥
 सुद्धं २४ किलिद्धं २५ णिद्धं वा २६ दुक्खं वा तध सेवितं २७ ।
 पुण्णं २८ तुच्छं व विण्णेयं २९ जघण्णु ३० त्तम ३१ मज्झिमं ३२ ॥ ७ ॥
 एवेस सेवितविही बत्तीसतिविधो भवे । विण्णेयो पविभागेण पसत्थो १ णिदितो तथा २ ॥ ८ ॥ 25
 सदे १ रूवे २ रसे ३ गंधे ४ फासे ५ य तध सेविते । इंदियत्थेसु पविभत्तो संगहेण तु पंचधा ॥ ९ ॥
 चक्खुणा १ तध सोतेण २ णासता ३ तध जिब्भया ४ । तथा ५ विचेट्ठुणा चेव ६ सेवितं छव्विधं भवे ॥ १० ॥
 इति इंदियवापण्णा विण्णेयं कायचेट्ठया । बुद्धी-मतिविचारेण सेविताणि विभावये ॥ ११ ॥
 एवं समास-वासेहिं सेवितं पडिपेक्खितं । पुच्छकस्स त नेमिती अप्पणो य विआगरे ॥ १२ ॥
 तज्जातपडिरूवेण ततो अत्थं वियागरे । धम्मोपायविसेसेहिं जधुत्तं पुव्ववत्थुसु ॥ १३ ॥ 30

१ जोणिं सप्र० ॥ २ च रुयणे हं० त० विना ॥ ३ सामेसु हं० त० विना ॥ ४ संविद्धे हं० त० विना ॥
 ५ आसणाणं हं० त० विना ॥ ६ पुच्छे थीणामत्थे णपुं सप्र० ॥ ७ उज्जमति सुहं हं० त० ॥ ८ विक्खित्तेयपायवं
 हं० त० ॥ ९ विसुद्धं हं० त० ॥ १० पायवं हं० त० ॥ ११ उक्कुदुहितं हं० त० । उक्कुदुदितं सं ३ पु० सि० ॥
 १२ णुच्छकं हं० त० ॥ १३ पसत्था सप्र० ॥ १४ सि० विनाऽन्यत्र-इंदियधापण्णा सं ३ पु० । इंदियहापण्णा हं०
 त० ॥ १५ अप्पाणाय हं० त० ॥

- सदे रूवे रसे गंधे सुहे फासम्मि सेविते । इंदियत्थेसु ०८ सव्वेसु १० पसत्थं अत्थमादिसे ॥ १४ ॥
 सदे रूवे रसे गंधे दुक्खे फासम्मि सेविते । दीणेषु इंदियत्थेसु अत्थहाणि पवेदये ॥ १५ ॥
 समए लोक-वेदेसु सत्थेण जति सेवति । अत्थे धम्मे य कामे य सत्थे सत्थं पवेदये ॥ १६ ॥
 अंगवि सेवते पुरओ दक्खिणेण य उज्जुकं । पुव्वदक्खिणतो चेव अत्थसिद्धि वियागरे ॥ १७ ॥
 5 दक्खिणं सेवते उज्जुं दक्खिणेण य पच्छिमं । उत्तरं पच्छिमं वा वि अत्थं बूया णपुंसकं ॥ १८ ॥
 पुव्वुत्तरे वा पुव्वे वा सेविते पुव्वदक्खिणे । अत्थं अणागतं बूया सुभं वा अत्थसाधगं ॥ १९ ॥
 उत्तरे सेविते उज्जुं उत्तरे वा पुरत्थिमे । संजोगलाभं जाणेज्जो इत्थीलाभं च णिदिसे ॥ २० ॥
 दक्खिणे सेविते अत्थो पसत्थो वा सुभो भवे । वामे वा वि सुभो अत्थो संजोगेण विंयाहिया ॥ २१ ॥
 पच्छिमे पच्छिमुत्तरतो पच्छिमेण य दक्खिणे । सेवमाणे अतिक्रंतं अत्थं बूया सुभासुभं ॥ २२ ॥
 10 थिया वामं पसंसंति थीलाभे पुरिसस्स य । णरस्स दक्खिणं पुज्जं थिया पुत्ते पतिम्मि य ॥ २३ ॥
 मूलजोणिगते चेव पाणजोणिगते तथा । धातुजोणिगते यावि दीणोदत्तेण णिदिसे ॥ २४ ॥
 ०८ सव्वतो सेविते उद्धं अत्थसिद्धि स णिदिसे । अहेव सेविते सव्वं अत्थहाणिऽस्स णिदिसे ॥ २५ ॥ १०
 सयणं आसणं वा वि धरं वा जति सेवति । दीणोदत्तं वियाणिता विभत्तीय वियागरे ॥ २६ ॥
 सुवण्ण-रुप्प-संखे वा मणि-मुत्तं च भूसणं । पिणिधणं च सेवते अत्थसिद्धिऽस्स णिदिसे ॥ २७ ॥
 15 णिवसणं पाउरणं अच्चयणं च सेवति । दीणोदत्तं वियाणिता विभत्तीय वियागरे ॥ २८ ॥
 धयं पडागं सेवते देवतायतणाणि य । पसत्थेसु य मल्लेसु पसत्थं संपवेदये ॥ २९ ॥
 सारं जयतणं सारं थाणमिस्सरियं जसं । पतिट्ठं णिव्वुत्ति वद्धि सव्वमेतेसु णिदिसे ॥ ३० ॥
 देवे वा मणुसे वा वि सेवमाणो चउप्पदे । पक्खी व परिसप्पे वा विभत्तीय वियागरे ॥ ३१ ॥
 धणं वा जति वा धणं सेवे पुप्फ-फलाणि वा । दीणोदत्तं वियाणिता विभत्तीय विआगरे ॥ ३२ ॥
 20 सिप्पोवकरणं चेव दव्वोवकरणं तधा । सेवमाणो जता पुच्छे तेणं तस्स तमादिसे ॥ ३३ ॥
 लुक्खं तुच्छं मयं सुक्खं भगं भिण्णं च जज्जरं । सेवमाणो जता पुच्छे अत्थहाणिऽस्स णिदिसे ॥ ३४ ॥
 सुक्खं रुक्खं तणं सुक्खं तणरासि च सेवति । सयणाऽऽसणं च परिजुण्णं अत्थहाणिऽस्स णिदिसे ॥ ३५ ॥
 पुप्फितं फलितं रुक्खं उद्धोदगं च सेवति । समागमं च लाभं च वद्धि चेतोसु णिदिसे ॥ ३६ ॥
 दुब्बलं फुडितं खंडं दीणं जुण्णं च सेवति । मरणं हाणि वियाणीया सेवितम्मि पवेदये ॥ ३७ ॥
 25 णगरद्दारं धरद्दारं छिड्डं णिद्धमणाणि य । वातायणं च सेवेत तलछिड्डं तधेव य ॥ ३८ ॥
 कण्णप्पवाहणं मोक्खं मरणं णिग्गमणं तधा । धणजोणिणिराकारं अप्सत्थं च णिदिसे ॥ ३९ ॥
 आहारं सेवमाणस्स अत्थसिद्धि वियागरे । णिग्गमं विप्पयोगं च णीहारम्मि पवेदये ॥ ४० ॥
 महासारे महासारं मज्झसारं च मज्झिमे । अप्सारे य पच्चयरं सेवितम्मि पवेदये ॥ ४१ ॥
 महासारं च सयणं महासारं च आसणं । सेवमाणे महासारे महासारं पवेदये ॥ ४२ ॥
 30 अप्सारे य सयणे अप्सारे य आसणे । सेविते अप्सारम्मि अप्सारं पवेदये ॥ ४३ ॥
 अब्भंतरे सेवितम्मि अत्थो अब्भंतरो भवे । मज्झिमे मज्झिमो अत्थो बाहिरम्मि य बाहिरो ॥ ४४ ॥

१ ०८ १० एतच्चिह्नगतं पदं हं० त० नास्ति ॥ २ सु पसत्थे जति हं० त० ॥ ३ अंगवि सेवते सं ३ पु० ।
 अंगविसेविहं हं० त० सि० ॥ ४ विणा थिया हं० त० विना ॥ ५ ०८ १० एतच्चिह्नमध्यवर्ती श्लोकः हं० त० नास्ति ॥
 ६ अच्चयं च सप्र० ॥ ७ देवाय० सि० विना ॥ ८ समादिसे हं० त० सि० ॥

अब्भितरे सेवितम्मि उक्कट्टा अत्थसंपदा । मज्झा य मज्झिमे वद्धी बाहिरे हीणमादिसे ॥ ४५ ॥
 पुण्णामधेयं सेवेध पुमं इत्थि णपुंसकं । दीणोदत्तं वियाणित्ता विभत्तीय वियागरे ॥ ४६ ॥
 थीणामधेयं सेवेध पुमं इत्थि णपुंसकं । दीणोदत्तं वियाणित्ता विभत्ती य वियागरे ॥ ४७ ॥
 सिरं ललाडं कण्णं च उरं बाहुं च सेवति । थणे य परिमंडेज्ज मत्थगं च णिसेवति ॥ ४८ ॥
 उम्मट्ठेसु सुभंगेसु सिद्धमत्थं पवेदये । णिम्मट्ठेसु य गत्तेसु अत्थहारिणं पवेदये ॥ ४९ ॥ 5
 पुण्णामधेये पुरिसत्थो थीणामेसित्थिया भवे । णपुंसके उभा णत्थि णपुंसत्थं पवेदये ॥ ५० ॥
 थी-पुमंस-णपुंसत्थं णीहारे सेवितम्मि उ । तेसमेव भवे णासो आहारे लाभमादिसे ॥ ५१ ॥
 चंदणं अग्रं चैव गंध-मल्लं विलेवणं । एताणि सेवमाणस्स सव्वं साधु पवेदये ॥ ५२ ॥
 तं चैव जति सेवेध थणे य परिमंडती । णिम्मट्ठेसु य गत्तेसु हीणमत्थं पवेदये ॥ ५३ ॥
 इंगाल-छारिया-पंसु-केस-रोम-णहाणि य । किसानि लुक्खाणि तधा चलाणि य णिसेवति ॥ ५४ ॥ 10
 लुक्ख-तुच्छाणि गताणि बाहिराणि मताणि य । णिसेवमाणे एताणि हीणमत्थं पवेदये ॥ ५५ ॥
 उवहुताणि सेवते वापण्णाणि सुचीणि य । विणासं संपवेदेज्जो मरणं विप्पजोयणं ॥ ५६ ॥
 अब्भंतरेसु णिद्धेसु पुण्णामेसु दट्ठेसु य । पुण्णाम-सुक्केसु तधा आहार-मुदितेसु य ॥ ५७ ॥
 समासतो तु जो पुच्छे पसत्थं पूयितं तधा । एताणि सेवमाणस्स अत्थसिद्धी पवेदये ॥ ५८ ॥
 रुदिते कंदिते वा वि पुव्वम्मि रुदितम्मि य । समल्लिकंति वा कट्ठं धणे वा विलाकासु वा ॥ ५९ ॥ 15
 उवहुताणि सेवतो वापण्णाणि सूचीणि य । आतुरं परिपुच्छेज्ज मरणं तस्स णिदिसे ॥ ६० ॥
 तधा पुप्फ-फलं वा वि पवालं च उवहुतं । एवंविधं सेवमाणस्स अवायं तत्थ णिदिसे ॥ ६१ ॥
 दारकं दारिकं वा वि उपर आयमणि तधा । पजागरं थावरं वा सव्वमेतेहि णिदिसे ॥ ६२ ॥
 बीभच्छमासणं सयणं जुण्णं वत्थं च सेवइ । मरणं वा वि जाणि व वार्धि हारिणं च णिदिसे ॥ ६३ ॥
 चतुप्पदं गो-महिसं अस्सं हत्थि च सेवति । चतुप्पदं जाणगतं सव्वमेतेसु णिदिसे ॥ ६४ ॥ 20
 दंसणीयम्मि देसम्मि णवे वा सयणाऽऽसणे । पुप्फे फले सेवितम्मि सव्वमेव सुभं वदे ॥ ६५ ॥
 सयणा-ऽऽसणाणं जाणाणं विभूसं चैव सेवति । सव्वेसि चैव इट्ठाणं पसत्था अत्थसिद्धिओ ॥ ६६ ॥
 किट्ठा-रति-विहारणं उवभोगाणं च सेवणा । पाणाणं भक्ख-भोज्जाणं सुभाणं संठितस्स य ॥ ६७ ॥
 पुरिमे अणागतं बूया पच्छिमेण अतिच्छियं । वत्तमाणं च पस्सेसु उट्ठे वट्ठि अधो खयं ॥ ६८ ॥
 सज्जीवेसु य सज्जीवं सेवितेसु वियागरे । अजीवमथ अज्जीवे सेवितम्मि वियागरे ॥ ६९ ॥ 25
 पुण्णामेसु य पुण्णामं थीणामे इत्थिमादिसे । णपुंसके णपुंसत्थं सेवितम्मि वियागरे ॥ ७० ॥
 अब्भंतरे सगं अत्थं मज्झे साधारणं वदे । बाहिरेसु परक्कं च सेवितेसु वियागरे ॥ ७१ ॥
 पाणजोणी मूलजोणी धातुजोणी तधेव य । एताणेव तु जाणेज्जो दीणोदत्तेहि सेविते ॥ ७२ ॥
 उट्ठे उट्ठं बूया चलेसु चलमादिसे । आहारे आगमं विज्जा णीहारे णिग्गमं वदे ॥ ७३ ॥
 उत्तमे उत्तमं विज्जा मज्झिमे मज्झिमं वदे । सेवितम्मि जहण्णम्मि जधण्णं तु पवेदये ॥ ७४ ॥ 30
 अत्थजोणीसु अत्थं [च] धम्मे धम्मं पवेदये । कामजोणीसु कामं च मोक्खे मोक्खं पवेदये ॥ ७५ ॥

१ अत्थगं च णिवेसति हं० त० ॥ २ वुभा हं० त० विना ॥ ३ लज्जतुट्ठाणि हं० त० ॥ ४ पुण्णामसुक्कसुक्केसु तधा सं ३ पु० ॥ ५ तु पुच्छेज्ज पं० सि० ॥ ६ कट्ठं विणे वा चिलकोसु वा सं ३ पु० सि० । कट्ठं वणे वा विलाका हं० त० ॥ ७ ण्णाण सु० सप्र० ॥ ८ आयमिणं तधा सि० ॥ ९-१० सेवियंसि हं० त० ॥

लोइए लोइयं बूया वेदिके वेदिकं वदे । समयोपसेविते चेव समयं संपवेदये ॥ ७६ ॥
 एवमादिसु भावेसु सेवितेसु वियक्खणो । तज्जातपडिरूवेणं विभत्तीयं पवेदये ॥ ७७ ॥
 सेवितेसु पसत्थेसु अप्पसत्थं ण णिहिसे । अप्पसत्थेसु सव्वेसु पसत्थं णेव णिहिसे ॥ ७८ ॥
 इति सेवितविभासा तु अप्पमेयागमा अयं । भूमीकम्ममि उद्दिट्ठा सव्वभावपरूविता ॥ ७९ ॥

5

॥ भूमीकम्मे सेवितविभासा [पडलं] ॥ २९ ॥ छ ॥

[तीसतिमं भूमीकम्मसुत्तगुणविभासापडलं]

- महापुरिसदिण्णाए भूमीकम्मं ससंगहं । पडिपुण्णमिमं सव्वं अधीयाणो ण मुज्झति ॥ १ ॥
 आहारुच्चासुद्धो तु सुयीरंगमभिम्मणो । अरहंतवयणं भत्तो नमंसतो जिणुत्तमे ॥ २ ॥
 अंगविज्जं पणिवते आणाणातप्परो सता । आयरियसुस्सुसपरो गुरूणं च तधारहं ॥ ३ ॥
 10 अपरीभावी अणुस्सित्तो जितकोधो जित्तिदिओ । संजताणं च सव्वेसिं सुस्सूसकणसूयगो ॥ ४ ॥
 जितणिद्धो सुतवी य सज्जायम्मि सदा रतो । पच्चूसे य पदोसे य अंतभावत्थितो विदु ॥ ५ ॥
 सुस्सूसायं पयत्तो य सत्थण्णू परिपुच्छतो । गहणे धारणे चेव विण्णाणे य धुवत्थितो ॥ ६ ॥
 तू[ऊ]हा-ऽपोहासु कुसलो तप्परो जितसंसओ । जैधानातम्मि वत्ततो आयरियस्साणुसासणे ॥ ७ ॥
 पगब्धो ववसायी य तथा सुप्पतिभाणवं । वाकरणम्मि य आजुत्तो णिच्छित्तो जितसंसओ ॥ ८ ॥
 15 सुत्तत्थेसु दढ्ढो धीरो संसयं परिपुच्छतो । पडिबुद्धो य ज्ञायंतो णिस्संको तु ण मुज्झति ॥ ९ ॥
 चक्खुसा सोतसा वा वि उग्गेण्हंतो अविप्पुतो । पडिरूवेसु कुसलो णेमिती पुच्छित्तो सदा ॥ १० ॥
 आमासपडिरूवेसु समुप्पण्णेसु तस्सए । भया करणाणि णिसरंतो ततो बुद्धीऽभिजाणति ॥ ११ ॥
 मज्झत्थो तु जधुद्धिं जो एवं पविजाणिया । अंगस्स भूमीकम्ममि णिहेसम्मि णसिज्जति ॥ १२ ॥
 अमूढो मतिमं धीरो सुत्तत्थेण य कोविदो । रायीणं सम्मतो भवति जो एणं ववहारये ॥ १३ ॥
 20 एतमासज्ज हि णरो अणंतजिणचक्खुमा । ण मुज्झति सदा यावि अप्पणो वि सुभा-ऽसुभे ॥ १४ ॥
 भावा-ऽभावविधिं वा वि मुणेतूणऽत्थकोविदो । अणण्णो जिणसत्थम्मि सव्वदुक्खंतगो भवे ॥ १५ ॥
 अप्पमेया गुणासेवा भूमीकम्मस्स कित्तिता । अणंतजिणदिट्ठस्स गुणावयवदीवणा ॥ १६ ॥

॥ भूमीकम्मे सुत्तगुणविभासा णामं पडलं ॥ तीसतिमं ॥ सम्मतं ॥ ३० ॥ छ ॥

[इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय भगवतीय अंगविज्जाय भूमीकम्मज्झाओ अट्ठमो सम्मतो ॥ ८ ॥]

१ उवदिट्ठा हं० त० विना ॥ २ परिपुण्णमित्तं सव्वं हं० त० ॥ ३ सयीरंगं सि० । सूरीयंगं हं० त० ॥ ४ अत्थिभावं हं० त० विना ॥ ५ यथा हं० त० ॥ ६ वीरो हं० त० विना ॥ ७ हं० त० विनाऽन्यत्र-तस्सतो सि० । तस्सुतो सं ३ पु० । ८ परिजा हं० त० ॥ ९ णिहेसं विणिसिज्जति सं ३ पु० । णिहेसं विणिसिज्जति हं० त० ॥ १० एवं ववहारये हं० त० विना ॥ ११ सुणेत्तु हं० त० ॥ १२ अणण्णा सप्र० ॥ १३ हस्तचिह्नगतं पदं हं० त० एव वर्तते ॥

[णवमो अंगमणी णाम अज्झाओ]

नमो अरहंताणं सर्वज्ञानाम्, नमो सर्वसिद्धानां विसुद्धसर्वकर्मणाम्, णमो चोद्दसपुब्बीणं विदितपरमत्थाणं, णमो सव्वसाहूणं सर्वशास्त्रसूत्र—भाष्यप्रवचनपारगानाम्, णमो अणगारसुविहिताणं महातवस्सीणं, णमो सव्वजाणाणं सव्वजीत-संसयाणं, णमो पण्णाधिगाणं सव्वत्थीभावप्पदेसदंसकाणं, णमो अट्ठण्हं महाणिमित्ताणं णवंगस्स य बहुसच्चस्स । णमो भगवतो जसवतो महापुरुस्स महावीरवद्धमाणस्स । णमो भगवतीय अंगविज्जाय महाभागाय महापुरुसदिण्णाय । 5 अंधातो भगवतीय महापुरुसदिण्णाय अंगमणी णामज्झायो तमणुवक्खाइस्सामि । तं जधा—

मणी खलु अयं पुरुसो सतसाहो सहस्सक्खो सहस्सदारो सयसहस्समुहो अपरिमितो अपरिमिताणुगमणो अणंतमपारो अणंतवइयाकरणो । ताणि य सुयीकम्मोवयारेणं अरहंतभत्तिपूयाय विज्जाय नमस्कारेण आयरिय—गुरु—देवतसुस्सूसाय अहरहं सण्णाभिणिवेसेणं अरहस्स चिंताय आधात्मचिंताय अणणमणताय तव—णियम—सीलतायतविज्जोपसेवाय अत्थविणिच्छयणिरताय गहण—धारण—विमरिसोवयोगताय । लोकहितयमंगविज्जामणिं समासज्ज हि णरो अदेवो 10 देवदिव्वचक्खु—माणसो अधवा अजिणो जिणो विव सुविसुद्धभावदंसी भवति, हिता—इहिताणं अत्थाणं अणागता—इतीत—वट्टमाणं अत्थभूयत्थवेयाकरणाणं विन्नाया भवति । तस्स खलु भो ! इमस्स मणिणो पुरिसस्स सतसाहस्स ० सहस्स ० क्वस्स बहुसतसहस्सदारस्स सतसहस्समुहस्स अपरिमितस्स अपरिमिताणुगमणस्स अणंतमवारस्स अणंतवेयाकरणस्स पण्णत्तरि पुण्णामाणि भवंति १ पण्णत्तरि त्थीणामाणि २ अट्ठावण्णं णपुंसकाणि ३ सत्तरस दक्खिणाणि ४ सत्तरस वामाणि ५ सत्तरस मज्झिमाणि ६ अट्ठावीसं दहाणि ७ अट्ठावीसं चलाणि ८ सोलस अतिवत्ताणि ९ सोलस 15 वत्तमाणाणि १० सोलस अणागताणि ११ पण्णासं अब्भंतराणि १२ पण्णासं अब्भंतराणि १३ पण्णासं बाहिरब्भंतराणि १४ पण्णासं अब्भंतराणि १५ पण्णासं बाहिराणि १६ पण्णासं बाहिरबाहिराणि १७ पण्णासं ओवाताणि १८ पण्णासं ओवातसामाणि १९ पण्णासं सामाणि २० पण्णासं सामकण्हाणि २१ पण्णासं कण्हाणि २२ पण्णासं अव्वोआताणि २३ पण्णासं अतिकण्हाणि २४ वीसं उत्तमाणि २५ चोद्दस (बारस) मज्झिमाणि २६ चोद्दस मज्झिमाणंतराणि २७ दस जहण्णाणि २८ दुवे उत्तिममज्झिमसाधारणाणि २९ दुवे मज्झिममज्झिमसाधारणाणि ३० दुवे मज्झिममज्झिमाणंतरसाधारणाणि 20 ३१ दुवे मज्झिमाणंतर ० जहण्ण ० साधारणाणि ३२ दस बालेयाणि ३३ चोद्दस जोव्वणत्थाणि ३४ चोद्दस मज्झिमवयाणि ३५ वीसं महव्वताणि ३६ दुवे बालजोव्वणत्थसाधारणाणि ३७ दुवे जोव्वणत्थमज्झिमवयसाधारणाणि ३८ दुवे मज्झिमवय ० महव्वय ० साधारणाणि ३९ वीसं बंभेज्जाणि ४० चोद्दस खत्तेज्जाणि ४१ चोद्दस वेसेज्जाणि ४२ दस सुद्देज्जाणि ४३ दुवे बंभखत्तेज्जाणि ४४ दुवे खत्तेज्जवेसेज्जाणि ४५ दुवे वेसेज्जसुद्देज्जाणि ४६ आयुप्पमाणे वस्ससत्तप्पमाणाणि वीसं ४७ पण्णत्तरिवस्सप्पमाणाणि चोद्दस ४८ पंचासवस्सप्पमाणाणि चोद्दस ४९ णवुवीसवस्सप्पमाणाणि 25 दस ५० दुवे णवुवीसपण्णासवस्ससाधारणाणि ५१ दुवे पण्णासपण्णत्तरिवस्ससाधारणाणि ५२ दुवे पण्णत्तरिवस्ससत-साधारणाणि ५३ बावत्तरि सुक्खवण्णपडिभागा ५४ तिण्णि पीतवण्णपडिभागा ५५ पण्णरस रत्तवण्णपडिभागा ५६ वीसं णीलवण्णपडिभागा ५७ अट्ठारस हरितवण्णपडिभागा ५८ दस कण्हवण्णपडिभागा ५९ तिण्णि पंडुवण्णपडिभागा ६०

१ अरिहं हं० त० सि० ॥ २ सव्वजणाणं सं ३ पु० । सव्वजिणाणं सि० ॥ ३ बहुसुवस्स हं० त० विना ॥ ४ यसवतो हं० त० ॥ ५—६ "पुरिस" हं० त० सि० ॥ ७ अहाओ भग" हं० ॥ ८ "पुरिस" हं० त० सि० ॥ ९ सहस्सुद्धारो हं० त० । १० नमोक्कारेण सि० ॥ ११ अहाचिंताय हं० त० ॥ १२ विय विसुद्ध" हं० त० । विव सुद्ध" सि० ॥ १३ त्रयस्त्रिहमध्यगतं पदं हं० त० नास्ति ॥ १४ यद्यप्यत्र सर्वासु हस्तप्रतिषु पण्णासं अब्भंतराणि १३ पण्णासं बाहिराणि १४ पण्णासं बाहिरबाहिराणि १५ पण्णासं बाहिरब्भंतराणि १६ पण्णासं अब्भंतराणि १७ पण्णासं उवाताणि इतिरूपः पाठ उपलभ्यते, किञ्चाग्रे ग्रन्थकृद्व्याख्यास्यप्रानक्रमाननुसारित्वादेतत्पाठस्य ग्रन्थकृद्व्यावर्णनाक्रममनुसृत्य मया मूले पाठपरावृत्तिर्विहिताऽस्तीति ॥ १५ त्रयोविंशतिचतुर्विंशतिद्वारयोर्व्याख्यानपटलं ग्रन्थमध्ये नास्ति । किञ्च—एतदध्यायप्रान्ते द्वारनाम-संग्रहनिर्देशान्तेतद्वारनामनिर्देशो दृश्यत इति ॥ १६ त्रयस्त्रिहमध्यगतं पदं हं० त० नास्ति ॥ १७ बालजणो हं० त० सि० ॥ १८ मज्झिमाणि हं० त० ॥ १९ त्रयस्त्रिहमध्यगतः पाठः हं० त० नास्ति ॥

दुवे गंततालुगवण्णपडिभागा ६१ दुवे मेयकवण्णपडिभागा ६२ ठिआमासे पंडुवण्णपडिभागा ६३ ठिआमासे मणोसिलवण्णपडिभागा ६४ ठिआमासे हरितालवण्णपडिभागा ६५ ठिआमासे हिंगुलकवण्णपडिभागा ६६ ठिआमासे सुज्जुगमवण्णपडिभागा ६७ ठिआमासे असितवण्णपडिभागा ६८ ठिआमासे कोरैटवण्णपडिभागा ६९ ठिआमासे चित्तवण्णपडिभागा ७० ठिआमासे णिद्धवण्णपडिभागा ७१ ठिआमासे लुक्खवण्णपडिभागा ७२ ठिआमासे ५ णिद्धलुक्खवण्णपडिभागा ७३ दस णिद्धा ७४ दस णिद्धणिद्धा ७५ दस लुक्खा ७६ दस लुक्खलुक्खा ७७ दस लुक्खणिद्धा ७८ दस णिद्धलुक्खा ७९ दस आहारा ८० [दस णीहारा ८१] दस आहाराहारा ८२ दस [आहार]-णीहारा ८३ दस णीहाराहारा ८४ [दस णीहारणीहारा ८५] सोलस पुरच्छिमा ८६ सोलस पच्चत्थिमा ८७ सत्तरस दक्खिणा ८८ सत्तरस उत्तरा ८९ सत्तरस दक्खिणपुरत्थिमा ९० सत्तरस दक्खिणपच्चत्थिमा ९१ सत्तरस उत्तरपच्चत्थिमा ९२ सत्तरस उत्तरपुरत्थिमा ९३ दुवालस उद्धभागा ९४ तेरस अधोभागा ९५ पण्णासं पसण्णा ९६ पण्णासं अप्पसण्णा १०१७ पण्णासं अप्पसण्णअप्पसण्णा ९८ पण्णासं पसण्णअप्पसण्णा ९९ सोलस वामा पाणहरा १०० सोलस वामा धणहरा १०१ अट्ठापण्णं वामा सोवद्वा १०२ तीसं संखावामा १०३ एक्कारस सिवा १०४ एक्कारस थूला १०५ णव उवथूला १०६ पणुवीसं जुत्तोपचया १०७ वीसं अप्पोपचया १०८ वीसं णातिकिसा १०९ सत्तरस किसा ११० एक्कारस परंपरिकिसा १११ छेव्वीसं दिग्घा ११२ छेव्वीसं दिग्घा जुत्तप्पमाणा ११३ सोलस हस्सा किंचि दिग्घा ११४ सोलस हस्सा ११५ बारस (दस) परिमंडला ११६ चोदस करणमंडला ११७ वीसं वट्ठा ११८ बारस पुधुला ११९ एकतालीसं चउरंसा १२० बे तंसा १२१ पंच काया १२२ सत्तावीसं तणू १२३ एकवीसं ~~परंपरतणू~~ १२४ दुवे अणू १२५ एक्के परमाणू १२६ पंच हिदयाणि १२७ पंच गगहणाणि १२८ पंच उवग्गहणाणि १२९ छप्पण्णं रमणीयाणि १३० बारस आकासा १३१ ~~छप्पण्णं~~ दहरचलणा १३२ ~~छप्पण्णं~~ दहरथावरेज्जा १३३ दस इस्सरा १३४ दस अणिस्सरा १३५ चोदस इस्सरभूता १३६ पण्णासं पेस्सा १३७ पण्णासं पेस्सभूया १३८ छेव्वीसं पिया १३९ छेव्वीसं अप्पिया १४० छेव्वीसं अवत्थिया १४१ बारस पुढविकाइया १४२ दस आयुक्काइकाणि १४३ दस अगणिक्काइकाणि १४४ बारस २० वायुक्काइकाणि १४५ दस वणप्फइकाइकाणि १४६ वीसं जंगमाणि १४७ तेवीसं (तेत्तीसं) आतिमूलिकाणि १४८ तेत्तीसं मज्झविगाढाणि १४९ तेत्तीसं अंता १५० पण्णासं मुदिता १५१ पण्णासं दीणा १५२ वीसं तिक्खा १५३ पण्णत्तिरि उवहुता १५४ पण्णत्तिरि वापण्णा १५५ [दुवे] दुग्गंधा १५६ दुवे सुग्गंधा १५७ णव बुद्धीरमणा १५८ चत्तारि अबुद्धीरमणा १५९ एक्कारस महापरिग्गहा १६० चत्तारि अप्पपरिग्गहा १६१ एकूणवीसं बद्धा १६२ सत्तावीसं मोक्खा १६३ पण्णासं सका १६४ पण्णासं परक्का १६५ पण्णासं सकपरक्का १६६ दुवे सद्देया १६७ दुवे रूवेया १६८ २५ दुवे गंधेया १६९ एक्का रसेज्जा १७० दुवे फासेया १७१ एक्के मणेये १७२ चत्तारि वातमणा १७३ दुवे सहमणा १७४ दस जम्मणा १७५ दस अग्गेया १७६ दस जण्णेया १७७ दुवे दंसणिया १७८ दुवे अदंसणिया १७९ दस थला १८० पंच (बारस) णिण्णा १८१ णव गंभीरा १८२ णव परिणिण्णगंभीरा १८३ पण्णरस विसमा १८४ चोदस उण्णता १८५ बारस समा १८६ दस अण्हा १८७ दस सीतला १८८ दस आवुणेया १८९ चउरासीति पुण्णा १९० पण्णत्तिरि तुच्छा १९१ ~~एकूणवीसं~~ विवर १९२ ~~एकूणवीसं~~ अविवरा १९३ अट्ठावीसं (अट्ठ) वियडसंवुडा १९४

१ गयतालुं हं० त० ॥ २-३-४ चतुस्सकोष्ठकगत उपयुक्तोऽपि पाठः प्रतिषु नास्ति ॥ ५-६ छत्तीसं हं० त० ॥ ७ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते । परमतणू इति नामान्तरमस्य ॥ ८ ~~०८~~ ~~१०~~ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ९ मज्झत्थाणि इति नामान्तरमस्य ॥ १० वीसं पावसजंगमाणि सं ३ पु० । वीसं पारसजंगमा सि० ॥ ११ त्तिरि वापण्णा १५५ पण्णत्तिरि दुग्गंधा हं० त० । त्तिरि वा दुग्गंधा सं ३ पु० सि० ॥ १२ दंसणीया इति नामान्तरमस्य ॥ १३ वत्तमाणा हं० त० ॥ १४ वण्णेया इति नामान्तरमस्य ॥ १५ यद्यप्यत्र सर्वास्वपि प्रतिषु दस आवुणेया इति पाठस्थाने दस अपस्सया दस वानेया इति द्वाख्दयात्मक एव पाठो वर्तते, तथापि ग्रन्थकृत्प्रतिज्ञातद्वारसंख्यामध्ये एकद्वाराधिक्यभावाद अग्रे क्रियमाणद्वारव्यावर्णनानुसारेणात्र मया पाठपरावृत्तिर्विहिताऽस्ति ॥ १६ ~~०८~~ ~~१०~~ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठो हं० त० नास्ति ।

सत्त सुकुमाला १९५ चत्तारि दारुणा १९६ पंच मठका १९७ चत्तारि पत्थीणा १९८ छप्पणं सण्हा १९९ चउवीसं
 खरा २०० दस कुडिला २०१ दस उज्जुका २०२ छत्तीसं चंडणता २०३ छ आयता २०४ चत्तारि आययमुद्धिता
 २०५ वीसं दिव्वा २०६ चोदस माणुसा २०७ चोदस तिरक्खजोणिका २०८ दस जेरुया २०९ पण्णत्तरि (पंचणउत्ति)
 रुद्धा २१० दुवे सोम्मा २११ बावीसं मितुभागा २१२ दुवे पुत्तेया २१३ दुवे कण्णेया २१४ चत्तारि थीभागा २१५
 दुवे जुवतेया २१६ छव्वीसं दुग्गथाणा २१७ बारस (चोदस) तंबा २१८ चत्तारि रोगमणा २१९ छ प्पूतियं २२० 5
 छ च्चपला २२१ सत्त अचपला २२२ चत्तारि गोज्झा २२३ पंच उताणुम्मथका २२४ दस (बारस) तता २२५ दस
 मता २२६ बारस (एक्कारस) महंतकाइं २२७ अट्ठावीसं सूयी (सुयी) २२८ दस किलिद्धा २२९ पण्णत्तरि वराइं २३०
 पण्णत्तरि णायकाइं २३१ पण्णत्तरि अणायकाइं २३२ पण्णासं (अट्ठावण्णं) णीयाइं २३३ पण्णत्तरि णिरत्थकाइं २३४
 पण्णासं अण्णज्जाइं २३५ सोलस अंबराइं (अंतराइं) २३६ एक्कारस सूरइं २३७ तिण्णि भीरूणि २३८ पण्णासं
 एक्ककाणि २३९ पणुवीसं बिकारिणि २४० दस तिकाणि २४१ अट्ठ चतुक्काणि २४२ छ प्पंचकाणि २४३ छक्कए ठिआमासे 10
 २४४ सत्तए ठिआमासे २४५ अट्ठए ठिआमासे २४६ णवके ठिआमासे २४७ दसके ठिआमासे २४८ बे पण्णरसवग्गा
 २४९ बे बीसतिवग्गा २५० बे पणुवीसतिवग्गा २५१ बे तीसतिवग्गा २५२ बे पणतीसतिवग्गा २५३ बे चत्तालीसतिवग्गा
 २५४ बे पणतालीसतिवग्गा २५५ बे पंचासतिवग्गा २५६ ~~छ~~ बे पंचपंचासतिवग्गा ~~छ~~ २५७ बे सट्ठिवग्गा २५८
 बे पंचसट्ठिवग्गा २५९ बे सत्तरिवग्गा २६० बे पंचसत्तरिवग्गा २६१ बे असीतिवग्गा २६२ बे पंचासीतिवग्गा २६३
 बे णवुतिवग्गा २६४ बे पंचणवुतिवग्गा २६५ एगे सतवग्गे २६६ एगे सहस्सवग्गे २६७ ०८ एगे सतसहस्सवग्गे 15
 २६८ १० एगे कोडिवग्गे २६९ एगे अपरिमिते २७० ।

इति खलु भो ! इमस्स मणिणो पुरिसस्स सतसाहस्स सहस्सवक्खस्स बहुसहस्सदारस्स सतसहस्समुहस्स
 अपरिमियस्स अपरिमिताणुगमणस्स अणंतपारस्स अणंतवेयाकरणस्स आगमणविधिविसेसेणं १ वंदितविधिविसेसेणं २
 ठितविधिविसेसेणं ३ उपविट्ठविधिविसेसेणं ४ पल्लत्थिकाविधिविसेसेणं ५ अपस्सयविधिविसेसेणं ६ विपेक्खितविधि-
 विसेसेणं ७ हसितविधिविसेसेणं ८ आमासविधिविसेसेणं ९ सेवितविधिविसेसेणं १० संलावितविधिविसेसेणं ११ 20
 पुच्छितविधिविसेसेणं १२ हिता-ऽहितानं अत्थाणं अणागत-वत्तमाणा-ऽतीतानं अधभूतत्थवेयाकरणाणं उक्करिसा-
 ऽवकरिसा विण्णातव्वा भवन्ति ॥

॥ मणिसुत्तं सम्मत्तं सत्ताणि बे सत्तराणि २७० ॥ छ ॥

[१ पण्णत्तरि पुण्णामाणि]

॥ णमो भगवतो महतिमहावीरवद्धमाणाय ॥

25

पण्णत्तरि तु पुण्णामा पवक्खामऽणुपुव्वसो ।

सिखंडो १ मत्थको २ सीसं ३ तथा सीमंतको ४ भवे ॥ १ ॥

संखा ६ ललाटं ७ अच्छीणि ९ अवंगा ११ कणवीरका १३ ।

कण्णा १५ गंडा १७ कवोला य १९ उभयो कण्णपुत्तका २१ ॥ २ ॥

१ रोगमणा २१९ छ च्चपला २२० सत्त अचपला २२१ चत्तारि गोज्झा २२२ छ प्पूतियं २२३ पंच उताणुम्मथका
 २२४ दस तता २२५ दस मता २२६ अट्ठावीसं सूयी २२७ दस किलिद्धा २२८ पण्णत्तरि वराइं २२९ पण्णत्तरि णायकाइं
 २३० पण्णत्तरि अणायकाणि २३१ बारस महंतकाइं २३२ पण्णासं पीयाइं २३३ पण्णासं अण्णज्जाइं २३४ पण्णत्तरि
 णिरत्थकाइं २३५ सोलस अंबराइं २३६ इति क्रमेण सर्वासु प्रतिषु पाठो वर्तते । अत्र हं० त० आदर्शयोः रोगमणा स्थाने
 रोगमणा इति पाठो वर्तते, तथा बारस महंतकाइं इति पाठो हं० त० एव वर्तते ॥ २ अण्णेयाणि इति नामान्तरमस्य ॥
 ३ सत्ताणि चेव सत्तं हं० त० ॥ ४ गंडो सप्र० ॥

ओट्टा य २३ दंतवेला य २४ दंतमंसं २५ मुहं तथा २६ ।

अंसा २८ बाहू ३० पबाहू य ३२ कोप्परा ३४ अवहत्थगा ३६ ॥ ३ ॥

मणिबंधहत्था सतला ३८ अंगुट्टा चतुरो तथा ४२ ।

खंधो(धा) ४४ जंतूणि ४६ पस्साणि ४८ अक्खका य ५० उरो ५१ थणा ५३ ॥ ४ ॥

५ हितयाणि य पंचेव ५८ कुक्खी ६० उंदर ६१ वक्खणा ६३ ।

पोरुसं ६४ वत्थिसीसं च ६५ चत्ता ६७ ऊरू ६९ तधेव य ॥ ५ ॥

गोप्फा ७१ पादा य ७३ तथा उभो पायतलाणि य ७५ । एवं पुण्णामधेयाणि वियाणे पंचसत्तरिं ॥ ६ ॥

सरीरे जाणि वऽण्णाणि पुण्णामाणि भवन्तिह । ताणि पुण्णामधेज्जेसु णिद्दिसे अंगचित्तओ ॥ ७ ॥

एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तथा । पराजयं वा सत्तूणं मित्तसंपत्तिमेव य ॥ ८ ॥

१० समागमं घरावासं थाणमिस्सरियं जसं । णिव्वुत्तिं वा पत्तिट्ठं वा भोगलाभं सुहाणि य ॥ ९ ॥

दासी-दासं जाण-जुगं गो-माहिसमऽया-ऽविलं । धण-धणं खेत्त-वत्थुं च विज्जा संपत्तिमेव य ॥ १० ॥

कुडुंबवद्धि विपुलं च जं चऽण्णं इच्छितं सुखं । जं च किंचि पसत्थं सा सव्वमत्थीति णिद्दिसे ॥ ११ ॥

पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो त्ति य । सूरु य रज्जभागी य ससेसो सुभगो त्ति य ॥ १२ ॥

सयं अभिगताणं च परेणाभिगतस्स य । भोगमत्थं सुहाणि च भुंजिस्सति ण संसयं ॥ १३ ॥

१५ वसुमं जसभागी य इत्थीओ य जत्तिस्सति । कल्लाणभागी य सया सता संतोस एव य ॥ १४ ॥

अमित्तं भायरं पुत्तं तथा जामाइतं पि वा । जारं च परिपुच्छेज्जा दासं चऽत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १५ ॥

इत्थि च परिपुच्छेज्जा सिद्धत्था सुभग त्ति य । धण्णा य सुहभागी य सव्वकामसमन्निया ॥ १६ ॥

महतो य कुडुंबस्स इस्सरी सामिणी भवे । कल्लाणाणं सुहाणं च भागिणी भोगभागिणी ॥ १७ ॥

सततं अणुरत्ता य असवत्तं अकंटगं । अरोगा सुहिता णिच्चं पुरिसं च जयिस्सति ॥ १८ ॥

२० भगिणिं भायरं धीतं दासिं वा जारिकं तथा । सहिं ण्हुसं वा पुच्छेज्जा अत्थि तेवं वियागरे ॥ १९ ॥

कण्णं च परिपुच्छेज्जा सिद्धत्था सुभग त्ति य । धण्णा य सुहभागी य भवेय सुभलक्खणा ॥ २० ॥

ससेसा य उदत्ता य अणुरत्ता य जसस्सिणी । समिद्धं च कुलं एसा गमिस्सति ण संसयो ॥ २१ ॥

सूरं च रज्जभागी च णिच्चं च सुहभागिणं । महाधणं महाभागं भत्तारं च लभिस्सति ॥ २२ ॥

सत्तितामेव कण्णं तु पुच्छंती वेरका जति । धण्णा कण्ण त्ति तं बूया खिप्पं णिग्गहिति य ॥ २३ ॥

२५ गब्भं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गब्भो त्ति णिद्दिसे । गब्भिणी पुरिपुच्छेज्जा दारगं सा पयाहिति ॥ २४ ॥

जधा पुरुसपुच्छायं पुव्वुत्ता पुरुसे गुणा । तं चेव गुणसंपत्तिं तस्स बालस्स णिद्दिसे ॥ २५ ॥

कम्मं वा परिपुच्छेज्ज पुरिसकम्मं स णिद्दिसे । संगामेसु य कम्माणि सव्वाणेवं वियागरे ॥ २६ ॥

णिद्दिसे रायसेवीणं सव्वरायकुलेसु य । वावारमाधिपच्चं वा जुद्धं आयरियत्तणं ॥ २७ ॥

पवासं परिपुच्छेज्जा मासमत्तस्स होहिति । साधयिस्सति अत्थं वा भुज्जो जण्णं लभिस्सति ॥ २८ ॥

३० पउत्थं परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सधणो त्ति य । कतकज्जो अरोगो य अविग्घेणाऽऽगमिस्सति ॥ २९ ॥

बंधं च परिपुच्छेज्जा णत्थि बंधो त्ति णिद्दिसे । बद्धस्स मोक्खं पुच्छेज्जा चिरा मोक्खो भविस्सति ॥ ३० ॥

१ जत्तूणि सं ३ पु० । जंतूणि सि० ॥ २ हितयाणि हं० त० । हितहाणि सि० ॥ ३ उदर चक्खुणा सप्र० ॥

४ च रुल्ला हं० त० ॥ ५ वियारे हं० त० ॥ ६ वाणूणि हं० त० ॥ ७ सुभभागी हं० त० ॥ ८ सुट्ठिया हं० त० ॥

९ भगिणी हं० त० ॥ १० भवेमुभयल हं० त० ॥ ११ सेसेसा हं० त० ॥ १२ समिद्धं णियकुलं सि० ॥ १३ महाधणं

सं ३ पु० ॥ १४ सतिभामेव सं ३ पु० ॥ १५ वरछा जति हं० त० ॥ १६ गुरुसंपत्ति हं० त० विना ॥

भयं वा परिपुच्छेज्जा णत्थि तेवं वियागरे । खेमं च परिपुच्छेज्जा खेमं चऽत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ३१ ॥
 संधिं च परिपुच्छेज्जा विग्गहं तत्थ णिद्दिसे । विग्गहं परिपुच्छेज्जा विवादं तत्थ णिद्दिसे ॥ ३२ ॥
 विवादे वा जयं पुच्छे जयो अत्थि त्ति णिद्दिसे । आरोगं परिपुच्छेज्जा आरोगो त्ति विआगरे ॥ ३३ ॥
 रोगं च परिपुच्छेज्जा णत्थि रोगि त्ति णिद्दिसे । मरणं च परिपुच्छेज्जा णत्थि तेवं विआगरे ॥ ३४ ॥
 जीवितं परिपुच्छेज्जा अत्थि तेवं विआगरे । आबाधिकं च पुच्छेज्जा समुद्वाणंऽस णिद्दिसे ॥ ३५ ॥ 5
 भोगलंभं भोगवद्धि भोगथावरता तथा । भोगस्स वा समुदयं पुच्छे अत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ३६ ॥
 कम्मिको केणिको वा वि पुच्छे अधिकरणागमं । इस्सज्जं वा पतितुं वा छायाकरणमेव य ॥ ३७ ॥
 अधिपच्चत्थिकारे वा पुच्छे समुदयं जति । विवद्धते थिरं व त्ति सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ३८ ॥
 सिप्पिकं सिप्पिकम्मं वा विज्जाधिगमणं तथा । अजा-ऽविलं वा गो-महिसं दासी-दासं तधेव य ॥ ३९ ॥
 थोसंपयोगं पुरिसस्स थिआ वा पुरिसेण तु । पयलाभं थिरायं च मित्त-णातिसमागमं ॥ ४० ॥ 10
 णिधाणं णिधितं वा वि हितं < अवधितं > तथा । पम्हुट्टं वा पलातं वा सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ४१ ॥
 रायतो निव्वुत्तिं वा वि गिहं वा सयणा-ऽऽसणं । जाणं वा वाहणं वा वि सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ४२ ॥
 विज्जासिद्धिं कम्मसिद्धिं अरोगसिद्धिं तधेव य । जूते पण्णवणे सिद्धिं जयं लाभं च णिद्दिसे ॥ ४३ ॥
 पणिएसुं पणिज्जेसु भंडस्स कय-विक्कये । णिचये लाभसंपत्तिं कयसिद्धिं च णिद्दिसे ॥ ४४ ॥
 पराजयं वाधि-भयं णिराकारं अणिव्वुत्तिं । छेदणं भेदणं वा वि सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ४५ ॥ 15
 अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । वस्सारत्तं च पुच्छेज्ज उक्कट्टु त्ति वियागरे ॥ ४६ ॥
 अपातवं च पुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज महामेहं त्ति णिद्दिसे ॥ ४७ ॥
 सस्सस्स वापदं पुच्छे णत्थि तेवं वियागरे । सस्सस्स संपदं पुच्छे उक्कट्टु सस्ससंपदा ॥ ४८ ॥
 पुण्णामधेयं जं चऽण्णं पभूतमिति णिद्दिसे । ^१णिरितीअं अविग्घेणं सस्ससंगहमादिसे ॥ ४९ ॥
 मणिं च परिपुच्छेज्ज मणी धण्णो त्ति णिद्दिसे । दंडं च परिपुच्छेज्ज दंडो धण्णो त्ति णिद्दिसे ॥ ५० ॥ 20
 भूसण-ऽच्छादणं जाणं गिहं वा सयणा-ऽऽसणं । ^२बिपयं चतुप्पयं वा वि भंडोवगरणं तथा ॥ ५१ ॥
 जं चऽण्णं एवमादीयं सव्वं धण्णं विणिद्दिसे । साणुबद्धं गुणकरं कुलवद्धिकरं भवे ॥ ५२ ॥
 घरप्पवेसं पुच्छेज्ज थावरं धण्णमादिसे । तत्थऽत्थि संचयो सव्वो थावरो धण्ण एव य ॥ ५३ ॥
 णट्ठं च परिपुच्छेज्ज लाभं तस्स वियागरे । णट्ठमाधारं तं च पुण्णाममभिणिद्दिसे ॥ ५४ ॥
 पुण्णामधेयं जं किंचि सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । थोणामधेयं पुच्छेज्ज सव्वं अत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ५५ ॥ 25
 पुरिसो णपुंसको व त्ति पुरिसो त्ति वियागरे । धणं धण्णं त्ति पुच्छेज्ज धण्णं त्ति य वियागरे ॥ ५६ ॥
 जं किंचि पसत्थं ^३पुच्छे सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि ण तं अत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ५७ ॥
 तथा वत्थं तथा खेतं गिहं वा वि तधोसभं । कुक्कुडं पसु पक्खि वा भिगारं ^४छैत-विज्जणं ॥ ५८ ॥
 तथा खगं तथा वम्मं तथा चम्मं तथा वणं । तथा छिण्णं रुतं सुविणं पुण्णामं सव्वमत्थि तं ॥ ५९ ॥
 समे सदे य जाणेज्जा पुण्णामा जे भवंतिह । अहोपुरिसो त्ति वा बूया महापुरुसको त्ति वा ॥ ६० ॥ 30
 तथा पुरुससीहो त्ति पधाणपुरुसो त्ति वा । ^५कुलपुरुसो त्ति वा बूया रायपुरुसो त्ति वा पुणो ॥ ६१ ॥

१ अरोगं सि० ॥ २ अरोगो सि० ॥ ३ रोगो त्ति हं० त० विना ॥ ४ च परिपुच्छे हं० त० ॥ ५ सपुस्यं हं० त० ॥ ६ < > एतच्चिह्नमध्यगतं पदं हं० त० नास्ति ॥ ७ पवयणे सि० ॥ ८ सु य णिच्चेसं भंडं सं ३ पु० सि० । सु य णिच्चेसुं भंडं हं० त० ॥ ९-१० एवं हं० त० ॥ ११ णिरितीअं सप्र० ॥ १२ दुपयं हं० त० ॥ १३ पुच्छेज्ज सव्वं हं० त० सि० ॥ १४ कयविज्जणं हं० त० ॥ १५ हस्तचिह्नमध्यगतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥

पुरिसिस्सरो त्ति वा बूया विज्जापुरुसो त्ति वा पुणो । जुवाणो जोव्वणत्थो वा पोअंडो पुरिसो त्ति वा ॥ ६२ ॥
गंडुको पोट्टो व त्ति अड्डो सुभगो त्ति वा । विक्कतो विस्सुओ सूरु धीरो वीरो विसारदो ॥ ६३ ॥
विक्खातो लद्धमाणो त्ति महाबल-परक्कमो । गुणाणं एवमादीणं जतोदाहरणं भवे ॥ ६४ ॥

णरं पुण्णामधेयं वा पुण्णामसमकं हि तं । इच्चेते मणुसा सदा पुण्णामसमलक्खणा ॥ ६५ ॥

- 5 पुण्णामसमके सदे कित्तयिस्सं अमाणुसे । णेरइयो त्ति वा बूया णिरयलोको त्ति वा पुणो ॥ ६६ ॥
तथा असुरलोको त्ति असुरिदो त्ति वा पुणो । णागो त्ति सुवण्णो त्ति णागलोको त्ति वा पुणो ॥ ६७ ॥
कधं अण्णस्स वा कुज्जो भवणवासी भवन्ति जे । महालोको किंपुरुसो गंधव्वो किन्नरो त्ति वा ॥ ६८ ॥
मरुतो वा वि भूतो वा पिसाओ जक्ख-रक्खसो । चंदो सूरु त्ति वा बूया बुधो सुक्को बहस्सती ॥ ६९ ॥
राहु त्ति धूमकेउ त्ति लोहियंको सणिच्छरो । विमाणाणि विमार्णिदो कप्पो कप्पपति त्ति वा ॥ ७० ॥
10 कप्पोपको वा देवो वा देवो वेमाणिको त्ति वा । देवो वा अमरो व त्ति सूरु वा विबुधो त्ति वा ॥ ७१ ॥
गोज्झगो गोज्झकपती देवराय त्ति वा पुणो । कप्प त्ति वा विमाणं त्ति जे वा कप्पपती सुर ॥ ७२ ॥
तेसि तु णामग्गहणं कथा व जति कीरति । एते अमाणुसा सदा देवजोणिकता भवे ॥ ७३ ॥

‘तिज्जजोणिगते सदे कित्तयिस्सं अत प्परं । हत्थी अस्सो व उट्ठे त्ति गहभो घोडगो त्ति वा ॥ ७४ ॥
तधोसभो बलिवदो वच्छको तण्णको त्ति वा । सीहो वग्घो वको व त्ति खग्गो वा रोहितो त्ति वा ॥ ७५ ॥
15 दीविको अच्छमलो त्ति तरच्छे महिसो गयो । लोयको वा ससो व त्ति कंटेणो धण्णको त्ति वा ॥ ७६ ॥
कंडुमायो कुरंगो त्ति सियालो सूकरो सुणो । विरालो णकुलो व त्ति कुक्कुरो मूसगो त्ति वा ॥ ७७ ॥
सरभो वा रुरु व त्ति वाणरो गजपुंगवो । मेसो ऊरणको व त्ति मेंढगो छंगलो त्ति वा ॥ ७८ ॥
हरितो वा मगो वा वि कवलो कोसको त्ति वा । जे वऽण्णे एवमादीया लोए हेंति चतुप्पदा ॥ ७९ ॥
तेसि हेंते कथाय वा पुण्णामसममादिसे । चतुप्पदा सदा इच्चेते परिकित्तिता ॥ ८० ॥

- 20 इतो पक्खिगते सदे पक्खामऽणुपुव्वसो । गरुलो रायहंसो त्ति कलहंसो त्ति वा पुणो ॥ ८१ ॥
चासो रिकिसिको व त्ति वीरल्लो सारसो त्ति वा । चक्कवागो बगो व त्ति भारंडो [.....] ॥ ८२ ॥
गहरो कुललो [वा वि] सेणो बासो(जो) तहा सुओ । वंजुलो सतपत्तो त्ति उवो कपिलको त्ति वा ॥ ८३ ॥
पारेवयो कपोतो त्ति हारीडो कुक्कुडो त्ति वा । तित्तिरो लावको व त्ति कयरो व कर्विजलो ॥ ८४ ॥
[.....] कातंबो दंडमाणवो । आसवाय त्ति कौचो त्ति अधवा कधामज्झको ॥ ८५ ॥
25 सरभो उपको व त्ति मयूरो त्ति व जो वदे । कारंडओ त्ति पिलओ त्ति सिरिकंठो त्ति वा पुणो ॥ ८६ ॥
पुतंगयो धिगरायो जीवजीवको त्ति वा । मुधुलूको त्ति वा बूया कुंधुलूको त्ति वा पुणो ॥ ८७ ॥
जे वऽण्णे एवमादीया पक्खी पुरुसणामगा । तेसि तु रुतणिग्घोसे णामोदाहरणेण वा ॥ ८८ ॥
पुण्णामसमका सदा इच्चेते पक्खिजोणिया । परिसप्पगते सदे कित्तयिस्समतो परं ॥ ८९ ॥

मच्छो वा कच्छभो व त्ति णागो त्ति मगरो त्ति वा । सुसुमारो त्ति तिमि तिर्मिगिल गिल त्ति वा ॥ ९० ॥

१ गहिको हं० त० ॥ २ लोहंको सं ३ पु० ॥ ३ सूरु वत्तो बुधो त्ति सं ३ सि० । सूरु व्व उ बुद्धो त्ति हं० त० ॥
४ तिरियजोणि हं० त० विना ॥ ५ अय प्परं हं० त० । ‘अत प्परं’ अतः परमित्यर्थः ॥ ६ लोपको पाससो सं ३ पु० ।
लोयको पारुसो हं० त० ॥ ७ कडमायो हं० त० विना ॥ ८ उरणको व हं० त० विना ॥ ९ छंगलगो तथा हं० त० विना ॥
१० व त्ति कतलो कोमको हं० त० विना ॥ ११ रूवे सि० ॥ १२ धीरल्लो हं० त० ॥ १३ भारंड हं० त० विना ॥
१४ हस्तचिह्नगतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ १५ वंजुल्लो हं० त० ॥ १६ कतरो विधि कर्विजलो ॥ १७ असवायति कोवो
त्ति अहवा कायमज्जाओ हं० त० ॥ १८ सरतो तोपको हं० त० विना ॥ १९ मुधूलको हं० त० । मधुलोको सि० ॥
२० कुधुलुको हं० त० । कुधुलोको सि० ॥ २१ तेसि गुर्या णि हं० त० ॥

मंडूको त्ति कुलीरो त्ति मगरो बौडमच्छको । सहस्सदंतो पाठीणो मच्छे गागरको त्ति वा ॥ ९१ ॥
 सण्हमच्छे महामच्छे तथा कालाडगो त्ति वा । णामिण ग्गाधमको तथा पिविपिणो त्ति वा ॥ ९२ ॥
 जे चेवमादिणो सव्वे मच्छा पुरुसणामका । णामसंकित्तणे तेसि पुण्णामसममादिसे ॥ ९३ ॥
 पुण्णामधेयमच्छणं दंसणं पि तथा भवे । [.....] ॥ ९४ ॥

भीराहि गोणसो व त्ति अजो अजगरो त्ति वा । मिलिंदको लोहितको तथा पापहिको त्ति वा ॥ ९५ ॥ 5
 पूर्तिगालो तित्तिलो त्ति तथा गोमयकीडगो । कीडो त्ति वा पतंगो त्ति संखो खुलुक-हालको ॥ ९६ ॥
 जे वऽण्णे एवमादीया सुहुमा बादर वि वा । उदाहिते ण पुण्णामा सव्वे पुण्णामसंसिता ॥ ९७ ॥

तथा रुक्खेसु जे रुक्खा पुण्णामा परिकित्तिता । पुण्णामसदेहिं समा तेहि सदा विधीयति ॥ ९८ ॥
 अंबो अंबाडको व त्ति णसो लकुचो त्ति वा । असोगो तिलको लकुचि सालो बकुल-वंजुलो ॥ ९९ ॥
 पुण्णामो णागरुक्खो त्ति बूया कुरबको त्ति वा । अंकोल्लो कोलिको वा वि णग्गोधो अतिमुत्तगो ॥ १०० ॥ 10
 अहिरण्णको त्ति वा बूया कण्णिकारो त्ति वा वदे । चारो वरुणको व त्ति किसुगो पालिभदगो ॥ १०१ ॥
 सज्जऽज्जुणो कतंबो त्ति णिबो त्ति कुडजो त्ति वा । उदुंबरो त्ति अप्फोयो णग्गोधो त्ति वडो त्ति वा ॥ १०२ ॥

सिण्हको त्ति सिलिंधो त्ति विलियंधो त्ति वा पुणो ।

णिवुरो त्ति व ८५ जो बूया ८० सागो त्ति असणो त्ति वा ॥ १०३ ॥

पाणो वा कोविडालो वा चिल्लको बंधुजीवको । दधिवण्णो सत्तिवण्णो त्ति कोसंबो भीरुओ त्ति वा ॥ १०४ ॥
 अयकण्णो अस्सकण्णो त्ति धम्मण्णो त्ति धवो त्ति वा । दालिमो णालिकेरं त्ति कविट्ठो रिट्ठको त्ति वा ॥ १०५ ॥ 15
 पारावतो णत्तमालो कोविरालो त्ति वा पुणो । वणसंडो सिरीसो त्ति छतोधो त्ति णलो त्ति वा ॥ १०६ ॥
 मधूगो चंदणो चेव लोद्धो उण्होलको त्ति वा । वारंगो खदिरो व त्ति अयमारो करो त्ति वा ॥ १०७ ॥
 पादवो व दुमो व त्ति रुक्खो वा अगमो त्ति वा । तथा थावरकायो त्ति विडवि त्ति व जो वदे ॥ १०८ ॥
 जे वऽण्णे एवमादीया रुक्खा पुरुसणामका । णामतो समुदीरंति पुण्णामसमका हि ते ॥ १०९ ॥

रुक्खणामगता सदा इच्चेते परिकित्तिता । पुण्णामधेया जे गुम्मा ते पवक्खामि णामतो ॥ ११० ॥ 20

कोरेंटो कणवीरो त्ति सिंधुवारो त्ति वा पुणो । अणंगणो अणोज्जो त्ति "कुंटो वा सेदकंटको ॥ १११ ॥
 रत्तकंटक-वाणीरो छिक्को वा णीलकंटको । तिमिरको सणो व त्ति तलकोडो णागमालको ॥ ११२ ॥
 जे वऽण्णे एवमादीया रुक्खा (गुम्मा) पुरुसणामका । रुक्खा गुम्मा य जे वुत्ता तेसि पुप्फ-फलस्स वि ॥ ११३ ॥
 णामसंकित्तणासदा पुण्णामसमका भवे । एतेसुं [चेव] जे रुक्खा णामतो ण उदाहिता ॥ ११४ ॥

ततो केसिचि पुप्फ-फलं कित्तयिस्सामि णामतो । विभत्तीसु जेधासत्ति णायव्वं सुहुमं भवे ॥ ११५ ॥ 25

पदुमं पुंडरीकं च पंकयं णलिणं त्ति वा । सहस्सपत्तं सतपत्तं सप्फं त्ति कुमुदं त्ति वा ॥ ११६ ॥

तधुप्पलं कुवलयं तथा गद्दभगं त्ति वा । तणसोल्लिकं त्ति वा बूया तथा तामरसं त्ति वा ॥ ११७ ॥

इंदीवरं कोज्जकं त्ति पाडलं कंदलं त्ति वा । तथा चंपगपुप्फं त्ति इरिकाकं त्ति वा पुणो ॥ ११८ ॥

तथा लवंगपुप्फं त्ति भवे मोगरं त्ति वा । अंकोल्लपुप्फं वा बूया पुप्फं सहवरस्स वा ॥ ११९ ॥

पुप्फाणि जाणि वऽण्णाणि एवमादीणि सूयए । पुण्णामकधायं तु समसदा भवंति ते ॥ १२० ॥ 30

१ वाडं हं० त० विना ॥ २ कलोडगो सि० ॥ ३ पापाहि ओविहा हं० त० ॥ ४ खलुकं हं० त० ॥ ५ लकुचो हं० त० ॥ ६ अप्फायो सं ३ पु० सि० । अड्डोयो हं० त० ॥ ७ विलिअंचो त्ति सं ३ पु० । विलिअंबो त्ति सि० ॥ ८ ८५ ८० एतच्चिह्नगतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ९ धम्मणो त्ति धणो त्ति सि० ॥ १० रुक्खा णामं सि० विना ॥ ११ कुंडो वा सेदकंटको हं० त० ॥ १२ कंटकं सि० ॥ १३ कंटको सि० ॥ १४ तडकोडो हं० त० । तिलकोडो सि० ॥ १५ णागगोलको हं० त० विना ॥ १६ यथा हं० त० ॥ १७ सूयितो सं ३ पु० । सूयिते सि० ॥

- कंठेगुणो त्ति वा बूया अधवा संविताणकं । देवमल्लं त्ति वा बूया उरणा चुंभलं त्ति वा ॥ १२१ ॥
 आमेलको त्ति वा बूया मत्थको गोच्छको त्ति वा । पुप्फरासी णिगरो वा पुप्फाणं पोद्लो त्ति वा ॥ १२२ ॥
 जं च पुप्फमयं किंचि पुण्णामं भूसणं भवे । तस्सद्दमुदाहरणे पुण्णामसममादिसे ॥ १२३ ॥
 पुप्फजोणी समासेण इच्चेसा परिकित्तिता । फलं पुण्णामतो सद्दं कित्तयिस्समतो परं ॥ १२४ ॥
- 5 कुभंडं तुंब—कालिगं तधा केक्खारुगं त्ति वा । ससंबिदुकं त्ति वालुक्कं तपुसेल्लालुकं त्ति वा ॥ १२५ ॥
 दालिमं णालिकेरं त्ति बिल्लमामलकं त्ति वा । तिंदुकं बदरं व त्ति तधा सेलूडकं त्ति वा ॥ १२६ ॥
 तलपक्कं त्ति वा बूया सीवण्णं धम्मणं त्ति वा । तोरणं करमंदं त्ति तधा बेभेलकं त्ति वा ॥ १२७ ॥
 कंटासकं जंबुफलं भवे पारावतं त्ति वा । अक्खोल—मातुलिगं त्ति खज्जूरं कलिमाजकं ॥ १२८ ॥
 फलाणि जाणि वऽण्णाणि पुण्णामाणि भवंतिह । तेसिं संकित्ताणसद्दा पुण्णामाणि भवंतिह ॥ १२९ ॥
- 10 फलजोणी समासेण इच्चेसा परिकित्तिता । पुण्णामाणि तु पेयाणि कित्तयिस्समतो परं ॥ १३० ॥
 बूया तु अपक्करसो तधा पक्करसो त्ति वा । अरिद्धो आसवो व त्ति मेरको त्ति मधुं त्ति वा ॥ १३१ ॥
 गोधसालको व त्ति पाणकं त्ति व जो वदे । रसो जूसो त्ति वा बूया खलको पाणियं त्ति वा ॥ १३२ ॥
 खीरं दुद्धं दधि व त्ति पयं गुल दधि त्ति वा । णवणीतं धितं व त्ति गुल तेल फाणितं त्ति वा ॥ १३३ ॥
 एवमेताणि पेयाणि कित्तियाणि समासतो । पुण्णामाणि पक्कखामि भोयणाणि अत प्परं ॥ १३४ ॥
- 15 कूरो वा ओदणो व त्ति अण्णं त्ति असणं त्ति वा । भोयणं जेमणं व त्ति आहारो त्ति व जो वदे ॥ १३५ ॥
 पायसो परमण्णं त्ति दधितावो विलेपिको । दधिकूर—दुद्धकूरो घत—सासवकूरको ॥ १३६ ॥
 गुलकूरको त्ति वा बूया अधवा पत्तकूरको । कुलत्थकूरको व त्ति मुग्ग—मासोदणो त्ति वा ॥ १३७ ॥
 अतिकूर तेलकूरो त्ति भूतकूरो त्ति वा वदे । जस्स धण्णस्स जो मिस्सो तण्णामो कूर एव सो ॥ १३८ ॥
 जे वऽण्णे एवमादीया कूरा पुरुसणा मगा । तेसिं संकित्ताणसद्दा पुण्णामसमका भवे ॥ १३९ ॥
- 20 अण्णजोणीसु पेयाले इच्चेते परिकित्तिता । पुण्णामाणि पक्कखामि एतो अच्छादणाणि तु ॥ १४० ॥
 पडसाडगं त्ति वा बूया तधा खोमदुगल्लगं । चीणंसुगं चीणपट्टो पावारो वा पडो त्ति वा ॥ १४१ ॥
 साडको सेदसाडो त्ति तधा कोसेयपारओ । णाणाविधा कंबलका जे पुण्णामा भवंतिह ॥ १४२ ॥
 उत्तरिज्जंउत्तरिज्जं त्ति उस्सीसं वेधणं त्ति वा । कप्पासो केचुको व त्ति वारवाणं त्ति वा पुणो ॥ १४३ ॥
 विताणकं त्ति वा बूया पच्छतो व त्ति जो वदे । सण्णाहपट्टको व त्ति अधवा मल्लसाडगो ॥ १४४ ॥
- 25 अच्छादणे पंचविधे यं जं पुण्णामकं भवे । तं [तं] सद्दोदाहरणं पुण्णामसममादिसे ॥ १४५ ॥
 पच्छादणजोणीय एव पेयालमाहितं । पुण्णामाणि पक्कखामि भूसणाणमतो परं ॥ १४६ ॥
 तिरीडं मउडो चेव तधा सीहस्स भंडकं । अलकस्स परिकखेवो अधवा मत्थककंटकं ॥ १४७ ॥
 तधा गरुलको व त्ति वदे मगरको त्ति वा । तधा उसभको व त्ति अधवा सीउको भवे ॥ १४८ ॥
 अधवा हत्थिको व त्ति तधा चक्ककमिहुणगं । तधेव ज्झंकको व त्ति कडगं खडुगं त्ति वा ॥ १४९ ॥
- 30 णिडालमासको व त्ति तिलको मुहफलक त्ति वा । विसेसको त्ति वा बूया अवंगो त्ति व जो वदे ॥ १५० ॥
 कुंडलं वा बको व त्ति मत्थगो तलपत्तकं । दक्खाणकं कुरबको अधवा कण्णकोवगो ॥ १५१ ॥

१ उराणं चुंभलं हं० त० । उरुणाभं तलं सि० ॥ २ रुक्खारुगं हं० त० ॥ ३ वालुंकिं सि० ॥ ४ कं पुसेल्लालुकं हं० त० विना ॥ ५ < > एतच्चिह्नमध्यवर्त्यं श्लोकः हं० त० नास्ति ॥ ६ 'अत प्परं' अतः परमित्यर्थः ॥ ७ गुम्ममासो हं० त० ॥ ८ कूरं खल्लकरो त्ति चूतं हं० त० ॥ ९ स्वेडसाडो सि० विना ॥ १० ओसीसं हं० त० ॥ ११ चेवणं हं० त० विना ॥ १२ कंसुको हं० त० ॥ १३ ससोहं हं० त० विना ॥ १४ सीधस्स हं० त० विना ॥ १५ सीउको सं ३ पु० ॥ १६ महुफलकं सं ३ पु० ॥ १७ वाद्धको सं ३ पु० । वाव्वको हं० त० । वाडको सि० ॥

कण्णपीलो ति वा बूया कण्णपूरो ति वा पुणो । कण्णस्स खीलको व ति अधवा कण्णलोडको ॥ १५२ ॥
 केज्जूरं तलभं व ति कंदूगं परिहेरं । ओवेढगो वलयं तथा हत्थकलावगो ॥ १५३ ॥
 हत्थ[स्स] खड्गं व ति अणंतं खुड्गं ति वा । हत्थ[स्स] भंडको व ति कंकणं वेढको ति वा ॥ १५४ ॥
 हारो वा अद्धहारो वा तथा च फलहारको । वेकच्छगो ति गेवेज्जं कट्ठो वा कडको ति वा ॥ १५५ ॥
 सुत्तकं ति व जो बूया तथा सोवणसुत्तं । तिगिच्छिण ति वा बूया ह्रियत्ताणकं ति वा ॥ १५६ ॥ 5
 सत्थिको सिरिवच्छो ति अट्ठमंगलकं ति वा । सोणिसुत्तं ति वा बूया अधवा रयणकलावगो ॥ १५७ ॥
 गंडूपकं ति वा बूया तथा खत्तिधम्मकं । तथा णीपुरं व ति तथा अंगजकं ति वा ॥ १५८ ॥
 पापढको ति वा बूया पादखंडुयं ति वा । परमासको ति वा बूया तथा पादकलावगो ॥ १५९ ॥
 सरजालकं ति वा बूया अधवा बाहुजालकं । तधूरुजालकं व ति तथा वा पादजालकं ॥ १६० ॥
 अक्खको व ति वा बूया पुंस्सकोकिलको ति वा । कंचीकलावको व ति तथा वा हसुडोलको ॥ १६१ ॥ 10
 एसाऽऽभरणजोणी तु पुण्णामा परिकित्तिता । कित्तेसं भोयणीयाणी भायणाणि समासतो ॥ १६२ ॥

तट्टकं सरकं थालं सिरिकुंडं ति वा पुणो । तथा पणसकं व ति तथा अद्धकविट्ठं ॥ १६३ ॥
 सुपतिट्टकं ति व वदे तथा पुक्खरपत्तं । सरं मुंडं व ति तधेव सिरिकंसं ॥ १६४ ॥
 थालकं ति व जो बूया तथा दालिमपूसिकं । णालकं ति व जो बूया तथा मल्लकमूलकं ॥ १६५ ॥
 करोडको ति वा बूया अधवा वट्टमाणं । अलंदको जंबुफलकं तथा वा भंडभायणं ॥ १६६ ॥ 15
 खोरकं खोरको व ति वट्टकं ति व जो वदे । मुंडकं ति व जो बूया पीणकं ति व जो वदे ॥ १६७ ॥
 पुण्णामधेयं जं चऽण्णं भवे भोयणभायणं । तस्स संकित्ताणसद्वा पुण्णामसमका भवे ॥ १६८ ॥
 भायणाणि तु पादाणि कित्तियाणि समासतो । सयणा—ऽऽसण—जाणाणि कित्तयिस्समतो परं ॥ १६९ ॥

आसणं सव्वतोभदं तधेव सयणाऽऽसणं । आसंदगो भदपीढं ति पादफलं वट्टपीढकं ॥ १७० ॥
 डिप्फरो पीढफलकं सत्थिकं तलियं ति वा । मसूरको अत्थरको कोट्टिमं ति सिलातलो ॥ १७१ ॥ 20
 मासालो मंचको व ति पल्लंको पडिसेज्जको । जं वा जाणेषु पुण्णामं सव्वं तं समलक्खणं ॥ १७२ ॥
 सयणाऽऽसण—जाणाणि कित्तियाणि समासतो । भंडोवगरणं सव्वं कित्तयिस्समतो परं ॥ १७३ ॥

अरंजरो अलिंदो ति कुंडगो माणको ति वा । घडको कुढारको व ति वारको कलसो ति वा ॥ १७४ ॥
 गुलमगो ति वा बूया तथा पिढरको ति वा । तथा मल्लगभंडं ति पत्तभंडं ति वा पुणो ॥ १७५ ॥
 जं चऽण्णं एवमादीयं पुण्णामं भोमयं भवे । सव्वमेवाणुगंतूणं पुण्णामसमं वदे ॥ १७६ ॥ 25
 एवं लोहमयं सव्वं तथा मणिमयं च जं । संख—सिप्पमयं चेव जं च सेलमयं भवे ॥ १७७ ॥
 भंडोवगरणं सव्वं जं जं पुण्णामकं भवे । सव्वमेवाणुगंतूणं पुण्णामसममादिसे ॥ १७८ ॥

तथा पुण्णामधेयाणि सव्वलोहाणि णिदिसे । मणि वा मोत्तियं व ति सव्वं पुण्णामिकं भवे ॥ १७९ ॥
 सुवण्ण—रुपं धण—धण्णं चंदणं अगरं तथा । अंडजं १ पौंडजं २ चम्मं ३ वालयं ४ वक्कयं ५ पि वा ॥ १८० ॥
 अच्छदणं पंचविधं परगं पट्टणुगतं । जं चऽण्णं एवमादीयं रयणं पुण्णामिकं भवे ॥ १८१ ॥ 30

१ कणस्स सीलको हं० त० ॥ २ लोडको हं० त० सि० ॥ ३ कज्जूरं हं० त० विना ॥ ४ खड्गं हं० त० ॥
 ५ अणत्तरं खुं हं० त० ॥ ६ तहा पलं हं० त० ॥ ७ वाडको सि० विना ॥ ८ सत्थिको हं० त० ॥ ९ पाएढको
 सि० । पापटको हं० त० ॥ १० खन्नुयं सं ३ पु० । खवुयं सि० ॥ ११ पुंसको सि० ॥ १२ कच्चीकं हं०
 त० विना ॥ १३ वा लसुडो हं० त० विना ॥ १४ वट्टमाणं सि० ॥ १५ तु एयाणि हं० त० । 'पादाणि' पात्राणीत्यर्थः ॥
 १६ उल्लमको ति हं० त० ॥ १७ पुण्णाम भोम्मयं हं० त० विना ॥

तं सव्वमणुगंतूण पुण्णामसममादिसे । एत्तो पुण्णामिकं धण्णं कित्तयिस्सामऽतो परं ॥ १८२ ॥

साली वीही तिलो व त्ति कोद्वा वैरक त्ति वा । उरालका चीण-मुग्गा णिप्फावा जव-गोधुमा ॥ १८३ ॥

मासा मूढत्थ-चणका कुलत्थ त्ति सण त्ति वा । एवं पुण्णामिका सद्दा वोच्छं धणमतो परं ॥ १८४ ॥

सुवण्णमासको व त्ति त्था रययमासओ । दीणारमासको व त्ति त्थो तथोणाणं च मासको ॥ १८५ ॥

5 कौहापणो खत्तपको पुराणो त्ति व जो वदे । सतेरको त्ति तं सव्वं पुण्णामसममादिसे ॥ १८६ ॥

एवमेवऽत्थतो दिट्ठं पुण्णामं पि य लक्खणं । सव्वमेवाणुगंतूणं पुण्णामसममादिसे ॥ १८७ ॥

पुण्णामधेये णक्खत्ते देवते पणिधिमि य । रुक्खे पुप्फ-फले देसे णगरे गाम-गिहे तथा ॥ १८८ ॥

पुरिसे चउप्पदे वा वि पक्खिमि उदगेचरे । कीडे किप्पिल्लके वा वि परिसप्पे तथेव य ॥ १८९ ॥

पाणे य भोयणे चेव तथा आभरणेसु य । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणेसु य ॥ १९० ॥

10 लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्व-धण्ण-धणेसु य ॥ १९१ ॥

एतम्मि पेक्खितामासे सद्दे रूवे तथेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचित्तको ॥ १९२ ॥

॥ पुण्णामाणि सम्मत्ताणि । द्वितीयोऽध्यायः ॥ २ ॥ छ ॥

[२ पणत्तरिं थीणामा]

पणत्तरिं तु थीणामा मणिम्मि परिकित्तिया । छाली सिहा य गंडा य उभयो कण्णचूलिगा ॥ १९३ ॥

15 भुमका अक्खिगुलिका तारका अक्खिवत्तिणी । णासिका कण्णपालीओ धूणा सीता य तालुका ॥ १९४ ॥

दाढाओ दंतवेढीओ वट्ठी जिब्भा हणू तथा । अवह-ककाडिका गीवा कडि पट्ठी फिजा गुदा ॥ १९५ ॥

पओट्टा बाहुणालीओ चुचुका थणपालीओ । णाभी य लोमवासी य जंघाओ थूरका तथा ॥ १९६ ॥

कंडरा पण्हिका लंका सोलसंगुलिओ तथा । लेहा छिा य धमणी य वलीओ सिव्वणी तथा ॥ १९७ ॥

सरीरे जाणि वऽण्णाणि थीणामाणि भवंति हि । ताणि थीणामधेज्जेसु णिहिसे अंगचित्तओ ॥ १९८ ॥

20 अत्थं वट्ठि जयं लाभं पुच्छे एताणि आमसं । थीणिमित्तं त्ति तं बूया इतरं णत्थि त्ति णिहिसे ॥ १९९ ॥

पुरिसं च पुरिपुच्छेज्ज अधण्णो दूभगो त्ति य । असिद्धत्थो त्ति तं बूया थीणामं पुण णिहिसे ॥ २०० ॥

अप्पभागो य भवति अप्पसेसे किलेसंव । पावो य आइलो णिच्चं भोगे दुक्खेण भुंजति ॥ २०१ ॥

इत्थि वा परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूभग त्ति य । अप्पसेसा असिद्धत्था कुडुंबस्स अणिस्सरी ॥ २०२ ॥

अस्सामिणी य अत्थाणं आणा जस्स ण वट्ठति । आइला बहुमंतक्खा पति च ण जयिस्सति ॥ २०३ ॥

25 कण्णं च परिपुच्छेज्ज तिस्से सव्वत्थमादिसे । अज्झावक फलं सव्वं ण लहुं पुण णिगमे ॥ २०४ ॥

अप्पसेसा अभागा य कुडुंबस्स य णीहणी । निच्चं पतिस्स वस्साय अविधेयो पती य से ॥ २०५ ॥

गब्भं च परिपुच्छेज्ज णत्थि गब्भो त्ति णिहिसे । गब्भिणी तु किलेसेण दारिकं तु पजाहिति ॥ २०६ ॥

णिच्चं अपच्चधमणं पुच्छे कण्णारस्स दावरा । दारकाऽस्स ण जायंति जाताणं मच्चुतो भयं ॥ २०७ ॥

पुरुसो जति पुच्छेज्ज थीणिमित्तं समागमं । भविस्सति त्ति संबूया थीया णत्थि समागमो ॥ २०८ ॥

30 विज्जाभिगमणं सिप्पं कम्मरंभं परिगहं । ववहारं च लाभं वा मित्त-णातिसमागमो ॥ २०९ ॥

१ 'ण्णामकं' हं० त० विना । २ 'स्सामितो' हं० त० विना ॥ ३ 'वकर' त्ति सं ३ पु० ॥ ४ 'हस्तचिह्नमध्यवर्ती पाठः' हं० त० एव वर्तते ॥ ५ 'काहपको' हं० त० विना ॥ ६ 'त्थ उट्ठि' हं० त० ॥ ७ 'दंतचेटीओ वही जि' हं० त० ॥ ८ 'अवत्तक' सं ३ पु० । 'अवभूक' सि० ॥ ९ 'का भीवा सप्र०' ॥ १० 'चुचुका' हं० त० ॥ ११ 'ओ पूरका' हं० त० । 'ओ रुक्का' सि० ॥ १२ 'अत्थं च विजयं' सि० ॥ १३ 'सवा' हं० त० ॥ १४ 'स्सरा' हं० त० विना ॥ १५ 'अभग्गा' हं० त० । १६ 'अविधेया सप्र०' ॥ १७ 'णिट्ठं अपच्चवमणं' हं० त० ॥ १८ 'मो० पु० विनाऽन्यत्र'—'स्स दावरा सं० ली० । 'स्स थावरा' हं० त० । 'स्स वावरा' सि० ॥ १९ 'सीया' हं० त० ॥

रायप्पसातं अधिगारं थीणामे ण पसस्सते । थीसंपयोगो थीलाभो थियाणं तु पसस्सते ॥ २१० ॥
 कामिगं कामिगा खंसं सद्धिकं केसवाणियं । अब्भाकारियं लद्धमवलद्धं वा वि णिद्दिसे ॥ २११ ॥
 देविकोडुंबिकं वा वि महाणसिकमेव य । णाडकायरियं वा वि तधा णेट्ठोसकं पि वा ॥ २१२ ॥
 थीसेवकपेसणकं गणिकापविचारकं । थीअलंकारं चैव थीणं व दव्वसाधकं ॥ २१३ ॥
 पवासे पुच्छित्ते णत्थि पउत्थो य णिरत्थकं । थीसंपउत्तं आगमणं पउत्थस्स वियागरे ॥ २१४ ॥ 5
 बंधं च परिपुच्छेज्ज णत्थि बंधो ति णिद्दिसे । बद्धस्स मोक्खं पुच्छेज्ज मोक्खं तस्स वियागरे ॥ २१५ ॥
 बद्धस्य वा वि पुच्छेज्ज पुरिसस्स पवासणं । पुच्छित्ते णिद्दिसे तस्स भविस्सति पवासणं ॥ २१६ ॥
 भयं च परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । खेमं च परिपुच्छेज्ज णत्थि खेमं वियागरे ॥ २१७ ॥
 संधिं वा परिपुच्छेज्ज विग्गहं तस्स णिद्दिसे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज विवादं तस्स णिद्दिसे ॥ २१८ ॥
 विवादे वा जयं पुच्छे णत्थि तेवं पवेदये । अरोगं पडिपुच्छेज्जा णत्थि तेवं वियागरे ॥ २१९ ॥ 10
 कोवं च परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । मरणं च परिपुच्छेज्ज मरणं तत्थ णिद्दिसे ॥ २२० ॥
 जीवितं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । आबाधितं च पुच्छेज्ज ण समुट्ठेहिंति ति तं ॥ २२१ ॥
 णिव्वाणं परिपुच्छेज्ज अणेव्वाणि पवेदये । संपत्तिं परिपुच्छेज्ज असंपत्तिं पवेदये ॥ २२२ ॥
 उस्सवभूतं जं पुच्छे णत्थि तेवं वियागरे । दीणं सोकं च पुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे ॥ २२३ ॥
 अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । वस्सारत्तं च पुच्छेज्ज मज्झिमो ति वियागरे ॥ २२४ ॥ 15
 अपातपं च पुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । कता वासं ति वा बूया काले वासं ति णिद्दिसे ॥ २२५ ॥
 दिवा रत्तिं ति वा बूया रत्तिं ति य वियागरे । सस्सस्स वापदं पुच्छे अत्थि तेवं वियागरे ॥ २२६ ॥
 सस्सस्स संपयं पुच्छे मज्झिमं ति वियागरे । सतिं च जतिं पुच्छेज्ज सइं तत्थ पवेदये ॥ २२७ ॥
 थीणामधेयं जं चऽण्णं पभूतमिति णिद्दिसे । णट्ठं ति परिपुच्छेज्ज णत्थी णट्ठं ति णिद्दिसे ॥ २२८ ॥
 णट्ठमाधारइत्ताणं थीणाममिति णिद्दिसे । णट्ठस्स लाभं पुच्छेज्ज णत्थि लाभो ति णिद्दिसे ॥ २२९ ॥ 20
 [.....] पलातसंगमं पुच्छे णत्थि तेवं वियागरे ॥ २३० ॥
 २२१ णिधाणं णिधितं पुच्छे णत्थि तेवं वियागरे । २२२ णिधाणलंभं पुच्छेज्ज णत्थि लंभो ति णिद्दिसे ॥ २३१ ॥
 सेवाणिमित्तं पुच्छेज्ज णत्थि सेव ति णिद्दिसे । रायप्पसादं पुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे ॥ २३२ ॥
 रायतो णिव्वुत्तिं पुच्छे वल्लभत्तं च पुच्छति । भोगलंभं तधा[ऽ]ण्णं वा सव्वं णत्थि ति णिद्दिसे ॥ २३३ ॥
 तधाऽधिकरणे सिद्धिं लाभं पुच्छति कम्मिको । तधा पत्तिट्ठं छाये वा सव्वं णत्थि ति णिद्दिसे ॥ २३४ ॥ 25
 मणिं च परिपुच्छेज्ज अधण्णो पावकम्मिको । कुलं मणिं णिमित्तं च अवसिद्धेण संसितो ॥ २३५ ॥
 अच्छादणं च पुच्छेज्ज अधण्णं पावकं ति य । अच्छादणनिमित्तं च कुलस्साऽऽयासमादिसे ॥ २३६ ॥
 भूसणं परिपुच्छेज्ज अधण्णं पावकं ति य । अप्पसत्थं च तं बूया कुलस्साऽऽयासकारणं ॥ २३७ ॥
 घरप्पवेसं पुच्छेज्ज अधण्णं पावकं ति य । अणिव्वुत्तिकरं पावं चलं णेव पसस्सते ॥ २३८ ॥
 णिचयं भंडलाभं च दव्वस्स य स णिव्वुत्तिं । वार्धिं लंभं च एतेसु णत्थि तेवं वियागरे ॥ २३९ ॥ 30
 दासकम्मकरं पुच्छे अधण्णं पावकं वदे । आएसकारकं णिच्चं उवातं ण य काहिंति ॥ २४० ॥
 पुण्णामधेयं जं किंचि सव्वं णत्थि ति णिद्दिसे । थीणामधेयं जं किंचि सव्वमत्थि ति णिद्दिसे ॥ २४१ ॥

१ कारिकलट्ठं व द्दलं वा वि हं० त० विना ॥ २ णट्ठोसकं हं० त० विना ॥ ३ २२१ २२२ एतच्चिह्नमध्यगतं
 पूर्वाद्धं हं० त० नास्ति ॥ ४ णिहाणलाभं हं० त० सि० ॥ ५ लाभो हं० त० । ६ अधणो हं० त० ॥ ७ दव्वस्स
 य सन्निधिं । वार्धिं सं ३ पु० । दव्वसेव य सन्निधिं । वार्धिं सि० ॥

- પુરિસો જપુંસકો ઇત્થી ઇત્થિ ત્તિ [ય] વિયાગરે । ધણ્ણં ધણં ચ પુચ્છેજ્જ સવ્વં મજ્ઝિમગં વદે ॥ ૨૪૨ ॥
 જં કિંચિ પસત્થં સા સવ્વં નત્થિ ત્તિ ણિદિસે । અપ્પસત્થં ચ પુચ્છેજ્જ અત્થિ તેવં વિયાગરે ॥ ૨૪૩ ॥
 તથા ચેત્તં તથા વત્થં સવ્વં નત્થિ ત્તિ ણિદિસે । સવ્વે (સમે) સદે ય જાણેજ્જ થીણામા જે ભવંતિ ય ॥ ૨૪૪ ॥
 અહોમહિલ ત્તિ વા બૂયા મહિલા સુમહિલ ત્તિ વા । અહોઇત્થિ ત્તિ વા બૂયા સુઇત્થી ઇત્થિમેવ ય ॥ ૨૪૫ ॥
 5 દારિયા બૌલિયા વ ત્તિ સિગિકા પિલ્લિકા ત્તિ વા । વચ્છિકા તણ્ણિકા વ ત્તિ પોતિક ત્તિ વ જો વદે ॥ ૨૪૬ ॥
 કણ્ણ ત્તિ વા કુમારિ ત્તિ ધિજ્જા પત્તિ વધુ ત્તિ વા । વધૂ ઉપવધૂ વ ત્તિ ઇત્થિયા પમદ ત્તિ વા ॥ ૨૪૭ ॥
 અંગણા મહિલા ણારી પોહટ્ટી જુવતિ ત્તિ વા । જોસિતા ધેણિતા વ ત્તિ વિલક ત્તિ વિલાસિણી ॥ ૨૪૮ ॥
 ઇદ્દા કંતા પિયા વ ત્તિ મણામા હિતઇચ્છિતા । ઇસ્સરી સામિણી વ ત્તિ તથા વલ્લભિક ત્તિ વા ॥ ૨૪૯ ॥
 પજ્જિયા અજ્જિયા વ ત્તિ ૦૮ નામિકા મહ ૧૦ માતુયા । માતા વા ચુલ્લમાતા વા માઝસ્સિય પિતુસ્સિયા ॥ ૨૫૦ ॥
 10 ભજ્જા જારિ સહી વ ત્તિ ધૂતા નત્તિ પળતિણી । રેમા ન સુણ્ણ સાવત્તી સલ્લિકા મેધુણ ત્તિ વા ॥ ૨૫૧ ॥
 ભાતુજ્જાય ત્તિ વા બૂયા સગોત્તા ભંગિણિ ત્તિ વા । ભાગિણેજ્જે ત્તિ ભજ્જ ત્તિ તથા કોદુંબિણિ ત્તિ વા ॥ ૨૫૨ ॥
 પિતુસ્સહા માઝસ્સહા વા જથા પેયાતુકાસેહા । એતાસં કિત્તેણેણં તા થીણામં સવ્વમાદિસે ॥ ૨૫૩ ॥
 ઇત્થીરયણં ત્તિ વા બૂયા મહાદેવિ ત્તિ વા પુણો । રાખપત્તિ ત્તિ વા બૂયા રાયગમહિસિ ત્તિ વા ॥ ૨૫૪ ॥
 રાયોપજ્જાયપત્તિ ત્તિ સેનાયપતિણિ ત્તિ વા । ભોયણી તલવરી વ ત્તિ રટ્ટિણી ગામિણિ ત્તિ વા ॥ ૨૫૫ ॥
 15 અમચ્છી દલ્લભી વ ત્તિ પડિહારિ ત્તિ વા પુણો । તધિસ્સરિગિણી વ ત્તિ તથા ધોઇણિગિ ત્તિ વા ॥ ૨૫૬ ॥
 છાયાકરણઠાણેણ ઠાઘિતા જે સઽધિસ્સરા । જે યત્થાણજાતે પુરિસા માતા ભજ્જા વિ સિં તથા ॥ ૨૫૭ ॥
 ઘરિણી સત્થવાહિ ત્તિ હલ્લભી વા ભોગમિત્તિ વા । ભડી ણડી કારુગિણી તથા સહિગિણી ત્તિ વા ॥ ૨૫૮ ॥
 લાડી [વા] જોણિકા વ ત્તિ ચિલાતી સ્થવરિ ત્તિ વા । સવરિ ત્તિ પુલિદિ ત્તિ અંધી દિમિલિ ત્તિ વા ॥ ૨૫૯ ॥
 જાતિ-સ્સ-દેસ-કમ્માણં વિજ્જા-સિપ્પકમ્મેણ વા । યે યત્થાણજાતે પુરિસા તાઓ વિ ય તથેય સિ ॥ ૨૬૦ ॥
 20 જં જો સમાચરે કમ્મં જંજાતીકો વ્વ જો ભવે । તેસિં ભજ્જા વિ ણાતવ્વા તેણેવાભિજણેણ તુ ॥ ૨૬૧ ॥
 ગણનામા લાજિકા વ ત્તિ ઉવધાઇણિ ત્તિ વા । દાસી કમ્મકરી વ ત્તિ પેસિ ત્તિ નત્તિક ત્તિ વા ॥ ૨૬૨ ॥
 પયાવતિ ત્તિ વા બૂયા ંણે ભોતિ ત્તિ વા પુણો । ભોતિ ત્તિ માણિણી વ ત્તિ માતુસ્સ ત્તિ વ જો વદે ॥ ૨૬૩ ॥
 બંભણી ચત્તિયાણિ ત્તિ વેસ્સી સુદિ ત્તિ વા પુણો । ચાતુચ્ચણવિધાણેણ ણામતો જં જધુચ્ચતે ॥ ૨૬૪ ॥
 ઓવાતિક ત્તિ વા બૂયા સામોવાત ત્તિ વા પુણો । કાલસ્સામ ત્તિ ૦૮ સામ ત્તિ ૧૦ કાલક ત્તિ વ જો વદે ॥ ૨૬૫ ॥
 25 દિગ્ધા મહિયા વ ત્તિ ચતુરસ્સ ત્તિ વા પુણો । ચતુરસ્સા વાઽઽયતા વ ત્તિ ચુજ્જા મહ્હિક ત્તિ વા ॥ ૨૬૬ ॥
 થૂલ ત્તિ તણુકી વ ત્તિ તથા મજ્ઝિમક ત્તિ વા । સરલા અસરલા વ ત્તિ કાણ ત્તિ સહુ ત્તિ વા ॥ ૨૬૭ ॥
 તથંતેપુરિકા વ ત્તિ અંભોગાકરિણિ ત્તિ વા । તથા સયણપાલિ ત્તિ ભંડાકારિકિણિ ત્તિ વા ॥ ૨૬૮ ॥
 ૨૯ જં ચઽણ્ણં એવમાદીયં થીકલાકમ્મણં ત્તિ વા । તાસં સંકિત્તણાસહા થીણામસમલક્ષણા ॥ ૨૬૯ ॥

૧ વાસિયા હં તં વિના ॥ ૨ ત્તિ પત્તિક ત્તિ હં તં ॥ ૩ ત્તિ વિજ્જા સપ્રં ॥ ૪ એત્તિ દવુ ત્તિ હં તં ॥ ૫ વણિતા સપ્રં ॥ ૬ પિયા પત્તી સિં વિના ॥ ૭ ૦૮ ૧૦ એત્તિચ્છિહગતઃ પાઠઃ હં તં નાસ્તિ । નામિકા સપ્રં ॥ ૮ ચુણમાતા સપ્રં ॥ ૯ રમતે સુણ્ણ સપ્રં ॥ ૧૦ ભગિણિ હં તં વિના ॥ ૧૧ સધા હં તં વિના ॥ ૧૨ ત્તણેણા સપ્રં ॥ ૧૩ સણ્ણાય હં તં સિં ॥ ૧૪ વલ્લભી હં તં ॥ ૧૫ જે જહ તિસ્સરા હં તં ॥ જે તુ ધિસ્સરા સિં ॥ ૧૬ જિયત્થા હં તં વિના ॥ ૧૭ 'યત્થાણજાતે' યત્થાણજાતા इत्यर्थः ॥ ૧૮ ચિલાતે સપ્રં ॥ ૧૯ જાએ પુ હં તં ॥ ૨૦ દસ્સકરી સં ૩ પુ ॥ ૨૧ ઓતિક ત્તિ સં ૩ પુ ॥ ઉત્તિક ત્તિ સિં ॥ ૨૨ આણે હં તં વિના ॥ ૨૩ માઝસેતિ વ હં તં ॥ ૨૪ કાલેસ્સામ સં ૩ પુ ॥ કલિસ્સામ સિં ॥ ૨૫ ૦૮ ૧૦ એત્તિચ્છિહગતઃ પાઠઃ હં તં નાસ્તિ ॥ ૨૬ કોણ ત્તિ હં તં વિના ॥ ૨૭ આભાગાકરિણિ હં તં ॥ ૨૮ જં ચઽણ્ણં પવત્થિકાલા કમ્મિણચ્ચતિ । તાસં સં ૩ પુ ॥ જં ચઽણ્ણં પવત્થિકાલા કમ્મણ વ ત્તિ । તાસં હં તં ॥ જં ચઽણ્ણં એવમાદીયં ત્થિકાલા કમ્મિણ વ ત્તિ । તાસં સિં ॥

थीणामा माणुसा सद्वा इच्चेते परिकित्तिता । एतो अमाणुसे सद्दे कित्तियिस्सं अतो परं ॥ २७० ॥

असुरी असुरभज्जा वा असुरकण्ण ति वा पुणो । णागी [वा] णागकण्ण वा जा वऽण्णा भवणालया ॥ २७१ ॥
गंधव्वी रक्खसी व ति जक्खी किन्नरक ति वा । वणप्फति दिसा व ति तारक ति व जो वदे ॥ २७२ ॥

हिरी सिरि ति लच्छि ति कित्ति मेधा सति ति य ।

धिती ०८ धि ति तु १० बुद्धि ति इला सीत ति वा पुणो ॥ २७३ ॥

5

विज्जा वा विज्जता व ति चंदलेह ति वा पुणो । ०८ उक्कोससत्ति वा बूया अब्भराय ति वा पुणो ॥ २७४ ॥

अहोदेवि ति वा बूया देवी वा देवत ति वा । देवकण्ण ति वा बूया असुरकण्ण ति वा पुणो ॥ २७५ ॥ १०

इंदग्गमहिंसी व ति असुरग्गमहिसि ति वा । तथा अइरिका व ति तथा भगवति ति वा ॥ २७६ ॥

अलंबुसा मिस्सकेसी मीणका मियदंसणा । अचला अणादिता व ति अइराणि ति वा वदे ॥ २७७ ॥

रंभ ति मिस्सकेसि ति तिधिणी सालिमालिणी । तिलोत्तिमा चित्तरथा चित्तलेह ति उव्वसी ॥ २७८ ॥ 10

जा वऽण्णा एवमादीया अच्छरियि वि सूयते । णामसंकित्तणे तासिं थीणामं सव्वमादिसे ॥ २७९ ॥

अमाणुसाणि एताणि थीणामाणि वियाणिया । चतुप्पदेसु कित्तिस्सं थीणामाणि अतो परं ॥ २८० ॥

कणेरु हत्थिणी व ति गावि ति महिसि ति वा । वडव ति किसोरि ति घोडिक ति अजाऽविला ॥ २८१ ॥

कण्हेरी रोहिती व ति एणिका पसति ति वा । कुरंगि ति मिगी व ति भल्लुंकी सुणहि ति वा ॥ २८२ ॥

सीही वग्घी १० विकी व ति अच्छभल्लि ति वा पुणो । मज्जारी मुंगसी व ति उण्हाली अडिल ति वा ॥ २८३ ॥ 15

मूसिका छुंछिका व ति ओवुलीक ति उंदुरी । वाराही सुवरी कोली खारका घरकोइला ॥ २८४ ॥

जं चऽण्णं एवमादीयं थीणामं तु चतुप्पदं । णामसंकित्तणे सद्दे थीणामं सव्वमादिसे ॥ २८५ ॥

चतुप्पदाणि एताणि थीणामाणि भवंतिह । थीणामधेये १३ पक्खीओ कित्तियिस्समतो परं ॥ २८६ ॥

१३ विल्लरी रायहंसि ति कलहंसि ति वा पुणो । १३ कोकि ति सालिया व ति पूतणा सकुणि ति वा ॥ २८७ ॥

गिद्धी सेणि ति काकि ति घूकी वा णंतुक ति वा । उलुकी मालुका व ति १३ सेणा सीपिंजुल ति वा ॥ २८८ ॥ 20

कीरी मदनसलाग ति सालाका कोकिल ति वा । पिरिली कुडपूरि ति भारद्वाज ति वा पुणो ॥ २८९ ॥

लीहिका वट्टिका व ति सेण्ही वा कुक्कुडि ति वा । पोल्लाडीक ति पोटाकी सउणीग ति वा पुणो ॥ २९० ॥

आडा टिट्ठिभिका व ति णडिकुक्कुडिक ति वा । सडिक ति बलाक ति चक्कवायि ति वा पुणो ॥ २९१ ॥

एवं थीनामका पक्खी समासेण तु कित्तिया । परिसप्पगते वोच्छं थीणामेण अतो परं ॥ २९२ ॥

१३ मल्लुंडी अहिणूक ति जलूका अहिणि ति वा । वोमीक ति सिकूवाली कुलीरा कच्छभि ति वा ॥ २९३ ॥ 25

वत्तणासी सिगिला य १३ सिकुत्थी वरइ ति वा । ओवातिक ति मंडुकी सुंसुमारि अंसालिका ॥ २९४ ॥

एवमादी समासेण थीणामा जे जलचरा । णामतो समुदीरंति थीणामसमका हि ते ॥ २९५ ॥

गोधा गोमि ति वा बूया तथा मंडलिकारिका । धिगारी २५ अरका व ति वचाई इंदगोविगी ॥ २९६ ॥

१ ०८ १० एतच्चिह्नगतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ २ ०८ १० एतच्चिह्नमध्यगतः सार्द्धश्लोकः हं० त० नास्ति ॥ ३ इंदत्तमहिंसी व ति असुर ति मह ति वा हं० त० ॥ ४ अइरका हं० त० ॥ ५ वियदंसणा हं० त० विना ॥ ६ अप (य) ला हं० त० विना ॥ ७ तिधिणि हं० त० विना ॥ ८ राति वि हं० त० ॥ ९ कण्हेणा रो० हं० त० विना ॥ १० वकी हं० त० ॥ ११ अंगुली व ति हं० त० ॥ १२ छुंछुका व ति उंभुलीक हं० त० ॥ १३ पक्खीतु हं० त० विना ॥ १४ किण्णरी हं० त० सि० ॥ १५ जाजि ति हं० त० ॥ १६ सालिभा व सप्प ॥ १७ पूवणा सकुज्झि ति हं० त० ॥ १८ भेणा सीपिंजलि ति हं० त० ॥ १९ लीहिका वहिका व ति सण्ही वा कुक्कुडि हं० त० ॥ २० पोलाडिक ति पोताकी हं० त० ॥ २१ मल्लंडी हं० त० ॥ २२ कुल्लरी हं० त० ॥ २३ सिकुण्डी सि० । सिकुही हं० त० ॥ २४ असासिका हं० त० विना ॥ २५ कारिमा सं ३ पु० ॥ २६ अरवा कर्ति वचाई हं० त० विना ॥ २७ ति बंधवाई इंदुगोधिगा हं० त० ॥

तूका लिक्खा फुसी व त्ति तथा मुम्मलक त्ति वा । जाला लुत त्ति वा बूया भिउडी किण्हि तथा ॥ २९७ ॥
 तला कभेइका व त्ति उण्हणाभि त्ति वा पुणो । काणटिट्ठि त्ति वा बूया मयंसल—किपिल्लिका ॥ २९८ ॥
 जा वऽण्णा किमिजातीणं सुहुमा बादर इ वा । थीणामा य उदीरंति थीणामसमका हि ते ॥ २९९ ॥
 इच्चेते पाणजोणीयं थीणामा जे पवेदिता । मूलजोणिगता सदा थीणामसमका इमे ॥ ३०० ॥ तत्थ—

- 5 रुक्खजोणि[ग]ए रुक्खे थीणामे परिकित्तिये । थीणामधेज्जेहि समा ते वि सदा विधीयते ॥ ३०१ ॥
 पिप्परी वेडसी जंबू तथा ते परिकित्तिता । तथा अंबिलिका व त्ति वेदे चिचिणिक त्ति वा ॥ ३०२ ॥
 तथा मंडि त्ति सीवणि कज्जुरी केतभि त्ति वा । कंडूकीका तिबुरुकी धकंठि वेळ्ळरि तेरणि ॥ ३०३ ॥
 अरलूसाऽऽमली सैवपूति लंवा(चा)पलि त्ति वा । सीकवल्लोकि लिगिच्छी हिंछाघोड त्ति वा पुणो ॥ ३०४ ॥
 टक्कारी वेजयंति त्ति कंगूका सीसवत्तिया । अफोतिका धवासि त्ति सिंदीवासि त्ति वा पुणो ॥ ३०५ ॥
 10 तथा समुद्दवल्लि त्ति कप्पासी रुचिक त्ति वा । उंगुणी मातुलिगि त्ति णीहू वा आफकि त्ति वा ॥ ३०६ ॥
 तथाऽरंजरवल्लि त्ति उदगवल्लि त्ति वा पुणो । कूभंडी तवुसी व त्ति भवे पल्लालुक त्ति वा ॥ ३०७ ॥
 तुंबी कालिगी वालुंकी [तथा] कक्खारुणि त्ति वा । नलिणी पउमिणी व त्ति तथा कमलिणि त्ति वा ॥ ३०८ ॥
 उप्पलिणी [.....] पिंडालुकि त्ति वा ॥ ३०९ ॥
 घोसाडकि त्ति वा बूया ससर्बिदुकिणि त्ति वा । तथा भंजुलिका व त्ति कसकी कारिअल्लिका ॥ ३१० ॥
 15 णील्लि त्ति कालिका व त्ति अंजणेकंसक त्ति वा । लता लट्ठि त्ति वा बूया छमिणी काणवि त्ति वा ॥ ३११ ॥
 दुम—गुम्म—लता व त्ति लोए थीणामका व ये । भवंति एवमादीणि थीणामसमकाणि ते ॥ ३१२ ॥
 लता—वल्लि—दुमाणं च लोए गुम्माणमेव य । पुप्फाणि य पवक्खामि थीणामाणि अतो परं ॥ ३१३ ॥
 जाति चंपयजाति त्ति महाजाति त्ति वा पुणो । सुवण्णजूधिगा व त्ति जूधिक त्ति व जो वदे ॥ ३१४ ॥
 तकुली तलुसी व त्ति वासंती वासुल त्ति वा । वइंदवुद्धि काल त्ति जयसमण त्ति वा पुणो ॥ ३१५ ॥
 20 णैवमल्लिका मल्लिक त्ति णितण्णिक त्ति वा पुणो । तिगिच्छि पीतिका व त्ति तथेव म[ग]यंतिका ॥ ३१६ ॥
 पियंगुक त्ति वा बूया कंगुक त्ति व जो वदे । कुरुडूक त्ति व वदे वेणति त्ति व जो वदे ॥ ३१७ ॥
 तथंभमंजरी व त्ति जा वऽण्णा पुप्फमंजरी । पुप्फपिंडिया बूया पुप्फगोच्छि त्ति वा पुणो ॥ ३१८ ॥
 इच्चेते पुप्फजोणीयं थीणामा परिकित्तिता । थीणामं पुप्फसंजोगं कित्तयिस्सं अतो परं ॥ ३१९ ॥
 चंदा तीसालिका व त्ति पारिहत्थि त्ति वा पुणो । कुंभिधि धम्म जागि त्ति तथेव य विलिजरं ॥ ३२० ॥
 25 पाट्टालिका वेजयंति तथा मज्जणमालिका । जंगमाल त्ति वा बूया तथा खोलकमालिका ॥ ३२१ ॥
 पुप्फजोणी समासेण इच्चेसा परिकित्तिता । थीणामाणि फलाणि तु कित्तयिस्समतो परं ॥ ३२२ ॥
 मुदिका चलिका चेव तथेव य कसेरुका । मुणालिक त्ति वा बूया तथा विधित्तिक त्ति वा ॥ ३२३ ॥

१ लूका हं० त० ॥ २ मुम्मलिक हं० त० ॥ ३ किणिदित्तहा हं० त० ॥ ४ कभेरुका व त्ति उंटेणाभि हं० त० ॥ ५ काणो डिद्धि त्ति हं० त० ॥ ६ वदे विविणिकं त्ति वा सं ३ पु० सि० । वदे विधिलिकं त्ति वा हं० त० ॥ ७ कहकीका तिबुरुकी वकंठिखल्लरिएरणं हं० त० ॥ ८ सेलपूति लंवापति त्ति हं० त० ॥ ९ अहोति हं० त० ॥ १० सिंदी वा सिणिण वा पुणो हं० त० ॥ ११ आट(ढ) कि हं० त० ॥ १२ कसिक हं० त० ॥ १३ मकं च ये सं ३ पु० सि० । मकं च यं हं० त० ॥ १४ का हि ते सप्र० ॥ १५ जार्ति चए जाति त्ति सं ३ पु० सि० । जोइवयजाति त्ति हं० त० ॥ १६ तकुली हं० त० ॥ १७ वुद्धि कालाणि जयं सि० विना ॥ १८ णवमालिका मल्लिक त्ति तिणित्तिक त्ति वा हं० त० विना ॥ १९ वणवि त्ति हं० त० ॥ २० जोणीया हं० त० ॥ २१ कुभिविवम्मिजाग हं० त० ॥ २२ तवेयं विलिजरं हं० त० ॥ २३ वाहालिका हं० त० ॥ २४ मुदिका चिचलिका हं० त० विना ॥

तथा लोमसिका व त्ति अक्खोल त्ति व जो वदे । तथा कुक्कुडिगा व त्ति तथा संगलिक त्ति वा ॥ ३२४ ॥
फलपिंडि त्ति वा बूया फलगोच्छो त्ति वा पुणो । फला फलिक त्ति वा बूया फलमाल त्ति वा पुणो ॥ ३२५ ॥
तथेव फलमिजासु फलाणं पेसिकासु वा । एवमादीसु सव्वेसु थीणाममभिणिहिसे ॥ ३२६ ॥
फलजोणी समासेण इच्चेसा परिकित्तिता । थीणामधेये आहारे कित्तयिस्सं अतो परं ॥ ३२७ ॥

दुद्धण्हक त्ति वा बूया तथेव उदक(कु)ण्हिका । समगुण्हक त्ति वा बूया जागु त्ति कसरि त्ति वा ॥ ३२८ ॥ 5
अंवेलि त्ति व जो बूया पत्तंबेल्लि [त्ति] वा पुणो । वालकल्लि त्ति वा बूया तकुलि त्ति व जो वदे ॥ ३२९ ॥
तथा कुम्मासपिंडि त्ति सत्तुपिंडि त्ति वा पुणो । तथा तप्पणपिंडि त्ति इत्तिपिंडि त्ति वा पुणो ॥ ३३० ॥
तथा ओदणपिंडि त्ति तिलपिंडि त्ति वा पुणो । पीढपिंडि त्ति वा बूया रच्छाभि(भ)त्ति व जो वदे ॥ ३३१ ॥
रसाल त्ति व जो बूया पडमट्टं त्ति वा पुणो । चौरालि त्ति व जो बूया अंबपिंडि त्ति वा पुणो ॥ ३३२ ॥
तथा अंबकधूवि त्ति तथा उल्लूरधूविता । अंबाडगधूवि त्ति जा वऽण्णा धूपिता भवे ॥ ३३३ ॥ 10
चतुव्विहम्मि आहारे जं जं थीणामकं भवे । णामसंकित्तणे तस्स थीणामसममादिसे ॥ ३३४ ॥
थीणामधेज्जा आहारा इच्चेते परिकित्तिता । अच्छदणं तु थीणामं कित्तयिस्समतो परं ॥ ३३५ ॥

पउण्ण त्ति पण्णि त्ति वण्णा सोमित्तिकि त्ति वा । अद्धकोसिज्जिका व त्ति तथा कोसेज्जिका पि वा ॥ ३३६ ॥
पसरदि त्ति वा बूया पिगाणा दियवंतरा । लेख त्ति वाउकाणि त्ति तथा वेलविक त्ति वा ॥ ३३७ ॥

ॐ तैधा ॐ परत्तिका व त्ति भवे माहिसिक त्ति वा । 15

इल्ली कटुतरी व त्ति तथा जामलिक त्ति वा ॥ ३३८ ॥

सण्हा थूल त्ति वा बूया सुवुता दुव्वुत त्ति वा । अप्पग्घा वा महग्घा वा अहता धोतिक त्ति वा ॥ ३३९ ॥
जं चऽण्णं एवमादीयं लोए थीणामकं भवे । वत्थसंकित्तणे तासं थीणामसममादिसे ॥ ३४० ॥
अच्छदणं तु थीणामं इच्चेतं परिकित्तितं । भूसणाणि तु कित्तेस्सं थीणामाणि अतो प्परं ॥ ३४१ ॥

सिरोसमालिका व त्ति तथा णलियमालिका । तथा मकरिका व त्ति ओराणि त्ति वा पुणो ॥ ३४२ ॥ 20
पुप्फितिक त्ति वा बूया मेकणी लकड त्ति या । वालिका कण्णवल्लीका कण्णिका कुंडमालिका ॥ ३४३ ॥
सिद्धत्थिक त्ति वा बूया तथा अंगुलिमेदिका । तधऽक्खमालिका व त्ति तथा वा संघमालिका ॥ ३४४ ॥
पेयुका णित्तिरिगि त्ति तथा कंटकमालिका । घणपिच्छिलिका व त्ति तथा वा वि विकालिका ॥ ३४५ ॥
एकावलिका व त्ति तथा पिप्पलमालिका । हारावलि त्ति वा बूया अंधा मुत्तावलि त्ति वा ॥ ३४६ ॥
कंची च रसणा व त्ति जंबूका मेखल त्ति वा । कटिक त्ति व जो बूया तथा संपडिक त्ति वा ॥ ३४७ ॥ 25
पामुदिक त्ति वा बूया वम्मिका पाअसूचिका । तथा पाघट्टिका व त्ति तथा खिखिणिक त्ति वा ॥ ३४८ ॥
जं चऽण्णं एवमादीयं थीणामं भूसणं भवे । णामसंकित्तणे तेसि थीणामं सव्वमादिसे ॥ ३४९ ॥
भूसणाणि तु सव्वाणि थीणामाणि समासंत । सयणा-ऽऽसणाणि जाणाणि कित्तयिस्समतो परं ॥ ३५० ॥

१ नामसिका हं० त० ॥ २ 'मिजेसु' हं० त० ॥ ३ 'दुद्धण्ह' हं० त० ॥ ४ 'सम्मिगुम्मिक' हं० त० ॥ ५ 'ताल' हं० त० ॥ ६ 'तकुलि' हं० त० ॥ ७ 'कुम्मास' सप्र० ॥ ८ 'पिंडिपिंड' हं० त० विना ॥ ९ 'वारालि' हं० त० विना ॥ १० 'अंधपिंडि' हं० त० ॥ ११ 'अंधकधूवि' हं० त० ॥ १२ 'त्तिगा जा' हं० त० ॥ १३ 'पत्तुण्ण' त्ति पण्ण त्ति हं० त० विना ॥ १४ 'काण' त्ति हं० त० विना ॥ १५ 'एतच्चिहगतः पाठः' हं० त० नास्ति ॥ १६ 'हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः' हं० त० एव वर्तते ॥ १७ 'आवया धोत्तिक' हं० त० ॥ १८ 'मकणी लकुड' हं० त० विना ॥ १९ 'मुदिका' हं० त० ॥ २० 'पेयुका णित्तिरिगि' हं० त० ॥ २१ 'अध' हं० त० ॥ २२ 'कंटक' हं० त० विना ॥ २३ 'जामुदि' हं० त० ॥ २४ 'सूरिका' हं० त० विना ॥ २५ 'पाघट्टिका' पु० ॥ २६ 'सओ' हं० त० ॥

सेज्जा खट्ठा भिसी व त्ति आसंदी पेढिक ति वा । महिसाहा सिला व त्ति फलकी ईट्टक ति वा ॥ ३५१ ॥
सकडि ति व जो बूया सकडीक ति वा पुणो । थिल्ली गिल्लि ति वा बूया सिबिका संदमाणिका ॥ ३५२ ॥
सयणा-ऽऽसण-जाणाणि थीणामाणि समासत । कित्तियाणि पवक्खामि भायणाणि समासत ॥ ३५३ ॥

करोडी कंसपत्ति ति पालिका सरिक ति वा । भिंगारिका कंचणिका तथा कवचिक ति वा ॥ ३५४ ॥

5 जं चऽण्णं एवमादीयं थीणामं भायणं भवे । णामसंकित्तणे तेसिं थीणामसममादिसे ॥ ३५५ ॥

भायणाणि तु वुत्ताणि थीणामाणि समासत । थीणामाणि पवक्खामि भंडोवगरणाणि तु ॥ ३५६ ॥

अलंदिक ति पत्ति ति उक्खली थालिक ति वा । कालंची कंरकी व त्ति कुठारीक ति वा पुणो ॥ ३५७ ॥

थाली मंडी घडी दव्वी कैला उट्टिक-माणिका । णिसका आयमणी चुल्ली फूमणाली समंछणी ॥ ३५८ ॥

मैजूसिका मुद्दिका य सलाकंजणि पेल्लिका । धूतुल्लिक ति [...] व त्ति पिच्छेला फणिका पि वा ॥ ३५९ ॥

10 दोणी उक्कुलिणी पाणि अमिल ति बुध ति वा । तथा पडालिका व त्ति तवि वत्थरिक ति य ॥ ३६० ॥

जं चऽण्णमवि थीणामं भंडोवगरणं भवे । णामसंकित्तणे तेसिं थीणामं सव्वमादिसे ॥ ३६१ ॥

भंडोवगरणं एतं थीणामं परिकित्तियं । आयुधाणि पवक्खामि थीणामाणि अतो परं ॥ ३६२ ॥

कुद्दालि ति कुठारि ति वासि ति छुरिक ति य । दव्वी तध कवल्ली य दीविक ति कडच्छकी ॥ ३६३ ॥

जं चऽण्णमपि थीणामं दव्वं लोहमयं भवे । णामसंकित्तणे तासं थीणामसममादिसे ॥ ३६४ ॥

15 मणीसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेषु त । जं जं थीणामकं भवति तं तं थोलक्खणं भवे ॥ ३६५ ॥

सुवण्णकाकणी व त्ति तथा मासककाकणी । तथा सुवण्णगुंज ति दीणारि ति व जो वदे ॥ ३६६ ॥

हिरण्णम्मि तु सव्वम्मि जं जं थीणामकं भवे । णामसंकित्तणे तासं थीणामसमलक्खणं ॥ ३६७ ॥

तथा सव्वेसु धन्नेसु जं जं थीणामकं भवे । णामसंकित्तणे तेसं सव्वं थीणामकं भवे ॥ ३६८ ॥

एवमेतेसु सव्वेसु पवित्तिसु यधक्कमं । जं जं थीणामकं भवति सव्वं तं समलक्खणं ॥ ३६९ ॥

20 थीणामधेज्जे णक्खत्ते देवते पणिधम्मि वा । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गामे गिहे पि वा ॥ ३७० ॥

पुरिसे चतुप्पदे चेव पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लके वा वि परिसप्पे तधेव य ॥ ३७१ ॥

पाणे वा भोयणे वा वि तधेवाऽऽभरणेषु य । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तथा ॥ ३७२ ॥

लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेषु य । मणि[सु] वा वि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेषु य ॥ ३७३ ॥

[एतम्मि पेक्खितामासे सदे रूवे तधेव य ।] सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूया अंगचित्तको ॥ ३७४ ॥

25 ॥ थीणामाणि सम्पत्ताणि ॥ २ ॥ छ ॥

[३ अट्ठावणं णपुंसका]

अट्ठावणं तु णातव्वा पुरिसंगे णपुंसका । उद्देसंतरभागा य जंघोरूणं च जे भवे ॥ ३७५ ॥

अक्खिक्कूडंऽसकूडाणि कुक्खंतस्-भुमंतरं । अंगुली अंतराणि च अंगे णिण्णाणि जाणि य ॥ ३७६ ॥

केस-मंसु-णहं लोमं अंगाणि मज्झिमाणि य । एते अंगम्मि णातव्वा अट्ठावणं णपुंसका ॥ ३७७ ॥

30 णपुंसकाणि जाणंगे अण्णाणि वि भवंति ह । णपुंसकेहिं ताणि पि णिद्दिसे अंगचित्तओ ॥ ३७८ ॥

एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तथा । जं किंचि पसत्थं सा सव्वं णत्थि ति णिद्दिसे ॥ ३७९ ॥

१ इट्टक हं० त० ॥ २ थाली गिल्ल ति हं० त० । थाली गिण्ह ति सं ३ पु० सि० ॥ ३ अलंदिक सि० ॥
४ करवी हं० त० ॥ ५ केणा-उड्हिक-माणिवा हं० त० ॥ ६ मकूसिका मुद्दिका य सणा कंजणि पेलिका हं० त०
विना ॥ ७ एवं हं० त० ॥ ८ कुद्दालि हं० त० विना ॥ ९ ति य दुच्छकी हं० त० ॥ १० चतुरस्सकोष्ठकगतं पूर्वार्द्धमिदं
प्रतिषु नास्ति ॥ ११ च जं भवे हं० त० विना ॥

पुरिसं च परिपुच्छेज्ज अधण्णो दूभगो ति य । असिद्धत्थो ति तं बूया एतेसामुपवैसणे ॥ ३८० ॥
 असेसो आइलो चेव वयोगतमणो णरो । परिक्रितेसाभिगते भोगे अप्पे तु भुंजति ॥ ३८१ ॥
 इत्थि वा परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूभग ति य । असिद्धत्था असेसा य इत्थीयमिति णिद्दिसे ॥ ३८२ ॥
 अणीसरी कुडुंबस्स ण य कस्सति सामिणी । आइला सपरिक्रिता भोगे भुंजे जेधेच्छया ॥ ३८३ ॥
 अविधेयो य सै भत्ता सां य भत्तु वसे भवे । बहुरोगा अप्परोगा बहुपच्चत्थिका भवे ॥ ३८४ ॥ 5
 कण्णं च परिपुच्छेज्ज अधण्णा वूधमं ति य । असिद्धत्था असेसा य विज्जते अचिरेण य ॥ ३८५ ॥
 तं पंडगं समासेण पंडगस्स वियाणिया । विज्जस्सति ति तं बूया सेवितम्मि णपुंसके ॥ ३८६ ॥
 गब्धं पुच्छे ण भविस्सति ति जाणे णपुंसकं च तं । इत्थी वा पुरिसो वा वि एगमेगसमागमं ॥ ३८७ ॥
 णत्थि ति तं वियाणीया पुच्छिओ अंगचित्तओ । रहे संजोगपुच्छायं थीपुंससेण वसस्सते ॥ ३८८ ॥
 दब्बाभिगमणं णत्थि ववहारो णिरत्थको । पंडकस्स य कम्माणि जाणि तस्स परस्स वा ॥ ३८९ ॥ 10
 कम्मपुच्छाय णिद्दिसे एवमादि फलं वदे । पवासो पुच्छते णत्थि पउत्थो य णिरत्थकं ॥ ३९० ॥
 विवादे वा जयं पुच्छे जयो णत्थि ति णिद्दिसे । आरोगं परिपुच्छेज्जा णत्थि तेवं वियागरे ॥ ३९१ ॥
 रोगं च परिपुच्छेज्जा अत्थि तेवं वियागरे । मरणं च परिपुच्छेज्जा अत्थि तेवं वियागरे ॥ ३९२ ॥
 जीवितं परिपुच्छेज्जा णत्थि तेवं वियागरे । आबाधितं च पुच्छेज्जा ण समुद्धिहिति ति सो ॥ ३९३ ॥
 अणावुद्धिं च पुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । वासारतं च पुच्छेज्ज जहण्णो ति वियागरे ॥ ३९४ ॥ 15
 अपातपं च पुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज मोहं मेहं वियागरे ॥ ३९५ ॥
 सस्सस्स संपयं पुच्छे जहण्णा सस्ससंपया । सस्सस्स वापदं पुच्छे अत्थि तेवं वियागरे ॥ ३९६ ॥
 णटुं च परिपुच्छेज्जा णत्थि णटुं ति णिद्दिसे । णट्टमाधारए तं च णिरत्थं णट्टमादिसे ॥ ३९७ ॥
 पुरुसो णपुंसको इत्थी णपुंसो ति वियागरे । धणं धणं ति पुच्छेज्जा अधण्णं ति वियागरे ॥ ३९८ ॥

जं [च] किंचि पसत्थं [सा] सव्वं णत्थि ति णिद्दिसे ।

20

जे किंचि अप्पसत्थं च सव्वमत्थि ति णिद्दिसे ॥ ३९९ ॥

तथा खेतं तथा वत्थुं सव्वं णत्थि ति णिद्दिसे । सव्वे सदे य जाणेज्जा जे भवति णपुंसका ॥ ४०० ॥
 णपुंसको अपुरुसो चिल्लिको सीतलो ति वा । पंडको वातिको वा वि किलिमो वा सँकरो ति वा ॥ ४०१ ॥
 कुंमीकपंडकं जाणे इस्सापंडकमेव य । पक्खापक्खि व विक्खो य संढो वा वि णरेतरो ॥ ४०२ ॥
 एते णपुंसका सहा णक्खत्ताणंतरे तथा । णक्खत्तदेवंतरए कीलेयेयंतरे तथा ॥ ४०३ ॥ 25
 भायणंतरे या वि वत्थमाभरणंतरे । उवकरणंतरे चेव धण—धणंतरे तथा ॥ ४०४ ॥
 एतम्मि पेक्खियामासे सदे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतव्वं ततो बूयांगचित्तओ ॥ ४०५ ॥

॥ णपुंसकाणि सम्मत्ताणि ॥ ३ ॥ छ ॥

[४ सत्तरस दक्खिणाणि]

सत्तरस दक्खिणाणंगे पक्खामऽणुपुव्वसो । सीसस्स दक्खिणो भागो १ कण्णो यो वा वि दक्खिणो २ ॥ ४०६ ॥ 30
 अक्खी ३ भमू ४ हणू वा वि ५ गंडो जो यावि दक्खिणो ६ ।
 गीवा ७ अंसो य ८ बाहू य ९ थणो १० हत्थो य दक्खिणो ११ ॥ ४०७ ॥
 पस्सं १२ वसणो १३ ऊँरू य १४ जाणू १५ जंघा य दक्खिणा १६ ।
 पादो य दक्खिणो णेयो १७ एवं सत्तरसाऽऽहिया ॥ ४०८ ॥

१ जयिच्छया हं तं ॥ २ हस्तच्चिह्नान्तर्गतं पूर्वाद्धं हं तं एव वर्तते ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतमुत्तराद्धं हं तं एव वर्तते ॥ ४ चिण्णको हं तं ॥ ५ संवरो हं तं ॥ ६ मंतणे चेव हं तं ॥ ७ जतू य हं तं ॥

- एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तथा । पसत्थं जत्तियं किंचि सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ४०९ ॥
 पुरुसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो त्ति य । दाहिणाचारभागी य पुरुसोऽयमिति णिद्दिसे ॥ ४१० ॥
 इत्थि वा परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । दक्खिणाचारभागी य इत्थीयमिति णिद्दिसे ॥ ४११ ॥
 पुरुसस्सऽद्विविधं पुच्छे बूया तं तु पदक्खिणं । थियो अद्विविधं पुच्छे आदितो तं पयक्खिणं ॥ ४१२ ॥
 5 कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । धण्णा य सुहभागी य ण खिप्पं तु गमिस्सति ॥ ४१३ ॥
 गब्भं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गब्भो त्ति णिद्दिसे । गब्भिणी परिपुच्छेज्ज इमं पक्खं पजाहिति ॥ ४१४ ॥
 पुत्तलाभं च पुच्छेज्ज दक्खिणो य भविस्सति । कम्मं च परिपुच्छेज्ज रीयमब्भन्तरं भवे ॥ ४१५ ॥
 पवासं परिपुच्छेज्ज पवासो सँफलो भवे । पउत्थं परिपुच्छेज्ज इमं पक्खं स एहिति ॥ ४१६ ॥
 बंधं च परिपुच्छेज्ज णत्थि बंधो त्ति णिद्दिसे । बंधस्स मोक्खं पुच्छेज्ज अत्थि मोक्खो त्ति णिद्दिसे ॥ ४१७ ॥
 10 पवासं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । पतिट्ठं परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे ॥ ४१८ ॥
 भयं च परिपुच्छेज्ज भयं णत्थि त्ति णिद्दिसे । खेमं च परिपुच्छेज्ज अत्थि खेमं त्ति णिद्दिसे ॥ ४१९ ॥
 पसत्थं परिपुच्छेज्ज अत्थि अत्थि त्ति णिद्दिसे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे ॥ ४२० ॥
 जयं च परिपुच्छेज्ज जयो अत्थि त्ति णिद्दिसे । आरोग्गं परिपुच्छेज्ज नीरोगो त्ति वियागरे ॥ ४२१ ॥
 रोगं च परिपुच्छेज्ज णत्थि रोगो त्ति णिद्दिसे । मरणं च परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे ॥ ४२२ ॥
 15 जौवितं परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । असर्माहिं परिपुच्छेज्ज समुट्ठोणं समुद्दिसे ॥ ४२३ ॥
 अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । वासारत्तं च पुच्छेज्ज उत्तमो त्ति वियागरे ॥ ४२४ ॥
 अपातपं च पुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज अणुपुत्वि वियागरे ॥ ४२५ ॥
 कदा वासं ति वा बूया इमं पक्खं त्ति णिद्दिसे । दिवा रत्ति ति वा बूया दिवा वासं विणिद्दिसे ॥ ४२६ ॥
 सँस्सस्स सं(वा)पयं पुच्छे णत्थि त्ति वियागरे । सँस्सस्स संपयं पुच्छे उत्तमा सँस्ससंपया ॥ ४२७ ॥
 20 णट्ठं च परिपुच्छेज्ज लाभं तस्स विणिद्दिसे । णट्ठमाधारं तं च दक्खिणं सव्वमादिसे ॥ ४२८ ॥
 कदा णट्ठं ति वा बूया इमं पक्खं त्ति णिद्दिसे । कदा दिस्सिहिति तं च इमं पक्खं त्ति णिद्दिसे ॥ ४२९ ॥
 वामं व दक्खिणं व त्ति दक्खिणं त्ति वियागरे । धण्णं धणं पुच्छेज्ज धेणं त्ति [य] वियागरे ॥ ४३० ॥
 जं च किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि ण तं अत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ४३१ ॥
 सत्तमाभिजणं कम्मं आयारं च विसेसतो । सदे पदक्खिणे सव्वं जं चऽण्णमवि एरिसं ॥ ४३२ ॥
 25 सव्वकालं पसत्थं तु सव्वत्थेसु य पूतियं । पुण्णामधेये हि फलं दक्खिणाणं पि णिद्दिसे ॥ ४३३ ॥
 तथा खेत्तं तथा वत्थुं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । सव्वे सदे य जाणेज्जा दक्खिणा जे भवंतिह ॥ ४३४ ॥
 अतिदक्खिणं दक्खिणतो भवे यावि पुव्वदक्खिणं । अतिदक्खिणं सप्पति तधेव उवादलिणं (उवदक्खिणं) ॥ ४३५ ॥
 [.....] दक्खिणं ति व जो वदे । पदक्खिणं ति वा बूया जं चऽण्णं दक्खिणं भवे ॥ ४३६ ॥
 णक्खत्ते दक्खिणद्वारे देवते पणिधिम्मि या । पुप्फे फले य देसे य णगरे गाम गिहे वि वा ॥ ४३७ ॥
 30 पुरुसे चतुप्पदे चेव पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किमिल्लिके वा वि परिसप्पगते तथा ॥ ४३८ ॥

१ दक्खिणां हं० त० ॥ २ ठिया अत्थं हं० त० विना ॥ ३ रायगब्भं हं० ॥ ४ सहलो हं० त० ॥ ५ हस्तचिह्नगतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ६ संधिं च परिपुच्छेज्ज अत्थि संधि त्ति णिद्दिसे । इति पाठः स्यात् ॥ ७ < > एतच्चिह्नमध्यवर्त्ति पूर्वाद्धं हं० त० नास्ति ॥ ८ माहितं परि हं० त० विना ॥ ९ ट्ठाणं णिद्दिसे हं० त० विना ॥ १० हस्तचिह्नगतं पूर्वाद्धं हं० त० एव वर्तते ॥ ११ दिस्सहि एतं च हं० त० ॥ १२ ति पुं हं० त० विना ॥ १३ धण्णं ति हं० त० ॥ १४ दक्खिणे द्वारे हं० त० विना ॥ १५ कीडे केमि हं० त० विना ॥

पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणेसु य ॥ ४३९ ॥
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ४४० ॥
एतम्मि पेक्खितामासे सदे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगतूणं ततो बूयांगचित्तओ ॥ ४४१ ॥

॥ दक्खिणाणि सम्मत्ताणि ॥ ४ ॥ छ ॥

[५ सत्तरस वामाणि]

5

सत्तरस वामाणंगे कित्तयिस्समणुपुव्वसो । सीसस्स वामगो भागो १ कण्णो जो यावि वामको २ ॥ ४४२ ॥

अक्खि ३ भुमा ४ हणू वा वि ५ गंडो यो यावि वामको ६ ।

गीवा ७ अंसो य ८ बाहू य ९ थणो १० हत्थो य वामको ११ ॥ ४४३ ॥

पस्सं १२ वसण १३ ऊरू य १४ जाणू १५ जंघा य वामिका १६ ।

वामगो य तथा पाओ १७ एवं सत्तरसाऽऽहिता ॥ ४४४ ॥

10

एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तथा । जं किंचि वि पुच्छेज्ज सव्वं णत्थि ति णिद्दिसे ॥ ४४५ ॥

पुरिसं च परिपुच्छेज्ज अधण्णो दूभगो ति य । वामाचारभागी य पुरिसोऽयमिति णिद्दिसे ॥ ४४६ ॥

इत्थि वा परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूभग ति य । वामाचारभागी य इयमित्थि ति णिद्दिसे ॥ ४४७ ॥

पुरिसऽद्विविधं पुच्छे वामं चेव वियागरे । इत्थऽद्विविधं पुच्छे वामं चेव वियागरे ॥ ४४८ ॥

कण्णं च परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूभग ति य । असिद्धत्थ ति तं बूया खिप्पं विज्जेहिति ति य ॥ ४४९ ॥ 15

गब्भं च परिपुच्छेज्ज णत्थि गब्भो ति णिद्दिसे । गब्भिणी परिपुच्छेज्ज मतं सत्तं पयाहिति ॥ ४५० ॥

कम्मं च परिपुच्छेज्ज किच्छविति भविस्सति । मित्ताणं च पडिक्कूलो सव्वत्थेहि य बाहिरो ॥ ४५१ ॥

पवासं परिपुच्छेज्ज णित्थो ति वियागरे । महंतो य अवद्धंसो खिप्पमेव भविस्सति ॥ ४५२ ॥

पउत्थं २८ परिपुच्छेज्ज २९ चिरेणाऽऽगमणं भवे । णित्थकं पवासं च पउत्थस्स वियागरे ॥ ४५३ ॥

बंधं वा परिपुच्छेज्ज अत्थि बंधो ति णिद्दिसे । बंधस्स मोक्खं पुच्छेज्ज चिरा मोक्खो भविस्सति ॥ ४५४ ॥ 20

पवासं परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । पतिट्ठं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे ॥ ४५५ ॥

सम्माणं संपयोगं वा णिव्वाणं मोक्खमेव य । भोगलाभं सुहिस्सरियं सव्वं णत्थि ति णिद्दिसे ॥ ४५६ ॥

भयं [च] परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । खेमं च परिपुच्छेज्ज ३० णत्थि खेमं ति णिद्दिसे ॥ ४५७ ॥

संधिं च परिपुच्छेज्ज ३१ णत्थि तेवं वियागरे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे ॥ ४५८ ॥

जयं च परिपुच्छेज्ज जयो णत्थि ति णिद्दिसे । आरोगं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे ॥ ४५९ ॥ 25

रोगं च परिपुच्छेज्ज अत्थि रोगो ति णिद्दिसे । मरणं च परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे ॥ ४६० ॥

जीवितं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । आबाधितं च पुच्छेज्ज ण समुद्देहिति ति सो ॥ ४६१ ॥

अणावुट्ठिं ति पुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । वैस्सारत्तं व पुच्छेज्ज पावको ति वियागरे ॥ ४६२ ॥

अपातयं च पुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज कटुकं ति वियागरे ॥ ४६३ ॥

सस्सस्स वापदं पुच्छे अत्थि तेवं वियागरे । सस्सस्स संपयं पुच्छे णिकिट्ठा सस्ससंपया ॥ ४६४ ॥ 30

णट्ठं च परिपुच्छेज्ज णत्थि णट्ठं ति णिद्दिसे । णट्ठमाधारइत्ता य वामपक्खस्स णिद्दिसे ॥ ४६५ ॥

वामं च दक्खिणं व ति वामं चेव वियागरे । धणं धणं ति पुच्छेज्ज अधण्णमिति णिद्दिसे ॥ ४६६ ॥

१ जत्तू य हं तं ॥ २ २८ २९ एतच्चिह्नगतः पाठः हं तं नास्ति ॥ ३ हस्तचिह्नगतः पाठः हं तं एव वत्ति । ४ आवाविहं च परिपुच्छेज्ज हं तं ॥ ५ वासारत्तं हं तं ॥

जं [च] किंचि पसत्थं तं सव्वं णत्थि ति णिहिसे । अप्ससत्थं च जं किंचि सव्वमत्थि ति णिहिसे ॥ ४६७ ॥
 सत्तमाभिजणं जातिं आचारं विणयकमं । असुभं अप्ससत्थं च वामभागेसु णिहिसे ॥ ४६८ ॥
 जधा धीणामधेयाणं फलं वुत्तं सुभा-ऽसुभं । तथेव सव्वं वामाणं फलं बूया सुभा-ऽसुभं ॥ ४६९ ॥

- तथा खेतं तथा वत्थुं सव्वं णत्थि ति णिहिसे । समे सद्दे य जाणेज्जा वामे जे मणिके मया ॥ ४७० ॥
 5 उत्तरं ति व वामं ति वामावट्टो ति वा पुणो । वामसीलो ति वा बूया वामायारो ति वा पुणो ॥ ४७१ ॥
 वामपक्खं ति वा बूया [वामदेसं ति वा] पुणो । वामभागं ति वा बूया वामतो ति व जो वदे ॥ ४७२ ॥
 अप्वामं ति वा बूया अप्ससत्थं ति वा वदे । अवसव्वं ति वा बूया अप्पग्घं ति वा पुणो ॥ ४७३ ॥
 जं चऽण्णं एवमादीयं समासेण य वासतो । ये वऽण्णे वामतो सद्दा वामतो मणिके मता ॥ ४७४ ॥
 णक्खत्ते उत्तरदारे देवते पणिधम्मि य । पुण्णे फले व देसे वा णगरे गाम-गिहे वि वा ॥ ४७५ ॥
 10 पुरसे चतुप्पदे वा वि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किप्पिल्लके वा वि परिसप्पे तथेव य ॥ ४७६ ॥
 पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणेसु य ॥ ४७७ ॥
 लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु स्तणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेषु य ॥ ४७८ ॥
 एतम्मि पेक्खियामासे सद्दे रूवे तथेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचित्तो ॥ ४७९ ॥

॥ वामाणि सम्पत्ताणि ॥ ५ ॥ छ ॥

15

[६ सत्तरस मज्झिमाणि]

- सत्तरस मज्झिमाणंगे पक्खामऽणुपुव्वसो । मत्थको पढमं वुत्तो १ ततो सीमंतको भवे २ ॥ ४८० ॥
 ललाडं ३ भूमकंतरवसो ४ तथा णासाय पुत्तको ५ । णासा ६ ओट्टा य ८ भवे उरो ९ जतुत्तरं तथा १० ॥ ४८१ ॥
 हिदयं ११ थणंतरं १२ णाणी (णाभी) १३ लोमवासी १४ तथोदरं १५ ।
 मेहणं १६ वत्थिसीसं च १७ मज्झिमाणाऽऽभवन्तिह ॥ ४८२ ॥
 20 एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तथा । जं [च] किंचि पसत्थं [सा] सव्वमत्थि ति णिहिसे ॥ ४८३ ॥
 पुरिसं परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो ति य । धण्णो य सुहभागी य भातीणं मज्झिमो भवे ॥ ४८४ ॥
 रायमंती भवे सो य णातीणं मज्झिमो भवे । मज्झत्थसीलमायारो सव्वत्थेसु भवे णरो ॥ ४८५ ॥
 इत्थि च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था अपरायिता । धण्णा य सुहभागी य भगिणीसु य मज्झिमा ॥ ४८६ ॥
 णातीसु मज्झिमं लभते भत्तारम्मि य वल्लभा । मज्झत्थसीलमायारा सव्वत्थेसु य सा भवे ॥ ४८७ ॥
 25 पुरिसस्सऽत्थविधिं पुच्छे मज्झिमं ति वियागरे । [धिया अत्थविधिं पुच्छे मज्झिमं ति वियागरे ॥ ४८८ ॥]
 कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग ति य । धण्णा य सुहभागी य ण य खिप्पं निग्गमिस्सति ॥ ४८९ ॥
 गब्भं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गब्भो ति णिहिसे । गब्भिणिं परिपुच्छेज्ज खिप्पं सा पयाहिति ॥ ४९० ॥
 कता पयाहिती व ति पक्खसंधिम्मि णिहिसे । कम्मं च परिपुच्छेज्ज रायमब्भंतरं वदे ॥ ४९१ ॥
 पवासं परिपुच्छेज्ज सफलं ति वियागरे । पउत्थं परिपुच्छेज्ज सधणो आगमिस्सति ॥ ४९२ ॥
 30 सवि पावासिकं पुच्छे कता सो आगमिस्सति । अंगवी आगमं तस्स पक्खसंधिम्मि णिहिसे ॥ ४९३ ॥
 ८५ बंधं च परिपुच्छेज्ज णत्थि बंधो ति णिहिसे । ८६ बंधस्स मोक्खं पुच्छेज्ज अत्थि मोक्खो ति णिहिसे ॥ ४९४ ॥
 कता मुच्चिहिती व ति जो णरो परिपुच्छति । अंगवी तस्स मोक्खं तु पक्खसंधिम्मि णिहिसे ॥ ४९५ ॥
 पवासं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । पतिट्ठं परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे ॥ ४९६ ॥
 पतिट्ठं णिव्वुत्तिं पीतिं संजोगं च समागमं । जं इट्ठं परिपुच्छेज्ज सव्वमत्थि ति णिहिसे ॥ ४९७ ॥

१ *पक्खमं हं० त० विना ॥ २ तं चेव सव्ववामा* हं० त० ॥ ३ अपव्वामं हं० त० विना ॥ ४ अवसव्वं हं० त० विना ॥ ५ ८५ ८६ एतच्चिह्नगतं पूर्वार्द्धं हं० त० नास्ति ॥ ६ सनामकं हं० त० ॥

संधि च परिपुच्छेज्ज अत्थि संधि ति णिदिसे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे ॥ ४९८ ॥
जयं च परिपुच्छेज्ज जयो अत्थि ति णिदिसे । आरोगं परिपुच्छेज्ज समुद्वाणऽस्स णिदिसे ॥ ४९९ ॥
अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । वस्सारतं च पुच्छेज्ज मज्झिमो ति वियागरे ॥ ५०० ॥
अपातयं च पुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज मज्झिमो ति वियागरे ॥ ५०१ ॥
कता वासं ति वा बूया पक्खसंधिम्मि णिदिसे । दिवा रत्ति ति वा बूया संझाकाले विणिदिसे ॥ ५०२ ॥ 5
सस्सस्स वा[प]दं पुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । सस्सस्स संपयं पुच्छेज्ज मज्झिमा सस्ससंपदा ॥ ५०३ ॥
लाभं च परिपुच्छेज्ज मज्झिमं लाभमादिसे । णट्ठं च परिपुच्छेज्ज मज्झिमं तं च लब्धति ॥ ५०४ ॥
वाम-दक्खिणमज्झम्मि मज्झिमं ति वियागरे । धणं धणं च पुच्छेज्ज मज्झिमो ति वियागरे ॥ ५०५ ॥
जं [च] किंचि पसत्थं [सा] सव्वमत्थि ति णिदिसे । अप्सत्थं च जं किंचि सव्वं नत्थि ति णिदिसे ॥ ५०६ ॥
तथा खेतं तथा वेत्थुं सव्वमत्थि ति णिदिसे । समे सदे य जाणेज्जा मज्झिमा जे भवंतिह ॥ ५०७ ॥ 10
मज्झि मज्झंतिको मज्झो मज्झिमो ति व यो वदे । पुर-देस-भागमज्झो गोदो-सेणागमस्स वा ॥ ५०८ ॥
वयस्स मज्झो सुहमज्झो सयणमज्झं ति वा वदे । घरमज्झ गाममज्झो अरणस्साऽडवीय वा ॥ ५०९ ॥
णीयसेवरिमज्झम्मि मित्तमज्झो ति वा वदे । अमित्तमज्झो गोमज्झो णातिमज्झो ति वा वदे ॥ ५१० ॥
सुमज्झो तणुमज्झो ति चोरमज्झो ति वा वदे । जवमज्झो कीडमज्झो लद्धमज्झो ति वा वदे ॥ ५११ ॥
समुद्दस्स य मज्झं ति अब्भमज्झं ति वा वदे । उदगस्स व मज्झो ति अग्गिमज्झो ति वा पुणो ॥ ५१२ ॥ 15
चउप्पदाणं सव्वेसिं बिपदाणं तधेव य । अंगोवंगेसु सव्वेसु मज्झस्स उ उदीरणा ॥ ५१३ ॥
भातीणं मज्झिमं व ति ०८ मज्झिमं भयणीण १० वा । मज्झागतं ति वा बूया मज्झसारं ति वा वदे ॥ ५१४ ॥
मज्झं सारं ति वा बूया तथा उद्धममज्झिमं । उक्कट्टमज्झिमं व ति तथा सम्मज्झिमं ति वा ॥ ५१५ ॥
कित्तिरयंति य जे सद्दा जं चऽण्णं मज्झिमं भवे । एते उता समा सद्दा मज्झिमा जे भवंति य ॥ ५१६ ॥
सद्द-रूव-रसे गंधे फासे मज्झिमकम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गामे गिहे वि वा ॥ ५१७ ॥ 20
पुरुसे चतुप्पदे वा वि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लगे यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ५१८ ॥
पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेषु य ॥ ५१९ ॥
आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणेषु य । लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेषु य ॥ ५२० ॥
एतम्मि पेक्खितामासे सद्द-रूव-रसे तथा । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचित्तओ ॥ ५२१ ॥

॥ मज्झिमाणि सम्मत्ताणि ॥ ६ ॥ छ ॥

25

[७ अट्ठावीसं दढाणि]

अट्ठावीसं दढाणगे पवक्खामऽणुपुव्वसो । सिरं १ णिडालं २ जतूणि ४ उरो ५ पस्साणि बे भवे ७ ॥ ५२२ ॥
^१बे बाहुणालिमज्झाणि ९ बाहुमज्झा य बे भवे ११ । जंधोरूणं च मज्झाणि १५ तधेव पादपट्ठिओ १७ ॥ ५२३ ॥
दंता १९ संखा य २१ गंडा य २३ करमज्झो तधेव य २५ ।
खंधो [य] २६ जंतुमज्झो य २८ दढाणेताणि णिदिसे ॥ ५२४ ॥ 30
एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तथा । जं [च] किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि ति णिदिसे ॥ ५२५ ॥

१ 'ण मज्झं ति म' हं० त० विना ॥ २ सव्वमत्थि हं० त० ॥ ३ वत्थं हं० त० विना ॥ ४ मज्झमिको हं० त० ॥ ५ 'संबंधे मज्झं ति मित्त' हं० त० विना ॥ ६ अचित्त' हं० त० ॥ ७ मज्झम्मि अ' हं० त० सि० ॥ ८ भावाणं हं० । भावीणं त० ॥ ९ ०८ १० एतच्चिह्नान्तर्गत पाठः हं० त० नास्ति ॥ १० 'मं तहा हं० त० ॥ ११ जे बा० हं० त० ॥ १२ जन्तुमज्झो हं० त० ॥

- पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो त्ति य । धण्णो य सुहभागी य दढो य बलवं त्ति य ॥ ५२६ ॥
 इत्थि च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । धण्णा य सुहभागी य दढा य बलिका त्ति य ॥ ५२७ ॥
 पुरिसस्सऽट्ठविधं पुच्छे दढमिच्चेव णिहिसे । थिया अट्ठविधिं पुच्छे दढमिच्चेव णिहिसे ॥ ५२८ ॥
 कैण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । धण्णा य सुहभागी यं न तु खिप्पं गमिस्सति ॥ ५२९ ॥
 5 गब्भं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गब्भो त्ति णिहिसे । गैब्भिणिं परिपुच्छेज्जा चिरा पुत्तं पयाहिति ॥ ५३० ॥
 कम्मं च परिपुच्छेज्ज दढं कम्मं तु णिहिसे । पवासं परिपुच्छेज्ज सफलमिति णिहिसे ॥ ५३१ ॥
 पउत्थं परिपुच्छेज्ज संधणो आगमिस्सति । दढो त्ति य वियाणेज्जा पुच्छितो अंगचित्तको ॥ ५३२ ॥
 बंधं च परिपुच्छेज्ज नत्थि बंधो त्ति णिहिसे । बंधस्स मोक्खं पुच्छेज्ज चिरा मोक्खो भविस्सति ॥ ५३३ ॥
 पवासं परिपुच्छेज्ज णत्थि एवं वियागरे । पंडुं परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे ॥ ५३४ ॥
 10 समागमं संपयोगं थाणमिस्सरियं जसं । जं जं पसत्थं पुच्छेज्ज सव्वमत्थि त्ति णिहिसे ॥ ५३५ ॥
 भयं च परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । खेमं च परिपुच्छेज्ज अत्थि खेमं त्ति णिहिसे ॥ ५३६ ॥
 संधिं च परिपुच्छेज्ज अत्थि संधिं त्ति णिहिसे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे ॥ ५३७ ॥
 जयं च परिपुच्छेज्ज जयो अत्थि त्ति णिहिसे । आरोगं परिपुच्छेज्ज आरोगमिति णिहिसे ॥ ५३८ ॥
 रोगं च परिपुच्छेज्ज णत्थि रोगं त्ति णिहिसे । मरणं च परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे ॥ ५३९ ॥
 15 जीवितं परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । आबाधितं च पुच्छेज्ज समुट्ठाणऽस्स णिहिसे ॥ ५४० ॥
 अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । वस्सारतं च पुच्छेज्ज सोभणो त्ति वियागरे ॥ ५४१ ॥
 अपातवं च पुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज पभूतमिति णिहिसे ॥ ५४२ ॥
 सस्सस्स संपयं पुच्छे सोभणा सस्ससंपदा । सस्सस्स वापदं पुच्छे णत्थि तेवं वियागरे ॥ ५४३ ॥
 णट्ठं च परिपुच्छेज्ज अत्थि णट्ठं त्ति णिहिसे । णट्ठमाधारये तं च दढमिच्चेव णिहिसे ॥ ५४४ ॥
 20 सज्जीवं वा वि णिज्जीवं णट्ठमाधारये जति । सज्जीवमिति तं बूया एवं तु दढ-दुब्बले ॥ ५४५ ॥
 दढं वा दुब्बलं वा वि दढमित्तेव णिहिसे । धण्णं धणं त्ति पुच्छेज्ज धण्णं चेव वियागरे ॥ ५४६ ॥
 जं [च] किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि त्ति णिहिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि त्ति णिहिसे ॥ ५४७ ॥
 जधा पुण्णामधेयेसु अत्थो सव्वो सुभा-ऽसुभो । एवं दढेसु सव्वेसु पुण्णामसमकाऽऽहिते ॥ ५४८ ॥
 तधा खेतं तधा वेत्थुं सव्वमत्थि त्ति णिहिसे । समे सदे य जाणेज्जा दढा जे मणिके मता ॥ ५४९ ॥
 25 अचलं धुवं तधा ठाणं सस्सतं मखिलं त्ति वा । अजरामरं त्ति वा बूया णियतं त्ति अवत्थितं ॥ ५५० ॥
 हिमवंतो त्ति वा बूया महाहिमवतो त्ति वा । णिसिद्धो अधवा रुपी मेरु वा मंदरो त्ति वा ॥ ५५१ ॥
 णेलवंतो त्ति केलासो तधा वस्सधरो त्ति वा । वेयड्ढे अच्छदंतो त्ति सज्जो विंशो त्ति वा ॥ ५५२ ॥
 मंतो त्ति मलयो व त्ति पारियत्तो त्ति वा पुणो । महिदो चित्तकूडो त्ति वदे अंबासणो त्ति वा ॥ ५५३ ॥
 णगो त्ति पव्वतो व त्ति गिरिमेरुवरो त्ति वा । सेलो सिलोच्चयो व त्ति पव्वतो सिहरि त्ति वा ॥ ५५४ ॥
 30 पासाणो पत्थरो व त्ति उपलो त्ति मणि त्ति वा । सिलापट्टो त्ति वा बूया गंडसेलो त्ति वा पुणो ॥ ५५५ ॥
 णामतो गिरिको व त्ति तहा पव्वतको त्ति वा । सेलो वइरो त्ति वा बूया मेरुको मरुभूतिको ॥ ५५६ ॥

१ 'मित्थेव हं० तं० सि० ॥ २ इत्थिया वि अट्ठविधं पुच्छे दढमि' हं० तं० ॥ ३ कल्लं च हं० तं० ॥ ४ य णेतु
 हं० तं० ॥ ५ गैब्भिणी परिपुच्छेज्ज हं० तं० ॥ ६ सधण्णो हं० तं० ॥ ७ 'ज्ज अत्थि हं० तं० विना ॥ ८ 'ज्ज अत्थि
 तेवं हं० तं० ॥ ९ हस्तचिह्नगतमुत्तरार्द्धं हं० तं० सि० एव वर्तते ॥ १० 'मिच्चेव हं० तं० ॥ ११ सव्वमत्थि हं० तं० ॥
 १२ वत्थं हं० तं० विना ॥ १३ 'स्सलं म' हं० तं० विना ॥ १४ अपच्छियं हं० तं० ॥ १५ 'सभो अहवा हं० तं० सि० ॥
 १६ ०८ १० एतच्चिह्नमध्यगतं पदं हं० तं० नास्ति ॥ १७ मंचो त्ति हं० तं० सि० ॥ १८ 'रिवत्तो हं० तं० ॥

धुवको अचलितो व त्ति तथा थावरको त्ति वा । सिवणामो गुत्तणामो भवो त्ति अभवो त्ति वा ॥ ५५७ ॥
 धितो त्ति सुत्थितो व त्ति तथा ठाणद्धितो त्ति वा । अकंपो णिप्पकंपो त्ति णिव्वरो सुहते त्ति वा ॥ ५५८ ॥
 अण्णे वेवविधा सद्दा जे अण्णे अचला भवे । एते उता समा सद्दा दढा जे मणिके मता ॥ ५५९ ॥

थावरम्मि य णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि त । पुप्फे फले य देसे य णगरे गामे गिहे वि वा ॥ ५६० ॥
 पुरुसे चउप्पदे चेव पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किपिल्लगे वा वि परिसण्णे तधेव य ॥ ५६१ ॥ 5
 पाणे य भोगे यावि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तथा ॥ ५६२ ॥
 सव्वेसु यावि लोहेसु सव्वेसु रतणेषु य । मणी[सु] यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेषु य ॥ ५६३ ॥
 एतम्मि पेक्खितामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचित्तओ ॥ ५६४ ॥

॥ दढाणि सम्मत्ताणि ॥ ७ ॥ छ ॥

[८ अट्टावीसं चलाणि]

10

अट्टावीसं चलाणंगे पक्खिम्मि णुप्पव्वसो । कण्णासंधी भुमासंधी [..... ॥ ५६५ ॥

..... । ॥ ५६६ ॥

..... ।] कमतलाणं च अट्टावीसं चलाणि तु ॥ ५६७ ॥

एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तथा । जं [च] किंचि पसत्थं तं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ५६८ ॥

पुरिसं परिपुच्छेज्ज अधण्णो दूभगो त्ति य । असिद्धत्थो त्ति तं बूया ऐतेसि उपसेवणे ॥ ५६९ ॥

इत्थि च परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूभग त्ति य । असिद्धत्थ त्ति तं बूया एतेसमुपसेवणे ॥ ५७० ॥ 15

पुरिसस्सऽत्थविधं पुच्छे चलमिच्चेव णिद्दिसे । अत्थविधं इत्थीसु य चलमिच्चेव णिद्दिसे ॥ ५७१ ॥

कण्णं च परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूभग त्ति य । असिद्धत्थ त्ति तं बूया खिप्पं विज्जेहिति त्ति य ॥ ५७२ ॥

गब्भं च परिपुच्छेज्ज णत्थि गब्भो त्ति णिद्दिसे । गब्भिणि परिपुच्छेज्ज मतं सत्तं पजाहिति ॥ ५७३ ॥

गब्भिणी चलमामासं पुच्छे गब्भो सो चलो भवे । चले बितियमालद्धे गब्भो हणति मातरं ॥ ५७४ ॥ 20

छित्ते चलम्मि तिक्खुत्तो गब्भो तु पितरं हणे । चउखुत्तो चले छित्ते भातरं तु वधिस्सति ॥ ५७५ ॥

पंचखुत्तो चले छित्ते कुलं सो तु वधिस्सति । गब्भिणी य परामासे इच्चेवमुवधारये ॥ ५७६ ॥

पडिहारकं च दूतं च जंघावाणियकं पि वा । दिसावाणियकं वा वि छत्तंसासणहारकं ॥ ५७७ ॥

तथा पेसणियं जाणे तथा आदिट्ठभूमियं । तथा णिज्जामकं जाणे तथा वा कुक्खिधारकं ॥ ५७८ ॥

तधेव णाविकं जाणे तथा डुपकहारकं । तथा पग्गाहकं जाणे तथा कंतिकवाहकं ॥ ५७९ ॥ 25

तंवाधावकं जाणे अब्भाकारिकमेव य । कम्मपुच्छय णिद्दिसे एवमादि फलं वदे ॥ ५८० ॥

पवासं परिपुच्छेज्ज णित्थं त्ति वियागरे । पउत्थं परिपुच्छेज्ज पैरओ सो गमिस्सति ॥ ५८१ ॥

बंधं च परिपुच्छेज्ज णत्थि बंधो त्ति णिद्दिसे । बद्धस्स मोक्खं पुच्छेज्ज खिप्पं मोक्खो त्ति णिद्दिसे ॥ ५८२ ॥

पवासं परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । ०८ पैतिट्ठं परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे ०९ ॥ ५८३ ॥

पतिट्ठं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । संधिं च परिपुच्छेज्ज णत्थि संधि त्ति णिद्दिसे ॥ ५८४ ॥ 30

विग्गहं परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । भयं च परिपुच्छेज्ज भयमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ५८५ ॥

खेमं च परिपुच्छेज्ज णत्थि खेमं त्ति णिद्दिसे । जयं च परिपुच्छेज्ज जयो णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ५८६ ॥

आरोगं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । रोगं च परिपुच्छेज्ज अत्थि रोगो त्ति णिद्दिसे ॥ ५८७ ॥

१ भव्वो त्ति अभव्वो त्ति हं० त० ॥ २ ठिओ त्ति सुद्धिओ व त्ति हं० त० ॥ ३ सहिति त्ति हं० त० ॥
 ४ "धणो दू" हं० त० ॥ ५ एतेसं तु पवेसणे हं० त० ॥ ६ अधणा हं० त० ॥ ७ चले खित्ते कुल सो उ व" हं०
 त० ॥ ८ अज्झाका" हं० त० ॥ ९ परितो हं० त० विना ॥ १० बंधस्स हं० त० ॥ ११ ०८ ०९ एतच्चिह्नान्तर्गतः
 पाठः हं० त० नास्ति ॥ १२ आरागं हं० त० ॥

मरणं परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । जीवितं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे ॥ ५८८ ॥

आबाधितं च पुच्छेज्ज ण समुद्देहिति त्ति सो । अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे ॥ ५८९ ॥

वासं च परिपुच्छेज्ज हीणमेव वियागरे । अपातयं च पुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे ॥ ५९० ॥

ॐ वासं च परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । ॐ वासं तु परिपुच्छेज्ज अप्पवासं णिद्दिसे ॥ ५९१ ॥

5 ॐ सस्सस्स वापदं पुच्छे अत्थि तेवं वियागरे । ॐ सस्सस्स संपयं पुच्छे जहण्णा सस्ससंपदा ॥ ५९२ ॥

णट्ठं च परिपुच्छेज्जा णत्थि णट्ठं ति णिद्दिसे । णट्ठमाधारये तं च चिरणट्ठं वियागरे ॥ ५९३ ॥

सज्जीवं वा वि णिज्जीवं णट्ठमाधारए जति । अज्जीवमिति तं बूया एवं अदढदुब्बले ॥ ५९४ ॥

दढं चलं ति वा बूया चलमिच्चेव णिद्दिसे । धण्णं धणं ति वा बूया अधण्णं ति वियागरे ॥ ५९५ ॥

जं [च] किंचि पसत्थं तं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ५९६ ॥

10 समागमं संपयोगं थाणमिस्सरियं जसं । जं जं इट्ठं च पुच्छेज्ज सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ५९७ ॥

रोगं वा मरणं वा वि अप्पतिट्ठमणिव्वुत्ति । विवादं विप्पयोगं वा सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ५९८ ॥

चलाणेताणि वुत्ताणि जम्मि अत्थे णपुंसको । णपुंसकविभागेणं चलाणि वि वियागरे ॥ ५९९ ॥

तथा खेतं तथा वत्थुं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे । चले सदे य जाणेज्जो चला ये मणिके मया ॥ ६०० ॥

चलितं विचलितं वा वि चलं ति चलियं ति वा । तथा च चलजाति त्ति धावति त्ति व जो वदे ॥ ६०१ ॥

15 पैधावति ॐ त्ति वा बूया संधावति ॐ विधावति । परिधावति त्ति वा बूया तथा णिद्धावति त्ति वा ॥ ६०२ ॥

ओधावति त्ति वा बूया अहिधावति णोल्लति । विघोलते त्ति वा बूया अधवा विप्पघोलति ॥ ६०३ ॥

परिचेट्ठति त्ति वा बूया तथा विप्परिचेट्ठते । परिचत्ते त्ति वा बूया तथा विप्परिचत्ते ॥ ६०४ ॥

विचले अधुवे व ति ओधुते संधुते त्ति वा । ॐ अधुवे त्ति गए व ति ॐ आधुते त्ति धुते त्ति वा ॥ ६०५ ॥

गलियं ति व जो बूया तथा पगलियं ति वा । गलियं विगलितं व ति तथा पगलियं ति वा ॥ ६०६ ॥

20 तथा णिक्खिन्नं विक्खिन्नं णिक्खिन्नं विसलाइतं । पक्किणं विप्पक्किणं ति छड्डितं परिसाडियं ॥ ६०७ ॥

फुलितं दालितं दलियं छड्डितं परिसाडितं । भगं ति वाकलं व ति छल्लिलगं ति वा पुणो ॥ ६०८ ॥

अंदोलंति त्ति वा बूया तथा हंदोलको त्ति वा । घुमति त्ति परिघुमति भमते व परिब्भमे ॥ ६०९ ॥

णिट्ठुंघति त्ति वा बूया णिकट्ठति विकट्ठति । उक्कट्ठति त्ति वा बूया कट्ठति त्ति व जो वदे ॥ ६१० ॥

अण्णे चेवंविधा सदा जं चऽण्णं पि चलं भवे । एते उता समा सदा चला जे मणिके मता ॥ ६११ ॥

चले खिप्पे य णक्खत्ते देवते पणिधम्मि य । पुप्फे फले देसे व णगरे गामे गिहे वि वा ॥ ६१२ ॥

पुरिसे चउप्पदे चेव पक्खिम्मि उदकेचरे । कीडे किविल्लिगे यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ६१३ ॥

पाणे य भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणेसु य ॥ ६१४ ॥

लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्णं—धणेषु य ॥ ६१५ ॥

एतम्मि पेक्खितामासे सदे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगतूणं ततो बूयांगचित्तको ॥ ६१६ ॥

१-२ हस्तचिह्नमप्यगतं पूर्वार्धयुगलं हं० त० एव वर्तते ॥ ३ एतत् श्लोकपूर्वार्धमेव सि० नास्ति ॥ ४ हस्तचिह्नगतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ५ विघोलए अडजए अधवा हं० त० सि० । वघोलते अडजए अधवा सं० पु० ॥ ६ परिधावति त्ति सप्र० ॥ ७ ॐ ॐ एतच्चिह्नान्तर्गतं चरणं हं० त० नास्ति ॥ ८ घुम्मति हं० त० विना ॥

[१ सोलस अतिवत्ताणि]

सोलसेवऽतिवत्ताणि पवक्खामऽणुपुव्वसो । सीसस्स पच्छिमो भागो गीवा पट्टी य पच्छिमा ॥ ६१७ ॥

बाहुपाली—उवत्थाणं फिजोरूणं च पच्छिमं । जंघाणं पण्हकाणं च अतिवत्ताणि सोलस ॥ ६१८ ॥

एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तथा । जं किंचि पसत्थं तं सव्वं णत्थि ति णिद्दिसे ॥ ६१९ ॥

पुरिसं च परिपुच्छेज्ज अधण्णो दूभगो ति य । असिद्धत्थो ति तं बूया अतिवत्तम्मि सेविते ॥ ६२० ॥ 5

इत्थि च परिपुच्छेज्ज अधन्ना दूभग ति य । असिद्धत्थ ति तं बूया अतिवत्तम्मि सेविते ॥ ६२१ ॥

पुरिसत्थविधिं पुच्छे अतिवत्तं वियागरे । इत्थिअत्थविधिं पुच्छे अतिवत्तं वियागरे ॥ ६२२ ॥

कण्णं च परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूभग ति य । असिद्धत्थ ति तं बूया खिप्पं विज्जिहिते ति य ॥ ६२३ ॥

गब्भं च परिपुच्छेज्ज णत्थि गब्भो ति णिद्दिसे । गब्भिर्णि परिपुच्छेज्ज मतं सत्तं पयाहिति ॥ ६२४ ॥

उक्खित्तुं बिकं वा वि तथा बाहिरुत्तुं बियं । पक्खच्छयकं व जाणीया कव्वुडं आसणहारकं ॥ ६२५ ॥ 10

भागहारकमेवावि मधवा साधिगक्खरं । कम्मपुच्छाय णिद्दिसे एवमादि फलं वदे ॥ ६२६ ॥

पवासं परिपुच्छेज्ज अफलो ति वियागरे । पा(पवा)सितं परिपुच्छेज्ज पैरतो सो गमिस्सति ॥ ६२७ ॥

बंधं च परिपुच्छेज्ज णत्थि बंधो ति णिद्दिसे । बंधस्स भोक्खं पुच्छेज्ज भोक्खं तस्स वियागरे ॥ ६२८ ॥

पवासं परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । पतिट्ठं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे ॥ ६२९ ॥

भयं च परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । खेमं च परिपुच्छेज्ज णत्थि खेमं ति णिद्दिसे ॥ ६३० ॥ 15

संधिं च परिपुच्छेज्ज णत्थि संधि ति णिद्दिसे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे ॥ ६३१ ॥

जयं च परिपुच्छेज्ज जयो णत्थि ति णिद्दिसे । आरोगं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे ॥ ६३२ ॥

रोगं च परिपुच्छेज्ज अत्थि रोगो ति णिद्दिसे । मरणं च परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे ॥ ६३३ ॥

जीवितं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । आबाधितं च पुच्छेज्ज ण समुद्देहिति ति सो ॥ ६३४ ॥

अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । वस्सारत्तं च पुच्छेज्ज णिकिट्ठो ति वियागरे ॥ ६३५ ॥ 20

अपातयं च पुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज अप्पं वासं वियागरे ॥ ६३६ ॥

सस्सस्स वापदं पुच्छे अत्थि तेवं वियागरे । सस्सस्स संपदं पुच्छे णत्थि तेवं वियागरे ॥ ६३७ ॥

णट्ठं च परिपुच्छेज्ज णत्थि णट्ठं ति णिद्दिसे । णट्ठमाधारतित्ता णं चिरणट्ठं वियागरे ॥ ६३८ ॥

संपता—ऽणागता—ऽतीतं अतीतं ति वियागरे । धणं धणं ति पुच्छेज्ज अधणं ति वियागरे ॥ ६३९ ॥

समागमं संपयोगं ठाणमिस्सरियं जसं । जं जं इट्ठं च पुच्छेज्ज सव्वं णत्थि ति णिद्दिसे ॥ ६४० ॥ 25

रोगं च मरणं वार्धि अप्पत्तिट्ठमणिव्वुत्तिं । विप्पओगं विवादं वा सव्वमत्थि ति णिद्दिसे ॥ ६४१ ॥

जं किंचि पसत्थं तं सव्वं णत्थि ति णिद्दिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वमत्थि ति णिद्दिसे ॥ ६४२ ॥

तथा खेत्तं तथा वत्थुं सव्वं णत्थि ति णिद्दिसे । समे सदे य जाणेज्जा अतिवत्ता भवंति जे ॥ ६४३ ॥

अतिवत्तमतिक्कंतं गतं ति य विणिगतं । विणियत्तं पुराणं ति जुण्णं ओपुप्फ णिप्फलं ॥ ६४४ ॥

सुक्खं मलितं विसिण्णं ति उवउत्तं झीणमेव य । खइत्तं पितं ति वा भुत्तं णिट्ठितं ति कतं ति वा ॥ ६४५ ॥ 30

सम्महितं अतीतं ति समतिच्छियमतिच्छियं । ओहिज्जंतं ओहसितं पहीणं ति पहीज्जते ॥ ६४६ ॥

ण्हातं व मज्जियं वा वि ओलोलित पलोलियं । पलोड्डितं ति वा बूया तथा सम्मज्जितं ति वा ॥ ६४७ ॥

णच्चित्तं वाइयं गीयं लासितं पठितं ति वा । वेलंबितं ति वा बूया तथा वत्तुस्सयं ति वा ॥ ६४८ ॥

१ त्तुं ठिकं हं तं विना ॥ २ त्तुं ठियं हं तं विना ॥ ३ कधुडं हं तं विना ॥ ४ भवे हं तं ॥

५ पत्तिो हं तं विना ॥ ६ त्तिमे हं तं विना ॥ ७ ओहिज्जियं ओह हं तं ॥ ८ पठिज्जए हं तं ॥

णियत्तं भूतपुव्वं ति कतपुव्वं ति वा पुणो । तथा रयितपुव्वं ति अणुभूतं ति वा पुणो ॥ ६४९ ॥
गतपुव्वं ति वा बूया रयपुव्वं ति वा पुणो । तथा माणितपुव्वं ति वत्तपुव्वं ति वा पुणो ॥ ६५० ॥
गतगंधा गतरसा तथा गतवयो ति वा । एते उता समा सद्वा अतिवत्ता भवन्ति जे ॥ ६५१ ॥

अतिवत्तम्मि णक्खत्ते देवते पणिधम्मि य । पुप्फे फले ऋ देसे य णगरे गाम गिहे वि वा ॥ ६५२ ॥

- 5 पाणे व भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणेसु य ॥ ६५३ ॥
पुरुसे चतुप्पदे वा वि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लो यावि परिसप्पे तथेव य ॥ ६५४ ॥
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्व-धण-धणेषु य ॥ ६५५ ॥
एतम्मि पेक्खियामासे सद्दे रूवे तथेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचित्तओ ॥ ६५६ ॥

10

॥ अतिवत्ताणि सम्पत्ताणि ॥ ९ ॥ छ ॥

[१० सोलस वत्तमाणाणि]

वत्तमाणाणि वक्खामि सोलसंगे जधा तथा । बे चेव सीसपस्साणि २ कण्णा ४ गंडा तथेव य ६ ॥ ६५७ ॥

बे बाहुणालिपस्साणि ८ बाहुपस्साणि बे तथा १० ।

जंघो १२ रु १४ पादपस्साणि १६ वत्तमाणाणि सोलस ॥ ६५८ ॥

एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तथा । जं किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि ति णिदिसे ॥ ६५९ ॥

- 15 पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो ति य । धण्णो य सुहभागी य पुरुसोऽयमिति णिदिसे ॥ ६६० ॥
इत्थि वा परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग ति य । धण्णा य सुहभागी य इत्थीयमिति णिदिसे ॥ ६६१ ॥
पुरिसत्थविधं पुच्छे वत्तमाणं वियागरे । ॐ इत्थिस्सऽत्थविधं पुच्छे वत्तमाणं वियागरे ॥ ६६२ ॥ ७०
कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग ति य । धण्णा य सुहभागा य खिप्पं विज्जिहिति ति य ॥ ६६३ ॥
गब्भं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गब्भो ति णिदिसे । गब्भिणी परिपुच्छेज्ज खिप्पं सा पयाहिति ॥ ६६४ ॥
20 कम्मं च परिपुच्छेज्ज सद्दे रूवेहिं णिदिसे । वत्तमाणं पसत्थं च सुभं लाभं च णिदिसे ॥ ६६५ ॥
पवासं परिपुच्छेज्ज सफलो ति वियागरे । पउत्थं परिपुच्छेज्ज सफलो पधि वत्तते ॥ ६६६ ॥
बंधं च परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । बद्धस्स मोक्खं पुच्छेज्ज खिप्पं मोक्खं वियागरे ॥ ६६७ ॥
पवासं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । पतिट्ठं परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे ॥ ६६८ ॥
समागमं संपयोगं थाणमिस्सरियं जसं । इट्ठं च परिपुच्छेज्ज सव्वमत्थि ति णिदिसे ॥ ६६९ ॥
25 अपमाणमसक्कारं णिरातारमणिव्वुत्ति । विप्पयोगं विवादं च सव्वं णत्थि ति णिदिसे ॥ ६७० ॥
भयं च परिपुच्छेज्ज भयं णत्थि ति णिदिसे । खेमं च परिपुच्छेज्ज खेममत्थि ति णिदिसे ॥ ६७१ ॥
संधि वा परिपुच्छेज्ज अत्थि संधि ति णिदिसे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे ॥ ६७२ ॥
जयं वा परिपुच्छेज्ज जयो अत्थि ति णिदिसे । आरोगं परिपुच्छेज्ज आरोग्गमिति णिदिसे ॥ ६७३ ॥
रोगं च परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । मरणं च परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे ॥ ६७४ ॥
30 जीवितं परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । असमार्धि च पुच्छेज्ज समुट्ठाणंऽस णिदिसे ॥ ६७५ ॥
अणावुट्ठि च पुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । वासारतं च पुच्छेज्ज ण सो पढमकप्पितो ॥ ६७६ ॥
अपातयं च पुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज वासमासैवमादिसे ॥ ६७७ ॥
सस्सस्स वापदं पुच्छे नत्थि तेवं वियागरे । सस्सस्स संपयं पुच्छे ण सो पढमकप्पिगो ॥ ६७८ ॥

१ ॐ ७० एतच्चिह्नमध्यगतमुत्तरार्धं हं० त० नास्ति ॥ २ पविवुत्तओ हं० त० । 'पधि' पधि मार्गे इत्यर्थः ॥

३ सतवादिसे हं० त० विना ॥

संपता—ऽणागता—ऽतीतं वत्तमाणं वियागरे । धणं धणं च पुच्छेज्जा तं तु मज्झगतं वदे ॥ ६७९ ॥

वत्तमाणं पसत्थं च सव्वमत्थि ति णिद्दिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि ति णिद्दिसे ॥ ६८० ॥

तथा खेतं तथा वत्थुं सव्वमत्थि ति णिद्दिसे । समे सदे य जाणेज्जो वत्तमाणा भवन्ति जे ॥ ६८१ ॥

वत्तते ति व जो बूया वत्तमाणं ति वा पुणो । णिव्वत्तते ति वा बूया तथा संपतिवत्तते ॥ ६८२ ॥

संजायते संभवति तथा संचिद्वते ति वा । आसते सयते व ति बुज्जते पडिबुज्जते ॥ ६८३ ॥

उप्पज्जते ति वा बूया दिस्सते सूयते ति वा । अग्घायते ति वा बूया अस्साएति ति वा पुणो ॥ ६८४ ॥

फरिसायते ति वा बूया सुहं वेदयते ति वा । दलायते ति वा बूया सुहं वा दायते ति वा ॥ ६८५ ॥

तथा चित्तेति मंतेति गायते हसते ति वा । तथा पढति पाढेति वेलंबेति ति णच्चति ॥ ६८६ ॥

मज्जति ति व जो बूया आहिंचति विर्लिपति । भरेति कुसुमाणीति आबंघति वासितं ॥ ६८७ ॥

अलंकारेति अप्पाणं पसायति ति वा पुणो । पाउणेति निवेसेति तथा औचक्खति ति वा ॥ ६८८ ॥

भुंजति ति व जो बूया तथा पिबति भेदति । आहारेति ति वा बूया कल्लाणं पावति ति वा ॥ ६८९ ॥

आचिक्खति कधेति ति जंपति भणति ति वा । विजाणेति ति वा बूया तथा संजाणति ति वा ॥ ६९० ॥

आणेति व देति व उवणामेति ति वा पुणो । एवमादी य जे केयि वत्तमाणा भवन्ति ते ॥ ६९१ ॥

वत्तमाणम्मि णक्खत्ते देवते णिधिम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गाम गिहे वि वा ॥ ६९२ ॥

पुरुसे चतुप्पदे चेव पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लगे यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ६९३ ॥

पाणे व भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणेसु य ॥ ६९४ ॥

लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु त । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण—धणेसु य ॥ ६९५ ॥

एतम्मि पेक्खियामासे सदे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुंगंतूणं ततो बूयांगचित्तओ ॥ ६९६ ॥

॥ वत्तमाणाणि सम्पत्ताणि ॥ १० ॥ छ ॥

[११ सोलस अणागताणि]

20

अणागताणि वक्खामि सोलसंगे जधा तथा । मुहं १ णिडालं २ कंटो य ३ हिदयं ४ जंतुतरं ६ तथा ॥ ६९७ ॥

उरस्स ७ बाहुणालीणं ९ वत्थी १० सीसो ११ दरस्स य १२ ।

जंघो १४ रूणं च १६ पुरिमाणि सोलसंगे अणागता ॥ ६९८ ॥

एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तथा । जं किंचि पसत्थं सा सव्वं बूया अणागतं ॥ ६९९ ॥

पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो ति य । धण्णो य एसकल्लाणो पुरिसोऽयमिति णिद्दिसे ॥ ७०० ॥

इत्थि च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग ति य । धण्णा य एससकल्लाणा इत्थीयमिति णिद्दिसे ॥ ७०१ ॥

पुरिसस्सऽत्थविधं पुच्छे भविस्सति अणागतं । थिया अत्थविधं पुच्छे वदे तं पि अणागतं ॥ ७०२ ॥

कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग ति य । धण्णा य एससकल्लाणा विज्जिस्सति चिरेण तु ॥ ७०३ ॥

गब्भं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गब्भो ति णिद्दिसे । गब्भिणी परिपुच्छेज्ज दारकं सा पयाहिति ॥ ७०४ ॥

कम्मं च परिपुच्छेज्ज जं कम्मं स समाचरे । तं तं कालंतरेणेव अणागतफलं भवे ॥ ७०५ ॥

पवासं परिपुच्छेज्ज सफलं ति वियागरे । पउत्थं परिपुच्छेज्ज सधणो आगमिस्सति ॥ ७०६ ॥

बंधं च परिपुच्छेज्ज णत्थि बंधो ति णिद्दिसे । बद्धस्स मोक्खं पुच्छेज्ज अत्थि मोक्खो ति णिद्दिसे ॥ ७०७ ॥

१ सव्वमत्थि हं० त० विना ॥ २ वत्तमण्णं ति सं ३ पु० सि० । वत्तं मण्णं ति हं० त० ॥ ३ पाउणाति हं० त० ॥ ४ उच्चक्खति हं० त० ॥ ५ हिदयं यंतुतरं सं ३ पु० सि० । हिदयं जं उत्तरं हं० त० ॥

- भयं च परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । खेमं च परिपुच्छेज्ज खेममत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ७०८ ॥
 संधिं च परिपुच्छेज्ज अत्थि संधिं त्ति णिद्दिसे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे ॥ ७०९ ॥
 जयं च परिपुच्छेज्ज जयो अत्थि त्ति णिद्दिसे । आरोगं परिपुच्छेज्ज आरोगमिति णिद्दिसे ॥ ७१० ॥
 रोगं च परिपुच्छेज्ज णत्थि रोगो त्ति णिद्दिसे । मरणं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे ॥ ७११ ॥
 5 जीवितं परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । आबाधितं परिपुच्छेज्ज समुद्धानं^१ णिद्दिसे ॥ ७१२ ॥
 अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । वस्सारतं च पुच्छेज्ज सोभणो त्ति भविस्सति ॥ ७१३ ॥
 अपसारं च पुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज चिरं वासं वियागरे ॥ ७१४ ॥
 सस्सस्स वापयं पुच्छे णत्थि तेवं वियागरे । सस्सस्स संपयं पुच्छे सोभणो त्ति वियागरे ॥ ७१५ ॥
 णट्ठं च परिपुच्छेज्ज अत्थि णट्ठं त्ति णिद्दिसे । णट्ठमाधारतित्ता णं पुरिमपक्खं त्ति णिद्दिसे ॥ ७१६ ॥
 10 संपता—ऽणागता—ऽतीतं आगमि त्ति वियागरे । धणं धणं त्ति पुच्छेज्ज धणं तेवं वियागरे ॥ ७१७ ॥
 जं किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । अप्सत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ७१८ ॥
 तथा खेतं तथा वत्थुं सव्वं बूया अणागतं । समे सदे य जाणेज्जो जे भवंति अणागता ॥ ७१९ ॥
 अणागतं वट्ठिहिति ~~७~~ उप्पज्जिहिति ~~७~~ होक्खति । भविस्सते आगहिति तथा आगच्छते त्ति वा ॥ ७२० ॥
 एहिती व त्ति वा बूया तथा दाहिति काहिति । भुजिस्सति त्ति वा बूया तथा खाहिति पाहिति ॥ ७२१ ॥
 15 तथा सिक्खिहते व त्ति आगमेहिति पेच्छति । ण्हाधिति त्ति वा बूया दक्खिणं दाहिति त्ति वा ॥ ७२२ ॥
 तथा अज्जिहते व त्ति तथा दिस्सहिति त्ति वा । अग्घाहिति त्ति वा बूया अस्सादेहिति व त्ति वा ॥ ७२३ ॥
 फरिस्साहिति त्ति वा बूया तथा चित्तेहिति त्ति वा । मंतेहिति त्ति वा बूया णिच्छयं णाहिति त्ति वा ॥ ७२४ ॥
 वज्जिहते गिज्जिहते वायेहिति धाहिति । ल्हासेहिति त्ति वा बूया तथा पढिहिति त्ति वा ॥ ७२५ ॥
 ण्हाहते त्ति विल्लिपिहिति ण्हाणं आहेच्छति त्ति वा । सिरं भरेहते व त्ति आर्विधिहिति वासितं ॥ ७२६ ॥
 20 णिवसिहिति वत्थाणि तथा पांगुहिति त्ति वा । पसाधेहिति त्ति वलये भूसणाणि विणेच्छति ॥ ७२७ ॥
 अलंकारेहते व त्ति पडिकम्मं काहिति त्ति वा । माणेहिति त्ति वा पच्छा तथा सोभिहते त्ति वा ॥ ७२८ ॥
 आतिगंछिति त्ति वा बूया समेहिति रमेहिति । एते उता समा सदा जे भवंति अणागता ॥ ७२९ ॥
 अणागतम्मि णक्खते देवते पणिधम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गाम गिहे वि वा ॥ ७३० ॥
 पुरिसे चतुप्पदे चेव पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किक्खिणे यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ७३१ ॥
 25 पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तथा ॥ ७३२ ॥
 लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण—धणेषु य ॥ ७३३ ॥
 एतम्मि पेक्खितामासे सदे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगतूणं ततो बूयांगचित्तो ॥ ७३४ ॥

॥ अणागताणि सम्मत्ताणि ॥ ११ ॥ छ ॥

[१२ पण्णासं अब्भंतराणि]

- 30 अब्भंतराणि पण्णासं पक्खामऽणुपुव्वसो । सरीरत्थाणि जाणंगे सरीराबाहिराणि य ॥ ७३५ ॥
 पाद—पाणितलाणं च जंधोरुब्भंतराणि य । कक्ख—ऽक्खि—वक्खणाणं च जाभीय मेहणस्स य ॥ ७३६ ॥

१ 'णं विणि' हं० त० ॥ २ आगमि सप्र० ॥ ३ धणं तेवं हं० त० ॥ ४ वट्ठिहते हं० त० ॥ ५ 'त्ति भोक्खति चिट्ठतिस्सति । भवि' सि० ॥ ६ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ७ अगहते हं० त० विना ॥ ८ अग्घाहते हं० त० ॥ ९ वट्ठिहिए गच्छिहिए वाये' हं० त० ॥ १० वाविहिति हं० त० विना ॥ ११ आहेकिति त्ति वा । थिरं भरेहते हं० त० ॥ १२ विणिच्छति हं० त० विना ॥ १३ सोभिहते हं० त० विना ॥

हितयस्सावि समूहस्स कण्णाणं णासिकाय य । बाहुणालीय हत्थाणं सोणीआ व गुदाय य ॥ ७३७ ॥

मत्थकस्स णिडालस्स गीवा-गंडाणमेव य । भुमगाणं चेव जंतूणं उरस्स उदरस्स य ॥ ७३८ ॥

[..... । ॥]

एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तथा । जं किंचि वि पसत्थं तं सव्वमत्थि ति णिदिसे ॥ ७३९ ॥

पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो ति य ८० धण्णो य सुहभागीय अब्भंतरको ति य ॥ ७४० ॥ 5

इत्थि च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग ति य । ८० धण्णा य सुहभागी य अब्भंतरयभारिया ॥ ७४१ ॥

पुरिसस्स विधं पुच्छे बूया अब्भंतरं ति य । पमदाय विधं पुच्छे तं पि अब्भंतरं वदे ॥ ७४२ ॥

कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग ति य । रायब्भंतरकस्सायं कण्णा विज्जिहिते लहुं ॥ ७४३ ॥

गब्भं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गब्भो ति णिदिसे । गब्भिणि परिपुच्छेज्ज चिरा पुत्तं पयाहिति ॥ ७४४ ॥

कम्मं च परिपुच्छेज्ज राजपौरुसमादिसे । रण्णो य अब्भंतरको भवे सव्वरहस्सिको ॥ ७४५ ॥ 10

पवासं परिपुच्छेज्ज चिरा मोक्खो भविस्सति । [पउत्थं परिपुच्छेज्ज] ॥ ७४६ ॥

भयं च परिपुच्छेज्ज भयं णत्थि ति णिदिसे । खेमं च परिपुच्छेज्ज खेममत्थि ति णिदिसे ॥ ७४७ ॥

संधिं वा परिपुच्छेज्ज अत्थि संधि ति णिदिसे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे ॥ ७४८ ॥

जयं च परिपुच्छेज्ज जयो अत्थि ति णिदिसे । आरोगं परिपुच्छेज्ज आरोगमिति णिदिसे ॥ ७४९ ॥

रोगं च परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । मरणं च परिपुच्छेज्ज णत्थि मरणं ति णिदिसे ॥ ७५० ॥ 15

जीवितं परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । आबाधितं च पुच्छेज्ज समुद्धानं ऽस णिदिसे ॥ ७५१ ॥

अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । वासारत्तं च पुच्छेज्ज उत्तमो ति वियागरे ॥ ७५२ ॥

अपातयं च पुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज महामेह उवट्ठितो ॥ ७५३ ॥

सस्सस्स वापयं पुच्छे णत्थि तेवं वियागरे । सस्सस्स संपयं पुच्छे उत्तमा सस्ससंपदा ॥ ७५४ ॥

णट्ठं च परिपुच्छेज्ज लाभं तस्स वियागरे । णट्ठमाधारइत्ताणं तक्कं अब्भंतरं भवे ॥ ७५५ ॥ 20

बाहिरऽब्भंतरं पुच्छे अब्भंतरगमादिसे । ८० धण्णं धणं ति पुच्छेज्ज धणं ति य वियागरे ८० ॥ ७५६ ॥

जं किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि ति णिदिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि ति णिदिसे ॥ ७५७ ॥

तथा खेत्तं तथा बत्थुं तथा दंडं तथा मणिं । विपदं चतुप्पदं सव्वं धणमत्थि ति यं वदे ॥ ७५८ ॥

वत्थमाभरणं भंडं अंतोपुरवरं जणं । सुवण्ण-रुप्प-मणि-रत्तं थिरमब्भंतरं वदे ॥ ७५९ ॥

जधा पुण्णामधेयेसु सव्वो अत्थो सुभा-ऽसुभो । तथा सुभा-ऽसुभं सव्वं वदे अब्भंतरेसु वि ॥ ७६० ॥ 25

अब्भंतरे य जाणेज्जो समा सद्दा भवन्ति जे । अब्भंतरं ति वा बूया तथा अंतोपुरं ति वा ॥ ७६१ ॥

अब्भंतरं वा गामे ति पुरे अब्भंतरं ति वा । अब्भंतरं वा खेडे ति घरं अब्भंतरं ति वा ॥ ७६२ ॥

अंतोगामे ति वा बूया तधंतोणगरे ति वा । अंतोखेडे ति वा बूया तधंतोघरे ति वा ॥ ७६३ ॥

अब्भंतरं देवकुले अंतोदेवकुले ति वा । अब्भंतरे मुहे व ति तधंतोमुहे ति वा ॥ ७६४ ॥

अब्भंतरं तु वारीय अंतोवारीय वा पुणो । अब्भंतरं कोत्थलगे अंतोकोत्थलके ति वा ॥ ७६५ ॥ 30

जम्मि कम्मियि भंडम्मि अंतो अब्भंतरं ति वा । एते उता समा सद्दा जे तु अब्भंतरा भवे ॥ ७६६ ॥

अब्भंतरम्मि णक्खत्ते देवते पणिधम्मि य । पुप्फे फले व देसे य णगरे गामे गिहे वि वा ॥ ७६७ ॥

पुरिसे चतुप्पदे चेव पक्खिम्मि उदगेघरे । कीडे किविल्लिगे यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ७६८ ॥

१ ८० ८० एतच्चिह्नान्तर्गते उत्तरार्ध-पूर्वार्धे हं० त० न स्तः ॥ २ 'पोडुसमा' हं० त० ॥ ३ ८० ८० एतच्चिह्नान्तर्गतमुत्तरार्ध
हं० त० नास्ति ॥ ४ 'रत्तं' रत्नमित्यर्थः ॥

पाणे य भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा ।  आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तथा ॥ ७६९ ॥ 
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण—धणेसु य ॥ ७७० ॥
एतम्मि पेक्खियामासे सदे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचित्तओ ॥ ७७१ ॥

॥ अब्भंतरं सम्पत्तं ॥ १२ ॥ छ ॥

5

[१३ पण्णासं अब्भंतरब्भंतराणि]

- अब्भंतरं तु जे वुत्ता ते उम्मट्ठे वियाणिया । अब्भंतरअब्भंतरके फलं तत्थ वदे सुभं ॥ ७७२ ॥
अत्थविद्धि जयं लाभं जं चऽण्णं पि सुभं भवे । एताणि आमसं पुच्छे अब्भंतरतरं वदे ॥ ७७३ ॥
पुरिसं परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो त्ति य । अब्भंतरब्भंतरको रण्णो णिच्चं सुही भवे ॥ ७७४ ॥
इत्थि च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । रायब्भंतरकस्सायं भज्जा तु भविस्सति ॥ ७७५ ॥
10 पुरुसट्ठविधं पुच्छे अब्भंतरतरं वदे । थिए अत्थविधं पुच्छे अब्भंतरतरं वदे ॥ ७७६ ॥
कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । अब्भंतरब्भंतरको रण्णो होहिहि सेवगो ॥ ७७७ ॥
कम्मं च परिपुच्छेज्ज रायवल्लभको भवे । अब्भंतरब्भंतरको रण्णो सव्वरहस्सितो ॥ ७७८ ॥
पवासं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । पउत्थं परिपुच्छेज्ज सधणो खिप्पमेहिहि ॥ ७७९ ॥
बंधं च परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । बद्धस्स मोक्खं पुच्छेज्ज चिरा मोक्खो भविस्सति ॥ ७८० ॥
15 भयं च परिपुच्छेज्ज भयं णत्थि त्ति णिद्दिसे । खेमं च परिपुच्छेज्ज खेममत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ७८१ ॥
संधिं च परिपुच्छेज्ज अत्थि संधि त्ति णिद्दिसे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे ॥ ७८२ ॥
जयं च परिपुच्छेज्ज जयो अत्थि त्ति णिद्दिसे । आरोग्गं परिपुच्छेज्ज आरोग्गमिति णिद्दिसे ॥ ७८३ ॥
रोगं च परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । मरणं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे ॥ ७८४ ॥
जीवितं परिपुच्छेज्ज सुइरं उत्तमं भवे । आबाधितं च पुच्छेज्ज समुट्ठाणं^१ णिद्दिसे ॥ ७८५ ॥
20 अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । वस्सारत्तं च पुच्छेज्ज णिद्दिसे उत्तमुत्तमं ॥ ७८६ ॥
अपातयं च पुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज उत्तमं वासमादिसे ॥ ७८७ ॥
सस्सस्स वापदं पुच्छे णत्थि तेवं वियागरे । सस्सस्स संपयं पुच्छे णिद्दिसे उत्तमुत्तमं ॥ ७८८ ॥
णट्ठं च परिपुच्छेज्ज लाभं तस्स वियागरे । णट्ठमाधारये तं च अब्भंतरतरं वदे ॥ ७८९ ॥
बाहिरब्भंतरं व त्ति अब्भंतरब्भंतरं वदे । धण्णं च पुरिपुच्छेज्ज धण्णं तेण वियागरे ॥ ७९० ॥
25 जं किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । [अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ७९१ ॥]
वत्थमाभरणं भंडं अंतेपुरवरं जणो । सुवण्ण—रुप्प—मणि—मुत्तं अब्भंतरतरं थिरं ॥ ७९२ ॥
तथा खेत्तं तथा वत्थुं खगं दंडं तधेव य । सव्वं सज्जीव—णिज्जीवं धण्णमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ७९३ ॥
अब्भंतरतरं एतं विभावेतूण अंगवी । पुण्णामधेये हि फलं विसिद्धतरकं वदे ॥ ७९४ ॥
एवमेतं जधा वुत्तं विभत्तीसु वियागरे । समे सदे य जाणेज्जो अब्भंतरतरा हि जे ॥ ७९५ ॥
30 अब्भंतरब्भंतरतो अंतो अंतो त्ति वा पुणो । तथा आहारमाहारे अब्भंतरतरं त्ति वा ॥ ७९६ ॥
पविट्ठो त्ति व यो बूया तथा अतिगतो त्ति वा । तथाऽतिसरितो व त्ति तथा लीणो त्ति वा पुणो ॥ ७९७ ॥
तथा उक्कट्टमोकट्टो अव्वोकट्टे त्ति वा पुणो । तथा ओगूढमुवगूढो तथा वल्लभवल्लभो ॥ ७९८ ॥

१ हस्तचिह्नगतोऽयं पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २ वऽत्थ हं० त० विना ॥ ३ सि हं० त० ॥ ४ एतदुत्तरार्धं सर्वासु प्रतिषु नास्ति ॥ ५ तथा उक्कट्टमोकट्टो अव्वोकट्टे त्ति हं० त० ॥

अतिदूरे पविट्ठो त्ति अतिगतो त्ति व दूस्त । दूरातिसरितो व त्ति दूरोगाढो त्ति वा पुणो ॥ ७९९ ॥
तथा अणुपविट्ठो त्ति तथा अतिगतो त्ति वा । तथा गाढोपगूढे त्ति गाढलीणं त्ति वा वदे ॥ ८०० ॥
तथा अलीणमल्लीणो अच्चल्लीणो त्ति वा वदे । अब्भंतरब्भंतरगो एते सद्दा समा भवे ॥ ८०१ ॥

अक्कप्पविट्ठे णक्खते देवते पणिधम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गामे गिहे वि वा ॥ ८०२ ॥
पुरिसे चतुप्पदे चेव पक्खिम्मि उदकेचरे । कीडे किविल्लगे चेव परिसप्पे तधेव य ॥ ८०३ ॥ 5
पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणेषु य ॥ ८०४ ॥
लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेषु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेषु य ॥ ८०५ ॥
एतम्मि पेक्खियामासे सदे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचित्तो ॥ ८०६ ॥

॥ अब्भंतरब्भंतराणि सम्मत्ताणि ॥ १३ ॥ छ ॥

[१४ पण्णासं बाहिरब्भंतराणि]

10

अब्भंतरा तु निम्मट्ठा बाहिरब्भंतरा तु ते । अब्भंतराणंतरिया अध वुत्ता सुभा-ऽसुभा ॥ ८०७ ॥
अत्थलाभं जयं वद्धि जं चऽण्णं सुभं भवे । एताणि आमसं पुच्छे बाहिरब्भंतरं वदे ॥ ८०८ ॥
पुरिसं च परिपुच्छेज्ज बाहिरब्भंतरं भवे । इत्थि च परिपुच्छेज्ज बाहिरब्भंतरा भवे ॥ ८०९ ॥
पुरिसस्सऽत्थविधं पुच्छे बाहिरब्भंतरं भवे । थिया अत्थविधं पुच्छे बाहिरब्भंतरं वदे ॥ ८१० ॥
कण्णं च परिपुच्छेज्ज बाहिरब्भंतरस्स तु । खिप्पं विज्जिहिति कण्णा एवं बूयांगचित्तको ॥ ८११ ॥ 15
गब्भं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गब्भो त्ति णिद्दिसे । गब्भिणी परिपुच्छेज्ज खिप्पं पुत्तं पयाहिति ॥ ८१२ ॥
कम्मं च परिपुच्छेज्ज बाहिरब्भंतरं वदे । पडिहारं संधिवालं वा तथा अत्थोपणायकं ॥ ८१३ ॥
पवासं परिपुच्छेज्ज सफलोऽयमिति णिद्दिसे । पउत्थं परिपुच्छेज्ज सधणो आगमिस्सति ॥ ८१४ ॥
बंधं च परिपुच्छेज्ज णत्थि बंधो त्ति णिद्दिसे । बद्धस्स मोक्खं पुच्छेज्ज मोक्खं तस्स वियागरे ॥ ८१५ ॥
भयं च परिपुच्छेज्ज भयो णत्थि त्ति णिद्दिसे । खेमं च परिपुच्छेज्ज खेममत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ८१६ ॥ 20
संधिं वा परिपुच्छेज्ज अत्थि संधिं त्ति णिद्दिसे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे ॥ ८१७ ॥
जयं च परिपुच्छेज्ज जयो अत्थि त्ति णिद्दिसे । आरोगं परिपुच्छेज्ज आरोगमिति णिद्दिसे ॥ ८१८ ॥
रोगं च परिपुच्छेज्ज णत्थि रोगो त्ति णिद्दिसे । मरणं च जति पुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे ॥ ८१९ ॥
जीवितं परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । आबाधितं च पुच्छेज्ज समुट्ठाणंऽस णिद्दिसे ॥ ८२० ॥
अणावुट्ठिं च पुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । वस्सारत्तं च पुच्छेज्ज मज्झिमो त्ति वियागरे ॥ ८२१ ॥ 25
अपातयं च पुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज मज्झिमं वासमादिसे ॥ ८२२ ॥
कया वासं त्ति वा बूया संधीदिवसेसु णिद्दिसे । दिवा रत्तिं त्ति वा बूया संझाकाले त्ति णिद्दिसे ॥ ८२३ ॥
सस्सस्स वापदं पुच्छे णत्थि तेवं वियागरे । सस्सस्स संपयं पुच्छे मज्झिमा सस्ससंपदा ॥ ८२४ ॥
णट्ठं च परिपुच्छेज्ज लाभं तस्स वियागरे । णट्ठमाधारयित्ता य बाहिरब्भंतरं वदे ॥ ८२५ ॥
अब्भंतरं त्ति बज्झं त्ति बाहिरब्भंतरं वदे । धणं धणं त्ति पुच्छेज्ज मज्झिमं त्ति वियागरे ॥ ८२६ ॥ 30
जं किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ८२७ ॥
तथा खेत्तं तथा वत्थुं खगं दंडं मणिं तथा । सव्वं सज्जीव-णिज्जीवं मज्झागतमत्थि य ॥ ८२८ ॥

वत्थमाभरणं भंडं अंतेपुरवरं जणं । रुप्पं मणिं रयणं मज्झागममत्थि य ॥ ८२९ ॥

एवमेवं विभावित्ता णिद्दिसे अंगचिंतओ । समे सदे य जाणेज्जा बाहिरब्भंतरा हि जे ॥ ८३० ॥

बाहिरब्भंतरा सद्दा समुदीरंति मिस्सका । अब्भंतरा य बहुला बाहिरब्भंतरा तु ते ॥ ८३१ ॥

णक्खत्ते देवते यावि तधा णक्खत्तदेवते । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गाम गिहे वि वा ॥ ८३२ ॥

5 पुरिसे चतुप्पदे चेव पक्खिम्मि उदकेचरे । कीडे किविल्लगे यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ८३३ ॥

पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तधा ॥ ८३४ ॥

लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेषु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेषु य ॥ ८३५ ॥

एतम्मि पेक्खितामासे सदे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ ८३६ ॥

॥ बाहिरब्भंतराणि सम्पत्ताणि ॥ १४ ॥ छ ॥

10

[१५ पण्णासं अब्भंतरबाहिराणि]

अब्भंतराणि सेवित्ता बाहिराणि णिसेवति । अब्भंतरबज्झा ते सव्वत्थे ण पसस्सते ॥ ८३७ ॥

एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं किंचि पसत्थं तं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ८३८ ॥

पुरिसं च परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूभगो त्ति य । असिद्धत्थो त्ति तं बूया अब्भंतरबाहिरा ॥ ८३९ ॥

इत्थि वा परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूभगो त्ति य । असिद्धत्थ त्ति तं बूया अब्भंतरबाहिरा ॥ ८४० ॥

15 पुरिसत्थविधं पुच्छे वदे अब्भंतरबाहिरं । धिया अत्थविधं पुच्छे अब्भंतरबाहिरं वदे ॥ ८४१ ॥

कण्णामवि असिद्धत्था अधण्णा दूभगो त्ति य । ~~अब्भंतरबज्झस्स~~ खिप्पं विज्जिहि ए त्ति य ॥ ८४२ ॥

कम्मं च परिपुच्छेज्ज अब्भंतरबाहिरं वदे । पडिहारि संधिवालं वा अब्भागारिमेव य ॥ ८४३ ॥

पवासे पुच्छे अत्थि पोसिते य णिरत्थगो । बंधो य पुच्छे णत्थि बद्धो खिप्पं मुच्चति ॥ ८४४ ॥

भयं अत्थि त्ति वा बूया णत्थि खेमं त्ति पुच्छे । संधि पुच्छे णं भवति विग्गहो य णिरत्थगो ॥ ८४५ ॥

20 औरोगो यत्थ ण भवे रोगं मरणं च णिद्दिसे । णत्थि त्ति जीवियं बूया ण समुट्ठेति आतुरो ॥ ८४६ ॥

अपातवमणावुट्ठिं सस्सवापत्तिमेव य । णत्थि त्ति णिद्दिसे सव्वं णट्ठं तत्थ ण दीसति ॥ ८४७ ॥

वस्सारत्तं च वासं च णट्ठस्स व ण दंसणं । तधा खेतं तधा वत्थुं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ८४८ ॥

अब्भंतरं त्ति बज्झं त्ति अब्भंतरबाहिरं वदे । धणं धणं च पुच्छेज्ज अधण्णमिति णिद्दिसे ॥ ८४९ ॥

जं किंचि पसत्थं तं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ८५० ॥

25 अब्भंतरबाहिरका सद्दा सूतंति मिस्सगा । अब्भंतरट्ठिका ते तु अब्भंतरबाहिरा भवे ॥ ८५१ ॥

आदिच्चे चेव णक्खत्ते वामिस्से देवतेसु य । तित्थे पुप्फे फले देसे णगरे गाम गिहेसु य ॥ ८५२ ॥

पुरुसे चतुप्पदे यावि पक्खिम्मि उदकेचरे । कीडे किविल्लए यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ८५३ ॥

पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणेषु य ॥ ८५४ ॥

लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेषु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेषु य ॥ ८५५ ॥

30 एतम्मि पेक्खितामासे सदे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ ८५६ ॥

॥ अब्भंतरबाहिराणं सम्पत्ताणं ॥ १५ ॥ छ ॥

१ हस्तचिह्नगतमुत्तरार्धं हं० त० एवास्ति ॥ २ ण वा बूया विग्गहो सि० ॥ ण [.....] विग्गहो सं ३ पु० ॥

३ अरोगो हं० त० ॥ ४ भूतंति हं० त० ॥ ५ तिथि पुप्फे हं० त० विना ॥

[१६ पण्णासं बाहिराणि]

एतेसामेव सव्वेसिं पडिपक्खे बाहिराणि तु । सेवमाणो जया पुच्छे पसत्थं णाभिनिहिसे ॥ ८५७ ॥
 एतेसं सेवणे जं तु कम्मपुच्छं वियागरे । वणकम्मिकं व णाविकम्मं बाहिरं कट्टहारकं ॥ ८५८ ॥
 आरामपालकं जाणे उज्जाणस्स वणस्स वा । पुप्फुच्चागं फलुच्चागं वत्तणीपालकं तहा ॥ ८५९ ॥
 पुरिसं इत्थि च अत्थं च गब्भं पोसितमागमं । तथा खेमं च संधिं वा जयाऽऽरोगं च जीवितं ॥ ८६० ॥ ५
 वस्सारत्तं च वासं च सस्सं णट्टस्स दंसणं । खेत्त वत्थु धणं धणं भेत्ती संजोगमेव य ॥ ८६१ ॥
 खगं ८ वम्मं च १० चम्मं च दंडं अच्छादणं मणिं । जं किंचि पसत्थं सौ सव्वं नत्थि ति णिहिसे ॥ ८६२ ॥
 पवासं णिगमं मोक्खं गब्भिणीय पजायणं । कण्णापवाहणं वा वि भयं बद्धस्स मोक्खणं ॥ ८६३ ॥
 विगहं मरणं रोगं अणावुट्ठिं अपातयं । सस्सस्स वापदि णासं अण्णत्तिद्रमणिव्वुत्तिं ॥ ८६४ ॥
 अपमाणमसक्कारं णिराकारं पराजयं । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वमत्थि ति णिहिसे ॥ ८६५ ॥ १०
 अब्भंतरे ति बज्झं ति बाहिरं ति वियागरे । धणं धणं ति पुच्छेज्ज अधणं ति वियागरे ॥ ८६६ ॥
 पसत्थं णत्थि तं सव्वं अप्पसत्थं च अत्थि तं । समे सदे य जाणेज्जो बाहिरा जे भवन्तिह ॥ ८६७ ॥
 बाहिरं ति व जो बूया परिबाहिरकं ति वा । अंते बज्झं ति वा बूया अंतपालो ति वा पुणो ॥ ८६८ ॥
 गामस्स बज्झतो व ति बज्झतो णगरस्स वा । खेडस्स बज्झतो व ति बज्झतो वा घरस्स तु ॥ ८६९ ॥
 पच्चंतो ति वा बूया पच्चंतवसति ति वा । तथा पच्चंतपालो ति एकंतो ति व यं वदे ॥ ८७० ॥ १५
 बाहिंबाहिं ति वा बूया बाहिरेणं ति वा पुणो । एते उता समा सदा बाहिरा जे भवन्तिह ॥ ८७१ ॥
 णक्खत्ते पच्छिमद्वारे देवते पणिधम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गामे गिहे वि वा ॥ ८७२ ॥
 पुरिसे चतुप्पदे चैव पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किक्खिण्णे यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ८७३ ॥
 पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तथा ॥ ८७४ ॥
 लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेषु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेषु य ॥ ८७५ ॥ २०
 एतम्मि पेक्खितामासे सदे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचित्तो ॥ ८७६ ॥
 ॥ बाहिराणि (सम्पत्ताणि) ॥ १६ ॥ छ ॥

[१७ पण्णासं बाहिरबाहिराणि]

णिम्मट्टे बाहिरे बूया सव्वबाहिरबाहिरे । ते सेवमाणो पुच्छेज्ज बाहिरत्थं वियागरे ॥ ८७७ ॥
 पुरिसं च परिपुच्छेज्ज अधणो दूभगो ति य । असिद्धत्थो ति तं बूया बाहिरो ति य णिहिसे ॥ ८७८ ॥ २५
 इत्थी य परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूभग ति य । असिद्धत्थ ति तं बूया बाहिर ति य णिहिसे ॥ ८७९ ॥
 पुरिसस्सऽत्थविधं पुच्छे बाहिर ति वियागरे । थिया अत्थविधं पुच्छे बाहिर ति वियागरे ॥ ८८० ॥
 कण्णं च परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूभग ति य । असिद्धत्थ ति तं बूया खिप्पं विज्जिहिति ति य ॥ ८८१ ॥
 गब्भं च परिपुच्छेज्ज णत्थि गब्भो ति णिहिसे । गब्भिणी परिपुच्छेज्ज मतं सा जणयिस्सति ॥ ८८२ ॥ ३०

१ एएसिमेव हं० त० ॥ २ सेवमाणो य पुच्छेज्ज पसत्थं णत्थि तं भवे हं० त० विना ॥ ३ पुव्वं हं० त० विना ॥
 ४ आरामसालं जाणेज्ज सस्सवण्णस्स वा पि वा हं० त० ॥ ५ तं हं० त० ॥ ६ वापतिं हं० त० ॥ ७ अप्पमाणथिरसक्कारं
 सं ३ पु० सि० । अप्पमायमसक्कारं हं० त० ॥ ८ कारं च अववयं हं० त० ॥ ९ ति मग्गं ति हं० त० ॥ १० अधण्णं
 ति हं० त० विना ॥ ११ एकंतो ति व जो वदे हं० त० ॥ १२ चेव हं० त० ॥ १३ अधणो हं० त० ॥

- कम्मं च परिपुच्छेज्ज वतणीपालमगियं । तुंबस्स मगितं वा वि तधा बाहिरंतुंबियं ॥ ८८३ ॥
 पवासं परिपुच्छेज्ज अफलो ति वियागरे । पउत्थं परिपुच्छेज्ज पैरओ सो गमिस्सति ॥ ८८४ ॥
 बंधं च परिपुच्छेज्ज गिरत्थं बंधमादिसे । बद्धस्स मोक्खं पुच्छेज्ज मोक्खो तस्स पवासणे ॥ ८८५ ॥
 भयं पुच्छे भयं भवति खेमं पुच्छे ण होहिति । संधि पुच्छे ण भवति विग्गहो य गिरत्थगो ॥ ८८६ ॥
 5 जयं पुच्छे ण भवति आरोगो वि ण होहिति । रोगं च मरणं चेव अत्थि तेवं वियागरे ॥ ८८७ ॥
 जीवितं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । आबाधितं च पुच्छेज्ज मतप्पाओ मतो ति वा ॥ ८८८ ॥
 अपातयमणावुट्ठिं सस्सवापत्तिमेव य । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वमत्थि ति णिदिसे ॥ ८८९ ॥
 वस्सारत्तं च वासं च सव्वं णट्ठस्स दंसणं । तधा खेतं तधा वत्थुं सव्वं णत्थि ति णिदिसे ॥ ८९० ॥
 धण्णं धणं ति पुच्छेज्ज अधण्णं ति वियागरे । समे सद्दे तु जाणेज्जो जे तु बाहिरबाहिरा ॥ ८९१ ॥
 10 तधा णिच्छुद्धिणच्छुद्धं तधा णिग्गतणिग्गतं । तधा णीहारणीहारे तधा गतगते ति वा ॥ ८९२ ॥
 [तधा] वणंवणं व ति अडवीअडवि ति वा । परतो—परतो व ति परंपरगतो ति वा ॥ ८९३ ॥
 बज्झंबज्झं ति वा बूया तधा बाहिरबाहिरं । एते उता समा सद्दा जे तु बाहिरबाहिरा ॥ ८९४ ॥
 बज्झमंडलचारिम्मि णक्खत्ते देवते तधा । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गाम गिहे वि वा ॥ ८९५ ॥
 पुरिसे चतुप्पदे वा वि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लगे वा वि परिसप्पे तधेव य ॥ ८९६ ॥
 15 पाणे वा भोयणे वा वि वत्थमाभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तधा ॥ ८९७ ॥
 लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेषु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण—धणेषु य ॥ ८९८ ॥
 एतम्मि पेक्खितामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचित्तओ ॥ ८९९ ॥
 ॥ बाहिरबाहिराणि सम्पत्ताणि ॥ १७ ॥ छ ॥

[१८ पण्णासं ओवाताणि]

- 20 ओवाताणि पण्णासं पक्खामाणुपुव्वसो । अब्भंतराणि सव्वाणि उमट्ठाणि जता भवे ॥ ९०० ॥
 एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि ति णिदिसे ॥ ९०१ ॥
 पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो ति य । धण्णो य सुहभागी य पुरिसोऽयमिति णिदिसे ॥ ९०२ ॥
 इत्थि च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग ति य । धण्णा य सुहभागी य इत्थीयमिति णिदिसे ॥ ९०३ ॥
 कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग ति य । ओवातकस्स पुरिसस्स कण्णा विज्जिहिति ति य ॥ ९०४ ॥
 25 जं किंचि पसत्थं सा सव्वमत्थि ति णिदिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि ति णिदिसे ॥ ९०५ ॥
 कम्मं च परिपुच्छेज्ज सुद्धकम्मं वियागरे । उल्लाथको कंसिको वा सुद्धाकारी य होक्खति ॥ ९०६ ॥
 अंधामयं ति वा बूया ओवातो ति सँसि ति वा । सेतं ति पंडरं व ति विमलं णिम्मलं ति वा ॥ ९०७ ॥
 सुद्धं ति वाऽतिविसुद्धं ति तधा वित्तिमिरं ति वा । सप्पभं सुचिमं ति ति पितवण्णं ति पीतकं ॥ ९०८ ॥
 पउमकेसरवण्णं ति तिग्गिच्छसरिसं ति वा । कोरेंटं चंपको व ति कणिकार असितं ति वा ॥ ९०९ ॥
 30 जं चऽण्णं पीतकं णिद्धं जं वा वि रजतप्पभं । तेसं संकित्तासद्दा ओवातेहि समा भवे ॥ ९१० ॥
 जधा अब्भंतरे सुत्तं सव्वं दिट्ठं सुभा—ऽसुभं । तधोवातेसु सव्वेसु फलं बूया सुभा—ऽसुभं ॥ ९११ ॥
 तधोवातम्मि णक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गाम गिहे ति वा ॥ ९१२ ॥

१ गुंठस्स हं० त० विना ॥ २ *गुंठितं हं० त० विना ॥ ३ परितो सं ३ पु० ॥ ४ धण्णं धण्णं व हं० त० ॥ ५ उल्लाथको हं० त० विना ॥ ६ आवागयं हं० त० ॥ ७ समि ति हं० त० ॥ ८ पियमण्णं हं० त० ॥ ९ अतिगं हं० त० ॥

पुरिसे चतुप्पदे वा वि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लेके यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ९१३ ॥
 पाणे वा भोयणे वा [वि] वत्थे आभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तधा ॥ ९१४ ॥
 लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेषु त । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेषु य ॥ ९१५ ॥
 एतम्मि पेक्खियामासे सदे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचित्तओ ॥ ९१६ ॥

॥ ओवाताणि सम्मत्ताणि ॥ १८ ॥ छ ॥

5

[१९ पण्णासं सामोवाताणि]

सामोवाताणि पण्णासं जाणि अब्भंतराणि तु । अवत्थिताणि सव्वाणि सव्वत्थेसु पसस्सते ॥ ९१७ ॥
 एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं किंचि पसत्थं सा सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ९१८ ॥
 पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो त्ति य । धण्णो य सुहभागी य पुरिसोऽयमिति णिद्दिसे ॥ ९१९ ॥
 इत्थि च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य । धण्णा य सुहभागी य इत्थीयमिति णिद्दिसे ॥ ९२० ॥ 10
 कण्णं च परिपुच्छेज्ज धण्णा विज्जिहिते लहुं । वण्णं च परिपुच्छेज्ज सामोवातं वियागरे ॥ ९२१ ॥
 जं किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ ९२२ ॥
 अब्भंतरेसु सव्वेसु जधा दिट्ठं सुभा-ऽसुभं । सामोवातेसु वि तहा फलं बूया सुभा-ऽसुभं ॥ ९२३ ॥
 कम्मं च परिपुच्छेज्ज तत्थ अब्भंतरं वदे । दीविकाधारकं वा वि ॥ ९२४ ॥
 उज्जालकं वा जाणेज्जा जं चऽण्णं एरिसं भवे । कम्मपुच्छाय णिद्दिसे एवमादि फलं वदे ॥ ९२५ ॥ 15
 सुद्धंसुतसामं आमं अरुणाभमरुणं त्ति वा । अरुणस्स देसकालो त्ति अरुणे उन्नते त्ति वा ॥ ९२६ ॥
 अरुणोदये त्ति वा बूया अरुणो उदितो त्ति वा । एते उता समा सदा सामोवाता भवन्ति जे ॥ ९२७ ॥
 सामोवातम्मि णक्खते देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गाम-णिद्दिसे वा ॥ ९२८ ॥
 पुरिसे चतुप्पदे यावि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लगे यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ९२९ ॥
 पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तधा ॥ ९३० ॥ 20
 लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रतणेषु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेषु य ॥ ९३१ ॥
 एतम्मि पेक्खियामासे सदे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचित्ततो ॥ ९३२ ॥

॥ स(सा)मोवाताणि सम्मत्ताणि ॥ १९ ॥ छ ॥

[२० पण्णासं सामाणि]

बाहिरब्भंतरा सव्वे साम तेवं वियागरे । तेसु अत्थं च वड्ढि च सुहं लाभं च णिद्दिसे ॥ ९३३ ॥ 25
 पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो त्ति य । इत्थि च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग त्ति य ॥ ९३४ ॥
 कण्णं च परिपुच्छेज्ज धण्णा विज्जिहिते लहुं । वण्णं च परिपुच्छेज्ज सामा तत्थ वियागरे ॥ ९३५ ॥
 दीविकाहारिका णावा तधा पादीविकं पि वा । उज्जालकं कावकरं गितकारिं च णिद्दिसे ॥ ९३६ ॥
 ताणि धम्मवणट्ठाणि सव्वाणेव करिस्सति । सव्वभंडेसु कुसलो णट्टको वा वि होक्खति ॥ ९३७ ॥
 अग्गिको जाणको वा वि आजीवणिको तधा । कम्मपुच्छाय णिद्दिसे एवमादि फलं वदे ॥ ९३८ ॥ 30
 सामं गीतं त्ति वा बूया अधवा गीत-वाइतं । गाअको गाणकं व त्ति गीतकं मधुरं त्ति वा ॥ ९३९ ॥
 हुतासिणा सिहा व त्ति तधा अगिसिह त्ति वा । तधा दीवसिहा व त्ति ओदीवसिह त्ति वा ॥ ९४० ॥

१ धनं च हं० तं० विना ॥ २ सण्णाविज्जि वियां हं० तं० विना ॥ ३ भवे हं० तं० ॥ ४ सुद्धसुयसामं अं हं० तं० ॥ ५ उदत्ते त्ति हं० तं० ॥ ६ 'कावकरं' काव्यकरमिति अर्थः सम्भाव्यते ॥ ७ भवे हं० तं० ॥ ८ हुयासणा हं० तं० ॥

दीविगाय सिहा व त्ति चुडिलीय सिहि त्ति वा । एते उता समा सद्दा मज्झं एतेसु णिदिसे ॥ ९४१ ॥

तथा सामम्मि णक्खत्ते देवते पणिधम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गाम-गिहेसु वा ॥ ९४२ ॥

पुरिसे चतुप्पदे यावि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लके यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ९४३ ॥

पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तथा ॥ ९४४ ॥

5 लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ९४५ ॥

एतम्मि पेक्खियामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचित्तओ ॥ ९४६ ॥

॥ सामाणि सम्मत्ताणि ॥ २० ॥ छ ॥

[२१-२२ पण्णासं सामकण्हाणि कण्हाणि य]

पण्णासं सामकण्हाणि बाहिराणि वियागरे । समप्फलाणि बज्जेहिं पसत्थेण प्ससस्सति ॥ ९४७ ॥

10 जाणेव बज्झबज्झाणि ताणि कण्हाणि णिदिसे । अप्ससत्थाणि सव्वाणि सव्वत्थेसु वियागरे ॥ ९४८ ॥

पुरिसं च परिपुच्छेज्ज अधण्णो दूभगो त्ति य । इत्थि च परिपुच्छेज्ज अधण्णा दूभग त्ति य ॥ ९४९ ॥

कण्णामवि य सिद्धत्था अधण्णा दूभग त्ति य । वण्णं च परिपुच्छेज्ज कालको त्ति वियागरे ॥ ९५० ॥

कम्मं च परिपुच्छेज्ज इमं कम्मं वियागरे । णीलीकारकं वा वि तथा इंगालकारकं ॥ ९५१ ॥

णीलहारककम्मं वा तथा इंगालहारकं । णीलवाणियकं वा वि तथा इंगालवाणियं ॥ ९५२ ॥

15 अप्ससत्थं च जं किंचि सव्वमत्थि त्ति णिदिसे । जं किंचि पसत्थं तं सव्वं णत्थि त्ति णिदिसे ॥ ९५३ ॥

जधा तु बज्झबज्झेसु सव्वं दिट्ठं सुभासुभं । तधेव कण्हेसु वदे फलं सव्वं सुभासुभं ॥ ९५४ ॥

कण्हं णीलं त्ति वा बूया कालकं असितं त्ति वा । असितं किसिणं व त्ति हरितं त्ति व जो वदे ॥ ९५५ ॥

अंजणं कज्जलं व त्ति रूगणं भंगमुत्तमं । खंजणं भिगपत्तं त्ति गवलं त्ति व जो वदे ॥ ९५६ ॥

सूगर त्ति कोकिला व त्ति गोपच्छेलको त्ति वा । भमरो मोरकंठो त्ति वायसो त्ति व जो वदे ॥ ९५७ ॥

20 मातंगो त्ति मतिंगो त्ति गयो त्ति महिसो त्ति वा । बलाहको त्ति मेघो त्ति तथा जलहरो त्ति वा ॥ ९५८ ॥

तथा कण्हकरालो त्ति कण्हतुलसि त्ति वा पुण । बाणं णीलुप्पलं व त्ति पामेच्छा णेलकंठको ॥ ९५९ ॥

मसी आरिद्धको व त्ति कण्हालो कण्हमोयको । जे वऽण्णे एवमादीया सद्दा कण्हसमा भवे ॥ ९६० ॥

णक्खत्ते देवते यावि तथा णक्खत्तदेवते । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गाम गिहे वि वा ॥ ९६१ ॥

पुरिसे चतुप्पदे यावि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लगे यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ९६२ ॥

25 पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तथा ॥ ९६३ ॥

लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेसु य ॥ ९६४ ॥

एतम्मि पेक्खितामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचित्तओ ॥ ९६५ ॥

॥ सामकण्हाणि ◁ कण्हाणि ▷ [य] (सम्मत्ताणि) ॥ २१ ॥ २२ ॥ छ ॥

[“पण्णासं अज्झोआताणि २३ पण्णासं अतिकण्हाणि २४” इति द्वारद्वयव्याख्यानं सर्वास्वपि प्रतिषु नास्ति ।]

१ रज्जेहिं हं० त० ॥ २ सव्वमत्थि हं० त० विना ॥ ३ भगणं हं० त० विना ॥ ४ भिगणवत्ति त्ति हं० त० ॥
५ गोपेच्छेलगो त्ति हं० त० ॥ ६ मुतिंगो हं० त० ॥ ७ कंठको सं ३ पु० ॥ ८ सामकण्हाणि सम्मत्ताणि सि० ॥
९ ◁ ▷ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥

[२५ वीसर्ति उत्तमाणि]

वीसर्ति उत्तमाणंगे पवक्खामऽणुपुव्वसो । मत्थको १ सीस २ संखा य ४ णिडालं ५ कण्णपुत्तका ७ ॥ ९६६ ॥

कण्णा ९ गंडो ११ ढु १३ दंता य १४ णासा १५ णासपुडा तथा १६ ।

कणवीरका १८ अपंगा य २० वीसर्ति होंति उत्तमा ॥ ९६७ ॥

एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तथा । जं च किंचि पसत्थं सा उत्तमं ति वियागरे ॥ ९६८ ॥ 5

पुरुसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो ति य । धण्णो य सुहभागी य उत्तमो ति वियागरे ॥ ९६९ ॥

ईत्थि च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग ति य । धण्णा य सुहभागी य उत्तम ति वियागरे ॥ ९७० ॥

[पुरिसस्सऽत्थविधं पुच्छे उत्तमं ति वियागरे] । थिया अत्थविधं पुच्छे उत्तमं ति वियागरे ॥ ९७१ ॥

कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग ति य । पुरिसस्स जुतामासायं कण्णा विज्जिहिते ति य ॥ ९७२ ॥

गब्भं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गब्भो ति णिहिसे । गब्भिणी परिपुच्छेज्ज उत्तमं पुत्तमादिसे ॥ ९७३ ॥ 10

कम्मं च परिपुच्छेज्ज उत्तमं कम्ममादिसे । राया वा रायमच्चो वा वित्तीतोसं करिस्सति ॥ ९७४ ॥

पवासं परिपुच्छेज्ज सफलो ति वियागरे । पउत्थं परिपुच्छेज्ज सधणो आगमिस्सति ॥ ९७५ ॥

बंधं च परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । बद्धस्स मोक्खं पुच्छेज्ज मोक्खं थाणं च णिहिसे ॥ ९७६ ॥

भयं च परिपुच्छेज्ज भयं णत्थि ति णिहिसे । खेमं च परिपुच्छेज्ज उत्तमं खेममादिसे ॥ ९७७ ॥

संधिं च परिपुच्छेज्ज अत्थि तेवं वियागरे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे ॥ ९७८ ॥ 15

जयं च परिपुच्छेज्ज उत्तमं जयमादिसे । आरोगं परिपुच्छेज्ज उत्तमं ति वियागरे ॥ ९७९ ॥

रोगं च परिपुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । पुच्छिते उत्तमं जीयं अकालस्स य उग्गमं ॥ ९८० ॥

अपातयमणावुद्धिं सस्सवापत्तिमेव य । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि ति णिहिसे ॥ ९८१ ॥

वस्सारत्तं च वासं च सस्सं णट्ठस्स दंसणं । खेतं वत्थुं धणं धण्णं पसत्थं सव्वमेत्थि य ॥ ९८२ ॥

धण्णं धणं ति पुच्छेज्ज धण्णं ति य वियागरे । समे सद्दे य जाणेज्जो उत्तमा जे भवंतिह ॥ ९८३ ॥ 20

उत्तमं ति व जो बूया तधुत्तमतरं ति वा । तधुत्तिमुत्तमं वा वि उत्तमा उत्तमं ति वा ॥ ९८४ ॥

पवरं ति व जो बूया तथा पवरतरं ति वा । पवराणं पवरं व ति पवरातिपवरं ति वा ॥ ९८५ ॥

विसिद्धं ति व जो बूया विसिद्धतरकं ति वा । तं विसिद्धं विसिद्धं ति विसिद्धतरकं ति वा ॥ ९८६ ॥

वरिद्धं ति व जो बूया वरिद्धतरकं ति वा । तं वरिद्धं वरिद्धं ति वरिद्धतरकं ति वा ॥ ९८७ ॥

उदारं ति व जो बूया उदारतरकं ति वा । तधुदारमुदारं ति उदारपवरं ति वा ॥ ९८८ ॥ 25

पधाणं ति व जो बूया पधाणतरकं ति वा । तं पधाणपधाणं ति पधाणपवरं ति वा ॥ ९८९ ॥

जेट्ठं ति व जो बूया तथा जेट्ठतरं ति वा । तथा जेट्ठातिजेट्ठं वा जेट्ठाणं जेट्ठकं ति वा ॥ ९९० ॥

उक्कुट्ठं ति व जो बूया उक्कुट्ठतरकं ति वा । तथा उक्कुट्ठमुक्कुट्ठं समा सद्दा उ उत्तमा ॥ ९९१ ॥

उत्तमम्मि य णक्खते देवते पणिधम्मि य । पुप्फे फले वा देसे वा णगरे गामे गिहे वि वा ॥ ९९२ ॥

पुरिसे चतुप्पदे वा वि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लगे यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ९९३ ॥ 30

पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तथा ॥ ९९४ ॥

लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रतणेषु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण—धणेषु य ॥ ९९५ ॥

एतम्मि पेक्खितामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगतूणं ततो बूयांगचित्तओ ॥ ९९६ ॥

॥ उत्तमाणि (सम्मत्ताणि) ॥ २५ ॥ छ ॥

१—२ सुभभागी हं० त० ॥ ३ एतत् पूर्वाद्धं प्रतिषु नास्ति ॥ ४ गीयं हं० त० ॥ ५ मादि य हं० त० ॥

६—७ विसिद्धतरकं हं० त० विना ॥ ८—९ वरिद्धतरकं हं० त० विना ॥ १० पधाणंतरकं हं० त० विना ॥ ११ जेट्ठतरं

हं० त० विना ॥ १२ उक्कुट्ठतरकं हं० त० विना ॥

[૨૬ ચોદસ મજ્ઝિમાણિ]

મજ્ઝિમાણિ પવક્કિસ્સં ચોદસંગે જધા તથા । જતુ ૧ થળંતર ૨ હિયયં ૩ ઉદરં વા વિ જાણિયા ૪ ॥ ૧૯૭ ॥
અંસા ૬ બાહૂ ૮ પબાહૂ ય ૧૦ હત્થા ૧૨ હત્થતલા તથા ૧૪ । ચોદસેતાણિ જાણીયા મજ્ઝિમત્થે પસસ્સતે ॥ ૧૯૮ ॥

एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तथा । जं च किंचि पसत्थं सा मज्झिमत्थं वियागरे ॥ १९९ ॥

5 પુરિસં ઇત્થિ ચ અત્થં ચ કણ્ણં ગબ્બં ચ ગબ્બિર્ણિ । કમ્મં પવાસં પાવાસિં બંધં મોક્કલં ભયા—ઽભયં ॥ ૧૦૦૦ ॥
સંધિં જયમારોગં જીવિતં આતુરં ચ મમં । વાસારત્તં ચ વાસં ચ સસ્સં ણદુસ્સ દંસણં ॥ ૧૦૦૧ ॥

खेतं वत्थुं मणिं दंडं छतं खगं तधेव य । जं किंचि पसत्थं सा मज्झिमं ति वियागरे ॥ १००२ ॥

अपातपमणावुट्ठिं सस्सवापत्तिमेव य । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि ति णिदिसे ॥ १००३ ॥

ધણં ધણં તિ પુચ્છેજ્ઞા મજ્ઝિમં તિ વિયાગરે । સમે સદ્દે ય જાણેજ્ઞો મજ્ઝિમા જે ભવંતિહ ॥ ૧૦૦૪ ॥

10 बंधिता मज्झिमा अंगे जे सदा तेसु कित्तिया । एतेसु वि तथा चेव मज्झिमेसु वियागरे ॥ १००५ ॥

णक्खत्ते મજ્ઝજોગમ્મિ દેવતે પણિધિમ્મિ ય । પુપ્પે ફલે વ દેસે વા ણગરે ગામે ગિહે વિ વા ॥ ૧૦૦૬ ॥

पुरिसे चतुप्पदे चेव पक्खिम्मि उदकेचरे । कीडे किविल्लिये वा वि परिसप्पे तधेव य ॥ १००७ ॥

પાળે વા ભોયળે વા વિ વત્થે આભરળે તથા । આસળે સયળે જાળે ધંડોવગરળે તથા ॥ ૧૦૦૮ ॥

लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेषु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेषु य ॥ १००९ ॥

15 एतम्मि पेक्खियामासे सद्दे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचित्तओ ॥ १०१० ॥

॥ મજ્ઝિમાણિ (સમ્પત્તાણિ) ॥ ૨૬ ॥ છ ॥

[૨૭ ચોદસ (બારસ) મજ્ઝિમાણંતરાણિ]

મજ્ઝિમાણં તુ પડિવક્ખા મજ્ઝિમાણંતરાણિહ । ઉત્તમે અપ્પસત્થાણિ મજ્ઝિમત્થે પસસ્સતે ॥ ૧૦૧૧ ॥

કડી કડિયપસ્સાણિ વત્થી સીસં સમેહણં ।

20 वसणा ऊरू य जंघा य मज्झिमाणंतराणिह ॥ १०१२ ॥

મજ્ઝિમેસુ જધા દિદ્ધો અત્થો તત્તો અણંતરં । મજ્ઝિમાણંતરાણં પિ ફલં બૂયા સુભાસુખં ॥ ૧૦૧૩ ॥

जे सदा मज्झिमा उता तेसिं साराणुमायिकं । मज्झिमाणंतराणं पि समे सद्दे तु कप्पये ॥ १०१४ ॥

॥ મજ્ઝિમાણંતરાણિ (સમ્પત્તાણિ) ॥ ૨૭ ॥ છ ॥

[૨૮ દસ જહણનાણિ]

25 અંગુલ્લા ૨ પાદપન્હીઓ ૪ જંઘા ૬ ગુપ્પા તથેવ ય ૮ । દસેતાણિ જહણનાણિ પાદાણ ૯ હિતયાણિ યા ૧૦ ॥ ૧૦૧૫ ॥

एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तथा । जं च किंचि पसत्थं सा जहणं सव्वमादिसे ॥ १०१६ ॥

પુરિસં ઇત્થિ ચ અત્થં ચ કણ્ણં ગબ્બં ચ ગબ્બિર્ણિ । કમ્મં પવાસં પાવાસિં બંધ—મોક્કલં ભયા—ઽભયં ॥ ૧૦૧૭ ॥

સંધિં ચ વિગ્ગહં ચેવ પેસ્સં જય—પરાજયં । રોગા—ઽરોગં ચ મરણં ચ જીવિતં વાધિતં તથા ॥ ૧૦૧૮ ॥

वस्सारत्तमणावुट्ठिं वासं वा वि अपातपं । सस्सस्स वापदि संपदि च णदुस्स दंसणं ॥ १०१९ ॥

30 खेतं वत्थुं मणिं दंडं खगं चम्मं सवम्मणं । धणं धणं च छयं च जं चऽण्णं सव्वमादिसे ॥ १०२० ॥

જં કિંચિ પસત્થં સા સવ્વં ણત્થિ તિ ણિદિસે । અપ્પસત્થં ચ જં કિંચિ સવ્વં અત્થિ તિ ણિદિસે ॥ ૧૦૨૧ ॥

૧ પરિતા મજ્ઝિમા અણે જે હં તં ॥ ૨ પાદાણા (ણી) હિં સિં વિના ॥ ૩ યગ્ગધમ્મસ્સવસ્સગં સં ૩ પું ।
યગ્ગધમ્મસ્સવસ્સગં હં તં ॥ યગ્ગધમ્મસવમ્મગં સિં ॥ ૪ ચ જાતં ચ સં ૩ પું ॥

धण्णं धणं ति पुच्छेज्जं अधणं ति वियागरे । समे सदे य जाणेज्जो जहण्णा जे भवंतिह ॥ १०२२ ॥

जहण्णं ति चेव जे बूया जहण्णतरकं ति वा । जहण्णं ति जहण्णं ति जहण्णं कुच्छितं ति वा ॥ १०२३ ॥

अधमं ति व जो बूया तधा अधमतरं ति वा । अधमाधमं ति वा बूया अधमाणं अधमं ति वा ॥ १०२४ ॥

अपमतं ति व जो बूया तधा अपमतं ति वा । अपमयापमयं ति वा बूया अपमाणतरं ति वा ॥ १०२५ ॥

हीण ति व जो बूया तधा हीणतरं ति वा । हीणहीणं ति वा बूया हीणहीणतरं ति वा ॥ १०२६ ॥ 5

थोवं ति व जो बूया तधा थोवतरं ति वा । थोवथोवं ति वा बूया थोवथोवतरं ति वा ॥ १०२७ ॥

णिकट्टं ति व जो बूया णिकट्टतरकं ति वा । णिकट्टातिणिकट्टं ति तधा णिकट्टणिकट्टं ॥ १०२८ ॥

मंगुलं ति व जो बूया तं मंगुलतरं ति वा । अतिमंगुलं ति वा बूया तधा मंगुलमंगुलं ॥ १०२९ ॥

पावकं ति व जो बूया तधा पावतरं ति वा । अतिपावकं ति वा बूया तधा पावकपावकं ॥ १०३० ॥

दुगुच्छितं ति वा बूया दुगुच्छिततरं ति वा । तधा पच्चवरं व ति अतिपच्चवरं ति वा ॥ १०३१ ॥ 10

जं चऽण्णं एवमादीयं जहण्णं परिकित्तितं । तेसं संकित्तणासद्दा जधण्णसमकाऽऽहिया ॥ १०३२ ॥

अप्पावसेसे णक्खत्ते देवते णिधिम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गामे गिहे वि वा ॥ १०३३ ॥

पुरिसे चतुप्पदे चेव पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किक्खिणो वा वि परिसप्पे तधेव य ॥ १०३४ ॥

पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तधा ॥ १०३५ ॥

लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेषु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेषु य ॥ १०३६ ॥ 15

एतम्मि पेक्खियामासे सदे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचित्तओ ॥ १०३७ ॥

॥ जहण्णाणि (सम्मत्ताणि) ॥ २८ ॥ छ ॥

[२९ दुवे उत्तिममज्झिमसाधारणाणि]

मज्झिमाणुत्तमाणं च मज्झे साधारणाणि तु । जंतूणि बे वियाणीया उत्तमत्थे पसस्सते ॥ १०३८ ॥

एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं किंचि पसत्थं सा सव्वं साधारणं वदे ॥ १०३९ ॥ 20

पुरिसं च इत्थि अत्थं च धणं धण्णं तधेव य । कण्णं च परिपुच्छेज्ज सव्वं साधारणं वदे ॥ १०४० ॥

गब्भं च परिपुच्छेज्जा अत्थि गब्भो ति णिहिसे । गब्भिणि परिपुच्छेज्ज जमलाणि प्पयाहिति ॥ १०४१ ॥

कम्मं साधारणं बूया बंधं णत्थि ति णिहिसे । चिराय मुच्चते बद्धो भयं खेमं च मिस्सकं ॥ १०४२ ॥

संधि अत्थि ति जाणीया विग्गहो णत्थि दारुणो । जया-ऽऽरोगं च रोगं च सव्वं साधारणं वदे ॥ १०४३ ॥

मरणं च अणावुट्ठि आयवं सस्सवापदं । अप्सत्थं च जं किंचि सव्वमत्थि ति णिहिसे ॥ १०४४ ॥ 25

जीवितं बंधं-मोक्खं च वस्सारतं सवासकं । सस्सं च नदुलाभं च सव्वं साधारणं वदे ॥ १०४५ ॥

खेतं वत्थुं धणं धण्णं खैगं चम्मं सव्वमकं । छतं दंडं मणि वत्थं सव्वं साधारणं वदे ॥ १०४६ ॥ 30

जं किंचि पसत्थं सा सव्वमत्थि ति णिहिसे । अप्सत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि ति णिहिसे ॥ १०४७ ॥

धणं धण्णं ति पुच्छेज्जा सव्वं साधारणं वदे । समे सदे य जाणीया अंगे साधारणा तु जे ॥ १०४८ ॥

जे सद्दा उत्तमा वुत्ता मज्झिमा जे उदाहिता । ते वामिस्सा उदीरंता साधारणसमा भवे ॥ १०४९ ॥ 30

१ अधण्णं हं० त० विना ॥ २ अप्पमाणंतरं हं० त० ॥ ३-४ हीणंतरं हं० त० ॥ ५ थोवंतरं ति सप्र० ॥
६ थोवंतरं हं० त० विना ॥ ७ थोकथोकं ति हं० त० विना ॥ ८ थोकथोकतरं हं० त० विना ॥ ९ थोवथोवं ति
जो सं ३ पु० । थोवथोवंतरं जो हं० त० । थोवंतरं ति जो सि० ॥ १० णिकट्टंतरकं सप्र० ॥ ११ मका हि ते
हं० त० विना ॥ १२ अप्पवसेसे सप्र० ॥ १३ जंतूणि प्पक्खियाणीसो उत्त० हं० त० ॥ १४ हस्तचिह्नान्तर्गतं श्लोकत्रितयं
हं० त० एव वर्तते ॥ १५ सगं धम्मं च धम्मकं हं० त० ॥

साधारणम्मि णक्खते देवते पणिधम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गामे गिहे वि वा ॥ १०५० ॥
 पुरिसे चतुप्पदे चेव पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लये वा वि परिसप्पे तधेव य ॥ १०५१ ॥
 पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तधा ॥ १०५२ ॥
 लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेषु य ॥ १०५३ ॥
 5 एतम्मि पेक्खियामासे सदे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगर्चितओ ॥ १०५४ ॥

॥ उत्तममज्झिमसाधारणाणि (सम्मत्ताणि) ॥ २९ ॥ छ ॥

[३० दुवे मज्झिममज्झिमसाधारणाणि]

साधारणा तु अंगम्मि मज्झे मज्झाणमेव तु । ठाणा दुवे पसस्संते सोभणं तेसु णिदिसे ॥ १०५५ ॥
 मज्झिमाणुत्तमाणं च फलं साधारणं सुभं । मज्झे साधारणाणं पि तमेव फलमादिसे ॥ १०५६ ॥
 10 जे सद्दा मज्झिमा वुत्ता उत्तमाणंतरा य जे । ते वामिस्सा उदीरंता मज्झसाधारणे समा ॥ १०५७ ॥
 साधारणम्मि णक्खते जं चेतेसं समुत्तरं । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगर्चितओ ॥ १०५८ ॥

॥ मज्झिममज्झिमसाधारणाणि (सम्मत्ताणि) ॥ ३० ॥ छ ॥

[३१ दुवे मज्झिमाणंतरमज्झिमसाधारणाणि]

मज्झिमाणंतराणं च मज्झिमाणं च वक्खणा । मज्झे साधारणा वुत्ता मज्झिमत्थे पसस्सते ॥ १०५९ ॥
 15 एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं किंचि पसत्थं सा मज्झिमत्थे पसस्सते ॥ १०६० ॥
 पुरिसं इत्थि च अत्थं वा कण्णं गब्भं च गब्भिणि । कम्मं पवासं पावासि बंधं मोक्खं भया-ऽभयं ॥ १०६१ ॥
 रोगा-ऽऽरोगं च मरणं च जीविता वाधिकं तधा । वासारत्तमणावुट्ठि वासं वा वि अपातपं ॥ १०६२ ॥
 सस्सवापत्ति-संपत्ति णट्ठं णट्ठस्स दंसणं । खेतं वत्थुं धणं धण्णं खगं चम्मं सवम्मकं ॥ १०६३ ॥
 जंधुद्धिद्धम्मि एतम्मि पसत्थं जत्तियं भवे । मज्झिमाणंतरं सव्वं अप्पसत्थं हि णत्थि य ॥ १०६४ ॥
 20 जे सद्दा मज्झिमा वुत्ता मज्झिमाणंतरा य जे । ते वामिस्सा उदीरंता मज्झिमाणंतरे समा ॥ १०६५ ॥
 साधारणम्मि णक्खते जं चेतेसं समुत्तरं । तं सव्वमणुगंतूणं ततो बूयांगर्चितओ ॥ १०६६ ॥

॥ मज्झिमाणंतरमज्झिमसाधारणाणि सम्मत्ताणि ॥ ३१ ॥ छ ॥

[३२ दुवे मज्झिमाणंतरजहणसाधारणाणि]

मज्झिमाणंतराणं च जहण्णाणं च अंतरा । मज्झे साधारणा वुत्ता गोप्फा तेसु ण सोभणं ॥ १०६७ ॥
 25 एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं च किंचि पसत्थं सा जहण्णं सव्वमादिसे ॥ १०६८ ॥
 पुरिसादीकाणि वत्थूणि पवित्ताणि तु जाणिह । ताणि खेत्तप्पधाणाणि जहण्णाणि वियागरे ॥ १०६९ ॥
 मज्झिमाणंतरा सद्दा जहन्ना जे य कित्तिया । ते वामिस्सा उदीरंता जधन्ना समका भवे ॥ १०७० ॥
 साधारणम्मि णक्खते देवते पणिधम्मि य । [पुप्फे फले व देसे वा णगरे गाम गिहे वि वा ॥ १०७१ ॥]
 साधारणम्मि णक्खते जं चेतेसं समुत्तरं । तं सव्वमणुगंतूणं ततो बूयांगर्चितओ ॥ १०७२ ॥

॥ मज्झिमाणंतरजहणसाधारणाणि सम्मत्ताणि ॥ ३२ ॥ छ ॥

१ रणा तहा हं० त० ॥ २ च चक्खुणा हं० त० ॥ ३ सचम्मकं सप्र० ॥ ४ जओदिट्ठसि एयम्मि हं० त० ॥ ५ जं वत्तो
 से समु० सं ३ पु० सि० । जं वुत्ता से समु० हं० त० ॥ ६ पतताणि हं० त० विना ॥ ७ उत्तरार्थं सर्वासु प्रतिषु नास्ति ॥

[३३ दस बालेयाणि]

पादंगुट्टं २ गुली ४ गोप्फा ६ जंघा ८ पादतलाणि य १० । एते बाला पसस्सते बाला श्रीणामेसु य ॥ १०७३ ॥
 एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं च किंचि पसत्थं सा सव्वमत्थि ति णिद्दिसे ॥ १०७४ ॥
 गब्धं पुच्छे वदे अत्थि पुण्णामेसु य दारकं । दारिणं इत्थिणामेसु बालेयेसु वियागरे ॥ १०७५ ॥
 जं बालसंसितं चऽण्णं सव्वमत्थि ति णिद्दिसे । समे सदे य जाणेज्जो बाला ये समा भवे ॥ १०७६ ॥ ५

बालको दारको व ति [सिंगको पिल्लको ति वा ।] वच्छको तण्णको व ति ∞ पोतको कलभो ति वा > ॥ १०७७ ॥
 बालको ति व जो बूया तंहा बालतरो ति वा । अतिबालको ति वा बूया तधा बालगबालगो ॥ १०७८ ॥
 दारको ति व जो बूया तधा दारगदारगो । अतिदारको ति वा बूया दारगस्स य दारगो ॥ १०७९ ॥
 सिंगको ति व जो बूया तधा सिंगकसिंगको । अतिसिंगको ति वा बूया सिंगकस्स व सिंगको ॥ १०८० ॥
 पिल्लको ति व जो बूया तधा पिल्लतरो ति वा । अतिपिल्लको ति वा बूया पिल्लकस्स व पिल्लको ॥ १०८१ ॥ १०
 वच्छको ति व जो बूया तधा वच्छकवच्छको । अतिवच्छको ति वा बूया वच्छकस्स व वच्छको ॥ १०८२ ॥
 तण्णको ति व जो बूया तधा तण्णकतण्णको । अतितण्णको ति वा बूया तण्णकस्स व तण्णको ॥ १०८३ ॥
 पोतको ति व जो बूया तधा पोतकपोतको । अतिपोतको ति वा बूया पोतकस्स व पोतको ॥ १०८४ ॥
 [कलभो ति व जो बूया तधा कलभकलभको । अतिकलभो ति वा बूया कलभस्स व कलभको ॥ १०८५ ॥]

बालकं जाणकं व ति तधा ठियपडिय ति वा । तधा पंचमिका व ति तधा सत्तमिक ति वा ॥ १०८६ ॥ १५
 उट्ठाणकं ति वा बूया मासपूरणकं ति वा । पिंडे वट्ठणकं व ति उवणिग्गमणं ति वा ॥ १०८७ ॥
 पादपेसणकं व ति परंणेणकमेव वा । पदक्रमणकं व ति पच्चाहरणकं ति वा ॥ १०८८ ॥
 चोलकं ति व जो बूया उपणयणं ति वा पुणो । लेहणिकिखवणं व ति गणितापढणकं ति वा ॥ १०८९ ॥
 बालेयोपक्खराणं च बालोवकरणस्स य । तेसं संकित्तणे सद्दा बालेयसममादिसे ॥ १०९० ॥
 बालजम्मणणक्खत्ते देवते पणिधिम्मि य । बाले पुप्फफले देसे णगरे गामे गिहे वि वा ॥ १०९१ ॥ २०
 बाले चतुप्पदे यावि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लगे यावि परिसप्पे तधेव य ॥ १०९२ ॥
 पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तधा । आसणे सयणे जाणे भंडोवकरणे तधा ॥ १०९३ ॥
 लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रतणेषु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेषु य ॥ १०९४ ॥
 एतम्मि पेक्खियामासे सदे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचित्तओ ॥ १०९५ ॥

॥ बालेयाणि (सम्मत्ताणि) ॥ ३३ ॥ छ ॥

२५

[३४ दस जोव्वणत्थाणि]

उदरं १ कडी य २ णाभी य ३ कडीपस्साणि बे तधा ५ ।
 पट्टिपस्साणि ७ मज्झो य ८ लोमवासी तधेव य ९ ॥ १०९६ ॥
 मेहणं १० वत्थि ११ सीसं च १२ फलं बे वि य जाणिया १४ ।
 जोव्वणत्थेसु एतेसु जोव्वणत्थं विजाणिया ॥ १०९७ ॥

३०

१ चतुरस्त्रकोष्ठकगतं चरणं सर्वासु प्रतिषु नास्ति ॥ २ मल्लको हं० तं० ॥ ३ ∞ > एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० तं० नास्ति ॥ ४ हस्तचिह्नमध्यगतः पाठः हं० तं० एव वर्तते ॥ ५ बूया पोतकस्स व पोतको हं० तं० विना ॥ ६ पोत्तिकपोतको हं० तं० विना ॥ ७ चतुरस्त्रकोष्ठकान्तर्गतं यद्यं सर्वासु प्रतिषु नास्ति, किन्तु सम्बन्धानुसारेणानुसंधितमस्ति ॥ ८ पंडवद्ध हं० तं० ॥ ९ पादापे हं० तं० विना ॥ १० गतिताप सं ३ पु० ॥ ११ हस्तचिह्नान्तर्गतमुत्तरार्धं हं० तं० एव वर्तते ॥ १२ णि ७ सल्लोय हं० तं० ॥ १३ वियागरे हं० तं० ॥

- एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तथा । जं च किंचि पसत्थं सा सव्वमत्थि ति णिदिसे ॥ १०९८ ॥
 पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो ति य । सहत्थकारी दच्छो य सव्वत्थेसु पुमं भवे ॥ १०९९ ॥
 इत्थी वा परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग ति य । ॐ सहत्थकारी दच्छ य सव्वत्थेसु पदक्खिणा ॥ ११०० ॥
 पुरिसत्थविहं पुच्छे सिग्घमत्थो भविस्सति । थिया अत्थविहं पुच्छे खिप्पमत्थो भविस्सति ॥ ११०१ ॥
 5 कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग ति य । ॐ धण्णा य सुहभागी य खिप्पं विज्जिहिते ति य ॥ ११०२ ॥
 गब्भं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गब्भो ति णिदिसे । गब्भणिं परिपुच्छेज्ज खिप्पं पुत्तं पयाहिति ॥ ११०३ ॥
 कम्मं च परिपुच्छेज्ज खिप्पं कम्मं वियागरे । परिस्समेण यऽप्पेण खिप्पं अत्थं लभिस्सति ॥ ११०४ ॥
 पवासं परिपुच्छेज्ज सफलो ति वियागरे । पउत्थं परिपुच्छेज्ज सफलो खिप्पमेहिति ॥ ११०५ ॥
 विवादं विगहं बंधं रोगं मरणमेव य । अपातयमणावुट्ठिं सस्सवापत्तिमेव य ॥ ११०६ ॥
 10 णट्टस्स विप्पणासं च पलाणस्स अणागमं । धणक्खयं वियोगं च सव्वं णत्थि ति णिदिसे ॥ ११०७ ॥
 बद्धस्स मोयणं खिप्पं संधिं संपीतिमेव य । जयाऽऽरोगं च आयुं च उत्थाणं वाधितस्स य ॥ ११०८ ॥
 वस्सारत्तं च वासं च सस्सं णट्टस्स दंसणं । हितस्स पैडिलाभं च पलातस्स य आगमं ॥ ११०९ ॥
 समागमं संपयोगं थाणमिस्सरियं जसं । धणलाभं कम्मसिद्धिं वा सव्वमत्थि ति णिदिसे ॥ १११० ॥
 वयं च परिपुच्छेज्जा जोव्वणत्थो ति णिदिसे । धणं धणं ति पुच्छेज्ज धणं ॐ तैवं वियागरे ॥ ११११ ॥
 15 जहा पुण्णामधेएसु सव्वं दिट्ठं सुभा—ऽसुभं । [.....] ॥ १११२ ॥
 तहा खितं तहा वत्थुं सव्वमत्थि ति णिदिसे । समे सदे य जाणेज्जो जोव्वणत्था भवंति जे ॥ १११३ ॥
 जोव्वणं ति व जो बूया तहा जोव्वणकं ति वा । जोव्वणत्थे ति जो बूया जुवाणो ति व जो वदे ॥ १११४ ॥
 तरुणं ति व जो बूया तहा तरुणतरं ति वा । तरुणो ति व जो बूया तरुणा तरुणको ति वा ॥ १११५ ॥
 डहरो ति व जो ॐ बूया वयत्थो ति व जो वदे । पवत्तो ति उदग्गो ति पोअडो ति व जो वदे ॥ १११६ ॥
 20 गुलभक्खणं ति वा बूया बाढक्कारो ति वा पुणो । समासेयणकं व ति णियो वा सुण्णिक ति वा ॥ १११७ ॥
 उपमाणकं ति वा बूया तत्थ गोसगण्हाणकं । पडिवज्जकं ति वा बूया तथा णिव्वहणं ति वा ॥ १११८ ॥
 अधिकमणकं व ति तोप्पारुभणा ति वा । पैतिज्जं ति व यो बूया णवणं पंचमेजणं ॥ १११९ ॥
 वारेज्जं ति व जो बूया अण्णोणं ति व जो वदे । तंथा जामातुकीयं ति दसमीण्हाणकं ति वा ॥ ११२० ॥
 उस्सउ ति समास ति तथा जण्ण छणे ति वा । तथा अब्भुदयो व ति भोज्जं मज्जणकं ति वा ॥ ११२१ ॥
 25 जं चऽण्णं एवमादीयं जोव्वणस्स य संसितं । तैस्सुदाहरणं सव्वं जोव्वणत्थिसमं भवे ॥ ११२२ ॥
 णक्खत्ते जोगे संपुण्णे देवते पणिधिमि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गाम गिहे वि वा ॥ ११२३ ॥
 पुरिसे चतुप्पदे यावि पक्खिमि उदगेचरे । कीडे किक्खिणे वा वि परिसप्पे तधेव य ॥ ११२४ ॥
 पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणेषु य ॥ ११२५ ॥
 लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेषु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण—धणेषु य ॥ ११२६ ॥
 30 एतम्मि पेक्खियामासे सदे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचित्तओ ॥ ११२७ ॥

॥ जोव्वणत्थाणि (सम्पत्ताणि) ॥ ३४ ॥ छ ॥

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः श्लोकद्वयमितः सन्दर्भः हं० त० एव वर्तते ॥ २ खिप्पं सिज्झिहि ति या हं० त० ॥ ३ पडिलंभं हं० त० सि० ॥ ४ हस्तचिह्नान्तर्गतश्चतुःश्लोकाधिकः पाठसन्दर्भः हं० त० एव वर्तते ॥ ५ पोअंडो हं० त० ॥ ६ पतिज्ज ति हं० त० विना ॥ ७ णरणं हं० त० ॥ ८ अण्णोणं हं० त० विना ॥ ९ तहा तेमाउकीयं हं० त० ॥ १० उज्झउ ति समाउ ति तथा जण्णछणे हं० त० विना ॥ ११ तस्सापहरणं हं० त० ॥

[३५ चोदस मज्झिमवयाणि]

बाहाओ २ बाहुणालीओ ४ हत्थमंगुलिंकोदरो ५ । हत्थमंगुट्टका ७ हत्था ९ अंसवीर्याणि तथा १० ॥ ११२८ ॥
जंतूणि १२ थणावुभये १४ एते मज्झिमये वये । सव्वमज्झिमकं अत्थं लाभं चऽत्थ वियागरे ॥ ११२९ ॥

पुरिसं च परिपुच्छेज्ज मज्झिमो सारतो भवे । मज्झिमो आउतो चेव भातूणं वा वि मज्झिमो ॥ ११३० ॥
इत्थि च परिपुच्छेज्ज मज्झिमा सारतो भवे । मज्झिमा आउतो वा वि भगिणीणं च मज्झिमा ॥ ११३१ ॥ ५
पुरिसस्सऽत्थविधं पुच्छे मज्झिमं ति वियागरे । थिया अत्थविहं पुच्छे मज्झिमं ति वियागरे ॥ ११३२ ॥
कण्णं च परिपुच्छेज्ज मज्झकल्लाणसोभणा । भातूणं मज्झिमा सा वि खिप्पं विज्जिहति ति य ॥ ११३३ ॥
गब्भं च परिपुच्छेज्ज णत्थि गब्भो ति णिदिसे । गब्भिणि परिपुच्छेज्ज संसयेण पजाहति । ११३४ ॥
कम्मं च परिपुच्छेज्ज कम्मं मज्झगतं वदे । लाभं च परिपुच्छेज्ज मज्झिमं लाभमादिसे ॥ ११३५ ॥
पवासं परिपुच्छेज्ज मज्झिमं फलमादिसे । पोसितो मज्झकालेण मज्झलाभेण एहिति ॥ ११३६ ॥ १०
बंधं पुच्छे ण भवति बद्धो मुच्चिहति ति य । भयं खेमं च संधिं वा विगगहो वा वि मज्झिमो ॥ ११३७ ॥
रोगं च मरणं चेव अणावुट्ठि अपातयं । सस्सस्स य वापत्तिं सव्वं णत्थि ति णिदिसे ॥ ११३८ ॥
जयं जीवितमारोगं उत्थाणं वाधितस्स य । वस्सारतं च वासं च वदे सस्सं च मज्झिमं ॥ ११३९ ॥
वयं च परिपुच्छेज्ज मज्झिमो ति वियागरे । धणं धणं च पुच्छेज्ज मज्झिमं ति वियागरे ॥ ११४० ॥
पवत्ता मज्झिमा जे तु फलं जं तेसु कित्तितं । तधेव य फलं सव्वं बूया मज्झवयेसु वि ॥ ११४१ ॥ १५
तथा खेतं तथा वत्थुं सव्वमत्थि ति णिदिसे । समे सदे य जाणेज्जो मज्झिमा जे भवन्तिह ॥ ११४२ ॥

मज्झिमेसु य जे सदा मज्झसारेसु आहिता । ते चेव मज्झिमवये णिदिसे अंगचिंतओ ॥ ११४३ ॥
मज्झणक्खत्तजोगम्मि देवते पणिधिम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गामे गिहे वि वा ॥ ११४४ ॥
पुरिसे चउप्पये यावि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किक्खिण्णे यावि परिसप्पे तधेव य ॥ ११४५ ॥
पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तथा ॥ ११४६ ॥ २०
लोहेसु या वि सव्वेसु सव्वेसु रथणेषु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण—धणेषु य ॥ ११४७ ॥
एतम्मि पेक्खितामासे सदे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगतूणं ततो बूयांगचिंतओ ॥ ११४८ ॥

॥ मज्झिमाणि (मज्झिमवयाणि) (सम्मत्ताणि) ॥ ३५ ॥ छ ॥

[३६ वीसं महव्वयाणि]

गीवा हणू य दंतोदुं णासा णासपुडावुभो । गंडा कवोला य तथा भुमकाणं अंतरं च जं ॥ ११४९ ॥ २५
णिडालं च सिरं चेव एवमेताणि वीसति । महव्वताणि जाणीया अंगविज्जाविसारतो ॥ ११५० ॥

एताणि आमसं पुच्छे महंतं अत्थमादिसे । जयं लाभं पसत्थं च एतं णातिचिरं भवे ॥ ११५१ ॥
पुरिसं च परिपुच्छेज्ज णरं बूया महव्वतं । इत्थि वा परिपुच्छेज्ज बूया तं पि महव्वयं ॥ ११५२ ॥
पुरिसत्थविधं पुच्छे महंतं अत्थमादिसे । थिया अत्थविधं पुच्छे उत्तमत्थं वियागरे ॥ ११५३ ॥
कण्णं च परिपुच्छेज्ज कण्णं बूया महव्वयं । महव्वयस्स पुरिसस्स चिरं विज्जिहिते ति या ॥ ११५४ ॥ ३०
गब्भं च परिपुच्छेज्ज णत्थि गब्भो ति णिदिसे । गब्भिणि परिपुच्छेज्ज मतं सा जणयिस्सति ॥ ११५५ ॥
कम्मं च परिपुच्छेज्ज वुड्ढकम्म वियागरे । अप्पफलं बहुकसं तं च कम्मं दुगुच्छितं ॥ ११५६ ॥
पवासो पुच्छे णत्थि णाऽऽगच्छति पवासितो । बंधं पुच्छे ण भवति बद्धो खिप्पं च मुच्चिहि ॥ ११५७ ॥

१ लिंकाउरो हं० त० विना ॥ २ फाणि बे तथा हं० त० विना ॥ ३ जंतूणि हं० त० ॥ ४ हस्तचिह्नान्तर्गतः
पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ५ अंतरं बलं हं० त० ॥ ६ महयं हं० त० ॥ ७ वुड्ढकम्मि हं० त० ॥ ८ बहुखेमं तं
हं० त० ॥ ९ पवस्सिओ हं० त० ॥

- खेमं पुच्छे ण भवति भयमत्थि ति णिदिसे । संधि पुच्छे ण भवति विग्गहो य णिरत्थगो ॥ ११५८ ॥
 रोगं मरणमणावुद्धिं आतवं सस्सवापदं । अत्थहारिणं वियोगं च सव्वमत्थि ति णिदिसे ॥ ११५९ ॥
 जयारोगं च आयुं वा उत्थाणं आतुरस्स य । णट्टस्स दंसणं चेव सव्वं णत्थि ति णिदिसे ॥ ११६० ॥
 वयं च परिपुच्छेज्ज ततो बूया महव्वतं । धणं धणं ति पुच्छेज्ज अधणं ति वियागरे ॥ ११६१ ॥
 5 जं किंचि पसत्थं सा सव्वं णत्थि ति णिदिसे । अपसत्थं च जं किंचि सव्वमत्थि ति णिदिसे ॥ ११६२ ॥
 तथा खेतं तथा वत्थुं सव्वं णत्थि ति णिदिसे । महव्वयसमे वा वि इमे सदे विभावये ॥ ११६३ ॥
 महव्वयो ति वा बूया तथा जुण्णवयो ति वा । तथा तीतवयो व ति तथा गतवयो ति वा ॥ ११६४ ॥
 धेरो जुण्णे ति वा बूया वुद्धो परिणतो ति वा । जयतुरे ति वा बूया खीणवंसो ति जो वदे ॥ ११६५ ॥
 वेतुस्सयो ति वा बूया णिव्वत्त ति व यो वदे । उव्वुत्तं ति वा बूया झीणं वा णिट्ठितं ति वा ॥ ११६६ ॥
 10 वातं ति मलितं व ति तथा परिमलितं ति वा । मिलाणं परिसुक्खं ति तथा परिसड्ढितं ति वा ॥ ११६७ ॥
 तुच्छं ति रित्तकं व ति असारं झुसिरं ति वा । तद्धुद्धिततरं व ति गतगंध-स्सं ति वा ॥ ११६८ ॥
 जं चऽण्णं एवमादीयं जिण्णातीतवयस्सियं । तस्स संकित्तणासद्दा महावयसमा भवे ॥ ११६९ ॥
 अप्पावसेसे णक्खत्ते देवते णिधिम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गाम गिहे वि वा ॥ ११७० ॥
 पुरिसे चतुप्पदे चेव पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लये वा वि परिसप्पे तथेव य ॥ ११७१ ॥
 15 पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तथा ॥ ११७२ ॥
 लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेषु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेषु य ॥ ११७३ ॥
 एतम्मि पेक्खियामासे सदे रूवे तथेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचित्तओ ॥ ११७४ ॥
 ॥ महव्वयाणि (सम्मत्ताणि) ॥ ३६ ॥ छ ॥

[३७-३९ वयसाधारणा]

[३७ दुवे बालजोव्वणत्थसाधारणाणि]

- उम्मट्टेसु वियाणीया दुवे णेये च वक्खणे । बालजोव्वणसामण्णे तं चेव य फलं धुवं ॥ ११७५ ॥
 बालेयजोव्वणत्थाणं जे सद्दा पुव्वकित्तिता । बालेयजोव्वणत्थाणं तम्मिस्से समके वदे ॥ ११७६ ॥

[३८ दुवे जोव्वणत्थमज्झिमवयसाधारणाणि]

- तारुण्णमज्झिमाणंगे वयसाधारणा थणा । उम्मट्टा य पसस्संते तं चेव य फलं वदे ॥ ११७७ ॥
 25 तारुण्णमज्झिमाणम्मि जे सद्दा पुव्वकित्तिता । तारुण्णमज्झिमाणंगे मिस्से साधारणे वदे ॥ ११७८ ॥

[३९ दुवे मज्झिमवयमहव्वयसाधारणाणि]

- मज्झिममहव्वयाणं मज्जे साधारणा भवे । उम्मट्टा जंतुणो तेसु पुव्वुत्तं फलमादिसे ॥ ११७९ ॥
 मज्झिममहव्वताणं पि जे सद्दा पुव्वकित्तिता । ते वामिस्सा उदीरंता साधारणसमा भवे ॥ ११८० ॥
 ॥ वयसाधारणा ॥ ३७-३८-३९ ॥ छ ॥

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २ महावयो हं० त० ॥ ३ लिपिभेदानुसारेण चेदत्र चतुस्सयो इति पाठः कियेत तदापि सम्यगेव पाठः ॥ ४ उव्वुत्तं सि० । उच्चवुत्तं सं ३ पु० ॥ ५ णित्थियं हं० त० ॥ ६ सुसिरं हं० त० ॥ ७ नवुद्धिततरं हं० त० ॥ ८ गाम-गिहेसु वा हं० त० ॥ ९ च चक्खुणा हं० त० ॥ १० हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ११ ते मिस्से हं० त० सि० ॥ १२ माणं वि जे हं० त० विना ॥ १३ जंतुणो हं० त० । जंतुणो सि० ॥

[४० वीसं बंधेयाणि]

दंतो १ ढुं ३ कण्ण ५ गंडा य ७ कवोल ९ ऽविख ११ भुमाणि य १३ ।

णासा १४ णिडालं १५ संखा य १७ सिरं १८ बे बाहु २० वीसति ॥ ११८१ ॥

बंधेयोवक्खरे चेव बंधणोपकरणेसु य । बंधणो ति वियाणीया तस्सद्दोदीरणेण य ॥ ११८२ ॥

पितामहो ति वा बूया तथा बंधं ति वा पुणो । सयंभु ति व जो बूया तधेव य पयावर्ति ॥ ११८३ ॥ 5

बंधणो ति वियाणीया तथा बंधरिसि ति वा । बंधवत्थो ति वा बूया बंधणू पिअबंधणो ॥ ११८४ ॥

दिजाति ति व जो बूया दिजातीवसभो ति वा । दिजातीपुंगवो व ति दिजाईपवरो ति वा ॥ ११८५ ॥

विप्पो व ति व जो बूया तथा विप्परिसि ति वा । तथा विप्पगुणोवेओ विप्पाणं पवरो ति वा ॥ ११८६ ॥

जण्णो कतो ति वा बूया जण्णकारि ति वा पुणो । जेद्धो पढमजण्णो ति जण्णमुंडो ति वा पुणो ॥ ११८७ ॥

सोमो ति व जो बूया सोमपाइ ति वा पुणो । सोमपा इति वा बूया सोमणामं च वाहरे ॥ ११८८ ॥ 10

अग्गिहोत्तं ति वा बूया आहितग्गि ति वा पुणो । अग्गिहोत्तरी व ति अग्गिहोत्तं हुतं ति वा ॥ ११८९ ॥

वेदो ति व जो बूया वेदज्झाइ ति वा पुणो । वेदाणं पारको व ति चतुवेदो ति वा पुणो ॥ ११९० ॥

वारिसं पुव्वमासं ति चतुम्मासं ति वा पुणो । जूवो चिति ति वा बूया अग्गीणं चयणि ति वा ॥ ११९१ ॥

करणे कमंडलू य ति दब्भा सज्जा भिसि ति वा । दंडं कट्टं ति वा बूया जण्णोपइतकं ति वा ॥ ११९२ ॥

(जे)यऽण्णे एवमादीया सद्दा दिजवरस्सिता । णामसंकित्तणे तेसि बंधेयसममादिसे ॥ ११९३ ॥ 15

॥ बंधेयाणि ॥ ४० ॥ छ ॥

[४१ चोद्दस खत्तेयाणि]

खंधं २ ऽसपीढ ३ बाहु य ५ जत्तुं ७ उर ८ थणा तथा १० ।

हिययं ११ पस्साणि १३ पट्टी य १४ खत्तेयाणि वियागरे ॥ ११९४ ॥

खत्तेयोवक्खरे चेव खत्तिओवकरणेसु य । खत्तिओ ति वियाणीया तस्सद्दोदीरणेण य ॥ ११९५ ॥ 20

इंदो ति व जो बूया तथा इंदमहो ति य । इंदकेउ ति वा बूया इंदणामं च वाहरे ॥ ११९६ ॥

इंदवड्डइसदेणं इंदोवकरणं ति वा । इंदसयणं ति वा बूया जं चऽण्णं इंदसंतियं ॥ ११९७ ॥

खत्तिओ ति व जो बूया तथा खत्तियसंतियो । तथा खत्तियराय ति खत्तियाधिपति ति वा ॥ ११९८ ॥

जे यऽण्णे एवमादीया सद्दा खत्तियसंसिता । णामसंकित्तणे तेसि खत्तेयसममादिसे ॥ ११९९ ॥

॥ खत्तेयाइं समत्ताइं ॥ ४१ ॥ छ ॥ 25

[४२ चोद्दस वेस्सेयाणि]

कुक्खीपस्सा २ कडीपस्सा ४ उदरो ५ रु ७ मेट्ट ८ वक्खणा १० ।

वत्थि ११ सीसं १२ फले चेव १४ वेस्सेयाणि वियागरे ॥ १२०० ॥

वेस्सेयोवक्खरे चेव वेस्सोवकरणेसु य । वेस्सो ति वियाणीया तस्सद्दोदीरणेण य ॥ १२०१ ॥

वेस्सो ति व जो बूया तथा वेस्सकुलं ति वा । वेस्सप्पकतिओ व ति वेस्सो सो जीवति ति वा ॥ १२०२ ॥ 30

जातो वेस्सकुले व ति जाती य वित्ति सो ति वा । वेस्समित्तं ति वा बूया वेस्सोपकरणं ति वा ॥ १२०३ ॥

१ ण्ण ५ दंता य हं० त० विना ॥ २ णिलाड साहा य हं० त० ॥ ३ जिद्धो पढमकण्णो हं० त० । ४ 'याई' सम्मत्ताणि हं० त० ॥ ५ 'स्सपाकत्तिओ' हं० त० ॥ ६ जातीया वेत्ति हं० त० विना ॥

वेस्सकम्मं ति वा बूया वेस्सारंभो ति वा पुणो । वेस्साणं धणकं व ति वेस्साणं उस्सओ ति वा ॥ १२०४ ॥
 जे यऽण्णे एवमादीया सद्वा ये वेस्ससंसिया । णामसंकित्तणे तेसि वेसेज्जसममादिसे ॥ १२०५ ॥
 ॥ वेस्सेयाणि ॥ ४२ ॥ छ ॥

[४३ दस सुद्देयाणि]

- 5 पादंगुट्टं २ गुली ४ गोप्फा ६ जंघा ८ पादतलाणि य १० ।
 दसेताणि विजाणीया सुद्देयाणि वियागरे ॥ १२०६ ॥
 सुद्देयोवक्खरे चेव सुद्देवकरणेसु य । सुद्दे ति विजाणीया तस्सद्देदीरणेण य ॥ १२०७ ॥
 सुद्दे ति व जो बूया सुद्देलोगो ति वा पुणो । तथा सुद्दकुलं व ति सुद्दजाति ति वा पुणो ॥ १२०८ ॥
 जातो सुद्दकुले व ति सुद्दजोणि ति वा पुणो । सुद्दमितं ति वा बूया सुद्दवित्तिकरो ति वा ॥ १२०९ ॥
 10 सुद्दकम्मं ति वा बूया सुद्दारंभो ति वा पुणो । सुद्देहि ववहारो ति सुद्देहि ति व जीवति ॥ १२१० ॥
 जे यऽण्णे एवमादीया सद्वा सुद्देयसंसिता । णामसंकित्तणे तेसि सुद्देयसममादिसे ॥ १२११ ॥
 ॥ सुद्देयाणि ॥ ४३ ॥ छ ॥

[४४-४५-४६ चातुर्व्यण्णविधानं]

[४४ दुवे बंधेज्जखत्तेज्जाणि]

- 15 बंधेयाणि णिसेवित्ता बंधेयाणि णिसेवति । बंधणो ति व जाणीया तस्सद्देदीरणेण य ॥ १२१२ ॥
 बंधेयाणि णिसेवित्ता खत्तेयाणि णिसेवति । बंधखत्ते ति जाणीया पुच्छिओ अंगचित्तओ ॥ १२१३ ॥
 खत्तेयाणि णिसेवित्ता बंधेयाणि णिसेवति । खत्तबंधं वियाणीया पुच्छित्तो अंगचित्तओ ॥ १२१४ ॥
 बंधेयाणि णिसेवित्ता वेस्सेयाणि णिसेवति । बंधवेस्सं वियाणीया पुच्छिओ अंगचित्तओ ॥ १२१५ ॥
 वेस्सेयाणि णिसेवित्ता बंधेयाणि णिसेवति । वेस्सबंधं वियाणीया पुच्छिओ अंगचित्तओ ॥ १२१६ ॥
 20 बंधेयाणि णिसेवित्ता सुद्देयाणि णिसेवति । बंधसुद्दं वियाणीया पुच्छिओ अंगचित्तओ ॥ १२१७ ॥
 सुद्देयाणि णिसेवित्ता बंधेयाणि णिसेवति । सुद्दबंधं वियाणीया पुच्छिओ अंगचित्तओ ॥ १२१८ ॥
 < खत्तेयाणि णिसेवित्ता खत्तेयाणि णिसेवति । खत्तिको ति विजाणीया तस्सद्देदीरणेण य ॥ १२१९ ॥ >
 खत्तेयाणि णिसेवित्ता बंधेयाणि णिसेवति । खत्तबंधं वियाणीया पुच्छिओ अंगचित्तओ ॥ १२२० ॥
 बंधेयाणि णिसेवित्ता खत्तेयाणि णिसेवति ॥ बंधखत्तं वियाणीया पुच्छिओ अंगचित्तओ ॥ १२२१ ॥

[४५ दुवे खत्तेज्ज वेस्सेज्जाणि]

- 25 खत्तेयाणि णिसेवित्ता वि(वे)स्सेयाणि णिसेवति । खत्तवेस्सं वियाणीया पुच्छिओ अंगचित्तको ॥ १२२२ ॥
 वेस्सेज्जाणि णिसेवित्ता खत्तेयाणि णिसेवति । वेस्सखत्तं वियाणीया पुच्छिओ अंगचित्ततो ॥ १२२३ ॥
 खत्तेयाणि णिसेवित्ता सुद्देयाणि णिसेवति । खत्तसुद्दं वियाणीया पुच्छित्तो अंगचित्तओ ॥ १२२४ ॥
 सुद्देयाणि णिसेवित्ता खत्तेयाणि णिसेवति । सुद्दखत्तं वियाणीया पुच्छिओ अंगचित्तओ ॥ १२२५ ॥
 30 वेस्सेज्जाणि णिसेवित्ता वि(वे)स्सेयाणि णिसेवति । वेस्सं तं तु वियाणीया तस्सद्देदीरणेण य ॥ १२२६ ॥
 वेसे(स्से)ज्जाणि णिसेवित्ता बंधेयाणि णिसेवति । वेस्सबंधं वियाणीया पुच्छिओ अंगचित्तओ ॥ १२२७ ॥

१ वणकं हं० तं० ॥ २ उस्सुतो ति हं० तं० विना ॥ ३ सुपक्खेवक्कं हं० तं० ॥ ४ सुद्दे लोगो हं० तं० ॥

५ < > एतच्चिह्नान्तर्गतः श्लोकः हं० तं० नास्ति ॥

बंभेयाणि णिसेवित्ता वेसेज्जाणि णिसेवति । बंभविस्सं वियाणीया पुच्छिओ अंगचित्तो ॥ १२२८ ॥
 विस्सेज्जाणि णिसेवित्ता खत्तेयाणि णिसेवति । वेस्सखत्तं वियाणीया पुच्छिओ अंगचित्तो ॥ १२२९ ॥
 खत्तेयाणि णिसेवित्ता वेस्सेयाणि णिसेवति । खत्तवेस्सं वियाणीया पुच्छिओ अंगचित्तो ॥ १२३० ॥

[४६ दुवे वेसेज्जसुदेज्जाणि]

विस्सेयाणि णिसेवित्ता सुदेज्जाणि णिसेवति । विस्ससुद्दं वियाणीया पुच्छिओ अंगचित्तो ॥ १२३१ ॥ 5
 सुदेयाणि णिसेवित्ता विस्सेयाणि णिसेवति । सुद्दवेस्सं वियाणीया पुच्छिओ अंगचित्तो ॥ १२३२ ॥
 सुदेयाणि णिसेवित्ता सुदेयाणि णिसेवति । सुद्दं तं तु वियाणीया तस्सद्वेदीरणेण य ॥ १२३३ ॥
 सुदेयाणि णिसेवित्ता बंभेयाणि णिसेवति । सुद्दबंभं वियाणीया पुच्छिओ अंगचित्तो ॥ १२३४ ॥
 बंभेयाणि णिसेवित्ता सुदेयाणि णिसेवति । बंभसुद्दं वियाणीया पुच्छिओ अंगचित्तो ॥ १२३५ ॥
 सुदेयाणि णिसेवित्ता खत्तेयाणि णिसेवति । सुद्दखत्तं वियाणीया पुच्छिओ अंगचित्तो ॥ १२३६ ॥ 10
 खत्तेयाणि णिसेवित्ता सुदेयाणि णिसेवति । खत्तसुद्दं वियाणीया पुच्छिओ अंगचित्तो ॥ १२३७ ॥
 सुदेयाणि णिसेवित्ता वेस्सेज्जाणि णिसेवति । सुद्दवेस्सं वियाणीया पुच्छिओ अंगचित्तो ॥ १२३८ ॥
 [वेसेज्जाणि णिसेवित्ता सुदेयाणि णिसेवति । वेस्ससुद्दं वियाणीया पुच्छिओ अंगचित्तो ॥ १२३९ ॥ छ ॥]
 यं चाऽऽज्जमामसित्ताणं आमसे वित्तिं पुणो । तेण तम्मिस्सकं वण्णं णिहिसे अंगचित्तो ॥ १२४० ॥
 चातुव्वण्णं च इच्चेतं सम्ममामसजोणिया । जधा तमणुगंतूणं ततो बूयांगचित्तो ॥ १२४१ ॥ 15
 ॥ चातुव्वण्णविधानं ॥ ४४-४५-४६ ॥ छ ॥

[४७-५३ आयुप्पमाणणिद्देसो-चत्तालीसतिमं पडलं]

आयुप्पमाणणिद्देसो उत्तमेसु सयं भवे । पण्णत्तरि च वस्साणि मज्झिमेसु वियागरे ॥ १२४२ ॥
 पण्णासं तु णात्त्वा मज्झिमाणंतरेसु य । जहण्णे पण्णवीसा तु आयुवस्साणि णिहिसे ॥ १२४३ ॥
 साधारणेषु सव्वेषु गोप्फ-जाणु-धणेषु य । जंतूसु यावि वग्गाणं तं तु साधारणं वदे ॥ १२४४ ॥ 20
 आयुप्पमाणमिच्चेतं सुसाधारणमंगवी । असम्पूढो विभावेत्ता जधुत्तमभिणिहिसे ॥ १२४५ ॥
 ॥ आयुप्पमाणणिद्देसो सम्मतो ॥ ४७-५३ ॥ छ ॥
 ॥ पडलं चत्तालीसतिमं ॥ ४० ॥ छ ॥

[५४ बावत्तरि सुक्कवण्णपडीभागा]

उम्मट्ठा तु दढा सव्वे २८ पुरिसंगाणि ४४ णखाणि य ६४ । 25
 हितयं ६५ थण ६७ दंता य ६८ गोवा ६९ खंधो ७० ऽक्खिमेव य ७२ ॥ १२४६ ॥
 एते सुक्कपडीभागा अंगे बावत्तरि मता । अपीलितता तु उम्मट्ठा सव्वत्थेषु पसस्सते ॥ १२४७ ॥
 एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तथा । जं किंचि पसत्थं सा सव्वमत्थि ति णिहिसे ॥ १२४८ ॥
 पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो ति य । धण्णो य सुहभागी य ८० सुद्धभावी य ८० सो भवे ॥ १२४९ ॥
 इत्थि च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग ति य । धण्णा य सुहभागी य सुद्धभागी ति यं वदे ॥ १२५० ॥ 30
 कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुभग ति य । धण्णा य सुहभागी य खिप्पं विज्जिहिते ति य ॥ १२५१ ॥

* चतुरस्रकोष्ठकान्तर्गतः श्लोकः सर्वासु प्रतिषु नास्ति ॥ १ चउव्वण्णं हं० त० ॥ २ तु मुणेत्तव्वा सिं० ॥ ३ आयव्वं हं० त० ॥ ४ जतूसु हं० त० ॥ ५ ८० ८० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥

- वण्णं च परिपुच्छेज्ज सुक्किलो ति वियागरे । तथा आभिजणं पुच्छे सुक्कमाभिजणं वदे ॥ १२५२ ॥
 जं किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि ति णिहिसे । अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वं गत्थि ति णिहिसे ॥ १२५३ ॥
 जधा पुण्णामधेयेसु आदेसो तु विधीयते । तथा सुक्केसु णातव्वं विसिद्धतरकं फलं ॥ १२५४ ॥
 कम्मं च परिपुच्छेज्ज सुक्कं कम्मस्स णिहिसे । संखिकं संखवाणियकं तथा वलयवाणियं ॥ १२५५ ॥
 5 मणि—मुत्तवाणियं वा वि जं चऽण्णं सुक्किलं भवे । कम्मपुच्छय णिहेसे एवमादि फलं वदे ॥ १२५६ ॥
 तथा खेतं तथा वत्थुं सव्वमत्थि ति णिहिसे । समे सदे य जाणेज्जो सुक्किला जे भवंतिह ॥ १२५७ ॥
 सुक्को बहस्सती व ति चंदो व ति सर्णिचरो । बलाका बलदेवो ति मुक्कणंदवणं ति वा ॥ १२५८ ॥
 संखो संखवलयं ति संखणाभि ति वा पुणो । तथा संखमलो व ति संखचुण्णं ति वा पुणो ॥ १२५९ ॥
 छुहा सेडि ति वा बूया चुण्णको ति पलेवगो । कडसक्कर ति वा बूया तथा णेलकितं ति वा ॥ १२६० ॥
 10 दंतो सेडकणवीरो वा वासंति वासुल ति वा । वैडलपुप्फिका जाती लाणी जूधिक ति वा ॥ १२६१ ॥
 णवमालिका मल्लिका व ति चंपकालि ति वा पुणो । तेणसोल्लिक ति वा बूया सेडकफलिक ति वा ॥ १२६२ ॥
 पुंडरीकं ति वा बूया सेडगद्दभकं ति वा । तथा सेडककंदो ति सिंधुवारो ति वा पुणो ॥ १२६३ ॥
 दुद्धं दधि वा बूया तथा दधिसरो ति वा । णवणीतं ति वा बूया सतधोतं घतं ति वा ॥ १२६४ ॥
 धोतकं मधुसित्थं ति जोण्हा धवलपडो ति वा । दंतो ति दंतचुण्णो ति रयतं मुत्तिकं ति वा ॥ १२६५ ॥
 15 जं चऽण्णं एवमादीयं सज्जीव—ऽज्जीवकं भवे । सुक्किलं ति सुए सदे सुक्किलस्स तु तं समं ॥ १२६६ ॥
 तथा सुक्कपडीभागे णक्खते देवते तथा । पुप्फे फले वा देसे वा णगरे गाम गिहे वि वा ॥ १२६७ ॥
 पुरिसे चतुप्पदे यावि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लये यावि परिसप्पे तधेव य ॥ १२६८ ॥
 पाणे वा भोयणे वा वि आसणे सयणे तथा । वत्थे आभरणे यावि भंडोवगरणे तथा ॥ १२६९ ॥
 लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेसु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण—धणेषु य ॥ १२७० ॥
 20 एतम्मि पेक्खियामासे सदे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचित्तो ॥ १२७१ ॥

॥ सुक्कवणपडीभागा ॥ ५४ ॥ छ ॥

[५५-६२ वण्णपडीभागपडलं]

- अब्भंतरं अवंगे उ अक्खीणं वे विणिहिसे । एते पंडुपडीभागे अब्भंतरफले वदे ॥ १२७२ ॥
 तथा णीलपडीभागा अप्पसत्थे वियागरे । दब्बणं पडिपक्खा जे णपुंसकफला उ ते ॥ १२७३ ॥
 25 दस कण्हपडीभागे णिम्महेसु वियागरे । बालेयेसु सव्वेसु पुच्छिते ण प्ससस्सते ॥ १२७४ ॥

॥ वण्णपडीभागा ॥ ५५-६२ ॥ छ ॥

[६३-७३ ठियामासवणजोणीपडलं]

- सव्वे ज्जाव ठियामासा बाहिरप्पडिरूविगा । जो जस्स वण्णपडिरूवो वण्णं तं तेण णिहिसे ॥ १२७५ ॥
 कण्हेण कण्हं जाणीया णीलकं णीलकेण य । रत्तेण रत्तं जाणीया पीतकेण य पीतकं ॥ १२७६ ॥
 30 सेतेण सेतं जाणीया पंडुमेव य पंडुणा । मेच्चकं मेच्चकेणेव ठियामासं वियागरे ॥ १२७७ ॥

१ भवे हं० त० विना ॥ २ मक्कणं हं० त० ॥ ३ पडलं सप्र० ॥ ४ जाती णाली जू सि० ॥ ५ वणं हं० त० ॥
 ६ धातकं हं० त० विना ॥ ७ सते हं० त० विना ॥ ८ सुक्कलपं हं० त० ॥ ९ अत्रेदमवधेयम्—एतद् वण्णपडीभागपडलं
 अत्रेतरं च ठियामासवणजोणीपडलं कथञ्चित् समानविषयकमिति मिश्रीभावेन तद्व्यावर्णनमत्र दृश्यते । अत एवात्र पटलद्वये
 द्वारासाङ्क्यमपि वर्तते । कतिचिद्द्वारापरामर्शस्त्वत्र सुगमत्वात् सम्भाव्यते । द्वारक्रमभङ्गः पुनर्ग्रन्थकृदिच्छामनुवर्तत इति ॥ १० णं
 चेव णि हं० त० ॥ ११ भागं अब्भंतरफलं हं० त० विना ॥ १२ भागो हं० त० विना ॥ १३ भागा हं० त० विना ॥

गयतालुकवण्णं च तव्वण्णेण वियागरे । काकंडकवण्णं च तथा गोमुत्तकं विदु ॥ १२७८ ॥
 सूरेण सुरुगमिकं पदुमाभेण पदुमकं । मणोसिलाय य तथा मणोसिलाणिभं वदे ॥ १२७९ ॥
 हरितालेण जाणेज्जो हरितालसमप्यभं । तथा हिगुलके यावि बूया हिगुलकप्यभं ॥ १२८० ॥
 णिद्धं णिद्धेण जाणेज्जो लुक्खं लुक्खेण णिद्धिसे । मिस्सकं मिस्सकेणेव चित्तवण्णं च चित्तले ॥ १२८१ ॥
 एवमादी ठियामासे सवण्णेहि वियाणिया । बाहिरप्पडिरूवेहि णिद्धिसे अंगचित्तओ ॥ १२८२ ॥ 5
 बाहिरंगता एते ठियामासा विआहिता । एते चेव पुणो सव्वे अंगामासेहि णिद्धिसे ॥ १२८३ ॥
 वक्खणा गोप्फणा जाणू य कण्णा य हरिता भवे । गोवा पीता तथा पंडू अपंगे वे तधोदरं ॥ १२८४ ॥
 जिब्बोदु-तालुका रत्ता बंभवण्णा तधऽक्खिणो । सुक्का दंत-णहा असिता बज्झतं केस-लोमय ॥ १२८५ ॥
 अब्भंतरा य अच्छीण भागा गोवा य पीतिका । सम्मदिया य हरिता णिम्मदु होति पंडुणो ॥ १२८६ ॥
 कणवीरका अवंगा य पाद-पाणितला तथा । जिब्बोदु-तालु-कंठोल्ला दंतमंसं तधेव य ॥ १२८७ ॥ 10
 रत्तवण्णपडीभागा विण्णेया दस पंच य । जधुत्तमणुगंतूणं ततो बूयांगचित्तओ ॥ १२८८ ॥
 रत्त-सेतसमामासे णिद्धिसे गयतालुकं । सेत-रत्तसमामासे बंभरागं वियागरे ॥ १२८९ ॥
 रत्त-पीतसमामासे वण्णं सुज्जुगमं वदे । पीत-रत्तसमामासे मणोसिलाणिभं वदे ॥ १२९० ॥
 कण्ह-सेयसमामासे मेचकं वण्णमादिसे । सेत-कण्हसमामासे कोरैटकणिभं वदे ॥ १२९१ ॥
 णिद्ध-लुक्खसमामासे णिद्धलुक्खं तु णिद्धिसे । लुक्ख-णिद्धसमामासे लुक्खणिद्धाणि णिद्धिसे ॥ १२९२ ॥ 15
 पुप्फाणि च फलाणि च तथा पत्ताणिमेव य । णिज्जासा चेव सारा य मूलजोणिगतस्स य ॥ १२९३ ॥
 वालाणं अंगलोमाणं चम्माणं च पिधप्पिधं । मासाणं रुधिराणं च पित्तस्स य कफस्स य ॥ १२९४ ॥
 मुत्ताणं च पुरीसाणं सुक्क-मेद-वसाय य । अट्ठीणं अट्ठिमिजाय जेहाणं पाणजोणिया ॥ १२९५ ॥
 जे यऽण्णे धातुजोणीया वण्णरागा पिधपि(प्पि)धं । तेसि संकित्तणासद्दा विभावेऊण अंगवी ॥ १२९६ ॥
 सुक्कादयो सव्ववण्णा ये एते परिकित्तिता । तज्जोणीवण्णसदेहि ते पत्तेगं वियागरे ॥ १२९७ ॥ 20
 ॥ ठियामासकता वण्णजोणी ॥ ६३-७३ ॥ छ ॥

[७४-७९ णिद्धलूहपडलं]

[७४ दस णिद्धाणि]

मुहं १ णासापुडा ३ कण्णा ५ मेड्ड ६ मऽक्खी ८ थणावुभो १० ।

एताणि दस णिद्धाणि उम्मद्वणि पसस्सते ॥ १२९८ ॥

25

जधा पुण्णामधेज्जेसु आदेसा परिकित्तिता । तथा णिद्धेसु सव्वेसु विसिद्धतरकं फलं ॥ १२९९ ॥

एताणि आमसंती य गब्भिणी जति पुच्छति । इमो तस्सा भवे अण्णो विसेसो उत्तरुत्तरे ॥ १३०० ॥

उदगमाणसा हट्ठा सव्वकामसमणितता । सुहेण सुलता पुत्तं धण्णं णारी पयाहिति ॥ १३०१ ॥

बंभणो जति पुच्छेज्जा उदिच्चे वेदपारतो । अभिरूवो सुहितो णित्त्वं भवे य धण-धण्णवा ॥ १३०२ ॥

वेस्सो जति पुच्छेज्जा सिद्धऽच्छदण-भोयणो । अट्ठो य सुहभागी य वसुमंतो य सो भवे ॥ १३०३ ॥ छ ॥ 30

१ 'तरो ये अच्छीणं भागा सं ३ पु० । 'तरो य अच्छीणं भागी हं० त० ॥ २ पीयिका हं० त० ॥ ३ 'लुकंभेला हं० त० विना ॥ ४ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ५ 'द्धमणिद्धाणि लुक्ख' सप्र० ॥ ६ सुव्व' हं० त० ॥ ७ तिजोणी' हं० त० ॥ ८ 'ज्जा मिच्छच्छ' सं ३ पु० सि० ॥

[७५ दस णिद्धणिद्धाणि]

- एताणि चेव णिद्धाणि णिद्धणिद्धाणि णिद्दिसे । दूरम्मद्वाणि सव्वाणि विसिट्ठफलदाणि य ॥ १३०४ ॥
 मक्खितं ति व जो बूया तं मक्खिततरं ति वा । [अतिमक्खितं ति वा बूया मक्खितमक्खितं ति वा ॥ १३०५ ॥
 णिद्धं ति व जो बूया तं णिद्धतरकं ति वा ।] अतिणिद्धं ति वा बूया णिद्धणिद्धं ति वा पुणो ॥ १३०६ ॥
 5 किलिण्णं ति य जो बूया किलिण्णतरकं ति वा । तथा अतिकिलिण्णं ति किलिण्णकिलिण्णं ति वा ॥ १३०७ ॥
 णेहितं ति व जो बूया तं णेहिततरं ति वा । अतिणेहितं ति वा बूया णेहितणेहितं ति वा ॥ १३०८ ॥
 णेहुक्कडं ति वा बूया णेहुक्कडतरं ति वा । अतिणेहुक्कडं व ति बहुणेहुक्कडं ति वा ॥ १३०९ ॥
 णेहुत्तरं ति वा बूया णेहुत्तरं ति वा । अतिणेहुत्तरं व ति बूया बहुणेहुत्तरं ति वा ॥ १३१० ॥
 णेहागाढं ति वा बूया णेहागाढतरं ति वा । अतिणेहागाढं ति तथा बहुणेहागाढतरं ति वा ॥ १३११ ॥
 10 दुद्धं दधि सरो णवणीतं घयं ति वा । तेल्लं मधुं ति वा बूया वसा मज्जं ति वा पुणो ॥ १३१२ ॥
 जं चऽण्णं एवमादीयं दव्वं णेहोवकं भवे । तस्स संकित्तणासद्दा सव्वे णेहसमा भवे ॥ १३१३ ॥ छ ॥

[७६ दस लुक्खाणि]

णिम्मद्वाणि य णिद्धाणि दस लुक्खाणि णिद्दिसे । जधा णपुंसका अंगे विण्णेया फलतो तथा ॥ १३१४ ॥ छ ॥

[७७ दस लुक्खलुक्खाणि]

- 15 एताणि चेव लुक्खाणि दूरं णिम्मज्जिताणि तु । लुक्खलुक्खाणि जाणीया फलं पावतरं च से ॥ १३१५ ॥
 लूहं ति व जो बूया तथा लूहतरं ति वा । अतिलूहं ति वा बूया लूहालूहतरं ति वा ॥ १३१६ ॥
 फुट्टं ति व जो बूया तथा फुट्टतरं ति वा । [अतिफुट्टं ति वा बूया फुट्टफुट्टतरं ति वा ॥ १३१७ ॥]
 फरुसं ति व जो बूया तथा फरुसतरं ति वा । तथाऽतिफरुसं व ति फरुसातिफरुसं ति वा ॥ १३१८ ॥
 कयारो ति व जो बूया पंसुको ति व जो वदे । धूली रयो ति रेणु ति सरो सुक्को ति वा पुणो ॥ १३१९ ॥
 20 इंगालछारिणा व ति भूती भस्सो ति वा पुणो । तुस ति गुलिकं व ति चुण्णं रोट्टो ति वा पुणो ॥ १३२० ॥
 गोब्बरो ति करीसो ति सुक्खं वा छगणं पुणो । तण-कट्ट-पलालं ति सुक्खपुप्फ-फलं ति वा ॥ १३२१ ॥
 सुक्खपतं ति वा बूया तथा सुक्खफलं ति वा । तुस ति कौटको व ति ककुसो तप्पणो ति वा ॥ १३२२ ॥
 लूहं ति लूहितं ती वा विलूहितविलूहितं । उल्लोहितं उव्वलितं तथा उच्चडितं ति वा ॥ १३२३ ॥
 णिब्भामितं णिगलितं अम्भुक्कडितं ति वा । णिण्णेहकं अणेहं वा फुट्टं ति फरुसं ति वा ॥ १३२४ ॥
 25 खफुट्टं ति व जो बूया खपल्लापाडणं ति वा । णिच्छोडणं णिव्वलकं तथा णिल्लिक्खणं ति वा ॥ १३२५ ॥
 तथा पलिहितं व ति ^{११}णिद्धोतं ति व जो वदे । पोळ ति झुसिरं व ति सधूलीक सरेणुकं ॥ १३२६ ॥
 जं चऽण्णं एवमादीयं लोए ^{१२}लुक्खोपकं भवे । तस्स संकित्तणासद्दा सव्वे लूहसमा भवे ॥ १३२७ ॥ छ ॥

[७८ दस लुक्खणिद्धा ७९ दस णिद्धलूहा य]

लुक्खणिद्धा य एतेवं णिद्धा सम्मज्जिता भवे । साधारणं तेसु वदे अत्थलाभं सुभा-ऽसुभं ॥ १३२८ ॥

- १ दूरम् हं० त० ॥ २ विसुद्धफं हं० त० ॥ ३ चतुरस्रकोष्ठकान्तर्गतोऽयं खण्डितपाठः सम्बन्धानुसारेण पूरितोऽस्ति ॥
 ४ बूया बहुणेहकडं ति वा सप्र० ॥ ५ अतिणेहितं ति वा बूया बहुणेहकडं ति वा सप्र० ॥ ६ हस्तचिह्नगतः पाठः
 हं० त० एव वर्तते ॥ ७ हस्तचिह्नान्तर्गतमुत्तरार्द्धं हं० त० एव वर्तते ॥ ८ कुक्कसो हं० त० ॥ ९ उच्चाडियं हं० त० ॥
 १० अम्भुक्कडितं हं० त० विना ॥ ११ णिच्छोडणं हं० त० ॥ १२ णिदायम्मि य जो हं० त० ॥ १३ लुक्खे परं
 भवे हं० त० ॥ १४ साधारणं एसु वदे सव्वं अत्थं सुभा-ऽसुभं हं० त० ॥

निद्धा लूहा उ एतेवं संविमट्ठा जता भवे । साधारणं तेसु वदे अत्थं सव्वं सुभासुभं ॥ १३२९ ॥
 लूहणिद्धं व जं अंगे णिद्धलूहं व जं भवे । तेसिं वामिस्ससद्देहिं साधारणगुणं वदे ॥ १३३० ॥
 ॥ णिद्धलूहाणि ॥ ७४-७९ ॥ छ ॥

[८० दस आहारा]

चक्खु १ सोत्तेण २ घाणेण ३ देहफरिसेण ४ जिब्भया ५ । 5
 हत्थ ६ पादेण ७ सीसेण ८ बाहूहिं ९ भमुहाहि य १० ॥ १३३१ ॥
 आहारं कुरुते चेव उवयोगेहि जेहि तु । तधा य होति आहारे दसेताणुवधारये ॥ १३३२ ॥
 सुणेती १ पेक्खती यावि २ गंधं वा कैवि घायति ३ ।
 ओट्टसंदंसणे चेव ४ णिगिण्णाऽऽसाइतम्मि य ५ ॥ १३३३ ॥
 अतिहारे य जिब्भायं ओट्टाणं परिलेहणे ६ । तधेव मुट्ठिकरणे अंगुलीपेंडणेसु य ७ ॥ १३३४ ॥ 10
 हत्थपादोवसंहारे ८ सिरेण ९ भुमकाहि य १० । आहारे णीहिते यावि सव्वं आहारमादिसे ॥ १३३५ ॥
 जधा पुण्णामधेयेसु आदेसो तु विधीयति । आहारेसु वि एमेव फलं बूया सुभाऽसुभं ॥ १३३६ ॥
 आहारे त्ति व जो बूया खज्जापज्जं (खज्ज-पेज्जं) त्ति वा पुणो ।
 आहारेति आहारंति तधा अतिहरंति वा ॥ १३३७ ॥
 समाहरंति त्ति वा बूया ८० बैप्पा वाहरति त्ति वा । 15
 एति वा [आ]गतो व त्ति तधा अतिगतो त्ति वा ॥ १३३८ ॥
 पवेसितो पविट्ठो त्ति आणीयं त्ति [व] आणितो ।
 सु[ण]ते त्ति णिसामेति आगण्णेति त्ति वा पुणो ॥ १३३९ ॥
 पेक्खते पेच्छते व त्ति णिज्झायति [व] पेक्खति । णियक्खेति त्ति वा बूया णिरिक्खति णिलिक्खति ॥ १३४० ॥
 अघायते त्ति वा बूया उवघाय त्ति वा पुणो । आचिक्खति त्ति वा बूया ८० तधा उच्चंपति त्ति वा ॥ १३४१ ॥ 20
 रसायते त्ति वा बूया अस्सायेति त्ति वा पुणो । तधा विगिलते व त्ति तधा आतिअ[त्ति] त्ति वा ॥ १३४२ ॥
 जेमेति भुंजते व त्ति आहारं कुरुते त्ति य । अण्हेते व त्ति वा बूया भक्खते खाति वप्फति ॥ १३४३ ॥
 फरिस्सायते त्ति वा बूया उवप्फरिस्सते त्ति वा । सुहफरिस्सं त्ति वा बूया फस्सं(रुस्सं) वेदयति त्ति वा ॥ १३४४ ॥
 आगारेति त्ति वा बूया तधा वाहरति त्ति वा । राते त्ति व जो बूया तधा एमि वा पुणो ॥ १३४५ ॥
 जे वऽण्णे एवमादीया सदा आहारसंसिता । तेसिं संकित्तणासदा आहारसममादिसे ॥ १३४६ ॥ 25
 अब्भंतरेसु जे सदा अब्भंतरेसु य । ते वि आहारसद्देहिं तुल्लत्थे उवधारए ॥ १३४७ ॥
 ॥ आहारसम्पत्ति ॥ ८० ॥ छ ॥

[८१-८५ णीहारपडलं]

[८१ दस णीहारा]

चक्खु १ सोत्तेण २ घाणेण ३ देहफरिसेण ४ जिब्भया ५ । 30
 हत्थ ६ पादेण ७ सीसेण ८ बाहूहिं ९ भमुहाहि य १० ॥ १३४८ ॥
 णीहारं कुरुते चेव उवयोगेहि जेहि तु । जधा य होति णीहारो दसेताणुवधारए ॥ १३४९ ॥

१ केति हं० त० ॥ २ 'संधारे' हं० त० ॥ ३ ८० ८० एतच्चिह्नान्तर्गतः श्लोकसन्दर्भः हं० त० नास्ति ॥ ४ तद्वाऽतिगिं
 हं० त० ॥ ५ सुद्धफं हं० त० ॥ ६ अंगां सं ३ पु० सि० । अगां हं० त० ॥ ७ चिक्खसो हं० त० विना ॥

दिस्सते सदरूवेण णिस्संघति पुणो पुणो । विणिद्धुते णिस्ससति ओदुं णिवोल्लए तथा ॥ १३५० ॥
 णिल्लेलेउ जिब्भं तु मुट्ठिं वा वि पमुच्चति । विक्खिखवे अंगुलीओ य दंताणं च विसोधह ॥ १३५१ ॥
 हत्थ-पादं पसारेति सिरेण भुमकाहि य । आकारेण विसज्जेति णीहारमिति णिदिसे ॥ १३५२ ॥
 चलाणं बाहिराणं च बज्झबज्झाणमेव य । सुभा-ऽसुभफलं जं जं णीहारेसु वि तं वदे ॥ १३५३ ॥
 5 णीहारेति णीहरति त्ति अवकड्ढति णिकड्ढति । णिसारेति [णिसरति] णिक्खुस्सति विकड्ढति ॥ १३५४ ॥
 णिच्छुद्धे णिगगते छुद्धे उक्कड्ढिय विकड्ढिते । अवकड्ढिते पराहूते पराजित परम्मुहे ॥ १३५५ ॥
 णिस्सारिते णिस्सरिते अवच्चत पसारिते । विप्पसारित वाविद्धे उव्वेह्लित पसारिते ॥ १३५६ ॥
 तथा विक्खिखण णिक्खिखणे विप्पकिण्णे विणासिते । अवकिण्णे परिमीते अवमाणित विमाणिते ॥ १३५७ ॥
 चल-बज्झ-बाहिरा [चे]व ये सदा पुव्वकित्तिता । ते विमे य उदीरता णीहारसमका भवे ॥ १३५८ ॥ छ ॥

10

[८२-८५ दस आहाराहारा आहारणीहारा णीहाराहाराइ]

आहारियम्मि आहारे आहारो जति जायति । एतं आहारमाहारं वियाणे अंगचित्तओ ॥ १३५९ ॥
 आहारियम्मि आहारे णीहारो जति जायति । एतं आहारणीहारं वियाणे अंगचित्तओ ॥ १३६० ॥
 आहारितम्मि णीहारे आहारो जति जायति । एतं णीहारआहारं वियाणे अंगचित्तओ ॥ १३६१ ॥
 आहारियम्मि णीहारे णीहारो जति जायति । एतं णीहारणीहारं वियाणे अंगचित्तओ ॥ १३६२ ॥

15

बहवो आहार-णीहारा मिस्सका जति जायति । तमाहारं जहिता णं अण्णमाधारए पुणो ॥ १३६३ ॥
 पुरिमेण पुरिमं जाणे पच्छिमेण य पच्छिमं । वत्तमाणम्मि आहारे वत्तमाणं वियागरे ॥ १३६४ ॥
 पुण्णामम्मि य आहारे पुरिस्सत्थं वियागरे । थोणामे य थिया अत्थं णपुंसं च णपुंसके ॥ १३६५ ॥
 उत्तमम्मि य आहारे उत्तमत्थं वियागरे । मज्झिमे मज्झिमं अत्थं हीणे हीणत्थमादिसे ॥ १३६६ ॥
 आहारम्मि य आहारे पसत्थं अत्थमादिसे । णीहारम्मि य आहारे अत्थं पुव्वं वियागरे ॥ १३६७ ॥

20

॥ णीहारपडलं सम्पत्तं ॥ ८१-८५ ॥ छ ॥

[८६-९५ दिसापडलं]

[८६ सोलस पुरत्थिमाणि]

पुरत्थिमाणि वक्खामि सोलसंगे जधा तथा । अणागताणि जाणेव पसत्थं तत्थऽणागतं ॥ १३६८ ॥
 अत्थलाभं जयं वड्ढि पुच्छे एताणि आमसं । पुरत्थिमं आगमिस्सं सव्वमत्थि त्ति णिदिसे ॥ १३६९ ॥
 25 आगामिभदं पुरिसं एस्सकल्लाणमादिसे । ~~ए~~ तेहाऽऽगमेसभदं च पयमाणं पि णिदिसे ॥ १३७० ॥
 पुरिस्सस्सऽत्थविहं पुच्छे बूया तं पुरत्थिमं । थिआ अत्थविहं पुच्छे तं पि बूआ पुरत्थिमं ॥ १३७१ ॥
 तहाऽऽगमेसभदा य गब्भिणीणं पुरत्थिमा । पुरत्थिमं व भातूणं कण्णा तु लभते वरं ॥ १३७२ ॥
 गब्भं च परिपुच्छेज्ज गब्भमागामिमादिसे । ~~ए~~ गब्भिणि परिपुच्छेज्ज चिरा पुत्तं पयाहिति ॥ १३७३ ॥
 कम्मं च परिपुच्छेज्ज उत्तमं कम्ममादिसे । फलं तस्स य कम्मस्स आगामी लभते णरो ॥ १३७४ ॥
 30 पवासं परिपुच्छेज्ज चिरा तु गमणं वदे । पोसितस्स सलाभस्स चिरेणाऽऽगमणं वदे ॥ १३७५ ॥
 बंधं वधं वाधि मच्चुं अणावुट्ठिं अपातपं । सस्सस्स वा वि वापत्तिं सव्वं णत्थि त्ति णिदिसे ॥ १३७६ ॥

१ 'णिद्धुमे णि' हं० त० ॥ २ 'णिल्लेणेतु जि' हं० त० विना ॥ ३ 'विक्खेवं' हं० त० विना ॥ ४ 'णिक्खस्सति' हं० त० ॥
 ५ 'णिक्खुद्धे णिगगते वुद्धे' हं० त० विना ॥ ६ 'णिस्सरति' हं० त० सि० ॥ ७ 'विक्खित्त णिक्खित्ते' हं० त० विना ॥
 ८-९ 'वियारे' हं० त० विना ॥ १० 'जाणि व' हं० त० विना ॥ ११ 'हस्तचिह्नन्तर्गतः पद्यसन्दर्भः' हं० त० एव वर्तते ॥

बद्धस्स मोक्खं खेमं च संधिं च जयमेव य । आरोगं जीवितं च त्ति वस्सारतो य उत्तमो ॥ १३७७ ॥
 वस्सारतं च पुच्छेज्ज बूया वासमणागतं । पुरत्थिमे महामेहा महावासं करिस्सति ॥ १३७८ ॥
 णट्ठं च परिपुच्छेज्जा अत्थि णट्ठं त्ति णिद्दिसे । णट्ठमाधारइत्ता य बूया णट्ठं पुरत्थतो ॥ १३७९ ॥
 कर्त्तिमिं दिसं त्ति वा बूया पुरिमं त्ति वियागरे । धणं धणं त्ति पुच्छेज्ज धणं तेवं वियागरे ॥ १३८० ॥
 जं किंचि पसत्थं सा सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । [जं किंचि अप्पसत्थं च सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १३८१ ॥] 5
 उवातं णिद्दिसे धणं दिसं बूया पुरत्थिमं । साधारणं वदे अत्थं थो-पुमंसस्सऽणागतं ॥ १३८२ ॥
 जधा पुण्णामधेयेसु सव्वो अत्थो सुभा-ऽसुभो । एवमेतेसु पुरिमेसु सव्वं बूया अणागतं ॥ १३८३ ॥
 अणागतेसु सद्दा जे पुव्वं संपरिकित्तिता । ते चेव सद्दा पुरिमाणं जाणे तुल्ले फलेण तु ॥ १३८४ ॥
 ॥ पुरत्थिमाणि सम्मत्ताणि ॥ ८६ ॥ छ ॥

[८७ सोलस पच्छिमाणि]

10

सोलस पच्छिमाणां अतिवत्ताणि जाणि तु । ताणि साधारणे अत्थे अतीते णर-णारिणं ॥ १३८५ ॥
 अत्थलाभं जयं वा वि वद्धि वा जति पुच्छति । पच्छतो य तमत्थि त्ति सेसं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १३८६ ॥
 पुरिसं च परिपुच्छेज्ज भातूणं पच्छिमो भवे । इत्थि च परिपुच्छेज्जा भगिणीणं पच्छिमा भवे ॥ १३८७ ॥
 पुरिसत्थविधं पुच्छे पच्छतो त्ति वियागरे । ॐ थिया अत्थविहं पुच्छे पच्छतो त्ति वियागरे ॥ १३८८ ॥ ॐ
 कण्णं च परिपुच्छेज्जा भगिणीणं पच्छिमा भवे । पच्छिमं चेव भातूणं खिप्पं च लभते वरं ॥ १३८९ ॥ 15
 गब्भं च परिपुच्छेज्ज णत्थि गब्भो त्ति णिद्दिसे । गब्भिर्णि परिपुच्छेज्ज वियाणं पच्छिमं वदे ॥ १३९० ॥
 कम्मं च परिपुच्छेज्ज पच्छा कम्मं वियागरे । अप्पफलं बहुक्केसं णराणं कम्ममादिसे ॥ १३९१ ॥
 पवासो पुच्छते णत्थि पोसितो पच्छओ गओ । णित्थकं च तं बूया चिरायाऽऽगमणं वदे ॥ १३९२ ॥
 बंधं पुच्छे ण भवति बद्धो खिप्पं च मुच्चति । भयं खेमं च संधिं वा विग्गहो य णित्थको ॥ १३९३ ॥
 रोगं मरणमणावुट्ठि आतवं सस्सवापदं । विष्पयोगं विवादं च सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १३९४ ॥ 20
 जीवितं जयमारोगं वस्सारतं सवासकं । णट्ठिकं सस्ससंपत्तिं सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १३९५ ॥
 कर्त्तमिं दिसं त्ति वा बूया पच्छिमं त्ति वियागरे । धणं धणं त्ति पुच्छेज्ज अधणं त्ति वियागरे ॥ १३९६ ॥
 अप्पसत्थं च जं किंचि सव्वमत्थि त्ति णिद्दिसे । जं किंचि पसत्थं सा सव्वं णत्थि त्ति णिद्दिसे ॥ १३९७ ॥
 वण्णतो कालगं बूया पच्छिमं दिसमादिसे । अप्पसत्थं वदे अत्थं अतीतं णर-णारिणं ॥ १३९८ ॥
 अतिवत्तेसु आदेसो जधा दिट्ठो सुभा-ऽसुभो । पच्छिमेसु वि एमेव फलं बूया सुभा-ऽसुभं ॥ १३९९ ॥ 25
 अतिवत्तेसु जे सद्दा पुव्वं तु परिकित्तिता । पच्छिमेसु वि एमेव तुल्लत्थे फलतो वदे ॥ १४०० ॥
 ॥ पच्छिमाणि ॥ ८७ ॥ छ ॥

[८८ सत्तरस दक्खिणा]

30

जाणेव दक्खिणाणां ताणेव दक्खिणाणि तु । पुरिसत्थे पसत्थाणि णिद्दिसे दस सत्त य ॥ १४०१ ॥
 सामेवातं वदे वण्णं दक्खिणं दिसमादिसे । वत्तमाणं सुभं अत्थं पुरिसाणं पवेदये ॥ १४०२ ॥
 दक्खिणेसु जधा दिट्ठो सव्वो अत्थो सुभा-ऽसुभो । दक्खिणेसु वि एमेव फलं बूया सुभा-ऽसुभं ॥ १४०३ ॥ छ ॥

१ जीवितं अत्थि वस्सा हं० त० ॥ २ कर्त्तमं हं० त० ॥ ३ चतुस्सकोष्ठकान्तर्गतः पाठः सम्बन्धानुसारेणानुसन्धितोऽस्ति ॥
 ४ हस्तचिह्नान्तर्गतमुत्तरार्द्धं हं० त० एव वर्तते ॥ ५ सो पच्छिमे णत्थि हं० त० ॥ ६ पच्छित्तो गतो हं० त० विना
 । ७ पच्छिमेव तु एमेव सप्र० ॥ ८ दक्खिणेण तु सं ३ पु० ॥ ९ धणं हं० त० ॥

[८९ सत्तरस उत्तरा]

जाणेव होंति वामाणि ताणेव उत्तराणि तु । थोणं कल्लणभागीणं णराणं ण प्सस्सते ॥ १४०४ ॥
 सामं कालं वदे वण्णं उत्तरं णिद्दिसे दिसं । वत्तमाणं सुभं अत्थं पमदाणं पवेदये ॥ १४०५ ॥
 जधा वामेसु सव्वेसु अत्थो ८८ दिट्ठो सुभा-ऽसुभो ८९ । उत्तरेसु वि एमेव फलं बूया सुभा-ऽसुभं ॥ १४०६ ॥
 5 वामभागेसु जे सद्दा पुव्वमेव तु कित्ति या । उत्तरेसु वि ते चेव सद्दे तुल्लफले वदे ॥ १४०७ ॥ छ ॥

[९० सत्तरस दक्खिणपुरच्छिमा]

पुरिमाणं दक्खिणाणं च मज्झे अंगाणि जाणि तु । पुव्वदक्खिणभागाणि पसत्थाणि वियागरे ॥ १४०८ ॥
 अत्थलाभं जयं वा वि वद्धि च परिपुच्छति । साधारणं वदे अत्थं फलतो पुरिमदक्खिणं ॥ १४०९ ॥
 पुरिसं इत्थि च अत्थं च पुच्छे णि आमसं । पुरिमाणं दक्खिणाणं च फलं वामिस्समादिसे ॥ १४१० ॥
 10 कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्था सुत्ता ति य । धण्णा य सुहभागी य खिप्पं विज्जेहिते ति य ॥ १४११ ॥
 गब्भमत्थि ति जाणीया गब्भिणी दारकम्मि य । खिप्पं पजायते णारी कम्मं साधारणं वदे ॥ १४१२ ॥
 पवासो पुच्छेते सफलो पउत्थं पुव्वदक्खिणं । दिसं गतो ति जाणीया सधणो खिप्पमेहिति ॥ १४१३ ॥
 बंधं भयं विग्गहं रोगं मरणं आतवं तधा । अवुट्ठिं सस्सवापत्ती सस्सं(सव्वं) णत्थि ति णिद्दिसे ॥ १४१४ ॥
 बद्धस्स मोक्खं खेमं च संधिं च जयमेव य । आरोगं जीवितं चेव उग्गाहं वाधितस्स य ॥ १४१५ ॥
 15 वस्सारतं च वासं च ८९ सव्वं नट्टस्स दंसणं । तहा खित्तं तहा वत्थुं ९० सव्वमत्थि ति णिद्दिसे ॥ १४१६ ॥
 कतमं दिसं ति वा बूया वदे पुरिमदक्खिणं । धण्णं धणं ति पुच्छेज्जा वदे उक्कट्टमज्झिमं ॥ १४१७ ॥
 जं किंचि पसत्थं सा सव्वमत्थि ति णिद्दिसे । अप्सत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि ति णिद्दिसे ॥ १४१८ ॥
 उवातं णिद्दिसे वण्णं दिसं पुरिमदक्खिणं । अत्थं अणागतं सव्वं पसत्थं णिद्दिसे सता ॥ १४१९ ॥
 अणागतेसु जे सद्दा जे सद्दा दक्खिणेसु य । पुव्वदक्खिणसद्दाणं ते सद्दे णिद्दिसे समे ॥ १४२० ॥ छ ॥

[९१ सत्तरस दक्खिणपच्चत्थिमा]

दक्खिणाणं च सव्वेसि पच्छिमाण य अंतरा । अंगा ण प्सस्संते जधा अत्थो णपुंसको ॥ १४२१ ॥
 अत्थलाभं जयं वद्धि एताणि जति पुच्छति । जं किंचि पसत्थं सा सव्वं णत्थि ति णिद्दिसे ॥ १४२२ ॥
 अधण्णं दूभगं वा वि अणवज्जं णरं वदे । एवमेव य णारीणं णिरत्थं अत्थमादिसे ॥ १४२३ ॥
 गब्भं पुच्छे ण भवति गब्भिणी जणये मतं । कम्मपुच्छाय णिद्दिसे णिरत्थं कम्ममादिसे ॥ १४२४ ॥
 25 णिरत्थकं पवासं च पोसियं च णिरत्थकं । गतं अवरदक्खिणतो चिरकाले य णिद्दिसे ॥ १४२५ ॥
 बंधं पुच्छे ण भवति बद्धो खिप्पं च मुच्चति । बद्धस्स यावि मुत्तस्स पवासो सिग्घमेव उ ॥ १४२६ ॥
 खेमं पुच्छे ण भवति भयं पुच्छे भविस्सति । संधिं पुच्छे ण भवति विग्गहो बहुसो भवे ॥ १४२७ ॥
 जीवितं जयमारोगं उग्गाहं आतुरस्स य । वस्सारतं च वासं च सस्सं णट्टस्स दंसणं ॥ १४२८ ॥
 खेतं वत्थुं धणं धण्णं थाणमिस्सरियं जसं । जं च किंचि पसत्थं सा सव्वं णत्थि ति णिद्दिसे ॥ १४२९ ॥
 30 पराजयमणावुट्ठिं रोगं मरणमातवं । सस्सस्स वा वि आवर्त्ति णत्थि तेवं वियागरे ॥ १४३० ॥
 कतमं दिसं ति वा बूया वदे अवरदक्खिणं । धण्णं धणं ति पुच्छेज्जा अधण्णं ति वियागरे ॥ १४३१ ॥
 सामोवातं वदे वण्णं दिसं अवरदक्खिणं । अप्सत्थं वदे अत्थं अतीतं णर-णारिणं ॥ १४३२ ॥
 दक्खिणेसु य जे सद्दा अतीतेसु य जे भवे । दक्खिणापरसद्दाणं ते सद्दे णिद्दिसे समे ॥ १४३३ ॥ छ ॥

१ ८८ ८९ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ २ परमदक्खिणं हं० त० ॥ ३ च वयं सप्र० ॥ ४ हस्तचिह्नान्तर्गतः
 पाठः हं० त० एव वर्त्तते ॥ ५ धण्णं हं० त० ॥ ६ व ति अं हं० त० ॥

[१२ सत्तरस उत्तरपच्चत्थिमा]

पच्छिमाणं च सव्वेसि उत्तराणं च अंतरा । अप्पसत्था भवन्ते जधा अत्थे णपुंसके ॥ १४३४ ॥
आदेसो तु जधा दिट्ठो [पुव्वं] दक्खिणपच्छिमे । तधेव सव्वमादेसं बूया उत्तरपच्छिमे ॥ १४३५ ॥
वण्णतो कालतं बूया दिसं च अवरोत्तरं । अप्पसत्थं च णारीणं अत्थं बूया अतिच्छियं ॥ १४३६ ॥ छ ॥

[१३ सत्तरस उत्तरपुरत्थिमा]

5

उत्तराणं च जे अंगा पुरिमाणं च अंतरा । थीणामत्थे पसत्था तु विण्णेया दस सत्त य ॥ १४३७ ॥
पुव्वदक्खिणतो दिट्ठो जधा अत्थो सुभा-ऽसुभो । तधेव पुव्वुत्तरतो सव्वं बूया सुभा-ऽसुभं ॥ १४३८ ॥
सामकालं वदे वण्णं दिसं च पुरिमुत्तरं । अणागतं सुभं अत्थं णारीणं तं पवेदये ॥ १४३९ ॥
अणागता य जे सद्दा जे य वामेसु कित्तिता । पुरिमुत्तरसद्दाणं एते सद्दे समे वदे ॥ १४४० ॥ छ ॥

[१४ दुवालस उद्धभागा]

10

पुरिमेण उच्चं जाणेज्जो पच्छिमे हस्समादिसे । वामदक्खिणतो वा वि चतुरस्सं वियागरे ॥ १४४१ ॥
पुरिमेण थूलं जाणेज्जो पच्छिमेण किसं वदे । समोवयितगतं च वामदक्खिणतो वदे ॥ १४४२ ॥
उल्लोकितम्मि सव्वम्मि आमट्ठम्मि सिरम्मि य । उम्मज्जिताभिपट्ठे य दूरम्मट्ठे तधेव य ॥ १४४३ ॥
उट्ठिते उस्सिते यावि उक्खितुव्वरितम्मि य । उण्णते उण्णमंते य सद्दे आकासकम्मि य ॥ १४४४ ॥
जं चऽण्णं एवमादीयं आकासपडिरूवितं । एतम्मि सदरूवम्मि दिसं उट्ठं वियागरे ॥ १४४५ ॥ छ ॥

15

[१५ तेरस अधोभागा]

ओलोकिते य सव्वम्मि अवमट्ठा-ऽपमज्जिते । णिम्मज्जिते य णिम्मट्ठे सव्वमोसारितम्मि य ॥ १४४६ ॥
णिक्खिते णिहिते यावि ओतिण्णोत्तारितम्मि य । उम्मट्ठे ये णिवुट्ठे य सव्वभूमिगतम्मि य ॥ १४४७ ॥
जं चऽण्णं एवमादीयं अधोभागं विधीयते । एतम्मि सद्दरूवम्मि दिसं बूया तु हेट्ठिमं ॥ १४४८ ॥

॥ दिसापडलं ॥ ८८-९५ ॥ छ ॥

20

[१६-१९ पसण्णा-ऽपसण्णपडलं]

[१६ पण्णासं पसण्णा]

अब्भंतरे य उम्मट्ठे पसण्णते वियागरे । अब्भंतरत्थेण वदे विसिद्धतरकं फलं ॥ १४४९ ॥
एताणि आमसं पुच्छे अत्थलाभं जयं तधा । जं च किंचि पसत्थं तं सव्वमत्थि ति णिदिसे ॥ १४५० ॥
पुरिसं च परिपुच्छेज्ज सिद्धत्थो सुभगो ति य । धण्णो य सुहभागी य सम्मोईबहुलो भवे ॥ १४५१ ॥ 25
इत्थि च परिपुच्छेज्जा सिद्धत्था सुभग ति य । धण्णा य सुहभागी य सम्मोईबहुला भवे ॥ १४५२ ॥
पुरिसस्सऽत्थविधं पुच्छे सम्मोईसु भविस्सइ । थिया अत्थविहं पुच्छे सम्मोई य भविस्सइ ॥ १४५३ ॥
कण्णं च परिपुच्छेज्जा धण्णा विज्जिहिते लहुं । रण्णो य अब्भंतरां भत्तारं सा लभिस्सति ॥ १४५४ ॥
गब्भं च परिपुच्छेज्ज अत्थि गब्भो ति णिदिसे । गब्भिणि परिपुच्छेज्जा जणये पुत्तमुत्तमं ॥ १४५५ ॥
कम्मं च परिपुच्छेज्जा रण्णो अब्भंतरं वदे । महाजणस्स णिदेसं करिस्सति य कम्मणा ॥ १४५६ ॥ 30
पवासं परिपुच्छेज्जा सफलो ति वियागरे । पउत्थं परिपुच्छेज्जा संधणो खिप्पमेहिति ॥ १४५७ ॥

१ 'णं च प' हं० त० ॥ २ 'मेस्स' हं० त० ॥ ३ ओणते हं० त० ॥ ४ 'सजम्मि' हं० त० ॥ ५ या णिवुट्ठे य हं० त० ॥
६ सदलूयम्मि हं० त० ॥ ७ सोमाई' सं ३ पु० ॥ ८ हस्तचिह्नान्तर्गतमुत्तरार्द्धं हं० त० एव वर्तते ॥ ९ सधण्णो हं० त० विना ॥

बंधं भयं विगहं [च] रोगं मच्चु य वासकं । अपातयं सस्सवापत्तिं सव्वं णत्थि त्ति णिदिसे ॥ १४५८ ॥
 बद्धस्स मोक्ख णासं विजयाऽऽरोगं च जीवितं । आतुरस्स समुट्ठाणं वस्सारत्तं सवासकं ॥ १४५९ ॥
 णट्ठस्स दंसणं वा वि सस्ससंपत्तिमुत्तमं । मित्ति सम्मोइ संपीति सव्वमत्थि त्ति णिदिसे ॥ १४६० ॥
 जं च किंचि पसत्थं सा सव्वमत्थि त्ति णिदिसे । अप्सत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि त्ति णिदिसे ॥ १४६१ ॥
 5 सव्वमभ्भंतस्त्थं च पुण्णामत्थो य जो भवे । जधुत्तमणुगंतूणं पसण्णेसु वि तं वदे ॥ १४६२ ॥ छ ॥

[१७ पण्णासं अप्सण्णा]

अभ्भंतरे य णिम्मट्ठे अप्सण्णे वियागरे । अत्थहारिणं विणासं च सव्वं च असुभं वदे ॥ १४६३ ॥
 णमो अरहंताणं, णमो आयरियाणं, णमो ऋरिक्सुत्ताणं, जे एकपदं द्विपदं बहुपदं वा विज्जामंतपयं धारयंति
 तेसि णमोक्काइत्ता इमं विज्जा(ज्जं) पजोजयिस्सं, सा मे विज्जा समिज्जतु, णमो अरहतो वद्धमाणस्स, जधा भगवती
 10 अंगदेवी सहस्सपरिवारा समणं भगवंतं महावीरं पुंवि सच्चवपतिट्ठिए लोए तेणं सच्चवयणेणं सा मं अंगदेवी उत्थातु,
 जधा दक्खिणस्स अद्धलोगस्स मघवं देवाणं इंदे आधिपच्चं पोरैपच्चं कारयति एतेण सच्चवयणेण सा मं अंगदेवी
 उवत्थायतु, उत्तरस्स अद्धलोगस्स ईसाणे महाराया आधिपच्चं पोरैपच्चं कारयति एतेण सच्चवयणेण सा मं अंगदेवी
 उवत्थायतु, तधेव देविदस्स चत्तारि लोगपाला देवा य वयणेणमुपगता एतेण सच्चवयणेण अमुको अत्थो सिज्जतु
 त्ति । मणम्मि सिक्खिते पढितव्वा । छट्ठग्गहणी एस विज्जा ॥

णपुंसकाणं जो अत्थो बाहिरत्थो य जो भवे । तं सव्वं अप्सण्णेसु तधेव फलमादिसे ॥ १४६४ ॥ छ ॥

[१८-१९ पण्णासं अप्सण्णपसण्णा पसण्णअप्सण्णाणि य]

अप्सन्ने पसन्ने य पण्णासं चेव णिदिसे । अभ्भंतरे संविमट्ठा ण ते पढमकप्पिता ॥ १४६५ ॥
 पसन्ने अप्सन्ने य पण्णासं चेव णिदिसे । अभ्भंतरे तु अपमट्ठा अप्सन्ना भवंति ते ॥ १४६६ ॥
 अभ्भंतरे तु पण्णासं आमट्ठा जे अवत्थिता । पसत्थे ते वियाणेज्जा पसन्नतरका हि ते ॥ १४६७ ॥
 20 अभ्भंतरे य पण्णासं विमट्ठा जे पुणो पुणो । अप्सत्थे वियाणीया अप्सण्णतरा हि ते ॥ १४६८ ॥
 ॥ पसण्ण-अप्सण्णाणि १६-१९ ॥ छ ॥

[१००-३ वामपडलं]

[१००-१०३ सोलस वामा पाणहरा इच्चाइ]

अच्छीणि कन्ना संखा य हितयं णाभी कडी तथा । पस्सं संधितला सव्वे वामा पाणहरा भवे ॥ १४६९ ॥
 25 हिययं १ बाहुसंधी य ३ कक्खा ५ हत्था ७ ककाडिका ८ ।
 गोप्फा १० अक्खीणिकण्णा य १२ संखा १४ पादा य १६ सोलस ॥ १४७० ॥
 एते तु पीलिता सव्वे वामा धणहरा भवे । अपीलिता य उम्मट्ठा सोलसेव धणाहरा ॥ १४७१ ॥
 णपुंसका तु णिम्मट्ठा वामा सोवद्दवा मता । णपुंसके हि पावतरं फलं तेहि वियागरे ॥ १४७२ ॥ छ ॥
 अंगुट्ठा ४ अंगुलीओ य २० बाला ३० णिम्मज्जिता तथा । तीसं तु साहा वामे अंगे एते वियागरे ॥ १४७३ ॥
 30 संखावामेसु एतेसु थीणा बूया उवद्दवं । बहुसाधारणं अत्थं एतप्पच्चयमादिसे ॥ १४७४ ॥
 पुरिसं च परिपुच्छेज्ज बहुसाधारणं वदे । महाजणं च पोसेति पेसेति य महाजणं ॥ १४७५ ॥
 इत्थि च परिपुच्छेज्ज बहुसाधारणं वदे । महाजणं च पोसेति पेसेति य महाजणं ॥ १४७६ ॥
 पुरिसस्सऽत्थविधं पुच्छे तं साधारणमादिसे । थिया अत्थविधं पुच्छे तं पि साधारणं वदे ॥ १४७७ ॥

१ 'त्थो जयो भवे हं० त० ॥ २ वि यं वदे हं० त० ॥ ३ झरिक्कभुत्ताणं सं ३ पु० । झरिक्कपुत्ताणं सि० ॥ ४ पसण्णो व
 विया' हं० त० ॥ ५ 'सण्णेतारा हं० त० विना ॥ ६ अत्र अक्षिणी कणौ च इति भिन्नपदविधाने अष्टादशाङ्गसंख्या भवति, अनिष्टा
 ह्यसौ, अतः 'अक्षिकणौ अपाङ्गौ' इत्यर्थं सम्भाव्य अक्खीणिकण्णा इति एकपदत्वेन स्थापितमस्ति, अत्रार्थे तज्ज्ञा एव प्रमाणम् ॥

कण्णं च परिपुच्छेज्ज सिग्घं अभिवरा भवे । महाणपैसकं वा पि समिद्धं लभते वरं ॥ १४७८ ॥
 गब्भं च परिपुच्छेज्जा बहुसो तु पजायति । गब्भिणीं परिपुच्छेज्जा वामणं जणयिस्सति ॥ १४७९ ॥
 कम्मं च परिपुच्छेज्जा बहुसाधारणं वदे । महप्फलेण कम्मेण तोसेहिति महाजणं ॥ १४८० ॥
 पवासं परिपुच्छेज्जा भविस्सति बहुप्फलो । पोसितं परिपुच्छेज्जा लभिस्सति बहुं धणं ॥ १४८१ ॥
 बंधं च परिपुच्छेज्जा बहुसो बज्झति त्ति य । बद्धस्स मोक्खं पुच्छेज्जा खिप्पं मुच्चिस्सते त्ति य ॥ १४८२ ॥ 5
 भयं च परिपुच्छेज्जा बहुसो त्ति वियागरे । खेमं च परिपुच्छेज्जा चिरं खेमं भविस्सति ॥ १४८३ ॥
 संधिं च परिपुच्छेज्जा साधारणमादिसे । विग्गहं परिपुच्छेज्ज महाणेण तु विग्गहो ॥ १४८४ ॥
 जयं च परिपुच्छेज्ज जयिस्सति महाजणं । आरोगं परिपुच्छेज्ज आरोगं सउवद्दवं ॥ १४८५ ॥
 रोगं च परिपुच्छेज्ज बहुरोगो भविस्सति । मरणं च परिपुच्छेज्ज परिकिट्ठो मरिस्सति ॥ १४८६ ॥
 जीवितं परिपुच्छेज्ज सरोगं जीवितं चिरं । आबाधितं च पुच्छेज्जा समुट्ठाणं चिरा भवे ॥ १४८७ ॥ 10
 अणावुट्ठिं च पुच्छेज्जा णत्थि तेवं वियागरे । वस्सारतं च पुच्छेज्जा बहुमेघं वियागरे ॥ १४८८ ॥
 अपातयं च पुच्छेज्ज णत्थि तेवं वियागरे । वासं च परिपुच्छेज्ज चिरं वासं तु णिदिसे ॥ १४८९ ॥
 सैस्सस्स वापयं पुच्छे णत्थि तेवं वियागरे । सस्सस्स संपयं पुच्छे विचित्ता सस्ससंपया ॥ १४९० ॥
 अप्ससत्थं च जं किंचि सव्वं णत्थि त्ति णिदिसे । जं च किंचि पसत्थं सा सव्वं साधारणं वदे ॥ १४९१ ॥
 तथा खेतं तथा वत्थुं सव्वं साधारणं वदे । धणं धणं त्ति पुच्छेज्जा तं पि साधारणं वदे ॥ १४९२ ॥ 15
 साधारणम्मि णक्खत्ते देवते णिधिम्मि य । पुप्फे फले व देसे वा णगरे गाम गिहे वि वा ॥ १४९३ ॥
 पुरिसे चतुप्पदे वा वि पक्खिम्मि उदगेचरे । कीडे किविल्लगे वा वि परिसप्पे तधेव य ॥ १४९४ ॥
 पाणे वा भोयणे वा वि वत्थे आभरणे तथा । आसणे सयणे जाणे भंडोवगरणे तथा ॥ १४९५ ॥
 लोहेसु यावि सव्वेसु सव्वेसु रयणेषु य । मणीसु यावि सव्वेसु सव्वधण्ण-धणेषु य ॥ १४९६ ॥
 एतम्मि पेक्खियामासे सदे रूवे तधेव य । सव्वमेवाणुगंतूणं ततो बूयांगचित्तओ ॥ १४९७ ॥ 20

॥ वामा सम्पत्ता ॥ १००-१०३ ॥ छ ॥

[१०४ एकारस सिवा]

णिळलं १ दस णिद्धाणि ११ उम्मट्ठाणि जया भवे । एकारस सिवा एते पुच्छित्तम्मि पसस्सते ॥ १४९८ ॥
 जधा पुण्णामधेयेसु आदेसो तु विधीयते । विसिद्धतरां अत्थं तथा बूया सिवेसु वि ॥ १४९९ ॥ छ ॥

[१०५ एकारस थूला]

25

उँभो ऊरु २ उरो ३ पट्टी ४ सिरं ५ गंडा ७ थणा ९ फिओ ११ ।

एते थुल्ला पसस्संते थुल्लं वऽत्थं वियागरे ॥ १५०० ॥

एताणि आमसं पुच्छे पुरिसं थी णपुंसकं । उदगेचर परीसप्पं मच्छ पक्खि चतुप्पदं ॥ १५०१ ॥
 कीडं किविल्लं वा वि जं चऽण्णं जंगलं भवे । सव्वथुल्लं वियाणीया थुल्लं वऽत्थं वियागरे ॥ १५०२ ॥
 सजीवं जीवमाधारे सजीवमिति णिदिसे । थुल्लो किसो त्ति वा बूया थुल्लो तेवं वियागरे ॥ १५०३ ॥ 30
 अप्पं बहुं त्ति आहारे बहु तेवं वियागरे । समे सदे य जाणेज्जा थुल्ला जे मणिके मता ॥ १५०४ ॥

१ 'पेसिकं' हं० त० ॥ २ 'महाफलेण' हं० त० ॥ ३ 'च बहुपु' हं० त० ॥ ४ 'सिग्घं' हं० त० ॥ ५ 'हस्तचिह्नान्तर्गतं' पूर्वार्द्धं हं० त० एव वर्तते ॥ ६ 'रणम्मि य' हं० त० ॥ ७ 'उभो' हं० त० ॥ ८ 'ल्लो' एवं हं० त० ॥

थूलं वडुं वरदं ति परिवूढं ति वा पुणो । पीणं उवचितं व ति पीवरं मांसलं ति वा पुणो ॥ १५०५ ॥
 महासारं महाकायं अतिकायं ति वा पुणो । मंडं ति बहलं व ति पुत्थव्वा मेदितं ति [वा] ॥ १५०६ ॥
 रूढं ति समतुंबं ति उद्धुमातं ति वा पुणो । सम्मतं अतिपुण्णं ति अव्वंगं ति व जो वदे ॥ १५०७ ॥
 जे यऽन्ने एवमादीया पज्जवा थुल्लसंसिता । तस्स संकित्तासदा ते थुल्लसममादिसे ॥ १५०८ ॥ छ ॥

5

[१०६ णव उवथूला]

जंघा २ सिसो ३ ऽधरा ५ बाहू ७ हत्थपादा तधेव य ९ । उवथूलाणि एताणि उम्मट्ठाणि पस्सते ॥ १५०९ ॥ छ ॥

[१०७ पणुवीसं जुत्तोपचया]

अंगुट्ठा ४ अंगुलीओ य २० णिडालं २१ चिबुकोट्टयो २४ ।

णासा य २५ जुत्तोपचया जधुत्तेणं वियागरे ॥ १५१० ॥ छ ॥

10

[१०८-१०९ वीसं अप्पोवचया वीसं णातिकिसा य]

ते चेव अप्पोवचया ते य णातिकिसा मता । अंगुट्ठा ४ अंगुलीओ य २० जधुत्तेण वियागरे ॥ १५११ ॥ छ ॥

[११० सत्तरस किसा]

गोप्फा २ जैण्णुगसंधी य ४ मणिबंधा ६ उवत्थगा ७ ।

[कण्ण] संधी ९ भुमासंधी ११ संखा १३ पट्टी य १४ कुकुडा १५ ॥ १५१२ ॥

15

अवडू १७ सत्तरसा उता किसे एते वियाणिया । चलं बज्झं मुहं वत्थं कस्सं जतं वियागरे ॥ १५१३ ॥

थुल्लं किसं ति वा बूया कसं तेवं वियागरे । समे सदे य जाणेज्जो किंसा ये मणिके मता ॥ १५१४ ॥

कसं परिकसं व ति अणुं ति अणुकं ति वा । दुब्बलो ति किसो व ति उल्लुत्तो ति व जो वदे ॥ १५१५ ॥

णिम्मंसको ति वा बूया तधा अट्टिकलेवरं । अट्टिकं चम्मणद्धं ति तधा अट्टिकसंकला ॥ १५१६ ॥

सुक्कलो ति व जो बूया णिस्सुक्को ति व जो वदे । ओडीणं परिहीणं ति मातं ति मेलितं ति वा ॥ १५१७ ॥

20

जे यऽण्णे एवमादीया पज्जवा किससंसिता । णामसंकित्ते तेसिं किसेहि सममादिसे ॥ १५१८ ॥ छ ॥

[१११ एक्कारस परंपरिकसा]

परंपरिकसा उता खलुका २ जाणुक ४ ठेल्लिका ६ ।

कोप्परा ८ केस ९ रोग(रोम) १० हणं(णहं) ११ अप्पसत्था भवंति ते ॥ १५१९ ॥

थूलेसु थूलमत्थं उवथूले अणुत्तरं । जुत्तोपचये जुत्तथा ततो बूया अणुत्तरं ॥ १५२० ॥ छ ॥

25

[११२ छवीसं दिग्धा]

बाहू २ पबाहू ४ जंघो ६ रु ८ सोलसंगुलिओ २४ तथा ।

केसे २५ पट्टी य २६ जाणीया दीहाणेताणि अंगवी ॥ १५२१ ॥

दीहाणेताणि छवीसं उम्मट्ठाणि जता भवे । पुच्छितम्मि पसस्सते इत्थेणमभिणिदिसे ॥ १५२२ ॥

१ वदं वरदं ति परिवूढं हं तं ॥ २ मंदं ति बहुलं व ति पुच्छवा मे हं तं ॥ ३ संसत्तं सप्रं ॥ ४ पुत्तं ति हं ॥ ५ तं थुल्लं समं सं ३ सिं । तं थूलं समं हं तं ॥ ६ जत्तुगं हं तं विना ॥ ७ कस्सं जंते वि हं तं । कसं जंतं वि सिं ॥ ८ किसं हं तं विना ॥ ९ कसा हं तं ॥ १० कस परिकस व्व सप्रं ॥ ११ अण्णं ति अणुकं ति हं तं ॥ १२ ति विया भो वदे हं तं ॥ १३ चम्मणिद्धं सं ३ पुं । चम्मणद्धं हं तं ॥ १४ सुक्खल्ले ति व जो बूया णिस्सुक्खो ति हं तं विना ॥ १५ ओरीणं हं तं । ओडीणं सिं ॥ १६ मलिन ति हं तं ॥ १७ खुल्लका हं तं विना ॥ १८ कोसलोगहणं हं तं ॥ १९-२० अणंतरं हं तं विना ॥ २१ इच्छेण हं तं विना ॥

दीहो पंथो दीहमायुं दीहकालं च णिद्दिसे । दीहं थीपुमंसव्वमेत्ती पेम्मं च स णिद्दिसे ॥ १५२३ ॥

दीहं च पीतिसंजोगं संधी जोगं च णिद्दिसे । समे सदे य जाणेज्जा दीहा जे मणिके मता ॥ १५२४ ॥

दीहमुच्चं महंतं ति रज्जुको रण्हको ति वा । केआ अंछणिका व ति वरत ति अहि ति वा ॥ १५२५ ॥

वंसो खलु धयो व ति जुगमत्थो ति वा पुणो । मुसलं दंडको लट्ठी णारायो तोमरो ति वा ॥ १५२६ ॥

चाप ति हडिका व ति कौतं कंडं ति वा पुणो । असिलट्ठी तरवच्च ति धणुभाग ति वा पुणो ॥ १५२७ ॥ 5

जे येऽण्णे एवमादीया पायया (पज्जया) दिग्घसंसिता । तेसि संकित्ताणासदा ते दिग्घसमका भवे ॥ १५२८ ॥

॥ दिग्घा[णि] सम्पत्ताणि ॥ ११२ ॥ छ ॥

[११३ छव्वीसं जुत्तप्पमाणदिग्घा]

भुम २ ऽखि ४ णासा ६ जचूणि ८ मेंढ ९ त्थविका ११ सिरा १२ ऽधरा १४ ।

जिब्भं १५ गुट्ठग १९ लोमाणि २० पाणिलेहा २६ तथेव य ॥ १५२९ ॥ 10

जुत्तप्पमाणदीहा तु एते छव्वीसमाहिता । अपीलित्ता अणुम्मट्ठा पुच्छितम्मि पसस्सते ॥ १५३० ॥ छ ॥

[११४ सोलस हस्सा किंचि दिग्घा]

हस्सा य किंचि दिग्घा य सोलसंगे वियाहिया । पुरिमा किंचि उम्मट्ठा पुच्छितम्मि पसस्सते ॥ १५३१ ॥ छ ॥

[११५ सोलस हस्सा]

हस्सा य सोलसंगम्मि णिम्मट्ठा तु पुरत्थिमा । पुच्छिते ण पसस्सते हस्सं चऽत्थ वियागरे ॥ १५३२ ॥ 15

दीहेसु जं फलं वुत्तं हस्सं हस्सेसु तं वदे । समे सदे य जाणेज्जो हस्सा जे मणिके मता ॥ १५३३ ॥

रहस्सं मडहकं व ति संखितं खुडितं ति वा । रुद्धं ति सण्णिरुद्धं ति संपीलितं ण पीलितं ॥ १५३४ ॥

संपिडितं पेडितं ति सन्नद्धं सन्निकासियं । अप्पं थोवं ति किंचि ति अतिथोवं ति वा पुणो ॥ १५३५ ॥

आकुंडितं संहितं ति तथा संवेल्लितं ति वा । उस्सारितं ति णिम्मट्ठं अवमट्ठाऽपमज्जियं ॥ १५३६ ॥

जे यऽण्णे एवमादीया पायवा(पज्जवा) हस्ससंसिता ।

20

तेसि संकित्ताणासदा ते हस्ससमका भवे ॥ १५३७ ॥ छ ॥

[११६ दस परिमंडला]

मत्थगो १ बाहुसीसाणि ३ जाणूसिस्साणि बे तथा ५ ।

थणा ७ णाभी ८ फिओ चेव १० दसेते परिमंडला ॥ १५३८ ॥

सिरं १ ललाट २ गंडा य ४ संखे ६ कन्ने य ८ करतले १० । केयि एते ववस्संति दसेव परिमंडले ॥ १५३९ ॥ 25

एते सव्वे पसस्संति उम्मट्ठा परिमंडला । परिमंडलसदे य तुल्लत्थे उवधारए ॥ १५४० ॥

मंडलं ति व जो बूया परिमंडलमेव वा । अद्दगमंडलं व ति अधवा मंडलस्सति ॥ १५४१ ॥

णक्खत्तमंडलं व ति  अधवा जोइसमंडलं । आदित्तमंडलं व ति  अधवा चक्कमंडलं ॥ १५४२ ॥

समयमंडलं व ति तथेव रिसिमंडलं । जं मंडलं ति वा बूया अधवा चक्कमंडलं ॥ १५४३ ॥

१ मायं हं तं विना ॥ २ संघं योगं हं तं विना ॥ ३ दीहं मुच्चं महंतं ति सप्रं ॥ ४ रज्जुको हं तं ॥ ५ केसा अं हं तं ॥ ६ वयो सप्रं ॥ ७ मच्छे ति हं तं विना ॥ ८ ति कायकं ति हं तं ॥ ९ धणंभाग हं तं ॥ १० अण्णे हं तं ॥ ११ पादोया हं तं ॥ १२ गुट्ठंगरोमाणि हं तं ॥ १३ रस्सा य कीवि हं तं ॥ १४ अकुंडितं हं तं ॥ १५ ओसारितं सं ३ पुं ॥ १६ हुस्स हं तं ॥ १७ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं तं एव वर्तते ॥

- संखमंडलके व त्ति तथा मंडलको त्ति वा । णापुणमंडलं व त्ति अधवा अट्टमंडलं ॥ १५४४ ॥
 मंडलासं त्ति वा बूया अधवा छेत्तमंडलं । उवलेवमंडलं व त्ति किमिमंडलिकारिका ॥ १५४५ ॥
 पंचमंडलिको व त्ति तैधेवापंचमंडलं । माकणीकणिकं व त्ति लक उद्धलक त्ति वा ॥ १५४६ ॥
 तलकणिक त्ति वा बूया वद्धको तलपत्तकं । परिहेरकं त्ति तलभं त्ति कण्णवल्लयकं त्ति वा ॥ १५४७ ॥
 5 खंडुकं मुद्धिका व त्ति वेढको कण्णपालिको । णीपुरं त्ति व जो बूया कण्णुप्पलकं त्ति वा ॥ १५४८ ॥
 पण्णेलिक त्ति वा बूया तथा सकडपट्टको । तथा पल्लत्थिकापट्टो तथा अकरपट्टको ॥ १५४९ ॥
 तधऽस्समंडलं व त्ति लोममंडलकं त्ति वा । बाहुमंडलकं व त्ति हत्थमंडलकं त्ति वा ॥ १५५० ॥
 तथा चक्कमंडलं व त्ति वातचक्कमंडलं । झल्लरीमंडलं व त्ति लेहपट्टिकमंडलं ॥ १५५१ ॥
 जे यऽन्ने एवमादीया लोए मंडलपज्जया । णामसंकित्तणे तेसिं परिमंडलसमं भवे ॥ १५५२ ॥ छ ॥

10

[११७ चोहस करणमंडला]

- करणोपसंहिता वऽण्णे भवन्ति परिमंडला । ते जधा होंति णायव्वा कित्तयिस्सामि तं विधि ॥ १५५३ ॥
 दक्खिणस्स य बाहुस्स मंडले १ वामकस्स य २ । एताणिं वे तत्तिथं च बाहुसंघातमंडलं ३ ॥ १५५४ ॥
 एतो चउत्थं विण्णेयं सत्थिसंघातमंडलं ४ । करे करे य चत्तारि अंगुलीमंडलाणि य १२ ॥ १५५५ ॥
 हत्थाणं च दोण्हं पि अंगुट्ठेहंगुलीहि य । संघायमंडलाइं दो आलेक्खकरणेण य १४ ॥ १५५६ ॥
 15 परिमंडलेसु पुव्वुत्तं उम्मट्टेसु तु जं फलं । फलं अणंतं ततो बूया करणमंडले ॥ १५५७ ॥
 ॥ परिमंडलाणि करणमंडलाणि ॥ ११६ ॥ ११७ ॥ छ ॥

[११८ वीसं वट्ट]

- हत्थ-पादंगुलीपेव्वा २० वीसं वट्टे वियागरे । अभिमुहा पसस्संते अप्पसत्था परम्मुहा ॥ १५५८ ॥
 वट्टं त्ति व जो बूया तथा वट्टतरं त्ति वा । अतिवट्टं त्ति वा बूया अहोवट्टं त्ति वा पुणो ॥ १५५९ ॥
 20 पेसाधणकवट्टो त्ति वट्टखेलणको त्ति वा । वेट्टखुरो त्ति वा बूया तथा वट्टमुहो त्ति वा ॥ १५६० ॥
 [.....] वट्टसीसो त्ति वा बूया वट्टमत्थो त्ति वा पुणो ॥ १५६१ ॥
 जं चऽण्णं एवमादीयं वट्टोदाहरणं भवे । तस्स संकित्तणासद्दा ते वट्टसमका भवे ॥ १५६२ ॥
 वट्टज्झायो ॥ ११८ ॥ छ ॥

[११९ बारस पुधूणि]

- 25 उरो १ ललाडं २ पट्टी य ३ पाद-पाणितलाणि य ७ ।
 कण्णपीढाणि ९ गंडा य ११ जिब्भा य १२ पिधुलाणि तु ॥ १५६३ ॥
 पुधूणि बारसेताणि उम्मट्टाणि पसस्सते । समे सदे य जाणेज्जो जे पुधू मणिके मता ॥ १५६४ ॥
 पुधुं त्ति पुधुलं व त्ति खेत्तं वत्थुं त्ति वा पुणो । तंसं त्ति आयतं व त्ति चतुरस्सं त्ति वा पुणो ॥ १५६५ ॥
 तस्सायतं त्ति वा बूया चतुरंसायतं त्ति वा । अत्थुतं पत्थुतं व त्ति संथितं संथडियं त्ति वा ॥ १५६६ ॥

१ 'सख' सि० । रुख' हं० त० ॥ २ 'लखो' त्ति हं० त० ॥ ३-४ 'मंडला' हं० त० विना ॥ ५ 'तवे' वा हं० त० ॥ ६ 'कणिकं' व त्ति लक...द्धलकड त्ति हं० त० ॥ ७ 'को तल' हं० त० विना ॥ ८ 'परिदेरिकं' विवलभं हं० त० ॥ ९ 'खंसुकं' हं० त० विना ॥ १० 'बुद्धिका' हं० त० ॥ ११ 'कण्णपीलको' हं० त० ॥ १२ 'पण्णालिकणिक' वा सि० । 'पणालिक' त्ति वा हं० त० ॥ १३ 'बहुधा' हं० त० ॥ १४ 'णि चेवतियं' हं० त० ॥ १५ 'पर्वशब्देनात्र' अग्रभागाः संभाव्यन्ते ॥ १६ 'एसावणकहं' त्ति 'बहुखेल' हं० त० ॥ १७ 'वट्टखुरो' हं० त० ॥

वित्थिन्नं वित्थतं व त्ति वित्थितं ति व जो वदे । वित्तं वियाणकं व त्ति तथा पत्थरियं ति वा ॥ १५६७ ॥
 ये वऽण्णे एवमादीया पज्जया पुधुसंसिता । णामसंकित्तणे तेसिं पुधूहिं सममादिसे ॥ १५६८ ॥
 ॥ पुधूणि ॥ ११९ ॥ छ ॥

[१२० एकतालीसं चउरंसा]

णिडालं १ णिडालपस्साणि ३ पाद—पाणितलाणि ७ य ।

5

पण्हीतला ९ कडीय तला ११ तीसं पव्वंतरंगुला ४१ ॥ १५६९ ॥

चउरंसा उकरालीसं उम्मट्ठभंतरा जधा । पुच्छित्तम्मि पसस्संते चतुरस्सं च णिदिसे ॥ १५७० ॥

॥ चतुरस्साणि ॥ १२० ॥ छ ॥

[१२१ बे तंसा]

वत्थी १ सीसं २ भवे तंसं तंसाकारो य जोऽवरो । खुज्जंगे पक्खपेंडं ति तं पि तंसं वियागरे ॥ १५७१ ॥ छ ॥ 10

[१२२ पंच काया]

थूला चेव तधूमट्ठा कायवंतो भवंतिह १ । तथा मज्झिमकाया तु उवथूला भवंतिह २ ॥ १५७२ ॥
 मज्झिमाणंतरा काया जुत्तोपचया भवंतिह ३ । तथा जधण्णकाया य कसेहि अभिणिदिसे ॥ १५७३ ॥
 जधण्णतरका काया परंपरकिसा भवे ५ । एवं पंचविधे काए वियाणेज्जंगचित्तओ ॥ १५७४ ॥
 थाणमिस्सरियं दव्वं लाभमायुं सुहाणि य । कालं चंऽगम्मि वि भवे कायेहेतेहिं पंचहिं ॥ १५७५ ॥ 15
 थूलेसु बूया उक्कट्टं उवथूले अणंतरं । एवं सेसेसु कायेसु बूया कच्छंतरेण तु ॥ १५७६ ॥

॥ थूलाणि (काया) ॥ १२२ ॥ छ ॥

[१२३ सत्तावीसं तणू १२४ एगवीसं परमतणू य]

पाद—पाणितला ४ कण्णा ६ जिब्भा चेव ७ णहाणि य २७ । सत्तावीसं तणू उत्ता थीणामत्थे पसस्सते ॥ १५७७ ॥
 अगगणहाणि सव्वाणि २० अगकेसा तधेव य २१ । एगवीसं परमतणू पुच्छित्ते ण पसस्सते ॥ १५७८ ॥ 20
 तणुकं ति व जो बूया तथा तणुकतरं ति वा । तथाऽतितणुकं व त्ति तणुकातितणुकं ति वा ॥ १५७९ ॥
 पयणू ति व जो बूया तथा पयणुतरं ति वा । तथाऽति[प]तणुकं व त्ति पतणुं पतणुं ति वा ॥ १५८० ॥
 तणुत्तयो तणुणहो तणुलोमो ति वा पुणो । तणुमज्झं ति वा बूया तथाऽतितणुको ति वा ॥ १५८१ ॥
 जे यऽण्णे एवमादीया पज्जवा तणुसंसिता । तेसिं संकित्तणे सद्वा ते तणूहिं समे वदे ॥ १५८२ ॥

॥ तणूणि ॥ १२३ ॥ १२४ ॥ छ ॥

25

[१२५ बे अणूणि १२६ एके परमाणू य]

केस—लोम—णहा मंसु बे अणूणि विधीयते । पुच्छित्ते ण पसस्संते अणुं ति य वियागरे ॥ १५८३ ॥
 अगकेसऽगलोमाणि णिम्मट्ठाणि यदा भवे । परमाणू वियाणीया पुच्छित्तेण पसस्सते ॥ १५८४ ॥
 परमाणू एको उत्तो थूला णिम्मट्ठसंजुता । अवसेसा जे भवंतंगे ते मज्झत्थे वियागरे ॥ १५८५ ॥ छ ॥

१ उकतालीसं सिं । उकतीलासं सं ३ पु० ॥ २ जो णरो हं० त० ॥ ३ कण्णा.....णि य सं ३ पु० ॥
 कण्णा जिब्भा, ओट्टा य अंगुली सिं ॥ ४ मूलद्वारेषु एक्कवीसं परंपरतणू १२४ इति नाम दृश्यते ॥

[१२७ पंच हितयाणि]

- पाद—पाणितलाणं च हितयाणि ४ हितयं च जं ५ । पंच एताणि हितयाणि पुच्छितम्मि पसस्सते ॥ १५८६ ॥
 हितिकं ति व जो बूया तधा हितिकतरं ति वा । तधाऽतिहितिकं व ति हितिकं हितिकं ति वा ॥ १५८७ ॥
 सुहितं ति व जो बूया तधा सुहिततरं ति वा । तधाऽतिसुहितं व ति सोहितं सोहितं ति वा ॥ १५८८ ॥
 ५ हितयं ति व जो बूया हितयत्थं ति वा पुणो । हितयस्स पिया व ति हितयाकूतं ति वा पुणो ॥ १५८९ ॥
 जे यऽण्णे एवमादीया पादवा हितयसंसिता । तेसि संकित्तणासद्वा हितयस्स समा भवे ॥ १५९० ॥ छ ॥

[१२८ पंच गहणाणि]

- केस १ मंसु २ अधोमंसु ३ उभो कक्खा ५ तधेव य । गहणाणि पंच जाणीया जधुत्तं च वियागरे ॥ १५९१ ॥
 किलेसबहुलं अत्थं गहणेसु वियाणिया । वाधि—सोग—परिकेसं गहणं च तं णिदिसे ॥ १५९२ ॥
 १० गहणं ति व जो बूया तधा गहणतरं ति वा । तधाऽतिगहणं व ति गहणं गहणं ति वा ॥ १५९३ ॥
 विरूढं ति व जो बूया विरूढतरकं ति वा । तधा अतिविरूढं ति विरूढं विरूढं ति वा ॥ १५९४ ॥
 रूढं ति व जो बूया तथा(धा) रूढतरं ति वा । अतिरूढं ति वा बूया रूढं रूढं ति वा पुणो ॥ १५९५ ॥
 घणकडतं ति वा बूया अतिघणकडतं ति वा । तधा संझडितं व ति अतिसंझडितं ति वा ॥ १५९६ ॥
 गहणं वणं ति वा बूया रूढं व गहणं ति वा । गहणा अडवी व ति णदी गहणं ति य ॥ १५९७ ॥
 १५ जे यऽन्ने एवमादीया पादवा गहणस्सिता । तेसि संकित्तणे सद्वा ते गहणसमा भवे ॥ १५९८ ॥ छ ॥

[१२९ पंच उपगहणाणि]

- भुमा बे २ अक्खिपम्हाणि ४ लोमवासि ५ तधेव य । पंचोपगहणे जाणे जधुत्तं च वियागरे ॥ १५९९ ॥
 गहणेसु जधा दिट्ठो सव्वो अत्थो सुभाऽसुभो । तधोपगहणेसु फलं णिदिसे तु अणंतरं ॥ १६०० ॥ छ ॥

[१३० छप्पणं रमणिज्जाणि]

- २० ओट्टा २ दंता ४ णिडालू ५ पाद—पाणितला ९ उरो १० । वीसमंगुलिपोट्टाणि ३० वीसर्ति च णहाणि तु ५० ॥ १६०१ ॥
 णासा ५१ णासपुट्टो ५२ चेव सोणी ५३ कण्णा ५५ समेहणा ५६ ।
 छप्पणं रमणिज्जाणि यधुत्तेण वियागरे ॥ १६०२ ॥
 अब्भंतरत्थो य जधा आगासत्थो य जो भवे । रमणीयविसिद्धतरो एवमादि फलं वदे ॥ १६०३ ॥
 रम्मं ति व जो बूया तधा रम्मतरं ति वा । अतिरम्मं ति वा बूया रम्मरम्मं ति वा पुणो ॥ १६०४ ॥
 २५ रमणीयं ति वा बूया रमणीयतरं ति वा । तधाऽतिरमणीयं ति रमणीयमहो ति वा ॥ १६०५ ॥
 अभिरामं ति वा बूया अभिरामतरं ति वा । अतीव अभिरामं ति अभिरामं अहो ति वा ॥ १६०६ ॥
 जं चऽण्णं एवमादीयं रमणीयस्सितं भवे । तस्स संकित्तणासद्वा रमणीयतरं वदे ॥ १६०७ ॥ छ ॥

[१३१ दुवालस आकासाणि]

- णिडालं १ अंसपीढाणि ३ जाणूइं ५ जाणुपच्छिमं ७ ।
 ३० पाद—पाणितला ११ पट्टी १२ आकासाणि दुवालस ॥ १६०८ ॥
 आगासं ति व जो बूया आकासतरकं ति वा । तधेव अतिआकासं आकासं अहो ति वा ॥ १६०९ ॥
 आकासको ति वा बूया आकासं गमो ति वा । तधेव आकासचरो तधा आगाससंसितो ॥ १६१० ॥

१ 'परिकेसं' हं० त० विना ॥ २-३ 'कडितं' हं० त० ॥ ४ 'वरिमणीय' सं ३ पु० ॥ ५ 'अभिरम्मं' ति सप्र० ॥

आगासं पइरिक्कं ति आकासवियडं ति वा । आकासं विमलं व त्ति आकासं सोभति ति वा ॥ १६११ ॥
या वऽण्णा एवमादीया कहा आकाससंसिता । तिस्से कहिज्जमाणीय आकाससममादिसे ॥ १६१२ ॥ छ ॥

[१३२ छप्पणं दहरचला १३३ छप्पणं दहस्थावरेज्जा]

हत्थ-पादंगुलीपव्वा दहरचला भवंति ते । तेसि पव्वंतरा सव्वे दहस्थावरा हि ते ॥ १६१३ ॥

एते चेव तु णिमट्ठा दहरचला भवंतिह । जधुत्तं पुव्वमत्थं तु तं सव्वं चलमादिसे ॥ १६१४ ॥ 5

जंघोरु-बाहुमज्जे य पट्ठी पस्से कस्-कमे । दहरे थावरे अंगे एते इच्छंति केयि तु ॥ १६१५ ॥

थिरमत्थं वियाणीया सव्वमेव अणागतं । एवमेतेसु सव्वेसु दहस्थावरेसु तु ॥ १६१६ ॥

डहरो ति व जो बूया तथा डहरतरो ति वा । तथाऽतिडहरो व त्ति डहरतिडहरो ति वा ॥ १६१७ ॥

डहराको ति वा बूया डहराकतरको ति वा । अतिडहराको व त्ति डहराको अहो ति वा ॥ १६१८ ॥

अहोडहरो ति वा बूया अतीवडहरो ति वा । किंहा ता डहराको ति जो एस डहरो ति वा ॥ १६१९ ॥ 10

जे यऽण्णे एवमादीया पादपा (पज्जया) डहरस्सिता । तेसि संकित्तणे सदे डहस्थावरे समा ॥ १६२० ॥

एते य एवमादीया जे सद्दा चलसंसिता । विभावेतूण ते सम्मं डहरचलसमे वदे ॥ १६२१ ॥

एते य एवमादीया जे सद्दा थावरस्सिता । विभावेतूण विण्णेया डहरा थावरे समा ॥ १६२२ ॥ छ ॥

[१३४ दस इस्सरा १३५ दस अणिस्सरा य]

सिरोऽधरा य ओट्ठं (पओट्ठं) तु भवंति दस इस्सरा । णामतो ते पवक्खामि दस चेव अणिस्सरे ॥ १६२३ ॥ 15

णिडालं १ मत्थको २ सीसं ३ कण्णा ४ गंडा ५ भुमंतरं ६ ।

दंतो ७ डु ८ णासा ९ जिब्बा य १० उम्मट्ठा दस इस्सरा ॥ १६२४ ॥

एते सव्वे पसस्संते उम्मट्ठा दस इस्सरा । अणिस्सरे य णिमट्ठे एते चेव वियागरे ॥ १६२५ ॥

सव्वमत्थं पसत्थं तु इस्सरेसु वियागरे । थाणमिस्सरियं वड्ढि भोग-लाभ-सुहाणि य ॥ १६२६ ॥

इस्सरोपक्खरे चेव इस्सरोवकरणेसु य । इस्सरो ति वियाणीया तस्सदोदीरणेसु य ॥ १६२७ ॥ 20

इस्सराणं च आमामे ईसराणं च आगमे । इस्सराणं च सदेसु इस्सराणं च कित्तणे ॥ १६२८ ॥

तधिस्सरागतीणं च सद्द-रूवकतेसु य । तधिस्सरोवकरणाणं सद्द-रूवकतेसु य ॥ १६२९ ॥

जं चऽण्णं एवमादीयं लोए इस्सरलक्खणं । तस्सद्द-रूवसंलावे ते इस्सरसमे वदे ॥ १६३० ॥ छ ॥ 25

[१३६ चोदस इस्सरभूता]

एतो इस्सरभूते तु उट्ठं णाभीय णिदिसे । ते उम्मट्ठे वियाणीया इस्सरत्थम्मि अंगवी ॥ १६३१ ॥ छ ॥

[१३७ पण्णासं पेस्सेज्जा १३८ पण्णासं पेस्सभूया]

पादंगुली १० पादणहा २० पादमंगुलिपोट्टिया ३० ।

तला ३२ पण्ही ३४ खुला ३६ गोप्फा ३८ कंडरा ४२ जंघ ४४ पेंडिका ४६ ॥ १६३२ ॥

जाणूणि य ४८ फिओ ५० चेव पेस्सेज्जाणि वियागरे । पेस्समेतेहि जाणीया पेस्सोवकरणेहि य ॥ १६३३ ॥

अब्भंतरे तु णिमट्ठे पेस्सेए ति वियागरे । ते चेव किंचि णिमट्ठे पेस्सभूए वियागरे ॥ १६३४ ॥ 30

उट्ठं जाणूहि णाभि ति पेस्सभूते वियागरे । अधे जाणूहि पाद ति पेस्सभूते वियागरे ॥ १६३५ ॥

१ आकाससोभिते त्ति सं ३ पु० सि० ॥ २ ये वऽण्णा एवमादीया जधा आ हं० त० विना ॥ ३ अह हं० त० विना ॥
४ किध ती डह हं० त० विना ॥ ५ सरोवरायउत्थं तु हं० त० विना ॥ ६-७ ईसरा हं० त० ॥
८ पसस्सं तु हं० त० ॥ ९ णेण य हं० त० ॥ १० कमेसु हं० त० ॥ ११ हस्तचिह्नान्तर्गतमुत्तराहं हं० त० एव वर्तते ॥

पवासं णिग्गमं कम्मं पेस्सोवकरणाणि य । पेस्सलाभं च पेस्सेसु एवमादि फलं वदे ॥ १६३६ ॥

पेस्सो त्ति व जो बूया तथा पेस्सतरो त्ति वा । अतिपेस्सो त्ति वा बूया पेस्सपेस्सो त्ति वा पुणो ॥ १६३७ ॥

तथा पेस्सणिको व त्ति पेस्सणीकतरो त्ति वा । अतिपेसणिको व त्ति अहोपेसणिकि त्ति वा ॥ १६३८ ॥

पडिचारको त्ति वा बूया पडिचारकतरो त्ति वा । अतिपडिचारको व त्ति अहोपडिचारको त्ति वा ॥ १६३९ ॥

5 जे यऽण्णे एवमादीया पज्जवा पेस्ससंसिता । तेसिं संकित्तासद्दा पेस्सेयसमका भवे ॥ १६४० ॥

॥ पेस्सेयाणि ॥ १३७ ॥ १३८ ॥ छ ॥

[१३९ छव्वीसं पिया १४० छव्वीसं वेस्सा य]

णिडालं १ मत्थको २ सीसं ३ संखा ५ कण्ण ७ ऽक्खि ९ णासिका १० ।

दंतो १२ ट्टु १४ जिब्भ १५ गंडा य १७ उरो १८ थणक २० थणंतरं २१ ॥ १६४१ ॥

10 हत्थयंगुट्टुका २३ हत्था २५ णाभि २६ ओमज्जिता पिता । वेस्सा णिमज्जिया एते ठियामट्ठा अपीलित्ता ॥ १६४२ ॥

तथा पिउ त्ति वा बूया तथा पिअतरो त्ति वा । तथा अतिप्पिओ व त्ति तथा पिअप्पिओ त्ति वा ॥ १६४३ ॥

इट्ठो त्ति व जो बूया तथा इट्ठतरो त्ति वा । अतिइट्ठो त्ति वा बूया इट्ठा इट्ठो त्ति वा पुणो ॥ १६४४ ॥

दइतो त्ति व जो बूया तथा दइततरो त्ति वा । अतिदइतो त्ति वा बूया दइतातिदइतो त्ति वा ॥ १६४५ ॥

अभिप्पेतो त्ति वा बूया अभिप्पेततरो त्ति वा । तथा अतिअभिप्पेतो अभिप्पेतो अति त्ति वा ॥ १६४६ ॥

15 मणामो त्ति व जो बूया छलिको (छंदको) त्ति व जो वदे ।

पियदंसणो त्ति वा बूया तथा भावस्सिओ त्ति वा ॥ १६४७ ॥

जे यऽण्णे एवमादीया पज्जवा पेम्मसंसिता । तेसिं संकित्तासद्दा ते प्पिएहि समे वदे ॥ १६४८ ॥

वेस्सो त्ति व जो बूया तदा वेस्सतरो त्ति वा । अतिवेस्सो त्ति वा बूया अधोवेस्सो त्ति वा पुणो ॥ १६४९ ॥

अणिट्ठो त्ति व जो बूया अणिट्ठतरो त्ति वा । तथा अतिअणिट्ठो त्ति अहो अणिट्ठो त्ति वा पुणो ॥ १६५० ॥

20 अणभिप्पेतो त्ति वा बूया अणभिप्पेततरो त्ति वा । अतीव अणभिप्पेओ अणभिप्पेतो अहो त्ति वा ॥ १६५१ ॥

पडिकूलो त्ति वा बूया पडिकूलतरो त्ति वा । तथा अतिपडिकूलो पडिकूलो अहो त्ति वा ॥ १६५२ ॥

अप्पिओ त्ति व जो बूया अप्पिअतरो त्ति वा । अतिअप्पिओ त्ति वा बूया अप्पियाणऽप्पिओ त्ति वा ॥ १६५३ ॥

अकंतो त्ति व जो बूया अकंततरो त्ति वा । अति चेव चक्खुआकंतो अकंतो तु अहो त्ति वा ॥ १६५४ ॥

अमणामो त्ति वा बूया अछंदिको त्ति वा पुणो । अप्पिओ दंसणे व त्ति विदिट्ठो दंसणे त्ति वा ॥ १६५५ ॥

25 जे वऽण्णे एवमादीया पज्जवा वेस्ससंसिता । तेसिं संकित्तासद्दा वेस्सेहि समका भवे ॥ १६५६ ॥ छ ॥

[१४१ छव्वीसं मज्झत्थाणि]

भुमंतरं च १ वंसो य २ मत्थको ३ णासिका ४ मुहं ५ ।

उरो ६ थणंतरं ७ हितयं ८ [.....] ॥ १६५७ ॥

[.....] मज्झत्थाणि वियागरे ॥ १६५८ ॥

30 मज्झत्थो त्ति व जो बूया मज्झत्थतरो त्ति वा । तथेव अतिमज्झत्थो मज्झत्थो बलिकं त्ति वा ॥ १६५९ ॥

अवत्थितो त्ति वा बूया अवत्थिततरो त्ति वा । तथाऽयवत्थितो व त्ति अतीव य अवत्थितो ॥ १६६० ॥

णिव्विकारो त्ति वा बूया णिव्विकारतरो त्ति वा । तथाऽतिणिव्विकारो त्ति णिव्विकारो अहो त्ति य ॥ १६६१ ॥

१ हस्तचिह्नान्तर्गतमुत्तरार्धं हं० त० एव वर्तते । २ "त्थमंगु" हं० त० ॥ ३ णाभि भुमज्जिता (उम्मज्जिता) हं० त० विना ॥ ४ णिमज्जिया हं० त० विना ॥ ५ तद्वा दयियतरो हं० त० ॥ ६ अछंदको हं० त० ॥ ७ मूलद्वारनिर्देशे छव्वीसं अवत्थिया १४१ इति पाठदर्शनादत्र पाठो गलितः सम्भाव्यते तथा मूलद्वारेषु छव्वीसं अवत्थिया इति नाम वर्तते ॥ ८ तथा पायव सप्र० ॥

मज्झत्थमुदाहरणा जे यऽन्ने एवमादीया । तेसिं संकित्तासदा मज्झत्थसममादिसे ॥ १६६२ ॥ छ ॥

[१४२-१४६ बारस पुढविकाइकाईणि]

पुधूसु पुधविं जाणे दगं णिद्धेसु णिद्धिसे । अग्गेये सप्पभे उण्हे अग्गिमो(मे)तेसु णिद्धिसे ॥ १६६३ ॥
वायुणेयेसु सव्वेसु वातं वातमणेसु य । वणप्फती तु णातव्वा गहणोपगहणेसु य ॥ १६६४ ॥ छ ॥

[१४७ वीसं जंगमाणि]

5

चले १ अस्सास २ पस्सासे ३ आउंटण ४ पसारणे ५ ।

उवेदु ६ द्वित ७ संचिट्ठे ८ गमणा ९ ऽऽगमणेसु य १० ॥ १६६५ ॥

फंदिते ११ चलिते १२ यावि णिविह्नु १३ म्मिल्लितम्मि १४ य ।

तसकायोवलद्धीयं २० जंगमं ति वियागरे ॥ १६६६ ॥ छ ॥

[१४८ तेत्तीसं आतिमूलिकाणि]

10

पादंगुट्ठा य २ पादा य ४ गोप्फा ६ जंघो ८ रु १० जाणुका १२ ।

अंसा १४ बाहू १६ पबाहू य १८ बाहुसंधी २० तधेव य ॥ १६६७ ॥

उदरं २१ कडी २२ कडीपस्सा २४ लोमवासी २५ तधेव य ।

उरो २६ सिरा २७ ऽधरा २९ जंतुं ३० मुहं ३१ सीसं ३२ तला ३३ तथा ॥ १६६८ ॥

एते सव्वे जता होंति उम्मट्ठा तु अपीलित्ता । तेत्तीसं आतिमूलीया सव्वत्थेसु पसस्सते ॥ १६६९ ॥ 15

जंघा पुण्णामधेयेसु आदेसो तु विधीयते । एवं एतेसु सव्वेसु आतिमूलेसु णिद्धिसे ॥ १६७० ॥ छ ॥

[१४९ तेत्तीसं मज्झविगाढाणि]

एते चेव सैमामट्ठा जता होंति अपीलित्ता । मज्झे विगाढा तेत्तीसं पुच्छितम्मि पसस्सते ॥ १६७१ ॥

तथा मज्झे विगाढेसु तेत्तीसायं पि अंगवी । पुण्णामधेयेहि फलं विसिद्धतरकं वदे ॥ १६७२ ॥ छ ॥

[१५० तेत्तीसं अंता]

20

अंगुली २० केस २१ लोमगं २२ कन्न २४ णासगमेव २६ य ।

कोप्परा २८ पण्हक ३० फिजा ३२ तहेव य ककाडिका ३३ ॥ १६७३ ॥

एते तेत्तीसति अंता णिम्मट्ठा य जया भवे । पसत्थे ण पसस्संते णिरत्थेसु पसस्सते ॥ १६७४ ॥ छ ॥

[१५१ पण्णासं मुदिता १५२ पण्णासं दीणा य]

अब्भितरंगा मुदिता बाहिरंगा य पीलित्ता । पुणो अब्भितरा चेव सैविमट्ठा तु दीणागा ॥ १६७५ ॥ 25

मुदिते [वा] पमोदं वा हासं पीतिं व णिद्धिसे । जणं छणुस्सयं सव्वं जं वाऽभुदइकं भवे ॥ १६७६ ॥

दीणेसु वार्धि सोगं च परिकेसं च णिद्धिसे । जधा णपुंसकाअत्थे एवमैसु फलं वदे ॥ १६७७ ॥

मुदितो त्ति व जो बूया तथा पमुदितो त्ति वा । हट्ठो तुट्ठो पहट्ठो त्ति उदत्तो सुमणो त्ति वा ॥ १६७८ ॥

णिव्वुते सुहिते व त्ति आरोमो पीणितो त्ति वा । कतत्थो कतकज्जो त्ति संवत्तमणोरधो त्ति वा ॥ १६७९ ॥

उस्सयो त्ति समासो त्ति विहि जण्णो छणो त्ति वा । बालोपणयणं वाधुज्जं अधिकमणकं त्ति वा ॥ १६८० ॥ 30

जं चऽण्णं उस्सयवरं सव्वंभुदइकं च जं । तस्स संकित्तासदा मुदितेहि सममादिसे ॥ १६८१ ॥

दीणो त्ति दुम्मणो व त्ति परित्तो त्ति वा पुणो । उक्कट्ठितो त्ति सोकत्तो चिंता-ज्ञाणपरो त्ति वा ॥ १६८२ ॥

अणिव्वुतो आतुरो त्ति परायितणिरागतो । अकतत्थो असिद्धत्थो अहमो णियमसक्कतो ॥ १६८३ ॥

खंडितो पडितो व त्ति भिण्णो मंतुलितो त्ति वा । पिवासितो परिस्संतो छत्तो तण्हाइतो त्ति वा ॥ १६८४ ॥

१ अत्रेदं चिन्त्यम्-वायुणेयाः किल द्वादश, वातमणाः पुनश्चत्वार इति संख्याप्रमाणविरोध इति ॥ २ फंडि ए विलिए या वि णिव्वुह्नु हं तं ॥ ३ जंतु हं तं ॥ ४ जता सुण्णा सप्रं ॥ ५ समा सदा जहा होंति हं तं ॥ ६ संधिमट्ठा हं तं विना ॥ ७ पाणेसु वावि (धि)योगं च हं तं ॥ ८ भेएसु वि फलं हं तं ॥ ९ त्ति तिथे जण्णो हं तं विना ॥ १० उक्कठितो हं तं विना ॥ ११ परायतं हं तं ॥

अलङ्गलाभो उच्चातो असंपत्तर्मणोरधो । विहलो विपटंतो त्ति विहतो त्ति विचेयणो ॥ १६८५ ॥

जे यऽण्णे एवमादीया पज्जवा दीणसंसिता । तेसिं संकित्तणासद्दा दीणेहि समका भवे ॥ १६८६ ॥ छ ॥

[१५३ वीसं तिवखा]

तिक्खगदंतगहणा अगदंता तु सूयिता । समे सदे य जाणेज्जो तिवखा जे मणिके मता ॥ १६८७ ॥

5 तिवखं त्ति व जो बूया तथा तिवखतरं त्ति वा । अतितिवखं त्ति वा बूया तिवखतिवखं त्ति वा पुणो ॥ १६८८ ॥

तिक्खलोहं त्ति वा बूया तिवखं आयुधं त्ति वा । सत्थकं अतितिवखं त्ति जं चऽण्णं तिवखणामकं ॥ १६८९ ॥

आउधानं च सव्वेसिं सत्थकाणं च सव्वसो । लोहोपकरणाणं च सव्वेसिं तिवखणाखणे ॥ १६९० ॥

जे यऽण्णे एवमादीया पदे वा तिवखसंसिता । णामसंकित्तणे तेसिं तं तिवखसममादिसे ॥ १६९१ ॥ छ ॥

[१५४ पण्णत्तरि उवहुता १५५ पण्णत्तरि वापण्णा य]

10 पुण्णामा पीलिता सव्वे एते होति उवहुता । उवत्ता य विच्छिन्ना य वापन्न त्ति वियागरे ॥ १६९२ ॥

वापण्णा य णिग्गहिता वापण्णा होति पावका । एतेसिं च वग्गाणं तिण्हं पि फलमादिसे ॥ १६९३ ॥

जधा दीणे आदेसो अप्पसत्थो पवेदितो । उवहुतेसुं वि तथा सव्वं असुभमादिसे ॥ १६९४ ॥

वापण्णेसुं विणासं च सरीरं वापदं तथा । सव्वत्थाणं च वापत्ति दुब्बिक्खं वा वियागरे ॥ १६९५ ॥ छ ॥

[१५६ दुवे दुग्गंधा १५७ दुवे सुग्गंधा य]

15 दुग्गंधेसु परीतावं आयासं च वियागरे । सयणा दुकुंछं च अवमाणं च णिदिसे ॥ १६९६ ॥

णासापुडा य पिहिता दुग्गंधा बे ण पूयिता । अवंगुता सुग्गंधा य पुच्छित्तम्मि य पूयिता ॥ १६९७ ॥ छ ॥

[१५८ णव बुद्धीरमणा १५९ चत्तारि अबुद्धीरमणा य]

हत्थ २ पाद ४ भूम ६ ऽक्खि ८ मुहं ९ बुद्धीरमण त्ति णिदिसे ।

पस्सो २ दरं ३ च पट्टी य ४ अबुद्धीरमणा भवे ॥ १६९८ ॥

20 णाणं बुद्धीरमणेसु मतिं मेधं च णिदिसे । अबुद्धीरमणेसु वदे मोहं मुखत्तमेव य ॥ १६९९ ॥

बुद्धीमंतो त्ति वा बूया बुद्धिमंततरो त्ति वा । अतीव बुद्धिमंतो त्ति बुद्धिमंतो अहो त्ति वा ॥ १७०० ॥

मतिमंतो त्ति वा बूया मतिमंततरो त्ति वा । अतीव मतिमंतो त्ति मतिमंतो अहो त्ति वा ॥ १७०१ ॥

सुबुद्धिको त्ति वा बूया सुबुद्धिमंतो त्ति वा पुणो । तथा पसण्णबुद्धि त्ति किंतबुद्धि त्ति वा पुणो ॥ १७०२ ॥

जे यऽण्णे एवमादीया पदे वा बुद्धिसंसिता । तेसिं संकित्तणे सद्दा ते बुद्धिरमणे समा ॥ १७०३ ॥ छ ॥

25 [१६० एक्कारस्स महापरिग्गहा १६१ चत्तारि अप्पपरिग्गहा य]

उदरं १ हत्थं ३ पादं च ५ कण्णा ७ णासं ८ ऽखिणो १० मुहं ११ ।

महापरिग्गहा एते सामिद्धि चऽत्थ णिदिसे ॥ १७०४ ॥ छ ॥

केस १ लोम २ णहं ३ मंसुं ४ एते अप्पपरिग्गहा । पुच्छित्ते ण प्पसस्संते दाखिं चऽत्थ णिदिसे ॥ १७०५ ॥ छ ॥

[१६२ एकूणवीसं बद्धा १६३ सत्तावीसं मोक्खा य]

30 हत्थ पादं सिहा कण्णा जं चऽण्णं किंचि बंधति । दढेसु यावि सव्वेसु एते बद्धे वियागरे ॥ १७०६ ॥ छ ॥

हत्थ पादं सिहा कण्णा जं चऽण्णं किंचि मुंचति । चलेसु यावि सव्वेसु एत्थ मोक्खं वियागरे ॥ १७०७ ॥ छ ॥

१ 'मणोरमे' हं० त० ॥ २ 'ग्गणहा अग्ग' सि० विना ॥ ३ वा पुणो । सत्थ' हं० त० विना ॥ ४ 'क्खणे खणे' हं० त० ॥ ५ उवहुता हं० त० ॥ ६ उवउत्ता सि० ॥ ७ 'सु हि तथा' हं० त० ॥ ८ 'सु हि सव्वं च' हं० त० ॥ ९ 'कित्तिबुद्धि' हं० त० ॥ १० पायवा पुव्वसं' हं० त० ॥

[१६४ पण्णासं सका १६५ पण्णासं परक्का १६६ पण्णासं सकपरक्का य]

दढा बंधा चला मोक्खा सका अब्भंतरा भवे । परक्का बाहिरा मिस्सा बाहिरब्भंतरा भवे ॥ १७०८ ॥

[१६७-१७२ दुवे सदेया दुवे रूवेया इच्चाइ]

सदेया कण्णसोता बे २ णयणा दंसणिया दुवे २ । णासापुडा २ य गंधेयं रसेयं जिब्भमादिसे १ ॥ १७०९ ॥
तयं च १ पोरिसं २ चेव फासेयाणि वियागरे । मणेयं हितयं १ जाणे अंगविज्जाविसारओ ॥ १७१० ॥ 5

सदेयेसु पिओ लोए इट्ठे सदे सुणेति य । विस्सुतो य महाणम्मि महं च लभते जसं ॥ १७११ ॥
दंसणीयेसु कंतो य सव्वस्स पिअदंसणो । गुणप्पणासो लोगम्मि पियाणि पि य पावति ॥ १७१२ ॥
गंधेयेसु यसभागी इट्ठे गंधे य पावति । सम्मतो यावि लोकस्स णारीसु सुभगो वि य ॥ १७१३ ॥
रसेयेसु मणुण्णाणि भोयणाणि तु भुंजति । गहितवक्को य सद्धेयो सव्वत्थ य विसारदो ॥ १७१४ ॥
सयणा-ऽऽसण-जाणाणि वाहणाणि य पावति । थिओ य भूसणाइं च फासेयम्मि णिसेवति ॥ १७१५ ॥ 10
मणेयम्मि द्वियामट्ठे सव्वविज्जाविसारतो । पंडितं बुद्धिमंतं च णिदिसे सुबहुस्सुतं ॥ १७१६ ॥ छ ॥

[१७३ चत्तारि वातमणा १७४ दुवे सहमणा १७५ दस वण्णेया य]

मुहं १ णासग २ कण्णा य ४ एते वातमणा भवे । गुदो य १ मेहणं चेव २ एते सहमणा भवे ॥ १७१७ ॥

केसमंसु १ उरो २ पट्टी ३ जंघा ५ कक्खा उभो ७ तथा ।

वत्थिसीसं च ८ संखा य १० वण्णेयाणि वियागरे ॥ १७१८ ॥

15

जो पुव्वमुत्तो आदेसो गहणेसु विधीयते । वण्णेयेसु वि एमेव आदेसं संपकप्पते ॥ १७१९ ॥ छ ॥

[१७६ दस अग्गेया]

मुहम १ ऽच्छी ३ उरो ४ हितयं ५ तले ७ जिब्भं ८ तिके १० वि तु ।

एते अग्गेययं णेया इच्चेस दुविधो गमो ॥ १७२० ॥

अक्खीणि २ णासिका ३ कण्णा ५ णिडालं ६ मुह ७ मत्थगो ८ ।

20

कण्णुप्परिका य ९ सिस्स १० अग्गेया दस पूयिता ॥ १७२१ ॥

गणेस्सरिकल्लोभेसु अग्गेये अगिकम्मसु । पुण्णामधेयेसु फलं विसिद्धतरकं वदे ॥ १७२२ ॥ छ ॥

[१७७ दस जण्णेया]

सिरोमुहस्सयामासे अग्गेया य भवंति जे । जण्णेया दस वक्खाता पसत्था तत्थ पुच्छिते ॥ १७२३ ॥ छ ॥

[१७८ दुवे दंसणीयाणि १७९ दुवे अदंसणीयाणि य]

25

दंसणीयाणि बे चक्खुं १ सोणी य २ पसस्सते । अदंसणीया य दुवे उक्कूणिय १ विकूणिता २ ॥ १७२४ ॥ छ ॥

[१८० दस थलाणि]

मत्थको य १ णिडालं च २ गंडा य ४ हितयं ५ उरो ६ ।

कस्-कमतला १० चेव थलाणि दस णिदिसे ॥ १७२५ ॥ छ ॥

[१८१ बारस णिण्णाणि]

30

णिण्णाणि वक्खणा २ कक्खा ४ अक्खिकूडाणि बे तथा ६ ।

अंतो य कण्णसोताणि ८ जं च गोवाय हेट्ठतो १० ॥ १७२६ ॥

कुकुंदलो ११ य णाभी य १२ एवं णिण्णाणि बारस ।

पुच्छिते ण प्सस्संते णिण्णं चऽत्थ वियागरे ॥ १७२७ ॥ छ ॥

१ मूलद्वारेषु दुवे रूवेया १६८ इति नाम वर्तते ॥ २ मूलद्वारेषु दस जम्मणा १७५ इति नाम दृश्यते ॥ ३ लालेमुयगो
हं० त० ॥ ४ तथा सव्वपु हं० त० विना ॥ ५ णि चक्खुणा हं० त० ॥

[१८२ णव गंभीरा १८३ णव परिणिण्णगंभीरा]

गंभीरे तु मुहं १ णासं ३ कण्णे ५ बाहुं ९ च णिहिसे । ते चेव णिण्णगंभीरे अंतिमद्वे वियागरे ॥ १७२८ ॥

[१८४-१८९ पण्णरस विसमा चोद्दस उण्णता इच्चाइ]

णासं १ ऽसपीढा ३ सवसणा ५ फिओ ७ कोप्पर ९ जेण्णुगा ११ ।

5 खलुका १३ मणिवंधा य १५ विसमा पण्णरसाऽऽहिया ॥ १७२९ ॥

मत्थको सीसकूडाणि विसमा जे य कित्तिया । णासावंसो य ँगूणं उण्णत त्ति वियागरे ॥ १७३० ॥

जे पुधू ते समा होंति अग्गेया उसिणा भवे । जे णिद्धा ते भवे सीता सीतला औवुजोणिया ॥ १७३१ ॥

जधा णिद्धेसु सव्वेसु आदेसो तु विधीयते । तँधाऽऽपुणेएसु फलं विसिट्ठतरकं वदे ॥ १७३२ ॥ छ ॥

[१९० चउरासीति पुण्णा १९१ पण्णत्तरिं तुच्छ य]

10 गंडा २ थणो ४ दरं ५ आसं ६ अंजली ८ मुहमेव ९ य ।

पुण्णामा ८४ तँ तओम्मद्वा एते पुण्ण त्ति णिहिसे ॥ १७३३ ॥

णपुंसकाणि सव्वाणि परंपरकिसा य जे । तुच्छणेतानि जाणीया अप्पसत्थाणि णिहिसे ॥ १७३४ ॥ छ ॥

[१९२-२३८ एकूणवीसं विवरा इच्चाइ]

मुहं १ पालुं च २ मेडुं च ३ अंगुलीअंतराणि य १९ । एकूणवीसं विवरे वियाणे अंगंचितओ ॥ १७३५ ॥ १९२ ॥

15 एते चेव जधुत्ता तु संपेडितसंपुडा । अंगे अपी(वि)वरा होंति ते वियाणेज्ज अंगवी ॥ १७३६ ॥ १९३ ॥

अक्खीणि २ हत्थ ४ पादं च ६ गुदो ७ मेडुं ८ तधेव य ।

अद्वेव एते जाणेज्जो अंगे विअडसंवुडे ॥ १७३७ ॥ १९४ ॥

जिब्भा १ अक्खीणि ३ ऊरू य ५ पालू ६ मेहणमेव य ७ ।

सुकुमालाणि सत्तेव वियाणे अंगंचितओ ॥ १७३८ ॥ १९५ ॥

20 अबुद्धीरमणा अंगे जे पुव्वं परिकित्तिता । ते चेव दारुणे जाणे सव्वेए अंगंचितओ ॥ १७३९ ॥ १९६ ॥

जिब्भा १ ओट्टा ३ थणा ५ गंडा ७ सत्तेव मदुका भवे ।

जधुत्तमणुगंतूणं ततो बूयांगंचितओ ॥ १७४० ॥ १९७ ॥

दारुणाणि य चत्तारि पुव्वुत्ताणि तु याणिह । पंथीणाणि तु ताणेव वियाणे अंगंचितओ ॥ १७४१ ॥ १९८ ॥

रमणीया जे तु अंगम्मि पुव्वं तु परिकित्तिया । ते चेव सण्हा णातव्वा जधुत्तं च वियागरे ॥ १७४२ ॥ १९९ ॥

25 सव्वे णहसिहाओ य २० कोप्परा २२ जण्णुकाणि य २४ ।

चतुव्वीसं खरा एते वियाणे अंगंचितओ ॥ १७४३ ॥ २०० ॥

पादाणं अंगुलीओ य १० कुडिल त्ति वियागरे ॥ २०१ ॥

हत्थाणं अंगुलीओ य १० उज्जुकं त्ति वियागरे ॥ १७४४ ॥ २०२ ॥

णिडालं १ अगगकण्णा य ३ भुमो ५ द्वा ७ दंतसेडिका ८ ।

30 संखा बे १० कण्णपालीओ १२ अंगुट्ठांगुलिभिस्सह ३२ ॥ १७४५ ॥

कक्खा ३४ णासापुडा चेव ३६ एते चंडाणता भवे ।

छंतीसं तु णातव्वा जधुत्तं च वियागरे ॥ १७४६ ॥ २०३ ॥

१ वामुं च हं० त० विना ॥ २ अंतिं हं० त० विना ॥ ३ जुण्णगा हं० त० ॥ ४ एतूणं हं० त० विना ॥
५ आउजो हं० त० ॥ ६ तथा पुण्णेएसु सप्र० ॥ ७ त वधुम्म हं० त० विना ॥ ८ गुदो मंदुत्तरेव य हं० त० ॥
९ मत्थीणाणि हं० त० ॥ १० छव्वीसं हं० त० ॥

जंघो २ रु ४ बाहु ६ एताणि आयताणि वियागरे । २०४ ।

जंघा २ [फि]यो य ४ णातव्वा आयता मुद्दियाणि तु ॥ १७४७ ॥ २०५ ॥

उत्तमाणि तु जाणंगे ताणि दिव्वाणि णिद्दिसे ॥ २०६ ॥

जाणेव मज्झिमाणंगे ताणि माणुस्सकाणि तु ॥ १७४८ ॥ २०७ ॥

तिरिच्छजोणिया अंगे मज्झिमाणंतराणि तु । २०८ ।

5

जधण्णाणि तु जाणंगे ताणि णेरइकाणि तु ॥ १७४९ ॥ २०९ ॥

णहसेढी-दंतसेढीओ णहा दंतसिहा य जा ।

उवहुता य ७५ तिक्खा य ९५ एते रुद्दे वियागरे ॥ १७५० ॥ २१० ॥

पीति १ णिज्झाइतं वा वि २ दुवे सोम्मे वियाणिया ।

पुच्छितम्मि पसस्संते सोतव्वं चउत्थ णिद्दिसे ॥ १७५१ ॥ २११ ॥

10

ओट्टं २ गुट्टं ६ गुलीओ य २२ मिदुभागे वियाणिया ।

जधुत्तमणुगंतूणं ततो बूयांगचित्तओ ॥ १७५२ ॥ २१२ ॥

अंगुट्ठा २ होंति पुत्तेया २१३ कण्णा होंति कणिल्लिका २ । २१४ ।

अणामिका २ मज्झिमियो ४ थिया होंति ण संसयो ॥ १७५३ ॥ २१५ ॥

पदेसिणीहि २ विण्णेया जुवतीयो ण संसयो ।

15

थिया तु तिविधा एवं अंगुलीहि विभावये ॥ १७५४ ॥ २१६ ॥

णिम्मज्जिताणि दीहाणि णिग्गहीताणि ताणि तु । दुग्गट्ठाणाणि एताणि जधुत्तेणं वियागरे ॥ १७५५ ॥ २१७ ॥

पाद-पाणितला ४ ओट्ठा ६ अवंगा ८ जिब्भ ९ तालुका १० ।

कणवीरका १२ तधंगुट्ठा १४ तंबाणेताणि चोद्दस ॥ १७५६ ॥ २१८ ॥

केस १ लोम २ णहं ३ मंसुं ४ एते रोगमणा भवे । पुच्छित्ते ण पसस्संति बहुरौगं च णिद्दिसे ॥ १७५७ ॥ २१९ ॥

20

कक्खा २ वसणंतरं ४ चेव अधिट्ठाणं ५ समेहणं ६ । एताणि पूतीणि भवे जधुत्तेण वियागरे ॥ १७५८ ॥ २२० ॥

उभो हत्था २ उभो पादा ४ उभो य णयणाणि तु ६ । एताणि छ व्वियाणीया चवलाणंगचित्तओ ॥ १७५९ ॥ २२१ ॥

सिरं १ ललाडं २ पट्टी य ३ पस्साणि ५ उदरं ६ उरो ७ ।

एते अचवले सत्त जधुत्तेण वियागरे ॥ १७६० ॥ २२२ ॥

गोज्झाणि मेहणं १ पालुं २ वसणे य ४ वियागरे ।

25

रहोसंजोगपुच्छायं थी-पुमंसे पसस्सते ॥ १७६१ ॥ २२३ ॥

हत्था २ मुहं च ३ अक्खीणि ५ उत्ताणुम्मत्थकाणि तु । जधुत्तमणुगंतूणं णिद्दिसे अंगचित्तओ ॥ १७६२ ॥ २२४ ॥

कण्णसक्कुलिओ २ कण्णा ४ फिओ ६ जंघो ८ रु १० पेंडिका १२ ।

तताणेताणि जाणीया जधुत्तं च वियागरे ॥ १७६३ ॥ २२५ ॥

जाणि लुक्खाणि १० ताणेव दूरं णिम्मज्जिताणि तु ।

30

मताणेताणि जाणीया अप्ससत्थं च णिद्दिसे ॥ १७६४ ॥ २२६ ॥

थूले चेव तधुम्मट्ठे महंताणि वियागरे । महंतकं इस्सरियं अत्थं भोगे य णिद्दिसे ॥ १७६५ ॥ २२७ ॥

१ आणालिका हं तं ॥ २ रोममणा सं ३ पुं ॥ ३ रोमं च सं ३ पुं ॥

देढाणुम्मज्जियारिणं तु सुचिकाणि वियागरे । पुच्छित्तम्मि पसस्संते सोयव्वं चऽत्थ णिद्दिसे ॥ १७६६ ॥ २२८ ॥
पूतीणि जाणि अंगम्मि ६ केस ७ लोम ८ णहं ९ च जं(तयं) १० ।

संविमट्ठाणि चंऽगम्मि किलिट्ठाणि वियागरे ॥ १७६७ ॥ २२९ ॥

अंगे पुण्णामधेयाणि वराणि पवराणि य । तम्मि सव्वम्मि अत्थं तु पसत्थं संपवेदये ॥ १७६८ ॥ २३० ॥

5 ताणि चेव णिमित्तस्स णायकाणि विधीयते । ताणऽधिट्ठाणभूयाणि आदेसस्स सुभाणि तु ॥ १७६९ ॥ २३१ ॥
णिमित्ते सव्ववत्थूणं सव्वणीया णपुंसका । तेण इट्ठेहि अत्थेहि सव्वकालं विवज्जिया ॥ १७७० ॥ २३२ ॥

जाणेव बज्झबज्झाणि ताणि अणायकाणि तु ॥ २३३ ॥

अणुं च परमाणुं च णित्थे त्ति वियागरे ॥ १७७१ ॥ २३४ ॥

अण्णेयाणि तु अंगम्मि पुण्णामाणि तु णिद्दिसे ।

10 जेसु पुण्णो सुभो अत्थो ण कोति पतिसिज्झति ॥ १७७२ ॥ २३५ ॥

भुजोरुमंगुलीणं च अंतराणंतराणि तु । जधा गुज्जेसु आदेसो अंतरेसु वि तं वदे ॥ १७७३ ॥ २३६ ॥

दंत १ हत्थणहारिणं ११ च एते सूर त्ति णिद्दिसे ॥ २३७ ॥

अच्छीणि २ हितयं चेव ३ तयो भीरु वियागरे ॥ १७७४ ॥ २३८ ॥

[२३९ पण्णासं एककाणि]

15 एकसिं चेव आमट्ठे एणं भेकुंगुलीय य । एगाभरणेक्कवारीसु प्पगोपकरणम्मि य ॥ १७७५ ॥ छ ॥

[२४० पणुवीसं बिकाणि]

मिधुणे विअंगुलीगहणे एकैकेसु य वीसु तु । जमलाभरणे चेव जमलोवकरणे बिकं ॥ १७७६ ॥ छ ॥

[२४१ दस तिकाणि]

तिंगुलिगहणे चेव एकैकेसु तिसु तथा । तिसिके य तिकोडीके तंसेसु य तिकेसु य ॥ १७७७ ॥

20 भुमसंगयचूलायं णासायं च तिकम्मि य । पोरुसे य सणालम्मि तिकणम्मि य तिण्णि तु ॥ १७७८ ॥ छ ॥

[२४२ अट्ठ चतुक्काणि]

चतुरस्सेसु सव्वेसु चउप्पयगतेसु य । चउकेसु य सव्वेसु चउगुण चतु वदे ॥ १७७९ ॥

चउसं(रं)गुलीसु चत्तारि चउसु एकैकेसु य । तथा करतले चेव तथा पादतलम्मि य ॥ १७८० ॥ छ ॥

[२४३ छ पंचकाणि]

25 फिजंसपीढे दो च्चेव समुट्टिकरणे थणे । पंचंगुलीणं गहणे सणरे संयणासणे ॥ १७८१ ॥

पंच तस्से पंच काये एकैकेसु य पंचसु । सव्वपंचकसंजोगे पमाणं पंचकं वदे ॥ १७८२ ॥ छ ॥

[२४४ छक्का ठिआमासे]

चउके बिगसंजुते बेसुं चेव तिकेसु तु । तिसु बिकेसु छक्के य पंचके चेकसंजुते ॥ १७८३ ॥

मणिबंधण गोप्फे य विणरे सयणाऽऽसणे । सव्वइक्कगते चेव अंगवी छक्कमादिसे ॥ १७८४ ॥ छ ॥

30 [२४५ सत्तए ठिआमासे]

पस्से य सोणि कण्णे य जंधायं बाहुणालीयं । कुक्खिम्मि सत्तके चेव चतुक्कसहिते तिगे ॥ १७८५ ॥

सयणाऽऽसणे सपुरिसे तिगाढे वा चतुप्पदे । सव्वसत्तकसंजोगे पमाणं सत्तकं तिगं ॥ १७८६ ॥ छ ॥

१ दव्वाणुं सं ३ पु० ॥ २ णि रंगम्मि सं ३ पु० । णि वागम्मि हं० तं० ॥ ३ ताणि वि ठाणं हं० तं० ॥

४ यतणाणि तु सप्र० ॥ ५ मूलद्वारेषु पण्णासं अण्णजणाइं २३५ इति नाम दृश्यते ॥ ६ सूरिति हं० तं० विना ॥

७ सजणां सप्र० ॥ ८ सव्वछक्काए चेव हं० तं० विना ॥ ९ सत्थके हं० तं० विना ॥

[२४६ अट्टए ठिआमासे]

हितये ऊरू य मज्जे य णाभी पाणितलम्मि य । णिडाले चेव कण्णे य बिचउक्के य पिडिते ॥ १७८७ ॥
 सयणासणे य जमले जमले य चतुप्पदे । सव्वमट्टकसंजोगे पुच्छं अट्टाहमादिसे ॥ १७८८ ॥
 अट्टगुलमदंसे तधऽट्टाकारणम्मि य । बूया अट्टाहिकं पुच्छं वीसु पादतलेसु य ॥ १७८९ ॥ छ ॥

[२४७ णवए ठिआमासे]

5

णवसंगुलीसु णवके य णवसेक्ककेसु य । णवंसि णवभिद्दीसु णवणक्खसिहासु य ॥ १७९० ॥
 अट्टगे एगसहिते सचतुक्के य पंचगे । छक्के तिगसंजुते णवाहं तिरियपेक्खिते ॥ १७९१ ॥ छ ॥

[२४८ दसए ठिआमासे]

पिडितेसु य पादेसु उवाहणा-पादुकासु य । तधंजलिकच्छभके विहत्थी उवणामिते ॥ १७९२ ॥
 बिपंचके वा सहिते अट्टके बिकसंजुते । सत्तगे तिगसंजुते दसाहो उज्जुपेक्खिते ॥ १७९३ ॥ छ ॥

10

[२४९-२७० बे पण्णरसवग्गा जाव एगे अपरिमिते]

तिपंचके य सहिते दसक्खे य सपंचके । तधेव पादजंघे य बूया पण्णरसेव तु ॥ १७९४ ॥ छ ॥
 वीसं तु अंसफलके जण्णुके कोप्परेसु य । बेसु चेव दसक्खेसु चउक्केसु य पंचसु ॥ १७९५ ॥ छ ॥
 जणूसु वीसं मज्जे य ऊरू बे पणुवीसका । तीसं कडीय पणतीसं णिदिसे अंतरोदरे ॥ १७९६ ॥
 चत्तालीसं च णाभीयं णाभीय उवर्णि पुणे । पणतालीसं ति वा बूया पंचासं हितयम्मि य ॥ १७९७ ॥ 15
 थणंतरे पंचवण्णा उरे सट्ठि वियागरे । जत्तूसु पंचसेट्ठि [.....] ॥ १७९८ ॥
 अंसे य सत्तर्णि बूया गीवायं पंचसत्तर्णि । हणुकायं सहोद्धाय, असीति पुणमादिसे ॥ १७९९ ॥
 णासायं पंचासीति णवती भूमकासु य । णिडाले पंचणउति सिरम्मि सतमादिसे ॥ १८०० ॥
 एवं एतेसु ठाणेसु पंच पंच समारभे । पिट्ठोदरे सपिट्ठिते सहस्सं बाहु-तालुके ॥ १८०१ ॥
 पुण्णं सतसहस्सं तु संवुतम्मि मुहे भवे । अवंगुते मुहे कोडी विप्पेतविजिब्भिते ॥ १८०२ ॥ 20
 तथा छिद्देसु सव्वेसु तं अपरिमितं वदे । जधण्णेसु य सव्वेसु हणुकायं तधेव य ॥ १८०३ ॥
 केसमंसूसु लोमेसु धिण्णं तु सतमादिसे । धिण्णं सहस्सं जाणीया मज्झिमाणंतरेसु य ॥ १८०४ ॥
 सहस्साणं पमाणं तु मज्झिमेसु वियाणिया । तथा सतसहस्साणि कायवंतेसु णिदिसे ॥ १८०५ ॥
 एतं चतुस्सु कायेसु पमाणं उवलक्खये । संहारे कायवंताणं कोडि बूयांगचित्तओ ॥ १८०६ ॥
 कायवंते य उम्मट्ठे दढे य अमितं धणं । अब्भंतरे दढे णिद्धे पुण्णे पुण्णामसुक्किले ॥ १८०७ ॥ 25
 [.....] समेसु यावि सव्वेसु समं बूयांगचित्तओ ॥ १८०८ ॥
 भिन्ने दसक्खमाधारे बे वा चत्तारि अट्ट वा । आधारिते सते यावि अट्ठं चत्तारि वा वदे ॥ १८०९ ॥
 अणुमाणेण सव्वेण सहस्साणि वियागरे । तथा सतसहस्साणि कोडि वा अंगवी वदे ॥ १८१० ॥
 एते[हिं] चेव सव्वेहिं अंगबीजपदेहि तु । णिउणं संपधारितो बूया अपरिमितं विधि ॥ १८११ ॥
 एतो तिविधमाहारं जधन्नं मज्झिमुत्तमं । जुत्तं तदुभयामासे लक्खये तु इमं गमं ॥ १८१२ ॥ 30
 उत्तमं अवडुं गीवं हितयं पट्ठीं च मज्झिमं । कडि-वक्खणे जधण्णे तु एवेस तिविधो गमो ॥ १८१३ ॥
 एवं धिण्णसतादीयं गमेणेतेण अंगवी । समे य विसमे चेव विण्णातूण वियागरे ॥ १८१४ ॥ छ ॥

१ णिम्मूले हं० त० ॥ २ गुल्लिमदंसे हं० त० विना । ३ भिडीसु हं० त० ॥ ४ जतूसु हं० त० ॥ ५ सट्ठियं एवं ठाणस्सुणु-
 कप्पे ॥ सि० ॥ ६ पंचणिदुति सं ३ पु० ॥ ७ एवं हं० त० ॥ ८ कायवंतेसु उम्मट्ठे सं ३ पु० ॥ ९ अट्टाहा सप्र० ॥

- दक्खिणाणि तु सव्वाणि सव्वाणेव ददाणि तु । अणागताणि सव्वाणि तथा अब्भंतराणि य ॥ १८१५ ॥
 अब्भंतरंतराणि वा अव्वोयताणि याणि य । उवाताणुत्तमाणि च उत्तमाणंतराणि य ॥ १८१६ ॥
 जार्णि च जोव्वणत्थाणि बंभेज्जाणि य सव्वसो । सुक्कपण्डुपडीभागा णिद्धणिद्धतराणि य ॥ १८१७ ॥
 आहाराणि य सव्वाणि आहारतरकाणि य । तथा पुरत्थिमाणि वा पुव्वदक्खिणकाणि य ॥ १८१८ ॥
 5 सव्वाणि [य] पसन्नाणि पसण्णतरकाणि य । जे य वामद्धणाहारा [.....] ॥ १८१९ ॥
 सिवाणि तध थूलाणि दीहाणुम्मज्जिताणि य । परिमंडला य उम्मट्ठा वट्ठा चेव अभिमुहा ॥ १८२० ॥
 चतुस्सा य उम्मट्ठा उम्मट्ठा पुधुला य जे । कायवंतो य आमट्ठा हितयाणुम्मज्जिताणि य ॥ १८२१ ॥
 रमणीया य उम्मट्ठा डहरा थावराणि य । इस्सराणि य सव्वाणि पियाणि य विसेसतो ॥ १८२२ ॥
 तधेव आतिमूलीया मज्झगाढा तधेव य । मुदिताणि सुगंधाणि सेबुद्धिरमणाणि य ॥ १८२३ ॥
 10 महापरिग्गहाणि च सकाणि च तधेव य । सहेया दंसणीया य गंधेया उ तधेव य ॥ १८२४ ॥
 फासेया य रसेया य उम्मट्ठा तु जया भवे । तथा अगेयया णेया थलाणि य तधेव य ॥ १८२५ ॥
 आवुणेयाणि पुण्णाणि उज्जुकाणि तधेव य । दिव्वाणि तध सव्वाणि सोमाणि य मितूणि य ॥ १८२६ ॥
 पुत्तेयाणि य तंबाणि उत्ताणाणि सूयीणि य । वराणि णायकाणि च आणेयाणि महाणि य ॥ १८२७ ॥
 जधा पुण्णामधेयेसु सव्वं दिट्ठं सुभासुभं । तथा एतेसु सव्वेसु सव्वं बूया सुभासुभं ॥ १८२८ ॥ छ ॥
 15 मज्झिमाणि य सव्वाणि वत्तमाणाणि जाणि य । बहिरब्भंतराणि च अब्भंतरबाहिराणि य ॥ १८२९ ॥
 सामोवाताणि सोमाणि कण्हा मज्झिमकाणि य । मज्झिमाणंतराणि च खत्तवेस्साणि जाणि य ॥ १८३० ॥
 विणा य कण्हणीलेहिं पडिभागा तु सेसगा । सव्वे ज्जेव ठियामासा कण्हलुक्खेहिं जे विणा ॥ १८३१ ॥
 णिद्धलुक्खाणि सव्वाणि लुक्खणिद्धाणि जाणि य । तथा आहारणीहारा णीहाराहारसंजुता ॥ १८३२ ॥
 पुरिमुत्तराणि सव्वाणि पसण्णा मिस्सका य जे । उवधूलाणि जाणंगे जुत्तोउवचयाणि य ॥ १८३३ ॥
 20 जुत्तप्पमाणदीहाणि दीहजुत्ताणि जाणि य । परिमंडलाणि जाणंगे भवे करणेवसंहिता ॥ १८३४ ॥
 तथा मज्झिमकाया य मज्झिमाणंतरा य जे । आकासाणि य सव्वाणि ईस्सराणंतराणि य ॥ १८३५ ॥
 वामिस्स-सक-परकाणि सीउण्हाणि समाणि य । सुकुमाले य अंगम्मि तथा वियडसंवुडे ॥ १८३६ ॥
 सण्हाणि मदुकाणि च [उज्जुकाणि च] जाणि तु । माणुरस्सकाणि सव्वाणि कण्णेयाणि य जाणि [तु] ॥ १८३७ ॥
 जुवतेयाणि सव्वाणि थीभागाणि जाणि तु । तथा अचवलाइं च तथा गोज्झाणि जाणि य ॥ १८३८ ॥
 25 जधा थीणामधेज्जेसु सव्वं वुत्तं सुभा-उसुभं । तथा एतेसु सव्वेसु फलं बूया सुभा-उसुभं ॥ १८३९ ॥ छ ॥
 वामाई च चलाई च अतिवत्ताणि जाणि य । बाहिराणि य सव्वाणि बज्जबज्जंतराणि य ॥ १८४० ॥
 कण्हाणि अतिकण्हाणि जधण्णाणि य जाणि तु । महव्वयाणि सव्वाणि आदेयाणि तधेव य ॥ १८४१ ॥
 कण्हणीलपडीभागा ठियामासा तधेव य । लुक्खाणि लुक्खलुक्खाणि णीहारा जे य कित्तिता ॥ १८४२ ॥
 तथा णीहारणीहारा तथा पच्छिमदक्खिणा । तधेव पच्छिमाईं च तधेव पच्छिमुत्तरा ॥ १८४३ ॥
 30 अप्पसण्णाणि जाणंगे अप्पसण्णेतरा य जे । जे य पाणहरा वामा वामा धणहरा य जे ॥ १८४४ ॥
 संखावम्माणि जाणंगे अंगे(अग्गे)याणि किसाणि य । परंपरकिसाईं च तथा हस्साणि जाणि य ॥ १८४५ ॥
 तंसा जहण्णकाया य जधण्णतरका य जे । तणू परंपरतणू परमाणू अणू य जे ॥ १८४६ ॥

१ अव्वोअयाणि हं० त० ॥ २ माणुत्तरा हं० त० ॥ ३ आहारी णेयसव्वाणि पियाणि य विसेसतो । तथा पुरं हं० त० विना ॥ ४ उम्मट्ठा सि० ॥ ५ सुबुद्धिं हं० त० ॥ ६ कच्छ मच्छिमकाणि य सप्र० ॥ ७ परिमुत्ताणि सं ३ पु० सि० ॥ ८ इस्सराणितराणि हं० त० ॥ ९ वामिस्सं सको प्यरं सप्र० ॥ १० सण्णाणि मदुकाणि च जाणित्तु अंगचित्तओ सि० ॥

गहणोपगहणा जे य तथा डहरचलाणि य । अणिस्सरा य पेस्सा य पेस्सभूया य अप्पिया ॥ १८४७ ॥
 अंता दीणा य तिण्हा य वापण्णोपहुता य जे । अबुद्धिरमणा दुग्गंधा तथा अप्पपरिगहा ॥ १८४८ ॥
 बंध-मोक्खा परक्का य सह-वातमणा य जे । अदंसणीया णिण्णा य गंधीरा दुविधा य जे ॥ १८४९ ॥
 विसमाणि य तुच्छाणि विवरा दारुणा य जे । पत्थीणाइं खराइं च कुडिला चंडाणता य जे ॥ १८५० ॥
 आयता मुद्दियणि च तिज्जज्जोणिगताणि य । ॐ दुग्गट्ठाणाणि रुद्धाणि तथा रोगमणाणि य । १८५१ ॥ 5
 पयलाइताणि चंगम्मि तथा ओमत्थकाणि य । मताणि जाणि चंगम्मि तथा पूतीणि जाणि य ॥ १८५२ ॥
 किलिद्धाणि य जाणि तु तदा णीयाणि जाणि य । तथा अण्णज्जाणि वा णिस्थानंतराणि य ॥ १८५३ ॥
 जधा णपुंसकाणं तु फलं दिट्ठं सुभासुभं । तथा एतेसु सव्वेसु फलं बूया सुभासुभं ॥ १८५४ ॥ छ ॥
 एवं समुच्चिता एते मणिणो तिण्णि रासयो । पुण्णाम-त्थी-णपुंसेहि ॐ णिदिट्ठं च जहक्कमं ॥ १८५५ ॥
 तत्थ जो दक्खिणा ॐ दीगो रासी अंगम्मि कित्तितो । सो तु सव्वो जधुद्धिदो पुण्णामेहि समप्फलो ॥ १८५६ ॥ 10
 बित्तियो मज्झिमादीयो रासी पुव्वं पक्कित्तितो । सो वि सव्वो जधुद्धिदो धीणामेहि समप्फलो ॥ १८५७ ॥
 तत्तितो वामभाणो तु जो रासी पुव्वक्कित्तितो । सो वि सव्वो जधुद्धिदो णपुंसकसमप्फलो ॥ १८५८ ॥
 एवमेते जधुद्धिदो तिधा तिण्णि जधक्कमं । पुण्णाम-त्थी-णपुंसेहि विण्णातव्वा समप्फला ॥ १८५९ ॥
 मणीसमुच्चयो णाम अज्झायो तिविहप्फलो । सतसाहो सहस्सक्खो दारसतसहस्सिओ ॥ १८६० ॥
 [.....] महापुरिसदिण्णाए समक्खातो महामणी ॥ १८६१ ॥ 15
 केवलं अंगविज्जाए मणिओ अत्थि दीवणो । अंग-स्सरविणिव्वत्तो अंगस्स रयणं मणि ॥ १८६२ ॥
 मणिओ अंगहिययं णिमित्तहिययं तथा । तत्तियलोकहितयं तस्स णामं विधीयति ॥ १८६३ ॥
 तं णिच्चसज्जायरओ णिच्चमाधारए णरो । अण्णमतिमं दच्छे तरे वागरणोदधि ॥ १८६४ ॥
 णागतण्णुमसिस्सं व णापुत्तं णासहस्सतं । ण अणातभूतं वायेज्जो भगवंतं महामणि ॥ १८६५ ॥
 एतमासज्ज हि णरो अणंतमतिचक्खुमं । अजिणो जिणसंकासो पच्चक्खं देवतं भवे ॥ १८६६ ॥ 20
 हिता-ऽहिताण अत्थाणं दिव्वमाणुसकाण य । संपया-ऽणागता-ऽतीताण विण्णाया भवतंगवी ॥ १८६७ ॥
 धियाधारो सूयी सूरो दच्छे सुप्पतिभाणवं । आमास-सह-रूवणू जिणो विय वियागरे ॥ १८६८ ॥

॥ णमो अरहंताणं । णमो सव्वसिद्धाणं । णमो भगवतीए महापुरिसदिण्णाय
 अंगविज्जाय समुद्देसो मणिसव्वकारणणिद्देसो मणी नाम
 नवमो अज्झाओ सम्पत्तो ॥ १ ॥ छ ॥

१ हस्तचिह्नान्तर्गतमुत्तरार्द्धं हं० त० एव वर्तते ॥ २ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते । ३ "भागी तु हं० त० विना ॥ ४ "तसति" हं० त० विना ॥

णमो भगवतो अरहतो यसवतो महापुरिसस्स महावीरवद्दमाणस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय आगमणणामाज्झायो । [तं खलु भो ! तमणुवक्खस्सामि] । तं जहा—तत्थ पंचविधं आगमणं जाणितव्वं भवति । तं जधा—णिरत्थयं १ दंसणट्टयाय २ विण्णासणट्टयाय ३ ०८ आयरणट्टयाय ४ १० अत्थत्थिकत्थताय चेति ५ ।

- 5 तत्थ बज्झामासे चलामासे तुच्छामासे कण्हामासे णिम्मज्जिते णिल्लिखिते कासिते खुधिते लुचिते पम्हुट्ठे पपुट्ठे पम्पुते अधोमुहे अवलोकिते अवसरिते ओलोकिते ओसारिते सव्वअसक्कारिते सव्वअसारगते तुच्छके रित्तके वा कुक्कयणायं वा एवंविधसद्—रूवपादुब्भावे णिरत्थकं आगतो सि त्ति बूया १ । तथा हितयामासे णयणामासे भुमंतरामासे माता—पितु—भाउ—भगिणि—सोदरी—मित्त—संबंधिगते सव्वमित्तगते सव्वदेवगते सव्वपेच्छगते सव्वरंगावचरगते सव्ववित्तगए सव्वरूवगए सव्वबुद्धवण्णरागगते सव्वदंसणीयगते एवंविधसद्—रूवपादुब्भावे दंसणट्टयाय आगतो सि त्ति बूया २ ।
- 10 तत्थ भमुक्खुक्खेवणे अच्छिण्णि कासिते अंतोमुहे हसिते दरकडायं वा विज्जायं दरकडे वा सिप्पे दरकडे वा उवकरणे दरसंलाविते वा सव्वदरकडे वा जूते वा जणवाए वा वादसंलावे वा सव्वमायागते सव्वउवधिगते वा सव्वचित्तविज्जागते वा सव्वपुच्छंतभावगते वा सव्वग्गहणगते वा सव्वअतिसंधागते वा एवंविधसद्—रूवपादुब्भावे विण्णासणट्टयाय आगतो सि त्ति बूया ३ । तत्थ पडिलोमेसु गतेसु विकूणिते ओट्टणिकुंजणे सीसविकंपणे सव्ववालगते सव्वसंबाधगते सव्वरोधगते सव्वविवादकडे ७ सव्वविगहकडे ८ कूडमासके कूडणाणके कूडलेक्खे कूडपाउब्भावे वा पण्णे पुप्फे फले
- 15 वा मल्ले वा भोयणे वा वत्था—ऽलंकारे वा सव्वकोड—किविल्लकपादुब्भावे वा एवंविहसद्—रूवपादुब्भावे आयरणट्टयाय आगतो सि त्ति बूया ४ । तत्थ अब्भंतरामासे ०८ दंढामासे १० णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जा ०८ मासे १० मुदितामासे सव्वआहारगते वाविद्धे मल्ले वा भूसणे वा उल्लेगिते अभिहट्ठे अभिमट्ठे अँच्छइते पागुते परिहिते अणुलिते अलंकिते सेसग्गहणे जण्णबलिहरणगते वणपुण्णामपहट्ठ—पसत्थ—परघ—पच्चुगतपुप्फे वा फले वा मल्ले वा भूसणे वा सव्वअत्थगते सव्वअत्थोपयागते सव्वअत्थसद्गते सव्वववहारगते सव्वसामिद्धिगते सव्वअत्थभोयणगते
- 20 एवंविधसद्—रूवपाउब्भावे अत्थत्थिगताय आगतो सि त्ति बूया ५ ।

- तत्थ अत्थे पुव्वाधारिते सव्वमत्थं दुविधमाधारए—सज्जीवं १ अज्जीवं चेव २ । तत्थ सव्वं सव्वचलामासे दढामासे अब्भंतरामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे मुदितामासे सव्वसज्जीवगते सव्वसज्जीव—पादुब्भावे सव्वसज्जीवपरामासे ०८ सव्वसज्जीवसद्गते १० सव्वसज्जीवउवकरणपादुब्भावे सव्वसज्जीवउवकरणपरामासे सव्वसज्जीवउवकरणसद्गते सव्वसज्जीवउवकरणणामधेज्जोदीरणे अंकुर—परोहगते पत्तुदग्ग—पुप्फ—फलगते एवंविधसद्—
- 25 रूवपादुब्भावे सज्जीवं अत्थं बूया १ । तत्थ बज्झामासे कण्हामासे रुक्खामासे मतामासे सव्वअज्जीवगते सव्वअज्जीव—सद्गते सव्वअज्जीवपाउब्भावे सव्वअज्जीवपरामासे सव्वअज्जीवणामधेज्जोदीरणे सव्ववातंकुर—परोह—पुप्फ—फल—तय—पवालगतं सव्वेसि रित्ततुच्छगते सव्वसरीरभायणगते धाउगए एवंविधसद्—रूवपादुब्भावे अज्जीवत्थं बूया २ ।

तत्थ सज्जीवे अत्थे पुव्वाधारिते सज्जीवमत्थं दुविधमाधारये—मणुस्सजोणिगतं चेव १ तिरियजोणिगतं चेव २ । तत्थ उज्जुकामासे उज्जुगते उज्जुभावगते सव्वमणुस्सपाउब्भावे सव्वमणुस्सपरामासे सव्वमणुस्ससद्गते सव्वमणुस्सणाम—

१ ०८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ २ पम्पुते सं ३ पु० ॥ ३ कक्कं हं० त० सि० ॥ ४ दरीए मित्तं हं० त० विना ॥ ५ रंगोव हं० त० विना ॥ ६ सव्वयुद्धं वद्धवण्णं हं० त० विना ॥ ७ मुक्खुक्खे हं० त० विना ॥ ८ अइब्बंघं सं ३ पु० ॥ ९ णिभुंज हं० त० विना ॥ १० हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ११ ०८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १२ मुद्धा हं० त० ॥ १३ ०८ १० एतच्चिह्नगतं पदं हं० त० नास्ति ॥ १४ अच्छयए पायुए परि हं० त० ॥ १५ तहा अत्थे पुव्वाधारे जे सज्जीवं हं० त० ॥ १६ ०८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १७ कन्नामासे हं० त० सि० ॥

धेज्जोदीरणे सव्वमणुस्सरूवागितिपादुब्भावे सव्वमणुस्सरूवागितिपरामासे ८ सव्वमणुस्सरूवागितिसद्गते वा ९
सव्वमणुस्सरूवागितिणामधेज्जोदीरणे वा एवंविधसद्-रूपपाउब्भावे मणुस्सं बूया १ । तत्थ तिरियामासे तिरियगते तिरिय-
विलोकिते सव्वतिरिक्खजोणिपादुब्भावे सव्वतिरिक्खजोणीकपरामासे सव्वतिरिक्खजोणिकसद्गते सव्वतिरिक्खजोणि-
कणामधेज्जोदीरणे सव्वतिरिक्खजोणिकरूवागितिपाउब्भावे सव्वतिरिक्खजोणिकरूवागितिपरामासे वा सव्वतिरिक्खजोणिक-
रूवागितिसद्गते वा सव्वतिरिक्खजोणिकरूवागितिणामधेज्जोदीरणे वा सव्वतिरिक्खजोणिकउवकरणपादुब्भावे वा 5
सव्वतिरिक्खजोणिकउवकरणपरामासे वा सव्वतिरिक्खजोणिकउवकरणसद्गते वा सव्वतिरिक्खजोणियउवकरणणामधे-
ज्जोदीरणे सव्वतिरिक्खजोणिकथी-पुरिसणामधेज्जोदीरणे वा एवंविधसद्-रूपपादुब्भावे तिरिक्खजोणि बूया २ ।

तत्थ मणुस्से पुव्वाधारिते अज्जो १ पेस्सो २ ति पुणरवि आधारयितव्वं भवति । तत्थ ६ उद्धं णाभीय
गतेसु ७ उद्धं णाभीय गतोवकरणे सव्वअज्जसमाचारगते सव्वअज्जगते सव्वअज्जपादुब्भावे सव्वअज्जपरामासे
सव्वअज्जसद्गते [सव्वअज्जणामधेज्जोदीरणे सव्वअज्जरूवागितिपादुब्भावे] सव्वअज्जरूवागितिपरामासे वा सव्वअज्ज- 10
रूवागितिसद्गते सव्वअज्जरूवागितिणामधेज्जोदीरणे वा ८ सव्वअज्जउवकरणपाउब्भावे ९ सव्वअज्जउवकरण-
परामासे सव्वअज्जउवकरणसद्गते सव्वअज्जउवकरणणामधेज्जोदीरणे वा सव्वअज्जथीपुरिसणामधेज्जोदीरणे एवंविधसद्-
रूपपाउब्भावे अज्जं मणुस्सं बूया १ । तत्थ अधोणाभीगतामासे अधोणाभीगतोपकरणे ६ सव्वपेस्सगते सव्वपेस्सो-
वयारगए ७ सव्वपेस्सपादुब्भावे सव्वपेस्सपरामासे सव्वपेस्ससद्गते सव्वपेस्सणामधेज्जोदीरणे सव्वपेस्सरूवागिति-
पादुब्भावे सव्वपेस्सरूवागितिपरामासे सव्वपेस्सरूवागितिसद्गते सव्वपेस्सरूवागितिणामधेज्जोदीरणे सव्वपेस्सउवकरण- 15
पादुब्भावे सव्वपेस्सउवकरणपरामासे सव्वपेस्सउवकरणसद्गते सव्वपेस्सउवकरणणामधेज्जोदीरणे सव्वपेस्सथी-पुरिसणा-
मधेज्जोदीरणे एवंविधसद्-रूपपाउब्भावे पेस्सं मणुस्सं बूया २ ।

तत्थ अज्जो पेस्से ति पुव्वमुपधारिते इत्थी १ पुरिसो २ । पुणरवि आधारयितव्वं भवति । तत्थ दाहिणामासे
पुण्णामधेज्जगतामासे पुरिसपाउब्भावे पुरिसपरामासे पुरिसस पुरिसणामधेज्जोदीरणे पुरिसरूवागितिपाउब्भावे
पुरिसरूवागितिपरामासे पुरिसरूवागितिसद्गते पुरिसरूवागितिणामधेज्जोदीरणे पुरिसणामधेज्जोवकरणपाउब्भावे ६ पुं- 20
सणामधेज्जोवकरणपरामासे ७ पुरिसणामधेज्जोवकरणसद्गते पुरिसणामधेज्जउवकरणणामधेज्जोदीरणे पुरिसणामधेज्ज-
दिव्वजोणिगतपादुब्भावे वा ८ पुंरिसणामधेज्जदिव्वजोणिगयपरामासे ९ पुरिसणामधेज्जदिव्वजोणिगतसद्गते पुं-
सणामधेज्जदिव्वजोणिगतणामधेज्जोदीरणे पुरिसणामधेज्जपाणजोणिगतपादुब्भावे पुरिसणामधेज्जपाणजोणिगतपरामासे पुं-
सणामधेज्जपाणजोणिगतसद्गते पुरिसणामधेज्जपाणजोणिगतणामधेज्जोदीरणे ६ पुंरिसणामधेज्जधाउजोणिगयपाउब्भावे
पुरिसणामधेज्जधाउजोणिगयपरामासे पुरिसणामधेज्जधाउजोणिगयसद्गए ७ पुरिसणामधेज्जधातुजोणिगतणामधेज्जोदीरणे 25
पुरिसणामधेज्जमूलजोणिगतपाउब्भावे ८ पुंरिसणामधेज्जमूलजोणिगतपरामासे ९ पुरिसणामधेज्जमूलजोणिगतसद्गते
पुरिसणामधेज्जमूलजोणिगतणामधेज्जोदीरणे सव्वपुरिसोवकरणे वा सव्वपुरिसोवचारगते वा पुण्णामधेज्जे पुप्फे वा फले
वा भूसणे वा भायणे वा एवंविधसद्-रूपपाउब्भावे पुरिसं बूया १ । तत्थ वामामासे थीणामधेज्जगतामासे थीपाउब्भावे
थीपरामासे थीसद्गते थीणामधेज्जोदीरणे थीरूवागितिपादुब्भावे ६ थीरूवागितिपरामासे ७ ८ थीरूवागिति-
सद्गते ९ थीरूवागितिणामधेज्जोदीरणे थीरूवागितिउवकरणपाउब्भावे थीरूवागितिउवकरणपरामासे थीरूवागितिउवकरण- 30
सद्गते थीरूवागितिउवकरणणामधेज्जोदीरणे थीणामधेज्जदिव्वजोणिगतपादुब्भावे थीणामधेज्जदिव्वजोणिगत-
परामासे थीणामधेज्जदिव्वजोणिगतसद्गते थीणामधेज्जदिव्वजोणिगतणामधेज्जोदीरणे थीणामधेज्जधातुजोणिगतपादुब्भावे थी-

१ ८ ९ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ २ अस्सो पेस्से ति पुणं हं० त० ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः
पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ४ गते चेव सव्वं हं० त० ॥ ५ चतुस्सकोष्ठकगतः पाठः सर्वासु प्रतिषु नास्ति ॥
६ सव्वअज्जरूवागितिणामधेज्जोदीरणे वा सव्वअज्जरूवागिति सद्गते इत्येवं व्यत्यासरूपेण सर्वासु प्रतिषु पाठो वर्तते ॥
७-८-९-१०-११ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ १२ ८ ९ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥
१३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ १४ ८ ९ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥

णाम-धेज्जधातुजोणिगतपरामासे ८५ थीणामधेज्जधातुजोणिगतसद्गते ८६ थीणामधेज्जधातुजोणिगतणामधेज्जोदीरणे ८७ थीणा-
मधेज्जपाणजोणिगयपाउब्भावे ८८ थीणामधेज्जपाणजोणिगतपरामासे थीणामधेज्जपाणजोणिगतसद्गते थीणामधेज्जपाणजोणि-
गतणामधेज्जोदीरणे ८९ थीणामधेज्जमूलजोणिगयपाउब्भावे ९० थीणामधेज्जमूलजोणिगतपरामासे थीणाम-
धेज्जमूलजोणिगतसद्गते थीणामधेज्जमूलजोणिगतउपकरणणामधेज्जोदीरणे सव्वइत्थिसमायारगते इत्थीवेसगते इत्थीणामे
5 पुप्फे फले वा भूसणे वा भायणे वा एवंविधसद्-रूपपाउब्भावे इत्थी बूया २ । इति सज्जीवा समणुगता ।

तत्थ दिव्वजोणिगते दिव्वत्थी-पुरिसपाउब्भावे वा परामासे [वा] सद्गते वा णामधेज्जोदीरणे वा उपकरणगते
वा दिव्वत्थी-पुरिसे एवंगतं जं भवति इति सज्जीवो अत्थि दिव्व-माणुस्सको थी-पुरिसगतो विण्णायव्वो भवति ।

तत्थ सज्जीवे अत्थे पुव्वाधारिते तिरिक्खजोणिगते तिरिक्खजोणिगतं अत्थं तिविधमाधारये । तं जधा-चतुप्पदगतं १
पक्खिगतं २ परिसप्पगतं ३ चेति । तत्थ चउप्पदेसु चतुरस्सेसु चउक्केसु सव्वचउप्पयगते सव्वचउप्पयपादुब्भावे
10 सव्वचउप्पयपरामासे सव्वचउप्पयसद्गते सव्वचउप्पयणामधेज्जोदीरणे सव्वचउप्पयरूवागितिपादुब्भावे सव्व-
चउप्पदरूवागितिपरामासे सव्वचउप्पदरूवागितिसद्गते सव्वचतुप्पदरूवागितिणामधेज्जोदीरणे सव्वचतुप्पदउपकरण-
पाउब्भावे सव्वचउप्पयउपकरणपरामासे सव्वचउप्पयउपकरणसद्गते सव्वचउप्पयउपकरणणामधेज्जोदीरणे
सव्वचउप्पय ८५ थी-पुमंस ८६ णामधेज्जोदीरणे एवंविधसद्-रूपपाउब्भावे चउप्पयगतं अत्थं संचितियं ति बूया १ ।
तत्थ उद्धं गीवाय सिरोमुहामासे उद्धं गीवा-सिरो-मुहोवकरणउल्लोगिते उस्सिते उच्चारिते उद्धभागे सव्वपक्खिपाउब्भावे
15 सव्वपक्खिपरामासे सव्वपक्खिसद्गते सव्वपक्खिणामधेज्जोदीरणे सव्वपक्खिरूवागितिपाउब्भावे सव्वपक्खिरूवागितिपरामासे
सव्वपक्खिरूवागितिसद्गए सव्वपक्खिरूवागितिणामधेज्जोदीरणे सव्वपक्खिउवकरणपाउब्भावे सव्व [पक्खि]उपकरणपरामासे
सव्वपक्खिउपकरणसद्गए सव्वपक्खिउवकरणणामधेज्जोदीरणे ८७ सव्वपक्खिणामधेज्जोदीरणे थी-पुरिसगते एवंविधसद्-
रूपपाउब्भावे पक्खिगयं सज्जीवं अत्थं बूया २ । तत्थ दीहेसु सव्वपरिसप्पपाउब्भावे सव्वपरिसप्प ८८ परामासे
सव्वपरिसप्पसद्गते सव्वपरिसप्पणामधेज्जोदीरणे सव्वपरिसप्परूवागितिपाउब्भावे सव्वपरिसप्परूवागितिपरामासे
20 सव्वपरिसप्परूवागितिसद्गते सव्वपरिसप्परूवागितिणामधेज्जोदीरणे सव्वपरिसप्पउवगरणपाउब्भावे सव्वपरिसप्पउवगरणपरामासे
सव्वपरिसप्पउवगरणसद्गते सव्वपरिसप्पउवगरणणामधेज्जोदीरणे सव्वपरिसप्पत्थि-पुरिसणामधेज्जोदीरणे एवंविधसद्-
रूपपाउब्भावे परिसप्पकतं सज्जीवं अत्थं बूया ३ ।

तत्थ तिरिक्खजोणिगते [अत्थे] पुव्वमाधारिते तिरिक्खजोणिकतं ८९ तिरिक्खं ९० दुविधमाधारये-पुरिसो
तिरिक्खजोणी १ इत्थी तिरिक्खजोणी २ । तत्थ दक्खिणामासे पुण्णामधेज्जामासे पुरिसपादुब्भावे पुरिसपरामासे
25 पुरिससद्गते पुरिसणामधेज्जोदीरणे पुरिसरूवागितिपाउब्भावे एवंविधसद्-रूपपाउब्भावे पुरिसं तिरिक्खजोणिगतं बूया १ ।
तत्थ वामामासे सरीरत्थीणामधेज्जामासे सरीरत्थीणामधेज्जोदीरणे ८५ ईत्थीपादुब्भावे ८६ इत्थीपरामासे इत्थिसद्गते
इत्थीणामधेज्जोदीरणे इत्थिरूवागितिपादुब्भावे इत्थिसमायारगते इत्थीवेसगते एवंविधसद्-रूपपाउब्भावे इत्थीतिरिक्खजोणिगतं
बूया २ । जधा मणुस्सेसु थी-पुरिस-णपुंसकप्पविभागो तधा तिरिक्खजोणीयं पि आमास-सद्-रूपविभागेहि पुंउद्दिट्ठेहि
णातव्वं भवति । इति सज्जीवो अत्थो विण्णेयो ।

30 तत्थ अज्जीवे अत्थे पुव्वमाधारिते अज्जीवमत्थं तिविधमाधारये । तं जहा-पाणजोणिगतं १ मूलजोणिगतं २
धातुजोणिगतं ३ चेति । तत्थ चलामासे ८५ सव्वपाणजोणिपरामासे ८६ सव्वपाणजोणिपादुब्भावे सव्वपाणजोणिगतपरामासे
सव्वपाणजोणिगतसद्गते सव्वपाणजोणिगतणामधेज्जोदीरणे सव्वपाणजोणिथी-पुरिसगते पाणजोणिमयं अज्जीवं बूया १ ।

१ ८५ ८६ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ २-३-४ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥
५ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठसन्दर्भः हं० त० एव वर्तते ॥ ६ 'णिगए' हं० त० ॥ ७ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥
८ ८५ ८६ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ९ पुंसुद्दिट्ठे सं ३ पु० ॥ १० ८५ ८६ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः
हं० त० सि० नास्ति ॥

तत्थ दढामासे सव्वधातुजोणिगते सव्वधातुजोणिपाउब्भावे सव्वधातुजोणिगतपरामासे  सव्वधातुजोणिगयसद्दगए  सव्वधातुजोणिगतणामधेज्जोदीरणे सव्वधातुमये वा उवकरणे सव्वधातुजोणीथी-पुरिसगते एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे धातुजोणिगतं अज्जीवमत्थं बूया २ । तत्थ गहणेसु केस-मंसु लोमगते सव्वमूलजोणिपादुब्भावे सव्वमूलजोणिपरामासे सव्वमूलजोणिसद्दगते  सव्वमूलजोणिणामधेज्जोदीरणे  सव्वमूलजोणिमए उवकरणे सव्वमूलजोणिगए णामधेज्जे उवकरणे एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे थी-पुरिसगयं अत्थं अज्जीवं बूया ३ ।  तत्थ पाणजोणिगतणामधेज्जउवकरणे 5
★ एवंविधसद्द-रूवपाउब्भावे णपुंसकगतं ★ अत्थं अज्जीवं बूया । 

तत्थ पाणजोणिगते अत्थे पुव्वमाधारिते पाणजोणिगतं अत्थं दुविधमाधारए-आहारगतं उवकरणगतं चेव १ मूलजोणिगतं उवकरणगतं चेव २ । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे आहार-मुह-गीवाय दंतोद्वे गंडे कवोल-जिब्भ-तालुके पस्सपदे सहितय-कुक्खि-उदरपरामासे उद्वित्ते पस्सिद्धे णिग्गिण्णे अस्साविते सस्साविते सव्वभोयणगते सव्वपाणगते सव्वपाण-भोयणभायणगते सव्वआहारगते पुप्फ-फले पत्त-पवाले भक्खपक्खिचतुप्पदे 10 परिसप्पगते एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे पाणजोणिगतं अज्जीवआहारगतं अत्थं बूया । तत्थ सव्वउवकरणगते सव्वकारुकगते सव्वसिप्पिगगते सव्वअण्णहारगते पाणजोणिगतं अज्जीवउवकरणगतं अत्थं बूया १ । तत्थ पाणजोणिमये आहारगते अज्जीवमत्थे पुव्वमाधारिते पाणजोणिगतो अज्जीवो आहारगतो अत्थो दुद्धं दधि णवणीतं तक्खं घृतं मांसं वसा मज्जमिति, इति पाणजोणिगतो अत्थो आहारगतो ति बूया । तत्थ पाणजोणिगते अज्जीवे उवकरणगते अत्थे पुव्वमाधारिते अज्जीवो पाणजोणिगतो उवकरणगतो अत्थो अट्ठिगतो दंतगतो सिंगगतो चम्मगतो ण्हायुगतो लोमगतो वालगतो तंतुगतो क्षेणियगतो 15 चेति, इति पाणजोणिगतो उवकरणगतो अज्जीवो अत्थो २ ।

तत्थ धातुजोणिगते अत्थे  पुव्वमाधारिए धातुजोणिगयं अत्थं दुविधमाहारए-अग्गेयं १ अणग्गेयं २ चेति । तत्थ सव्वअग्गेयेसु उण्हेसु सव्वअग्गिपाउब्भावे सव्वअग्गिपरामासे सव्वअग्गिसद्दगए सव्वअग्गिणामधिज्जोदीरणे सव्वरत्तेसु सव्वअग्गिजीवणेसु सव्वअग्गिजीवणोपकरणेसु य अग्गेयं बूया १ । तत्थ सव्वअणग्गेसु सव्वसीयलेसु सव्वउदकचरेसु सव्वअणग्गिजीवणेसु अणग्गेयोवजीवणोवकरणेसु य अणग्गेयं धातुजोणिगयं अत्थं बूया २ । तत्थ 20 अग्गेये धातुजोणिगए अत्थे पुव्वमाहारिए सव्वलोहाणि खारलोहाणि अग्गेयं च मणिधातुकं बूया ।  तत्थ अणग्गेये धातुजोणिगते अत्थे पुव्वमाधारिते अणग्गेयं धातुजोणिगतं वण्णधातुगतं कट्ठिधातुगतं अत्थं पुढविधातुगतं अणग्गेयं च मणिधातुगतं रसधातुगतं बूया । इति धातुजोणिगतो अणग्गेयो  अग्गेयो  यं दुविधो अत्थो भवति ।

तत्थ मूलजोणिगते अत्थे पुव्वमाधारिते मूलजोणिगतं अत्थं तिविधमाधारये-मूलगतं १ खंधगतं २ अग्गगतं ३ चेति । तत्थ अधोभागेसु अधेणाभीय उवकरणे सव्वमूलजोणिपाउब्भावे सव्वमूलजोणिपरामासे सव्वमूलजोणिसद्दगते 25 सव्वमूलजोणीणामधेज्जोदीरणे सव्वमूलजोणिउवकरणपादुब्भावे सव्वमूलजोणिउवकरणपरामासे सव्वमूलजोणिउवकरण-सद्दगते सव्वमूलजोणिउवकरणणामधेज्जोदीरणे एवंविधसद्द-रूवपादुब्भावे मूलगतं अत्थं बूया १ । तत्थ सव्वसमाणे

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २-३   एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ४ ★ ★ फुल्ल्यन्तर्गतः पाठः सि० एव वर्तते । सं ३ पु० प्रतिषु रिक्तं स्थानं वर्तते ॥ ५ उद्धृष्टिए परिं हं० त० ॥ ६ संसाविते हं० त० विना ॥ ७ अज्जीवं आहा हं० त० । अज्जीवमाहा सि० ॥ ८ अणाहार हं० त० विना ॥ ९ णिगते आहा हं० त० ॥ १० घतमासवमांसमधुमिति हं० विना ॥ ११ उत्थिगतो हं० त० ॥ १२ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते । सं ३ पु० सि० प्रतिषु पुनरेतत्स्थाने पुव्वमाधारिते धातुजोणिगणेसु य अणग्गेयं धातुजोणिगतं अत्थं बूया । तत्थ अणग्गेये धातुजोणिगते अत्थे पुव्वमाधारिते सव्वलोहाणि खारलोहाणि अग्गेयं च मणिधातुकं बूया । तत्थ अणग्गेये इति रूपः पाठो वर्तते ॥ १३   एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति ॥ १४ य सवदुविओ अत्थो हं० त० ॥

सव्वसमाणोपकरणेषु सव्वसमभागोपलद्धीयं सव्वखंधगते सव्वखंधपाउब्भावे सव्वखंधपरामासे सव्वखंधसद्गते सव्वखंधणामधेज्जोदीरणे सव्वखंधईक्कासोवलद्धीयं सव्वसमभागोवलद्धीयं सव्वखंधमये उवकरणे सव्वखंधोवकरणे एवंविधसद्-रूवपाउब्भावे खंधगयं बूया २ । तत्थ उद्धंभागेसु उद्धंगतोपकरणे सव्वपुप्फ-फल-[पत्त]पादुब्भावे सव्वपुप्फ-फल-पत्तपरामासे सव्वपुप्फ-फल-पत्तसद्गते सव्वपुप्फ-फल-पत्तणामधेज्जोदीरणे सव्वपुप्फ-फल-पत्त 5 उवकरणपाउब्भावे सव्वपुप्फ-फल-पत्त-उवकरणपरामासे सव्वपुप्फ-फल-पत्तउवकरणसद्गते सव्वपुप्फ-फल-पत्तउवकरणणामधेज्जोदीरणे एवंविधसद्-रूवपादुब्भावे अगगतं मूलजोणिगतं अत्थं बूया ३ । इति मूलजोणिगतो तिविधो अत्थो भवति ।

तत्थ चलेसु णट्ठं वा पावासिकं वा आतुरं वा बूया-तत्थ अब्भंतरे चलेसु णट्ठं बूया, बाहिरेसु चलेसु पावासिकं बूया, विमज्जेसु चलेसु आतुरं बूया । बद्धेसु बद्धं बूया । मोक्खेसु मोक्खं बूया । तत्थ हियय-कुक्खि-णाभि- 10 उदर-उच्छंग-पोरुस-अंगुट्टक-कणेट्टिकापरामासे पयं पयं अंतरेण पुच्छित्तुं आगतो सि त्ति बूया । पुण्णामोपलद्धीयं पुत्तं बूया । थीणामोवलद्धीयं दारिकं बूया । पुण्णामधेज्जेसु पुरिसं अंतरेण पुच्छित्तुं आगतो सि त्ति बूया । थीणामधेज्जेसु इत्थीमंतरेण पुच्छित्तुं आगतो सि त्ति बूया । णपुंसकेसु णपुंसकमंतरेण पुच्छित्तुं आगतो सि त्ति बूया । दढेसु सारिकोपकरणमंतरेण [पुच्छित्तुं] आगतो सि त्ति बूया । कण्हेसु सारिकोपकरणमंतरेण पुच्छित्तुं आगतो सि त्ति बूया । तंबेसु रतोपलद्धीयं च सुवण्णकं बूया । सुक्केसु सारवंतेसु य मज्झकं बूया । सव्वधणोपलद्धीयं धणं बूया । णित्थकेसु 15 णित्थकं बूया । तत्थ णिद्धेसु कूवं वा णदि वा समुद्धं वा पुच्छित्तुं आगतो सि त्ति बूया-तत्थ उव्विद्धेसु कूवं बूया, दीहेसु णदि बूया, महापरिग्गहेसु परिकखेवेसु य समुद्धं बूया । तत्थ कसेसु सुत्तं वा अच्छादणं वा कसं वा थी-पुरिसं अंतरेण पुच्छित्तुं आगतो सि त्ति बूया । तत्थ कसेसु अज्जवेसु केस-मंसु-लोमगते सुत्तं वा तंतुं वा वित्तं वा बूया । तत्थ वत्थे वित्थते परिहिते पागुते वेट्ठणे वा अच्छादणं बूया । तत्थ सज्जीवेसु पुण्णामेसु पुरिसं बूया । थीणामेसु सज्जीवेसु इत्थिकं बूया । णपुंसके णपुंसकं बूया । तत्थ थलेसु उण्णतेसु पव्वयं वा पासायं 20 वा उण्णतं बूया । तत्थ गहणेसु रण्णं बूया । उवगहणेसु आरामं बूया वणरारिं वा बूया । परिमंडलेसु भायणं बूया । पुधूसु य पुधुवि वा किलंजं वा बूया । जण्णेयेसु य जण्णं वा वाधेज्जं वा बूया । अग्गेयेसु अग्गी बूया । णिद्धेसु उदगं वा वुट्ठि वा आहारं वा बूया-उवरिट्ठिमेसु णिद्धेसु वासं बूया, समभागेषु णिद्धेसु आहारं बूया, अधे(धो)भागेषु णिद्धेसु उदगं बूया । चतुरस्सेसु चउप्पयं वा खेतं वा बूया । बज्जेसु पावासिकं बूया । बज्जेसु परस्स अत्थाय पुच्छित्तुं आगतो सि त्ति बूया । पुरिमेसु अप्पणो अत्थाय पुच्छित्तुं आगतो सि त्ति बूया । बज्जंतरेसु अप्पणो य 25 परस्स य अंतरेण पुच्छित्तुं आगतो सि त्ति बूया । पुरिमेसु अणागतं बूया । पच्छिमेसु अतिवत्तं बूया । वामदक्खिणेषु गतेसु वत्तमाणं बूया । मतेसु मतं वा मतकप्पं वा बूया । लुक्खेसु चारिकमंतरेण पुच्छित्तुं आगतो सि त्ति बूया । सेतेसु णिद्धेसु य रुप्पं बूया । चउरंसेसु णिद्धेसु चित्तेसु दढेसु य काहावणं बूया । किण्हेसु अंसकोवकरणमंतरेण पुच्छित्तुं आगतो सि त्ति बूया । सामेसु आभरणमंतरेण पुच्छित्तुं आगतो सि त्ति बूया । दीहेसु दवियमंतरेण पुच्छित्तुं आगतो सि त्ति बूया । हस्सेसु पुप्फ-फलमंतरेण पुच्छित्तुं आगतो सि त्ति बूया । रमणीयेसु ईरिणं वा भट्ठं वा रमणिज्जं वा देसं बूया । मुदितेसु उस्सयं वा समायं वा अंतरेण पुच्छित्तुं आगतो सि त्ति बूया । दीणेषु उवसग्गसलद्धं 30 अंतरेण पुच्छित्तुं आगतो सि त्ति बूया । पुण्णेसु पसण्णेसु उस्सयं वा वारेज्जं वा बूया । उद्धंभागेसु दिव्वजोणिगतं बूया । कण्णपट्टे सव्ववाहणगते चतुप्पदगतं वा अंतरेण पुच्छित्तुं आगतो सि त्ति बूया । तिक्खेसु जोग-क्खेमं बूया । तत्थ केस-मंसु-लोमगते मूलजोणिगतं अत्थमंतरेण पुच्छित्तुं आगतो सि त्ति बूया । अणूसु सव्वधन्नगतं बूया । सामेसु संपयोगेषु मेधुणमंतरेण पुच्छित्तुं आगतो सि त्ति बूया । बंधेयेसु बंधणमंतरेण पुच्छित्तुं आगतो सि त्ति बूया ।

१ 'खंधगते' हं० त० विना ॥ २ 'इक्खासो' सं ३ पु० ॥ ३ हस्तचिह्नगतः पाठः हं० त० एव वत्तते ॥

४ 'सु णिद्धं पा' हं० त० विना ॥ ५ विमहिंसु सप्र० ॥ ६ 'च्छित्तुज्जे आ' सप्र० ॥ ७ पण्णेसु या पावा' हं० त० ॥

८ ईरिणं हं० त० ॥

खत्तेयेसु खत्तियमंतरेण पुच्छितं आगतो सि त्ति बूया । वेस्सेज्जेसु वेस्समंतरेण पुच्छितं आगतो सि त्ति बूया । सुहेज्जेसु सुहमंतरेण पुच्छितं आगतो सि त्ति बूया । बालेयेसु बालमंतरेण पुच्छितं आगतो सि त्ति बूया । जोव्वणत्थेसु जोव्वणमंतरेण पुच्छितं आगतो सि त्ति बूया । मज्झिमवयेसु मज्झिमवयमंतरेण पुच्छितं आगतो सि त्ति बूया । महव्वयेसु महव्वयमंतरेण पुच्छितं आगतो सि त्ति बूया । उत्तमेसु उत्तमं बूया । उत्तमसाधारणेसु उत्तमसाधारणं बूया । मज्झिमेसु मज्झिमं बूया । मज्झिमसाधारणेसु मज्झिमसाधारणं बूया । जधण्णेसु जधणं बूया । जधणसाधारणेसु जधणसाधारणं बूया । पुरत्थिमेसु अभिकंखितं बूया । पच्छिमेसु उवधुतं बूया । वामदक्खिणेसु उवधुज्जमाणं अत्थं अंतरेण अत्थं पुच्छितं आगतो सि त्ति बूया । एवं सव्वेसु आमासेसु अंतरंगे बाहिरंगे य अधापडिरूवेण सद्-रूव-गंध-फास-रसगतेण सव्वं समणुगंतव्वं भवति ॥

॥ आगमणो नामज्झाओ दसमो सम्मत्तो ॥ १० ॥ छ ॥

[एकादसमो पुच्छितज्झाओ]

10

णमो भगवतो अरहतो यसवतो महापुरिसस्स महावीरवद्धमाणस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पुच्छितं णामाज्झातं । तं खलु भो ! तमणुवक्खयिस्सामि । तं जहा-अप्पाणं ताव दसधा परिकखेज्ज । तं जधा-हिदुतं १ दीणतं २ आतुरतं ३ आरोगगतं ४ कुद्धतं ५ पसण्णतं ६ छाततं ७ पीणियततं ८ एक्कगमणतं ९ विखित्तमणतं १० चेति ।

तत्थ हिद्वे अप्पणि पहिदुमत्थं वागरे । दीजे अप्पणि दीणमत्थं अणेव्वार्णि च वियागरे । कुद्धे अप्पणि आधि कलहं च वियागरे । पसण्णे अप्पणि सम्मोई संपीतिं च वियागरे । आतुरे अप्पणि आतुरं उवधुतं च वियागरे । आरोगे अप्पणि आरोगं वियागरे । छाते अप्पणि दुब्बिक्खं तत्थ णिदिसे । पीणिते अप्पणि धातकं अण्णलाभं च वियागरे । एक्कगमणसे अप्पणि मणोणिव्वुतिं मणोतुट्ठिं च वियागरे । विक्खित्तचित्ते अप्पणि विक्खित्तचित्तभावं अप्पसण्णभावं अत्थहारिं च वियागरे ॥ छ ॥

15

अतो परं परस्स पुच्छितं वक्खाइस्सामो । तं जधा-गच्छंतो वा पुच्छेज्ज, ठिओ वा पुच्छेज्ज, कुदुको वा पुच्छेज्ज, परिसकंतो वा पुच्छेज्ज, उवेसंतो वा पुच्छेज्ज, णिवण्णो वा पुच्छेज्ज, अपत्थद्धो वा पुच्छेज्ज, अण-वत्थद्धो वा पुच्छेज्ज, उच्चासणगतो वा पुच्छेज्ज, णीयासणगतो वा पुच्छेज्ज, पुरतो वा पुच्छेज्ज, पच्छतो वा पुच्छेज्ज, वामतो वा पुच्छेज्ज, दक्खिणतो वा पुच्छेज्ज, अभिमुहो वा पुच्छेज्ज, परम्मुहो वा पुच्छेज्जा(ज्ज), उवसकंतो वा पुच्छेज्ज, अवसकंतो वा पुच्छेज्ज, संहरंतो वा गताणि पुच्छेज्ज, विखित्तंतो वा गताणि पुच्छेज्ज, उट्ठित्तो वा पुच्छेज्ज, ओणमंतो वा पुच्छेज्ज, उण्णमंतो वा पुच्छेज्ज, उत्तरंतो वा पुच्छेज्ज, आरुहंतो वा पुच्छेज्ज, विणमंतो वा पुच्छेज्ज, णीहरंतो वा पुच्छेज्ज, पल्लत्थीकाकतो वा पुच्छेज्ज, पक्खपेंडकतो वा पुच्छेज्ज, कासमाणो वा पुच्छेज्ज, छीयमाणो वा पुच्छेज्ज, पयलायमाणो वा पुच्छेज्ज, णिस्सिधेमाणो वा पुच्छेज्ज, णिदुभंतो वा पुच्छेज्ज, णिस्ससंतो वा पुच्छेज्ज, जंभायमाणो वा पुच्छेज्ज, छेलंतो वा पुच्छेज्ज, पवडंतो वा पुच्छेज्ज, रोदंतो वा पुच्छेज्ज, हसंतो वा पुच्छेज्ज, आहारेमाणो वा पुच्छेज्ज, छेदेमाणो वा पुच्छेज्ज, सक्कारेमाणो वा पुच्छेज्ज, असक्कारेण वा पुच्छेज्ज, 25 30

20

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २ आगमणोज्झाओ ॥ छ ॥ हं० त० विना ॥ ३ हिद्वयं दीणयं आउस्यं आरोगयं कुद्धयं पसण्णयं छाययं पीणिमयं एक्कगमणयं विक्खित्तमणयं चेति हं० त० ॥ ४ णिस्सिधेयं वियागरे । छाते अप्पणि विक्खयं दुब्बि सि० ॥ ५-६-७ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ८ पलायमाणो हं० त० विना ॥ ९ छलवंतो हं० त० विना ॥ १० छनेमाणो हं० त० विना ॥

भिउडीय वा पुच्छेज्ज, मुट्ठि वा करेमाणो पुच्छेज्ज, मुत्तं वा करेमाणो पुच्छेज्ज, पुरीसं वा करेमाणो पुच्छेज्ज, वातं वा करेमाणो पुच्छेज्ज, वंदंतो वा पुच्छेज्ज, सव्वेसु वा जाण-वाहणेसु संतो पुच्छेज्ज, कोट्टके वा संतो पुच्छेज्ज, अंगणे वा संतो पुच्छेज्ज, अरंजरमूले वा पुच्छेज्ज, गम्भगिहे वा पुच्छेज्ज, अब्भंतरगिहे वा पुच्छेज्ज, भत्तगिहे वा पुच्छेज्ज, वच्चगिहे वा पुच्छेज्ज, णकूडे वा पुच्छेज्ज, उदगगिहे वा पुच्छेज्ज, अगिगिहे वा पुच्छेज्ज, रुक्खमूले वा पुच्छेज्ज, 5 भूमिगिहे वा पुच्छेज्ज, विमाणे वा पुच्छेज्ज, गगणगतो वा पुच्छेज्ज, चच्चरे वा पुच्छेज्ज, संधीसु वा पुच्छेज्ज, समरे वा पुच्छेज्ज, कडिकतोरणे वा पुच्छेज्ज, पागारे वा पुच्छेज्ज, चरिकासु वा पुच्छेज्ज, वेतीसु वा पुच्छेज्ज, गयवारीसु वा पुच्छेज्ज, संकमेसु वा पुच्छेज्ज, ६ संयणेसु वा पुच्छेज्ज, ७ वलभीसु वा पुच्छेज्ज, ८ रासीसु वा पुच्छेज्ज, ९ पंसूसु वा पुच्छेज्ज, णिद्धमणेसु वा पुच्छेज्ज, णिकूडेसु वा पुच्छेज्ज, फलिखायं वा पुच्छेज्ज, पावीरे वा पुच्छेज्ज, पेढिकासु वा पुच्छेज्ज, मोहणगिहे वा पुच्छेज्ज, ओसरे वा पुच्छेज्ज, संकमे वा पुच्छेज्ज, सोमाणत्थगतो वा पुच्छेज्ज, 10 अब्भंतरपरियरणे वा पुच्छेज्ज, बाहिरायं दुवारसालायं वा पुच्छेज्ज, बाहिरायं वा गिहदुवारबाहायं पुच्छेज्ज, उवट्ठाणजालगिहे वा पुच्छेज्ज, अच्छणके वा पुच्छेज्ज, सिप्पगिहे वा पुच्छेज्ज, कम्मगिहे वा पुच्छेज्ज, स्थतगिहे वा पुच्छेज्ज, ओधिगिहे वा पुच्छेज्ज, ११ उप्पलगिहे वा पुच्छेज्ज, १२ हिमगिहे वा पुच्छेज्ज, आदंसगिहे वा पुच्छेज्ज, तलगिहे वा पुच्छेज्ज, आगमगिहे वा पुच्छेज्ज, चतुक्कगिहे वा पुच्छेज्ज, रच्छगिहे वा पुच्छेज्ज, दंतगिहे वा पुच्छेज्ज, कंसगिहे वा पुच्छेज्ज, पडिकम्मगिहे वा पुच्छेज्ज, कंकसालायं वा पुच्छेज्ज, आतवगिहे वा पुच्छेज्ज, पणियगिहे वा पुच्छेज्ज, आसणगिहे 15 वा पुच्छेज्ज, भोयणगिहे वा पुच्छेज्ज, रसोतीगिहे वा पुच्छेज्ज, हयगिहे वा पुच्छेज्ज, रधगिहे वा पुच्छेज्ज, गयगिहे वा पुच्छेज्ज, पुप्फगिहे वा पुच्छेज्ज, जूतगिहे वा पुच्छेज्ज, पातवगिहे वा पुच्छेज्ज, खलिणगिहे वा पुच्छेज्ज, बंधणगिहे वा पुच्छेज्ज, १३ जाणगिहे वा पुच्छेज्ज, १४ जाणगिहे वा संतो पुच्छेज्ज ॥ छ ।

अभिमुहो वा पुच्छेज्ज अभिमुहअप्पणीयकं अणागतं अत्थं चित्तेसि त्ति बूया । परम्मुहो पुच्छेज्ज अप्पणीयकं अत्थं परम्मुहं अंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया । उवसक्कंतो पुच्छेज्ज अत्थो खिप्पं भविस्सति त्ति बूया । अवसक्कंतो 20 पुच्छेज्ज अत्थो खिप्पं ण भविस्सति त्ति बूया । अवसक्कंतो पुच्छेज्ज अत्थो सिग्घं विणस्सिहिति त्ति बूया । संहरमाणो अंगाणि पुच्छेज्ज संजोगं वा समागमं वा अंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया । विक्खिवमाणो अंगाणि पुच्छेज्ज विप्पयोगमंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । उट्ठंतो पुच्छेज्ज चलमत्थमंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । णिवेसंतो पुच्छेज्ज धुवत्थावर-मत्थमंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । उण्णमंतो पुच्छेज्ज विवद्धीमंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । ओणमंतो पुच्छेज्ज हाणीमंतरेण पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया । आरुभंतो पुच्छेज्ज आगमेस्सो अत्थो भविस्सति त्ति बूया । उत्तरंतो पुच्छेज्ज आवायमंतरेण 25 पुच्छिउं आगतो सि त्ति बूया । विणामंतो अंगाणि पुच्छेज्ज दुक्खा अत्थो भविस्सति त्ति बूया । णीहरेंतो अंगाणि पुच्छेज्ज णिरागारमंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । पल्लत्थिकासंपउत्तो पुच्छेज्ज बंधं वा घरावासमंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । पक्खपेडाय पुच्छेज्ज अत्थहाणीमंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । णिदुभमाणो पुच्छेज्ज अप्पियमंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । णीससंतो पुच्छेज्ज आयासमंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । जंभायमाणो पुच्छेज्ज उक्कंठकमंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । पयलायमाणो पुच्छेज्ज अत्थं दुक्कतं अंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । पवडंतो पुच्छेज्ज अत्थविणासमंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । रोदंतो 30 पुच्छेज्ज पियं पाणं अंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । हसंतो पुच्छेज्ज स्तीसंपयुत्तं अत्थमंतरेण पुच्छसि त्ति बूया । आहारेमाणो

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ३ गिहेसु वा हं० त० ॥ ४ संकामे वा सं ३ पु० । संकडे वा सि० ॥ ५ परिवरणे हं० त० ॥ ६ उवगिहे हं० त० ॥ ७ ११ १२ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ८ आगमगिहे हं० त० सि० ॥ ९ बंधणगिहे हं० त० विना ॥ १० हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥

पुच्छेज्ज ॐ भागविवद्धिमंतरेण पुच्छसि ति बूया । छेदेमाणो पुच्छेज्ज हाणीसंपयुत्तं अत्थं पुच्छसि ति बूया । सक्कारेण पुच्छेज्ज खिप्पं सुहेण अत्थं पाविहिसि ति बूया । असक्कारेण पुच्छेज्ज दुक्खेण अत्थं ण पाविहिसि ति बूया । भिउडी करेमाणो पुच्छेज्ज कोवमंतरेण पुच्छसि ति बूया । सुद्धि करेमाणो पुच्छेज्ज संजोगमंतरेण पुच्छसि ति बूया । ॐ मुत्तं करेमाणो पुच्छेज्ज पयाअपायमंतरेण पुच्छसि ति बूया । पुरीसं करेमाणो पुच्छेज्ज अत्थावायमंतरेण पुच्छसि ति बूया । वातं करेमाणो पुच्छेज्ज मतं वा मतकप्पं वा अंतरेण पुच्छसि ति बूया । 5 वंदंतो पुच्छेज्ज इस्सरियं वा उवचयं वा अंतरेण पुच्छसि ति बूया । कोट्टए पुच्छेज्ज णिगगमं अंतरेण पुच्छसि ति बूया । अंगणे पुच्छेज्ज महाजणमंतरेण पुच्छसि ति बूया । णिक्खूडे पुच्छेज्ज अरहस्समंतरेण पुच्छसि ति बूया । ॐ उदगगिहे पुच्छेज्ज आरोग्ग—हास—सिणेहमंतरेण पुच्छसि ति बूया । गब्भगिहे पुच्छेज्ज णिव्वुती—रतीसंपउत्तमत्थमंतरेण ति बूया । भग्गगिहे पुच्छेज्ज अणिव्वुत्तिमंतरेण ति बूया । अंगिगिहे पुच्छेज्ज सरीरपरितावणमंतरेण ति बूया । १० रुक्खमूले पुच्छेज्ज सरीरसोक्खमंतरेण पसत्थमत्थमंतरेण य ति बूया । भूमिगिहे पुच्छेज्ज अरहस्स—मत्थमंतरेण ति बूया । विमाणे पुच्छमाणो सुहमत्थमंतरेण ति बूया । गगणे संतो पुच्छेज्ज अव्वत्तमत्थमंतरेण ति बूया । उवलगिहे पुच्छेज्ज णिसुहमंतरेण ति बूया । णरविबुद्धवाहणे पुच्छेज्ज इस्सरियमंतरेण ति बूया । सयणासणगतो पुच्छेज्ज सोक्खमंतरेण ति बूया । रासीसु विपुलइस्सरिय—आधिपच्चकारणलाभायं पुच्छसि ति पावेहिसि ति बूया । वियडप्पकासे पुच्छेज्ज दुरुववणमत्थं ति बूया । रायपधे पुच्छेज्ज चलं महार्जणासाधारणं रायत्थमंतरेण ति बूया । सिंघाडग—चच्चरेसु पुच्छेज्ज चतुप्पदरूवचारीमंतरेण ति बूया । दुवारे पुच्छेज्ज पुरिसस्स णिगगमणमंतरेण 15 पुच्छसि ति बूया । खेत्ते पुच्छेज्ज पच्छणं पलायमंतरेण ति बूया । अट्टालए पुच्छेज्ज भयमंतरेण ति बूया । गयवारीय पुच्छेज्ज सतुभयमंतरेण ति बूया । संधिंसमरेसु पुच्छेज्ज ॐ दैसंता १० देसंतरगमणमंतरेण ति बूया । सयणे संतो पुच्छेज्ज भज्जामंतरेण ति बूया । वलभीसु दंसणीयरतिविहारसंपयुत्तं अत्थमंतरेण ति बूया । उदगपधेसु अमणुण्णिराससंपयुत्तमंतरेण पुच्छसि ति बूया । वयेसु पुच्छेज्ज दुप्पावणीयं रायत्थं पुरिससंपयुत्तं ति बूया । रासीसु पुच्छेज्ज सरीरअभिर्वद्धिमंतरेण पुच्छसि ति बूया । वप्पेसु सुभिक्षमंतरेण ति बूया । णिद्धमणेसु पुच्छेज्ज 20 अमणुण्णमत्थमंतरेण ति बूया । फलिहासु पुच्छेज्ज रायमंतरेण ति बूया । पउलीसु पुच्छेज्ज सिद्धदुवारमंतरेण ति बूया । कोट्टके पुच्छेज्ज णीहारपावासिकणिगगमणमंतरेण ति बूया । अस्समोहणके पुच्छेज्ज मोहणमंतरेण ति बूया । ओसरकेसु पुच्छेज्ज बाहिरसाधारणं ति बूया । मंचिकासु पुच्छेज्ज वेस्समंतरेण ति बूया । सोवाणेसु पुच्छेज्ज अद्धाणमंतरेण ति बूया । ॐ खंभेसु पुच्छेज्ज थावरमंतरेण ति बूया । ॐ अब्भंतरदुवारे पुच्छेज्ज आगमणसंरोध[मंतरे]णं ति बूया । बाहिरदुवारे पुच्छेज्ज णिगगमणमंतरेण ति बूया । दुवारसालाय बाहिराय पुच्छेज्ज 25 पुरुसअब्भंतरधरप्पवासागमणपतिपुत्तलाभं च ति बूया । अब्भितरे विरहे णिगगमणं, बाहिरे ॐ दुवारे १० दुवारबाहायं खिप्पं पवासागमणं, गब्भिणीय य पजायणं ति बूया । अब्भितरगिहे पुच्छेज्ज गोज्झरतिसंपयोगमंतरेण ति बूया । चतुरस्सके पुच्छेज्ज पाणरतिविहारसंपयुत्तं ति बूया । जलगिहे १० हाससुहविहारमंतरेण पुच्छसि ति बूया । महाणसगिहे पुच्छेज्ज विप्पवंचणासंपयुत्तं ति बूया । अच्छणके पुच्छेज्ज कम्मणिच्छेदणं बूया । सिप्पगिहे पुच्छेज्ज विज्जालाभमंतरेण ति बूया । 30 कम्मगिहे पुच्छेज्ज कम्मरंभमंतरेण ति बूया । रयणगिहे पुच्छेज्ज रज्जाभिसेकछायाभिगमणमंतरेण ति बूया । भंडगिहे पुच्छेज्ज संचयमंतरेण ति बूया । ओसधगिहे पुच्छेज्ज सरीरसंतावमंतरेण ति बूया । उपलगिहे पुच्छेज्ज गुरुचलसंसितं अत्थमंतरेण ति बूया । हिमगिहे पुच्छेज्ज जेव्वाणिसंसितं अत्थमंतरेण ति बूया । चित्तगिहे

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठसन्दर्भः हं० त० एव वर्तते ॥ २ ॐ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठसन्दर्भः हं० त० नास्ति ॥ ३ अगगिहे सं ३ पु० । अभिगिहे सि० ॥ ४ 'स्समंत' हं० त० ॥ ५ 'णिमुहुमंत' हं० त० ॥ ६ 'जणसाधा' हं० त० सि० ॥ ७ 'रूवधारी' हं० त० ॥ ८ गयचारीय हं० त० ॥ ९ ॐ १० एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति ॥ १० हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ११ ॐ १० एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति ॥ १२ हासमुहं हं० त० विना ॥ १३ विप्पबंधणां हं० त० ॥ १४ 'णिच्छेदणं' हं० त० विना ॥ १५ 'ज्ज महत्थभावमंत' हं० त० विना ॥

मणोवितक्कामंतरेणं ति पुच्छसि ति बूया । आदंसगिहे पुच्छेज्ज महप्पभावमंतरेणं ति बूया । लतागिहे पुच्छेज्ज थीरत्तीसंपयोगमंतरेणं ति बूया । आगम्मगिहे पुच्छेज्ज वयस्सरतिसंपयुत्तं ति बूया । चतुक्कगिहे पुच्छेज्ज असारसंतावमंतरेणं ति बूया । जाणगिहे पुच्छेज्ज रायत्थविवद्धिमंतरेणं ति बूया । दगकोट्टगे पुच्छेज्ज उत्तममहाजणसुहसंपयोगमंतरेणं ति बूया । कोसगिहे पुच्छेज्ज अत्थवच्चासमंतरेणं ति बूया । पडिकम्मगिहे पुच्छेज्ज तरुणसंपयोगमंतरेणं ति बूया । कंकसालायं 5 पुच्छेज्ज सरीरविसुद्धिमंतरेणं ति बूया । आतवगिहे पुच्छेज्ज विजयं वा हासदुक्खपरिमोक्खं व ति बूया । पणियगिहे पुच्छेज्ज पाणधारणं आयुप्पमाणं व ति बूया । पाणगिहे पुच्छेज्ज पमादं वा विब्भमं व ति बूया । आसणगिहे पुच्छेज्ज ठाणमंतरेणं ति बूया । भोयणगिहे पुच्छेज्ज बलविवद्धि आरोगं च अंतरेणं ति बूया । सयणगिहे पुच्छेज्ज सरीरोवचयमंतरेणं ति बूया । हयगिहे पुच्छेज्ज पंधगमणमिस्सरियसाधारणं ति बूया । गयसालाय पुच्छेज्ज संगामविजयसाधारणं रायमंतरेणं ति बूया । वत्थगिहे पुच्छेज्ज सोभगमंतरेणं ति बूया । रधसालायं पुच्छेज्ज संगामविजय-रतिविहारमंतरेणं ति बूया । 10 पुप्फगिहे पुच्छेज्ज आभरणालंका[रमंत]रेणं ति बूया । जूतसालायं पुच्छेज्ज उवाधि-णिकडिपीलामंतरेणं ति बूया । पाणवगिहे पुच्छेज्ज ववहारमंतरेणं ति बूया । लेवणगिहे पुच्छेज्ज कलमंतरेणं ति बूया । तलगिहे पुच्छेज्ज उवदेस-गुरुसंजोगमंतरेणं ति बूया । सवणगिहे पुच्छेज्ज वाधुज्जसरोधमंतरेणं ति बूया । उज्जाणगिहे पुच्छेज्ज कामरतिसहाससंपयुत्तं ति बूया । जाणसालाय पुच्छेज्ज भयसरोधमंतरेणं ति बूया । आएसणे पुच्छेज्ज सरीरस्स कम्मलाभमंतरेणं ति बूया । मंडवे पुच्छेज्ज दारिदमंतरेणं ति बूया । लेवणगिहे पुच्छेज्ज महाजणसाधारणपरिक्खणायं ति बूया । वेसगिहे पुच्छेज्ज 15 वयकम्मवंचणयाय ति बूया । कोट्टाकारे पुच्छेज्ज धण-धणमंतरेणं ति बूया । पवासु पुच्छेज्ज दाणविसगमंतरेणं ति बूया । सेतुकम्मैसु पुच्छेज्ज परलोगमणमंतरेणं ति बूया । जणके पुच्छेज्ज दाससंखरणमंतरेणं ति बूया । ण्हाणगिहे पुच्छेज्ज सरीरसोक्खमंतरेणं ति बूया । वच्चगिहे पुच्छेज्ज अमणुण्णसंजोगमंतरेणं ति बूया । अंगणगिहे पुच्छेज्ज अंगणगतं सम्मोहप्पयुत्तं ति बूया । आतुरगिहे पुच्छेज्ज वाधिपरिमोक्खमंतरेणं ति बूया । संसरणगिहे पुच्छेज्ज रायत्थविवादं व ति बूया । सुंकसालायं पुच्छेज्ज अत्थचित्तमंतरेणं ति बूया । करणसालायं पुच्छेज्ज आयुधेयमंतरेणं ति बूया । पणितगिहे 20 पुच्छेज्ज कुडुंबवद्धीमंतरेणं ति बूया । पुरोहडे पुच्छेज्ज संपेसणमंतरेणं ति बूया ॥ छ ॥

सेसाणि गिहाणि पडिरूवपडिपोगलेहिं णातव्वाणि भवन्ति, तं जधा-आसणाणि पल्लत्थिकाओ आमासट्टसतं अपस्सयाणि ठिताणि पुच्छिताणि वंदिताणि आगताणि संलाविताणि चुंबिताणि आलिगिताणि उवदासिताणि णिवण्णाणि सेविताणि । जधा एताणि सव्वाणि आमास-सद्-रूव-इंगितागारभावेहिं आधारयित्ता विण्णातव्वाणि भवन्ति, एवं पुच्छितज्जायो(ये) एतेहि ज्जेव सामास-सद्-रूवपादुब्भावेहिं आधारयित्ता विण्णातव्वाणि भवन्ति ॥

25

॥ पुच्छितनामज्जायो एकादसमो सम्मत्तो ॥ ११ ॥ छ ॥

[बारसमो जोणीअज्जाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाए अंगविज्जाए जोणी णामज्जायो । तं खलु भो ! तमणुव्वंक्खस्सामि । [तं जहा-] तत्थ सव्वअपरिगहेसु सव्वपासंडगते सव्वपासंडोवकरणे सव्वधम्मपयुत्तगते सव्वधम्मोपकरणे य धम्मजोणी बूया । तत्थ सव्वमहापरिगहेसु सव्वअत्थ ०८ गते सव्वत्थ १० वत्तमाणेसु थी-पुरिसेसु सव्वत्थसव्वागते य अत्थजोणी 30 बूया । तत्थ सव्वसामेसु सव्वारोमगते सव्वसामोयिगते सव्वकामोचारगते य गंध-मल्ल-ण्हाणा-5णुलेवण-आभरणगते

१ 'कारेति बूया सं ३ पु० ॥ २ संघण' हं० त० विना ॥ ३ वावज्ज' हं० त० ॥ ४ झवण' हं० त० ॥ ५ 'म्मविण्णया' हं० त० ॥ ६ 'ज्ज वधणमंत' हं० त० ॥ ७ 'म्मे पु' हं० त० ॥ ८ 'त्ता णातव्वं भवति हं० त० ॥ ९ पुच्छितज्जाओ ॥ छ ॥ हं० त० विना ॥ १० 'क्खयिस्सामि हं० त० ॥ ११ ०८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १२ 'वण्णमा' हं० त० विना ॥ १३ 'त्थगसव्वगए हं० त० ॥ १४ 'रामिगते हं० त० विना ॥ १५ सव्वसम्मोईगते हं० त० ॥

य कामजोणि बूया । तत्थ पुण्णेषु उद्धभागे य विवद्धमाणेषु य थी-पुरिसेसु सव्वविवद्धीयं जुतेसु विवद्धि बूया । तत्थ तुच्छेषु अधेभागेसु हायमाणेषु य थी-पुरिसेसु सव्वहाणिसंपयुत्तेसु य हाणि बूया । तत्थ समागतेसु गतेसु य मल्लभरणगतेसु य मल्लोपकरणेषु य मिधुणचरेसु य सत्तेसु सव्वसंगमगतेसु य संगमजोणि बूया । तत्थ एकंगेसु गतेसु विखितेसु य एकाभरणे एकचारिसु गतेसु विखिप्पमाणेषु सव्वविप्पयोगेसु विप्पयोगजोणि बूया । तत्थ पसण्णेषु गतेसु सव्वपसण्णगतेसु य सव्वमित्तगए य सव्वसम्भोयीगते य मित्तजोणि बूया । तत्थ अप्पसण्णेषु गतेसु सव्वअप्पसण्णगते य सव्वअमित्तगए य सव्वअत्थगए य सव्वजोधगते य सव्वसंगमणामधेज्जोदीरणे उण्हससुक्कागउलूगगते अहि-णउलगगते विवादजोणि बूया । तत्थ णीहारेसु चलेसु गाम-णगर-णिगम-जणपथ-पट्टण-णिवेस-सैण्णाखंधावर-अडवि-पव्वयदेस-संजाण-जाणगते दूत-संधिवाल-पावासिकगते उदाहिते पावासिकजोणि बूया । एतेसामेव ठितसाधारणेषु पवुत्थजोणि बूया । एतेसामेव आहारोदीरणे आगमणजोणि बूया । तत्थ णीहारिसु मुदितेसु कण्हेसु णिगमजोणि बूया । तत्थ आहारेसु मुदितेसु आगमजोणि बूया । तत्थ उत्तमेसु रायोवकरणेषु रायजोणि बूया । तत्थ उत्तमेसु रायाणुपायजोणि 10 बूया । इस्सेसु रायपुरिसागतेसु य रायपुरिसजोणि बूया । तत्थ दढेसु सव्ववणियगतेसु य वणियप्पधजोणि बूया । तत्थ चलेसु सव्वकारुगगते य सव्वकारुकोपकरणे कारुकाजोणि बूया । तत्थ सव्वअणूसु सव्वकसेसु सव्वकासिकोपकरणे सव्वत्थीगगते य अणुयोगजोणि बूया । तत्थ उद्धं णाभिउवकरणगते य सव्वअज्जगते य सव्वअज्जोपचये अज्जजोणि बूया । तत्थ अधेणाभिगते उद्धं जाणुगते सिस्सजोणि बूया । तत्थ पाद-जंधा-पेस्स-पव्वपेस्सगते य पेस्सजोणि बूया । तत्थ सोत्तपडिप्पिधाणे नेत्तपडिप्पिधाणे मुहपडिप्पिहाणे अप्पाणपडिप्पिहाणे से पडिप्पिधाणे सव्वबंधेसु य बंधणजोणि 15 बूया । तत्थ एतेसु सव्वेसु आहारसंपयुत्तेसु बंधणजोणि बूया । तत्थ एतेसु चेव णीहारेसु य जुतेसु य चलेसु सव्वमोक्खेसु य मोक्खजोणि बूया । तत्थ मुदितेसु सव्वसाधारणेषु य आरोगगपवत्ति बूया । तत्थ उत्तमेसु आहारसंपउत्तेसु मुदितजोणि बूया । तत्थ उद्धंभागेसु आहारेसु उवहुतेसु पीडिते साधारणे आतुरजोणि बूया । तत्थ पच्छिमेसु णिम्मट्टेसु अधोभागेसु य मरणजोणि बूया । तत्थ उद्धंभागेसु आहारसंपयुत्तेसु य सयितव्वसाधारणेषु य सयितव्वजोणि बूया । तत्थ सव्वत्थगते छेदणेषु य छिण्णजोणि बूया । तत्थ सोत्तपडिप्पिधाणे नेत्तपडिप्पिधाणे मुहपडिप्पिधाणे अप्पाणपडिप्पिधाणे णिधाणपडि- 20 प्पिधाणे णिक्खित्त-पम्हुट्टगते य णट्टजोणि बूया । तत्थ सव्वत्थ आहारगते विणयजोणि बूया । तत्थ सव्वबंधेज्जेसु बंधचारिणजोणि बूया । तत्थ सव्वबंधेसु सव्वबंधोपकरणे य बंधणजोणि बूया । तत्थ सव्वखत्तेयेसु आयुधभंडे य खत्तियजोणि बूया । तत्थ सव्ववेस्सेज्जेसु वेस्सजोणि बूया । तत्थ [सव्व]सुद्धेज्जेसु सुद्धजोणि बूया । तत्थ सव्वबालेयेसु बालजोणि बूया । तत्थ सव्वजोव्वणत्थेसु जोव्वणत्थजोणि बूया । तत्थ सव्ववुद्धेसु बुद्धजोणि बूया । तत्थ सव्वमज्झिमेसु मज्झिमजोणि बूया । तत्थ सव्वउत्तमेसु उत्तमजोणि बूया । तत्थ सव्वपच्चवरेसु पच्चवरजोणि बूया । तत्थ सव्वअब्भंतरेसु 25 अब्भंतरजोणि बूया । तत्थ सव्वबाहिरेसु बाहिरजोणि बूया । बाहिरब्भंतरेसु सकपरक्कसाधारणेषु साधारणजोणि बूया । तत्थ णपुंसकेसु णपुंसकजोणि बूया । तत्थ पुण्णामेसु पुण्णामजोणि बूया । थीणामेसु थीणामजोणि बूया । तत्थ पुरत्थिमेसु गतेसु अणागतेसु य सद्देसु अणागतजोणि बूया । तत्थ पच्छिमेसु गतेसु अतिवत्तेसु य सद्देसु अतिकंतजोणि बूया । [तत्थ] वामदक्खिणेषु गतेसु वत्तमाणेषु य सद्देसु वत्तमाणजोणि बूया । तत्थ पुरत्थिमेसु [गतेसु] पुरत्थिमजोणि बूया । तत्थ उत्तरेसु गतेसु उत्तरजोणि बूया । तत्थ पच्छिमेसु गतेसु पच्छिमजोणि बूया । तत्थ दक्खिणेषु गतेसु 30 दक्खिणजोणि बूया । तत्थ दक्खिणपच्छिमेसु गतेसु दक्खिणपच्छिमजोणि बूया । तत्थ पच्छिमुत्तरेसु गतेसु पच्छिमुत्तरजोणि बूया । तत्थ पुव्वुत्तरेसु गतेसु पुव्वुत्तरजोणि बूया । तत्थ पुव्वदक्खिणेषु गतेसु पुव्वदक्खिणजोणि बूया । [तत्थ]

१ जुद्धेसु सप्र० ॥ २ मलोप० हं० त० विना ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ४ 'रणे अण्हसमुक्काकडल्लगगते हं० त० ॥ ५ 'सुण्णा' हं० त० ॥ ६ सव्वकेसेसु हं० त० ॥ ७ जाणगते सि० विना ॥ ८ तं पाद० सप्र० ॥ ९ पस्सगते या पेयस्सजो० हं० त० वि ॥ १० 'धाणे घाणपडिप्पिधाणे मुह' हं० त० सि० ॥ ११ पप्पडिहाणे हं० त० ॥ १२ सव्वसोक्खेसु य सोक्ख' हं० त० विना ॥ १३ 'सु अत्थेसु अणा' हं० त० विना ॥

उपरिट्ठिमेसु उपरिट्ठिमजोणिं बूया । तत्थ हेट्ठिमेसु हेट्ठिमजोणिं बूया । तत्थ आहारेसु आहारजोणिं बूया । [तत्थ] णीहारेसु णीहारजोणिं बूया । तत्थ आहारणीहारेसु आहारणीहारजोणिं बूया । तत्थ णीहाराहारेसु णीहाराहारजोणिं बूया । तत्थ पाणजोणियं पाणजोणिं बूया । तत्थ धातुजोणीयं धातुजोणीं बूया । तत्थ मूलजोणियं मूलजोणिं बूया । तत्थ सव्वसामेसु आभरणजोणिं बूया । तत्थ अणूसु धण्णजोणिं बूया । तत्थ तणूसु वत्थजोणिं बूया । तत्थ गहणेसु रण्णजोणिं बूया । 5 तत्थ उपगगहणेसु आरामजोणिं बूया । तत्थ उत्तमेसु उत्तमजोणिं बूया । तत्थ अंधमेसु अधमजोणिं बूया । तत्थ उण्णतेसु उण्णतजोणिं बूया । तत्थ णिण्णेसु णिण्णजोणिं बूया । तत्थ रसेसु रसजोणिं बूया । तत्थ वण्णेसु वण्णजोणिं बूया । [तत्थ] गंधेसु गंधजोणिं बूया । ६ तत्थ छहिं उड्ढहिं उडुजोणिं बूया । ७ तत्थ अब्भंतरामासे ८ सव्वम्मि ९ सव्वमत्थि ति बूया । तत्थ बाहिरामासे सव्वम्मि सव्वं णत्थि ति बूया । तत्थ सव्वेहिं इंदियेहिं इंदियत्था विण्णातव्वा भवन्तीति ॥

10

॥ जोणी णामऽज्झायो बारसमो सम्मत्तो ॥ १२ ॥ छ ॥

[तेरसमो जोणिलक्खणवागरणज्झायो]

णमो महापुरिसस्स वद्धमाणस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय जोणिलक्खणवागरणो णामऽज्झायो । तं खलु भो ! तमणुक्खस्सामि । तं जधा—तत्थ तिविधा जोणी सज्जीवा १ णिज्जीवा २ सज्जीव- णिज्जीवा ३ चेति । तिविधं लक्खणं—दीणोदत्तं १ दीणं २ उदत्तं ३ चेति । तत्थ इमाणि उदत्ताणि—उत्तमाणि पुण्णामाणि 15 ददाणि दक्खिणाणि सुक्काणि आहारीणि दीहाणि थूलाणि पुधूणि मैधन्ताणि मंडलाणि लोहिताणि परिमंडलाणि थलाणि मोक्खाणि पसण्णाणि उच्चाणि पुण्णाणि आयुजोणीयाणि वट्टाणि अग्गेयाणि हिदयाणि पत्तेयाणि दंसणीयाणि, उदत्तलक्खणाणि वक्खाताणि १ । तत्थ इमाणि दीणलक्खणाणि—णपुंसकाणि चलाणि लुक्खाणि णीहारीणि हस्साणि किंसाणि तिक्खाणि दहरचलाणि मताणि णिण्णाणि वट्टाणि अप्पसण्णाणि तुच्छाणि अणूणि वाउजोणीकाणि मताणि अदंसणीयाणि इति दीणाणि २ । तत्थ इमाणि दीणोदत्ताणि—थीणामाणि समाणि दहत्थावरेज्जाणि गहणाणि उपगगहणाणि 20 तणूणि अंताणि अंतिमदीणोदत्ता सह—रस—गंध—फासा चेति दीणोदत्ताणि भवन्ति ३ ।

तत्थ चउव्विधा पुच्छणद्वा भवन्ति—अत्थाणुगता १ [कामाणुगता २] धम्माणुगता ३ वीमंसाणुगता ४ चेति । दीणोदत्ता सेवते सततसद्दाणि दीणाणि वा उदत्ताणि वा दीणोदत्ताणि वा, दीणोदत्तो वा सेवते घायते गंधाणि दीणाणि वा उदत्ताणि वा दीणोदत्ताणि वा, उदत्तो वा दीणो वा दीणो उदत्तो वा सेवते चक्खुतो रूवाणि दीणाणि वा उदत्ताणि वा दीणोदत्ताणि वा, दीणो वा उदत्तो वा सेवते तयतो फासाणि दीणाणि वा उदत्ताणि वा दीणोदत्ताणि वा । दीणो 25 वा उदत्तो वा दीणोदत्तो वा सेवते यं तत्थ पढमं भवति जत्थ भावोऽणुरज्जति तेण तं णिहिसे । पढमं च से पडिपोगगलो तत्थ वेत्तणइंदियत्थेसु य इंदियपण्णाय उवधारयित्ता ततो बूयांगचित्तओ । उदत्तो उदत्तागारो विण्णातव्वो, दीणोदत्तागारो विण्णातव्वो, ८ उदत्तो दीणागारो विण्णातव्वो ९ । तत्थ पण्णापरं बालो बालधिप्पायो विण्णातव्वो, बालो तरुणाधिप्पायो विण्णातव्वो । तत्थ सव्वत्थो दुविधो पुच्छणद्दो दीणोदत्तो चेति । तत्थ इमाणि उदत्तस्स णिव्वत्तिकारणाणि भवन्ति— तुट्ठं मं पुच्छति, पसण्णं मं पुच्छति, पीणितं मं पुच्छति, आरोगं मं पुच्छति, अविक्खित्तं मं पुच्छति, उदत्तं मं पुच्छति, 30 सहसिं मं ८ वंदति, बहुम ९ तं ति मं उदत्तवत्थाभरणो उदत्तमल्लणुलेवणो उदत्तवेसालंकारो, उदत्तसयणासणो

१ रत्तजोणिं हं० त० विना ॥ २ अवमेसु अवमं हं० त० ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते ॥ ४ ८ ९ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ५ दीणाणि हं० एव ॥ ६ महंताणि हं० त० ॥ ७ वा सेवन्ते वा सेवते सं ३ पु० ॥ ८ ९ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ९ पेक्खति हं० त० ॥ १० ८ ९ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥

दक्खिणायतं णिविद्धो उज्जुमुहो पेक्खति, उज्जुमुखो उल्लोकेति, चतुरक्खि वंदति, पूर्येतो वा पुच्छति, अवत्थितं अम्भुप्पवति उम्मज्जति अम्भुत्तिट्ठति, उदत्ते वेसे उदत्ते गंधे जण्णे वा छणे वा उस्सये वा उदत्ते समाये वा उदत्ते पडिपोगले वा उदत्ते सद्-रूवम्मि रस-गंध-फासे णिमंतणम्मि य आगमे भक्ख-भोज्जआमंतणम्मि य । तत्थ इमाणि आहारलक्खणाणि भवंति, तं जधा-पवासागमणं कण्णाय अभिवहणं अत्थस्स विविधस्स लाभं धणस्स लाभं कामलाभो विविधविज्जालाभो जं च अण्णं पसत्थं पस्सेज्ज तस्स सव्वस्स लाभो भविस्सति ति बूया । तत्थ उदत्तस्स पुच्छणद्धो 5 भवति-एक्कसिरीयं लाभो ति पुरिस्सस्स लाभो, पुरिस्सस्स ईत्थीलाभो हिरण्णस्स लाभो वत्थलाभो ८ अण्णलाभो ९ पाणलाभो धातगलाभो इस्सरितलाभो उत्तमजोणीयं आमासो आहारम्मि य उत्तमे ।

पुण्णामधेज्जे सुक्के [य] दढे णिद्धे य लोहिते । उदत्तेसु असणलाभे य वत्थे आभरणेसु य ॥ १ ॥
 गंध-मल्लेसु फासे य सद्-रूवे य बाहिरे । एरिसे उत्तमे दित्ते इस्सरियलाभं वियागरे ॥ २ ॥
 एतेसामेव णीहारे अमणुण्णे आगमम्मि य । अमणुण्णे सद्-रूवम्मि इस्सरिये चलणं धुवं ॥ ३ ॥
 [..... । मणुण्णे सद्-रूवम्मि] रस-गंधे य उत्तमे ॥ ४ ॥ 10
 उत्तमेसु य फासेसु तज्जातपडिपोगले । धुवो भूमीय लाभो तथा चेव उ पेसणे ॥ ५ ॥
 एतेसामेव णीहारे अमणुण्णे य आगमे । णिट्ठुते य किलिट्ठे [य] भूमीय चलणं धुवं ॥ ६ ॥
 कण्णा गंडा उरं ओट्टा दंता अंगुट्ठके तथा । बाहूदरे य पादे य पुरिस्सणामं च जं भवे ॥ ७ ॥
 एतेसु सद्-रूवेसु आहारेसु य कित्तिते । हसिते णट्ठे य गीये य वादिते कामसंसिते ॥ ८ ॥ 15
 मधुरे आलाप-संलावे आसिते मदणे अय । सुगंधे ण्हाण-मल्लम्मि गंधम्मि असुगंधिगे ॥ ९ ॥
 ८ असुगंधि ९ अणुलेवणे सव्वाभरणे (?) । अतिमासे य सव्वत्थ गोज्झस्स चेव दंसणे ॥ १० ॥
 पाणिणा पाणलाभम्मि सिचकतस्स मुंचणे । एरिसे सद्-रूवम्मि पुरिस्सलाभो थिया भवे ॥ ११ ॥
 एतेसामेव णीहारे अमणुण्णे आगमम्मि य । अमणुण्णे सद्-रूवम्मि धुवो से असमागमो ॥ १२ ॥
 कण्णपाली भुमा णासा जिब्भा गौवा तधंगुली । सोणी णाभी य कुक्खी य अरहस्साणि य आमसे ॥ १३ ॥ 20
 अतिमासे य सव्वम्मि वियागरे वेसकम्मि य । अलंकारे य सव्वम्मि सव्वेसाऽऽभरणेसु य ॥ १४ ॥
 ण्हाण-मल्लेसु गंधेसु सुगंधे अणुलेवणे । कामुके कामसंलावे उम्मिते गीत-वादिते ॥ १५ ॥
 पारावत-चक्कवाया य हंस-कागं च किण्णरा । बिपदा चउप्पदा वा वि जे वऽण्णे मिधुणचारिणो ॥ १६ ॥
 मधुरे आलावसंलावे कामस्स अणुलोमके । आलिगिते चुंबिते य सामग्गीय समागमे ॥ १७ ॥
 वधुज्जभंडकपरिकित्ताय तलियं ति विवण्णके वा । मणुण्णे सद्-रूवम्मि रस-गंधे य उत्तमे ॥ १८ ॥ 25
 फासे य मणुण्णम्मि आहारे य अणुमते । पडिपोगलेसु एतेसु थिया लाभो ति णिहिसे ॥ १९ ॥
 एतेसामेव णीहारे अमणुण्णे आगमम्मि य । णिम्मट्ठे णिट्ठुते लित्ते ण थिया य समागमो ॥ २० ॥
 पासाणं सक्करं लोणं [तथा] रथतमंजणं । दंतसिप्पिपडलं.....अट्ठिअक्खते (?) ॥ २१ ॥
 मणिरूवालिका लोहं हिरण्णपडिपोगले । आमासे य मणुण्णाणं [..... ॥ २२ ॥]
 उत्तमम्मि य आमासे [..... ।] उदत्तम्मि य पुच्छंते हिरण्णलाभं धुवं वदे ॥ २३ ॥ 30
 एतेसामेव णीहारे अमणुण्णे आगमम्मि य । णिम्मट्ठे णिट्ठुते चलिते णासो होति हिरण्णके ॥ २४ ॥
 लक्खा हरिदा मंजिट्ठा हरिताल मणस्सिला । कोरैट्ठेकं सिरियकं मणोज्ज णुत्तमालकं ॥ २५ ॥

१ 'मुह पेक्खति सप्र० ॥ २ अम्भुप्पय उम्म' हं० त० विना ॥ ३ इत्थीहिर' हं० त० ॥ ४ ८ ९ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ५ असुगंधिम्मि हं० त० विना ॥ ६ ८ ९ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ७ गीवा य अंगुली हं० त० ॥ ८ अरहस्साणि हं० त० ॥ ९ मणुस्साणं सप्र० ॥ १० अमणुण्णम्मि य आगमे हं० त० ॥ ११ 'टकेसस्यिकं सि० ॥

- अग्गेयाणि य अग्गी य जिब्भाणिट्ठं च सप्पभं । णिद्ध-लोहितके दव्वे सुवण्णपडिपोग्गले ॥ २६ ॥
 एतेसु सद्-रूवेसु मणुण्णाणं च आगमे । उदत्तम्मि य पुच्छंते धुवो लाभो सुवण्णके ॥ २७ ॥
 एतेसामेव णीहारे अमणुण्णे आगमम्मि य । णिम्मट्ठे णिट्ठुते चलिते धुवो णासो सुवण्णके ॥ २८ ॥
 धण्णं पुरिसो गेण्हित्ता गोमयं उदकमट्टिका । पुण्णे णिद्धे सुहामासे आहारे उत्तमम्मि य ॥ २९ ॥
- 5 [..... ।] तिण-तुस-करीसाणि मुहं च परिमदति ॥ ३० ॥
 आहारम्मि य सव्वम्मि तज्जातपडिपोग्गले । रसाणं दंसणे उदिते पीणियस्स यं सुंछणे ॥ ३१ ॥
 एतेसु सद्-रूवेसु मणुण्णाणं च आगमे । धातकं अण्णलाभं च एतस्स दंसणे धुवो ॥ ३२ ॥
 अण्ण-पाणे विसंजुते बहुखित्तपिपासिते । जायमाणे अलाभम्मि परिविट्ठं भाइतं ति वा ॥ ३३ ॥
 अण्ण-पाणस्स णीहारे अमणुण्णे आगमम्मि य । छातकं अण्ण-पाणं च धुवं णत्थि वियागरे ॥ ३४ ॥
- 10 दारकम्मि गिहीतम्मि अक्खिम्मि अंजितम्मि य । दारकाणं च कीलणके दारकाभरणे तथा ॥ ३५ ॥
 वच्छके पुत्तके चेति पोतके पिळ्ळेके तथा । सिंगके [तण्णके व ति] घत-दुद्धदरिसणे ॥ ३६ ॥
 पुप्फे पवाले तरुणे विरूढे तरुणंकुरे । जोण्णिवालिकं दिट्ठा पुन्नामेसु बालको ॥ ३७ ॥
 एतेसामेव णीहारे अमणुण्णाणं च दरिसणे । णिम्मट्ठे णिट्ठुते चलिते पुत्तणासं वियागरे ॥ ३८ ॥
 चतुप्पदं णामे दुप्पदे चतुप्पयं उवकरणे । चतुप्पददरिसणे वा गहणे चेव वाहिते जोइतम्मि य ॥
- 15 एतेसु सद्-रूवेसु मणुण्णाणं च आगमे । उदत्तम्मि य पुच्छंते धुवो लाभो चतुप्पदे ॥ ३९ ॥
 एतेसु चेव णीहारेसु अमणुण्णाणं च आगमे । णिम्मट्ठे णिट्ठुते चलिते धुवो णासो चतुप्पदे ॥ ४० ॥
 चलाणि मुसलं सुपं पीढकं पड्डाका झयो । पाद-उच्छि-पाणि-घटको केसा सोपाणपादुका ॥ ४१ ॥
 पादपुंछणं उपाणहा आभरणं सव्वपादोवकं च यं । उरुणी चलोढो वणिसया.....उक्खली (?) ॥ ४२ ॥
 [..... ।] उत्तमम्मि य पुच्छंते पेस्सलाभं धुवं वदे ॥ ४३ ॥
- 20 एतेसामेव णीहारे अमणुण्णे य आगमे । णिम्मट्ठे णिट्ठुते चलिते पेस्सणासं धुवं वदे ॥ ४४ ॥
 पासाण मट्टिया लेट्ठुं काकवालं पिधुला सिला । सव्वलोहे य पुधुले खेत-वत्थुपरिगहे ॥ ४५ ॥
 [..... ।] अत्थुते पुधुले दढे ॥ ४६ ॥
 उदगम्मि य आमासे सद्-रूवे य उत्तमे । उदत्तम्मि य पुच्छंते वत्थुलाभं वियागरे ॥ ४७ ॥
 एतेसामेव णीहारे अमणुण्णाणं च आगमे । णिम्मट्ठे णिट्ठुते चलिते वत्थुणासं वियागरे ॥ ४८ ॥
- 25 णवधम्मपलासाणि वक्कला कुसुमालिका । चीरं च वासणं चेव पत्तुण्णा वालकाणि वा ॥ ४९ ॥
 उण्णरूवं च कप्पासं तिदं अवकेसु य । वेल्लिका वक्कभंडं च वित्तम्मि अणूसु य ॥ ५० ॥
 एएसु सद्-रूवेसु मणुण्णाणं च आगमे । उदत्तम्मि य पुच्छंते वत्थुलाभं वियागरे ॥ ५१ ॥
 एतेसामेव णीहारे अमणुण्णाणं च आगमे । णिम्मट्ठे णिट्ठुते चलिते वत्थुहाणि च णिद्दिसे ॥ ५२ ॥
 अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे दक्खिणामासे सव्वपणितगते सव्वसिप्पिया-
- 30 तणुगते सव्वभंडगते सव्वसिप्पोपकरणे सव्वसिप्पिगदंसणे कारुकसंलापकम्मिं किट्ठिते सुंगयपडिच्छते उदत्तसि-
 प्पिकामासदरिसणे ।

१ य मुंछणे सं ३ पु० ॥ २ कायकं हं० त० ॥ ३ णिचालिकं दिट्ठा हं० त० विना ॥ ४ पडको झयो हं० त० विना ॥ ५ उरुणी वालो दोवणि हं० त० ॥ ६ णिट्ठुते णिट्ठुते चलिते सं ३ पु० सि० त० । णिट्ठुए चलिए चलिए हं० एव ॥ ७ पासाणि हं० त० ॥ ८ गहे ॥ ४५ ॥ अत्थुते पुधुले चेव दढे य उदत्तम्मि य । आमासे सद्-रूवे य उत्तमे य विसेसओ । उदत्तम्मि य पुच्छंते । सि० ॥ ९ अत्थुते थावरे पुधुले दढे हं० त० ॥ १० हस्तचिह्नान्तर्गतः श्लोकसन्दर्भः हं० त० एव वर्तते ॥ ११ म्मि कट्ठिते सि० । १२ सुपडिच्छंते सि० ॥ सुपडिसुंते सं ३ पु० ॥

एतेसु सद्दरूवेसु मणुण्णाणं च आगमे—

उदत्तम्मि य पुच्छंते आहारम्मि य पुच्छंते । एतेसु सद्दरूवेसु कम्मलाभं वियाणिया ॥ ५३ ॥

एतेसामेव णीहारे अमणुण्णाणं च आगमे । णिम्मट्टे णिट्टुते चलिते कम्मणासं वियागरे ॥ ५४ ॥

अब्भंतरामासे णिद्धामासे पुण्णामासे [पुण्णामधेज्जामासे] दक्खिणामासे अवत्थित-गंभीर-थिमिते आवगिते
अदीणसत्तसव्वणाणकित्तणे लोक-वेय-सामयिके आभिरामिके अभिधम्मीयसुतणाणुकित्तणे लिपि-गणित-रूप- 5
रायविज्जापरिकित्तणे अंग-सर लक्खण-वज्जण-सुविण भोमुप्पात-अंतलक्खणअणुकित्तणे ।

एतेसु सद्दरूवेसु मणुण्णाणं च आगमे ।

उदत्तम्मि य आहारे पुच्छंते उदत्तम्मि य । विज्जालाभं वियाणीया उत्तमं जीविकारणं ॥ ५५ ॥

एतेसामेव णीहारे अमणुण्णाणं च आगमे । णिम्मट्टे णिट्टुते चलिते विज्जणासं वियागरे ॥ ५६ ॥

अब्भंतरामासे सुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे दक्खिणामासे पुप्फ-फलसद्द-उवभोगसद्द-ओसधी- 10
पडिपोगगलेसु उदत्ते भक्ख-भोज्जे य पेज्ज-लेज्जकित्तणे य ।

एतेसु सद्दरूवेसु आगमे उत्तमम्मि य । धातकं [धण्णलाभं च] अत्थलाभं च णिद्दिसे ॥ ५७ ॥

एतेसामेव णीहारे अमणुण्णे आगमम्मि य । णिम्मट्टे णिट्टुते चलिते छायकं तत्थ णिद्दिसे ॥ ५८ ॥

अब्भंतरामासे णिद्धामासे सुद्धामासे दद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे उदत्तधी-पुरिसदंसणपादुब्भावे जण्णे
वा छणे वा उस्सये वा समाये वा वाधुज्जे वा चोलके वा उपणये वा पसत्थ-विस्सत्थ-विमुत्तसुखासणभावे रतिहासे 15
पडिरूवेण णिद्दिसे ।

एतेसामेव णीहारे अमणुण्णाणं वा आगमे । णिम्मट्टे णिट्टुते चलिते भयं तत्थ वियागरे ॥ ५९ ॥

तत्थ इमाणि दीणसत्थस्स णिव्वत्तीकारणाणि भवंति । तं जधा-दीणं मं पुच्छति, अगल्लं मं पुच्छति, छातकं
मं पुच्छति, विखित्तं मं पुच्छति, दीणं मं उवसंकेति, दीणं पेक्खति, दीणमधीतं पुच्छति, दविणं बहुमन्ते, किलिट्ठं
वत्था-५५भरणं किलिट्ठमल्ला-५णुलेवणो अणज्जवेसा-५लंकारो अणुदत्तसयणा-५५सणो वा उत्तराभिमुहासणाभिगगहो वा 20
समुज्जतो णिव्वेदो तिरियम्महो ओलोकं तो तिरियम्महो पेक्खति, नीयम्मखो णिज्झायति, हेट्ठामहो वंदति^१, खिसतो अणवत्थितं
पुच्छति, परावत्तो णिम्मज्जति ओणमति, अपसक्कतो ओभासिज्जते अणुदत्ते दीणपडिपोगगले दीणे सद्दरूवे रस-गंधफासे
अणुलेपणे सरे य सव्वम्मि दीणे अणुदत्ते किलिट्ठे दीणमाणसे । तत्थ इमाणि दीणलक्खणाणि भवंति । तं जधा-

अपसक्किते १ अपगते २ अपणामिते ३ णिम्मट्टे ४ णिहिते ५ ।

णिट्ठितम्मि य आहारे अमणुण्णाणं च आगमे ॥ ६० ॥

25

णीहारे सद्दरूवाणं फासे गंधे रसम्मि य । पवासगमणे चैव कण्णाणिव्वहणं च जं ॥ ६१ ॥

विविधो य अत्थपचयधम्मस्स कामुकस्स खओ सव्वेसिं चैव अत्थाणं अलाभो त्ति, तत्थ इमं दिसं पुच्छणट्ठा
भवन्ति । जधा-अप्पसत्थस्स अत्थस्स अलाभो विणासो विद्वो विप्पयोगो आतंको आतुरो मरणं छविच्छेयो बंधो पवासगमणं
पराजयो धणापचयो अणावुट्ठी अकम्मं सोभा छातकं पतिभयं चेति । जं किंचि अप्पसत्थं सव्वं एतं दीणस्स पुच्छमाणेसु
पयुट्ठेसु पसुसु य णेकेसु जुद्धाय परिते भवे पडिते आहतम्मि य मुट्ठिणा भिउडीयं च वग्गणे अतिपातिते विवादे विग्गहे 30
त्ति य कलहं तत्थ वियागरे । उक्कंपिते झपिते खित्ते ओबाधितम्मि य संरुद्धे उपधावन्ते य रोदन्ते कलहं धुवं ।

१ लोकवेसामं सं ३ सि० पु० । लोकएसामं हं० तं० ॥ २ आभिधं हं० तं० ॥ ३ सख्खणं हं० तं०
विना ॥ ४ धातकं पुत्तलाभं च अत्थं सि० ॥ ५ दीणमत्थं हं० तं० विना ॥ ६ कम्मति हं० तं० ॥ ७ पुच्छा वंदति
णं बहुं हं० तं० विना ॥ ८ दत्तसमणो वा उत्तं सं ३ पु० ॥ ९ वामपुजुत्तो हं० तं० ॥ १० तीरियम्मखो हं० तं० ॥
११ ति खित्तो अणं हं० तं० ॥ १२ णिमज्जति हं० तं० ॥ १३ आसासिज्जते हं० तं० ॥ १४ अप्पसत्थस्स लाभो
सि० ॥ १५ पराजणोपचयो सं ३ पु० ॥ १६ सु यद्धाय वरिए हं० तं० ॥ १७ कलहो हं० तं० ॥

वाचिवाकेचिको कलहो तालिते पहेरेहि य । सत्थम्मि रुधिरुप्पाया छइच्छेदं वियागरे ॥ ६२ ॥

संगामे जुद्धसदेसु अब्भातलपलाइते । सन्नाहे जुद्धसंगे [रा]यविज्जाभये भयं ॥ ६३ ॥

जंघापादे य छत्तचोपादधिकाणि य । जुत्तं च जाणवासं च पंथं च पडिपौगलं ॥ ६४ ॥

पवासगमणे सज्जे कंतार[ग]हणासु य । संपत्थिते पदग्गाहे भंडउग्गाहणासु य ॥ ६५ ॥

5 लोहेसु पव्वतग्गहणे तं तिरिययसितियं वा पत्थिताणं व दंसणे कोसल्लपुण्णपाते य पवासा आगतो चेति पसत्थपवासागामी य परातं च णिहिते ।

एतेसु सद्-रूवेसु पवासा आगमम्मि य । आहारेसु य सव्वेसु पवासा आगमं वदे ॥ ६६ ॥

पत्थिते साधारणे चेव पयत्तं तत्थ णिहिसे । णीहारे य णिवट्टेति णट्ठं तत्थ विणिहिसे ॥ ६७ ॥

णीहारे य मणुण्णे य कण्णाणिव्वहणं वदे । आहारे य मणुण्णे य कण्णायावहणं वदे ॥ ६८ ॥

10 णीहारे चेव णीहारे दीणंसि मुदिते वि वा । पडिरूवेण पस्सित्ता ततो सम्मं वियागरे ॥ ६९ ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय जोणीलक्खणवागरणो

णामऽज्झायो तेरसमो सम्मतो ॥ १३ ॥ छ ॥

[चोदसमो लाभद्वारज्जाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय लाभद्वारं णामऽज्झायं । तं खलु भो ! तमणुवक्खस्सामि ।
15 तं जधा-अत्थद्वारं १ समागमद्वारं २ पयाद्वारं ३ आरोगद्वारं ४ जीवितद्वारं ५ कामद्वारं ६ वुट्ठिद्वारं ७ विजयद्वारमिति ८ ।
अतो अत्थद्वारं । तं जधा-अब्भंतसमासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे मुदितामासे पुण्णामधेज्जामासे दक्खिणामासे
आहारे उत्तमे पुप्फगते फलगते हरितगते परग्घवत्था-ऽऽभरण-मणि-मुत्त-कंचण-प्पवाल-भायण-सयण-भक्ख-
भोयणगते परग्घउवकरणगते ण्हाणा-ऽणुलेवण-विभूसिय-पहट्ठण-णारिषादुब्भावे एताणि पेक्खमाणो वा भासमाणो वा
आमसंतो वा एतेसि वा बाहिरे पादुब्भावे सद्-रूवे पुच्छेज्ज अत्थलाभं वा खेमं वा पुत्तं वा णिचयं वा जाणं वा
20 जुग्गं वा सयणं वा आसणं वा भो(भा)यणं वा भूसणं वा जं किंचि पसत्थमत्थं पुच्छेज्ज लाभमंतरेण एवमेवं भविस्सति
ति वत्तव्वं । एताणि चेव पेक्खमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसि वा बाहिरे सद्-रूवपादुब्भावे पुच्छेज्ज
अत्थहारिणं वा खयं वा विणासं वा किलेसं वा अणत्थसिद्धिं वा जं किंचि अप्सत्थं पुच्छेज्ज अलाभमंतरेण भविस्सति ति
बूया । एताणि चेव अक्कमतो पुच्छेज्ज लाभमंतरेण ण भव(वि)स्सतीति बूया । एताणि चेव अक्कमतो पुच्छेज्ज अलाभमंतरेण
सव्वं भविस्सति ति बूया । एताणि चेव छिंदंतो वा भिंदंतो वा ७ फालेतो वा ८ विवाडेतो वा णिक्खणंतो
25 वा पुच्छेज्ज अत्थहारिणं वा खयं वा विणासं वा किलेसं वा अणत्थसिद्धिं वा जं किंचि अप्सत्थं पुच्छेज्ज अलाभमंतरेण
तिउणो अवायो भविस्सतीति वत्तव्वं । एताणि चेव उवकड्ढंतो पुच्छेज्ज अत्थलाभं वा खेमं वा पुत्तं वा णिचयं वा
जाणं वा जुग्गं वा सयणं वा आसणं वा भायणं वा भूसणं वा जं किंचि पसत्थमत्थं पुच्छेज्ज लाभमंतरेण एवमेवं
भविस्सतीति तिगुणो लाभो बूया । एताणि चेव उपकड्ढंतो पुच्छेज्ज अत्थहारिणं वा खयं वा विणासं वा किलेसं
वा अणत्थसिद्धिं वा जं किंचि अप्सत्थं पुच्छेज्ज ण भविस्सतीति बूया । एताणि अपकड्ढंतो पुच्छेज्ज एवमादीणं
लाभो ण भविस्सतीति बूया, जं च पुच्छेज्ज तस्स तिगुणो अपायो भविस्सतीति बूया । एताणि चेव अपकड्ढंतो

१ पहेट्ठिया हं० त० । परिहेरेहि य सि० ॥ २ संगामजुद्धे सदेसु हं० त० ॥ ३ अब्भालतपं सं० ३ पु० सि० ॥ ४ छत्तावापादं
सि० ॥ ५ पौगला हं० त० ॥ ६ हणेसु य हं० त० विना ॥ ७ हणेतु तंतिरिययं हं० त० ॥ ८ पत्थियणाण दंसणे हं० त० ॥ ९ सिते
हं० त० ॥ १० पयुत्तं हं० त० ॥ ११ अत्थं वा लाभं हं० त० सि० ॥ १२ वा जोग्गं सि० विना ॥ १३ एवमेयं भं हं० त० ॥ १४ ७ ८
एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १५ णिक्खंतो वा हं० त० ॥ १६ अत्थलाभं हं० त० ॥ १७ विणासणं वा हं० त० ॥

पुच्छेज्ज एवमादीणं लाभो ण भविस्सतीति बूया । एताणि चेव उपकट्ठिता अपकट्ठेज्जा ततो पुच्छेज्ज एवमादीणं पुव्वं लाभो ०८ भवित्ता पच्छा अलाभो १० भविस्सतीति बूया । एवमादीणि ज्जेव अपकट्ठिता उपकट्ठेज्जा ततो पुच्छेज्ज पुव्वं अलाभो भविस्सति पच्छा लाभो भविस्सतीति बूया ॥

॥ इति लाभद्वारं ॥ १४ ॥ छ ॥

[पन्नरसमो समागमदारज्झाओ]

5

समागमद्वारं वक्खस्सामो । तं जधा—हंस—कुर—चक्कवाक—कारंडव—कातंब—काकाक—मैज्जुकामिधुणचरेसु सत्तेसु मेधुणं समाचरतेसु तेसु आलिंगितं चुंबितं हसितं गीत—वादित—मदग्गहणे वधू—वरसंदंसणे सयणा—ऽऽसण—सव्वसगुण—तिरिक्खजोणीउपचारे सकुणे णिहिसे चच्चर—मधापध—सव्वदारसमयतित्थोदुपाणआभोगपणितगते तेसं परिकित्तासु सागर—णदी—पट्टण—गोत्तमेसु समागते सव्वसमागमगते य सव्वसंजोगगते सव्वहरिसपादुब्भावे एताणि पेक्खमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसि वा बाहिरे सद्—रूवपादुब्भावे पुच्छेज्ज समागमं वा सम्मोइं वा संपीतिं वा मित्तसंगमं 10 वा वीवाहं वा जं च किंचि पसत्थमत्थं पुच्छेज्ज समागममंतरेणं एवमेतं भविस्सतीति बूया ॥

॥ समागमद्वारं ॥ १५ ॥ छ ॥

[सोलसमो पयादारज्झाओ]

अध पयादारं वक्खस्सामो । तं जधा—दारकपादुब्भावे कीलणके दारकाण अभिणव्वे पुप्फ—फल—पवाल—परोहगते सप्पक—सीहक—वच्छवच्छके तरुणपादपके अण्णं वा यं किंचि बालकं बालसमाचारं वा एताणि पेक्खमाणो वा भासमाणो 15 वा आमसंतो वा एतेसं वा बाहिरे सद्—रूवपादुब्भावे पुच्छेज्ज पयामंतरेण पुच्छसीति वत्तव्वं, भज्जा ते भविस्सतीति बूया । एताणि चेव पेक्खमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसि वा बाहिरे सद्—रूवपादुब्भावे वा पुच्छेज्ज पयाविप्पयोगो ण भविस्सतीति बूया । उदरपडणं वा पुत्तमरणं वा जं किंचि अप्सत्थं पुच्छेज्ज पयाविप्पयोगो ण भविस्सतीति बूया ।

॥ पयादारं सम्पत्तं ॥ १६ ॥ छ ॥

[सत्तरसमो आरोग्यदारज्झाओ]

20

आरोग्यदारं वक्खस्सामो—तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे मुदितामासे पुण्णामधेज्जामासे दक्खिणामासे उत्तमामासे पहट्टपुप्फ—फलामासे परग्घवत्था—ऽऽभरणे भूसणगते अब्भुत्थिते उवविट्ठे हसिते भणिते गीते वादिते अप्फालिते पेक्खिते गज्जिते मुदिते णारीगणसमुदिते पसु—पक्खिसंदंसणे उदग्गवत्था—ऽऽभरण—सयणा—ऽऽसणगते एवंविहसद्—रूवपादुब्भावे पुच्छेज्ज आरोग्यं वा पमोदं वा सोमणसं वा जं किंचि पसत्थमत्थं पुच्छेज्ज आरोग्यमंतरेणं एवमेतं भविस्सतीति बूया । एताणि चेव पेक्खमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसि वा बाहिरे सद्—रूवपादुब्भावे पुच्छेज्ज 25 रोगं वा विणासं वा मरणं वा जं च किंचि अप्सत्थं पुच्छेज्ज रोगमंतरेणं ण भविस्सतीति बूया ॥

॥ आरोग्यदारं सम्पत्तं ॥ १७ ॥ छ ॥

[अद्वारसमो जीवितदारज्झाओ]

जीवितद्वारं वक्खस्सामो । तं जधा—तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामधेज्जामासे अणु—पहुतामासे आहारे उत्तमे सुपसण्णे सुरे उदग्गे उत्तमे उपविट्ठे उल्लोकिते हसिते उक्कट्ठे गज्जिते अप्फालिते पच्छेलिए गीते 30

१ ०८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ २ 'मेज्जका' हं० त० ॥ ३ सकुणणिहे चच्चरमहापध' हं० त० ॥ ४ 'समागमगते हं० त० ॥ ५ पयामंतरेणं ण भवि' हं० त० । पयाविप्पयोगेण भवि' सि० ॥ ६ पेसिते हं० त० ॥ ७ उक्कट्ठिए गज्जिए हं० त० ॥ ८ अप्फालिते पच्छेलिए सं ३ पु० ॥

वादिते तल-ताल-फाससमुदिते णर-णारिपादुब्भावे सव्वत्थपरगगते सव्वणिच्च-धुवपादुब्भावे एताणि पेक्खमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसि वा बाहिरे सद-रूवपादुब्भावे पुच्छेज्ज मरणं वा णिव्वाणं [वा] वहं [वा] बाहं वा जं किंचि अप्पसत्थं मरणमंतरेण पुच्छेज्ज ण भविस्सतीति बूया ।

॥ जीवितदारं सम्पत्तं ॥ १८ ॥ छ ॥

5

[एगूणवीसइमो कम्महारज्झाओ]

कम्महारं णाम वक्खस्सामो । तं जधा-रायोपजीवीसु कारुकोपक्खरोपकरणेसु य उदग्गपुप्फ-फलगते पच्छेलिते मुदितणास्-णरगते यं किंचि पसत्थमत्थं पुच्छेज्ज पणियमंतरेण एवमेतं भविस्सतीति बूया । एताणि ज्जेव पेक्खमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसं(सिं) वा बाहिरे सद-रूवपादुब्भावे पुच्छेज्ज कम्महारिणं वा कम्मणासं वा पणियविणासं वा जं किंचि अप्पसत्थमत्थं पुच्छेज्ज कम्ममंतरेण ण भविस्सतीति बूया ॥

10

॥ कम्मदारं सम्पत्तं ॥ १९ ॥ छ ॥

[वीसइमो वुट्ठिदारज्झाओ]

वुट्ठिदारं णाम वक्खस्सामो । तत्थ णिद्धामासे जलामासे णि^१ट्ठुद्धे णिस्संघिते मुत्त-वच्चकरणे सेदपरामासे उदगदंसणे उदगचरसत्तपादुब्भावे णावा-कौटिब-डआलुए पदुमुप्पल-जलय-पुप्फ-फल-कंद-मूलसंदंसणे सव्वजलोवकरणे सव्वजलोपजीविसंदंसणे सव्वजलपादुब्भावे तेल्ल-घत-दुद्ध-मधुपाणगते वुट्ठि-थणित-मेहगज्जित-विज्जुतपादुब्भावे 15 णदी-समुद्-कूप-तलाक-विकरण-पस्सवणोपलंभे एताणि पेक्खमाणो वा भासमाणो वा आमसमाणो वा एतेसि वा बाहिरे सद-रूवपादुब्भावे पुच्छेज्ज वुट्ठि वा वासारत्तं वा उदकं वा सस्सणिप्फत्ति सस्स[संप]दं वा एवमादी यं किंचि पसत्थमत्थं पुच्छेज्ज वुट्ठीमंतरेण एवमेतं भविस्सतीति बूया । एताणि ज्जेव पेक्खमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसि वा बाहिरे सद-रूवपादुब्भावे पुच्छेज्ज दुवुट्ठि वा अपगगहं वा सस्सविणासं वा सस्सवापत्ति वा जं च किंचि अप्पसत्थं पुच्छेज्ज सस्समंतरेण वासारत्तमंतरेण वा भविस्सतीति बूया ॥

20

॥ वुट्ठिदारं ॥ २० ॥ छ ॥

[एगवीसइमो विजयदारज्झाओ]

तत्थ विजयदारं णाम वक्खस्सामो । तं जधा-तालवेंट-भिगार-वेजयंति-जयविजय-पुस्समाणव-सिबिका-रधपादुब्भावे परघवत्थ-मल्लभरणपादुब्भावे परघवत्थ-मल्ल-55 भरणअप्पडिहयसंख-भेरी-दुंदुभि-परसद्-रूव-रस-गंध-फासपादुब्भावे सेणालंभे अडवी-परट्ठ-खंधावारणिज्जातलद्धअधिगते पमुदिते पादुब्भावे पुण्ण-सुद्ध-णिद्ध-दढ-25 अब्भंतस्-पुण्णामधेज्झामासे अपराजितसद्-रूव-रस-गंध-फासपादुब्भावे पुच्छेज्ज विजयं वा परट्ठमदणं वा सत्तुपराजयं वा जं च किंचि पसत्थमप्पसत्थं वा पुच्छेज्ज विजयमंतरेण एवमेतं भविस्सतीति बूया । एताणि ज्जेव पेक्खमाणो वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसि ज्जेव बाहिरे सद-रूवपादुब्भावे पुच्छेज्ज रायमरणं वा रायहारिणं वा रायविप्पलोवं वा रायभंगं वा संगामपराजयं वा जं किंचि अप्पसत्थमत्थं पुच्छेज्ज पराजयमंतरेण ण भविस्सतीति बूया । जधा पढमं पडलं परिवारितं तधा सव्वाणि पडलाणि परिवारेतव्वाणि ॥

30

॥ विजयदारं णामं ॥ २१ ॥ छ ॥

[बावीसइमो पसत्थज्झाओ]

अधापुवं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पसत्थं णामाज्झायं । तं खलु भो ! वक्खस्सामो । तं जधा-तत्थ कय-विक्कय-लाभसंपदाय कम्मागतलाभसंपदाय कित्ति-वंदण-माणण-पूयणासु उक्किट्ठपहट्ठसद्दपादुब्भावे

१ णिव्वाणं वा बांधवं वा जं हं० त० विना ॥ २ रेण भविं हं० त० विना ॥ ३ णिदुद्धे णिस्सं हं० त० ॥ ४ कोट्ठिमुआलुए हं० त० विना ॥ ५ दुद्धमुद्धपाणं हं० त० विना ॥ ६ विकरपस्सं हं० त० विना ॥ ७ ८ ९ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ८ खलु हो वक्खं हं० त० ॥ ९ पदा-कित्ति हं० त० विना ॥

केसमोलिकरणे केसाभिवद्धणे कण्णाकणविवाहे अक्खलियसव्वविज्जापयोगसिद्धिसु खत्तियसोत्तिउपयोगे^१ खित्तिउवचय-
सद्दपाउब्भावे इक्खुवण-सस्स-फल-हरियक-सस्साणं च दंसणे खेतसुभिवक्ख-महाबंभुजणसमागम-वंदणेसु गेज्जकैव्व-
पादबंभुपट्टकव्वसंपूयणासु गोणा-वलक्ख-भिग-णर-णारि-सयणरक्खासु गंध-मल्ल-भायण-भूसणसंजोयणासु घण-
विज्जुत-वच्छ-गोच्छक-जाणा-५५सण-सयणे सव्वमिधुणचर-कमलवण-भमर-विहग-दुमसमागमेसु घात-वध-बंध-
रोध-परिरोध-हासभाव-पेतपरिमोयण-दंसणेसु धिसुम-हेमंत-वसंत-सरद-पाउस-वासारतयतरासपूयणासु ओघट्टपरक्कमो- 5
सोपकमच्छदंसणे अग्घेयमणप्पसादणेसु घोडदाढिकरबंधणेसु घंटिक-चक्कि-सत्थिक-वेतालिक-मंगलवायणेसु
यस्सकसमिद्धसासकगहणे अच्चापचव्वणगंध-मल्ल५गुरुभरणे चिरप्पवासगतसिद्धयत्तसंबंधिसमागमेसु भूताधिपचव्वपुणोप्पत्तीसु
चेतियमहामहिकतुरियसद्दसुती-दंसणेसु चोरहितभट्ट-णट्ट-पतिलाभणेसु चिधट्टयकणक^३चीणकरघणोदीरणेसु छतोपाहण-
भिगारसंपदाणेसु रच्छहसंपदाहस्समुप्पत्तीसु छिदति मासातिमासे^३ इच्छूपपनहाससमुप्पत्तीसु छेगसमावयण-संपूयणा-
५भिर्वदणासु अच्छोदकउप्पणभा^३पतिभंगदंसणासु छंदमणोरहसकपसत्थकमुपपत्तीसु जलभार्येणजलासयपूरेणसु जातकम्मादि- 10
पसत्थजलणपज्जालणेसु जीवित-धेण-कण-कणग-रयण-भायण-भूसण-परिधान-भवण-सुहसरणसंपदासु उज्ज-
अज्जवसाधुसंपूयणासु जेद्वाणुजेद्दसंथाणधावणासु जोति-जलण-विज्जु-वज्ज-मणि-रतणतप्पणासणेसु जम्मणपरिवंदणवाल-
मंडलेसु अज्जजणसम्माणण-पूयणासु ज्ञाणसमाराधणसमारभेसु ज्ञीण-परिक्खीण-विणट्ट-पुणलाभ-पुराणवीकरणेसु
अज्जप्पगतिज्जखिप्पसंदंसणे आज्जेयणीयसामिसामिद्धयागपचव्वदाणासु ज्ञणितणीवारदंसणे ज्ञंज्ञणितभूसणणिस्सणसदे ततो
पचव्वदाणे तणिते तिरिणे तुच्छपूरिते तेसं तेसं च भावाणं पसत्थाणं दंसणेसु अंतोमुहचुंबणे अंतहिणा रंगसमापेण 15
थलज-जलजपुप्फ-फल-हरित-कंद-मूल-सस्सवतारणेसु थलपंथसलिलपंथभंडावतारणेसु थिताथितसद्द-सिद्धसाधुभुत्त-
गय-तुरय-वसभ-मुदितणर-णारी-णट्ट-गीत-वादित-लंभूसससहुप्पत्तीसु धुति-संथव-सिद्धकम्माणिकित्तेसु अत्थेस्सरिय-
भोगवद्धणेसु थोकाभिवद्धणे थंभासण-सयण-पुरिस-दुमसंसयेसु दहुम्मणे वा पिज्जमादीविगुणसंपयोगसिद्धीसु दुम-
भवण-तुरंग-पव्वतारोहणेसु उदेस-देस-पुर-गामवद्धणेसु संदेहधीवेसणेसु वदंसक-मुकुडकुंडला-५५भरणविविधपिणधेण^३
वस्तालघणे उद्धविते अधिज्जमाणे ०८ उद्धज्जमाणे १० उद्धे कते अणुमते धातदाणसंपदाणेण व कते मंडिते णिवेसिते 20
अणुच्चारिते अणंगजणसतपहिट्टसमागमे अण्णोणसंपदाणेण आणंदितदंसणे पचव्वगरूवजोव्वण-फल-हरितदंसणे
बाहिरउक्कट्टपहट्टसद्दपादुब्भावे पीतिकरविहकसंकीलणेसु पुण्णभोयणेसु दंसणे पैडिज्जमाणधण-रयण-पुप्फ-फलदंसणे
बोधणे रुद्धोपघातकरजलजलणविचय-सव्वभयमोक्खणदंसणेसु पंचरस-वण्ण-फासोपपण्णघाणसुहमणुव्वेगदंसणेसु फलसंपदासु
फासितसुत्तथपतिगगहे फीतसव्वकित्तणदंसणेसु फुल्लेतकमलुप्पलदंसणे उद्धससंभमावक्कमेसु अद्धोदितहिट्टसद्दसमुब्भवेसु
अप्पंसितपरिक्कमसिद्धीसु बलि-मंगल^{३२}-यागहरण-सेसापादुब्भावे वालालंकितवलवलकवाहणदंसणेसु पिवकतिसरिसरिस- 25
कम्मसंपयुत्तेसु बुज्जंतकमलवणवखगमिगणरणारिदंसणेसु वेस्सप्पसादकरणे बोधिज्जमाणणरदेवतुरियणि^{३५}णिस्सणेसु
बंधणागारमोक्खणेसु आभरणपिणधणेसु भावपादुब्भावे अभिमुहपदक्खिणासणणिव्वसप्पतासु णिरिक्खणेसु भमु[हु]क्खेपणे
उब्भेदसमुब्भावे भोयणोक्कारणिस्सणे भंडकरंडगपतिपूरणदंसणे मत्तमातंगदंसणे णिस्सणे माणिज्जमाणे मिधुणसमागमे

१ खत्तियव' हं० त० ॥ २ 'कच्छपा' सप्र० ॥ ३ 'पायवंचपव्वकट्टसंपू' हं० त० ॥ ४ 'घट्टकव्वसं' सं ३ पु० ॥
५ 'सु णाणावल' हं० त० ॥ ६ 'जाणसयणासणे' हं० त० ॥ ७ 'दुगसमा' सं ३ पु० । 'दुगसमा' सि० ॥ ८ 'सणासु'
सं ३ पु० ॥ ९ उग्घट्टपरक्कमोसाप' सं ३ पु० । उग्घट्टपरक्कमासोप' सि० ॥ १० 'वासागयासिद्ध' हं० त० ॥ ११ 'सु धुवाधि'
हं० त० ॥ १२ 'सुवीदंस' हं० त० विना ॥ १३ चित्ठय' सं ३ पु० ॥ १४ 'कवीणयकर' हं० त० ॥ १५ 'सुत्तथोपहाण'
सि० ॥ १६ 'संपादणेसु' हं० त० ॥ १७ इच्छूपप' हं० त० विना ॥ १८ 'वंदणेसु' हं० त० ॥ १९ 'पत्तिभंग' हं० त० विना ॥
२० 'त्थसमुप' सि० ॥ २१ 'णजलजलास' हं० त० विना ॥ २२ 'धणकणग' सं ३ पु० सि० ॥ २३ उज्जअज्जव' हं०
त० ॥ २४ 'णकालमंडणेसु' हं० त० ॥ २५ 'सु ज्झासियणी' हं० त० ॥ २६ अंतहिणा' हं० त० ॥ २७ 'सायसहु' हं०
त० ॥ २८ 'माणे दीवि' हं० त० ॥ २९ 'वद्धाणे' हं० त० ॥ ३० 'णे धर' हं० त० ॥ ३१ ०८ १० एतच्चिह्नान्तः पाठः
हं० त० नास्ति ॥ ३२ 'लयाह' हं० त० विना ॥ ३३ 'तचलवलवकवाहण' हं० त० ॥ ३४ 'कतिसरिसकम्म' हं० त० ॥
३५ 'ज्जमाणे णर' हं० त० ॥ ३६ 'यणिप्पट्टेसु' हं० त० ॥ ३७ 'गस्स पति' हं० त० ॥

मुदितणट्ट—गीत—वाइयसंदंसणे अमेज्झपक्खालियसुद्धदंसणे अमोघविचेदिते मंचातिमंचकरणेऽधिरोहणे जलधरमधुगय-
 मत्तजयघोसणिग्घोसे यत्ताणुयत्तणिद्देसपतिच्छंदे वइस्—मणि—प्पवाल—मुत्तासंजोयणे जूब—चित्ति—सेतुबंधणमायतणकिरियासु जे
 य पसत्था सकंसि देहंसि फंदरेदे योगियोगसिद्धिसु यण्णेज्जामासे यण्णंदंसणे हस्सवद्धणे रासिवद्धणे रिपुहडपच्चाणयणे
 रुहविरुद्धदंसणे रोयितपुरभावणप्पवेसणे सुरोरुवलणरिंदसत्थसंसिद्धसमुप्पयाणेषु रम्मुज्जाण—सलिलयत्तागमणप्पवेसणेषु
 5 अलसदंसणे उल्लालिते आलिंगिते लुलितप्पसादिते उल्लंहिते उल्लोकिते उल्लंघिते वरवधूकित्तणे वारमोक्खाधिकारसंदंसणे
 विलंघिते बूहिते उव्वेहासिते वोसट्टमाणे भायणपूरणे वंदितसत्थवरहसंथवे उस्ससिते आसासणे उस्सिघिते सुद्धमल्ल-
 वत्थोदण—बलिकम्मगहण—दंसणे सेवलिकायत्तकट्टकित्तणा—गति—दंसणेषु सोवच्चसप्पणफासुकाहारसंपदासु संघायसम्मोदणासु
 हंसितोपहसिते आहारे गतेहित—समीहितसंपयासु हुतहुतासणच्चिसंभवे हेम—मणि—मुत्त—प्पवालसज्जोयणेषु अहोणिसा—
 मास—पक्ख—[उ]दु—वासादिसु हंस—कुरस्—चक्कवाक—सरभोतुककालपच्चागमोपसमादिसु ।

10 यं लोके पूयितं किंचि मणो यत्थ य रज्जति । यर्मिदियाणमिदुं च पसत्थं तम्मि णिहिसे ॥ १ ॥

॥ इति महापुरिसदिण्णाय० पसत्थो णामज्झायो बावीसइमो सम्पत्तो ॥ २२ ॥ छ ॥

[तेवीसइमो अप्पसत्थज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय० उप्पातिकमप्पसत्थमज्झायं वक्खस्सामि । तं जधा—तत्थ मे हाणी
 पुरेक्खडा ण पुंछा अलाभेसु सुहे जीविते वद्धीयं जसे विज्जायं समागमे जये इति उप्पाया अप्पसत्था भवन्ति । तं
 15 जधा—कड्डिते कासिते किलेसिते उक्कणिते केसणिम्मज्जणे अकोडिते उक्कंदिते खलिते अक्खारिते खिसिते खुधिते खुसिते
 खौडिते खंडिते उग्गहिते गालिते गिद्ध—सिगालदंसणे गूहिते गोवयोस्सभुज—चरण—मुखाणे गोविते गंदिते ओघट्टिते उग्घाडिते
 धिघिणोपिते धुण्णिते घेयअमेज्झपादुब्भावे धोरमहव्वयदंसणे धंसिते चलिते चालिते चित्तविब्भमे वुच्छदड्डे चेतविणासणे
 चोरभयोदीरणे चंदप्पभोपघातिते पच्छादिते पच्छादाणछिन्ने छुन्ने छेलितछादिते छंदाभिलासअसंपत्तीयं जज्जरिते जालिकरे
 जीवितसंसये जुगुच्छितअणिट्टोपसट्टदंसणे जेयहितसद्दपादुब्भावे जोत्तिसापणासणे जंभिते झुपिते ज्ञामिते झीणे झुज्जुरयिते
 20 अज्जेणणासिते झोसिते उज्जंते तमूभावे तांसिते णिक्खिते तुच्छिते तेणिते तोमरविद्धे तंडिते उत्थिते थाणपवायणे धितोपवेसणे
 णिट्टिते थेव्विद्धे थंभिते उद्विते दालिते दीणमुहामासे उहुते देसपपतणे दोभगे दंडकसा—लेट्टुघाते धमिते धाविते धिक्कारकरणे
 धुते ओधुते धेणववच्छपघातणे अधोपाणे धंसिते णट्टे ओणामिते णिहिते णूणे गामपतणे अन्नोसकिते णंदीउवघाते अणंतसोके
 पब्भट्टे पातिते पीलिते पूतिवापण्णदंसणे पेडितविच्छेभणे पोक्तदुरंतपादुब्भावे पंडकदंसणे फल—पुप्फणासणे फालिते
 फियाबाहिरकपरामासे फुल्लिते फोडिते बधिरंध—मूय—जलमत्तपादुब्भावे वाधायविमूविणासणे बुद्धिउपघाते वेस्सदंसणे ओवालिते
 25 बंधुजणविप्पयोगे भट्टे भामिते भिन्ने भुक्खिते भेदिते भोयण—पाण—भक्खवापडासुभंतं मलिते उम्मज्जिते ओणिपीलिते
 उम्मुक्के उम्महिते मोघविखद्धिते उम्मत्थिते यतिविणासेयगविणासेयिट्ठविअसक्कारे जंगभंगे अये पडिसेधिते अयोगेयं तस्स
 य हाणिसु रतिविघाते रायपराजये ओरिक्के ओरूढे रेचिते ओरेचिते रंधिते ललितोपघाते अलातक्खोभणे गुल्लिखिते लुचिते
 पघातणे ओलकिते ओलंबिते उवदिते ओवारिते विणासिते वूहभेदणे वेसाणरविज्झापणे वोकसिते संचिते ससिते ओसारिते
 ओसुद्धे सेदणिम्मज्जणे सोणितपादुब्भावे संसरिते ओहते हारिते हिसेते हुंडिते हेडिते अहोणिसाधिकरे हंस—चक्कवाकसव्व—

१ 'रणोधि' सप्र० ॥ २ 'दंसणे हस्सवद्धणे रिपुहडपच्चाणयणे रुहविरुद्धदंसणे हस्सवद्धणे रासि' इतिरूपे द्विरावृत्तः
 पाठः सर्वास्वपि प्रतिषु वर्तते ॥ ३ 'समुप्पयारेसु हं० त० । 'समुप्पयायणेषु सि० ॥ ४ 'हसतो' सप्र० ॥ ५ 'णामाज्झा' हं० त० ॥
 ६ 'ण पुच्छा सि० ॥ ७ 'खोडते सि० विना ॥ ८ 'पच्छादणे छिण्णे चुण्णे छेलिते छंदाभिलासे असं' सि० ॥ ९ 'तिसापुणासणे
 जंघिते हं० त० । 'तिसणासणे जंघिते त० ॥ १० 'भासि' त० एव ॥ ११ 'णिच्छुद्धे थेचित्ते थंभिण्ण उद्वसिते त० एव ॥
 १२ 'विह्वि' त० एव ॥ १३ 'विचेट्टिण्ण उम्मच्छिण्ण तिणासेयागविणासे पेडुअसं' हं० त० ॥ १४ 'ओरोचिते हं० त० विना ॥
 १५ 'गुलिखिते हं० त० विना ॥

मिहुणविप्पयोगे चेति एवंविधसद्-रूवपादुब्भावे अप्पणा आधारिते परेण वा पुच्छिते पसत्थे अत्थे णत्थि वत्तव्वं, अप्पसत्थे पुच्छिते खिप्पं भविस्सतीति वत्तव्वं । भवन्ति चऽत्थ सिलोगा-

असुयीणं च सर्व्वेसि किलिद्वाणं च दंसणे । असुभेसु य सद्देसु हीणमत्थं वियागरे ॥ १ ॥

तंरूवेण य तंरूवं तण्णिभेण य तण्णिभं । णिभं च णिभमत्तेण तण्णिभोपण्णिभेण य ॥ २ ॥

पसत्थमप्पसत्थं च उप्पातं समुपेक्खिया । वियागरेज्ज णेमिती तज्जातपडिपोगला ॥ ३ ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय अप्पसत्थज्झाओ तेवीसइमो सम्पत्तो ॥ २३ ॥ छ ॥

[चउवीसइमो जातीविजयज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिनाय अंगविज्जाय जातीविजयो णामाज्झाओ । तं खलु भो ! वक्खस्सामि । जं जधा-तत्थ अज्जो मिलक्खु ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे अज्जो ति बूया । तत्थ बज्झामासे चलामासे कण्हामासे लुक्खामासे तुच्छामासे मिलक्खु ति बूया । तत्थ अज्जे 10 पुव्वमाधारिते अज्जं तिविधमाधारये, तं जधा-बंभणं १ खत्तियं २ वेस्समिति ३ । तत्थ बंभेज्जेसु सुक्केसु य बंभणा विन्नेया १ । तत्थ खत्तेज्जेसु रत्तेसु य खत्तिया विन्नेया २ । तत्थ वेस्सेज्जेसु पीतेसु य वेस्सा विन्नेया ३ । तत्थ सुद्देयेसु कण्हेसु य सुद्धा सव्वमिलक्खू य विन्नेया ।

तत्थ अज्जेसु मिलक्खूसु वा अणंतरेसु वा पुव्वमाधारितेसु सुक्कामासे सुद्धवण्णा विन्नेया । सामेसु सामामासे सामा विण्णेया । तत्थ कालामासे कालका विण्णेया । महाकायेसु महाकाया विन्नेया । मज्झिमकायेसु मज्झिमकाया 15 विन्नेया भवन्ति । पच्चंवरकायेसु पच्चंवरकाया विन्नेया । तत्थ चलेसु सव्वववहारगते य ववहारोपजीवी विन्नेया । तिक्खेसु सव्वसत्थगते य सत्थोपजीवी विन्नेया । तत्थ पुधूसु खेतोपजीवी विन्नेया । णिक्खुडेसु णिक्खुडवासिणो विण्णेया । दढेसु उन्नतेसु य पुव्व[त]वासिणो विण्णेया । तत्थ णिद्धेसु आपुणेयेसु य दीववासिणो विन्नेया । तत्थ रमणेसु जणपदवासिणो विण्णेया । गहणेसु रण्णवासिणो विन्नेया । चलेसु चक्कचरा विण्णेया । परिमंडलेसु य चउरस्सेसु य णगरवासिणो विन्नेया । तत्थ सव्ववण्णपरिवद्धेणसु य सव्वपाणपतिवद्धेणसु य चेद्धितका विण्णेया । मूलजोणिगते 20 आपेलच्चिधा विण्णेया । गहणेसु कण्हा विण्णेया । संवुते कंचुर्कचिधा विण्णेया । उपगहणेसु सामा विण्णेया । सुक्कामासेसु रमणीयेसु ओवाता विण्णेया । पुरत्थिमेसु गत्तेसु पुरत्थिमदेसीया विण्णेया । दक्खिणेसु दक्खिणदेसीया विण्णेया । पच्छिमेसु पच्छिमदेसीया विण्णेया । ५० वामेसु उत्तरदेसीया विण्णेया । १० गम्मेसु अज्जदेसणिस्सिते बूया । गम्माणंतरेसु अज्जदेसंतरेसु बूया । णिक्खुडेसु णिक्खुडेसिज्जे अम(ण)ज्जदेसिज्जा विण्णेया ॥

॥ इति महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय जातीविजयो नामज्झाओ चउवीसइमो सम्पत्तो ॥ २४ ॥ छ ॥ 25

[पणुवीसइमो गोत्तज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय गोत्तनाम अज्झायं । तमणुवक्खस्सामो । तं जधा-तत्थ गोत्तं दुविधं, गहपतिकगोत्तं चेव १ दिजातीगोत्तं चेव २ ।

तत्थ माढ-गोल-हारित-चंडक-सकित-(कसित)-वासुल-वच्छ-कोच्छ-कोसिक-कुंडा चेति गहपतिकगोत्ताणि १ । तत्थ थूलेसु माढा विन्नेया । सव्वसगुणगते य चतुरस्सेसु गोला विण्णेया । सव्वचतुप्पयगते य णिद्धेसु हाला विण्णेया । 30 सव्वमदगते चेव परिमंडलेसु चांडिका विन्नेया । सव्वदंसणीयेसु चेव कसेसु कसिता विण्णेया । सव्वबीजगते चेव पुण्णेसु वासुला विण्णेया । सव्वपुप्फ-फलगते चेव दढेसु वच्छ विण्णेया । सव्वधातुगते चेव चले कोच्छा विन्नेया । सव्वपाणजोणीगते चेव दीहेसु कोसिका विन्नेया । सव्वपरिसप्पगते य हस्सेसु कौंडा विन्नेया । सव्वमूलजोणिगते

१ वत्तव्वे अप्प सप्र० ॥ २ सव्वगते य पसत्थो हं० त० । सव्वत्थगते य सत्थो सं ३ पु० सि० ॥ ३ रमणिज्जेसु हं० त० ॥ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० एतच्चिहान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ५ कंडा सप्र० ॥

तत्थ एतेसि गोत्ताणं जं गोत्तं इत्थी पुरिसो वा भवति तं गोत्तं विण्णातव्वं भवति । तत्थ बंभणगोत्ताणि चतुर्विधाणि भवन्ति । तं जधा—सगोत्ता १ सकविगतगोत्ता २ बंभचारिका ३ पवरा ४ चेति । तत्थ अब्भंतरेसु सकगोत्ता विण्णेया । वंकेसु सगवि[ग]तगोत्ता विण्णेया । उद्धेसु बंभचारिका विण्णेया । उत्तमेसु पवरा विण्णेया ।

उद्धंभागेसु मंडवा विन्नेया । समभागेसु पुधूसु वा सेट्ठिणो । हस्सेसु वासिट्ठा । डहरचलेसु संडिल्ला । डहरथावरेसु 5 कुंभा । उण्णतेसु माहकी । तिरियंभागेसु कस्सवा । अधोभागेसु गौतमा । अग्गेयेसु अगिरसा । दढेसु भगवा । चलेसु भागवता । दीहेसु दढेसु सदया । णिद्धेसु ओयमा । णीहारेसु हारिता । तणूसु लोकक्खिणो । उपहुतेसु कचक्खी । सुक्केसु चारायणा विन्नेया । परिमंडलेसु पारावणा विन्नेया । जण्णेज्जेसु अगिवेस्सा विन्नेया । हस्सेसु मोग्गल्ला विन्नेया । अब्भंतरअब्भंतरेसु अट्ठिसेणा । बाहिरबाहिरेसु गहणेसु पूरिमंसा । फरुसेसु गदभा । उपगगहणेसु वराहा । कण्हेसु डौहला । णिव्खुडेसु कंडूसी । तिरिच्छाणेसु भागवाती । उताणेसु काकुरुडी । णिकुज्जेसु कण्णा । मज्झिमेसु मज्झंदीणा । 10 वामेसु वरका । कायवंतेसु मूलगोत्ता । संखासु संखागोत्तं, केस—मंसु—णह—लोमगते पसन्नेसु य भेदाणुजोगगोत्तं बूया । दारुणेसु कढा । किन्नेसु कलवा । चतुरस्सेसु वालंवा । सेतेसु सेतस्सतरा । आतिमूलिकेसु तेतिरिका । मज्झविगाढेसु मज्झरसा । अंतेसु बज्झसा णेया । सामेसु छंदोगा । उयुभागेसु पसन्नेसु मुज्जायणा । अप्पसत्थेसु कत्थलायणा । सारवंतेसु गहिका । असारेसु णेरिता । कुडिलेसु बंभच्चा । अच्छेसु काप्पायणा । विच्छिन्नेसु कप्पा । आपुणेयेसु अप्पसत्थभा । चंडाणयेसु सालंकायणा । सामेसु यणाणा । विसमेसु आमोसला । सामुग्गेसु साकिजा । परिमंडलेसु 15 उपवति । उण्णतेसु डौभा । उद्धंभागेसु थंभायणा । मुदितेसु जीवंतायणा । वेरेसु दढका । णातिवत्तेसु धणजाया । बुद्धिरमणेसु संखेणा । अबुद्धीरमणेसु लोहिच्चा । धितेसु अंतभागा पियोभागा । सदेयेसु संडिल्ला । दुंदुभिघोसे पव्वयवा । जाणाधिगतेसु आपुरायणा । विविहेसु वावदारी । संवुत्तेसु वग्घपदा । खतेसु पिला । उत्तमेसु जीवसाधारणेसु देवहच्चा । बंभेयेसु आपुणेयेसु वारिणीला । दट्ठोदरेसु सुधरा ।

सव्वधणगते चेव सव्वखिडगते सव्वदुगते खघाणसेसु य मूलगोत्तं चेव । हत्थ—पादसंजमे चेव थीणवे । 20 सव्वअपरिगहेसु चेव सव्वसत्तेसु वेयाकरणं बूया । गणावलोकणे मीमंसका । जत्थ (तत्थ) पमाणे छंदोको । विच्छिण्णविमदिते सव्वविडगते पण्णायिकं बूया । ओजासणे ककितजाणे । यण्णेज्जेसु यण्णिकं बूया । सण्हेसु तिक्खकं बूया । अग्गेयेसु जोतिसिकं बूया । पतिलोमेसु इतिहासं बूया । संबंधेसु रहस्सं बूया । पुरत्थिमेसु सुयवेदं बूया । सामेसु सामवेदं बूया । संखतेसु यजुव्वेदं बूया । दारुणे अहव्वेदं बूया । समभागेसु एकवेदं बूया । उद्धंभागेसु दुवेदं बूया । उद्धंभागेसु आहारेसु य तिवेदं बूया । उद्धंभागे आहारमणेसु सव्ववेदं बूया । परिहितेसु छलंगवी बूया । 25 महावकासेसु सेणिका । लुक्खेसु णिरागति । अंतेसु वेदपुट्टं बूया । बंभंतरेसु सोत्तिया । घोसवंतेसु अज्झायी । कन्नेसु आचरियो । मुदितेसु जावको । अणुलोमपतिलोमे णगति । उत्तमगे वामपारा ॥

॥ इति गोत्तज्झायो नाम पंचवीसइमो सम्पत्तो ॥ २५ ॥ छ ॥

[छव्वीसइमो णामज्झायो]

णमो भगवतो य अरहतो यसवतो महापुरिसस्स महावीरवद्धमाणस्स । णमो भगवतीय महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय । 30 अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिन्नाय अंगविज्जाय णामज्झायं । तं खलु भो ! तमणुवक्खायिस्सामो । तं जधा—यदक्षरमिदं प्रोक्तं, महर्षिप्रविचिन्तितम् । अंगविज्जावसुं रत्तनामाध्यायं प्रचक्ष्महे ॥ १ ॥ ऋषयो येन बुध्यन्ते लोके नामगतं पधं । तदहं प्रोदाहरिष्यामि, सङ्क्षेपं नामसङ्ग्रहम् ॥ २ ॥

१ 'विकयगो' त० एव ॥ २ 'सु पचारा हं० त० ॥ ३ गोत्तमा सप्र० ॥ ४ णिद्धेसु सि० विना ॥ ५ पुरियंता हं० त० ॥ ६ काहला हं० त० ॥ ७ णिण्णेसु हं० त० ॥ ८ लंभच्चा हं० त० विना ॥ ९ डोला हं० त० ॥ १० सितेसु हं० त० ॥ ११ जणा हं० त० विना ॥ १२ विवट्टेसु हं० त० ॥ १३ सव्ववदुगए खज्जाणरेवसु हं० त० ॥ १४ कमपारा हं० त० विना ॥ १५ लोकानां सुगतं सि० ॥

गते यो वाऽनुभाषेत, पढंतो य विसेसतो । जीवमज्जीवसंसद्वं दुविधं नामपग्गहं ॥ ३ ॥

सममक्षरसङ्घातं भवेद् वा विसमक्षरम् । ससंजोगमसंजोगं गुणा—ऽभिप्पायकं तथा ॥ ४ ॥

सरादि १ व्यञ्जनादि वा २ सव्वणामगतं ३ तिधा ।

उष्मान्तं १ व्यञ्जनान्तं वा २ स्वरान्तमिति ३ तत् त्रिधा ॥ ५ ॥

थीणामधेयं १ पुण्णामं २ णपुंसकमिति ३ तिधा । ऐकभस्सं १ दुभस्सं च बहुभस्समिति ३ तिधा ॥ ६ ॥ 5

अतीता १ ऽणागता काले २ वत्तमाणं च ३ तं तिधा । [..... ॥ ७ ॥]

उपसग १ णिपाताणं २ णामा ३ ऽक्खायं च ४ भागसो । विणिच्छित्तं महेसीणं भस्समेतं चतुव्विधं ॥ ८ ॥

सच्चं १ चेवालितं चेव २ तथा सच्चालितं भवे ३ । ण सच्चा णालिता वा वि ४ गिरा लोके चतुव्विधा ॥ ९ ॥

अंतरिक्खं १ सलिलजं २ पत्थिवं ३ पाणजं ४ तथा । मग्गा य तस्स अक्खाता णामं जेहि पवत्ते ॥ १० ॥

णक्खत्ताणं गहाणं च ताराणं चंद—सूरखो । विधीणं मंडलाणाय दिसाणं गयणस्स य ॥ ११ ॥ 10

उक्काणं परिवेसाणं तथा पुव्वगतस्स य । सतहुताणं मेताणं पक्खिलं(णं) जे णभालया ॥ १२ ॥

कट्ठा—मग्गा—ऽऽलवाणं च गयणस्स णिसाय य । उदूणं च समाणं च तथा मास—ऽद्धमासयो ॥ १३ ॥

णिस्सितं वा वि णक्खत्तं तथा णक्खत्तदेवतं । यं णामधेयं भवति सव्वमाकासणिस्सितं १ ॥ १४ ॥

कूपाणं उदपाणाणं णदीणं सागरस्स य । हद्द—पुक्खरणीणं च णागाणं वरुणस्स य ॥ १५ ॥

समुद्द—पट्टणाणं च दण्णपाणं च सव्वसो । सव्ववारिचराणं च द्विजा वारिचरा य जे ॥ १६ ॥ 15

णदीरुहा य जे रुक्खा जले जं चाभिरोहति । यदस्सियं णामधेज्जं सव्वं सलिलसंभवं २ ॥ १७ ॥

दुमाणं च लताणं च सव्वपुप्फ—फलस्स य । देवाणं णगराणं च णातूणं जं जतो भवे ॥ १८ ॥

जनु देवणिधं किंचि वसुधामभिणिस्सितं । धातुरत्तगतं वा वि सव्वं तं पुढविसंभवं ३ ॥ १९ ॥

सुराणं असुराणं च मणुस्साणं च सव्वसो । चतुप्पदाणं पक्खीणं कीडाणं किमिणं तथा ॥ २० ॥

जदस्सितं णामधेज्जं जं किंचेवविधं भवे । बहुप्पदाणं अपदाणं सव्वं तं पाणसंभवं ४ ॥ २१ ॥ 20

सव्ववत्थ—भूसण—जाणा ०८—ऽऽसण—१० सयण—पाण—भोयण—आवरण—पहरण—पुक्खरगतं चेति, जं चेदं

तदपि किंचि एतारिसं सव्वं तदपि जीवं सव्वणेरयिक—तिज्जजोणिगत—मणुस्स—देवा—ऽसुर—पिसाय—जक्ख—रक्खस—
किन्नर—किंपुरिस—गंधव्व—णाग—सुवण्णा चेति, जं चऽण्णदपि किंचिदपि एतारिसं दिव्वसंठाणणामधेज्जं तं जीवसंसद्वं ।
तदेक—ति—पंच—सत्त—णवेकादसक्खराणि, जाणि वऽण्णाणि चेव समक्खरसंघाताणि णामधेज्जाणि, ततो परमेतारिसाणि
तं विसमक्खरसंघातं ततो द्वि—चतुर्थ—अष्ट—दश—द्वादशाक्षराणि, जाणि वि अण्णाणि विसमक्खरसंघाताणि णामधेज्जाणि, 25
अत परमेतारिसाणि समक्खरसंघातं स तत इदं सेध—संकरिसण—मदण—सिव—वेसमण—वरुण—जम—चंदा—ऽऽदिच्च—
ऽग्गि—मारुत—दिवस—रयणि—रौदुम—विहंग—णाग—सुवण्ण—देवा—ऽसुर—मणुय—वसुधंतरिक्ख—पव्वत—समुद्द—वसुधाधिप—
रत्तणिये, एतं जं चऽण्णदपि किंचि एतारिसं णाम—गोतं चेति णिघुंटे उभयोरवि णिपयण्णगोणं तं तं
णक्खत्तदेवयणामधेज्जेसु जं किंचि दीहसरीरादितं सरादितं वंजणादितं तहा उस्सातं तथा वंजणातं स्वरांताणि भवंति ।
जधा—थी—पुं—णपुंसकणामधेज्जाणि एक—द्वि—बहुवचनानि अतीत—सांप्रता—ऽनागतानि सवन्नेरेव विण्णैयाणि भवंति 30
उच्चारितस्समुम्भट्टे तथा उल्लोकित—ऽब्भुत्थियसमाचारे यद्विज्झं विब्भंसमुसितमिति सवणणक्खत्तदेवताणिस्सितेसु थी—

१ वापिसम सप्र० ॥ २ 'ति त्रिधा सि० विना ॥ ३ 'एकभाष्यं द्विभाष्यं च बहुभाष्यमिति' एकवचनं द्विवचनं बहुवचनं
चेत्यर्थः ॥ ४ ०८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति ॥ ५ सि० विनाऽन्यत्र—'णि विविहसमक्खसंघा' हं० त० । 'णि
विविसमक्खरसंघा' सं ३ पु० ॥ ६ 'णि यं विसंघातं सं ३ पु० ॥ ७ संतत इदं सेंडसं' हं० त० ॥ ८ 'रोहम' हं० त० ॥
९ यदिष्टं वि' हं० त० विना ॥

पुंसयो णामधेज्जेसु णक्खत्तं बूया । एतेसामेव संधिउदीरणे णक्खत्तणिस्सितं णामधेज्जं बूया । एतेसामेव जमकोदीरणे णक्खत्तदेवतणामधेज्जं बूया । एतेसामेव जमकोदीरणे संहारे णक्खत्तणिस्सितं णामधेज्जं बूया । एतेसामेव सव्वतोदीरणे अस्थमितणक्खत्त-चंदा-ऽऽदिच्चणामधेज्जं बूया । तेसामेव चलोदीरणे अयहत्थिसु समगमारुतणामधेज्जं बूया । तेसामेव चलोदीरणे संहारे अजहत्थिसु समगमारुतणिस्सितं णामधेज्जं बूया । अवत्थितोदीरणेसु णक्खत्तणामधेज्जं बूया । तेसामेव च उदीरणे संहारे सुणक्खत्तदेवतणिस्सितं णामधेज्जं बूया । एतेसामेव अवकरिस्सणोदीरणे वा पव्वत-सागर-मेदिणी-णदी-चेतिया-ऽऽयागणामधेज्जं बूया । तेसामेवावकरिस्सणे वा अधरोदीरणे वा संहारे पव्वत-सागर-मेदिणी-णदी-चेतिया-ऽऽयागणिस्सितं थी-पुमंसयो णामधेज्जं बूयादिति । तत्थ सव्वतिज्जजोणिगते तत सव्वतिज्जजोणीगते थी-पुमंसयो णामधेज्जे तिज्जजोणीणामधेज्जं बूया । तेसामेव संहरोदीरणे तिज्जजोणीणिस्सितं णामधेज्जं बूया । तेसामेव य उदीरणे थावरतिज्जजोणिणिस्सितं णामधेज्जं बूया । ॐ तेसामेव च उद्धंभागोदीरणे विहगणामधेज्जं बूया । ॐ तेसामेव उद्धंभागोदीरणे संहारे विहगणिस्सियं णामधेज्जं बूया । ॐ तेसामेव उद्धंभागोदीरणे संहारे परिसप्पणिस्सितं णामधेज्जं बूया । ॐ तेसामेव थिरोदीरणे संहारे परिसप्पणिस्सितं णामधेज्जं बूया । तेसामेव सव्वतोदीरणे मच्छणामधेज्जं बूया । तेसामेव सव्वतोदीरणे संहारे मच्छणिस्सितं [णामधेज्जं] बूया । तेसामेव अपकरिस्सणोदीरणे वा कीडिकिपिल्लकणामधेज्जं बूया । णिम्मज्जित-वाहित-पोरुपविद्धा-ऽवलोकिते णिक्खयसव्वभवण[ग]ते सव्वधरगते चेति । तत सव्वणेयिकेसु दाणवगतेसु अधरणामधेज्जं बूया । तेसामेव जमकोदीरणे णिक्खणामधेज्जं बूया । तेसामेव जमकोदीरणे संहारे १५ णिरयाणिरया-णिस्सितं वा ॐ हिंसाणिस्सियं वा ॐ णामधेज्जं बूया । तेसामेव तिज्जभागोदीरणे संहारे णागणिस्सितं णामधेज्जं बूया । तेसामेव च उद्धंभागोदीरणे दाणवणिस्सितं णामधेज्जं बूया । तेसामेव उद्धंभागोदीरणे संहारे दाणवनिस्सितं णामधेज्जं बूया थी-पुंसयोरिति ।

तत्थ णक्खत्तणामधेज्जं दुविधं-णक्खत्तणिस्सितं चेव १ णक्खत्तदेवतणिस्सितं चेव २ ।

तत्थ मणुस्सणामधेज्जं पंचविधं, तं जधा-गोत्तणामधेज्जं १ अयणामकं २ कम्मणामधेज्जं ३ सरीरणामं ४ २० करणणामं ५ चेति ।

तत्थ गोत्तणामधेज्जं गहपतिकगोत्तणामधेज्जं दिजातीगोत्तणामधेज्जं चेति । तत्थ गहपतिकगोत्तणामधेज्जं तं जधा-माढ-गोल-हाल-चंडिक-सकित(कसित)-वासुल-वच्छ-कोसिका चेति । अतो परमुद्धं बंधणगोत्तणामधेज्जं भवति १ ।

तत्थ अधणामकं समीसु सीसणाम अपि किन्नक-कतरक-उज्झितक-छड्डितका चेति । याणि वऽण्णाणि वि काणिचिदेवजुत्ताणि २ ।

२५ तत्थ कम्मणामधेज्जं पंचकमाधिकरणकाहपयोगेकसिमाभिणिस्सितं, जं चण्णदपि किंचिदेतारिस्सं कम्माधिकरणजुत्तं तं कम्मणामधेज्जं ३ ।

तत्थ सरीरणामधेज्जं पसत्थमप्पसत्थं च दुविधं-लक्खणदोसजुत्तं च उपह्वदोसजुत्तं च । १ संड-विकड-खरड-खल्लाड-विपिण आहारे उदके यावि देवभूतिवलायसमाणुवद्धी समवसीवापि अपरिक्कमा ।

हडये मित्तवगे य गोत्तणामे य सव्वस्स । संजोगेसु य सव्वेसु मित्तं बूया परिक्कमं ॥ १ ॥

३० णंदी णंदं च दिण्णं च णंदणो णंदिको तधा । णपुंसके अणंदिकरं णिक्खित्ते सैण्णिकुट्टित्ते ॥ २ ॥

१ समगमारूवणि हं० त० ॥ २ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ३ ॐ ॐ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ४ वाहिय-पोरुपविद्धाऽव हं० त० विना ॥ ५ ॐ ॐ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० सि० नास्ति ॥ ६ मेव जमकोदीरणे संहारे णागं सं ३ पु० ॥ ७ णागणिस्सितं णामधेज्जं बूया । तेसामेव सव्वतोदीरणे संहारे मच्छणिस्सितं णामधेज्जं बूया । तेसामेव च उद्धं सप्र० ॥ ८ बिजाती हं० त० ॥ ९ णाममपि हं० त० ॥ १० माभिस्सितं हं० त० विना ॥ ११ तत्थ सरीरसरीर सप्र० ॥ १२ संड-विकड-खवड हं० त० ॥ १३ समाणुवद्धीयसमव हं० त० ॥ १४ सव्वस सि० ॥ १५ सण्णकुट्टित्ते हं० त० विना ॥

परिक्खमाणा विण्णेया जे जे पधदुप्पते इति पप्परूवं कोणो वेति, जाणि वऽण्णाणि वि काणि वि एतारिणाणि तल्लक्खणदोससंजुतं । तत सरीरोपद्दवजुतं, तं जधा—खंडसीस—काण—पिल्लक—कुज्ज—वामणक—कुविक—सबल—खंड—वडभो वेति, जाणि वऽण्णाणि वि एरिणाणि तं सरीरोपद्दवजुतं । पागयभासाय तत्थ पसत्थं ति विविधं, तं जधा—वण्णगुणजुतं चेव सरीरगुणजुतं चेव । तत्थ वण्ण[गुण]जुतं तिविधं, तं जधा—सुद्धे सामे कण्हे चेति । तत्थ सुद्धेसु अवदातको सेडो सेडिलो चेति पागयभासाय । सामे सामा सौमली सामकसामला चेति पागयभासाय । तत्थ कण्हे 5 कालककालिका चेति पागयभासाय । ततो तम्मि पादगोरा चेति इति वण्णणामधेज्जाणि । ततो सरीरगुणजुतं सुमुह—सुदंसण—सुरूव—जातसुगता चेति । तत्थ सरीरजमभिणिस्सियं चैयं चसित्तं बालकबालक—डहरक—मज्झिम—थविस्—थेर सभाजुत्ताणि चयो जं सरीरजं चेति ४ ।

तत्थ करणणामधेज्जं जं किंचि संपरिक्खमं । ततो परिक्खमा तिविधा—एकक्खरा दुक्खरा तिअक्खरा चेति । तत्थ एकक्खरा चतुर्विधा, तं जधा—ककार—लकार—सुकार—णिकारा चेति । तत्थ द्वक्खरो परिक्खमो दुविधो—सव्वगुरू 10 चेव पधमक्खरलघू पच्छिमक्खरगुरू । तत्थ द्वक्खरो परिक्खमो सव्वगुरू, तं जधा—तात—दत्त—दिण्ण—देव—मित्त—गुत्त—भूत—पोल—पालि—सम्म—यास—रात—घोस—भाणु—विद्धि—नंदि—नंद—माना चेति । तत्थ पधमक्खरलघवो पच्छिमेकक्खरगुरू द्वक्खरपरिक्खमा तं जधा—सच्चसिरियवलधरसहवगिरिति । अथातधा उक्खरा परिक्खमा विविधा—मज्झिमेकक्खरलघवो चेव पच्छिमेकक्खरगुरवो चेव । तत्थ उक्खरा मज्झिमेकक्खरलघवो तं जधा—उत्तरा—पालित—रक्खिय—णंदण—णंदिक—णंदका चेति । तत्थ उक्खरा पच्छिमेकक्खरगुरवो तं जधा—सहितमहका चेति इति छव्विधा । एकचत्तारीसं परिक्खमा 15 भवन्तीति ॥ छ ॥

तत्थ एवमणुगंतूणं सकणामधेज्जं पढंतेणं इदं तदिति नन्ततअक्खरेरिति । तत्थ छव्विधमक्खरं—सरा १ फरिसा २ अंतस्था ३ जोगवहा ४ अजोगवहा ५ यमा ६ चेति । तत्थ अकारादयो औकारणिधणा सरा । ककारादयो मकारणिधणा फरिसा । य—र—ल—वा इति अंतस्था । चत्तारो श—ष—स—हेति उष्माणश्चत्वारो योगवहा । तथा विसर्जनीयो उपध्मानीयो जिह्वमूलीयो अनुस्वारोऽनुनासिका चेति तत्थ पंच [अ]योगवहाः—अः इति विसर्जनीयः, ४ क इति जिह्वमूलीयः, 20 ९ प इत्युपध्मानीयः, अं इत्यनुस्वारः, ला (लाँ) इति नासिका । क ख ग घ इति यमा चत्तारि । अत्र अकारादीणि लृकारनिधनानि समाणक्खराणि अट्ठ, दस इच्चेके । तत्थ ए ऐ ओ औ इति चत्तारो संधिअक्खराणि । अकार—आकारवज्जा नामिस्सरा तानेव तु अक्खराणि । ककारादयो मकारणिधणा फरिसा । तत्थ क—च—ट—त—पा ख—छ—ठ थ—फा श—ष—सा चेति त्रयोदश अक्षोसा । ग—ज—ड—द—बा घ—झ—ढ—ध—भा ङ—ञ—ण—न—मा य—र—ल—वा हकारो य वीसति घोसवंतो, हकारेण सह एकविंशति । ङ—ञ—ण—न—मा अनुनासिका यमा चेति 25 एकादशानुनासिका । ख—छ—ठ—थ—फा द्वितीया घ—झ—ढ—ध—भा चत्तारो (चउत्था) योगवहा । यमनिधना छव्विधा । पंचसट्ठि सव्ववायोगते भवन्ति भगवानाह अरहा महापुरिस इति ।

ततो विसर्जनीयो हकारो चेति उरे विण्णेयो सर्वोष्मसवण्णे चेति । अकार—आकारा कंठे विण्णेया सवण्णे चेति । २२ ऋकार—ऋकार—कवर्गो जिह्वमूलीयो चेति हतु(नु)मूलजिह्वमूलीयो विण्णेयो सवण्णे चेति । इकार—ईकारो एकार—ऐकारो चवर्गो यकारो शकारो चेति तालुको विण्णेयो सवण्णे चेति । षकारो मज्झिमो टवर्गो चेति सिरिसि विण्णेयो 30

१ परक्खमाण वि हं० त० विना ॥ २ रूवाकाणो हं० त० ॥ ३ कुधिक हं० त० विना ॥ ४ तको सेणसेडिलो हं० त० विना ॥ ५ सासणी हं० त० ॥ ६ वयं वस्सियं वा हं० त० ॥ ७ सम्मजु हं० त० ॥ ८ सपरक्कमं हं० त० विना ॥ ९ एकक्खरा द्वक्खरा तिअक्खरा हं० त० ॥ १० चेव पधमक्खरगुरू हं० त० ॥ ११ पालयालिसम्मतास हं० त० विना ॥ १२ सव्वसिरियवलवरसह हं० त० ॥ १३ अहातहा हं० त० ॥ १४ मा तिविधा सप्र० ॥ १५ उत्तरपालित—रक्खियणंणंदिकणंदिका चेति हं० त० विना ॥ १६ अंतस्था ३ योगवहा ४ अयोग हं० त० विना ॥ १७ अंतस्था हं० त० विना ॥ १८ स्वारः इति सं ३ पु० । स्वारः ग्ला इति सि० ॥ १९ जमा हं० त० ॥ २० णि यकार सप्र० ॥ २१ तातेव अक्ख सं ३ पु० । तानेव अक्ख सि० ॥ २२ अकार सकार ऋकार कवर्गो हं० त० ॥

सवण्णे चेति । लृकारो तवर्गो सकारो लकारो चेति दंतेसु विण्णयो सवण्णे चेति । उकार ऊकार ओकार औकार पवर्ग उपध्मानीय वकारो चेति ओट्टयो विण्णयो सवण्णे चेति । दंतमूले रेफो विण्णयो सवण्णे चेति । अवत्तवितसंदिट्ठे सतरूपे लकारो विण्णयो सवण्णे चेति । तत्थ उद्धभागेसु इकार-ईकारा एकार-ऐकारा ओकार-औकारा विण्णया सवण्णा चेति । ऋजुभागेसु अवत्थितेसु अकार-आकारो विण्णयो सवण्णे चेति । संवुतेसु उद्धभागेसु अवत्थितेसु ५ ऋकारो विण्णयो सवण्णे चेति । ओकार-औकारौ अधे(धो)भागेसु विण्णया सवण्णा चेति । संधिसु संधिअक्खराणि हत्थ-पाद-गुप्फ-जाणु-जंधोरु-वसण-फिज-कुक्खि-पस्स-हत्थतल-बाहु-सहणुगंड-ओट्टसवण्णेण नाम चेति समाणेषु । मिधुणचरेसु य सत्तेसु य मलाभरणे के च व समाणं विण्णयं सवण्णे च व । उद्धभागा-धरभागेसु णामिणो विण्णया सवण्णा च व । णिक्खित्ते पडिक्कुंडिते च व सविंदुं विण्णयं सवण्णे च व । तत्थ बज्जेसु अब्भंतरेसु य णीहारेसु पकिण्णेषु एकवज्जणमसंजोगं विण्णयं सवण्णे च व । तत्थ समाणेषु मिधुणचरेसु य सत्तेसु य मलाभरणेषु य मलोपकरणेषु य 10 संजोगं विण्णयं सरिससंजोगं च व ।

- आहारेसु सरं बूया णीहारे वंजणाणि तु । णीहारा-ऽऽहारा-मिस्सेसु संपभिण्णं पवेदये ॥ १ ॥
 कवग्गमसितेसाऽऽहु यकारं वा वि णिव्वदा । पडिरूवेसु कण्हेसु जकारं तत्थ णिद्दिसे ॥ २ ॥
 डवग्गो य-रकारो श-ष-सा च व पंडरे । चित्ते लकारो विण्णयो ससंजोगं च णिद्दिसे ॥ ३ ॥
 चवग्गो य लकारो य हकारं चावि तंबसु । णीले पवग्गो विण्णयो तवग्गो वा वि पीतके ॥ ४ ॥
 15 थूले डवग्गो विण्णयो मकारो यावि मज्झिमे । उपध्मानीयो विण्णयो जिह्ममूलीय एव य ॥ ५ ॥
 कवग्गो य रकारो यं गकारो य कणीयसो । तवग्गो य लकारो यं कसेसेते पकित्तिया ॥ ६ ॥
 चवग्गो यं यकारो य वकारं वा वि जेट्ठगं । णातिथूलेसु बोद्धव्वा तथा णातिकसेसु य ॥ ७ ॥
 चतुरस्सेसु सव्वेसु सव्वचतुप्पदेसु य । चतुक्केसु य सव्वेसु चतुपह्वयणेषु य ॥ ८ ॥
 औकारं वा एकारं वा बूया वण्णेषु वण्णवि । परम्मुहे वा तिज्जं वा चकारोऽवत्थितेसु य ॥ ९ ॥
 20 हकारोऽभिमुहो णेयो औकारो सव्वणिको । आयुधेषु य सव्वेसु सव्वजोगागतेसु य ॥ १० ॥
 एकारं वा यकारं वा बूया सव्वक्खरेस्विधी । एकारमुद्धभागेसु जकारमधरेसु य ॥ ११ ॥
 बूया एकारमाहारे यत् णीहारलक्खणे । शिरो गंडे तथा णाभी जाणु-गुप्फे तथा ट्टिजा ॥ १२ ॥
 भायणेषु य सव्वेसु यं किंचि परिमंडलं । दव्वोपकरणं लोके यं वट्ठं दिस्सते कचि ॥ १३ ॥
 घकारं वा वकारं वा बूया वण्णेषु वण्णवि । वट्ठे दव्वोपकरणे यदणासी भवे कचि ॥ १४ ॥
 25 हकारो तत्थ विण्णयो धकारो चेतरेसु वि । रसदव्वो तथा दव्वे सुयपासकडेच्छुके ॥ १५ ॥
 आदरिसे वा सुयायं वा यं वट्ठस्स तु अंततो । पुप्फं फलं च यं किंचि दीहवट्ठं भवे कचि ॥ १६ ॥
 वकारं वा चकारं वा बूया सव्वक्खरेसु वि । आहारे सति मूलेसु चकारमभिणिद्दिसे ॥ १७ ॥
 णीहारेसु चकारो सा सवेसंसंगतेसु य । णक्खत्तेसु य सव्वेसु तथा णक्खत्तदेवते ॥ १८ ॥

१ हकारो सप्र० ॥ २ अवतूरियसंदिट्ठे सनरूपे हं० त० ॥ ३ सु जकारो हं० त० विना ॥ ४ विखित्ते पणिकुं हं० त० विना ॥ ५ मल्लभं हं० त० ॥ ६ मल्लोपं हं० त० ॥ ७ वंजणेण तु हं० त० विना ॥ ८ साहु हं० त० ॥ ९ चावियं वसु हं० त० ॥ १० य सकारो हं० त० विना ॥ ११ य सेसेए पं हं० त० ॥ १२ य जकारो य सकारं हं० त० ॥ १३ चउप्पहूणेषु हं० त० ॥ १४ आयवेसु हं० त० ॥ १५ एकारं कायकारं वा बूया सव्वक्खरे खिध हं० त० ॥ १६ यकारमधुरे हं० त० विना ॥ १७ णीवा(धा)रं हं० त० ॥ १८ तहा टिका हं० त० ॥ १९ वकारो हं० त० ॥ २० तथो दव्वे हं० त० विना ॥ २१ पासुकडेच्छुको हं० त० ॥ २२ सति थूलेसु हं० त० ॥ २३ सा सतेसंगतेसु हं० त० । सा वसंगतेसु सं ३ पु० ॥

जिब्भगे दंतपज्जं च पैज्जजत्तुणिसेवणे । केसंते कण्णसकुल्लं कण्णपालीय य तथा ॥ १९ ॥
 अवत्तं वा वि यं वट्ठं अट्ठदंताण तं चयं । णमोक्कते वंदिते वा पूयितुल्लोकिते तथा ॥ २० ॥
 चंदणक्खत्तघोसे य डकारमभिणिहिसे । भूसंघाते य णिण्णे य गत्तेयमविणामिते ॥ २१ ॥
 विनामितायं जिब्भायं जं किंचि विणतं भवे । विणतेसु य सव्वेसु दव्वोपकरणेसु य ॥ २२ ॥
 चैपसंथाणरूपेसु हकारमभिणिहिसे । वत्थिसीसे तिके चेव चिबुके सभुमन्तरे ॥ २३ ॥ 5
 तिकुज्जं वा वि जं किंचि पैकारं तत्थ णिहिसे । कुंचितेसु य केसेसु मंसु—लोमे य कुंचिते ॥ २४ ॥
 कुंडिलेसु य दव्वेसु सव्ववलीगतेसु य । आकुंचितासंगुलीसु गतेसाऽऽकुंचितेसु य ॥ २५ ॥
 आकुंचितायं जिब्भायं जं किंचि कुंडलं भवे । आविट्ठे चेद्विते चेव भामिते सव्वसप्पसु ॥ २६ ॥
 ठंकारं वा हकारं वा बूया सव्वक्खरेसु वि । विधत्तेसु ठंकारो स (सा) हकारे संवुत्तेसु य ॥ २७ ॥
 पंडरेसु ठंकारो सा चमुत्तेसु णिव्वदा । आकुंचिताणं गत्ताणं जं किंचि बाहिरं भवे ॥ २८ ॥ 10
 कुंडिलं नाम जं किंचि नयपाकुंचितं भवे । छिन्ने भिन्ने य भग्गे य कुट्टिते वा वि णिव्वरा ॥ २९ ॥
 डंकारं वा लकारं वा बूया सव्वक्खरेसु वि । तंतवज्जेसु सव्वेसु दकारमभिणिहिसे ॥ ३० ॥
 पंडरेसु दकारो स्सा संधिसुत्तेसु णिव्वदा । पैपुत्ते दहुपिलकाय वणे खते तिलकालके ॥ ३१ ॥
 चम्मक्खीले तद्दोसे य पलिते य तथा पुणो । पुरीसमुत्ते सदे य असीवे कण्णगूधके ॥ ३२ ॥
 पूतिके रुधिचीके य णिदुत्ते खुविए तथा । विकूणिते कूविते य रुण्ण विक्कंदिते तथा ॥ ३३ ॥ 15
 कासिते जंभिते चेव वेविते परिदेविते । पयलाइते पसुत्ते य पतिते विप्पलोद्विते ॥ ३४ ॥
 णिव्वाहिते णिस्ससिते रोगे संधाणिदंसणे । उवहुत्ते फले पुप्फे पावन्ने पाण—भोयणे ॥ ३५ ॥
 उवहुत्तेसु सव्वेसु हकारमभिणिहिसे । ऋजुकेसु उज्जुलेहासु रकारमभिणिहिसे ॥ ३६ ॥
 वालेसु सव्वबीयेसु जकारमभिणिहिसे । णामप्पयोगे सव्वत्त मुदितेसु य सव्वसो ॥ ३७ ॥
 [.....] सत्थिकाकाररूपेसु मकारमभिणिहिसे ॥ ३८ ॥ 20
 उत्ताणेसु य वत्तेसु सयणेसाऽऽसणेसु य । उक्कजे सयणे वत्थे दव्वोपकरणे तथा ॥ ३९ ॥
 धं—जकारो दढहुतं तकारो पंदमा तथा । उद्धमुहे रकारं वा मकारं वा वि मज्झिमं ॥ ४० ॥
 तिज्जाणतेसु गतेसु सयणेसाऽऽसणेसु य । तिज्जंभागासणे वत्थे दव्वोपकरणे तथा ॥ ४१ ॥
 दं—धकारो यकारो य हाऊणापणमेव य । लघवो पंचवण्णा जे गुरवो जे य कित्तिता ॥ ४२ ॥
 लघवो यावि जे वण्णा सेसा वक्खामि गौरवं । यमा य योगवाहा य संयोगा यावि केवला ॥ ४३ ॥ 25
 पंच वायत्तैणिद्धं ति पुव्वरूवगुरु भवे । द्वुवज्जणपच्चवरो सतवज्जणमुत्तमं ॥ ४४ ॥
 संजोगकद्धणामस्स संजोगेसु य छव्विधं । गत्ताणामादिमूलेसु पढमं तत्थ णिहिसे ॥ ४५ ॥
 पढमेसु य सव्वेसु दव्वोपकरणेसु य । गत्ताणामद्धदेसेसु ततियं तत्थ णिहिसे ॥ ४६ ॥

१ पणुजंत्तुणिं हं० त० ॥ २ यं बद्धं अट्ठदंताण संचयं हं० त० ॥ ३ गत्तेयमिति नामिए हं० त० विना ॥
 ४ विणितं हं० त० विना ॥ ५ चयसंथाणरूपेसु दकारं सि० ॥ ६ एकारं हं० त० ॥ ७ ले सव्वदव्वेसु हं० त०
 विना ॥ ८ कुंडिलं हं० त० सि० ॥ ९ टकारं वा हुंकारं हं० त० ॥ १० टकारो हं० त० ॥ ११ टकारो सांचसुएसु
 णिच्छदा हं० त० ॥ १२ कुंचिए भवे हं० त० ॥ १३ णिच्छदा हं० त० ॥ १४ डंकारं हं० त० विना ॥ १५ तववत्थेसु
 हं० त० ॥ १६ जपुव्वे दहु विलकाय चरणे खते हं० त० ॥ १७ सपुरी हं० त० ॥ १८ असीवे णकगू हं० त० ॥
 १९ सोगे हं० त० ॥ २० सव्वं च हं० त० ॥ २१ थरुहकारो हं० त० ॥ २२ पढमा तथा । उद्धमुद्धेरकारं हं० त० ॥
 २३ दवकारो जकारो य हं० त० ॥ २४ जमा य जोगवण्णा य संजोगा हं० त० ॥ २५ तणिद्धं ति हं० त० ॥
 २६ द्वुवज्जणं हं० त० ॥ २७ संजोगं कद्धणामस्स हं० त० विना ॥ २८ गत्ताणमद्धदेसेसु हं० त० ॥

- ततियेसु य सव्वेसु दव्वाणं मज्झिमेसु य । गत्ताणामंतदेसेसु जे तथा तत्थ णिद्दिसे ॥ ४७ ॥
 पच्छिमेसु य सव्वेसु दव्वोवकरणेसु य । आदि-मज्झाधिगाढेसु बितियं तत्थ णिद्दिसे ॥ ४८ ॥
 मज्झिमाणं विमरिसेसु चउत्थं तत्थ णिद्दिसे । यदक्खरं णामधेज्जं पुत्था समुदीरितं ॥ ४९ ॥
 तण्णक्खरं नामधेज्जं भागाभागं पवेदये । थीणामधेज्जं थीणामे तुल्लातुल्लं पवेदये ॥ ५० ॥
 ५ पुतं णामगते णत्थि गेयेण णंतगायणं । अधीयतां सामवेदं विप्पाणं तप्पुयं भवे ॥ ५१ ॥
 सव्वेसेतेसु रूवेसु पंडरं अभिणिद्दिसे । पुरत्थिमेसु गत्तेसु सद्द-रूवे पुरत्थिमे ॥ ५२ ॥
 दक्खिणेसु य गत्तेसु दक्खिणं दारमादिसे । दक्खिणेसु य सव्वेसु पीते रूवे य दक्खिणे ॥ ५३ ॥
 सव्वकण्हेसु रूवेसु पच्छिमं दारमादिसे । पच्छिमेसु य सद्देसु सद्दे रूवे य पच्छिमे ॥ ५४ ॥
 सव्वमेतेसु गत्तेसु उत्तरं दारमादिसे । उत्तरेसु य गत्तेसु सद्दे रूवे य वामतो ॥ ५५ ॥
 १० णासावंसे भुमंगुट्टे ओट्टे गंडे सपोरिसे । अंगुलीसु य सव्वासु णंतं भागे पवेदये ॥ ५६ ॥
 णंतं चरेसु पक्खीसु सव्वचतुप्पदेसु य । णंतं चरेसु सव्वेसु णंतभागं पवेदये ॥ ५७ ॥
 हत्थयो पादयो चेव जंघयोरूथो तथा । गोवायं वा वि बद्धो च पुव्वं भागं पवेदये ॥ ५८ ॥
 मज्झिमेसु य पक्खीसु सव्वचतुप्पदेसु य । मज्झिमेसु य सव्वेसु पैट्टिवापुदरे तथा ॥ ५९ ॥
 कडं पस्सोदरं वा वि कुच्छीसु सिरसी तथा । मुहे य दुपधोभागे णक्खत्तं अभिणिद्दिसे ॥ ६० ॥
 १५ कायवंतेसु पक्खीसु सव्वचतुप्पदेसु य । कायवंतेसु सव्वेसु महाखेत्तं पवेदये ॥ ६१ ॥
 केस-मंसु-णहग्गेसु तणूरु-गहणेसु य । डहरे चले थावरे वा अप्पखेत्तं पवेदये ॥ ६२ ॥
 सव्वबीयगते वा वि तथा कीड-किविल्लगे । अणूसु सव्वसुहुमेसु अप्पखेत्तं पवेदये ॥ ६३ ॥
 दारुणेसु य सव्वेसु सव्वपक्खि-चतुप्पदे । सव्वेसु यावि दुग्गेसु दारुणंगाणि णिद्दिसे ॥ ६४ ॥
 चलेसु चलसंधीसु णिद्दिसे थावरेसु य । सव्वेसु थावरणे य थावरेसु य णिद्दिसे ॥ ६५ ॥
 २० आसिलेखा तथा मेत्तं बंभेयं विस्सदेवतं । सतभिसावज्जमेतेसु वंजणंताणि णिद्दिसे ॥ ६६ ॥
 अद्दा पूसो य सातो य महा मूलं च पंचमं । ठक्कुरं सव्वगुरुकं पढमेगलधुं तथा ॥ ६७ ॥
 सद्धाना तधऽस्सिलेसा संसमत्ते [१.....] । कित्तिका रोहिणि चेव फग्गुणी रेवती तथा ॥ ६८ ॥

॥ त्वक्षरं मज्झिमं ॥ छ ॥

- द्वितीये गुरुं णेयं पयापति सतकतो । [२.....] एव गुरुं णेयं महीवूधो ॥ ६९ ॥
 २५ [...] भिदेवमित्तुत्तघोसगिरिविधि तथा । परिक्रमा से देवतेते विण्णेया कण्हसंभवा ॥ ७० ॥
 सम्मसेण करति यो रक्खितो * रोजविगहा * । रतिणेयो [य] सूरु य सहो य सहितसिरि ॥ ७१ ॥
 मित्तभागाचलो भूति भाणु मित्त महा तथा । पालितो पालिपालो य महितो महिको तथा ॥ ७२ ॥
 नीलेसु पतिरूवेसु बारसेते परिक्रमा । पच्चक्खरगतं [चेव] लकारो ताम्रसंभवो ॥ ७३ ॥
 ततो दत्तो य दिण्णो य णंदणो णंदिको धरो । देवदासो य पीतेसु णिकारो णंदको तथा ॥ ७४ ॥
 ३० द्वंद्वे गाते तथा अंधे तथा जमलभूसणे । परिक्रमा ससंजोगा शंतमिश्राश्रवं तथा ॥ ७५ ॥

१ ततियेसु इत्ययं श्लोकः सं ३ पु० प्रतिषु द्विवृत्तो दृश्यते, मया तु हं० त० सि० प्रतीराश्रित्य सकृदेव आहतः ॥
 २ दव्वोवकरणेसु य सि० ॥ ३ ज्झाविगारेसु हं० त० ॥ ४ बह्वी च पुच्छं भागं हं० त० विना ॥ ५ पैट्टिवापु हं० त० ॥
 ६ थावरेने सं ३ पु० ॥ ७ उखरं हं० त० ॥ ८ सद्धानायवस्सिलेसा संसामते हं० त० ॥ ९ उक्खरं हं० त० ॥ १० सयक्काए
 हं० त० ॥ ११ [.....] ध गुरुं हं० त० विना ॥ १२ सम्मसेण हं० त० विना । १३ * * एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः सि०
 एव वर्तते ॥ १४ रतिचेतिणेयो सूरु हं० त० ॥ १५ भागो वलो तूतिभाउमित्तं हं० त० ॥ १६ द्वादसेते हं० त० विना ॥
 १७ एकक्खरं हं० त० सि० ॥ १८ चरो हं० त० ॥ १९ अंचे तथा हं० त० ॥ २० त्रात्तमित्ताश्रं हं० त० ॥

संत्यो सत्थोपजीवीसु परक्कमकधासु य । ताओ गुतो य सेणो य रक्खितो य परिक्रमा ॥ ७६ ॥
 संरोधेसु य सव्वेसु तथा बाहुपरिगहे । परिक्रवेसु सव्वेसु संबाधे बंधणेसु य ॥ ७७ ॥
 बलवत्ता तथा गुत्तो पालि पालोयणी तथा । पालितो रक्खितो चेव विन्नेया गुत्त-रक्खिते ॥ ७८ ॥
 णंदी णंदो बल्लो मित्तो णंदणो णंदको सिरि । सामेसु मुदिते चेव महव्वमहकारिणि ॥ ७९ ॥
 हत्थयो भासणे चेव सव्वदाणपरिगहे । दत्तो दिण्णो य विण्णेया पासंडेसु य सव्वसो ॥ ८० ॥ 5
 उत्तमे सक्कतो चेव वंदिए पूतिए तथा । देवो भूति जसो धोसो भाणू णेया महासिरि ॥ ८१ ॥
 महितो यावि विण्णेयो सिरिमुहविभूसणे । दढे धातुगते यावि गिरि णेयो धरोऽचलो ॥ ८२ ॥
 पाद-जंघागते णिच्चं पादुकोपाहणे तथा । पेस्सोवकरणे यावि दासं बूया परिक्रमे ॥ ८३ ॥
 आहारे वोदके या[वि] देव भूति बल्लो यसो । भाणू वद्धी य सम्मं च सवपीतपरिक्रमा ॥ ८४ ॥
 हितये च मित्तवगे य गोत्तणामे य सव्वसो । सेसं जोगेसु सव्वेसु मित्तं बूया परिक्रमं ॥ ८५ ॥ 10
 णंदी णंदो य दिण्णो य णंदणो णंदको तथा । णपुंसकेसु णंदिकरं णिक्खिते सण्णिकुट्टिते ॥ ८६ ॥
 णीहारेसु य सव्वेसु बाहिरेसु चलेसु य । णिज्जीवेसु य सव्वेसु णामं णिज्जीवमादिसे ॥ ८७ ॥
 आहारेसु य सव्वेसु दढेसऽब्भंतरेसु य । गोणरूवेसु सव्वेसु गोणणामं पवेदये ॥ ८८ ॥
 णीहारेसु य सव्वेसु बज्जेसु य चलेसु य । आभिप्पायिकणामेसु आभिप्पायिकमादिसे ॥ ८९ ॥
 अभिहारेसु सव्वेसु दढेसऽब्भंतरेसु य । समणामेसु सव्वेसु णामं बूया समक्खरं ॥ ९० ॥ 15
 समणामेसु सव्वेसु जमलाभरणेसु य । द्वंद्वे दव्वोपकरणे य समं जोगं पवेदये ॥ ९१ ॥
 एक्केकेसु य गतेसु एक्काभरणके चले । वंजणेसु य सव्वेसु वंजणंतं पवेदये ॥ ९२ ॥
 णीहार-ऽऽहार-मीसेसु बज्झ-ऽब्भंतरमिस्सिते । उम्मत्तेसु य सव्वेसु उम्मत्तं तत्थ णिदिसे ॥ ९३ ॥
 आहारेसु य सव्वेसु दढेसऽब्भंतरेसु य । पुण्णामेसु य सव्वेसु पुण्णामं तत्थ णिदिसे ॥ ९४ ॥
 णीहार-मिस्सेसु तथा बज्जेसऽब्भंतरेसु य । णपुंसकेसु सव्वेसु णामं बूया णपुंसकं ॥ ९५ ॥ 20
 एक्केकेसु य सव्वेसु एकोपकरणेसु य । एक्कभस्से य सव्वम्मि एक्कभस्सं पवेदये ॥ ९६ ॥
 समाणेसु य सव्वेसु जमलाभरणे तथा । तथा बिवयणे यावि बिभस्समभिणिदिसे ॥ ९७ ॥
 उक्खरप्पभितीगणेसु बहूपकरणेसु य । बहुभस्सेसु सव्वेसु बहुभस्सं पवेदये ॥ ९८ ॥
 पच्छिमेसु य गतेसु सद्-रूवे य पच्छिमे । अतीतवयणे यावि अतीतवयणं भवे ॥ ९९ ॥
 वाम-दक्खिणगतेसु सद्दे रूवे तधेव य । संपतेसु य सव्वेसु वत्तमाणं पवेदये ॥ १०० ॥ 25
 पुरत्थिमेसु गतेसु सद्दे रूवे पुरत्थिमे । अणागते य वयणे वक्कं बूया अणागतं ॥ १०१ ॥
 उवहुतेसु गतेसु सद्दे रूवे उवहुते । सोवसग्गे य सव्वम्मि सोवसगं पवेदये ॥ १०२ ॥
 णिम्मज्जिते णिह्मिहिते छिण्णे भिण्णे णिकूजिते । णिपातेसु य सव्वेसु णिपातमभिणिदिसे ॥ १०३ ॥
 दढामासेसु सव्वेसु थावरेसु य सव्वसो । सव्वनामगए चेव बूया नामगयं विसुं ॥ १०४ ॥
 णिमज्जिया पमज्जिया य संधिमद्धिभिमज्जिए । आखाए वा वि सव्वत्त आखातमभिणिदिसे ॥ १०५ ॥ 30
 उद्धभागेसु सव्वेसु सज्जभंगेसु सव्वसो । उद्धभूए य वयणे सव्वमेवाभिणिदिसे ॥ १०६ ॥
 अहोभागेसु गतेसु कुदिएसु य सव्वसो । विवरीते य वयणे वितथं तत्थ णिदिसे ॥ १०७ ॥

१ सत्थो सत्थो^० हं० त० ॥ २ तत्तो गत्तो हं० त० विना ॥ ३ परिखात्तेसु हं० । परिक्रवेत्तेसु त० ॥ ४ चलवत्ता
 हं० त० ॥ ५ मुत्त^० हं० त० ॥ ६ महिणाया वि वण्णेया सिरिमुहविभूसणा । दढे धातुमए यावि गिरे णेयो वरोऽचलो
 हं० त० ॥ ७ नंदिणो नंदिको हं० त० ॥ ८ णीहारीसु हं० त० विना ॥ ९ अक्खर^० हं० त० ॥ १० हस्तचिहान्तर्गतः
 श्लोकसन्दर्भः हं० त० एव वर्तते ॥

उद्धाधस्-विमीसेसु कुडिला-ऽकुडिलेसु य । भूता-ऽभूते य वयणे ब्रूया सव्वाणितं गिरं ॥ १०८ ॥

गत्ताणं छिद्देसेहि देव्वणामंतरेसु य । अवत्तेसु य सदेसु असव्वणतमादिसे ॥ १०९ ॥

उद्धभागेषु खत्तेसु चंदणक्खत्तसंगहे । अंतरिक्खे य सव्वत्त अंतरिक्खं पवेदये ॥ ११० ॥

आपुण्येसु गत्तेसु जलेयेसु य सव्वसो । सव्वमत्थगते यावि वारिजं तत्थ णिद्दिसे ॥ १११ ॥

5 दढामासेसु सव्वेसु थावरेसु य णिच्चसो । सव्वचातुप्पदे यावि पत्थिवं णाममादिसे ॥ ११२ ॥

चलामासेसु सव्वेसु लालायं णिग्गमेसु य । सज्जीवेसु य सव्वेसु पाणजं णाममादिसे ॥ ११३ ॥

संगहे एकसण्णा । तत्थ एकक्खरणामधेज्जाणि-श्रीः श्रिया स्त्रीः स्त्रियाः वागिति वाचा णौरिति णावा खमिति आकासं, जाणि वऽण्णाणि एवंविधाणि णामधेज्जाणि तदेकक्खरं णाम । तत्थ प्लवा चउव्विधा-द्वक्खरा त्र्यक्खरा चतुरक्खरा पंचक्खरा । तत्र द्वक्खरा प्लवा द्विविधा-सव्वगुरु चेव पढमक्खरलघवो चेव पच्छिमक्खरगुरुवो ८० चेति । 10 तत्थ द्वक्खरगुरुवो ८० प्लवा णक्खत्तेसु तं जधा-अद्वा पूसो हत्थो चित्ता साती जेद्वा मूलो मघा इति, तत्थ णक्खत्ते देवतेसु चंदो रुद्धो सप्पो अज्जो तद्दो वायू मित्ता इंदो तोयं विस्से ऋजा बंभा विण्हू पुस्सा इति णक्खत्तदेवतेसु, कण्हो रामो संबो पज्जुण्णो भाणु इति दसारणिस्सितेसु, लक्ष्मी भूती वेदी नदी इति थीणामधेज्जेसु । तत्थ परिक्रमेसु त्रात-दत्त-देव-मित्त-गुत्त-पाल-पालित-सम्म-सेण-दास-रात-घोस-भाग-वृद्धिमात्रा वेति परिक्रमेस्विति, अनेन परिक्रमेण सव्वत्थाणुगंतव्वं भवतीति । तत्थ पढमक्खरलघवो पच्छिमक्खरगुरुवो सव्वगुरुवो चेति । तत्थ पच्छिमक्खरलघवो 15 त्र्यक्षरलघवो णक्खत्तेसु-अभिजि सवणो भरणी अदिती सविता णिरिती वरुण इति, णक्खत्तदेवतेसु सहितमहितरतिका चेति परिक्रमेसु इत्येतेन प्लवेनानुगन्तव्वं भवति । तत्थ मद्धक्खरलघवो प्लवा-कत्तिका रोहिणी आसिका मूसिका वाणिजो मगधा मधुरा प्रातिका चेति णक्खत्तेसु, बे फग्गुणीयो रेवती अस्सयाविति णक्खत्तेसु, अज्जमा अश्विनाविति णक्खत्तदेवतेसु इति अनेन प्लवेनानुगन्तव्वं भवति । तत्थ पढमक्खरलघवो प्लवा-विसाहा आसाहा दुवे धणिद्वा इति णक्खत्तेसु, ईदगिरीति णक्खत्तदेवतेस्विति अनेन प्लवेनानुगन्तव्वं भवति । तत्थ चतुरक्खरप्लवा सव्वगुरुवो तृतीयलघवो 20 प्रथमलघवो प्रथमद्वितीयलघवो । तत्थ सव्वगुरुवो तं जधा-रोहत्रातो पुस्सत्रातो फग्गुत्रातो हत्थत्रातो अस्सत्रातो इति देवते, अपच्छिमगुरुवो-ऋघसिल श्रवणिल पृथिविल इति । असप्लव ससित्रात पितृत्रात भवत्रात वसुत्रात अजुत्रात यमत्रात इति प्रथमलघुरिति । शिवदत्त पितृदत्त भवदत्त वसुदत्त अजुदत्त यमदत्त इति बिपच्छिमे गुरुणि पुणव्वसु णक्खत्तेसु । प्रजापति बृहस्पति शतक्रतुरिति देवतेसु इति, अनेन प्लवेनानुगन्तव्वं भवति । सैथानेन संथानं प्रमाणेन प्रमाणं परिक्रमेण परिक्रमं प्लवेन प्लवं सव्वत्थाणुगंतव्वं भवति ।

25 इति अक्खरणाममिदं सव्वं णामविणिच्छयं । सभस्सं जनयं लक्ष्मी यसो य ^{१५} विलोविद्धारिति ॥ ११४ ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय णामज्झायो छव्वीसतिमो सम्मतो ॥ २६ ॥ छ ॥

१ देव्वाणामं हं० त० ॥ २ द्वक्खरा त्र्यक्खरा चतुरक्खरा पंचक्खरा । तत्र द्वक्खरा हं० त० ॥ ३ ८० ८० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ४ 'सु भ्रात' हं० त० ॥ ५ सव्वत्थोऽणुं सप्प ॥ ६ 'क्खरलघवो चेति' हं० त० ॥ ७ चउक्खर' हं० त० ॥ ८ अपत्थियगुरुवो' हं० त० ॥ ९ ऋषितिल घुरिसिल श्रव' हं० त० ॥ १० अजत्रात हं० त० ॥ ११ अजदत्त हं० त० ॥ १२ पूतक्रतु' हं० त० विना ॥ १३ संघातेन संघातं प्रमाणेन सि० ॥ १४ विष्णुलो' हं० त० विना ॥ १५ णामाज्झा' हं० त० ॥

[सत्तावीसइमो ठाणज्झायो]

ॐ णेमो महापुरिसवद्धमाणस्स । ॐ अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय ठाणं णामज्झायं, तं खलु भो ! तमणुवक्खस्सामो । तं जधा—तत्थ उद्धभागेसु सिरोमुहमासे सव्वउद्धभागे पडिरूवे चैव रायाणं वा रायकम्मिकं वा अमच्चं वा अमच्चकम्मिकं वा बूया । अक्खीसु णायकं बूया । कण्णेषु आसणत्थं बूया । दंतेसु भांडागारिकं बूया । णासायं अब्भागारिकं बूया । जिब्भायं आहारपडिरूवगते य महाणसिकं बूया । थणेषु गयाधियक्खं 5 बूया । पुणरवि य णासायं आहारेसु य मज्जघरियं बूया । णिद्धेसु पाणियघरियं बूया णावाधियक्खं वा बूया । अग्गेयेसु सुवण्णाधियक्खं बूया । सव्वचतुप्पयपडिरूवगते य हत्थिअधिगतं वा बूया अस्सअधिगतं वा योग्गायरियं वा गोवयक्खं वा बूया । सँवुतेसु पडिहारं बूया । थीणामेसु अब्भागारिणं गणिकखंसं वा बूया । पुण्णामेसु बलगणकं वा णायकं वा बूया । णपुंसकेसु वरिसधरं बूया । दढेसु वत्थुपारिसदं वा आरामपालं वा पच्चंतपालं वा बूया । चलेसु दूतं वा संधिपालं वा बूया । अब्भंतरेसु अब्भागारिकं बूया सीसारक्खं वा बूया । बाहिरब्भंतरेसु पतिआरक्खं बूया । 10 आहारेसु सुँकसालियं बूया । णीहारेसु ॐ दिँनायेरेसु ॐ रज्जकं वा पैधवावतं वा बूया । उवग्गहणेसु आडविकं बूया । परिमंडलेसु णगराधियक्खं बूया । मतेसु सुसाणवावतं वा सूणावावतं वा बूया । संरोधबंधणेसु चारकपालं बूया । पुण्णेषु महाणसिकं वा फलाधियक्खं वा बूया । मुदितेसु पुप्फाधियक्खं बूया । जण्णेषु पुरोहितं बूया । तिक्खेसु आयुधाकारिकं बूया । पुधूसु सेणापतिं बूया । अणूसु कोट्टाकारिकं बूया ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय० ठाणज्झायो नाम सत्तावीसतिमो सम्पत्तो ॥ २७ ॥ छ ॥ 15

[अट्टावीसइमो कम्मजोणिअज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय कम्मजोणीणामज्झायो । तं जधा—तत्थ अत्थि कम्मं ॐ णत्थि कम्मं ॐ ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे अत्थि कम्मं ति बूया । तत्थ बज्झामासे चलामासे लुक्खामासे तुच्छामासे णत्थि कम्मं ति बूया । तत्थ कम्मं पंचविधं पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तं जधा—रायपोरिसं ववहारे कसिगोरक्खं कारुककम्मं भँतिकम्मं पंचमं भवति । तत्थ उत्तमेसु इस्सरितेसु 20 य रायपोरिसं बूया । गहणोपगहणेसु सव्वगो—बलिवद्गते य कसिगोरक्खं बूया । तत्थ महापरिगहेसु सव्वदाणपतिगहणेसु य वाणियककम्मं बूया । तत्थ चलामासेसु सव्वकारुकोपकरणपरिगहेसु य कारुककम्मं बूया । तत्थ सव्वबज्जेसु सव्वअंतेसु य सव्ववेट्टिककम्मकरपयोगे य भँतिकम्मकारकं बूया । तत्थ रायपोरिसे पुव्वमाधारिते उत्तमेसु य रायाणं वा रायमच्चं वा बूया । सव्वराजोपकरणे चैव तत्थ उपोत्तमेसु अमच्चं वा अस्सवारिकं बूया । बाहिरेसु सव्वचतुप्पदगते य आसवारियं बूया । अक्खीसु णायकं बूया । अब्भंतरेसु अब्भंतरावचरं बूया । थीणामेसु अब्भाकारियं बूया । 25 सँवुतेसु भांडागारियं बूया । सीसकोपकरणे सीसारक्खं बूया । चलेसु आहारणीहारेसु य पडिहारकं बूया । उदरे कुक्खिम्मि मुहे गीवायं सव्वआहारगते य सूतं वा महाणसिकं वा बूया । आपुण्येसु सव्वपाणगते य मज्जघरियं बूया पाणीयघरितं वा बूया । सव्वचतुक्केसु चतुरस्सेसु हत्थाधियक्खं वा महामत्तं वा हत्थिमेंठं वा अस्साधियक्खं वा अस्सारोधं वा

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २ संजुत्तेसु हं० त० ॥ ३ सुकआलिग हं० त० ॥ ४ ॐ ॐ ॐ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ५ पचवारयं वा हं० त० ॥ ६ ॐ ॐ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ७ माहारयियव्वं हं० त० । माधारेतव्वं सि० ॥ ८ माहारयियव्वं हं० त० ॥ ९ भवति कारुककम्मं पंचमं सप्र० ॥ १० परिगं हं० त० ॥ ११ भवतिकम्मं हं० त० विना ॥ १२ संथुएसु हं० त० ॥

- अस्सबंधकं वा छागलिकं वा गोपालं वा महिसीपालं वा उट्टपालं वा बूया, मगलुद्धगं वा ओरब्भिकं वा अहिनिपं वा बूया । तत्थ रायपोरिसगताणि अस्साधियक्खो वा ८५ हत्थाधियक्खो वा ८० हत्थारोहो वा हत्थिमहामत्तो वा गोसंखी वा गजाधिपतिं ति वा । तत्थ सुक्केसु सव्वहिरण्णकारेसु चैव भांडागारिकं वा कोसरक्खं वा बूया । महापरिगहेसु सव्वाधिकतं बूया । अंगुलीसु सव्वलिपिगते चैव लेखकं बूया । जिब्भाय हितये सव्वबुद्धिरमणेसु य गणकं बूया । ५ सव्वसत्थगते सव्वदेवगते य पुरोहितं बूया । णिद्धेसु चक्खूसु य संवच्छरं बूया । अतिअसिणिग्गमेसु दाराधिगतं वा दारपालं वा बूया । ८ पुण्णामेसु वलगणकं बूया ९ सेणापतिं वा बूया । थीणामेसु अब्भागारिकं वा गणिकाखंसकं वा बूया । णपुंसकेसु वरिसधरं बूया । ददेसु वत्थुसु वत्थाधिगतं बूया णगरगुत्तियं वा बूया । चलेसु दूतं वा जइणकं वा बूया पेसणकारकं वा पतिहारकं वा बूया । णिद्धेसु तरपअट्टं वा णावाधिगतं वा तित्थपालं वा पाणियधरियं वा णाणधरियं वा सुराधरितं वा बूया । लुक्खेसु कट्ठाधिकतं वा तणाधिगतं वा बीतपालं वा बूया । अब्भितरेसु ओपेसेज्जिकं १० वा सीसारक्खं वा बूया । बाहिरेसु आरामाधिगतं बूआ(या) । बाहिरब्भंतरेसु णगररक्खं वा अब्भागारियं वा बूया । कण्हेसु असोकवणिकापालं बूया वाणाधिगतं वा । सामेसु ओभरणाधिगतं बूया । तत्थ ववहारिणं आपुणेयेसु उदकवड्डकिं वा मच्छबंधं वा नाविकं वा बाहुविकं वा बूया । तंबेसु सुवण्णकारं अलत्तककारकं वा रत्तरज्जकं वा देवडं उण्णवाणियं सुत्तवाणियं जतुकारं चित्तकारं चित्तवाजी वेति । सुक्केसु तट्टकारं सुद्धरज्जकं वा बूया । खंडिते छिण्णे भिण्णे सुवण्णकारे लोहकारे सीतपेट्टके जतुकारे कुंभकारा य विण्णेया । ददेसु मणिकारं संखकारं च विन्नेयं । धूलेसु कंसकार-पट्टकार- १५ दुस्सिक-रयक-कोसेज्ज-वाग-देवडसा(मा)ति विण्णेया । धूलेसु ओरब्भिक-महिसघातका विण्णेया । दीहेसु उस्सणिकामतं छत्तकारक-वत्थोपजीविका विण्णेया । हस्सेसु रसेसु फलवाणिय-मूलवाणिय-धण्णवाणिया विण्णेया । सव्वआहगते ओदनिक-मंस-कम्मासवाणिज्ज-तप्पण-लोणवाणिज्जा-५५पूपिक-खज्जकारका विण्णेया । तत्थ सव्वगहणेसु पण्णिक-फलवाणियका विण्णेया । उपगगहणेसु सिंगारवाणिया विण्णेया । सिरसि राया वा अमच्चो वा अस्सवारिको वा छत्तधारको वा छत्तकारको वा सीसारक्खो वा पसाधको वा विण्णेया । णिडाले हत्थिखंसं वा अस्सखंसं व ति बूया । २० अच्छीसु अग्गिउपजीवि वा आहितग्गि वा बूया । कण्णेसु सुवण्णकारो वा कुसीलको (वो)[वा] रंगवचरो वा विण्णेया । णासायं गंधिको मालाकारो चुण्णिकारो वा, जिब्भायं सूतमागधं पुस्समाणवं पुरोहितं धम्मट्ठं महामंतं गणकं गंधिकं गायकं दपकारं बहुस्सयं वा, गीवायं मणिकारं सुवण्णकारं कोट्टाकं वड्डकिं वा बूया । बाहूसु वेत्थपाढकं वत्थुवापतिकं मंतिकं भंडवापतं तित्थवापतं आरामवावतं वा बूया । तत्थ उरे अधिगतं वा रधकारं वा दारुकआधिकारिका विण्णेया । उदरे महाणसिकं वा सूतं वा ओदनिकं वा बूया । कडीयं सामेलक्खं वा गणिकाखंसं वा बूया । ऊरुसु हत्थारोहं वा २५ अस्सारोहं वा बूया । जंघासु दूतं पेस्सं वा बूया । खुलुकेसु बंधं वा बंधनागारियं वा बूया । पादेसु चोरलोपहारा विण्णेया । सव्वमूलजोणीगते मूलक्खाणक-मूलिक-मूलकम्मा विण्णेया । तिक्खेसु सव्वसत्थका विण्णेया । सारवत्तेसु हेरणिक्क-सुवण्णिक-चंदण-दुस्सिक-संजुकारका देवडा वेति विण्णेया । बाहिरेसु कम्मावयणेसु तिण्हेसु सव्वचतुप्पयगतेसु सव्वभूमीगते य गोवज्झभतिकारका य विन्नेया । चलेसु य आसारेसु य आविद्धेसु य ओयकार-ओड्डा य विण्णेया ।

१ लुद्धगधाउत्तिकं वा हं० त० ॥ २ ८५ ८० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ३ कोसारक्खं सि० ॥ ४ अब्भाहियजे सव्वं हं० त० ॥ ५ अभिअगणिग्गमेसु अतिमणिग्गमेसु दारा हं० त० ॥ ६ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ७ सु हयं वा जणइकं हं० त० ॥ ८ परिहारखंधी बूया हं० त० ॥ ९ णाविगयं वा हं० त० ॥ १० बीयपालं हं० त० ॥ ११ सु अपेसे हं० त० ॥ १२ आकरणा सं ३ पु० ॥ १३ वड्डकिं हं० त० ॥ १४ नाधिकं वा बाहुधिकं वा सप्र० ॥ १५ रज्जुकं हं० त० विना ॥ १६ चुण्णवाणियं हं० त० विना ॥ १७ जीवेसेसु ति सुक्केसु हं० त० ॥ १८ सुज्जरज्जकं हं० त० विना ॥ १९ उस्साणिकमेतं उत्तं हं० त० विना ॥ २० आहारगते सि० ॥ २१ हत्थिसंखं वा अस्ससंखं वा हं० त० ॥ २२ चुण्णिको वा हं० त० विना ॥ २३ गायिकं हं० त० ॥ २४ बहुसुयं वा हं० त० ॥ २५ वत्थुपा हं० त० ॥ २६ सामेनरकं वा हं० त० ॥ २७ सु हयं पेस्सं हं० त० ॥ २८ नखेसु सव्वं हं० त० ॥ २९ सु विण्हे हं० त० ॥ ३० असारेसु य आविद्धेसु अ उयका उड्डा य हं० त० ॥

णिण्णेषु मूलखाणक—कुंभकारिक—इडुकार—बालेपतुंद—सुतवत्त—कंसकारक—चित्तकारका विण्णेषा । ओकिनेसु रूवपक्खर—फलकारका विण्णेषा । सव्ववद्धमाणेषु सीकाहारक—मडुहारका विण्णेषा । तत्थ अप्पणा पहेतेसु कोसज्जवायका दिअंडकंबलवायका कोलिका चेव विण्णेषा । उ३पदुतेसु सव्वओसधगते य वेज्जा विण्णेषा । कायस्स परिमासे कायतेगिच्छका विण्णेषा । धणेषु य सव्वसत्थगते सल्लकत्ता विण्णेषा । अच्छिगते सौलाकी, सव्वदेवगते भूतविज्जिका, बालेज्जेसु कोमारभिच्चा विण्णेषा । सव्वपरिसप्पगते क्सि३तिथिका विण्णेषा । अब्भंतरेसु सिप्पंपारगतं बूया । बाहिरब्भंतरेसु 5 मज्झिमं बूया । सव्वपाणजोणिगते वेज्ज—चम्मकार—ण्हाविय—ओरब्भिक—गोहातक—चोरघाता विण्णेषा । बाहिरेसु वि दढं बूया । सिवेषु मायाकारकं वा गोरीपाढकं वा लंखक—मुट्ठिक—लासक—वेलंबक—गंडकघोसकं बूया । सव्वछिद्देसु सव्वउपदुतेसु मोघं सिप्पं बूया । अवत्थितेसु उड्ढंभागेसु सफलं सिप्पं बूया । अधोभागेसु निप्पलं सिप्पं बूया ॥ इति भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय कम्मजोणी णाम अट्ठावीसतिमो अज्झाओ सम्मतो ॥ २८ ॥ छ ॥

[एगूणतीसइमो णगरविजयज्झाओ]

10

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय णगरविजयो णामाज्झायो । तं खलु भो ! तमणुव-
क्खस्सामो । तं जधा—तत्थ अत्थि णगरं णत्थि णगरं ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे
णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे मुदितामासे पुण्णामधेज्जे सव्वआहारगते य अत्थि णगरं ति बूया । तत्थ बज्झामासे
सव्वणीहारगते य णत्थि णगरं ति बूया । तत्थ णगरे पुव्वमाधारिते समिद्धं न समिद्धं ति आ३धारयितव्वं भवति ।
तत्थ अब्भंतरामासादीसु समिद्धं णगरमिति बूया । तत्थ बज्झामासादिसु ण समिद्धं णगरं ति बूया । तत्थ णगरे पुव्वमाधारिते 15
बंधेयेसु सव्वबंधणपडिरूवगते य बंधणज्झोसियं बूया, बंधणोसण्णं वा णगरं ति बूया । तत्थ खतेयेसु सव्वखत्तगते य
सव्वखत्तपडिरूवगते खत्तियज्झोसियं वा खत्तिकोसण्णं वा णगरं ति बूया । वेस्सेज्ज(ज्जे)सु सव्ववेस्सपडिरूवगते य
वे३स्स-ज्झोसितं वा वेस्सोसण्णं वा णगरं ति बूया । सुद्देयेसु सव्वसुद्धपडिरूवगते य सुद्धज्झोसियं वा सुद्धोसण्णं वा णगरं
ति बूया । तत्थ णगरे पुव्वमाधारिते थीणामं पुण्णामं ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ पुण्णामेसु सव्वपुरिसपडिरूवगते
य पुण्णामधेज्जं रायहाणि बूया । थीणामेसु सव्वइत्थिपडिरूवगते य थीणामधेज्जं साखानगरं वा बूया । ददेसु चिरनिविट्ठं 20
नगरं ति बूया । चलेसु अचिरनिविट्ठं णगरं ति बूया । णिद्धेसु बहुउदगं वा बहुवुट्ठीकं वा णगरं ति बूया । लुक्खेसु
अप्पोदगं वा अप्पवुट्ठीगं वा णगरं ति बूया । बज्झेसु सव्वचोरपडिरूवगते य चोरवासो णगरं ति बूया । अब्भंतरेसु
सव्वअज्जपडिरूवगते य अज्जो वासो णगरे ति बूया । आहारेसु अप्पणो णगरं ति बूया । णीहारेसु परणगरं ति
बूया । दीहेसु दीहं णगरं ति बूया । परिमंडलेसु परिमंडलं ति बूया । चतुरस्सेसु चतुरस्सं ति बूया । के३सेसु सव्वमूलजोणीगते
य कट्ठपागारपरिगतं णगरं ति बूया । थूलेसु इट्ठपागारं ति बूया । दक्खिणेषु दक्खिणोद्दागं णगरं ति बूया । वामेसु 25
वामोद्दागं णगरं ति बूया । मज्झिमेसु पविट्ठं णगरं ति बूया । पुधूसु वित्थिण्णं णगरं ति बूया । गहणेसु गहणणिविट्ठं
णगरं ति बूया । उपगगहणेसु आरामबहुलं णगरं ति बूया । उड्ढंभागेसु उ३ड्ढनिविट्ठं पव्वते व ति बूया । णिण्णेषु
णिण्णे वा निव्विगंदि पाणुप्पविट्ठं वा णगरं ति बूया । वे३द्देसु बहुवाधीतं वा णगरं ति बूया । मोक्खेसु अव्वाधितं

१ 'कारखवेपवुंद' हं० तं० ॥ २ 'कनट्टहा' हं० तं० ॥ ३ उपद्वेसु हं० तं० ॥ ४ कायएगिच्छका हं० तं० ॥ ५ सालकी,
सत्तदेवगते भूयवेधिका, बालेयेसु हं० तं० ॥ ६ 'समत्थिका' हं० तं० ॥ ७ 'प्पकार' हं० तं० ॥ ८ 'बकगंतुकघोसकं' हं०
तं० ॥ ९ 'माहारियव्वं' हं० तं० ॥ १० णत्थि घरं ति सप्र० ॥ ११ आहारियव्वं हं० तं० ॥ १२ 'गते पुण्णामधेज्जं तं वा
खत्तिकोसण्णं' हं० तं० विना ॥ १३ वइस्सिज्झो' सप्र० ॥ १४ 'माहारियव्वं' हं० तं० ॥ १५ केसेसु हंत० ॥ १६ मूलेसु
हं० तं० ॥ १७ उच्चनिवि' हं० तं० विना ॥ १८ वट्टेसु स ३ पु० सि० । वहेसु हं० तं० ॥

वा अप्पुज्जोगं व त्ति बूया । पसन्नेसु अतिक्खदंडं अप्पपरिक्खेसं वा णगरं ति बूया । अप्पसन्नेसु बहुविगहं बहुपरिक्खेसकारामणं ति व बूया । पुरत्थिमेसु गतेसु पुरत्थिमेसु य सद—रूवेसु पुरत्थिमायं दिसायं णगरं ति बूया । पच्छिमेसु य गतेसु ०८ पच्छिमेसु १० य सद—रूवेसु पच्छिमायं दिसायं ति बूया । दक्खिणेसु सद—रूवेसु दक्खिणेसु य गतेसु दक्खिणायं दिसायं ति बूया । वामेसु गतेसु वामेसु य सद—रूवेसु उत्तरायं दिसायं ति बूया । पुण्णेसु बहुअण्णपाणं 5 [णगरं] ति बूया । तुच्छेसु अप्पअण्णपाणं णगरं ति बूया । वायव्वेसु बहुवातकं बहुवातोवद्दवं च णगरं ति बूया । अग्गेयेसु बहुउण्हं आलीपणगबहुलं व त्ति बूया । आपुजोणीयेसु बहूदकं बहुवुट्ठिकं बहूदकवाहनं वा णगरं ति बूया । तण्हेसु बहुमकसकं वा सैत्थप्पातबहुलं व त्ति बूया । आदिमूलिकेसु आसण्णे णगरं ति बूया । मज्झविगाढेसु जुत्तोपकट्टणगरं ति बूया । अंतेसु दूरे पच्चंतिमणगरं ति बूया । अयोगखेमपडिरूवगते सुभिक्षयोगकखेमगतं अणभिवुत्तं वा णगरं ति बूया । सद्देयेसु विस्सुयकित्तियं ति बूया । दंसणीयेसु दिट्ठपुव्वं वा रमणीयं वा णगरं ति बूया ॥

10

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय णगरविजयो णामाज्झायो

एगूणत्तीसत्तिमो सम्पत्तो ॥ २९ ॥ छ ॥

[तीसइमो आभरणजोणीअज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय आभरणजोणी णामाज्झायो । तं खलु भो ! [त]मणु-
वक्खस्सामो । तं जधा—तत्थ अत्थि आभरणं णत्थि आभरणं ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ अब्भंतारामासे
15 दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे आबद्धे मल्ले वा भूसणे वा हसिते वा गीते वादितगते सव्वाभरणगते आबद्धं आभरणं
बूया । तत्थ बज्झामासे चलामासे लुक्खामासे तुच्छामासे कांसिते खुहिते णिम्मज्जिते णिल्लिखिते णिब्भग्गे णिट्ठिते ओमुक्के
मल्ले वा भूसणे वा अच्छदणे वा रुण्णे वा कंदिते वा कुंजिते वा सव्वउपहुतेसु य अणाबद्धं आभरणं बूया । तत्थ
आभरणं तिविधमाधारयितव्वं भवति—पाणजोणीगतं धातुजोणीगतं मूलजोणीगतं । तत्थ पाणजोणीयं चलेसु य पाणजोणीयं
विण्णेयं । सव्वमूलगते मूलजोणीगतं विण्णेयं । ६ धाउजोणीगए धाउजोणीगयं विण्णेयं । ७ तत्थ पाणजोणीमयं
20 संखमयं मुत्तामयं दंतमयं गवलमयं वालमयं अट्टमयं चेति । तत्थ मूलजोणीमयं कट्टमयं पुप्फमयं फलमयं पत्तमयं
चेति । तत्थ धातुमयं सोवण्णमयं रुप्पमयं तंबमयं सीसमयं लोहमयं तपुमयं काललोहमयं आरकुडमयं सव्वमणिमयं
गोमेयकं लोहितक्खो पवालकं रत्तक्खारमणिं लोहितकं चेति । तत्थ सेतेसु रुप्पमयं संखमयं मुत्तामयं सुक्क फलिक-
विमलक—सेतक्खारमणी विण्णेया । तत्थ कालकेसु सीसक—काललोह—अंजणमूलक—कालक्खारमणी वेति । नीलेसु
सस्सक—नीलक्खारमणी चेति । अग्गेयेसु सुवण्ण—रुप्प—सव्वलोहमयं लोहितक्ख—मसारकल्ल—क्खारमणी चेति । अणग्गेयेसु
25 अवसेसाणि बूया । कोट्टिते सव्वलोहमयं विण्णेयं । णिस्सिते सव्वक्खारमयं विण्णेयं । घट्टेसु सव्वमणिमयं विण्णेयं
संखगतं पवालगतं वा बूया । विसुद्धेसु ओमधिए परिमहिते मुत्ता विण्णेया । तत्थ सिरसि ओचूलक—णंदिविण्णद्धक—
अपलोकणिका—सीसोपकाणि य आभरणाणि बूया । कण्ठेसु तलपत्तका—ऽऽबद्धक—पलिकामदुघनक—कुंडल—जणक—
ओकासक—कण्ठेपूरक—कण्ठुप्पीलकाणि य बूया । अक्खीसु अंजणं, भमुहासु मसी, गंडेसु हरिताल—हिंगुलुय—मणस्सिला
विण्णेया । ओट्टेसु अलत्तको विण्णेयो । कण्ठेसु वण्णसुत्तकं तिपिसाचकं विज्जाधारकं असीमालिका—हार—ऽद्धहार—

१ अप्पजोगं हं० त० ॥ २ 'रिक्खेस' हं० त० विना ॥ ३ ०८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥
४ बहुअण्णं उण्हं हं० त० ॥ ५ सत्थुप्पां हं० त० ॥ ६ 'माहारयियव्वं' हं० त० ॥ ७ सुक्खा' हं० त० विना ॥
८ वा कंजिए वा हं० त० ॥ ९ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ १० 'णीगयं सं' हं० त० ॥ ११ आकुण्ड'
हं० त० ॥ १२ चलेसु हं० त० विना ॥

पुच्छलक—आवलिका—मणिसोमाणक—अट्टमंगलक—पैचुका—वायुमुत्ता—बुप्पसुत्त—पडिसराखारमणी कट्टेवट्टका वेति आभरणजोणी बूया । बाहूसु अंगयाणि तुडियाणि सव्वबाहोवकाणि बूया । हत्थेसु हत्थकडगाणि कडग—रुचक—सूचीका यानि वा तानि हत्थोपकाणि वा बूया । हत्थेसु अंगुलीसु य अंगुलेयकं मुदेयकं वेत्तकं जाणि य अन्नाणि अंगुलेयकाणि ताणि बूया । कडीयं कंचिकलापकं मेखलिका कडिउपकाणि य बूया । जंघासु गंडूपयकं णीपुराणि परिहेरकाणि आभरणाणि य बूया । पादेसु खिखिणिक—खत्तियधम्मका पादमुट्टिका पादोपकाणि य आभरणाणि बूया ॥ 5

॥ इति खलु भो महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय आभरणजोणी नामज्झायो तीसतिमो सम्पत्तो ॥ ३० ॥ छ ॥

[एगतीसइमो वत्थजोणी अज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिन्नाय अंगविज्जाय वत्थजोणी नामज्झाओ । तं खलु भो ! तमणुवक्खस्सामो । तं जधा—तत्थ अत्थि वत्थं नत्थि वत्थं ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे मुदितामासे पुण्णामधिज्जे सव्वआहारगते य सव्ववत्थपडिरूवगते य अत्थि वत्थं ति बूया । तत्थ बज्झामासे चलामासे तुच्छामासादिके हि णत्थि वत्थं ति बूया । तत्थ वत्थे पुव्वमाधारिते वत्थं तिविधमाधारयितव्वं भवति—धातुजोणिगतं मूलजोणिगतं पाणजोणिगतं चेति । तत्थ चलामासे सव्वपाणजोणिगते य पाणजोणिगतं बूया । तत्थ दढामासे सव्वधातुजोणीगते य धातुजोणीगतं बूया । तत्थ सव्वकेस—मंसुगते सव्वमूलगते य मूलजोणि बूया । तत्थ पाणजोणीगते वत्थे पुव्वमाधारिते पाणजोणिगतं वत्थं तिविधमाधारये—कोसेज्जं पंतुज्जं आविकं चेति । तत्थ सव्वचतुप्पदगते सव्वचतुप्पयपडिरूवगए य सव्वाविकं बूया । तत्थ सव्वकीडगते सव्वकीडपडिरूवगते य कोसेज्जं वा पंतुण्णं वा बूया । तत्थ मूलजोणीगते पुव्वमाधारिते मूलजोणिगतं वत्थं चतुर्विधमाधारये—खोमं दुकुल्लं चीणपट्टं सव्वकप्पासिकं चेति । तत्थ सव्वतयागते सव्ववक्कगते सव्वखंधगते य खोमं वा दुकुल्लं वा चीणं वा पट्टं वा बूया । तत्थ सव्वफलगते सव्वअगगते य सव्वपमहगते य कप्पासिकं बूया । तत्थ धातुगते वत्थे पुव्वमाधारिते धातुगतं वत्थं तिविधमाधारये—लोहजालिका सुवण्णपट्टा सुवण्णखसितं चेति । तत्थ कण्हपडिरूवगते य सव्वकाललोहजालिकं बूया । तत्थ सव्वपीतके सव्वपीतपडिरूवगते य सुवण्णपट्टं सुवण्णखसितं बूया । तत्थ दढामासे अहतं वत्थं बूया । चलामासे परिजुण्णं बूया । अब्भंतरेसु परगंधं बूया । बाहिरेसु जुत्तगंधं बूया । बाहिरबाहिरेसु समगंधं ति बूया । थूलेसु थूलं, अणूसु अणुकं, दीहेसु दीहं बूया, हस्सेसु हस्सं बूया । अंगुलीसु सकलदंसदं बूया । णहेसु बहितं दंसं बूया । चलेसु छिन्नदंसं बूया । अंगुलीयंतरेसु विवाडितं बूया । वणेसु सिवितं बूया । छिदेसु छिदं बूया । गहणेसु पावारकं वा कोतवकं वा उण्णिकं वा अत्थरकं बूया । उपगहणेसु एयाणं चेव तणुलोमाणि हस्सलोमाणि वा बूया । मुदिएसु वधूय वत्थाणि बूया । दीणेसु मतेसु य मतकवत्थाणि विलाता वा बूया । अब्भंतरेसु सकं वत्थं बूया । बाहिरब्भंतरेसु आतवितकं बूया । बाहिरेसु परकं बूया । दढेसु णिक्खितं वत्थं बूया । चलेसु अपहितं बूया । आहारेसु याचितकं बूया । णीहारेसु णट्टं बूया । अतिगमेसु लद्धं बूया । तत्थ अब्भंतरामासे सव्वसेतवण्णपडिरूवगते य सेयं बूया । कण्हेसु कालकं बूया । जिब्भा—तालु—ओट्ट—करतल—चरणतलसव्वरत्तपडिरूवगते य रत्तं बूया । ओमहिते पीतवण्णपडिरूवगते

१ पेसुकावायुमत्तासुप्पसुत्तं हं० त० ॥ २ त्थभंडं हं० त० विना ॥ ३ अंगुलीकं मुद्दीकं हं० त० विना ॥ ४ बूया अय एव हत्थोवकाणि बूया । कडीयं हं० त० ॥ ५ णामाध्यायो हं० त० विना ॥ ६ कोसेट्टं पं हं० त० विना ॥ ७ पउन्नं आधिकं हं० त० ॥ ८ रूवे य हं० त० विना ॥ ९ पउण्णं हं० त० ॥ १० खच्चियं हं० त० ॥ ११ रस्सेसु रस्सं हं० त० ॥ १२ दकं हं० त० ॥ १३ सिवियं हं० त० ॥ १४ विलयो वा हं० त० ॥ १५ सु णिमित्तं हं० त० ॥

य पीयकं बूया । तत्थ सव्वआहारगते सेवालकं बूया । ६ कैस—मंसुगते सेवालकं बूया । ७ सव्वसंधीसु अक्खके उदरे तंब—सेतसाधारणे मयूरगीवं बूया । सेतकण्हसाधारणेसु करेणूयकं बूया । अक्खीसु वित्तं बूया । सैतपीतसमामासे साधारणे कप्पासिकं पुप्फकं विण्णेयं । सेतरत्तसाधारणे पयुमरत्तकं विण्णेयं । रत्तपीतसाधारणे मणोसिलकं विण्णेयं । तंबकण्हसाधारणेसु मेचकं विण्णेयं । उत्तमेसु उत्तमरागं विण्णेयं । मज्झिमेसु मज्झिमरागं विण्णेयं । ५ मज्झिमाणंतरकायेसु ण जधामाणसिकं बूया । पच्चवरकायेसु विरत्तं वा अद्धरत्तं वा बूया । तत्थ अब्भंतरेसु जातीपट्टणुगतं बूया । बाहिरब्भंतरेसु जातीपट्टिरूपकं बूया । बाहिरेसु अपट्टणुगतं बूया । उद्धंगीवासिरोमुहामासे मुहोपकरणे उद्धंभागेसु य जालकं वा ८ पट्टिकं वा ९ वट्टणं वा सीसेकरणं वा बूया । उद्धं णाभीय गतेसु उद्धं णाभीय उपकरणेसु सव्वउत्तरिज्जगतेसु य उत्तरिज्जं बूया । अधोहेट्ठा णाभीय गतेसु अधोगतोपकरणे अंतरिज्जं बूया । पट्ठीय पच्चत्थरणं बूया । उल्लोकिते उद्धंभागेसु य वित्ताणकं बूया । तिरियंभागेसु परिसरणकं बूया ॥

10

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिन्नाय अंगविज्जाय वत्थजोणी णामज्झाओ
एगतीसतिमो सम्मत्तो ॥ ३१ ॥ छ ॥

[बत्तीसइमो धण्णजोणी अज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय धण्णजोणी णामाज्झायो । [तं खलु भो ! तं अणुव-
क्खयिस्सामि ।] तं जधा—तत्थ अत्थि धण्णं णत्थि धण्णं ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे
15 णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे मुदितामासे पुण्णामधेज्जामासे आहारगते य अत्थि धण्णं ति बूया । तत्थ सव्वधण्णगते
सव्वववहारगते अत्थि धण्णं ति बूया । तत्थ बज्झामासे चलामासे लुक्खामासे तुच्छामासे दीणामासे णपुंसकामासे
सव्वणीहारगते य णत्थि धण्णं ति बूया ।

तत्थ धण्णाणि सालि वीहि कोदवा कंगू रालका तिला मासा मुग्गा चणका कलाया णिप्फावा कुलत्था यवा
गोधूमा कुसुंभा अतसीयो मसूरा रायसस्सव ति । तत्थेकण्णेसु पुव्वमाधारिते पुव्वण्णं अवरण्णं ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति ।
20 तत्थ पुरिमेसु गतेसु पुरिमेसु य सद—रूवेसु पुव्वण्णं बूया । तत्थ पच्छिमेसु गतेसु पच्छिमेसु य सद—रूवेसु अवरण्णं
बूया । तत्थ पुव्वण्णेसु पुव्वमाधारिते सालि वीहि कोदवा रालका कंगू वरका तिला वेति । तत्थ अवरण्णे पुव्वमाधारिते
मासा मुग्गा निप्फावा चणवा(का) कलाया कुलत्था यव—गोधूमा कुसुंभा अतसीयो मसूरा रायसस्सव ति बूया ।

तत्थ पुव्वण्णे पुव्वमाधारिते णिद्धेसु साली वीही तिला वा विण्णेया । लुक्खेसु कोदवा रालका वरका वा
विण्णेया । णिद्धलुक्खसाधारणेसु वीही वा कंगू वा विण्णेया । सेतेसु सालि सेतवीही वा सेततिला वा बूया ।
25 *रत्तेसु रत्तसालि वा कोदवा वा कंगू वा रत्तवीही वा रत्ततिला वा विण्णेया । पीतकेसु रालके वा बूया । कण्हेसु
कण्हवीही वा कण्हरालके वा कण्हतिले वा बूया । * सामेसु वरके बूया । मधुरेसु साली कंगू तिले वा बूया ।
अंबेसु रालके बूया । कसायेसु वीही का कोदवे वा बूया । तत्थ संवुतेसु कोसिधण्णगते सव्वकोसीगते सव्वसंगलिकागते
सव्वसंगलिकोपुप्फेसु रुक्खेसु सव्वफलसमुग्गतविकागते सव्वसिगिगते तिला बूया । तत्थ सव्वविमुक्केसु सव्वपरिकिण्णेसु
बाहिरेसु सव्वअकोसिधण्णगते सव्वअसंगलिकाफलेसु रुक्खेसु सव्वअसंगीगते य साली वा वीही वा कोदवे वा वरके वा

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २ अक्खीसु उदरे हं० त० विना ॥ ३ सेयपीयसं हं० त० ॥
४ रागं बूया । मज्झि हं० त० ॥ ५ डिक्खं चिकं हं० त० ॥ ६ सुहो हं० त० ॥ ७ ८ ९ एतच्चिह्नान्तर्गतः
पाठः हं० त० नास्ति ॥ ८ वट्टणं हं० त० विना । ९ नामाज्झा हं० त० ॥ १० * * एतच्चिह्नान्तर्गतं पाठः सर्वासु
प्रतिषु द्विरावृत्तौ वर्तते ॥ अस्माभिस्तु सकृदेव स्वीकृतोऽस्ति ॥ ११ काफलेसु रु हं० त० ॥ १२ गगहवि हं० त० ।
गगधवि सि० ॥

रालके वा कंगू वा बूया । तत्थ रत्तेसु घणेषु आचितेसु सव्वपेसूतेसु सव्वपधगगते यरालकं वा कंगू वा बूया । तत्थ खंधगते सव्वविंसालगते य तिले बूया । तत्थ सव्वअखंधगते सव्वअविंसालगते य साली वा वीही वा बूया । परिमंडलेसु वट्टेसु कोदवा वा रालके वा बूया । तत्थ पुप्फगए अपुप्फगए त्ति । तत्थ पुप्फवंतेसु कोदवे कंगुओ रालके वरके वा बूया । तत्थ अव्वत्तपुप्फेसु साली वीही वा बूया । सुव्वत्तपुप्फेसु तिला बूया । इति पुव्वधण्णं (पुव्वण्णं) वक्खातं ।

तत्थ अवरणहे पुव्वमाधारिते जवे वा मासे वा अतसीयो वा कुसुंभे वा सस्सवे वा बूया । तत्थ सुक्खेसु 5
णिप्फावमुग्गे चणवे(गे) कुलत्थे मसूरे वा बूया । णिद्धलुक्खेसु साधारणेषु गोधूमे वा कलाये वा बूया । सेतेसु यवे वा सेतणिप्फावे वा कुसुंभे वा बूया । रत्तेसु गोधूमे वा कुलत्थे वा अतसीयो वा वरके वा कंगू वा [बूया] । पुधूसु तिला बूया । दीहेसु साली वा वीही वा बूया । परिमंडलेसु रत्तसासवे वा रत्तणिप्फावे वा बूया । पीतकेसु चणके कलाये वा बूया । कण्हेसु मासा वा मुग्गे वा कण्हतिले वा बूया । णीलेसु हारीडणिप्फावे वा बूया । सामेसु मसूरे वा बूया । मधुरेसु जवे वा मासे वा कलाये वा मसूरे वा बूया । अंबेसु चणवेया वा गोधूमे वा कुलत्थे वा बूया 10
। कसायेसु मुग्गे बूया । तित्तकेसु णिप्फावे वा कुसुंभे वा बूया । कडुकेसु सस्सवे बूया । तत्थ सव्वसंवुतेसु कोसीधण्णगते बूया । सव्वसंगलिकागते सव्वसंगलिकाफलेसु रुक्खेसु सव्वफलसमुग्गधविकागते य सव्वसिगिसु य मासे मुग्गे चणके वा कलाये वा णिप्फावे वा मसूरे वा कुलत्थे वा बूया । तत्थ सव्वधणे(धण्णे)सु सव्वआचितेसु सव्वपधगगते सव्वमंजरिगते य जवे वा गोधूमे वा बूया । तत्थ सव्वगुम्म(गुप्फ)गते सव्वगोप्फधण्णगते य कुसुंभे वा सस्सवे वा अतसीको वा बूया । तत्थ सव्ववल्लीगते सव्ववल्लीधण्णगते य णिप्फावे वा कुलत्थे वा बूया । तत्थ सव्वगुम्मगते सव्वगुम्मधण्णगते 15
य मुग्गे वा मासे वा कलाये वा मसूरे वा चणए वा बूया । तत्थ सव्वखंधगते सव्वखंधमये धण्णगते सस्सए वा कुसुंभे वा अतसीओ वा बूया । तत्थ सव्वअक्खखंधगते जवे वा गोधूमे वा बूया । तत्थ सव्वपुधूसु णिप्फावे वा कुलत्थे वा मसूरे वा बूया । वट्टेसु चणए वा मुग्गे मासे वा कुसुंभे वा सस्सपे वा बूया । दीहेसु जवे वा गोधूमे वा बूया । तत्थ सुव्वत्तपुप्फेसु मुग्गे वा मासे वा चणए वा णिप्फावे वा मसूरे वा अतसीको वा सस्सए वा कुसुंभे वा बूया । सुव्वत्तपुप्फेसु जवे वा गोधूमे वा बूया । धूलेसु णिप्फावे वा बूया । मज्झिमकायेसु जवे वा गोधूमे वा 20
बूया । कुसुंभे वा मासे वा मुग्गे वा चणगे वा कलाये वा बूया । पच्चवरकायेसु अतसीको वा सस्सवे वा मसूरे वा बूया । तत्थ णिद्धेसु अतिगमेसु य भायणगतं धण्णं बूया । कायवंतेसु मंजूसागतं पल्लगतं बूया । चलेसु जाणगतं बूया । अब्भंतरेसु णिवेसणगतं बूया । अब्भंतरब्भंतरेसु ओवारिगतं बूया । बाहिरेसु बाहिरो धण्णं बूया । बाहिरबाहिरेसु अरण्णगतं बूया । आहारेसु कीतं बूया । णीहारेसु विक्कीतं बूया । अब्भंतरब्भंतरेसु सकं बूया । अब्भंतरेसु मित्तधण्णं बूया । बाहिरब्भंतरे जाचितकं बूया । बाहिरेसु णिक्खे[व]परिगतं बूया । बाहिरबाहिरेसु अपरिहियं बूया । महापकासेसु महापरिगहेसु य 25
बहुं बूया । अप्पपकासे अप्पपरिगहेसु य अप्पं बूया । परिजुन्नेसु पोराणं बूया । बालेसु णवं बूया ॥

॥ इति महापुरिसदिन्नाय अंगविज्जाय धण्णजोणी णामाज्झायो बत्तीसतिमो सम्मत्तो ॥ ३२ ॥ छ ॥

[तेत्तीसइमो जाणजोणीअज्झायो]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिन्नाय अंगविज्जाय जाणजोणी णामाज्झायो । तं जधा—तत्थ अत्थि जाणं 30
णत्थि जाणं ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे

१ *पत्तएसु हं० त० ॥ २-३ *विलासगते हं० त० विना ॥ ४ पुप्फगते फलगते त्ति हं० त० विना ॥ ५ कंगू रा हं० त० ॥ ६ सुवण्णपु हं० त० ॥ ७ पुव्ववण्णं हं० त० ॥ ८ गते सव्वगुप्फधण्णगए य मुग्गे हं० त० ॥ ९ वण्णमए सस्सवे हं० त० ॥ १० सुवण्णगुप्फे वा समुग्गे हं० त० ॥ ११ अवत्तगुप्फेसु हं० त० ॥ १२ अपहरियं हं० त० ॥ १३ *सु वण्णवं हं० त० ॥ १४ णामज्झा हं० त० ॥ १५ *माहारियव्वं हं० त० ॥ १६ *मासे दढामासे णिद्धा सि० ॥

सव्वआहारगते अत्थि जाणं ति बूया । तत्थ बज्झामासे चलामासे लुक्खामासे तुच्छामासे दीणामासे णपुंसकामासे सव्वणीहारगते य णत्थि जाणं ति बूया ।

तत्थ जाणे पुव्वमाधारिते जाणं दुविधमाधारये—सज्जीवं णिज्जीवं चेति । तत्थ सज्जीवोवलद्धीयं सज्जीवं बूया । तत्थ अज्जीवोवलद्धीयं अज्जीवं । तं दुविधमाधारये—जलयरं थलयरं चेति ।

5 तत्थ सव्वथलोपलद्धीयं थलजं विण्णातव्वं भवति । तत्थ सव्वआपुणेयेसु जलयरं विण्णातव्वं भवति । तत्थ थैलचरे सिबिका भद्दासणं पल्लंकसिका रधो संदमाणिका गिल्लि जुगं गोर्लिगो सकडं सकडी चेति । तत्थ पुण्णामेहि पुण्णामं ति बूया । थीणामेहि थीणामं ति बूया । तत्थ उत्तमेसु सिबिका भद्दासणं वा विण्णेयं—पुण्णामेसु भद्दासणं, थीणामेसु सिबिका । सव्वसत्थगते सव्वसंगामगते य रधो विण्णेयो । तत्थ सव्वसयणगते पल्लंकसिका विण्णेया । तत्थ विपुलेसु विपुलं बूया । संवुतेसु संवुतं बूया । महव्वेसु सकडं वा संदमाणिकं वा गिल्लि वा बूया । मज्झिमकायेसु 10 सकडिं बूया । पच्चंवरकायेसु रधं गोर्लि[गं] वा बूया । २० तत्थ उद्धंभागेसु उल्लायितं बूया । अधोभागेसु अणुल्लायितं बूया । तत्थ दीहेसु सकडं वा गिल्लि वा जुगं वा सकडिं वा बूया । ३० परिमंडलेसु भद्दासणं वा रधं वा गोलिकं वा बूया । इति थलचराणि अज्जीवाणि जाणाणि बूया ।

तत्थ णिज्जीवाणि जलचराणि—णावा पोतो कोट्टिबो सालिका तप्पको प्लवो पिंडिका कंडे वेलु तुंबो कुंभो दती चेति । तत्थ पुण्णामेसु पुण्णामाणि । थीणामेसु थीणामाणि । तत्थ महावकासेसु णावा पोतो वा विन्नेया । 15 मज्झिमकायेसु कोट्टिबो सालिका संघाडो प्लवो तप्पको वा विण्णेयो । मज्झिमाणंतरेसु कट्टं वा वेलू वा विण्णेयो । पच्चंवरकायेसु तुंबो वा कुंभो वा दती वा विण्णेया । इति णिज्जीवाणि जलचराणि भवन्ति ।

तत्थ सज्जीवा जाणजोणी—अस्सा हत्थी उट्टा गो महिसा खरा अयेलका मका चेति । तत्थ उद्धंभागेसु सव्वसिंसिगसु य सव्वसंगलिकागते य संगलिकावत्थेसु सव्वगोसिधण्णगते य सिंगी विण्णेया । तत्थ अधोभागे सव्वअसंगलिकागते य फल—वच्छेसु या सव्वअकोसीधण्णगते य असिगी विण्णेया । तत्थ महावकासेसु हत्थी उट्टा महिसा वा विन्नेया । 20 मज्झिमकायेसु अस्सा बलिवद्दा वा विन्नेया । मज्झिमाणंतरेकायेसु मगे वा खरे वा बूया । पच्चवरकायेसु अए वा एलके वा बूया । तत्थ सव्वहत्थिगते हत्थिउपजीविसु हत्थिउपकरणे हत्थिपडिरूवगते य सव्वहत्थिपादुब्भावे हत्थि बूया । तत्थ सव्वअस्सगते सव्वअस्सोपकरणे सव्वअस्सोपलद्धीयं अस्सपादुब्भावे य अस्सं बूया । तत्थ सव्वगोगते सव्वगोउपजीविसु सव्वगोउपकरणगते सव्वगोउपकरणामधेज्जोदीरणे सव्वगोपादुब्भावे य बलिवद्दं बूया । तत्थ सव्वमहिसोपलद्धीयं महिससद्दरूवपादुब्भावे य एवमेव महिसं बूया । एवमेव सव्वउट्टोपलद्धीयं उट्टो विन्नेयो । 25 सव्वखरोपलद्धीयं खरो विन्नेयो । सव्वअयेलकोपलद्धीयं अयेलको विण्णेयो । एवमेव सव्वमगोपलद्धीयं मका विन्नेया । तत्थ गहणेसु अयेलकं विण्णेयं । उपगगहणेसु य अवसेसा विण्णेया । तत्थ अब्भंतरब्भंतरेसु सकं जाणं विण्णेयं । बाहिरब्भंतरेसु याचितकं जाणं बूया । बाहिरेसु आधावितकं जाणं । बाहिरबाहिरेसु अपहरितकं जाणं । तत्थ वयत्थेसु अभिरामेसु य णवं बूया । अणभिरामेसु महव्वेसु य जुण्णं बूया । छिद्देसु दुट्ठितं जाणं । घणेसु सुट्ठितं जाणं बूया । आहारेसु कीतकं बूया, णीहारेसु विक्कीतं बूया । सामेसु पडिरूवं जाणं ति बूया ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिन्नाय अंगविज्जाय जाणजोणी णामाज्झायो तेत्तीसतिमो सम्मत्तो ॥ ३३ ॥ छ ॥

१ सव्वोपल° सं ३ पु० सि० । सव्ववल्लोपल° हं० त० ॥ २ जलचरे सप्र० ॥ ३ जुगगोसंकडसंकडी हं० त० विना ॥ ४ २० ३० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ५ कोट्टिबो हं० त० ॥ ६ वच्छेसु हं० त० ॥ ७ सु अहावियकं हं० त० ॥ ८ नामज्झा° हं० त० ॥

[चउतीसइमो संलावजोणी अज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय संलावजोणी णामाज्झायो । तं खलु भो ! तमणुवक्खस्सामो । तं जधा—तत्थ वत्तो संलावो ण वत्तो ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे वत्तो संलावो ति बूया । तत्थ बज्झामासे लुक्खामासे तुच्छामासे पुव्वामासे ण वत्तो संलावो ति बूया । तत्थ सज्जीवेसु सज्जीवमंतरेणं वत्तो संलावो ति बूया । तत्थ णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे धोसवंतेसु य सज्जीवमंतरेणं वत्तो संलावो ति बूया । तत्थ बज्झामासे चलामासे सुक्खामासे लुक्खामासे तुच्छामासे अघोसवंतेसु य अज्जीवमंतरेणं वत्तो संलावो ति बूया ।

तत्थ जीवगतं तिविधं—दिव्वं माणुस्सं तिरिक्खजोणीगयं चेति । तत्थ उद्धंभागेसु दिव्वमंतरेण वत्तो संलावो ति बूया । उजुभागेसु थीणामामासेसु माणुस्सोपकरणगते य माणुसमंतरेणं वत्तो संलावो ति बूया । तत्तो चतुस्सेसु चतुप्पदोपकरणेसु य चतुप्पदमंतरेणं वत्तो संलावो ति बूया । तत्थ उद्धंभागेसु सव्वपक्खिगते य पक्खिमंतरेणं वत्तो संलावो ति बूया । तत्थ दीहेसु सव्वेसु सव्वपरिसप्पगते य परिसप्पमंतरेणं वत्तो संलावो ति बूया । आयुजोणीयेसु जलचरेसु य जलचरमंतरेणं वत्तो संलावो ति बूया । अणूसु सव्वखुडुसिरीसिवगए य खुडुसिरीसिवमंतरेणं वत्तो संलावो ति बूया । तत्थ पुण्णामासेसु पुरिसमंतरेण वत्तो संलावो ति बूया । थीणामधेज्जेसु थीणाममंतरेण वत्तो संलावो ति बूया । णपुंसकेसु णपुंसकमंतरेण वत्तो संलावो ति बूया । बंभेयेसु बंभणमंतरेणं वत्तो संलावो ति बूया । खत्तेयेसु खत्तियमंतरेणं वत्तो संलावो ति बूया । वेसेज्जेसु वेस्समंतरेणं वत्तो संलावो ति बूया । सुदेयेसु सुद्धमंतरेण वत्तो संलावो ति बूया । उद्धं णाभीय उत्तममंतरेण वत्तो संलावो ति बूया । अधो णाभीयं उद्धं जाणुकेहि अधे दीणकमंतरेण वत्तो संलावो ति बूया । अहे जाणूणं पायजंघेसु पेस्समंतरेणं वत्तो संलावो ति बूया । अणूसु वत्थमंतरेणं वत्तो संलावो ति बूया । सामेसु आभरणमंतरेणं वत्तो संलावो ति बूया । बैद्धेसु बद्धं वावारकमंतरेणं वा वत्तो संलावो ति बूया । चलेसु जाणमंतरेणं वत्तो संलावो ति बूया । उद्धंभागेसु पासादं वा चंदं वा सूरं वा णक्खत्तस्स वा अंतरेणं वत्तो संलावो ति बूया । अधोभागेसु कूप—णदीमंतरेणं वा वत्तो संलावो ति बूया । तिण्हेसु सव्वसत्थगते य आयुधाकारस्स वा आयुधभंडस्स वा अंतरेणं वत्तो संलावो ति बूया । एतेसु ज्जेव जोधस्स वा खंधावारस्स वा संगामस्स वा अंतरेण वत्तो संलावो ति बूया । सव्वकामुकपयत्तेसु चलेसु य अंतरेसु य वेसिकं वा गणिकायं वा गूढिकायं वा कामुकस्स वा कामिणीयं वा अंतरेणं वत्तो संलावो ति बूया । तत्थ दहेसु णगरस्स वा जणपदस्स वा सण्णिवेसस्स वा खेत्तस्स वा खेडस्स वा आरामस्स वा अंतरेणं वत्तो संलावो ति बूया । णिद्धेसु तलाकस्स वा णदीयं वा सरस्स वा पोक्खरणीयं वा उउपाणस्स वा अंतरेण वत्तो संलावो ति बूया । लुक्खेसु कंटकस्स वा सुसाणस्स वा सुण्णघरस्स वा उद्धितपद्रवस्स वा अण्णणगर—गाम—जणपदस्स वा गिहस्स वा अंतरेणं वत्तो संलावो ति बूया । णपुंसकेसु णिरत्थकं वत्तो संलावो ति बूया । बज्जेसु दूरजणपद—णगरमंतरेण वत्तो संलावो ति बूया । बाहिरब्भंतरेसु इमस्स जणपदस्स अंतरेण वत्तो संलावो ति बूया । अब्भंतरेसु सँकस्स वा जणकस्स वा उपकरणस्स वा अंतरेणं वत्तो संलावो ति बूया । णीहारेसु बज्झस्स वा जणस्स अण्णातकस्स वा उपकरणस्स वा अंतरेण वत्तो संलावो ति बूया । दीहेसु दीहकालं वत्तो संलावो ति बूया । रस्सेसु रस्सकालं वत्तो संलावो ति बूया । थूलेसु हत्थिस्स वा मँहिस्स वा

१ नामज्झां हं० त० ॥ २ तं जहा खलु हं० त० ॥ ३ जीवमयं हं० त० ॥ ४ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ५ वट्टेसुवहं वावां हं० त० ॥ ६ जालमं हं० त० ॥ ७ वा मूढिं हं० त० ॥ ८ उदुपाणं हं० त० ॥ ९ लुक्खस्स कं हं० त० विना ॥ १० सकस्स वा उपकारणवत्तो सं ३ पु० । सकस वा जणसकस्स वा उपकरण वा उपकरणेण वत्तो सि० ॥ ११ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ १२ ०८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥

मच्छस्स वा १० थूलपक्खि—परिसप्पथी—पुरिसमंतरेण वा वत्तो संलावो ति बूया । कसेसु खुड्डकसत्तमंतरेण वत्तो संलावो ति बूया । पुधूसु वेत्थुमंतरेण वत्तो संलावो ति बूया, खेत्तमंतरेण वा बूया । गहणेसु आराममंतरेण वत्तो संलावो ति बूया । उपगगहणेसु खेत्तसीमामंतरेण वत्तो संलावो ति बूया । परिमंडलेसु भायणमंतरेण वत्तो संलावो ति बूया । मतेसु मतमंतरेण वत्तो संलावो ति बूया । उण्णतेसु उलुकमंतरेण पव्वतमंतरेण वा वत्तो संलावो ति बूया । पसण्णेसु दाणमंतरेण वा वंदणमंतरेण वा ६ पतिगहमंतरेण वा ७ सम्मोईमंतरेण वा वत्तो संलावो ति बूया । अप्सण्णेसु निच्छेभमंतरेण वा णिराकारमंतरेण वा वत्तो संलावो ति बूया । पुण्णेसु आहारमंतरेण वत्तो संलावो ति बूया । तुच्छेसु छुधामंतरेण वत्तो संलावो ति बूया । अग्गेयेसु अग्गीमंतरेण वा आलीपणकमंतरेण वा वत्तो संलावो ति बूया । जण्णेयेसु उस्सयमंतरेण वा समवायमंतरेण वा वत्तो संलावो ति बूया । दंसणीयेसु चंदा—ऽऽदिच्च—गह—तारारूवसमिद्धसामिद्धि गाम—जणपद—णगर—उस्सयसमायमंतरेण वा वत्तो संलावो ति बूया । अणागतेसु १० अणागतमंतरेण वा वत्तो संलावो ति बूया । वामदक्खिणेसु वत्तमाणमत्थमंतरेण वत्तो संलावो ति बूया । पच्छिमेसु गतेसु अतीतमत्थमंतरेण वत्तो संलावो ति बूया ।

॥ इति महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय संलावजोणी नामाज्झायो चउतीसतिमो सम्मत्तो ॥ ३४ ॥ छ ॥

[पणतीसइमो पयाविसुद्धीअज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पयाविसुद्धी णामाज्झायो । तं जधा—तत्थ अत्थि १५ पया णत्थि पय ति पुव्वमोधारयितव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे दक्खिणामासे मुदितामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे सव्वआहारगते य अत्थि पय ति बूया । तत्थ उल्लोइते उस्सिते उच्चारिते उण्णामिते उत्थिते उपसारिते उपवप्पिते उपलोलिते उपकट्टिते उपवत्ते उपर्णते उपणद्धे उपलद्धे उपसारिते एवंविधसद्—रूवपादुब्भावे अत्थि पय ति बूया । तत्थ माता—पितु—भगिणि—सोदरिय—मित्त—बंधुजणसमागमे समाणिते अभिसंगते अभिणंदिते उपदासिते उपगूहिते चुंबिते अच्छायिते पागुते परिहिते अणुलिते अलंकिते वा एवंविधसद्—रूवपादुब्भावे अत्थि पय २० ति बूया । तत्थ उक्कुट्टे अप्फोडिते पंच्छोलिते गज्जिते पवादिते सेसाऽऽयाग—बलिहरगते णव—पुण्ण—पसत्थ—पहट्ट—परग्घ—पंच्चउदगगीये पुप्फे वा फले वा मल्ले वा भूसणे वा अच्छदणे वा ६ आसणे वा सयणे वा ७ जाणे वा वाहणे वा उपकरणे वा रयणगते वा धण्णगते वा धेणे वा पाणे वा भोयणे वा उपणामित—पडिच्छिते वा एवंविधसद्—रूवपादुब्भावे अत्थि पय ति बूया । तत्थ उवलद्ध—संत—भूत—अत्थिसद्पादुब्भावे अत्थि पय ति बूया । तत्थ धातीकुमारदारकसव्वअपच्चपादुब्भावे य अत्थि पय ति बूया । तत्थ बज्झामासे चलामासे कण्हामासे लुक्खामासे तुच्छामासे २५ दीणामासे णपुंसकामासे सव्वणीहारगते य णत्थि पय ति बूया । तत्थ कासिते छीते जंभिते रुदिते परिदेविते भग्गे भिण्णे विणट्टे विपाडिते विक्खिन्ने विच्छुद्धे विच्छिते ११ णिलुंचिते विणासिते १२ विसंधिते रूवाकडे फूमिते विज्झाविते धंते वा एवंविधसद्—रूवपादुब्भावे णत्थि पय ति बूया । तत्थ णिम्मज्जिते णिल्लिखिते णिस्सारिते णिण्णामिते णिद्धाडिते १३ णिल्लोलिते णिक्कट्टिते णिप्फीलिते णिच्छालिते णिक्खिते णिच्छुद्धे णिव्वाडिते णिसिते णिलूचिते १४ णिच्छोलिते णिस्ससिते

१ वत्थमं हं० त० ॥ २ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ३ आलापकं हं० त० ॥ ४ नामोऽज्झां हं० त० ॥ ५ णामऽज्झां हं० त० ॥ ६ महारयियव्वं हं० त० ॥ ७ उल्लोकिहं० त० ॥ ८ णते उपणाइ[ए] उपसारिते हं० त० विना ॥ ९ उक्कुट्टे हं० त० ॥ १० पच्छिलिते हं० त० विना ॥ ११ लिदूरं हं० त० ॥ १२ पच्चादगगीये हं० त० विना ॥ १३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ १४ धण्णे वा हं० त० ॥ १५ णितुंचिते सं ३ पु० । णिलुविहं० त० ॥ १६ विधंसिते सि० ॥ १७ णिल्लोडिहं० त० ॥ १८ णिच्छोलिहं० त० ॥ १९ णिच्छोलिहं० त० ॥

णिस्सरिते णिप्पतिते णिप्फाडिते णिड्ढीले णिकुज्जिते णिव्वामिते णिराकते णिरणते चेति एवंविधसद्वरूपपादुब्भावे णत्थि पय त्ति बूया । तत्थ पम्हुट्टे पंमुक्के पम्भट्टे पकिण्णे पविसिते पमुच्छिते पलोलिते परावत्ते परिसडिते परिसोडिते पंडिसिद्धे पप्फोडिते पडिणायिते पंडिहरिते पडिदिन्ने पडिछुद्धे पडिते पंरिवद्धिते पडिलोलिते पडिसरिते पंडिओधुते एवंविध-
सद्वरूपपादुब्भावे णत्थि पय त्ति बूया । तत्थ अपमट्टे अपलोलिते अपसारिते अपणासिते अपकड्डिते अपणते अपच्छुद्धे अपहिते अप्फिडिते चेति एवंविधसद्वरूपपादुब्भावे णत्थि पय त्ति बूया । तत्थ ओलोकिते ओसरिते ओमथिते ओणामिते 5
ओवट्टिते ओलोलिते ओकड्डिते ओवत्ते ओणते ओछुद्धे ओतारिए ओमुक्के मल्ले वा भूसणे वा अच्छादणे वा एवंविधसद्वरूपपादुब्भावे णत्थि पय त्ति बूया । तत्थ आयरणे असंत-णत्थिसद्वरूपपादुब्भावे णत्थि पय त्ति बूया । तत्थ वज्झा-संडक-अणवच्च-पासंडगते संदंसणे य णत्थि पय त्ति बूया । तत्थ णवणीत-तेल्ल-घत-दधि-गोरसदंसणे वच्छक-पुत्तक-पिल्लक-वप्पक-सिंगक-खुड्डक-बालक-साडक-मोहणक-अंकुर-परोह-पुप्फ-फल-पादप-पवाल-
हरिताल-हिंगुलुक-मणसिल-सव्व-समालभणकगते बालकपरिणंदिते जं किंचि बालसमाचारं वा एताणि पेक्खमाणो 10
वा भासमाणो वा आमसंतो वा एतेसिं वा बाहिरे सद्वरूपपादुब्भावे पयं वा पयालाभं वा पयासामग्गी वा उदरं वा पुत्तलाभं वा इमं से भविस्सतीति बूया । एतेसामेव अंतरोरुकरणे अप्पणो गम्भो त्ति बूया । एताणि चेव तिलेमाणो पुच्छेज्ज ससल्ला गम्भिणी मरिस्सति त्ति बूया । एताणि चेव अक्रमंती पुच्छेज्ज पया से विणस्सिस्सति त्ति बूया । एताणि चेव पतिगिण्हंती पुच्छेज्ज पया से भविस्सति त्ति तं बूया । एताणि चेव पणामयंती [पुच्छेज्ज] पया ते परिहायिस्सति त्ति णं बूया । एताणि चेव उपकड्डंती पुच्छेज्ज ८ पया से भविस्सति त्ति णं बूया । एताणि चेव 15
अपकड्डंती पुच्छेज्ज पया से ण भविस्सति त्ति णं बूया । ९ एताणि चेव उपकड्डिता अपकड्डंती पुच्छेज्ज पया ते भवित्ता ण भविस्सति त्ति बूया । एताणि चेव अपकड्डिता उपकड्डंती पुच्छेज्ज पया ते ण भवित्ता ण भविस्सति त्ति बूया । एताणि चेव छिंदंती वा णिक्खणंती वा फालेंती वा विवादेंती वा पुच्छेज्ज पया ते विणस्सिस्सति त्ति बूया । एतेसामेव आदिमूलगहणेसु उवजिक्खा ते पया भविस्सति त्ति बूया । एतेसामेव मज्झगहणेसु जुत्तोपचया ते [पया] भविस्सति त्ति बूया । एतेसामेव अंतगहणे णिरोपजिक्खा ते पया भविस्सति त्ति बूया । 20

तत्थ पयायं पुव्वाधारितायं वावण्णा अवावण्ण त्ति आधारयितव्वं भवतीति । तत्थ वावण्णामासे अप्पसत्थामासे दीणामासे वापण्णे वा पुप्फे वा फले वा पाणे वा भोयणे वा सव्ववापण्णेसु वा वापण्णे त्ति बूया । अवावण्णामासे अणुपट्टतामासे सुगंधामासे पसण्णामासे मुदितामासे अव्वापण्णे पुप्फे फले वा पाणे वा भोयणे वा भायणे वा सव्वअव्वापण्णेसु य अव्वापण्ण त्ति बूया । तत्थ पयायं पुव्वाधारितायं विकतं अविकतं पजायिस्सति त्ति पुणो आधारयितव्वं भवति । तत्थ उज्जुकामासे उज्जुभावगते उज्जुउल्लोयिते य सव्वमणुस्सजोणीपादुब्भावे य सव्वमणुस्सजोणीणामधेज्जोदीरणे 25
य सव्वमणुस्सरूपागितिपादुब्भावे य सव्वमणुस्सरूपागितिणामधेज्जोदीरणे सव्वमणुस्सरीरोपकरणणामधेज्जोदीरणे सव्वमणुस्सगते सव्वमणुस्सवेसगते सव्वमणुस्सकम्मोवारगते सव्वमणुस्सोपलद्धीयं च अविकतं बूया । तत्थ तिरियामासे तिरियगते तिरियविलोकिते सव्वतिरियजोणिपादुब्भावे सव्वतिरियजोणीणामधेज्जोदीरणे सव्वतिरियजोणीउपकरणे तिरिक्खरूपागितिपादुब्भावे तिरिक्खरूपागितिणामधेज्जोदीरणे तिरिक्खजोणीमये उवकरणे णामधेज्जोदीरणे सव्वतिरिक्खजोणिगते विगतं बूया । तत्थ पयातं पुव्वमाधारियायं कण्णा कुमारो त्ति आधारयितव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे दक्खिणामासे पुण्णामधेज्जामासे 30
पुण्णामे पुप्फे [वा] फले वा पाणे वा भोयणे वा सव्वकुमारोपलद्धीयं च कुमारं बूया । तत्थ बज्झामासे वामामासे थीणामधेज्जामासे ८ थीणामे ९ पुप्फे वा फले वा भायणे वा भोयणे वा उपकरणे वा सव्वइत्थीउपलद्धीयं च कण्णं

१ णिड्ढीणा णिकुं हं० त० विना ॥ २ पम्हुट्टे सप्र० ॥ ३ पसविते हं० त० ॥ ४ परिसिद्धे हं० त० ॥ ५ परिहरिते हं० त० ॥ ६ पंरिवद्धिते हं० त० ॥ ७ पडिभुए एवं० हं० त० ॥ ८ अपड्डिते हं० त० ॥ ९ उण्णामिते सि० ॥ १० उक्कड्डिते हं० त० ॥ ११ अहरोरु० हं० त० ॥ १२ पया ते वि० हं० त० ॥ १३ पया ते भ० हं० त० ॥ १४ ८ ९ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १५ आहारयियव्वं हं० त० ॥ १६ आहारयियव्वं हं० त० ॥ १७ वेस्सगते हं० त० विना ॥ १८ पयायं हं० त० ॥ १९ आहारयियव्वं हं० त० ॥ २० ८ ९ एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति ॥

बूया । तत्थ पजायं पुव्वमाधारितायं एक्कं दुवे पजाइस्सति ति आधारयितव्वं भवति । तत्थ एक्ककेसु गत्तेसु एक्काभरणे एकोपकरणे एक्कचारिसु सत्तेसु सव्वएक्कसाधारणगते य एक्कं पजातिस्सति ति बूया । तत्थ बिएसु गत्तेसु य मल्लाभरणे य मल्लोपकरणे मिधुणचरेसु सत्तेसु सव्वबिसाहागते य दुवे पजातिस्सति ति बूया । तत्थ बहवेसु गत्तेसु बहूपकरणके बहूकोपकरणके संघचारिसु सत्तेसु सव्वबहुसाहागते य बहवो पजातिस्सति ति बूया । त ०८ तत्थ कण्हामासे कण्हवण्णपडिरूवगते य सव्वणिप्पभावगते य उल्लोकिते य कालो पजातिस्सति ति बूया । तत्थ सुक्कामा १० से सुक्कवण्णपडिरूवगते य सव्वसप्पभा[व]गते य उल्लोकिते दक्खिणामासे पुण्णामधेज्जामासे सव्वदिवाचारिसु सत्तेसु सव्वदिवसोपलद्धीयं च दिवा पजातिस्सति ति बूया । तत्थ कण्हामासे कण्हवण्णपडिरूवगते य सव्वणिप्पभावे ओल्लोकिते वामामासे थीणामधेज्जामासे सव्वरत्तीचारिसु सत्तेसु सव्वरत्तीउपलद्धीयं च रत्तिं पजातिस्सति ति बूया । सुक्काणि आमसित्ता सुक्काणि आमसती पुणो जोणहे दिवा पजायिस्सति ति बूया । कण्हाणि आमसित्ता कण्हाणि आमसती पुणो काले १० रत्तिं पजातिस्सति ति बूया ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पयाविसुद्धी णामज्झायो
पंचतीसतिमो सम्पत्तो ॥ ३५ ॥ छ ॥

[छत्तीसइमो दोहलज्झायो]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय दोहलो णामाज्झायो । तं जधा—अत्थि दोहलो णत्थि १५ दोहलो ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति ।

तत्थ अब्भंतरामासे ददामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे सव्वआहारगते य अत्थि दोहलो ति बूया । तत्थ उल्लोकिते उस्सिते उच्चारिते उण्णामिते उत्थिते उपसारिते उपणामिते उपविट्ठे उपलोलिते उपवत्ते उपणते उपणद्धे उपलद्धे उपसरिते उपविट्ठे एवंविधसद्—रूवपादुब्भावे अत्थि दोहलो ति बूया । तत्थ माता—पितु—भगिणि—संबंधिजणसमागमे समाणिते सातिज्जिते पडिच्छिते अभिणंदिते अभिसंथुते उपदासिते चुंबिते अच्छइते पागुते २० परिहिते अणुलिते अलंकिते एवंविधसद्—रूवपादुब्भावे रस—गंध—फासपादुब्भावे अत्थि दोहलो ति बूया । तत्थ उक्कुट्टे अप्फोडिते पच्छेलिते पवायिते सेसागहणे बलिहरणगते एवंविधसद्—रूवपादुब्भावे अत्थि दोहलो ति बूया । तत्थ णवपुण्ण—पसत्थ—पहट्ठ—परघ—पच्चुदग्गे पुप्फे वा फले वा पत्ते वा पवाले वा मल्ले वा भूसणे वा आसणे वा सयणे वा विसयणे वा जाणे वा वाहणे वा भायणे वा उपकरणे वा धण्णे वा धणे वा पाणे वा भोयणे वा उपणामिते पडिच्छिते एवंविधसद्—रूवपादुब्भावे अत्थि दोहलो ति वा बूया । तत्थ उपलद्धे अत्थिसद्पादुब्भावे अत्थि दोहलो २५ ति बूया । तत्थ धाती—कुमार—दारक—बडु—अपच्चसद्—रूवपादुब्भावे अत्थि दोहलो ति बूया । तत्थ णवणीत—दुद्ध—घत—परिसप्पक—अंडक—सप्पक—वच्छक—बालक—साडक—वालक—मोहनके बालाभरके अंकुर—परोह—वाल—पुप्फ—फलपादुब्भावे परामासे वा हरिताल—हिंगुलुक—मणोसिला—ण्हाण—समालभणकगते बालकपरिवंदितके यं किंचि बालं बालचारं वा एताणि आमसंतो वा पेक्खमाणो वा भासमाणो वा एतेसि वा बाहिरे आमाससद्—रूवपादुब्भावे अत्थि दोहलो ति बूया ।

३० तत्थ बज्जामासे चलामासे लुक्खामासे कण्हामासे तुक्खामासे दीणामासे णपुंसकामासे सव्वणीहारगते य णत्थि दोहलो ति बूया । तत्थ कासितेण खुधितेण जंभितेण रुदितेण परिदेवितेण भग्गे छिण्णे भिण्णे विणासिते विपाडिते

१ पुव्वं धारियायं हं० त० ॥ २ आहारयियव्वं हं० त० ॥ ३ भरणके हं० त० ॥ ४ मलाभं हं० त० विना ॥ ५ मलोपं हं० त० ॥ ६ पक्खकोपं हं० त० ॥ ७ ०८ १० एतच्चिहान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ८ सव्वदीवचां हं० त० ॥ ९ नामाज्झायो हं० त० ॥ १० नामज्झायो हं० त० ॥ ११ आहारयियव्वं हं० त० ॥ १२ उस्ससिते हं० त० ॥ १३ उपवेए हं० त० ॥

विक्रिखने विच्छुद्धे विच्छिन्ने विण्णु वंते सिंवितालिते रूयकडे पूसिते विज्झविते एवंविधसद्—रूवपादुब्भावे णत्थि दोहलो त्ति बूया । तत्थ णिम्मज्जिते निज्झिक्खिते णिस्सारिते णिव्वट्टिते णिलुलिते णिक्कट्टिते णिद्धाडिते णिस्सारिते णिप्फाविते णिच्छेलिते णिक्खण्णे णिव्विट्ठे णिच्छुद्धे विच्छुद्धे णिस्सिते णिल्लुविते णिवोल्लिते णित्थणिते णिस्ससिते णिस्सिधिते णिट्ठुते णित्थुद्धे णिस्सरिते णिप्फेडिते णिदीणे णिण्णीते णिकुज्जिते णिव्वासिते णीरक्कए णिराणंदे एवंविधसद्—रूवपादुब्भावे णत्थि दोहलो त्ति बूया । तत्थ पैमुट्ठे पम्हुते पकिण्णे पब्भट्ठे पसंखिते पमुच्छिते पलोलिते परावत्ते 5 परिसाडिते पडिसिद्धे पप्फाडिते पडिणामिते पडिहारिते पडिदिण्णे पडिबुद्धे पडिते पडिमुंडिते पडिलोलिते पडिसरिते पडिछुद्धे एवंविधसद्—रूवपादुब्भावे णत्थि दोहलो त्ति बूया । तत्थ अपमट्ठे अपलिखिते अपसारिते अपणामिते अपवट्टिते अपलोलिते अपवत्ते अपणते अपहिते अपविट्ठे अप्पुद्धे आपडिते एवंविधसद्—रूवपादुब्भावे णत्थि दोहलो त्ति बूया । तत्थ ओलोकिते ओसारिते ओमत्थिते ओणामिते ओवट्टिते ओलोकिते ओकट्टिते ओवत्ते ओणते उग्गहिते उच्चुद्धे ओतारिते ओतिण्णे उक्खिते ओमुक्के मल्ले वा भूसणे वा अच्छादणे वा एवंविधसद्—रूवपादुब्भावे णत्थि दोहलो त्ति 10 बूया । तत्थ आयरणाअणंतणत्थिभूतपादुब्भावे णत्थि दोहलो त्ति बूया । तत्थ वंझा—पंडक—अणपच्चसद्—रूवपादुब्भावे णत्थि दोहलो त्ति बूया । तत्थ परिजुण्णे परिसुक्के वा परिखडे वा वापण्णे वा पुप्फे वा फले वा भूसणे वा अच्छादणे वा आसणे वा सयणे वा जाणे वा वाहणे वा उपकरणे वा रयणगते वा धण्णे वा धणे वा पाणे वा भोयणे वा सव्ववापण्णेषु वा वापण्णं दोहलं बूया ।

तत्थ दोहले पुव्वमाधारिते दोहलकं पंचविधमाधारये । तं जधा—सद्गतो गंधगतो रूवगतो रसगतो फासगतो 15 चेति । तत्थ सद्देयेसु सव्वसद्पडिरूवगते य सद्देयो दोहलो विण्णेयो । तत्थ गंधेयेसु सव्वगंधपडिरूवगते य गंधेयो दोहलो विण्णेयो । तत्थ सव्वरूवगते सव्वदंसणीयगते य रूवगतो दोहलो विण्णेयो । तत्थ २० सव्वफासगते २० सव्वफासपडिरूवगते य फासगतो दोहलो विण्णेयो । तत्थ सव्वरसगते सव्वरसपडिरूवगते य रसगतो दोहलो विण्णेयो ।

तत्थ रूवगते दोहले पुव्वमाधारिते रूवगतो दोहलो मणुस्सगतो चतुप्पदगतो पक्खिगतो परिसप्पगतो कीडकिविल्लगतो पुप्फगतो विद्धिगतो णदीगतो समुद्गतो तलागतो वापिगतो पुक्खरणिगतो अरणगतो भूमीगतो णगरगतो 20 खंधावारगतो जुद्धगतो किडुगतो । तत्थ मणुस्सजोणीपडिरूवगते मणुस्सजोणिं बूया । सव्वपक्खिपडिरूवगते पक्खि[जोणी] विण्णेया । चतुप्पदजोणीपडिरूवगते य चतुप्पदजोणी विण्णेया । सव्वपरिसप्पपडिरूवगते सव्वपरिसप्पजोणी विण्णेया । अंतोडहरचलेसु कीड—किमिगते य कीड—किविल्लगतो विण्णेयो । मुदितेसु सव्वपुप्फगते य पुप्फगतो विण्णेयो । पुण्णेषु सव्वफलगतो य फलगतो विण्णेयो । दीहेसु णिद्धेसु य णदीगतो विण्णेयो । णिद्धेसु परिमंडलेसु महापकासेसु समुद्गतो विण्णेयो । णिद्धेसु सण्णिरुद्धेसु तलागतो विण्णेयो । णिद्धेसु वित्थिण्णेषु महासगतो विण्णेयो । दढेसु 25 पुधूसु य पुढवीगतो विण्णेयो । दढेसु उद्धभागेसु य महापगाहेसु य पव्वतगतो विण्णेयो । गहणेसु रणगतो विण्णेयो । उपगहणेसु आरामगतो विण्णेयो । चतुरस्सेसु संरुद्धेसु परिमंडलेसु संखतेसु णगरगतो विण्णेयो । विमुत्तेसु महावकासेसु पुधूसु य देवगतो विण्णेयो । सव्वसत्थअब्भुज्जोगगते संरुद्धेसु य खंधावारगतो विण्णेयो । संजोगगते सव्वकिडुगतो य किडुगतो विण्णेयो । तिक्खिखेसु आकोडिते य संगामगतो विण्णेयो । इति रूवगतो दोहलो ।

तत्थ सद्गतो दोहले पुव्वमाधारिते सद्गतो दोहलो, तं जधा—मणुस्ससद्गतो पक्खिसद्गतो चतुप्पदसद्गतो 30 परिसप्पसद्गतो दिव्वघोसगतो २० वादित्तघोसगतो २० आभरणघोसगतो । तत्थ मणुस्सजोणीगते मणुस्सजोणीपडिरूवगते य मणुस्सजोणी विण्णेया । सव्वपक्खिपडिरूवगते पक्खिगतो विण्णेयो । सव्वचतुप्पदजोणीपडिरूवगते चतुप्पदजोणीगतो

१ सिंविताते हं० त० विना ॥ २ पूमिए हं० त० ॥ ३ पम्हुट्ठे हं० त० विना ॥ ४ पुप्फं डिते हं० त० ॥ ५ परिहरिते परिदिण्णे हं० त० ॥ ६ पडिबुद्धे हं० त० विना ॥ ७ अपबुद्धे हं० त० विना ॥ ८ ओच्छुद्धे हं० त० ॥ ९ अंतं हं० त० विना ॥ १० २० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ११ गाढेसु हं० त० ॥ १२ २० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ।

विण्णेयो । [सव्वपरिसप्पजोणीपडिरूवगते परिसप्पजोणीगतो विण्णेयो ।] सव्वसंखडगते वादित्तगतो विण्णेयो । सव्वसामेसु आभरणघोसगतो विण्णेयो । दिव्वेयेसु उत्तमेसु दिव्वघोसगतो दोहलो विण्णेयो । इति सद्गतो ।

तत्थ गंधगते दोहले पुव्वमाधारिते गंधगतो दोहलो । तं जधा—ण्हाणगतो अणुलेवणगतो अधिवासगतो पधंसगतो धूपगतो मल्लगतो पुप्फगतो फलगतो पत्तगतो आहारगतो चेति । उत्तमेसु ण्हाणगतो विण्णेयो । समभागेसु अणुलेवणगतो 5 विण्णेयो । अग्गेयेसु धूवगतो विण्णेयो पधंसगतो चुण्णगतो । तणूसु सव्वत्थगतो य अधिवासगतो विण्णेयो । पुण्णेसु सव्वपुप्फ—फलगतो य [पुप्फ—]फलगतो विण्णेयो । ६ इति गंधगओ ।

तत्थ रसगए दोहले पुव्वमाधारिते ७ रसगतो दोहलो । तं जधा—पाणगतो भोयणगतो खज्जगतो लेज्जगतो चेति । तत्थ णिद्धेसु सव्वपाणगतो य पाणगतो दोहलो विण्णेयो । सव्वभोयणगतो सव्वभोयण—भायणगतो य भोयणगतो दोहलो विण्णेयो । सव्वडहरचलेसु सव्वभक्खगतो य सव्वभक्ख—भोयणगतो य भक्खगतो दोहलो विण्णेयो । इति 10 आहारगतो दोहलो विण्णेयो ।

तत्थ फासगतो दोहले पुव्वमाधारिते फासगतो । तं जधा—आसणगतो सयणगतो वाहणगतो गहगतो वत्थगतो आभरणगतो विण्णेयो । सव्वसयणपडिरूवगते सयणगतो विण्णेयो । तत्थ सव्वआसणगतो सव्व ८ आसण ९ पडिरूवगते य आसणगतो विण्णेयो । चलामासेसु सव्वजाण—वाहणपडिरूवगते य जाण—वाहणगतो विण्णेयो । तत्थ दढेसु सव्वगहगतो य गहगतो दोहलो विण्णेयो । तत्थ तणूसु सव्ववत्थगतो य सव्ववत्थपडिरूवगते य 15 वत्थगतो दोहलो विण्णेयो । सामेसु सव्वआभरणगतो सव्वआभरणपडिरूवगते य आभरणगतो दोहलो विण्णेयो । इति फासगतो दोहलो ।

तत्थ दोहले पुव्वमाधारिते कता वत्तो दोहलो विण्णेयो भवति ? तत्थ पसन्नेसु सव्वसरदपडिरूवगते य सरदे वत्तो दोहलो ति विण्णेयो । तत्थ कण्हेसु रुक्खसाधारणेसु सव्वगिम्हपडिरूवगते य गिम्हे वत्तं दोहलं ति बूया । तत्थ णिरुद्धेसु वालेसु य पाउसे वत्तो दोहलो ति बूया । तत्थ णिद्धेसु वासारत्तपडिरूवगते य वासारत्ते वत्तो दोहलो 20 ति बूया । संवुत्तेसु सव्वहेमंतपडिरूवगते य हेमंतो वत्तो दोहलो ति बूया । तत्थ सामेसु मुदितेसु सव्ववसंतपडिरूवगते य वसंतो वत्तो दोहलो ति बूया । तत्थ सुक्केसु सव्वसुक्कपडिरूवगते य सुक्कपक्खे वत्तो दोहलो ति बूया । तत्थ कण्हेसु सव्वकण्हपडिरूवगते य कालपक्खे वत्तो दोहलो ति बूया । सामेसु पक्खसंधिसु वत्तो दोहलो ति बूया । अतिमुल्लेयेसु अब्भंतरपंचमी वत्तो दोहलो ति बूया । मज्झिमविगाढेसु परं पंचमि वत्तो दोहलो ति बूया । अब्भंतरेसु अब्भंतरं दसमीय दोहलो वत्तो ति बूया । अब्भंतरब्भंतरेसु परं दसमीतो वत्तो दोहलो ति बूया । सुक्केसु अतिमुल्लेयेसु 25 पायरासे वत्तो दोहलो ति बूया । कण्हेयेसु अतिमूलेयेसु पदोसे वत्तो दोहलो ति बूया । सुक्केसु मज्झिमविगाढेसु मज्झंतिके वत्तो दोहलो ति बूया । कण्हेसु मज्झिमविगाढेसु अड्डरते वत्तो दोहलो ति बूया । सुक्केसु अंतोसु अपरण्हे वत्तो दोहलो ति बूया । कण्हेसु अंतोसु पदोसे वत्तो दोहलो ति बूया । पच्छिमेसु गत्तेसु अतिवत्तेसु य सदेसु अतिवत्तं बूया । पुरत्थिमेसु गत्तेसु अणागतोसु य सदेसु अणागतं बूया । वामदक्खिणेसु गत्तेसु वत्तमाणेसु य सद्दरूवेसु संपतं वत्तमाणं दोहलं बूया ॥

30 ॥ इति महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय दोहलो णामाज्झायो छत्तीसत्तिमो सम्पत्तो ॥ ३६ ॥ छ ॥

१ सव्वखंडं हं तं ॥ २ दिव्वेसु हं तं ॥ ३ धूमपगतो सप्रं ॥ ४ गतो दोहलो विण्णेयो हं तं विना । ५ सव्वपण्णफलं सिं ॥ ६ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं तं एव वर्तते ॥ ७ ८ ९ एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं तं नास्ति ॥ ८ रत्तेसु पडिरूवते य वासरत्ते हं तं विना ॥ ९ वित्तो हं तं ॥ १० कण्हेसु हं तं ॥

[सत्ततीसइमो लक्खणज्झायो]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय लक्खणो णामाज्झायो । तं जधा—तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पसत्थलक्खणं ति बूया । तत्थ बज्झामासे चलामासे ६ लुक्खामासे ७ णपुंसकामासे असुभं लक्खणं ति बूया । ८ तत्थ पुव्वं सुभाणि आमसित्ता पच्छ असुभाणि आमसति सुभाणि पुरिमखेत्ताणि असुभाणि पच्छिमाणि ति बूया । ९ तत्थ पुव्वं असुभाणि आमसित्ता पच्छ सुभाणि आमसति असुभाणि पुरिमखेत्ताणि 5 पच्छिमाणि सुभाणि ति बूया ।

तत्थ लक्खणं बारसविधं । तं जधा—वण्णो १ सरो २ गति ३ संठाणं ४ संघतणं ५ माणं ६ उम्माणं ७ सत्तं ८ आणुकं ९ पगति १० छाया ११ सारो १२ वेति । तत्थ वण्णसंपण्णे अंजण—हरिताल—मणसिला—हिंगुलुक—रयत—कंचण—पवाल—संख—मणि—वइर—सुत्तिका—ऽगलु—चंदण—सयणा—ऽऽसण—जाणसप्पभागते वण्णसंपण्णं बूया । तत्थ चंदा—ऽऽदिच्च—णक्खत्त—गह—तारारूव—उक्क—विज्जुता—मेघ—जलण—सलिल—इंदीवर—इंदोगोपक—अद्दरिड्ढक—पिअंगु— 10 पियदंसणे वण्णसंपण्णं बूया । तत्थ पुप्फ—फल—पवाल—पत्त—घत—मंड—तेलवर—सुर—पसण्ण—पदुमुप्पल—पुंडरीक—कोरेंददाम—चंपक—परग्गमल्लाभरणविविधसमाउत्ते वण्णसंपण्णं बूया । तत्थ वण्णसंपण्णे थी—पुरिसे वा चतुप्पदे वा परिसप्पे वा पक्खिम्मि वा पियदरिसणे वण्णसंपण्णं बूया । सव्ववण्णगते पाणजोणीयं वा धातुजोणीयं वा मूलजोणीयं वा वण्णसंपण्णं बूया । तत्थ सव्ववण्णगते अप्पियदंसणे अबुद्धवण्णरागे अवण्णसंपण्णं बूया १ ।

तत्थ सरसंपन्ने हिरन—मेघ—दुंदुभि—वसभ—गय—सीह—सदूल—भमर—रधणेमिघोस—सारस—कोकिल—उक्कोस— 15 कौच—चक्काक—हंस—कुरस—बरिहिण—तंतीसर—गीत—वाइत—तलतालघोस—उक्कुट्ट—छेलित—फोडित—खिखिणिमहुरघोसपादुब्भावे सरसंपण्णं बूया ।

तत्थ थी—पुरिस—चतुप्पदे वा परिसप्पे वा पक्खिम्मि वा सरसंपन्ने सरसंपन्नं बूया । तत्थ अमहुरकडुकभणितेसु एवंविधपादुब्भावे असरसंपण्णं बूया २ ।

तत्थ सीह—वग्घ—उसभ—गय—मज्जार—बरिहिण—सुक—चक्कवाक—हंस—भासय—बलाक—वाल—दहुरसव्वगतिसंपन्ने 20 थी—पुरिसे वा चतुप्पदे वा परिसप्पे वा पक्खिम्मि वा गतिसंपण्णं बूया । तत्थ सव्वम्मि अगतिसंपन्नं बूया ३ ।

तत्थ दढामासे सव्वधातुगते सव्वसंघातसंपन्ने वा थी—पुरिसे वा चतुप्पदे वा परिसप्पे वा पक्खिम्मि वा संघातसंपन्नं बूया । तत्थ चलामासे अप्पसारेसु असंघातोपगते असंघातसंपन्नं बूया ४ ।

तत्थ सव्वअविभत्तगते संठाणोपगतेसु य पियरूवेसु संठाणसंपण्णं बूया । दुविभत्तसंठाणोपगतेसु संठाणहीणं बूया ५ । 25

तत्थ जुत्तप्पमाणे सव्वमाणगते सव्वपासंडगते य माणसंपन्नं बूया । तत्थ अयुत्तप्पमाणेसु अपमाणसंपण्णं बूया ६ ।

तत्थ अब्भंतरामासे सव्वगारवोपगते सव्वमहासारेसु य सव्वपरग्घेसु य उम्माणसंपण्णं बूया । तत्थ बज्झामासे सव्वअसारेसु य सव्वअसारोपपेतेसु सव्वअप्पग्घेसु सव्व ७ उम्माणहीणे य ८ उम्माणहीणं बूया ७ ।

तत्थ उत्तमेसु सव्वउत्तमगतेसु सव्वमहाभोगगते थी—पुरिस—चतुप्पद—पक्खिपरिसप्पगते य सूर—ववसायि—महापरक्कमगते य सत्तसंपन्नं बूया । तत्थ पच्चवरकायेसु सव्वणिप्पभागते य थी—पुरिस—चतुप्पद—परिसप्प—पक्खिम्मि 30 वा अव्ववसिते परक्कमहीणे य सत्तहीणं बूया ८ ।

१ नामज्झा हं० त० ॥ २ हस्तचिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० एव वर्तते ॥ ३ ८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ४ संघयणं हं० त० ॥ ५ णतप्प हं० त० ॥ ६ चक्कवाय—हंस हं० त० ॥ ७ भासपवाला हं० त० विना ॥ ८ ८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥

तत्थ आणूकं—आणूकलद्धी तिविधा आधारेतव्वा भवति, तं जधा—दिवा १ माणुसा २ तिरिक्खगता ३ चेति । तत्थ देवाणूकाणि दिव्वोपलद्धीयं उवलद्धव्वाणि भवन्ति । तत्थ देवाणूके पुव्वाधारिते देवाणूकविधि दिव्वा असुरा गंधव्वा जक्ख्वा रक्खसा णागा किन्नरा गरुला महोरगा एवमादयो सकाहि उवलद्धीहि उवलद्धव्वा भवन्ति १ । तत्थ माणुसाणूके णत्थि विधि २ । तिरिक्खजोणीकाणूके पुव्वाधारिते तिविधमाधारये, तं जधा—पक्खी परिसप्पा चतुप्पदा चेति । ताणि 5 सकाहि उवलद्धीहि उवलभितव्वाणि भवन्ति उत्तमा—ऽधम—मज्झिमाणि ३ । १ ।

तत्थ चंदा—ऽऽदिच्च—नक्खत्त—गह—तारारूव—अग्गि—विज्जूसव्वपाणगते य छायासंपन्नं बूया । सव्वणिप्पभागते सव्वअच्छयागते य छायाहीणं बूया १० ।

तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे मधुरेसु णिद्धेसु सुकेसु उद्धं जत्तगते सेम्हपडिरूवगते य सेम्हपगतिं बूया । तत्थ बज्झामासे कडुकेसु कसायेसु सव्वअधोभागगते य वातप्पगतिं बूया । तत्थ उण्हेसु तिक्खेसु पीतकेसु अंबेसु वा 10 वापण्णेसु वा सव्वसमाभागेसु पित्तप्पगतिं बूया । तत्थ वाते पित्ते सेंभे वा मिस्सपगतिं बूया ११ ।

तत्थ सारवंतपडिरूवे सव्वसारवंतेसु य सारवंतं बूया । तत्थ सव्वअसारवंतेसु असारवंतं बूया १२ ।

तत्थ वण्णसंपन्नस्स फलं ण्हाणा—ऽणुलेवणभागी मल्लालंकारभागी सुभगो सुहभागी भवति, वण्णहीणे तेसि विपत्ति । सरसंपण्णे इस्सरियं इस्सरियसमाणं कित्ति—जससंपण्णं च गहियवक्कं विज्जाभागी य सरसंपण्णे भवति, सरहीणे एतेसि विवत्ति । गतिसंपण्णे महाजणपरिवारो गणपकडुको महापक्खजणसमित्तो य भवति, अगतिसंपण्णे तेसि विवत्ति । 15 संठाणसंपण्णे चक्खुरमणत्तं महाजणपियत्तणं च छायामणोरधसंपत्ती संठाणे भवन्ति, असंठाणजुत्ते तेसि विवत्ति । संघातसंपण्णे आउसमत्थो बलविरियसमत्थो भवति, असंघातसंपण्णे एसि विवत्ति । माणसंपण्णे माणरिहो माणणीओ य भवति, माणहीणे तेसि विवत्ति । उम्माणसंपण्णे आयुगारवं साधीणं एत ज्जेव य विपुलतरं फलं भवति, उम्माणहीणे तेसि विवत्ति । सत्तसंपण्णे सूरु ववसायी, सत्तहीणे भीरु अव्ववसिते य । आणूके जधाणूकं फलं । छायासंपण्णे सुवभोगं बूया, छायाहीणे तेसि विवत्ति । पगतीसु < जधापगतं बूया । > सारवंते सारवंतं बूया, असारवंतेसु असारवंतं बूया ॥

20 ॥ इति महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय लक्खणो णामाज्झायो सत्ततीसतिमो सम्मत्तो ॥ ३७ ॥ छ ॥

[अट्ठतीसइमो वंजणज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिन्नाय अंगविज्जाय वंजणो णामाज्झायो । तं जधा—तत्थ दक्खिणतो पुरिसस्स पसत्थं, वामतो इत्थीय । तत्थ दक्खिणेसु पस्सेसु दक्खिणगत्ते वंजणं ति बूया, वामेसु गत्तेसु वामपस्से वंजणं ति बूया । पुरिमेसु गत्तेसु पुरिमे वंजणं ति बूया, पच्छिमेसु गत्तेसु पच्छिमे पस्से वंजणं ति बूया । उद्धंभागेसु उद्धं 25 वंजणं ति बूया, अधोभागेसु अधो वंजणं ति बूया । पुण्णामेसु पुण्णामं वंजणं ति बूया, थीणामेसु थीणामं वंजणं ति बूया । दढामासे दढेसु गत्तेसु वंजणं ति बूया । चलामासे चलेसु गत्तेसु वंजणं बूया । णिद्धामासे णिद्धेसु गत्तेसु वंजणं ति बूया । लुक्खामासे लुक्खेसु गत्तेसु वंजणं ति बूया । सव्वसत्थगतेसु सत्थाभिहतं वंजणं ति बूया । सव्वमूलगते कट्ठाभिहतं वंजणं ति बूया । सव्वधातुगते पासाण—लेट्ठु—सक्कराभिहतं वंजणं ति बूया । अभिहते अभिघातं बूया, छिन्नेसु छिन्नं बूया, वणेसु वणं बूया, उण्णतेसु विलकं बूया, सव्वधातुगते कुणिणहं बूया, मूलधातुगते कुणिणहं 30 फलातं बूया, कण्हेसु तिलकालकं चम्मखीलं वा बूया, उद्धं गीवाय रज्जलाभाय, बाहूसु सव्वाधिकरणलाभाय, उरे

१ दिव्वाणूकविधि देवा असुरा हं० त० ॥ २ < > एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥

रायपरिसलंभाय, अक्खिखसु णायकलंभाय, धणंतरे धणलंभाय, सामेसु आभरणलंभाय, बज्जेसु जंघासु वा पवासाय, चलेसु जाणलंभाय, थीणामेसु थीलंभाय, पुण्णामेसु मणुस्सलंभाय, अंगुट्ट-कणेट्टिकायं थण-हितय-कुक्खि-पोरिससमामासे सव्वबज्जेसु य अपचलंभाय बूया । बंधेसु बंधं बूया, मोक्खेसु मोक्खं बूया, तणूसु वत्थलाभं बूया, अणूसु धण्णलाभं बूया, वित्थिण्णेसु भूमीलाभं बूया, ओट्टे सुहलंभाय, अण्णेसु रोगं बूया, महंतेसु रणं बूया, महापरिग्गहेसु महापरिग्गहं, अपरिग्गहेसु अपरिग्गहं, पसंतेसु पमोदं, अप्पसण्णेसु विवादं, मतेसु मरणं, आहारेसु आहारं, सिवेसु आरोगं, 5 मुदितेसु हासं, दीणेसु सोकं, सामेसु मेधुणसंजोगं ॥

॥ इति महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय वंजणज्झायोऽट्ठतीसतिमो सम्पत्तो ॥ ३८ ॥ छ ॥

[एगूणचत्तालीसइमो कण्णावासणज्झाओ]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय कण्णावासणो णामाज्झायो । तं जधा-तत्थ कण्णा विज्जिस्सति ण विज्जिस्सति त्ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ बज्झामासे चलामासे णीहारेसु मुइतसाधारणेसु कण्णा 10 विज्जिस्सति त्ति बूया । तत्थ धणु-चाप-सं-पावरणक-आभरण-मल्ल-तलिए वाधुज्जभंड-धरवास-पकरणे आलिगिते चुंबिते ण्हाणा-ऽणुलेवणे विसेसकिपेस्समाणयणे य मलाभरणे य मिधुणचरेसु सत्तेसु पक्खी-चतुप्पदेसु कीड-किविह्मगेसु मिधुणसंपयुत्तेसु कण्णा विज्जिस्सति त्ति बूया । तत्थ पुण्णामधेज्झामासे पुण्णे व चले णिद्धे दक्खिणे य कन्ना विज्जिस्सति त्ति बूया । तत्थ आहारेसु अब्भंतरामासे दढामासे दीणेसु दीणसाधारणेसु वा कण्णा विज्जिस्सति त्ति बूया । तत्थ लुक्खेसु सुक्खेसु तुच्छेसु कण्णा ण विज्जिस्सति त्ति बूया । तत्थ विज्जिस्सति त्ति पुव्वाधारिते पुण्णामेसु 15 रायपुरिसस्स वा सूरस्स वा उत्तमस्स वा विज्जिस्सति त्ति बूया । णपुंसकेसु किलिट्ठस्स विज्जिस्सते, से य किलिट्ठे खिप्पं मरिस्सतीति बूया । थीणामेसु ण ताव विज्जिस्सति, जता य विज्जिस्सति < ससपत्तं विज्जिस्सति > त्ति बूया । दडेसु वामेसु चिरा विज्जिस्सति जिणाती वा णिपुण्णे भविस्सति । दक्खिणेसु दक्खिणाचारवेसस्स विज्जिस्सति त्ति बूया । पुण्णेसु बहुअण्ण-पाण-भोयणस्स विज्जिस्सति त्ति बूया । तुच्छेसु अप्पण्ण-पाणं कुलं गमिस्सति त्ति बूया । मुइतेसु अच्चण्णमुइतं कुलं गमिस्सति त्ति बूया । दीणेसु अच्चंतदीणं कुलं गमिस्सति त्ति बूया । जण्णेयेसु 20 बहुउस्सयं कुलं गमिस्सति त्ति बूया । सहेयेसु विस्सुयकित्तियं कुलं गमिस्सति त्ति बूया । दंसणीयेसु दरिसणीयस्स विज्जिस्सति त्ति बूया । गंधेयेसु णिच्चसुगंधस्स विज्जिस्सति त्ति बूया । रसेज्जेसु पभूतण्ण-पाणस्स विज्जिस्सति त्ति बूया । फासेज्जेसु पभूतच्छादणा-ऽणुलेवणस्स विज्जिस्सति त्ति बूया । मेतेयेसु इट्ठा इट्ठस्स विज्जिस्सति त्ति बूया । उपदुतेसु बहुरोगस्स दिज्जिस्सति त्ति बूया । सामेसु रतिपधाणस्स दिज्जिस्सति त्ति बूया । पुत्तेयेसु बहुपुत्तस्स दिज्जिस्सति त्ति बूया । कन्नेयेसु बहुकन्नागस्स दिज्जिस्सति त्ति बूया । चले यमलोदीरणे एकपतिम्मि पतिट्ठा भविस्सति 25 त्ति बूया । जतिसु अंगेसु चला यमलोदीरणा भवति ततिसु पतिसु पतिट्ठा भविस्सति त्ति बूया । चेलजमलोदीरणे परंपरगते वा णीहारोदीरणे ण कर्हिचि सा तिट्ठिस्सति त्ति बूया, बहुजलचरा य भविस्सति त्ति बूया । असारेसु अप्पकसे पंचपव्वयं 'रोजयिस्सति त्ति बूया । पुण्णामधेज्जे यमलोदीरणे पति-देवेसु संचिट्ठिस्सति त्ति बूया । पुण्णामधेज्जे चलोदीरणे कण्णा दुसिस्सति त्ति बूया । उद्धं णाभीय इस्सरियं कारयिस्सति त्ति बूया । अधोणाभीयं उद्धं जाणूणं वेस्सगोचरा भविस्सति त्ति बूया । पादजंघे दासत्तं कारयिस्सति त्ति बूया । जमकथीणामोदीरणे ससवत्तं विज्जिस्सति 30

१ वज्जेसु हं० त० विना ॥ २ थीणामलंभाय हं० त० ॥ ३ 'रिससमासे हं० त० विना ॥ ४ नामज्झा' हं० त० ॥ ५-६ विज्जिस्सति हं० त० ॥ ७ 'सरपाचणकआभरणमल्लतलिपवाधुज्जभंड' हं० त० ॥ ८ < > एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ९ 'स्सति जणावाचिणीपुणो हं० त० ॥ १० 'कित्तीयं हं० त० ॥ ११ 'सु जला य मल्लोदी' हं० त० ॥ १२ जलजम' हं० त० ॥ १३ पंचपव्वज्जं रोज' हं० त० ॥ १४ राजयि' सि० ॥ १५ 'दीरणे ण पतिदेवेसु संतिट्ठिस्सति हं० त० विना ॥

त्ति बूया । जतिथं यमकं थीणामधेज्जं भवति ततिसु सवत्तिसु संतिट्ठिस्सति त्ति बूया । अधोभागेसु पेस्सजातीयस्स विज्जिस्सति त्ति बूया । ऊरुभागेसु थीणामेसु तुल्लजातीयस्स विज्जिस्सति त्ति बूया । उद्धंभागेसु पुण्णामधेज्जेसु उत्तमतरागस्स विज्जिस्सति त्ति बूया । बंधेज्जेसु बंधणस्स विज्जिस्सति त्ति बूया । खत्तेयेसु खत्तियस्स विज्जिस्सति त्ति बूया । वेस्सेज्जेसु वेस्सस्स विज्जिस्सति त्ति बूया । सुद्देज्जेसु सुदस्स विज्जिस्सति त्ति बूया । महव्वयेसु महव्वयस्स, मज्झिमवयेसु 5 मज्झिमवयस्स, जोव्वणत्थेसु जोव्वणत्थस्स, बालेज्जेसु बालस्स विज्जिस्सति त्ति बूया । अंतेसु विद्धिकरस्स, चलेसु कारुकस्स, कारुकोपकरणेसु य दढेसु वाणियकस्स, इस्सरिएसु इस्सरोपकरणेसु य इस्सरस्स विज्जिस्सति त्ति बूया ॥

॥ इति महापुरिसदिनाय अंगविज्जाय कण्णावासणो णामाज्झायो एगूणचत्तालीसतिमो सम्मत्तो ॥ ३९ ॥ छ ॥

[चत्तालीसइमो भोयणज्झाओ]

णमो भगवतो अरहतो जसवतो महापुरिसस्स महावीरवद्धमाणस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिनाय 10 अंगविज्जाय भोयणो णामाज्झायो । तं खलु भो ! तमणुवक्खस्सामो । तं जधा—तत्थ अत्ति भोयणं णत्थि भोयणं ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे मुदितामासे दढामासे उल्लोगिते ऊहस्सिते माता—पितुभावणे उक्कट्टे अप्फोडिते सव्वपुण्णपादुब्भावणे दंतोडु—जिब्भ—तालुक—गल—कवोलपरामासे आहारितं बूया । तत्थ उल्लोगिते णिग्गिण्णे अस्साते संपाविते परिलीडे आहारितं बूया । तत्थ णाभोरु—वच्छंणे कुक्खि— 15 पस्सोदरपरामासे आहारितं बूया । तत्थ सव्वआहार—भायणगते मूलगते वा खंधगते वा पत्तगते वा पुप्फगते वा फलगते वा आहारितं बूया । तत्थ बज्झामासे चलामासे लुक्खामासे कण्हामासे तुच्छामासे ८१ दौणामासे ८० णपुंसकामासे सव्वणीहारगते अणाहारितं बूया । तत्थ उक्कासिते खुविते जंभिते णिम्मज्जिते णिल्लूहिते अपमट्टे अपमज्जिते अवलोणिते पम्हुट्टे पंमुक्के ओलोकिते ओसारिते अणाहारितं बूया । तत्थ अब्भंतरामासे भाणितव्वं ।

तत्थ आहारे पुव्वमाधारिते आहारं तिविधमाधारये, तं जधा—पाणजोणीगतं मूलजोणीगतं धातुजोणीगतं । तत्थ चलामासे सव्वपाणगते सव्वपाणोवकरणे सव्वपाणमए उवकरणे सव्वपाणजोणीणामधेज्जउवकरणे सव्वपाणजोणीणामधिज्जथी— 20 पुरिसगते सव्वपाणजोणीपडिरूवगते य एवंविधसद्—रूव—रस—गंधपादुब्भावे पाणजोणी बूया । तत्थ केस—लोम—णहगते मंसुगते सव्वमूलगते सव्वमूलजोणीगते सव्वमूलजोणीउवकरणे सव्वमूलजोणीमए उवकरणे सव्वमूलजोणीणामधिज्जउवकरणे सव्वमूलजोणीणामधेज्जोदीरणे थी—पुरिसगते एवंविधसद्—रूवपादुब्भावे मूलजोणीगतं बूया । तत्थ सव्वदढामासे सव्वधातुगते ८२ सव्वधातुजोणीगते उवकरणे ८३ सव्वधातुजोणीणामधेज्जे उवकरणे सव्वधातुजोणीणामधेज्जोदीरणे थी—पुरिसगते एवंविधसद्—रूव—रस—गंध—फासपादुब्भावे धातुजोणीगतं बूया ।

25 तत्थ पाणजोणीगते पुव्वमाधारिते पाणजोणीगतो आहारो दुद्धं दधि णवणीतं तक्कं घतं मंसं वसा मधुं ति । तत्थ पाणजोणीगओ आहारो संखओ असंखओ ति पुव्वमाधारइयव्वयं भवइ । तत्थ ८४ संखए ८० संखयं बूया, असंखये असंखयं बूया । तत्थ संखयं दुद्धं दधि मधु ति । तत्थ संख्याणि दुद्धं वा दधि वा सोतगुलं सक्करा वा अण्णेहिं दव्वेहिं संखताणि अण्णे मधुं ति । तत्थ अग्गेय ८५ मंगगेयं ८६ ति पुव्वमाधारइयव्वं भवइ ।

१ 'वीरस्स व' हं० त० ॥ २ भोतणो णामाज्झा' हं० त० ॥ ३ 'रुउच्छंणे हं० त० विना ॥ ४ ८१ ८० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ५ उक्कोसिते हं० त० विना ॥ ६ अवलोकिते प' हं० त० । अवले अवज्जिते प० सि० ॥ ७ पम्हुक्के हं० त० विना ॥ ८ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ९ 'णीमओ हं० त० ॥ १० 'माहारयियव्वं भवति हं० त० ॥ ११ ८४ ८० एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति ॥ १२ हस्तचिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० एव वर्तते ॥ १३ 'माहारयियव्वं भवति हं० त० ॥

तत्थ अग्गेयेसु अग्गेयं बूया, अणग्गेयेसु अणग्गेयं बूया । तत्थ अग्गेयाणि घयं वा मंसं वा दुद्धं वा सिद्धं वसा वा । तत्थ अणग्गेयाणि दुद्धं वा ससत्तं दधि णवणीत्तं मधुं ति । तत्थ सुक्केसु सुक्कवण्णपडिरूवगए य दुद्धं वा दधि वा ॐ तक्कं वा ॐ णवणीयं वा [बूया] । तत्थ पीतके पीतवण्णपडिरूवगए य ॐ घयं बूया । ॐ तत्थ मधुरेसु घयं वा दुद्धं वा बूया । तत्थ बालेयेसु दुद्धं बूया । तत्थ सिद्धेसु घयं बूया । तत्थ अंबिलेसु दधि वा तक्कं वा ॐ णवणीयं वा ॐ बूया । ॐ तत्थ घणेषु सुद्धेयेसु दहिं बूया । सारवंतेसु णवणीयं बूया । असारवंतेसु तक्कं बूया । दुग्गंधेषु वसं बूया । ॐ मुइतेसु वसं बूया । ॐ इति पाणजोणीगतो आहारो ।

तत्थ मूलजोणिगए आहारे पुव्वाधारिण मूलजोणीगतं आधारं तिविधमाधारये—मूलगतं खंधगतं अगगतं चेति । तत्थ अधोभागेसु गतेसु अधोभागगतोपकरणे ॐ सव्वमूलगते ॐ सव्वमूलोपकरणे सव्वमूलमये उपकरणे ॐ सव्वमूलजोणीनामधज्जोपकरणे ॐ सव्वमूलजोणीणामधेयोदीरणे थी—पुरिसगते एवंविधसद्—रूव—रस—गंध— 10 फास—पादुब्भावे मूलगतं बूया । तत्थ मूलगते पुव्वाधारिते मूलगतं तिविधमाधारये—मूलगतं कंदगतं तजगतं चेति । तत्थ मूलगते मूलगतं, कंदगते कंदगतं(यं), तयागते तयागयं बूया ।

तत्थ सव्वमाणेषु गतेसु सव्वमाणगतोपकरणे सव्वखंधगते सव्वखंधोपकरणे सव्वखंधगते उवगरणे सव्वखंधणामधेज्जे उवकरणे सव्वखंधयणामधेज्जोदीरणे थी—पुरिसगते एवंविधसद्—रूव—रस—गंध—फासपादुब्भावे खंधगतं बूया । तत्थ खंधगते पुव्वाधारिते खंधगतं दुविधमाधारये—खंधगतं णिज्जासगतं ॐ चैव सव्वखंधगए ॐ सव्वसारगते ॐ य खंधगतं 15 बूया । तत्थ सिरिविट्ठकसद्—लया—सल्लईहिं कास—सोणिय—पूक—लसिया सव्वणिज्जासगते य णिज्जासगतं बूया ।

तत्थ उद्धगते अधोसिरमुहामासे उद्धजत्तुसिरोमुहोपकरणे ॐ सव्वअगगए सव्वअगोपकरणे ॐ सव्वअगमए उपकरणे सव्वअगणामधेज्जे उपकरणे सव्वअगणामधेज्जोदीरणे थी—पुरिसगते य एवंविधसद्—रूव—रस—गंधपादुब्भावे अगगतं बूया । तत्थ अगगते पुव्वाधारिते अगगतं तिविधमाधारये, तं जधा—पत्तगतं पुप्फगतं फलगतं चेति । तत्थ अणूसु सव्वपुधूसु य सव्वपत्तगते य पत्तगतं बूया । तत्थ पत्तगते पुव्वाधारिते पत्तगतं तिविधमाधारये—तरुणं वयत्थं 20 पंडु चेति । तत्थ बालेज्जेसु तरुणं पत्तं [बूया], तत्थ वयत्थेसु वयत्थं पत्तं बूया, तत्थ महव्वयेसु य महव्वयं बूया ।

तत्थ सव्वमुदितेसु सव्वपुप्फगते य पुप्फगतं बूया । ॐ तत्थ पुप्फगए पुव्वाहारिण पुप्फगतं तिविधमाहारए—पत्तेगपुप्फं गुल्लुकपुप्फं मंजरीपुप्फं चेति । तत्थ एक्कामासे एक्ककेसु ॐ एक्काभरणे एक्कोपकरणे एक्कचारिसु सत्तेसु एक्कसाहागते एक्कगुलिगहणे य पत्तेकपुप्फं बूया । तत्थ बहुकेसु गतेसु बहुभरणक—बहुोपकरणे संघचारिसु सत्तेसु बहुसाहागते य बहुअंगुलिगहणे य गुलुकपुप्फं बूया । तत्थ दीहेसु सव्वमंजरिगते य मंजरीपुप्फं बूया । इति 25 पुप्फगतं ।

तत्थ पुण्णामेसु सव्वफलगते य फलगतं बूया । तत्थ फलगते पुव्वाधारिते फलगतं चतुर्विधमाधारये, तं जधा—रूखगतं गुम्मगतं वल्लिगतं छुपगतं चेति । तत्थ उद्धभागेषु कायवंतेसु सव्वरूखगते य रूखफलगतं बूया । तत्थ दीहेसु कुडिलेसु य सव्ववल्लिगते य वल्लिफलगतं बूया । तत्थ मज्झिमाणंतरकायेसु सव्वगुम्मगते य गुम्मफलगतं बूया । तत्थ पच्चंवरकायेसु सव्वछुपगते य छुवफलं बूया । 30

१-२-३-४-५ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ६ पुव्वमाहारिण हं० त० ॥ ७ आहारं हं० त० ॥ ८ ॐ ॐ ॐ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ९ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ १० चेति हं० त० ॥ ११ गए सव्वगए सव्वसारं सि० ॥ १२ ॐ ॐ ॐ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १३ तत्थ कसिरे चिट्ठकसद्धल्लयां हं० त० ॥ १४ जत्थसिं हं० त० ॥ १५ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ १६ हस्तचिह्नान्तर्गतः सन्दर्भः हं० त० एव वर्तते ॥ १७ लुच्छकं हं० त० ॥ १८ वल्लिच्छत्तुपं सप्र० ॥

तत्थ अणूसु सव्वधण्णगते य धण्णगतं बूया । तत्थ धण्णेसु पुव्वाधारितेसु सव्वधण्णं दुविधमाधारए, तं जधा—पुव्वण्णं अवरण्णं चेति । तत्थ पुरित्थमेसु गतेसु पुरित्थमेसु य सद—रूवेसु ६ पुव्वण्णगते य पुव्वण्णं बूया, तत्थ पच्छिमेसु गतेसु पच्छिमेसु य सद—रूवेसु ७ सव्वअवरण्णगते य अवरण्णं बूया ।

तत्थ पुव्वण्णे पुव्वाधारिते पुव्वण्णं अद्विधमाधारये, तं जधा—साली कोदवा वीही कंगू रालका वरका ८ सामाग(गा) तिला वेति । तत्थ दीहेसु साली वा वीही वा, पुधूसु तिले बूया । तत्थ कसेसु कोदवो कंगू वा रालके वा वरके वा सामाकं बूया । तत्थ रतेसु कंगू वा कोदवे वा बूया । तत्थ पीतेसु रालके बूया । फरुसेसु सामाकं बूया । सामेसु वरके बूया । णिद्धेसु सालिं वा वीहिं वा कंगुं वा तिले वा बूया । तत्थ लुक्खेसु कोदवे वा रालके वा वरके वा सामाकं वा बूया । तत्थ मुसलसमाहतगते साली वा वीही वा कंगू वा रालके वा वरके वा सामागं वा बूया । तत्थ घट्टे वा भामिते वा कोदवे बूया । तत्थ पिट्टे वा पीलिते वा तिले बूया । इति १० पुव्वण्णं ।

तत्थ अवरण्णे पुव्वाधारिते अवरण्णं तेरसविधमाधारये । तं जधा—मासा मुग्गा चणका कलावा णिप्फावा मसूरा कुलत्था तुवरयो यवा गोधूमा कुसुंभा सासवा अतसीओ ति । तत्थ पीतेसु चणके वा कलाए वा तुवरीओ वा बूया । तत्थ कालेसु मासा वा मुग्गा वा बूया । तत्थ सेतेसु णिप्फावे [बूया] । तत्थ कडुकेसु सासवे बूया । तत्थ कसायेसु गोधूमे बूया । तत्थ अंबेसु चणके कुलत्थे वा बूया । इति अव[र]ण्णं ।

१५ तत्थ सव्वधण्णगतं चतुव्विधमाधारये, तं जधा—खंधगतं वल्लिगतं तणगतं छुभगतं चेति । तत्थ मधुरेसु मासा वा मुग्गा वा मसूरा वा कलावा [वा] बूया । तँएसु णिप्फावा कुसुंभा वा अतसीओ वा तुवरीओ वा बूया । तत्थ खंधगते तिले वा कुसुंभे वा तुवरीओ वा अतसीओ वा सासवे वा बूया । तत्थ वल्लिगते णिप्फावे वा कुलत्थे वा मसूरे वा बूया । तत्थ गुम्मगते (छुभगते) मासे वा मुग्गे वा चणके वा कलाये वा बूया । तत्थ भाणगते (तणगते) साली वा वीही वा कोदवे वा रालकं वा जवे वा गोधूमे वा वरके वा बूया ।

२० तं पुण सव्वधण्णगते दुविधमाधारये—कोसीधण्णं १६ चैव अकोसीधण्णं चैव । १७ तत्थ अंगुलीगते णहगते पेलागते धविकागते पसिक्खिकागते सव्वमुग्गागते सव्वसुसंवलिकाफलेसु सव्वसिगिगते य कोसीधण्णं बूया, तं जधा—तिला मासा मुग्गा चणका कलावा णिप्फावा कुलत्था मसूरा तुवरीओ ति । अवसेसाणि अकोसीधण्णाणि । इति अंगगयं ।

तत्थ सव्वमाहारं छव्विधमाधारये, तं जधा—महुरं तित्तं कसायं अंबिलं कटुकं लवणमिति । तत्थ अब्भंतरामासे २५ सव्वमधुरगते मधुरं बूया । तत्थ तिक्खामासे सव्वकडुकगते य कडुकं बूया । तत्थ विघट्टेसु सकसायोपलद्धीयं कसायं बूया । तत्थ वावण्णेसु सव्वअंबिलोपलद्धीयं अंबं बूया । तत्थ अक्खिगूधके कण्णगूधके दंतगूधके सुण्णासगते य धूभागगते य रेतगते सेयमलगते य सव्वलवणे य लवणं बूया । तत्थ चलामासे सव्वतित्तगते य तित्तकं बूया ।

तत्थ आधारे पुव्वाधारिण आधारं चतुव्विधमाधारये, तं जधा—भोयणगतं पाणगयं भक्खगतं लेज्जगतं चेति । तत्थ पुण्णामधेज्जामासे सव्वभोयणगते सव्वभोयणपडिरूवगते य भोयणं बूया । तत्थ णिद्धामासे सव्वपाणियेसु सव्वपाणगयं ३० सव्वपाण—भोयण—भायणगते य पाणगतं बूया । तत्थ डहरत्थावरेसु डहरचलेसु य सव्वभक्खगते य सव्वभक्खसंभवेसु य संधीसु य भक्खगतं बूया । तत्थ सव्वभक्ख—पाणमीसेसु लेज्जगते य लेज्जं बूया ।

१ हस्तच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २ तत्थ घट्टे वा भामिए वा हं० त० ॥ ३ तत्थएसु हं० त० विना ॥ ४ धण्णं वा दुविं हं० त० ॥ ५ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ६ अंगुलीगते धणगओ पलगए चविकागए पसिविकागए सव्वमुग्गागए सव्वमुसंवलिकाफलेसु सव्वसिगिगए य कोसीधण्णं हं० त० ॥ ७ अंगगं हं० त० विना ॥ ८ विघट्टेसु हं० त० ॥ ९ णागगते हं० त० ॥ १० य सव्वलवणं हं० त० ॥

तत्थ भोयणे पुव्वाधारिते भोयणं विविधमाधारये—विसयगतं चेव ८१ घणगतं चेव । ८० तत्थ सव्वविसयकडे ८२ सव्वरासिकडे ८३ सव्वपुंजकडे सव्वउस्सयकडे सव्वविवद्धीकडे सव्वविसयकडे य विसयं बूया । तत्थ सव्वघणकडे सव्वपाणिकडे सव्वपुंजकडे सव्ववित्थडकडे सव्वघणणकडे य घणणं बूया । तत्थ विसयकडे पुव्वमाधारिते विस्सोदणं वा अतिकूरकं वा ८४ गुलकूरकं वा घतकूरकं वा ८५ बूया । तत्थ सव्वविसयोपलद्धीयं विसयोदणं बूया । उम्पट्टम्पट्टेसु य आहाराहारेसु सव्वअतिमासकडे य अतिकूरं बूया । तत्थ सव्वणेहोपलद्धीयं सव्वघतोपलद्धीयं च घतकूरकं बूया । तत्थ सव्वमधुरोपलद्धीयं सव्वगुलोपलद्धीयं च गुलकूरं बूया ।

तत्थ घणत्रकडे पुव्वाधारिते विलेपिं वा पायसं वा कसरीं वा दधितावं वा तक्कुलिं वा अंबेलिं वा बूया । तत्थ महुरोपलद्धीयं विलेपिं वा पायसं वा कसरीं वा बूया । तत्थ अंबिलोपलद्धीयं दधितावं वा तक्कुलिं वा अंबेलिं वा बूया । तत्थ मधुरेसु पुव्वाधारितेसु आपुणेयेसु विलेपिं वा बूया । तत्थ बालेयेसु सव्वदुद्धकडे य पायसं बूया । तत्थ कण्हेसु संखतेसु य कसरं बूया । तत्थ अंबेसु पुव्वाधारितेसु दधितापं वा तक्कुलिं वा अंबेलिं वा बूया । तत्थ सारेसु दधितावं बूया । असारेसु तंक्कुलिं बूया । तत्थ पागतेसु आसेतेसु असारेसु य अंबेलिं बूया ।

तत्थ भोयणस्स सव्वोपलद्धीयं सालि—वीही—कोद्व—कंगु—रालक—जव—गोधूम—वरक—सामागो ति जधुत्ताहिं उपलद्धीहिं उपलद्धव्वा भवंति । तत्थ अधण्णोपलद्धीयं मुग्गा मासा चणका कलया णिप्फावा मसूरा तुवरीओ वेति जधुत्ताहिं उपलद्धीयं उपलद्धव्वा भवंतीति । [तत्थ] भोयणस्स णेहोपलद्धीयं पाणजोणीगता ८६ मूल-जोणीगता ८७ चेति ।

तत्थ भोयणस्स उपसेकोपलद्धीयं रसो जूसो कुलत्थो खलको दधि दुद्धं तक्कं अंबिलकं पालीको ति । सो उपसेको दुविधो—पाणजोणीसंभवो चेव ८८ मूलजोणिसंभवो चेव । ८९ सो पुण दुविधो—अंबो चेव मधुरो चेव । सो पुण दुविधो—अग्गेयो चेव अणग्गेयो चेव । सो पुण दुविधो—लवणो चेव ९० अलवणो चेव । ९१ तत्थ भोयणस्स उपसेकोपलद्धीयं मूलगता चेव अगगता चेव ।

तत्थ मूलगता सव्वपक्खिमये उपकरणे सव्वपक्खिणामधेज्जे उपकरणे सव्वपक्खिणामधेज्जोदीरणे थी—पुरिसगते एवंविधसद्—रूव—रस—गंध—फासपादुभावे पक्खिमंसं बूया । तत्थ सव्वपरिसप्पगते सव्वपरिसप्पोपकरणे सव्वपरिसप्पमते उपकरणे ९२ सव्वपरिसप्पणामधेज्जे उपकरणे ९३ सव्वपरिसप्पणामधेज्जोदीरणे थी—पुरिसगते एवंविधसद्—रूव—रस—गंध—फासपादुभावे ९४ परिसप्पमंसं बूया । तत्थ चउप्पए पुव्वाधारिए चउप्पयं तिविहमाहारये, तं जहा—गम्मा रण्णा [गामारण्णा चेति] । तत्थ अब्भंतरेसु गतेसु अब्भंतरगाम—णगरगए [य अब्भंतरगाम—णगरचतुप्पदे य] एवंविहसद्—रूव—रस—गंध—फासपादुभावे ९५ चउप्पदमंसं बूया । तत्थ बाहिरब्भंतरेसु गतेसु सव्वबाहिरब्भंतरगते य सव्वगाम—रण्णचतुप्पदे य एवंविधसद्—रूव—रस—गंध—फासपादुभावे गामारन्नगतं बूया । सव्वबाहिरेसु गतेसु सव्वआरन्नगते य सव्वआरण्णपडिरूवगते य एवंविधसद्—रूव—रस—गंध—फासपादुभावे आरन्नं बूया ।

तत्थ चतुप्पदमंसे पुव्वाधारिते उद्धंभागेसु उद्धंगीवा—सिरो—मुहामासे सव्वसिं गिते सव्वसंगलिकागतेसु धन्नेसु सव्वसंगलिकाफलेसु वच्चेसु सिंगीणं चतुप्पदाणं मंसं बूया । तत्थ अधोभागेसु सव्वअंगगते सव्वअसंगलिताफलेसु वच्चेसु असिं गीणं चतुप्पदाणं मंसं बूया ।

१-२ ८१ ८० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ३ सव्वविवद्धीकडे सं ३ पु० ॥ ४ पुडकडे हं० त० ॥ ५ ८१ ८० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ६ कसरीं हं० त० ॥ ७ सु वेलिपिं हं० त० विना ॥ ८ कण्णेसु संखवेसु हं० त० ॥ ९ तत्थ ससा हं० त० ॥ १० बहुलिं वा बूया हं० त० ॥ ११ असेतेसु हं० त० विना ॥ १२-१३-१४-१५-१६ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥

तत्थ चतुप्पदेसु परिमिताउपलद्धीए—तत्थ कायमंतेसु कायमंता विण्णेया । मज्झिमकायेसु मज्झिमकाया विन्नेया । मज्झिमाणंतरकायेसु मज्झिमाणंतरकाया विन्नेया । पच्चवरकायेसु पच्चवरकाया विण्णेया । सेतेहि सीता, पीतेसु पीता, स्तेसु रत्ता, कण्हेसु कण्हा, णीलेसु णीला, पंडुरेसु पंडुरा, फरुसेहि फरुसा, चित्तेहि चित्ता, घोसवंतेहि घोसवंता, मधुरघोसेहि मधुरघोसा, मधुररूवेहि मधुररूवा, पियदंसणेहि पियदंसणा, थीणामेहि थीणामा, पुण्णामेहि पुण्णामा, णपुंसकेहि णपुंसका विण्णेया । इति चतुप्पयजोणी ।

तत्थ पक्खिगते पुव्वाधारिते थलयरा जलयरा पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ सव्वत्थलेसु सव्वणिण्णेषु सव्वजलगते सव्वथलगते सव्वजलोपजीविसु सव्वजलयेसु सव्वजलोपकरणेसु य जलयरं बूया । तत्थ पक्खिसु पुव्वाधारितेसु पक्खी तिविधमाधारये—पुप्फ—फलभोगी मंस—रुहिरभोगी ८५ धण्णभोगी ८६ चेति । तत्थ मुदितेसु सव्वपुप्फ—फल—गते य पुप्फ—फलभोगी बूया । तत्थ सव्वसत्थगते सव्वरुधिरभोगिसु सव्वमंसरुधिरगते य मंसरुधिरभोगी बूया । तत्थ १० अणूसु सव्वधण्णगते य धण्णभोगी बूया । तत्थ पक्खिसु अपरिमियातो उपलद्धीतो तत्थ जधुत्तेण उपलद्धव्वं भवति । तत्थ कायवन्तेसु पुण्णेषु सव्वफलगते य उवलद्धीहि सव्वपक्खि उवलद्धव्वा भवन्ति । इति पक्खिगयं मंसं बूया ।

तत्थ परिसप्पे पुव्वाधारिते थलयरा जलयरा ति पुणरवि आधारयितव्वं भवति । जधुत्ताहि उवलद्धीहि थलयरा जलयरा उपलद्धव्वा भवन्ति । ८७ कायवंताहि उवलद्धीहि ८८ कायवंतो परिसप्पा उवलद्धव्वा, वण्णोपलद्धीहि वण्णवंतो परिसप्पा उवलद्धव्वा इति परिसप्पं मंसं बूया । तत्थ सव्वं दुविधमाधारये, तं जधा—अहमंसं सुक्कमंसं चेति । तत्थ णिद्धेसु १५ सव्वहगते य अहमंसं बूया । तत्थ सव्वलुक्खेसु सव्वसुक्खमंसगते य सुक्खमंसं बूया । इति मंसगतं ।

तत्थ मुदितेसु उस्सये भोयणं ति बूया । तत्थ दीणेषु उवहुतेसु य मतकभोयणं ८९ वा सङ्कभोयणं वा ९० बूया । तत्थ अवत्थितेसु ण वि दीणेषु ण वि मुदितेसु य दासीणं भोयणं बूया । तत्थ बालेयेसु उत्थाणके वा सत्ताहिकायं वा बालोपणयणे वा भुत्तं बूया । तत्थ सव्वकामोपलद्धीयं सव्वकाममुपजुत्ते सव्वबंधुज्जोपलद्धीयं च बंधुज्जे भुत्तं बूया । तत्थ सव्वदेवगते सव्वदेवोवलद्धीयं देवयागे भुत्तं बूया । तत्थ सव्वधम्मोपलद्धीयं जातीयं २० जण्णे वा मंतगहणे वा मंतसमौवणे वा विज्जागहणे वा विज्जासमत्तीयं वा भुत्तं बूया । तत्थ मुदितेसु अभिणवेसु य अभिणवभोयणं बूया । वापण्णेषु सीतभोयणं बूया । तत्थ लुक्खामासे भिक्खोदणं बूया । तत्थ विमुत्तेसु असामण्णेषु असामण्णपडिरूवगते य असामण्णं भुत्तं बूया । तत्थ सामण्णेषु सव्वसामण्णपडिरूवगते य परेण सह भुत्तं बूया । तत्थ जधावातेण वा जधासंठाणेण वा संठाणं रूवेण वण्णेण वा जाणितव्वं भवति । जातिकुलेणं कुलं, कम्मेण कम्मं, अणुभावेण [अणुभावं,] थीणामेण थीणामा य, पुण्णामेण पुण्णामा य, णपुंसकेण णपुंसका य, एवं समणुगंतव्वं २५ भवति । तत्थ सहचरेसु परेण परिविद्धा भवति । एवमेव जातीहि सव्वमणुगंतव्वं भवति ।

तत्थ भोयणस्स भो(भा)यणगतं तिविधमाधारयितव्वं भवति, तं जधा—पाणजोणीमयं धातुजोणीमयं मूलजोणीमयं । जधुत्ताहि उवलद्धीहि उवलद्धव्वाणि भवन्ति । तत्थ पाणजोणीमये पुव्वाधारिते पाणजोणीमयं सिप्पिपुडं संखमयं च एवमादीहि उवलद्धीहि उवलद्धव्वं भवति । तत्थ मूलजोणीमये पुव्वाधारिते मूलजोणीमयं कट्टमयं फलमयं पत्तमयं चेति जधुत्ताहि उवलद्धीहि उवलद्धव्वं भवति । तत्थ धातुजोणीमये भायणे पुव्वाधारिते धातुजोणीमयं सुवण्णमयं रूपमयं ३० तंबमयं कंसमयं काललोहमयं सेलमयं मत्तिकामयं ति जधुत्ताहि ८९ उवलद्धीहि ९० उवलद्धव्वं भवति । एवं सव्वभायणाणि उपलद्धव्वाणि भवन्ति ।

१ माहारयियव्वं हं० त० ॥ २ सव्वजलचरगते हं० त० ॥ ३ जलयोप हं० त० ॥ ४ पुव्वमाहारयिएसु हं० त० ॥ ५ गतेसु पुप्फ हं० त० विना ॥ ६ त्थ सव्वअणूसु हं० त० ॥ ७ वन्तेहि पु हं० त० ॥ ८ विक्खमंसं हं० त० विना ॥ ९ आहारयियव्वं हं० त० ॥ १० हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ११ सुखसंगते हं० त० ॥ १२ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ १३ सु उदासीणाभायणं सं ३ पु० । सु दासीण भोयणं सि० ॥ १४ सव्ववज्जोपलद्धीयं च वाधुर्यं भुत्तं हं० त० ॥ १५ सव्वसव्वधम्मोपजातीयं जण्णे हं० त० विना ॥ १६ मारणे हं० त० विना ॥ १७ जधावातेण वा जधासंगणेण वा जधासंठाणेण हं० त० विना ॥ १८ ८५ ८६ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥

तत्थ अब्भंतरेसु सगिहे भुत्तं ति बूया । बाहिरब्भंतरेसु मित्तकुले भुत्तं ति बूया । बाहिरेसु उज्जाणघरे जिमितं ति बूया । मुदितेसु सक्कारपडिरूवेणं सक्कारेणं भुत्तं ति बूया । दारुणेसु भीतपडिरूवे य भीतेणं भुत्तं बूया । दढेसु अवत्थितेणं भुत्तं [बूया] । चलेसु उप्पुत्तेणं भुत्तं बूया । पसण्णेसु पसण्णपडिरूवगते य पसण्णेणं भुत्तं ति बूया । अप्पसण्णेसु अप्पसण्णपडिरूवगते य अप्पसण्णेणं भुत्तं ति बूया । तत्थ अक्खोडिय—परिविडिय—सव्वकोधपडिरूवगते य कुद्धेणं भुत्तं ति बूया । तत्थ पुरत्थिमेसु गतेसु पुरत्थिमेसु य सद्—रूवेसु पुरत्थिममुहेणं भुत्तं ति बूया । एवं 5 सव्वा दिसा समणुगंतव्वाओ । इति भोयणगते ति ।

तत्थ पाणगते पुव्वमाधारिते पाणगतं तिविधमाधारये—पाणजोणीगतं मूलजोणीगतं धातुजोणीगतं चेति । जहुत्ताहिं उवलद्धीहिं तिविधमपि उवलद्धव्वं भवति । तत्थ पाणजोणीगतं पाणगं दुद्धं दधिं तक्कं रसो घृतं वा विततं वसा वा वितता यधुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि भवन्ति । तत्थ मूलजोणीगते पुव्वाधारिते मज्जगतं जेवातूगयं फलरसगतं वा बूया । तत्थ मुदितेसु सव्वखंधपडिरूवगते य उच्छुरसं वा गोलोयं वा बूया । तत्थ पुधूसु सव्वपत्तगते य पत्तरसं 10 बूया । तत्थ मुदितेसु सव्वपुप्फपडिरूवगते य पुप्फरसं बूया । तत्थ पुण्णेसु सव्वफलपडिरूवगते य फलरसं बूया । तत्थ अणूसु सव्वधण्णगते य धण्णरसं बूया । तत्थ धातुगते पाणीयं बूया । तत्थ मज्जगतेसु पुव्वाधारितेसु यवा पसण्णं वा अयसं वा अरिद्धं वा महं वा बूया । तत्थ औधुतेसु सव्वोसधीपडिरूवगते य अरिद्धं बूया । तत्थ पीतेसु सव्वफलपडिरूवगते य मधुं बूया । तत्थ पसण्णेसु सव्वपसण्णपडिरूवगते य पसण्णं बूया । सेतेसु सेतसुरं बूया । इति मज्जगतं । 15

तत्थ जेवागूपुव्वाधारितेसु दुद्धजवागुं वा १ धैयजवागुं वा २ तेल्लजवागुं वा अंबिलजवागुं वा उण्हअं वा ओसधजवागुं वा बूया । तत्थ वालेयेसु पाणजोणिगते सुक्केसु मधुरेसु दुद्धजवागुं वा बूया । तत्थ णिद्धेसु पीतेसु य घतजवागुं वा बूया । तत्थ णिद्धेसु समेसु तेल्लजवागुं वा बूया । तत्थ वापण्णेसु अंबिलोपलद्धीयं वा अंबिलजवागुं वा बूया । तत्थ आपुणेयेसु उण्हेसु य उण्हतं बूया । तत्थ उद्धुतेसु सव्वोसधोपलद्धीयं च ओसधजवागुं वा बूया । तत्थ पुप्फ—फलसमाणेसु पाणगतं वा सालयगयं वा बूया । तत्थ सव्वधण्णजोणीयं जहुत्ताय सव्वधण्णरसगते य 20 उवलद्धव्वा । इति पाणजोणीगतो ।

तत्थ भक्खगते पुव्वाधारिते भक्खगतं दुविधमाधारये—पाणजोणीमयं [मूलजोणीमयं] चेति । तत्थ जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं दुविधा उवलद्धव्वा भवन्ति । तत्थ पाणजोणीगते जधुत्ताहिं मंसोवलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि भवन्ति । इति पाणजोणीगतं ।

तत्थ मूलजोणिगते पुव्वाधारिते मूलगतं खंधगतं णिज्जासगतं पत्तगतं फलगतमिति जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं 25 उवलद्धव्वाणि । तत्थ मूलगते पुव्वाधारिते आलुकं वा कसेरुकं वा सिंघाडकाणि वा भिसं वा भिसमुणालं वा चायं वा एवमादी कंदमूलगतो समणुगंतव्वो भवति । तत्थ खंधगते उच्छुं वा अण्णं वा खंधगतं बूया । तत्थ णिज्जासगते सक्करं वा मच्छंडिकं वा गुलं वा बूया । तत्थ जधण्णेसु वट्टेसु गुलं बूया । तत्थ पसण्णेसु सारवंतेसु सीतलेसु य सक्करं बूया । तत्थ पकिण्णेसु मच्छंडिकं बूया । मुदितेसु खज्जगगुलं बूया । जधण्णेसु वट्टेसु गुलं बूया । असंखेत्तेसु अणगोये य इक्कासं बूया । जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं पत्तगतं पुप्फगतं फलगतं धण्णगतं भक्खं बूया । 30

तत्थ सव्वमूलगते रुक्खगते वल्लिगतं गुम्पगतं छुभगतं तणगतमिति । तत्थ उद्धभागेषु पुण्णामेषु दक्खिणेषु कायवंतेसु सव्ववुक्खगते य वुक्खगतं बूया । तत्थ दीहेसु कुडिलेसु वामेषु थीणामेषु सव्ववल्लिगते य वल्लिफलं

१ यवागुगतं हं० त० विना ॥ २ उदुएसु हं० त० ॥ ३ जवायुपुं हं० त० ॥ ४ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वत्ति ॥ ५ उण्हतेसु हं० त० विना ॥ ६—७ रुक्खं हं० त० ॥

बूया । तत्थ मज्झिमाणंतरकायेसु गहणेसु सव्वगुम्मए य गुम्मफलं बूया । तत्थ पच्चवरकायेसु उपगगहणेसु सव्वहुभ-
तणोपलद्धीयं च हुभगतं बूया ।

तत्थ जधुत्ताहिं धण्णोपलद्धीहिं फलोपलद्धीहिं य भक्खोपलद्धीओ उपलद्ध्वाओ भवन्ति । तत्थ पिट्टगते चुण्णगते
य तप्पणा बदरचुण्णं वा विक्कसं वा चुण्णं वा उवलद्ध्वा भवन्ति । तत्थ भक्खगते पकिण्णगते य कलायभज्जियं वा
5 मुग्गभज्जियं वा जवभज्जियं वा गोधूमभज्जियं वा सालिभज्जियं वा तिलभज्जियं वा एवमादीणि भज्जितकाणि बूया ।

तत्थ भक्खगतं चउव्विधमाधारये—गुलगतं लवणगतं अगोलीयं लवणमिति । तत्थ सवणगतं दुविधं—अग्गेयं
च अणग्गेयं च । [तत्थ] अणग्गेयं सामुदं वा सेंधवं वा सोवच्चलं वा पंसुखारे वा । तत्थ अग्गेयाणि जवखारे
वा सोवच्चिका वा पिप्पली वा खारलवणं वा बूया ।

तत्थ सव्वगुलगते सक्करं वा मच्छंडिकं वा गुलेण वा गुलगतं जधुत्ताहिं [उवलद्धीहिं] उवलद्ध्वाणि भवन्ति ।
10 तत्थ वट्टेण सव्ववट्टपडिरूवगते य मोदका वा पेंडिका वा पप्पडे वा मोरेंडिकाणि वा सालाकालिकं वा अंबट्टिकं
वा एवमादीकाणि वट्टाणि उवलद्ध्वाणि भवन्ति । तत्थ पुधूसु वित्थडेसु सव्ववित्थतपडिरूवगते य पोवलिकं वा
वोक्कितक्कं वा पोवलके वा पप्पडे वा सक्कुलिकाओ वा पूपे वा फेणके वा अक्खपूपे वा अपडिहते वा पवितल्लके
वा वेलातिको वा पत्तभज्जिताणि वा उल्लोपिको वा सिद्धत्थिका वा बीयकाणि वा उक्कारिका वा मंडिल्लिका वा एवमादीकाणि
बूया । तत्थ दीहेसु दीहसक्कुलिकं वा खारवट्टिका वा खोडके वा दीवालिकाणि वा दसीरिका वा भिसकंटकं वा
15 मत्थतकं वा, जाणि वऽण्णाणि एवमादीणि बूया । तत्थ गुलोपलद्धीयं गोलिकं बूया । लोणोपलद्धीयं लोणितकं बूया ।
[भक्खोपलद्धीयं] भक्खगतं बूया । आधायणेणं अलवणमगोलिकं बूया । इति भक्खगयं ।

तत्थ लेज्झगते पुव्वाधारिते लेज्झगतं दुविधमाधारये—पाणजोणीगतं मूलजोणीगतं चेति । तत्थ जधुत्ताहिं पाणजोणीयं
उवलद्ध्वाण पाणजोणीगतं लेज्झगतं उवलद्ध्वं भवति । तत्थ लेज्झं वा पाणजोणीगयं घयं नवणीयं वसा मधुं ति
यधुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलद्ध्वं । इति पाणजोणीगतं लेज्झं । तत्थ जधुत्तायं मूलजोणीयं उवलद्धीयं मूलजोणीगतं
20 लेज्झं उवलद्ध्वं भवति । तत्थ मूलजोणीगते लेज्झे पुव्वाधारिते फाणितं वा कक्कबं वा तिलक्खली वा पलालं
वा तंबारागो वा लेज्झचुण्णं वा बूया । तत्थ गुलोवलद्धीयं कक्कबं वा फाणितं वा उवलद्धयं भवति । तिलोवलद्धीयं
पलालं वा तिलक्खली वा उवलद्ध्वा । एवं कटुकेसु रागलेज्झा उवलद्ध्वा भवति । इति भोयणं भक्खं लेज्झं
पाणं चउव्विहमवि समणुगतत्वं भवति ॥

॥ इति भोयणो नामाज्झायो चत्तालीसइमो सम्पत्तो ॥ ४० ॥ छ ॥

[एगचत्तालीसइमो वरियगंडियज्झाओ]

25

णमो भगवतो महावीरवद्धमाणस्स । णमो भगवतो जंसवतो महापुरिसस्स महावीरवद्धमाणस्स । अहापुवं खलु
भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय वरियगंडिया नाम अरहस्समज्झायं । तं खलु भो ! तमणुवक्खस्सामो । तं
जधा—तत्थ रतं ण रतं ति पुव्वमाधारयितत्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे णिद्धामासे छिद्धामासे अतिमासे सव्वपारगते
भीते ण रतं ति बूया । तत्थ बज्झामासे चलामासे लुक्खामासे च ण रतं ति बूया । तत्थ सव्वअब्भंतरगते

१ मोरेंडं हं तं ॥ २ पोवलिके वा हं तं विना ॥ ३ पूणफेणके हं तं विना ॥ ४ वेल्लतिकाओ
वा पत्तभज्जियाणि वा उल्लोपिकाओ वा हं तं ॥ ५ मंडिल्लिका हं तं विना ॥ ६ व दीवलिकं हं तं विना ॥
७ मच्छत्तकं हं तं ॥ ८ अहायणेणं हं तं ॥ ९ णामाध्यायो हं तं विना ॥ १० वसवओ हं तं ॥
११ स्सामि हं तं ॥ १२ माहारियय्वं हं तं ॥ १३ व्वसंपारं हं तं विना ॥

सव्वमल्लगते ससगते पुक्खरगते गीत—वादितगते संलाव—हसित—तालगते चुंबिता—ऽऽलिगित—पाण—भोयण—भक्ख—
लेज्झगते सयणा—ऽऽसणगते य रतं ति बूया । विक्कणिते णिक्कणिते छिविते जंभिते णिट्ठुभिते अविमुत्ते मल्ले वा भूसणे
वा पकिण्णे वा अपपातिते अपलोलिते ण रतं ति बूया । तत्थ पुण्णामेसु पुरिसेण रतं ति बूया, थोणामेसु थिया
रतं ति बूया, णपुंसकेसु चुंबित—आलिगितरतं ति, ण पुण सेवणरतं ति बूया । तत्थ रते पुव्वाधारिते पुण्णामेसु
अभारिकेण पुरिसेण रतं ति, थिया वा अपतिकाय । थोणामेसु सभारिकेण पुरिसेण रतं, थिया वा सपतिकाय । णपुंसकेसु 5
अणवत्थेण(वच्चेण) पुरिसेण रतं, थिया वा वंझाय ।

तत्थ तिविहं रतं—दिव्वं माणुस्सं तिरिक्खजोणियं चेति । तत्थ उद्धंभागेसु सिरोमुहे य एकस्सिकायं अंजलीकरणे
पायुकोपाहणाअधमुंचणे अभिवंदिते आसण—सयणसंपदाणे ण्हाणा—ऽणुलेवणे गंध—मल्लगते छत्त—भिगार—लाउल्लोपिके
वासकडक—लोमहत्ये जक्खोपयाणे समिधजोगपच्चपयणेसु य दिव्वं रतं ति बूया । तत्थ उद्धंभागेसु सुक्केसु अच्छराय रतं
ति बूया, थिया य वा देवेण रतं ति बूया । णिद्धेसु णागकत्राय रतं ति बूया, थिया वा णागेण रतं ति बूया । तिरियं भागेसु 10
किण्णरीय रतं ति बूया, थिया वा किण्णरेण रतं ति बूया । तत्थ तिरियजोणीगते विगताभिरामेसु य हस्सेसु पिसायीअ रतं
बूया, थिया वा पिसाएण रतं ति । दारुणेसु रक्खसीअ रतं ति बूया, थिया वा रक्खसेण रतं ति बूया । सव्वगंधव्वेसु
गंधव्वीय रतं ति बूया, थिया वा गंधव्वेण रतं । अधोभागेसु असुरकत्राय रतं ति, थिया वा असुरेण रतं ति बूया । तत्थ
दुपदजोणीगते सव्वअज्जीवगते विंयाकरणे मतकपडिमाय रतं ति बूया । असारेसु पत्थिवपडिमाय रतं ति बूया । सारवत्तेसु
मुत्तिकापडिमाय रतं ति बूया । पुधूसु चित्तपडिमाय रतं ति बूया । इति दुपदजोणी अज्जीवा । 15

तत्थ तिरियजोणीगते तिरियजोणीरतं ति बूया । तं दुविधं—सागुणं वा चतुप्पदं चेति । [तत्थ] उद्धंभागेसु
सव्वसगुणपाउब्भावगते य सगुणीय रतं बूया । चित्तसिहे कक्कडीयं रतं बूया । अमधुरघोसेसु टिट्ठिभीय रतं ति बूया ।
चित्ते असिहे पारेवतीय रतं ति बूया । विगतदारुणेसु छिन्नगालीय रतं । इति पक्खिगतं रतं ति । तत्थ सव्वचतुप्पदेसु
चतुप्पदेण रतं बूया । तत्थ सव्वसिगिणं य सव्वसिगीकोसीधण्णगते य गो—महिस—अयेलकेण रतं ति
बूया । मज्झिमकायेसु गो—महिसेण रतं ति बूया । मज्झिमाणंतरकायेसु अयेलकेण अस्सतरीहिं वा रतं ति बूया । 20
दारुणेसु सुणिकाय रतं ति बूया । साधारणेसु वराहीय रतं ति बूया । वायव्वेसु वलवाय रतं ति बूया । विण्णतेसु
उट्ठीय रतं ति बूया । फरुसेसु गद्दभीय रतं ति बूया । चित्तेसु गावीय रतं ति बूया । कण्हेसु महिसीय
रतं ति बूया । इति चतुप्पयगतं रतं ति ।

तत्थ माणुसं तिविधं—थिया पुरिसा णपुंसका चेति । थोमाणे थिया रतं, पुण्णामेसु पुरिसरतं ति बूया, णपुंसकेसु
णपुंसकरतं ति बूया । तत्थ रतं दुविधं—विगतं अविगतं चेति । तत्थ माणुसेसु माणुसं उद्धंभागेसु उवरि गीवाय पासितं 25
विज्जा । तत्थ सव्वसयणा—ऽऽसणगते परिधाण—पादकलापक—पादकिकणिका—खत्तिर्य—धम्मक—पायुकोपाणह—सव्व—
जाणगते सव्वजाणोवकरणे य माणुसं रतं बूया । तत्थ सव्वमल्ल—मुकुडउद्धगते कूचफणलीखावण—ण्हाण—पधोवण—
विसेसिकिया—ओकुंतणक—हरिताल—हिगुलक—मणसिल—अंजण—चुण्णक—अलत्तक—गंध—वण्णक—कण्णसोधणक—अंजणी—
सैलाका—कुच्चठावण—कुंच—सूची—धूपण—गंधविधि—सव्वआहारगते सव्वभोयणगते भोयण—भायणगते भक्ख—हरित—
पुप्फ—फलगते सासा—सम्मिका—वतंसक—ओवास—कण्णपीलक—कण्णपूरक—णंदीविणंद्धक—कुलीयंधक—तिलक— 30
कुंडल—वल्लिका—तलपत्तक—मधुरक—मुहवासक—चंद—सुज्ज—णक्खत्त—गह—तारागण—पडिरूवसहपादुब्भावे भुत्तपीते
चेति एवंविधसहपादुब्भावे पासियं बूया । तत्थ माणुस्सरतं पुव्वाधारितं उद्धितं अवेट्ठं वेति । तत्थ उद्धंभागेसु

१ सु आभिसारिकेण हं० त० विना ॥ २ सुभसारिकेण हं० त० ॥ ३ सपालिकाय हं० त० विना ॥ ४ वखजोणियगं
हं० त० ॥ ५ एकम्मिकायं हं० त० ॥ ६ पाउको हं० त० ॥ ७ य सहस्से हं० त० विना ॥ ८ हस्तचिह्नान्तगतः पाठः
हं० त० एव वर्तते ॥ ९ तथ चउप्पदजो हं० त० ॥ १० विद्यागरे मत हं० त० ॥ ११ सु मच्छिका हं० त० ॥
१२—१३ हस्तचिह्नान्तगतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ १४ यचम्मक हं० त० ॥ १५ सक्रियाउक्ततूणक हं० त० ॥
१६ सलाकीकुच्च हं० त० विना ॥ १७ णट्टककुरीएवतिलक हं० त० ॥ १८ महवासक—चंदमुहणखगहलरोगहणपडि
हं० त० ॥ १९ चंद—सज्जु—णक्खत्तह—गह हं० त० विना ॥ २० पोसितं हं० त० ॥ २१ उद्धितं अवेट्ठं हं० त० ॥

उस्सितेसु य उट्ठिताय रतं ति बूया । तत्थ सव्वसयणासणगते जाणि वऽण्णाणि माणुसस्स रतस्स पुव्वलिगाणि एतेसु
 उवविट्ठाय रतं ति बूया । सव्वसयणासणगते संविट्ठाय रतं ति बूया । सव्व-वस्सयगते अवत्थट्ठाय रतं ति बूया ।
 संविट्ठस्ते पुव्वाधारिते दक्खिणेसु य गतेसु दक्खिणाय विलोकिते दक्खिणे यावि सद्धम्मि पडिरूवम्मि दक्खिणे दक्खिणेण
 पस्सेण रतं ति बूया । वामेसु य गतेसु वामम्मि य विलोकिते वामे पसारिते यावि वामम्मि पडिपोगले वामेण
 5 रतं ति बूया । तत्थ पट्ठीयं सयणासणगते उक्कुज्जभायणम्मि वत्थे वा सद्-रूव-गंधपादुब्भावे वा एवंविधे तुत्ताणाय
 रतं ति बूया । तत्थ णिकुज्जे सयणासणे णिकुज्जभायण-भूसणे वा वत्थे वा सव्वम्मि व पडिगते णिकुज्जे य
 सद्-रूवपादुब्भावे वा णिकुज्जाय रतं ति बूया । तत्थ सव्वचतुप्पदगते अधोभागेसु संधीसु बाहिरेसु ओणते ओलोइते
 ओसन्ने चेव एवंविधसद्-रूवपादुब्भावे ओणताइ रतं ति बूया । तत्थ उव्वारितेसु गतेसु विसारितेसु गतेसु उब्भाय रतं
 ति बूया । तत्थ एक्केकेसु गतेसु एक्काभरणे एक्कोपकरणे एक्ककपरमासे एक्कसाहागते चेव एक्कभग्गायं
 10 रतं ति बूया । पैसल्लिएसु उप्पाएसु पडिरूवेसु पैसल्लिएसु पसल्लियवेलुफालिय रतं ति बूया । तत्थ उत्ताणरतं तिविहं-
 उभयोसंविट्ठं अद्धसंविट्ठं एक्कापविट्ठं ति । तत्थ सव्वापस्सिते उभयोसंविट्ठरतं, उरोपविट्ठेसु अद्धसंविट्ठरतं, उद्धभागेसु
 उपविट्ठरतं । तत्थ पणतं तिविधं-कडीगहितं चतुप्पदरतं रधजातं ति । तत्थ जाणगते आसणगते पादगते जहण्णे पगते
 अधोणाभीय गत्तामासे य कडीगहिताय रतं ति बूया । तत्थ सव्वत्थरणगते सव्वचतुप्पयगते य चतुप्पयरतं ति बूया ।
 तत्थ सिरोमुहोपकरणे सव्वआहारगते य रधप्पयातकं वा रतकं [ति] बूया । तत्थ उपविट्ठरतं चतुर्विधं-सयणावत्थद्धं
 15 आसणावत्थद्धं साहावत्थद्धं वक्खावत्थद्धं चेति । तत्थ स[य]णोपकरणोपलद्धीयं च सयणावत्थद्धरतं ति बूया ।
 सव्वासणगते कडीयं वा आसणावत्थद्धरतं ति बूया । सव्वसाहागतेसु साहाअवस्सिताय रतं ति बूया । सव्वमूलगते
 सव्वमूलजोणीगते अस्सेसु वक्खेसु वक्खावत्थट्ठाय रतं ति बूया ।

तत्थ एकामासे एक्कोपकरणे एकचरेसु सत्तेसु एकपादुब्भावे य सद्-रूवाणं एक्कसि रतं ति बूया । तत्थ सामाणेसु
 गतेसु यमलाभरणके मिधुणचरेसु सत्तेसु बिसद्-रूवपादुब्भावे बिक्खुत्तो रतं ति बूया । तत्थ भुयंतरेसु नासातिके वत्थीसीसे
 20 तालुके हणुसंधिसु विकूणिए णिकुज्जे कांसिते छिविते जंभिते ओणामिते णिम्मज्जिते ओलोकिते तिके सिंघाडके
 सव्वतिकसद्-रूवपादुब्भावे य तिवक्खुत्तो रतं ति बूया । तत्थ पादतल-करतलेसु चतुरस्सेसु चउकेसु चतुरंगुलिगहणे
 हसिते आविद्धमल्ल-भूसणे उवसक्किते उवेट्ठे सव्वभोयण-सयणा-ऽऽसणचउरस्से पैच्छेलिते आलिगिते चुंबिते भुत्ते पीते
 चतुप्पदोपकरणे चतुप्पदणामधेज्जे थी-पुरिसगते चतुप्पदरूवपादुब्भावे चतुक्खुत्तो रतं ति बूया । तत्थ हत्थ-पाद-जाणु-
 सैमामासे मुट्ठीकरणे हत्थाभरणे पंचकसद्पादुब्भावे य पंचक्खुत्तो रतं ति । तत्थ गंड-मणिबंध-गुप्फामासे तिजमलोदीरणे
 25 एक्केके पंचकसहिए छक्कसद्पडिरूवगते य छक्खुत्तो रतं ति । तत्थ छसु वा एक्कसहिएसु पंचसु वा दुगसहिएसु चउसु
 वा तिगसहिएसु दोसु वा तिगेसु एक्कगसहिएसु तिसु दुगेसु एक्कगसहिएसु सत्तए वा सद्-रूवपादुब्भावे
 सत्तक्खुत्तो रतं ति बूया । तत्थ ललाडमज्जे उरमज्जा एक्केकअट्ठकोदीरणे अट्ठके वा आमाससद्-रूवपादुब्भावे अट्ठक्खुत्तो
 रतं ति बूया । तत्थ चउक्क-पंचकोदीरणे तिक-छक्ककोदीरणे बिक-सत्तकोदीरणे एक्क-अट्ठकोदीरणे णवसद्-रूवपादुब्भावे
 वा णवक्खुत्तो रतं ति बूया । तत्थ सिरो-पाद-अंजलिकरणे कच्छभकरणे पादसमाणणे जमलपंचकोदीरणे चउक्क-छक्कको-
 30 दीरणे एक्क-णवकोदीरणे तिअ-सत्तकोदीरणे बियअट्ठकोदीरणे दसए वा आमासद्-रूवपडिपोगलपादुब्भावे दसक्खुत्तो

१ दक्खिणे य हं० त० ॥ २ वामंसि य हं० त० ॥ ३ ओवारितेसु हं० त० ॥ ४ एक्कभग्गायं हं० त० ॥
 ५ पस्सत्तिएसु तुप्पाएसु हं० त० ॥ ६ पस्सल्लि सं ३ पु० ॥ ७ यावकवारयं बूया हं० त० ॥ ८ साधाव हं० त० ॥
 ९ तत्थासणोप हं० त० विना ॥ १० वसिवाय हं० त० ॥ ११ असेसु हं० त० विना ॥ १२ सु अवत्थ सप्र० ॥
 १३ कसिए विधिए जं हं० त० ॥ १४ सु वत्थर सं ३ पु० ॥ १५ पवेलिते सं ३ पु० ॥ १६ समामासासे
 तुट्ठी सं ३ पु० ॥ १७ गंधमणि हं० त० विना ॥ १८ पंचकसद्पादुब्भावे छक्क हं० त० विना ॥ १९ हस्तचिह्नान्तर्गतः
 पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २० पडिपुण्णपाठ हं० त० विना ॥

रतं ति बूया । अतो उद्धं अण्णेण समाजोगेण विकप्पणाय आमास—सद्—रूव—पडिपोगलपाउब्भावेहि गणणापरिसंखाणि रतेसु वा जोजयितव्वं भवति ।

तत्थ विगतेण बीभत्थेण परिमंडले गुदे रतं ति बूया । परिमंडले णाभीय रतं ति बूया । उण्णते थणंतरे रतं ति बूया । हत्थगते थिग्गलगते य पाणिणा रतं ति । इति विगतस्ताणि । तत्थ उवाएसु उवाताय रतं, सामेसु सामाय रतं, कण्हेसु कालिकाय रतं, दीहेसु दीहाय रतं, रस्सेसु रस्साय रतं, थूलेसु थूलाय रतं, किसेसु किसाय 5 रतं । बालेसु बालाय रतं, वयत्थेसु वयत्थाय रतं, मज्झिमेसु मज्झिमाय रतं, महव्वयेसु महव्वयाय रतं । बंभेज्जेसु बंभणीय रतं, खत्तेज्जेसु खत्तिकाय रतं ति बूया । वेसेज्जेसु वेस्सीय रतं, सुदेज्जेसु सुदीय रतं, मूलजोणीगते कसिगोरक्खभज्जाय रतं, दढेसु कारुकभज्जाय सह रतं, थलेसु ववहारीभज्जाय सह रतं । पुण्णामेसु सपतिकाय सह रतं, थीणामेसु ससपतिकाय सह रतं, णपुंसकेसु पउत्थपतिकाय सह रतं । दढेसु अविधवाय सह रतं, अमुक्काय अवट्ठिताय सह रतं, चलेसु अणवत्थिताय सह रतं चलचित्ताय ति । णिद्धे उदुणीय सह रतं, ७ चु(लु)क्खेसु अणुदुणीय 10 सह रतं, ति बूया, लुक्खाय विसदाय [व] रतं बूया । ८ कण्हेसु दुस्सीलाय सह रतं, तणूसु सुक्केसु अद्धसंवुताय रतं । अब्भंतरेसु अब्भंतराय सकाय थिया रतं, बाहिरेसु परभज्जाय रतं ति, बाहिरब्भंतरेसु मित्तभज्जाय सह रतं ति बूया । रायचिधेसु पडिरूवेसु रायपुरिसपडिरूवेसु य रायपुरिसपडिपोगले य रायपुरिसभारिकाय सह रतं । जस्स जं चिधं पडिपोगलपडिरूवं वा तेण तस्सोवजीवकभारिकाय सह रतं । ९ णौहारे परिचारिकाय सह रतं । १० गहणेसु परूढणख—कक्खरोमाय रतं, उपगगहणेसु अचिरपरूढनह—रोमाय रतं, आकासेसु रमणीयेसु सुपरिमज्जितणह— 15 कक्ख—वत्थिसीसाय रतं ति बूया । पुधूसु पुधुउपधाय रतं, संखितेसु संखितभगाय सह रतं, परिमंडलेसु परिमंडलभगाय सह रतं, चउरस्सेसु चउरस्सभगाय, ११ तिअंसेसु १२ तिअंसभगाय सह रतं । असंखतेसु अमेहलाय रतं, संखतेसु समेहलाय रतं । कण्णयेसु कुमारीय सह संकेतो ति, जुवतेयेसु जुवतीय १३ सह १४ रतं ति, अतिवत्तेसु विविधाय रतं । १५ उताणेसु १६ उताणभगाय सह रतं, णिण्णेसु णिण्णभगाय सह रतं । पसण्णेसु पसण्णाय सह रतं, अपसण्णेसु कुद्धाय रतं । सद्देयेसु चित्ताय वा मुदिताय वा विस्सुयकित्तीय वा पक्खाताय वा सह रतं ति बूया । दंसणीयेसु 20 सुरूवेसु दंसणीयरूवसंपण्णाय सह रतं, गंधेयेसु सुगंधाय ण्हाणा—ऽणुलेवण—मल्ल—गंधसंपुण्णाय सह रतं ति बूया । रसेयेसु मधुराय मधुरलवणाय रतिरसगुणसमण्णागयाय बहुभक्ख—पेय—रसगुणसमण्णागतं रतं ति बूया । फासेज्जेसु फासाय फासगुणसमण्णागतं रतं । मणेयेसु इट्ठाय थियाय सह रतं, भुमकाय भिउडीरतं, अक्खिसु णिकाणितं बूया, मुहे चुंबितं बूया, ओट्टेसु खयं बूया, बाहूसु आलिंगियं बूया, उच्छंणेसु उपविट्ठं बूया, णहेसु णक्खपदं बूया, दंतेसु दंतपरिमंडलं दंतखयं वा बूया । तणेसु खयं बूया, समेसु धोसवंतेसु य गीतरतं बूया, सद्देयेसु हसियं बूया, आहारोपगएसु आहारियं 25 बूया, णिमिसिएसु कण्हेसु पुसुयं बूया, तिक्खेसु सोणियओघायणं बूया, तुच्छेसु सुद्धाय रतं बूया, कण्णेसु पडियाय रतं बूया, अप्सण्णेसु विवादं बूया, अभिकामेसु रतं बूया ।

तत्थ काले पुव्वाधारिए कंसि काले रतं ? ति—कण्हेसु रत्तिरतं ति, सुक्केसु दिवा रतं ति बूया, सामेसु संझाकाले रतं बूया, कण्हेसु आदिमूलीयेसु पदोसे रतं, सुक्केसु आदिमूलीयेसु अवरणहेसु रतं, सुक्कमज्झविगाढेसु मज्झंतियए रतं बूया, कण्हेसु मज्झविगाढेसु अद्धरते रतं, सुक्केसु अंतेसु अवरणहे रतं बूया, कण्हेसु खंतेसु पच्चूसे रतं । 30

तत्थ आधारयितू आधारयितू स्यण(णि)रतं ति केण वा सह रतं ? देवेण वा देवीय वा ? मणुस्सेण वा मणुस्सीय वा ? तिरिक्खजोणिएण वा तिरिक्खजोणीगीय वा ? किंजातीयेण किरूवेण किंवयेण किअलंकारेण किंसील—भावा—

१ बालायेसु हं० त० विना ॥ २ हस्तचिह्नन्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ३ ७ १० एतच्चिह्नन्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ४ पहिड्डाय रतं हं० त० ॥ ५ सु कट्ठाय हं० त० ॥ ६ बूया, अद्धेसु हं० त० विना ॥ ७ सिए कण्णेसु भुसुनं बूया हं० त० ॥ ८ कण्हेसु सि० ॥ ९ भिक्खामे सि० ॥ १० मूलेसु हं० त० विना ॥ ११ सु अंतेसु पं हं० त० विना ॥ १२ रयित्तु आधारयित्तु रयं हं० त० विना ॥ १३ जाईतेण हं० त० विना ॥

५५ चारेणं ? कधं सेवितं सेवणागास्-विगता-विगतसेवणा व त्ति ? कंसि देसंसि आसण-संयण-अवस्सयविधीसु वा ? गीत-वाइत-हसित संलाविय-आलिगित चुंबिय-णहदंतकेसगहण-आगारविगारविधीहि वा सद्-रूव-रस-गंध-फास-पडिभोग-इट्ठा-णिट्ठबहुलेति वा ? सम्मोइ-विगह-अभिप्पेत-अणभिप्पेय-पडित-मुट्ठय-अणुलोम-अणुल्लोमरतादिकाणि वा ? विविधाणि रताणि केवतिखुत्ते वा ? कंसि वा कालंसि रतं ति ? एताणि सव्वाणि 5 ठाणाणि अणेगेविधभेद-गमाणि जधुत्ताहि उवलद्धीहि उवलद्धव्वाणि भवन्ति । आमास-सद्-रूव-रस-गंधपडिपोगलेहि सव्वाणि अणुगंतव्वाणि भवन्ति ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय रहस्सपडलो णामज्झाओ
एगतालीसइमो सम्मत्तो ॥ ४१ ॥ छ ॥

[बायालीसइमो सुविणज्झाओ]

णमो महावीरवद्धमाणाय । णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय
10 अंगविज्जाय सुविणो णामज्झायो । तं खलु भो ! वक्खस्सामि । तत्थ दिट्ठो सुविणो ण दिट्ठो अवत्तदिट्ठो सुविणो
ति पुव्वमाधारयियव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पयलाइए पसुत्ते चक्खुपरामासे ति
दिट्ठं वत्तं सुविणं ति बूया । तत्थ बज्झामासे चलामासे लुक्खामासे कण्हामासे ण दिट्ठो सुविणो ति बूया । तत्थ
बाहिरब्भंतरम्मि दढचलम्मि णिद्धलुक्खम्मि णीहाराहारमिति अव्वत्तं दिट्ठं सुविणं ति बूया । तत्थ चक्खुम्मि सव्वदंसणीयेसु
य सव्वपभागएसु य सव्वणयणोवभोगेसु य दिट्ठं सुविणं बूया । सुभेसु सुभं असुभेसु असुभं दिट्ठं सुविणं बूया ।
15 तत्थ कण्हेसु उक्कुट्ठे अप्फोडिए किलकिलायिए मेघंडयकायण-आभरण-हिरण-गीय-वाइय-तंती-तल-
ताल-सव्व-आउज्जगते सव्वसद्दोवलद्धीयं तत्थेऽक्खरोपपत्तिमुपलभते तत्थ सुविणे सुतं बूया, इट्ठे इट्ठं सुतं बूया, अणिट्ठेसु
अणिट्ठं सुयं बूया । तत्थ णासायं उस्सिधिते णिस्सिधिते णत्थोक्कम्मव्वमणत्ते सव्वगंधागते सव्वगंधजोणीगते
सव्वगंधजोणीपडिरूवगते य घातं गंधं सुविणे बूया, सुभेसु सुभं गंधं घाणं बूया, असुभेसु असुभं गंधं घाणं बूया । तत्थ
दंतोट्ठ-जिब्भा-तालु-गले-कवोलपरिमासे दट्ठे कित्तिणिगिण्हे अस्साविते संसाविते परिलीढे णाभी-उदरुच्छं-कुक्खि-
20 पस्स-उदरपरामासे सव्वआहारगते सव्वआहारपडिरूवगए या आहारितं सुविणे बूया, सुभेसु सुभं आहारितं, असुभेसु असुभं
बूया । णासातिमासे तत्थ सव्वफासगते सव्वतयागते सव्वसयणाऽऽसणगते सव्वफासपडिरूवगते य फासगतं सुविणं
बूया, सुभेसु सुभं फासं असुभेसु असुभं बूया । तत्थ कण्णातिमासे णासाति[मासे] णयणातिमासे मुहातिमासे दंतंतरातिमासे
णक्खन्तरातिमासे संबाधंतरातिमासे अब्भंतरातिमासे किलिंवरणसव्वछिदपरामासे सव्वरतपडिरूवे य रतं सुविणं बूया ।
सव्वजाणगते सव्ववाहणगते सव्वचलेसु य जाणं सुविणं बूया । उम्मज्जितेसु चलामासेसु आरूढं सुविणे बूया । उम्म-
25 ज्जितेसु चलेसु ओरूढं बूया । सव्वचलामासेसु जंगमेसु य सत्तेसु जंगमं सुविणं बूया । जलामासेसु सव्वजलचर-
पडिरूवगते य जलचरदिट्ठं सुविणं बूया । उद्धभागेसु सव्वदिव्वपडिरूवगते य दिव्वं दिट्ठं सुविणं बूया । उज्जुभागेसु
सव्वमाणुसपडिरूवगते य माणुसं दिट्ठं सुविणं बूया । तिरियभागेसु सव्वतिरिक्खजोणीपडिरूवगते य तिरिक्खजोणियं

१ 'सयवस्सवधी' हं० त० विना ॥ २ 'हुणेतो वा' हं० त० ॥ ३ 'स्ताणि वा' हं० त० ॥ ४ 'कस्सि वा' हं० त० ॥
५ 'गविट्ठिभेद' हं० त० ॥ ६ 'पडलं णामज्झायो एगचत्तालीस' हं० त० विना ॥ ७ 'वन्नयिस्सा' हं० त० ॥
८ 'णो [त्ति] ति विहमा' हं० त० ॥ ९ 'दिट्ठवत्तं' हं० त० विना ॥ १० 'उक्कुट्ठेसु' हं० त० विना ॥ ११ 'घडयकायणभारण्णहि'
हं० त० ॥ १२ 'सि० विनाऽन्यत्र-तथ खरो' हं० त० । 'तथ करो' सं ३ पु० ॥ १३ 'सुयतं' हं० त० ॥ १४ 'म्मधूमणेत्ते'
हं० त० विना ॥ १५ 'रूवे य आ' हं० त० विना ॥ १६ 'ववण' हं० त० विना ॥

सुविणं दिट्ठं बूया । थीणा[मा]मासे थीणामामासेसु सव्वेसु सव्वत्थीपडिरूवगते य ॐ थीदिट्ठं बूया, ॐ पुण्णामेसु पुरिसदिट्ठं सुविणे बूया, णपुंसकेसु णपुंसकदिट्ठं बूया ।

तत्थ दिव्वेसु पुव्वाधारितेसु देवो देवि त्ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ पुण्णामेसु देवो दिट्ठो सुविणे त्ति बूया । थीणामेसु दिव्वपादुब्भावेसु देवो दिट्ठा सुविणे त्ति बूया । देवोपलद्धीहि य सद्-रूवपादुब्भावेहि य णातव्वाणि भवन्ति । इति दिव्वोपलद्धिसुविणे दिट्ठा उपलद्धव्वा भवन्ति ।

5

तत्थ माणुसे पुव्वाधारिते माणुसा तिविधा, तं जधा—मता संपदा अणागतं त्ति । तत्थ पच्छिमेसु गतेसु ८० मतेसु ८० य मतं मणुस्सं सुविणे दिट्ठं बूया । वामदक्खिणेसु गतेसु वत्तमाणेसु य सद्-रूवेसु जीवन्तं मणुस्सं सुविणे दिट्ठं बूया । पुरिमेसु गतेसु अणागतेसु य सद्-रूवपादुब्भावेसु अणागतं मणुस्सं सुविणे दिट्ठं बूया । तत्थ तिविधा—थीओ पुरिसा णपुंसका इति । तत्थ थीणामे थियं बूया, पुण्णामेसु पुरिसं बूया, णपुंसकेसु णपुंसका विण्णेया । तत्थ थी—पुरिससिरोमुहामासे बंभणं सुविणे दिट्ठं बूया, बाहुअंतरेसु खत्तियं, पट्ठोदरे वेस्सं सुविणे दिट्ठं बूया, पाद— 10 जंघेसु सुद्धं दिट्ठं बूया । तत्थ वये पुव्वाधारिते पाद—जंघासु बालं दिट्ठं बूया, बाहुसु अंतरसे य मज्झिमवयं दिट्ठं बूया, सिरोमुहे महव्वयं दिट्ठं बूया । अवदातेसु अवदातवण्णं दिट्ठं बूया, सामेसु सामवण्णं दिट्ठं बूया, कण्हेसु कालकं दिट्ठं बूया, ठियामासेसु मिस्सकेहि तधावण्णसाधारणं दिट्ठं बूया । तत्थ ठाणे पुव्वाधारिते उद्धं णाभीय अज्जवाणं इस्सरं दिट्ठं बूया, अधत्था णाभीयं उवरिं जाणूसु अवत्तपेस्सं दिट्ठं बूया, पाद—जंघासु पेस्समेव दिट्ठं बूया, ॐ पौदेसु दासं दिट्ठं बूया, ॐ उवरिं थणेहि अधत्था गीवाय अज्जवाणं विसिट्ठं बूया । जो तु गुरुत्थाणे उवरि गीवाय 15 अधत्था भमुहाय अज्जवाणं गुरुत्थाणीतं दिट्ठं बूया, एताणं उद्धं गुरुणो गुरुदिट्ठं बूया । वामेसु पुण्णामेसु थीसणामं दिट्ठं बूया, वामेसु थीणामेसु थीसामण्णयं थीगमेव दिट्ठं बूया, दक्खिणेसु पुण्णामेसु पुरिससामण्णयं पुरिसं बूया, दक्खिणेसु थीणामेसु पुरिससामण्णयं महिलं बूया । पुरिसणामे पुरिसणामेसु अधोभागेसु पुत्तं दिट्ठं बूया, पुरिसणामेसु पुरिसभागेसु पवत्तेसु उद्धंभागे पितरं बूया, पुरिसणामा पुरिसणामेसु पवत्तेसु समभागेसु भातरं बूया, पुरिसणामा थीणामेसु पवत्तेसु अधोभागेसु दुहितरं बूया, पुरिसणामा थीणामेसु पवत्तेसु समभागेसु भगिणि बूया, पुण्णामा थीणामेसु पवत्तेसु उद्धंभागेसु 20 मातरं बूया । थीणामेसु पवत्तेसु थीणामा उद्धंभागेसु थिया मातरं बूया, थीणामा थीणामेसु पवत्तेसु थीसमभागेसु थिया भगिणि दिट्ठं बूया, थीणामा थीणामेसु पवत्तेसु अधोभागेसु थिया दुहितरं बूया । तत्थ थीणामा पुण्णामेसु पवत्तेसु अधोभागेसु जामातरं बूया, तत्थ थीणामा पुण्णामेसु पवत्तेसु समभागेसु भगिणिपतिं दिट्ठं बूया, थीणामा पुण्णामेसु पवत्तेसु उद्धंभागेसु ससुरं बूया । थीसंसट्ठेसु आमासेसु पुणो पुणो आवर्लि बूया—थीसंसट्ठेसु पुण्णामेसु बाले बूया, अब्भंतरेसु अब्भंतरं दिट्ठं बूया, बाहिरब्भंतरेसु मित्तं दिट्ठं बूया, बाहिरबाहिरेसु जणं दिट्ठं बूया । इति मणुस्सं सुविणे 25 दिट्ठं आमास—सद्-रूवेहि बूया ।

तत्थ तिरिक्खजोणियं पुव्वाधारिते तिरिक्खजोणि पंचविधमाधारये, तं जधा—पक्खिगतं चतुप्पदगतं परिसप्पगतं जलचरगतं कीड—किविक्ख—दंस—मसगगतं त्ति । तत्थ उद्धं गीवाय सिरोमुहामासे उल्लेगिते उद्धंभागेसु सव्वसगुणगते सव्वसगुणोपकरणे सव्वसगुणमये उवकरणे सव्वसगुणोपकरणणामधेज्जे सव्वसगुणणामधेज्जे य थी—पुरिसगते एवंविधसद्-रूवपादुब्भावे सगुणं दिट्ठं सुविणं बूया । ते दुविधा—जलचरा थलचरा वेति । तत्थ आपुणेयेसु सव्वउदगचस्— 30 उदकोपकरणपादुब्भावे जलचरा दिट्ठा विण्णेया । लुक्खेसु थलेसु थलजेसु थलचरेसु थलोपकरणे थलोपकरण—थलज—थलचरणामधेज्जे सद्-रूवपादुब्भावे य थलजा पक्खी सुविणे दिट्ठा भवन्ति, सुभेसु सुभो असुभेसु असुभो पक्खी दिट्ठो भवति ।

१ हस्तचिह्नन्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २ सद्पडिरूवपा हं० त० । सद्रूवपडिरूवपा सि० ॥ ३ बाहुअंतं हं० त० ॥ ४ या, विसामा हं० त० ॥ ५ हस्तचिह्नन्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ६ सु सम हं० त० विना ॥ ७ सु मातरं हं० त० ॥ ८ ससरं हं० त० ॥ ९ उद्धंगण भासेसु हं० त० ॥

तत्थ चतुप्पदेसु चतुरस्सेसु चउक्केसु चतुप्पदउवकरणे चतुप्पयमये उवकरणे चउप्पयणामधेज्जउवकरणथी—पुरिस—सद्दपादुब्भावे चतुप्पदं दिट्ठं सुविणे बूया । ते दुविधा—थलजा जलजा चेति जधुत्ताहि उवलद्धीहि उवलद्धव्वा भवन्ति । ते तिविधा पुणरवि उवलद्धव्वा—गम्मा गम्मारण्णा आरण्णा चेति । ते यधुत्ताहि उवलद्धीहि उवलद्धव्वा भवन्ति । संठाण—वण्ण—घोस—आहार—परिभोगविधीहि य उवलभिउं सुविणे दिट्ठं बूया ।

5 तत्थ दीहेसु चलेसु तिरियभागेसु य सव्वपरिसप्पगते सव्वपरिसप्पउवकरणगते परिसप्पमये उवकरणे परिसप्प—णामधेज्जे उवकरणे थी—पुरिससद्दपाउब्भावे वा परिसप्पं बूया । ते दुविधा—थलजा जलजा य । जधुत्ताहि उवलद्धीहि संठाण—वण्ण—संघात—घोस—विरिय—आहार—परिभोगविधीहि य उवलभिउं सुविणे दिट्ठं बूया ।

तत्थ अणूसु चलेसु सव्वखुद्दपाणेसु खुद्दपाणणामधेज्जे उवकरणे थी—पुरिसगते सद्—रूवपादुब्भावे य कीड—किविल्लग—दंसमसगे सुविणे दिट्ठं बूया । ते दुविधा—थलजा जलजा चेव । जधुत्ताहि उवलद्धीहि संठाण—वण्ण—घोस—पडिभोगविधीहि य उवलभिउं सुविणे दिट्ठं बूया । दिव्व—माणुस—तिरिक्खजोणियसाधारणोपलद्धीहि साधारणे दिट्ठे बूया । मिस्सगामासेहि दिव्व—तिरिक्खजोणिगेहि मिस्से दिट्ठे बूया ।

तत्थ रूवा—ऽरूवगते अज्जीवे सुविणे पुव्वाधारिते रूवगतं अज्जीवं तिविधमाधारये—पाणजोणीगतं मूलजोणीगतं धातुजोणीगतं । तत्थ चलामासे पाणजोणिगते पाणजोणीउवकरणे पाणजोणीमये उवकरणे ८१ पाणजोणी ८० णामधेज्जे उवकरणे थी—पुरिससद्दपाउब्भावे पाणजोणीगतं अज्जीवं रूवगतं सुविणे दिट्ठं बूया । तत्थ केस—मंसु—लोमगते सव्वमूल—जोणीगते मूलजोणीउवकरणे मूलजोणीणामधेज्जे उवकरणे थी—पुरिसगते य सद्—रूवपादुब्भावे वा मूलजोणीगतं अज्जीवरूवगतं सुविणं दिट्ठं बूया । तत्थ दढामासे सव्वधातुगते सव्वधातुजोणीगते य सव्वधातुजोणीउवकरणे धातुजोणीमये उवकरणे धातुजोणीउवकरणे धातुजोणीणामधेज्जे उवकरणे थी—पुरिसगते वा धातुजोणीगतं अज्जीवरूवगतं सुविणे दिट्ठं बूया ।

तत्थ सद्दगते सुविणे पुव्वाधारिते सद्दगतं सुविणं तिविधमाधारये, तं जधा—भासासद्दगतं आतोज्जसद्दगतं पराघातसद्दगतं चेति । तत्थ तिविधमाधारये—जीवसमाजुत्तं ८२ अज्जीवसमाजुत्तं ८३ जीवाजीवसमाजुत्तं चेति । तत्थ सद्देयेहि भासासद्दे आतोज्जसद्दे पराघाते य भेद—संघायसमुत्थितेहि सद्देहि पडिरूवेहि आतोज्जउवकरणपादुब्भावेहि य उवलभिउं सद्दगतं इट्ठा—ऽणिट्ठसद्दगतं सुविणं दिट्ठं बूया ।

तत्थ गंधगते सुविणे पुव्वाधारिते गंधगतं सुविणं दुविधमाधारये—सुभगंधं असुभगंधं चेति । तत्थ सुगंधपरामासे सुगंधसद्द—रूवपादुब्भावे य सुभं गंधं सुविणे घातं ति बूया । दुगंधपरामासे ८४ किंलिट्ठपरामासे ८० दुगंधसद्द—रूवपादुब्भावे य असुभं गंधं सुविणे घायं । तत्थ गंधं पुणरवि सुभाऽसुभं तिविधमाधारये—पाणजोणीगतं मूलजोणीगतं धातुजोणीगतं ति । तत्थ जधुत्ताहि पाणजोणी—मूलजोणी—धातुजोणीउवलद्धीहि उवलभिउं सद्द—रूवपादुब्भावेहि य तिविधजोणीयं गंधं सुभाऽसुभं सुविणे दिट्ठं बूया ।

तत्थ रसगते सुविणे पुव्वाधारिते ८५ रसगते ८० सुविणे तिविधमाधारये, तं जधा—पाणजोणिगतं मूलजोणिगतं धातुजोणिगतं । तत्थ जधुत्ताहि उवलद्धीहि तिविहजोणिओ रसो उवलद्धव्वो भवति । अव्वापण्णजोणीआमास—सद्द—रूव—पाउब्भावेण अव्वापण्णो रसो उवलद्धव्वो भवति सुभो । वावण्णजोणीआमास—सद्द—रूवपादुब्भावेण वावण्णरसो उवलद्धव्वो भवति असुभो । तत्थ रसं तिविधजोणीयं पुणरवि छविधमाधारये, तं जधा—तित्तकं अंबिलं लवणं कटुकं कसायं मधुरमिति । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे मधुरेसु य सद्द—रूवपादुब्भावेसु मधुरं बूया । तत्थ तिविधमासे दारुणामासे बज्झामासे कडुगेसु य सद्द—रूवपाउब्भावेसु कडुगं बूया । वावण्णेसु आमासेसु अंबिलेसु सद्द—रूवपाउब्भावेसु अंबिलरसं सुविणे सेवितं बूया । तत्थ णासापरामासे आसगपरामासे पोरुसपरामासे सव्वआपुणेयेसु अंसु—खेल—सिंघाणग—पस्सवण—

१ आरण्णा इति सि० एव वर्तते ॥ २ ८१ ८० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ४ रूवगतेहि सि० ॥ ५-६ ८१ ८० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ७ आमासजोणीआमास हं० त० ॥

सव्वसोयदूसिकापरामासे लवणरससदपादुब्भावे य लवणरसं सुविणे सेवितं बूया । तत्थ विमुत्तेसु विसयेसु परिवट्ठेसु य सव्वकसायसद—रूवपादुब्भावेसु कसायं रसं सुविणे पडिसेवितं बूया । तत्थ चलामासे अंतेसु य सव्वतित्तकसद—रूवपादुब्भावेसु य तित्तकरसं सुविणे सेवितं बूया । एवंविधजोणीयं रसं छव्विधं जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वं सुविणे दिट्ठं बूया ।

तत्थ फासगते सुविणे पुव्वाधारिते फासगतं सुविणं तिविधमाधारये, तं जधा—सज्जीवफासगतं १ अज्जीव-
फासगतं २ मिस्सकं जीवाजीवसंजुतं ३ चेति । तत्थ सज्जीवेसु चलामासेसु य सज्जीवसद—रूवपादुब्भावेसु य सज्जीवं ५
फासं [सुविणे सेवितं] बूया । अज्जीवेसु मयेसु य अज्जीवसद—रूवपादुब्भावे य अज्जीवं फासं सुविणे सेवितं
बूया । वामिस्सामासे सज्जीवअज्जीवेसु य सद—रूवपादुब्भावे मिस्सकं फासं सुविणे सेवितं बूया । तत्थ सज्जीवो
फासो दिव्व—माणुस्स—तिरिक्खजोणिकादीहिं जीवजोणीहिं उवलद्धव्वो भवति । अज्जीवो फासो अज्जीवोपलद्धीहिं
पाणजोणी—मूलजोणी—धातुजोणीआदीहिं उवलद्धव्वो । मिस्सको फासो मिस्सकोपलद्धीहिं मिस्सको उवलद्धव्वो भवति ।
तत्थ फासो पुणरपि अट्ठविधो उवलद्धव्वो, तं जधा—कक्खडो मउको गुरुको लहुको सीतो उसिणो णिद्धो लुक्खो १०
चेति । तत्थ दढामासे तिक्खामासे दारुणामासे सव्वकक्खडपडिरूव—सदपादुब्भावे कक्खडं फासं बूया । तत्थ मउकामासे
सव्वमउकसद—पडिरूवपादुब्भावे मउकं फासं सुविणे सेवितं बूया । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे उत्तमामासे सव्वसारगते
य सव्वसारमंतपडिरूव—सदपादुब्भावे गुरु—गारवसद—रूवपादुब्भावेसु य गुरुफासं सुविणे सेवितं बूया । तत्थ बज्झामासे
चलामासे तुच्छामासे जेहण्णामासे सव्वणीहारगते सव्वक—लहुस—तुच्छसारजम्मपडिरूव—सदपादुब्भावे य लहुकं फासं
सुविणे सेवितं बूया । तत्थ णिद्धामासे सव्वणिद्धफासपडिरूवसदपादुब्भावे णिद्धं फासं सुविणे सेवितं ति बूया । १५
तत्थ लुक्खामासे सव्वलुक्खपडिरूव—सदपादुब्भावे य लुक्खं फासं सुविणे सेवितं बूया । तत्थ सव्वआपुणेयेसु
सव्वसीयफासदव्वोपकरणे पडिरूव—सदपादुब्भावे सुपिहिं पागुए उवगूढे पाविविए लुक्खसिए हेमंतउज्जसदभयमाणेसु
य आहारोपकरण—सयणा—ऽऽसणपरिच्छदपरिभोगपादुब्भावेसु सद—रूवेसु य एवंविधेसु सीतं फासं सुविणे सेवितं बूया ।
तत्थ अगेयेसु सव्वअग्गिए १६ सव्वउसुमागए १७ सव्वउसुणागए सव्वउसुणसद—पडिरूवपादुब्भावे य उंसुणं फासं
सुविणे सेवितं बूया । एवं जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं सद—रूव—रस—गंध—फासगताहिं १८ सुंभा—ऽसुभाहिं आहारयिउं २०
सद—रूव—रस—गंध—फासगयाओ १९ सुविणे सेवणाओ विण्णेया भवंति । इति विसयगतो विण्णेयो सुविणो ति ।

तत्थ चलेसु णट्ठं वा पावासिकं आउरं वा सुविणे दिट्ठं बूया । तत्थ अब्भंतरेसु चलेसु य णट्ठं बूया । बाहिरेसु
चलेसु य पावासिकं दिट्ठं बूया । पुण्णामेसु पुरिसं दिट्ठं बूया । सम्मे सम्मदितेसु चलेसु आउरं दिट्ठं बूया । बद्धेसु बद्धं
दिट्ठं, मोक्खेसु मोक्खं दिट्ठं बूया । तणप्फय—कुक्खि—णाभि—उच्छंग—पोरुस—अंगुट्ठ—कणेट्टिकापरामासे पयासंतरेण दिट्ठं
बूया । २० पुण्णामेसु पुरिसं दिट्ठं बूया । थीणामेसु थियं दिट्ठं बूया । णपुंसकेसु णपुंसकं दिट्ठं बूया । दढेसु सारिउपकरणं २५
दिट्ठं बूया । २० कण्हेसु असारिउवकरणं दिट्ठं बूया । तंभेसु सुवण्णकं दिट्ठं बूया । सुक्के रुपं वा कौहावणे वा बूया ।
सुक्केसु दढेसु रुपं बूया । चित्तेसु सुक्केसु दढेसु य कौहावणे बूया । णपुंसकेसु णिरत्थकं सुविणं दिट्ठं बूया । णीहारेसु
हारिणं सुविणे दिट्ठं बूया । आहारेसु वद्धिं सुविणे दिट्ठं बूया । २१ वण्णउवलद्धीयं सव्ववण्णगए य रण्णं दिट्ठं
बूया । २२ णिण्णेसु णदि वा कूवं वा तलागं वा पुक्खरणिं वा वावि वा समुदं वा दिट्ठं बूया । २३ उवट्ठिसु कूवं दिट्ठं
बूया । २४ णिण्णेसु वित्थिण्णेसु सण्णिरुद्धेसु य तलागं दिट्ठं बूया । चउरस्सेसु मुदितेसु य पुक्खरणिं बूया । चउरस्सेसु ३०

१ 'सोयगदू' सं ३ पु० ॥ २ 'धो णातव्वो सि० ॥ ३ जण्हामा' हं० त० विना ॥ ४ सव्वलकलकुसतुच्छ-
सारजम्म' हं० त० ॥ ५ 'हिए सुवगूढे पधिगते उलुक्कुसिते हेमंतउज्जसद' हं० त० विना ॥ ६ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त०
एव वर्तते ॥ ७-८-९ उंसुण स्थाने हं० त० विना उंसण इति पाठो वर्तते ॥ १० हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥
११ २० २० एतच्चिह्नान्तर्गतः सन्दर्भः हं० त० नास्ति ॥ १२-१३ कहा' हं० त० विना ॥ १४-१५ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः
हं० त० एव वर्तते ॥ १६ 'सु विच्छेसु रुद्धेसु य हं० त० ॥

वावि बूया । महावकासेसु य समुद्दं दिट्ठं बूया । कसे सुतं वा अच्छादणं वा किसं वा थी-पुरिसं दिट्ठं बूया । तत्थ अज्जीवेसु केस-मंसु-लोमगतेसु सुतं वा तंतुवितं वा दिट्ठं बूया । तत्थ वित्थतेसु अत्थुतेसु परिहिते पाउते विट्ठणे व त्ति अच्छादणं दिट्ठं बूया । थलेसु उण्णतं वा पव्वतं वा दिट्ठं बूया । तत्थ महावकासेसु दढेसु य पव्वयं दिट्ठं बूया । गहणेसु अरण्णं वा पव्वतं वा बूया । तत्थ उण्णएसु गहणेसु पव्वयं बूया । णिण्णेसु कंदरं वा दरिं 5 वा बूया । समेसु समं गहणं दिट्ठं बूया । उपगगहणेसु आरामं वा वणराइं वा दिट्ठं बूया । परिमंडलेसु भायणं । पुधूसु किलंजं वा पुधविं वा दिट्ठं बूया । तत्थ पुधूसु दढेसु पुहविं बूया । जण्णेयेसु जण्णं वा वाधुज्जं वा दिट्ठं बूया । अग्गेयेसु अग्गिं दिट्ठं बूया । णिडेसु उदकं वा वुट्ठिं वा आहारं वा दिट्ठं बूया । तत्थ उवरिमेसु णिडेसु वुट्ठिं बूया । समभागेसु णिडेसु आहारं बूया । अधोभागेसु णिडेसु उदकं बूया । चउरस्सेसु चउप्पयं वा खेतं वा सुविणे दिट्ठं बूया । तत्थ चउरस्सेसु चलेसु चतुप्पदं बूया । चतुरस्सेसु दढेसु खेतं बूया । बज्जेसु पावासियं बूया । 10 पच्छिमेसु परस्स सुविणं दिट्ठं बूया । पुरत्थिमेसु अप्पणो सुविणं दिट्ठं बूया । बज्जभन्तरेसु अप्पणो य परस्स य सुविणं दिट्ठं बूया । पुणरवि आधारिते अतिकंतो सुविणो अणागतो वत्तमाणो त्ति । पुरत्थिमेसु अणागतं सुविणं बूया । पच्छिमेसु अतिकंतं सुविणं बूया । वामदक्खिणेसु गतेसु वत्तमाणं संपदाकालियं सुविणं अणंतरं दिट्ठं बूया । मतेसु मतकप्पं वा मतं वा दिट्ठं बूया । रुक्खेसु चोरियं दिट्ठं सुविणं बूया । वामेसु आभरणं दिट्ठं बूया । दीहेसु अडविं दिट्ठं बूया । हस्सेसु पुप्फफलं दिट्ठं बूया । रमणीयेसु इरिणं वा मट्ठं वा रमणीयं वा देसं दिट्ठं सुविणे बूया । 15 मुदितेसु उस्सयं वा समायं वा दिट्ठं बूया । दीणेसु उवसगं वा दणिं वा थी-पुरिसं दिट्ठं बूया । पेस्सतेसु उस्सयं वा वाधुज्जं वा दिट्ठं बूया । उद्धभागेसु दिव्वं दिट्ठं बूया । केण्णपधेसु सव्ववाहणगतं चतुप्पदं वा दिट्ठं बूया । तिखिणेसु जोग-खेमं दिट्ठं बूया । केस-मंसु-लोमगतेसु मूलजोणिगतं बूया । अंतेसु सव्वधेण्णगतं बूया । सामेसु संपयोगेसु मेधुणं दिट्ठं बूया । बालेयेसु बालं दिट्ठं बूया । जोव्वणत्थेसु जोव्वणत्थं दिट्ठं बूया । मज्झिमवयेसु मज्झिमवयं दिट्ठं बूया । मज्झिमसाधारणेसु मज्झिमसाधारणं दिट्ठं बूया । जधण्णेसु जधण्णं बूया । जधण्णसाधारणेसु जधण्णसाधारणं 20 बूया । तत्थ पुणरवि पुरत्थिमेसु अभिकंखितं दिट्ठं बूया । पच्छिमेसु अणुभुतं बूया । वामदक्खिणेसु उवभुज्जमाणं दिट्ठं बूया । पुणरवि पसण्णेसु सव्वसम्मोइगते य सम्मोइ सुविणं दिट्ठं बूया । विवादेसु दीणेसु सव्वविग्गहगते विग्गहं वा विवादं वा सुमिणे दिट्ठं बूया । उवहुतेसु सव्वछेज्जगते य छेज्जं बूया । अब्भंतरेसु अप्पणो सुविणं दिट्ठं बूया । बाहिरेसु बाहिरेण सुविणं दिट्ठं बूया ।

तत्थ कंसि देसे सुविणो दिट्ठो ? त्ति पुव्वमाधारिते अब्भंतरेसु अब्भंतरणगरे सुविणं दिट्ठं बूया । अब्भंतरब्भंतरेसु 25 अब्भंतरणिवेसणे सुविणं दिट्ठं बूया । बाहिरेसु बाहिरिकायं सुविणं दिट्ठं बूया । बाहिरबाहिरेसु बाहिरिकायं सुविणं दिट्ठं बूया ।

[तत्थ] दिसासु आधारितासु कंसि दिसायं दिट्ठो सुविणो ? तत्थ पुरत्थिमेसु पुरत्थिमायं दिसायं [दिट्ठो] सुविणो त्ति बूया । पच्छिमेसु पच्छिमायं दिसायं दिट्ठो सुविणो । दक्खिणेसु दक्खिणायं दिसायं दिट्ठो, वामेसु उत्तरायं । दिसाओ विदिसाओ य वामदक्खिणेहिं पुरत्थिमपच्छिमेहिं य साधारणेहिं णातव्वाओ आमासेसु भवंति ।

30 तत्थ काले पुव्वाधारिते कंसि काले दिट्ठो सुविणो ? त्ति । तत्थ कण्हेसु रत्ति सुविणो दिट्ठो त्ति । सुक्केसु सव्वप्पभागते य दिवा दिट्ठो सुविणो त्ति बूया । कण्हेसु आदिमूलेसु पदोसे सुविणो दिट्ठो त्ति । क[ण्हेसु] मज्झिमविगाढेसु अद्धस्तकालं दिट्ठो त्ति । कण्हेसु अंतेसु पच्चूसे सुविणो दिट्ठो । सुक्केसु आदिमूलेसु पुव्वण्हे सुविणो दिट्ठो त्ति बूया । मज्झिमविगाढेसु सुक्के मज्झण्हे दिट्ठो सुविणो त्ति । सुक्केसु अंतेसु अवरण्हेकाले दिट्ठो सुविणो त्ति बूया ।

१ वा कंसि वा हं० त० ॥ २ वा सव्वतं हं० त० विना ॥ ३ उस्सयं हं० त० विना ॥ ४ वा दिट्ठं णं वा हं० त० ॥ ५ पसंतेसु हं० त० ॥ ६ कण्हप हं० त० ॥ ७ व्ववण्ण हं० त० ॥ ८ रवि सस्सेसु सव्व हं० त० ॥ ९ हस्तचिह्नन्तर्गतः पाठः हं० त० एव वत्ति ॥ १० सप्पभा हं० त० ॥ ११ मज्झवि सि० ॥ १२ मज्झिमगा हं० त० ॥

एवं पक्खोपलद्धीहिं सुक्कपक्ख—कण्हपक्खा उवलद्धव्वा भवन्ति जधा पुंप्पमुदिट्ठं । उतुउपलद्धीहिं उदू उपलद्धव्वा छप्पि भवन्ति जधा पुंप्पमुवदिट्ठं । एवं सव्वाहिं आमास—सद्—रूव—रस—गंध—फासपडिरूवोवलद्धीहिं आधारयितुं सुविणे सव्वत्ताणुगंतव्वं भवति ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय सुविणो णामाज्झायो

बायालीसतिमो सम्पत्तो ॥ ४२ ॥ छ ॥

5

[तेयालीसइमो पवासज्झाओ]

णमो भगवतो जसवओ महापुरिसस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पवासो णामा-
ज्झायो । तं खलु भो ! वक्खस्सामि । तं जधा—तत्थ अत्थि पवासो णत्थि पवासो त्ति पुव्वमाहारियव्वं भवति ।
तत्थ बज्झामासे चलामासे सव्वणीहारगते सव्वमोक्खगते उवाहण—छत्तगते सव्ववाहणगते सव्वजाणगते पत्थित—पधित—
पधावितसव्वचतुप्पद—पक्खि—सिरीसिव—वारिचर—कीड—किविज्जगते उवाहणआबंधणे छत्तकगहणे तप्पण—कत्तरिका— 10
कुंडिकुक्खलिकापादुब्भावे पंथ—पवा—णदी—पव्वत—तलाग—गाम—णगर—जणपद—पट्टण—सन्निवेसे असमरंगावचर—पासंड—
दूतपरिधावके एवंविधसद्—रूवपाउब्भावे अत्थि पवासो त्ति बूया । तत्थ अब्भंतरामासे ददामासे सव्वआहारगते
सव्वसंबाधगते सव्वत्थावरगते सव्वणिवेसितगते सव्वअपरिधावकगते एवंविधसद्—रूवपादुब्भावे णत्थि पवासो त्ति बूया ।
तत्थ पाद—जंध—पादुकोपाणह—छत्तकएवंविधसद्—रूवपादुब्भावे पादेहिं पवासं गमिस्सति त्ति बूया । तत्थ उद्धभागेसु
चलेसु सव्वजाणगते सव्ववाहणगते सव्वजाण—वाहणोपगणगते जाणेण वा वाहणेण वा पवासं गमिस्सति त्ति बूया । 15
तत्थ मुदिणसु मुदितमाणसो पवासं गमिस्सति त्ति बूया ।

तत्थ पवासे पुव्वाधारिए दीहेसु दीहं पवासं गमिस्सति त्ति बूया । १ रस्सेसु रस्सपवासं गमिस्सति त्ति
बूया । २ पुण्णामेसु राजपोरुसेण पवासं गमिस्सति त्ति बूया । थीणामेसु थीपवासे लभिस्सति त्ति बूया । ३ पुंसकेसु
णिस्सत्थकं पवासं गमिस्सति त्ति बूया । ४ ददेसु तत्थेव गंतुं वाहिसि त्ति बूया । चलेसु खिप्पं पवासा आगमिस्सति त्ति
बूया । ५ विविधे चलामासे परेण परं गमिस्सति त्ति बूया । ६ सुक्केसु पवासे महंतं धणखंधं लभिस्सति त्ति 20
बूया । रतेसु पीतकेसु वा ददेसु सुवण्णलाभं पवासे लभिस्सति त्ति बूया । कण्हेसु परिकित्तेसं पवासे णिप्पलं पाविस्सति
त्ति बूया । आहारेसु कतकज्जो खिप्पं आगमिस्सति त्ति बूया । णीहारेसु अकतकज्जो चिरा आगमिस्सति त्ति बूया ।
थूलेसु णिव्वाधिको पंच्छतो पवासा आगमिस्सति त्ति बूया । कसेसु वाधिपरिकिट्ठो किसच्छदणो पवासा आगमिस्सति
त्ति बूया । गहणेसु अरण्णदेसं गमिस्सति त्ति बूया । उपगगहणेसु आरामबहुलं रमणीयं देसं गमिस्सति त्ति बूया ।
आगासेसु रमणीयदेसं गिरुक्खगं गमिस्सति त्ति बूया । परिमंडलेसु णगरं गमिस्सति त्ति बूया । तणूसु जणपदं 25
गमिस्सति त्ति बूया । मतेसु पवासे मरिस्सति त्ति बूया । उवहुते पवासे उवद्वं पाविस्सति त्ति बूया । बंधेसु
बंधं पाविस्सति त्ति बूया । मोक्खेसु पवासो असंगो भविस्सति त्ति बूया, पंथं खेमं गमिस्सति त्ति बूया । पसण्णेसु पवासे

१ पुव्वदिट्ठं हं तं ॥ २ पुव्वदिट्ठं हं तं विना ॥ ३ सव्वमणुं हं तं ॥ ४ वतो महावीरमहा सं ३ पुं ॥
५ व्वसोक्खं हं तं विना ॥ ६ गते वाहणछत्तगते सव्वं हं तं विना ॥ ७ हणे धपाणकोत्तं हं तं ॥ ८ पट्टणरज्ज-
रुपमुहट्ठाणेसु परिधां सिं ॥ ९ व्वणिवेसगते हं तं ॥ १० जाण—वाहणपवासं हं तं विना ॥ ११ हस्तचिहान्तर्गतः
पाठः हं तं एव वर्तते ॥ १२ १ २० एतच्चिहान्तर्गतः पाठः हं तं नास्ति ॥ १३ हस्तचिहान्तर्गतः पाठः हं तं एव
वर्तते ॥ १४ पच्छण्णो पं हं तं ॥ १५ णिरक्खमं गं हं तं विना ॥ १६ हं तं विनाऽन्यत्र—हुते हा.....बंधेसु
सं ३ पुं । हुते हाणि गमिस्सति त्ति सव्वया बूया बंधेसु सिं ॥ १७ पवासासंगो हं तं विना ॥

मित्तं पाविस्ससि त्ति बूया । अप्पसण्णेषु पवासे विग्गहं वा विवादं वा पाविस्सति त्ति बूया । उद्धभागेषु मूलेसु य पव्व[य]बहुलं देसं वेहायसं गमिस्ससि त्ति बूया । अद्धेहिमे णिण्णेषु य णिण्णं देसं अडवीबहुलं गमिस्ससि त्ति बूया । तुच्छेषु पवासे उड्डुज्झिहिसि त्ति बूया । पुण्णेषु पवासे परस्स हरितं धणं पाविस्ससि त्ति बूया । आपुण्णेषु पवासे अंतरा अधिवसिस्सति त्ति बूया । अग्गेयेसु पवासे आलीवणकं पाविस्ससि त्ति बूया । वायव्वेषु पवासे वाउव्वातिकं पाविस्ससि 5 त्ति बूया । जण्णेषु उस्सयं पाविस्ससि त्ति बूया, जिण्णुवबहुलं चेव देसं गमिस्ससि त्ति बूया । सद्देयेसु विस्सुयजणपदं गीत—वाइतबहुलं गमिस्ससि त्ति बूया । दंसणीयेसु बहुजणाभिप्पेतं दंसणीयजणपदं गमिस्ससि त्ति बूया । गंधेयेसु गंधुपयोग—गंधोपभोगबहुलं जणपदं गमिस्ससि त्ति बूया । रसेयेसु विविधपाधेज्ज—बहुअण्ण—पाण—रसिगपरिभोगं देसं गमिस्ससि त्ति बूया । फासेज्जेसु जाणगतो वाहणगतो वा उदुसुखं उदुसुहफासं देसं गमिस्ससि त्ति बूया । मण्णेषु णिव्वुतमणसो अभिज्जियणिव्वुतब[हु]लं देसं गमिस्ससि त्ति बूया । तिण्हेसु अंतरा संगामं पाविस्ससि त्ति बूया । दक्खिणेषु दक्खिणां 10 दिसायं पवासं गमिस्ससि त्ति [बूया] । दक्खिणपुरत्थिमेसु गत्तेसु दक्खिणपुरत्थिमायं दिसायं पवासं गमिस्ससि त्ति बूया । ०८ दक्खिणपच्छिमेसु गत्तेसु दक्खिणपच्छिमायं दिसायं पवासं गमिस्ससि त्ति बूया । १० पच्छिमउत्तरेसु गत्तेसु पच्छिमुत्तरायं दिसायं पवासं गमिस्ससि त्ति बूया । वामपुरत्थिमेसु गत्तेसु पुव्वुत्तरां दिसायं पवासं गमिस्ससि त्ति बूया ।

एवं सव्वदिसाओ आधारयितुं उवलद्धव्वाओ भवन्ति । जधाकालकालोपलद्धीहि आधारयितुं कालो पवासे विण्णेषो भवति । जधा लाभा—ऽलाभे जीवित—मरणे सुह—दुक्खे सुकाल—दुकाल—भया—ऽभयादी य भावा आमास— 15 सद—पडिरूव—रस—गंध—फासउवलद्धीहि ॐ आहारयितुं जहुताहि उवलद्धीहि ॐ पवासे सव्वे उवलद्धव्वा भवन्ति ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पवासो णामाज्झायो

तेयालीसइमो सम्मतो ॥ ४३ ॥ छ ॥

[चउयालीसइमो पवासद्धकालज्झाओ]

णमो भगवतो यसवतो महावीरवद्धमाणस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पवासस्स 20 अद्धाकालं णामाज्झायं । तं खलु भो ! वक्खायिस्सामि । तं जधा—

तत्थ पुरत्थिमायं दिसायं अव्वत्तसद्—रूवे वा अद्धमासे वा पवासं गमिस्ससि त्ति बूया । दक्खिणां दिसायं अव्वत्ते वा सदे वा रूवे वा पक्खगणणायं पवासं गमिस्ससि त्ति बूया । अव्वत्तेसु सद—रूवेसु दिवसगणणाय पवासं गमिस्ससि त्ति बूया । पच्छिमायं दिसायं अव्वत्तेसु सद—रूवपाउब्भावेसु वस्सगणणाय पवासं गमिस्ससि त्ति [बूया] । अव्वत्तेसु सद—रूवपादुब्भावेसु मासगणणाय पवासं गमिस्ससि त्ति बूया । वायं (उत्तरायं) दिसायं अव्वत्तसद्—रूव— 25 पादुब्भावे वस्सगणणाय पवासं गमिस्ससि त्ति बूया । अव्वत्तेसु सद—रूवपादुब्भावेसु मासगणणाय पवासं गमिस्ससि त्ति बूया । एएसु चेव एक्कवीसाय मासाणं पवासं गमिस्ससि त्ति बूया ।

तत्थ आहारनीहारेसु आगम्म पडिगमिस्ससि त्ति बूया । अणूसु गाउयं पवासं गमिस्ससि त्ति बूया । साधारणे य अद्धजोयणं पवासं गमिस्ससि त्ति बूया । अब्भंतरेसु इस्सरो रायब्भंतरो पवासो त्ति बूया । अब्भंतरेसु देसब्भंतरो पवासो त्ति बूया । बाहिरब्भंतरेसु अणंतरं रज्जंतरं गमिस्ससि त्ति बूया । बाहिरेसु रज्जंतरं गमिस्ससि त्ति बूया । 30 बाहिरबाहिरेसु अस्सुयं गमिस्ससि त्ति बूया । पुधूसु जणपदं गमिस्ससि त्ति । परिमंडले णगरं गमिस्ससि त्ति ।

१ 'सु थूलेसु य बहुलदेसं हं० त० विना ॥ २ अधिणिण्णे' हं० त० विना ॥ ३ 'बहुयं हं० त० विना ॥ ४ पवासेसु उड्डुज्झि' हं० त० विना ॥ ५ 'जित्तुव' सं ३ पु० ॥ ६ 'सु ठाणगतो हं० त० ॥ ७ ०८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ८ आगास' हं० त० ॥ ९ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ १० पुरिमायं सि० ॥ ११-१२ 'सु समाग' हं० त० विना ॥ १३ अड्डुजो' हं० त० ॥ १४ 'स्सरे स' हं० त० विना ॥ १५ 'तरे ष' हं० त० विना ॥ १६ अस्सुति ग' हं० त० विना ॥

थावरेसु पट्टणाणि गमिस्ससि ति बूया । डहरथावरेसु खेडाणि गमिस्ससि ति । चलेसु खंधावारं गमिस्ससि ति । डहरचलेसु गामं गमिस्ससि ति बूया । इस्सरेसु रण्णो मूलं गमिस्ससि ति बूया । उवउत्तमेसु अमच्चस्स मूलं गमिस्ससि ति । पुण्णामधेज्जेसु रायपुरिससकासं गमिस्ससि ति । ददेसु संसट्ठेसु ववहारं गमिस्ससि ति बूया । अब्भंतरेसु अप्पणो अत्थेण पवासं गमिस्ससि ति बूया । बाहिरेसु परस्स अत्थेण पवासं गमिस्ससि ति । बाहिरब्भंतरेसु मित्तस्स अत्थेण पवासं गमिस्ससि ति बूया । बाहिरबाहिरेसु णेव अप्पणो णेव परस्स ८५ अत्थेण पवासं गमिस्स ८० सि ५ ति बूया ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पवासज्झायस्स वि अब्धाकालं
णामज्झायो चउयालीसतिमो सम्मत्तो ॥ ४४ ॥ छ ॥

[पणयालीसइमो पवेसज्झाओ]

णमो भगवतो यसवतो महापुरिसस्स महावीरवद्धमाणस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय 10 पवेसं णामज्झातं । तं खलु भो ! वक्खस्सामि । तं जधा-अब्भंतरामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे उम्मट्ठे उल्लोगिते अभिगगहिते भुत्ते पीते खइते लीढे कण्णतेल्लअब्भंगणे हरिताल-हिंगुलुक-मणस्सिला-अंजण-समालभणकगते अलत्तक-कलंजक-वण्णक-चुण्णग-अंगारागते उस्सिधण-मक्खण-5 अब्भंग [ण]-उच्छंदण-उव्वट्ठण-पधंस [ण]-ण्हाण-पधोवण-पव्वासण-अणुलेवण-विसेसकायधूमाधिवाससंजोयणपादुभावेसु परिधान-उत्तरासंग-सोणिसुत्त-वरमल्ल-सुरभिजोगसंविधानक-आभरणविविधभूषणसंजोयणासु अलंकारमंडणासु य सह-रूवेसु य एवंविधेसु पुच्छेज्ज 15 आगमो भविस्सतीति बूया । तत्थ सिबिका-रध-जाण-जुग-कट्टमुह-गिल्लि-संदण-सकड-सकडि-वाहिज्जविविधअधिरोहणासु हय-गज-बलिबद्ध-करभ-अस्सतर-खर-अयेलक-णर-मरुत-हरित-महिरुह-पासाद-विमाण-सयणाधिरोधणासु धय-तोरण-गोपुर-5 डालग-पतागासु समारोधण-समुस्सवणे वा पुच्छेज्ज आगमो भविस्सतीति बूया । तत्थ दुद्ध-दधि-सप्पि-णवणीत-तेल्ल-गुल-लवण-मधु-मच्छ-मंस-सैव्वमेद-समामासे आगमो भविस्सतीति । तत्थ पुढवि-दग-अग्गि-वायु-पुप्फ-धण- 20 बी ६ यै-सव्वरयणदव्वसमाधिअणे आगमो भविस्सतीति बूया । तत्थ अंकुर-परोह-पत्त-किसलय-पवाल-तण-कट्ट-लेटुक-सक्कर-उपल-विविहसत्थ-सत्थाभरणोउपकरणगरुविअलोह-मणिसुत्त-रयत-वैरसमावण्णेसु चेव आगमो भविस्सतीति बूया । तत्थ उक्खुलि-पिट्ठरग-दविउलंक-रसदव्वीसु य छत्तोपाणह-पाउग-उब्भुभंड-उभिखणफणखपसाणगकुव्वट्ठ ७ वणपेलिका-विवट्ठण-अज्जणी-पसाणग-आदंसग-सरगपतिभोयण-वाधुज्जोपकरण-मालागते वा उवसकिते वा उववसिते वा आबद्धे वा माला-5 लंकारभूषणे वा पवसिते वा परिहिते वा पाउते वा 25 अंछादणे वा पुच्छिज्जमाणे वा अभिमुहे वा अलिंगिते वा उवणीए वा एतेसि वा एवमादीणं पडिपोग्गलाणं संपदग्गहणे पुच्छिज्जमाणे आधारिज्जमाणे वा एवंविधसदरूवपादुभावे आगमो भविस्सतीति बूया ।

तत्थ अब्भंतरेसु य सज्जीवेसु य सज्जीवं पवेक्खति ति बूया । तत्थ बज्जेसु सव्वअज्जीवेसु य अज्जीवं पवेक्खति ति बूया । तत्थ सज्जीवेसु पुव्वाधारिते सज्जीवं तिविधमाधारये-दिव्वं माणुसं तिरिक्खजोणियं चेति । तत्थ उद्धभागेषु भिगार-छत्त-पतागा-लोवहत्थेपाणियपादुभावे चेव दिव्वं पवेक्खति ति बूया । तत्थ उज्जुकामासे 30 समभागेषु सव्वमणुस्सगते य माणुसं पवेक्खति ति । तत्थ तिरियामासे सव्वतिरिक्खगते य तिरिक्खजोणियं पवेक्खति ति

१ रत्तेसु गंधा हं० त० ॥ २ सम्मूढेसु सि० ॥ ३ गउच्छवण हं० त० ॥ ४ हिण्णवणा हं० त० ॥ ५ सज्जमेद हं० त० विना ॥ ६ हस्तचिह्नन्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ७ गेरेति हं० त० विना ॥ ८ वा पवेसिते हं० त० ॥ ९ वा पावासिए वा हं० त० ॥ १० अच्छेदणे हं० त० विना ॥ ११ आगच्छन्ते वा हं० त० ॥ १२ त्यपहाणिय हं० त० ॥

बूया । तत्थ पुण्णामधेज्जामासे दक्खिणामासे सव्वपुरिसगते य पुरिसो पवेक्खति त्ति । पुण्णामे पुव्वाधारिए
 पुण्णामादिपाउम्भावेहि पुरिसा समणुगंतव्वा भवन्ति । पुण्णामेसु उत्तमेसु गुरुजोणिं पवेक्खति त्ति, समभागेसु तुल्लजोणी
 पवेक्खति त्ति बूया, पच्चवरकायेसु बालजोणिं पवेक्खति त्ति बूया । पाद—जंघसव्वपेस्सगते सव्वपेस्सोवकरणे पेस्सो
 पवेक्खति त्ति । तत्थ वण्णे पुव्वाधारिते उवाते उवातो पवेक्खति त्ति, काले कालो, सामे सामो, थूले थूलो, किसे
 ५ किसे, दीहे दीहो, रस्से रस्सो । अब्भंतरेसु सकं, बाहिरेसु परकं । बंभेज्जेसु ०८ खंतेज्जेसु १० वेस्सेज्जेसु सुदेज्जेसु
 य बंभणखत्तिय—वेस्स—सुद्धजोणीयो वत्तव्वातो । पुरिसे पुव्वाधारिते पुण्णामेसु पुरिसो पवेक्खति त्ति, थीणामेसु थी
 पवेक्खति, णपुंसकेसु नपुंसकं पवेक्खति त्ति बूया । तत्थ चतुरस्सेसु सव्वचतुप्पदपादुम्भावे य चतुप्पदपडिरूव—
 सद्दसपादुम्भावेसु चेव चतुप्पदं पवेक्खति त्ति । दीहेसु कण्हेसु य सव्वपरिसप्पगए य परिसप्पपडिरूवपाउम्भावे य
 परिसप्पं पवेक्खति त्ति बूया । चलेसु उद्धंभागेसु सव्वपक्खिणगए पक्खिणपडिरूव—सद्दपादुम्भावे चेव पक्खिण पवेक्खति
 १० त्ति । आपुणेयेसु चलेसु य सव्वजलयरपडिरूवपादुम्भावेसु जलयरं पवेक्खति त्ति बूया । परिमंडलेसु भायणं पवेक्खति
 त्ति, ॐ तण्णसु वत्थं पवेक्खति त्ति, ॐ चतुरस्सेसु चित्तेसु सारवंतेसु य काहावणे पवेक्खति त्ति । रतेसु पीतेसु
 य सारवंतेसु सुवण्णकं पवेक्खति त्ति, सेतेसु सारवंतेसु य रुपं पवेक्खति त्ति, सुक्केसु अणगेयेसु सीतलेसु मुत्ता
 पवेक्खति त्ति बूया । घणेसु सारवंतेसु सव्वप्पभागते य मणी पवेक्खति त्ति । णिस्सितेसु संखतेसु सव्वप्पभागते
 य खारमणी पवेक्खति त्ति बूया । घट्टेसु सव्वमणिगतं सकेहि वण्णेहि विण्णायं भवतीति । कोट्टिते सव्वलोहगतं
 १५ पवेक्खति त्ति । णिद्धेसु सव्वपाणं पवेक्खति त्ति । पुण्णेसु आहारं पवेक्खति त्ति । ॐ विण्हेसु सत्थं पवेक्खति
 त्ति । तिण्हेसु सत्थं पवेक्खति त्ति । ॐ अंतेसु उवकरणं पवेक्खति त्ति । थीणामेसु बज्झसाधारणेसु ण्हुसं पवेक्खति
 त्ति । पुण्णामेसु णीहारेसु य परम्हमावयिता पवेक्खति त्ति । थीणामेसु णीहारेसु य विधवा पवेक्खति त्ति बूया ।
 थीणामेसु अप्पसण्णेसु विधवा पवेक्खति त्ति । थीणामेसु दढेसु कण्णा पवेक्खति त्ति बूया । थीणामेसु चलेसु जुवती
 पवेक्खति त्ति । थीणामेसु चलेसु मुदितेसु य पवियाता पवेक्खति त्ति । थीणा[मा]मासे ॐ थियामासे ॐ वेस्सा
 २० पवेक्खति त्ति । थीणामेसु णिद्धेसु भगा पवेक्खति त्ति । लुक्खेसु निरागता पवेक्खति त्ति, कण्हेसु असारा पवेक्खति
 त्ति बूया । मतेसु अणाधा पवेक्खति त्ति । पसण्णेसु मुदिता पवेक्खति त्ति । कण्णेयेसु सुतीसीलसमायारा कण्णा
 पवेक्खति त्ति । सद्देयेसु विस्सुतकुल—घरा—५५वासा पवेक्खति त्ति । दंसणीयेसु पतिरूवा पवेक्खति(ति) त्ति । गंधेयेसु
 गंधवती पवेक्खति त्ति । रसेयेसु रसगुणसंजुता रसवती पवेक्खति त्ति बूया । फासेयेसु फासवती पवेक्खति त्ति ।
 ॐ मण्णेयेसु इद्धा पवेक्खति त्ति । ॐ तत्थ पावासिगगमणे पुण्णामधेज्जेसु अपरक्कमेण आगमिस्ससीति । थीणामधेज्जेसु
 २५ सभज्जो आगमिस्ससि त्ति । नपुंसकेसु णिरत्थगो आगमिस्ससि त्ति बूया । दढेसु णेदाणि आगमेस्ससि त्ति । जलेसु
 खिप्पं आगमिस्ससि त्ति । णिद्धेसु कतभोगो आगमिस्ससि त्ति बूया । लुक्खेसु णिरागतो आगमिस्ससि त्ति बूया ।
 सुक्केसु सधणो आगमिस्ससि त्ति । सामेसु सुहं आगमिस्ससि त्ति बूया । बंज्जेसु बहुअंतरागो आगमिस्ससि त्ति बूया ।
 आहारेसु आयबहुलो आगमिस्ससि त्ति । णीहारेसु हितसारो आगमिस्ससि त्ति बूया । मतेसु आमतमतो मरिस्ससि
 त्ति । तुच्छेसु आमतमतो वार्धि पाविस्ससि त्ति । पुण्णेसु सया जोगो आगमिस्ससि त्ति बूया, आगमं वा वि आयं
 ३० पाविस्ससि त्ति बूया ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पवासो णामज्झायो

पणयालीसतिमो सम्मत्तो ॥ ४५ ॥ छ ॥

१ ०८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० तं० नास्ति ॥ २ 'दजोणीपा' सि० ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० तं०
 एव वर्तते ॥ ४ विन्नेहि विण्णेत्तं भं हं० तं० विना ॥ ५-६-७ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० तं० एव वर्तते ॥ ८ णिसागमो
 हं० तं० ॥ ९ वगोसु हं० तं० विना ॥ १० 'सु य आहित' हं० तं० ॥ ११ 'सु य आगममओ म' हं० तं० ॥
 १२ आगयमओ वा' हं० तं० ॥

[छयालीसइमो पवेसणज्झाओ]

णमो भगवतो यसवतो महापुरिसस्स । अधापुब्बं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पवेसो
णामाज्झायो । तं जधा—

गिहं पविसतो वा वि जं जं पस्से सुभा—ऽसुभं । सव्वं हितयेण गेण्हित्ता णिहिसे अंगचिंतओ ॥ १ ॥
बलिवद्वा यावि अस्सा वा उट्ठा वा गद्दभा वि वा । सुओ मदनसलाका वा कवी मोरा व दिस्सते ॥ २ ॥ 5
एताणि कोट्टये दिस्स अंगणं पविसे ततो । अणाइलो असंदिद्धो दिट्ठीसु य समाहितो ॥ ३ ॥
बंभत्थलम्मि यं पस्से जं वा पस्से अरंजरे । उव्वरे वा उवट्ठाणे आसंणगहणे तधा ॥ ४ ॥
उदुक्खलस्स सालायं कवाडे दारकण्ये । आसणस्स य दिण्णस्स अंजलीकरणम्मि य ॥ ५ ॥
महाणसम्मि जं पस्से भत्ताकारीय वा पुणो । तत्थ भत्तघरे वा वि जे य वत्थुस्स णिकुडा ॥ ६ ॥
ओकट्ठितम्मि णेवम्मि ओभग्गे ओपणिव्वए । बाहिरत्थस्स वावर्त्ति अंगवी इति लक्खए ॥ ७ ॥ 10
कंवासु विप्पमुक्कासु ओसरिता मल्लका जति । वियडे उत्तमाकारे कुलभंगं वियागरे ॥ ८ ॥
वेदणं वा सिएणिएहि दास—कम्मकरेहि वा । अणेव्वाणी व अत्थेहि णिहिसे अंगचिंतओ ॥ ९ ॥
दधि—मंगल—पुप्फ—फलं अक्खते सारतंदुले । विदू सम्मज्जिते दिट्ठा वड्ढि तत्थ वियागरे ॥ १० ॥
तुसेहि वा समोखिण्णं पंसुएण व दिस्सति । अंगारच्छरिओखिण्णं हाणि तत्थ वियागरे ॥ ११ ॥ 15
अध रुक्खम्मि भग्गम्मि अधवा जज्जरीकते । विमुक्केसु य संधीसु कुलभंगं वियागरे ॥ १२ ॥
दारुवण्णकसंपाते संधी जस्स चलाचला । अणेव्वाणि कुडुंबस्स अत्थं वा वि चलाचलं ॥ १३ ॥
पुरिसस्स दक्खिणे पासे थिया वामे पवेदये । खंडिते पडिते भिण्णे पडिरूवेण णिहिसे ॥ १४ ॥
संधिम्मि विप्पमुक्कम्मि भग्गे वा उत्तरुंबरे । जमत्थमभिकंखेज्ज तमत्थं हीणमादिसे ॥ १५ ॥
उग्घाडो वा कवाडं वा दारं समणुवत्तति । दुक्खेण अज्जितो अत्थो सव्वो होति णिरत्थयो ॥ १६ ॥ 20
अधरुत्तरुम्मिरे यावि ओभग्गे विप्पकट्ठिते । वासवण्णकसंपाते गिहे बूया अणिव्वुत्ति ॥ १७ ॥
सव्वतो विप्पमुक्कम्मि ओभग्गे एकपस्सिते । कुडुंबिणो अणेव्वाणि अत्थहाणि च निहिसे ॥ १८ ॥
तिलवेल्लववाका वा कोट्टते होति अच्चुया । पिवीलिया वा दिस्संति वार्धि तत्थ वियागरे ॥ १९ ॥
एलओ कोट्टए बद्धो वाहरे विगतं जया । अकारणे विरत्तम्मि कुडुंबे भयमादिसे ॥ २० ॥
अस्सो कोट्टए बद्धो कडुं बुवति पच्छतो । णिघंसते णिडालं वा कुडुंबं स विणस्सति ॥ २१ ॥ 25
पक्खी य कोट्टए जत्थ लूणपक्खोऽत्थ दिस्सति । दासा णिगलबद्धा वा हाणि तत्थ वियागरे ॥ २२ ॥
उदग्गा दिस्सते पक्ख मोदंताणि दंढं ति य । उदग्गत्यपुमंसा य वड्ढि तत्थ वियागरे ॥ २३ ॥
एताणि कोट्टए दिस्स पविट्ठो अंगणम्मि वि । अणाइलो असंदिद्धो ततो पेक्खेज्ज लक्खणं ॥ २४ ॥
विदू (विदू) सम्मज्जितं दिस्स चक्खुस्सं च वियाणिया । कतं पुप्फोवयारं च वड्ढि तत्थ वियागरे ॥ २५ ॥
दारका जति दिस्संति पलोट्ठा धरणीतले । मुत्तं पुरिसमोगाढा हाणि तत्थ वियागरे ॥ २६ ॥ 30
दारका जति दिस्संति अलंकित—विभूसिया । हिट्ठा तुट्ठा पमोदंता वड्ढि तत्थ वियागरे ॥ २७ ॥

१ असंविट्ठो हं० त० ॥ २ सणे गं सि० ॥ ३ दारकामए हं० त० ॥ ४ णिक्खुडा हं० त० ॥ ५ उक्कट्ठितम्मि
हं० त० ॥ ६ का जिया (जया) हं० त० ॥ ७ स्स हत्थं हं० त० ॥ ८ उत्तरुस्सरे हं० त० ॥ ९ दीणं हं० त०
विना ॥ १० आधितो हं० त० विना ॥ ११ कट्ठिते हं० त० ॥ १२ दारुवण्णं हं० त० विना ॥ १३ अट्ठता हं०
त० विना ॥ १४ कुट्टओलब्धो हं० त० ॥ १५ ददंति हं० त० विना ॥ १६ विट्ठस्सम्मं हं० त० विना ॥

- अंगणे जत्थ पस्सेज्ज वण्णं पुप्फ—फलाणि वा । णिण्णज्जमाणं णीहारं हाणिं तत्थ वियागरे ॥ २८ ॥
 अंगणे जत्थ पस्सेज्ज वण्णं पुप्फ—फलाणि वा । अंतणिज्जमाणं आहारं वद्धिं तत्थ वियागरे ॥ २९ ॥
 अंगणे जत्थ पासेज्ज रोदंतो बज्जतोमुहं । परिदेवमाणं कलुणं हाणिं तत्थ वियागरे ॥ ३० ॥
 अंगणे जत्थ पासेज्ज रममाणं अभिमुहं । उदग्गवेसं मुदितं वद्धिं तत्थ वियागरे ॥ ३१ ॥
 5 अंगणे जत्थ पासेज्ज छिज्जमाणे य णंतए । मइले विवण्ण—वियले हाणिं सोयं च णिदिसे ॥ ३२ ॥
 अंगणे जत्थ पासेज्ज सुक्किले कंबले सुयि । वासिते य मणुण्णे य वद्धिं लाभं च णिदिसे ॥ ३३ ॥
 भायणाणि य भिण्णाणि अंगणे जत्थ दिस्सते । पलोद्विताणि तुच्छाणि हाणिं रोगं च निदिसे ॥ ३४ ॥
 भायणाणि य दिस्संति पडिपुण्णाणि अंगणे । चक्खुसाणि अखंडाणि आयं लाभं च णिदिसे ॥ ३५ ॥
 अंगणे जत्थ दीसंति पोत्ती णंतकविक्कला । आसंदका य संभग्गा हाणिं रोगं च निदिसे ॥ ३६ ॥
 10 पविट्ठो अंगणं साधु पस्सेज्ज णर—णारिओ । अलंकिते सुयी हिट्ठे संपीति—लाभमादिसे ॥ ३७ ॥
 अंगणे जति दीसेज्ज खिज्जंतं रोसणं नरं । पुब्बं जो अज्जिओ अत्थो सव्वो तम्मि विणस्सति ॥ ३८ ॥
 फला तु उक्कडरसा अंगणे जति दिस्सति । पुण्णामा य मणुण्णा य कुडुंबी घरिणिं जिया ॥ ३९ ॥
 फला उ उक्कडरसा अंगणे जति दीसति । थीणामा य मणुण्णा य कुडुंबी(विं) घरिणी जये ॥ ४० ॥
 पुण्णामधेज्जा छिज्जंते भिज्जंते य फला जति । बाला तत्थ विवज्जंते तम्मि उप्पायदरिसणे ॥ ४१ ॥
 15 थीणामा जति छिज्जंते पवालाणि फलाणि वा । दारियाओ विवज्जंते तम्मि उप्पायदरिसणे ॥ ४२ ॥
 समणो बंधणो वा वि गेहे जस्स पलायति । उप्पायं तारिसं दिस्स हाणिं तत्थ वियागरे ॥ ४३ ॥
 पुण्णो अरंजरो जस्स विवज्जेज्ज अणाहतो । कुडुंबस्स विणासाय णिदिसे अंगंचिततो ॥ ४४ ॥
 तुच्छो अरंजरो जत्थ विवज्जेज्ज अणाहतो । कुडुंबिणो विणासाय णिदिसे अंगंचिततो ॥ ४५ ॥
 कागा अरंजरे पवरे सुणका वा चारुभत्तिया । घरिणी तत्थ कुडुंबस्स जेणेण परिभुज्जति ॥ ४६ ॥
 20 बलिओ अरंजरो जत्थ दुब्बला जस्स पेढिया । पुरिसस्स पुण्णं जाणेज्ज अप्पपुण्णा कुडुंबिणी ॥ ४७ ॥
 बलिया पेढिया जत्थ दुब्बलो य अरंजरो । घरिणीय पुण्णं जाणेज्जा अप्पपुण्णो कुडुंबिओ ॥ ४८ ॥
 बंधत्थलम्मि भिण्णम्मि णासं जाणं कुडुंबिणो । पियविप्पयोग—मरणं अत्थहाणिं च णिदिसे ॥ ४९ ॥
 समणस्स आसणे दिण्णे कीलिट्ठे अत्थुते पडे । कुडुंबियस्स संपत्ती सह भारियाए णिदिसे ॥ ५० ॥
 समणस्स आसणे दिण्णे सुक्किले अत्थुते पडे । कुडुंबियस्स संपत्ती सह भज्जाए णिदिसे ॥ ५१ ॥
 25 अधवा भग्गेहम्मि समणो आसणं लभे । पडिउज्जमाणे धूमेण कलहं हाणिं च णिदिसे ॥ ५२ ॥
 सिद्धमण्णं वियाणेज्जो जं जधा जारिसं भवे । [वि]भत्ति उवधारेत्ता दीणोदत्तेण णिदिसे ॥ ५३ ॥
 संवेगमुत्तरयत्तं सुद्धं विमलं च पस्सिया । बंधणं सुक्कवत्थं च सुयिमोदणमादिसे ॥ ५४ ॥
 कापुरेसु य वण्णेसु वामिस्सं ओदणं वदे । जो जस्स वण्णपडिरूवो तं तधा अण्ण(अत्थ)मादिसे ॥ ५५ ॥
 उत्तंदुलम्मि कलहं कुंधितो रोगमादिसे । अणेव्वाणि वउत्थम्मि दढे जीवितसंसयं ॥ ५६ ॥
 30 कुंधितो पूतिको सित्तो कल्लं सिद्धो दिवा भवे । वहूए परिहाए य तं विणासाय लक्खणं ॥ ५७ ॥
 विवण्णो अप्पसारो वा पिच्छिलो वा वि ओदणो । कुडुंबिणो विणासाय ओदणेण पवेदये ॥ ५८ ॥
 किविल्लकाउ दीसंति उप्पुते या मते वि वा । मतासु मरणं बूया जीवन्तीसु उवद्दवं ॥ ५९ ॥

१-२ धण्णं हं० त० विना ॥ ३ अतिणिज्जमाणं णीहारं हं० त० ॥ ४ रोदसीतो हं० त० विना ॥ ५ पोवीणं कविं हं० त० ॥ ६ अत्थितो अत्थो हं० त० विना ॥ ७ हस्तविह्वलनर्गतः श्लोकः हं० त० एव वर्तते ॥ ८ उक्कडरसा हं० त० विना ॥ ९ विवज्जंते हं० त० ॥ १० ७ ८ एतच्चिह्ननर्गतः श्लोकः हं० त० नास्ति ॥ ११ पलिउज्जं हं० त० विना ॥ १२ संखग्गमनुत्तरं हं० त० ॥ १३ वत्थं सुं हं० त० ॥ १४ कुट्टिओ हं० त० ॥

केसे दिट्ठे परिक्खेसं सक्कराय उवद्वं । पराजयमसक्कारं कंडगम्मि वियागरे ॥ ६० ॥
 सुत्ते पसारिते दिट्ठे अट्ठाणतेण णिहिसे । तमेव सुत्तं पलिमूढे बंधणतेण णिहिसे ॥ ६१ ॥
 तणं च जति दिस्सेज्ज कुडुंबे जं समीहती । सव्वं णित्थकं भवति जति सुक्खं ओदणं भवे ॥ ६२ ॥
 जवणीयं च पुच्छेज्ज पहसंती परम्मुही । वेधव्वं सा लभित्ताणं पच्छा रूवेण जीवति ॥ ६३ ॥
 जवणीयं च पुच्छंती समणं जा उ अभिम्मुही । वत्थे वा वि पलिमूढा पुण्णेज्ज पवडेज्ज वा ॥ ६४ ॥ 5
 कुडुंबिणो असंपत्ती तिस्से थीया पवेदये । अब्भंतरेण पक्खस्स बंधणे सा विरुब्भति ॥ ६५ ॥
 जवणीयं च पुच्छंती समणं जा उ अभिम्मुही । संधितं अंजलिं कुज्जा णिव्वुतिं तत्थ णिहिसे ॥ ६६ ॥
 दक्खिणे पुत्तलाभाय धिंती लाभं च वामतो । सक्कारे सुहभागी य असक्कारे अणेव्वुतिं ॥ ६७ ॥
 संखिप्पे वा खिवे हत्थे पुव्वं भागी वियागरे । विखिप्प संखिवे हत्थे पच्छा भद्दं वियागरे ॥ ६८ ॥
 उज्जुयं अंजलिं कुज्जा विपुला अत्थसंपदा । विणतं अंजलिं कुज्जा अत्थहाणि वियागरे ॥ ६९ ॥ 10
 अंतो महाणसे सेसं साकं सूवोदणं दधि । तब्भावपडिरूवेणं अंगवी उवलक्खये ॥ ७० ॥
 दढं च अंगमामसति तिंथा उट्ठाय आमसे । अभिमुही य भणति अण्णमत्थि ति णिहिसे ॥ ७१ ॥
 उल्लोयिते उम्मट्ठे आणिते उवणामिते । हितयोदराणं आमसे अण्णमत्थि ति णिहिसे ॥ ७२ ॥
 चले चलं अंगमामसति बाहिराणि णिसेवति । णिम्मट्ठेसु य गत्तेसु अण्णं णत्थि ति णिहिसे ॥ ७३ ॥
 रिक्काणि पदिस्संति भायणाणि सभंततो । पलोट्टिताणि भिण्णाणि अण्णं णत्थि ति णिहिसे ॥ ७४ ॥ 15
 तंदुले य पदिस्संति पणालीय गेलेज्ज य । परिमज्जकं च दट्ठुणं अत्थि मज्जं ति णिहिसे ॥ ७५ ॥
 पसुत्ता जति दीसंति मोरा वट्ठक-लावका । तेसिं रुताऽरुतं सोच्चा सागुणामऽभिणिहिसे ॥ ७६ ॥
 ओसुद्धे णिट्ठे छुद्धे णिसुद्धे धिंसिते धुते । कलहं व दिट्ठा बालाणं मंसमत्थि ति णिहिसे ॥ ७७ ॥
 रिक्काणि पदीसंति धेड-कुड-अरंजरा । पलोट्टिता य भिण्णा ये णत्थि मज्जं ति णिहिसे ॥ ७८ ॥
 जलयरेसु य सत्तेसु जलपस्संदणेसु य । उदकेसु य भंडेसु मच्छमत्थि ति णिहिसे ॥ ७९ ॥ 20
 दब्भे कुसे य दट्ठुणं अट्ठपुप्फ-फलाणि य । हरितंकुस्-पवालाणि सागं हरितकं वदे ॥ ८० ॥
 फलाणि जति दीसंति णिद्धाणि मधुराणि य । दन्तोट्ट-जिब्भआमासे फल-सागाणि णिहिसे ॥ ८१ ॥
 वामिस्सोदीरणे वण्णा वामिस्सोदीरणे रसा । वामिस्साणि तु सागाणि णिहिसे अंगचित्तओ ॥ ८२ ॥
 अत्थि अब्भंतरामासे बज्झामासेसु णत्थि य । आमाससंजोगविधिं अंगवी इति लक्खये ॥ ८३ ॥
 मच्छमाणं दट्ठुणं तक्कमच्छंबिलं तथा । परिकिण्णसहेसु तथा दव्वम्मि रसकं वदे ॥ ८४ ॥ 25
 समणं पत्थितं संतं णिगतं बज्झतोमुहं । जो ठवेतूण पुच्छेज्ज अप्पसत्थं पवेदये ॥ ८५ ॥
 पवेट्ठुकामं पुच्छेज्ज अत्थि आगमणं धुवं । निगंतुकामं पुच्छेज्ज पवासा णिग्गमं वदे ॥ ८६ ॥
 कोट्ठुकम्मि व पुच्छेज्ज बज्झत्थं तं पवेदये । सक्कारेण य पुच्छंते अत्थि अत्थो ति णिहिसे ॥ ८७ ॥
 तं चेव अत्थं पुच्छेज्ज असक्कारेण अंगवि । जाणे असुभं अत्थं बाहिरं अंगचित्तको ॥ ८८ ॥
 समणं पज्जुवासंतो अंतो वा जति वा बहिं । महिला होंति असम्मूढा पुरिसा तत्थ वट्ठंति ॥ ८९ ॥ 30
 समणं पज्जुवासंतो अंतो वा जति वा बहिं । पुरिसा होंति असम्मूढा इत्थिओ तत्थ वट्ठंति ॥ ९० ॥
 पेम्मं रागं च दोसं च अवणेत्ता वियक्खणो । आधारयित्ता अंगेणं अंगविं अभिणिहिसे ॥ ९१ ॥ छ ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पवेसणो णामाज्झायो

खट्ठुचत्तालीसतिमो सम्पत्तो ॥ ४६ ॥ छ ॥

१ अभिमुही हं० त० ॥ २ स्स बंधणे सा विरुब्भए हं० त० ॥ ३ अभिमुही हं० त० ॥ ४ धिती वामं च वासए हं० त० ॥ ५ वे सुहत्थि हं० त० विना ॥ ६ अज्जयं हं० त० विना ॥ ७ तथा उट्ठाए हं० त० ॥ ८ णिवेसति हं० त० ॥ ९ गएसु य हं० त० ॥ १० वसिए वुओ हं० त० ॥ ११ दिट्ठं हं० त० विना ॥ १२ घरकुंडं हं० त० विना ॥ १३ य छिन्नं मज्जं हं० त० ॥ १४ षट्चत्ता हं० त० विना ॥

[सीयालीसंडमो जत्तज्झाओ]

णमो भगवतो जसवतो महापुरिस्स महावीरवद्धमाणस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिस्सदिण्णाय अंगविज्जाय जत्ता णामज्झायो । तं खलु भो ! तमणुर्वक्खाइस्सामो । तं जधा—अत्थि जत्ता णत्थि जत्त त्ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तं जधा—अब्भंतरामासे धुवे थितामासे दढामासे दक्खिणगत्तामासे णपुंसकामासे पच्छिमगत्तामासे उम्मज्जिते 5 उवकसिते उवट्टिए आउंडिते सँविट्टे अवस्सिते पल्लित्थियागते छिद्दपिधाणे पिहिते उग्गहिते पच्चालंबिते पडिकुट्टे पडिसिद्धे पवेसिते विक्खिते ठविते ठावरथितीए लँइते णिकायिते एतेसु आमास—सवण—दंसणपादुब्भावेसु णत्थि जत्त त्ति बूया । तत्थ छते वा भिंगारे वा वियणियं वा तालवेंटे वा सत्थे वा पहरणे वा आयुधे वा आवरणे वा वम्मे वा कवये वा अभिणीयमाणे वा पवेसियमाणे वा णिखिप्पमाणे वा पडसामिज्जमाणे वा वियाजिज्जमाणे वा विणासिज्जमाणे वा पच्चालंबिज्जमाणे वा अँवज्जेयमाणे वा णत्थि जत्त त्ति बूया । अब्भंतरम्मुहे एवंपकारये वा जाणे वा वाहणे 10 वा उवणाहणे (उववाहणे) वा ओमुंचणे वा अतिणयणे वा णत्थि जत्त त्ति बूया । सव्वेसु य णत्थिकारसद्दपादुब्भावेसु णत्थि जत्त त्ति बूया । तत्थ बज्झामासे चलामासे चलणामासे वामगत्तामासे पैसारितामासे गत्तपंचगओमज्जिते णिम्मज्जिते अँपमज्जिते उपविट्टे उट्टिते पत्थिते वा णिग्गते वा णिल्लोकिते वा ०५ णिल्लालिते वा १० णिल्लिखिते वा अवसारिते अवसक्किते अँपधजाते वा विप्पमुंचणे अपंगुते णिक्कट्टिते णिण्णते णिक्कट्टे वा कोसीगते वा गमणलिंगदंसण—सवणपादुब्भावे सज्जीव—णिज्जीवाणं च दव्वाणं एवंविधाकारपादुब्भावे अत्थि जत्त त्ति बूया । तत्थ छते वा भिंगारे वा वीयणीयं 15 वा तालवोंटं वा अब्भुत्थिते वा णीणिते वा पहरणे वा आयुधे वा आवरणे वा वम्मे वा कवये वा सण्णाहपट्टे वा उँद्वीरमाणे वा णीणीयमाणे वा णेव बाहिरंतो वा जत्तामुहे वा कज्जमाणे वा सज्जे वा सँज्जिज्जमाणे वा अत्थि जत्त त्ति बूया । तत्थ जाणे वा पवाहणे वा वाहणे वा जुत्ते वा जोयिज्जमाणे वा सँसिज्जमाणे वा णिग्गते वा णिज्जायंतो वा णिव्वट्टिज्जमाणे वा णिव्वट्टिते वा पादुपाहणणं वा गहणे आबंधणे वा णिण्णयणे वा आगमँणलिंग—सद्दपादुब्भावेसु वा अत्थि जत्त त्ति बूया । बिपद—चउप्पद—छप्पद—बहुपद—अपदाणं वा सत्ताणं गमणसंथाणसद्द— 20 रूवपादुब्भावे अत्थि जत्त त्ति बूया ।

तत्थ पुण्णामधेज्जेसु विजयिका जत्ता भविस्सतीति [बूया] । थौणामधेज्जेसु सम्मोदी जत्ता भविस्सतीति बूया । णपुंसकेसु णिरत्थिका जत्ता भविस्सतीति । दढेसु चिरं जत्ता भविस्सतीति । चलेसु ण चिरं जत्ता भविस्सतीति । सुद्धेसु महाफला जत्ता भविस्सतीति बूया । कण्हेसु बहुपरिकेसा जत्ता भविस्सतीति बूया । सामेसु मुदितेसु य बहुउस्सवसँमाया जत्ता भविस्सतीति बूया, अवि य पमादवती जत्ता भविस्सतीति बूया, सुक्केसु य पभूतऽण्ण—पाणा । 25 बहुखज्ज—पेज्जजत्ता भविस्सतीति बूया, धणलंभवहुला यावि जत्ता भविस्सति त्ति । आहारेसु आयबहुला जत्ता भविस्सतीति बूया । णीहारेसु अपायबहुला जत्ता भविस्सतीति बूया । थूलेसु महब्भया जत्ता भविस्सतीति बूया । किसेसु अप्पजोगा जत्ता भविस्सतीति बूया । पुधूसु जणपदलंभाय जत्ता भविस्सतीति बूया । परिमंडलेसु णगरलंभाय जत्ता भविस्सतीति बूया । डहरचलेसु गामलंभाय जत्ता भविस्सति । डहरथावरेसु खेडलंभाय जत्ता भविस्सति । गहणेसु अरण्णदेसगमणभूयिद्धा

१ 'वक्खइ' हं० त० ॥ २ 'स्सामि' सि० ॥ ३ 'रयियव्वं' हं० त० ॥ ४ ओविट्टे हं० त० विना ॥ ५ संधिट्टे हं० त० ॥ ६ लइओणिका' हं० त० ॥ ७ आहारणे हं० त० ॥ ८ अतिणीयमाणा वा पवासिय' हं० त० ॥ ९ वा विणि' सि० ॥ १० असज्जे वा ण' हं० त० सि० ॥ ११ 'तरे मुहे' हं० त० ॥ १२ वा ओमुंचणे हं० त० ॥ १३ परिसारितामासे गयपच्चंग' हं० त० ॥ १४ अपविट्टे उत्थिते पत्थि' हं० त० विना ॥ १५ ०५ १० एतच्चिहान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १६ अप्यवजाए हं० त० ॥ १७ णिक्कट्टिते सि० । णिक्कहिते हं० त० ॥ १८ णिकट्टे हं० त० ॥ १९ 'लिंगिते वा दंसण' हं० त० विना ॥ २० उँद्वीरणमाणे हं० त० ॥ २१ वा ण व बाहिरओ जत्ता' हं० त० ॥ २२ सभिज्ज' हं० त० ॥ २३ संखिज्ज' हं० त० ॥ २४ णिव्वाहिज्ज' हं० त० ॥ २५ 'मणे वा लिंग' हं० त० ॥ २६ 'मायया' हं० त० ॥

जत्ता भविस्सति । उवग्गहणेसु आरामदेसगमणभूयिट्ठा जत्ता भविस्सति । णिण्णेसु णिण्णदेसभागगमणबहुला जत्ता भविस्सति । बद्ध-रुद्ध-वइतेसु गाम-णगर-सण्णिवेसरोधाय जत्ता भविस्सति । मोक्खेसु सुक्केसु अपंगुतेसु य णगररोधविप्पमोक्खाय जत्ता भविस्सति, णगरं रुद्धं विप्पमुच्चिस्सति ति । पसादेसु पसण्णेसु य विजयाय जत्ता भविस्सति ति बूया, पसादलंभाय जत्ता भविस्सति ति । अप्सण्णेसु अप्सादेसु य पराजयाय विवादबहुला यावि जत्ता भविस्सति ति । णवेसु पैच्चुदग्गेसु य णवो अपुव्वो जयो जत्तायं भविस्सति ति । अधोभागेसु पराजयो जत्तायं भविस्सति 5 ति । ६ उद्धंभागेसु वेसिकाविजयाय जत्ता भविस्सति । ७ मज्झिमेसु सैमागमं उभयतो समेण जत्ता भविस्सति ति । विवद्धीसु चतुप्पद-बिपदेसु वाहणागार-सद्-रूवपादुब्भावेसु य वाहणलाभजुत्ता य जत्ता भविस्सति । जण्णेयेसु बालेयेसु य जाणलाभाय जत्ता भविस्सति । तिक्खेसु सत्थसण्णिवायबहुला जत्ता भविस्सति, संगामबहुला यावि जत्ता भविस्सति ति । उवहुतेसु उवइवबहुला जत्ता भविस्सति । संसयितेसु सस्सयिता जत्ता भविस्सति ति । साहाधम्मेषु साहाधम्मप्पहारबहुला जत्ता भविस्सति । मुदितेसु णिरुवहुता जत्ता भविस्सति । अब्भंतरेसु उत्तमेसु य सयं अत्थवति 10 जत्तं गमिस्सति ति बूया । बाहिरेसु बाहिरपरिवारो भूयिट्ठं अत्थवतिस्स जत्तं गमिस्सति ति । बाहिरब्भंतरेसु बाहिरब्भंतरो भूयिट्ठं अत्थवतिस्स जत्तं गमिस्सति ति ।

बाहिरब्भंतरा बाहिरा बाहिरबाहिरा य आमासपादुब्भावा उत्तम-मज्झिम-पच्चवर-साधारणेसु णायका परिवारो य जत्तायं आधारयित्ता सकाहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वं भवति । तत्थ णीहारेसु णीहारबहुला जत्ता भविस्सति ति । णीहारणीहारेसु अपयाता अब्भुत्थिता णिवत्तिस्सति ति । पुरत्थिमेसु पुरत्थिमं जत्ता भविस्सति । दक्खिणेसु दक्खिणं 15 जत्ता भविस्सति । पच्छिमेसु पच्छिमेण जत्ता भविस्सति । वामेसु उत्तरेण जत्ता भविस्सति । आपुणेयेसु वरिसारत्ते जत्ता भविस्सति ति । विंसिमेतेसु पसण्णेसु य सरदे जत्ता भविस्सति । संबुतेसु सीतलेसु य हेमंते जत्ता भविस्सति । अलंकितेसु चित्तेसु य सुरभीसु य वसंते जत्ता भविस्सति । अग्गेयेसु उण्हेसु य धिसुमे जत्ता भविस्सति ति । उवणिद्धेसु बालेसु य पाउसे जत्ता भविस्सति ति बूया ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय जत्ताऽज्झायो नाम
सीतालीसतिमो सम्मत्तो ॥ ४७ ॥ छ ॥

20

[अडयालीसइमो जयज्झाओ]

णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय जयो णामाज्झायो । तमणुवक्खाइस्सामि । तं जधा-तत्थ अत्थि जयो णत्थि जयो ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे लद्धामासे २० पुण्णामासे २० मुदितामासे दक्खिणामासे पुण्णामधेज्जामासे इस्सरामासे उत्तमामासे उद्धंभागामासे 25 पसण्णामासे अणुपहुतामासे उम्मज्जिते उल्लोगिते उदत्तेसु सद्-रूव-रस-गंध-फासपादुब्भावे य अत्थि जयो ति बूया । तत्थ रण्णं वा रायकुलं वा गणाणं वा णगराणं वा णिगमाणं वा पट्टणाणं वा खेडाणं वा आगराणं वा गामाणं वा सन्निवेसाणं वा विवद्धीसंपयुत्तासु कहासु उदाहरणोदीरणेसु वा एवमादीणं सद्धानं अत्थि जयो ति बूया । तत्थ उदुकाले उस्सये वा रुक्खाणं वा गुम्माणं वा लताणं वा वल्लीणं वा पुप्फ-फल-तय-पत्त-पवाल-परोहउदग-पहट्टसद्-रूवपादुब्भावेसु पक्खि-चतुप्पद-परिसप्प-जलयराणं मंदोदगसंपयोगे य कधासु वा एवमादीसु पडिरूवेसु 30 वा अत्थि जयो ति बूया । तत्थ णव-पुण्ण-अहिणवपुप्फ-फल-पत्त-पवाल-मूल-कंदगतेसु वत्था-ऽऽभरण-भायण-

१ पन्नदज्जेसु य हं० त० विना ॥ २ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ३ समासमं हं० त० सि० ॥ ४ संसंतितेसु हं० त० सि० ॥ ५ विसिमिते ॥ ६ उण्हेयेसु हं० त० ॥ ७ सत्ताली हं० त० ॥ ८ २० ॥ ९ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १० उत्तरामासे हं० त० ॥ १० महोदग हं० त० ॥

सयणा—ऽऽसण—जाण—वाहणपरिच्छद—वत्था—ऽऽभरणोपकरणसमंग—उदत्त—परघपादुभावेसु चेव अत्थि जयो ति बूया ।
 तत्थ धण—धण्णगह—गाम—णगरलद्ध—अधिद्वितपभुत्त—जातसद्दपादुभावेण खंधावारअंक्खुज्जंतउदग्गविजितणिचयपादुभावेण
 सव्वकज्जारंभपुरिसकारणिव्वेसफलपादुभावेण अत्थि विजयो ति बूया । तत्थ छत्त—भिगार—ज्झय—विअणि—सिबिका—
 रध—पासादसद्द—रूवपादुभावेसु असण—पाण—खाइम—साइमणव—पच्चुदग्ग—मणुन्नपादुभावे गाम—णगर—खेड—पट्टणा—
 5 ऽऽगर—अंतेपुर—गिह—खेत्त—सण्णिवेससंथापणमापणासु आराम—तलाग—सव्वसेतुसंथावणमापण—सन्निवेसेसु एवंविहेसु
 सद्द—रूवपादुभावेसु अत्थि विजयो ति बूया । एवमादीसु मणुण्णोदत्तेसु अब्भंतरबाहिरेसु आमास—सद्द—रूवपादुभावेसु
 विजयं बूया । तत्थ बज्झामासे चलामासे कण्हामासे तुच्छामासे दीहामासे वामामासे णपुंसकामासे पेस्सामासे जधण्णामासे
 अधोभागामासे अप्पसण्णामासे उहुयामासे ओमज्जिते ओलोगिते अणुदत्तेसु य सद्द—रूव—गंध—रस—फासपादुभावेसु णत्थि
 जयो ति बूया । तत्थ धणं वा रायकुलाणं वा गणाणं वा देसाणं वा णिगमाणं वा णगराणं वा पट्टणाणं वा खेडाणं
 10 वा आगराणं वा गामाणं वा सण्णिवेसाणं वा एवमादीणं अण्णेसि पि हाणीसंपयुत्ता[सु] कधासु णत्थि विजयो ति
 बूया । तत्थ उट्ठणं वा मासाणं वा समयाणं वा रुक्खाणं वा गुम्माणं वा लताणं वा वल्लीणं वा पक्खीणं वा चतुप्पदाणं
 वा परिसप्पाणं वा कीड—किविल्लगाणं वा थीणं वा पुरिसाणं वा उदुकाल—मद—जोव्वण—पहास—पमुदित—बल—वीरिय—
 अतिवत्त—हीण—दीणसद्द—रूवपादुभावेसु णत्थि विजयो ति । तत्थ परिदीणोवहुत्त—वावण्णपुप्फ—फल—पवाल—
 अंकुर—परोह—पाण—भोयण—वत्था—ऽऽभरणोपकरण—सयणाऽऽसण—जाण—वाहणपरिच्छद—आसार—परिविहल—भिण्ण—
 15 जज्जरपादुभावेसु एतेसि वा एवमादीणं दव्वोवकरणाणं विणास—विसंजोयणादिसु सद्दरूवपादुभावेसु णत्थि विजयो
 ति । तत्थ धण—धण्ण—रतणसंचयपरिहाणि—विणास—विप्पलोवणसद्द—रूवपादुभावेसु णत्थि विजयो ति बूया । तत्थ
 धय—छत्त—सत्ति—पास—वीयणी—भद्दासण—सिबिक—संदण—रध—वलभी—पदोलि—पवहणभग्ग—मैधित—पडित—विप्पजोयित—
 ओणामित—लग्ग—लयित—अपविद्ध—छुद्ध—सदिवारित—पहत—परावत्तियएवंविधसद्द—रूवपादुभावेसु णत्थि विजयो ति
 बूया । तत्थ खंधावारपरजय—विणिपातितजोध—विविधवाहण—पडह—तुरिय—वेजयंति—घंटा अणुदत्त—हीण—खामसर—
 20 भीतवाचक(बाधक)—पलातविविधएवंविधसद्द—रूवपादुभावे णत्थि जयो ति बूया ।

तत्थ अब्भंतरेसु सयं परक्कमेण विजयं बूया । बाहिरब्भंतरेसु सयं परक्कमेण संभुच्चविजयं बूया । बाहिरेसु
 परसंसयपरक्कमेण विजयो भविस्सति ति बूया । पुण्णामेसु परक्कमेण विजयो भविस्सतीति बूया । थीणामेसु संतेण
 विजयो भविस्सतीति । णपुंसएसु अपुरिसकारेण विजयो भविस्सतीति । णिद्धेसु समुदितस्स सामिद्धीयं विजयो भविस्सतीति
 बूया । लुक्खेसु णिरागयस्स अदसंसाय विजयो भविस्सतीति । अब्भंतरेसु रज्जत्थस्स विजयो भविस्सतीति बूया ।
 25 अब्भंतरब्भंतरेसु रायधाणितं णगरगतस्स विजयो भविस्सतीति बूया । बाहिरब्भंतरेसु रज्जंतगतस्स विजयो भविस्सतीति
 ति । बाहिरेसु परविसयं गंता विजयो भविस्सतीति । बाहिरबाहिरेसु परविसयगतस्स परो विजयो भविस्सतीति बूया ।
 आहारेसु आयबहुलो विजयो भविस्सतीति । णीहारेसु जोणिबहुलो विजयो भविस्सतीति । थूलेसु महाविजयो भविस्सतीति
 बूया । किसेसु अप्पो विजयो भविस्सतीति । तिक्खेसु महता सत्थसण्णवातेण विजयो भविस्सतीति । मतेसु पाणावायबहुलो
 विजयो भविस्सतीति बूया । मुदितेसु अहिंसाय मुदितस्स विजयो भविस्सतीति बूया । पुरत्थिमेसु गतेसु पुरत्थिमायं
 30 दिसायं विजयो भविस्सतीति बूया । दक्खिणेसु दक्खिणायं दिसायं विजयो भविस्सतीति । पच्छिमेसु गतेसु पच्छिमायं
 दिसायं विजयो भविस्सतीति । वामेसु गतेसु उत्तरायं दिसायं विजयो भविस्सति ति ।

ॐ कसि काले विजयो भविस्सतीति । ॐ पुव्वमाधारिते जधुत्ताहि कालोपलद्धीहि उदु—पक्ख—सुक्क—
 काल—पुव्वण्ह—मज्झण्ह—ऽवरण्ह—पदोस—ऽड्ढरत्त—पच्चूसोपलद्धीहि उवलद्धव्वा भवंति । पुव्वं जये आधारिते कस्स

१ 'मयउ' सं ३ पु० । 'मग्घउ' सि० ॥ २ 'त्थ वणवण्ण' हं० त० ॥ ३ 'अब्भज्जुतउद' सं ३ पु० । अब्भुज्जंतउद'
 सि० ॥ ४ 'त्थ वण्णं वा रायकुलं वा गहणं वा' हं० त० ॥ ५ 'महित' हं० त० ॥ ६ 'सु अत्थस्स' सं ३ पु० ॥
 ७ 'सु जाणीव' हं० त० विना ॥ ८ हस्तचिहान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥

कधं कंसि खेत्तंसि केण गुणोपजयेण कंसि कालंसि त्ति एवमादीआओ उवलद्धीओ आधारयित्ता आधारयित्ता जयमंतरेण जधुत्ताहि उवलद्धीहि उवलभिउं वियाकरे तव्वाओ भवन्ति ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय जयो णामाज्झायो
अड्यालीसतिमो सम्मतो ॥ ४ ॥ छ ॥

[एगूणपण्णासइमो पराजयज्झाओ]

5

णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पराजयो णामाज्झायो । तमणुवक्खस्सामि । तं जधा—तत्थ अत्थि पराजयो णत्थि पराजयो त्ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे दक्खिणगत्तामासे इस्सरियामासे उत्तमामासे उद्धंभागामासे अभिमज्जितामासे मुदितामासे पसण्णामासे णत्थि पराजयो त्ति बूया । तत्थ उदूणं वा कच्छणं वा लताणं वा गुम्माणं वा वल्लीणं वा पक्खीणं वा चतुप्पदाणं वा परिसप्पाणं वा जलचराणं वा कीडकिविल्लगाणं वा इत्थीणं 10 वा उदुकालहासं समुदयउदग्गसमायुत्तासु कधासु पडिरूव—सद्दपादुब्भावेसु य णत्थि पराजयो त्ति बूया । तत्थ णव—परिपुण्ण—अविणट्ठरूक्ख—पुप्फ—फल—पत्त—मूल—पवाल—पाण—भोयण—वत्था—ऽऽभरण—भायण—जाण—वाहण—वत्था—ऽऽभरणोवकरणपादुब्भावे सहोदीरणे वा णत्थि पराजयो त्ति बूया । तत्थ बज्झामासे चलामासे लुक्खामासे किलिट्टामासे तुच्छामासे णपुंसकामासे वामगत्तामासे जधण्णामासे अधोगत्तामासे णिमज्जिते अपमज्जिते दीणामासे अप्सण्णामासे मतामासे उवहुतामासे दुग्गंधामासे पराजयो भविस्सतीति बूया । ॥ १ ॥ तत्थ अरण्यं वा रायकुलं वा देसाणं वा णिगमाणं 15 वा नगराणं वा पट्टणाणं वा खेडाणं वा आगराणं वा गामाणं वा सन्निवेसाणं वा हाणी—उद्धण—विणासपाउब्भावे एवंजुत्तासु कहासु य पराजयो भविस्सतीति बूया । ॥ २ ॥ तत्थ णीहारेसु उदूणं वा उस्सयाणं वा रुक्खाणं वा गुम्माणं वा लताणं वा पक्खीणं वा चतुप्पदाणं वा परिसप्पाणं वा जलचराणं वा कीडकिविल्लगाणं वा पुरिसाणं वा इत्थीणं वा उदुकाल—हास—जोव्वण—मैदोदग्ग—अतिवत्त—खीणपादुब्भावेसु पराजयो भविस्सतीति बूया । तत्थ रयणविणासे रज्जविणासे रायविणासे रायकुलविणासे देसविणासे रायधाणिविणासे णगरविणासे णिगमविणासे पट्टण—खेड—आगर—गाम—सण्णिवेस— 20 पासाद—गिह—खित्त—आराम—तलाग—सव्वसेतुविणासपादुब्भावे चैव एवंजुत्तासु य कधासु पराजयो भविस्सतीति बूया । तत्थ परिजिण्ण—खंड—हीणोपहुत—हित—विणट्ठ—वावण्णोपकपुप्फ—फल—पत्त—पवाल—कंद—मूल—अंकुर—परोहगते पाण—भोयण—वत्था—ऽऽभरण—जाण—वाहण—भायण—सयणा—ऽऽसण—वत्था—ऽऽभरणउवकरणविणासपाउब्भावे पराजयो भविस्सतीति बूया । तत्थ धण—धण्ण—रत्तणसंचय—सयणा—ऽऽसण—जाण—वाहण—वत्था—ऽऽभरण—परिच्छद—सत्थावरण—सव्वोपकरणामासेसु उत्थाणकरण—असंपत्ति—असक्का—परिभव—अवमाणा—ऽवसिद्धि—असंपत्त—अणिव्वुतिपादुब्भावेसु 25 एवंजुत्तेसु वा उदाहरण—सद्दपादुब्भावेसु पराजयो भविस्सतीति बूया ।

तत्थ अब्भंतरे सयं पराजयो भविस्सतीति बूया । बाहिरब्भंतरेसु अण्णेहि सह पराजयो भविस्सतीति बूया । बाहिरेसु परसंसितो पराजयो भविस्सतीति बूया । पुण्णामेसु परक्कमेण पराजयो भविस्सतीति ॥ ३ ॥ बूया । थीणामेसु संतेण पराजयो भविस्सतीति । ॥ ४ ॥ णपुंसएसु अपुरिसक्कारेण पराजयो भविस्सतीति बूया । दढेसु एकट्ठाणट्ठिताणं पराजयो भविस्सतीति । चलेसु परिधावन्ताणं पराजयो भविस्सतीति बूया । णिद्धेसु मुदिताणं पराजयो भविस्सतीति बूया । 30

१ जयंतं हं० तं० सि० विना ॥ २ णामज्झा सि० ॥ ३ यालातीसति हं० तं० ॥ ४ माहारियव्वं हं० तं० ॥ ५ हस्तचिह्नन्तर्गतः पाठसन्दर्भः हं० तं० एव वर्तते ॥ ६ महोदग्ग हं० तं० ॥ ७ हस्तचिह्नन्तर्गतः पाठः हं० तं० एव वर्तते ॥

लुक्खेसु निरागताणं पराजयो भविस्सतीति बूया । अब्भंतरेसु रायत्थस्स पराजयो भविस्सतीति । ६ अब्भंतरेसु रायहाणीगयस्स पराजयो भविस्सति ति ७ बूया । बाहिरब्भंतरेसु रज्जसंधीगतस्स पराजयो भविस्सतीति । बाहिरेसु अरण्णगतस्स पराजयो भविस्सति ति । ८ बाहिरेसु अरण्णगयस्स पराजयो भविस्सति ति । ९ बाहिरबाहिरेसु परविसयगयस्स पराजयो भविस्सति ति । आहारेसु सलाभो पराजयो भविस्सति ति । णीहारेसु अफलो पराजयो भविस्सति ति । १० थूलेसु महापराजयो भविस्सति ति । कसेसु अप्पो पराजयो भविस्सतीति बूया । कण्हेसु बहुक्खतो पराजयो भविस्सतीति बूया । सुक्केसु अत्थलाभसमाउतो पराजयो भविस्सतीति । तिव्खेसु सत्थपातबहुलो पराजयो भविस्सतीति । मतेसु पाणपातबहुलो पराजयो भविस्सतीति । अप्पसण्णेसु अप्पियपराजयो भविस्सति ति । पुरत्थिमेसु पुरत्थिमायं दिसायं पराजयो भविस्सतीति । दक्खिण्णेषु गत्तेसु दक्खिणायं दिसायं पराजयो भविस्सति ति । पच्छिमेसु गत्तेसु पच्छिमायं दिसायं पराजयो भविस्सति ति । वामेसु गत्तेसु उत्तरायं दिसायं पराजयो भविस्सति ति ।

१० एवं पराजये पुव्वाधारिते उप्पन्ने पादुब्भावे अत्थि पराजयस्स पुणरवि कधं पराजयो भविस्सति ति ११ कं धं कस्स कस्स पराजयो भविस्सति ति १२ कंसि देसंसि पराजयो भविस्सति ति १३ कंसि कालंसि पराजयो भविस्सति ति कंसि दिसायं पराजयो भविस्सति ति १४ आधारइत्ता अणुपुव्वसो आमास—सद्—रूव—रस—गंध—फासपादुब्भावेसु अब्भंतरे—बाहिरत्थावणाहि य एवमादीहि यधोत्ताहि उवलद्धीहि पराजयो समणुगंतव्वो भवति ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पराजयो णामाज्झायो एंगोणपण्णासतिमो

15

समणुगंतव्वो भवति ॥ ४९ ॥ छ ॥

[पण्णासइमो उवहुतज्झाओ]

णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय उवहुतं नामऽज्झातो । तं खलु भो ! तमणुवक्खस्सामि । [तं जधा—] तत्थ सोवद्द्वो निरुवद्द्वो ति पुव्वर्माधारयितव्वं भवति । तत्थ उवहुतामासे दुग्ंधामासे किलिद्धामासे कण्हामासे लुक्खामासे अप्पसण्णामासे दीणामासे तिव्खामासे सव्वसत्थगते सव्वच्छिद्गते २० सव्वखंडगते सव्ववज्जगते सव्वउपद्द्वगते सव्वउपहुतणर—णारि—पक्खि—चउप्पद—परिसप्प—जलचर—कीडकिविल्लक—पुप्फ—फल—रुक्ख—गुम्म—लता—वल्लि—पत्त—पवाल—अंकुर—परोहगते वत्था—ऽऽभरण—सयणा—ऽऽसण—जाण—वाहण—भायणपरिच्छद—दव्वोवकरण—धण—धण्ण—रयणगते भिण्ण—विज्ज—सविकार—सवाहत—उवहित—कूड—कम्मपाससमाउत्त—पादुब्भावे एतारिसे सोवद्द्वे सोवद्द्वं बूया । तत्थ अणुवहुतामासे अव्वापण्णामासे सुगंधामासे अकिद्धामासे सुक्कामासे णिद्धामासे पसण्णामासे मुदितामासे सव्वअच्छिण्ण—अखंड—अणवज्ज—अणुवहुतगते सव्वअणुपहुतमुदितणर—णारि— २५ पक्खि—चउप्पद—जलयस्—कीडकिविल्लगते णव—पुण्णपुप्फ—फल—रुक्ख—गुच्छ—गुम्म—लता—वणे(वल्लि)—पत्त—पवाल—अंकुर—परोहगते उदत्तवत्था—ऽऽभरण—सयणा—ऽऽसण—जाण—वाहण—भायणपरिच्छद—दव्वोपकरण—धण—धण्ण—रयणगते अभिण्ण—अविज्ज—अविकार—अव्वाहत—अफुडित—अकूडकम्मदोसविप्पमुक्कपादुब्भावे मणुण्ण—पच्चुदग्गऽण्ण—पाण—भोयण—पादुब्भावेसु चेव एवंविहेसु आमास—सद्—रूव—रस—गंध—फासपादुब्भावेसु उदत्तेसु णिरुवहुतेसु णिरुवहुतो ति बूया ।

उवद्द्वे पुव्वाधारिते उप्पणवापादुब्भावेसु सोवद्द्वो कीरिसो ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ सव्वत्थगते ३० छेज्जं बूया । सव्वणिण्णेषु विलकं बूया । कण्हेसु तिलकालकं बूया । गहणेसु णत्थकं बूया । उवग्गहणेसु तणं बूया ।

१-२ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ३ बहुकूलो परा हं० त० ॥ ४-५ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ६ भविस्सति हं० त० विना ॥ ७ एगूणं हं० त० ॥ ८ माहारयियव्वं हं० त० ॥ ९ पण्णामासे हं० त० विना ॥ १० ण्णहत्थपु हं० त० ॥

अप्पसण्णेसु चलं बूया । वावण्णेसु किडिभकं सरं कुणिणखाणि णयणविकारो वा विण्णेया । गंठीसु गंठी बूया । वणेसु वणं बूया । अदंसणीयेसु काणं वा अंधं वा बूया । सद्देयेसु बहिरं वा कण्णछेज्जं वा बूया । गंधेयेसु णासारोगं वा णासाछेज्जं वा [बूया] । रसेयेसु जिब्भारोगं वा जिब्भाछेज्जं वा बूया । फासेयेसु तयादोसं वा फासोवघातं वा बूया ।

तत्थ उवहुतो अणुवहुतो पुव्वमाधारिते इमे संखेवा—उवहुते पडिपोगला उवलद्धवा भवन्ति । तत्थ काणं वा अंधं वा कुंटं वा गंडीपादं वा खंजं वा कुणीकं वा आतुरं वा उवहुतं वा विकलं वा दिट्ठा पडिरूवे उवहुतो त्ति 5 बूया । तत्थ पलितं वा खरडं वा विपण्णा वा तिलकालकं वा चम्मक्खीलं वा दट्ठं वा किडिगं वा किलासं वा कट्ठं वा सिब्भं वा कुणिणहं वा खतं वा अरुअं वा अण्णतरं वा सोवद्दवं दव्वमामसति उवहुतो त्ति जाणितव्वो भवति । तत्थ तेल्ल—दधि—दुद्ध—मधु—पुप्फरस—फलरस—मंस—सोणित—पूव—वसा—मुत्त—पुरीस—खेल—सिंघाणक—अक्खि—गूधक—कण्णगूधकादीणि एवंविधाणि आमसेज्जो उवहुतो त्ति जाणितव्वो भवति ।

तत्थ किलिट्ठेसु किलिट्ठमल्लणुलेवण—किलिट्ठपुप्फ—फल—पवाल—मूल—परोह—अंकुरकिलिट्ठ—पमिलातपादुब्भावे 10 वापण्णदुद्ध—दधि—घत—वापण्णपाणभोयण—परिजिण्णवत्थभोयणजज्जर—परिभिण्ण—खंडदव्वोपकरणे चेव एवंविधे पेक्खितामासे सह—रूव—गंध—फास—रसपादुब्भावेसु उवहुतो त्ति बूया । तत्थ उवहुते पुव्वाधारिते उप्पण्णे पादुब्भावे कीरिसो उवद्दवो त्ति पुव्वाधारिते तत्थ सुक्केसु सबलं बूया, १० तं चेव सुणवारकं बूया । ११ पीतेसु कामलं बूया । वापण्णेसु वापण्णं बूया । णीलेसु णीलं बूया । कण्हेसु कण्हतिलं बूया । गहणेसु णच्छकं बूया । उवग्गहणेसु तूणं बूया । सव्वणिट्ठेसु पिलकं चम्मक्खीलं वा गलुकं वा बूया । पिलकाय पिलकं चम्मक्खीलं, गलुणा गलुकं, गंडेण गंडं 15 पडिरूवेण जाणितव्वं भवति । तत्थ अग्गेयेसु दट्ठं बूया । कोडे कोडिकं, कोट्टिते कोट्टितं, आपडितेण आपडितं, वणेण वणं, तज्जातपडिरूवेण एवमादि अणुगतव्वं भवति । तत्थ णहेसु कुणिणहं, पोरिसेण वातंडं वा अम्हरिं वा, वसणेसु वातंडैअरिसं वा भगंदलं वा, उदरे कुच्छिरोगं वा वातगुम्भं वा सूलं वा, हितये छड्ढिं वा, उरे हिकं वा, कंठे अवयिं वा गलगंडं वा कट्ठं सलुकं (कंठमालकं) वा, कैकेसु अवयिं, पट्टीये पट्टिरोगं, सव्वाहारगते खंडोदं वा गुरुलं वा करलं वा बूया । मूकं वा खंडदंतं वा २० सामदंतं वा २१ आमासपडिरूवेहि आधारयितूण पत्तेगं पत्तेगं 20 सव्वं गीवाय गीवरोगं अवयिं वा गलगंडं वा बूया । हत्थेसु हत्थेज्जं वा अंगुलिछेज्जं वा अत्थोवद्दवं वा । पडिरूवोपलद्धीहि आमासेहि य उवलद्धि बूया । पादेसु पादछेज्जं वा अंगुलिछेज्जं वा पादोवद्दवं वा बूया । सीसे सीसवाधयो बूया । अक्खिखसु अक्खिखवाधयो बूया ।

तत्थ वातिको पेट्तिको संभिको सण्णिवतिको त्ति रोगा पुव्वमाधारयितव्वा भवन्ति । तत्थ सव्ववायव्वेसु सुक्केसु कसायरसपादुब्भावेसु वा सव्वप्पयोगेसु सव्वचेद्वागते य वातिकं रोगं बूया । तत्थ अग्गेयेसु पीयरसपादुब्भावेसु पण्णे 25 अंबिलरसपादुब्भावेसु लवणरसपादुब्भावेसु सव्वउसुणपरिदाहगते य पेट्तिकं रोगं बूया । आपुणेयेसु दढेसु सीतलेसु मधुर—पेसलरसपादुब्भावेसु चेव सेंभिकं रोगं बूया । तत्थ अधोणाभीयं गत्तामासे अधोणाभीगतोपकरणेसु य वातिकं रोगं बूया । अधोहितयस्स जाव णाभीतो त्ति एतेसि गत्ताणं संपरमासे एतेसि ३० चेव उवकरणसद्—रूवपादुब्भावे पेट्तिकं रोगं बूया । उद्धंहितयगतेसु संपरामट्ठेसु एतेसि चेव गत्तोवकरणेसु धूमणेत्तादिसु पादुब्भावेसु य पुण्णामेसु य सह—रूवेसु सेंभिगं रोगं बूया । आमेसु अण्णगेयेसु य आमा[स]यगतं रोगं बूया । पक्केसु अग्गेयेसु य पक्कासय—समुप्पण्णं 30 रोगं बूया ।

१ 'डिलं वा हं० तं० विना ॥ २ अरूवं वा हं० तं० ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० तं० एव वर्तते ॥ ४ गंडयेण हं० तं० ॥ ५ 'इपरि' हं० तं० ॥ ६ कट्ठसा' हं० तं० ॥ ७ कक्केसु हं० तं० विना ॥ ८ वा मुरुलं वा करणं वा हं० तं० विना ॥ ९ २० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० तं० नास्ति ॥ १० हत्थेज्जं हं० तं० ॥ ११ गंधामासे हं० तं० ॥ १२ चेव करणं' हं० तं० विना ॥ १३ 'ब्भावेहि सुतण्णामे' हं० तं० विना ॥

एवं वातपित्त—सिभोपलद्धीहिं अभिघातखयोपलद्धीहिं आमासय—पक्कासतोपलद्धीहिं वात—पित्त—सिभोपलद्धीहिं उवलब्ध आमास—सद्—रूवपादुब्भावेहिं य संगहतो वातिक—पित्तिक—सैभिक—सन्निवातिका य चउव्विहा भेदसो अणेगागारा आधारयित्तूणं जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलद्धवा भवन्ति । तत्थ तिलकालकं वा चम्मकीलं वा दट्टुं वा पिलकं वा तूणं वा णत्थकं वा वणं वा एवमादि सुद्धंभागेसु आमहेसु उद्धंगीवाय विण्णैयाणि भवन्ति । अधोभागेसु 5 अधोकडीयं विण्णैयाणि भवन्ति । समभागेसु गत्तेसु आमहेसु अंतस्काये विण्णैया भवन्ति । कंसि देसे पुव्वाधारितेसु दक्खिणेसु दक्खिणेसु चेव गत्तेसु विण्णैयाणि भवन्ति । वामेसु वामेसु चेव गत्तेसु विण्णैयाणि । वामदक्खिणेसु वामदक्खिणेसु गत्तेसु विण्णैयाणि । मज्झिमे णेव वामेसु णेव दक्खिणेसु मज्झिमेसु चेव गत्तेसु विण्णैयाणि । पुण्णामेसु गत्तेसु पुण्णामेसु चेव विण्णैयाणि । थीणामेसु गत्तेसु थीणामेसु चेव विण्णैयाणि भवन्ति । नपुंसकेसु अंतसंधिच्छेदेसु विण्णैयाणि । दढेसु दढेसु कक्खडगत्तेसु विण्णैयाणि । चलेसु चलेसु चेव गत्तेसु विण्णैयाणि । णिद्धेसु अच्छीसु 10 कण्णेसु वा णासायं वा मुहे वा पोरिसे वा विण्णैयाणि । लुक्खेसु णहेसु विण्णैयाणि । कण्हेसु केसंते वा उत्तरोट्टे वा भुमकासु वा । सुक्केसु जाभीयं वा वत्थिसीसे वा विण्णैयाणि । सामेसु थणपालीसु विण्णैयाणि भवन्ति । किसेसु सुयीसु वा दंतेसु विण्णैयाणि । बाहिरेसु बाहिरेसु चेव गत्तेसु विण्णैयाणि । अब्भंतरेसु अब्भंतरेसु चेव गत्तेसु विण्णैयाणि । दीहेसु दीहेसु चेव गत्तेसु विण्णैयाणि । रस्सेसु रस्सेसु चेव गत्तेसु विण्णैयाणि । थूलेसु थूलेसु चेव गत्तेसु विण्णैयाणि । किसेसु किसेसु चेव जाणेज्जो । णिलाडेसु गंडेसु कण्णेसु पादतलेसु करतलेसु चेव विण्णैयाणि भवन्ति । डहरचलेसु 15 चेव अंगुलीसंधीसु जाणेज्जो । डहरथावरेसु अंगुलीपव्वेसु जाणेज्जो । गहणेसु सिरंसि कक्खेसु वा वत्थिसीसे वा विण्णैया । उवग्गहेसु भमुहासु अच्छीसु वा जाणेज्जो । परिमंडलेसु सिरंसि गंडे वा विण्णैया । थलेसु उण्णतेसु जाणेज्जो । वायव्वेसु णासायं वा मुहे वा अवाणे वा विण्णैया । अग्गेयेसु अग्गेयेसु चेव जाणेज्जो । तिक्खेसु दंतेसु वा णहेसु वा जाणेज्जो । आदिमूलिएसु आदिमूलिएसु चेव जाणिज्जो । मज्झिमविगाढेसु मज्झिमविगाढेसु चेव जाणेज्जो । अंतेसु अंतेसु चेव जाणेज्जो । २० तंबेसु तंबेसु चेव जाणेज्जो । २१ दंसणिज्जेसु दंसणिज्जेसु चेव 20 जाणेज्जो ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय उवहुतो णामाज्झायो पण्णासतिमो सम्मतो ॥ छ ॥ ५० ॥

[एगपण्णासइमो देवताविजयज्झाओ]

णमो भगवतो यसवओ महापुरिसस्स महावीरवद्धमाणसामिस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिनाय 25 अंगविज्जाय देवताविजयो णामाज्झायो । तं खलु भो ! तमणुवक्खाइस्सामि । तं जधा—उद्धंभागेसु सुरा, अधोभागेसु सुरा, सुयीसु जक्खा, सद्देयेसु गंधव्वा, चलेसु पितरो, भतेसु पेता, महब्बलेसु दारुणेसु य दारुणा विन्नेया । सारमंतेसु वसवा, अग्गेयेसु आदिच्चा, चतुरस्सेसु अस्सिणो, णिव्वेहेसु अव्वाबाधा, सामेसु देवदूता, कण्हेसु अरिट्ठा, बुद्धिरमणेसु सारस्सता, घोसमंतेसु गद्दतोया, वण्णवंतेसु वण्हिणो, थीणामेसु अच्छरातो, सेतेसु वरुणकाइया, पच्छिमेसु दक्खिणेसु भतेसु य पेतका, असारवंतेसु य उत्तरेसु वेसमणकाइया जक्खा, अग्गेयेसु पुरत्थिमेसु य अगिकाइया सोमकाइया 30 य विण्णैया । चलेसु कंदर्पहस्सेसु य छिद्देसु णक्खत्त—गह—चंद—तारारूवाणि विन्नेयाणि भवन्ति । अक्खिसु चंदा— ५५दिच्चा—तत्थ अग्गेयेसु आदिच्चा पीतेसु रतेसु य विन्नेया, सीतलेसु सुक्केसु य चंदो विण्णयो, संखतेसु णक्खत्ताणि, संखतेसु उत्तमेसु य णक्खत्तदेवताणि, बद्धेसु गहा विण्णैया । सद्देयेसु सामण्णेसु य बलदेव—वासुदेवा सिक्— वेस्समणा खंद—विसाहा अग्गि—मारुया य विण्णैया भवन्ति । सकाहिं सकाहिं आमास—सद्—रूव—पडिरूवोपलद्धीहिं

१ वा चमक्कासु सं ३ पु० । सुमकासु हं० त० ॥ २ णिडालेसु हं० त० विना ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ४ सतिमो वक्खाओ भवति ॥ ५० ॥ हं० त० ॥ ५ निव्वहे हं० त० ॥ ६ णहेसु सुस्सेसु हं० त० ॥

णिद्धेहिं सागरो वा णदी वा विण्णेया—तत्थ परिक्खेवेसु सागरा विण्णेया, दीहेसु णदी विण्णेया । लुक्खेसु अग्गि
इंदग्गि वा विण्णेया । सँप्पभेसु आदिच्चो । उण्हेसु अग्गी । उत्तमसाधारणेसु उण्हेसु य इंदग्गि विण्णेयो । मत्थए
बंधा उत्तमेसु या विण्णेया । निडालेसु इंदो इस्सरेसु य विण्णेयो । उत्तरेसु उवेंदो सव्वपरक्कमगते य विण्णेयो ।
बाहूसु बलदेवो वा वासुदेवो वा सव्वबलदेवगते य विण्णेया । सामेसु कामो विण्णेयो । सव्वकामपउत्ते सव्वरतिपयुत्ते
चेव संधिसु उदलादला विण्णेया । दढेसु गिरी विण्णेया । सिवेसु सिवो विण्णेयो । बहुरूवेसु य लिंगपादुब्भावेसु 5
जमेसु य जमो विण्णेयो । सारवंतेसु वेस्सवणो विण्णेयो । सुक्केसु य उत्तमेसु य वरुणो विण्णेयो । सोमेसु सोमपादुब्भावेसु
य सोमो विण्णेयो । कण्हेसु रत्ती विण्णेया । सुक्केसु दिवसो विण्णेयो । सिरंसि सिरी विण्णेया । मुदितेसु कामपजुत्तेसु
य अइराणी विण्णेया । महावकासेसु पुधवी विण्णेया । सामेसु एकणासा विण्णेया । दंसणीयेसु णवमिगा विण्णेया ।
णिद्धेसु सुरादेवी विण्णेया । कण्हेसु णिण्णेसु सव्वपरिसप्पपादुब्भावे य णागी विण्णेया । उद्धंभागेसु चलेसु य वण्णवंतेसु
सुवदणेसु सव्वपक्खि—पवकपादुब्भावे य सुवण्णा विण्णेया । गरुलवाहणपादुब्भावे य तत्थ अधोभागेसु णिण्णे य 10
अधोलोकोपवण्णा विण्णेया, असुरा वा णागा वा सुवण्णा वा विण्णेया भवंति, सकाहिं सकाहिं उवलद्धीहिं विण्णेया ।
तत्थ तिरियंभागेसु उद्धंणाभीय अधोगीवाय तिरियामासे तिरियविलोकिते तिरियसद्दपादुब्भावे य तिरिउवपपातिका दीवकुमारा
समुद्दकुमारा दिसाकुमारा अग्गिकुमारा वाउकुमारा थणितकुमारा विज्जुकुमारा पिसाय—भूत—जक्ख—रक्खस—गंधव्वा
चंदिम—सूरिय—गहगण—णक्खत्त—तारारूवा य सकाहिं सकाहिं उवलद्धीहिं आधारयितूणं आधारयितूणं आमास—सद्द—
रूवपादुब्भावेहिं विण्णेया भवंति । उद्धंभागेसु छत्त—वीयणि—भिगार—पादुब्भावेहिं उद्धं पक्खित्तंसि उद्धंभागोवकरणेसु 15
य एवमादीसु य षडिरूव—सद्दपादुब्भावेसु उद्धंलोकोपपण्णा वेमाणिका देवा विण्णेया कप्पसण्णाहिं विधिआधारणाहिं
लेस्सादिआधारणाहिं चेव भवंति । तत्थ उत्तमेसु इस्सरेसु चेव अधिपती विण्णेया । सामाणेसु दंडेसु सामाणपादुब्भावे
य सामाण्या विण्णेया । पेस्सेसु आभियोगिका परिसोववण्णा विण्णेया । तत्थ सव्ववाहणगते सव्ववाहणजोणीगते
य आभिजोगिका विण्णेया । सव्वपरिसागते सव्वपरिवारगते य परिसोववण्णा विण्णेया । तत्थ सव्वसगुणगते
सुवण्णा पुण्णामेसु, थीणामेसु सुवण्णकण्णका जाणितव्वा भवंति । दीहेसु णिद्धेसु णागा पुण्णामेसु, थीणामेसु णागीदेवी 20
विण्णेया । धणगते ववहारगते सारवंतेसु य वेस्सवणो विण्णेयो । सुक्केसु णिद्धेसु इस्सरेसु समुद्दवकपादुब्भावेसु य
वरुणो विण्णेयो । २० इस्सरेसु उत्तमेसु सव्वरायषडिरूवेसु य इंदो विण्णेयो । मतेसु सव्वपेतषडिरूवेसु इस्सरेसु य
जमो विण्णेयो । २० गो—महिस—गवेलकपादुब्भावे रुद्देसु य सिवं बूया । कुक्कुड—मयूरपादुब्भावे सेणावति [विण्णेयो] ।
कुमारपादुब्भावेसु य खंदो विण्णेयो । छगल—मैंढक—कुमार—असिपादुब्भावे य विसाहो विण्णेयो । दंडेसु
सव्वजोधपादुब्भावेसु य वण्ही विण्णेयो । उण्हेसु अग्गी विण्णेयो । सव्वदव्वोवकरणपादुब्भावे य चलेसु तालखंड— 25
वीजणकादिसु य पादुब्भावेसु यँतं बूया । दारुणेसु रक्खसा विण्णेया । बिभित—रुद्द—भय—हासेसु पिसाय—भूता चेव
विण्णेया, थीणामेसु एतेसु चेव पादुब्भावेसु रक्खसीओ पिसाईओ भूतकण्णा देवीओ विण्णेयाओ भवंति । सव्वगंधव्वगते
तंति—तल—तालणिग्घोसे गंधव्वा विण्णेया, थीणामेसु गंधव्वकण्णाओ विण्णेया । मधुरघोसेसु पक्खिसु षडिरूवपादुब्भावेसु
किन्नरा किंपुरिसा य विण्णेया, थीणामेसु किन्नरीओ किंपुरिसकण्णका विण्णेया । सुयीसु पुण्णेसु यक्खा विण्णेया,
थीणामेसु जक्खणिओ विण्णेयाओ । मूलजोणीगते वण्णस्सतीकण्णाओ विण्णेयाओ । धातुजोणीगते पव्वतदेवता 30
विण्णेया । णिद्धेसु पाणजोणीगए य समुद्द—नदी—कूव—तलाग—पल्ललदेवयौतो विण्णेया—[तत्थ] णिण्णेसु परिक्खेवेसु
समुद्देवताओ, २० तत्थ दीहे णदीदेवताओ, २० णिण्णेसु उवट्टेसु परिमंडलेसु य २० कूवदेवता विण्णेया, णिण्णेसु
परिमंडलेसु य २० समुद्देवताओ विण्णेयाओ, विवेक्खिते दिसादेवताओ विण्णेया । तधाऽणुपुव्वं दिसोपलद्धीहिं उवलद्धव्वं
भवति । इद्धेहिं सिरी विण्णेया । बुद्धिरमणेसु बुद्धि—मेहाओ विण्णेयाओ । अब्भंतरेसु लतादेवताओ विण्णेयाओ ।

१ सपादेसु हं० त० ॥ २ सु अघोणाभीय हं० त० विना ॥ ३ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥

४ यतं हं० त० विना ॥ ५ यावो विं हं० त० ॥ ६—७ २० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥

दद्वेसु वेत्थुदेवताणि विण्णेयाणि । परिमंडलेसु णगरदेवताणि विण्णेयाणि । मतेसु सुसाणदेवताणि विण्णेयाणि । दुग्गंधेसु वच्चदेवताणि उक्कुरुडिकदेवताणि य । उत्तमेसु उत्तमाणि, मज्झिमेहिं मज्झिमाणि, पच्चवरेहिं पच्चवराणि । आरियोपलद्धीहिं आरियदेवताणि, मिलक्खूपलद्धीहिं मिलक्खूहिं मिलक्खदेवताणि ।

विमुत्तेसु अपरिगहेसु उज्जुएसु य ०८ सण्णभेसु १० पसण्णेषु य सम्मभाविताणि । अविमुत्तेसु वंकेसु णिण्णभेसु ५ परिगहवन्तेसु आरुभेसु य मिच्छभाविताणि । पुण्णामेसु पुरिसा विण्णेया, थोणामेसु थिओ विण्णेयाओ भवन्ति । कण्ह—नील—कापोत—रत्त—पीय—सुक्किलेहिं वण्णपडिरूवेहिं ठियामासेहिं य कण्ह—णील—काउ—तेउ—वंभ—सुक्काओ लेस्साओ सएहिं वण्णपडिरूवेहिं आधारयित्ता आधारयित्ता देवताणं विण्णेयाओ भवन्ति ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय देवताविजयो णामाज्झायो एगपण्णासतिमो वक्खातो भवति ॥ ५१ ॥ छ ॥

10

[बापंचासइमो णक्खत्तविजयज्झाओ]

णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स महावीरस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय णक्खत्तविजयो णामाज्झायो । तं खलु भो ! वक्खस्सामि । तं जधा—उल्लेगिते उम्मज्जिते सौसुम्मज्जणे पक्खिदंसणे इंदधणु—विताण—विज्जु—थणित—चंदा—ऽऽदिच्च—णक्खत्त—गहगण—तारागणजोगा—ऽजोगा उदयऽत्थमण—अमावस्सा—पुण्णमासी—मंडल—वीथी वि जारिसं थाणं जुग—संवच्छर—उदु—मास—पक्ख—सव्वतिथि—अधोरत्त—खण—लव—मुहुत्त—
15 उक्कापात—दिसादाह—संझादंसण—णक्खत्तणाम—थी—पुरिस—पक्खि—चउप्पद—दव्वोवकरणगते एवंविहसद्—रूवपादुभावे जोतिसं पुच्छसि त्ति बूया । तत्थ सुक्कामासे चंदं बूया । णिडाले चेव चंदं बूया । अक्खिसु मुहे चेव आदिच्चं बूया । संधिसु णक्खत्तं बूया । दढामासेसु गहं बूया । पक्खिण्णामासे तारकाओ बूया । ओमज्जिए ओलोकिए अत्थमणाणि बूया । उल्लेकिए उम्मज्जिए उम्मट्टिए य उदयं बूया । चलेसु वियारं बूया । दढामासेसु आहारेसु य गहणं बूया । णीहारेसु चलेसु भोक्खं बूया । परिमंडलेसु परिमंडलाचारं बूया । दीहेसु विधीचारं बूया । आहारेसु पवेसं बूया ।
20 णीहारेसु णिगमणं बूया । बज्जेसु बाहिरमंडलाथारं बूया, ०८ सौमेसु मज्झिममंडलाथारं बूया, १० अब्भंतरेसु अब्भंतमंडलाथारं बूया । तत्थ दीहेसु बहस्सतिं बूया । सुक्केसु सुक्कं बूया । रत्तेसु लौतेकं बूया । मंडलेसु सणिच्छरं बूया । पयलाइएसु निमिस्सियंसि य राहुं बूया । उपहुएसु धूमकेउं बूया । पंडूसु विसुद्धेसु ये बुधं बूया ।

तत्थ पुरिमेसु गतेसु कत्तिकादीणि अंसलेसपज्जवसाणाणि पुव्वदारिकाणि सत्त नक्खत्ताणि बूया । दक्खिण्णेषु गतेसु महादीकाणि विसाहापज्जवसाणाणि सत्त नक्खत्ताणि दक्खिण्णदारिकाणि बूया । पच्छिमेसु गतेसु अणुराधादीणि
25 सवणपज्जवसाणाणि सत्त नक्खत्ताणि पच्छिमदारिकाणि बूया । वामेसु गतेसु धणिट्ठादीकाणि भरणीपज्जवसाणाणि सत्त नक्खत्ताणि उत्तरदारिकाणि बूया ।

तत्थ पुण्णामेसु पुण्णामं पुणव्वसुं वा पुस्सं वा पुव्वदारेसु बूया । हत्थं वा सार्ति वा दक्खिण्णदारेसु बूया । मूलं वा अभीइं वा सवणं वा पच्छिमदारेसु बूया । उत्तरदारेसु णत्थि पुण्णामाणि णक्खत्ताणि । सव्वाणि उत्तराणि थोणामाणि जाणियव्वाणि भवन्ति । अवसेसाणि णक्खत्ताणि थोणामाणि एक्कवीसं जाणियव्वाणि भवन्ति ।

१ वत्थदे हं० त० ॥ २ दुग्गंतेसु हं० त० ॥ ३ 'डिकाणि देव' हं० त० विना ॥ ४ सीसज्जाणा हं० त० ॥ ५ 'ए य उट्टिएहि उदयं हं० त० ॥ ६ ०८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ७ लोचकं हं० त० । लोहितकं सि० ॥ ८ निमज्झियंसि हं० त० विना ॥ ९ य धुवं बू' हं० त० ॥ १० अस्सिलेस' हं० त० ॥ ११ अभीयिं वा समणं हं० त० ॥

तत्थ हत्थ—पाद—जंघोरु—बाहु—णाभीसु तीसं मुहुत्ताणि बूया । तत्थ पट्टोदर—खंध—वच्छेसु सिरंसि च पणयालीसतिमुहुत्ताणि बूया । तत्थ केस—मंसु—लोम—णह—सव्वंगुलीगए अंगुट्टेसु चेव पण्णरसमुहुत्ताणि बूया । एतेसामेवादेसंगहणे तूणपण्णरसमुहुत्तं अभीयं बूया ।

तत्थ तीसतिमुहुत्तेसु पुव्वदारेसु कत्तिगा मिगसंठाणं पुस्सं ति तिण्णि णक्खत्ताणि बूया । दक्खिणदारेसु महा पुव्वाफग्गुणी हत्थो चित्तं च चत्तारि णक्खत्ताणि बूया । अवइदारेसु अणुराधा मूलो पुव्वासाढाओ सवणो चत्तारि णक्खत्ताणि 5 बूया । उत्तरदारेसु धणिट्ठा पुव्वापोट्टपदाओ रेवती अस्सिणी य चत्तारि णक्खत्ताणि बूया । एयाणि तीसमुहुत्ताणि पण्णरस नक्खत्ताणि बूया । तत्थ पणतालीसमुहुत्ताणि पुव्वदारेसु रोहिणी पुणव्वसुं च दुवे णक्खत्ताणि जाणीया । दक्खिणदारेसु उत्तराफग्गुणीओ विसाहा चेव दुवे णक्खत्ताणि जाणीया । पच्छिमदारेसु उत्तरासाढा एगं णक्खत्तं जाणिया । उत्तरदारेसु उत्तरापोट्टपदा एकं णक्खत्तं जाणीया । एवमेयाणि पणयालीसमुहुत्ताणि छ णक्खत्ताणि बूया । तत्थ पण्णरसमुहुत्ते पुव्वदारिए अहं असिलेसं च दुवे णक्खत्ताणि जाणिया । दक्खिणदारेसु एकं साइं णक्खत्तं बूया । पच्छिमदारेसु 10 जेट्टं एकं णक्खत्तं बूया । उत्तरदारेसु सयभिसया भरणी य दुवे णक्खत्ताणि जाणिया । एयाणि पण्णरसमुहुत्ताणि छ णक्खत्ताणि बूया । अवइदारेसु जणं पण्णरसमुहुत्तं अभित्तिं णक्खत्तं एकं णवमुहुत्तं सत्तावीसं च [सत्त]सट्ठिभागा मुहुत्तस्स जाणिया ।

तत्थ तीसमुहुत्ताणि समखेत्ताणि पनरस णक्खत्ताणि उवलद्धीहिं समखेत्तोवलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि भवंति । पणयालीसमुहुत्ताणि छ णक्खत्ताणि दिवड्ढुखेत्ताणि दिवड्ढुखेत्तोवलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि भवंति । पण्णरसमुहुत्ताणि अद्धखेत्ताणि 15 छ णक्खत्ताणि अद्धखेत्तोवलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि भवंति । तूणपण्णरसमुहुत्तं तूणपण्णरसमुहुत्तोवलद्धीहिं उवलद्धव्वं भवति । एयाणि अट्ठावीस णक्खत्ताणि दारतो खेत्तपविभत्तीहि य आधारयितुं आधारयितुं उवलद्धव्वाणि भवंति ।

तत्थ चलेसु चलाणि खिप्पाणि वा बूया—तत्थ चलाणि पुणव्वसू सवणो धणिट्ठा सतभिसय ति, तत्थ खिप्पेसु पुस्सो हत्थो अभीयी अस्सिणीउ ति चत्तारि णक्खत्ताणि बूया । तत्थ दढामासे रोहिणीओ तिण्णि उत्तराणि चत्तारि णक्खत्ताणि बूया । दारुणेसु दारुणाणि बूया, तिण्णि पुव्वाओ महा चेति । तत्थ चत्तारि नक्खत्ताणि सव्वसत्थगताणि 20 उग्गाणि बूया, उग्गाणि पुण अस्सेस जेट्टा मूलो अद्दा भरणी चेति पंच णक्खत्ताणि भवंति । तत्थ मिदूसु सव्वमित्तगते पसण्णेसु य मुदूणि बूया, तत्थ मुदूणि मिगसिरो चित्ता अणुराधा रेवति चत्तारि णक्खत्ताणि बूया । तत्थ साधारणेसु साधारणाणि बूया, साधारणाणि पुण कित्तिया विसाहा चेति दुवे णक्खत्ताणि बूया । तत्थ बंधेयेसु सव्वबंधणपडिरूवगते य अभीयं बूया । तत्थ सव्ववण्हगते सव्ववण्हपडिरूवगते य सवणं बूया । तत्थ सव्ववसुगते धण—रयणगते य वसु—धण—रतणपडिरूवगते य धणिट्टं बूया । तत्थ सव्वमदगते सव्वमदमज्जपडिरूवगते य सतभिसं बूया । तत्थ 25 सव्वअयगते सव्वअयपडिरूवगते य पोट्टवदं बूया । तत्थ विवड्ढिसंपयुते सव्वविड्ढिगते सव्वअभिवड्ढिपडिरूवगते य उत्तरपोट्टपदं बूया । तत्थ सव्वदाणगते विग्गहगते सव्वदाण—विसगं पडिरूव—सद्दपादुब्भावगते चेव रेवति बूया । तत्थ सव्वातिगच्छेवलद्धीहिं सव्वअस्सगते सव्वअस्सपडिरूवोवकरणगते य सव्वअस्सोपजीवीहि य एतेसामेव पडिरूव—सद्दपादुब्भावे अस्सिणि बूया । तत्थ दीणं मदोवलद्धीहिं सव्वजमगते य जमपडिरूव—सद्दपादुब्भावे चेव भरणीओ बूया । तत्थ सव्वअग्गेयेसु अग्गिगते अग्गीउपलद्धीयं सव्वअग्गेयोपकरणे सव्वअग्गिदेवताए य अग्गिउवकरणे 30 सव्वकंटइरूवगते एवंविधेसु सद्द—रूवपादुब्भावे कित्तियाओ बूया । तत्थ पयापुत्तोपलद्धीयं पयावतिसद्द—रूवपादुब्भावेसु

१ 'रबंधुव' हं० त० विना ॥ २ 'साणिग्गह' हं० त० विना ॥ ३ 'त्ताणि पण्णरसमुहुत्ताणि पण्णरस' हं० त० विना ॥ ४ 'चन्द्रस्याभिजिता योगे मुहूर्ता नव कीर्त्तिताः । सप्तषष्टिभुवोऽंशाश्च भौहूर्ताः सप्तविंशतिः ॥' लोकप्रकाशे सर्गः २८ श्लोकः ३२३ पत्रं ३८० ॥ ५ च अट्ठभागा हं० त० ॥ ६ पण्णरस णक्खत्ताणि अट्ठणक्खत्ताणि छ णक्ख' हं० त० विना ॥ ७ 'तथ वत्ताणि णक्ख' हं० त० ॥ ८ 'सत्थाणि गताणि बूया सि० ॥ ९ 'गते दाणविग्ग' हं० त० ॥ १० 'पडिसद्दरूवपा' हं० त० विना ॥

चेव सव्वधण्णगते सव्वकासकगते सव्वकासकोपकरणगते कासकोपलद्धीयं सव्वरूढगते चेव रोहिणी बूया । तत्थ सव्वसोमगते सव्वसोमोपलद्धीयं सव्वसोमकम्मोवयारागते चेव सव्वसोमकम्मोपलद्धीयं सव्वसाधारणगते सव्वकोसीधण्णगते सव्वसंगलिकागते सव्वखीरवच्छगते एतेसिं चेव पडिरूव—सदपादुब्भावेसु मिगसिरं बूया । तत्थ सव्वरूढगते सव्वणिधानगते सव्वरूढोवकरणे सव्वरूढोपयारकम्मगते एतेसिं चेव पडिरूव—सदपादुब्भावेहिं अदं बूया । तत्थ पुणरावत्तिएसु सदेसु 5 पुणगते य सव्वअदितिगते सव्वअदितिकम्मोपचारगते सव्वअदितिउवलद्धीयं एवंविधेसु पडिरूव—सदपादुब्भावेसु पुणव्वसं बूया । तत्थ सव्वबुद्धिगते सव्वबुद्धिकम्मगते ६ सव्वबहस्सतिगए ७ सव्वबहस्सतिपुस्सकम्मोवयारागते सव्वबहस्सति- पुस्सोवलद्धीसु एतेसिं चेव पडिरूव—सदपादुब्भावेसु पुस्सं बूया । तत्थ सव्वसप्पगते सव्वसप्पोवलद्धीयं सव्वसप्पोवजीविगते सव्वविसगते सव्वअस्सिलेसोपलद्धीयं एतेसिं चेव पडिरूव—सदपादुब्भावे असिलेसं बूया । तत्थ पितुकज्जकिच्चपेतकिच्चगते सव्वसद्दगते सव्वमाधगते सव्वपितुकिच्चोपलद्धीसु सव्वपितुउवलद्धीसु एतेसिं चेव पडिरूव—सदपादुब्भावेसु मघाओ 10 बूया । तत्थ सव्वसोभग—सोभगिय—सुभगगते सव्वरूवोवजीविगते सव्ववेसियागते सव्ववेसियाउवकरणगते सव्वसोभगियकम्मोवयारागते सव्ववेसोवलद्धीयं एतेसिं चेव पडिरूवसदपादुब्भावेसु पुव्वाओ फग्गुणीओ बूया । तत्थ सव्वउज्जगते सव्वसच्चगते सव्वधम्मगते सव्वधम्मिगगते एतेसिं ज्जेव पडिरूव—सदपादुब्भावेसु उत्तराओ फग्गुणीओ बूया । तत्थ सव्वहत्थिगते सव्वहत्थिपडिरूवगते य सव्वहत्थिउवकरणगते सव्वहत्थिकम्मोपचारगते सव्वहत्थिउपजीविगते आदिच्चकम्मोवयारे आदिच्चोवलद्धीयं सव्वकारुकोपलद्धीयं एतेसिं चेव पडिरूव—सदपादुब्भावेसु हत्थं बूया । तत्थ 15 सव्वदंसणीयेसु रूवकार—चित्तकार—कट्टुकार—सव्वरूवकारोवकरणे सव्वअलंकारियगते सव्वअलंकारेसु २० अलंकार- कम्मोवगरणेसु २० अलंकारकम्मोवयारेसु एतेसिं चेव पडिरूव—सदपादुब्भावेसु चित्तं बूया । तत्थ बायव्वेसु सव्ववायगते वीयणक—तालवेंटगते उखेवगते फूमिते वीजणकम्मोवयारेसु वातयत्तकीयोपचारेसु एतेसिं चेव पडिरूव—सदपादुब्भावे सातिं बूया । तत्थ वणस्सतीसु सव्वदव्वगते सव्वसामण्णगते विसाहं बूया । तत्थ सव्वणानिमित्तसंबंधिगते सव्वमेत्तिउवयारागते पसण्णेसु य एतेसिं चेव पडिरूव—सदपादुब्भावेसु अणुराधं बूया । तत्थ इस्सरेसु सव्वजेट्टगते 20 सव्वइंदकम्मोवयारागते इंदोपलद्धीयं एतेसिं चेव पडिरूवगते सदपादुब्भावेसु जिट्ठं बूया । तत्थ सव्वमूलजोणीगते सव्वबीजभूतगते सव्वमूलकम्मगते सव्वमूलोवयारागते एतेसिं चेव पडिरूव—सदपादुब्भावे मूलं बूया । तत्थ आपुणेयेसु सव्वआपुणजोणीसु सव्वजलगते सव्वजलचरगते सव्वजलोवजीविगते सव्वजलावगाहीगते णवपोतोवकरणे एतेसिं चेव पडिरूव—सदपादुब्भावेसु पुव्वासाढा बूया । तत्थ उव ६ सत्ताउवडूलकहा ७ संलावजोणीसु ८ णिंदुरकम्मोवयारेसु ९ णिंदुलपडिरूव—सदपादुब्भावेसु य उत्तरासाढा बूया । १० तत्थ अग्गेयेसु कत्तियं वा विसाहं वा बूया । १० असाधारणेसु 25 अग्गेयेसु कत्तियं बूया । साधारणेसु अग्गेयेसु विसाहं बूया । आपुणेयेसु अदं वा पुव्वासाढं वा सतविसयं वा बूया । तत्थ सव्वचतुप्पदगते चतुक्केसु रोहिणिं वा मिगसिरं वा हत्थं वा अस्सिणीओ वा बूया । मतेसु मघं वा भरणीयो वा बूया । मूलजोणीपडिरूवगते ६ रोहिणी वा मूलं वा बूया । तत्थ सव्वजाणपडिरूवगते ७ कत्तियं वा रोहिणिं वा बूया । तत्थ सव्वरायोपलद्धीयं पुस्सं वा जेट्ठं वा बूया । कंटकीरूवखगते कत्तियं बूया । सगडजाणगते रोहिणिं बूया । खीररूव्वेसु चंदोपलद्धीयं मिगसिरपडिरूवे य मिगसिरं बूया । मुदितेसु पुस्सं वा सतविसयं वा 30 बूया । तत्थ असणोपलद्धीयं अदं वा पुव्वासाढा सतविसयं वा बूया । तत्थ सव्वपरिसप्पगते असिलेसं बूया । तत्थ कोसीधण्णगते विसाहं वा मिगसिरं वा बूया । तत्थ सव्वजोगगते कम्मोवलद्धीयं च मघा वा पुव्वफग्गुणीओ वा बूया । मतेसु पेतोवलद्धीयं मघा विण्णेया । सोभगीसोभिकोपचारेसु रूवोपजीविउवलद्धीसु य पुव्वाओ फग्गुणीओ

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २ 'पिउकज्जोप' हं० त० ॥ ३ चेव हं० त० ॥ ४ २० ॥ ५ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ६ 'वबीजंजीवगते' हं० त० विना ॥ ६-७ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ८ २० ॥ ९ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १० हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥

बूया । सव्वसिप्पिगते हत्थं बूया । चित्तेसु चित्तं बूया । सव्वमित्तगतेसु अणुराधं बूया । सव्वजलचरेसु अद्दा वा पुव्वासाढाओ वा सतविसयाओ वा बूया । तत्थ सव्वरुद्दगते सव्वरुद्दोपयुत्तेसु पादुब्भावेसु अद्दा, आवसंपयुत्तेसु पुरिमेसु पडिरूवेसु पुव्वासाढा, सुरालायुल्लोधिकमच्छकपादुब्भावेसु सतविसया बूया । तत्थ सव्वदव्वगते सव्वजलगते जमलाभरणकजमलोपकरणे मिधुणचरेसु सत्तेसु जमलणक्खत्ताणि बूया । सव्वगणितगतेसु सव्वजोगगते य सम(व)णो विण्णेयो । सव्वधण-धण्णगते धणिद्दा विण्णेया ।

5

तत्थ पुरत्थिमेसु पुरत्थिमदाराणि बूया, दक्खिणेसु दक्खिणदाराणि बूया, पच्छिमेसु पच्छिमदाराणि बूया, उत्तरेसु उत्तरदाराणि बूया । पुण्णामेसु पुण्णामाणि बूया, थीणामेसु थीणामाणि बूया । अतिक्रंतेहिं अतिक्रंताणं जोगं बूया, अणागतेसु अणागताणि जोगे बूया, वत्तमाणेसु संपत्तिजोगवत्तमाणाणि बूया । उसुणेसु अग्गेयेसु स सूरियपादुब्भावेसु य आदिच्चगताणि बूया । उवद्दुत्तेसु सग्गहारिणं बूया । अब्भंतरेसु जातिणक्खत्तं बूया । आदिमूलीएसु आदाणणक्खत्तं बूया । पुण्णामेसु कम्मणक्खत्तं बूया । बाहिरब्भंतरेसु मित्तसंबंधिणक्खत्तं बूया । बाहिरेसु परस्स णक्खत्तं बूया । पुण्णामेसु 10 पुरिसणक्खत्तं बूया । थीणामेसु थीणक्खत्तं बूया । णपुंसएसु णपुंसकणक्खत्तं बूया । दढेसु णगरणक्खत्तं बूया । पुधूसु देवणक्खत्तं । डहरचलेसु गामणक्खत्तं बूया । डहरत्थावरेसु खेडणक्खत्तं बूया । सुक्केसु सुक्कपक्खे जुत्तं बूया । कण्हेसु कण्हपक्खे जुत्तं बूया । सुक्केसु अंतेसु पुण्णेसु य पुण्णिमासिणीय जुत्तं ति बूया । कण्हेसु अंतेसु तुच्छेसु चेव अमावस्साइ जुत्तं ति बूया ।

एवमाधारयितु काल-पक्ख-माण-जोगेसु-आमास-सद्-रूपपादुब्भावेसु जधाणिदिद्दाहिं उवलद्धीहिं णक्खत्ताणं 15 जोगकालं बूया । तत्थ कुलणक्खत्तं उपकुलणक्खत्तं ति आधारिते अब्भंतरेसु कुलणक्खत्तं ति बूया, अब्भितरबाहिरेसु कुलोपकुलं विण्णेयं ।

चंदमग्गातो आधारितंसि कधं एतेसि णक्खत्ताणं अट्ठावीसाए चंदो गच्छति ? एकविधं उत्तरेणं दक्खिणेणं वा, दुविधं उत्तरतो पमद्दणेण वा दक्खिणतो पमद्दणेण व त्ति, तिविधजोएण वा केसं उत्तरतो दक्खिणतो पमद्दमाणो व त्ति । णक्खत्ते उप्पणंसि पडिरूवतो आमासतो वा दक्खिणुत्तरेहिं आमासेहिं असामण्णेहिं एकविधजोगी दक्खिणेहिं 20 दक्खिणतो चंदमसो गमणं बूया, उत्तरेहिं उत्तरेणं चंदमसो गमणं बूया । दुविधजोगीणि दक्खिणेसु मज्झिमसाधारणेसु उत्तरेहिं य मज्झिमसाधारणेहिं आमासेहिं दुविधजोगीणि णक्खत्ताणि बूया । दक्खिण-उत्तर-मज्झिमाणं आमासाणं तिण्हं पि सेवणाय तिविधजोगीणि णक्खत्ताणि बूया । एककोदीरणेसु सद्-रूवेसु एकविधजोगीणि बूया, दुगोदीरणे सद्-रूवेसु दुविधजोगीणि बूया, तिकोदीरणे सद्-रूवेसु तिविधजोगीणि बूया ।

तत्थ सव्वसव्वोवणक्खत्ताणं णिएण णक्खत्तेण णक्खत्तसंठाणेण णक्खत्तगोत्तेण णियएण णक्खत्तकम्मोपचारेण 25 णियएण णक्खत्तदेवएण णियएण णक्खत्तपडिरूवेणं णियएण णक्खत्तगोत्तेणं णियएणं णक्खत्तदेवताकम्मोवयारेणं चेव णक्खत्तं णामतो गोत्ततो संठाणतो कुलतो गणतो कम्मतो जोगा-ऽजोगतो चेव सव्वमणुगंतव्वं भवति ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय णक्खत्तविजयो णामाज्झायो वक्ख्वातो
भवति बापंचासतिमो ◁ सम्पत्तो ▷ ॥ ५२ ॥ छ ॥

[तिपंचासइमो उप्पातज्झाओ]

णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स महावीरवद्धमाणस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय उप्पातणामज्झायो । तं खलु भो ! तमणुव्वंखस्सामि । तं जधा—उद्धं णाभीय उद्धंभागेसु अन्तलिक्खगतं उप्पायं विज्जा । अधो णाभीयं अधोभागेसु भोम्मं उप्पायं बूया । तत्थ अंतलिक्खेसु पुव्वाधारितेसु उप्पातेसु परिमंडलगतेसु 5 चंदा—ऽऽदिच्चगतं उप्पायं बूया । कण्हेसु धूमकेतु—राहुगतं उप्पायं बूया । दीहेसु बहस्सतिगतं उप्पायं बूया । अंतरेसु धूमकेतु—सुक्क—बुधगतं उप्पायं बूया । सुद्धसुक्केसु सुक्कगतं उप्पायं बूया । दंसणीयेसु बुधगतं उप्पायं बूया । किलिद्धेसु धूमकेतुगतं उप्पायं बूया । ०८ मंदेसु सणिच्छरगतं उप्पायं बूया । १० थावरेसु बुध—सणिचर—बहस्सतिगतं उप्पायं बूया । चलेसु सुक्कमालोहित—धूमकेतु—राहुगतं उप्पातं बूया । अग्गेयेसु आदिच्चगतं, [उप्पायं बूया] । लोहितंके उक्कागतं उप्पायं बूया । कण्हेसु रत्तिगतं उप्पायं बूया । संधिसु संज्ञागतं उप्पायं बूया । सुक्केसु आदिमूलीयेसु पुव्वण्हगतं 10 उप्पायं बूया । सुक्केसु मज्झिमविगाढेसु अद्धरत्तगतं उप्पायं बूया । सुक्केसु अंतरेसु अवण्हगतं उप्पायं बूया । कण्हेसु आदिमूलीयेसु पदोसगतं उप्पायं बूया । कण्हेसु मज्झिमविगाढेसु अद्धरत्तगतं उप्पायं बूया । कण्हेसु अंतरेसु पच्चूसगतं उप्पायं बूया । अब्भंतरेसु अब्भंतरमग्गगतं उप्पायं बूया । बाहिरब्भंतरेसु सामेसु य मज्झिमवीधीगतं उप्पायं बूया । बाहिरेसु वेस्साणरपधगतं उप्पायं [बूया] । पुरत्थिमेसु पुरत्थिमायं दिसायं उप्पायं बूया । दक्खिणेसु गतेसु दक्खिणायं दिसायं उप्पायं बूया । पच्छिमेसु गतेसु पच्छिमायं दिसायं उप्पायं बूया । वामेसु गतेसु उत्तरायं दिसायं उप्पायं बूया । 15 णिद्धेसु उवरिद्धिमेसु मेधगतं उप्पायं बूया । चलेसु पभागतेसु य विज्जुगतं उप्पायं बूया । फरुसेसु पंसुवुट्ठिगतं उप्पायं बूया । कण्हेसु धूमकोपेतं रत्तिगतं उप्पायं बूया । अग्गेयेसु दिसादाहगतं उप्पायं बूया । णिद्धेसु चलेसु वुट्ठिगतं उप्पायं बूया । णिद्धेसु चलेसु रतेसु य मंस—सोणितवुट्ठिगतं उप्पायं बूया । एवं पडिरूवोवलद्धीहि पत्तेकसो पत्तेकसो वुट्ठि—उप्पाता तेह्ल—घत—दुद्ध—वसा—विच्छिक्क—सप्प—परिसप्प—कीड—किविह्लगते वा उवलद्धव्वा भवन्ति । इति अंतलिक्खगता उप्पाता वक्खाता भवन्ति ।

20 तत्थ भोम्मा उप्पाया भवन्ति माणुसा चतुप्पदा परिसप्पगता मच्छगता खुडुसिरीसिवगता वणप्फतिगता गिरिणिदि—णगगता आयतण—उवकरण—सयणा—ऽऽसण—जाण—वाहण—भायणगता चेव भवन्ति । तत्थ केस—मंसु—लोमगते वणप्फतिगतं उप्पायं बूया । तत्थ अपत्ते काले पाणे वा भोयणे वा आभरणे वा हसिते वा भणिते वा गीते वा णट्टे वा वादिते वा अपत्तकाले पेक्खितम्मि वा चउप्पदे वा परिसप्पे वा सप्पे वा खुडुसिरीसिवे वा आहारे वा दंसणे वा पयाणे वा अपत्तकाले पुप्फ—फले उप्पातं बूया । तत्थ वणप्फतीसु एतेसु चेव अतिवत्तकालेसु एतेसु 25 चेव पुव्वदिट्ठेसु पडिरूवेसु अतिवत्तकाले वणप्फतीगतं बूया । तत्थ पाण—भोयण—वत्था—ऽऽभरण—सयणा—ऽऽसण—पुप्फ—फल—धण्ण—प्पकरण—विविधविवरीयदंसणे विगताभिरामे वा अभूतपुव्वपुप्फ—फलपादुब्भावे विगतरूववणप्फती उप्पायं बूया । तत्थ उद्धं गीवाय सिरोमुहामासे अंजलिक्करणे एकंसाधारणे उप्पायणोमुंचणे णमोक्कार—वंदित—पूतिय—छत्त—भिगार—लाउल्लोयिक—वासण—कडग—लोमहत्थ—उस्सय—समाय—महाभागगते चेव देवतागतं गहगतं उप्पायं बूया । दहेसु पव्वत—गाम—दुग्ग—णगरगतं बूया । संखतेसु गामगतं उप्पायं बूया । अब्भंतरेसु वित्थडेसु णगरगतं उप्पातं बूया । 30 बाहिरेसु वित्थडेसु जणपदगतं उप्पायं बूया । उत्तमेसु उण्णएसु य पव्वतगतं उप्पायं बूया । दीहेसु णिद्धेसु य णदीगतं उप्पातं बूया । णिद्धेसु परिक्खेवेसु य समुद्गतं उप्पायं बूया । निद्धेसु सण्णिरुद्धेसु कूवगतं उप्पायं बूया । चलेसु पाणजोणीगते सव्वपाणजोणीगए सव्वपाणजोणीउवकरणे चेव पाणजोणीगतं बूया ।

१ 'प्पायणा णामा' हं० त० ॥ २ 'वक्खाइस्सा' सं ३ पु० । 'वक्खयिस्सा' सि० ॥ ३ ०८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ४ 'करणे एकंसाकरणे उपाहणोधुवणे णमो' सि० । 'करणे उपायणोउंधणे णमो' हं० त० ॥ ५-६-७ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥

उज्जुभागेसु मणुस्सजोणीगतं उप्पायं बूया । ८१ तं(ति)ज्जंभागेसु तिरिखजोणीगतं उप्पायं बूया । ८२ सव्वचउप्पदेसु य चउरस्सेयु य चउकेसु चतुप्पदोपकरणे चतुप्पदणामधेज्जे थी—पुरिसउवकरणगते चतुप्पयगतं उप्पायं बूया । तत्थ उद्धंभागेसु चलेसु य सव्वपक्खिगते उवकरणे पक्खिउवकरणेसु पक्खिणामधेज्जे थी—पुरिसउवकरणगते पक्खिगतं उप्पायं बूया । तत्थ दीहेसु कण्हेसु सव्वपरिसप्पोवकरणे परिसप्पणामधेज्जे थी—पुरिसउवकरणगते चेव परिसप्पगतं उप्पायं बूया । णिद्धेसु सव्वजलचरेसु सव्वमच्छेसु सव्वजलेसु थी—पुरिसउवकरणगते चेव मच्छगतं बूया । सव्वबीयगते कीडकिविष्णगाए 5 कीडकिविष्णगतं उप्पायं बूया । तत्थ बालेयेसु पजातं उप्पायं बूया । तत्थ छिण्ण—भिण्ण—कोट्टेतसद्दे पासाद—गोपुर—ऽट्टालग—इंदधय—तोरणगतं वा उप्पायं बूया । अग्गेयेसु पागार—गोपुर—ऽट्टालग—कोट्टागारो—ऽऽयुधाकार—आयतण—चेतिँसु अग्गि—जलण—धूमपादुब्भावेण विज्जुपतणगतं उप्पातं बूया । णिद्धेसु उदकवाहकअणादके उदकपादुब्भावेण अपवातक—अकालवुट्ठं अणंतवुट्ठं अणंततिमिरपादुब्भावेण वा बूया । पुधूसु अज्जीवेसु सव्वभायणपडिरूवगयं चेव भायणगतं उप्पातं बूया । जाणेसु सव्वजाणोपलद्धीयं जाणगतं उप्पायं बूया । किसेसु वत्थ—परिच्छदगतं उप्पायं बूया । धूलेसु थलगतं 10 वा पल्लकगतं वा उप्पायं उट्ठिकगतं अरंजरगतं वा बूया । सामेसु सव्वआभरणगते य आभरणगतं उप्पायं बूया । तिक्खेसु सव्वसत्थगते चेव सत्थगतं उप्पातं बूया । अब्भंतरेसु णगरगतं उप्पायं बूया । अब्भंतरब्भंतरेसु अंतपुरगतं उप्पायं बूया । बाहिरब्भंतरेसु बाहिरिकागतं उप्पायं बूया । बाहिरेसु जणपदगतं उप्पायं बूया । गहणेसु आरण्णगतं उप्पायं बूया । उवगहणेसु आरामगतं उप्पायं बूया । एवं आमास—सद्द—रूव—रस—गंध—फासपाउब्भावेसु अंतलिक्ख—भोम्मा चउव्विधो उप्पातो आधारयिता आधारयिता यधुत्ताहि उवलद्धीहि उवलद्धव्वो भवति ॥ 15

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय उप्पातो णामाज्झायो

तिपण्णासत्तिमो सम्पत्तो ॥ ५३ ॥ छ ॥

[चउपण्णासइमो सारासारज्झाओ]

णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय सारासारो णामाज्झायो । तं खलु भो ! तमणुवक्खायिस्सामि । तं जधा—तत्थ अत्थि सारो णत्थि सारो त्ति पुव्वमाधारयितव्वं 20 भवति । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे पुण्णामधेज्जामासे सारवंतो त्ति बूया । तत्थ बाहिरामासे चलामासे लुक्खामासे कण्हामासे तुच्छामासे णपुंसकामासे असारवंतो त्ति बूया ।

तत्थ सारगते पुव्वधारिते सारं चतुव्विधमाधारये—धणसारं १ मित्तसारं २ इस्सरियसारं ३ विज्जासारमिति ४ । तत्थ अब्भंतरेसु धणमंतेसु य धणसारं बूया १ । तत्थ महापरिगहेसु सव्वमित्तगते य मित्तसारं बूया २ । ५ तत्थ सव्वइस्सरियगए सव्वरायगए सव्वविजयगए य इस्सरियसारं बूया ३ । ६ तत्थ बुद्धिमणेसु सव्वसत्थबुद्धिगते य 25 विज्जासारं बूया ४ । तत्थ उत्तमेसु उत्तमो धणसारो वा मित्तसारो वा इस्सरियसारो वा ८ विज्जासारो वा ९ विण्णेयो । १० मज्झिमेसु ११ मज्झिमो धणसारो वा मित्तसारो वा इस्सरियसारो वा ८ विज्जासारो वा ९ विण्णेयो । मज्झिमाणंतरेसु मज्झिमाणंतरो धणसारो वा मित्तसारो वा इस्सरियसारो वा विज्जासारो वा विण्णेयो । तत्थ पच्चवरे पच्चवरो धणसारो वा १२ मित्तसारो वा १३ इस्सरियसारो वा विज्जासारो वा विण्णेयो ।

१ ८ ९ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ २ 'सगते उवकरणे गते हं० त० विना ॥ ३ 'रायमकाराआवव—णचेति' हं० त० विना ॥ ४ 'एसु वण्णजलण' सि० । 'एसु थीयजलण' सं ३ पु० ॥ ५ 'हकं अणोद' हं० त० ॥ ६ बाहिरगतं हं० त० ॥ ७ 'य सारो णामा' हं० त० ॥ ८ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ९ ८ ९ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १० हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ११ ८ ९ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १२ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥

तत्थ धणसारो भूमीगतो खेत्तगतो आरामगतो ८१ गामगतो ८२ णगरगतो त्ति भूमीगतो एस सारो पुब्बमाधार-
यितव्वो भवति । तत्थ महावकासेसु अवत्तेसु भूमीसारो विण्णेयो । तत्थ सयणा—ऽऽसण—पाण—भोयण—वत्था—ऽऽभरणगते
गिहसारं बूया । तत्थ चतुरस्सेसु खेत्तसारं बूया । उवग्गहणेसु आरामसारं बूया । रायगते विजयगते अव्वत्ते गामसारं
बूया । रायगते विजयगते अव्वत्ते णगरसारं बूया । एतेसामेव जमकोदीरणे रज्जसारं बूया । इति भूमीगतो धणसारो
५ विण्णेयो ।

तत्थ पाणसारो धणसारो दुविधो आधारयितव्वो भवति—मणुस्ससारो १ तिरिक्खजोणियसारो चेव २ । तत्थ
सव्वसज्जीवगते पाणसारं बूया । तत्थ उज्जुभागेसु सव्वमणुस्सगतं य मणुस्ससद्—रूवपादुब्भावेसु य मणुस्ससारं बूया ।
तत्थ तिरियामासे सव्वतिरियजोणिगते सव्वतिरिक्खजोणियसद्—रूवपादुब्भावे तिरिक्खजोणिगतं सारं बूया ।

तत्थ तिरिक्खजोणियगतो सारो णातव्वो भवति—अस्सा हत्थी गो—माहिसं अयेलकं खरोट्टमिति विण्णेयं । तत्थ
१० सव्वसिगिगते सिगिपडिरूव—सद्दपादुब्भावे हत्थि—गो—माहिसं अयेलकमिति विण्णेयं भवति । तत्थ तिणभोयिसु तिणभोयी
विण्णेया । मंस—रुधिरभोयीसु हत्थी विण्णेया । कण्हेसु हत्थी वा मासा वा विण्णेया । खत्तिसु हत्थी वा अस्सा
वा पसू वा विण्णेया । सेतेसु खरा विण्णेया । सामेसु उट्टा विण्णेया । गहणेसु अयेलकं विण्णेयं । उपग्गहणेसु
अस्सा गो—माहिसं उट्ट—खरे बूया । ओकासेसु अगहणेसु य कायवंतेसु हत्थी विण्णेया । मज्झिमकायेसु अस्सा गो—
माहिंसा उट्टा य विण्णेया । मज्झिमाणंतरकायेसु खरा विण्णेया । पच्चवरकायेसु अयेलका विण्णेया । इति तिरिक्खजोणिगतो
१५ मणुस्सगतो दुपद—चतुप्पदगतो पाणसारो विण्णेयो भवति ।

तत्थ धणसारो अज्जीवो सज्जीवो य दुविधो विण्णेयो । वित्थरतो एका(वा)रसविधो भवति—वित्तसारो १
सुवण्णसारो २ रुप्यसारो ३ मणिसारो ४ मुत्तासारो ५ वत्थसारो ६ आभरणसारो ७ सयणासणसारो ८ भायणसारो ९
दव्वोपकरणसारो १० अब्भुपहज्जसारो ११ धण(ण)सारो १२ । इति धणसारो विण्णेयो । तत्थ सव्वसंघातेसु वित्तेसु
चतुरस्सेसु य काहावणसारो विण्णेयो भवति १ । पीतकेसु तंबेसु य सुवण्णसारो विण्णेयो २ । सेतेसु अग्गेयेसु
२० य रुप्यसारो विण्णेयो ३ । अण्णगेयेसु ८ मणिसारो विण्णेयो ४ । आपुणेयेसु ८ मुत्तासारो विण्णेयो ५ । किसेसु
वित्थतेसु पुधूसु य सव्ववत्थगते सव्वतंतुगते चेव वत्थसारो विण्णेयो ६ । सामेसु सव्वआभरणगते य आभरणसारो
विण्णेयो ७ । चतुरस्सेसु कडीयं च आसणसारो विण्णेयो, पट्टेसु (वट्टेसु) सव्वसत्तेसु य सयणसारो विण्णेयो ८ । पुधूसु
सव्वभायणपडिरूवगते य भायणसारो विण्णेयो ९ । हत्थ—पादपरामासे सव्वसिप्पिकगते य उवकरणगते य उवकरण-
सारो विण्णेयो १० । आहारेसु सव्वेसु अब्भुपहज्जेसु सद्—रूवेसु य अब्भुपहज्जाणं अब्भुपहज्जसारो विण्णेयो ११ ।
२५ अणूसु सव्वधण्णगते य धण्णसारो विण्णेयो १२ । चलेसु पाद—जंघे य जाणसारो विण्णेयो । इति धण्ण(ण)सारो
सज्जीवो अज्जीवो य दुविधो विण्णेयो एकारसविधो (बारसविधो) वित्थरेण वक्खातो भवति ।

तत्थ मित्तसारो पंचविधो आधारयितव्वो भवति । तं जधा—संबंधिसु १ मित्ताणि २ वयस्सा ३ धिया ४ कम्म-
कर—भिच्चवग्गे ५ चेति । तत्थ अब्भंतरेसु सव्वसंबंधिगते य संबंधिणो विण्णेयो(या) १ । बाहिरब्भंतरेसु सामेसु य
मित्ता विण्णेया २ । सामेसु वयस्सा विण्णेया ३ । धीणामेसु धिया विण्णेया ४ । पेस्सेसु अंतवासी विण्णेया, बाहिरेसु
३० बाहिरो कम्मकर—भिच्चवग्गे त्ति विण्णेयो ५ । तत्थ थीसु पुव्वाधारितासु समागमेसु भज्जावग्गे विण्णेयो । सामेसु गमेसु
अंतंसेसु सहिवग्गे विण्णेयो । पच्चवरकायेसु दासिवग्गे कम्मकरवग्गे त्ति वा विण्णेयो । तत्थ भज्जासु पुव्वाधारितासु
बालेयेसु थणेसु य कोमारीणं भज्जाणं सारं बूया । चलेसु पुणब्भवाणं भज्जाणं सारं बूया । तत्थ पुरिसेसु संबंधिसु य

१ ८१ ८२ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ २ *माहारियव्वो हं० त० ॥ ३ हत्थ सप्र० ॥ ४ वा मसा
हं० त० ॥ ५ *पहेज्ज हं० त० विना ॥ ६ ८१ ८२ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ७ अण्णेसु हं० त० ॥
८ समागमेसु हं० त० विना ॥

पुव्वाधारितेसु य सव्वप्पसूतेसु पुप्फ-फलेसु पुरिसेसु य पुत्तसारं बूया । एतेसु चेव थीणामेसु कण्णेयेसु कण्णासारं बूया । इति मित्तसारो विण्णेयो भवति ।

तत्थ इस्सरियसारे पुव्वाधारिते इस्सरियसारं दुविधं आधारए-अव्वत्तं सुव्वत्तं चेति । तत्थ सुव्वत्तो अधिकरणं णायकत्तं अमच्चत्तं रायत्तं वेति । तत्थ अव्वत्ते इस्सरियसारे पेस्साणं रायपुरिसस्स य पेस्सत्तं बूया । तत्थ अव्वत्तेसु पच्चवरकायेसु चेव संसयं मज्झिमाणंतरेसु पेस्साणं रायपुरिसस्स णिस्सियं इस्सरियसारं बूया । मज्झिमकायेसु थाणप्पत्तं 5 अधिकरणत्थं बूया । कायमंतेसु सेणापत्तिं वा अमच्चं वा णायकं वा बूया । एतेसु चेव आहारेसु रायिणं बूया । जधुत्ताहि य थाणज्झाये थाणोवलद्धीहि इस्सरियसारं बूया । इति इस्सरियसारो विण्णेयो ।

तत्थ विज्जासारे पुव्वाधारिते सव्वबुद्धिरमणेसु सव्वविज्जासत्थगते य पडिरूव-सद्दपादुब्भावेसु चेव विण्णेयाणं सत्थाणं वा विज्जासारं बूया । तत्थ कायमंतेसु विज्जासारं गतं बूया । मज्झिमकायेसु उत्तमाणंतरेसु य विज्जाविस्सुयं बूया । मज्झिमेसु मज्झिमं बूया । मज्झिमाणंतरकायेसु मज्झिमजहण्णसारेसु य असमत्तविज्जं बूया । पच्चवरकायेसु 10 जहण्णेसु य विज्जाविलंबितं बूया, विज्जाछित्तं वा बूया । इति विज्जासारो विण्णेयो ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाए अंगविज्जाए [सारा]सारो णामाज्झातो वक्खातो
चउपन्नासतिमो सम्मत्तो ॥ ५४ ॥ छ ॥

[पणपण्णासइमो णिधाणज्झाओ]

णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय णिधाणं 15 णामाज्झायं । तं खलु वक्खायिस्सामि । तं जधा- तत्थ अत्थि णिहाणं णत्थि णिहाणं ति पुव्वमाहारियिव्वं भवति । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे अत्थि णिहाणं ति बूया । तत्थ बज्झामासे चलामासे लुक्खामासे कण्हामासे तुच्छामासे अत्थि (णत्थि) णिहाणं ति बूया । 

तत्थ अत्थि णिधितं ति पुव्वमाधारिते णिधितमद्विविधमादिसे । तं जधा-भिण्णसत्तपमाणं भिण्णसहस्सपमाणं  सयसहस्सपमाणं  कोडिपमाणं अपरिमियपमाणमिति । कायमंतेसु उम्पट्टेसु अपरिमियणिहाणं बूया । तत्थ 20 अपुण्णामेसु अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे य समं बूया । भिण्णे दसक्खे पुव्वाधारिते दो वा चत्तारि वा अट्ठ वा बूया । समे पुव्वाधारिते दसक्खे वीसं वा [चत्तालीसं वा] सट्ठि वा असीति वा बूया । वीसासु समासु पुव्वाधारितासु दो वा चत्तारि वा छ वा अट्ठ वा सताणि बूया । तथा सहस्साणि तथा सयसहस्साणि तथा कोडीओ तथा अपरिमिते एतेण बीयगमेण दसक्खभिण्णादी जाव अपरिमितो ति सव्वं समे आधारिते समणुगंतव्वं भवति । तत्थ थीणामेसु चलेसु लुक्खेसु बज्जेसु सुक्केसु णीहारेसु समगेसु चेव सद्-रूवपादुब्भावेसु विसमोपलद्धीसु 25 चेव विसमं बूया । तत्थ भिण्णे दसक्खे विसमे पुव्वाधारिते एक्कं वा तिण्णि वा पंच वा सत्त वा णव वा बूया । दसक्खे पुव्वाधारिते दस वा तीसं वा पण्णासं वा सत्तारि वा णउत्ति वा बूया । एवं भिण्णसत्तपमाणे विगले दसक्खेसु पुव्वाधारितेसु सव्वमणुगंतव्वं भवति । तत्थ सत्तपमाणे विगले पुव्वमाधारिते सयं वा तिण्णि वा सताणि  पंच वा सताणि  सत्त वा सयाणि णव वा सयाणि बूया । एवं भिण्णसहस्सपमाणविगलेसु एतेसु पुव्वाधारितेसु समणुगंतव्वं

१ रायितं हं० त० ॥ २-३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठसन्दर्भः हं० त० एव वर्तते ॥ ४ तत्थ पुं सि० ॥ ५ वीयरगेण हं० त० ॥ ६   एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥

भवति । एवं विगलसहस्सप्पमाणं भिण्णसहस्सप्पमाणं भिण्णसतसहस्सप्पमाणं भिण्णकोडीप्पमाणं अपरिमितं च विगलप्पमाणं एतेण कमेण जधुत्ताहि उवलद्धीहि उवलब्ध सव्वमेव विगलप्पमाणं समणुगंतव्वं भवति ।

तत्थ कंसि देसंसि निधानं पुव्वमाधारितं ? ति इमाहि उवलद्धीहि समणुगंतव्वं भवति—तत्थ उल्लोगिते पासायगतं बूया मालगतं वा पट्टीवंसगतं वा आलग्ग[गतं] वा पागारगतं वा गोपुरगतं वा ५ अट्टालगयं वा रुक्खगतं वा पव्वतगतं वा बूया । तत्थ असंख्येसु रुक्खगतं वा पव्वतगतं वा बूया । संख्येसु आमास—सद्—पडिरूव—पादुब्भावेसु अवसेसाणि बूया । तत्थ सव्वजोधगते सव्वरायगतेसु य पागार—गोपुर—ऽट्टालक—धयगतं बूया । निग्गमपधेसु वारायं बूया । सण्णिरुद्धेसु पागारगतं बूया । पविट्टेसु अट्टालगतं बूया । सयणासणे उवविट्ठं—संविट्ठेसु पासातगतं बूया । सव्वदिव्वजोणिगते देवतायतणगतं बूया । केस—मंसु—सव्वमूलगते य गिहणिस्सितं बूया । णिद्धेसु कूविअणिधितं बूया । गंभीरेसु कूवियणिधितं बूया । उपहुतेसु उट्ठितपट्टे रण्णे वा निधितं बूया । गहणेसु गहणंसि अरण्णगतं निधितं १० बूया । उवग्गहणेसु आरामगतं निधितं बूया । आकासेसु आकासे निधितं बूया । गहणाणं आकासाण य समामासे जणपदगतं वा अरण्णाणं वा सीमंतिकासु वा ११ आरामसीमंतिकासु वा १२ निधितं बूया । चतुरस्सेसु संकट्टेसु खेत्तगतं निधितं बूया । इति थावरणि निधिताणि बूया । अब्भंतरेसु गतेसु दीहेसु रच्छागतं निधितं [बूया] । परिमंडलेसु निवेसणंसि निधितं बूया । पुरिमेसु रायमग्गे निधितं बूया । कायमंतेसु रायमग्गे निधितं बूया । मज्झिमकायेसु रायमग्गसमासु रच्छासु निधितं बूया । मज्झिमाणंतरकायेसु खेत्तिकासु रच्छासु निधितं बूया । पच्चंवरकायेसु णिक्कुडरच्छासु १५ निधितं बूया । अब्भंतरब्भंतरेसु अब्भंतरब्भंतरे निवेसणे निधितं बूया । मत्थकेसु मालगतं बूया । कण्हेसु आलगगतं बूया । उद्धेसु कुड्ढगतं बूया । केसेसु णिव्वगतं [बूया] । नासायं णत्थणपोरुसे वा पणालीगतं बूया । अंतेसु गंभीरेसु कुपी[ग]यं ति बूया । पालुमि दुट्टेसु य वच्चाडगतं ति बूया । उदरे मुखे वा गब्भगिहगतं [बूया] । पुरत्थिमेसु अंगणगतं बूया । १६ पच्चिमेसु पच्छवत्थुगतं बूया । १७

कंसि भायणंसि पुव्वमाधारियंसि ?—तत्थ मूलजोणिगते कट्टभायणगतं बूया । धातुजोणीयं सारमंतेसु य लोहीगतं २० वा कडाहगतं वा अरंजरगतं वा कुंडगतं वा उक्खलिगतं वा रकिगतं वा लोहीवारगतं वा बूया । तत्थ महावकासेसु उट्ठिकं वा लोहि वा कडाहकं वा बूया । मज्झिमकायेसु कुंडगतं वा उक्खलिगतं वा वारगतं वा लोहवारगतं वा बूया । पच्चंवरकायेसु आयमणी वा सत्थिआयमणी वा चरुकगतं वा ककुलुंडिगतं वा निधानं बूया । एतेसामेव तिहं सण्णिधाणाणं दढामासेसु तत्थ तिविधं पि य भायणं बूया । तत्थ पडिरूवेहि आमासेहि य मूलजोणी—धातु—जोणीउवलद्धीहि संठाणेहि य भायणगतं बूया । वित्थडेसु भूमीयं निधितं बूया । तत्थ ओमज्जितेसु अणाहारेसु अण्णेहि २५ हरितं निधियं बूया । ठितामासेसु पच्छा णीहारेसु निधिद्वाणा विप्पणट्ठं बूया । केवलणीहारेसु णत्थि निधितं ति बूया । अब्भंतरामासे दढामासे निद्धामासे सुद्धामासे पप्पे निधितं ति बूया । तत्थ बज्झामासे चलामासे लुक्खामासे कण्णामासे अपप्पे निधितं ति बूया । सुभा—ऽसुभेसु पत्तं निधि अण्णेहि हरितं ति बूया । असुभेसु पुव्वपादुब्भावेसु पच्छा सुभेसु पुव्वमपरिकिट्ठो णारासो पाविहिसि निधि ति बूया । एवं गणणापरिसंखाय देस—भागोवलद्धीहि भाजणोपलद्धीयं दिसाउवलद्धीयं अप्पणीयक—परातकोपलद्धीहि लंभ—विप्पणास—णट्ठ—पडिलंभोपलद्धीहि य आमास—सद्—रूवपादुब्भावेहि ३० सव्वं समणुगंतव्वं भवति ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय निधानो णामाज्झातो वक्खातो

भवति पणपण्णासतिमो सम्मत्तो ॥ ५५ ॥ छ ॥

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २ 'झणं सं' हं० त० ॥ ३ समासेण जणं हं० त० ॥ ४ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ५ खंडिकासु हं० त० विना ॥ ६ णिद्धगतं हं० त० ॥ ७ 'लीसगतं' हं० त० विना ॥ ८ दुद्धेसु हं० त० विना ॥ ९ १७ १८ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १० अट्टिकं वा लोहिकं वा हं० त० ॥ ११ वा चारूकगतं वा कुलुं हं० त० ॥ १२ रूढामासे हं० त० ॥ १३ निधितं ति सि० ॥

[छप्पण्णासइमो णिव्विसुत्तज्झाओ]

णमो भवगतो जसवतो महापुरिसस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय णिव्विसुत्तं
णामाज्झायं । तं खलु भो ! तमणुवक्खस्सामि । तं जधा—तत्थ अत्थि बद्धं णत्थि बद्धं ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति ।
तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे उल्लोगिते ओहसिते माता—पितिसद्—रूवपादुब्भावे उकुट्टे अप्फोडिते णवपुण्णामपहट्ट—तुट्ट—
पच्चुदग्गे पुप्फे फले वा उवलद्ध—संत—अत्थिसद्दपादुब्भावे अत्थि बद्धं ति बूया । तत्थ बज्झामासे चलामासे उक्कासिते 5
खुधिते णिम्मज्जिते णिल्लिखिते पकुट्टे पम्मुए अवमट्टे अवलोयिते ओलोगिते ओसारिते अणुदत्ते अपच्चुदग्गे अपहट्टे
पुप्फे फले वा पादुब्भूते एवंविधे वा पडिरूव—सद्दपादुब्भावे आवरण—असंत—णत्थिसद्द पाउब्भावे णत्थि
बद्धं ति बूया । तत्थ बद्धे पुव्वाधारिते बद्धं तिविधमाधारये—पाणजोणीगतं १ मूलजोणीगतं २ धातुजोणीगतं ३ ।
तत्थ जधुत्ताहिं पाणजोणी—मूलजोणी—धातुजोणीउवलद्धीहिं पाणजोणी य [मूलजोणी य] धातुजोणी य उवलद्धव्वा
भवन्ति । तत्थ पाणजोणीगते पुव्वाधारिते मुत्तिकं संखभंडं गवलभंडं वालमयं दंतमयं अट्टिकमयमिति उवलद्धव्वं भवति । 10
एताणि सव्वाणि आधारयित्ता पत्तेगं जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं आमास—सद्द—रूवोपलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि भवन्ति ।

मूलजोणीगते पुव्वाधारिते तं चतुव्विधमाधारये—मूलगतं खंधगतं अगगतं पत्तगतमिति फलगतमिति । एतं एवमादि
चतुव्विधं मूलजोणीगतं जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं पत्तेकसो पत्तेकसो आधारयित्ता आधारयित्ता सव्वं समणुगंतव्वं भवति ।
तत्थ धातुजोणीगते पुव्वाधारिते तं दुविधमाधारये—मणिधातुगतं चेव लोहधातुगतं चेव । 15 तत्थ सव्वलोहधातु-
पडिरूवेण तस्सद्दपादुब्भावेण चेव लोहधातुगतं उवलद्धव्वं भवति । तत्थ सव्वमणिधातुपडिरूवेण सव्वमणिधातुगतं
उवलद्धव्वं भवति । पुणरिव धातुगतं दुविधमाधारयितव्वं भवति—अग्गेयमणगोयं चेति । दुविधमवि जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं
उवलद्धव्वं भवति—तत्थ अग्गेयाणि सव्वलोहगयाणि लोहियक्खो पुलओ गोमेदओ मसारगल्लो खारमणी चेव, अवसेसाणि
धातु अणगोयेसु उवलद्धव्वाणि भवन्ति । तत्थ जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं सव्वलोहाइं सव्वमणीसु य उवलद्धव्वाणि भवन्ति ।
तत्थ घट्टेसु मणि वा संखभंडं वा पवालं वा बूया । ओमत्थिते पर(रि)मत्थिते सव्वविद्धपडिरूवे य विद्धभंडं बूया ।
मुत्ताओ य आधारयितेण अविद्धभंडं बूया । तत्थ सामेसु सव्वाभरणगते चेव आभरणगतं बूया । तत्थ कोडिते खोडिते 20
दंतणहे अंजण—पासाण—सक्करा—लेट्टुक—ढेल्लिया—मच्छक—फल्लादिसु सव्वकट्ठिणगते सव्वकडगए सव्वचुण्णगते
सव्वधणपडिरूवउवकरणगते चेव धेणं बूया । उद्धं णाभीय काहावणे बूया । अधो णाभीय णाणकं बूया । तत्थ
अब्भंतरामासे सव्वसारगते सव्वकाहावणोपकरणगते य काहावणे बूया । तत्थ काहावणेसु पुव्वाधारितेसु उत्तमेसु उत्तमयत्तिए
बूया, मज्झिमेसु मज्झिमयत्तिए बूया, जहण्णेसु जहण्णयत्तिए बूया, साधारणेसु उत्तममज्झिमजहण्णेसु साधारणयत्तिए
बूया, आदिमूलेसु पुराणे बूया, बालेसु णवाए बूया । तत्थ बज्झामासेसु असारगते य सव्वणाणकपडिरूवगते य णाणकं 25
बूया । तत्थ णाणए पुव्वाधारिते कायमंतेसु सव्वमासकपडिरूवगते य मासए बूया, मज्झिमकाएसु अद्धमासकपडिरूव-
सद्दपादुब्भावे य अद्धमासए बूया, मज्झिमाणंतरकाएसु सव्वकाकणिपडिरूवगते य काकाणि बूया, पच्चवरकाएसु
सव्वअट्टपडिरूवगते य अट्टातो बूया । तत्थ अब्भंतरेसु छेए बूया, बाहिरब्भंतरेसु पत्तेये बूया, बाहिरेसु बाहिराहियं
बूया, कण्हेसु लोहं बूया, फालितेसु गाढं बूया, दढेसु सारमंते बूया, चलेसु अप्पसारं बूया, चतुरस्सेसु चतुरस्सं बूया,
वट्टेसु वट्टं बूया, लेहागते लेहागतं चित्तं बूया, सण्हेसु अप्पलक्खणं बूया, धलेसु उत्ताणलक्खणं बूया, उविद्धेसु 30
उविद्धलक्खणं बूया । एतेसु अक्खठाणाणि भवन्ति ।

१ 'ते पट्टुत्ते अव' हं० त० ॥ २ पादुब्भावे एवं हं० त० ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥
४-५ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ६-७-८ विट्ठभं हं० त० ॥ ९ 'व्वडंकग' हं० त० सि० ॥ १० 'व्ववण्णप'
हं० त० । 'व्वधण्णप' सि० ॥ ११ वण्णं हं० त० ॥ १२ 'हण्णसाधा' हं० त० ॥ १३ 'सु यत्तिये बूया, बाहिराहियं'
हंतं बूया, हं० त० विना ॥ १४ अप्पासा' हं० त० विना ॥

एत्थं एकंकेसु गत्तेसु एक्काभरणे एक्कोपकरणे एकचरेसु सत्तेसु एकवीणियं एकंगुलिगहणे एकसाहागते य एकं
 बूया । तत्थ दंडेसु गत्तेसु जमलाभरणे जमलोवकरणे मिधुणचरेसु सत्तेसु बिअंगुलिगहणे बिसाहागते सव्वबिगपडिरूवगते
 य दुवे बूया । तत्थ ति ए भमुहासंगय ए णासाचूलायं पोरिसे तियंगुलिगहणे सव्वतियपडिरूव—सदपादुब्भावे य तिण्णि
 बूया । तत्थ चतुरस्सेसु चतुकेसु सव्वचतुप्पदेसु चतुरंगुलिगहणे पादतल—पाणितलेसु सव्वचतुसाहागते सव्वचतुकपडिरूवे
 5 य चत्तारि बूया । तत्थ दंतेसु थणेसु अंसे मुट्ठीकरणे फियगहणे पंचकपरामासे पंचकपडिरूवेसु य पंच बूया ।
 तत्थ गंडे मणिबंधणे गोप्फासु छकपडिरूवे य छ बूया । तत्थ सोणीयं कण्णेसु पस्सेसु कुक्खीसु य सत्तकपडिरूवे
 य सत्तकं बूया । तत्थ णिडाले कण्हे उरमज्जे हिदए णाभीयं अट्ठकपडिरूवे य अट्ठकं बूया । तत्थ चतुक्क—पंचकपरामासे
 एकके अट्ठगसहि ए बि ए सत्तगसहि ए ति ए छक्कगसहिते णवगपडिरूव—सदपादुब्भावे य णव बूया । तत्थ पंचगदंडोदीरणे
 पंचकजुवलकपरामासे एकए णवकसहिते बि ए अट्ठगसहिते चउक्के छक्कगसहिते दस बूया । एवं एक्कारसकसहिते बारसक—
 10 तेरसक—चोदसक—पण्णरसक—सोलसक—सत्तरसक—अट्ठारसक—एकूणवीसाका वग्गा आमास—पडिरूवसंजोगेहि पडिरूव—
 सद—आकारपादुब्भावेहि य एक्कुत्तरवड्डीय णेतव्वा भवंति । तत्थ अंसफलए कोप्परे जण्णूसु वीसं बूया । तूरुमज्जे
 पणुवीसं बूया । पट्ठीयं तीसं बूया । अंतरोदरेण षण्णतीसं बूया । णाभीयं चत्तालीसं बूया । उपरि णाभीयं षण्णतालीसं
 बूया । उवरि णाभीयं अंगुलेसु षण्णासं बूया । हेट्ठा हितयस्स पंचावण्णं बूया । हियए सट्ठि बूया । उवरि हिययस्स
 पंचसट्ठि बूया । अक्खए सत्तरि बूया । गीवामज्जे षण्णत्तरि बूया । हणु—कवोले असीति बूया । उत्तरोट्ठे पंचासीति
 15 बूया । भमूसु णउति बूया । णिडाले पंचाणउति बूया । सीसे सतं बूया । बाहुमज्जे उरमज्जे य तीससयं बूया ।
 तालुये जिब्भायं वासंते मुहे ति सहस्सं बूया । गीते विप्पेक्खिते विजंभिते सहस्समेतं बूया । पुंस्वदिट्ठेण चैव कमेण
 अक्खट्ठाणाणि यधुद्धिट्ठाणि एक्कुत्तरियाय वड्डीय समत्त—भिण्णोवलद्धीहि चैव आधारयित्ता आधारयित्ता काहावणा
 णाणकोवलद्धीओ य आमास—पडिरूवसंजोगोपलद्धीहि आकास—सण्णा—सद—रूवपादुब्भावेहि सव्वं समणुगतव्वं भवति ।

तत्थ 'कंसि बद्धं ?' पुव्वमाधारिते णासायं थणेसु पोरिसे ति थंविक्काय ति बूया । मुखे पिट्ठंते णाभीयं
 20 अक्खीसु ति चम्मकोसगतं बूया । अवहत्थेसु कुक्खीसु ति पोट्टलिकागतं बूया । दडेसु बद्धं बूया । चलेसु सुक्कं
 बूया । ओवेढिय—परिवेढिते अट्ठियगतं बूया । केस—मंसुगते सुत्तबद्धं बूया । अंगुलीसु चक्कबद्धं बूया । तणूसु हेतिबद्धं
 बूया । अब्भंतरेसु सकं बूया । बाहिरेसु परक्कं बूया । बाहिरब्भंतरेसु सक—परक्कसाधारणं बूया । कायमंतेसु सुवण्णप्पमाणं
 बूया । मज्झिमकायेसु अट्ठसुवण्णप्पमाणं बूया । मज्झिमाणंतरकायेसु सुवण्णमासकप्पमाणं बूया । पच्चवरकायेसु
 सुवण्णकाकर्णि बूया । अब्भंतरेसु पलप्पमाणं बूया । बाहिरब्भंतरेसु भिण्णपलप्पमाणं बूया । अणिव्वुत्तेसु अपरिणिव्वुति
 25 बूया ।  णिव्वुएसु णिव्वुयं बूया । णिव्वु(व्वि)एसु णिव्वियं बूया ।  आहारेसु अचिरलद्धं बूया । णीहारेसु
 वयगयं बूया । थीणामेसु अद्धद्धितमेव बूया ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय णिव्विसुत्तो णामाज्झायो वक्खातो भवति

छप्पण्णासतिमो ॥ ५६ ॥ छ ॥

१ एकं ए हं तं ॥ २ णासाभूयालं पो हं तं ॥ ३ पुव्वदिट्ठेण हं तं ॥ ४ चविक्काय हं तं ॥
 ५ ओवेढित—परिवेढिते उअट्ठि हं तं विना ॥ ६ अणिजुत्तेसु अपरिणिव्वुति सं ३ पुं । अणिव्वएसु अपरिणिव्वयं
 हं तं ॥ ७ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं तं एव वर्तते ॥ ८ 'सु चय' हं तं ॥ ९ अद्धदियं मेयं बू' हं तं ॥

[सत्तपण्णासङ्गो णट्टकोसयज्झायो]

णमो भगवतो यसवतो महापुरिसस्स वद्धमाणस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाए णट्टाणट्ठे णामाज्झायो । तं खलु भो ! तमणुवेक्खाइस्सामि । तत्थ णट्टं ण णट्टमिति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थे णेतपडिप्पिधणे सोत्तपडिप्पिधणे पाणपडिप्पिधणे पुहपडिप्पिधणे अट्टाणपडिप्पिधणे छिदपडिप्पिधणे बज्झामासे चैलामासे अणामिका- 5 गहणे पल्लत्थे पसंखिते मुत्ते पकिण्णे णिक्खिते उवादिण्णे बद्धमुत्ते अवसक्किते अवणामिते विणासिते णट्ट- हरियसद्दपादुब्भावे णट्टं बूया । तत्थ अब्भंतरामासे दढामासे णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामासे आहारेसु अणट्ट-हरितपादुब्भावे चेव ण णट्टं ति बूया ।

तत्थ णट्टे पुव्वाधारिते णट्टं तिविधमाधारये-णट्टं वा पम्हुट्टं वा हरितं वा । तत्थ अणामिकागहणे बंधणमोक्खणे दाणापत्तिगते णिक्खेवउपावणे बज्जे णट्टे ति बूया । तत्थ सोत्तपडिप्पिधणे णेतपडिप्पिहाणे ६ घाणपडि- १० पिहाणे ७ णप्फडिते मुत्ते सयं भट्टे पलोलिते पम्हुट्टं ति बूया । तत्थ चलामासे णीहारेसु य सव्वचोरपडिरूव- सदपादुब्भावेसु य हरितं बूया ।

तत्थ णट्टं दुविधं-सज्जीवं अज्जीवं चेति । तत्थ अब्भंतरामासे चलामासे णिद्धामासे पुण्णामासे सव्वसज्जीवगते चेव सज्जीवं णट्टं बूया । तत्थ बज्झामासे दढामासे लुक्खामासे तुच्छामासे सव्वअज्जीवगते चेव अज्जीवं णट्टं बूया । तत्थ सज्जीवे णट्टे पुव्वाधारिते सज्जीवं णट्टं दुविधमाधारये-मणुस्सजोणीगतं तिरिक्खजोणिगतं चेव ।

तत्थ तिरियामासे तिरियगते तिरियविलोगिते सव्वतिरिक्खजोणिगते पडिरूव-सद्दपादुब्भावे सव्वतिरिक्खजोणीपरामासे 15 सव्वतिरिक्खजोणीसद्दगते सव्वतिरिक्खजोणीणामोदीरणे तिरिक्खजोणीणामधेज्जे थी-पुरिसगते तिरिक्खजोणीणामधेज्जे उवकरणे तिरिक्खजोणीउवकरणे चेव तिरिक्खजोणी णट्टं बूया । तत्थ तिरिक्खजोणीयं पुव्वाधारितायं तिरिक्खजोणि तिविधमाधारये-पक्खिगतं चतुप्पदगतं परिसप्पगतं चेति । तत्थ उद्धंगीवा-सिरो-मुहामासे णक्खत्त-चंद-सूस्-गह- 20 तायगणपडिरूव-सद्दपादुब्भावे उद्धंगागागते सव्वपक्खिपादुब्भावे सव्वपक्खिपरामासे सव्वपक्खिसद्दगते सव्वपक्खिणाम- धेज्जोदीरणे ८ सव्वपक्खिणामधेज्जे थी-पुरिसगए ९ सव्वपक्खिणामधेज्जोवकरणदव्वगते सव्वपक्खीउवकरणे चेव 20 पक्खि नट्टं बूया । तत्थ सव्वचतुरस्सेसु वा चतुप्पदेसु वा चतुप्पदपादुब्भावे चतुप्पदपरामासे चतुप्पदसद्दगते य चतुप्पदणामधिज्जोदीरणे चतुप्पयमये उवकरणे चतुप्पदोषकरणे चतुप्पदणामधेज्जे थी-पुरिसे चतुप्पदउवकरणदव्वगते चउप्पदसद्द-रूवपादुब्भावेसु चउप्पयं णट्टं बूया । तत्थ कण्हेसु सव्वदीहेसु सव्वपरिसप्पपादुब्भावे परिसप्पपरामासे परिसप्पसद्दगते सव्वपरिसप्पणामोदीरणे परिसप्पयमये उवकरणे परिसप्पउवकरणगते परिसप्पणामधेज्जे थी-पुरिससद्दोषकरणे परिसप्पसद्द-रूवपादुब्भावे चेव परिसप्पं नट्टं ति बूया । 25

तत्थ पक्खिसु णट्टेसु पुव्वाधारितेसु जलचरं थलचरं ति पुव्वमाधारयितव्वं । तत्थ आपुणेयेसु सव्वजलयेसु सव्वजलचरेसु जलचरजलयपरामासे जलचरजलयणामोदीरणे जलचरजलयणामधेज्जे उवकरणे थी-पुरिसदव्वोवकरणे सद्द-रूवपादुब्भावेसु जलचरं पक्खि नट्टं ति बूया । तत्थ लुक्खेसु थलेसु य थलयेसु य थलचरेसु य सत्तेसु थलयथलचरपरामासे थलयथलचरसद्दणामोदीरणे थलयथलचरउवकरणपादुब्भावे सव्वथलयथलचरणामधेज्जे उवकरणे थी-पुरिसे य थलचरउवकरणसद्द-रूवपादुब्भावे थलचरं पक्खि णट्टं बूया । तत्थ अब्भंतरेसु आहारेसु सव्वगामेसु 30

१ 'वक्खस्सा' हं० त० ॥ २ णेतपडिप्पिधणे मुहपडिप्पिधणे अवाणपडिप्पिधणे बज्झा' हं० त० विना ॥ ३ एलामासे हं० त० ॥ ४ बद्धमित्ते हं० त० ॥ ५ 'पाणणे' हं० त० विना ॥ ६ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ७ 'भट्टे प' हं० त० विना ॥ ८ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ९ 'धेज्जेसु य थी' हं० ॥

य गामपक्खिण्णं णट्ठं बूया । तत्थ बज्जेसु नीहारेसु य सव्वआरण्णेषु आरण्णपादुब्भावेसु य आरण्णं पक्खिण्णं णट्ठं बूया । तत्थ कायवन्तेसु कायवन्तं, मज्झिमकायेसु मज्झिमकायं, मज्झिमाणन्तरकायेसु मज्झिमाणन्तरकायं, पच्चवरकायेसु पच्चवरकायं पक्खिण्णं णट्ठं ति बूया । सेदेसु सेदं, तंबेसु तंबं, पीतेसु पीतं, सेवालएसु सेवालयं, णीलेसु णीलं, फरुसेसु फरुसं, चित्तेसु चित्तं, पियदंसणेसु पियदंसणं, अदंसणीयेसु अदंसणीयं, घोसवन्तेसु घोसवन्तं, अधोसवन्तेसु अधोसवन्तं पक्खिण्णं णट्ठं ति बूया । मधुररुतेसु मधुररुतं, कडुरुतेसु कडुरुतं, दारुणेसु दारुणं, मदूसु मदुं, अविदेसुमविदं, मंस—रुधिरभोयीसु मंस—रुधिरभोयिं, पुप्फ—फलभोयीसु पुप्फ—फलभोयिं, अणूसु धण्णभोयिं णट्ठं ति बूया । इति पक्खिण्णगतं णट्ठं बूया ।

तत्थ चउप्पदेसु णट्ठेसु गम्म आरण्णं ति दुविधा आहारा पीतआहारा पीतं व्व चेवं ति । तत्थ अब्भन्तरेसु आहारेसु सव्वगम्मेसु य गम्मचउप्पदं णट्ठं ति बूया । तत्थ बज्जेसु नीहारेसु सव्वआरण्णेषु आरण्णचतुप्पदं णट्ठं ति बूया । तत्थ सव्वउण्णतेसु सिंगीसु कोसिवलगते य सिंगीचतुप्पदं णट्ठं ति बूया । तत्थ अधोभागेसु अंसिगीसु १० अंसिगी १० चतुप्पदं णट्ठं बूया । असंगमिरागते वणप्फतीसु अंसिगिचतुप्पदं णट्ठं बूया । तत्थ कायवन्तेसु कायवन्तं, मज्झिमकायेसु मज्झिमकायं, मज्झिमाणन्तरकायेसु मज्झिमाणन्तरकायं बूया । पच्चवरकायेसु पच्चवरकायं चतुप्पदं णट्ठं ति बूया । तत्थ सेतेसु सेतं, तंबेसु तंबं, पीतेसु पीतं, सेवालयेसु सेवालयं, १० पण्हूसु १० पण्हुं, णीलेसु णीलं, कण्हेसु कण्हं, फरुसेसु फरुसं, चित्तेसु चित्तं चतुप्पदं णट्ठं ति बूया । थीणामेसु थीणामं, पुण्णामेसु पुण्णामं, णपुंसएसु णपुंसकं चतुप्पदं णट्ठं ति बूया । इति चतुप्पदगतं णट्ठं ।

१५ तत्थ परिसप्पे णट्ठे पुव्वाधारिते तिविधमाधारये—दक्खीयरं मंडलि राइण्णं चेति । तत्थ वायव्वेसु दक्खीयरं णट्ठं ति बूया । परिमंडलेसु परिमंडलिणो णट्ठे बूया । तिरिच्छीणराईसु तिरिच्छीणराइणो णट्ठे ति बूया । उद्धेसु उद्धराइणो णट्ठे ति बूया । तत्थ कायमन्तेसु कायमन्ता, मज्झिमकायेसु मज्झिमकाया, मज्झिमाणन्तरकायेसु मज्झिमाणन्तरकाया, पच्चवरकायेसु पच्चवरकाये परिसप्पे णट्ठे ति बूया । सेतेसु सेता, तंबेसु तंबा, पीतेसु पीता, सेवालेसु सेवाला, पण्हूसु, पण्हू, णीलेसु णीला, कण्हेसु कण्हा, फरुसेसु फरुसा, चित्तेसु चित्ता, थीणामेसु थीणामा, पुण्णामेसु पुण्णामा, णपुंसएसु २० णपुंसका परिसप्पे णट्ठे ति बूया । इति परिसप्पगतं णट्ठं ति बूया । इति तिरिक्खजोणिगतं णट्ठं ।

तत्थ मणुस्सजोणीयं पुव्वाधारितायं उज्जुमासे उज्जुअपेक्खिते उज्जुकुल्लोइते सव्वअज्जवगते य मणुस्सं णट्ठं ति बूया । तत्थ मणुस्से णट्ठे पुव्वाधारिते अज्जो पेस्सो ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ उद्धं णाभीयं सव्वअज्जवगते य अज्जमं णट्ठं ति बूया । तत्थ अधो णाभीयं सव्वपेस्सगते य पेस्सप्पाणं णट्ठं ति बूया । पुण्णामेसु पेस्सेसु दासं णट्ठं ति बूया । थीणामेसु पेस्सेसु दासं णट्ठं ति बूया । एवं पेस्सगते पुव्वाधारिते णायव्वं भवतीति । २५ अज्जगते पुव्वाधारिते बंभणो खत्तितो वेस्सो सुद्धो ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । तत्थ बंभिज्जेसु बंभेयेसु बंभणं णट्ठं बूया । खत्तेयेसु खत्तियं णट्ठं ति बूया । वेस्सेयेसु वेस्सं णट्ठं ति बूया । सुद्धेयेसु सुद्धं णट्ठं ति बूया । वण्णेसु पुव्वाधारितेसु उवातेसु उवातं, कण्हेसु कण्हं, सामेसु सामं, कालस्सामेसु कालस्सामं, सुद्धस्सामेसु सुद्धस्सामं, वण्णपडिरुवेण वण्णसाधारणं बूया । सत्थाणे पुव्वाधारिते दीहेसु दीहं, हस्सेसु हस्सं, थूलेसु थूलं, किसेसु किसं, बालेसु बालं, वयत्थेसु वयत्थं, मज्झिमवयेसु मज्झिमवयं, महव्वतेसु महव्वतं णट्ठं मणुस्सं ति बूया ।

३० तत्थ अब्भन्तरो बाहिरो बाहिरब्भन्तरो गुरुतुल्लो पच्चवरो ति मणुस्से पुव्वाधारिते—तत्थ अब्भन्तरेसु आहारेसु य अब्भन्तरं बूया, बाहिरेसु बाहिरं बूया, बाहिरब्भन्तरेसु मित्तं बूया, अब्भन्तरब्भन्तरेसु अप्पणो बंधवं णट्ठं ति बूया, बाहिरबाहिरेसु मित्तामित्तं णट्ठं बूया । अब्भन्तरब्भन्तरे पुव्वाधारिते उद्धंगीवाय गुरुजोणीयं बूया । अधत्था

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २-३ ०८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति ॥ ४ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥

गीवाय उद्धं कडीय तुल्लजोणीयं बूया । अधत्था कडीय पच्चवरजातीयं बूया । तत्थ गुरुजोणीयं पुव्वाधारितायं अज्जयं वा पितरं वा आयरियं वा णट्ठं ति बूया । पुण्णामेसु दंडेसु पेतिज्जं वा मातुलं वा उवज्जायं वा णट्ठं बूया । थीणामेसु दंडेसु मातुस्सियं वा पितुस्सियं वा उवज्जायभगिणिं वा णट्ठं ति बूया । पुणो विसेसितेसु दंडेसु थीणामेसु चुल्लमातुयं वा उवज्जायं वा बूया । अब्भंतरेसु दंडे पितुस्सियं वा उवज्जायभगिणिं वा णट्ठं बूया । बाहिरेसु दंडेसु थीणामेसु पितुज्जातिं वा उवज्जायज्जातिं वा बूया । तत्थ उत्तमुत्तमेसु अब्भंतरब्भंतरेसु य पुण्णामधेज्जेसु अज्जकं वा उवज्जायं वा णट्ठं बूया । उत्तमुत्तमेसु थीणामेसु अज्जियं वा उवज्जायमातरं वा उवज्जायउवज्जायिणिं वा णट्ठं बूया । इति गुरुजोणी णट्ठा वक्खाता भवति ।

तत्थ तुल्लजोणीसु भाता वा वयस्सो वा भगिणिं वा सँलो वा भगिणिं वा पतिं वा मेधुणो वा देवरो वा पतिजेट्ठो वा भातुवयस्सो वा जँस्स(वयस्स)वयस्सो वा णट्ठो विण्णेयो भवति । तत्थ दंडेसु भाता विण्णेयो । वामेसु पुण्णामेसु भगिणिपति विण्णेयो । दक्खिणेसु पुण्णामधेज्जेसु मातुलपुत्तो विण्णेयो । वामेसु पुण्णामधेज्जेसु मातुस्सियापुत्तो विण्णेयो । चलेसु बज्जेयेसु य पुण्णामेसु वयस्सो विण्णेयो । दंडेसु चलेसु पुण्णामधेज्जेसु य भातुवयस्सो विण्णेयो । बाहिरबाहिरेसु चलेसु पुण्णामेसु य वयस्सवयस्सो विण्णेयो । तत्थ थीणामेसु तुल्लजोणीयं भज्जं वा सँलिं वा भगिणिं वा मातुस्सियाधीतरं वा पितुस्सियाधीतरं वा पित्तियधीतरं वा जातरं वा णणंदरं वा सँहिं वा जारिं वा णट्ठं जाणिय । तत्थ अब्भंतरेसु चलेसु भज्जा वा भातुज्जा वा विण्णेया भवति । बाहिरब्भंतरेसु चलेसु य सही वा सल्ली वा विण्णेया । बाहिरेसु चलेसु य थीणामेसु जारिं विण्णेया । तत्थ दंडेसु भगिणिं वा भगिणिगतं वा बूया । तत्थ पुण्णामधेज्जेसु सोदरिं वा महपितुकधीतरं वा पित्तियधीतरं वा मातुलधीतरं वा जोणिभगिणिं वा बूया । तत्थ अब्भंतरेसु सोदरियं भगिणिं बूया । उम्मज्जितेसु पुण्णामेसु महपितुयधीतरं भगिणिं बूया । उम्मज्जितेसु पुण्णामेसु पित्तियधीतरं भगिणिं बूया । थीणामधेज्जेसु सोदरियं भगिणिं बूया । थीसाधारणेसु पुण्णामेसु मातुलधीतरं बूया । बाहिरेसु चलेसु य जोणिभगिणिं बूया । बाहिरेसु थीसाधारणेसु पितुस्सियाधीतरिं बूया, मातुस्सियाधीतरिं वा । दक्खिणेसु थीणामेसु पितुस्सियाधीतरिं बूया । उदरेसु सोदरिउगमेव बूया, दक्खिणपस्से भायरो, वामपस्से भगिणीओ बूया । दक्खिणपस्से उदरस्स उम्मज्जिते जेट्ठो भाया, ओमज्जिए कणेट्ठो भाता, थितामासे जमलभातरो विण्णेया । वामपस्से उदरस्स उम्मज्जिते जेट्ठं भगिणिं बूया, ओमज्जिते कणिट्ठभगिणीं बूया, थितामासे जमलभगिणीओ बूया । इति तुल्लजोणीणट्ठं वक्खातं भवति ।

तत्थ पच्चवरजोणीपुण्णामधेज्जेसु पुत्तो वा जामाता वा जामातुयभाया वा णहुसा वा भाया वा भागिणेज्जो वा वयस्सपुत्तो वा जोणीपुत्तो वा भँत्तिओ वा । तत्थ अब्भंतरेसु पुत्ता विण्णेया । बाहिरब्भंतरेसु दंडेसु भातुपुत्ता विण्णेया । थीणामेसु दंडेसु भगिणीपुत्तो विण्णेया । बज्जेसु थीणामेसु जोणिपुत्ता विण्णेया । बज्जेसु चलेसु वयस्सपुत्ता विण्णेया । तत्थ पच्चवरजोणीयं थीणामधेज्जेसु थिया जोणी धीया वा विण्णेया । तत्थ अब्भंतरेसु थीणामधेज्जेसु धीतरं बूया । बाहिरब्भंतरेसु थीणामधेज्जेसु भातुधीतरं बूया । जमगथीणामोदीरणे भगिणिधीतरं बूया । बज्जसण्णितेसु थीणामधेज्जेसु जोणिभगिणीधीतरं बूया । थीणामेसु बज्जेसु चलेसु य वयस्सधीतरं बूया । थीणामधेज्जसाधारणे जामातरं णहुसं वा बूया । पुण्णामेसु अब्भंतरेसु णहुसं बूया । इति पच्चवरजोणी णट्ठे वक्खाया भवति ।

एतेसि पच्चवरजोणीयं समुद्दिट्ठायं अण्णतरंसि आधारिए अण्णतरं णट्ठं बूया । तत्थ 'केण हरितं ?' ति आधारितंसि तत्थ णट्ठं आहारेसु । अब्भंतरेसु य अब्भंतरेण हरितं ति बूया । अब्भंतरेसु यमगामासेसु य जो पुच्छेज्ज

१ संभो वा हं० त० ॥ २ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ३-४ दंडेसु हं० त० विना ॥ ५ सँलिं वा हं० त० ॥ ६ दंडेसु हं० त० विना ॥ ७ पच्चत्तरं हं० त० ॥ ८ वा जायाभाया जामातुयजाया वा णहुसा हं० त० ॥ ९ भवत्तिओ हं० त० ॥ १० वक्खातो हं० त० विना ॥ ११ यमगामामगामासेसु हं० त० ॥

तेणेव हरितं ति बूया । बाहिरब्भंतरेसु णीहारेसु बाहिं वसंतेण हरितं अब्भंतरेण ति बूया । अर्ब्भंतरबाहिरेसु आहारणीहारेसु
अण्णहिं वसंतेण ६ बाहिरेण हरियं ति बूया । ७ बाहिरेसु अण्णहिं वसंतेण दिट्ठपुव्वेण हरितं ति बूया ।
बाहिरबाहिरेसु अण्णहिं वसंतेण अदिट्ठपुव्वेण हरितं ति बूया । तत्थ णिवेसणे पुव्वधास्ति अब्भंतरेसु णिवेसणगतं बूया,
अब्भंतरब्भंतरेसु उव्वरकगतं बूया, बाहिरब्भंतरेसु पडिवेसघरगतं बूया, बाहिरेसु बहिद्धा णिवेसणस्स ति बूया, बाहिरबाहिरेसु
5 बहिद्धा णगरस्स बूया । तत्थ बहिं वा णिवेसणस्स ति पुव्वधास्ति अब्भंतरे णगरे पुव्वधास्ति अब्भंतरेसु णगरगयं
बूया, अब्भंतरब्भंतरेसु पडिवेसघरगतं बूया, अब्भंतरबाहिरेसु बाहिरियागतं बूया, बाहिरेसु आरामगतं बूया, बाहिरबाहिरेसु
अरण्णगतं बूया । पुरत्थिमेसु गत्तेसु पुरत्थिमायं दिसायं बूया । दक्खिणपुरत्थिमेसु दक्खिणपुरत्थिमायं दिसायं ति बूया ।
दक्खिणेसु दक्खिणायं दिसायं ति बूया । दक्खिणपच्छिमेसु दक्खिणपच्छिमायं दिसायं ति बूया । पच्छिमेसु गत्तेसु
पच्छिमायं दिसायं ति बूया । उत्तरपच्छिमेसु गत्तेसु उत्तरपच्छिमायं दिसायं ति बूया । उत्तरेसु गत्तेसु उत्तरायं दिसायं
10 ति बूया । उत्तरपुरत्थिमेसु गत्तेसु उत्तरपुरत्थिमायं दिसायं ति बूया । तत्थ उद्धेसु मालगतं वा रुक्खगतं वा पव्वतगतं
वा आरुभितकं वा बूया । अधोभागेसु कूवगतं वा वावीगतं वा तलागतं वा पवाणगतं वा णदीगतं वा भूमीगतं
वा भूमीघरगतं वा णिण्णे वा णिधितं बूया ।

तत्थ अज्जीवपंगति अणेकाकारा भवति थाणेण वा णिधाणेण वा । सा तिविधा उवलद्धा—पाणजोणीगता
मूलजोणीगता धातुजोणीगता वेति । तत्थ चलामासेसु पाणजोणी विण्णेया सव्वपाणपडिरूवगते य । केस—मंसु—नह—
15 लोमगते मूलजोणी विण्णेया सव्वमूलपडिरूवगते चेव । दढामासेसु सव्वधातुपडिरूवगते चेव धातुजोणी विण्णेया ।
सा दुविधा विण्णेया—संखता असंखता चेव । तत्थ संखते संखता विण्णेया । असंखते असंखता । सा पुणरवि
दुविधा विण्णेया—अग्गेया अणग्गेय ति । तत्थ अग्गेयेसु अग्गेया विण्णेया । [अणग्गेयेसु अणग्गेया विण्णेया ।]
सा पुणरवि दुविधा विण्णेया—आहारे उवकरणे चेव । तत्थ आहारेसु आहारो विण्णेयो । सव्वभोयणपडिरूवगते चेव
णीहारेसु उवकरणं विण्णेयं सव्वउवक्खरगतं चेव । तत्थ पाणजोणीए आहारे दुद्धं दधिं तक्कं णवणीतं कूचियं आमधितं
20 गुलदधिं ६ रसालादहिं ७ मंथुं परमण्णं दधितावो तक्कोदणो अतिकूरको मंसं रुधिरं वसा वेति । अवसेसाणि
पुव्वुद्धिणि असंखताणि, दुद्धं दधिं वेति असंखताणि । तत्थ णिद्धेसु पाणीयं, णिद्धसाधारणेसु परमण्णं, अणिद्धेसु
दधितावो तक्कोदणो वा विण्णेयो । अलुक्खेसु अतिकूरको मंसं ति विण्णेयं । लुक्खेसु वल्लूरं विण्णेयं एवमादी ।
इति पाणजोणीगते आहारो विण्णेयो भवति ।

तत्थ मूलजोणीगते आहारे साली वीही कोदवा कंगू रालका वरका जव—गोधूमा मासा मुग्गा अलसंदका
25 चणका णिप्फावा कुलत्था चणविकाओ मसूरा तिला अतसीओ कुसुंभा सामाका वेति । तत्थ आहारेसु अंतेसु धण्णगतमेव
णट्ठं बूया । जधुत्ताहिं पुव्वोपलद्धीहिं अणूसु संखतेसु मूलजोणीयं आहारं णट्ठं बूया । जधुत्ताहिं भोयणपडले आहारोवलद्धीहिं
तत्थ सेते साली वीही सेततिला कुसुंभा सेतसासया चेति विण्णेया । सामेसु अदसी विण्णेया । तंबेसु कोदवा गोधूमा
तंबनिप्फावा तिला कुलत्था वा रायसासवा विण्णेया ।

तत्थ सव्वण्णगतं तिविधं—तणगतं गुम्मगतं वल्लिगतं ति । तत्थ तणगतं साली वीही कोदवा कंगू रालका
30 सामाका तणफलं चेति विण्णेयाणि भवन्ति । तत्थ गुम्मगते अदसी तिला सासवा चेति विण्णेयाणि । तत्थ वल्लीगते मुग्गा
मासा चणका चणविकाओ अलसंदे वा निप्फावा कुलत्था वेति विण्णेया भवन्ति । इति आहारगतं णट्ठं ति बूया ।

तत्थ उवणिद्धेसु कुसणगतं विण्णेयं मास—मुग्ग—अलसंदका—चणविकातं भवति । तत्थ कौलथो कंबलिको
साकरसो थूणिकाखलो दुद्धं दहिं तक्कं अंबिलं ति विण्णेया उपसेका । तत्थ सेतेसु मधुरेसु असंखयेसु य दुद्धं

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २ 'पमाति हं० त० विना ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त०
एव वर्तते ॥ ४ पुव्वुद्धि' हं० त० ॥ ५ 'काल' हं० त० ॥ ६ 'सारकसो हं० त० ॥ ७ 'का दुद्धं हं० त० विना ॥
८ उपसिको हं० त० विना ॥

विण्णेया । अंबेसु घणेषु असंखतेसु दधि विण्णेयं भवति । तंबेसु संखतेसु य तक्कं विण्णेयं । पाणजोणीगते सोपरंते सोपहुते रसगतं विण्णेयं भवति । मूलजोणीगते संखयेसु जूसो विण्णेयो । अच्छेसु कंबलिको विण्णेयो । वापण्णेषु अंबिलं ति विण्णेयं । तत्थ सव्वकोसगए सव्वकोसीधण्णगते सव्वसिगिगते सव्वसुद्धचूलागते सव्वचेडितसिहंङिगते सव्वसंपुड-पेला-पेलिकगते करंडगगते संकोसकगते पणसक-थइआ-पसेव्वकगते सगलिकारसं बूया । तत्थ सव्वबालेयेसु धूणिकारसं बूया । सव्वअंतेसु सागरसं बूया । मुदितेसु पुप्फरसं बूया । पुण्णेषु फलरसं बूया । तत्थ 5 सागगते एतेहिं ज्जेव पादुब्भावे णेतव्वं । सव्वहेट्ठिमेहिं मूलगतं विण्णेयं । सव्वमूलजोणीपडिरूवगते य पा(बा)लेयेसु धूणिकारसो विण्णेयो । तणूसु सागगते चेव सागरसो विण्णेयो । मुदितेसु पुप्फरगते य पुप्फरसो विण्णेयो । पुण्णेषु फलेसु फलगते चेव फलरसो विण्णेयो । इति फलजोणी वक्खाता भवति ।

तत्थ पसण्णा णिट्ठिता मधुरको आसवो जगलं मधुरंसेरको अरिट्ठो अट्ठकालिका आसवासवो सुरा कुसुकुंडी जयकालिका चेति पाणगतं आधारयित्ता आधारयित्ता उवलद्धीहिं जधुत्ताहिं उवलद्धव्वं भवति । तत्थ पसण्णेषु पसण्णा 10 विण्णेया । सेतेसु कुसुकुंडी णिट्ठिता जगलं वेति विण्णेया भवन्ति-तत्थ सारवंतेसु णिट्ठिता, मधुरेसु कुसुकुंडी, सदेसु जगलं विण्णेयं भवति । तत्थ मधुरेसु तंबेसु य आसवो विण्णेयो । तंबेसु कण्हसाधारणेषु कसायेसु य मधुरं विण्णेयं । इति एतेसिं एकतरं मज्जं णट्ठं ति बूया । एवं मूलजोणी वक्खातो भवति । पाणजोणी गता आहारजोणी गता चेति ।

तत्थ धातुगते णत्थि आहारो ति बूया । तत्थ धाउजोणीगते उवकरणं आभरणं वा विण्णेयं । तत्थ उवकरणं तिविधं-पाणजोणीजं मूलजोणीजं धातुजोणियं चेति । तत्थ पाणजोणियं मुत्तिकं संखागवलमयं दंतमयं सिंगमयं अट्ठिकमयं 15 लोहमयं चम्ममयं वालमयं चेति भाजणगतं विण्णेयं । तत्थ अच्छादणाणि कोसेज्जकं आयिकं अविकपत्तुण्णा अजिणपट्टा अजिणप्पवेणी चम्मसाडीओ वालवीरा चेति । इति पाणजोणीआणि उवकरण-भायण-भूसण-5 अच्छादणाणि आधारयित्ता आधारयित्ता सकाहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि भवन्ति । तत्थ मूलजोणीआभरणाणि कट्टमयं पुप्फमयं फलमयं पत्तमयं चेति । तत्थ मूलजोणीभायणाणि कट्टमयं पुप्फमयं फलमयं पत्तमयं चेति । तत्थ मूलजोणियो अच्छादो कप्पासिकं ८ वैक्कभंडं वेलुमयं ९ चेति । एवमेव उवकरणं मूलजोणियं समणुगतव्वं भवति । इति मूलजोणिओ अच्छादो 20 आभरणाणि भायणाणि उवकरणाणि य सव्वं समणुगतव्वं भवति । तत्थ धातु-जोणियं आभरणं सुवण्णमयं रुपमयं तंबमयं हारकूडमयं तपुमयं सीसकमयं काललोहमयं वट्टलोहमयं सेलमयं मत्तिकामयं । तत्थ धातुजोणियो अच्छादो सुवण्णपट्टो सुवण्णखयितो अच्छादो लोहजालिका वेति । एतेसिं एत्तो एगतरं आधारयित्ता आधारयित्ता जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वं भवति ।

तत्थ णिट्ठेहिं रसगतं णट्ठं बूया । सुक्खेसु सुक्खं णट्ठं बूया । चलेसु सज्जीवं णट्ठं बूया । दढेसु धातुगतं 25 णट्ठं बूया । पुण्णामधेज्जेसु पुरिसं णट्ठं बूया । थीणामधेज्जेसु इत्थि णट्ठं बूया । णपुंसकेसु णपुंसकं णट्ठं बूया । तणूसु वत्थं णट्ठं बूया । सव्वतंतुगते चेव सामेसु आभरणं णट्ठं बूया । सुक्केसु चउरस्सेसु चित्तेसु सारवंतेसु य काहावणे णट्ठं बूया । परिमंडलेसु भायणं णट्ठं बूया । चलणीहारेसु जाणं णट्ठं बूया । पुण्णेषु आहारं णट्ठं बूया । तिक्खेसु सत्थं णट्ठं बूया । अंतेसु उवकरणं णट्ठं बूया । तंबेसु पीतकेसु य सुवण्णकं णट्ठं बूया । बुद्धीरमणेषु विज्जासत्थगतं णट्ठं बूया । उत्तमेसु उत्तमं णट्ठं बूया । मज्झिमेसु मज्झिमं णट्ठं बूया । जहण्णेषु जहण्णं णट्ठं बूया । 30

तत्थ णट्ठेसु पुव्वाधारिते अब्भंतरणिवेसणंसि कंसि देसंसि भायणंसि ? ति । तत्थ थूलंसि अरंजरंसि उट्ठिआगतं वा पल्लगतं वा बूया । उवथूलेसु कुड्ढगतं वा किज्जरगतं वा उखलिकागतं वा बूया । णातिथूलेसु णातिकसेसु

१ 'परित्ते हं० त० विना ॥ २ 'रमेरको अरिट्ठो वि अरिट्ठिका' हं० त० विना ॥ ३ 'मयं वअइट्ठिक' हं० त० ॥ ४ अच्छादो हं० त० विना ॥ ५ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ६-७-८ अच्छादो हं० त० ॥ ९ वण्णेषु वत्थं हं० त० ॥

घडभायणगतं बूया । कसेसु खडुभायणगतं [बूया] । पुधूसु पेलितागतं बूया । आसन्नेसु पेलिकागतं वा करंडागतं वा बूया । चतुरस्सेसु सयणा-५५सणगतं बूया । उद्धंभागेसु मालगतं बूया । अक्खिसु वातपाणगतं बूया चम्मकोसगतं वा बूया । णिडाले कुडुगतं बूया । कण्णछिद्देसु बिलगतं बूया । णासायं णालीगतं बूया । गीवाय थंभगतं बूया । भमुहासु अंतरियागतं बूया । गंडेसु पस्संतरियागतं बूया । थणंतरेसु कोट्टागारगतं बूया । उदरे भत्तघरगतं बूया । हियए ५ वासघरगतं बूया । तंबेसु अरस्सगतं बूया । पसण्णेसु पडिकम्मघरगतं बूया । गहणोवगहणेसु असोयवणियागतं बूया । पोर्सिसे आवुपधगतं पणालीगतं वा बूया । णाभीयं उदकचारगतं बूया । अवाणे वच्चाडकगतं बूया । उवहुतेसु अरिडुगहणगतं बूया । सामेसु चित्तगिहगतं [बूया] । सुकेसु सिरिधरगतं बूया । कण्हेसु अगिहोत्तगतं बूया । णिद्धेसु ण्हाणघरगतं बूया । उत्तमेसु पुस्सघरगतं बूया । ६ जहण्णेसु दासिघरगतं बूया । ७ इति वेसणगतं णट्टं ति बूया ।

10 तत्थ णगरे पुव्वाधारिते मत्थए अंतोपुरगतं बूया । णिडाले अंतोपुरगतं बूया । णासायं भुमंतरे वा तिए बूया । पोर्सिसे सिंघाडगतं बूया । उरे पादतल-करतलेसु वा चउक्कगतं बूया । दीहेसु रायपधगतं बूया । जुत्तप्पमाणदीहेसु महारच्छगतं बूया । किंचिदीहेसु उस्साहियागतं बूया । उद्धंभागेसु पासादगतं वा गोपुरगतं वा अट्टालगतं वा पकंठागतं वा बूया । तत्थ अब्भंतरेसु पासादगतं बूया । मुदितेसु तोरणगतं बूया । संखतेसु धण्णगतं बूया । णिग्गमातिग्गमेसु बारगतं बूया । दढेसु पव्वतगतं बूया । उवहुतेसु वासुरुलगतं बूया । मतेसु थूभगतं वा एलुयगतं वा बूया, 15 मुदितसाधारथूभगतं वा बूया । दीहेसु पणालीगतं बूया । अधोपभागेसु पवातगतं वा वप्पगतं वा तलाकगतं वा दहफलिहागतं वा णदीगतं वा बूया । तत्थ दीहेसु णिण्णेसु णदीगतं वा फलिहागतं वा बूया । णिद्धेसु णदीगतं बूया । संखतेसु फलिहागतं बूया । चतुरस्सेसु बहिगतं बूया । चंदाणतेसु तलागतं बूया । उस्सितेसु अट्टालगतं बूया । दीहेसु परिक्खेवेसु मंडलेसु य पाकारगतं बूया । थलेसु वयगतं बूया । णिण्णेसु परिखागतं बूया ।

तत्थ बज्झगतो णगरस्स ति पुव्वाधारिते उद्धंभागेसु धयगतं वा ८ तोरणगतं वा ९ देवागारगतं वा वुखगतं 20 वा पव्वतगतं वा मालगतं वा थंभगतं वा एलुगतं वा पालीगतं वा बूया । तत्थ मुदितेसु तोरणगतं बूया । उत्तमेसु देवागारगतं बूया । मूलजोणीगतेसु रुक्खगतं बूया । वट्टेसु तलागतं बूया । तणूसु साधारणेसु चउक्केसु य वप्पगतं बूया । उपगगहणेसु आरामगतं बूया । आगासेसु आगासणिधितं ति बूया । मतेसु उवहुतेसु य सुसाणे णिधितं बूया । तुच्छेसु सुक्करुक्खगतं वा सुक्कतलागतं वा बूया । वायव्वेसु वच्चभूमीयं णिधितं ति बूया, मंडलभूमीगतं वा बूया, जतो वाओ वायति तम्मि देसे निधितं ति बूया । आपुणेयेसु पवा-उदुपाणं वा णदी-तलागं वा बूया । अग्गेयेसु 25 दडुवणं वा उट्टियपट्टगं वा बूया, जतो वा आदिच्चो तम्मि देसे निधितं ति बूया । जण्णेयेसु जण्णवाडगतं वा देवायतणगतं वा बूया, जतो वा तुसरिद्धो (तुरियसद्धो) तम्मि देसे निधितं ति बूया । तिक्खेसु संगामभूमीयं वा निधितं ति बूया, जतो वा वाधितो तम्मि देसे निधितं ति बूया । सहेयेसु सुतप्पवत्तिकं णट्टं ति बूया । दंसणीयेसु दिट्ठचेट्टं ति बूया ।

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाए अंगविज्जाए णट्टकोसयो णामज्झातो

30

सत्तावण्णो वक्खातो भवति ॥ ५७ ॥ छ ॥

१ पासिसेज्जादुपवगवं हं० त० ॥ २ आवणे वच्चाडकं हं० त० । अवाणे वाघाडकं सं ३ पु० सि० ॥ ३ सु स्सतुस्सघरं हं० त० ॥ ४ हस्तचिह्नान्तगतं पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ५ भुमुत्तरे हं० त० ॥ ६ सु सुवण्णं हं० त० ॥ ७ ८ ९ एतच्चिह्नान्तगतं पदं हं० त० नास्ति ॥ ८ तुखं हं० त० ॥ ९ सुक्कएलगगतं हं० त० विना ॥ १० वा जो वां हं० त० विना ॥ ११ उट्टियपट्टगतं वा हं० त० विना ॥ १२ वा पुरिसद्धो हं० त० विना ॥ १३ सतं हं० त० विना ॥

[अद्ववण्णासइमो चितितज्झाओ]

णमो भगवतो जसवतो महापुरिसस्स वड्डमाणस्स । अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाए अंगविज्जाए चितितं
णामाज्झातो । तं खलु भो ! तमणुवक्खायिस्सामि । तं जधा—तत्थ चितितमचितितं ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति ।
तत्थ परिता—ऽणंतप्पमाणोपदेसा अणंतमपारगमसंजुतं चितितमुदाहरिस्सामि । तत्थ अब्भंतरामासे ८ दंडामासे ९
णिद्धामासे सुद्धामासे पुण्णामधेज्जामासे सव्वआहारगते एक्कगणयण—माणसे सुप्पणिहिर्तिदिय—अवत्थितसरीरमणोवयारगते 5
चेव चितितं ति बूया । तत्थ बज्झामासे कण्हामासे किलिद्धामासे णपुंसकामासे सव्वणीहारगते अणेकगणयणमाणसे
उच्चावय—चल—इंगितागार—अणवत्थितसरीरमणोपयारे ण चितितं ति बूया ।

तत्थ दुविधा चिता पवत्तति संगहतो तिविधा—जीवचित्ता अज्जीवचित्ता तदुभयचित्ति । जीवचित्ता दुविधा—
संसारसमावण्णजीवचित्ता य असंसारसमावण्णजीवचित्ता य । तत्थ सव्वजीवगते सव्वजीवआमासगते जीवणामसद्—
रूवपादुब्भावे चलामासेसु य जीवं चितितं बूया । तत्थ चितिते पुव्वधारिते सव्वअज्जीवगते अज्जीवआमासेसु 10
अज्जीवणामसद्—रूवपादुब्भावेसु अज्जीवं चितितं बूया । एतेसु चेव वामिस्सेसु आमास—सद्पादुब्भावेसु जीवा—
ऽजीवसमायुत्तं चितितं बूया ।

तत्थ जीवचित्तायं जीवचित्तं दुविधमाधारये—संसारसमावण्णजीवचित्ता चेव असंसारसमावण्णजीवचित्ता चेव ।
तत्थ उत्तमेसु उम्मज्जितेसु सव्वबंध—मोक्खेसु सव्वनिगमेसु सव्वमुव(त्त—)सिद्ध—अंतगड—तिण्ण—सुद्धपादुब्भावेसु चेव
असंसारसमावण्णं जीवं चितितं ति बूया । तत्थ सव्वआहारेसु सव्वबंधेसु सव्वसंजोगेसु सव्वकामभोगेसु सव्वकामभोग— 15
सद्पादुब्भावेसु जायणविबुद्धि—पडिभोगकम्म—चेट्ठ—आवाह—विवाह—चोत्तोपणयण—तिधि—उस्सव—समाय—जण्णएवमादिय—
लोइयसद्—रूवपादुब्भावेसु संसारसमावण्णं जीवं चितितं ति बूया । तत्थ संसारसमावण्णजीवचित्तं चउव्विधमाधारयितव्वं
भवति—दिव्वं माणुसं तिरिक्खजोणिगतं णेइयसंसारसमावण्णजीवं चितितं चेति ।

तत्थ सव्वेसु उड्डुभागेसु एवं वाकरणे वंदिते पूयिते संथुते अब्भुत्थिते उल्लोगिते पादुकोपाहणामुंचणे छत्त—
पडागा—वासण—कडग—लोमहत्य—वीयणि—चामरपाहाणगते २ सव्वदेवगते ३ सव्वदेवायतणगते सेसाय गहणे उस्सय— 20
समाय—अब्भुदय—उदु—पव्व—देवपादुब्भावे देवणामकम्मोपचारसद्—रूवपादुब्भावे चेव देवं चितितं बूया । तत्थ सव्व—
सकुणगते सुवण्णं चितितं बूया सुवण्णित्थि वा । थीणामेसु उड्डुभागेसु य धणगते ववहारगते य वेस्समणं चितितं बूया ।
दंतेसु वेण्हं चितितं बूया । सव्वजोधपडिरूवगते य गो—माहिस—अय—एलएसु रुद्देसु सिवं चितितं बूया । सउणगते
वालेयेसु कुमारोवकरणे चेव तस्सद्—रूवपादुब्भावे चेव खंदं चितितं बूया । तरुणकच्छाएकगए असिपडिरूवे य विसाहं
चितितं ति बूया । तत्थ पुण्णामेसु देवेसु बंधा बलदेवो वासुदेवो पज्जुण्णो वेस्समणो खंदो विसाहो पव्वतो णागो 25
सुवण्णो एवमादीया उवलद्धव्वा भवंति । थीणामेसु णदी अलणा अज्जा अइराणी माउया सउणी एकाणंसा सिरी
बुद्धी मैधा किन्ती सरस्सती एवमादीयाओ उवलद्धव्वाओ भवंति । तत्थ उण्हेसु अग्गि चितितं बूया अग्गिघरं वा ।
णिद्धेसु ४ णागं णागघरं वा, थीणामेसु णिद्धेसु ५ णागि चितितं बूया । दारुणेसु रक्खसं, थीणामेसु दारुणेसु
रक्खसि चितितं बूया । विगतभयं कंदप्प—भय—हस्सेसु [असुरं, थीणामेसु] असुरकण्णा चितितं बूया । सव्वगंधव्वगते
तंतोसरगते तलतालघोसेसु य गंधव्वं चितितं ति बूया, थीणामेसु गंधव्वी ६ बूया ७ । मधुरघोसेसु पक्खिसु किंपुरिसं 30
बूया, थीणामेसु किंपुरिसकण्णं बूया । सुयीसु पुण्णामेसु य जक्खो, थीणामेसु य [जक्खी बूया ।] मणोणयणाभिरामेसु

१ ८ ९ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ २ 'व्वयुत्तसिद्ध' हं० त० विना ॥ ३ 'कामसद्भोगपादु' हं० त० ॥ ४ 'यण्णजण्ण' हं० त० विना ॥ ५ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ६ खज्जा अइ' हं० त० ।
अज्जा खइ' सं ३ पु० सि० ॥ ७ मित्ता हं० त० ॥ ८-९ ८ ९ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥

देवं वेमाणितं चितितं बूया, थीणामासु अच्छरसाओ मूलजोणीगतेसु ॐ अज्जोपगते वेति अज्जाधित्थं ॐ चितितं बूया, थीणामेसु देवीसु वुक्खाधित्था चितितं ति बूया । धातुजोणीगए पव्वतदेवतं चितितं ति बूया, थीणामेसु गिरिकुमारि बूया । णिद्धेसु परिकखेवेसु य समुदं वा समुदकुमारं वा चितितं बूया, थीणामेसु समुदकुमारि बूया । महापकासेसु पुधूसु परिकखेवेसु य दीवकुमारं चितितं बूया, थीणामेसु दीवकुमारि चितितं बूया । चतुप्पदगते वग्घ-
 5 सीह-हत्थि-वसभपडिमाधित्थं चितितं बूया । दीहेसु उवणिद्धेसु य णागं चितितं बूया । मुद्धणि बंभं चितितं । उद्धभागेसु धणगते य वेसमणो । सप्पभेसु चंदा-SSदिच्चा गह-णकखत्त-तारागणे चितिते बूया । ॐ थैलेसु मारुतं चितियं बूया । ॐ थीणामेसु वातकण्णाओ चितिताओ बूया । मतेसु जमं बूया । आपुणेयेसु उद्धभागेसु सुक्खवण्णपडिरूवगते य वरुणं चितितं बूया । सोम्मेसु सव्वसोम्मगते य सव्वसोम्मपादुब्भावेसु चेव सोमं चितितं बूया । इस्सरेसु इंदं बूया । पुधूसु पुधवि बूया । विवेक्खितेसु दिसाकुमारीओ बूया, दिसाओ वा बूया । इट्ठेसु सिरिं चितितं
 10 बूया । बुद्धीरमणेसु मेधं बुद्धि सत्थंधिवुत्थाओ चितिताओ बूया । विमुत्तेसु णिप्परिगहेसु य मोक्खं विज्जासत्थाहिवुत्थाओ चितिताओ बूया । अब्भंतरेसु कुलदेवताओ बूया । दहेसु वत्थुदेवताणि चितियाणि बूया । दुग्गंधेसु वच्चदेवताणि बूया । मतेसु सुसाणदेवताणि बूया । पच्छिमेसु पितुदेवताणि बूया । माणुसदिव्वसाधारणेसु विज्जाधरे विज्जासिद्धे वा चारणे चितिते बूया । थीणामेसु दिव्वसाधारणेसु माणुसेसु विज्जाधरीओ चितिताओ बूया । बुद्धिरमणेसु दिव्वसाधारणेसु सव्वविज्जादेवताओ बूया । थीणामेसु विज्जादेवताओ बूया । पुण्णामेसु देवविज्जाहिवुत्थे चितिते बूया । दिव्वेसु सुरेसु
 15 य महरिसयो बूया । एवमादीदेवताहिं जधुत्ताहिं देवताज्जाये उवलद्धीहिं देवतानामेहिं देवसंठाणेहिं देवआभरण-पहरण-कम्मोवयारपादुब्भावेहिं आमास-सद्-रूवपादुब्भावेहिं जधा देवताज्जाये उवदिट्ठं तधा णातव्वं भवति । इति देवतागता चिता वक्खाता भवति ।

तत्थ उज्जुकामासे उज्जुकविलोइते उज्जुपेक्खिते उज्जुभावगते सव्वमाणुस्सगते णाम-सद्-रूव-उवकरण-पादुब्भावे य मणुस्सजोणीगतं चितितं बूया । तत्थ मणुस्सेसु पुव्वाधारितेसु मणुस्सेसु तिविधमाधारये-थिओ पुरिसे
 20 णपुंसके ति । तत्थ थीणामेसु थिओ चितियाओ ति बूया । पुण्णामेसु पुरिसे चितिते बूया । णपुंसकेसु णपुंसके चितिते बूया । तत्थ णपुंसके पुव्वाधारिते थीणामेसु इस्सापंडका विण्णेया । पुण्णामेसु आसेक्का विण्णेया । णपुंसकेसु अच्चंतोपहता आदिपंडका विण्णेया । वामदक्खिणेसु पक्खापक्खिणो विण्णेया । तुच्छेसु अणुप्पवी विण्णेया चितिता भवति । इति णपुंसकजोणी वक्खाता भवति । तत्थ थी-पुरिस-णपुंसकोपलद्धीयं उवलद्धायं बंभणो खत्तिओ वेस्सो सुद्धे ति । तत्थ सिरोमुहामासे बंभणो, बाहूसु खत्तिओ, पट्टोदरे वेस्सो, पाद-जंघेसु सुद्धे उवलद्धव्वा भवति । तत्थ
 25 वये पुव्वाधारिते पादजंघे बालो, पट्टोदरे तरुणो, बाहूसु अंतरंसे य मज्झिमवयो, सिरोमुहामासे महव्वयो चितिते ति महव्वय-मज्झिमवय-बालेयसाधारणोपलद्धी वा वया उवलद्धव्वा भवति । तत्थ वण्णे पुव्वाधारिते अवदातेसु अवदातं थी-पुरिस-णपुंसकं बूया, सामेसु सामं बूया, कण्हेसु कण्हं बूया । अज्जो पेस्सो ति पुव्वमाधारिते तत्थ उद्धं णाभीयं अज्जप्पाणं चितितं ति बूया । अधो णाभीयं उद्धं जाणूणं अज्जत्तं पेस्सं बूया । पादजंघेसु पेस्समेव बूया । पादेसु अधत्थ पेस्सपेस्सं दासं चितितं बूया । तत्थ अज्जे पाणे पुव्वाधारिते पुणरवि ०८ गुरुजोणी १० तुल्लजोणी पच्चवरजोणि ति
 30 तिविधमाधारयितव्वं भवति । तत्थ उवरिद्धा गीवाय अधो भुमकाणं गुरुजोणि, अतो उद्धं गुरुणो गुरु चितितो ति बूया । अधत्था गीवाय उद्धं कडीय तुल्लजोणीयं बूया । अधत्था कडीयं पच्चवरजोणीयं अज्जपाणं चितितं ति बूया । तत्थ समणय-संबद्धे पुव्वाधारिते वामेसु पुण्णामेसु थीसमणयं पुरिसं चितितं ति बूया । थीणामेसु पुरिससमणयं इत्थि

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २ 'मारिं चितितं बू' हं० त० विना ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ४ सोमेसु हं० त० ॥ ५ दित्तेसु सुरेसु हं० त० विना ॥ ६ 'मणुस्सगते' हं० त० ॥ ७ 'लद्धव्वायं' हं० त० विना ॥ ८ 'व्वा इच्च' ति । तत्थ हं० त० ॥ ९ अच्चंतं हं० त० ॥ १० ०८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ११ 'त्था गीवाय कडी' हं० त० ॥

चित्तिं ति बूया । दक्खिणेसु पुण्णामेसु पुरिससमण्यं पुरिसमेव चित्तिं ति बूया । पुरिसणामा पुरिसणामेसु पवत्तेसु उद्धंभागेसु पितरं चित्तिं बूया । पुरिसणामा पुरिसणामेसु पवत्तेसु समभागेसु भायरं बूया । पुरिसणामा पुरिसणामेसु पवत्तेसु अधोभागेसु पुत्तं बूया । पुरिसणामा थीणामेसु पवत्तेसु उद्धंभागेसु मातरं बूया । पुरिसणामा थीणामेसु पवत्तेसु समभागेसु भगिणिं बूया । पुरिसणामा थीणामेसु पवत्तेसु उद्धंभागेसु दुहितरं बूया । थीणामा थीणामेसु पवत्तेसु उद्धंभागेसु थीमातरं बूया । थीसमभागेसु थिया भगिणिं चित्तिं बूया । थीणामा थीणामेसु पवत्तेसु अधोभागेसु थिया दुहितरं 5 बूया । थीणामा पुण्णामेसु पवत्तेसु अधोभागेसु जायामातरं बूया । थीणामेसु पुण्णामेसु पवत्तेसु समभागेसु भगिणिपतिं बूया । थीणामा पुण्णामेसु पवत्तेसु ८ अधोभागेसु ९ उद्धंगीवाय ससुरं बूया । थीसंसिद्धेसु पुणो पुणो संलि बूया । थीसंसिद्धेसु पुण्णामेसु संलि बूया । अब्भंतरेसु अब्भंतरं बंधवं बूया । बाहिरब्भंतरेसु मित्तं बूया । बाहिरबाहिरेसु जणं बूया । तत्थ मणुस्सजोणीवण्णविसेसेहिं थी-पुरिस-णपुंसकादेसेहिं अज्ज-पेस्सोवलद्धीहिं संठाण-वण्ण-वयप्पमाणेहिं सम्मण्य-संबद्धगवेसणाहिं गुरुजोणि-तुल्लजोणी-पच्चंवरजोणीहिं उवलद्धीहिं बज्झ-5 अब्भंतरपवियएहिं एव 10 जधुत्ताहिं आमास-सद्-रूवपादुब्भावोपलद्धीहिं य णट्टकोसए उवदिट्ठतेहिं उवलद्धिविचारविसेसेहिं माणुसजोणी समणुगंतव्वा भवति । इति मणुस्सजोणी वक्खाता भवति ।

तत्थ तिरियामासे तिरियविलोइते तिरियगते सव्वतिरिक्खजोणीमते उवकरणे तिरिक्खजोणिउवकरणे तिरिक्ख-जोणीसद्गते तिरिक्खजोणीणामोदीरणे तिरिक्खजोणीमए उवकरणे थी-पुरिससद्-रूवपादुब्भावे एवंविधे सद्-रूवपादुब्भावे तिरिक्खजोणिं बूया । तत्थ तिरिक्खजोणिसंगहेण दुविधा-तसगता थावरगता चेव । तत्थ तसोवलद्धीय तसगता विण्णेया । 15 थावरोवलद्धीय थावरा विण्णेया । सा वित्थरतो छव्विधा आधारयितव्वा भवति । तं जधा-पक्खिगता १ चतुप्पदगता २ परिसप्पगता ३ उदकचरगता ४ कीड-पयंगक-किविल्लकगता चेव ५ एकदियथावरकायगता ६ चेति । तत्थ उद्धंगीवाय सिरोमुहामासे उल्लोइते उद्धंभागेसु सव्वसगुणगते सव्वसउणमते उवकरणे सव्वसउणोवकरणे सउणोपकरणे सउणसद्गते सउणणामधेज्जोदीरणेसु सउणणामधेज्जे थी-पुरिससद्-दव्वोवकरणपादुब्भावे एवंविधे पेक्खितामासे सद्-रूवपादुब्भावेसु पक्खी विण्णेया । ते दुविधा आधारयितव्वा-थलयरा जलयरा चेति, अधवा जलजा थलजा चेति । तत्थ आपुणेयेसु 20 विण्णेसु य जलजा पक्खि विण्णेया चित्तिं ति बूया । लुक्खेसु थलेसु थलजेसु य थलजा पक्खी चित्तिं ति बूया । तत्थ सेतेसु हंसा सेडिका य विण्णेया । पेण्हूसु चक्कवा-चक्कवाकयीएसु य विण्णेया । चित्तेसु आडा टेट्टिवालको णवूहका णदीसुत्तका कारंडवा य विण्णेया । कालेसु काकमज्जुका कातंबा णदीकुक्कुडीको विण्णेया । आरुणेसु उक्कोसा कोचा गीवा रोहिणिका समुद्दकाक ति विण्णेया । ७ फेरुसेसु बक-हंस-चक्कवाका विण्णेया । ८ अवसेसा जलजा सगुणो षडिरूवआहारओ य विण्णेया । मंसरुधिरभोयीसु मंसरुधिरभोयी चित्तिं ति । मुद्धं चूलेसु कातंबा 25 रोहिणिका बलाक ति विण्णेया । थीणामेसु सेडिका रोहिणिका णदीकुक्कुडिका आडाओ टिट्ठिभीओ ति विण्णेया । तत्थ कायवंतसेसु कुररा पारिप्पवा उक्कोसा रोहिणिका वेति विण्णेया । मज्झिमकायेसु हंसा चक्कवाका विण्णेया । मज्झिमाणंतरकायेसु आडा सेडिका णदीकुक्कुडिकाओ कारंडवा चेति विण्णेया । पच्चंवरकायेसु टेट्टिवालको णवूहका णदीपुत्तका एवमादयो विण्णेया । अणुलोम-पडिलोमेसु गतेसु उद्धंभागेसु अधोभागेसु य उद्धंरायिसु उद्धंरायी विण्णेया । सेतेसु सेता, एवमादीहिं वण्णेहिं सुवण्णा विण्णेया । तत्थ अक्खतेसु सव्वेसु अतिमासेसु वा आसीविसा विण्णेया । 30 तिण्हेसु तिण्हविसा विण्णेया । तिण्हपच्चावत्तितेसु मिदुसाधारणेसु मंदविसा विण्णेया । वापण्णेसु अविसा चित्तेसि ति बूया । ते दुविधा-मंसरुधिरभोजी अमंसरुधिरभोजी चेव । इति जलजा पक्खिणो जलचर ति विण्णेया ।

१ 'सु अहोभा' हं० त० ॥ २ थीनामयरं बू' हं० त० ॥ ३ 'द्धीहिं वयण' हं० त० ॥ ४ 'णीगते सि० ॥ ५ पंडूसु सं ३ पु० । पंडरेसु सि० ॥ ६ 'सु चक्कवाकी पीतेसु य हं० त० विना ॥ ७ अडा हं० त० विना ॥ ८ 'डा डेट्टिवा' हं० त० ॥ ९ हस्तचिह्नान्तगतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ १० 'सु देट्टिवा' हं० त० विना ॥ ११ अतिसामेसु हं० त० ॥ १२ तिण्हेसु प' हं० त० ॥

तत्थ थलजा पक्खी तिविधा आधारयितव्वा—गम्मा रण्णा गम्मारण्णा चेति । तत्थ अब्भंतरामासे गामेसु चैव पादुब्भावेसु गम्मा विण्णेया । बाहिरामासेसु आरण्णेसु य पादुब्भावेसु आरण्णा विण्णेया । बाहिरब्भंतरेसु गम्मारण्ण—पादुब्भावेसु चैव गम्मारण्णा पक्खी चित्ति य त्ति विण्णेया । थीणामेसु थीणामा, पुण्णामेसु पुण्णामा, णपुंसकेसु णपुंसका विण्णेया । सेतेसु सेता, रतेसु रता, पीतेसु पीता, णीलेसु णीला, कण्हेसु कण्हा, आरुणेसु आरुणा, पंडुसु पंडू, 5 कविलेसु कविला, फरुसेसु फरुसा, चित्तेसु चित्ता, जधाप(व)ण्णपडिरूवतो वण्णे आधारिते पक्खिणो चित्ति त्ति बूया । कायवंतेसु कायवंता मयूरा कंका छिण्णालिगाओ सुवण्णाओ चेति, एवमादीका कायवंतेसु चित्ति त्ति बूया । तत्थ मज्झिमकायेसु गद्धा वीरल्ला सेणा उलूका चेति एवमादयो विण्णेया । मज्झिमाणंतरकायेसु सालका कपोता वायसा सुका कोकिला तित्तिरा चैव विण्णेया । पच्चवरकायेसु वातिका तेल्लपातिका सगुणीका परसउणिका चम्मडिला एवमादी विण्णेया । एवं चतुर्विधकायो पडिरूवतो आमासेहिं य विण्णेया । उरसरगते पाणगतेसु य ०८ सव्वसउणा १० 10 विण्णेया । चित्तेसु तित्तिरा चित्तकपोतका वणकुक्कुडा वैहकाओ य विण्णेया । घोसवंतेसु घोसवंता विण्णेया । दारुणेसु मंसरुधिरभोयी विण्णेया । अणूसु धण्णभोयी विण्णेया । अघोसवंतेसु अघोसवंता विण्णेया । मधुररुतेसु मधुररुता । कटुकरुतेसु कटुकरुता विण्णेया । तंथा अव्वत्तघोसेसु अव्वत्तघोसा चित्ति त्ति विण्णेया । एवमादीहिं संठाण—वण्ण—थी—पुरिस—णपुंसकोपलद्धीहिं आहार—घोस—पडिरूव—सद्दपादुब्भावेहिं जलया थलया य पक्खिणो आधारयित्ता आधारयित्ता जधुताहिं उवलद्धीहिं आमास—सद्द—पडिरूवपादुब्भावेहिं उवलद्धव्वा भवंति । इति पक्खिगतो जलय—थलयपक्खिसमायुत्ता 15 दुविधा चित्ता वक्खाता जीवचित्ता भवतीति ।

तत्थ चतुप्पदे चउरस्सेसु य चउप्पदमए उवकरणे चतुप्पदोवकरणे चतुप्पदसद्दगते चतुप्पदणामोदीरणे चतुप्पदणामधेज्जे थी—पुरिसउवकरणगते एवंविधपक्खित्तामासे सद्द—रस—रूवपादुब्भावे चतुप्पदं चित्ति त्ति बूया । ते दुविधा आधारये—पज्जा जलचरा चैव, अधवा थलचरा जलचरा चेति । तत्थ सव्वआपुणेयेसु सव्वजलेसु जलचरेसु य जलचरा विण्णेया । तं जधा—सुंसुमारा उदककच्छभ त्ति मच्छगये विण्णेया भवंति । तत्थ पुणरवि चतुप्पदा 20 आधारयितव्वा भवंति—गम्मा अरण्णा गम्मारण्णा चेति । तत्थ अब्भंतरेसु सव्वगम्म ०८ गते चैव गम्मा १० विण्णेया । बाहिरामासेसु सव्वआरण्णगतपादुब्भावेसु चैव आरण्णा चतुप्पदा चित्ति त्ति बूया । अब्भितरबाहिरेसु गम्मारण्णेसु तस्सद्द—रूवपादुब्भावे य गम्मारण्णा विण्णेया । तत्थ गो—महिस—अयेलकोट्ट—खर—सुणका चैव एवमादी गम्मा विण्णेया । सीह—वग्घ—तरच्छ—उच्छ—भल्ल—दीविक—गैज—चमरीओ खग्गा चेति विण्णेया, एवमादयो आरण्णा विण्णेया । तत्थ जे केयि आरण्णा भुत्ता गम्मा भवंति एते गम्मारण्णा भवंति । तत्थ हत्थी अस्सा वराहा वगा सियाला मुंगुसा णउला 25 उंदुरा कालका पयला कातोदूका सरंता घरघुला चेति एवमादयो गम्मारण्णा विण्णेया । तत्थ चउप्पदा पुणरवि दुविहा आधारयितव्वा भवंति—चउप्पदा चैव परिसप्पा चैव । तत्थ चउप्पदगए सव्वउद्धंभागेसु सव्वपरिसप्पचउप्पदगते चैव परिसप्पचउप्पदा विण्णेया । अजगरं असालिका गोधा तोडुका सरंता मुंगुसा णकुला पयलाका अहिणुका घडोपला उंदुरा चेति ।

तत्थ पुणरवि तिविधा चतुप्पदा आधारयितव्वा—थलचरा वुक्खचरा बिलसाइ त्ति । तत्थ पत्थिएसु 30 ०८ थलेसु १० थलचरेसु य थलचरा चित्ति त्ति बूया । उद्धंभागेसु मूलजोणीगते चैव वुक्खचरा चतुप्पदा चित्ति त्ति बूया । सव्वछिद्देसु अधोभागेसु य बिलसायी विण्णेया । तत्थ वुक्खचरा विराला उंदुरा खालका घरपूपला अहिणुका तोडुका य पचलाका वेति एवमादयो चित्तिता विण्णेया भवंति । तत्थ बिलासया दुविधा—सेलबिलासया भूमिबिलासया

१ छिण्णालिं हं० त० विना ॥ २ सुका काका को० हं० त० ॥ ३ चम्मट्टि एव० हं० त० विना ॥ ४ उरसर० सं ३ पु० । उवसर० सि० ॥ ५ ०८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ६ वैहका० हं० त० ॥ ७ अहातच्चंतयो० हं० त० ॥ ८ अव्वत्तघो० हं० त० ॥ ९ गवज (गवल) चम० हं० त० विना ॥ १० रा कापयला काओडुका सरंता घर० हं० त० ॥ ११ सरंडा मुं० हं० त० ॥ १२ उदुंबरा हं० त० ॥ १३—१४ तुखचरा हं० त० ॥ १५ थालका हं० त० ॥

चेव । तत्थ ददेसु अधोभागेसु सेलबिलासया विण्णेया । थूलेसु भूमिबिलासया विण्णेया । तत्थ सेलबिलासया दीहवग्धा अच्छभल्ला तरच्छ सालिभा^१ सेधका दीपिका विलालु अजिणविलाला सलभा गोधा उंदुरा अयकरा वेति विण्णेया भवन्ति । तत्थ भूमिबिलासयेसु लोपका णउला गोधा अहिणूका तोडुका तोडका चेति एवमादयो विण्णेया । माणुसतिरिक्ख-जोणीसाधारणेसु वाणरा णरसीहा अस्सपूतणा वेति विण्णेया । तत्थ वायुसु चलेसु साहागते अणवत्थियसभावगते य वाणरा विण्णेया । सारवंतेसु सूरुसु य णरसीहा । दारुणेसु तिणादेसु य अस्सपूतणा विण्णेया । असमूलकायवंतेसु 5 असालिका ८८ अयकरा ८९ हत्थिणो एवमादयो चित्तिता विण्णेया । मज्झिमकायेसु सीह-वग्घ-अच्छभल्ला-तरच्छ-णीलमिग-गयगोकण्णा गो-महिस-खरोट्टा य एवमादयो विण्णेया । मज्झिमाणंतरकायेसु दीपिका-तरच्छ-कोच्च-वग-मग-अयेलकमिति एवमादयो विण्णेया भवन्ति । पच्चवरकायेसु सुणग-सिगात्त-मज्जास्-सस-मंगुस-णउल एवमादी चित्तिता विण्णेया । अणूसु उंदुरा खालका तोडुका अहिणूका वेति एवमादयो विण्णेया । गो-महिस-खरोट्टा-अस्सा हत्थि वेति वाहणेसु विण्णेया । तणादेहि तणादा, ९० मंस-रुधिरभोयिसु ९१ मंसरुधिरभोयी विण्णेया । सेतेसु 10 सेता, पीतेसु पीता, रत्तेसु रत्ता, णीलेसु णीला, कण्हेसु कण्हा, पुंडेसु पुंडा, पंडूहि पंडू, आरण्णेहि आरण्णा, चित्तेहि चित्ता, फरुसेहि फरुसा, वण्णतो आधारिते चित्तिता विण्णेया भवन्ति । पुण्णामेहि पुण्णामा, थीणामेहि थीणामा, णपुंसकेहि णपुंसका, मिधुणचरेहि मिधुणचरा, गणचरेहि गणचरा विण्णेया, एकचरेहि एकचरा चतुप्पदा पक्खी वा । एवमादी पज्जएहि आधारयित्ता आधारयित्ता सव्वमेव समणुगंतव्वं भवति ।

तत्थ परिसप्पजोणी ति विहा-दव्वीकरा मंडलिणो रायिमंता चेति संगहेण आधारयितव्वं भवतीति । तत्थ 15 तिरिच्छाणराइणो रत्तराइणो सेत-पीत-चित्त-सेवालका कण्हा अणज्जपुप्फवण्णगा पंचाणुरत्ता वेति वित्थारतो वण्णविसेसेहि आधारयितव्वा भवन्ति । तत्थ आयतेसु वायव्वेसु य दव्वीकरा चित्तिता विण्णेया । मंडलेसु मंडलिणो विण्णेया । तिरियामासे तिरियविलोगिते चेव तिरिच्छाणराइणो चित्तिता विण्णेया । अणुलोम-पडिलोमितेसु गत्तेसु उद्धभागेसु य उद्धराइणो विण्णेया । सेतादीका वण्णसमायोगा य सवण्णपडिरूवेसु परिसप्पाण वण्णो आधारिते विण्णेया चित्तिता भवन्तीति । तत्थ अक्खयेसु सव्वेसु अतिमासेसु वा आसीविसा बूया । तिण्हेसु तिण्हविसा विण्णेया । तिण्हेसु पच्चो- 20 वतियेसु मिदुसाधारणेसु वातंदविसा बूया । पण्णेसु णिव्विसे बूया । ते दुविधा आधारयितव्वा भवन्ति-थलजा जलजा चेति । तत्थ आपुणेयेसु जलजा विण्णेया । तत्थ कद्दमग-हित्थिय-कच्छभक-आणावचरणिग-पटुमा-धिगणाग-वमारक-राजमहोरक-जलचर-सवलाहिका कुक्कुडा देवपुत्तका समाणाहि ए ति जलजेसु चोदिता । तत्थ अंतलिक्खपरिसप्पा चलेसु उद्धभागेसु विण्णेया भवन्ति तलिका पगती । अवसेसा थलचरा । ते चतुप्पदा अपदा बहुपदा चेति पुणरवि आधारयितव्वं भवति । तत्थ चतुप्पदेसु चतुरस्सेसु चतुप्पदमदे उवकरणे चउप्पदोवकरणे चतुप्पदसदोदीरणे 25 चउप्पदणामोदीरणे चतुप्पदणामधेज्जे थी-पुरिसउवकरणगते चेव एवंविधे पेक्खितामासे सह-रूवपादुब्भावे चतुप्पदपरिसप्पं चित्तितं बूया, अयकर-तोडुका-गोधा-सरंट-अहिणूका चेति । तत्थ बहुपदेहि केस-मंसु-णहसमामासेसु चेव बहुपदसह-पडिरूवपादुब्भावेसु चेव बहुपदा विण्णेया, गोम्मि सतपदि इंदगोविका चसणिका वेति एवमादिणो भवन्ति । अवसेसा दीहसमामासेसु विण्णेया भवन्ति । थीणामेसु थीणामा, पुण्णामेसु पुण्णामा, णपुंसकेसु णपुंसका । संठाण-वण्णबहुविसं आहार-विधास्-जोणिकादीकाणि य जधुताहि उवलद्धीहि आधारयित्ता परिसप्पा उवलद्धव्वा भवन्ति । इति परिसप्पजोणीगते 30 चित्ता वक्खाता भवति ।

१ भा सेवका हं० त० ॥ २ वाडका हं० त० ॥ ३ स्सा वेति हं० त० ॥ ४ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ५ पण्डूहि पण्डू, आ हं० त० ॥ ६ अवि(धि)मा हं० त० ॥ ७ सु वण्णवि हं० त० ॥ ८ पच्चोभवति हं० त० ॥ ९ वापण्णे हं० त० ॥ १० भवन्तीति हं० त० विना ॥ ११ अणाव हं० त० विना ॥ १२ धिमणागवमीकराजमवराहारक हं० त० ॥ १३ हिवे ति हं० त० विना ॥ १४ ततिका हं० त० विना ॥ १५ कओडुका हं० त० ॥ १६ सामासामेसु हं० त० ॥ १७ सतापडि इंदगोधिका वरुणिका हं० त० ॥

तत्थ आपुणेयेसु जलचरेसु एवरूवेसु चेव पडिरूव-सदपादुब्भावेसु चेव जलचरे चितिते बूया । तत्थ उदकचरा चतुर्विधा आधारयितव्वा-दुपदा १ चउप्पदा २ बहुपदा ३ अपदा दीहपदा ४ वेति । तत्थ दुपदेसु दुपदसदपडिरूवे चेव दुपदं चितितं बूया, हत्थिमच्छा मगमच्छा गोमच्छा ॐ अस्समच्छा ॐ णरमच्छा णदीपुतका सव्वचरा चेति । तत्थ चतुप्पदेसु चतुकेसु चतुप्पदसद-रूवपादुब्भावे चेव चतुप्पदा विण्णेया, कच्छभा सुंसुमारा मंदुक्का उदकायो चेति ५ एवमादयो भवन्ति । तत्थ केस-मंसु-णह-लोमपरामासे बहुपदपडिरूवगते चेव बहुपदा विण्णेया, कुमारीला-सकुचिकादयो भवन्ति । तत्थ दीहामासे सव्वदीहपदपडिरूवगते य दीहपदा विण्णेया, चम्मिरा घोहणुमच्छा वडरमच्छादयो भवन्ति, एवमादयो अपदा । तत्थ दारुणेसु गाहा विण्णेया । सव्वआहारगते चेव सव्वआहारगते आहारोपका विण्णेया । अधोभागगतेसु कूवगता विण्णेया । णिण्णेसु सर-पुक्खरणिगता विण्णेया । सण्णिरुद्धेसु तब्भागगता विण्णेया । थीणामेसु दीहेसु णिण्णेसु य णदीगता ॐ विण्णेया १० । महावकासेसु परंपरांभारेसु परिक्खेवेसु य समुद्गता विण्णेया । महाकायेसु १० तिमितिमिगिला विण्णेया । मज्झिमकायेसु वालीणा सुंसुमारा कच्छभमगरा गदभकप्पमाणा चितित ति बूया । मज्झिमाणंतरकायेसु रोहित-पिचक-णल-मीण-चम्मिराजो विण्णेया । पच्चवरकायेसु कल्लाडक-सीकुंडी-उप्पातिका-इंधका-कुडुकालक-सित्थमच्छका वेति चितित ति बूया । सेतेसु सेता, रतेसु रत्ता सवण्णपडिरूवपादुब्भावेहि जधण्णामासे दंसणीयपादुब्भावे य दिट्ठपुव्वो चितित ति बूया । णयणपडिप्पिधाणे य दंसणीयाणं पतिवग्गामेव अदिट्ठपुव्वो विण्णेया । सोत्तामासे सव्वघोसवंतेसु य सुयपुव्वो भवन्ति । सोत्तपडिप्पिधाणे घोसवंतविब्भामे य अस्सुतपुव्वो विण्णेया । इति १५ जलचरजोणी वक्खाता भवति ।

तत्थ सव्वपच्चवरकायेसु अणूसु य कीडकिविल्लकजोणी चितिता विण्णेया । वण्णे आधारिते सेतेसु सेता, रतेसु रत्ता, पीतेसु पीता, णीलेसु णीला, कण्हेसु कण्हा, सेवालकेसु सेवालका, ण्हसु ण्ह, फरुसेसु फरुसा, चित्तेसु चित्ता, सवण्णपडिरूवतो विण्णेया । थीणामेसु थीणामा, पुण्णामेसु पुण्णामा, णपुंसकेसु णपुंसका, एकचरेसु एकचरा, मिधुणचरेसु मिधुणचरा, गणचरेसु गणचरा चितित ति विण्णेया । इति कीड-पतंग-किविल्लिकागता तिरिक्खजोणी २० पडिरूवपादुब्भावेहि उवलद्धव्वा । इति कीड-पतंगगता तिरिक्खजोणी वक्खाता भवति चितिता ।

तत्थ थावरतिरिक्खजोणी पंचविधा आधारयितव्वा भवति । तं जधा-पुढविकाइगगता आवुक्काइगगता तेउक्काइगगता वाउक्काइगगता वणप्फतिकाइगगता वेति । तत्थ सव्वदढेसु पुढवीपाउब्भावेसु धातुजोणिगते य पुढविकाइकं थावरं चितितं ति बूया । आपुणेयेसु उदकपादुब्भावे आवुजोणीगते चेव आवुक्कायिका थावरा चितित ति बूया । अग्गेयेसु अग्गिपादुब्भावे अग्गेयेसु सद-रूवपादुब्भावेसु अग्गिउवकरणगते चेव तेवुक्काइका थावरा चितित ति बूया । वायव्वेसु वायपादुब्भावेसु २५ चेव उवकरणसदपादुब्भावेसु चेव वायुक्कायिकं थावरं चितितं ति बूया । सव्वगहणेसु सव्वतरुणहरितक-पुप्फल-पत्तपादुब्भावे चेव मूलजोणीगतेसु चेव सद-रूव-उवकरणपाउब्भावे चेव एवंविधवणप्फतीकायिकथावरं चितितं ति बूया । इति थावरगया तिरिक्खजोणीकगता चित्ता वक्खाया भवति ।

तत्थ अधोभागेसु जहण्णेसु किण्हेसु संकिलिट्ठेसु उवहुतेसु अदंसणीयेसु अबुद्धीरमणेसु चेव एवमादीकेसु आमामेसु सद-रूवेसु चेव एवरूवेसु णेरइकपडिरूवेसु णेरइकसदपादुब्भावेसु चेव णेरइयं चितितं ति बूया । इति ३० णेरइकगता चित्ता वक्खाता भवति ।

तत्थ सव्वपाणा पुणरवि सत्तविधा आधारयितव्वा भवन्ति । तं जधा-एकपदा १ बिपदा २ चतुप्पदा ३ [छप्पदा ४] अट्ठपदा ५ बहुपदा ६ अपदा ७ चेति । तत्थ एकपादुब्भावे एकपदा विण्णेया एक्करुका भवन्ति १ । दुगपादुब्भावे दुपदका भवन्ति । ते दुविधा-माणुसा पक्खी ॐ माणुसतिरिक्खजोणी वेति । ते तिविधा-किण्णरा किंपुरिसा अस्समुहीओ

१ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २ कुरीला हं० त० विना ॥ ३ तम्मिरा योह हं० त० ॥ ४ सु पालीणा सं ३ पु० ॥ ५ मीलच हं० त० विना ॥ ६ डकुसीकुंडिओपातिकाईवकाकुडुकालकमित्थमच्छका हं० त० विना ॥ ७ अण्णेसु हं० त० ॥ ८ ता तणवण हं० त० ॥ ९ भवति छप्पया । तत्थ हं० त० विना ॥ १० एक्कारुका हं० त० ॥ ११ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥

वेति माणुसा ॐ तिरिक्ख ॐ माणुस १० जोणीसाधारणे बिपदा भवन्ति । तत्थ सव्वं उद्धंभागेसु पक्खी दुपदो विण्णेयो । सव्ववित्थडामासेसु माणुसोपकरणेसु चेव माणुस्सदुपदजोणी विण्णेया । मणुस्सतिरिक्खजोणीसाधारणेसु किन्नरा किंपुरिसा अस्समुहीओ वेति । तत्थ दुपदे थीणामेसु चेव अस्समुहीओ विण्णेयाओ भवन्ति । सव्वरुतेसु सव्वसउणगते चेव किन्नरा किंपुरिसा विण्णेया । इति माणुसतिरिक्खजोणीसाधारणेसु तिरिक्खजोणी विण्णेया भवति २ । तत्थ सव्वचतुप्पदे सव्वचतुप्पदपडिरूवगते य चतुक्कवग्गगतेणं चेव उवलद्धव्वा भवन्ति ३ । तत्थ छप्पदा छेक्कवग्गोवलद्धीहि पडिरूवगते 5 उवलद्धव्वा भवन्ति । तं जधा—भमरा मधुकरीओ मसगा मक्खिकाओ चेति । तत्थ मुदितेसु भमर—मधुकरा विण्णेया । सव्वमूलगते चेव दारुणेसु मसका मक्खिकाओ य विण्णेया । थीणामेसु मधुकरीओ मक्खिकाओ चेव विण्णेया । पुण्णामेसु भमरा मसका चेव विण्णेया ४ । तत्थ अट्टपदा अट्टकवग्गपादुब्भावेण अट्टकपडिरूवेण चेव उवलद्धव्वा भवन्ति ५ । केस—मंसु—णह—लोमपरामासे बहुपदपडिरूवे चेव बहुपदा विण्णेया भवन्ति ६ । अपदेहिं पैरिमंडलेहिं दीहपादुब्भावेहिं चेव अपदे वि ति जाणिय ति ७ । 10

तत्थ अट्टपदा बहुपदा कीडकिविल्लो इमेहिं विण्णेया भवन्ति । तं जधा—किविल्लकाओ ओपविका कुंथू इंदगोपका पैसलचित्ता कण्हकीडिका ॐ यूका मंकुणा उप्पातका रोहिणिका चेति एवमादयो । तत्थ उण्हेसु जुगलिका कण्हपिपी- 15 लिका १० कण्हविच्छिका चेति विण्णेया, जे यऽण्णे उण्हा । रत्तेसु रत्ता रोहिणिका इंदगोपगो, जे यऽण्णे रत्ता पिपीलिका जगलिका । पत्थिवेसु किविल्लका इंदगोपका चेति विण्णेया । ॐ देहेसु किविल्लका जंगलिका विण्णेया । ॐ दीहेसु पिपीलिका जंगलिका विण्णेया । परिमंडलेसु इंदगोपका मंकुणा य । गामेसु यूका मंकुणा य विण्णेया । 15 गम्मारण्णेसु घुणा विण्णेया । अवसेसा भूमीणिस्सितेसु । अंतलिक्खेसु संताणका उंडणाही घुक्कभरधा वि वा विण्णेया । पक्खिगते अगिकीड—पतंगा मक्खिकाओ भमर—मधुकरा चेव विण्णेया । इति छप्पदा जोणी बहुपदजोणी अपदजोणी चेव कीडकिविल्लगता वक्खातां चिता भवतीति ।

तत्थ सत्तविधा पाणा पुणरवि आधारयितव्वा भवन्ति दुविधा—जलचरा थलचरा चेति । तत्थ आपुणेयेसु जलचरेसु सव्वजलचरपडिरूवे चेव जलचरा विण्णेया भवन्ति । तत्थ थलेसु लुक्खेसु उण्णतेसु य सव्वथलयरगते चेव थलचारी 20 चित्तितं ति बूया । तत्थ उदकचरा विण्णेया उब्भिजा बिलासया अभितचरा चेति । तत्थ उब्भिजा संखणा काकुंधिका वडका सिरिवेड्डका करिण्डुका पैयुमका सद्दा तीलका इति । उब्भिजेसु एते उम्मट्टे आमास—सदपडिरूवेण उवलद्धव्वा भवन्ति उब्भिय ति । तत्थ बिलासयेसु कण्हगुलिका सेतगुलिका खुल्लिका ओहाडका कसका वातकुरीला वातंसु कुतिपि एवमादयो अधोभागेसु छिन्नेसु वण्ण—आयार—पडिरूवेणं चेव एतेसु बिलासया भवन्ति । इति बिलासया । तत्थ अमितचरेसु इलिका—सीकूणिक—णंदि—उब्भणाभी तंतुवायका णदीमच्छका जलायुमच्छका वेति बहुपदेहिं एते सकेहिं पडिरूवपाउब्भावेहिं 25 जधोपदिट्टेहि उवलद्धव्वा भवन्ति ।

तत्थ अपदा दुविधा—परिसप्पा चेव किमिका चेव । तत्थ महावकासेसु परिसप्पा विण्णेया । तत्थ किमिगता आसाति(लि)का किमिका चुरु गुण्ह(गंडू)पया य सव्वडुका सूकर्मिडा वेति ॐ एवमादयो ॐ विण्णेया भवन्ति । तत्थ णीलेसु णीला, चित्तेसु चित्ता, संविकट्टपाणस्सितेसु आसातिका किमि धुरुउ ति विण्णेया । भूमीणिस्सितेसु गंडूपका

१ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ २ छवण्णोव हं० त० ॥ ३ अपरिमंडलदीह हं० त० ॥ ४ उपधिका हं० त० ॥ ५ पमलचित्ता हं० त० विना ॥ ६ ॐ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ७ पक्खिण्णसु हं० त० ॥ ८ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ९ जंगिका हं० त० विना ॥ १० ता वि ता भ हं० त० ॥ ११ काकुंधिका वंदका हं० त० ॥ १२ वेडका हं० त० विना ॥ १३ पयुसरका सद्दा तीलुका हं० त० ॥ १४ कण्णेपुल्लिका हं० त० ॥ १५ आभांडका कसकका हं० त० ॥ १६ सु छित्तेसु हं० त० ॥ १७ रूवेसु णं चेव एवं विला हं० त० ॥ १८ गण्हपया हं० त० ॥ १९ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ २० मिवकओ ति हं० त० ॥ २१ सु रूपका सि० ॥

विण्णेया । मूलजोणीणिस्सितेसु लिच्छ संवुट्टिका सूकमिद्वा ति विण्णेया । इति अपदजोणीयं वक्खाता भवति । इति सत्तविधा पाणजोणी वक्खाता । सज्जीवपडिरूव—आमास—सद्दपादुब्भावेहि चित्तायं भवतीति ।

तत्थ अज्जीवा तिविधा—पाणजोणीसंभवा मूलजोणीसंभवा धातुजोणीसंभवा चेति । तत्थ चलामासेसु सव्व-
पाणजोणीगते चेव पाणजोणी विण्णेया । केस—मंसु—लोम—णहगते य सव्वमूलगते चेव मूलजोणी विण्णेया । तत्थ
5 ददामासेसु सव्वधातुगते चेव धातुजोणी विण्णेया । तत्थ पाणजोणी दुविधा—संखता असंखता चेव, अग्गेया
अण्णेया चेव दुविधा आधारयित्वा भवति । तत्थ अग्गेयेसु अग्गेया विण्णेया । अण्णेयेसु अण्णेया
विण्णेया भवन्ति । सा दसविधा आधारयित्वा भवति, तं जधा—केसगता ८ सिंगगता लोमगता ९ अत्थिगता
[मंसगता रुधिरगता] मज्जागता चम्मगता ण्हाउगता मेदगता वेति । उपजोणीणका पंचविधा, तं जधा—पित्तगता सिंभगता
दुद्धगता मुत्तगता रेतगता चेति । तत्थोवलद्धीओ केसगता लोमगता सिंगगता चेति आहारमए उक्करणे उवलद्धी
10 भवन्ति । अंजणी—फणिका—वीजणी—दंडाओ धूमणत्तं समग्गपाउकामये आसंदक—पल्लक—कोडिलक्खणकआसणगते चेव
विण्णेया भवन्ति, इति केसगता । तत्थ लोमगतं सजीवक—पत्तुण्ण—अजिणप्पवेणि इति पकिण्णकं वीजणिया चामरं
अजीणकंबलो बालसाडि बालमुंडिका बालव्वयणी वा एवमादीणि विण्णेयाणि । तत्थ चम्मगते उपाणहा अस्सभंडं
भच्छ दित्तिका अजीणं अजीणप्पवेणिका वीणा मसूरका पखरगतं दहरका आलिगा मुख ति एवमादयो विण्णेया
भवन्ति पडिरूवपादुब्भावेण सएहि आमासपडिरूवेहि चेव । तत्थ मंसगते आहारो विण्णेयो भवति । तत्थ ण्हावुणीगतं
15 दुविधं—हीरगतं गंडिगतं चेव । तत्थ हीरगतं तत्—वितता व ता विक्खाता वा गुणगतं विण्णेयं भवति । तत्थ अट्ठिगतं
संकुगतं खीलगतं सिप्पिपुडगतं १० संखभायणगतं ११ विण्णेयं भवति । रुधिरगते अट्ठिगतं कियागतं विण्णेयं
भवति । तथा धातुगतं तथा वसागते पुरिसगते कियागतं विण्णेयं भवति ओसहाहारगतं वा । तत्थ आपुणेयेसु वसागतं
रुधिरगतं पित्तगतं दुद्धगतं विण्णेयं भवति । तत्थ रतेसु रुधिरगतं विण्णेयं । सेतेसु दुद्धगतं रेतगतं वा विण्णेयं भवति ।
तत्थ बालेयेसु दुद्धगतं विण्णेयं । मुदितेसु विण्णेयेसु य सुक्कं विण्णेयं भवति । सेतेसु चेव कडुकेसु पित्तं विण्णेयं
20 भवति । १२ पीतेसु चित्तेसु थूलेसु रुधिर—वसा विण्णेया । अणूसु केस—मंसु—लोमगतं विण्णेयं । उद्धंभागेसु
सिंगगतं विण्णेयं । केसगतेसु चेव अग्गेएसु पुरी—दुद्धगतं विण्णेयं । १३ तणूसु वस्सगयं विण्णेयं । १४ दारुणेसु
रुधिर—ण्हारु—अट्ठि—मेदो विण्णेया । सव्वबहलगते दुद्धं विण्णेयं । परिजिण्णेसु वधेसु य मुत्त—पुरीसं विण्णेयं ।
तत्थ आहारेसु पाणजोणी चम्मगता वत्थिगतं अट्ठि अट्ठिमज्जा । जे अट्ठिगता दुद्धं वसा रुधिरमिति । दीहेसु
ण्हारुगतं विण्णेयं । वायव्वेसु वत्थिगतं विण्णेयं भवति । तत्थ आहार—पाणजोणीओ चम्मगता मंसगता वत्थिगता
25 १५ अट्ठि १६ अट्ठिमज्जागता य । अट्ठिगता दुद्धं वसा रुधिरमिति । तत्थ भायणगते सिप्पिगतं संखमयं दंतमयं
गवलमयं विण्णेयं भवति । तत्थ अट्ठिमये आभरणलोहितिका विण्णेया भवति । तत्थ चम्मे वत्थी आहारगते विण्णेया
भवति, दंतभायणगते विण्णेया । अजिणपट्टे अजिणप्पवेणी अजिणगकंचुका चेव वत्थगते विण्णेया भवन्ति, चम्मसाडीओ
य विण्णेया भवन्ति । मूलगते लोमगतं अच्छदणं विण्णेयं भवति । इति पाणजोणिपडिरूव—सद्दपादुब्भावेहि समास—
वासतो उवलद्धव्वं भवतीति । इति पाणजोणी वक्खाता भवति चित्ताया अज्जीवेति ।

30 तत्थ मूलजोणी तिविधामाधारयितव्वं भवति—मूलगता खंधगता अग्गगता चेति । तत्थ पाद—जंघे मूलजोणी
सव्वधातुगते य उद्धं कडीयं अधो गीवायं खंधं जोणीखंधगतेसु य उज्जुयगेसु य उद्धं गीवाय अग्गजोणी उद्धंभागेसु

१ सूकीमद्वा हं० त० ॥ २ विहायं हं० त० ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ४ ८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः
पाठः हं० त० नास्ति ॥ ५ "मते सं ३ पु० । "गते सि० ॥ ६ "जणीओ दंडाओ धूमणत्तं हं० त० ॥ ७ "पल्लका"
हं० त० विना ॥ ८ "कप्पत्तुण्ण" हं० त० ॥ ९ ण्हावणी" हं० त० विना ॥ १० "विण्या भा वि" हं० त० ॥
११ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ १२ वासुगते हं० त० विना ॥ १३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त०
एव वर्तते ॥ १४ "ता वट्ठिअट्ठि" हं० त० विना ॥ १५ ८ १० एतच्चिह्नगतं पदं हं० त० नास्ति ॥ १६ उज्जुभागेसु
उद्धं उद्धं गीवाय उद्धं भागेसु हं० त० विना ॥

चेव । तत्थ मूलजोणी एकविधा विण्णेया । ८५ खंधजोणी दुविधा—तया ८० गता सारगता चेति । तत्थ तणूसु तयागता विण्णेया तयागता चेव । सारगता सारगते विण्णेया भवन्ति धातुगते चेव । तत्थ अगगता तिविधा—पत्तगता पुष्पगता फलगता वेति । तत्थ पत्तगता तिविधा—तरुणा मज्झिमा जरढा चेति । तत्थ पत्तगता ति(बि)विहा—पुधूसु तणूसु य । पुष्पगते पुष्पगता विण्णेया मुदितेसु चेव । फलगते फलगता विण्णेया पुण्णेषु सारवतेसु य । तत्थ फलगतं पंचविधं—सेतं रत्तं पीतं नीलं कण्हमिति । एताणि सवण्णेहि विण्णेयाणि भवन्ति । तत्थ फलं पंचरसं आधारयित्ता 5 जधारसं विण्णेयं भवति । तत्थ मूलजोणी दुविधा—सज्जीवा चेव अज्जीवा चेव । तत्थ सज्जीवगते सज्जीवा विण्णेया । अज्जीवगते अज्जीवा विण्णेया । तत्थ सज्जीवा तिविधा—गम्मा ८६ अरणा ८० गम्मारणा चेति । तत्थ अब्भंतरेसु गम्मा वणप्फतयो विण्णेया । गम्मेसु चेव सव्वबज्जेसु वणप्फतयो आरणा विण्णेया । बज्जब्भंतरेसु गम्मारणा विण्णेया वणप्फतयो । सव्वगम्मारणेषु चेव तिविधा—थीणामा पुण्णामा णपुंसकणामा चेति । तत्थ थीणामेसु थीणामा, पुण्णामेसु पुण्णामा, णपुंसकणामेसु णपुंसकणामा विण्णेया वणप्फतयो । आपुण्णेषु णदीरुहा । णिण्णेषु य थलेसु थलजा विण्णेया । 10 लुक्खेसु चेव दढेसु ८७ पव्वतविरुहा विण्णेया । ८०

पव्वतपडिरुवेसु य पव्वतरुहेसु चेव ते चतुर्विधा—पुष्पसाली १ पुष्पफलसाली २ ८८ फलसाली ८० चेव ३ [ण] पुष्पसाली ण फलसाली ४ चेति । तत्थ पुष्पसालिणो तिविधा आधारयित्त्वा भवन्ति—पत्तेकपुष्पा गुलुकपुष्पा मंजरिणो । तत्थ एककेसु गतेसु एककपादुब्भावे चेव पत्तेकपुष्पा विण्णेया । पत्तेकपुष्पेसु चेव परिमंडलेसु गुलुकपुष्पा विण्णेया । गुलुकपुष्पेसु चेव दीहेसु मंजरिणो विण्णेया । मंजरिपुष्पेसु चेव मंजरिपुष्पेसु ते पंचविधा—सेतपुष्पा 15 रत्तपुष्पा पीतपुष्पा नीलपुष्पा कण्हपुष्पा चेति । एते सवण्णतो आधारयित्ता आधारयित्ता विण्णेया—सेतेसु सेता—पुष्पा, रतेसु रत्तपुष्पा, पीतेसु पीतपुष्पा, नीलेसु नीलपुष्पा, कण्हेसु कण्हपुष्पा विण्णेया । एते तिविधं आधारयित्ता सुगंधपुष्पा दुग्ंधपुष्पा अच्चंतगंधपुष्पा चेति । तत्थ सुगंधेषु सुगंधपुष्पा, दुग्ंधेषु दुग्ंधपुष्पा, अच्चंतगंधेषु अच्चंतगंधपुष्पा विण्णेया १ ।

तत्थ फलसाली चतुर्विधा—कायवंतफला मज्झिमकायफला मज्झिमाणंतरकायफला पच्चवरकायफला चेति । 20 तत्थ कायवंतफला पणसा तुंबा कूभंडपुष्प—फलप्पमाणफला विण्णेया भवन्ति । मज्झिमकायवंतफला कवित्थंबिल्लप्पमाणा विण्णेया भवन्ति । मज्झिमाणंतरकायफला अंब—अंबाडक—णीप—तिंदुक—उदुंबरप्पमाणा विण्णेया । पच्चवरकायफला अस्सोत्थ—वड—पील—पियाल—फरुस—चम्मणडोला—कोलक—करमंद—कलायसंबीयप्पमाणाणि । ते पंचविधा—सेतफला रत्तफला पीतफला नीलफला कण्हफला चेति । जधापडिरुवेहि वण्णतो कायप्पमाणतो चेव आधारयित्ता आधारयित्ता 25 उवलद्धव्वा भवन्ति भक्खफलगता अभक्खफलगता चेव । तत्थ सव्वआहारगते भक्खफला विण्णेया । अणाहारगते 25 अभक्खफला विण्णेया । ते तिविधा आधारयित्त्वा—सुगंधा दुग्ंधा अच्चंतगंधा चेव । सुगंधेषु सुगंधफला, दुग्ंधेषु दुग्ंधफला, अच्चंतगंधेषु अच्चंतगंधफला विण्णेया । ते पंचविधा रसफला आधारयित्त्वा भवन्ति, तं जधा—तित्तफला कडुकफला अंबिलफला कसायफला मधुरफला चेति । एते जधुत्ताहि रसोपलद्धीहि रसतो उवलद्धव्वा भवन्ति २ ।

तत्थ जे पुप्फेण णज्जंति ण फलेण [ते पुष्पसालिणो,] तं जधा—असोग—णौगरुक्खा सत्तिवण्णा तिलका सिंदुवार ति, जे यऽण्णे एवंविधा वेति । तत्थ जे फलेण उवभुज्जंते ते फलसालिणो । तत्थ इमे फलेण णज्जंते, 30 तं जधा—पणसा पारेवता लउचा मातुलुंगा उदुंबरा, जे यऽण्णे एवमादयो ।

तत्थ इमे पुप्फेण फलेण चेव णज्जंते पुष्प—फलोपगा, तं जधा—अंबा अंबाडगा णीव—बउल—जंबु—दालिमा, जे य अण्णे एवंविधा भवन्ति । पुष्प—फलतो य जे उवभुज्जंति ते चिन्तिता विण्णेया भवन्ति पुष्प—[फल]सालिणो ति ३ ।

१-२-३ ८५ ८० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ४ 'तथफलप' हं० त० विना ॥ ५ 'धम्मण' हं० त० विना ॥ ६ 'संथीय' हं० त० ॥ ७ 'णाणाग' हं० त० ॥ ८ माउसगा हं० त० ॥ ९ 'ण णज्जंते फ' हं० त० ॥ १० 'लओ य जे वज्जंति' चिति' हं० त० ॥

तत्थ जे ण पुप्फेण फलेण णेव उवजुज्जंते ते णेव पुप्फसालिणो [णेव] फलसालिणो ति विण्णेया । तं जधा—खदिरा धवा अयकण्णा पूतिकरंजो अहिमारो पूतिला कुंभकंडका चेति एवमादयो विण्णेया । जे य अण्णे एवविधा, ते णेव पुप्फसालिणो [णेव फलसालिणो] चतुत्था पगती रुक्खाणं विण्णेया इति ४ ।

एते जधुत्ताहिं सकाहिं उवलद्धीहिं उवलभित्ता चतुर्विधा उवलद्धव्वा । ते सव्वे चतुर्विधा—कायवंतो मज्झिमकाया 5 मज्झिमाणंतरकाया पच्चंवरकाया चेति तत्थ सव्वरुक्खा विण्णेया । उद्धभागेसु लता विण्णेया । कुडिलेसु य वामभागेसु मज्झिमकायेसु गुम्मा विण्णेया । गहणेसु य तिरियपच्चवरकायेसु तणा विण्णेया उवगहणेसु य । तत्थ सव्वबीयाणि तणेसु विण्णेयाणि । बीयाणि जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं जहावण्णजोणीयं उवलद्धव्वाणि भवन्ति । तत्थ खंधेयेसु उच्छू विण्णेया, सव्वं चेव गुलगतं । तत्थ कंदजाणि सव्वाणि धूवणाणि विण्णेयाणि भवन्ति । अग्गेयेसु धूवणाणि विण्णेयाणि भवन्ति । उद्धंसिरोमुहामासे ण्हाणोपलेवणकेण पधोवणविसेसक्किता विण्णेया । मज्झिमकायेसु अणुलेवणं विण्णेयं ।

10 मज्झिमकायं च ण्हाणागलु—अलत्तक—कालेयक—देवदारुगतं व गंधे विण्णेयं । मूलगता गंधा विण्णेया मूलगते । खंधगता गंधा विण्णेया खंधगते । तयगता गंधा विण्णेया तयगते । सारगता गंधा विण्णेया सारगते । णिज्जासगता गंधा विण्णेया णिज्जासगते । तणूसु पुधूसु य पत्तगते य पत्तगया गंधा विण्णेया । पुण्णेसु सव्वफलगते चेव फलगता गंधा विण्णेया । मुदितेसु पुप्फगते य सव्वपुप्फगता गंधा विण्णेया । पुण्णेसु णिद्धेसु य सव्वरसगते य रसगता गंधा विण्णेया ।

15 तत्थ गुग्गुलविगतं सज्जलसं इक्कासो सिरिवेदुको चंदणरसो तेलवण्णिकरसो कालेयकरसो सहाकाररसो मातुलुंगरसो करमंदरसो सालफलरसो सव्वरसा चेति रसगते विण्णेया भवन्ति । जधुत्ताहिं सकाहिं उवलद्धीहिं आधारयित्ता उवलद्धव्वा भवन्ति एवमादयो रसा चेति ।

तत्थ तेल्लेसु कुसुंभतेल्लं अतसीतेल्लं रुचिकातेल्लं करंजतेल्लं उण्हिपुण्णामतेल्लं बिल्लतेल्लं उसणीतेल्लं वल्लीतेल्लं सासवतेल्लं पूतिकरंजतेल्लं सिग्गुकतेल्लं कपित्थतेल्लं तुरुक्कतेल्लं मूलकतेल्लं ८५ अतिमुत्तकतेल्लं ८६ एवमादीणि तिल्लाणि रुक्ख—गुम्मवल्ली— 20 गुच्छ—वलयफलणिव्वत्ताणि विण्णेयाणि भवन्ति । जधुत्ताहिं रूवोवलद्धीहिं ८७ गुम्मोवलद्धीहिं ८८ य चत्तारि तेल्ला ८९ विण्णेया—तिल्लतेल्लं अतसीतेल्लं सासवतेल्लं कुसुंभतेल्लं चेति पच्चंवरकायेसु चेव विण्णेयाणि भवन्ति । रुचिकातेल्लं इंगुणि(दि)तेल्लं सिग्गुगुतेल्लं चेति एवमादीणि मज्झिमाणंतरकायेसु विण्णेया भवन्ति । अतिमुत्तकतेल्लं पधकलीतेल्लं चेति मज्झिमकायेसु विण्णेयाणि भवन्ति । अवसेसाणि कायवंतेसु ९० विण्णेयाणि तिल्लाणि भवन्ति । तत्थ चंपक—चंदणिका—पुस्सतेल्लं अतिमुत्तकतेल्लं जातीतेल्लं पीलुतेल्लं यूथिकातेल्लं ओसधतेल्लाणि चेव उवहुतेसु विण्णेयाणि भवन्ति । मुदितेसु 25 गंधतेल्लाणि विण्णेयाणि भवन्ति । मधुरेसु चंदणिकतेल्लं विण्णेयं । तिण्हेसु वक्किक्कतेल्लं विण्णेयं । अग्गेयेसु पुस्सतेल्लं विण्णेयं । पीलितपरिमंडितादीसु उवलद्धीहिं पडिरूवतो आमासतो य जधुत्तं तधा उवलद्धव्वं भवति । इति तेल्लाणि वक्खाताणि भवन्ति ।

तत्थ मूलजोणी साली वीही कोदवा कंगू रालका वरका मुग्गा मासा णिप्फावा चणका कुलत्था मसूरा अदसीओ कुसुंभा सासवा चेति आहारगता विण्णेया सव्व अणूसु चेव । तत्थ सेतेसु साली जवा सेततिला सेतणिप्फावा 30 कुसुंभा वेति विण्णेया । रतेसु वीही कोदवा रत्तणिप्फावा कुलत्था मसूरा सस्सवा वेति विण्णेया । पीतेसु कंगू रालगा सिद्धत्थका चेति एवमादयो विण्णेया भवन्ति । आपुण्येयेसु अतसी कुसुंभा तिला सासवा वेति ९१ आहारगया ९२ विण्णेया । अवसेसाणि जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि भवन्ति ।

तत्थ उवगहणगते मूलजोणीगते वत्थाणि खोमकं दुगुल्लं जगिकं चीणपट्टा वागपट्टा कप्पासिकं चेति विण्णेयं भवति । जधुत्ताहिं वत्थोपलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि भवन्ति । तत्थ जधा वत्थजोणीयं उवदिट्ठं ति ।

१ 'या इति गह' हं० त० विना ॥ २-३ ८५ ८६ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ४ ८७ ८८ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठसन्दर्भः हं० त० नास्ति ॥ ५ 'उसवते' हं० त० ॥ ६ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते ॥

तत्थ मूलजोणीयाणि भायणाणि कट्टमयं फलमयं पत्तमयं चेलमयं इति एवमादीयाणि विण्णैयाणि भवन्ति । तत्थ खंधगते कट्टमयं विण्णेयं सव्वकट्टपडिरूवे चेव । पुण्णेषु फलमयं विण्णेयं सव्वफलपडिरूवे चेव । तणूसु पुधूसु य पत्तमयं विण्णेयं सव्वपत्तपडिरूवगते चेव । किसेसु वित्थडेसु ये चेलमयं विण्णेयं सव्ववत्थपडिरूवगते चेव । एवमादीहिं सकाहिं सकाहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वाणि ०८ भायणाणि १० भवन्ति । इति मूलजोणीआ भायणं ।

तत्थ मूलजोणीयं आभरणं पुप्फमयं फलमयं पत्तमयं कट्टमयं चेति । तत्थ मुदितेसु पुप्फमयं विण्णेयं । ५ पुण्णेषु फलमयं विण्णेयं । तणूसु पुधूसु य पत्तमयं विण्णेयं । खंधगते सारगते चेव कट्टमयं विण्णेयं भवति । इति मूलजोणीयं आभरणं चितियायं वक्खातं भवति ।

तत्थ धातुजोणी सारगता वण्णगता चेव । तत्थ सारगता धातुजोणी सारगता विण्णैया । ०८ वण्णगता वण्णगते विण्णैया भवति । १० तत्थ सारगता दुविधा—विलयगता चेव घणगता चेव । तत्थ विलयगता णवविधा, तं जधा—सुवण्णकं तवुकं तंबकं सीसकं काललोहं वट्टलोहं कंसलोहं हारकूडगं रूविअगमिति एवमादीणि विण्णैयाणि भवन्ति । १० तत्थ पीतकेसु सुवण्णकं हारकूडकं चेव विण्णेयं । उत्तमेसु दंसणीयेसु य सुवण्णं विण्णेयं । पच्चवरेसु सोवद्वेसु य पीतएसु हारकूडकं विण्णेयं । तंबेसु सुवण्णकं वा तंबकं वा हारकूडकं वा विण्णेयं । उत्तमेसु रत्तेसु सुवण्णं, मज्झिमेसु तंबकं, उवद्वेसु हारकूडकं, सेतेसु रुप्पं वा तवुकं वा कंसलोहं वा विण्णेयं । सारमतेसु सुक्किलेसु रुप्पं, असारेसु तवुकं, सप्पभेसु कंसलोहं विण्णेयं । कण्हेसु सीसकं काललोहं चेति । तत्थ कट्टिणेसु काललोहं विण्णेयं । १५ मुदितेसु सीसकलोहं विण्णेयं । १६ वट्टे वट्टलोहं विण्णेयं । भायणोपकरणेसु काललोह—कंसलोहाणि विण्णैयाणि । १५ सप्पभेसु कंसलोहं, सव्वच्छायागते चेव तिक्खेसु काललोहं, सव्वसत्थगते चेव जण्णेयेसु सुवण्णकं वा तंबकं वा कंसलोहं वा वट्टलोहं वा विण्णेयं भवति । वत्थेसु तंबकं वा सुवण्णकं वा काललोहं वा विण्णेयं भवति । इति धातुजोणी विलयगता विण्णैया । तत्थ घणजोणी धातुगता वेरुलिय—फालिय—मसारकल्ला लोहितक्खा अंजणमू(पु)लका गोमेदका अंकोमलका सासका सिलप्पवाला पवालका वडरं मरगतं विविधा खारमणी वेति । एवमादी पाणजोणी धातुजोणीगता यधुत्ताहिं उवलद्धीहिं आमास—वण्ण—पडिरूव—सद्दोपकरणेहिं सिप्पिकपादुभावेहिं जाति—विजातीहिं २० अग्गेय—अणग्गेयोपलद्धीहिं उवलद्धव्वा भवन्ति । इति सारगता चिता विण्णैया भवन्ति ।

वण्णजोणीगता, तं जधा—सुधा सेडिका पलेपको गेलकेता कडसक्करा वेति । रत्तेसु गेरुग—मणोसिला पत्तंगे हिंगुलुकं पज्जणी वण्णमत्तिका इति विण्णैया भवन्ति । पीतएसु हरितालं मणोसिला वण्णकमत्तिका चेति विण्णैया । णीलेसु णीलकधातुको सस्सकचुण्णकमिति एवमादी विण्णेयं । कण्हेसु अंजणं कण्हमत्तिका चेति । पण्हूसु पण्हुमत्तिका वण्णमत्तिका चेति वा वण्णेसु । खेतभूमीए पण्हूभूमीओ विण्णैयाओ । णिद्धेसु णदीमत्तिका विण्णैया । पाणजोणीगते २५ संगमत्तिका विसाणमत्तिका विण्णैया । उवद्वेसु विसाणमत्तिका । मुदितेसु देवताययणमत्तिका विण्णैया । तत्थ पुणरवि मत्तिका बहुविधा भवति, तं जधा—कण्हमत्तिका पंडुमत्तिका तंबभूमी मुंरुंबो कडसक्करा सुवण्णं जातरूवं मणस्सिला गोकंटको खीरपको अब्भवालुका लवणं सुद्धभूमी चेति आधारयितव्वं भवति सकाहिं उवलद्धीहिं । तत्थ सेतेसु लवणं खीरपओ गोकंटको अब्भवालुका वेति । ददेसु मणसिला विण्णैया । मिदूसु कण्हमत्तिका मुंरुंबो तंबो वेति विण्णैया । इति धातुजोणीगता चिता वण्णधातुगता वेति वक्खाता भवति । ३०

तत्थ विगता धातुजोणी भूमीसंजुता, तं जधा—खेतं वत्थुं गाम—णगर—सण्णिवेस—आवास—कुंड—णदी—तलाग—पुक्खरणि—कूव—सर—फलिह—सेउ—पागारो पेंडपाली एलुको 'चेति' पवा पंथा पव्वता चेति एवमादीयं विण्णेयं भवति ।

१ 'तथ गंधग' हं० त० ॥ २ य वेउमयं हं० त० ॥ ३ ०८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ४ णीअ भा' हं० त० ॥ ५ ०८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ६—७ वियलगतता हं० त० ॥ ८ रुहिअगमिति हं० त० ॥ ९ कण्णेसु हं० त० ॥ १० हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ११ सच्छया' हं० त० ॥ १२ 'का वमल' हं० त० विना ॥ १३ 'क—वाडक—सक्क' हं० त० ॥ १४ 'मल्लिका' हं० त० ॥ १५ मुंडवो करस' हं० त० विना ॥ १६ मुसंवो वेति हं० त० विना ॥ १७ 'राकूव' हं० त० विना ॥ १८ 'फलिहासतपा' हं० त० विना ॥ १९ 'चेति' चैत्यम् इत्यर्थः ॥

तत्थ उद्धंभागेसु उण्णतेसु पव्वत-पेधा(वा)-पाली-चेति-एलुकमिति, जं च किंचि उण्णतं तं सव्वं विण्णेयं भवति ।
 5 विण्णेषु णदी-तलाग-पुक्खरणी-वावी-कूव-उदुपाण-सर-फलिह एवमादयो विण्णेया भवन्ति । सण्णिरुद्धेसु तलाग-
 पुक्खरणी-वावी-गाम-णगर-णिगम-सन्निवेसादयो उवलद्धव्वा भवन्ति । दीहेसु णदी विण्णेया । चतुरस्सेसु वावी पुक्खरिणी
 खेतं वा विण्णेयं भवति । असंखतेसु णदी पव्वता विण्णेया भवन्ति । महावकासेसु भूमी वा  पव्वता वा 
 10 विण्णेया । पुधूसु महावकासेसु भूमी विण्णेया, उद्धंभागेसु दहेसु य पव्वता विण्णेया । उद्धंभागेसु मतेसु य एलुको विण्णेयो ।
 उद्धंभागेसु जिण्णेयेसु य चीती विण्णेया । पादजंघासु दीहेसु य पेधा विण्णेया । इति भूमिपयुत्ता धातुजोणी ।

तत्थ धातुजोणीओ आभरणजोणी जधुत्ता आभरणजोणीयं तथा विण्णेयं भवति इति धातुजोणीआभरणजोणि-
 चिंताय उवलद्धव्वा भवति । तत्थ धातुजोणिजा वत्थजोणी लोहजालिका सुवण्णपट्टो खचितं वेति जधुत्तं वत्थजोणीयं
 तथा धातुजोणीगतं वत्थं विण्णेयं भवति इति धातुजोणिवत्थजोणिजं चिंताय उवलद्धव्वं भवति । तत्थ धातुजोणिया
 10 भायणजोणी पुधूसु धातुजोणिगतेसु सव्वभायणपडिरूवगते चेव मत्तिकामए चेव लोहमये मणिमये सेलमये जधुत्ताहिं
 जधुत्ताहिं भूमी-सेल-लोह-मणिजोणीहिं समणुगंतव्वं भवति इति धातुजोणिजा भायणा जोणीचिंतायं उवलद्धव्वा भवन्ति ।
 तत्थ धातुजोणिजो सयणासणजोणी लोहमयी सिलप्पवालमयी मणिमयी सेलमयी भूमी वेति जधुत्ताहिं धातुजोणीहिं
 उवलद्धीहिं सयणासणोवलद्धीहिं चेव समणुगम्म उवलद्धव्वा भवन्ति । तत्थ महावकासेसु भूमी विण्णेया । अग्गेयेसु
 15 इट्टका, समेसु पेढिका, दहेसु सिलापट्टपासाणा, चतुरस्सेसु सिलापट्टा, दहेसु चेव परिमंडलेसु सिलापट्टा, चतुरस्सेसु
 परिमंडलेसु वा अग्गेयेसु इट्टका । तत्थ तिविधमेव धातु तिविधमेव आसणं सयणं वा संठाणतो उत्तम-जधण्ण-
 मज्झिमाहिं चेव उवलद्धीहिं उवलद्धव्वा भवन्ति इति धातुजोणिजं सयणासणं चिंताय उवलद्धव्वं भवति । इति
 धातुजोणीचिंता वक्खाता भवति ।

तत्था पाणजोणी मूलजोणीसाधारणा, पाणजोणी धातुजोणीसाधारणा, मूलजोणी पाणजोणीसाधारणा, मूल-
 जोणी धातुजोणीसाधारणा, धातुजोणी पाणजोणीसाधारणा, धातुजोणी मूलजोणीसाधारणा, पाणजोणी-धातुजोणीसमभागा
 20 समणुगंतव्वा भवति । एवमादी चिंता जीव-अज्जीवसमायुत्ता दिव्व-माणुस्स-तिरिक्ख-णेइयसंसारसमायुत्ता सिद्धसमायुत्ता
 य एवमादी जीवचिंता अजीवचिंता चेव सद्गता रूवगता रसगता गंधगता फासगता गाम-णगर-खेड-पट्टण-जणपद-
 पव्वत-गिह-सण्णिवेस-खेत-खल-भूमि-वत्थुगता तलाग-पुक्खरणि-कूव-सर-णदी-समुद्-धण-धण्ण-रतण-
 उवकरण-जाण-वाहण-सयणा-ऽऽसण-वत्थ-परिच्छद-भायणगता पाणजोणिगता मूलजोणिगता धातुजोणिगता अतिकंता-
 5 ऽणागतकालसंपतसमायुत्ता गणणा-परिसंखा-असंखेज्जसमायुत्ता य विज्जासुत्तसमायुत्ता य सजीव-अज्जीवसमायुत्ता
 25 दुविधा समासेण उदत्ता अणुदत्ता चेति आमास-सद्-पडिरूवपादुब्भावेहिं जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं आधारयित्ता आधारयित्ता
 सव्वं समणुगंतव्वं भवतीति ॥

इति खलु भो महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय चिंतितो णामाज्झायो अणंतागमसंजुत्तो

जिणाणंतैरणाणिपवग्गुणाणंतपवरागमसंयुत्ताय मणोगतभावप्पकासणकराय-

मं(अं)गविज्जाय णमोक्कारयित्ता णमो भगवतो यसवतो महतिमहावीर-

वद्धमाणाय अभिप्पसण्णाय अंगविज्जाय चिंता णामज्झायो

अद्गवण्णो सम्मत्तो ॥ ५८ ॥ छ ॥

१ 'पहापा' हं० त० ॥ २ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ३ जिणये' हं० त० विना ॥ ४ पवा
 वि' हं० त० ॥ ५ 'णीमयं सव्वमणु' हं० त० ॥ ६ सविज्जासुत्तसत्थसमा' हं० त० ॥ ७ 'तराणि प' हं० त०
 विना ॥ ८ 'पराग' हं० त० विना ॥

[एगूणसट्टिमो कालज्झाओ]

[पढमं पडलं]

उसभादी तित्थकरे सिरसा वंदितु वीरणिच्छेवे । विज्जं महापुरिसदेसितं च णाणं च णाणी य ॥ १ ॥
 पंचविहो जो कालो महापुरिसदेसिताय विज्जाय । सो गाधाहिं णिबद्धो अणुजोगत्थं चियेतूणं ॥ २ ॥
 पंचविधो पुण कालो मुहुत्तमादी दिवसा य पक्खा य । मासे मासा वस्सं वस्साणि य दिग्घकालो य ॥ ३ ॥ 5
 जं पुच्छितं मुहुत्तविसए मुहुत्ता तर्हि गणेतच्चा । जं दिवसाणं विसेणय (विसयो) तर्हि तु दिवसा गणेतच्चा ॥ ४ ॥
 पक्खेसु य ते पक्खा एकारसमासिकं च मासेसु । वस्साणं जो विसयो तर्हि तु वस्सा गणेतच्चा ॥ ५ ॥
 अट्ठागते य कच्छागते य वित्थारिमे य गणिमे य । माणुम्माण—पमाणे काले वेलागते चेव ॥ ६ ॥
 सव्वम्मि अतिम्मते समाणजोगा य समगिरेसम्मि । ओलमित्तदुक्खलक्खे चिरणिप्फण्णे य चिरकालो ॥ ७ ॥
 अट्ठागते य कच्छागते य वित्थारिमे य गणिमे य । माणुम्माण—पमाणे काले वेलागते चेव ॥ ८ ॥ 10
 एतेसि भावाणं मज्झिमजोगेण मज्झिमो कालो । अट्ठे संपुण्णा—अणधिकम्मि लेहट्टुकाले य ॥ ९ ॥
 अट्ठागते य कच्छागतेय वित्थारिमे य गणिमे य । माणुम्माणपमाणे काले वेलागते चेव ॥ १० ॥
 एतेसि भावाणं पतणुकभावे य थोवभावे य । खुड्डलक—हस्सभावे आसण्ण—पसण्णभावे य ॥ ११ ॥
 लहुकड—लहुणिप्फण्णे लहुलोभे [.....] आगते सिग्घं । अपरिक्खेसेण य उवगतम्मि सिग्घो हवति कालो ॥ १२ ॥
 वासाणि दीहकालो मासा पक्खा य मज्झिमो कालो । दिवस—मुहुत्ता हस्सम्मि होति कालप्पमाणम्मि ॥ १३ ॥ 15
 वस्सेण व वस्सेहि व अयमत्थो होहिति त्ति उप्पण्णे । वस्साणि विजाणेज्जो तस्सुप्पादस्स लद्धीए ॥ १४ ॥
 मासेण व मासेहि व अयमत्थो होहिति त्ति उप्पण्णे । मासे त्ति विजाणेज्जो तस्सुप्पादस्स लद्धीए ॥ १५ ॥
 पक्खेण व पक्खेहि व अयमत्थो होहिति त्ति उप्पण्णे । पक्खे त्ति विजाणेज्जो तस्सुप्पादस्स लद्धीय ॥ १६ ॥
 दिवसेण व दिवसेहि व अयमत्थो होहिति त्ति उप्पण्णे । दिवसे त्ति विजाणेज्जो तस्सुप्पादस्स लद्धीए ॥ १७ ॥
 किंचि क्खणं मुहुत्तं अयमत्थो होहिति त्ति उप्पण्णे । जाणसु तत्थ मुहुत्ते तस्सुप्पादस्स लद्धीए ॥ १८ ॥ 20
 समतिक्रंते दिवसे मासे संवच्छरे व जाणाहि । णिव्वत्ते अणुतुरिते कडे य भुत्ते अतीते य ॥ १९ ॥
 संपतकाले दिवसे वत्तंते वत्तमाणदिवसे य । वत्तंतं वासं वच्छरं तु मुण वत्तमाणेसु ॥ २० ॥
 दिवसे मासे संवच्छरे व पुरतो अणागते जाणे । सव्वम्मि अणुप्पण्णे उप्पज्जिहिति त्ति विण्णातो ॥ २१ ॥
 समतिक्रंते दिवसे मासे संवच्छरे य जाणेज्जो । णिव्वत्ते अणुभूते कडे य भूते अतीते य ॥ २२ ॥
 अतिवत्तेसु ण बूया अणागतं ण वि य वत्तमाणाइ । संपतमतिवत्ताणि य ण वागरे वत्तमाणेसु ॥ २३ ॥ 25
 उप्पण्णमतीतेसु अतिवत्तं जाण सव्वभावेसु । उप्पण्णवत्तमाणे अ वत्तमाणो हवति कालो ॥ २४ ॥
 सव्वम्मि अणुप्पण्णे उप्पज्जिहिति त्ति णागतो कालो । उप्पज्जंतेसु अणागतं व मुण वत्तमाणं वा ॥ २५ ॥
 उप्पुप्फ—ज्झीणफले मलिणफले [तह य] मलिण—सुखतणे ।
 सुखपत्ते व जुत्ते मत्ते व वतुस्सए य कालो अतिक्रंतो ॥ २६ ॥
 मुण वत्तमाणकालं गणिज्जमाणे तिरिच्छमाणे वा । दिज्जंते भुज्जंते आढत्ते कीरमाणे वा ॥ २७ ॥ 30

१ अतिस्सए हं० त० ॥ २ तलक्खदुक्खे हं० त० विना ॥ ३ अट्ठागं हं० त० ॥ ४ पुण अणविकम्मि लेहट्टु हं० त० ॥ ५ अच्छागते य क हं० त० ॥ ६—७—८ उप्पण्णो हं० त० ॥ ९ विण्णेतो हं० त० ॥ १० फले मसिणफले मलिणमुखतणो मुखपत्ते व भुत्ते मत्ते य वत्थस्स हं० त० ॥ ११ माणे विविज्जमाणे हं० त० ॥

पुष्प-फल-सस्स-उदयसमुदए य वत्तमाणम्मि । णवजोव्वणकस्सेसु चेव मुण संपदं कालं ॥ २८ ॥
 पुष्प-फलाणं सस्से अचिरा ओतरति वा सुहो सरदो । ठायंति बंधवत्था होहिति दुक्खेणं भोतव्वं ॥ २९ ॥
 एहिति दाहिति काहिति होहिति दिज्जिहिति लभिहिती व त्ति । दस्सामो कस्सामो त्ति होति तु अणागतो कालो ३०
 संपदमणागतमतिच्छित्ते व एकतरगम्मि भावम्मि । उवयुत्ते पुच्छंते सो कालो होइ बोधव्वो ॥ ३१ ॥
 5 आधारे तत्थ बाहिरेण तम्मि तु तज्जायअविभत्तो त्ति । तिण्हं पि य कालाणं [.....] ॥ ३२ ॥
 पंचिदिएहिं पंचहिं सद्-फरिस-रस-रूव-गंधा तु । जे फुड विण्णाता तत्थ ते उप्पाता गणेयव्वा ॥ ३३ ॥

॥ पढमं पडलं ॥ १ ॥ छ ॥

[बितियं पडलं]

“केयि ज्जातिविसेसा गज्झा केयिच्च रूवसो गज्झा । केयी वण्णविसेसा केयि त्ति रसा रसविसेसा ॥ १ ॥
 10 केयि त्थाणविसेसा गज्झा केयि त्ति जीवितविसेसा । केयि ण्णामविसेसा केयि तु बलाबलविसेसा ॥ २ ॥
 सारगुणा सीलगुणा केयि कम्मगुणतो सुगेज्झ त्ति । मिदु-कढिण-णिद्ध-रूक्खा सी-उण्हगुणा य केयि तु ॥ ३ ॥
 तेतेण सव्वभावा गज्झं तु भावविधिविसेसेण । इट्ठतणं उवगता विण्णेया माणुसे लोए ॥ ४ ॥
 जे पाणजोणिया मूलजोणिया धातुजोणिया वा वि । उप्पाया उप्पण्णा एताय विधीय णातव्वा ॥ ५ ॥
 सव्वेसिं भावाणं अकित्तिमाणं च कित्तिमाणं च । इट्ठतमणिट्ठतं मज्झिमं च तिविधं पुणो णेयं ॥ ६ ॥
 15 इट्ठेसु दिग्घकालो मज्झिइट्ठेसु वि य मज्झिमो कालो । दोसमणिट्ठमसारेसु चेव अप्पो हवति कालो ॥ ७ ॥
 पुण्णामा सारजुत्ता मज्झिमसारा य होति थीणामा । जे तु णपुंसकणामा ते तु असारेसु बोधव्वा ॥ ८ ॥
 कालो तु महासारेसु महंतो मज्झो य मज्झसारेसु । अप्पो य हवति कालो असारवंतेसु सव्वेसु ॥ ९ ॥
 जध णामा तध रूवा सद्दा गंधा रसा ५५ ये फासा य । पंचविधा उप्पाया एतेण गमेण णातव्वा ॥ १० ॥
 उप्पत्ति-विपत्तिसुभा दो वि [य] जे संभवन्ति दव्वाणं । एगमहोरेतेण तु तेसु मुहुत्ता सुणातव्वा ॥ ११ ॥
 20 उप्पत्ति(त्ती य) विपत्ती य उदया जे भवन्ति भावाणं । ७० वस्सेहिं तेहिं वस्साणि होति उप्पज्जमाणेहिं ॥ १२ ॥
 निमिसंतरमुस्सासा कट्ठा व लवा कला व वीसं तु । कालस्स एस आदी एगमुहुत्ता समक्खाता ॥ १३ ॥
 एते तीसं संखा तु मुहुत्ता जायते अहोरेतं । एसो तु परो कालो भवति मुहुत्तप्पमाणस्स ॥ १४ ॥
 एतेसुप्पातविधी मुहुत्तवग्गस्स वन्नयिस्सामि । जेसु समुदीरमाणेसु मुहुत्ता होति बोधव्वा ॥ १५ ॥
 जे य परंपरिकसा परमाणू वा सथावरा उता । जीवा-५जीवणिकाया सव्वे उ मुहुत्तसंखाता ॥ १६ ॥
 25 ॥ उप्पातविधिपरिक्खायं उप्पत्तिता अवितयं जधुवदेसं पडलं द्वितीयं ॥ २ ॥ छ ॥

[तइयं पडलं]

उप्पातविधिं तु जहक्कमेण वोच्छं दिवसवग्गस्स । उप्पातविधिं च पुणो मुहुत्तवग्गस्स वोच्छामि ॥ १ ॥
 पक्खुप्पातविधिं पि य ततिकं आगमं वोच्छं । मासुप्पातविधिं पि य वोच्छामि चतुत्थवग्गस्स ॥ २ ॥
 वस्साणं पि य उप्पातविधिं सव्वं जहक्कमं वोच्छं । संवच्छरं कुच्चोर्लि दीवो त्ति ण्णाणरासिस्स ॥ ३ ॥
 30 एत्तो अपरिमितविधिं अपरिमितस्स तु पुणो वि कालस्स । कालमणंतं च पुणो णिरुद्धकालं च वण्णेस्सं ॥ ४ ॥
 उदु-वस्स-मास-पक्खं दिवसे य मुहुत्तवग्गं च । मंडलवित्थारेहि य कीलणकउवक्खरविधीहिं ॥ ५ ॥

१ *कस्सेसु हं० त० ॥ २ *ण होयव्वं हं० त० ॥ ३ गाहम्मि हं० त० ॥ ४ देवजुते हं० त० ॥ ५ कज्जिज्जाविविसेसा हं० त० ॥ ६ केयि त्ति वण्णं हं० त० ॥ ७ तेएण सव्वभागा हं० त० ॥ ८ *ज्झिमेसु हं० त० विना ॥ ९ ५५ ७० एतच्चिहान्तर्गतः श्लोकद्वयाधिकः पाठः हं० त० नास्ति ॥ १० दीवे त्ति हं० त० विना ॥

बारसमासे संवच्छरे य जोतिसगतीय वण्णेस्सं । बारसमासे य पुणो उदुपेयालेण वण्णेस्सं ॥ ६ ॥
 एगाह—दुग—तिगा चउक्का पंचके च्छाहा सत्तरत्तं च । अट्ट णवके दसाहे पण्णरसाहे य वोच्छामि ॥ ७ ॥
 कालं जोण्हं च पुणो दिवसं रत्तिं च वण्णएस्सामि । एकमहोरत्तं वा वेलानं वण्णइस्सामि ॥ ८ ॥
 एतो वुट्ठीगंडय पुणो अग्घगंडय अग्गिगंडयं । पंचहि वि मूलवत्थूहि जधुत्तं किंत्तियिस्सामि ॥ ९ ॥
 एक्केक्कीअ य गाधा य मुहुत्ते य दिवसे य पक्खे य । मासे य पुणो वोच्छं मज्झिमकालप्पमाणम्मि ॥ १० ॥ ५
 तण्णामे तंरूवेहिं चेव तब्भावविधिविसेसेहिं । एतो कालपमाणं अपच्छिमं वण्णयिस्सामि ॥ ११ ॥
 ॥ भगवतीय महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय कालणाभावलिकायामध्यायस्तृतीयः ॥ ३ ॥ छ ॥

[चउत्थं पडलं]

अंडसुहुमे य बीयसुहुमे य पणकसुहुमे सिणेहे य । वायू सदे गंधे सुहुमे सुहुमेसु सव्वेसु ॥ १ ॥
 खुड्डलक—थोक—डहरक—अणुक—सुहुम—केस—मंसु—रोमेसु । एत्थ भवंति मुहुत्ता अब्भंतरतो अहोरत्ते ॥ २ ॥ १०
 खुल्लक—वराड—संखणग—सिप्पि—गंडूपदे जलूका य । आसालिका वारवत्ते पाण्णयिका सुंकेसु पट्टेसु ॥ ३ ॥
 धिकुण—लिक्खा—घुण—चम्मकीड—फलकीड—धण्णकीडा [य] । सुत्तजगलिका कुंथू उरणी सुयम्मुत्ता ॥ ४ ॥
 एवमादिका जीव(वा) बिंदिका तिंदिका य तसकाया । सुकुमालका डहरका सव्वे तु मुहुत्तसंखाता ॥ ५ ॥
 पुप्फ—फलं धण—धण्णं सद्—प्परिस—रस—रूव—गंधा य । सुकुमालका सुहुमका सव्वे तु मुहुत्तसंखाता ॥ ६ ॥
 कंगू—रालक—सामाक—वरक—सिद्धत्थका—सरिसवेसु । एत्थ मुहुत्ता णेया सुहुमेसु य सव्वबीयेसु ॥ ७ ॥ १५
 धण्णरत्ते ०८ वण्णरत्ते १० पंसुरये छारिका दगरये य । चुण्णेसु अंजणेसु य पदुमरयकतम्मि य मुहुत्ता ॥ ८ ॥
 सुकुमालका सुहुमका तिइंदिगा जे तु तेसु तु मुहुत्ता । थूलसरीरेसु तिइंदियेसु दिवसा विधीयंते ॥ ९ ॥
 खुड्डलकेसु तु चतुरिंदिएसु दिवसा भवंति णातव्वा । थूलसरीरे चतुरिंदिकेसु पक्खा विधीयंते ॥ १० ॥
 खुड्डलकेसु तु पंचेदिकेसु दिवसा व होंति पक्खा वा । संवच्छर—मासा वा पंचेदिकथूलकायेसु ॥ ११ ॥
 खुड्डलकेसु तु पंचेदिएसु एत्थ दिवसा व होंति पक्खा वा । संवच्छर—मासा वा थूलसरीरेसु पक्खीसु ॥ १२ ॥ २०
 सिग्घ—चवलेसु मडु—सुहुमकेसु पुप्फेसु अप्पसारेसु । आसण्ण—पसण्णेसु य एत्थ मुहुत्ता उ बोधव्वा ॥ १३ ॥
 किंचि क्खणं मुहुत्तं बिंदुं थोगं विपच्चते सिंदुं । वड्डीयते पडिच्छह एवं तु मुहुत्तिओ कालो ॥ १४ ॥
 अणुसुहुमम्मि य काए जति काया पेंडिता व गणिता वा । तति तु मुहुत्ता णेया होंति मुहुत्तप्पमाणम्मि ॥ १५ ॥
 ॥ महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय कालप्पमाणो चउत्थो ॥ ४ ॥ छ ॥

[पंचमं पडलं]

25

भुम—णयण—कण्ण—णासोडु—पोरुसंगोडु—अंगुलिगगहणे । एतेसि भागाणं उवकरण—उवक्खरविधीसु ॥ १ ॥
 अतिसुहुमे मोत्तूणं खुड्डलकेसु वि य सव्वसत्तेसु । आमास—सद्—दंसण—कक्खेसु दिवसा मुणेतव्वा ॥ २ ॥
 जलुका—लूता—कोलिक—घरपोपलिकासु चेव अहिलूका । भिंगारी—औलकासु चेव दिवसा विधीयंते ॥ ३ ॥
 भमरा मधुकर तोड्डा पतंग तध मच्छिका मगस(मसग)केसु । चउरिंदियतसपाणेसु एत्थ दिवसा विधीयंते ॥ ४ ॥
 कडुकालमच्छसिकुवलिका तध विकलका व पलकेसु । छिर—कुरिल—सिगिलि—मंडूकलिआसु य तधेव ॥ ५ ॥ ३०

१ वारवत्ते ण्णां हं० त० विना ॥ २ सुक्कपं हं० त० विना ॥ ३ के तु पं हं० त० विना ॥ ४ सिद्धं हं० त० विना ॥ ५ अलं हं० त० ॥ ६ ल—कुभिगिल—मं हं० त० विना ॥

- गोम्मी-कीडाग-विच्छिय-सुरगोपक-इंदकाइयासु वि य । उंदुर-सरड-कखालग-खुडुलग-चतुप्पदे दिवसा ॥ ६ ॥
 पंथोलग-वतिभेदग-गहकंडुक-कुंभिकारीआसु वि य । चोलाडिगासु कुलिगएसु केसु दिवसा विधीयंते ॥ ७ ॥
 धम्मणग-पंडरागं दासएसु आमलग-जंबु-लप्फलेसु । अंबाडाग-कर्मदे सीवण्णे उंबरफलेसु ॥ ८ ॥
 रातण-तौडण-सीडा-लउसु-तुंबुरु-पिप्पलफलेसु । सैलुफल-कोलफल-वारमट्टिएसु य तधेव ॥ ९ ॥
 5 घरिफलं करिलेग-लोमसिग-बिडालकेसु य तधेव । वार्तिगण-वालुंकेसु चेव दिवसा विधीयंते ॥ १० ॥
 पूगप्फल-कक्कोलग-लवंग-जातीफलेसु य तधेव । मुद्दीगा-खज्जूरा-पिप्पलि-मरिएसु य तधेव ॥ ११ ॥
 तणफलगते मुहुता गुम्मफलेसु दिवसा मुणेयव्वा । वल्लिफलेसु य पक्खा मासा रुक्खे विधीयंते ॥ १२ ॥
 एत्थ विधी हालिसवित्थएसु पक्खा हवंति मासा वा । वट्टेसु य हस्सेसु य फलेसु दिवसा विधीयंते ॥ १३ ॥
 अज्ज व हिज्जोऽवसरे णियट्ठियं जेव कित्तिदिवसा तु । तंदेसि-तण्णयोगेसु चेव दिवसा विधीयंते ॥ १४ ॥
 10 पाडिवदाती[या]सु य तिधीसु चाउद्दसावसाणेसु । दिवसपरिकित्तणाय तु एत्थ तु दिवसा मुणेतव्वा ॥ १५ ॥
 बालगसद्दे बालगमोहणते बालगाभरणे य । बालम्मि य पुप्फफले एत्थ तु दिवसा विधीयंते ॥ १६ ॥
 खुडुलकाया तध जावतिका पेंडिता व गणिता वा । तति दिवसा णातव्वा होति तु दिवसप्पमाणेणं ॥ १७ ॥

॥ पडलं पंचमं ॥ ५ ॥ छ ॥

[छट्ठं पडलं]

- 15 जंधोरु-बाहु-गीवाआमौसे तध सहत्थ-पादानं । उवकरण-भूसणकतेसु चेव तह पक्खिओ कालो ॥ १ ॥
 तरुणगणर-णारिगणे तरुणवयेसु वि य सव्वसत्तेसु । मज्झिमकायेसु चतुप्पदेसु पक्खा विधीयंते ॥ २ ॥
 अय-अमिल-सुणग-सूअर-मग-पसत-विलालजातीसु । वाणर-सस-लोपासु चेव पक्खा विधीयंते ॥ ३ ॥
 तित्तिर-वट्टक-लावक-परभुत-सुक-सालका-रिकिसिकेसु । काक-कपोतेसु कर्पिजलेसु पक्खा विधीयंते ॥ ४ ॥
 वच्छ-कोट्टकवास-सतपत्त-वंजुल-कलहिभीसु पि य । सूकरिका-मंचुलकेसु चेव पक्खा विधीयंते ॥ ५ ॥
 20 आडवक-काक-मेज्जुक-सेडीका-टेट्टि-कालकेसु पि य । णडकुक्कुडिका-कातंबकेसु पक्खा विधीयंते ॥ ६ ॥
 वासिकासु फलासु दिरुलेसु मरकलेसु य तधेव । मग्गवच्छक-सिगालकेसु पक्खा विधीयंते ॥ ७ ॥
 अंधक-दालिम-तीतिणि-बिल्लि-पल्लालु-केयवसकेसु । मूल-कक्खारुक-तवुसकेसु पक्खा विधीयंते ॥ ८ ॥
 मज्झिमके पुप्फफले मज्झिमकायेसु चेव दव्वेसु । अट्टागते य कच्छागते य पक्खा विधीयंते ॥ ९ ॥
 इत्थीहि जाण पक्खे पक्खच्छिड्डं णपुंसके जाणे । पुरिसम्मि जाण मासं मिधुणजुगले अहोरत्तं ॥ १० ॥
 25 इत्थीसु अप्पसारेसु बाहिरासूणो भवति पक्खो । आचरितमहासारासु थीसु ते पक्खमो जाण ॥ ११ ॥
 सुहपस्सरायपस्सं उभयोपस्सं सरीरपस्सं ति । पडिपक्खो ति सपक्खो ति पक्खवादो ति वा पक्खो ॥ १२ ॥
 अट्ठो ति अट्ठमासे अंजलिमद्धं सरीरमद्धं च । पुप्फ-फलस्स य अट्ठं देसद्धं मंडलद्धं च ॥ १३ ॥
 पक्खस्स तु विणियोगेण जाण पक्खेण चेव संपत्तिं । पक्खेण व जं कीरति तेण तु पक्खा विधीयंते ॥ १४ ॥
 मज्झिमकायेसु तधा यति काया पिंडिता व गणिता वा । तति पक्खा णातव्वा भवंति पक्खप्पमाणम्मि ॥ १५ ॥
 30 ॥ पडलं [षष्ठं] ॥ ६ ॥ छ ॥

१ चम्मणगं हं० त० ॥ २ सेणुफलं हं० त० विना ॥ ३ मासे य विहत्थदोषाणां हं० त० ॥ ४ परसुअक्खसालं हं० त० ॥ ५ मंतुभुकेसु हं० त० ॥ ६ वामिकां हं० त० ॥ ७ मचलकेसु हं० त० ॥ ८ मग्गमच्छं हं० त० विना ॥ ९ लुके तवुसके हं० त० विना ॥ १० णेयव्वा हं० ॥

[सत्तमं पडलं]

कडि-उदर-पट्टि-उरसी-सीसामासे य मासिको कालो । आभरणपक्खरगते एतेसि चेव भागाणं ॥ १ ॥
 हय-गय-खरोट्ट-गो-माहिसेसु सत्तेसु कायवन्तेसु । मासा विण्णातव्वा सव्वेसु महासरीरेसु ॥ २ ॥
 वग्घ-उच्छ[भल्ल] दीपिक-तरच्छ-खग्ग-वगसावदेसु पि य । रोहित-पसत-वराहेसु चेव मासा विधीयन्ते ॥ ३ ॥
 विपुलणदीमच्छेसु मज्झिमकेसु य समुद्दमच्छेसु । मासा विण्णातव्वा गाह-मगस्-सुंसुमारेसु ॥ ४ ॥ 5
 हंस-कौचेसु किण्णरेसु कुकुड-मयूस्-कलहंसे । मासा विण्णातव्वा पारेवत-चक्रवागेसु ॥ ५ ॥
 भासकुण-महासकुणा दिग्घग्गीवा य दिग्घपादा य । मासेसु समक्खाता पारिप्पव-ढंकरालीओ ॥ ६ ॥
 गंदो कुरलो दलुका भासा वीरल्ल-ससघाती । मासेसु समक्खाता छिण्णंगाला ककीओ य ॥ ७ ॥
 सव्वे य दीहकीला दव्वीकर-मोलिणो य णातव्वा । मासेसु समक्खाता भिगारी गोनसा चेव ॥ ८ ॥
 उग्गविसेसु मुहुत्ता सप्पेसु हवन्ति विसविसेसेण । सप्पेसु तु मंदविसेसु एत्थ मासा समक्खाता ॥ ९ ॥ 10
 सेतेसु होति जोण्हा कालो पुण होति कण्हसप्पेसु । चित्तेसु माससंधि संझा पुण होति लोहितके ॥ १० ॥
 तलपैक्क-णालिकेसु कपिट्ट-लकुलेसु < चेव पणसेसु । > कार्लिग-तुंब-कूभंडगेसु मासा विधीयन्ते ॥ ११ ॥
 पेंडीसु य गोच्छेसु य पुप्फ-फलेसु य सर्वेट-णालेसु । पोट्टलकभारबद्धे जमलकबद्धे ठियामासे ॥ १२ ॥
 भंडेसु(सू)वकरणेसु य पुप्फ-फलेसु वि य कायवन्तेसु । दीहेसु वित्थतेसु य महासरीरेसु पि य मासा ॥ १३ ॥
 वैतोपकरण-पुराण-सुत्तेरक-सुतीसोपकेसु सव्वेसु । रुपियमासेसु सुवण्णमासके मासमो बूया ॥ १४ ॥ 15
 [.....] पायग्गहणे य दोण्हं पि बाहुणं जाण । उभयोपक्खाय समागतम्मि मासा विधीयन्ते ॥ १५ ॥
 सव्वमहाकायेसु वि जावतिया पिंडिता व गणिता वा । तति मासा णातव्वा होति मासप्पमाणेणं ॥ १६ ॥

॥ पडलं सम्पत्तं (सत्तमं) ॥ ७ ॥ छ ॥

[अट्टमं पडलं]

एतेसु चेव अतिकार्येसु तु भवन्ति वस्साणि । कुल-जाति-माण-रूवाधिके य बहुमुल्लसारे य ॥ १ ॥ 20
 उम्मज्जितूणमंगे उम्मट्टेसु वि य सव्वगत्तेसु । विच्छिण्णथितामासे उड्डंगाणं व आमासे ॥ २ ॥
 देविंदो णागिंदो असुरिंद-महिंद-नखरिंदो ति । सीहो हयो गयो णखरो ति संवच्छरुप्पाया ॥ ३ ॥
 सुरवति धणवति जलवति पोतवती णखती णइवति ति । तारावती गहवती जोतिपती जोतिसपति ति ॥ ४ ॥
 आयरिय-उवज्झाया अम्मा-पिउ-गुरुजणे य सव्वम्मि । देवा रिसयो ति य साधवो ति संवच्छरुप्पाया ॥ ५ ॥
 जगपति गणपति कुलपति जूहपति मिगपति ति वस्साणि । गोपति पयापति ति य वस्साणि भवन्ति एतेसु ॥ ६ ॥ 25
 जंबुद्दीवकधासु य अत्थगिरीसु उववण्णणायं च । वस्सधस्-वस्सपरिकित्ताय वस्साणि जाणेज्जो ॥ ७ ॥
 दीवो ति समुद्दो ति य अकम्मभूमि ति कम्मभूमि ति । तेलोकं पुढवी पव्वतो ति संवच्छरुप्पाता ॥ ८ ॥
 अतिदूरं अतिदिग्घं अतिम्महन्तेसु अतिमहग्घेसु । लंगे कोट्टित्त-धणिते धणितबद्धे य वस्साणि ॥ ९ ॥
 चिर-दीह-सस्सत-विमदिर्तेहि संवच्छरेहि जाणाहि । थिर-बलिक-धुवक्कारे अतिबहुमच्चत्थकारे य ॥ १० ॥
 सव्वेसि भावाणं चिरणिव्वतीय जाण वस्साणि । जोतिसमंडल-पुढवीमंडलं एक्कचक्के य ॥ ११ ॥ 30
 णगरणिवेसकतेसु य पासादुदधी-णदीकधायं वा । हत्थीणं व पदेसू भवन्ति संवच्छरुप्पाता ॥ १२ ॥

१ रद्धो कुं हं० त० ॥ २ कीडा य दं हं० त० विना ॥ ३ पच्छणां हं० त० ॥ ४ यबंधेसु हं० त० विना ॥
 ५ वेओवयकपुं हं० त० ॥ ६ सु उभयं ति वं हं० त० ॥ ७ गयवई जोगवई जोतिसं हं० त० ॥ ८ जलपति
 हं० त० ॥ ९ तवणिणं वणिं हं० त० ॥

- हत्थी पव्वतमत्तो अस्से य भवन्ति मालवन्तो त्ति । वसभो य हत्थिमेत्तो त्ति बेन्ति संवच्छरुप्पाता ॥ १३ ॥
 पक्खीसु माणुसेसु य कीडेसु चतुप्पदेसु य तधेव । पुप्फफले दव्वेसु य वस्साणि अतिप्पमाणेसु ॥ १४ ॥
 अतिकायेसु वि य तधा जति काया पिंडिता व गणिता वा । तति वस्सा णेतव्वा भवन्ति वस्सप्पमाणम्मि ॥ १५ ॥
 वस्सगणणाविभंगं पण्णरसविधं पुणो वि वोच्छामि । पंचहि वि मूलवत्थू एकेण तधा विभगेणं ॥ १६ ॥
 5 भिण्णदसक्खपमाणं वस्साण पुणो मुहुत्तवग्गम्मि । दस चत्तारि य वस्साणि जाण दिवसप्पमाणेसु ॥ १७ ॥
 पण्णरस चेव वस्सा पक्खपमाणेण होंति णातव्वा । मासपमाणे तीसा चत्ता पण्णा य सट्ठी य ॥ १८ ॥
 सट्ठी व सत्तरी वा असिती णउती सयं च जाणेज्जो । वस्सपमाणुप्पाते वस्साण सहस्सवग्गे वा ॥ १९ ॥
 मुहुत्तप्पमाणमसारे तिण्णेव भवन्ति वस्साणि । छम्मासमसारेसु तु तध य महासारवंतेसु ॥ २० ॥
 दिवसप्पमाणमसारे दस वस्साणि तु भवन्ति णेयाणि । चोद्दस मज्झिमसारे वीसा य भवे महासारे ॥ २१ ॥
 10 पक्खपमाणमसारे पण्णरसेव तु हवन्ति वस्साणि । तीसं व मज्झसारे पणतालीसा महासारे ॥ २२ ॥
 मासं पमाणसारे तीसा चत्ता य मज्झसारम्मि । पण्णासा सट्ठी वा मासपमाणे महासारे ॥ २३ ॥
 वस्सपमाणमसारे सट्ठी वा सत्तरि व्व वासाणि । मज्झिमकम्मि असीती णवुती व सतं महासारे ॥ २४ ॥
 कोडी अपरिमितं वा अपरिमितेहिं मुण सव्वभावेहिं । ऊणाधिको दसाहो संजोगविहीहिं बोधव्वो ॥ २५ ॥
 जे पुव्वं उप्पण्णा पंचविधा विसमकं उदीरन्ति । जे आसण्णा बहुका धुवा य ते वग्गमूलाणि ॥ २६ ॥
 15 जेति मिस्सा उग्घाया पंचविहा विसमकं उदीरन्ति । जे आसण्णा बहुका धुवा य ते वग्गमूलाणि ॥ २७ ॥
 जे थोवा जे तुल्ला दूरे पच्छा य जे उदीरन्ति । ते वस्सदसक्खाणं वग्गगं होति णातव्वं ॥ २८ ॥
 वस्सपमाणुप्पाता जति तति वस्साणि होंति अंगेसु । जति मूले विण्णाते पुणरवि एते उदीरन्ति ॥ २९ ॥
 मासपमाणुप्पाता जति तति मासा हवन्ति अंगेसु । जति मूले विण्णाते पुणरवि एते उदीरन्ति ॥ ३० ॥
 पक्खपमाणुप्पाया जति तति पक्खा हवन्ति अंगेसु । जति मूले विण्णाए पुणरवि एए उदीरन्ति ॥ ३१ ॥
 20 दिवसपमाणुप्पाता जति तति दिवसा हवन्ति अंगेसु । जति दिवसदसक्खाणं पुणरवि एते उदीरन्ति ॥ ३२ ॥
 जति तु मुहुत्तपमाणा तति तु मुहुत्ता हवन्ति अंगेसु । जति वस्सदसक्खाणं पुणरवि एते उदीरन्ति ॥ ३३ ॥
 मूलदसक्खे ऊणे दसऽट्ठ वस्साणि अग्गैकं होति । मासा वा पक्खा वा दिवस—मुहुत्ता व णातव्वा ॥ ३४ ॥
 वस्साणि य विण्णाते केवतिया केत्तियाणि वि पुणो वि । तावतिया णातव्वा कतम्मि पण्णाविसेसम्मि ॥ ३५ ॥
 सुहुमाणि बादराणि य जति दव्वाणि गणणागते होंति । तति वस्सा णातव्वा पक्खा दिवसा मुहुत्ता वा ॥ ३६ ॥
 25 जध कालो तध लाभो तध य सुहं जीवियं तध य दिग्घं । तध दव्वाणं सारो तध ठाणगुणा य बोधव्वा ॥ ३७ ॥

॥ पडलं [अष्टमं] ॥ ८ ॥ छ ॥

[णवमं पडलं]

- पासुत्त निसीधं त्ति य मोण णिसद्दो तधेव थिमियं त्ति । मंतो अ रहस्सं त्ति य अपरिमितो जायते कालो ॥ १ ॥
 दुक्खं उव्वेलेउं वल्लिपरिपल्लकं त्ति गुपितं त्ति । एयादीया सदा पडिरूवा दिग्घकालस्स ॥ २ ॥
 30 धण—धण्ण—रयणरासीसु चेव जुद्धे व सव्वसत्ताणं । अपरिमिता उप्पाया अपरिमिते होंति कालम्मि ॥ ३ ॥
 लोको वेदो समयो अत्थो धम्मो तधेव कामो त्ति । अपरिमिता बोधव्वा अविभत्तसमासवग्गेसु ॥ ४ ॥
 वंदं संघो त्ति गणो महाजणो आउलं णिकायो त्ति । रज्जं देसो त्ति य जणपदो त्ति कालो अपरिमेज्जो ॥ ५ ॥

१ 'मज्झे अ' हं० त० ॥ २ वत्तव्वा हं० त० ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतोऽयं श्लोकः हं० त० एव वर्तते ॥ ४ हस्तचिह्नान्तर्गतोऽयं श्लोकः हं० त० एव वर्तते ॥ ५ 'गिगकं हं० त० विना ॥ ६ वल्लि परिपल्लं त्ति अपि' ॥ हं० त० ॥

चिंता मणोरधो त्ति य हितयागूतं त अंधकारो त्ति । ठइयाऽऽवस्तिं अंतेपुंरं त्ति सुद्धी समग्गो त्ति ॥ ६ ॥
वीयं रासी पैयालितं त्ति भरितं^३ त्ति संत त्ति । अणुमाणं संकं त्ति य अपरिमितो जायते कालो ॥ ७ ॥
सव्वे जीवणिकाया अचला य अविकंपिणो चेव । अपरिमिता णातव्वा कायसमासोवलद्धीयं ॥ ८ ॥

पुढवि दग अंगणि मारुय आकासं सह (तह) य मूलजोणीओ ।

अपरिमिता णातव्वा कायसमासोवलद्धीयं ॥ ९ ॥

निव्वट्टणा विभत्ता एते ज्जेव तु भवंति संखेज्जा । अविभत्ता य अणिव्वट्टिता य ते चेव संखेज्जा ॥ १० ॥
देविद्धी देवजुती पलितोवम सागरोवमं व त्ति । कोसो [य] णिधि त्ति महाणिधि त्ति कालो अपरिमेज्जो ॥ ११ ॥
अतिअग्गी अतिवातो अतिवासं भेदितं डमरितं त्ति । सज्जीव-ऽज्जीवाणं अतिउदयं सव्वदव्वाणं ॥ १२ ॥
अतिपेम्ममतिपदोसो अतिथुति-अतिगज्जियकधासु । अतिसद्दे अतिअव्वाउले य कालो अपरिमेज्जो ॥ १३ ॥
अलसर्मभारो भीरू अतिकिमणो मंथरो त्ति वा सद्दे । मज्झत्थो त्ति पमत्तो त्ति पंगुलो दिग्घपस्सि त्ति ॥ १४ ॥ 10
एवतिया सव्वे चिरकारी जे चिराहि व भवंति । एतेसि उप्पत्तीय दीहकालो हवइ णेयो ॥ १५ ॥
साहसिको मेहावी लहुको सद्दे त्ति मुक्कहत्थो त्ति । चंदो सूरु दच्छे त्ति चेव सिग्घो हवति कालो ॥ १६ ॥
आदि णिधणं च जस्स तु ण णज्जते णज्जते य वुत्तंते । एरिसका उप्पाता विण्णातव्वा अणंतत्ते ॥ १७ ॥
गब्भा सुद्धो मासे जावज्जीवे तवे य नियमे य । कोमारब्भचरे य अणंतं णिहिसे कालं ॥ १८ ॥
पाली मेरा सीमंतिक त्ति सुगति त्ति छिण्णपंथो त्ति । पागारो फलिहो त्ति य वति त्ति कालो णिरुद्धो त्ति ॥ १९ ॥

कालम्मि णिरुद्धम्मि उ दिट्ठं आगत समागतं वा वि ।

लेद्धं वा उप्पण्णं तं वा वि आगते पुच्छियं सव्वं ॥ २० ॥

जं जावतितं लभती जं मग्गति तं च दिस्सती ताधे । जं इच्छति तं उप्पज्जते पडिपुच्छणाकाले ॥ २१ ॥
जं चिच्छते करेति य कम्मं सिप्पं णयं विभंगं वा । [.....] णिप्पधं च णाणाभिगमणं वा ॥ २२ ॥
आहारे णीहारे सरीरमब्भंतरे व मज्झे वा । सयमप्पणो परस्स व भित्तमभित्तस्स वा किंचि ॥ २३ ॥ 20
इच्छति विसयगुणं वा कंचि धम्म-ऽत्थ-कामजोगं वा । अण्णं वा सुभमसुभं तं चेव णामं च तंवेलं ॥ २४ ॥
सव्वम्मि कडे दिण्णे दिट्ठे सम्माणिते वा वि । मणदुक्खं णिच्छिण्णं संपत्ति इच्छितं जाण ॥ २५ ॥
इच्छितसंपत्तीसु वि तसकायाणं च थावराणं च । तंवेलमुवणतासु तु उववणत्थं वियाणेज्जा ॥ २६ ॥
सज्जीव-ऽज्जीवेसु य उवभोगेसु वि य माणुसाणं पि । तंवेलमुवणतेसु य उववणत्थं वियाणेज्जो ॥ २७ ॥

॥ पडलं [णवमं] ॥ १ ॥ छ ॥

25

[दसमं पडलं]

संवच्छरं महामंडलेसु मज्झिमगमंडले मासं । खुडुलगमंडलेसु य अहोरत्तं वियाणेज्जो ॥ १ ॥
णक्खत्तमंडलं^१ इद्दगमंडले चंदमंडले मासा । [.....] सूरमंडलं^२ वस्समो जाणे ॥ २ ॥
जाणेध मंडलेसु तिविधेसु खुडुलग-मज्झिम-महंते । दिवसं पक्खं छम्मासमेव वित्थारजोगेणं ॥ ३ ॥

१ 'पुरम्मि सु' हं० त० ॥ २ 'वेया' हं० त० ॥ ३ 'तं निसंभंति' हं० त० विना ॥ ४ 'अग्गि मा' हं० त० विना ॥
५ 'णिज्जं ठियायए' चेव हं० त० ॥ ६ 'गव्विय' हं० त० ॥ ७ 'एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः' हं० त० नास्ति ॥ ८ 'मत्तारो' हं० त० विना ॥ ९ 'चंदो' हं० त० विना ॥ १० 'एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं' हं० त० नास्ति ॥ ११ 'सुभगब्धि छि' हं० त० ॥
१२ 'वा वि । आगते पुच्छियं सव्वं लाभालाभं वियागरे' ॥ २० ॥ जं 'जाव' सि० ॥ १३ 'हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः' हं० त०
एव वत्ति ॥ १४ 'जं तिच्छते' हं० त० विना ॥ १५ 'भिमत्तणं सं ३ पु० ॥ १६ 'लद्धासमं' हं० त० ॥ १७ 'ले पुहमंडले' वस्स' सि० ॥ १८ 'मणंते' हं० त० विना ॥

दारककीलण्णेषु वि चतुचकीया भवेज्ज उववत्ती । चत्तारि अहोरत्ते व जाण चत्तारि वा मासे ॥ ४ ॥
 दारककीलण्णेषु वि बे चक्कलगाणि होंति पुत्ताणि ।
 बे होंति अहोरत्ता बे वा मासा, विधीयंते ॥ ५ ॥

- पल्लकैक—चक्कलगे दिवसे मासे व जाण चत्तारि । धाडीचक्के मासो वस्सं तु भवे सकडचक्के ॥ ६ ॥
 5 एतेण कारणेण तु मूलं कालस्स सुदु कातव्वं । जम्मि भवंति मुहुत्ता दिवसा मासा व वस्सा वा ॥ ७ ॥
 पुप्फ—फल—भूसण—ऽच्छादणे य उवकरण भत्त पाणे वा । सज्जीवा—ऽजीवं वा उप्पज्जति जं णिमित्तम्मि ॥ ८ ॥
 जध तू रससंभूतं जध य महग्घं जहो महासारं । जध जाती अविसिट्ठं तध दिग्घं णिहिसे कालं ॥ ९ ॥
 जे कसका जे य विपुलसरीरा ते रसदीहकालभूया । विपुलसरीरेसु य जे कसका दिग्घसकालजुता ॥ १० ॥
 सिग्घमणिट्ठप्पाते ओयवति सिग्घमो अणिट्ठस्स । अभिलसितसिग्घलंभो सिग्घं इट्ठोपपत्तीसु ॥ ११ ॥
 10 जध मूलं तध थोगं जध य समग्घं अजातिमतं वा । जध सुलभमप्पसारं तध थोगं णिहिसे कालं ॥ १२ ॥
 पीतिकरे अणुबद्धो भवति धणइट्ठधणसुहस्स । दुक्खस्स वि अणुबंधो भवति अणिट्ठणुबंधेसु ॥ १३ ॥
 पच्चग्ग—सरस—णव—तरुण्णेषु दिवसा हवंति पक्खा वा । परिणतजुण्णगते रसेसु मास—संवच्छरे जाण ॥ १४ ॥
 मासपमाणे य महम्मि उत्तविसंमं व यमलिते मासा । विसंमेधेसु तु पक्खा समागमागमसंमेसु वस्साणि ॥ १५ ॥
 जं दिस्सते छलंसं उव्वंते छ उदू वि जाणेज्जा । जं वा सण्णा असितं तं वा तं ते उदुं जाण ॥ १६ ॥
 15 चुंभलका पेलग—मुकुड—वेट्ठणे मालिकासु वट्ठासु । सीसावकम्मि सव्वम्मि उत्तमतं विजाणीया ॥ १७ ॥
 पुण्णामेसु तु पुप्फोवकेसु मासा व होंति वासा वा । पुप्फोवकत्थिणामे रतीओ होंति पक्खा वा ॥ १८ ॥
 संवच्छरेसु कुडवेट्ठणेषु साराणुसारं व वदे । पुप्फोवकेसु मासा पक्खा दिवसा य णातव्वा ॥ १९ ॥
 अल्ले मल्ले सव्वम्मि मुहुत्ता अल्लसरभावेण । परिमलित—मिलाणेण य विलंबितं कालमो जाण ॥ २० ॥
 एसेव सव्वदव्वेसु गमो पाणे व भोयणे वा वि । सदे वा रूवे वा एण गमेण गंतव्वं ॥ २१ ॥
 20 ॥ [पडलं दसमं] ॥ १० ॥ छ ॥

[एक्कारसमं पडलं]

- पुरिमंगाणामासे पुव्वदिसाए य ओवलद्धीए । कत्तिय—मग्गसिर—पोसमासेसु जाणीया ॥ १ ॥
 संवच्छरलद्धीयं अगेयं मग्गसीस पोसं वा । [जाणे] संवच्छरमो पुव्वदिसि पुरत्थिमंगेसु ॥ २ ॥
 दक्खिणगत्तामासे पुणो य दक्खिणदिसोवलद्धीयं । माहं फग्गुण चेत्तं वेसाहं वा वदे मासं ॥ ३ ॥
 25 संवच्छरलद्धीयं संवच्छर—माह—फग्गुणं वा वि । चेत्तं वेसाहं वा दक्खिणदिसि दक्खिणंगेसु ॥ ४ ॥
 पच्छिमगत्तामासे अवरदिसायं च ओवलद्धीयं । जेट्ठमूला—ऽऽसाढा—सावणमासं च मासेसु ॥ ५ ॥
 संवच्छरलद्धीयं संवच्छरमिद विस्स विण्हं वा । संवच्छरमो बूया पच्छिमदिसि पच्छिमंगेसु ॥ ६ ॥
 वामे गत्तामासे पुणो य उत्तरदिसोवलद्धीयं । पोट्ठपदऽस्सोजं वा मासं मासेसु जाणीया ॥ ७ ॥
 पोट्ठपदं वा संवच्छरं तु संवच्छरं च अस्सोयं । संवच्छरलद्धीयं उत्तरदिसि वामगत्तेसु ॥ ८ ॥

१ उववज्जि हं० त० विना ॥ २ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ३ "ककुच" हं० त० ॥ ४ व पक्खा वा हं० त० ॥ ५ "हा सहामासे" हं० त० ॥ ६ "लजुता" हं० त० विना ॥ ७ "ग्घलाभा सि" हं० त० ॥ ८ जधुमूलतंधव्वोगं जध हं० त० विना ॥ ९ भवति सव्वअणि" सि० ॥ १० पक्खो हं० त० ॥ ११ "समं धयमलिते मासा" हं० त० विना ॥ १२ "समग्घसु" हं० त० ॥ १३ "समुसु" हं० त० ॥ १४ असितं यव्वा तं हं० त० ॥ १५ चुवल कायेल" हं० त० ॥ १६ "ण्णामासे तु" हं० त० विना ॥ १७ "सु हुड" हं० त० ॥ १८ अण्णे म" हं० त० विना ॥ १९ अण्णस" हं० त० विना ॥ २० ॥ २० एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति ॥ २१ च सेसेसु हं० त० ॥

उद्धंगाणामासे पादुब्भावे य थावराणं तु । फग्गुणमासाढं वा पोट्टपदं वा वदे मासं ॥ ९ ॥
 संवच्छरलद्धीयं फग्गुणमासाढं पोट्टपादो वा । संवच्छरमो बूया दढ-थावर-सासते भावे ॥ १० ॥
 चलमंगाणामासे पादुब्भावे य चंचलाणं तु । सावणमासं बूया मासुप्पातोपलद्धीय ॥ ११ ॥
 चलमंगाणामासे पादुब्भावे य चंचलाणं च । संवच्छरलद्धीयं सावणसंवच्छरं बूया ॥ १२ ॥
 सावण पोट्टपदं वा अस्सोयं कत्तियं च मासेसु । पुण्णदग्गभायणेसु य निद्धंगाणं च आमासे ॥ १३ ॥ छ ॥ ५
 सावण पोट्टपदं वा अस्सोयं कत्तियं च जाणीया । संवच्छरमो बूया णिद्धे वासोवर्लिगे य ॥ १४ ॥
 चेत्तं वेसाहं वा जेट्टामूलं तधेव आसाढं । मासं मासेसु वदे रुक्खे गिम्होवर्लिगे य ॥ १५ ॥
 मग्गसिर पोसमासं माहं वा फग्गुणं व जाणीया । मासेसु सीतभावे तधेव हेमंतर्लिगे य ॥ १६ ॥
 तं चेव जधुद्धिद्वे संवच्छरलद्धियं च जाणेज्जो । संवच्छरे तु चउरो सीते हेमंतर्लिगे य ॥ १७ ॥
 णीहारेसु तु पक्खा उज्जुभावेसु पुण संथिते मासा । अहोस्ते [पुण] पक्खं वदे तु पक्खप्पमाणम्मि ॥ १८ ॥ १०
 ॥ [पडलं एक्कारसमं] ॥ १९ ॥ छ ॥

[बारसमं पडलं]

तैरुणंकुर-किसल-पत्तलकेहि अंडकित-जालकेहि वि य । आसित-पोसित-ओकुंभआगमे पाउसं जाणे ॥ १ ॥
 अज्जुण-कुडय-कतंबे सिलिंध-कंदलि-कुडुंबके चेव । ददुर-मयूरैगज्जितपडिरूवे पाउसं बूया ॥ २ ॥
 खेत्तप्पवत्तणे बीजणिग्गमे बीयवावणे यावि । गहकरण-पज्जणेसु य उदगपरणालिकरणे य ॥ ३ ॥ १५
 वासारत्तिकभंडगहसुयणकावरुत्तकहणेसु । वाहणपडिसामण्णेसु य जलं ति णवपाउसं बूया ॥ ४ ॥
 साढिकसीहलंबंधयतववेसिसगणिअगणिकक्खदिसेसु । णिडुलसंलावेसु य आसाढं मासमो बूया ॥ ५ ॥
 हरितं व सहलं ति व पडिरूढतणं ति जातसस्सं ति । णिद्धिज्जति सस्सं ति य सावणमासं विजाणीया ॥ ६ ॥
 पुण्णपलोत्थितदकभायणेसु अच्छयकुप्पवट्टे य । वहलकअच्छणीक ति पोट्टपादो भवति मासो ॥ ७ ॥
 मज्झिविगाढे णेट्टे उलुंबितो वीलेण ति य किलिण्णे । अभिवद्धमाणेण य पोट्टपदं मासमो जाणे ॥ ८ ॥ २०
 इंदसयणे य इंदमहभंडके इंदमोवकरणे य । इंदधणुइंदणामेण पोट्टपादो भवति मासो ॥ ९ ॥
 साली गब्भणिका व ति तिति सुज्जते य वीहित्तिकं । बूया पक्क ति य तिला य ओपुप्फित ति वदे ॥ १० ॥
 अस्साइस्सेइ णवमिक ति णीराणिका वलायं ति । अस्सोयं पुण मासं अब्भुत्थाणे णरपतीणं ॥ ११ ॥
 दारग्घाडि कत्तिय अभया माहातयो सजीवंती । बहुलं मासं बूया वधमोक्खे बंधमोक्खे य ॥ १२ ॥
 उववासो दाणं ति य देवतपूय ति साधुपूय ति । बहुलं मासं बूया उदुंबरभूयो विबुद्धो ति ॥ १३ ॥ २५
 णिव्वट्टमच्छमुदगं विमलणभं सारसा सुरा सरदो । दीवा हसंति तध दंतिक ति दाणं वतोववासो ति ॥ १४ ॥
 देवस्स वा वि र्थवणं उदुंबरभूयो विबुद्धो ति । वसागाधा उवरि उवयुत्ते पुच्छंते सो कालो होति बोधव्वो ॥ १५ ॥
 आधारेतव्वं बाहिरेण तम्मि तु भवंति जे भावा । तज्जाता तरूवा भवंति ते तं पि कालाण ॥ १६ ॥
 पंचिदिएहि पंचहि सह-प्परिस-स्स-रूव-गंधेहि । अगिकत्ते अगिकम्मि य बहुलं मासं विजाणेज्जो ॥ १७ ॥
 पच्छा जक्खो धणकं सुरयितपडदीवरुक्खो ति । मुण मग्गसीसमासं हल्लिसकडे धमकसदे ॥ १८ ॥ ३०

१ भागे हं० त० ॥ २ हस्तचिह्नान्तर्गतोऽयं श्लोकः हं० त० एव वर्तते ॥ ३ मासे हं० त० विना ॥ ४ मासे हं० त० ॥
 ५ तरुणकिलरसकिलपत्तकेहि हं० त० ॥ ६ रमज्जि हं० त० ॥ ७ सत्तप्पवहणे हं० त० ॥ ८ पहणा हं० त० ॥
 ९ सुतणकाधभत्तगह हं० त० विना ॥ १० लवधलवविसेअगणिक हं० त० विना ॥ ११ णिट्टे हं० त० विना ॥
 १२ लणेति य हं० त० विना ॥ १३ सालीगभणकावत्तितं ति सु हं० त० ॥ १४ स्सा अलेई ण हं० त० ॥ १५ णोरा हं० त० ॥
 १६ लाणं ति हं० त० ॥ १७ सहो हं० त० विना ॥ १८ ज्जवणं हं० त० विना ॥ १९ तेवं पि हं० त० ॥

- संगलिगं खीरदुमे चतुप्पदे खीरिणीसु खीरिसु । मुण मग्गसीसमासं सोम्मे वा सोम्मणामे वा ॥ १९ ॥
जाणपवट्टण—यत्तप्पवहणे पुव्वसस्समलणे य । मुण मग्गसीसमासं गिरिजण्णे भूमिजागे य ॥ २० ॥
सीतं हिमं ति वा सीतलं ति दीहमहिला णिसा दीहा । थीउत्तरे जुगलगे य एत्थ पोसो भवति मासो ॥ २१ ॥
इंगालसगडिका—अग्गिचुल्लके तावणे य अग्गिम्मि । गब्भघर—कंबलणिसेवणे य पोसो हवति मासो ॥ २२ ॥
5 थीणं महाजणे पुरिसवद्धणे माहमासमो बूया । पौतकधमासिकत्थे सद्धे ओछाडिते चेव ॥ २३ ॥
सव्वम्मि सीतभावे सायं गीत—अग्गिसेवणाए य । एत्थ वि माहो मासो अणोज्जवांसं विसेसो वा ॥ २४ ॥
णस्—णारीमिधुणगतस्स उस्सवे मेधुणप्पसंगेसु । दितेसु य मुदितेसु य फग्गुणमासं वियाणेज्जा ॥ २५ ॥
सीतक्खयपरिणामे उवगमेसु वि य उण्हभावस्स । णच्चुण्हा सीतेसु य फग्गुणमासं वियाणीया ॥ २६ ॥
आपाणगप्पमोदे उक्कुट्टे गीत वादिते हसिते । परभुयसद्दे चूतकुसुमे य मुण फग्गुणं मासं ॥ २७ ॥
10 जवकिंदीवर—सामाककुसुम—अंदोलका वसंतो ति । फग्गुणमासं बूया मत्तो अंदोलति जणो ति ॥ २८ ॥
मिधुणसमागम—मेधुणकधासु सव्वेसु कोमलंगीसु । फग्गुणमासं बूया छणस्तमंडणासु वि य ॥ २९ ॥
उस्सयमत्तुम्मते वसंतर्लिगे य कामर्लिगे य । एत्थ वि चेतो मासो समे य पुण्णाम—थीणामे ॥ ३० ॥
समुदयमणुबद्धेसु य वसंतर्लिगे य कामर्लिगे य । चेतं मासं बूया समे य थीणाम—पुण्णामे ॥ ३१ ॥
वत्थगते रूवगते चित्तगते चित्तवण्णजोगे य । चेतं मासं बूया चेतो विविधे यऽलंकारे ॥ ३२ ॥
15 पुरुसुत्तरे जुगलगे जव—गोधुमसंगहे गहपतीणं । मुण वेसाहं मासं णिदाघमासे उवणतम्मि ॥ ३३ ॥
पाडल—मल्लिक—वट्टिक—सीतजलनिसेवणेसु य णराणं । मुण वेसाहं मासं वीयणके तालवेट्टे य ॥ ३४ ॥
णिहट्ठधण्णतावे अतिउण्हो वा पवाति वातो ति । तण्हा मगतण्ह ति य जेट्टामूलो हवति मासो ॥ ३५ ॥
तुच्छेसु य लुक्खेसु य दगभायण—णट्टभायणेसु वि य । णदि—कूव—तलागेसु वि जेट्टामूलो हवति कालो ॥ ३६ ॥
अण्हकरकउत्थोऽभितप्पणे छेत्ते पावाक्खयं । आपक्खये व णेहक्खए व जेट्टो ति ता मासो ॥ ३७ ॥
20 णिद्धे वासारतं हेमंतं व मुण सीतवातं सीतभावेणं । उण्हेहि य लुक्खेहि य गिम्हं सुहेहि य मुणेहि ॥ ३८ ॥
जे जम्मि तम्मि भावे तसकाया थावरा व सव्वे वि । तेसि पादुब्भावेण येव तं तं उदुं जाण ॥ ३९ ॥
पुप्फ—फल—भूसण—ऽच्छादणेहि उवकरण—भत्त—पाणेहि । तं तं उदुं वियाणे जं जम्मि उदुम्मि भयमाणं ॥ ४० ॥
देव—मणुस्सा पक्खी चतुप्पद्म जलचरा थलचरा य । जे जं सोभेति उदुं तेहि तु तं तं उदुं जाण ॥ ४१ ॥
सज्जीवा—ऽजीवाणं उवलद्धीयुं वि उ सव्वभावाणं । तं तं उदुं वियाणे जं जस्स उदुस्स भयमाणं ॥ ४२ ॥

२५

॥ पडलं बारसमं ॥ १२ ॥ छ ॥

[तेरसमं पडलं]

- सव्वे रूवविसेसा ८ वण्णविसेसा ९ य पतिविसेसेणं । सुव्वत्तमविण्णाता भवन्ति कालस्स पडिरूवं ॥ १ ॥
सव्वे वण्णविसेसा रूवविसेसा य पतिविभागेणं । अच्चंतं विण्णाता भवन्ति जोण्हस्स पडिरूवं ॥ २ ॥
अच्छीणि चंद—सूरा अग्गी दीवो पभंकरा सव्वे । णाणुज्जोवो तेयो पभ ति जोण्हस्स पडिरूवं ॥ ३ ॥
30 चक्खुपणासे जोती पणस्सते चंद—सूरमत्थमणे । अण्णातमविण्णातेण य कालस्स पडिरूवं ॥ ४ ॥
सुद्धं ति पंडरं ति य विमलं उज्जोतितं पभा व ति । दिवसो ति णीरयो ति य पडिरूवं जोण्हपक्खस्स ॥ ५ ॥
माणोलतिकालाकं पभभंति—नीलं तिमिरंधकारं ति । रत्ती उतासो ति य पडिरूवं कालपक्खस्स ॥ ६ ॥

१ पेतकधमसिकच्छे हं० त० ॥ २ वासं ति भस्सो य हं० त० विना ॥ ३ पीडयमं हं० त० ॥ ४ य सुण्हेसु य हं० त० ॥ ५ छत्ते य वाक्यं हं० त० विना ॥ ६ ८ ९ एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति ॥

थेकितं रितं ति व लंछितं ति पडिसामितं ति णिक्खितं । अव्वत्तमदेसं ति य पडिरूवं कालपक्खस्स ॥ ७ ॥
 उब्धिण्णं मुक्कमवंगुतं ति पागडियं दंसियं बहिद्धं वा । सुव्वत्तं दिस्सति पागडं ति जोण्हस्स पडिरूवं ॥ ८ ॥
 खुव्वति मारमरीति सुज्झति ति ८० जोण्हस्स [जाण] पट्टवणं । विमलं सुद्धं परिमज्जितं ति ८० जोण्हस्स पडिरूवं ॥ ९ ॥
 मइलतिकेणं कितकालगो ति कालस्स जाण पट्टमणं । मइले कालकियं ति य भवंति संपुण्णकालस्स ॥ १० ॥

॥ पडलं [तेरसमं] ॥ १३ ॥ छ ॥

5

[चोदसमं पडलं]

एगदिवसप्पमाणे एगंगे एगमाभरणगते य । एक्कंगियउवकरणे सत्तेसु य एक्कचारीसु ॥ १ ॥
 बिगुलिगहणे बिसु एक्कएसु आभरणएसु जमलेसु । मिधुणचरसत्तजमले जुवकरणे बेट्ठिओ कालो ॥ २ ॥
 भुमंगतर-णासगे तिक-हणु-मज्झक्खयंतरे चेव । पोरिसि सवत्थि-सीसे तिगुलिगहणे तियं बूया ॥ ३ ॥
 ओणत्तमुत्थितमज्जियते य उल्लोइते [य] हसिते य । णट्टे गीते वाइते चउक्के य चतुरंता ॥ ४ ॥ 10
 चउरंगुलिगहणेसु य [.....] चउपुडागते य । पादतल-करतले बिजुगलेसु चतुरत्तिओ कालो ॥ ५ ॥
 पंचंगुलिगहणेण ये जणहितयाणं व गहणजोगेण । सयणा-ऽऽसणे सपुरिसे य पंचरत्तो भवति कालो ॥ ६ ॥
 गुप्फ-मणिबंधगहणेसु बिसु य तिगेसु य तधेव जाणीया । बिअसहिते य चउक्के त्रियाण छरत्तियं कालं ॥ ७ ॥
 तियसहिते [य] चउक्के बितिकम्मि य एक्कएण सहितम्मि । एक्कसहितेसु तिसु वा बिएसु सत्ताहिओ कालो ॥ ८ ॥
 अट्टसु य एक्कएसु बिसु य चउक्केसु चउसु व बिएसु । [.....] ॥ ९ ॥ 15
] तिगतिगुणे णवगणणे कते य जाणे णवाहं ति ॥ १० ॥
 पंचबिगेसु दसाहो दसाहिभागे दसक्खगणिते य । कच्छवकंजलिकरणे उवणीतदुहत्थलंभे य ॥ ११ ॥
 पंचसहिते दसक्खे मासद्धे पक्खिते य पक्खे य । पण्णरसाहं जाणे पण्ण[रस]सु एक्कगणतेसु ॥ १२ ॥

॥ पडलं [चोदसमं] ॥ १४ ॥ छ ॥

[पण्णरसमं पडलं]

20

पुण्णामेसु य दिवसं थीणामेहिं रयणिं वियाणेज्जो । दिवसं दिवाचरेहि य रत्ती रत्तिविचारेहि ॥ १ ॥
 दिवसकरेण तु दिवसं रयणिकरेण रयणिं वियाणेज्जो । सुज्जोदएण दिवसं रत्तिं चंदोदए जाण ॥ २ ॥
 उण्हेण जाण दिवसं रत्तिं सीतेण संविजाणेज्जो । उज्जोवेण य दिवसं रत्तिं पुण अंधकारेणं ॥ ३ ॥
 सुज्जपरिवेस-इंदधणु-रायिवासेण दिवसकं जाणे । सोमपरिवेस-विज्जुत-उक्कापातेण रत्तिं तु ॥ ४ ॥
 पासंडजणोवयारोपलद्धीय दिवसमो वियाणेज्जो । चोराऽऽरक्खिगचरितोपलद्धीयं रत्तिमो जाण ॥ ५ ॥ 25
 समणजण-सावकजणस्साऽऽहारे दिवसमो वियाणेज्जो । आजीवकआहारोवलद्धीयं रत्तिमो जाण ॥ ६ ॥
 दिवसाहारविधी अग्गिजं ति दिवसो ति संविजाणीया । कज्जोवदीविकदीवतारकादंसणे रत्तिं ॥ ७ ॥
 पडिसामित-णिक्खिते ठइया-ऽऽवरितं ति रत्तिमो जाण । मुक्कमपंगुत-पागडिय-दंसिते दिवसमो जाण ॥ ८ ॥
 पयलाइत पासुत्ते सयिते रत्तिं वियाणेज्जो । वेट्ठुट्ठितेसु दिवसं दिवसकडे कम्मजोगे य ॥ ९ ॥
 दिवरत्ति भूतरत्ती तधेव आणंदसव्वरत्ति ति । रयणि ति सव्वरि ति य णिस ति खणता णिवियरत्ति ॥ १० ॥ 30
 पुरिसे पुरिसोवकपुरिसपुरिसभावाण दिवसमो जाणे । महिलाभरणे दव्वेसु महिलिका भवति रत्तिमुहं ॥ ११ ॥
 दिवसको दिवसकम्मकं ति णिव्वावदिवसो ति । आय-व्ययदिवसो ति य दिवसेसु सम ति ये सद्द ॥ १२ ॥

॥ पडलं [पण्णरसमं] ॥ १५ ॥ छ ॥

१ छकियं हं० त० ॥ २ ८० ८० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ३ विपुलिं हं० त० ॥ ४ पादगलकरं सप्र० ॥ ५ य घणट्टिययाणं हं० त० ॥ ६ उवकरणीचउहत्थं हं० त० ॥ ७ पण्णगेसु दिं हं० त० ॥ ८ सुज्जदिपरिवेसईदवणुं हं० त० ॥ ९ तुट्ठुट्ठिवेसु हं० त० ॥ १० गहियाभं हं० त० ॥

[सोलसमं पडलं]

- बारस मासा संवच्छरो त्ति भागेषु तीसती मासो । पण्णरसेव तु पक्खो तीसं भागे अहोरत्तं ॥ १ ॥
 एतस्स अहोरत्तस्स पुणो तीसतिविधस्स णातव्वं । राति-दिवसपरिवट्ठी हाणी य पुणो गणयेव्वा ॥ २ ॥
 राती दिवसं च पुणो वट्ठी हाणी य सुट्ठु णातूणं । सव्वे वि अहोरत्ता वेलाहि पुणो गणेतव्वा ॥ ३ ॥
 5 एतो तिण्हि मुहुत्ता बेसंझाउट्ठिओ य मज्झण्हो । छ प्पुव्वण्हो वुत्तो छ अवरण्हो मुहुत्तो उ ॥ ४ ॥
 बिमुहुत्तो मागधओ बिमुहुत्तो हवति पातरासो वि । अणुमज्झण्हो बिमुहुत्तमो त्ति तिविधो य पुव्वण्हो ॥ ५ ॥
 किं वा वत्ते सूरम्मि दिवाभातो वि हवति बिमुहुत्तो । अवरण्हो बिमुहुत्तोणिये सूरं बिबिमुहुत्तो ॥ ६ ॥
 संजोगेति तिमिरहा उट्ठेतो दिणकरो दिसं पुव्वं । तेण मुणे पुव्वण्हं पुव्वदिसायोवलद्धीय ॥ ७ ॥
 संजोगेति तिमिरहा मज्झण्हं दक्खिण्णेण वच्चंतो । तेण मुणे मज्झण्हं तु दक्खिणदिसोवलद्धीय ॥ ८ ॥
 10 संजोगेति तिमिरहा अवरदिसं दक्खिण्णेण वच्चंतो । तेण मुणे अवरण्हं अवरदिसायोवलद्धीय ॥ ९ ॥
 पुव्वदिसाए इंदो तस्सुवलंभेण जाण पुव्वण्हं । अवरदिसाए वरुणो तस्सुवलंभेण अवरण्हं ॥ १० ॥
 दक्खिणतो पेयवती उत्तरतो धणवती दिसाधिवती । एतेसि उवलद्धीय जाण मज्झितियं वेलं ॥ ११ ॥
 जं जिस्से उप्पज्जति दिसाय बिपदं चतुप्पदं वा वि । पुप्फ फलं दव्वाणि व तेण तु तं तं दिसं जाण ॥ १२ ॥
 ॥ पडलं [सोलसमं] ॥ १६ ॥ छ ॥

15

[सत्तरसमं पडलं]

- मइलब्धे रत्तकदंसणम्मि संझं तु पच्छिमं जाण । अभिणवरत्तकसंदंसणम्मि पुव्वा भवति संझा ॥ १ ॥
 रत्तच्छादणवधडिक्कुंभे वेरत्तकंबलाणं च । पुप्फ-फल-रत्तमणिकेण कुंभेण य जाण सूरुदयं ॥ २ ॥
 रत्तंबरुत्तरिज्जे य दारगे रत्तमज्जणिज्जोगो । रत्तणिवत्थाउवणिगमे य सुज्जोदया वेला ॥ ३ ॥
 पुण्णामाणुगमणे पुण्णामेण खचिते य थीणामे । ओणायकबाहुपावियाय सुज्जोदयणवेला ॥ ४ ॥
 20 संदीवियग्गजलणे य जाण आलोकणे वणदवस्स । रण्णो वि य आगमणेण जाण सुज्जोदयणवेलं ॥ ५ ॥
 बालतिलकं च कण्णातिलगे य तवणिज्ज-पटुमतिलके य । उदितं सूरं जाणे उवणीते रत्तमल्ले य ॥ ६ ॥
 एसाऽऽगतो णरिंदो त्ति सामिको सुपुरिस्सो त्ति वा बूया । जातं दाणि सणाधं त्ति जाण अइरुगतं सूरं ॥ ७ ॥
 देवतपूया-बलिमंगलकरणे सत्थीवायणकदेवा । विज्जुद्दीवेण अज्झापणे य मुण मागधं वेलं ॥ ८ ॥
 विषणीए सारणेण य पट्टवणेषु वि य दिवसकम्माणं । भत्तेवत्थोभे दोसिकम्मि मुण मागधं वेलं ॥ ९ ॥
 25 बालघतपज्जणेषु य मुहधोवण-मुंडकाणुदासेसु । खमगजणपारणासु य जाणेज्जो मागधं वेलं ॥ १० ॥
 ओलिहणंजण-तिल(क)करण-केसमंडण-पसाधणविधीसु । बालजुवतीजणस्स तु मागधियं वेलमो जाण ॥ ११ ॥
 सव्वम्मि पातरासे सिद्धुवणीते य भुज्जमाणे य । दुद्धुण्हिक-दधितावे अंबेल्लि-विलेपिकादीसु ॥ १२ ॥
 कक्करपिंडागंगावत्तगचुक्कितकवप्पडीसु वि य । अंबट्टिकधतउण्हे पोवलिकासिद्धिविद्धीसु ॥ १३ ॥
 भत्तकजणसिप्पिकजणस्साहारे तरुणजणपातरासे य । मुण पातरासवेलं मज्झिमिया कूरवेल त्ति ॥ १४ ॥
 30 जूताजूतकआढवकसेवकाणं च पातरासो त्ति । कज्जवसि पातरासे य अणुमज्झण्हं वियाणेज्जो ॥ १५ ॥
 सुद्धिकरवसभागमणे बंधवे इति अत्थवेल त्ति । मग्गो उवहरण त्ति य अणुमज्झण्हं वियाणेज्जो ॥ १६ ॥
 आतवच्छत्तकगहणे जुत्तपसूणं विमोयणेणं च । तण्हाइत्त-मकतण्हासु चेव मज्झण्हवेलं तु ॥ १७ ॥
 णिदहति व आदिच्चो उण्हं तण्ह त्ति णिस्ससति भूमिं । उण्हो व वाति वातो त्ति एव मज्झितियं जाणे ॥ १८ ॥

१ °भे चेव पक्खकंब° हं० त० ॥ २ ओयाणकबाहुपतियाय हं० त० विना ॥ ३ °उण्णे पोवलिकासिद्धि विद्धीसु हं० त० विना ॥ ४ रुयक° हं० त० ॥

डज्झंतभूसति कढतु तिरियं ति वणदवग्गिजालो त्ति । रुवाविधो संतप्पते त्ति मज्झंतिकं वेलं ॥ १९ ॥
 मज्झो त्ति मज्झिमो त्ति य मज्झत्थो मज्झदैसकं व त्ति । मज्झण्हो मज्झठिय तत त्ति मज्झण्हमेतेहि ॥ २० ॥
 तत्तस्स य णिव्ववणे सरितोमद्धकपिते पसण्णे य । सिद्धावतारणे मज्झिते य उव्वत्तमज्झणहे ॥ २१ ॥
 सव्वणियमट्ठिताणं कयण्हकाणं तु भोयणाकाले । पज्जोवत्तं सूरं जाणे एकसत्तरत्तेसु ॥ २२ ॥
 बहिणगरकम्मजणके ससिद्धकबलिकम्मकरणे य । उज्जाणभोज्जभत्तिककते य अवरण्हमो जाण ॥ २३ ॥ ५
 निर्गंथकयाहारे पच्चक्खवाणे पडिते घणायं च । पासंडालयवसधीकते य मुण पच्छिमं वेलं ॥ २४ ॥
 सव्वदिवाचारीणं पसु—पक्खीणं तु वसतिमधिगमणे । पुण्णामाणं च खयेण जाण सूरत्थमणवेलं ॥ २५ ॥
 रत्ते पुप्फ—फले भूसणे य अच्छादणे य रत्तम्मि । धीणामेसु य रत्तेसु जाण संज्ञागतं वेलं ॥ २६ ॥

पडलं [सत्तरसमं] ॥ १७ ॥ छ ॥

[अट्ठारसमं पडलं]

10

बालाहारविधीहि य मागधियं भत्तवेलिकं जाण । आतुरओसधपाणेसु चैव मुण मागधं वेलं ॥ १ ॥
 खमगजणपारणाअ य जाणेज्जो दुद्धवेलिका य त्ति । समणजणवायरासे आलोलीवेलिकायं वा ॥ २ ॥
 सेडकपढमाहारे जाणेज्जो आणुतासवेलं ति । भत्तकजणपातरासे जाणेज्जो कूरवेलं ति ॥ ३ ॥
 वुड्डस्सावक—भिक्षुकजणे य मुण पातरासवेलं ति । भिक्षूणाऽऽहारेण य गंडीवेलं वियाणाहि ॥ ४ ॥
 किंचोवत्तं सूरं णिगंथजणस्स भत्तवेल ति । जागु त्ति अण्णपाणे पधिकानं कासकाणं च ॥ ५ ॥ 15
 अच्छादण—पणियगते अवरणहे वै(वा)सवेलिकं जाण । प्पागेहिं णागवेलं पसूहि पसुवेलिकं जाण ॥ ६ ॥
 रागेण सायवेलं दीवेहि य दीववेलिकं जाणे । आजीविकमहासारे सामासं वेलिकं जाणे ॥ ७ ॥
 सुंभलक—सुरा—पुप्फे फले हरितकाण चुण्णवसेसु । कामुकर्लिगोपगतेसु चैव मुण आ पदोसो त्ति ॥ ८ ॥
 णिव्वहणे य वधूणं जेति भूतबलिकम्मकरणे य । पातिट्ठे य वधूणं जाणेज्जो आ पदोसो त्ति ॥ ९ ॥
 जामेण जामवेलं भिण्णं अविसारिकाहि जाणेज्जो । चोरेहिं चोरवेलं महापदोसं च रक्खेहिं ॥ १० ॥ 20
 पासुत्त—णिसीधं ति य मोण—णिसदं तधेव थिमितं ति । मंते अरहस्सं ति य थितडुरत्तं वियाणेज्जो ॥ ११ ॥
 उच्छुप्पीलणके भोग्गरसदे जंत—मुसलसदे य । मंदिरमंथणगागरसदे [य] वियाण गोसग्गं ॥ १२ ॥
 गो—माहिसणिग्गमणे पच्छा(त्था)णे य पधिग्—प्पवासीणं । सारइयसालिमद्दणपंतीसदे य गोसग्गं ॥ १३ ॥
 णरदेव—देवपडिबोधणासु संख—पडहायणादेसु । पच्छिमजामं कुक्कुडसदे वा जाण गोसग्गं ॥ १४ ॥
 मंगलिक—सत्थिवाचक—गोसगिकसंखभाणकेसु वि य । देवथुतिमंगलेसु य तवोधणे चैव तु विभत्तं ॥ १५ ॥ 25

॥ पडलं [अट्ठारसमं] ॥ १८ ॥ छ ॥

[एगूणवीसइमं पडलं]

सीसकलोहेण तु पुहसीसिका अरुणमो य दव्वा वि । तंवे तु पुव्वसंज्ञं वियाण सुज्जोदयं वा वि ॥ १ ॥
 तवणिज्ज—सुवण्णेण तु सूरमुदेतमुदितं व जाणेज्जो । नवकणक—सुवण्णेसु य पुव्वण्हं पातरासं वा ॥ २ ॥

१ 'देसमज्झम्मि । मज्झ' हं० त० ॥ २ 'वचारणे मज्झिते य ओवत्तमज्झण्हो हं० त० विना ॥ ३ सव्वतियमट्ठियाणं कयण्हकालं तु हं० त० ॥ ४ घयाणं च हं० त० ॥ ५ चैव पुण्णमागयं वेलं हं० त० ॥ ६ कासवाणं हं० त० ॥ ७ वुस' हं० त० विना ॥ ८ चुंभल' हं० त० विना ॥ ९ जडिभूत' हं० त० विना ॥ १० अवसा' हं० त० विना ॥ ११ चैव ति भव्वं हं० त० ॥ १२ तु फुसीसका हं० त० विना ॥

मज्झंतिकट्टितं कंसलोहकेणं व कंसभाणे वा । किंचोवतं सूरं आ मइले कंसलोहम्मि ॥ ३ ॥

उच्चावरणहेमव तु णवरुपिकेण संविजाणाहि । आ मइले रुपिकके तपुकेण व जाण अवरणं ॥ ४ ॥

अत्थमणवेलकं पि य जाणेज्जो वट्टलोहेणं । वैकंतकलोहेण य जाणेज्जो णागवेल ति ॥ ५ ॥

अरकूडकेण संज्ञं अत्थमितं जाण काललोहेणं । मुदए आ पदोसं थितऽड्डरुतं च विक्खेणं ॥ ६ ॥

5 परिवर्तंगो सगं जाणीया णाणकेण सव्वेण । घंटासद्देण पुणो यं जाण गोसगगकालं ति ॥ ७ ॥

॥ पडलं [एगूणवीसइमं] ॥ १९ ॥ छ ॥

[वीसइमं पडलं]

जं जिस्से वेलायं दिस्सति बिपदं चतुप्पदं वा वि । पुरिसो वा इत्थी वा सा वेला तेण णातव्वा ॥ १ ॥

जो जिस्से वेलाए सद्दो उप्पज्जति सुव्वती वा वि । ०५ सा वेला णातव्वा तस्सुप्पत्तीय सद्दस्स ॥ २ ॥

10 जो जिस्से वेलाए गंधो उप्पज्जति दिस्सती वा वि । १० सा वेला णातव्वा तस्सुप्पत्तीय गंधस्स ॥ ३ ॥

जं जिस्से वेलाए रूवं उप्पज्जति दिस्सती वा वि । सा वेला णातव्वा तस्सुप्पत्तीय रूवस्स ॥ ४ ॥

जो जिस्से वेलाए भक्खो उप्पज्जति लब्भती वा वि । सा वेला णातव्वा तस्सुप्पत्तीय भक्खस्स ॥ ५ ॥

जं जिस्से वेलाए पाणं उप्पज्जति लभती वा वि । सा वेला णातव्वा तस्सुप्पत्तीय पाणस्स ॥ ६ ॥

जं जीसे वेलाए दव्वं उप्पज्जति दिस्सती वा वि । सा वेला णातव्वा तस्सुप्पत्तीय दव्वस्स ॥ ७ ॥

15 जं जीसे वेलाए भंडं उप्पज्जति दिस्सती वा वि । सा वेला णातव्वा तस्सुप्पत्तीय भंडस्स ॥ ८ ॥

जं जीसे वेलाए रयणं उप्पज्जति दिस्सते वा वि । सा वेला णातव्वा तस्सुप्पातस्स लद्धीए ॥ ९ ॥

जं जीसे वेलाए पणितं उप्पज्जति दिस्सती वा वि । सा वेला णातव्वा तस्सुप्पत्तीय पणितस्स ॥ १० ॥

जं उवकरणं णर-णारीणं उप्पज्जते [य] जं वेलं । सा वेला णातव्वा तस्सुवकरणस्स लद्धीए ॥ ११ ॥

अब्भंतरबाहिरका यं देसं सेवते मणुया । सा वेला णातव्वा तस्सुदेसस्स लद्धीए ॥ १२ ॥

20 लेहं रूवं गणितं विज्जाधाणाणि सत्थणीतीओ । इस्सत्थत्थरूवगतं जुद्धं चऽतिकिच्छयाणि वि य ॥ १३ ॥

जं जीसे वेलायं तु मणूसा यं कालं अधीयंते । सा वेला णातव्वा तस्सुप्पातस्स लद्धीय ॥ १४ ॥

बंभणवेदज्झयणे पासंडाणं च ससमयज्झयणे । णिगंथाणं च सुयम्मि कालके रासिबद्धेयं ॥ १५ ॥

जं जिस्से वेलायं बंभण-समणा सुतं अधीयंते । सा वेला णातव्वा तस्सुप्पातस्स लद्धीए ॥ १६ ॥

कामगुणे मणुयगुणे सद्द-प्परिस-रस-रूव-गंधे य । महु-कडिण-णिद्ध-रूक्खे फासे सुहे सीतमुण्हे य ॥ १७ ॥

25 जे जिस्से वेलाए णर-णारिणा सुहं अणुभवति । सा वेला णातव्वा विसयसुहाणोपपत्तीय ॥ १८ ॥

उक्कट्टहसित-गीताइयाइ-णट्टाइविलसियाणं च । णाडिज्जित-वेलंबिय-पडिताणि परूवणाओ य ॥ १९ ॥

जं जिस्से वेलाए कीडं णर-णारिओ णिसेवति । सा वेला णातव्वा तस्सुप्पातस्स लद्धीय ॥ २० ॥

रामायण-भारधिका तु कहाओ जा य अरहता(तां) वत्ता । रायपुरिसाण य जा परक्कमगुणा य सूरारणं ॥ २१ ॥

एता पोराणाओ कधाओ जा जम्मि देस-कालम्मि । वत्ता तु कधीयंते सा वेला तेण बोधव्वा ॥ २२ ॥

30 जं सयमणुभूतं णर-णारिणेहिं जं च सेसेहिं । लाभा-ऽलाभं जीवित-मरणं दुक्खं सुहं वा वि ॥ २३ ॥

जं जीसे वेलाए परेण सुयमप्पणा व अणुभूतं । सा वेला णातव्वा तस्सुपायस्स लद्धीय ॥ २४ ॥

बहिणगरकणिग्गमणे समिद्धजो(लो)क-बलिकम्मकरणे य । उज्जाण-भोज्ज-भत्तिक-जत्तागमणेसु य णराणं ॥ २५ ॥

जं जीसे वेलाए उज्जाणगुणे णरा अणुभवति । सा वेला णातव्वा जत्तागमणेण तु णराणं ॥ २६ ॥

१ संधि जा° हं० त० ॥ २ वकंतयलो° हं० त० ॥ ३ अक्खूणडकेण हं० त० ॥ ४ ०५ १० एतच्चिह्नान्तर्गते उत्तरार्ध-पूर्वार्धे हं० त० न स्तः ॥

मज्जविधी खज्जविधी फल-हरितक-सुसिम्पिककडे वा । सुभमसुभे वाऽऽहारे उत्तममासे जहण्णे य ॥ २७ ॥
जं जिस्से वेलायं आहारविधिं णिसेवए मणुया । सा वेला णातव्वा तस्साऽऽहारस्स लद्धीय ॥ २८ ॥
देवतसेतूणं वा णवकरणं वा वि उज्जवणिका वा । वय-णियमाणं गहणे दाण-विसग्गे य साधूणं ॥ २९ ॥
जं जीसे वेलायं पारत्तहितं णरा समीहंति । सा वेला णातव्वा तस्सुपातस्स लद्धीय ॥ ३० ॥
वाणियववहारगते दिवसववहारे ठिते य ववहारे । भंडपणियस्स कय-विक्कए य णियए विसग्गे य ॥ ३१ ॥ ५
जं जीसे वेलायं ववहारं तु वणिया समीहंति । सा वेला णातव्वा गहण-विसग्गेण भंडाणं ॥ ३२ ॥
कस्सेण कासकाणं वापण्णे खेत्त-खलकम्मजोगे य । धण्णाणं गहणे संगहे य वेला तु जा जत्थ ॥ ३३ ॥
जं जीसे वेलायं कम्मरंभं तु कासका कुण्ठते । सा वेला णातव्वा तस्सुपायस्स लद्धीय ॥ ३४ ॥
जं वेलं जं कम्मं सुभमसुभं माणुसा णिसेवंति । सा वेला णातव्वा कम्मपुप्पीय पुरिसाणं ॥ ३५ ॥
थीणं पि सव्वकम्मेसु जाण रंधणक-भोयणादीसु । जं वेलं जं कम्मं करेति तं वेलमो जाण ॥ ३६ ॥ १०

॥ पडलं [वीसइमं] ॥ २० ॥ छ ॥

[एकवीसइमं पडलं]

तद्विसजातकं दिस्स दारकं जाण सूरमुग्गमणं । किंचुगयम्मि सूरं गोरे उत्ताणसेज्जम्मि ॥ १ ॥

ओसूतकं कडिगेज्झकं दारकं दिस्स अचिरट्ठितं सूरं बूया । ओवातं दारकं दिस्स परिच्चकम्मंतं पातरासवेलं
बूया । ओवातं दारकं लेहिच्चकं दिस्स उच्चपातरासं बूया । ओवातं दारकं तरुणजुवाणं दिस्स पुव्वण्हं बूया । ओवातं १५
तरुणं दिस्स जुवाणं अणुमज्झण्हं बूया । ओवातं पुरिसं मज्झवयं दिस्स मज्झंतियं वेलं बूया । ओवातं पुरिसं पवत्तपलितं
दिस्स उव्वत्तमज्झणह्वेलं बूया । ओवातं पुरिसं मिस्सपलितं दिस्स उच्चावरणह्वेलं बूया । ओवातं पुरिसं दिस्स पव्वपलितं
अवरण्हं बूया । ओवातं पुरिसं दढपकम्महत्थं दिस्स ओलंबमाणं सूरं बूया । ओवातं पुरिसं खट्टासमारुढं दिस्स अत्थमितं
आदिच्चं बूया । उत्ताणपस्सिकं दारिकं दिस्स संज्ञावेलियं बूया । कडिगेज्झिकं दारिकं दिस्स दीववेलियं बूया ।
पंचकम्मंतिकं [दारिकं] दिस्स पाकंतरं ति बूया । वत्तवोलिकं दारिकं दिस्स पाकडितणक्खत्त-तारं बूया । २०
उब्धिज्जमाणथणिकं दारिकं दिस्स जामवेलिकं बूया । जोव्वणवत्तं दारिकं दिस्स तिण्णयामं बूया । महाकुमारिं दारिकं
दिस्स अङ्गुरत्तं जाणीया । मज्झिममहिलं पविआतं दिस्स वत्तङ्गुरत्तं बूया । बहुप्पयातं जुणं दिस्स महागोसगं बूया ।
वुड्डं णिव्वियातं दिस्स विधवं वा पासंडवद्धं महिलगोसगं वेलं बूया । ओवाते[सु] पुरिसेसु जोण्हपक्खं बूया ।
कालकेसु पुरिसेसु कालदिवसे बूया । सामेसु पुरिसेसु मिस्ससंधि बूया । ओवातासु इत्थिकासु जोण्हर्त्ति, बूया ।
कालिकासु इत्थिकासु कालरत्ति बूया । सामासु इत्थिकासु मिस्सा पुण्णमासद्धर्त्ति बूया । ओवातसामेसु पुरिसेसु जाव २५
जोण्हपडिपदातो जोण्हट्टमित्तो ति जोण्हदिवसे बूया । ओवातेसु पुरिसेसु जोण्हट्टमीतो पाय याव जोण्हपुण्णमासीतो
दिवसे बूया । कालसामेसु पुरिसेसु जाव कालट्टमीतो पाय याव चतुद्दसातो ति कालदिवसे बूया । ओवातसामाय
इत्थिकाय जाव जोण्हट्टमीतो ति जोण्हर्त्ति बूया । ओवातासु इत्थिकासु जोण्हट्टमीतो पाय जाव पुण्णमासीतो ति
जोण्हर्त्ति बूया । कालसामासु इत्थिकासु कालट्टमीतो ति कालरत्ति बूया । कालिकासु इत्थिकासु कालट्टमीतो पाय
जाव कालचाउद्दसातो ति कालरत्ति बूया । ओवातं उत्ताणसेज्जं दिस्स जोण्हपडिपदं बूया । ओवातदारकस्स ३०
सरीरजोव्वणपरिवट्ठीय जाव तरुणसम्मत्तजोव्वणातो ति य दारकपरिवट्ठीय जाव पुण्णमासीतो ति वत्तव्वं । एवमेव
कालकदारकपरिवट्ठीय कालपरिवट्ठी बूया ।

१ गते दीसववहारे भिए य हं० त० ॥ २ दिव्वपरिच्चकंतपा हं० त० ॥ ३ मज्झगयं दिस्स मज्झमियं हं०
त० ॥ ४ स्सायो संधि रत्ति हं० त० विना ॥

जधा मणुस्सेसु तथा चउप्पदेसु तथा पक्खीसु तथा परिसप्पेसु तथा कीड-किविल्लकेसु तथा पुप्फ-फलेसु भोयणेसु तथा अच्छादणेसु तथा भूसणाऽऽसण-मल्लाऽणुलेवणकरणेसु तथा लोहेसु सव्वसाधुसु (सव्वधातुसु) य तथा सव्व[ध]ण्णेसु य तथा सव्वभंडोपक्खर-उवकरणेसु तथा सज्जीव-णिज्जीवेसु सव्वदव्वेसु समणुगंतव्वं । जधा मणुस्साणं वयपरिणामेणं दिवस-रत्तिपरिणामेणं एवं सव्वदव्व्वाणं पुरिसजुणपरिणामेणं दिवस-रत्तिपरिणामो विण्णातव्वो-पुण्णामेसु ५ दिवसाणं, थीणामेणं रत्तीणं । वण्णविसेसेणं जोण्हा कालो वा विण्णातव्वो-सुक्किलेसु सप्पभेसु ओवातेसु जोण्हा णातव्वो, कालवण्णेसु णिप्पभेसु मइलेसु अचक्खुविसयकेसु कालपक्खं बूया ॥

॥ पडलं [एगवीसइमं] ॥ २१ ॥ छ ॥

[बावीसइमं पडलं]

- अग्घस्स तु परिवर्द्धि ओसरणं व पुण सव्वभंडाणं । देसिय-मुहुत्त-पक्खिय-मासिक-वस्सप्पमाणेहिं ॥ १ ॥
- 10 अतिवत्ते अतिवत्तो अग्घो हवति णिचयेसु भंडाणं । अणुपालणा ण खमते भवति धुवो छेदको एत्थं ॥ २ ॥
एमेव वत्तमाणेसु जाणयो संपदं भवति अग्घो । वस्ससतस्स तु अंतो एतस्स तु एत्तिओ अग्घो ॥ ३ ॥
खमति णिचयो णिचेतुं खमति य अणुपालणा गहीतस्स । सव्वमणागतभावे इट्ठे य मणाभिलसिते य ॥ ४ ॥
[.....] खमति णिचयो णिचेतुं वड्डीसु य सव्वभंडाणं ॥ ५ ॥
वड्डीसु समुदएसु य तसकायाणं च थावरणं च । इच्छासंपत्तीसु य लाभस्स वि होति संपत्ती ॥ ६ ॥
- 15 सव्वम्मि वि तसकाये थावरकायेसु चेव सव्वेसु । पुप्फ-फल-भोयण-अच्छादणेसु दव्वोवकरणे य ॥ ७ ॥
एत्थ तु जे मंगलिया ते धन्ना ते तु लाभिया होंति । एतेसि उप्पत्ती भंडणिचए हवति लाभो ॥ ८ ॥
धणसंपत्तिकेधाए महाधणाणं कुडुंबिणं चेव । कोसपरिवद्धणासु य रुप्प-हिरण्णे सुवण्णे य ॥ ९ ॥
जुज्झजये पणियजये विज्जासिद्धीसु कम्मसिद्धीसु । आरंभाणं सिद्धीसु चेव णिचये धुवो लाभो ॥ १० ॥
उवणतमणोरधाणं उप्पत्तीए य मणभिलसियाणं । अदिट्ठिसिरीए चिय लाभे लाभस्स संपत्ती ॥ ११ ॥
- 20 जध विपुलो उप्पातो जातिविसिट्ठो य सारमंतो य । जध जुत्तमपरितोसो तध णिचये लाभओ बहुओ ॥ १२ ॥
अप्पो उप्पातो त्ति य अजातिमंतो य अप्पसारो य ।
जध यऽप्पो परितोसो तध णिचये लाभओ अप्पो ॥ १३ ॥
जध वागविणो पडिलाभणा य उप्पज्जते परितोसो । अप्पो वा बहुओ वा तधा णिचये लाभओ होति ॥ १४ ॥
वड्ढिकरं पीतिकरं णिव्वाणिकरं च मंगलिज्जं च । इट्ठा आणंदकरं च लाभिया होंति उप्पाता ॥ १५ ॥
- 25 लुक्खे तुच्छेसु णपुंसकेसु कसकेसु बाहिरंगेसु । वाक्खणेसु चलेसु व ण भंडणिचया पसस्संति ॥ १६ ॥
आरंभ-विवत्तीसु य छेअवितेहि वि य सव्वभंडेहिं । मोहपरिधावितेसु य अफलं च कडे पुरिसकारे ॥ १७ ॥
उज्झीयति विज्झीयति हायति त्ति परिहायति त्ति वा सद्धे । णट्ठ-हित-पलाते दूसिते विणट्ठे विपण्णे वा ॥ १८ ॥
अंसणिहते विज्जुहते उट्ठे जित-पराजिते विहले । भग्गो त्ति दुग्गतो किस्सते अणतो अणाधो त्ति ॥ १९ ॥
किवण-वणीमक-पेस्सजण-सव्वपासंडअस्समगते य । अधणेसु दुग्गतेसु व परिहायंतेसु व अलाभं ॥ २० ॥
- 30 अभिलसितस्स अलाभे आसाभंगे य पणयभंगे य । पडिसिद्धिणिराकारे य जायणायं अलाभे य ॥ २१ ॥
उवहतमुवहुते वा अभिजुते गहिय-बद्ध-रुद्धे वा । अहव य मयसेवासु य धुववावत्ती उ णिचयस्स ॥ २२ ॥

१ पुरिसजसपरिं हं० त० ॥ २ मासकं हं० त० विना ॥ ३ वत्तेसु अतिं हं० त० विना ॥ ४ प्यत्तियभंडणिज्ज वे हवति लाभो सप्र० ॥ ५ कहासु य महां हं० त० ॥ ६ अग्घो उप्पाओ च्चिय हं० त० ॥ ७ परिहाविएसु हं० त० ॥ ८ कारो हं० त० ॥ ९ वा भदे हं० त० ॥ १० असिणिहते हं० त० ॥ ११ य पाणभंगे हं० त० ॥ १२ अवचय मवसेवां हं० त० विना ॥

देवदंड रायदंडे व चोरदंडे व अग्गिदंडे वा । इट्ठाणं च अलाभे उववत्तीए अणिट्ठाणं ॥ २३ ॥
 दमग-वणीवग-छातक-अणसितेहि दुक्कालमो जाण । भुत्त-हसित-प्पहिट्ठे मुदिते सुभिक्षं सुबुद्धीयं ॥ २४ ॥
 आहारेसु दढ-थावरेसु अणुपालणं पसंसंति । मोहा व णिगगमो विक्कयो व ण पसस्सते एत्थं ॥ २५ ॥
 मोक्खे चल-णीहारिसु विक्कयो सिग्घमेव कातव्वो । अणुपालणा ण सहते भवति धुवो छेदओ एत्थं ॥ २६ ॥
 गंतगंतुवणित्तेण णामगेया पडिभण्णति । अक्खोडिते उवक्खलिते णिकिण्णे ण वि विक्किते ॥ २७ ॥ 5
 णिद्धे यो यंतिते हंती उच्छहे जाव चिट्ठते । णर-णारीयोऽभिणंदंति ण [क्किणे] विक्किणे वि वा ॥ २८ ॥
 लाभस्स छेदकस्स य परिमाणं पुण पुणो वि वोच्छामि । तस्स पमाणुप्पाते भवंति बहुका महंता य ॥ २९ ॥
 मासिक-पक्खपमाणे मज्झिमको छेअको व लाभो य । अप्पो छेअक-लाभो दिवस-मुहुत्तप्पमाणे वा ॥ ३० ॥
 पक्खेवो वा ण भवति पक्खेवो पंचभागसेसो वा । मासपमाणुप्पातेसु अप्पसत्थेसु सव्वेसु ॥ ३१ ॥
 पक्खेवो वा ८५ ण भवति पक्खेवो वा ८० तिभागसेसो तु । पक्खपमाणुप्पातेसु अप्पसत्थेसु सव्वेसु ॥ ३२ ॥ 10
 पक्खेवो वा ण भवति चउत्थभागो य छेयको भवति । दिवसपमाणुप्पाते सव्वेसु तु अप्पसत्थेसु ॥ ३३ ॥
 पक्खेवो वा ण भवति पंचमभागो व छेदको भवति । सव्वम्मि पणियभंडे असुभम्मि मुहुत्तवग्गम्मि ॥ ३४ ॥
 सव्वपमाणुप्पाता तु लाभिका जति अणागता होंति । पंचगुणो व बहुगुणो व भंडणिचये भवति लाभो ॥ ३५ ॥
 मासपमाणुप्पाता तु लाभिका जति अणागता होंति । तिगुणो चतुगुणो वा वि भंडणिचये भवति लाभो ॥ ३६ ॥
 पक्खपमाणुप्पाता तु लाभिका जति अणागता होंति । बिगुणो तिगुणो व चतुग्गुणो व भंडणिचये भवति लाभो ॥ ३७ ॥ 15
 दिवसपमाणुप्पाता तु लाभिका जति अणागता होंति । एकगुणो बिउणो वा भंडणिचये भवति लाभो ॥ ३८ ॥
 होंति मुहुत्तुप्पाता तु लाभिका जति अणागते कालो । किंचि च्छोका सग्घं व भंडणिचये भवति लाभो ॥ ३९ ॥
 अच्चग्घे विण्णाते दसक्खवट्ठी तर्हि गणेतव्वं । जध वस्सपमाणेण तु णीतदसक्खा सया होंति ॥ ४० ॥
 सतवग्गस्स पवट्ठी एव सहस्साति संगणेतव्वं । वट्ठिसहस्से वग्गस्स सतसहस्सं ति णातव्वा ॥ ४१ ॥
 जध कोडी दोण्णि विवट्ठी भवति सहस्सवग्गस्स । कोडीय तु वट्ठीय तु अपरीमाणा गणेतव्वा ॥ ४२ ॥ 20
 एसग्घे परिवट्ठी एवतिकेसु मुण सव्वपणिएसु । कारणमासज्जित्ता भवति बहुगुणा असारे वि ॥ ४३ ॥
 जोग-क्खेमं वट्ठि आसज्जित्ता खयं च भंडाणं । आकाले असंते वट्ठी उ भवति अपरिमेया ॥ ४४ ॥
 कइक-च्छेअकलाभो त्ति पुच्छितेण तु पुणो वि णातव्वं । लाभो व छेयको वा सिग्घसिग्घं पडुप्पणो ॥ ४५ ॥
 कइक-च्छेयकलाभो त्ति पुच्छितेण तु पुणो वि णातव्वं । लाभो व छेयको वा चिरेण तु चिरं पडुप्पन्ने ॥ ४६ ॥
 सिग्घं दिवस-मुहुत्ता मासा पक्खा य मज्झिमे काले । चिरदुक्खं पडुप्पणोहि जाण संवच्छरे एत्थं ॥ ४७ ॥ 25
 सुट्ठु वि य लाभवंतं अतिवत्तेसु तु अणागतो कालो । छिण्ण-खये वा ण भवति सव्वेसु य अप्पसत्थेसु ॥ ४८ ॥
 जं जिस्से उवयोगं तिरिक्खजोणीय माणुसाणं वा । तेसि अंबागमणे पियकारो तस्स भंडस्स ॥ ४९ ॥
 जं सेसं उवयोगं तिरिक्खजोणीय माणुसाणं वा । तेसि णीहारगते अणिगगमो तस्स भंडस्स ॥ ५० ॥
 णिप्फत्तिमणिप्फत्ति खमणाकालेसु वुट्ठि-दुव्वुट्ठी । कइके व अकइके वा अग्घमणग्घं तधा बूया ॥ ५१ ॥
 पुण्णामचलामासे खय-णीहारे य पुरिसणामाणं । अग्घखयं णासं वा बूया पुण्णामधेयाणं ॥ ५२ ॥ 30
 पुण्णामाणामासे जयमाहारे य पुरिसणामाणं । णिप्फत्ती लाभो आगमो य पुण्णामधेज्जाणं ॥ ५३ ॥
 थीणामखयामासे जयमाहारे य इत्थिणामाणं । णिप्फत्ती लाभो आगमो य थीणामधेज्जाणं ॥ ५४ ॥
 थीणामखयामासे खय-णीहारे य इत्थिणामाणं । अग्घखयं णासं वा बूया थीणामधेज्जाणं ॥ ५५ ॥

१ सुबुद्धीयं हं० त० विना ॥ २ तु णिव्वत्तेण हं० त० विना ॥ ३ डिहण्ण हं० त० विना ॥ ४ अववाडिए उवखडिए विक्किण्णे न विक्किए हं० त० ॥ ५ जालं वट्ठते सं ३ पु० । जायं रुट्ठते हं० त० ॥ ६ छेदकास्स यं परि हं० त० ॥ ७ ८५ ८० एतच्चिहान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ८ अच्चाग हं० त० ॥

- भोयणदव्वाणं पि य चल—णीहारे खये अलाभे य । अग्घखयं णासं वा बूया आहारदव्वाणं ॥ ५६ ॥
 भोयणदव्वाणं पि उ उदये लाभे तधेव आहारे । णिप्फत्ती लाभो आगमो य आहारदव्वाणं ॥ ५७ ॥
 सुक्कंगचलामासे खय—णीहारे य सुक्किलाणं तु । अग्घखयं णासो वा दव्वाणं सुक्किलाणं तु ॥ ५८ ॥
 सुक्कंगदढामासे आहारगते य सुक्किलाणं तु । णिप्फत्ती लाभं आगमं व मुण सुक्किलाणं तु ॥ ५९ ॥
 5 रत्तंगचलामासे खय—णीहारे य सव्वरत्ताणं । अग्घखयं णासं वा दव्वाणं रत्तवण्णाणं ॥ ६० ॥
 रत्तंगदढामासे आहारगते य सव्वरत्ताणं । णिप्फत्ती लाभं आगमं व मुण सव्वरत्ताणं ॥ ६१ ॥
 कण्हंगचलामासे खय—णीहारे य कालकाणं तु । अग्घखयं णासं वा दव्वाणं कालकाणं तु ॥ ६२ ॥
 कण्हंगदढामासे आहारे चेव कालकाणं तु । णिप्फत्ती लाभं आगमं व मुण कालकाणं तु ॥ ६३ ॥
 अग्गेयचलामासे खय—णीहारे य अग्गिकज्जाणं । अग्गिखयं णासं वा जाणे अग्गेयणामाणं ॥ ६४ ॥
 10 अग्गेयदढामासे आहारगते य अग्गिदव्वाणं । णिप्फत्ती लाभं आगमं व अग्गेयदव्वाणं ॥ ६५ ॥
 पुधुलंगचलामासे खय—णीहारे य पुधुलदव्वाणं । अग्घखयं णासं वा जाणेज्जो पुधुविदव्वाणं ॥ ६६ ॥
 पुहुलंगदढामासे आहारगते य पुहुविदव्वाणं । णिप्फत्ति लाभं आगमं च मुण पुधुलदव्वाणं ॥ ६७ ॥
 निद्धंगचलामासे खय—णीहारे य आपजोणीयं । अग्घखयं णासं वा जाणेज्जो आपजोणीयं ॥ ६८ ॥
 निद्धंगदढामासे आहारगते य आपजोणीयं । णिप्फत्ति लाभं [आगमं] व मुण आपजोणीयं ॥ ६९ ॥
 15 वायव्वचलामासे खय—णीहारे य वायजोणीयं । अग्घखयं णासं वा वायव्वाणं मुणसु तत्थ ॥ ७० ॥
 वायव्वदढामासे आहारगते य वायुजोणीयं । णिप्फत्ति लाभं आगमं च मुण वातजोणीयं ॥ ७१ ॥
 छिद्दंगचलामासे खय—णीहारे य झुसिरदव्वाणं । अग्घखयं णासं वा जाणेज्जो झुसिरदव्वाणं ॥ ७२ ॥
 छिद्दंगदढामासे आहारगते य झुसिरदव्वाणं । णिप्फत्ति लाभो आगमो य सुसिराण दव्वाणं ॥ ७३ ॥
 तिरियंगचलामासे णीहारे चेव तिरियजोणीयं । अग्घखयं णासं वा जाणेज्जो तिरियजोणीयं ॥ ७४ ॥
 20 तिरियंगदढामासे आहारगते य तिरियजोणीयं । णिप्फत्ति लाभं आगमं व मुण तिरियजोणीयं ॥ ७५ ॥
 उड्डंगचलामासे खय—णीहारे य धातुजोणीयं । अग्घखयं णासं वा वियागरे धातुजोणीयं ॥ ७६ ॥
 उड्डंगदढामासे आहारगते य धातुजोणीयं । णिप्फत्ति लाभं आगमं व मुण धातुजोणीयं ॥ ७७ ॥
 मूलजोणिचलामासे खय—णीहारे य मूलजोणीयं । अग्घखयं णासं वा जाणेज्जो मूलजोणीयं ॥ ७८ ॥
 मूलजोणिदढामासे आहारगते य मूलजोणीयं । णिप्फत्ति लाभं आगमं च मुण मूलजोणीयं ॥ ७९ ॥
 25 पाणजोणिचलामासे खय—णीहारे य पाणजोणीय । अग्घखयं णासं वा जाणेज्जो पाणजोणीय ॥ ८० ॥
 पायजोणिदढामासे आहारगते य पाणजोणीयं । णिप्फत्ति लाभं आगमं च मुण पाणजोणीयं ॥ ८१ ॥
 उत्तमंगचलामासे खय—णीहारे य उत्तमंगाणं । अग्घखयं णासं वा जाणेज्जो उत्तमंगाणं ॥ ८२ ॥
 उत्तमंगदढामासे आहारगते य उत्तमंगाणं । णिप्फत्ति लाभं आगमं च मुण उत्तमंगाणं ॥ ८३ ॥
 मज्झंगचलामासे खय—णीहारे य मज्झिमंगाणं । अग्घखयं णासं वा मज्झिमजणउपभोगाणं ॥ ८४ ॥
 30 मज्झंगदढामासे आहारगते य मज्झिसाराणं । णिप्फत्ति लाभं आगमं व मुण मज्झिसाराणं ॥ ८५ ॥
 पेस्संगचलामासे खय—णीहारे य पेस्सवग्गस्स । अग्घखयं णासं वा दव्वाणं पेस्सणामाणं ॥ ८६ ॥
 पेस्संगदढामासे आहारगते य पेस्सवग्गस्स । णिप्फत्ति लाभं आगमं व मुण पेस्सभोगाणं ॥ ८७ ॥
 एसेव पंचसु रसेसु गमो पाणेषु भोयणेषु वि य । वत्थे आभरण उवक्खरे य तध गंध मल्ले य ॥ ८८ ॥

१ हस्तचिह्नान्तर्गतं श्लोकार्धं हं० त० एव वर्तते ॥ २ आवुजो^१ हं० त० ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गते उत्तरार्ध—पूर्वार्धे हं० त० एव वर्तते ॥ ४ आवुजो^२ हं० त० ॥ ५ वायजो^३ हं० त० ॥ ६ य [मुण] झुसिरदव्वाणं हं० त० विना ॥ ७ ८ ९ एतच्चिह्नान्तर्गतमुत्तरार्धं हं० त० नास्ति ॥

तेल्ल-घते गुल-वण्णे एसेव गमो तु सव्वधण्णेसु । मणि-मुत्ते रयणेषु य रुप-हिरण्णे सुवण्णे य ॥ ८९ ॥
 पंचविधो य अवायो णेयो गहण-णिचयेसु भंडाणं । अग्गी उदकं चोरा राया य तिरिक्खजोणीयं ॥ ९० ॥
 दिव्वो भवति अवाओ उसुण हिम अग्गि मारुतो आपं । मणुयगतम्मि य राया चोरा सयणो परजणो य ॥ ९१ ॥
 सव्वेसु अप्पसत्थेसु अपायो पुव्ववण्णितेसु भवे । णट्ठविणट्ठे जोर्णिगते य [.....] अवहिते चेव ॥ ९२ ॥
 पुव्वपरिक्कित्तिएसु तु वासुप्पातेसु अप्पसत्थेसु । उदकातो हु अपायो एत्थ णिस्संकिंतो बूया ॥ ९३ ॥ 5
 मुण य तिरिक्खजोणी तिरिक्खजोणीगओ अपाओ त्ति । दंसणपादुब्भावे असुभा य तिरिक्खजोणीए ॥ ९४ ॥
 रायदंडे कोट्टे य आणकोवत्तणे य पणए य । रायग्गहेसु य कयक्कए य मुण रायदंडो त्ति ॥ ९५ ॥
 गाहण-कालक्खवणा खया पाणपराभियोगेसु । गुत्ति अंदु-णिगलेसु बद्ध-रुद्धेसु सव्वेसु ॥ ९६ ॥
 पंचमहाकारणकारणेषु सव्वेसु रायदिट्ठेसु । रायभये सव्वम्मि तु रायकुलगतो अपायो तु ॥ ९७ ॥
 उण्हे वा णिस्ससिते मणसंतावे य अंगदाहे य । हक्कार-रुदित-कंदित-भयहुते रुद्धमावद्धे ॥ ९८ ॥ 10
 उण्हते व उदके व कुथिते तथ तुच्छ दट्ठे वा । अग्गीतो हु अवायो धूमाणुगते य आहारे ॥ ९९ ॥
 तिरियंगाणामासे तिरिक्खजोणीगते य सव्वम्मि । उवकरणोवखराते तिरिक्खजोणीय संदेहो ॥ १०० ॥
 उंदुर-मुत्तोली या अत्थिला कीडा किविल्लिकाओ य । दाढी णंगूली संगिणो य णहि-सज्जवाला य ॥ १०१ ॥
 जलचर-थलचर-खगचारिणो य पक्खी चतुप्पदा चेव । अवरज्झंति णराणं असुभा जे अप्पसत्था य ॥ १०२ ॥
 तेसि पादुब्भावे सदे रूवे दवक्खरकते य । तेरिक्खसु य अवायो त्ति एव णिस्संसयं बेहि ॥ १०३ ॥ 15
 इत्थितिसंधणायं णियडी-कवडेसु वंचणादीसु । चोरुप्पत्ति बूया हित-महिताविज्झणायं च ॥ १०४ ॥
 कूडतुल-कूडमाणं कूडहिरण्णे य कूडलेहे य । चोरुप्पत्ति बूया आयरणायं च सव्वायं ॥ १०५ ॥
 सव्वेसु पावकम्मिसु हिंसके होढकेसु य णरेसु । वीसत्थपाणहरणे य अवायं चोरतो विज्जा ॥ १०६ ॥
 अवि धावह कूवित-कंदितेसु हित-मारिते य छिण्णे य । चोरुप्पत्ति बूया सव्वेसु य चोरलिंगेसु ॥ १०७ ॥
 जध विपुला उप्पाता तथ विपुलं णिदिसे अपायं त्ति । मज्झिमके मज्झिमकं अप्पसारेषु अप्पं तु ॥ १०८ ॥ 20
 दिण्ण-परिविट्ठ-वत्तुस्सयम्मि झीणे य भोज्ज-पेयम्मि । णट्ठे पम्हुट्ठ पडिसामिते य पडिसाहणायं च ॥ १०९ ॥
 वेस्से दोभग्गे अप्पिते य णिच्चक्किते य चकिते य । उक्कंठिय परितंते य छेइया सव्वभंडेसु ॥ ११० ॥
 एवं अग्घपमाणं एतेण गमेण सव्वभंडाणं । सव्वपणितेसु य तथा तिविधो सारो मुणेयव्वो ॥ १११ ॥
 तं जधा-साली-वीही-जव-गोधूमादिसु सणसत्तरसेसु धण्णेसु अग्घपमाणं विण्णातव्वं भवति । एवमेव
 पुप्फ-फलेसु, तेल्ल-घतादिसु णेहेसु, लवणादिसु छसु रसेसु, कप्पासादिसु य सव्वछादणेसु, रुप-सुवण्णादिसु य 25
 सव्वलोहेसु, वइर-वेरुलिकादिसु य सव्वरतणेसु, मणसिलादिसु सव्वधातुसु, अगुरु-चंदणादिसु सव्वसंखितेसु,
 सव्वमूलजोणिसु सव्वतण-कट्टेसु य, मणुस्सादिसु य सव्वपाणजोणिसु, सव्वम्मि चेव परिणभंड-पणितगते समणुगंतव्वं
 भवति । उत्तरं च सविसेसं सुवुट्ठीपडिपोग्गलं दुभिक्खपडिपुर्गलं च धण्णग्धं बूया । सुवुट्ठीपडिपोग्गलं च दग्गभायणेहि
 सुक्खोहि तिरोगेहि आपजोर्णिक्खयेण णिद्ध-लुक्खत्तणेण उल्लाणं सुक्खत्तणेण तण्हाइत-पिपासिताणं च अपाणलंभेण
 अवुट्ठि बूया । अवुट्ठीयं पुण जावतिकाणि वुट्ठिसंभवाणि धण्णादीकाणि सव्वमूलजोणीकाणि एतेसि अणिप्फत्ती पियंकरं 30
 च बूया ॥

॥ एवं भगवतीय अंगविज्जाय महापुरिस्सदिण्णाय [बावीसइमं] अग्घप्पमाणं [पडलं] सम्पत्तं ॥ २२ ॥ छ ॥

१ वातुप्पा हं० त० विना ॥ २ माविट्ठे हं० त० विना ॥ ३ भुच्छदं हं० त० विना ॥ ४ विज्जयाणं च हं०
 त० ॥ ५ अभिधाहव कू हं० त० विना ॥ ६ ग्गलतं वण्णायं बूया हं० त० ॥ ७ हिं णिरोगेहि हं० त० विना ॥
 ८ णिखग्गेण हं० त० ॥

[तेवीसइमं पडलं]

- अग्निस्स संभवं पि य अगेयेहि मुण सव्वदव्वेहि । धूमो त्ति व अग्नि त्ति व आलीवणकं वणदवो त्ति ॥ १ ॥
 संतथे वा कोलाहलं च डमरे विलुप्पमाणे वा । अवि धावध सहे वा आलीवणकं वियाणेज्जा ॥ २ ॥
 इंगालकोट्टकिंगालसकडिका कडुच्छ-धूपघडिका य । धूमकरडाक-धूमणाण पिसायके धूमणेत्ते य ॥ ३ ॥
 5 छगणि-छारि-क्खारारपको त्ति वीजणक-धूमणालीसु । होमाहुतिक्रये अग्निकारिके अग्निकुंडे य ॥ ४ ॥
 जग्गंतको त्ति संदीपणं त्ति दारु समिध त्ति वा सद्दा । आहुति हुणियति वि त्ति य उवक्खरे यऽग्निं ८ होतस्स १० ५
 दीवो त्ति दीवक त्ति य चुडली मधअग्नि चुल्लके व त्ति । विज्जु त्ति विज्जुता आयवो त्ति कज्जोपको व त्ति ॥ ६ ॥
 अणल त्ति व चुल्लि त्ति व चितक त्ति व फुंफुक त्ति वा सद्दा । एत्थ उ अघुप्पत्ती अग्नित्ते अग्निकुंडे य ॥ ७ ॥
 अहिमकरिक-अग्निपखंडकेसु अग्निस्स जाण उप्पत्ति । रुद्धापिते य संतापिते य संतप्पमाणे य ॥ ८ ॥
 10 उदगे व वातउण्हाहते य कुथिते व वुत्थ दड्डे वा । धूमायतम्मि य भोयणम्मि अग्निस्स उप्पत्ती ॥ ९ ॥
 डज्जति सुस्सति भज्जज्जते त्ति उक्खलिते पखलिते त्ति । कंढउत्तरीयते-त्ति य अग्नुप्पत्ति वियाणाहिं ॥ १० ॥
 अग्निउवजीवणे अग्निमेंढपव्वेसु अग्निकम्मेसु । उवकरणेसु य अग्निस्स जाण अग्निस्स उप्पत्ति ॥ ११ ॥
 उण्हे वातुब्भामे फरुसे वा अग्निसंभवं जाणे । उम्मुक्कपरिकूलेसु य अंगारे छारिकायं च ॥ १२ ॥
 रत्तम्मि य पुप्फ-फले रुधिरणिपाते य सव्वसत्ताणं । तिक्खरसे खारेसु य अग्नुप्पत्ति वियाणेज्जो ॥ १३ ॥
 15 अग्नि पुण जाततेओ अणलो वा हुतवहो त्ति जलणो त्ति ।
 पवणो त्ति य जोति त्ति य अग्निस्स भवंति णामाणि ॥ १४ ॥
 वस्सपमाणुप्पाते अगेयेसु पुण अप्पसत्थेसु । वित्थिण्णस्स णिवेसस्स ज्ञावणं सण्णिवेसस्सा ॥ १५ ॥
 मासपमाणुप्पाते अगेयेसु वि य अप्पसत्थेसु । मज्झिमकस्स णिवेसस्स ज्ञावणं मज्झसारस्स ॥ १६ ॥
 पक्खपमाणुप्पाते अगेयेसु वि य अप्पसत्थेसु । बाहासु सण्णिवेसस्स ज्ञामणं मज्झसारस्स ॥ १७ ॥
 20 दिवसपमाणुप्पाते अगेयेसु वि य अप्पसत्थेसु । गिहझामणिकं बूया ततिमगिहा जति य दव्वाणि ॥ १८ ॥
 मोहुत्तिकप्पमाणं अगेयेसु मुण अप्पसत्थेसु । जत्थुप्पज्जति अग्नी तत्थेव पसम्मते सिग्घं ॥ १९ ॥
 संवट्टका य वाता उण्हा लुक्खा गिहाणि भजंति । सुमहं अग्नुप्पातो जति भवति उ पुच्छणाकाले ॥ २० ॥
 तस-थावरसोभाणिव्वुत्तेसु वाते सुखेम वायंते । सुब्भिगंधा वाता य मणुणा खेमभावाय ॥ २१ ॥
 ॥ पडलं [तेवीसइमं] ॥ २३ ॥ छ ॥

[चउवीसइमं पडलं]

- वंदितु सव्वसिद्धे सज्जो वुट्ठिं तथा अवुट्ठिं च । वासारत्तविभागं वासपमाणं च वोच्छामि ॥ १ ॥
 वासं त्ति व सव्वे त्ति व णागा वरुणो जलाधिपो व त्ति । णार्गिद गइंदो सागरो समुदो त्ति वा बूया ॥ २ ॥
 एतेसि देवाणं णामे वा भूसणोवकरणे वा । सामुदकेसु भंडेसु चेव वासस्स उप्पत्ती ॥ ३ ॥
 इंदधणु-इंदकेतुग्गमेसु णिद्धासु इंदराईसु । कीर्डिदकायिका इंदगोपका इंदरुक्खा य ॥ ४ ॥
 30 णिद्धाणं फलिहाणं णिद्धाणं वुग्गमेण मेहाणं । दुमसंड-मच्छ-कच्छभ-गय-णगसंठाणरूवेहिं ॥ ५ ॥
 णिद्ध-घणे अच्छिद्धे परिवेसे यावि चंद-सूराणं । उदय-उत्थमणेसु समागमेसु तारा-गहाणं तु ॥ ६ ॥
 णिद्धायं संझायं णिद्धासु य सूरियस्स रस्सीसु । सूर-पडिसूरएसु य आवयदसुरसेते व ॥ ७ ॥

१ 'पकोविहीजण' हं० त० ॥ २ ८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति ॥ ३ वुस्सति सं ३ पु० । भुस्सति सि० ॥ ४ कढतुत्तरीयतेल्लिय हं० त० ॥ ५ पम्मुक्क हं० त० ॥ ६ 'कम्माणि पसस्सकारणं मज्झ' हं० त० ॥ ७ भूसणे व करणे हं० त० ॥ ८ 'त्थवणे' हं० त० ॥

लोह-गुलाणं झरणे लोहकलंके य णिहिसे वासं । कंडकण्णकग्गहणे पुढविठिते उण्हमुदके य ॥ ८ ॥
 तसकायाणं गब्भे जावणे रोहणे य बीयाणं । अंडग[प]पूरणम्मि य पिपीलिकाणं थलारुभणं ॥ ९ ॥
 गंडूपदणिक्खमणे कुलीर-मंडूक-कच्छभाणं च । उत्थलमारुभणे या मच्छाणं कच्छभाणं च ॥ १० ॥
 मच्छ-महंतमहोरग-समुद्दकाका तधेव वम्मीका । कासार-समुद्दच्छेणके य जलफेणके चेव ॥ ११ ॥
 मेहे विज्जुत-गज्जित-फुसिते वा पगलिते पवट्टे वा । जलसत्तपमोदे वा दारुकवासेलिकाकरणके वा ॥ १२ ॥ 5
 आषाणकप्पमोदे सोदकउक्कोसणे पपतणे वा । मत्त-पण्डु-पलोट्टे कट्टित-पासासकरणे वा ॥ १३ ॥
 उल्लपडसाडके केसपीलणे आसिते सवन्ते य । उक्कापतणे पुढविजओलुविले णिव्विले चेव ॥ १४ ॥
 धोवंतो वा पुच्छति हत्थं पादं मुहं व दूसं वा । उवकरण भायणं वा सज्जो वुट्ठिं विजाणेज्जो ॥ १५ ॥
 तेह्ल-घत-दुद्ध-दधि-मज्जपाणिते बहुविधे मधूसु तधा । रस-णिज्जासे णेहेसु चेव वासस्स उप्पत्ती ॥ १६ ॥
 सागर-णदी-तडागेषु चेव वावि-दह-कूव-वरणेषु । पुण्णेषु अत्थि वासं वासति पुण भिज्जमाणेषु ॥ १७ ॥ 10
 कुड-घडग-ऽरंजरुट्टिक-आचमणिक-करक-कुंडिकासु वि य । पुण्णेषु अत्थि वासं वासति य पलोट्टमाणेषु १८
 णिस्सेंधियाणि दुट्ठेषु मुत्त-पुरीसकरणेषु य काणे । सेआइयपसण्णे सव्वम्मि सरीरनीहारे ॥ १९ ॥
 एएसु अत्थि वासं वुट्ठी पडिपोगलेसु सव्वेसु । लुक्खेसु य तुच्छेसु य सुक्खेसु य आतवं बूया ॥ २० ॥
 णिस्सुंधिते सवाते वाति जति सगज्जितं तहिं वासं । रुदितेसु विज्जुपतणं उक्कापातं सणिद्धट्टे ॥ २१ ॥
 पासासम्मि पवट्टे खेले सिंघाणके य मुक्कासं । रुदितं पि य अणुबद्धं उच्चारगते महावासं ॥ २२ ॥ 15
 वदलिका वि असेआइते उल्लपडसाडकेसु वि य । वालेसेउसु पवट्टितेसु पवट्टिमं वासं ॥ २३ ॥
 दगअसणि-दगतुच्छलकेसु मज्जघर-पाणभूमीसु । वच्छच्छणम्मि य सहले य णिद्धे महितले य ॥ २४ ॥
 जातम्मि जलचरे जलउवक्खरे जलयरेसु सत्तेसु । पुण्णे फले य जलजे जलोवजीवीसु य णरेसु ॥ २५ ॥
 उदइकदगवड्ढुगि-णाविग-जलकम्मि-वाणिकाणं च । तेसि कम्मपुप्पतीसु चेव वासस्स उप्पत्ति ॥ २६ ॥
 उदगपधउदकसंकामणाय पणालीकोरणे य सव्वम्मि । दगजंतककुप्पलेसु चेव वासस्स उप्पत्ति ॥ २७ ॥ 20
 देवाणं ण्हाणेषु य रायीणं पि य महाभिसेगेषु । दगसेविगमज्जणके मज्जणग उवक्खरविधीसु ॥ २८ ॥
 वरमज्जणे वधूमज्जणे य गोसग्गण्हाणके चेव । वरपंचमज्जणे मज्जणे य तेरिक्खजोणीय ॥ २९ ॥
 एतेसु वुट्ठिपडिपोगलेसु दितेसु सोभमाणेषु । मुदितेसु उदत्तेसु य वुट्ठिमुदत्तं वियाणेज्जो ॥ ३० ॥
 एतेसि त्ताभे आगमे य उवगमण उवगमो वा वि । पादुब्भावे वा धारिते य वासस्स उप्पत्ती ॥ ३१ ॥
 एतेसि वुक्खणसेणे व्व हरणे व सण्णिरुद्धे वा । एतेसि च अलाभेण चेव जाणे अणावुट्ठि ॥ ३२ ॥ 25
 विपुलुत्तमेसु विपुलं मज्झिमसारेसु मज्झिमं वासं । अप्पं च भवति वासं अजातिमन्ते असारे य ॥ ३३ ॥
 फरुसंकिदुकसराय तिरिक्खजोणीय माणुसेसु वि य । कडुकासु य णासासु य फरुसासु भवे अणावुट्ठी ॥ ३४ ॥
 अभिजुत्तमभग-हते लागे वा बद्ध रुद्धे वा । णिस्ससित-छीत-कासित-जंभायन्ते अणावुट्ठि ॥ ३५ ॥
 णिप्पीलिते णिगलिते झीणे झविते य लुक्ख-तुच्छे य । तुस-कंतलिछारिका-चुण्णछारिकायं चऽणावुट्ठी ॥ ३६ ॥
 जति दिवसा आभोगे रोधणकमभिग्गहे व आतम्मि । दुक्खस्स व सहितव्वा तति दिवसे आहवं बूया ॥ ३७ ॥ 30
 जतिहि दिवसेहि मुच्चति इट्ठेहि समेहि इच्छितं लंभति । जं वेलं च विमुच्चति तं वेलं णिहिसे वासं ॥ ३८ ॥

१ कंडकसगहणे हं० त० ॥ २ 'णद्धपलोइयहेछट्टियपासा' हं० त० ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः सार्धश्लोकः हं० त०
 एव वर्तते ॥ ४ सासासम्मि पवट्टे हं० त० ॥ ५ 'दगवुच्चुल' हं० त० विना । ६ पाणजोणीसु हं० त० ॥ ७ तु
 खणासणो व सण्णि' हं० त० विना ॥ ८ 'सकतुगसरा' हं० त० विना ॥ ९ 'कवल' हं० त० ॥ १० आतवं हं०
 त० विना ॥ ११ भवति हं० त० ॥

- वासुप्पाते इट्ठे णिव्वाणिकरे सुभे पसत्थे य । इच्छापूरमपीडाकरेसु वासं सुभं बूया ॥ ३९ ॥
 वासुप्पातमणिट्ठे अणिव्वुतिकरे य अप्सत्थे य । पीलाकरे य असुभे वासं पीलाकरं बूया ॥ ४० ॥
 वासुप्पाते अप्पे अप्पं विपुले भवे महावासं । अणुबद्धे अणुबद्धं दिट्ठपणट्ठे य पुण जासो ॥ ४१ ॥
 दैवतपूतणियमे समिद्धजाग-बलिकम्मकरणे या । जारिसिया सा संपत्ति तारिसकं णिदिसे वासं ॥ ४२ ॥
 5 जण्णे छणुस्सए वा वाधुज्जे तध चोल-उवणयणे । उज्जाणभोज्ज-भत्तिय-जण्णागमणेषु य णराणं ॥ ४३ ॥
 आहारसुप्पत्ती गंधेसु वि य तध गंधसंपत्ति । १ विविधालंकारेसु वि जारिसिया रूवसंपत्ती ॥ ४४ ॥ २०
 एतेसु तु मणतुट्ठी गुणसंपत्ती व जारिसी भवति । हासजणणी णराणं तारिसिया वाससंपत्ती ॥ ४५ ॥
 देव-मणुस्सा पक्खी चतुप्पदा जलचरा थलचरा य । दीसंति लद्धलाभा यधलाभो तारिसं वासं ॥ ४६ ॥
 इच्छासंपत्तीयं तसकायाणं च थावरणं च । जारिसिया संपत्ती तारिसिकं निदिसे वासं ॥ ४७ ॥
 10 इच्छासंपत्तीसमागमेसु धम्म-ऽत्थ-कामजोगाणं । जारिसिया तु णराणं संपत्ती तारिसं वासं ॥ ४८ ॥
 अत्थकते संपत्ती कम्मकतम्मि य रतीअ संपत्ती । धम्मत्थे य समाधी जारिसिया तारिसं वासं ॥ ४९ ॥
 राईसु इस्सरेसु य महाधणाणं कुडुंबिणं चेव । बहुरयणसंचयाणं णगराणं जणपदाणं च ॥ ५० ॥
 इट्ठिगुणा रायगुणा आरंभगुणा कुडुंबिणं चेव । णगरगुणा णयरणं णिप्फत्तिगुणा जणपदाणं ॥ ५१ ॥
 जारिसिया सुयजंते कधासु वा जारिसा कधिज्जंति । आहारम्मि य वते तारिसकं णिदिसे देवं ॥ ५२ ॥
 15 कच्छाय जेट्टिकायं जति सिद्धी जेट्टकं भवति वासं । मज्झिमिकासु य मज्झं कणिट्टिकायं कणिट्ठं च ॥ ५३ ॥
 कच्छागतेसु जध तध जातिविसेसे वि समणुगंतव्वं । थाणविसेसेसु तधा सारा-ऽसारेसु य नराणं ॥ ५४ ॥
 कच्छागते ये काणं सेट्ठिमत्तत्थे कामजोगेसु । जारिसिया सिद्धीओ तारिसकं णिदिसे देवं ॥ ५५ ॥
 जुज्झजये पणितजये विज्जासिद्धीसु कम्मसिद्धीसु । जारिसिया सिद्धीओ तारिसकं णिदिसे देवं ॥ ५६ ॥
 जातीय उत्तमा हीणमुत्तमं उत्तमं च कच्छायं । सारम्मि उत्तमे वा वि उत्तमं णिदिसे वासं ॥ ५७ ॥
 20 एत्तो एक्कतरम्मि वि जध सिद्धी तारिसं भवति वासं । जैति वुत्तमसंजोगा ताव गुणं उत्तमं वासं ॥ ५८ ॥
 पुण्णामा पुण्णामा दक्खिणा य णिद्धा य मंगलिज्जा य । वद्धिकरा णंदिकरा य एरिसा होति उप्पाता ॥ ५९ ॥
 सव्वे मधुरा य मणोहरा य इट्ठा य णिव्वुतिकरा य । चित्ता आणंदकरा य वरिसिया होति उप्पाता ॥ ६० ॥
 जाती रूवं वण्णो सत्तं सारो बलं व तेयो य । णाणं विण्णाणं विक्कमो य पगती सभावो य ॥ ६१ ॥
 एताणि मणुस्साणं जध पवराणुत्तमाणि य भवंति । वासधरे समुदीरितम्मि तध उत्तमं वासं ॥ ६२ ॥
 25 से आयं वा लंभं णर-णारीणं व एक्कमेक्कम्मि । पीती बहुमाणोवग्गहो य पेम्माणुरागो य ॥ ६३ ॥
 एतेसि पडिपक्खम्मि अवासं विग्गहे सुवे तेसं । एतेसि च अलाभे णीहारमसंपदायं च ॥ ६४ ॥
 जारिसिया संपत्ती सद्-फरिस-रस-रूव-गंधाणं । गुणजुत्ता पीतिकरी तारिसकं णिदिसे वासं ॥ ६५ ॥
 फुसिताणि मुहुत्तेसु तु मुक्कासं च दिवसप्पमाणम्मि । पक्खेसु तु अणुबद्धं मासपमाणे विरैय पुरा ॥ ६६ ॥
 संवच्छरप्पमाणेषु णदिपूरणं लोकपूरो य । पुण्णो चंदो तो मेघा वासंति संवच्छरुप्पाता ॥ ६७ ॥
 30 लुक्खंगा तसकाया थावरकाया य रुक्खपुष्फ-फला । लुक्खा य दगत्थाणा वातो य भवे अवुट्ठीयं ॥ ६८ ॥
 णिद्धंगा तसकाया थावरकाया य णिद्धपुष्फफला । णिद्धा य दगत्थाणा वातो य भवे सुवुट्ठीयं ॥ ६९ ॥
 सिसिर-वसंत-णिदाहा तु सुपुष्फ-फल-सीतमुम्हाणं । अब्भुदये अतिसोभासु चेव अतिसोभमो बूया ॥ ७० ॥

१ देवयपूयाणियं हं० त० ॥ २ ०८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतमुत्तरार्धं हं० त० नास्ति ॥ ३ *णा य णराणं हं० त० ॥
 ४ आधारम्मि पवित्ते हं० त० विना ॥ ५ वकाणं सेट्ठिमत्तत्थे हं० त० विना ॥ ६ जति तुल्लमं हं० त० ॥ ७ *राय
 हं० त० विना ॥ ८ *पूरं तोकपू हं० त० ॥ ९ *मुण्हाणं हं० त० ॥

उदुसोभा य उपहता सीतं उण्हं फलं च पुष्पं च । उदयेसु ण सोभंते तदा अवुट्ठिं वियाणीया ॥ ७१ ॥
 सव्वा दिसा वितिमिरा चंदाऽऽदिच्चा गहा सणक्खत्ता । विमला विपुलसरीरा दीसंति णभे सुवुट्ठीयं ॥ ७२ ॥
 तिमिराकुला दिसाओ चंदाऽऽदिच्चा गहा सणक्खत्ता । फरुसा किंसा विपण्णा दीसंति णभे अवुट्ठीयं ॥ ७३ ॥
 सम्मं(मं) चरंति णक्खत्ता उदू पुष्प—फलाणि या । सम्मं चंदो य सूरु य सम्मं देवोऽत्थ वासति ॥ ७४ ॥
 विसमं चरंति णक्खत्ता फलं पुष्पं अणोदुगं । एवमादि जधाकालं काले वासति वासवो ॥ ७५ ॥ 5
 जुज्जति य जोतिसं सम्मं उदू पुष्प—फलाणि य । जधाकालं जधासुत्तं काले वासति वासवो ॥ ७६ ॥
 णक्खत्तजोगा उदुणो दुमा पुष्प—फलाणि य । ण भवति जधाकाले पच्छा देवो ति वासति ॥ ७७ ॥
 पुण्णे पुण्णामे दक्खिणे य णिद्धे य आमसित्ताणं । एतेसि पडिपक्खं पुणरवि पच्छा परामसति ॥ ७८ ॥
 पुरिमे मासे वासति आसारो पच्छिमेसु मासेसु । जाव बहं परिमसते जं बहुकं तं बहं बूया ॥ ७९ ॥
 लुक्खे णपुंसके तुच्छेके य वामकडुके य दीणे य । पुव्वं परामसित्ता पडिपक्खं से परामसति ॥ ८० ॥ 10
 पुरिमे मासे उगंतो पच्छा वासति य पच्छिमे मासे । जं च बहं परिमसती जं बहुकं तं बहं बूया ॥ ८१ ॥
 एसेव सव्वदव्वेसु गमो सह—रस—रूव—गंधेसु । सज्जीवे णिज्जीवे य जं बहं तं गहेतव्वं ॥ ८२ ॥
 जवमज्झा उप्पाता मुत्तिगमज्झा य जे उदीरंति । मज्झापसत्था अंतोसु गरिता पुरिमणिच्छेवा ॥ ८३ ॥
 एतेसु मज्झवासं मासे अस्सोय—पोट्टपादेसु । सावणबहुलामासेसु दोसु आसारमो बूया ॥ ८४ ॥
 जे होति पणवमज्झा किविल्लका वैज्ज—मुसलमज्झा वा । मज्झमि पलित्ता अंतकेसु विपुला पसत्था य ॥ ८५ ॥ 15
 एवं पुरिमं वासं मज्जे पच्छा व होति णातव्वं । तध पुरिम—पच्छिमं वा मज्झं वा जेण पुण जुज्जे ॥ ८६ ॥
 सिंसवेसयसव्वे वि सोभमाणा सव्वकालिकपसत्था । सव्वे वि अप्सत्था तदा अवुट्ठिं वियाणेज्जो ॥ ८७ ॥
 दिवस—मुहुत्तपमाणे वासारतो तु हवति दोमासो । फूसल्लि यत्थ वासति ण य होतित्थ सारधण्णाणि ॥ ८८ ॥
 पक्खपमाणुप्पाते वासारतो तु हवति तेमासो । फूसल्लि एत्थ वासति ण य होति तेलालपुरत्था ॥ ८९ ॥
 चातुम्मासं वासति वासपमाणे तु मज्झिमं वासं । मज्झिमिका एत्थ भवे णिप्फत्ती सव्वधण्णाणं ॥ ९० ॥ 20
 वासति य पंचमासे वासपमाणे तु उत्तमं वासं । णिप्फज्जते य सस्सा अधिगं सई सारधण्णाणं ॥ ९१ ॥
 पुण्णामे पुण्णेषु य णीरोगेसुवचितेसु णिद्धेसु । मुदितेसु उदत्तेसु य णिप्फत्ती सव्वधण्णाणं ॥ ९२ ॥
 लुक्खे णपुंसकेसु य तुच्छेसु किसेसु अप्सारेसु । थाणेषुवहुत्तेसु य इति बूया अवुट्ठिं वा ॥ ९३ ॥
 पुण्णेषु सुवुट्ठिं धातकं च अधिगं सई य धण्णाणं । तुच्छेण अवुट्ठिं छातकं व सई सस्सणासाय ॥ ९४ ॥
 पुण्णामे णिप्फत्ती पुण्णामाणं तु सव्वधण्णाणं । थीणामे णिप्फत्ती थीणामाणं च धण्णाणं ॥ ९५ ॥ 25
 पुण्णामा थीणामा य गत्थि सस्सा णपुंसके केयि । वासच्छिदं च भवे रित्तफला जायते सस्सा ॥ ९६ ॥
 उत्तममंगामासे पादुब्भावे य उत्तमाणं तु । उत्तमया भागाणं णिप्फत्ती सव्वधण्णाणं ॥ ९७ ॥
 मज्झिमगामामासे पादुब्भावे य मज्झिमाणं तु । मज्झिमजहण्णाणं णिप्फत्ती सव्वधण्णाणं ॥ ९८ ॥
 पेस्संगाणामासे पादुब्भावे य पेस्सवग्गस्सा । णिप्फत्ति धण्णाणं पेस्सजणस्सेव भोगाणं ॥ ९९ ॥
 पुण्णामा थीणामा उत्तम—मज्झिम—जहण्णावग्गा य । णिरुवहुता उवचिता य जति य होति पसण्णा वा ॥ १०० ॥ 30
 तण्णामा तव्वण्णा तं ताणि य जणामोपभोगा वा । निप्फज्जते य सस्सा अधिकं च सईमणा होति ॥ १०१ ॥

॥ पडलं चोवीसतिमं ॥ छ ॥

१ पव्वा देवोऽत्थ वा हं तं विना ॥ २ वासे वासति आकारो हं तं ॥ ३ जो बहं हं तं विना ॥
 ४ तु अंतो हं तं विना ॥ ५ सु मरि हं तं ॥ ६ मज्झमुसलबज्झा हं तं ॥ ७ अंधकेसु हं तं ॥
 ८ णिसाएत सव्वे हं तं विना ॥ ९ अधिसगई हं तं ॥ १० यं सिई हं तं विना ॥ ११ भागेणं हं तं ॥

[पणुवीसइमं पडलं]

- देवाणं तु पणामेण मुहुत्ता वंदितेण दिवसा तु । अभिसंश्रुतीए पक्खा ओवयित-णमंसिते मासा ॥ १ ॥
 धूमो चुण्णेषु कतो ति मुहुत्ता मुक्कपुप्फयो दिवसा । कंठेगुणेषु पक्खा मासा तु समिद्धजोगेसु ॥ २ ॥
 लाभस्स तु धुवकारे एवं कालो तु एस बोधव्वो । दुक्खस्स उ आगमणे पडिलोमो एस बोधव्वो ॥ ३ ॥
 5 अम्मा-पितीसु मासा पक्खा तु भवंति मातुवग्गम्मि । पुत्तेसु होति दिवसा अप्पसरीरम्मि य मुहुत्ता ॥ ४ ॥
 अप्पत्थम्मि मुहुत्ता पुत्तत्थम्मि दिवसे वियाणेज्जो । मित्तत्थम्मि य पक्खा मासा य महाजणत्थम्मि ॥ ५ ॥
 रायत्थो ति मुहुत्ता महतरकत्थो ति दिवसमो जाणे । णिगमत्था वि य पक्खा मासा य भवे जणपदत्थे ॥ ६ ॥
 रायाणं ति मुहुत्ता महतरकाणं ति दिवसमो जाणे । णिगमाणं ति य पक्खा मासा गामस्स आणं ती ॥ ७ ॥
 सेट्ठिपसादे मुहुत्ता दिवसा जाण पगतीपसादम्मि । ८ मँतिपसादे पक्खा मासा रायप्पसादम्मि ॥ ८ ॥ ९
 10 इंदग्गि ति मुहुत्ता पवणग्गि ति दिवसा विधीयंते । उदरग्गि ति य पक्खा मासा आदिच्चमग्गि ति ॥ ९ ॥
 विज्जुपतणे मुहुत्ता अग्गिणिपाते य दिवसमो जाणे । सूरणिपाते पक्खा मासा बुट्ठीणिपातम्मि ॥ १० ॥
 चोरुपरोधे मुहुत्ता वासुवरोधेण दिवसमो जाणे । मित्तुवरोधे पक्खा मासा रातोवरोधम्मि ॥ ११ ॥
 समतिच्छिण्ण मुहुत्ता थितम्मि दिवसा उवेक्खते पक्खा । मासा य णिवण्णम्मि तु वासा य भवे पसुत्तम्मि ॥ १२ ॥
 संपत्थितो ति मासा अद्धपधं आगतो ति १३ पक्खा तु । एकवसधि ति १४ दिवसा अतीति एते ति य मुहुत्ता ॥ १३ ॥
 15 परभज्जा ति मुहुत्ता दिवसा पणितमहिल ति णातव्वा । मित्तमिधुणं व पक्खा मासा य सकासु पत्तीसु ॥ १४ ॥
 अंतो बारमुहुत्ता दिवसा अब्भितरे उवट्ठाणे । पक्खा य आतिकासु तु मासा पुण अंगणे होति ॥ १५ ॥
 अंतोनिवेसणे होति मुहुत्ता कोट्टुके तधा दिवसा । उव्वरकम्मि य पक्खा मासा य भवे पडिदारे ॥ १६ ॥
 सारीमुहेसु तु दिवसा मुहुत्ता णिवेसणस्स दारम्मि । सारीसु होति पक्खा मासा पुण रायमग्गम्मि ॥ १७ ॥
 अंतोपुरे मुहुत्ता अंतोणगरे य दिवसमो बूया । बाहिरकायं पक्खा मासा गामंतरायम्मि ॥ १८ ॥
 20 सीमागते मुहुत्ता दिवसट्ठाणम्मि दिवसमो जाणे । पक्खा पक्खट्ठाणे मासा पुण दिवसमट्ठाणे ॥ १९ ॥
 मंडवको ति मुहुत्ता दिवसा उदयभंडघरकेसु । तणसालासु य पक्खा मासा य घरे समालम्मि ॥ २० ॥
 रायगिहेसु तु मासा पक्खा तेमग्गिहेसु णातव्वा । कारुग्गिहेसु दिवसा पधिकणिलयेसु तु मुहुत्ता ॥ २१ ॥
 खंधारो ति मुहुत्ता दिवसा गामेसु होति णातव्वा । खेडेसु होति पक्खा मासा णगरेसु णातव्वा ॥ २२ ॥
 सव्वेसु किच्छवित्तिसु मुहुत्ता कारुगेसु दिवसा तु । पक्खा वडपासेसु तु मासा सामाइयजणम्मि ॥ २३ ॥
 25 जण्ण-छणपरिवहेणेषु एत्थ वासाणि होति मासा वा । णिच्चणिवासणगेसु तु दिवसा पक्खा व णातव्वा ॥ २४ ॥
 चक्खणिक ति मुहुत्ता थित घोट्टेति दिवसा विधीयंते । भायणसुराय पक्खा मासा आपाणके होति ॥ २५ ॥
 पाणीयम्मि मुहुत्ता गुलपाणीयं परं च दिवसा तु । बहुपिट्ठीयं पक्खा जातिपसण्णा अरिट्ठे य ॥ २६ ॥
 मज्जमयो ति मुहुत्ता इस्सरियमयेसु वासमो बूया । विज्जामयो ति पक्खा मासे जाणे कुलमयो ति ॥ २७ ॥
 णीवारम्मि मुहुत्ता दिवसा कोट्टवउरालभत्तेसु । वीहीसु होति पक्खा मासा सालीसु णातव्वा ॥ २८ ॥
 30 अच्छंबिले मुहुत्ता दिवसा याकूसु होति णातव्वा । पक्खा अंबेल्लि-विलेवियम्मि मासा य कूरम्मि ॥ २९ ॥
 दुद्ध होति मुहुत्ता दिवसा दधिकम्मि होति णातव्वा । लवणरसम्मि य पक्खा मासा मधुरे रसे होति ॥ ३० ॥
 भिक्खायं तु मुहुत्ता दिवसा पुण वट्ठितो होति । परिवेसणं ति पक्खा मासा भोज्जं ति णातव्वा ॥ ३१ ॥
 दाणं पुप्फाणं होति मुहुत्ता भत्तवतदाणके दिवसा । अच्छदणम्मि पक्खा मासा य हिरण्णदाणम्मि ॥ ३२ ॥

१ ८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतमुत्तरार्धं हं० त० नास्ति ॥ २ ८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ३ एए
 ति य हं० त० ॥ ४ 'क्खा एम' हं० त० ॥ ५ 'वट्ठणे' हं० त० विना ॥ ६ दाणं युवव्वेणं हं० त० ॥

उत्ताणसेज्जमे होंति मुहुत्ता रिगमाणके दिवसा । तरुणवयम्मि य पक्खा मासा पुण मज्झिमवयम्मि ॥ ३३ ॥
 संज्ञायं तु मुहुत्ता दिवसा पढमिल्लके पदोसम्मि । पक्खा तु मासवेलं मासा तु ठितद्धरत्तम्मि ॥ ३४ ॥
 मासा चेव पवत्तिगतम्मि लेहागमे तु पक्खा तु । दिवसा गतागमणे तस्स णिग्गमणम्मि य मुहुत्ता ॥ ३५ ॥
 अरुणोदये मुहुत्ता दिवसा सुज्जोदये विधीयंते । पुव्वण्हम्मि य पक्खा मासा य भवंति अवरणहे ॥ ३६ ॥
 लोहरजे तु ८० मुहुत्ता ८० दिवसा तवु—सीसगेसु लोहेसु । पक्खा य तंबहारकूडके सुवण्णे तथा मासा ॥ ३७ ॥ 5
 दुविधम्मि काललोहे मासे संवच्छरे य जाणेज्जो । मासा तु तिवखलोहे वस्साणि तु मुंडलोहम्मि ॥ ३८ ॥
 अट्ठागते हिरण्णम्मि मुहुत्ता णाणकम्मि दिवसा तु । पण्णरसदे पक्खा मासा तीसोवके होंति ॥ ३९ ॥
 अट्ठाकयाकये होंति मुहुत्ता मासकैकये दिवसा । अट्ठकये य पक्खा मासा पडिकैकये होंति ॥ ४० ॥
 काहापणा यति कयक्कयम्मि मासा तु तत्तिया होंति । जति होंति सताणि कयाकयस्स तति होंति वस्साणि ॥ ४१ ॥
 तीसतिभागो सुहुमम्मि मुहुत्ता होंति सुहुमच्छेदे ति । खुडुलकभागच्छेदो मितिभागे दिवसमो जाण ॥ ४२ ॥ 10
 पण्णरसमम्मि भागे मज्झिमकायेसु पक्खमो जाण । बारसभागम्मि य कइकेसु मासो भवति कालो ॥ ४३ ॥
 अच्चत्थमहासारे बारसभागम्मि वस्समो जाणे । तति वस्सा णातव्वा हवंति जति भागलद्धीओ ॥ ४४ ॥
 अत्थत्थिकागमणम्मि पुण्णहत्थम्मि लाभमो बूया । रिक्तक—तुच्छकहत्थम्मि आगते णत्थि संपत्ती ॥ ४५ ॥
 उच्छंगभायणे होंति मुहुत्ता दिवसमो तु पुडिकासु । पक्खा तु विअलभाणे मासा पुण लोहभाणम्मि ॥ ४६ ॥
 वस्सपुप्फिते मुहुत्ता दिवसा किंचि पवट्ठिते होंति । पक्खा वहलिकाया मासा ये भवे विरजसूरे ॥ ४७ ॥ 15
 उल्लोकिते मुहुत्ता णक्खत्तेसु दिवसा विधीयंते । तारा—गहेसु पक्खा मासा पुण चंद—सूरेसु ॥ ४८ ॥
 एकगामे एकणारे व एकम्मि निवेसणे वा वि । मासा पक्खा व भवे बहुजणसाधारणे देसे ॥ ४९ ॥
 एकघर—एकसेज्जा—एक्कासण—एकभायणगते य । एक्कोऽत्थ अहोरत्तो अच्चासण्णे य मलितम्मि ॥ ५० ॥
 एतेसि भावाणं पसत्थगुणसंधवे सुभो लाभो । णिंदित—दोसगरहणासु चेव असुभो भवति लाभो ॥ ५१ ॥
 पुप्फरतम्मि मुहुत्ता दिवसा पुण होंति सुक्कपुप्फम्मि । गुच्छेसु होंति पक्खा भुंभलक—उरच्छके मासा ॥ ५२ ॥ 20
 आपेलगेसु दिवसा पक्खा पुण मालिकासु णातव्वा । वट्ठापेले मासा मुकुडेसु भवंति वस्साणि ॥ ५३ ॥
 अवरणहे वण्णेसु य दिवसा मासा व होंति सकलेसु । केणलीकतेसु पक्खा चुण्णाणि कतेसु य मुहुत्ता ॥ ५४ ॥
 देवेसु य रायीसु य मासा संवच्छरा य णातव्वा । पक्खा वा मासा वा सेसेसु मणुस्सभागेसु ॥ ५५ ॥
 आयरिय—उवज्जाये अम्मा—पितु—गुरुजणे य सव्वम्मि । थाणत्थिते य सव्वम्मि मासे संवच्छरे जाणे ॥ ५६ ॥
 एतेणऽणुमाणेण तु कालं मुण सव्वदव्वेसु । थाणत्थाणविसेसेहिं चेव मुण माणुसाणं पि ॥ ५७ ॥ 25
 जध कालो तध लाभो तथा सुहं तह य जीवितं देहं । तध दव्वाणं सारो तध ठाणगुणो य बोधव्वो ॥ ५८ ॥
 लाभो कालविभंगो सारा—ऽसारे य पुच्छणट्ठस्स । एगणमित्तेण वि अणुगतम्मि जुत्तेण बोधव्वं ॥ ५९ ॥
 आधारणासु ६० बहुसु वि जति सो चेव अणुबंधए भावे । ण य अण्णा उप्पज्जति तेण उ सव्वं ववसियव्वं ६०
 वामिस्सेसु ६० बहुसु वि णाणत्थेसु समुदीरमाणेसु । जे तब्भावणुबंधी तज्जोणीया य ते गज्झा ॥ ६१ ॥

॥ पडलं [पणुवीसइमं ॥ २५] ॥ छ ॥

30

१ ८० ८० एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति ॥ २-३ कक्कसे हं० त० ॥ ४ अब्भत्थ हं० त० ॥ ५ य रूवे विरजमूले हं० त० ॥ ६ णेयव्वा हं० त० ॥ ७ धण्णेसु हं० त० विना ॥ ८ कसणीक हं० त० विना ॥ ९ पुण्णा हं० त० विना ॥ १० कूलो हं० त० ॥ ११ दीहं हं० त० ॥ १२ हस्तचिह्नान्तर्गतः श्लोकपरिमितः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥

[छव्वीसइमं पडलं]

- दिट्ठुम्मि आगतम्मि य लद्धे थोवतरके मुहुत्तगगे । दीवस्स य णिव्वामण एकदिवसो मुणेतव्वो ॥ १ ॥
 एकजुगलम्मि पुरि[सि]त्थिसंगमे एकमो अहोरेत्तं । रत्तंबरवुच्छेहि य परिवुत्थं होयहोरेत्तं ॥ २ ॥
 जति मिधुणकाणि संपेडिताणि तति णिदिसे अहोरेत्ते । जति पुण्णामाणि समागताणि तति णिदिसे दिवसे ॥ ३ ॥
 5 जं जतिहि अहोरेत्तेहि होति जं जतिहि भवति दिवसेहि । पक्खेहि व मासेहि व तस्सुप्पत्तीय सो कालो ॥ ४ ॥
 जो जत्तिएण कालेण जाति जातं च भवति णिप्फण्णं । सो कालो णातव्वो तस्सुप्पायस्स लद्धीय ॥ ५ ॥
 जं जत्तिएण कालेण कीरते जस्स देसकालस्स । जम्मि व कीरति काले सो कालो तेण णातव्वो ॥ ६ ॥
 कतणिट्ठितम्मि दव्वे वालाभमुपट्ठितम्मि कालेण । जेण य तं निप्फज्जति सो कालो तेण बोधव्वो ॥ ७ ॥
 आगतमेत्ते व समागते व दिण्णम्मि णिट्ठिते लद्धे । सिग्घं च पडुप्पण्णे संपत्ती तत्तियं वेलं ॥ ८ ॥
 10 एहिंति दाहिंति काहिंति कम्मं होहिंति व मा व तूरित्थ । दुक्खेण व परिगणितम्मि दिग्घकालो भवति कालो ॥ ९ ॥
 थोवं .सेसं सिद्धं विपच्चते थाहि ता मुहुत्तागं । दुरागतो पधे वा गतेहि दिवसा मुहुत्ता वा ॥ १० ॥
 पुण्णेषु समत्तेसु य मासं संवच्छरं ति जाणेज्जो । सव्वट्ठेसु य पक्खो दिवसो य चतुत्थभागेसु ॥ ११ ॥
 जुण्ण-विमदित-खलित-विलिहिते दीहेण भवति कालेण । णव-तरुण-सरस-लहुसंपदासु थोवो भवति कालो ॥ १२ ॥
 सव्वेसिं दव्वाणं अक्कत्तिमाणं च कत्तिमाणं च । इट्ठत्त-मज्झिममणिट्ठता य तिविधा गती णेया ॥ १३ ॥
 15 पुण्णामा सारजुता मज्झिमसारा य होति धीणामा । जे तु णपुंसकणामा ते तु असारेसु बोधव्वा ॥ १४ ॥
 कालो तु महासारेसु महंतो मज्झो य मज्झसारेसु । अप्पो य हवति कालो असारवंतेसु सव्वेसु ॥ १५ ॥
 जध णामा तध रूवा सद्दा गंधा रसा य फासा य । पंचविधा उप्पाता एतेण गमेण बोधव्वा ॥ १६ ॥

॥ भगवतीय महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय कालज्झायो पडलं ॥ २६ ॥ छ ॥

[सत्तावीसइमं पडलं]

- 20 अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय कालप्पविभागं णामज्झायं वक्खस्सामि । तं जधा-
 तत्थ कालो पंचविधो भवति । तं जधा-मुहुत्तप्पमाणं दिवसप्पमाणं पक्खप्पमाणं मासप्पमाणं संवच्छरप्पमाणमिति ।
 मुहुत्तप्पमाणं ८० तिविधं-१० दिवसप्पमाणं रत्तिप्पमाणं भिण्णरत्ति-दिवसप्पमाणमिति । तत्थ दिवसप्पमाणं
 तिविधं-पंचरत्तप्पमाणं दसरत्तप्पमाणं षण्णरत्तप्पमाणमिति । तत्थ पक्खप्पमाणं बिबिधं-एकपक्खप्पमाणं बिपक्खप्प-
 माणमिति । तत्थ मासप्पमाणं एक्कारसविधं-एकमासप्पमाणं बिमासप्पमाणं तिमासप्पमाणं चतुमासप्पमाणं पंचमास-
 25 प्पमाणं छम्मासप्पमाणं सत्तमासप्पमाणं अट्ठमासप्पमाणं णवमासप्पमाणं दसमासप्पमाणं एक्कारसमासप्पमाणं ८० मिति ।
 तत्थ संवच्छरप्पमाणं अपरिमितविधं भवति ।

- तत्थ केस-मंसु-णह-लोमसमामासे खुडुसत्तेसु अणूसु ठिएसु अच्छरप्फोडणे अंगुलिप्फोडणे य मुहुत्तप्पमाणं बूया ।
 तत्थ कणह-णास-भुमक-णयण-जिब्बोट्ट-दंत-पोरिसपरिमासे अंगुट्टकंगुलिगहणे मज्झिमाणंतरकायेसु चेव पुष्फ-फलेसु
 दिवसप्पमाणं १० एवं बूया । तत्थ जंधोरु-हत्थ-पाद-बाहु-गीवा-अंस-कोप्पर-फिजागहणे मज्झिमकायेसु सत्तेसु
 30 मज्झिमकायेसु पुष्फ-फलेसु चेव पक्खप्पमाणं बूया । तत्थ पट्ठी-उदर-कडी-उर-सीससमामासे कायवंतेसु सत्तेसु चेव पुष्फ-
 फलेसु मासप्पमाणं बूया । एते चेव उद्धभागेषु उम्मट्टेसु वासं संवच्छरप्पमाणं बूया । तत्थ अवदातेसु सुक्कपक्खं दिवसं वा

१ णेवापेण हं० त० विना ॥ २ हस्तचिह्नान्तर्गतमुत्तरार्धं हं० त० एव वर्तते ॥ ३ *म्मि दिवसे वालारसु पट्ठि हं०
 त० ॥ ४ *ज्झायो सम्पत्तो ॥ छ ॥ हं० त० विना ॥ ५ ८० एतच्चिह्नान्तर्गतं पदं हं० त० नास्ति ॥ ६ ८० १०
 एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठसन्दर्भः हं० त० नास्ति ॥

बूया । कण्हेसु कालपक्खं रत्तिं वा बूया । सामेसु संज्ञं वा पक्खसंधिं वा बूया । णिद्धेसु वासारत्तं बूया, कण्हेसु वि वासारत्तं बूया । सुक्केसु सरदं बूया, पसण्णेसु वि सरदं बूया । सीते हेमंतं बूया, ०८ संवुत्तेसु य हेमंतं बूया । १० [.....सिसिरं बूया,.....वि सिसिरं बूया ।] सामेसु वसंतं बूया, मुदितेसु वि वसंतं बूया । लुक्खेसु गिम्हं बूया, उण्हेसु वि गिम्हं बूया । बालेयेसु पाउसं बूया, उवणिद्धेसु णिद्धेसु वा पाउसं बूया । एवं रत्तीयं वा दिवसे वा सुक्कपक्खे वा कालपक्खे वा अण्णतरस्सि वा छण्हं उदूणं उदुंसि आधारित्सि संज्ञा—पक्खसंधीसु वा 5 उदुसंधीसु वा आधारितेसु एतेहिं जधुत्तेहिं आमासेहिं उवलद्धव्वं भवति, सद्—रूपपादुब्भावेसु चेव समणुगंतव्वं भवति ।

तत्थ मासेसु पुव्वाधारितेसु कतमो मासो ? ति । तत्थ पुरिमेसु गतेसु कत्तियं वा मग्गसिरं वा पोसं वा बूया, संवच्छरे पुव्वाधारिते अग्गेयं वा सोमं वा पोसं वा संवच्छरं बूया । दक्खिणेसु गतेसु ०९ माहं वा फग्गुणं वा चेत्तं वा वेसाहं वा मासं बूया, संवच्छरे पुव्वाधारिते १० माहं वा फग्गुणं वा चेत्तं वा वेसाहं वा संवच्छरं बूया । पच्छिमेसु गतेसु जेद्धामूलं वा आसाढं वा सावणं वा मासं बूया, संवच्छरे पुव्वाधारिते जेद्धामूलं वा आसाढं 10 वा सावणं वा संवच्छरं बूया । वामेसु गतेसु पोढुपदं वा अस्सयुजं वा मासं बूया, संवच्छरे पुव्वाधारिते पोढुपदं वा अस्सोजं वा संवच्छरं बूया । दहेसु गतेसु फग्गुणं वा आसाढं वा पोढुपदं वा मासं बूया, संवच्छरे पुव्वाधारिते फग्गुणं वा आसाढं वा पोढुपदं वा संवच्छरं बूया । चलेसु सावणमासं बूया, संवच्छरे पुव्वाधारिते सावणं संवच्छरं बूया । निद्धेसु सावणं वा पोढुपदं वा अस्सोजं वा कत्तियं वा बूया, संवच्छरे पुव्वाधारिते सावणं वा पोढुपदं वा अस्सोजं वा कत्तियं वा संवच्छरं बूया । लुक्खेसु चेत्तं वा वेसाहं वा जेद्धामूलं वा आसाढं वा मासं बूया, संवच्छरे 15 पुव्वाधारिते चेत्तं वा वेसाहं वा जेद्धामूलं वा आसाढं वा संवच्छरं बूया । सीतेसु संवुत्तेसु य मग्गसिरं वा पोसं वा माहं वा मासं बूया । संवच्छरे पुव्वाधारिते मग्गसिरं वा पोसं वा माहं वा संवच्छरं बूया । एवं आमाससद्—रूपपादुब्भावेसु उदुउपचारेहिं कम्म—चेद्धापैविचारेहिं णक्खत्तदेवयकम्मोवयारेहिं उवलद्धीहिं चेव जधोपदिद्धेहिं आधारयित्ता आधारयित्ता मास—संवच्छरोपलद्धीहिं कमसो पवासमणुगंतव्वं भवति । इति मासपरिसंखा ।

०८ संवच्छरपरिसंखा १० पमाणाणि चेव णामतो देवतोपलद्धीहिं उदुप्पविभागेहिं चेव वक्खातं भवतीति । तत्थ 20 पक्खे पुव्वाधारिते णीहारेसु पक्खप्पमाणं बूया । उज्जुभागेसु अवत्थितेसु मासप्पमाणं बूया । आहारेसु तिपक्खप्पमाणं बूया ।

दिवसे पुव्वाधारिते एक्कगते एक्काभरणके एक्कोपकरणे एक्कचरेसु सत्तेसु एक्कसाहागते चेव एक्काहिकप्पमाणं बूया । तत्थ दंडेसु गतेसु बिअंगुलिग्गहणे यमलाभरणके यमलोपकरणे मिधुणचरेसु चेव सत्तेसु बिहप्पमाणं बूया । तत्थ तिअंगुलिग्गहणे भुमकंतरे णासग्गे तिके अपदूयं अखंतरे पोरिसे बत्थिसीसे तियमलोपकरणे तिकसद्पडिरूव—आकार—पादुब्भावेसु चेव तिहप्पमाणं बूया । तत्थ चउरंगुलिग्गहणे पादतल—पाणितले उम्मज्जिते उल्लोकिते उट्ठिते णट्टे गीते 25 वादिते दंडजमलोदीरणे चतुक्कसद्पडिरूवे आकारपादुब्भावेसु चेव चातूहिकप्पमाणं बूया । तत्थ पंचंगुलिग्गहणे मुट्ठिग्गहणे थणग्गहणे फिजाग्गहणे सयणा—ऽऽसणे सपुरिसे सव्वपंचकपरामासे पंचकसद्पडिरूवा—ऽऽगारपादुब्भावेहिं चेव पंचाहप्पमाणं बूया । तत्थ गुप्फग्गहणे मणिबंधग्गहणे छसु वा एक्ककेसु तिसु वा बिकेसु बिसु वा तिकेसु एक्कके पंचकसहिते बिके चतुक्कसहिते छक्कसद्पडिरूव—आकारपादुब्भावेहिं चेव छाहिकप्पमाणं बूया । तत्थ सत्तकपरामासे चतुक्के तिगसहिते पंचगे दुगसहिते छक्के एक्ककसहिते बिसु वा तिकेसु एक्कगसाधारणेसु तिसु वा बिकेसु एक्कसाधारणेसु 30 सत्तकसद्पडिरूव—आकारपादुब्भावेसु चेव सत्ताहिकप्पमाणं बूया । तत्थ बिचउक्कोदीरणे चउण्हं वा दुगाणं दंसणे अट्ठसु

१ ०८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ २ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ३ परिचारे हं० त० विना ॥ ४ ०८ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ५ अपत्तयं अखंतरे हं० त० विना ॥ ६ मुट्ठिकरणे थणंतरे गहणे फिजां हं० त० विना ॥

वा एककेसु अट्टकसदपडिरूव—आकारपादुभावेसु चेव अट्टाहिकं बूया । तत्थ चउक्कपंचकोदीरणे अट्टके एकगसंहिते तिकाणं वा तिण्हं दंसणे सत्तके बिकसहिते णवण्हं वा एककाणं उंदीरणे परामासे वा णवकसदपडिरूवा—ऽऽकारपादुभावे चेव णवाहिकप्पमाणं बूया । तत्थ पंचकदंडोदीरणे पंचकजुगलगहणे पंचण्हं वा बिकाणं दंसणे दसकपरामासे वा दसकवग्गोदीरणे वा दसकपडिरूव—आकारपादुभावे चेव दसाहिकप्पमाणं बूया । एवं णेतव्वं वा योगेणं दिवसप्पमाणं जाव एकूणतीसतिरत्तातो । बिपक्खे वाऽऽधारिते उप्पण्णे वा जोगेणं पण्णसरत्तातो उद्धं जाव भिण्णमासमासप्पमाणातो ति णेतव्वं दिवसप्पमाणं भवति । इति दिवसप्पमाणं वा योगते आमास—सद्—पडिरूवपादुभावेहिं य उवलद्धव्वं भवति ।

तत्थ मासप्पमाणे पुव्वाधारिते एतेणेव एकवग्गादिणा दुग—तिग—चउक्क—पंचक—छक्क—सत्तक—अट्टक—णवक—दसक—वग्गक्कमेणं यथा दिवसप्पमाणं उवदिट्ठं आमास—सद्—पडिरूवा—ऽऽकारपादुभावविधीहिं तहा पक्खप्पमाणं ८१ मेवि णेतव्वं भवति । जधा वा जोगप्पमाणं दिवसप्पमाणे १० उदिट्ठं तधा ८२ मासप्पमाणं पि वा जोगए १०दिट्ठव्वं भवति । इति ८३ मासप्पमाणं वक्खातं भवतीति ।

तत्थ संवच्छरप्पमाणे पुव्वाधारिते संवच्छरप्पमाणे उप्पण्णे जधा मासप्पमाणेण एकवग्गादिणा बिग—तिग—चउक्क—पंचक—छक्क—सत्तक—अट्टक—णवक—दसकवग्गक्कमेण जधा मासप्पमाणमुवदिट्ठं आमास—सद्—पडिरूवा—ऽऽकारपादुभावविही तधा संवच्छरप्पमाणं व णेतव्वं भवति । जाव कोडिवग्गाओ अपरिमितवग्गातो वा यधा वा जोगा अक्खट्ठाणं आमासा य उवदिट्ठा णिधीसुत्ते तधा णेतव्वं भवति संवच्छरप्पमाणं परिमितं अपरिमितं चेति । मुहुत्त—दिवस—पक्खप्पमाण—१५ मास—संवच्छरप्पमाणाणि चेव पुणरवि अण्णोण्णसमाजोगेणं भिण्णाणि एतेहिं चेव वग्गेहिं वा जोगट्ठाणेहिं य आधारयित्ता संजोयणाविसेसेहिं सम्मं समणुगंतव्वाणि भवन्ति ॥

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय कालज्झायो णाम

एगोनषट्ठि(णसट्ठि)मो सम्मत्तो ॥ छ ॥

[सट्ठिमो पुव्वभवविवागज्झाओ—पुव्वद्धं]

२० अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय पुव्वभवविवागं णामज्झायं । तं खलु भो ! तमणुवक्ख—स्सामि । तं जधा—तत्थ अंगवत्ता अव्वगेणं मज्झत्येणं तणुरागदोसेणं भवितूणं अप्पणो अज्झत्यभावेणं परेण वा पुच्छितेणं 'को मे भंते ! पुरिमो अणंतरपच्छाकडो भवो ?' ति एवमुत्तेणं सम्मव्वग्गसतीकेणं अंतरंगे बाहिरंगे वा तदुभये वा भवो चउव्विहो आधारयितव्वो भवति । तं जधा—देवभवो मणुस्सभवो तिरिक्खजोणिकभवो णेरइकभवो चेति । तत्थ उद्धंगीवाय सिरमुहामासे उम्मज्जिते उल्लोकिते पहस्सिते उस्सिते उट्ठिते एकंसाकरणे छत्त—भिगार—पडागा—लोमहत्थ—२५ वासणकडक—चामरा—वीजणीदंसणे सेसा—जाग—जण्ण—बलिपादुभावे पहेणकगते अच्चिगते वंदिते पूयिते सक्कते संथुते णमोक्कारअंजलिकरणे देवतपूयापादुभावे सव्वदेवगते सव्वदेवणामोदीरणे सव्वदेवणामधेज्जे थी—पुरिसगते देवकम्मपरि—कित्तणासु सव्वदेवोपचारगते एवंविधे पेक्खितामासे सद्—पडिरूवपादुभावे चेव देवभवातो आगते सि देवा अणंतरपच्छाकडो ति बूया । तत्थ कतरातो देवणिकायातो आगतो ? ति पुणरवि आधारयितव्वं भवति । तं जधा—देवज्झाते तं उवदिट्ठं विधी देवणिकायाणं आमास—सद्—पडिरूवपादुभावोपलद्धीहिं तधा आधारयितव्वं भवति, ३० आधारयित्ता उवलद्धव्वा भवति । तत्थ पुणरवि देवोपलद्धीयं देवत्तातो आगतो आधारयितव्वं भवतीति इति देवभवो पुरिमो विण्णेयो भवति ।

१ वा जोगेणं हं० त० ॥ २ ८१ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्त्तते ॥ ४ 'तव्वं भवति' हं० त० ॥ ५ समाप्तः हं० त० ॥ ६ उवहिं एकं हं० त० ॥ ७ कमेरावीजणादं हं० त० ॥ ८ देवस्सए उवविट्ठं हं० त० ॥ ९ देवरूवो हं० त० ॥

तत्थ समगत्तामासे उज्जुकपेक्खिते उज्जुकवक्कोपचारे उज्जुभावगते उज्जुववहारगते णिक्कडे णिरुवहते सव्वउज्जुककम्मोपचारगते अविस्वादाय सव्वमाणुसगते सव्वमाणुसोपचारगते ६ सव्वमाणुसोपकरणगए ७ सव्वमाणुसकम्मचेद्वागते चेव एवंविधे पेक्खितामासे पडिरूव-सद्दपादुब्भावे चेव माणुसभावतो आगतो सि माणुसभावतो अणंतरपच्छाकडो ति बूया । तत्थ कतमेहि माणुसेहि आगतो ति जधुत्तं आधारयितव्वं । तस्स जातीविचये आरिय-मेलक्खु-अज्ज-पेस्सोपलद्धीयं दीव-समुद्-पव्वतवासोतो वा आमास-पडिरूव-सद्दपादुब्भावोपलद्धीहि आधारयित्ता ५ आधारयित्ता उवलद्धव्वं भवतीति । तत्थ पुणरवि थीभावातो वा पुरिसभावातो वा कतो आगतो ति आधारित्सि जधुत्ताहि थी-पुरिसणपुंसकोपलद्धीहि उवलद्धव्वं भवतीति । इति मणुस्सभवो पुरिमो विण्णेयो ।

तत्थ तिरियामासे सव्वउवधि-णिकडि-सातिकजोगकरणे सव्वअणज्जवभावगते सव्वतिरिक्खजोणीगते सव्वतिरिक्खजोणीकणामगते सव्वतिरिक्खजोणिकउवचारगते सव्वतिरिक्खजोणीमये उवकरणे सव्वतिरिक्खजोणीकउवकरणे सव्वतिरिक्खजोणीकणामधेज्जे थी-पुरिसउवकरणगते एवंविधे पेक्खितामासे पडिरूव-सद्दपादुब्भावे चेव तिरिक्खजोणिगभावतो १० सि आगतो ति बूया । पुव्वमाधारित्सि जधुत्ताहि ऐकंदिय-बेइंदिय-तेइंदिय-चउरंदिय-पंचंदियोपलद्धीको जीवणि-कायाणं तसाणं थावराणं व तिरिक्खजोणीकाणं व विधिभेदोपलद्धीयं चित्ति अज्झाये आमास-सद्-रूवपादुब्भावेहि तथा सव्वं समणुगंतव्वं भवतीति । तत्थ पुणरवि आधारित्सि कतो आगतो ? इति (इत्थि) भावातो पुरिसभावातो णपुंसकभावतो ? ति । इमे कायणपुंसका विण्णेया भवन्ति, तं जधा-पुढविकाइया आयुकायिका तेउकायिका वाउकायिका वर्णप्फतिकायिका, एते ऐकंदिया ऐकंदियोपलद्धीयं णपुंसकवेदा वेति विण्णेयं । ११ बेइंदिया तेइंदिया १५ चउरंदिया एते वि सकाहि उवलद्धीहि उवलब्ध णपुंसकवेदो ज्जेव विण्णेयो भवति । पंचंदियतिरिक्खजोणिकेसु सकायं उवलद्धीयं उवलद्धेसु तिविधमाधारयितव्वं भवति-थियो पुरिसा णपुंसका चेति । एते जधुत्ताहि थी-पुरिस-णपुंसकोपलद्धीहि आधारयित्ता आधारयित्ता थियो पुरिसा णपुंसका चेति थीणामाणंतरा विण्णेया भवन्तीति । इति तिरिक्खजोणीगता पुरिमभावा अणंतरपच्छाकडा उवलद्धव्वा भवन्तीति ।

तत्थ अधोगत्तामासे णिण्णामासे कण्हामासे उवहुतामासे संकिलिद्धामासे दुग्गंधामासे दारुणामासे अमणुणसद्- २० पडिरूव-गंध-फासगते सव्वदारुणकम्मोपचारगते सव्वणेरइयणामपादुब्भावे सव्वणिरयपुरक्खडोपचारगते सव्वणेरयिकणामधेज्जे थी-पुरिसगते एवंविधसद्-रूवपादुब्भावे चेव णेरइकभावतो सि आगतो णेरइकभवो ते अणंतरपच्छाकडो ति बूया । तत्थ कतमेहि णेरयिकेहि आगतो ? ति पुणरवि आधारित्सि जधुत्ताय चित्ताय णेरइकोपलद्धीओ लेस्साहि वेदणाहि ठित्तिविसेसेहि आमास-सद्-पडिरूवपादुब्भावोपलद्धीहि तथा सव्वं समणुगंतव्वं भवतीति । तत्थ पुणरवि णेरइए पुव्वाधारित्ते णेरइया णपुंसका चेव सव्वे उवलद्धव्वा भवन्तीति । एवं लेस्साहि वेदणाहि ठितीविसेसेहि पुढवीए विचयेण २५ पढमाय बित्तिाय ततियाय चउत्थीयं पंचमीयं छट्ठीयं सत्तमीयं ति आगमणाणि आधारयित्ता आधारयित्ता आमाससद्-पडिरूवसण्णाभिणिवेसेहि य उवलब्ध णेरयिकभवो पुरिमो विण्णेयो भवतीति ॥

॥ पुरिमभवविभागो णामा षट्ठिमोऽध्यायः समाप्तः ॥ छ ॥

[॥ पुव्वद्धं ॥ छ ॥]

१ 'ज्जुवकोप' हं० त० ॥ २ 'अतिसं' हं० त० ॥ ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० एव वर्तते ॥ ४ 'भावतो' हं० त० विना ॥ ५ 'सी चेव आ' हं० त० ॥ ६ 'माणुसभवे पुरिसमो' हं० त० विना ॥ ७ 'माति' हं० त० विना ॥ ८ 'जोणीगए भ' हं० ॥ ९ 'बेइंदिय-तेइंदिय' हं० त० ॥ १० 'भावओ' हं० त० ॥ ११-१२ 'भावओ' हं० त० ॥ १३ 'णस्सइका' हं० त० ॥ १४ 'बेइंदिया तेइंदिया' हं० त० ॥

[सट्ठिमो उववत्तिविजयज्झाओ-उत्तरद्धं]

अधापुव्वं खलु भो ! महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय उववत्तिविजयो णामज्झायो, तमणुवक्खस्सामि । तत्थ अंगविदा सम्मं अप्पाणं पडिदेक्खियाणं सव्वंगेण सव्वंगसंकेणं अवहट्ठु राग-दोसे मज्झत्थेणं सम्मं आधारणे जोगं समंताहारपणिधितेणं एक्कगमर्तियसमंताहारेणं तप्परेणं अप्पणो अज्झत्थे सण्णायं आधारयमाणेणं 'कत्थ इमं 5 जंतुमुपपज्जिस्सति ?' ति 'काऽस गती पुरेक्खडे ?' ति एव पुव्वाधारितेण वा आधारयमाणेणं उपपत्ती जीवाणं उवलद्धव्वा भवति । तं जधा-णिरयभवोपपत्ति तिरिक्खभवोपपत्ति मणुस्सभवोपपत्ति देवभवोपपत्ति सिद्धिअभवउपपत्ति णिव्वाणमिति । तत्थ णेरयिकोपपत्ति तिरिक्खजोणिकोपपत्ति मणुस्सगतोपपत्ति देवोपपत्ति चेति चतुव्विधा संसारोपपत्ती विण्णेया भवति । सिद्धउपपत्ती मोक्खो अपुणब्भवो संसारविप्पमोक्खो असंसारोपपत्ती विण्णेया भवति । तत्थ अंतरंगे वा बाहिरंगे वा तदुभये वा आधारयित्ता संसारोपपत्ती पुणब्भवो चतुव्विधो सिद्धीउपपत्ती चेव अपुणब्भवो इमेहिं आमास-सद्-10 पडिरूवविसेसेहिं उवलद्धव्वं भवतीति ।

तत्थ अधोगत्तामासे णिण्णामासे कण्हामासे किलिट्टामासे दुग्गंधामासे ∞ उव्वहुतामासे > सव्वदारुणगते सव्वणिरयपुरक्खडोपचारगते णेरयिकणामपादुब्भावे णेरयिकपडिरूवगते णेरयिकणामथी-पुरिसउवचारगते णिरयणामोदीरणे णिरयणुभागपरिकित्तणासु णिरयोपपातकधासु अमणुणसद्-पडिरूव-गंध-रस-फासोदीरणेसु चेव उव्वेदणीयासु एवंविधे पेक्खितामासे सद्-पडिरूवपादुब्भावे चेव णिरयमुपपज्जिस्सतीति णिरयभावो ते अणंतरपुरक्खडो ति बूया । तत्थ कतमं 15 णिरयमुपपज्जिस्सतीति पुव्वमाधारिते सीतवेदणीयं उप्पिणवेदणीयं व ति । तत्थ अग्गेयेसु सव्वअग्गिपादुब्भावे सव्वउसुणफासपादुब्भावे सव्वपयणपादुब्भावे सव्वतापणपादुब्भावेसु उसु[ण]जोणीकेसु सत्तेसु अग्गिउवकरणेसु अग्गिसरीरेसु वा उवकरणेसु एवंविधे सद्-रूवपादुब्भावे वा उसुणवेदणीयं णिरयं उपपज्जिस्सति ति बूया । तत्थ सव्वआपुणेयेसु संवत्तेसु सव्वसीतफासेसु सव्वसीतआपुजोणीयं सव्वआपुमये उवकरणे हेमंतोपकरणेसु हेमंतसीतफास-सीतवातपरिकित्तणासु सीतजोणिकेसु सत्तेसु सीतहुयपरिकित्तणासु चेव एवंविधे सद्-पडिरूवपादुब्भावे सीतवेदणीयं 20 णिरयं उपपज्जिस्सति ति बूया । किलेसे निरये उपपज्जिस्सति ति लेसायं आधारितायं कण्हवण्णपडिरूवगते कण्हलेस्सजीवपरिकित्तणे चेव कण्हलेसं णिरयं उपपज्जिस्सति ति बूया । तत्थ णीलवण्णे पडिभोगपरामासे णीलवण्णपडिरूवगते य णीललेस्सजीवपरिकित्तणेसु चेव एवंविधे सद्-पडिरूवपादुब्भावे णीललेस्सं णिरयं उपपज्जिस्सति ति बूया । तत्थ कावुवण्णपडिभोगपरामासे कावुवण्णपडिरूवगते कावुलेस्सजीवपरिकित्तणेसु चेव एवंविधे सद्पडिरूवपादुब्भावे कावुलेस्सं णिरयं उपपज्जिस्सति ति बूया । तत्थ 'कतमस्सि पुढवीयं उपपज्जिस्सति ?' ति पुव्वमाधारयितव्वं भवति । 25 गणणापरिसंखायं एकक-बिक-तिक-चउक्क-पंचक-छक्क-सत्तकेहिं ठियामासठाणेहिं उवलब्भ पढम-बितिय-ततिय-चउत्थी-पंचमी-छट्ठी-सत्तमीयो पुढवीयो अमुकिस्सि पुढवीयं उपपज्जिस्सति ति बूया । 'किंठित्तीयं उपपज्जिस्सति णिरयं' ति पुव्वमाधारितंसि सव्वपादुब्भावेसु सव्वंगिकिं ठितिं बूया । जधण्णपलितोवमेसु वा आधारितेसु पलियपडिरूवेसु पलियपडिरूवेहिं सद्देहिं य पलितोवमं विण्णेयं, सागरपडिरूवेण य सागरसद्देदीरणेहिं सागरोपमं विण्णेयं । गणणापरिसंखायं गेतव्वाणि पलितोवमाणि सागरोपमाणि य आधारयित्ता आधारयित्ता विण्णेयाणि भवंति 30 सागरोपमाणं परिसंखा ।

सिद्धं खीरिणि ! खीरिणि ! उदुंबरि ! स्वाहा, सव्वकामदये ! स्वाहा, सव्वणाणसिद्धिकरि ! स्वाहा १ । तिण्णि छट्ठाणि, मासं दुद्धोदणेणं उदुंबरस्स हेट्ठा दिवा विज्जामधीये, अपच्छिमे छट्ठे ततो विज्जाओ य पवत्तंते रूवेण य दिस्सते,

१ 'सणिकेण हं० तं० ॥ २ ∞ > एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० तं० नास्ति ॥ ३ उपपयिस्सति हं० तं० विना ॥ ४ सव्वम्मि किं हं० तं० ॥ ५ सागरसमुद्धो हं० तं० विना ॥

भणति—कतो ते पविसामि ?, तं जहा ते पविसामि तं ते अणंगं काहामीति । पविसित्ता य भणति—सोलस वाकरणाणि वा णाहिसि एकं चुक्किहिसि । एवं भणितु पविसति सिद्धा भवति ।

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो सव्वसाधूणं, णमो भगवतीय महापुरिसदिण्णाय अंगविज्जाय, आकरणी वाकरणी लोकवेयाकरणी धरणिताले सुप्पतिट्ठिते आदिच्च—चंद—णक्खत्त—गहगण—तारारूवाणं सिद्धकतेणं अत्थकतेणं धम्मकतेणं सव्वलोकसुबुहेणं जे अट्ठे सव्वे(च्चे) भूते भविस्से से अट्ठे इध दिस्सतु पसिणम्मि स्वाहा २ । एसा 5 आभोयणीविज्जा आधारणी छट्ठगहणी, आधारपविसंतेण अप्पा अभिमंतइतव्वो, आकारणि वाकरणि पविसित्तु मंते जवति पुस्सयोगे, चउत्थभत्तेणमेव दिस्सति ।

णमो अरहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो भगवतो यसवतो महापुरिसस्स, णमो भगवतीय सहस्सपरिवाराय अंगविज्जाए, इमं विज्जं पयोयेस्सामि, सा मे विज्जा पसिज्झतु, खीरिणि खीरिणि ! उदुंबरि ! स्वाहा, सर्वकामदये ! स्वाहा, सर्वज्ञानसिद्धिरिति स्वाहा ३ । उपचारो—मासं दुद्धोदणेण उदुंबरस्स हेट्ठा दिवसं विज्जामधीये, अपच्छिमे छट्ठे 10 कातव्वे ततो विज्जा ओवयति त्ति रूवेण दिस्सति, भणति य—कतो ते पविसामि ?, जतो य ते पविस्सिस्सं तीय अणंगं काहामि । पविसित्ता य भणती—सोलस वाकरणाणि वाकरेहिसि, ततो पुण एकं चुक्किहिसि, वाकरणाणि पण्णरस अच्छिण्णणि भासिहिसि, ततो अजिणो जिणसंकासो भविस्ससि, अंगविज्जासिद्धी स्वाहा । परिसंखा णेतव्वा, तच्छीसोपरि पुढवीयं ठिती विण्णेया ।

एसा उक्कट्ठो पलितोवमाणं गणणा । परं दस ०५ कोडाकोडीओ आधारयित्ता दसकोडा १० कोडीओ सागरोवमं 15 पलितोवमाणं विण्णेयाणि भवंति । उक्कस्सं सागरोवमं विण्णेयं भवति । उक्कस्सा णिरयेसु ठिती तेत्तीसं सागरोवमाणि विण्णेयाणि भवंति । तत्थ कतमायं पुढवीयं ति एवं ठितीयो निरयो निरयोपपाते आधारयित्ता उक्कस्स—जहण्णायं पुढवी—उवलद्धीयं चेव उवलब्ध अमुकठितीकं णिरयमुपपज्जिस्सतीति बूया । इति णिरयोपपाता विण्णेया । भवंति वा वि [एत्थं गाहाओ—]

अधोगत्ताणि आमसति किलिट्ठाणि य सेवति । दीणे दीणपरामासे अधोदिट्ठीय माणवो ॥ १ ॥ 20

उपट्ठताणि सेवंतो उव्विग्गो जो तु पुच्छति । अमणुण्णे सद—रूवम्मि णिरयाणं कधासु य ॥ २ ॥

णिरयोपपातकरणे वत्तंते वा वि दंसणे । एतारिसे समुप्पाते जाणेज्जा णिरयोपकं ॥ ३ ॥ इति ।

तत्थ तिरियामासे तिरियविलोकिते तिरियगमणे तिरिच्छागमणे तिरिच्छाकरणे सव्वकुडिलागते सव्वअणज्जवगते सव्वअणज्जवभावगते सव्वउवधि—णिकडि—सौतिजोगकरणे सव्वअतिसंधणागते सव्वअणज्जवववहारए च्छादणा—गूहणासु चेव सव्वतिरिक्खजोणीगते सव्वतिरिक्खजोणिकपडिरूवगते सव्वतिरिक्खजोणिकणामपादुब्भावे सव्वतिरिक्ख- 25 जोणिकसद्गते ०५ सव्वतिरिक्खजोणिकउवकरणगते १० सव्वतिरिक्खजोणिकसरीरमये उवकरणे सव्वतिरिक्खजोणिकणामधेज्जे थी—पुरिसे एवंविधे पेक्खितामासे सद—पडिरूवपादुब्भावे तिरिक्खजोणी उपपज्जिस्सति त्ति तिरिक्खजोणीभावो ते अणंतरपूरिक्खडो त्ति बूया । तत्थ तिरिक्खजोणिकभावे पुव्वाधारिते तिरिक्खजोणी पुणरवि पंचविधामाधारये । तं जधा—एकेंदिए बेइंदिए तेइंदिए चउरंदिए पंचेंदिए चेति ।

तत्थ एक्केसु गतेसु एकाभरणके एक्कोपकरणे एक्कवेणीकरणे एक्कचरेसु सत्तेसु एक्कसाधारगते एक्कपादुब्भावे 30 सव्वेकेंदियपादुब्भावे एक्केदियणामपादुब्भावे एक्केदियमये उवकरणे एक्केदियणामधेज्जथी—पुरिसउवकरणे चेव एवंविधे सद—पडिरूवपादुब्भावे चेव एक्केदियकायभवं बूया । तत्थ एक्केदिये पुव्वाधारिते एक्केदियं पंचविधमाधारये, तं जधा—पुढविकाइके आवुक्कायिके तेवुक्कायिके वायुकायिके वणप्फतिकायिके चेति ।

१ अत्थकत्थकएणं हं० त० ॥ २ वहेणं हं० त० ॥ ३ आलोयणीं हं० त० ॥ ४ युवति हं० त० विना ॥ ५ ०५ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं० त० नास्ति ॥ ६ "माति" त० विना ॥ ७ ०५ १० एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः त० नास्ति ॥ ८ "पुराकडो त० सि० ॥ ९ एक्कामाहार" त० ॥

तत्थ दढामासे सव्वधातुजोणीगते पुढवीकायपादुम्भावे पुढविणामधेज्जोदीरणे पुढवीउवकरणगते पुढवीधातुमये उवकरणे पुढवीणामधेज्जे थी—पुरिसउवकरणपादुम्भावे एवंविधे पेक्खितामासे सद्—पडिरूवपादुम्भावे पुढवीकायएकेंदियकाये उपपज्जिस्सति ति पुढविकाइओ ते अणंतरपुरक्खडो ति बूया । तत्थ पुढविकाइये पुव्वाधारिते पुणरवि सुद्धपुढवी पत्थरपुढवी मणिपुढवी धातुपुढवी कायवंतपुढवीक्कायं च अधापडिरूवतो आधारयित्ता आधारयित्ता सजोणीहिं आमास—
5 सद्—पडिरूवपादुम्भावेहिं चेव बूया इति पुढविकायोपपत्ती विण्णेया भवति ।

तत्थ आपुणेयेसु पाणजोणीगते सव्वउदकपादुम्भावे उदकसद्गते य उदकणामधेज्जोदीरणे आपुजोणिकदव्वोव-
करणपादुम्भावे पाणजोणीमये उवकरणे आपुजोणीणामधेज्जे थी—पुरिसउवकरणगते चेव आपुकायिको ते एकेंदियकायिको
अणंतरपुरक्खडो ति बूया । तत्थ आपुकायिके पुव्वाधारिते आपुकायं सत्तविधमाधारये, तं जधा—सायोदकं लवणोदकं
मधुरोदकं वारुणोदकं खीरोदकं घतोदकं खोतोदकं ति । एताणि उदकाणि जधोवदिट्ठेहिं रस—पडिरूवोपलद्धीहिं
10 आमासोपलद्धीहिं चेव उवलद्धव्वणि भवन्ति । तं समासेण पुणरवि दुविधमाधारयितव्वं भवति—अंतलिक्खं भोम्मं चेति ।
एताणि उदकाणि अंतलिक्खोपलद्धीहिं भोम्मोपलद्धीहिं चेव उवलद्धव्वणि भवन्ति । तत्थ उद्धभागेसु गतेसु सद्—पडिरूवेसु
चेव अंतलिक्खेसु य अंतलिक्खोदकं बूया । अधोभागेसु गतेसु भोम्मेसु चेव सद्—पडिरूवेसु य भोम्ममुदकं
बूया । तत्थ भोम्मे उदके पुव्वमाधारिते तं अट्ठविधमाधारये, तं जधा—सामुदं णादेयं तालुकं रोढं कोप्पं पल्लजलं
पस्सवणजं उद्धज्जमिति । एताहिं जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं समुद—णदी—तलाक—कूपादिकाणि उवलद्धीहिं  आमास—
15 सद्पाउम्भावेहिं  उवलद्धव्वणि भवन्ति इति आपुक्कायो विण्णेयो भवतीति ।

तत्थ अग्गेयेसु सव्वअग्गिपादुम्भावे सव्वअग्गिगते सव्वअग्गिणामगते अग्गिउवकरणेसु अग्गेयेसु उवकरणेसु
अग्गिजीवणेसु अग्गेयकम्मं उपचारपादुम्भावेसु  तं अग्गिनामधेज्जे थी—पुरिसउवकरणपादुम्भावेसु  चेव तेवुक्कायं
उववज्जिस्सति ति बूया, तेवुक्कायो ते एकेंदियकायो अणंतरपुरक्खडो ति बूया । तत्थ तेवुक्काये पुव्वाधारिते अणुसरीरं
बादरसरीरं वा कतमं उपपज्जिस्सति ? ति पुणरवि आधारयितव्वं भवति । तत्थ अणूसु आमास—सद्—पडिरूवपादुम्भावेसु
20 अणुसरीरं तेवुक्कायं उपपज्जिस्सतीति बूया । तत्थ कायवंतेसु बायरसद्— पडिरूव  पादुम्भावेसु चेव बादर-
सरीरमुपपज्जिस्सति ति बूया । तत्थ तेवुक्कायस्स सुभत्तमसुभत्तं चेति आधारयित्ता आधारयित्ता आमास—सद्पडिरूव-
पादुम्भावेसु चेव णेतव्वं भवतीति इति तेवुक्कायोपपातो विण्णेयो भवति ।

तत्थ वायव्वेसु वाउकायपादुम्भावेसु वायुक्कायसद्गते वायुक्कायणामोदीरणे वायुक्कायोपकरणेसु विज्जणय—ताल-
विटादीसु संख—पव्वत—योगणालकादिसु आतोज्जेसु वायुक्कायणामधेज्जे थी—पुरिसउवकरणगते चेव एवंविधे पेक्खितामासे
25 सद्—पडिरूवगते पादुम्भावे वायुक्कायमुपपज्जिस्सति ति बूया, वायुक्कायो ते एकेंदियभवो अणंतरपुरक्खडो ति बूया ।
तत्थ वायुक्काये पुव्वाधारिते वायुक्कायस्स अणुसरीरंता बादरसरीरता य सुभता असुभता य आमास—सद्—पडिरूवपादुम्भावेहिं
जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं उवलद्धव्वं भवतीति इति वायुक्कातोपपातो उवलद्धव्वो भवतीति ।

तत्थ मूलजोणिगते सव्वतण—वणस्सति—हरितपादुम्भावेहिं मूलजोणीसद्गते मूलजोणीणामपादुम्भावे मूलजोणी-
उवकरणगते मूलजोणीमये उवकरणे मूलजोणीणामधेज्जे थी—पुरिसउवकरणगते अहोगत्तामासे सव्वखंधगते सव्वमूलगते
30 सव्वबीजगते चेव एवंविधे पेक्खितामासे सद्—पडिरूवपादुम्भावे वणप्फतिकायं उपपज्जिस्सति ति बूया, वणप्फतिकायो
ते एकेंदियभवो अणंतरपुरक्खडो ति बूया । तत्थ वणप्फतिकाये पुव्वाधारिते तं णवविधमाधारये, तं जधा—रुक्खगतं
लतागतं गुम्मगतं गुच्छगतं वलयगतं उदाणगतं तणगतं थलजहरितगतं चेति । तत्थ उद्धभागेसु सव्वखंधगते चेव रुक्खं
बूया । उज्जूसु उद्धभागेसु य उम्मट्ठेसु य लतायो बूया । गहणेसु गुम्मे बूया । दीहेसु कुडिलेसु य सव्वगुच्छगते

१ तालुकं वोढं सं ३ पु० सि० ॥ २—३—४ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः त० एव वर्तते ॥ ५ “बीजण” त० ॥ ६ “रस्स
भावादसरीरता य त० ॥

चेव गुच्छे बूया । कायवन्तेसु रुक्खे बूया । मज्झिमकायेसु गुम्मे बूया । मज्झिमाणंतरकायेसु वलये बूया । पच्चवरकायेसु तणाणि हरिताणि वा बूया । आपुणेयेसु मूलजोणीसाधारणेसु थलजोणिहरिताणि बूया । सह-पडिरूवपादुब्भावेसु चेव सव्वाणि सरिसेहिं बूया । तत्थ वणप्फति सव्वं पुणरवि चउव्विधमाधारये-कंदगतं मूलगतं खंधगतं अग्गगतं चेति । तत्थ कंदगते कंदगता विण्णेया, मूलगते मूलगता विण्णेया, खंधगते खंधगता विण्णेया, अग्गगते अग्गगता विण्णेया भवन्तीति । तत्थ अग्गगता चतुव्विधामाधारयित्वा भवन्ति, तं जधा-पत्तगता पुप्फगता फलगता बीजगता चेति । 5 तत्थ अणूसु पुधूसु सव्वपत्तगते चेव पत्तगता विण्णेया । मुंदितेसु सव्वपुप्फगते चेव पुप्फगता विण्णेया । पुण्णेसु सव्वफलगते चेव फलगता विण्णेया । तणूसु सव्वबीयगते चेव बीयगता विण्णेया । तत्थ एसा वणप्फती दुविधा समासेण-जलजा थलजा चेव । णवविधा रुक्खादिकेण वित्थारेण । पुणरवि चउव्विधा समासेण-कंदगता मूलगता खंधगता अग्गगता चेव । जधुत्ताहिं उवलद्धीहिं आमस-सह-पडिरूवसमुत्थिताहिं विण्णेया आधारयित्ता आधारयित्ता उवलद्धव्वा भवन्ति । इति वणप्फतिउपपातो विण्णेयो भवतीति । 10

तत्थ दंडोदीरणे दंडेसु गत्तेसु जमलाभरणके यमलोपकरणे यमलोपतिकरणे मेधुणचरेसु सत्तेसु सव्वबियपादु-ब्भावे ॐ बैइंदियसत्तपादुब्भावे ॐ सव्वबिइंदियसद्गते बिइंदियणामोदीरणे बिइंदियोपकरणे बिइंदियसरीरमये उवकरणे बिइंदियणामधेज्जे थी-पुरिसउवकरणगते एवंविधे पेक्खितामासे सह-पडिरूवगते बिइंदियकाये उपपज्जिस्सति ति बूया, बिइंदियकायो ते अणंतरपुरक्खडो ति बूया इति बिइंदियोपपातो विण्णेयो भवति । तत्थ तिकपादुब्भावेसु भुमकंतरे णासगे सिंघाडगे सव्वतिकपादुब्भावेसु तिइंदियसत्तपादुब्भावे तिइंदियणामधेज्जोदीरणे तिइंदियोपकरणे तिइंदियसरीरमये 15 उवकरणे तिइंदियणामधेज्जे थी-पुरिसउवकरणगते पादुब्भावे एवंविधे पेक्खितामासे सह-पडिरूवपादुब्भावेहिं तिइंदियोपपज्जिस्सतीति तिइंदियभवो ते अणंतरपुरक्खडो भविस्सतीति बूया इति तेइंदियोपपातो भवतीति विण्णेयो । तत्थ चउकेसु सव्वचउक्कवगपादुब्भावे सव्वचउरिंदियसत्तपादुब्भावे सव्वचउरिंदियसद्गते चउरिंदियणामधेज्जोदीरणे चउरिंदियउवकरणे चउरिंदियमते उवकरणे चउरिंदियणामधेज्जे थी-पुरिसउवकरणपादुब्भावे चउरिंदियसद्पडिरूवपादुब्भावे चेव चतुरिंदियभवो ते अणंतरपुरक्खडो ति इति चतुरिंदियोपपातो भवतीति । 20

तत्थ बेइंदिये संख-संखण-सिप्पिका-जलाउ-दककिमी-णीपुर-सुमंगल-संबुक्कादयो एवंविधा फासिंदिय-जिब्भिंदियोपपेता विण्णेया भवन्तीति । तिइंदिया उ जुंगलिका-उप्पाडक-उप्पातक-तणहारक-पत्तहारक-कुंधु-पिपीलिका-उपचिकरोहणिक-तेवरुक्क-तपुस-मिजिक-पातिक-साहिक-सत्तप्पाय-गोम्मि-हत्थसोंडक-कडमच्छादयो एवंविधा [फासिंदिय-जिब्भिंदिय-घाणिंदियोपपेता विण्णेया भवन्ति । तत्थ चउरिंदिया.....दयो] फासिंदिय-जिब्भिंदिय-घाणिंदिय-चक्खिंदियउपपेता विण्णेया भवन्ति । एते णं जीवा तसकायिका सम्मुच्छणसंभवा, 25 ण एतेसि गब्भोपपत्ती विण्णेया, एते णं पच्चवरकायेसु खुडुजोणी विण्णेया । एतेसि णपुंसकजोणीयो सीत-उसुण-सीतोसुण-साधारणातो सरीरसद्वाणाणि वण्णोपलद्धीतो अपद-बहुपदगं खेत्तोपपातविसेसा उद्धमधो तिरियं च दिसापविभागा उग्गविसता मंदविसया णिव्विसया तोपभोगतो अणोपभोगतो सुभत्तं असुभत्तं च यधुत्ताहिं ॐ आमस-सह-पडिरूवोपलद्धीहिं ॐ आधारयित्ता आधारयित्ता उवलद्धव्वं भवतीति । एते व णं तसा बेइंदिय-तेइंदिय-चउरिंदिया बायरा य काया एकेंदिया सव्वे णपुंसका विण्णेया भवन्तीति । 30

तत्थ पंचकामासे पंचकपादुब्भावे सव्वपंचेदियगते सव्वपंचेदियोपकरणे सव्वपंचेदियतिरिक्खजोणिकसरीरमये उवकरणे सव्वपंचेदियतिरिक्खजोणिकणामधेज्जे थी-पुरिसउवकरणगते एवंविधे पेक्खितामासे सह-पडिरूवपादुब्भावे चेव पंचेदियतिरिक्खजोणीयं उपपज्जिस्सति ति बूया, पंचेदियतिरिक्खजोणीकभवो ते अणंतरपुरक्खडो ति बूया । तत्थ

१ मिदितेसु त० विना । २ णेसु गत्तेसु त० विना । ३ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः त० एव वर्तते ॥ ४ जंगं त० ॥ ५ या ओक्कभोगया अणोपभोगया सु त० ॥ ६ हस्तचिह्नान्तर्गतः पाठः त० एव वर्तते ॥

पंचेदियतिरिक्खजोणीयं पुव्वाधारितायं पंचेदियतिरिक्खजोणी पंचविधा आधारयितव्वा भवति, तं जधा—पक्खिगता चतुप्पदगता सरीसिक्खगता परिसप्पगता जलचरगता चेति । एस पंचविधा वि पंचेदियतिरिक्खजोणीयं जधा पुव्वचिंतितायं उवदिट्ठा समास—वित्थरेहिं आमास—सद्—रूवपादुब्भावोपलद्धीहिं तथा सव्वा समणुगंतव्वा भवतीति । एवं पंचेदियतिरिक्खजोणीकउपपातो उवलद्धव्वो भवतीति । भवंति चावि एत्थं गाहाओ, तं जधा—

5 तिरियं गत्ताणि आमसति तिरियं वा वि विपेक्खति । तिरिच्छागमणे चेव तिरिच्छागमणेषु य ॥ १ ॥

उवधी—णियडिजोगेसु सातिजोगमणज्जवे । तिरिक्खजोणीसमुप्पाते तेरिच्छसद्दरूविते ॥ २ ॥

तिज्जजोणिसणामके थी—पुमंसे उवक्खरे । एरिसे सद्—रूवम्मि तिज्जजोणिकमादिसे ॥ ३ ॥

तत्थ उज्जुकामासे उज्जुकपेक्खिते उज्जुकोपगमणे उज्जुकवापगते सव्वणिरुवहितगते सव्वअणुकूलगते सव्वमाणुसगते सव्वमाणुसपडिरूवगते माणुससद्दगते माणुस्सणामपादुब्भावे मणुस्सोवकरणगते मणुस्सकम्मोवयारगते 10 माणुसकम्मोवयारपरिकित्तासु चेव एवंविधे पेक्खितामासे सद्—रूवपादुब्भावेसु चेव मणुस्सभवं उपपज्जिस्सति त्ति मणुस्सभवो ते अणंतरपुरक्खडो त्ति बूया । तत्थ मणुस्सभवे पुव्वाधारिते मणुस्सा औरिया मिलक्खू अज्जा पेस्सा थी—पुरिस—णपुंसक—सिप्प—कम्म—विज्जा—खेतोववातविसेसेहिं चेव एवमादीकेहिं उक्कस्स—मज्झिम—जहण्णकेहिं उवलद्धीहिं जधा जातीविचये उवदिट्ठं आमास—सद्—पडिरूवपादुब्भावोपलद्धीहिं तथा सव्वमाधारयित्ता आधारयित्ता सम्मं समणुगंतव्वं भवतीति । भवंति वा वि एत्थं गाहाओ—

15 उज्जुगत्तसमामासे उज्जुकोवकरणम्मि य । उज्जुकं पेक्खिते चेव उज्जुभावगतेसु य ॥ १ ॥

सव्वज्जवोपयोगेसु ववहारम्मि य उज्जुके । उज्जुकम्मोपचारे य ८ माणुसाणं च दंसणे ॥ २ ॥

समे सद्दोवकरणे उवचारे य ९ माणुसे । माणुसे पडिरूवे य माणुसं भवमादिसे ॥ ३ ॥

एवं मणुस्सभवोपपातो विण्णेयो भवतीति ।

तत्थ उद्धंगीवाय सिरोमुहामासे उल्लोकिते उम्मट्ठे उपहसिते उस्सिते उद्धिते एकंसाकरणे छत्त—भिगार—आदंस— 20 पताका—लोमहत्थ—वीजणि—वासण—कडकपादुब्भावे वंदिते पूजिते सक्रते संथुते अच्चिते पणमिते अभिवादिते सेसा—जोगजण्ण—बलिहरणगते सव्वपहेण—गंध—मल्ल—धूप—लापणकपयोगगते चेव सव्वदेवागारगते देवणामोदीरणे देवतोपचारे देवकम्मपरिकित्तासु सव्वदेवणामधेज्जे थी—पुरिसउवकरणगते एवंविधे पेक्खितामासे सद्—रूव—रस—गंध—फासदिव्वियपादुब्भावे देवभवं उपपज्जिस्सतीति देवभवो ते अणंतरपुरक्खडो त्ति बूया । तत्थ देवभवे पुव्वाधारिते देवाणं णिकायविसेसा ८ आधिवच्चविसेसा ९ सामाणिकविसेसा परिसाविसेसा ८ लैसाविसेसा ९ खेतविसेसा 25 आभिजोगिकविसेसा थी—पुरिसविसेसा भावणाविसेसा जहा देवज्झाए उवइट्ठो तहा नेयव्वं भवइ । उवलद्धीयं पि आमास—सद्—पडिरूव—णामपादुब्भावेहिं गेतव्वं भवतीति । भवंति चापि एत्थं गाहाओ—

उद्धं गीवाय गत्ताणि आमसंतो तु पुच्छति । उल्लोकंतो जो जं तु गत्तमुम्मज्जए तु जो ॥ १ ॥

एगंसाययकरणे छत्त—भिगारदंसणे । पताका—वेजयंतीणं पहेणाणं च दंसणे ॥ २ ॥

देवकम्मोपचारेसु देवकम्मकधासु य । देवोपपातं जाणीया पादुब्भावे य तारिसे ॥ ३ ॥

30 एवं देवोपपातो विण्णेयो भवतीति ।

तत्थ दिव्वजोणीयं अत्ताणं उम्मज्जणाय उत्तमट्ठेसु उत्तमेसु सव्वमोक्खेसु सव्वअसंखतेसु सव्वविसंजोगेसु सव्वमोक्खोपायकधासु सव्वमोक्खसत्थोदीरणसु सव्वसिद्धिगते सव्वणिव्वुयगते सव्वतिण्णगते ८ सव्वअरुजगते ९ सव्वअकम्मगते सव्वमुक्कगते ८ सव्वअयोगगते ९ सव्वपरिसुद्धगते चेव एवंविधे पेक्खितामासे सद्—रूवपादुब्भावेसु

१ आयरिया तं ॥ २-३-४ ८ ९ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः तं नास्ति ॥ ५ उल्लंकंतो जो तं तु गत्तं सम्मं तं ॥ ६-७ एतच्चिह्नान्तर्गतः पाठः हं तं नास्ति ॥

चेव सिद्धि उपपज्जिस्ससि त्ति बूया, सिद्धिभावो ते अणंतरप्पुरक्खडो त्ति बूया । भवन्ति चावि एत्थं गाहाओ—
 गत्ताणि देवजोणीयं उम्मज्जन्तो तु पुच्छति । मोक्खेसु वा वि सव्वेसु उम्मट्ठे उत्तमम्मि य ॥ १ ॥
 सिद्धो मुत्तो त्ति तिण्णो त्ति णीरयो णिव्वुतो त्ति य । असंगो केवली बुद्धो असरीक्कधासु य ॥ २ ॥
 अकम्मो णिप्पयोगो त्ति सद्देसेवविधेसु य । [.....] सिद्धिभावं षवेदयेदिति ॥ ३ ॥
 इति सिद्धोपपत्ती अपुणब्भवा विण्णेया इति ॥

5

॥ इति खलु भो ! महापुरिसदिन्नाय अंगविज्जाय उपपत्तीविजयो
 णामज्झायो सद्धिमो सम्मत्तो ॥ ६० ॥

णमो भगवतो अरहतो यसवतो महापुरिसस्स महावीरवद्धमाणस्स । णमो भगवतीय महापुरिसदिन्नाय अंगविज्जाय
 सहस्सपरिवाराय भगवतीय अरहंतोहिं अणंतणाणीहिं उवदिट्ठाय अणंतगमसंगहसंजुत्ताय पण्णसमणसुतणाणि—बीजमतिअणुगताय
 अणंतगमपज्जायाय ॥

10

णमो अरहंताणं । णमो सिद्धाणं । णमो आयरियाणं । णमो उवज्झायाणं । णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
 णमो भगवतीए सुतदेवताए ॥ छ ॥ ग्रंथाग्रम् ९००० ॥ छ ॥

॥ अंगविज्जा[पइण्णयं] संपुण्णं ॥

परिशिष्टानि

प्रथमं परिशिष्टम्

॥ जयन्तु वीतरागाः ॥

सटीकं अङ्गविद्याशास्त्रम्

...तानां कालोऽन्तरात्मा सर्वदा सर्वदर्शी शुभाशुभैः फलसूचकैः सविशेषेण प्राणिनामपराङ्गेषु स्पर्श-व्याहारे-
ङ्गितचेष्टादिभिर्निमित्तैः फलमभिदर्शयति । तत्प्रयतो दैवज्ञोऽप्रहतमतिरवधार्य स्वशास्त्रार्थमनुसृत्य यशोवर्त्मानुग्रहार्थमर्थिनां
शुभा-शुभानां भावा-भावमभिनिर्दिशेत् ।

तत्र दिशं दिशः कालं, व्या[हा]रद्रव्यदर्शनम् ।

अङ्गप्रत्यङ्गस्पर्शनं समीक्ष्य फलमादिशेत् ॥ १ ॥ इति ॥ १ ॥

स्थानं पुष्पसुहासिभूरिफलभृत्सुस्निग्धकृत्तिच्छदा-

ऽसत्पक्षिच्युतशस्तसंज्ञिततरुच्छायोपगूढं समम् ।

देवर्षि-द्विज-साधु-सिद्धनिलयं सत्पुष्प-सस्योक्षितं,

सत् स्वादूदकनिर्मलत्वजनिताह्लादं च सच्छाड्वलम् ॥ २ ॥

एवंविधं स्थानं 'सत्' पृच्छयां शुभदमित्यर्थः । कीदृशम् ? एवंविधानां तरूणां-वृक्षाणां या छाया तयोपगूढं-
छन्नम् । कीदृशानाम् ? 'पुष्पसुहासि' पुष्पाणि-कुसुमानि शोभनो हासो येषां ते पुष्पसुहासिनः । तथा भूरीणि-प्रभूतानि
फलानि [बिभ्रति-] धारयन्ति ये ते भूरिफलभृतः । सुस्निग्धा कृत्तिः-त्वक् छदानि-पर्णानि येषां ते सुस्निग्धकृत्ति-
च्छदाः । तथा असत्पक्षिभिः-अनिष्टविहगैः काकोलूकादिभिश्च्युताः-रहिताः । तथा शस्तसंज्ञिताः-प्रशस्तनामानो ये
पलाश-पिप्पल-न्यग्रोध-बिल्वप्रभृतयः । तथा 'समं' निम्नोन्नतावनिरहितम् । 'देवर्षीति' देवाः-सुरा ऋषयः-मुनयो
द्विजाः विप्राः साधवः-सन्तः सिद्धाः-देवयोनय एतेषां यन्निलयं-स्थानम् । तथा सत्पुष्पैः-सुगन्धैः कुसुमैः सस्यैश्च-
धान्यादि-भिर्युतं उक्षितं-सेवितं शुभम् । तथा 'स्वादूदकनिर्मलत्वजनिताह्लादं च' स्वादु-मृष्टं यदुदकं-जलं निर्मलं-
प्रसन्नं च तद्भावेन जनितं-उत्पादितं आह्लादं-चित्तहर्षम्, यत् तथाभूतेनोदकेन युक्तम् । 'सच्छाड्वलं' शोभनदूर्वायुक्तं
तत् सदिति । तथा च परासरः-“अथ पुष्पितफलतरितस्निग्धत्वक्पत्रनामाङ्कितसौम्यद्विजवरनिषेविततरुच्छायोपगूढे
सस्यकुसुम-रहितमृदुशाड्वलासिक्तमृष्टहृद्यप्रसन्नसतिलाशयेऽवकाशे देवर्षिसिद्धसाधू.....पूर्वाभिमुखो
वा यः पृच्छेत् तस्य प्रार्थितार्थोपपत्तिर्मेभिर्निर्दिशेत्” ॥ २ ॥ अथ [अ]शुभस्थानप्रदर्शनार्थमाह-

छिन्न-भिन्न-कृमिखात-कण्टकि-प्लुष्ट-रूक्ष-कुटिलैर्न सत्कुजैः ।

क्रूरपक्षियुतनिन्दनामभिः शुष्कशीर्णबहुपर्णचर्मभिः ॥ ३ ॥

एवंविधैः कुजैः-वृक्षैर्युतं असत् । कीदृशैः ? छिन्नैः-कल्पितैः, भिन्नैः-कुटिलैः, कृमिखातैः-कीटक्षितैः,
कण्टकिभिः-सकण्टकैः, प्लुष्टैः-दुष्टैः रूक्षैः-अस्निग्धैः, कुटिलैः-अस्पष्टैर्न शोभनैः । कौ-भूमौ जायन्त इति कुजाः ।
तथा क्रूरैः-अनिष्टैः पक्षिभिः-विहगैः काक-गृध्र-बकाद्यैर्युक्तैः निन्दनामभिः-कुत्सितसंज्ञैः बिभीतका..... ।
शुष्कैः-नीरसैः । तथा शीर्णानि-च्युतानि बहूनि पर्णानि-प्रभूतानि पत्राणि चर्माणि-त्वचो येषां ते ॥ ३ ॥ [अन्यद]प्याह-

श्मशान-शून्यायतनं चतुष्पथं तथाऽमनोज्ञं विषमं सदोषरम् ।

अवस्करा-ऽङ्गास्-कपाल-भस्मभिश्चितं तुषैः शुष्कतृणैर्न शोभनम् ॥ ४ ॥

एवंविधं स्थानं पृच्छयां न शोभनम् । कीदृशम् ? श्मशानं-शवशयनप्रदेशः । शून्यायतनं-उद्वासितदेवगृहम् ।
'चतुष्पथं' चत्वारः पन्थानो यत्र । तथा 'अमनोज्ञं' न चित्ताह्लादकम् । विषमं-निम्नोन्नतम् । सदा-सर्वकालमूषरं-

१ ग्रन्थोऽयमाद्यन्तविरहितः खण्डित एव प्राप्तोऽस्ति, अतो नामाप्यस्येदं मत्परिकल्पितमेव ज्ञेयमिति ॥

सिकतासंयुक्तम् । अवस्करैः—गृहमुक्तैरशुचिभिरनुपयोग्यैर्भाण्डैश्चितं—व्याप्तम् । तथाऽङ्गारकैः—दग्धकाष्ठैः कपालैः—अस्थि-
सफालैः भस्मना च चितं—युक्तम् । तथा तुषैः—धान्यचर्मभिः शुष्कैः—नीरसैस्तृणैश्चितं न शोभनमिति ॥ ४ ॥

अन्यदप्याह—

प्रव्रजित—नग्न—नापित—रिपु—बन्धन—सौनिकैस्तथा श्वपचैः ।

कितव—यति—पीडितैर्युतमायुध—माक्षीकविक्रयादशुभम् ॥ ५ ॥

एवंविधं स्थानं पृच्छायामशुभम् । प्रव्रजितः—तापसो लिङ्गी । नग्नः—विवस्त्रः । नापितः—दिवाकीर्तिः शिल्पी
सूत्रधारप्रभृति । रिपुः—शत्रुः । बन्धनं—बन्धशाला । सौनिकः—पशुघातकः । एतैर्युक्तं स्थानम् । तथा श्वपचैः—चाण्डालैः ।
कितवः—घ्नूतकारकः । यतिः—त्रिदण्डी । पीडितो रोगादिना । एतैर्युक्तं स्थानम् । तथाऽऽयुधं आयुधशाला यत्र, माक्षीकं—
मधु तद्विक्रयशाला कल्पपालगृहसमीपाद्धेतोरशुभमिति ॥ ५ ॥ अथ दिक्काललक्षणमाह—

प्रागुत्तरेषाश्च दिशः प्रशस्ताः प्रष्टुर्न वाय्वम्बु—यमा—ऽग्नि—रक्षः ।

पूर्वाह्निकालेऽस्ति शुभं न रात्रौ सन्ध्याद्वये प्रश्नकृतोऽपराह्णे ॥ ६ ॥

दिशः—आशाः प्राक्—पूर्वा उत्तरा ऐशानी च पृच्छायां 'प्रशस्ताः' शुभाः 'प्रष्टुः' पृच्छकस्य, तदभिमुखः शुभ
इत्यर्थः । 'वाय्वम्बुयमाग्निरक्षः' वायवी वारुणी दक्षिणाऽऽग्नेयी नैऋती च न शस्ताः, न शुभाः एता दिशः
प्रष्टुः । 'पूर्वाह्निकाले' दिनप्राग्भागसमये 'प्रश्नकृतः' पृच्छकस्य 'शुभं' शोभनफलमस्ति विद्यते, 'रात्रौ' निशि
['सन्ध्याद्वये'] सायं प्रातः अपराह्णे च न शुभमिति । तथा च परासरः— "छिन्नभिन्नशुष्करूक्षवक्र.....दग्धकण्टकक्र
.....द्विज.....षिधिनाः प्रशस्तनामाङ्कितपादपच्छयश्मशानवन्यायतनबन्धरोषितरिपुनापितायुधमद्यविक्रय.....
सु नैऋताग्नेययाम्यवारुणवायव्याशाभिमुखः प्रचोदयेत्, स्पष्टमर्थमनर्थाय विन्द्यात्" । अपि च—

वेलाः सर्वाः प्रशस्यन्ते पूर्वाह्णे परिपृच्छताम् । सन्ध्योरपराह्णे तु क्षि(क्ष)पायां च विगर्हिता ॥ १ ॥ इति ॥ ६ ॥

अन्यदप्याह—

यात्राविधाने च शुभाशुभं यत् प्रोक्तं निमित्तं तदिहापि वाच्यम् ।

दृष्ट्वा पुरो वा जनताहतं वा प्रष्टुः स्थितं पाणितलेऽथ वस्त्रे ॥ ७ ॥

यात्राविधाने यत् शुभाशुभं 'प्रोक्तं' कथितम्, "सिद्धार्थका—ऽऽदर्श—पयो—ऽञ्जनानि" इति शुभदम्, "कर्पासौषध—
कृष्णधान्यम्" इत्यशुभम् । तथा तत्र शाकुनं यन्निमित्तं 'प्रोक्तं' कथितं तद् 'इहापि' प्रश्नसमये 'वाच्यं' वक्तव्यम् ।
'पुरो' अग्रतो वा दृष्ट्वा य.....नो वरजनता—जनसमूहः तया आहतं—आनीतं 'प्रष्टुः' पृच्छकस्य 'पाणितले' हस्ते 'वस्त्रे'
अम्बरे वा स्थितं दृष्ट्वा शुभमादिशेदिति । तथा च परासरः—

यात्राविधाने निर्दिष्टं निमित्तं यच्छुभाशुभम् । तदेव दृष्ट्वा दैवज्ञो वाञ्छसिद्धिं विनिर्दिशेत् ॥ १ ॥ ७ ॥

अधुना अङ्गानि पुंसंज्ञकान्याह—

अथाङ्गान्यूर्वोष्ठ—स्तन—वृषण—पादं च दशना,

भुजौ हस्तौ गण्डौ कच—गल—नखा—ऽङ्गुष्ठमपि यत् ।

सशङ्खं कक्षांसं श्रवण—गुद—सन्धीति पुरुषे,

स्त्रियां भ्रू—नासा—स्फिग्—वलि—कटि—सुलेखा—ऽङ्गुलिचयम् ॥ ८ ॥

अथैतानि पुंसंज्ञकान्यङ्गानि भवन्ति—ऊरू ओष्ठौ स्तनौ वृषणौ—मुष्कौ पादौ—चरणौ 'दशनाः' दन्ताः 'भुजौ'
बाहू 'हस्तौ' करौ 'गण्डौ' मुखकपोलौ कचाः—केशाः गलः—कण्ठः नखाः—कररुहाः अङ्गुष्ठौ—हस्तपादाङ्गुष्ठौ, एतत्
सर्वं यत्तदपि 'पुरुषे' पुंसि । कक्षौ प्रसिद्धौ, अंसौ—स्कन्धौ, श्रवणौ—कर्णौ, गुदं—पायुस्थानं सन्धिग्रहणे
सर्वाङ्गसन्ध्य उच्यन्ते, 'इति' एवं प्रकाराः सर्व एव पुरुषे पुंसि ज्ञेयाः । तथा च परासरः—"तथाङ्गानि मुष्क—

स्तन—पादा—ऽङ्गुष्ठोरु—गुह्य—भुज—हस्त—मस्तक—कर्णा—ऽक्षि—कक्ष—शङ्ख—दन्ता—ऽङ्गुष्ठौष्ठं नख—गल—स्कन्ध—गण्डं केश—
सन्धयः पुरुषाख्यानीति” । अथ स्त्रीसंज्ञानाह—‘स्त्रियां’ इति एतान्यङ्गानि स्त्रियां भवन्ति । भ्रुवौ प्रसिद्धे । नासा—
घ्राणम् । स्फिजौ—प्रसिद्धौ । वली—लेखा, यथा त्रिवली । कटिः—प्रसिद्धा । सुलेखा—शोभनलेखा करमध्यस्था ।
अङ्गुलिचयं—अङ्गुलिसमूहः ॥ ८ ॥ अन्यानपि स्त्रीसंज्ञानाह—

जिह्वा ग्रीवा पिण्डके पार्ष्णियुग्मं जङ्घे नाभिः कर्णपाली कृकाटी ।

वक्त्रं पृष्ठं जत्तु जान्वस्थि पार्श्वं हृत्ताल्वक्षि स्यान्मेहनोरस्त्रिकं च ॥ ९ ॥

‘जिह्वा’ रसना । ‘ग्रीवा’ कृकाटिका । ‘पिण्डके’ जङ्घयोः पश्चिमभागौ । ‘पार्ष्णी’ चरणयोः पश्चिमभागौ ‘जङ्घे’
प्रसिद्धे । ‘नाभिः’ तुन्दः । ‘कर्णपाली’ प्रसिद्धा । ‘कृकाटी’ ग्रीवापश्चिमभागः । [.....] ॥ ९ ॥

नपुंसकाख्यं च शिरो ललाटमाश्चाद्यसंज्ञैरपरैश्चिरेण ।

सिद्धिर्भवेज्जातु नपुंसकैर्नो रूक्ष—क्षतैर्भग्न—कृशैश्च पूर्वैः ॥ १० ॥

‘शिरः’ मस्तकम् । ‘ललाटं’ मुखपृष्ठम् । एतत् सर्वं नपुंसकाख्यम् । तथा च परासरः—“शिरो—ललाट—
मु.....बु.....पृष्ठ—जठर—जत्तु—जान्वस्थि—पार्श्व—हृदय—कर्णपीठ—ऽक्ष—मेहनोरस्त्रिक—ताल्विति नपुंसकाख्यानि” । अथ
‘आद्यसंज्ञैः’ प्रथमत उक्तैः पुत्रामभिः स्पृष्टैः ‘आशु’ क्षिप्रमेव सिद्धिः ‘स्याद्’ भवेत् । ‘अपरैः’ तदनन्तरेकेः
स्त्रीनामभिश्चिरात् सिद्धिर्भवेदिति । नपुंसकैः स्पृष्टैः ‘न जातु’ न कदाचित् सिद्धिः स्यात् । ‘रूक्ष—क्षतैर्भग्न—कृशैश्च
पूर्वैः’ इति, नेत्यनुवर्तते, पूर्वैः पुंनामभिः स्त्रीनामभिर्वा रूक्षैः—अस्त्रिधैः क्षतैः—सप्रहारैः भग्नैः—स्फुटितैः कृशैश्च—
अल्पमांसैर्न जातु सिद्धिः । तथा च परासरः—“तत्र पुत्रामभिरस्त्रिधमनुपहतमरोगमङ्गं स्पृष्टं दिग्देश—काल—व्याहारेष्टदर्शन—
निरुपहतप्रष्टुः पृच्छार्थं सकलमभिवर्तयति, स्त्रीसत्कमपि पूर्वोक्तलक्षणमुक्तं तत् कालान्तरेणासकलम् ।
नपुंसकाख्यमकार्यसिद्धिमनर्थानां च गमनं कुर्यात् । अपि च भवति याऽत्र—

पुंसंज्ञेष्वशु सिद्धिः स्यात् स्त्रीसंज्ञेषु विराद् भवेत् । अशुभं त्वेव निर्दिष्टं नपुंसकसनामसु ॥ १ ॥

पुरुषाख्येऽपि संस्पर्शे बाह्ये रूक्षे च लक्षिते । नार्थसिद्धिमथो ब्रूयादङ्गविद्याविशारदः ॥ २ ॥” इति ॥ १० ॥

अथ पृथक् पृथक् फलनिर्देशार्थमाह —

स्पृष्टे वा चालिते वाऽपि पादाङ्गुष्ठेऽक्षिरुग् भवेत् ।

अङ्गुल्यां दुहितुः शोकं शिरोघाते नृपाद् भयम् ॥ ११ ॥

तत्र पृच्छायां पादाङ्गुष्ठे चालिते स्पृष्टे वा प्रष्टुः ‘अक्षिरुग्’ नेत्रपीडा ‘स्याद्’ भवेत् । अङ्गुल्यां स्पृष्टायां दुहितुः
शोकं वदेत् । ‘शिरोघाते’ शिरोऽभिहत्य पृच्छेत् तदा ‘नृपाद्’ राजतो भयं ब्रूयात् । अथ पृथक् पृथक् फलनिर्देशः—
तत्र पादाङ्गुष्ठं प्रचालयन् स्पृष्ट्वा वा पृच्छेत् तत्प्रष्टुश्चक्षुरोगं विनिर्दिशेत्, अङ्गुलीं स्पृष्ट्वा दुहितुःशोकम्, शिरसि हन्यमाने
राजभयम् ॥ ११ ॥ अन्यदप्याह—

विप्रयोगमुरसि स्वगोत्रतः कर्पटाहतिरनर्थदा भवेत् ।

स्यात् प्रियाप्तिरभिगृह्य कर्पटं पृच्छतश्चरण—पादयोजितुः ॥ १२ ॥

.....सह विप्रयोगं प्रवदेत् ‘स्वगोत्रतः’ आत्मीयवर्गात् । ‘कर्पटाहतिः’ वस्त्रत्यागः ‘अनर्थदा’ ‘कर्पटं’
वस्त्रं ‘अभिगृह्य’ प्राप्य चरणं—पादं पादे—द्वितीये चरणे योजयति तस्य ‘पृच्छतः’ प्रष्टुः प्रेयलाभः स्यात् । तथा च
परासरः—“उरः स्पृष्ट्वा विप्रयोगं गोत्रात्, वस्त्रमृत्सृजतोऽनर्थगमम्, पादं पादेन संस्पृशेत् पटान्तमभिगृह्य वा पृच्छेत्
प्रियसमागमं विद्यात्” ॥ १२ ॥ अन्यदप्याह—

पादाङ्गुष्ठेन विलिखेद् भूमिं क्षेत्रोत्थचिन्तया ।

हस्तेन पादौ कण्डूयेत् तस्य दासीमया च सा ॥ १३ ॥

प्रश्ना क्षेत्रोत्थचिन्तया पादाङ्गुष्ठेन ‘भूमिं’ भुवं विलिखेत्, ‘हस्तेन’ करेण पादं कण्डूयेत् तदाऽस्य ‘सा’ चिन्ता

‘दासीमया’ दासीकृता । तथा च परासरः—“अङ्गुष्ठेन भूमिं विलिखेत् क्षेत्रचिन्तां विजानीयात्, हस्तेन पादौ कण्डूयेद् दासीकृता च सा” ॥ १३ ॥ अन्यदप्याह—

ताल-भूर्जपटदर्शनेऽशुकं चिन्तयेत् कच-तुषा-ऽस्थि-भस्मगम् ।

व्याधिराश्रयति रज्जु-जालकं वल्कलं च समवेक्ष्य बन्धनम् ॥ १४ ॥

तालवृक्षपत्रदर्शने भूर्जपटदर्शने वा प्रष्टा ‘अंशुकं’ वस्त्रं चिन्तयेत् । ‘कचतुषा-ऽस्थि-भस्मगं व्याधिराश्रयति’ कचाः—केशाः तुषं—धान्यवर्मं अस्थि—प्रसिद्धम्, भस्म, एषामन्यतमस्योपरिगतं प्रष्टारं ‘व्याधिः’ पीडा आश्रयति । रज्जुः—प्रसिद्धा, जालकं—यत्र मत्स्य-पक्षिणो बध्यन्ते तदेव तत्सदृशं वा, ‘वल्कलं’ त्वक्, एषामन्यतमस्थं वा ‘समवेक्ष्य’ अवलोक्य गृहीत्वा वा पृच्छेत् तदा बन्धनं वदेत् । तथा च परासरः—“ताल-भूर्जपत्रदर्शने वस्त्रार्थे, केशाऽस्थि-भस्मनाऽऽकम्य व्याधिभयं ब्रूयात्, निग(मृग)जाल-रज्जु-सिक्थ-वल्कलान्यधिष्ठाय दर्शने वा बन्धनं मतम्” ॥ १४ ॥ अन्यदप्याह—

पिप्पली-मरिच-सुण्ठि-वारिदं रोध्र-कुष्ठ-वसना-ऽम्बु-जीरकैः ।

गन्धमांसि-शतपुष्पया वदेत् पृच्छस्तगरकेन चिन्तनम् ॥ १५ ॥

स्त्री-पुरुषदोष-पीडित-सर्वा-ऽध्व-सुता-ऽर्थ-धान्य-तनयानाम् ।

द्वि-चतुःशफ-क्षितीनां विनाशतः कीर्तितैर्दृष्टैः ॥ १६ ॥

पिप्पलीति । पिप्पल्यादिदर्शने स्यादिचिन्तां कमशो व्यपदिशेत् । तत्र पिप्पलीदर्शने या स्त्री दोषदुष्टा सदोषा तत्कृतां चिन्तां वदेत् । मरिचदर्शने दोषयुतस्य सपापस्य पुरुषस्य चिन्तां प्रवदेत् । सुण्ठिदर्शने पीडितस्य—व्याधितस्य मृतस्य चिन्तां वदेत् । वारिदा—मुस्ता तेषां दर्शने सर्वनाशकृताम् । रोध्रदर्शने अध्वनाशकृताम् । कुष्ठदर्शने सुतनाशकृतां—पुत्रनाशजाम् । वसनं—वस्त्रं तद्दर्शने अर्थनाशकृताम् । अम्बुदर्शने धान्य[नाश]कृताम् । जीरकदर्शने तनयस्य—पुत्रस्य नाशकृताम् । गन्धमांस्या द्विषफानां—द्विषदनाशकृताम् । शतपुष्पया चतुःशफानां—चतुष्पदविनाशकृताम् । तगरेण क्षितेः—भूमेः नाशकृताम् । एतैः ‘कीर्तितैः’ उच्चरितैर्वा ‘दृष्टैः’ अवलोकितैर्वा विनाशहेतोः पृच्छा भवति । तथा च परासरः—“पिप्पलीनां दर्शने प्रदुष्टस्त्रीकृतां चिन्ताम्, मरीचकस्य पापपुरुषकृताम्, शृङ्गबेरस्य मृतचिन्ताम्, अजाज्याः सुतनाशकृताम्, रोध्रस्याध्वनाशकृताम्, मुस्तस्य सर्वनाशकृताम्, कुष्ठस्य सर्वनाशकृताम् वसनस्यार्थनाशकृताम्, तगरस्य भूमिनाशकृताम्, शतपुष्पायाश्चतुष्पात्राशकृताम्, मांस्या द्विषदनाशार्थाम्” ॥ १५ ॥ १६ ॥ अन्यदप्याह—

न्यग्रोध-मधुक-तिन्दुक-जम्बू-प्लक्षा-ऽऽम्र-बदरजातफलैः ।

धन-कनक-पुरुष-लोहां-ऽशुक-रूप्योदुम्बराप्तिरपि करगैः ॥ १७ ॥

‘न्यग्रोधादिजातफलैः’ तत्सम्भवैः फलैः ‘करगैः’ हस्तस्थैः धनाद्याप्तिर्भवति । तत्र न्यग्रोधजातफलैः प्रष्टुर्हस्तस्थैर्धनाप्तिः—वित्तलाभो भवति । मधुकफलैः कनकस्य—स्वर्णस्याप्तिः । तिन्दुकफलैः द्विषदस्य—पुरुषस्याप्तिः । जम्बूफलैर्लोहस्य । प्लक्षफलैः अंशुकस्य—वस्त्रस्य । आम्रफलैः रूप्यस्य । बदरफलैरुदुम्बरस्य—ताम्रस्येति । तथा च परासरः—“अथ न्यग्रोधफलैर्हस्तस्थैः पृच्छेद् धनागममादिशेत्, मधुकोदुम्बरफलैः काञ्चनागमम्, द्विषदागमं तिन्दुकैः, वस्त्रागमं प्लक्षजैः, रूप्यस्य आम्रैः, ताम्रस्य बदरैः, लोहस्य जाम्बवैः” इति ॥ १७ ॥ अन्यदप्याह—

धान्यपरिपूर्णपात्रं, कुम्भः पूर्णः कुटुम्बवृद्धिकरः ।

गज-गो-शुनां पुरीषं, धन-युवति-सुहृद्विनाशकरम् ॥ १८ ॥

धान्यपरिपूर्ण पात्रं कुम्भः पूर्णः कुटुम्बवृद्धिकरः । ‘गज-गो-शुनां पुरीषं धन-युवति-सुहृद्विनाशकरं’ गजानां—हस्तिनां ‘पुरीषं’ विष्टा गवां पुरीषं च शुनां—सारमेयानां पुरीषं धनस्य—ऐश्वर्यस्य युवतीनां—स्त्रीणां व्यभिचारं सुहृदां च विनाशं करोति ॥ १८ ॥ अन्यदप्याह—

पशु—हस्ति—महिष—पङ्कज—रजत—व्याघ्रैर्लभेत सन्दृष्टैः ।

आविक—धन—निवसन—मलयज—कौशेया—ऽऽभरणसङ्घातम् ॥ १९ ॥

पश्चादिभिः पृच्छासमये 'सन्दृष्टैः' अवलोकितैः अव्याघ्राभरणसङ्घातं—समूहं प्रष्टुं लभेत । तत्र पशुदर्शने आविकस्य—और्णिकस्य कम्बलादेर्लाभः । हस्तिनः—करिणो दर्शने धनागमः । महिषदर्शने निवसनस्य—क्षौमवस्त्रस्य, पङ्कजस्य—पद्मस्य दर्शने मलयजस्य, रजतस्य—रूप्यस्य दर्शने कौशेयस्य वस्त्रस्य, व्याघ्रदर्शने आभरणस्यागमः । तथा च परासरः—“महिषस्य क्षौमवस्त्रागमम्, मणिभाण्डस्य गवाजिनम्, और्णिकानां पशुदर्शने, व्याघ्रस्याभरणागमं वदेत्, पङ्कजस्य दर्शने रक्तवस्त्रचन्दनलाभम्, रूप्यस्य दर्शने कौशेयवस्त्राणाम्” ॥ १९ ॥ अन्यदप्याह—

पृच्छा वृद्धश्रावक—सुपरित्राङ्दर्शने नृभिर्विहिता ।

मित्र—द्यूतार्थभवा गणिका—नृप—सूतिकार्था वा ॥ २० ॥

वृद्धश्रावकः—कापालिकः तद्दर्शने—तदालोकने 'नृभिः' पुरुषैः मित्र—द्यूतार्थभवा 'पृच्छा विहिता' कृता पृच्छा । गणिका—वेश्या नृपः—राजा सूतिका—प्रसूता स्त्री तत्कृता ॥ २० ॥ अन्यदप्याह—

शाक्योपाध्याया—ऽर्हन्निर्ग्रन्थ—निमित्त—निगम—कैवर्तैः ।

चौर—चमूपति—वाणिज—दासी—योधा—ऽऽपणस्थ—वध्यानाम् ॥ २१ ॥

शाक्यादीनां दर्शने चौरादीनां पृच्छा । शाक्यदर्शने चौरकृताम् । उपाध्यायदर्शने चमूपतिकृतां—सेनापतिकृताम् । अर्हतो दर्शने वाणिजकृताम्, निर्ग्रन्थदर्शने दासीकृताम् । नैमित्तिकस्य—दैवविदो दर्शने योधकृताम् । नैगमस्य दर्शने आपणस्थस्य—श्रेष्ठिनः कृताम् । कैवर्तस्य धीवरस्य दर्शने वध्यकृतां चिन्तामिति ॥ २१ ॥ अन्यदप्याह—

तापसे शौण्डिके दृष्टे प्रोषितः पशुपालनम् ।

हृद्गतं पृच्छकस्य स्यादुञ्छवृत्तौ विपन्नता ॥ २२ ॥

तापसे दृष्टे पृच्छकस्य 'हृद्गतं' चित्तस्थं 'प्रोषितः' प्रवासे यः कश्चित् स्थितः तस्य प्रवासिनश्चिन्तनम् । 'शौण्डिके' मद्यासक्ते दृष्टे पशुपालनं चित्तस्थम् । 'उञ्छवृत्तौ' शैलोञ्छवृत्तौ दृष्टे विपन्नार्थचिन्ताम् । तथा च परासरः—“निर्ग्रन्थ—दर्शने दासीपृच्छाम्, वृद्धश्रावकदर्शने मित्रद्यूतकृताम्, शाक्यस्य चौरकृताम्, परित्राजकस्य नृप—सूतिका—गणिकार्था वा, उपाध्यायस्य चमूपतिकृताम्, नैगमस्य श्रेष्ठिकृताम्, नैमित्तिकस्य योधाधार्थम्, उञ्छवृत्तीनां विपन्नार्थम्, अर्हतो वाणिजकृताम्, तापसस्य प्रोषितार्थम्, शौण्डिकस्य पशुपालनार्थम्, कैवर्तस्य वध्यघातकृताम्” इति ॥ २२ ॥

अन्यदप्याह—

इच्छामि द्रष्टुं भण पश्यत्वार्थः समादिशेत्युक्ते ।

संयोग—कुटुम्बोत्था लाभैश्वर्योद्गता चिन्ता ॥ २३ ॥

इच्छामीत्याद्युक्ते यथासङ्ख्यं संयोगादिकृताम् । तत्रेच्छामि द्रष्टुमिति 'उक्ते' भाषिते संयोगकृतां चिन्तां वदेत् । भणेत्युक्ते कुटुम्बकृताम् । पश्यतु आर्य इत्युक्ते लाभार्थकृतां लाभार्थकृताम् । समादिशेत्युक्ते ऐश्वर्योद्गतां चिन्तामिति ॥ २३ ॥ अन्यदप्याह—

निर्दिशेति गदिते जया—ऽध्वजा प्रत्यवेक्ष्य मम चिन्तितं वद ।

आशु सर्वजनमध्यगं त्वया दृश्यतामिति च बन्धु—चौरजा ॥ २४ ॥

निर्दिशेति 'गदिते' उक्ते पृच्छा । 'जयाध्वजा' जयार्थं कृता जाता अध्वजा वा । 'प्रत्यवेक्ष्य' विचार्य मम 'चिन्तितं' हृद्गतं वदेत्युक्ते बन्धुकृता । सर्वजनमध्यगं द्रष्टारमेवं वक्ति 'आशु' क्षिप्रमेव त्वया दृश्यतामिति 'चौरजाता' तत्करकृता चिन्ता । तथा च परासरः—“आदिशेत्युक्ते ऐश्वर्यचिन्ताम्, भणेत्युक्ते कुटुम्बचिन्ताम्, इच्छामि द्रष्टुमिति संयोगचिन्ताम्, पश्यत्वार्थं इति लाभकृताम्, निर्दिशेत्यध्वकृतां जयपृच्छां वा, पृच्छामि तावदार्येति वा सम्यक् सम्प्रत्यवेक्षस्वेति बन्धुकृताम्, अथ काले निष्पन्नार्तः सहसा बहुजनमध्यगतं दृश्यतामिति पृच्छेच्चौरकृतां जानीयादिति ॥ २४ ॥ अथ चौरज्ञानमाह—

अन्तःस्थेऽङ्गे स्वजन उदितो बाह्यगे बाह्य एव,
पादाङ्गुष्ठा-ऽङ्गुलिकलनया दास-दासीजनः स्यात् ।
जङ्घे प्रेष्यो भवति भगिनी नाभितो हृच्च भार्या,
पाण्यङ्गुष्ठा-ऽङ्गुलिचयकृतस्पर्शने पुत्र-कन्ये ॥ २५ ॥

‘अन्तःस्थेऽङ्गे’ अभ्यन्तरस्थे ‘अङ्गे’ अवयवे स्पृष्टे पृच्छायां चौरः ‘स्वजनः’ आत्मीय एव ‘उदितः’ उक्तः । बाह्यगेऽङ्गे स्पृष्टे बाह्यत एवोदितश्चौरः । ‘पादाङ्गुष्ठाङ्गुलिकलनया’ पादाङ्गुष्ठे स्पृष्टे दासश्चौरः, अङ्गुलीषु-पादाङ्गुलीष्वप्येवं दासीजनः ‘स्याद्’ भवेत् । जङ्घास्पर्शने ‘प्रेष्यः’ कर्मकरो भवति । नाभितो भगिनी । हृदि ‘भार्या’ आत्मीया जाया । पाणिः-हस्तः, हस्ताङ्गुष्ठस्पर्शने पुत्रः । अङ्गुलिचयस्पर्शने कन्या-आत्मीया तनया चौरः । एवं कृतस्पर्शने चौरज्ञानम् ॥ २५ ॥ अन्यदप्याह-

मातरं जठरे मूर्ध्नि गुरुं दक्षिण-वामकौ ।
बाहू भ्राताऽथ तत्पत्नी स्पृष्ट्वैवं चौरमादिशेत् ॥ २६ ॥

‘जठरे’ उदरे स्पृष्टे ‘मातरं’ जननीं चौरं वदेत् । ‘मूर्ध्नि’ शिरसि गुरुम् । दक्षिण-वामकौ बाहू स्पर्शने यथासङ्ख्यं भ्राताऽथ तत्पत्नी, दक्षिणबाहुस्पर्शे भ्राता, वामे तत्पत्नी । ‘एवं’ अङ्गस्पर्शने दृष्टे ‘चौरं’ तत्स्वरं ‘आदिशेद्’ वदेत् । तथा च परासरः-“बाह्याङ्गस्पर्शने बाह्यं चौरम्, अन्तः स्वकृतम्, तत्र पादाङ्गुष्ठे दासम्, अङ्गुलिषु दासीम्, जङ्घयोः प्रेष्यम्, जठरे मातरम्, हस्ताङ्गुलिषु दुहितरम्, अङ्गुष्ठे सुतम्, नाभ्यां भगिनीम्, गुरुं शिरसि, हृदि भार्याम्, दक्षिणबाहौ भ्रातरम्, वामबाहौ भ्रातृभार्याम्” ॥ २६ ॥ अथापहतस्य लाभाऽलाभज्ञानमाह-

अन्तरङ्गमवमुच्य बाह्यगं स्पर्शनं यदि करोति पृच्छकः ।
श्लेष्म-मूत्र-शकृतस्त्यजन्नथ पातयेत् करतलस्थवस्तु चेत् ॥ २७ ॥
भृशमवनामिताङ्गपरिमोटनतोऽप्यथवा,
जनधृतरिक्तभाण्डमवलोक्य च चौरजनम् ।
हत-पतित-क्षता-ऽस्मृत-विनष्ट-विभग्न-गतो-
मुषित-मृताद्यनिष्टरवतो लभते न धनम् ॥ २८ ॥

अन्तरङ्गमिति । एवंविधैर्निमित्तैः प्रष्टुं हतं धनं न लभेत । कैः ? इत्याह-‘अन्तरङ्गं’ अभ्यन्तरस्थमवयवं प्राप्तं ‘अवमुच्य’ परित्यज्य बाह्यमवयवस्य स्पर्शनं यदि पृच्छकः करोति । अथवा श्लेष्म-मूत्र-शकृतः ‘त्यजन्’ परित्यजति तत्कालम् । अथवा करतलस्थ-पाणितलस्थं किञ्चिद् वस्तु पातयेत् ॥ २७ ॥

भृशमवनामिताङ्गमिति । अथवा ‘भृशं’ अत्यर्थं अवनामिताङ्गावयवो अङ्गानामेव परिमोटनं-चटचटाशब्दमुत्पादयति । तथा तत्कालं जनधृतं-लोकस्थादेवितरिक्तभाण्डं(?) ‘अवलोक्य’ दृष्ट्वा । तथा ‘चौरजनं’ तत्स्वरमवलोक्य । अथवा हत-पतिता-ऽक्षता-ऽस्मृत-विनष्ट-विभग्न-गतो-मुषित-मृतादि, एषामनिष्टरवतः-शब्दश्रवणात्, आदिग्रहणान्नष्ट-कष्टदष्ट-ऽनिष्ट-जीर्णशब्दश्रवणात् प्रष्टुं हतं न लभत इति । तथा च परासरः-“अन्यत्र रोगं स्पृष्ट्वा निर्हरणं वा श्लेष्म-मूत्र-पुरीषाणां कुर्यात्, हस्ताद्वा किञ्चित् पातयेत्, गात्राणि वा स्फोटयेत्, कृत-हत-पतित-मुषित-विस्मृत-नष्ट-कष्ट-ऽनिष्ट-भग्न-गत-जीर्णशब्दप्रादुर्भावो वा स्यात्, रिक्तभाण्ड-तत्स्कराणां दर्शने नष्टस्यालाभं विन्द्यात्” ॥ २८ ॥

अथ पीडातार्तानां मरणाज्ञानमाह -

निगदितमिदं यत् तत् सर्वं तुषा-ऽस्थि-विषादकैः,
सह मृतिकरं पीडातार्तानां समं रुदित-क्षुतैः ।

“अन्तरङ्गमवमुच्य” इत्यत आरभ्य यदिदं नष्टचिन्तायां ‘निगदितं’ उक्तं तत् सर्वं तुषा-ऽस्थि-विषादकैः ‘सह’ साकं तथा रुदित-क्षुतैः, ‘समं’ सह ‘पीडातार्तानां’ रोगिणां ‘मृतिकरं’ मरणं करोति । आदिग्रहणात् छिन्न-भिन्न-भृत-

दुग्ध-दग्ध-पाटितशब्दैरिति । तथा च परासरः—“अथो रोगाभिज्वाततर्थादि(?)मूत्र-पुरीषोत्सर्ग-केशा-ऽस्थि-भस्म-तुष-विषादानां अशुभानां दर्शने, तथा छिन्न-भिन्न-व्यापन्न-हृत-गत-क्षुत-जग्ध-बद्ध-दग्ध-पाटित-रुदितशब्दश्रवणे वा रोगिणां मरणमादिशेत्” ॥ अथ भोजनज्ञानमाह—

अवयवमपि स्पृष्ट्वाऽन्तःस्थं दृढं मरुदाहरे-

दतिबहु तदा भुक्त्वाऽन्नं सुस्थितः सुहितो वदेत् ॥ २९ ॥

‘अन्तःस्थं’ अभ्यन्तरस्थितं ‘दृढं’ स्थिरमवयवं स्पृष्ट्वा ‘मरुद्’ वायुं ‘संहेत्’ उद्गिरन् पृच्छेत् तदा स पृच्छको ‘अतिबहु’ अतिप्रभूतमन्नं भुक्त्वा ‘सुहितः’ तृप्तः सुस्थित इति वदेत् ॥ २९ ॥ अन्यदप्याह —

ललाटदर्शनाच्छूकदर्शनाच्छालिजोदनम् ।

उरःस्पर्शात् षष्टिकाख्यं ग्रीवास्पर्शं च यावकम् ॥ ३० ॥

ललाटदर्शनाच्छूकधान्यानां वा दर्शनाच्छालिजौदनं पृच्छकेन भुक्तमिति वदेत् । उरः—वक्षःस्पर्शात् षष्टिकात्रम् । ग्रीवास्पर्शं ‘यावकं’ यावानम् ॥ ३० ॥ अन्यदप्याह—

कुक्षि-कुच-जठर-जानुस्पर्शं माषाः पयस्तिल-यवागूः ।

आस्वादयतश्चौष्ठौ लिहतो मधुरं रसं ज्ञेयम् ॥ ३१ ॥

कुक्षिस्पर्शं माषा भुक्ताः । कुचौ—स्तनौ तयोः स्पर्शं पयः—क्षीरौदनम् । जठरं—उदरं तत्स्पर्शने तिलौदनम् । जानुस्पर्शं यवागू—यावकम् । ओष्ठौ आस्वादयतो लिहतो वा प्रष्टुर्मधुरं रसं भुक्तमिति ज्ञेयम् ॥ ३१ ॥ अन्यदप्याह—

विसृक्के स्फोटयेज्जिह्वामप्ले वक्त्रं विकोपयेत् ।

कटुकेऽसौ कषाये च हिष्केत् ष्ठीवेच्च सैन्धवे ॥ ३२ ॥

‘जिह्वां’ रसनां विसृक्के स्फोटयेद्वा प्रष्टाऽप्ले भुक्ते । मुखं विकोपयेत् कटुके ‘असौ’ पृच्छकः । कषाये भुक्ते हिष्केत् । ‘सैन्धवे’ लवणे भुक्ते ष्ठीवेत् ॥ ३२ ॥ अन्यदप्याह—

श्लेष्मत्यागे शुष्क-तिक्तं तदल्पं श्रुत्वा क्रव्यादं प्रेक्ष्य वा मांसमिश्रम् ।

भ्रू-गण्डोष्ठस्पर्शने शाकुनं तद् भुक्तं तेनेत्युक्तमेतन्निमित्तम् ॥ ३३ ॥

श्लेष्मणः परित्यागे शुष्कं रूक्षं तिक्तं तदल्पं च भुक्तम् । ‘क्रव्यादं’ मांसाशिनं प्राणिनं [श्रुत्वा] ‘प्रेक्ष्य’ दृष्ट्वा वा तन्मांसमिश्रं भुक्तम् । भ्रूगण्डोष्ठस्पर्शने शाकुनं मांसं ‘तेन’ प्रष्टा तद् भुक्तमिति । ‘उक्तं’ कथितमेतद् ‘निमित्तं’ चिह्नम् ॥ ३३ ॥ अन्यदप्याह—

मूर्द्धा-गल-केश-हनु-शङ्ख-कर्ण-जङ्घं च बस्ति च स्पृष्ट्वा ।

गज-माहिष-मेष-शूकर-गो-शश-मृग-माहिषमांसयुतम् ॥ ३४ ॥

मूर्द्धादिस्पर्शने यथाक्रमं गजादिमांसं वक्तव्यम् । मूर्द्धा—शिरस्तत्स्पर्शने गजमांसं भुक्तं वदेत् । गलस्पर्शने माहिषम् । केशस्पर्शने मेषमांसम् । हनुस्पर्शने शूकरं मांसम् । शङ्खस्पर्शने गोमांसम् । कर्णस्पर्शने शशमांसम् । जङ्घास्पर्शने मृगमांसम् । बस्तिस्पर्शने च माहिषमांसयुतमेव भुक्तमिति ॥ ३४ ॥ अन्यदप्याह —

दृष्टे श्रुतेऽप्यशकुने गोधा-मत्स्यामिषं वदेद् भुक्तम् ।

गर्भिण्या गर्भस्य विनिपतनमेव प्रकल्पयेत् प्रश्ने ॥ ३५ ॥

अशकुने दृष्टे श्रुते अवलोकिते वा.....गोधामिषं मत्स्यमांसं वा भुक्तं वदेत् । एवमेव गर्भस्य पृच्छयां ‘अशकुने’ दुर्निमित्ते दृष्टे श्रुते वा गर्भिण्याः स्त्रियो गर्भपतनं वदेत् । तथा च परासरः—“तथा स्निग्ध-दृढमध्य-न्तराङ्गं स्पृष्ट्वोद्गिरन् पृच्छेद् भुक्तमन्नं विन्द्यात् । तत्र ललाटस्पर्शं शूकानां च दर्शने शाल्योदनम्, उरसि संस्पृष्टे षष्टिकात्रम्, ग्रीवायां यावकात्रम्, जठरे तिलौदनम्, कुक्षौ माषौदनम्, स्तनयोः क्षीरौदनम्, जान्वोर्यावकमास्वादयेत्, ओष्ठौ वा परिलेढि मधुरम्, विसृक्के जिह्वां वा स्फोटयेत्, अप्ले मुखं विकूणयेत्, कटुके हिष्केत्, कषाये निष्ठीवेत्,

तित्ते शुष्के श्लेष्माणमुत्सृजेदिति, लवणम् । कव्यादानां दर्शने मांसप्रायम् । तत्र भ्रू-गण्ड-जिह्वैष्ठसंस्पर्शने शाकुनम्, हन्वोर्वाराहम्, कर्णयोश्छागम्, जङ्घयोर्मार्गम्, केशानामौरभ्रम्, शङ्खयोर्गव्यम्, बस्ति-गलयोर्माहिषम्, मूर्ध्नि कौञ्जरम्, पादित-छिन्न-भिन्नानां दर्शने श्रवणे गोधा-मत्स्ययोर्मांसमिति” ॥ ३५ ॥ अथ गर्भिण्या गर्भज्ञानमाह—

पुं-स्त्री-नपुंसकाख्ये दृष्टेऽनुमिते पुरःस्थिते स्पृष्टे ।

तज्जन्म भवति पाना-ऽन्न-पुष्प-फलदर्शने च शुभम् ॥ ३६ ॥

गर्भपृच्छायां पुरुषे ‘दृष्टे’ अवलोकिते ‘अनुमिते’ विकृते ‘पुरःस्थिते’ अग्रतः स्थिते स्पृष्टे वा तस्मिन् तस्मिन् ‘तज्जन्म भवति’ पुंजन्म भवति । एवं स्त्रियां दृष्टायां च पुरःस्थितायां वा स्पृष्टायां स्त्रीजन्म । नपुंसकाख्ये दृष्टे स्पृष्टे पुरःस्थितेऽनुमिते नपुंसकजन्म भवति । ‘पाना-ऽन्न-पुष्प-फलदर्शने च शुभं’ इति पानस्य-आसवस्य अन्नस्य-भोजनादेः पुष्पाणां-कुसुमानां फलानां च दर्शने ‘शुभं जन्म’ सुखप्रसवो भवति ॥ ३६ ॥ अन्यदप्याह—

अङ्गुष्ठेन भूदरं चाङ्गुलीर्वा स्पृष्ट्वा पृच्छेद् गर्भचिन्ता तदा स्यात् ।

मध्वाज्याद्यैर्हेम-रत्न-प्रवालैरग्रस्थैर्वा मातृ-धात्र्यात्मजैश्च ॥ ३७ ॥

स्त्री स्वाङ्गुष्ठेन भ्रूयुगमुदरं वाऽङ्गुलीर्वा स्पृष्ट्वा पृच्छेत् तदा गर्भचिन्ता ‘स्याद्’ भवेत् । अथवा ‘अग्रस्थितैः’ पुरोऽवस्थितैः ‘मध्वाज्याद्यैः’ मधु-माक्षिकं आज्यं-घृतम्, आदिग्रहणात् पुंनामभिः शोभनफलैश्च, तथा ‘हेम-रत्न-प्रवालैः’ हेम-स्वर्ण रत्नानि-मणयः प्रवालं-विद्रुमम्, तथा ‘मातृ-धात्र्यात्मजैश्च’ माता-जननी धात्री-स्तनदायिनी आत्मजः-पुत्रः, एतैरप्यग्रस्थैर्गर्भपृच्छां जानीयात् । तथा च परासरः—“अथ स्त्री भ्रुवौ जठरमङ्गुष्ठेनाङ्गुलिं स्पृष्ट्वा पृच्छेद् गर्भचिन्तां जानीयात्, तथा फल-च्छायावृक्ष-प्रवाला-ऽङ्गुर-मधु-घृत-हेम-गर्भ-प्राजापत्यं वा मातृ-धात्री-पुत्रनिर्दर्शनशब्दप्रादुर्भावे गर्भपृच्छामेव” ॥ ३७ ॥ अन्यदप्याह—

गर्भयुता जठरे करगे स्याद् दुष्टनिमित्तवशात् तदुदासः ।

कर्षति तज्जठरं यदि पीडोत्पीडनतः करगे च करेऽपि ॥ ३८ ॥

‘जठरे’ उदरे ‘करगे’ हस्तगते हस्तेन स्पृष्टे स्त्री गर्भयुता ‘स्याद्’ भवेत् । तस्मिन्नेव पृच्छासमये ‘दुष्टनिमित्त-वशाद्’ दुष्टनिमित्तदर्शनात् क्षुत्-पतित-भग्न-विनष्ट-दग्ध-क्षीणादिदर्शन-श्रवणात् ‘तदुदासः’ गर्भपतनं भवति । अथवा तज्जठरं ‘पीडोत्पीडनतः’ पीडमर्दनं कृत्वा कर्षति कद्रवत्, ‘करगे च करेऽपि’ हस्तं हस्तेन वाऽवलम्ब्य पृच्छति तथापि तदुदास इति ॥ ३८ ॥ अथ गर्भग्रहणे कालज्ञानमाह—

घ्राणाया दक्षिणे द्वारे स्पृष्टे मासोऽन्तरं वदेत् ।

वामेऽब्दौ कर्ण एवं मा द्वि-चतुर्थं श्रुति-स्तने ॥ ३९ ॥

अङ्गुष्ठेनेत्यनुवर्तते । ‘घ्राणायाः’ नासिकाया दक्षिणे ‘द्वारे’ श्रोतसि अङ्गुष्ठेन स्पृष्टे गर्भग्रहणे मासोऽन्तरं ‘वदेद्’ ब्रूयात्, मासेन गर्भग्रहणं भविष्यतीति । वामे श्रोतसि स्पृष्टे ‘अब्दौ’ वर्षद्वयमन्तरम्, वर्षद्वयेन गर्भग्रहणं भवतीति । एवं वामे कर्णे वर्षद्वयेनैव । माःशब्देन मास उच्यते, श्रुतिः-कर्णः दक्षिणे कर्णच्छिद्रे स्पृष्टे मासे द्विघ्नं-द्विगुणम्, मासद्वयेन गर्भग्रहणं भवतीति । वामे वर्षद्वयेन स्तनस्पर्शने । माश्चतुर्थं-चतुर्मासैः स्तनद्वयस्पर्शनेनेति ॥ ३९ ॥ अन्यदप्याह—

वेणीमूले त्रीन् सुतान् कन्यके द्वे कर्णे पुत्रान् पञ्च हस्ते त्रयं च ।

अङ्गुष्ठान्ताः पञ्चकं चाऽनुपूर्व्या पादाङ्गुष्ठे पार्श्वयुग्मेऽपि कन्याम् ॥ ४० ॥

वेणी-केशकलापः तन्मूले पृच्छायां स्पृष्टे त्रीन् ‘सुतान्’ पुत्रान् द्वे कन्यके जनयिष्यसीति वक्तव्यम् । ‘कर्णे’ कर्णयुग्मे स्पृष्टे पुत्रान् पञ्च । हस्तयोः स्पर्शने पुत्रत्रयं च । कनिष्ठिकाङ्गुलेरारभ्याङ्गुष्ठाङ्गुलिं यावदानुपूर्व्या क्रमेण पुत्रपञ्चकं सूते । तत्र कनिष्ठिकास्पर्शने एकं पुत्रम्, अनामिकास्पर्शने द्वौ, मध्यमायां त्रयः, तर्जन्यां चत्वारः, अङ्गुष्ठे पञ्च । पादाङ्गुष्ठे स्पृष्टे पार्श्वयुग्मेऽपि स्पृष्टे कन्यामेकां सूते ॥ ४० ॥ अन्यदप्याह—

सव्या-ऽसव्योरुसंस्पर्शे सूते कन्या-सुतद्वयम् ।

स्पृष्टे ललाटमध्या-ऽन्ते चतु-स्त्रितनया भवेत् ॥ ४१ ॥

सव्यं-दक्षिणमूरु तत्संस्पर्शे कन्याद्वयं सुतद्वयं च सूते । असव्ये-वामेऽप्येवमेव । ललाटमध्या-ऽन्ते स्पृष्टे यथासङ्ख्यं चतुस्त्रितनया भवेत्, ललाटमध्ये स्पृष्टे चतुस्तनयाः-चतुःपुत्राः, ललाटान्ते त्रितनया भवेत् । तथा च परासरः-
“तत्र जठरस्पर्शने गर्भिणीमेव ब्रूयात्, अङ्गुष्ठेन नासाश्रोतसि दक्षिणे कुर्यान्मासान्तेन गर्भग्रहणम्, वामे द्विवर्षान्तरेण, कर्णच्छिद्रे मासद्वयेन, वामे वर्षद्वयेन, स्तनयोरङ्गुष्ठेनैव स्पृशेच्चतुर्भिर्मासैः । पीठमर्द-कचान्तरे कृत्वोपरं कण्डूयेत्, अग्र-हस्तं हस्तेनावगृह्य वा पृच्छेद्, भग्नलोहिका-बधिरउदालक-कुठार-सुतवलिता-भग्नदर्शन-शब्दप्रादुर्भावे वा स्याद् गर्भपतनं वा विन्ध्यात् । तथाऽन्न-पान-पुष्प-फलं प्रेक्ष्य द्वि-चतुष्पदामन्यद्रव्याणां पुंसंज्ञकानां दर्शन-श्रवणे पुंजन्म विन्ध्यात्, स्त्रीपुंसंज्ञानां स्त्रीपुंजन्म, नपुंसकाख्ये नपुंसकानाम् । अथ विशेषः-वेणीमूलमतिगृह्य पृच्छेत् तस्य द्वित्रान् पुत्रान् जनयिष्यसीति ब्रूयात्, ललाटमध्यं स्पृशन्तीति चत्वार्यपत्यानि, ललाटान्तं त्रीणि, कर्णयोः संस्पर्शे पञ्चापत्यानि विन्ध्यात्, हस्ततलसंस्पर्शे त्रीणि, कनिष्ठा-ऽनामिका-मध्यमा-प्रदेशिनी-तर्जन्यङ्गुष्ठानामेक-द्वि-त्रि-चतुः-पञ्चापत्यानि, दक्षिणोरुस्पर्शे द्वौ पुत्रौ द्वे कन्यके, जनयिष्यसीति, वामस्य तिस्रः कन्यका द्वौ पुत्रौ, पादाङ्गुष्ठस्य कन्यकैका, पाण्ड्योः कन्यकैकैव” इति ॥ ४१ ॥ अथ गर्भिण्याः कस्मिन् नक्षत्रे जन्म भविष्यतीति तज्ज्ञानार्थमाह-

शिरो-ललाट-भू-कर्ण-गण्डं हनु-रदा गलम् ।

सव्योऽपसव्यः स्कन्धश्च हस्तौ चिबुक-नालकम् ॥ ४२ ॥

उरः कुचं दक्षिणमप्यसव्यं हृत्पार्श्वमेवं जठरं कटिश्च ।

स्फिक्पायुसन्ध्यूरुयुगं च जानू जङ्घेऽथ पादाविति कृत्तिकादौ ॥ ४३ ॥

सूते इत्यनुवर्तते । पृच्छासमये गर्भिण्याः शिरःप्रभृतिसंस्पर्शने कृत्तिकादौ नक्षत्रे जन्म विन्ध्यात् । ‘शिरः’ मूर्द्धानं संस्पृशेत् कृत्तिकानक्षत्रे जन्म भवति, गर्भिणी सूते । ललाटे रोहिण्याम्, भ्रुवोर्मृगशिरे, कर्णयोरार्द्रायाम्, गण्डयोः पुनर्वसौ, हन्वोः पुष्ये, रदाः-दन्तास्तेष्वश्लेषायाम्, गले-ग्रीवायां मघासु, सव्ये-दक्षिणस्कन्धस्पर्शने पूर्वफल्गुन्याम्, अपसव्ये-वामस्कन्धस्पर्शने उत्तराफल्गुन्याम्, हस्तयोः स्पर्शने हस्ते, चिबुके-आस्याधोभागे चित्रायाम्, नालके-वक्षःसन्धौ स्वातौ, उरसि-वक्षसि विशाखायाम्, दक्षिणकुचस्पर्शेऽनुराधायाम्, असव्ये-वामे ज्येष्ठासु, हृदि मूले, पार्श्वद्वयं ‘एवं’ प्राग्वत्, दक्षिणपार्श्वे पूर्वाषाढासु, वामपार्श्वे उत्तराषाढासु, जठरे श्रवणे, कट्यां धनिष्ठायाम्, स्फिग्-गुदसन्धिस्पर्शने शतभिषजि, दक्षिणोरुस्पर्शने प्राग्भद्रपदायाम्, वामे उत्तरभद्रपदायाम्, जान्वो रेवत्याम्, जङ्घयोरश्विन्याम्, पादयोर्भरण्यामिति । तथा च परासरः-“शिरसि स्पृष्टे कृत्तिकासु जन्म विन्ध्यात्, ललाटे रोहिण्याम्, भ्रुवोः मृगशिरसि, कर्णयोरार्द्रायाम्, गण्डयोः पुनर्वसौ, हन्वोस्तिष्ये, दन्तेष्वश्लेषायाम्, ग्रीवायां मघासु, दक्षिणांसे प्राक्फल्गुन्याम्, उत्तरायां वामे, हस्ते हस्तयोः, चिबुके चित्रायाम्, स्वातौ नालके, उरसि विशाखायाम्, दक्षिणे स्तनेऽनुराधायाम्, वामे ज्येष्ठासु, हृदि मूले, दक्षिणपार्श्वे प्रागाषाढासु, उत्तराषाढास्वपरपार्श्वे, जठरे श्रवणे, श्रविष्ठासु श्रोण्याम्, स्फिग्गुदयोर्वारुणे, दक्षिणे प्राक्प्रोष्ठपदायाम्, वामेनोत्तरायाम्, जानुभ्यां पौष्णे, जङ्घयोरश्विने, भरण्यां पादयोः” इति ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ अथोपसंहारा [र्थमाह-]

इति विरचितमेतद् गात्रसंस्पर्शलक्षम्,

प्रकटमभिमताप्त्यै वीक्ष्य शास्त्राणि सम्यक् ।

विपुलमतिरुदारो वेत्ति यः सर्वमेत-

त्ररपति-जनताभिः..... ॥ ४४ ॥

[॥ अग्रे, खण्डितोऽयं ग्रन्थः ॥]

द्वितीयं परिशिष्टम् अंगविज्जाए सद्वकोसो ।

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
अ		अगिगवेस्स	गोत्र १५०	अज्जजोणि	१३९
अइराणी	देवता ६९-२०५-२२३	अगिगहोत्त	१०१-२२२	अज्जणी	भाण्ड १९३
अइरिका	देवता ६९	अगोय	१२३	अज्जय	पितामह २१९
अकरपट्टक	११६	अगोयया	१२८	अज्जव	आर्य १३४-१८७
अकंत	अग्रिय १२०	अग्घप्पमाणं [पडलं]	२५३	अज्जा	देवता २२३
अकिट्टामास	२०२	अग्घावते	आजिघ्नति ८३	अज्जाधिउत्थं	देवता २२४
अकोडित	अकुञ्चित ? १४८	अग्घाहिति	आग्रास्यति ८४	अज्जिया	आर्यिका ६८
अकोसीधण्ण	१७८	अघोसा	१५३	अज्जुण	वृक्ष ६३
अक्खक	आभू. ६०-६५	अचपला	५९	अज्झप्पवित्त	अध्यात्मवृत्त ७
अक्खपूप	भोज्य १८२	अचला	देवता ६९	अज्झायी	गोत्र १५०
अक्खमालिका	आभू. ७१	अचलाय	अचलायाम् १८	अज्झेणणासित ?	क्रिया. १४८
अक्खाम	अक्षाम ४३	अचवलाई	१२८	अज्झोआताणि	९२
अक्खारित ?	क्रिया. १४८	अचवले	१२५	अट्टालय	१३७-२१४
अक्खिकूड	अक्षिकूट ७२-१२३	अचिरुद्धित	अचिरोत्थित २४९	अट्टियगत	अट्टिकागत २१६
अक्खिगुलिका	अक्षिगुलिका-कनीनिका ६६	अच्चत्थकार	अत्यर्थकार २३९	अट्टकालिका	सुरा २२१
अक्खिगूधक	अक्षिगूध १७८-२०३	अच्चत्थहसित	अत्यर्थहसित ३५	अट्टक्खाणांसि	अर्थाख्याने १०
अक्खिवत्तिणी	अक्षिपत्रिका ६६	अच्चल्लीण	अत्यालीन ८७	अट्टखुत्तो	अष्टकृत्वः १८४
अक्खीणमहाणस	अक्षीणमहानसलब्धि ८	अच्चा	अर्चा १४७	अट्टपद	अर्थपद ६
अक्खुज्जंत ?	२००	अच्चाइक	अत्याधिक ३७	अट्टमय	आभू. १६२
अक्खोडित	आस्फोटित २५१	अच्चाइत	अत्यायित ४१	अट्टमसाधणी	अष्टमसाधनी ८
अक्खोडिय	आस्फोटित १८१	अच्छणक	आसनक १३६	अट्टमंगलक	कण्ठआभू. ६५-१६३
अक्खोल	फल ६४-७१	अच्छदंत	पर्वत ७८	अट्टमंडल	११६
अखई	अक्षयिका १८	अच्छभल्ल	चतुष्पद ६२	अट्टविधि	अर्धविधि ७८
अखुयाचार	अक्षुद्राचार ४	अच्छाइत	आच्छादित १३०-१७०	अट्टाहिक	अष्टाहिक १२७
अगणिक्काइयाणि	५८	अच्छाद	वस्त्र २२१	अट्टिक	अस्थिक(?) १५
अगतिसंपन्न	१७३	अच्छादण	आच्छादन १९०	अट्टिकमय	भाण्ड २१५-२२१
अगल्ल	आकल्प १४३	अच्छायित	आच्छादित १६८	अट्टिभिजा	अस्थिमज्जा १०५
अगोलिक	गुडवर्जित भोज्य १८२	अज	सर्पजाति ६३	अट्टिसेणा	गोत्र १५०
अगोलीय	गुडवर्जित भोज्य १८२	अजिणगकंचुक	चर्मवस्त्र २३०	अट्टिल	चतुष्पद ६९
अगिग	९१	अजिणपट्ट	चर्मवस्त्र २२१-२३०	अट्टोदित	अट्टोदित १४७
अगिगइंदगि	देवता २०५	अजिणप्पवेणी	प्राणिज वस्त्र २२१	अणणमणताय	अनन्यमनस्तथा ५७
अगिगउपजीवि	कर्माजीविन् १६०	अजिणविलाल	पशु २२७	अणप्पभूय	अनात्मभूत १०
अगिगिह	अग्निगृह १३६	अजीण	अजिन २३०	अणभिचित	अनभिचि(जि)त ३०
अगिगघर	अग्निगृह ४१	अजीणकंबल	२३०	अणभिवुत्त	अनभिवृत्त १६२
अगिगमारुय	देवता २०४	अजीणप्पवेणिका	प्राणिज वस्त्र २३०	अणसूयक	अनुत्सुक १३
अगिगरस	गोत्र १५०	अजोगवहा	अयोगवाहाः १५३	अणह	अक्षत १७
		अज्ज	आर्य १३१-१४९	अणंगण	गुल्मजाति ६३
				अणंत	आभू. ६५

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
अणतरपच्छाकड	अनन्तरपश्चात्कृत २६२	अण्हेते	भुनक्ति १०७	अद्धकोसिज्जिक	वल्ल ७१
अणतरपुरक्खड	अनन्तरपुरस्कृत २६४	अतप्परं	अतः परम् ६२	अद्धखेत्ताणि	२०७
अणंतोहिज्जिण	अनन्तावधिजिन १	अतसी	धान्य १६४	अद्धपल्लित्थिका	अर्धपर्यस्तिका १८
अणाउत्त	अनायुक्त १०	अतिकण्हाणि	५७-१२-१२८	अद्धसंविट्ठरत	१८४
अणागतजोणि	१३९	अतिकिमण	अतिकृपण २४१	अद्धसंवृताय	अर्धसंवृतया १८५
अणागताणि	५७-८३-१२८	अतिकूरक	भोज्य ६४-२२०	अद्धहार	कण्ठआभू ६५-१६२
अणादिता	देवता ६९	अतिकंतजोणि	१३९	अद्धाकाल अज्झायो	१९३
अणाधारयमाण	क्रिया. ११	अतिघणकडत ?	११८	अधभूतत्थ	यथाभूतार्थ ५९
अणपस्सय	अनपस्त्रय ३०	अतिच्छंत	अतिकाम्यत् ३९	अधमजोणि	१४०
अणायकाणि	५९-१२६	अतिपच्चवर	अतिश्रेष्ठ ९५	अधरुत्तरम्मिरे ?	१९५
अणावलोइयते	अनवलोकितके १२	अतिफुट्ट	अतिस्फुटित १०६	अधापुव्व	यथापूर्व १-५-९-१९५
अणावलोक	४४	अतिमंगुल	अतिअशुभम् ९५	अधामय	यथामत ९०
अणावुट्टिसुवुट्टि	अनावृष्टि-सुवृष्टि ७	अतिमुत्तकतेल्ल	२३२	अधिकंतण ?	५
अणिकुज्ज	अनिकुज्ज ४५	अतिमुत्तम	वृक्ष ६३	अधिकमणक	उत्सव ? ९८-१२१
अणिस्सरा	५८-१११-१२९	अतिमुल्लेय	१७२	अधिज्ज	अध्यैत १०
अणुक	११४	अतिवत्ताणि	५७-८१-१२८	अधिवसिस्सति	अधिवत्स्यति १९२
अणुज्जल	अनुज्ज्वल ४	अतिविरूढ	११८	अधिवास	दोहद १७२
अणुत्तुरित	अनुत्तरित २३५	अतिहरंति	क्रिया. १०७	अधीयता	तृतीयैकवचनम् ५
अणुदत्त	२१५	अतभावपरिक्खा	१३	अधीयाण	क्रिया. ५६
अणुपहुतामास	१४५	अतभावपरीणाम	११	अधोगागार ?	२७
अणुपुव्वसो	अनुपूर्वशः ७६	अतमाण	आत्ममान १६	अधोभागामास	२००
अणुयोगजोणि	१३९	अत्थजोणी	५३-५५-१३८	अनुनासिका	१५३
अणुयोगविधि	४८	अत्थजोणी	५३-५५-१३८	अनुस्वार	१५३
अणुलित्त	अनुलिप्त १३०-१६८-१७०	अत्थजोणी	५३-५५-१३८	अनुस्वार	१५३
अणुलेवण	दोहदप्रकार १७२	अत्थदार	१४४	अन्नोसक्कित	अन्यावप्वज्जित १४८
अणुल्लायित ?	क्रिया. १६६	अत्थपीला	अर्थपीडा २२	अपकट्ट	अपकृष्ट ४४
अणुवक्खइस्सामि	अनुव्याख्यास्यामि ७-१३५	अत्थरक	आस्तरक १७-६५-१६३	अपकट्ठित	अपकर्षित १६९
अणुवक्खयिस्सामि	अनुव्याख्यास्यामि ५-१६४	अत्थवापद	अर्थव्यापत् १७	अपकट्ठित	अपकर्षित १६९
अणुवक्खइस्सामि	अनुव्याख्यास्यामि ५७	अत्थसच्च	अर्थसत्य ९	अपकट्ठेज्जा	अपकर्षयेत् १४५
अणुवक्खयिस्सामि	अनुव्याख्यास्यामि २११	अत्थाय	अर्थाय चतुर्थी एकव० १०	अपक्खित	अपक्षिप्त १६
अणुसूयक	अनुत्सुक १०	अत्थायं	अर्थ+आयम्-अर्थलामम् २०	अपक्खुद्ध	अपक्षिप्त १६९-१७१
अणुस्सित्त	अनुत्सित्त ३	अत्थिला	क्षुद्रजन्तु २५३	अपडिहत्त	भोज्य १८२
अणूणि	५८-११७	अत्थुत	आस्तुत ११६-१९०	अपणत्त	क्रिया. १६९-१७१
अणे	आमन्त्रणम् ६८	अत्थोपणायक	अर्थोपनायक ८७	अपणामित	क्रिया. १७१
अणेव्वाणि	अनिर्वाणी १३५	अदसंसाय ?	२००	अपणासित	क्रिया. १६९
अणोक्कंत	अनपक्रान्त ४२	अदसी	धान्य २२०	अपत्थद्ध	अपस्तब्ध ३६-१३५
अणोज्ज	गुल्मजाति ६३	अदंसणिया	५८	अपपातित	क्रिया. १८३
अणोदुग	अनृतुक २५७	अदंसणीया	१२३-१२९	अपमज्जितापमट्ट	अप्रमार्जितापमट्ट २५
अण्णजणार्णि	५९-१२९	अदिति	देवता २०८	अपमट्ट	१६९-१७१-१७६
अण्णजोणी	६४	अद्दागमंडल	आदर्शमण्डल ११५-२४१	अपमत	अवमक ९५
अण्णेयाणि	१२६	अद्दरिदुक्क	वनस्यति १७३	अपमतर	अवमतर ९५
		अद्धकविट्ठग	भाण्ड ६५	अपमयापमय	अवमकावमक ९५

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	
अपमाणसंपण्ण	१७३	अप्यसण्णतरा	११२	अभिणंदित	क्रिया. १६८-१७०	
अपयात	क्रिया. १९९	अप्यसण्णा	५८	अभिधम्मिय	अभिधार्मिक १४३	
अपरायित	अपराजित ७६	अप्यसत्थऽज्जाय	१४९	अभिप्पायक	१५१	
अपरिमित	१२७	अप्यसत्थभा	गोत्र १५०	अभिमतु	२५-१३०	
अपरिमिताणुगमण	५७	अप्यसत्थमज्झायं	१४८	अभिमज्जित	अभिमार्जित २१	
अपरिमेज्ज	अपरिमेय २४०-२४१	अप्याणे	आत्मनि ७	अभिमज्जितामास	२०१	
अपलिखित	क्रिया. १७१	अप्यिया	५८-१२९	अभिमिल्लंते	अभिमिलति ३४	
अपलोकणिका	शीर्ष आभू. १६२	अप्युट्टितविभासा	४६	अभिवहण	उत्सव ? १४१	
अपलोलित	क्रिया. १६९-१७१-१८३	अप्युट्टिताणेकवीसं	११-४५	अभिवंदहे	अभिवन्दे ५-६	
अपवट्टित	अपवर्त्तित १७१	अप्योवचया	५८-११४	अभिसंगत	क्रिया. १६८	
अपवत्त	अपवृत्त १७१	अप्फिडित	आस्फिटित १६९	अभिसंयुत	अभिसंस्तुत १७०	
अपवाम	७६	अप्फोडित आस्फोटित	१६८-१७०-१७६	अभिहट्ट	अभिहट्ट ३९-१३०	
अपविट्ट	१७१	अप्फोतिका	वनस्पति ७०	अभुदइक	अभ्युदयिक १२१	
अपविट्ठ	२००	अप्फोय	वृक्ष ६३	अभोगाकरिणी ?	कर्माजीविन् ६८	
अपव्वाम	२२	अबुद्धीस्मणा	५८-१२२-१२४	अमणुण्ण	अमनोज्ञ ३७	
अपसकंठ	अपव्वकत् १४३	अब्भरायां	देवता ६९	अमिल	भाण्ड ७२	
अपसण्णअपसण्णा	५८	अब्भवालुका	मृत्तिका २३३	अमिला	अविला २३८	
अपसण्णामास	२०२	अब्भंतरअब्भंतरक	८६	अम्हरि	रोग २०३	
अपसव्व	अपसव्व ७६	अब्भंतरजोणि	१३९	अयकण्ण	वृक्ष ६३	
अपसारित	क्रिया. १६९-१७१	अब्भंतरठितामास	२४	अयकण्ण	फल २३२	
अपस्सयम्हि	अपश्रये ३१	अब्भंतरपरियरण	१३६	अयमार	वृक्ष ६३	
अपस्सयविहि	अपश्रयविधि ९-१०-५९	अब्भंतरबज्झा	८८	अयसा	सुरा १८१	
अपस्सया सत्तरस	११-२६	अब्भंतरबाहिराणि	५७-१२८	अयसीतेल्ल	२३२	
अपस्सिअ	अपश्रित	अपार्थिवक ४२	अब्भंतरतराणि	१२८	अयेलका	अजैडकौ १६६
अपहट्ट	अपहट्ट २१५	अब्भंतराणंतरिया	८७	अयो	अतः ४६	
अपहरितक	अपहतक १६६	अब्भंतराणि	५७-८७-९०-१२८	अयोगक्खेम	अयोगक्षेम १६२	
अपहित	अपहत १६९	अब्भंतरापमट्ट	२५	अरक	कृमिजाति ६९	
अपंगुत	अप्रावृत्त १९९	अब्भंतरामास	१३०-१३३	अरकूडक	धातु २४८	
अपातयं	अपातपम् ७७	अब्भंतरावचर	कर्माजीविन् १५९	अरलूसा	वृक्षजाति ७०	
अपातव	अपातप ६१	अब्भाकारिक ?	कर्माजीविन् ६७-७९	अरस्स	२२२	
अपावुणंत	अप्रावृणवत् ३८	अब्भागारिक ?	कर्माजीविन् ८८-१५९	अरंजर	जलघट ३०-३१-६५-१९५	
अपिधावधिकधा ?	४०	अब्भातलपलाइत	अभ्रतलपलायित १४४	अरंजरमूल	१३६	
अपीलये ?	४५	अब्भितरगिह	अभ्यन्तरगृह १३७	अरंजरवल्लो	७०	
अपीलित	अपीडितं २५	अब्भितराभिमतु	२५	अरिट्ट	देवता २०४	
अपी(वि)वरा	१२४	अब्भुक्कदित अभ्युत्कृष्ट-अभ्युत्कवथित	१०६	अरिट्ठा	सुरा ६४-१८१-२२१	
अप्पणामंतो	अपनामयम् ३७	अब्भु(प्पु)ट्टियविधि	९-१०	अलकपरिक्खेव	अलकपरिक्षेप ६४	
अप्पणि	आत्मनि ११	अब्भुत्तिट्टुति	अभ्युत्तिष्ठति १४१	अलणा	देवता २२३	
अप्पणी	आत्मनि १०-११-१२-१३	अब्भुप्पवति	अभ्युत्प्लवते १४१	अलत्तक	अलक्तक १६२	
अप्पणीयक	आत्मीयक ११-१३६-२१४	अभत्तीण	अभक्त्या ४	अलवण	लवणवर्जित भोज्य १८२	
अप्पणोक	आत्मीय ? १८	अभिकंखित	अभिकाङ्क्षित १९०	अलसंदक	धान्य २२०	
अप्पणिया ?	२०	अभिज्जिय ?	क्रिया. १९२	अलंकित	अलङ्कृत १६८	
अप्पपरिगह	५८-१२२-१२९	अभिणवभोयणं	१८०	अलंदक	भाण्ड ६५	
अप्पमज्जित	अप्रमार्जित २१	अभिणव्व	अभिनव १४५	अलंदिका	भाण्ड ७२	

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र				
अलि ?	४१	अव्वत्तपुच्छित	अव्यक्तपृष्ठ	३६	अस्सायेति	आस्वादते	१०७		
अलित्तककारक	अलक्तककारक	१६०	अव्वंग	अव्यङ्ग	११४	अस्सारोध	अश्वारोह कर्माजीविन्	१५९	
अलिंद	भाण्ड	६५	अव्वापण्णामास		२०२	अस्सावित	आश्रावित	१३३-१८६	
अल्लीणमल्लीण	आलीनालीन	८७	अव्वाबाधा	देवता	२०४	अस्सिणो	देवता	२०४	
अवंक ?		१४२	अव्वोआताणि		५७	अस्सोत्थ	फल	२३१	
अवकड्डति	अपकर्षति	१०८	अव्वोकड्ड		८६	अहरहै	अहरहः	५७	
अवकरिसेत्त	अपकर्षत्	३७	अव्वोयताणि		१२८	अहव्वेद	गोत्र	१५०	
अवक्खित्त	अव्याक्षिप्त	३८	अस	अस्य	१७-५०-५४-२६४	अहिआण	अधीयान	१	
अवज्जेयमाण ?	क्रिया.	१९८	असण		वृक्ष	६३	अहिणी	सर्पिणी	६९
अवहु	कृकाटिका	११४	असत्थिण्णा ?		५२	अहिणूका	सर्पिणी	६९-२२७	
अवणामित	क्रिया.	२१७	असरसंपण्ण		१७३	अहिधावति	अभिधावति	८०	
अवणेत	अपनयत्	३८	असलेसा	अश्लेषा	२०६	अहिनिप	अधिनृप	१६०	
अवत्थंभ	अपस्तम्भ	२७	असल्लीण	असंलीन	४६	अहिमार	फल	२३२	
अवत्थिया		५८	असल्लीणुद्धित	असंलीनोत्थित	४५	अहिरण्णक	वृक्ष	६३	
अवदातक		१५३	असव्वओ	यशस्वतः	१	अहिलूका	परिसर्पजीव	२३७	
अवमट्ठ	अपमृष्ट	२१५	असहस्सदि	असहस्मृति	१०	अंकोल	वृक्ष	६३	
अवयि	रोग	२०३	असंघातसंपन्न		१७३	अंकोलपुप्फ	पुष्प	६३	
अवरण्ण	अपराह	१६४-१७८	असामण्णं भुत्तं		१८०	अंखिणो	अक्षिणी	१२२	
अवरण्ह	अपराह	१६५	असालिका	आसालिका-जलचर	६९	अंगजक	आभू	६५	
अवरसजमगत ?		२६	असित	वर्ण	९०-१०५	अंगणगिह	अङ्गनगृह	१३८	
अवलोगित	क्रिया.	१७६	असितवण्णपडिभागा		५८	अंगत्थवो	अज्झायो	अङ्गस्तवोऽध्यायः	५
अवलौयित	अवलोकित	२१५	असिलट्ठी	असियष्टि	११५	अंगदुवारधर	अङ्गद्वारधर	८	
अवसक्कंत	अवष्वक्कत्	१३५	असिगीण	अशङ्किणाम्	१७९	अंगदेवी		१११	
अवसक्किअ	अवष्वक्कित	१६	असीति	अशीति	१२७	अंगमणीअज्झाय		५७	
अवसक्किअम्हि	अवष्वक्किते	१७	असीमालिका	कण्ठआभू	१६२	अंगयाणि	बाहुआभू	१६३	
अवसक्कित	अवष्वक्कित	२१७	असुयामाससद ?		४५	अंगरक्खा	अङ्गरक्षा	७	
अवसरित	अपसृत	१३०	असोकवणिक्कापाल	कर्माजीविन्	१६०	अंगविज्जा	अङ्गविद्या	१-७	
अवसव्व	अपसव्य	७६	असोग	वृक्ष	६३	अंगविज्जाविसारत	अङ्गविद्याविशारद	९९	
अवसिद्ध	अपसिद्ध	६७	असोयवणिया	अशोकवनिक्का	२२२	अंगवी	अङ्गवित्	७-१४	
अवस्सय		१८६	अस्सअधिगत	कर्माजीविन्	१५९	अंगहिय	अङ्गहित	७	
अवस्सित	अपश्रित	१९८	अस्सकण्ण	वृक्ष	६३	अंगहियय	अङ्गहृदय	६-१२९	
अवह	अङ्ग	६६	अस्सपूतण	पशु	२२७	अंगुप्पत्तीअज्झाय		१	
अवहत्य		२१६	अस्सखंस ?	कर्माजीविन्	१६०	अंगुलिपोट्टिया	अङ्ग	११९	
अवहत्यग		६०	अस्सबन्ध	कर्माजीविन्	१५९	अंगुलिमुट्टिका	आभू	७१	
अवंग	आभू	६४	अस्सभन्ड	भाण्ड	२३०	अंगुलीमंडल		११६	
अवाइमा	अपाचीना	१८-१९	अस्समच्छ	मत्स्यजाति	२२८	अंगुलेयक	अङ्गुलिआभू	१६३	
अवामस्सा	अमावास्या	२०६-२०९	अस्समंडल		११६	अंगे(अग्गे)याणि	अग्नेयानि	१२८	
अवाहणत	अवाखनत्	३८	अस्समोहणक		१३७	अंगोदधि		१	
अविकपत्तुण्णा	प्राणिजवस्स	२२१	अस्सवारिक	कर्माजीविन्	१५९	अंछणिका	रज्जुविशेष	११५	
अविधेय		७३	अस्सात ?	क्रिया.	१७६	अंजणमूलक	धातु ?	१६२	
अविवरा		५८	अस्सातियक्ख	कर्माजीविन्	१६०	अंजणी	भाण्ड	२३०	
अविस्सर	अविस्वर	३६	अस्सादेहिति	आस्वादयिष्यति	८४	अंजणेकसक	वृक्षजाति	७०	
अवेगिअ	अवेगित	४							

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
अंतर्गणज्जमाण	अन्तर्नीयमान १९६	आगच्छते	क्रिया. ८४	आदर्शगृह	आदर्शगृह १३६-१३८
अंतर्त्था	१५३	आगण्णेति	आकर्णयति १०७	आदाणकवत्त	२०९
अंतर्पाल	८९	आगतविभासा णामं पडलं	४२	आदित्तमंडल	११५
अंतर	१२६	आगताणि सोलस	४१	आदिपंडक	नपुंसकविशेष २२४
अंतरंस	१८७	आगमगिह	आगमगृह १३६	आदेयाणि	१२८
अंतरिज्ज	अन्तरीय वस्त्र ६४-१६४	आगमण अज्झाय	१३०-१३५	आधात्मचित्ताय	अध्यात्मचिन्तया ५७
अंतरिय	अन्तरीय वस्त्र २२२	आगमणजोणि	१३९	आधायित	क्रिया. २१५
अंतलिक्खाय	अन्तरिक्षक १	आगमणविधिविसेस	९-१०-५९	आधार	आहार १७८
अंता	५८-१२१-१२९	आगमेसभद्	आगमिष्यद्भद्र १०८	आधारइता	आधारयित्वा ६७-८१
अंतोघर	अन्तर्गृह ३२	आगमेहिति	आगमिष्यति ८४	आधारए	आधारयेत् ११
अंतोणाद	अन्तर्नाद ४३	आगम्म	आगत्य १९२	आधारणाय	आधारणायाः ७
अंतोवारीय	अन्तर्वार्याम् ८५	आगम्मगिह	१३८	आधारणो अज्झाओ	७
अंदोलंति	क्रिया. ८०	आगर	आकर २०१	आधारयित्ता	आधार्य ८१
अंधक	फल २३८	आगामिभद्	१०८	आधारयितू	आधार्य १८५
अंधी	आन्ध्रदेशजा ६८	आगारेति	आकर यति १०७	आधारयित्ता	आधार्य ४०
अंब	आम्रवृक्ष ६३	आचमणिका	भाण्ड २५५	आधावितक	क्रिया. १६६
अंबकधूवि	भोज्य ७१	आचरिय	गोत्र १५०	आधिपच्च	आधिपत्य ११२
अंबट्टिक	भोज्य १८२-२४६	आचिकखति	आचष्टे ८३-१०७	आधुत	क्रिया. ८०
अंबपिंडी	भोज्य ७१	आचित	क्रिया. १६५	आधोधिक	आधोऽवधिक ९
अंब(त)राई	५९	आच्छण	आच्छन्न १७	आपडित	आपतित १७१
अंबाडक	वृक्ष ६३	आजीवक	गोशालकमत २४५	आपंचमंडल	११६
अंबाडकधूवी	भोज्य ७१	आजीवणिक	११	आपुणेय	१२४-१४९
अंबासण	पर्वतः ७८	आजोग	आयोग २०	आपुरायण	गोत्र १५०
अंबिल	अम्ल २२०	आज्जेयणीय	अध्ययनीय १४७	आपूपिक	कर्माजीविन् १६०
अंबिलक	भोज्य १७९	आडवक	पक्षी २३८	आपेलग	आपीड २५९
अंबिलजवागू	भोज्य १८१	आडविक	१५९	आपेलचिंध	आपीडचिह्न १४९
अंबेल्लि	भोज्य ७१-१७९-२४६	आडा	पक्षी ६९-२२५	आफकी	वृक्षजाति ७०
अंसकूड	अङ्ग ७२	आणावचरणिग	स्थल-जलचर २२७	आबद्धक	कर्णआभू १६२
अंसकोवकरण	१३४	आणु(णू)क	लक्षण १७३-१७४	आबंधण	क्रिया. १९८
अंसपीठाणि	अङ्ग ११८	आणुतासवेला ?	२४७	आबाधिक	६१
अंसवीफाणि	अङ्ग ९९	आणेर्याणि	१२८	आभरणगत	दोहदप्रकार १७२
आ		आतवगिह	आतपगृह १३६-१३८	आभरणजोणी	६५
आइल	आविल ४	आतवितक	वस्त्र १६३	आभरणजोणी अज्झाय	१४०-१६२-१६३
आउर	आतुर १२	आतिअ[ति]	आददाति १०७	आभरणाधिगत	कर्माजीविन् १६०
आउंडित	आकुञ्चित १९८	आतिगंछति	आचिकित्सति ८४	आभिजण	७४-७६-१०४
आएसण	आवेशन १३८	आतिमूलिकाणि	५८	आभिजोगिक	आभियोगिक २६८
आओग	आयोग २०	आतिमूलीया	१२१-१२८	आभिणिबोधिक	आभिनिबोधिक ९
आकारणपवत्तणा ?	४४	आतुरगिह	आतुरगृह १३८	आभिप्पायिक	१५७
आकासवियड	११९	आतुरजोणि	१३९	आभियोगिक	देवता २०५
आकासाणि	५८-११८-१२८	आतुरता	१३५	आमट्ट	आमृष्ट २१-२४-१११-१२८
आकुंडित	आकुञ्चित ११५	आतोच्चसद	आतोच्चशब्द १८८	आमतमत	आमयमय १९४
आकोडित	आकुञ्चित १७१	आदंसग	आदर्श-दर्पण १९३		

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
आमधित	आमधित भोज्य २२०	आलिगित	क्रिया. ५१-१८४	आसदी	आसन ७२
आमलक	फल ६४	आलिगितस्त	१८३	आसाइत	आस्वादित १०७
आमली	वृक्षजाति ७०	आलिगियविधि	१-१०	आसाति(लि)का	कृमि २२९
आमसती	आमृशति १७०	आलिगियाणि चउद्दस	११-१३८	आसार ?	२००
आमसमाण	आमृशत् १४६	आलिगेतस्स	आलिङ्गेदेतस्य ५१	आसालक	आसनविशेष २६
आमसं	आमृशन् ७६	आलीषणग	आदीपनक १६२-१६८	आसासण	आश्वासन १४८
आमसंत	आमृशत् १४५-१६९	आलीवणक	आदीपनक १९२-२५४	आसित	क्रिया. २४३
आमसित्ता	आमृश्य १०३-१७०	आलुक	भोज्य १८१	आसिलेखा	अश्लेषा नक्षत्र १५६
आमा[स]य	६-२०३	आलेक्ख	आलेख्य ११६	आसेक्क	नपुंसकविशेष २२४
आमासट्टसय	७-११-२१-१३८	आलोलीवेलिका	२४७	आहाडक	उद्भिज्ज २२९
आमासपडिरूव	५६	आवगित	आवलिगत १४३	आहार	५८-१०७-१२८
आमास-सद्-रूव	१३	आवरित	आवृत २४१	आहारगत	दोहदप्रकार १७२
आमेलक	पुष्पापीडक ६४	आवलिका	कण्ठआभू. १६२	आहारजोणि	१४०
आमोसला	गोत्र १५०	आवसंपयुत्त ?	२०९	आहारणीहार	५८-१०८-१२८
आमोसहिपत्त	आमशौषधिप्राप्त ८	आवातेंते	आपातयति ३६	आहारणीहारजोणि	१४०
आयताणि	५९-१२५-१२९	आवाह	उत्सव २२३	आहारतरकाणि	१२८
आयमणी	आचमनी ५५-७२-२१४	आविक	वस्त्र १६३	आहारम्माहार	१०८
आययमुद्धिता	५९	आविधिहिति	आव्यत्स्यति ८४	आहारसम्मत्ति	१०७
आयरणट्टयाय	आदरणार्थतया १३०	आवुजोणिय	१२४	आहारराहारा	५८
आयग	१५२-१६८	आवुणेया	५८	आहारिपेक्खित	आहारिपेक्षित ३४
आयिक	प्राणिजवस्त्र २२१	आवुपधगत	अप्यथगत २२२	आहितग्गि	कर्माजीविन् १०१-१६०
आयुक्कायिकाणि	५८	आसक	आस्य ४७	आहिचति	क्रिया. ८३
आयुजोणीय	अप्योनिक १४०	आसज्जिता	आसज्य २५१	आहेच्छति	क्रिया. ८४
आयुधाकारिक	आयुधागारिक १५९	आसणगत	दोहदप्रकार १७२		
आयुप्पमाणणिदेस	१०३	आसणगिह	आसनगृह १३६-१३८	इ	इ
आयुप्पमाणे वस्ससत्तप्पमाणणि	५७	आसणज्झाअ	आसनाध्याय १८	इ	पादपूर्ती अव्ययम् ४
आयोग	२०	आसणम्हि	आसने १६	इक्कास	भोज्य १८१
आरकूडमय	पित्तलआभू. १६२	आसणविधी तिविहा	१५	इक्कास	रस १३४-२३२
आरामजोणि	१४०	आसणस्स दिसा अट्ट	५१	इच्चेव	इत्येव ८०
आरामपालक	कर्माजीविन् ८९-१५९	आसणहारक	८१	इट्टक	आसन ७२
आरामवावत	कर्माजीविन् १६०	आसणाणि	१३८	इट्टगपागार	इट्टकाप्राकार १६१
आरामाधिगत	कर्माजीविन् १६०	आसणाणि बत्तीसं	१३	इट्टुकार	कर्माजीविन् १६१
आरिडुक	९२	आसणाभिगगहविही	१५	इतिपिडी	भोज्य ७१
आरियदेवता	देवता २०६	आसणावत्थद्धरत	आसनापस्तब्धरत १८४	इतिहास	गोत्र १५०
आरुभंत	आरोहत् १३६	आसव	सुरा ६४-२२१	इत्तेत्र	इत्येव ७८
आरुभितक	आरूढक २२०	आसवासव	सुरा २२१	इत्थिआ	स्त्रियाः ३५
आरोगता	१३५	आसवाय	पक्षिनाम ६२	इत्थीय	स्त्रियाः १८
आरोगदार	१४४-१४५	आसवारिय	कर्माजीविन् १५९	इमार्णि	इमानि ५
आलका	क्षुद्रजन्तु २३७	आसंदक	आसन ६५-२३०	इरिकाक	पुष्प ६३
आलग	२१४	आसंदग	आसन १५-२६	इरिण	१३४-१९०
आलिगा	वाद्य २३०	आसंदणा	आस्यन्दना २६	इल्ली	वस्त्र ७१
				इस्सरानंतराणि	१२८

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
इस्सरणि	१२८	उक्कासित	क्रिया. १७६-२१५	उट्टित	क्रिया. १३३
इस्सज्ज	ऐश्वर्य ६१	उक्कुज्ज	उत्कुब्ज १८४	उट्टुजोणि	१४०
इस्सरभूत	५८-११९	उक्कुट्ट	उत्कृष्ट ९३	उट्टुंबर	वृक्ष ६३
इस्सरा	५८-११९	उक्कुट्ट	उत्कृष्ट १७०	उणमासक	सिक्कक ६६
इस्सरियामास	२०१	उक्कुट्ट	ध्वनि १७३	उण्णत	उन्नत ३३-१२४
इस्सरोपक्खर	११९	उक्कुट्टुक	उत्कुट्टुक ३७	उण्णतजोणि	१४०
इस्सापंडक	नपुंसकविशेष ७३-२२४	उक्कुलिणी	भाण्ड ७२	उण्णता	५८
इंगालकारक	कर्माजीविन् ९२	उक्कूज	उत्कूज १५५	उण्णमंत	उन्नमत् ३३-१३५
इंगालकोट्टुक	अङ्गारकोष्ठक २५४	उक्कुणित	उत्कूणित १२३-१४८	उण्णरूव	१४२
इंगालछारिण	अङ्गारभूति १०६	उक्कोस	ध्वनि १७३	उण्णवाणिय	कर्माजीविन् १६०
इंगालवाणिय	कर्माजीविन् ९२	उक्कोस	पक्षी २२५	उण्णामित	क्रिया. १६८-१७०
इंगुणि(दि)तेल्ल	२३२	उक्कोसस	देवता ६९	उण्णिक	और्णिक १६३
इंचका	मत्स्यजाति २२८	उक्खणंत	उत्खनत् ३८	उण्हणाभि	उर्णनाभ ७०
इंदकाइया	क्षुद्रजन्तु २३८	उक्खलिका	उदूखलिका १९१	उण्हा	५८
इंदकेउ	इन्द्रध्वज १०१	उक्खली	उदूखली ७२-१४२	उण्हाली	चतुष्पदा ६९
इंदगोपक	क्षुद्रजन्तु १७३-२२९	उक्खंभमाण	उत्तम्भयत् ४२	उण्हअ	भोज्य १८१
इंदगोविका	स्थलचर बहुपदा २२७	उक्खित्त	उत्क्षिप्त १७१	उण्हिपुण्णामतेल्ल	२३२
इंदणाम	१०१	उक्खित्ततुंबिक	८१	उण्होलक	वृक्ष ६३
इंदधणु	२०६	उक्खुली	भाण्ड १९३	उतदुंबरमूलीय ?	९
इंदधय	इन्द्रध्वज २११	उखलिका	उदूखलिका २२१	उतु	ऋतु १९१
इंदमह	इन्द्रमह १०१	उगहित	उद्गृहीत १४८-१७१	उत्तमजोणि	१३९
इंदवड्ड	इन्द्रवर्धकिन् १०१	उग्घाडित	उद्धाटित १४८	उत्तममज्झिमसाधारणाणि	९६
इंदिआली इंदिआलि	८	उच्चपातरस	२४९	उत्तमाणंतराणि	१२८
इंदीवर	पुष्प ६३-१७३	उच्चंपति	क्रिया. १०७	उत्तमाणि वीसर्ति	५७-९३
ई		उच्चारित	क्रिया. १३२-१७०	उत्तमामास	१४५-२०१
ईसाभिमदित	ईषदभिर्मदित २५	उच्छंदण	क्रिया. १९३	उत्तरजोणि	१३९
ईसिसंपीलित	ईषत्सम्पीडित २२	उच्छाडित	अउच्छादित १०६	उत्तरदारिक	२०६
ईसुम्मट्ट	ईषदुन्मृष्ट २२	उच्छुद्ध	उत्क्षिप्त १७१	उत्तरपच्चत्थिम	५८
उ		उच्छुरस	१८१	उत्तरपच्छिम	१११
उउपाण	उदपान १६७	उज्जवणिका	उद्यानिका २४९	उत्तरपुरत्थिम	५८
उकरालीसं	एकचत्वारिंशत् ११७	उज्जाणगिह	उद्यानगृह १३८	उत्तराणि	५८-११०
उक्कट्ट	उत्कृष्ट २४-३३	उज्जाणभोज्ज	उद्यानभोज्य २५६	उत्तरिज्ज	उत्तरीय ६४-१६४
उक्कट्टित	शोकार्त १२१	उज्जालक	९१	उत्ता	उक्ता ३८-२३६
उक्कट्टुओकट्टु	उत्कृष्टपकृष्ट ८६	उज्जुउल्लोइत	ऋजूल्लोकित ३४	उत्ताणपत्तिसिक	उत्तानपार्श्विक २४९
उक्कट्टुति	उत्कर्षति ८०	उज्जुकाणि	५९-१२८	उत्ताणरत	१८४
उक्करिसाऽपगरिसा	उत्कर्षापकर्षत् १०	उज्जुकामास	१३०-१६९	उत्ताणसेज्ज	उत्तानशय्या २४९
उक्कस्स	उत्कर्ष १५	उज्जंत	उज्जत् १४८	उत्ताणाणि	१२८
उक्कंठका	उत्कर्णठा १३६	उज्जयीयति	उत्क्षीयते २५०	उत्ताणुम्पत्थिकाणि	५९-१२५
उक्कंदित	क्रिया. १४८	उट्टपाल	उष्ट्रपाल कर्माजीविन् १६०	उत्तममज्झिमसाधारणाणि	५७
उक्कापात	उत्कापात २०६	उट्टिका	भाण्ड ७२-२१४	उत्थत	क्रिया. १४८
उक्कारिका	भोज्य १८२	उट्टितपट्ट	२१४	उत्थित	क्रिया. १६८-१७०

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
उदकचर	१३३	उपकुलणकखत्त	२०९	उम्मज्जिताभिमदु	१११
उदकचार	२२२	उपगूहित	क्रिया. १६८	उम्मज्जितूण	उम्मज्ज्य २३९
उदकजत्ता	उदकयात्रा ८-९	उपगगहण	उपगगहण ११८	उम्मदु	उम्मृष्ट २१
उदकवड्ढुकि	कर्माजीविन् १६०	उपचिक	त्रीन्द्रियजन्तु २६७	उम्मद्वाणि	९०-१२८
उदकाय	मत्स्यजाति २२८	उपणत	क्रिया. १६८-१७०	उम्मत्थित	उम्मथित १४८
उदकुण्हिका	उदकोष्णिका भोज्य ७१	उपणद्ध	उपनद्ध १६८-१७०	उम्मर	दे० देहली २९
उदकेचर	८०	उपणय	१४३	उम्महित	उम्मथित १४८
उदगगिह	उदकगृह १३६	उपणयण	उत्सव ९७	उम्माण	लक्षण १७३
उदगचर	१८७	उपणाभित	क्रिया. १६८-१७०	उम्माणसंपण्ण	१७३
उदगपरणालि	उदकप्रणाली २४३	उपदासित	आलिङ्गित ? १६८-१७०	उम्माणहीण	१७३
उदगवल्ली	वृक्षजाति ७०	उपध्मानीय	१५३	उम्मुक्क	उम्मुक्क १४८
उदग्ग	उदग्र ९८	उपपत्तीविजयोऽज्झायो	२६९	उरच्छक	वर्म २५९
उदत्त	१२१-१४०	उपमाणक	९८	उरणा	पुष्प ६४
उदत्तदेसे	२९	उपरिगह	उपरिगृह ३२	उरालक	धान्य ६६
उदपाण	१५१	उपरिड्ढिमज्जोणि	उपरिमयोनि १४०	उरुणी	कच्छ १४२
उदलादल	देवता २०५	उपलगिह	उपलगृह १३७	उल्लंघित	क्रिया. १४८
उदाहित	उदाहृत ४८	उपलद्ध	उपलब्ध १६८	उल्लंघित	उल्लङ्घित १४८
उदुकालहास	ऋतुकालभास २०१	उपलोलित	क्रिया. १६८-१७०	उल्लायक	कर्माजीविन् ९०
उदुणीय	ऋतुमत्या १८५	उपवति	गोत्र १५०	उल्लालित	क्रिया. १४८
उदुपाण	१४५-२२२-२३४	उपवत्त	उपवृत्त १६८-१७०	उल्लुत्त	उल्लुत्त ११४
उदुसोभा	ऋतुशोभा २५७	उपवप्पित ?	क्रिया. १६८	उल्लूरधूविता	भोज्य ७१
उदिच्च	औदीच्य १०५	उपविट्ठ	उपविष्ट १७०	उल्लोइत	उल्लोकिता १६८
उदीरणा	११	उपविट्ठुरत्त	१८४	उल्लोएंत	उल्लोकयत् ४२
उद्वित	उद्वुत्त १४८	उपविट्ठुविधिविसेस	५९	उल्लोकिता	क्रिया. १७०
उदुत्त	उद्वुत्त १४८	उपसन्नत्थिय	उपसन्न्यस्त १६	उल्लोकेति	उल्लोकयति १४९
उदुयामास	२००	उपसरित	क्रिया. १७०	उल्लोगिता	क्रिया. ४३-१३०-१७६-२०६-२१५
उदूढ	उदूढ २५०	उपसारित	क्रिया. १६८-१७०	उल्लोपिक	भोज्य १८२
उद्धभागा	५८	उपसेक	१७९-२२०	उल्लोपित	क्रिया. १९७
उद्धमुल्लोगित	ऊर्ध्वोल्लोकिता ३४	उपाणह	उपाणत् १४२-१८३	उल्लोहित	क्रिया. १०६
उद्धलक ?	११६	उप्यल	उत्पल १५	उल्लोहित	क्रिया. १०६
उद्धवित ?	क्रिया. १४७	उप्यलगिह	उत्पलगृह १३६	उवकड्ढुहि	उपकृष्टे १७
उद्धभागामास	२०१	उप्पाडक	त्रीन्द्रियजन्तु २६७	उवकसित	उपकृष्ट १९८
उद्धिततर	१००	उप्पात अज्झाय	२१०	उवकखलित	उपस्खलित २५१
उद्धीरमाण	उद्ध्रियमाण १९८	उप्पातक	त्रीन्द्रियजन्तुः २२९-२६७	उवगूढ	क्रिया. ८६
उद्धुज्जमाण	उद्धुयमाण १४७	उप्पातिका	मत्स्यजाति २२८	उवगगहणाणि	५८
उद्धुमात	परिपूर्ण ११४	उप्पुत्त	उत्प्लुत्त ३७	उवजिज्वा	क्रिया. १६९
उपक	पक्षिनाम ६२	उब्भुभंड	भाण्ड १९३	उवडाणजालगिह	उपस्थानजालगृह १३६
उपकड्ढुत्त	उपकर्षत् १४४	उभयभया	८	उवदूल	उपस्थूल २०८
उपकड्ढुत्ती	उपकर्षन्ती १६९	उभयोसंविट्ठुरत्त	१८४	उवणामैत्त	उपनामयत् ३७
उपकड्ढुत्त	उपकृष्ट १६८	उभिखणफणखपसाणगकुज्जुत्त ?	१९३	उवणिग्गमण	९७
उपकड्ढुत्ता	उपकृष्य १४५	उमुक्क ?	३४	उवत्त	१२२
		उम्मज्जित	उम्मज्जित २५-१४८-२०६	उवत्थग	उपस्थ ११४

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
उवथूलाणि	५८-११४-१२८	उत्सवभोजन	१८०	ओकुम्भ ?	२४३
उवदासिताणि	आलिङ्गितानि १३८	उत्सव	२२३	ओकूणंत	अवकूणत् ४२
उवदित ?	क्रिया. १४८	उत्सान्त	१५१	ओगूढ	अवगूढ ८६
उवहुत्	उपद्रुत् ५८-१२२	उत्सारित	११५	ओघट्ट	अवघट्ट १४७
उवहुतामास	२०१	उत्साहिया	२२२	ओघट्टित	अवघट्टित १४८
उवहुतो अज्झायो	२०२-२०४	उत्सित	१३२-१७०	ओचक्खति ?	क्रिया. ८३
उवधाइणि ?	६८	उत्सिघण	आघ्राण १९३	ओचूलक	शोर्षआभू १६२
उवधारए	उपधारयेत् १०७	उत्सिघित	आघ्रात १४८-१८६	ओछुद्ध	अवक्षिप्त १६९
उवधि	उपधि-माया २६५	उत्सीस	उच्छीर्ष ६४	ओझीण	अपक्षीण ११४
उवप्परिसते	उपस्पृशति १०७	उंगुणी	वृक्षजाति ७०	ओड्ड	कर्माजीविन् १६१
उवलक्खये	उपलक्षयेत् १९७	उंडणाही	क्षुद्रजन्तु २२९	ओणत	अवनत ३३-४२-१६९-१७१
उवलगिह	उपलगृह १३७	ऊ	ओणमंत	अवनमत् ४२-१३५	
उवलद्ध	उपलब्ध १७०	ऊरुजालक	आभू ६५	ओणामित	अवनामित १६९-१७१-१८४
उवलेवमंडल	११६	ऊहस्सित	क्रिया. १७६	ओणिपीलित	अवनिपीडित १४८
उववत्तिविजयो अज्झायो	२६४	ऋ	ओतारिअ	अवतारित १६९	
उववसित	उपोषित १९३	ऋरिकसुत्त	११२	ओतारित	अवतारित १७१
उवविट्ठविहि उपविष्टविधि	९-१०-११-१३	ए	ओतिण्ण	अवतीर्ण ३३-१७१	
उववित्त	१५	एकणासा	देवता २०५	ओतिण्णोतारित	क्रिया. १११
उववुत्त	उपवृत्त १००	एकभस्स	एकभाष्य-एकवचन १५१	ओदण्णिपिडी	भोज्य ७१
उवसक्कंत	उपष्वक्कमाण ३७-१३५	एकवेद	गोत्र १५०	ओदनिक	कर्माजीविन् १६०
उवसक्किअ	उपष्वक्कित १६	एकाणंसा	देवता २२३	ओदीवसिह	९१
उवसक्किअम्हि	उपष्वक्किते १७	एकावलिका	आभू ७१	ओधावति	अवधावति ८०
उवसक्कित	उपष्वक्कित १८४-१९३	एककाणि	५९	ओधिगिह	उपधिगृह १३६
उवहित	उपहित २०२	एकगमणता	एकाग्रमनस्कता १३५	ओधिजिण	अवधिजिण १
उवाताणुत्तमाणि	१२८	एकभस्स	एकवचन १५७	ओधुत्त	अवधुत्त ८०-१४८
उवादिण्ण	उपादत्त २१७	एकसिरीय	एकसरिक १४१	ओपणिब्बय	क्रिया. १९५
उवेट्ट	उपविष्ट १८४	एक्कापविट्ठरत	१८४	ओपविका	क्षुद्रजन्तु २२९
उवेसंत	उपविशत् १३५	एक्केक्क	एकैक १२६	ओपुप्फ	८१
उव्वट्टण	उद्धर्त्तन १९३	एगपादट्ठिअ	एकपादस्थित ३३	ओपेसेज्जिक	कर्माजीविन् १६०
उव्वरक	अपवरक १९५-२२०	एण	एतं ५६-११४	ओबाधित	अवबाधित १४३
उव्वरित	उद्धरित १११	एताय	एतया २३६	ओम	अवम ३३
उव्वलित	उद्धलित १०६	एतेसं	एतेषाम् १४५	ओमज्जित	अपमार्जित १२०-२१९
उव्वलेत्त	उद्धलत् ३८	एतेसां	एतेषाम् ७३-१४१	ओमत्थकाणि	१२९
उव्वात	उद्धात १२२	एलुक	देहली २३३	ओमत्थि	अधोमुखीकृत १७१-२१५
उव्वेल्लित	उद्धेल्लित १०८	एलुय	देहली २२२	ओमथित	अवमथित १६९
उव्वेहासित	उद्धेहासिक १४८	एलूग	देहली ५-३३	ओमदित	अवमर्दित १६३
उसणीतेल्ल	२३२	एसकल्लाण	एष्यत्कल्याण ८३	ओमुक्क	अवमुक्क १६२
उसधतेल्ल	२३२	ओ	अवकृष्ट १६	ओमुक्क	अवमुक्क १६९-१७१
उसभक	आभू ६४	ओकट्ट	अवकृष्ट १७१-१९५	ओमुंचमाण	अवमुञ्चत् ३८
उसिण	उष्ण १२४	ओकट्टित	अवकृष्ट १६९	ओयकार	कर्माजीविन् १६१
उस्सओ	उत्सवः ९८	ओकट्टित	कर्णआभू १६२	ओयमा	गोत्र १५०
उस्सणिकामत्त	कर्माजीविन् १६०	ओकासक			

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
ओयवति	साधयति २४२	ओहसित	उपहसित ८१-२१५	कडिकतोरण	कटिकातोरण १३६
ओरम्भिक	कर्माजीविन् १६१	ओहास	उपहास ७	कडिगेज्झक	कटिग्राह्यक २४९
ओराणी	आभू ७१	ओहिज्जंत	अपजिहियत् ८१	कडित	कटित-कटयुक्त ३०
ओरिक्क	अवरिक्क १४८	ओहित	अपहृत अवहित ३४	कडीगहितरत	१८४
ओरुज्झ	अवरुह्य ३९	ओहीण	अपहीन ४६	कडुकालमच्छ	२३७
ओरुभंते	अवरोहति सप्तमी एक० ३३	क	कडुमाय	चतुष्पद	६२
ओरूढ	अवरूढ १४८	ककाडिका	कृकाटिका ६६-११२-१२१	कडुकीका	वृक्षजाति ७०
ओरेचित	अपरेचित १४८	ककितजाण	गोत्र १५०	कडित	कृष्ट १४८
ओलकित	अवलगित ? १४८	ककी	पक्षी ? २३९	कड	गोत्र १५०
ओलमित ?	क्रिया. २३५	ककुलुंडि	भाण्ड २१४	कडिणधातुगत	१३३
ओलंबित	अवलम्बित १४८	कक्कडी	मत्स्यविशेष १८३	कणलीकत ?	२५९
ओलोएत	अवलोकयत् ४२	कक्कब	गुडविशेष १८२	कणवीर	गुल्मजाति ६३
ओलोकित	अवलोकित १३०-१७१	कक्करपिडग	भोज्य २४६	कणवीरका	कनीनिके ९३-१२५
ओलोलित	क्रिया. ८१-१६९	कक्कुस	कुक्कुस १०६	कणिकार	कर्णिकार ९०
ओवट्टित	अपवर्तित १६९-१७१	कक्खड	कर्कशः १८९	कणिल्लिका	कनीनिका १२५
ओवत्त	अपवृत्त १६९-१७१	कक्खडाल	कर्कशः ३३	कणेट्टिका	अङ्ग १३४
ओवयित	अवपतित २५८	कक्खारुक-ग	फल ६४-२३८	कण्ण	गोत्र १२५-१५०
ओवात	अवपात १४९-२४९	कक्खारुणी	वृक्षजाति ७०	कण्णकोवग	कर्णआभू. ६४
ओवातसामाणि	५७	कक्खखी	गोत्र १५०	कण्णखील	कर्णआभू. ६५
ओवाताणि	५७-९०	कक्चि	क्वचित् १५४	कण्णगूधक	कर्णगूधक-कर्णमलः १५५-१७८-२०३
ओवातिक	परिसर्पजाति ६९	कक्छभक	स्थल-जलचर २२७	कण्णचूलिगा	कर्णचूलिका ६६
ओवातिका	अवपातिका ६८	कक्छभमगर	मत्स्यजाति २२८	कण्णचूलिका	धान्य १६४
ओवादकर	अवपातकर ४	कक्छा	कक्षा २०१	कण्णतिल	कर्णआभू. ११६
ओवारि	१६५	कक्जुरी	खजूरीवृक्ष ७०	कण्णपालिक	कर्णपाली ६६-१२४-१४१
ओवारित	अपवारित १४८	कक्जोपक	कार्योपग २५४	कण्णपाली	कर्णआभू. ६५-१८३
ओवालित	क्रिया. १४८	कटुतरी	वस्त्र ७१	कण्णपीलक	अङ्ग ९३
ओवास	कर्णआभू. १८३	कट्ट	काष्ठ १५	कण्णपुत्तक	कर्णआभू. ६५-१८३
ओवुलीक	चतुष्पद ६९	कट्ट	आभू. ६५	कण्णपूरक	धान्य १६४
ओवेढग	आभू. ६५	कट्ट	जलवाहन १६६	कण्णरालक	कर्णआभू. ६५
ओवेढिय	अपवेष्टित २१६	कट्टुखोड	दे० काष्ठखोड १५	कण्णलोडक	कर्णआभू. ११६
ओसधगिह	औषधगृह १३७	कट्टुमय	आभू. १६२	कण्णवल्लयक	कर्णआभू. ७१
ओसधजवागू	भोज्य १८१	कट्टुमयं पीढं	काष्ठमयं पीढम् २६	कण्णवल्लीका	कर्णआभू. १५५
ओसधीपडिपोग्गल	१४३	कट्टुमुह	वाहन १९३	कण्णवीही	उत्सव १४३-१४४
ओसर	१३६	कट्टुहारक	काष्ठहारक ८९	कण्णसकुल्ल	कर्णआभू. १५५
ओसरक	अपसरक १३७	कट्टुसालुक (कंठमालक)	रोग २०३	कण्णाणिव्वहण	कर्णआभू. १८६
ओसरित	अपसृत १६९	कट्टाधिकत	कर्माजीविन् १६०	कण्णातिलग	तिलकप्रकार २४६
ओसारित	क्रिया. १३०-१४८-१७१	कट्टेवट्टक	कण्ठआभू. १६३	कण्णातिलग	कन्याप्रवाहन ३१
ओसीसजंभिय	अवशीर्षजंभित ४७	कडक-ग	स्तनआभू. ६४-६५-१६३	कण्णापवाहन	उत्सव १४४
ओसुद्ध	क्रिया. १४८-१९७	कडच्छकी	कडुच्छिका ७२	कण्णायावहण	१७५-१७६
ओसुत्तक	अवसुत्तक २४९	कडमच्छ	त्रीन्द्रियजन्तु २६७	कण्णावासणो अज्झायो	कर्णआभू. ७१
ओहत	उपहत १४८	कडसक्करा	वर्णमृत्तिका १०४-२३३	कण्णिका	वृक्ष ६३
ओहत्थहसिय	अपहस्तहसित ३५	कडाहक	भाण्ड २१४	कण्णिकार	५
		कडिउपकाणि	कटीआभू. १६३	कण्णिवल्लीबंध ?	

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
कण्णुप्परिका	अङ्ग १२३	कम्मजोणी अङ्गाय	१५९-१६१	कसक	उद्भिज्ज २२९
कण्णुप्पलक	कर्णआभू ११६	कम्मणवत्त	२०९	कसकी	वृक्षजाति ७०
कण्णुप्पीलक	कर्णआभू १६२	कम्मण ?	५	कसरि	भोज्य ७१-१७९
कण्णेपूरक	कर्णआभू १६२	कम्महार	१४६	कसिगोरख	कर्माजीविन् १५९-१८५
कण्णैयाणि	५९-१२८	कम्मासवाणिज्ज	कर्माजीविन् १६०	कसित	गोत्र १४९
कण्ह	वर्ण १०४	कम्मिक	कर्मिक ६१	कसेरुक	भोज्य १८१
कण्हकराल ?	९२	कम्मिय	कस्मिश्चित् ८५	कसेरुक	फलजाति ७०
कण्हकीडिका	क्षुद्रजन्तु २२९	कम्हिय	कस्मिश्चित् १७	कस्स ?	११४
कण्हगुलिका	उद्भिज्ज २२९	कयण्हिक	कृताहिक २४७	कस्सव	गोत्र १५०
कण्हणीलपडीभाग	१२८	कयर	पक्षिनाम ६२	कस्सामो	कक्ष्यामः २३६
कण्हतिल	रोग २०३	कयार	कचवर १०६	कंक	रोग २०३
कण्हतुलसी	वनस्पति ९२	कर	वृक्ष ६३	कंकण	करआभू ६५
कण्हपडीभागे	१०४	करकी	भाण्ड ७२	कंकसालाय	कङ्कशालायाम् १३६-१३८
कण्हपिपीलिका	क्षुद्रजन्तु २२९	करणमंडल	५८-११६	कंगुका	पुष्प ७०
कण्हमोयक ?	९२	करणसालाय	करणशालायाम् १३८	कंगू	धान्य १६४
कण्हलुख	१२८	करणोवसंहिता	१२८	कंगूक	वृक्षजाति ७०
कण्हवण्णपडिभाग	५७	करमंद	फल ६४-२३१	कंजणिका	भाण्ड ७२
कण्हविच्छिका	क्षुद्रजन्तु २२९	करल	रोग २०३	कंची	कटीआभू ७१
कण्हणि	५७-९२-१२८	करंजतेल्ल	२३२	कंचीकलापक	कटीआभू ६५-१६३
कण्हामास	१३०	करंडग	करण्डक २२१	कंचुक	वस्त्र ६४
कण्हाल ?	९२	करिण्हुका	उद्भिज्ज २२९	कंटकमालिका	आभू ७१
कण्हरी	चतुष्पदा ६९	करिलेग	फल २३८	कंटकालक	कण्टकमय ३३
कतमस्सि	कतमस्याम् २६४	करीस	करीष १०६-१४२	कंटकौरुख	कण्टकिवृक्ष २७
कतलिछारिका ?	२५५	करेणूयक	वस्त्र १६४	कंटासक	फल ६४
कतंब	कदम्बवृक्ष ६३	करोडक	भाण्ड ६५	कंटिका	आभू ७१
कतिमि	कतमाम् १०९	करोडी	भाण्ड ७२	कंटेण	चतुष्पद ६२
कतरिका	कर्तरिका १९१	कलभ	बाल ९७	कंटेगुण	कण्ठसूत्र ? ६४-२५८
कत्थलायण	गोत्र १५०	कलवा	गोत्र १५०	कंडरा	अङ्ग ६६-११९
कदमग	स्थल-जलचर २२७	कलस	भाण्ड ६५	कंडूसी	गोत्र १५०
कधा	कथा ४०	कलहिभी	वृक्ष ? २३८	कंडे	जलवाहन १६६
कधामज्जक	पक्षिनाम ६२	कलाय	धान्य १६४	कंतिकवाहक	७९
कपिटु	फल २३९	कलायधज्जिय	भोज्य १८२	कंदल	पुष्प ६३
कपित्थतेल्ल	२३२	कलायस	फल २३१	कंदलि	वृक्ष २४३
कपिलक	पक्षिनाम ६२	कलिमाजक	फल ६४	कंदित	कन्दित ४६-१६२
कप्प	गोत्र १५०	कल्लाडक	मत्स्यजाति २२८	कंदियविधि	९-१०
कप्पासिक	वस्त्र २२१-२३२	कवचिका	भाण्ड ७२	कंदूग	आभू ६५
कप्पासी	कर्पासी ७०	कवल	चतुष्पद ६२	कंबल	वस्त्र १७
कप्पोपक	कल्पोपग ६२	कवल्ली	भाण्ड ७२	कंबलिक	वस्त्र २२०
कभेइका	कृमिजाति ७०	कविट्ट	वृक्ष ६३	कंसकारक	कर्माजीविन् १६०-१६१
कमंडलू	भाजन १०१	कविजल	पक्षी ६२	कंसगिह	कांस्यगृह १३६
कम्मकत	कर्मकृत २५६	कवी	पक्षी १९५	कंसपति	भाण्ड ७२
कम्मरिह	कर्मगृह १३६-१३७	कव्वुड ?	८१		

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
कंसलोह	धातु २३३	कावकर	काव्यकर ११	कुट्टित	क्रिया १५५
कंसिक	कांस्यिक ९०	कास	१७७	कुट्टबुद्धी	कोष्ठबुद्धी ८
काकमज्जुक	पक्षी २२५	कासक	कर्षक २४९	कुठारिका	भाण्ड ७२
काकवाल ?	१४२	कासमाण	१३५	कुडज	वृक्ष ६३
काकंडकवण्ण	१०५	कासित	क्रिया १३०-१४८-१६८-१८४	कुडिला	५९-१२४-१२९
काकाक	पक्षी १४५	कासंत	कासमान ३७	कुडुकालक	मत्स्यजाति २२८
काकुरुडी	गोत्र १५०	काहापण	सिक्कक ६६	कुडुंबक	२४३
काकुंधिका	उद्धिज्ज २२९	काहावण	सिक्कक १३४-१८९	कुड्डापस्सय	कुड्डापश्रय ३०
काणटिट्टि	कृमिजाति ७०	किज्जर	भाण्ड २२१	कुडारक	भाण्ड ६५
काणवि	वृक्षजाति ७०	किट्टित	कीर्त्तित १४२	कुणिणख	रोग २०३
कातंब	कादंबपक्षी ६२-१४५-२२५	किडिका	दे० खडकिका २७	कुतिपि	उद्धिज्ज २२९
कापुर	कर्पूरसमान १९६	किडिग	रेग २०३	कुदु(डु)क	कुटुक १३५
काप्पायण	गोत्र १५०	किडिभक	रेग २०३	कुद्दिअ	क्रिया. १५७
कामजोणी	५३-५५-१३९	किणिहि	कृमिजाति ७०	कुधुलूक	पक्षी ६२
कामहार	१४४	कितबुद्धि	कृतबुद्धि १२२	कुड्डता	कुड्डता १३५
कामल	रोग २०३	कित्तियिस्सं	कीर्त्तयिष्यामि ३४	कुभंड	फल ६४
कामसच्च	कामसत्य ९	किपिल्लक	कृमि ६६	कुभिधी	पुष्प ७०
कायतेगिच्छक	कर्माजीविन् १६१	किपिल्लिका	कृमिजाति ७०	कुमारीला	मत्स्यजाति २२८
कायवंतो	११७-१२८	किमिका	कृमिजाति २२९	कुम्मासर्पिडि	कुत्माषपिण्डी ७१
काया	५८	किमिमंडलिकारिका	११६	कुरबक	आभू. ६४
कारयिस्सति	कारयिष्यति १७५	किलकिलायिअ	क्रिया १८६	कुरबक	वृक्ष ६३
कारिअल्लिका	वृक्षजाति ७०	किलास	रोग २०३	कुरिल ?	२३७
कारुककम्म	कर्माजीविन् १५९	किलिट्ठपराभास	१८८	कुरुडूका	पुष्प ७०
कारुकाजोणि	१३९	किलिट्ठा	५९-१२६-१२९	कुलणवखत्त	२०९
कारुगगिह	कारुकगृह २५८	किलिट्ठामास	२०१	कुलत्थ	धान्य १६४
कारुगिणी	कर्माजीविनी ६८	किलिण्ण	क्लान्न १०६	कुलत्थकूर	भोज्य ६४
कारंडअ-व	पक्षी ६२-२२५	किलिम	क्लीब ७३	कुलल	पक्षिनाम ६२
कालक	पक्षी ६८-२३८	किलेसित	क्लेशित १४८	कुलिगअ	क्षुद्रजन्तु २३८
कालककालिका	१५३	किलंज	शलाका १३४-१९०	कुलीयंधक	आभू. १८३
कालक्खारमणी	आभू. १६२	किविल्लका	कृमि ७२-२२९	कुलीर	मत्स्यजाति ६३
कालज्झाय	२६०-२६२	किस	१९०	कुलीरा	सर्पिणी ६९
कालप्पविभाग	२६०	किसा	५८-१२८	कुलोपकुल	२०९
काललोह	धातु २३३	किस	कृश ११४	कुविक	१५३
काललोहमय	धातुवस्त्र २२१	कीतक	क्रीतक १६६	कुसणगत	२२०
काललोहमय	आभू. १६२	कीलणक	कीडनक १४५	कुसीलक	कुशीलव कर्माजीविन् १६०
कालस्साम	कालस्थाम ६८	किसुग	वृक्ष ६३	कुसुकुंडी	सुरा २२१
कालंची	भाण्ड ७२	कुकुंदल	अङ्ग १२३	कुसुमालिका	१४२
कालाडग	मत्स्यजाति ६३	कुक्कयणायं ?	१३०	कुसुंभ	धान्य १६४
कालापरणपिंडी ?	५	कुक्कुड	अङ्ग ११४	कुसुंभतेल	२३२
कालिका	वृक्षजाति ७०	कुक्कुडिगा	फल ७१	कुंजित	क्रिया. १६२
कालिग	फल २३९	कुक्खिधारक	कुक्षिधारक ७९	कुंट	गुल्मजाति ६३
कालिगी	वृक्षजाति ७०	कुच्चोर्लि ?	२३६	कुंडग	भाण्ड ६५
कालेयकरस	२३२	कुच्छिया	कुत्सिता ५		

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
कुंडमालिका	आभू. ७१	कोट्टिब	जलवाहन १६६	खचित	धातुवस्त्र २३४
कुंडल	कर्ण आभू. ६४-१६२	कोट्टक	कोष्ठक १३६-१३७	खज्जकारक	कर्माजीविन् १६०
कुंड	गोत्र १४९	कोट्टाकार	कोष्ठगार १३८	खज्जगगुल	गुलविशेष १८१
कुंडिका	१९१	कोट्टाकारिक	कोष्ठगारिक १५९	खज्जगत	दोहदप्रकार १७२
कुंथू	क्षुद्रजन्तु २२९	कोट्टागार	कोष्ठगार २२२	खज्जापज्ज	खाद्यपेय १०७
कुंभ	जलवाहन १६६	कोडित	क्रिया. २१५	खज्जूर	फल ६४-२३८
कुंभकार	कर्माजीविन् १६०	कोडिलवखणक	आसन २३०	खट्टा	खट्टा १७-२६
कुंभकारिक	कर्माजीविन् १६१	कोडिवग्गे	५९	खट्टुग	मौक्तिककटक ६४-११६
कुंभकंडका	फल २३२	कोडी	१२७	खट्टुभायणगत	२२२
कुंभ	गोत्र १५०	कोडिक	कुष्ठरोग २०३	खणता	क्षणदा २४५
कुंभिकारीआ	क्षुद्रजन्तु २३८	कोतवक	वस्त्र १६३	खणंत	खनत् ३८
कुंभीकपंडक	७३	कोत्थकापल	भाजन २७	खत्तपक	क्षत्रपक सिक्कक ६६
कूचफणलीखावण ?	१८३	कोत्थलग	८५	खत्तबंभ	१०२
कूचिय	भोज्य २२०	कोद्व	धान्य १६४	खत्तवेस्साणि	१०२-१२८
कूडणाणक	१३०	कोमारभिच्चा	कर्माजीविन् १६१	खत्तसुद्ध	१०२-१०३
कूडपुरी	पक्षिणी ६९	कोरेंटक	वर्ण १०५-१४१	खत्तिक	१०२
कूडमासक	१३०	कोरेंटवण्णपडिभागा	५८	खत्तिकोसण्ण	१६१
कूडलेक्ख	१३०	कोलक	फल २३१	खत्तिय	पादआभू. १८३
कूभंड	फल २३१	कोलथ	धान्य २२०	खत्तियजोणि	१३९
कूभंडग	फल २३९	कोलफल	२३८	खत्तियज्झोसिय	१६१
कूभंडी	कुष्माण्डी ७०	कोलिक	कर्माजीविन् १६१	खत्तियधम्मक	पादआभू. ६५-१६३
कूरवेला	२४७	कोलिक	वृक्ष ६३	खत्तेज्जवेस्सेजाणि	५७-१०२
कूवित	क्रिया. १५५-२१४	कोलिक	क्षुद्रजन्तु २३७	खत्तेज्जाणि	५७
केआ	रज्जुविशेष ११५	कोविडाल	वृक्ष ६३	खत्तेयाणि	१०१
केज्जूर	आभू. ६५	कोविराल	वृक्ष ६३	खदिर	वृक्ष ६३
केणिक ?	६१	कोसक	चतुष्पद ६२	खपल्लापाडण ?	१०६
केतभी	वृक्षजाति ७०	कोशगिह	कोशगृह १३८	खफुट्ट ?	१०६
केयवसक	फल २३८	कोसज्जवायका	कर्माजीविन् १६१	खरड	२०३
केयिच्च	केचिच्च २३६	कोसरक्ख	कर्माजीविन् १६०	खराइं	५९-१२४-१२९
केला	भाण्ड ३०-७२	कोसंब	वृक्ष ६३	खलक	६४
केलास	पर्वत ७८	कोसिक	गोत्र १४९	खलिणगिह	१३६
केवतिखुतो	कियत्कृत्वः १८६	कोसिवलगत	२१८	खलित	स्खलित १४८
केस	क्लेश ३१	कोसेज्जक	प्राणिजवस्त्र १६३-२२१	खलुक	गुल्फमणिबन्ध ११४
केसणिम्मज्जण	केसनिर्माण १४८	कोसेज्जिका	वस्त्र ७१	खंजण	खज्जन ९२
केसमोलि	केशमौलि १४६	कोसेयपारअ	वस्त्र ६४	खंडसीस	अङ्ग १५३
केसवाणिय	केशवणिग् ६७	कोसीधण्ण	१६४-१७८	खंडित	क्रिया १४८
कोच्छ	गोत्र १४९	कोट्टक	१०६	खंद-विसाह	देवता २०४
कोज्जक	पुष्प ६३	कोडा	गोत्र १४९	खंधार	स्कन्धावार २५८
कोटिब	नौकाविशेष १४६	ख		खंभावस्सय	स्तम्भापश्रय २७
कोट्टकवास	वृक्ष ? २३८	खइत	खादित ८१	खंस ?	६७
कोट्टाक	कर्माजीविन् १६०	खईआ	क्षयिका १८	खाति	खादति १०७
कोट्टित	क्रिया १९४-२०३-२३९	खघाणस	गोत्र १५०	खारका	चतुष्पदा ६९
कोट्टिम	सयन ६५				

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
खारमणी	रत्न १९४-२१५	ग	गहेतुणं	गुहोत्वा	३९
खारलोह	धातु १३३	गजाधिपति	कर्माजीविन् १६०	गंगावत्तग	भोज्य ? २४६
खारवट्टिका	भोज्य १८२	गज्जित	क्रिया १६८	गंडक	कर्माजीविन् १६१
खालक	पशु २२७	गडुिक ?	६२	गंडसेल	गण्डसैल ७८
खाहिति	खादयिष्यति ८४	गणक	कर्माजीविन् १६०	गंडीपाद	रोग २०३
खिडागत	गोत्र १५०	गणिकाखंसक	कर्माजीविन् १६०	गंडीवेला	२४७
खिप्पकार	क्षिप्रकार ४	गणितापढपणक ?	९७	गंडूपक	आभू. ६५
खिखिणिक	पादआभू. ७१-१६३	गणेश्वरिक	गणेश्वरिक १२३	गंडूपक	कृमि २२९
खिखिणिमहुरघोस	ध्वनि १७३	गततालुगवणपडिभागा	गजतालु ५८	गंडूपयक	जङ्घाआभू. १६३
खिसित	क्रिया. १४८	गतवय	गतवयः १००	गंदित	क्रिया १४८
खीणवंस	क्षीणवंश १००	गति	लक्षण १७३	गंधगत	१८८
खीरपक	मृत्तिका २३३	गद	पक्षी २३९	गंधजोणी	१४०
खीरपादप	क्षीरपादप ३०	गदतोय	देवता २०४	गंधविसारद	ग्रन्थविशारद ४
खीरुवख	क्षीरवृक्ष २७	गदभ	गोत्र १५०	गंधिक	कर्माजीविन् १६०
खीरविकख	क्षीरवृक्ष ५	गदभकप्पमाण	मत्स्यजाति २२८	गंधिकगायक	कर्माजीविन् १६०
खीरस्सव	क्षीरश्रवलाब्धि ८	गदभग	पुष्प ६३	गंधेय	५८-१२३-१२८
खीरिणिविरणउदुंबरिणिआ	८	गम्भगिह	गर्भगृह १३६	गंधीरा	५८-१२४-१२९
खुज्जंग	कुब्जाङ्ग ११७	गम्भ	ग्राम्य १७९	गागरक	मत्स्यजाति ६३
खुडित	खण्डित ११५	गम्मारण्णा	ग्राम्यारण्याः १८८	गाढलीण	८७
खुडुक	बाल १६९	गम्मी ?	६	गाढोपगूढ	८७
खुडुग	हस्तआभू. ६५	गयगिह	गजगृह १३६	गाणक	गान ९१
खुडुसिरीसिव	क्षुल्लसरीसुप १६७	गयग्रेकण्ण	पशु २२७	गाधमक	मत्स्यजाति ६३
खुडुकसत्त	क्षुल्लकसत्त १६८	गयतालुकवण्ण	१०५	गामणक्खत्त	२०९
खुडुिकासु रच्छासु	२१४	गयवारी	गजवारी १३६-१३७	गालित	क्रिया. १४८
खुधित	क्षुधित १३०-१४८-२१५	गयसालाय	गजशालायाम् १३८	गिज्जिहिते	गास्यति ८४
खुला	अङ्ग ११९	गयाधियक्ख	गजाध्यक्ष १५९	गितकारि	गीतकार ९१
खुलुक	कर्माजीविन् १६०	गरुलक	आभू. ६४	गिरिकुमारी	देवता २२४
खुलुक	परिसर्पजाति ६३	गलगांड	रोग २०३	गिरिजण्ण	गिरिजन्य २४४
खुल्लिका	उद्भिज्ज २२९	गलुक	रोग २०३	गिरिमेरुवर	पर्वत ७८
खुवित	क्रिया. १५५-१७६	गल्लिका	यान २६	गिल	मत्स्यजाति ६२
खुसित	क्रिया. १४८	गवल ?	९२	गिल्लि	वाहन ७२-१६६-१९३
खुहित	क्षुब्ध १६२	गवलभंड ?	२१५	गिंधी	गृद्धि १३
खेड	२०१	गवलमय ?	आभू. १६२	गीवरोग	रोग २०३
खेडणक्खत्त	२०९	गहकंडुक	क्षुद्रजन्तु २३८	गीवा	पक्षी २२५
खेडुखंड ?	१७	गहगत	दोहदप्रकार १७२	गुगुलविगत	रस २३२
खोडक	भोज्य १८२	गहणणिविट्ठं	१६१	गुज्झ	गुह्य १२६
खोडित	क्रिया. १४८-२१५	गहणाणि	५८-११८	गुडिकायं ?	गूढिकायाम् १६७
खोमक	वस्त्र १६३-२३२	गहणोपगहण	१२१-१२९	गुणोपजय	२०१
खोमदुगुल्लग	वस्त्र ६४	गहपतिक	गोत्र १४९	गुणु (गंडू) पया	कृमि २२९
खोरक	भाण्ड ६५	गहर	पक्षी ६२	गुरुत्थानीत	गुरुस्थानीय १८७
खोलकमालिका	पुष्प ७०	गहिका	गोत्र १५०	गुरुल	रोग २०३

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
गुलकूरक	भोज्य ६४-१७९	गोसग	प्रभात २४७	चक्रवा	पक्षी २२५
गुलखित ?	क्रिया. १४८	गोसगणहाणक	प्रभातस्नान ९८-२५५	चक्रवाकयीअ	पक्षी २२५
गुलदधि	भोज्य २२०	गोसंखी	कर्माजीविन् १६०	चक्राक	ध्वनि १७३
गुलभक्खण	९८	गोहातक	कर्माजीविन् १६१	चक्रिक	चक्रिक १४७
गुलमग	भाण्ड ६५	घ		चक्खणिका	आस्वादनिका २५८
गुलिक ?	१०६	घडक	भाण्ड ६५	चक्खुआकंत	चक्षुरकान्तः १२०
गुलुकपुप्फ	१७७	घडभायण	२२२	चक्खुसा	चक्षुषा ५६
गूहित	क्रिया. १४८	घडी	भाण्ड ७२	चक्खुसाणि	चक्षुष्काणि १९६
गेज्जकव्व	गेयकाव्य १४७	घणकडत ?	११८	चक्खुस्सं	चक्षुष्मान् १९५
गेज्ज	ग्राह्य-गृहीत्वा ३९	घणपिच्छिलिका ?	आभू. ७१	चच्चर	चत्वर १३६-१४५
गेवेज्ज	कण्ठआभू. ६५	घतउण्ह	भोज्य २४६	चणक	धान्य १६४
गोकटक	मृत्तिका २३३	घतकूरक	भोज्य ६४-१७९	चणव	धान्य १६४
गोच्छक	पुष्प ६४	घयजवागू	भोज्य १८१	चणविका	धान्य २२०
गोज्ज	दे० ? ३९	घरकोइला	चतुष्पदा ६९	चतु	१२६
गोज्जकपती	गुह्यकपति ६२	घरपोपलिका	परिसर्पजीव २३७	चतुक्कगिह	चतुष्कगृह १३६-१३८
गोज्जरति	१३७	घरिफल	२३८	चतुक्काणि	५९
गोज्जगणि	५९-१२५-१२८	घसेत	घर्षयत् ३८	चतुक्खुत्तो	चतुःकृत्वः १८४
गोड्डाण	गोस्थान ५	घंटिक	१४७	चतुक्कयीया	चतुश्चक्रिका २४२
गोणस	सर्पजाति ६३-२३९	घंसित	घर्षित १४८	चतुपहयण ?	१५४
गोतमा	गोत्र १५०	घायति	जिघ्रति १०७	चतुप्पदरत	१८४
गोत्तज्जाय	१४९-१५०	घिघिणोपित ?	क्रिया. १४८	चतुरस्सा	१२८-१६१
गोत्तम ?	१४५	घिसुम	ग्रीष्म १४७-१९९	चतुरंसायत	चतुरंसायत ११६
गोधसालक	सुर ६४	घुक्कभरध	क्षुद्रजन्तु २२९	चतुवेद	चतुर्वेद १०१
गोधूम	धान्य १६४	घुण्णित	घूर्णित १४८	चत्तालीसतिवग्गा	५९
गोधूमभज्जिय	भोज्य १८२	घुमति	क्रिया. ८०	चपला	५९
गोपच्छेलक	प्राणी ९२	घोट्टेति	घोटयति २५८	चमुतेसु ?	क्रिया. १५५
गोपाल	कर्माजीविन् १५९	घोडदाढिकर ?	१४७	चम्मकार	कर्माजीविन् १६१
गोप्फा	गुल्फौ ११२-१६५	घोडित	घोटित ४६	चम्मकोस	चर्मकोश २१६-२२२
गोब्बर	छगण १०६	घोलि	यान २६	चम्मक्खील	चर्मकील-अशोरोगः १७४-
गोमच्छ	मत्स्यजाति २२८	घोसक	कर्माजीविन् १६१		१५५-२०३
गोमयकीडग	परिसर्पजाति ६३	घोसवंत	१५३-१६७	चम्मणडोला	फल २३१
गोमेदअ	रत्न २१५	घोसाडकी	वनस्पति ७०	चम्ममय	भाण्ड २२१
गोमेयकमय	रत्नआभू. १६२	घोहणुमच्छ	मत्स्यजाति २२८	चम्मसाडी	चर्मवस्त्र २२१-२३०
गोम्मि	त्रीन्द्रियजन्तु २२७-२३८-२६७	च		चम्मिरा	मत्स्यजाति २२८
गोरीपाढक	कर्माजीविन् १६१	चउहसपुक्खि	चतुर्दशपूर्विन् ८	चम्मिराज	मत्स्यजाति २२८
गोल	गोत्र १४९	चउरंसा	५८-११७	चयणी	चयनी १०१
गोलिक	वाहन १६६	चउव्वीस	चतुर्विंश १	चरिका	प्राकारसम्बद्धा १३६
गोलिग	वाहन १६६	चक्ककभिहुणग	आभू. ६४	चरुगगत	भाण्ड २१४
गोवज्जभतिकारक	कर्माजीविन् १६०	चक्कचर	पाषण्डविशेष १४९	चलाणि	५७-७९-१२८
गोवयक्ख	गोत्रजाख्य १५९	चक्कमंडल	११६	चलामास	१३०-१३२
गोवित	गोपित १४८	चक्कलग	चक्रक २४२	चलिका	फलजाति ७०

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
चलित	क्रिया. १४८	चिल्लक	वृक्ष ६३	छ	
चलोढ	चोलपट्ट १४२	चिल्लिक	नपुंसक ७३	छइच्छेद	छविच्छेद १४४
चल्ला	अङ्ग ६०	चिचिणिक	वृक्ष ७०	छक	१२६
चवला	१२५	चितितं अज्झातो	२२३	छखुतो	षट्कृत्वः १८४
चसणिका	स्थल-बहुपदा २२७	चितितो अज्झायो	२३४	छगणपीढग	छगणपीठक २६
चसित ?	१५३	चिफलक	आसन १५	छगली	अङ्ग-चोटिका ? ६६
चंडक	गोत्र १४९	चीणपट्ट	वस्त्र ६४-१६३-२३२	छट्टगहणी	षष्ठग्रहणी ८
चंडाणता	५९-१२४-१२९	चीणसुग	वस्त्र ६४	छट्टसाधणी	षष्ठसाधनी ८
चंद	पुष्प ७०	चीती	चिता २३४	छड्डि	रोग २०३
चंदण	वृक्ष ६३	चुक्कितक	भोज्य २४६	छड्डित	छर्दयत् ३७
चंदणरस	२३२	चुडिलीय	चुडुल्याः ९२	छण	क्षण १२१
चंदणिकातेल्ल	२३२	चुण्णक	गृहधवलनद्रव्यम् १०४	छत्तकारक	कर्माजीविन् १६०
चंदलेहा	देवता ६९	चुण्णछारिका	२५५	छत्तधारक	कर्माजीविन् १६०
चंपकतेल्ल	२३२	चुण्णिकार	कर्माजीविन् १६०	छत्तसासनहारण ?	७९
चंपकाली	१०४	चुरु	कृमि २२९	छत्तोध	वृक्ष ६३
चंपगपुष्क	पुष्प ६३	चुल्लमाता	सपत्नीमाता ६८-२१९	छट्टेमाण	छर्दयत् १३५-१३७
चाउल्ल	चापल्य ३	चुल्ली	भाण्ड ७२	छप्पि	षडपि १९१
चातुव्वणविधान	१०३	चुंबणा सोलस	चुम्बनानि षोडश ११	छमिणी	वृक्षजाति ७०
चातूहिक	चातुरहिक २६१	चुंबित क्रिया.	४८-१३८-१६८-१८३	छलंगवी	गोत्र १५०
चापल्ल	चापल्य ३	चुंबिय	क्रिया. ९-१०	छलंस	षडस २४२
चाय	भोज्य १८१	चुंबियविभासापडलं	४९	छलिक (छंदक) ?	१२०
चार	वृक्ष ६३	चुंभल	पुष्प ६४	छंदेति	छन्दयति १३
चारकपाल	कर्माजीविन् १५९	चुंभलक	अवतंस-शेखर २४२	छंदोक	गोत्र १५०
चारायण	गोत्र १५०	चूचुका	स्तनाग्र ६६	छंदोग	गोत्र १५०
चालित	क्रिया. १४८	चेट्टितक ?	जाति १४९	छागलिक	कर्माजीविन् १५९
चांडिक	गोत्र १४९	चेति	चैत्य १४८-२३३	छात	दे० बुभुक्षित ३८-१२१
चिति	चिता १०१-१४८	चेतिक	चैत्य ३१	छातक	क्षुधितक १४२-१४३
चितका	चिता २५४	चेतित	चैत्य २६	छातता	क्षुधालुता १३५
चित्तकारक	कर्माजीविन् १६०-१६१	चेतितपादव	चैत्यपादप ३०	छायत्त	दे० बुभुक्षितत्व ११
चित्तकूड	पर्वत ७८	चेतितागत	चैत्यागत ४१	छाया	लक्षण १७३
चित्तगिह	चित्रगृह १३७-२२२	चेतिय	चैत्य १४७	छायाखंभ	छायास्तम्भ २७-३०
चित्तजीवी	कर्माजीविन् १६०	चेलिकसुत्तीजा	चेलिकसूत्रजा १८	छायासंपन्न	१७४
चित्तपडिमा	चित्रप्रतिमा १८३	चेलिम	२७	छायछायाहीण	१७४
चित्तवण्ण	वर्ण १०५	चोरघाता	कर्माजीविन् १६१	छारिअ	क्षारिका-रक्षा ३९
चित्तवण्णपडिभागा	५८	चोरलोपहारा	कर्माजीविन् १६०	छिक्क	गुल्मजाति ६३
चित्तविज्जा	चित्रविद्या १३०	चोरवासो णगर	१६१	छिण्ण	छिन्न १-१३१
चिबुक	अङ्ग ११४	चोरवेला	२४७	छिण्णंगाला	प्राणी २३९
चियेतूणं	चित्वा २३५	चोराति	भोज्य ७१	छित्त	स्पृष्ट ? ७९
चिराइवत्त	चिरातिवृत्त १६	चोलक	संस्कारोत्सव ९७-१४३	छित्रगाली	कुलटा १८३
चिराय	९५	चोलाडिगा	क्षुद्रजन्तु २३८	छिरा	शिरा ६६
चिलाती	चिलातदेशजा ६८	चोलोपणयण	उत्सव २२३	छिवित	स्पृष्ट १८३-१८४

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
छिन्दत	छिन्दत् ३८	जधण्णाणि	१२८	जाणगिह	यानगृह १३६-१३८
छिन्दती	छिन्दती १६९	जधण्णामास	२०१	जाणजोणी अज्झाय	१६५
छीत	क्षुत १६८	जधाजात	यथाजात ४४	जाणसाला	यानशाला १३८
छीयमाण	क्षूयमाण १३५	जधाणात	यथाज्ञात ५६	जाणिज्जो	जानीयात् १५-१७
छुधा	क्षुधा १६८	जधामाणसिक	वस्त्र ? १६४	जाणि	ज्यानिम् ५३
छुत्र	क्षुण्ण १४८	जधाविधि	यथाविधि ४६	जाणेज्जो	जानीयात् ३६-४४-५४
छुपगत	वनस्पतिप्रकार १७७	जधावुत्त	यथोक्त ४४	जातकम्म	जातकर्म १४७
छुभगत	वनस्पतिप्रकार १८१	जधासत्ति	यथासत्ति ६३	जातिणक्खत्त	२०९
छुवफल	१७७	जधोदिट्ठ	यथोद्दिष्ट ४३	जातीतेल्ल	२३२
छुहा	सुधा १०४	जमलभूसण	१५६	जातीपट्टणुगत	वस्त्र १६४
छुंछिका	चतुष्पदा ६९	जम्मणा	५८	जातीपडिरूपक	वस्त्र १६४
छेतमंडल	क्षेत्रमण्डल ११६	जयकालिका	सुरा २२१	जातीविजयो अज्झायो	१४९
छेलंत	सेण्टिकां कुर्वत् १३५	जयतणं ?	५४	जामवेला	२४७
छेलित	सेण्टित १४८-१७३	जयविजय ?	१४६	जामातुकीक	जामात्रिक ९८
छेलित	सेण्टिकां कुर्वत् ४६	जयसमण	पुष्प ७०	जामिलिक	वस्त्र ७१
	ज	जयो अज्झायो	१९९	जारिका	जारी ६०
जइणक	कर्माजीविन् १६०	जलगिह	जलगृह १३७	जारीय	जार्याः १६
जक्खोपयाण	यक्षोपयाचन १८३	जलपस्संदण	जलप्रस्यंदन १९७	जाला	कृमिजाति ७०
जगतिजगभूय	जगतीजगद्धुत ६	जलाउ	द्वीन्द्रियजन्तु २६७	जालिकर	क्रिया. १४८
जगल	सुरा २२१	जलामास	१४६-१८६	जावक	गोत्र १५०
जगंतक	अग्निज्वालनकर्कटिका २५४	जवभज्जिय	भोज्य १८२	जावतिक	यावत्क २३८
जगिक	वस्त्र २३२	जवातू	यवागू १८१	जिणसंथवो अज्झाओ	३
जघण्ण	जघन्य ४८	जसवओ	यशस्वतः ९	जिणोत्त	जिनोक्त ५
जज्जरित	क्रिया. १४८	जहण्णकाया	१२८	जिस्से	यस्यां २४९
जणक	स्थानविशेष १३८	जहण्णाणि	५७-९४	जिह्ममूलीय	१५३
जणक	कर्णआभू. १६२	जंगम	५८-१२१	जीवंजीवक	पक्षिन् ६२
जण्ण	यज्ञ १२१	जंगमाला	पुष्प ७०	जीवंतायणा	गोत्र १५०
जण्णकारि	यज्ञकारिन् १०१	जंधावाणियक	कर्माजीविन् ७९	जीवितहार	१४४-१४५
जण्णजण	जन्यजन ९८	जंतुतर	अङ्ग ८३	जुगमत्थ	युगमस्तक ११५
जण्णमुंड	यज्ञमुण्ड १०१	जंषितविभासापडलं	४८	जुग्ग	वाहन १६६-१९३
जण्णुकाणि	अङ्ग १२४	जंषिताणि सत्तेव	४७	जुण्णवय	जीर्णवयः १००
जण्णुगसंधी	अङ्ग ११४	जंबुफल	फल ६४	जुत्ताघ	१६३
जण्णेया	५८-१२३	जंबुफलक	भाण्ड ६५	जुत्ताघमिह	युक्ताघ्ये १६
जण्णोपइतक	यज्ञोपवीतक १०१	जंबुका	आभू. ७१	जुत्तप्पमाणदीहाणि	११५-१२८
जतुकार	कर्माजीविन् १६०	जंभाइत	जृम्पायित ४७	जुत्तसंपीलित	युक्तसम्पीडित २२
जतुमज्झ	अङ्ग ७७	जंभाइयाणि सत्त	११	जुत्तामासाय	९३
जतूणि	अङ्ग ६०	जंभायमाण	१३५	जुत्तोपचया	५८-११४
जत्ताज्झायो	१९९	जंभित	क्रिया. १४८-१६८-१८४	जुत्तोवचयाणि	५८-११४-१२८
जतूणि	अङ्ग ९५-१०१-११५-१२१	जंभितविभासा पडलं	४७	जुवतीयो	१२५
जधजुत्त	यथायुक्त ४४	जागी	पुष्प ७०	जुवतेयाणि	५९-१२८
जधण्णकाया	११७	जागू	यवागू ७१-२४७	जुंगलिका	त्रीन्द्रियजन्तु २६७
जधण्णतरका	१२८	जाचितक	याचितक १६५	जूतगिह	द्युतगृह १३६
जधण्णतरका काया	११७	जाणक	यानक २६	जूतसालाय	द्युतशालायाम् १३८

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
जूधिका	पुष्प ७०-१०४	ठियपडल	३३	णत्तमाल	वृक्ष ६३
जूव	यूष १०१-१४८	ठियपत्थिय	१०	णत्ति	नप्तृ ६८
जूस	६४	ठियविहि	९	णत्थक	दे० नस्तक २०२
ज्जेव	एव १४६	ठियंतिय	१८	णत्थण	दे० नस्तन २१४
जोइसमंडल	ज्योतिर्मण्डल ११५	ठियामट्टा	१२०	णत्थि-त्थी	नास्ति १९
जोगक्खेम	योगक्षेम १३४	ठियामासा	५९-१०४-१०५-१२८	णदीकुक्कुडीक	पक्षी २२५
जोगवहा	योगवाहा: १५३	ड	लघु १८-१२८-१५३	णदीपूत्तक	दे० २२५-२२८
जोजयितव्वं	योजयितव्यम् १८५	डआलुअ	नौविशेष १४६	णदीसुत्तक	दे० २२५
जोणिका	यौनदेशजा ६८	डहरक	लघु १८-१२८-१५३	णपुंसकजोणि	१३९
जोणिवालिक ?	१४२	डहरचल	१२९-२०४	णपुंसकणक्खत्त	२०९
जोणी अज्झाय	१३८-१४०	डहराक	लघु ११९	णपुंसकाणि	५७-७२
जोणीलक्खण वागरण	१४०-१४४	डहंत	दहत् ३८	णपुंसकामास	१६८-२०१
जोतिसिक	गोत्र १५०	डिप्पर	आसनविशेष १७-२६-६५	णप्फडित	निस्फटित २१७
जोयिज्जमाण	योज्यमान १९८	डुपकहारक	नौविशेष ७९	णमोक्कत	नमस्कृत १५५
जोव्वणत्थजोणि	१३९	डोभा	गोत्र १५०	णमोक्कारयित्ता	नमस्कृत्य ११२
जोव्वणत्थमज्झिमवयसाधारणाणि	५७	डोहला	गोत्र १५०	णयणातिमास	१८६
जोव्वणत्थाणि	५७-९७-१२८	ढ		णयणामास	१३०
जोसिता	युवती ६८	ढंकराली	पक्षी २३९	णरमच्छ	मत्स्यजाति २२८
झ		ढेल्लिका	नितम्बौ ११४	णरसीह	पशु २२७
झणित	ध्वनित १४७	ढेल्लिय	मृत्खण्ड २१५	णरेतर	७३
झपित	क्षपित १४३	ण		णल	वृक्ष ६३
झय	ध्वज १४२	णइक्कुडिका	पक्षी २३८	णल	मत्स्यजाति २२८
झयक्खंभ	ध्वजस्तम्भ ३०	णकूड	स्थानविशेष १३६	णलियमालिका	आभू ७१
झल्लरीमंडल	११६	णक्खत्तमंडल	११५	णवखुत्तो	नवकृत्वः १८४
झंकक	आभू ६४	णक्खत्तविजयो अज्झायो	२०६-२०९	णवण	उत्सव ९८
झंझणित	क्रिया १४७	णक्खपद	नखपद १८५	णवणीत	भोज्य २२०
झामित	ध्यामित १४८	णक्खंतरातिमास	१८६	णवमल्लिका	पुष्प ७०
झामितापस्सअ	२७-३०	णगति	गोत्र १५०	णवमिगा	देवता २०५
झीण	क्रिया ८१-१४८	णगरगुत्तिय	कर्माजीविन् १६०	णंतकविकला	नंतकविकला १९६
झुझुरयित	क्रिया १४८	णगरणक्खत्त	२०९	णंतुका	पक्षिणी ६९
झुषित	क्रिया १४८	णगरदेवता	देवता २०६	णंदिविणद्धक	शीर्षआभू १६२-१८३
झुसिर	शुषिर १००	णगरक्ख	कर्माजीविन् १६०	णवुतिवग्गा	५९
झोसित	क्रिया १४८	णगरविजयज्झाअ	१६१	णवूहक	पक्षी २२५
ट		णगराधियक्ख	नगराध्यक्ष १५९	णहसिहा	अङ्ग १२४
टकारी	वृक्षजाति ७०	णगोध	वृक्ष ६३	णहसेडि	नखश्रेणि १२५
टेट्टिवालक	पक्षी २२५	णच्छक	रोग २०३	णाग	परिसर्पजाति ६२
ठ		णट्टोसक	नाट्याचार्य ? ६७	णागतण्णु	अनागतज्ञ १२९
ठइय	स्थगित २४१	णट्टु	नष्ट १४८	णागमालक	गुल्मजाति ६३
ठवेतूण	स्थापयित्वा १९७	णट्टुकोसयो अज्झातो	२२२	णागरुक्ख	वृक्ष ६३
ठणज्झाय	१५९	णट्टुजोणि	१३९	णागवेला	२४७
ठितविधिविसेस	५९	णट्टाणट्टो अज्झायो	२१७	णाणी	७६
ठितसाधारण	१३९	णडिकुक्कुडिका	पक्षिणी ६९	णातिकिसा	५८-११४
ठितामास	२१	णतिभया	८	णापुण्णमंडल	११६
ठिदामास	२४			णाभिणिदिसे	न अभिनिर्दिशेत् ३८

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
गामज्झाय	१५८	गिकखुस्सति ?	क्रिया. १०८	गिण्णेत ?	क्रिया. १९८
गायकाणि	५९-१२६-१२८	गिकखेवउपावण	क्रिया. २१७	गितण्णिका	पुष्प ७०
गाराय	नायच ११५	गिगमणी	निर्गमनी ७	गितरिगि	आभू. ७१
गारास ?	२१४	गिगमाणं	निगमाज्ञाम् २५८	गित्थणित	निस्तनित १७१
गारिए	नार्याः २९	गिगमजोणि	१३९	गित्थुद्ध ?	क्रिया. १७१
गालक	भाण्ड ६५	गिगमा एकारस	११	गिदिज्जति	नदीयते-लूयते २४३
गालिक	फल २३९	गिगयविधि	९-१०	गिहीण	निर्दीर्ण ? १७१
गालिकेर	वृक्ष-फले ६३-६४	गिगयविभासापडल	४६	गिधाणो अज्झायो	२१४
गालिमज्झाणि	अङ्ग ७७	गिगिगण निर्गीर्ण	१०७-१३३-१७६	गिधीसुत्त	२६२
गावा	नौ १६६	गिघुटक ?	१५१	गिद्धिणिद्धतराणि	१२८
गावाखंभ	नौस्तम्भ २७-३०	गिच्चकित	निश्चित २५३	गिद्धिणिद्धा	५८
गावाधिगत	कर्माजीविन् १६०	गिच्चसो	नित्यशः १५८	गिद्धम	निर्धम ३२-३३
गावाधियकख	नावाध्यक्ष १५९	गिच्छालित	क्रिया. १६८	गिद्धमण	निर्द्धमन १३६
गाविक	कर्माजीविन् ७९	गिच्छुद्ध	निक्षिप्त १६८-१७१	गिद्धलुक्ख वर्ण	५८-१०५-१२८-१८६
गाविकम्म	कर्माजीविन् ८९	गिच्छेव	निक्षेप-पर्यन्त २३५	गिद्धलुक्खवण्णपडिभागा	५८
गासपुडा	अङ्ग ९३	गिच्छोडण	निश्छोटन १०६	गिद्धलूहाणि	१०७
गासातिमास	१८६	गिच्छोलित	निस्तक्षित १६८-१७१	गिद्धवण्णपडिभागा	५८
गासाय पुत्तक	अङ्ग ७६	गिज्जामक	निर्यामक ७९	गिद्धा	५८
गिकडि	निकृति २६५	गिज्जायतो	निर्यान् १९८	गिद्धाडित	निर्धाडित १६८-१७१
गिकड्ढति	निकर्षति ८०-१०८	गिज्जासगत	निर्यासगत १७७	गिद्धाणि	उम्पड्डाणि ११३
गिकाणित	क्रिया. १८५	गिज्झाय	निर्ध्यात ३४	गिद्धाभास	१३०-१३३
गिकुज्ज	क्रिया. १८४	गिड्डिता	सुरा २२१	गिद्धावति	निर्धावति ८०
गिकुज्जक	निकुज्जक ४५	गिड्डिअभासअ	निष्ठितभाषक ४	गिद्धोत	निर्धौत १०६
गिकुज्जित	निकुज्जित १६९-१७१	गिड्डुत	निष्ठित १४८-१७१	गिप्पतित	निष्पतित १६९
गिकुंचिमडि ?	३७	गिड्डुद्ध	निष्ठित १४८-१७१	गिप्फाडित	निष्फाडित १६९
गिकुंजण	निकुञ्ज १३०	गिड्डुभमाण	निष्ठित १४६	गिप्फाव	निष्पाव धान्य १६४
गिकूड	निष्कूट १३६	गिड्डुभंत	निष्ठित ३७-१३५	गिप्फावित ?	क्रिया. १७१
गिकूजित	क्रिया. १५७	गिड्डुभित	निष्ठित १८३	गिप्फोलित ?	क्रिया. १६८
गिक्कट्टित	निष्कृष्ट १९८	गिड्डुधति	निष्ठित ८०	गिप्फेडित	निस्फेडित १७१
गिक्कट्टित	निष्कृष्ट १६८-१७१	गिड्डुल	निष्ठित २०८	गिन्मामित	निर्गामित १०६
गिक्काणित	निकाणित १८३	गिड्डालपस्साणि	ललाटपाश्वे ११७	गिमित्तसंग्रह	निमित्तसङ्ग्रह १
गिक्कुडरच्छासु	२१४	गिड्डालमासक	आभू. ६४	गिमित्तहियय	निमित्तहृदय १२९
गिक्कूड	निष्कूट-स्थान १३७	गिड्डील ?	१६९	गिमिल्लहसित	निमीलहसित ३५
गिक्ख	निष्क १५२	गिणदित	निनादित ४६	गिमिल्लंत	निमीलत् ३७
गिक्खणंत	निखनत् ३८-१४४	गिण्णगंभीर	१२४	गिम्मज्जित	निर्माजित १३०-१५७-
गिक्खणंती	निखनती १६९	गिण्णजोणि	निम्नयोनि १४०		१६८-१७१-१८४-२१५
गिक्खण्ण	निखात १७१	गिण्णयण	निर्णयन १९८	गिम्मट्ट	निर्मृष्ट २१
गिक्खिण्ण	निखिन्न ८०-१०८	गिण्णाणि	५८-१२३-१२९	गिय ?	९८
गिक्खित	निक्षिप्त १४८	गिण्णामित	निर्णामित १६८	गियक्खेति	पश्यति १०७
गिक्खित	निक्षिप्त १६८	गिण्णिज्जमाण	निर्णीयमान १९६	गिस्तथाकाइं	५९
गिक्खिप्पमाण	निक्षिप्पमाण १९८	गिण्णीत	१७१	गिस्तथाणंतराणि	१२९
गिक्खुड	निष्कृत १४९			गिस्त्ये	१२६
				गिराकत	निराकृत १६९

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
गिरागति	गोत्र १५०	गिरागति	पर्वत ७८	गीहाराहारजोणि	१४०
गिरागत	निरानत १६९	गिरागति	निषण्ण ३८	गीहाराहारा	५८-१०८-१२८
गिरातर ?	८२	गिरागति	निषिक्त १६८	गीहारि	३४
निरुक्खगं	निर्वृक्षकं १९१	गिरागति	निषीदत् ३८	गीहारिपेक्खमाण	३४
गिरुत्त	निरुक्त २	गिरागति	पातित १९७	गीहारेति	क्रिया. १०८
गिरोपजिब्बा	निरुपजीब्बा १६९	गिरागति	निःसृष्ट, अत्यन्त ४४	गीहू	वृक्षजाति ७०
गिलिक्खति	निलिखति १०७	गिरागति	निःसृत १६९-१७१	शुतमालक	वनस्पति १४१
गिलुलित	क्रिया. १७१	गिरागति	निःश्वसत् १३५	पुमज्जु ?	३९
गिलुंचित	क्रिया. १६८	गिरागति	निःश्वसित १६८-१७१	पूण ?	१४८
गिलूचित	क्रिया. १६८	गिरागति	निःशिशङ्कति १०८	जेयातुकासहा ?	६८
गिल्लिखित	निलिखित १३०-१६८-२१५	गिरागति	निःशिक्षित १४६	जेरइकाणि	५९-१२५
गिल्लिक्खण	निलिखन १०६	गिरागति	क्रिया. १६८-१७१	जेरिता	गोत्र १५०
गिल्लिहित	निलिखित १५७	गिरागति	क्रिया. १७१	जेलकती	वर्णमृत्तिका २३३
गिल्लुवित	क्रिया. १७१	गिरागति	निश्चित १७१	जेलकंठक	९२
गिल्लूहित	नीरुक्षित १७६	गिरागति	निःशिक्षित ३७	जेलकित ?	१०४
गिल्लेले	निलाल्य ? १०८	गिरागति	निःशिक्षित १८६	जेलवंत	पर्वत ७८
गिल्लोलित	निलोलित १६८	गिरागति	निःशिक्षित १३५	जेहित	स्निग्ध १०६
गिवण्णविभासापडल	५३	गिरागति	निःश्रेणि ३१	जोल्लति	क्षिपति-नोदति ८०
गिवण्णाणि	१३८	गिरागति	वृक्ष ६३	ज्हाणगिह	स्नानगृह १३८
गिवसिहित	निवत्स्यति ८४	गिरागति	निर्घात ५	ज्हाणघर	स्नानगृह २२२
गिवासेत	निवासयत् ३८	गिरागति	द्वीन्द्रियजन्तु २६७	ज्हाणघरिय	कर्माजीविन् १६०
गिवुर	वृक्ष ६३	गिरागति	आभू. ६५-११६-१६३	ज्हाधिति	स्नास्यति ८४
गिवेदु	निविष्ट १४३	गिरागति	नीयमान १९८	ज्हायमाणो	स्नान ३८
गिवेसण	निवेशन १६५	गिरागति	५९-१२६-१२९	ज्हाविय	नापितकर्माजीविन् १६१
गिवोक्ष्ण	निमज्जयति ? १०८	गिरागति	निराकृते १७१	ज्हुसाय	स्तुषायाः २९
गिवोक्षित	निमज्जित ? १७१	गिरागति	वर्ण १०४	त	
गिव्वगत	२१४	गिरागति	२३३	तक्क	तक्र-भोज्य २२०
गिव्वट्टिज्जमाण	निर्वर्त्यमान १९८	गिरागति	गुल्मजाति ६३	तक्कुलि	भोज्य ७१-१७९
गिव्वट्टित	निर्वर्तित १७१	गिरागति	आभू. १६२	तक्कुली	पुष्प ७०
गिव्वदा ?	१५४	गिरागति	१०४	तक्कोदण	भोज्य २२०
गिव्वर ?	७९-१५५	गिरागति	नीलमृग २२७	तच्छेमाण	तक्षत् ३८
गिव्वलक	निर्वलक १०६	गिरागति	५७	तजगत	त्वग्गत १७७
गिव्वहण	निर्वहन ९८	गिरागति	नीलवाणिजक ९२	तज्जातपडिपोग्गल	१४२
गिव्वडित	निष्पातित १६८	गिरागति	९२	तज्जायपडिरूव	१८-३१
गिव्वधिक	निर्व्याधिक १९१	गिरागति	९२	तट्टक	भाण्ड ६५
गिव्वामण	निर्वापन २६०	गिरागति	कर्माजीविन् ९२	तट्टकार	कर्माजीविन् १६०
गिव्वामित	निर्वामित १६९	गिरागति	निःसरति १०८	तड	तट ३०
गिव्वसित	निर्वसित १७१	गिरागति	५८-१०७-१२८	तणच्छत् ?	५२
गिव्वहित	निर्वाहित १५५	गिरागति	१६१	तणपीठक	तृणपीठक २६
गिव्विट्ठ	निर्विट्ठ १७१	गिरागति	१४०	तणशाला	तृणशाला २५८
गिव्विसुतो अज्झायो	२१५-२१६	गिरागति	५८-१०८-१२८	तणसोल्लिका	मल्लिकाविशेष १०४
गिव्वुति	निर्वृति ३०	गिरागति	१०८	तणसोल्लिय	पुष्प ६३
गिसक	भाण्ड ७२	गिरागति		तणहासक	त्रीन्द्रियजन्तु २६७

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
तर्णाधिगत	कर्माजीविन् १६०	तस्सायत	त्र्यस्रायत ११६	तिमिरक	गुल्मजाति ६३
तणित	तत १४७	तंडित	क्रिया. १४८	तिर्मिगिल	मत्स्यजाति ६२
तणुणह	तनुनख ११७	तंत ?	१५	तिमी	मत्स्यजाति ६२
तणुत्तय	तनुत्वक् ११७	तंतुवित	तन्तुव्यूतं १९०	तिय	त्रिक २१६
तणुमज्झ	तनुमध्य ११७	तंदेसि	तदेशे २३८	तिरिक्खजोणिका	५९
तणुलोम	तनुलोमन् ११७	तंबनिष्काव	धान्य २२०	तिरिक्खजोणीकाणूक	१७४
तणू	५८-१२८	तंबभूमो	मृत्तिका २३३	तिरिच्छजोणिया	१२५
तण्णक	तर्णक ९७-१४२	तंबमय	आभू. १६२	तिरिच्छाण	तिरिच्छीन ५२
तण्णिका	तर्णिका ६८	तंबाणि	५९-१२५-१२८	तिरिच्छीण	तिरिच्छीन १४
तण्हाइत	तृषित २५३	तंबाधावक	कर्माजीविन् ७९	तिरिण ?	क्रिया. १४७
तताणि	५९-१२५	तंबाराग	लेह्य-भोज्य १८२	तिरियामास	१३१-१६९
ततियलोकहितय	१२९	तंसा	५८	तिरीड	शीर्षआभू. ६४
तध	तथा २९	ताडक	पशु २२७	तिलक	ललाटआभू. ६४-१८३
तन्निभोवनिभा	१०	तामरस	पुष्प ६३	तिलक	वृक्ष ६३
तपनीयतिलक	तिलकप्रकार २४६	तालाखंड	व्यजनकविशेष ? २०५	तिलकालक	रोग १५५-२०३
तपुमय	आभू. १६२	तालवेट	तालवृन्त १४६	तिलकखली	तिलखली १८२
तपुस	त्रीन्द्रियजन्तु २६७	तालवोट	तालवृन्त १९८	तिलतेल्ल	२३२
तपुसेल्लालुक	फल ६४	तालुका	अङ्ग ६६	तिलपिंडी	भोज्य ७१
तप्पक	तप्रक-जलवाहन १६६	तासित	त्रासित १४८	तिलभज्जिय	भोज्य १८२
तप्पण	तर्पण १०६	तिउण	त्रिगुण १४४	तिलवेल्लववाका ?	१९५
तप्पणपिंडी	तर्पणपिंडी ७१	तिकाणि	५९-१२३	तिल	धान्य १६४
तप्पणा	भाण्ड उपकरण १९१	तिकुज्ज	१५५	तिलेमाण ?	क्रिया. १६९
तप्पणा	भोज्य १८२	तिक्खक	गोत्र १५०	तिवेद	गोत्र १५०
तयागत	त्वग्गत १७७	तिक्खलोह	धातु २५९	तिह	त्र्यह २६१
तयो	ततः ३४	तिक्खा	५८-१२२	तिगिच्छिण	आभू. ६५
तरच्छ	तरक्ष ६२	तिक्खामास	१८८-२०२	तिंदुक	फल ६४
तरप्पअट्ट	कर्माजीविन् १६०	तिक्खिण	तीक्ष्ण १९०	तिंबुरुकी	वृक्षजाति ७०
तरवच्च	तस्वारी ११५	तिगिच्छसरिस	वर्ण ९०	तीतवय	अतीतवयाः १००
तलकण्णक	आभू. ११६	तिगिच्छा	पुष्प ७०	तीता-उणागय-संपदा	
तलकोड	गुल्मजाति ६३	तिज्जज्जोणिगताणि	६२-१२९	अतीता-उनागत-साम्प्रतात्	१०
तलगिह	तलगृह १३६-१३८	तिज्जंभाग	तिर्यग्भाग २११	तीतिणि	फल २३८
तलतालघोस	ध्वनि १७३	तिज्जाणत	तिर्यगानत १५५	तीलक	उद्भिज्ज २२९
तलपक्क	फल ६४-२३९	तिण्णयाम	तीर्णयाम २४९	तीस	१२७
तलपत्तक कर्णआभू.	६४-११६-१६२-१८३	तिण्णि	१२६	तीसतिवग्गा	५९
तलभ	कर्ण आभू. ६५-११६	तिण्हा	१२९	तीसालिका	पुष्प ७०
तलवरी	कर्माजीविनी ६८	तित्तिल	परिसर्पजाति ६३	तुच्छाणि	५८-१२४-१२९
तला	कृमिजाति ७०	तित्थपाल	तीर्थपाल-कर्माजीविन् १६०	तुच्छामास	१३०-१६८
तलिय	शयन ६५	तित्थवापत	तीर्थव्यापृत-कर्माजीविन् १६०	तुच्छित्त	क्रिया. १४८
तलुसी	पुष्प ७०	तिद ?	१४२	तुडियाण	बाहुआभू. १६३
तवि	भाण्ड ७२	तिधिणी	देवता ६९	तुत्ताणा	उत्ताना १८४
तवुसी	त्रपुषी-कर्कटिका ७०	तिपिसाचक	कण्ठआभू. १६२	तुरित	त्वरित ४१
तस्स	त्र्यस्र १२६	तिमितिर्मिगिल	मत्स्यजाति २२८	तुरुक्कतेल्ल	२३२

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
तुल्यगघ	तुल्याध्य १६	थावरा	४६-१२८	दढामास	१३०-१३३-१८८
तुल्यजोणी	१९४	धिगलगत	स्थिगलगत १८५	दणि ?	१९०
तुवरि	धान्य १७८	धितामास	२४-१९८	दण्णपाण ?	१५१
तुंबुरु	फल २३८	धिया स्त्रिया: २५-३४-३६-४७-१२५	दति	दति-जलवाहन	१६६
तूका	यूका ७०	धिल्लो	यान ७२	ददरक	वाद्य २३०
तूण	रोग २०३	धीणक्खत्त	२०९	ददुपिलक	रोग १५५
तूण	ऊन २०७	धीणव	गोत्र १५०	ददुम्पण	क्रिया. १४७
तूरिस्थ	त्वरिप्पसि २६०	धीणामजोणि	१३९	दधिकूर	भोज्य ६४
तूहा	ऊहा ५६	धीणामाणि	५७-६६-७२	दधिताव	भोज्य ६४-१७९-२२०-२४६
तेणित	स्तेनित १४८	धीणा[मा]मास	१८७	दधिवण्ण	वृक्ष ६३
तेतेण	एतेन २३६	धीपरामास	१३१	दधिसर	दधिसत्कपदार्थ १०४
तेत्तिरिक	गोत्र १५०	धीभागा	५९-१२८	दपकार	कर्माजीविन् १६०
तेमग्गिह ?	२५८	धीय	स्त्रिया: २४	दरकडाय	ईषत्कृत्याम् १३०
तेरुणि	वृक्षजाति ७०	थुल्ला	११३	दल्लयते	विकसति ८३
तेलवण्णिकरस	२३२	थूणा	स्कन्ध	दलिय	दलिक ८०
तेल्लकूर	भोज्य ६४	थूणिकाखल	२२०	दलुका	प्राणी २३९
तेल्लजवागू	भोज्य १८१	थूणिकारस	२२१	दल्लभी ?	६८
तेवरूक	त्रौन्दियजन्तु २६७	थूभाग	स्तूप १७८	दविउलंक	भाण्ड १९३
तेसं	तेषाम् ९५	थूरका	अङ्ग ६६	दविय	द्रव्य १३४
तेसं तेसं	तेषां तेषाम् १४७	थूलाणि	५८-११७-१२८	दव्वी	दर्वी-भाण्ड ७२
तोडण	फल २३८	थेव्विद्ध ?	क्रिया. १४८	दव्वीकर	सर्पविशेष २१८-२२७-२३९
तोडु	क्षुद्रजन्तु २३७			दसखुत्तो	दशकृत्वः १८४
तोडुक	पशु ? २२७	दककिमि	द्वौन्दियजन्तु २६७	दसमीण्हाणक	दशमीस्नानक ९८
तोपभोगतो	उपभोगतः २६७	दक्खाणक	आभू. ६४	दसाह	दशाह १२७
तोप्पारुभणा	उत्सव ? ९८	दक्खिणगत्तामास	२०९	दसीरिका	भोज्य १८२
तोमर	११५	दक्खिणजोणि	१३९	दस्सामो	द्रक्ष्यामः २३६
तोरण	६४	दक्खिणदारिक	२०६	दहफलहा	द्रहपरिखा २२२
तेवं	इत्येवम् ६७	दक्खिणपच्चत्थिमा	५८	दहरचलणा	५८
	थ	दक्खिणपच्छिमजोणि	१३९	दहरचला	११९
थइआ	नकुलिका प्रकार २२१	दक्खिणपुरत्थिमा	५८	दहरत्थावर	११९
थक्कैत	श्राम्यत् ३८	दक्खिणाचार	७४	दहरथावरेज्जा	५८
थणपाली	स्तनपाली ६६-२०४	दक्खिणाणि	५७-१०९-१२८	दंडमाणव	पक्षी ६२
थणंत	स्तनत् ३६	दक्खिणामास	१४५-१६८	दंतखय	दन्तक्षत १८५
थणित	स्तनित २०६	दक्खिणोद्दगं णगरं	१६१	दंतगिह	दन्तगृह १३६
थलचर	१८७	दग	१२१	दंतगूधक	दन्तगूथ-दन्तमल १७८
थला	५८-१२३-१२८	दगकोट्टुग	दककोष्ठक १३८	दंतचुण्ण	दन्तचूर्ण १०४
थलिका	स्थलिका ३०	दगलट्टी	दकयष्टि ३०	दंतपज्ज	अङ्ग १५५
थविका	अङ्ग ११५	दगवडुगि	दकवर्द्धकिन् २५५	दंतपवण	दन्तपवन ५
थंभायणा	गोत्र १५०	दच्छ	दक्षः ९८	दंतमय	आभू. १६२
थंभित	स्तब्ध १४८	दढका	गोत्र १५०	दंतमय	भाण्ड २१५-२२१
थाल	भाण्ड ६५	दढचल	१८६	दंतवेदी	दन्तवेष्टि ६६
थालक	भाण्ड ६५	दढहुत ?	१५५	दंतसिहा	अङ्ग १२५
थालिका	भाण्ड ७२	दढाणि	५७-७७-१२८	दंतसेढिका	दन्तश्रेणि १२४
थाली	भाण्ड ७२				

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
दंततरातिमास	१८६	दीणामास	१६८	देवणक्खत्त	२०९
दंसणट्टयाय	दर्शनार्थतया १३०	दीणारमासक	सिक्कक ६६	देवताययणमत्तिका	मृत्तिका २३३
दंसणियाणि	५८-१२३-१२८	दीणारी	सिक्कक ७२	देवताविजयो अज्झायो	२०४-२०६
दायते	क्रिया. ८३	दिणोदत्त	४२-४९-१४०	देवदूता	देवता २०४
दारकण्णय	द्वारकर्णक १९५	दीपिक	पशु २२७	देवयागे भुत्तं	देवयागभोजन १८०
दारपाल	कर्माजीविन् १६०	दीवरुक्ख	दीपवृक्ष-कल्पवृक्ष २७-३०	देवहच्चा	गोत्र १५०
दारपिण्ड	द्वारपिण्ड ३१	दीववेलिका	२४७	देवागार	२२२
दाराधिगत	कर्माजीविन् १६०	दीवालिकाणि	भोज्य १८२	देवाणूक	१७४
दारुकआधिकारिक	कर्माजीविन् १६०	दीविक	चतुष्पद ६२-७२	देसंसि	देशे ३७
दारुणा	५९-१२९	दीविकाधारक	कर्माजीविन् ९१	दोणी	भाण्ड ७२
दारुणामास	१८८	दीविकाहारिक	कर्माजीविन् ९१	दोहलो अज्झायो	१७०-१७२
दारुणे	१२४	दीहकील	सर्प २३९	ध	
दालित	दारित १४८	दीहजुत्ताणि	१२८	धकंठि	वृक्षजाति ७०
दालिम दाडिम फल	६३-६४-२३१-२३८	दीहपदा (ट्टा)	मत्स्यजाति २२८	धणजाय	गोत्र १५०
दालिमपूसिक	भाण्ड ६५	दीहवग्घ	क्षापद २२७	धणित	ध्वनित २३९
दालिय	दारित ८०	दीहसकुलिका	भोज्य १८२	धणित	दे० अत्यन्त ४-२३-२४
दासिघर	दासीगृह २२२	दीहाणि	११४-१२५	धणिता	प्रिया ६८
दाहिणाचार	७४	दीहाणुम्मज्जिताणि	१२८	धण्णक	चतुष्पद ६२
दाहिणामास	१३१	दुकुल	दुकूल वस्त्र १६३	धण्णजोणि	३२-१४०
दिअंडकंबलवायक	कर्माजीविन् १६१	दुकुंछ	जुगुप्सा १२२	धण्णजोणी अज्झाय	१६५
दिग्घगीव	२३९	दुगुल	दुकूल वस्त्र २३२	धण्णरस	१८१
दिग्घपाद	२३९	दुग्गट्टाणाणि	१२५-१२९	धण्णवा	धान्यवान् १०५
दिग्घा	५८-११५	दुग्गथाणा	५९	धण्णवाणिय	कर्माजीविन् १६०
दिजाती	गोत्र १०१-१४९	दुग्गंधपरामास	१८८	धमित	ध्मात् १४८
दिज्जिस्सति	दास्यति १७५	दुग्गंधा	५८-१२२-१२९	धम्मक	पादआभू १८३
दिट्ठिवाय	दृष्टिवाद १	दुग्गंधामास	२०१	धम्मजोणी	५३-१३८
दित्तिका	दित्तिका २३०	दुद्धकूर	भोज्य ६४	धम्मट्ठ	कर्माजीविन् १६०
दिमिलि	द्रविडदेशजा ६८	दुद्धजवागू	भोज्य १८१	धम्मण	फल ६४
दिरुल ?	२३८	दुद्धवेलिका	२४७	धम्मणग	सर्प २३८
दिवड्डुखेत्ताणि	द्व्यर्द्धक्षेत्राणि २०७	दुद्धुण्हका	दुग्धोष्णिका भोज्य ७१-२४६	धम्मण्ण	वृक्ष ६३
दिक्खा	५९-१२५-१२८	दुभस्स	द्विभाष्य-द्विवचनम् १५१	धम्मसच्च	धर्मसत्य ९
दिसाजं	दिशि ३२	दुम्भणेज्जो	दुर्मनस्कः ४३	धम्मिक	धार्मिक ४
दिसादाह	दिग्दाह २०६	दुरुम्मट्ठ	दुरुन्मृष्ट २२	धम्मी	पुष्प ७०
दिसावाणियग	कर्माजीविन् ७९	दुवारसालाय	द्वारशालायाम् १३६-१३७	धव	वृक्ष ६३
दिसाहुत्त	दिग्गभिमुख १४	दुवेद	गोत्र १५०	धवलपड	१०४
दिस्स	दृष्ट्वा २४९	दुस्सिक	कर्माजीविन् १६०	धवासी	वृक्षजाति ७०
दिहि	धृति ६	दूभग	दुर्भग ७९	धविका	नकुलिका विशेष १६५-१७८
दीणउल्लोगित	दीनोल्लोकित ३४	दूरम्मट्ठ	१११	धंत	ध्मात् १६८
दीणगा	१२१	दूरातिसरित	क्रिया. ८७	धंसित	ध्वंसित १४८-१९७
दीणता	१३५	दूरोगाढ	दूरावगाढ ८७	धातक	धातक-सुभिक्ष १३५-१४२
दीणपडिपोगल	१४३	देवजोणि	६२	धातीकुमार ?	१६८
दीणा	५८-१२९-१४०	देवड	कर्माजीविन् १६०	धातुजोणी	३२-४९-१३२-१४०

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र		
धातुजोणीसमुत्थाण	२७	पडण्ण	वस्त्र	७१	पच्छिमदारिक	२०६	
धातुमय	आभू	१६२	पठमकेसरवण	९०	पच्छिमाणि	१०९-१२८	
धावित	धौत	१४८	पडली	प्रतोली	१३७	पच्छिमुत्तरजोणि	१३९
धिवलागत ?		४१	पएणि	वस्त्र	७१	पच्छिमुत्तरा	१२८
धीतर	दुहितृ	२१९	पकंठा		२२२	पच्छेलित	प्रसेष्टित १४६-१७०-१८४
धीतरी	दुहितृ	२१९	पकिण्ण	प्रकीर्ण	१६९-१७१	पच्छोलित	प्रच्छोटित १६८
धीता	दुहितृ	६०	पकुट्ट	प्रकुष्ट	२१५	पजाणवं	प्रज्ञानवान् ४८
धीया	दुहितृ	२१९	पकासय	पक्वाशय	२०३	पजातिस्सति	प्रजनिष्यते १७०
धुत	क्रिया.	१४८	पक्खच्छयक	पक्षच्छदक	८१	पजायिस्सति	प्रजनिष्यते १६९
धूतु	दुहितृ	५१	पक्खपेड	पक्षपिण्ड	११७	पजोजयिस्सं	प्रयोजयिष्यन्मि ११२
धूतुल्लिक	भाण्ड	७२	पक्खपेडकत	पक्षपिण्डकृत	१३५	पज्जजनु	अङ्ग १५५
धूपगत	दोहदप्रकार	१७२	पक्खवेढाय	पक्षवेष्टया	४२	पज्जणी	वर्णमृत्तिका २३३
धूमणत्त	भाण्ड	२३०	पक्खात	प्रख्यात	१८५	पज्जायवायग	पर्यायवाचक २५
धूमणाली	धूपनलिका	२५४	पक्खापक्ख	नपुंसकविशेष	७३-२२४	पज्जया	प्रायिका ६८
धेताणि	हेयानि	३२	पक्खजोणिय		६२	पज्जुवासंतो	पर्युपासयन् १९७
धोतक ?	धौतक	१०४	पखरगत	प्रक्षरगत	२३०	पज्जोवत्त	पर्यपवर्त्त २४७
धोवमाण	धावयत्	३८	पगति	प्रकृति	१७३	पट्ट	वस्त्र १६३
	न		पगलेंत	प्रगलत्	३८	पट्टकार	कर्माजीविन् १६०
नत्तिका	नर्त्तिका	६८	पग्गाहक	प्रग्गाहक	७९	पट्टिक	वस्त्र १६४
नन्नत अक्खरे		१५३	पघंस	दोहदप्रकार	१७२	पट्टकव्व	पाठ्यकाव्य १४७
नलिणी	वनस्पति	७०	पघंसंत	प्रघर्षत्	३९	पट्टिवंस	पृष्ठिवंश २१४
नहट्टिका	अङ्ग	१५	पघातण	प्रघातन	१४८	पड	वस्त्र ६४
नानिका	मातुर्माता	६८	पचच्चण	प्रचर्चन	१४७	पडमट्ट	भोज्य ७१
नामपगगह	नामप्रग्रह	१५१	पचलाइयाणि सत्त		११	पडल	पटल २७
नामिस्सरा	नामिस्वरः	१५३	पचलायणा	प्रचलायनात्	४४	पडाका	पताका १४२
नारीय	नार्याः	१७	पच्चउदग्गीय	प्रत्युदग्रीय	१६८	पडालिका	भाण्ड ७२
नाविक	कर्माजीविन्	१६०	पच्चत्थरण	वस्त्र	१६४	पडिउज्जमाण	प्रतियुज्यमान १९६
निच्छोमे	निःक्षोभ ?	१६८	पच्चत्थिमा		५८	पडिओधुत	प्रत्यवधूत १६९
निमित्त		१-२	पच्चवदाण	प्रत्यवदान	१४७	पडिकम्मगिह	प्रतिकर्मगृह १३६-१३८
निमिस्त्रिय	निमीलित	२०६	पच्चवर	दे० श्रेष्ठ १७-१९-९५		पडिकम्मघर	प्रतिकर्मगृह २२२
निम्मट्टा		८७	पच्चवरजोणि		१३९	पडिकुंडित	प्रतिकुञ्चित १५४
निरागत	क्रिया.	२०२	पच्चंतपाल	प्रत्यन्तपाल	८९-१५९	पडिच्छित्त	प्रतीक्षित १६८-१७०
निम्नक्खित	निर्लक्षित	१७१	पच्चंतवसति	प्रत्यन्तवसति	८९	पडिच्छुद्ध	प्रतिक्षिप्त १६९-१७१
निव्विगंदि	निर्विगन्धि	१६१	पच्चंतिम	प्रत्यन्तिम	१६२	पडिणामित	प्रतिनामित १७१
नीयम्मुख	नीचैर्मुख	१४३	पच्चंवरकाया		१४९	पडिणायित	प्रतिनायित १६९
नेमित्तमुपधारणापडलं		१३	पच्चालंबिज्जमाण	प्रत्यालम्ब्यमान	१९८	पडिणिवेसा	प्रतिनिवेशात् ४८
	प		पच्चालंबित	प्रत्यालम्बित	१९८	पडित	पतित ४४-१६९
पइट्टियायं	प्रतिष्ठितायाम्	१९	पच्चाहरणक	प्रत्याहरणक	९७	पडितविभासा	अज्ज्ञाय ४५
पइभाणव	प्रतिभावत्	४	पच्चोदार	प्रत्यवहार	९	पडिदिण्ण	प्रतिदत्त १६९-१७१
पइम्ह	पत्यौ	१६	पच्छत्त	प्रच्छद	६४	पडिपिक्खया	प्रतिप्रेक्षेत १५
पइरिक्क	प्रतिरिक्त-शून्य	११९	पच्छादित	प्रच्छादित	१४८	पडिपेक्खज्ज	प्रतिप्रेक्षेत १४
पइलाइय	प्रचलायित	९-१०	पच्छिमजोणि		१३९	पडिपोगल	प्रतिपुद्गल १४०-१४४
			पच्छिमदक्खिणा		१२८		

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
पडिबुद्ध	प्रतिबुद्ध १७१	पण्णाधिग	प्रज्ञाधिक ५७	पद्यतिलक	तिलकप्रकार २४६
पडिमविधि	९-१०	पण्णाधिक	गोत्र १५०	पद्रव	प्रदेशविशेष १६७
पडिमुंडित	प्रतिमुण्डित १७१	पण्णासपण्णत्तरिवस्ससाधारणाणि	५७	पधकलीतेल्ल	२३२
पडियाणि अट्ट	११	पण्णिक	कर्माजीविन् १६०	पधवावत	पथव्यापृत १५९
पडिलोलित	प्रतिलोलित १६९-१७१	पण्णेलिका	प्रणालिका ? ११६	पधावति	प्रधावति ८०
पडिवज्झक	उत्सव ९८	पण्ह	पाण्डु २१८	पधिकणिलय	पधिकनिलय २५८
पडिविक्खिज्ज	प्रतिप्रेक्षेत १३	पतज्जणट्ट ?	४५	पधित	प्रहित १९१
पडिवेसधर	प्रतिवेशमगृह २२०	पतिआरक्ख	प्रत्यारक्ष १५९	पधोवंत	प्रधावयत् ३९
पडिसराखारमणी	कण्ठआभू १६३	पतिगिण्हंती	प्रतिगृण्हती १६९	पपुट्ट	प्रपुष्ट प्रपृष्ट प्रस्पृष्ट १३०
पडिसरित	प्रतिसृत १६९-१७१	पतिग्गह	पतिग्रह १६८	पपुत	प्रप्लुत १५५
पडिसामिज्जमाण ?	१९८	पतिजेट्ट	प्रतिज्येष्ठ २१९	पप्पड	भोज्य १८२
पडिसायण	प्रतिशातन ११	पतिट्ठाण	प्रतिष्ठान ३१	पप्परूव	प्राप्यरूप १५३
पडिसिद्ध	प्रतिषिद्ध १६९-१७१	पतिहारक	कर्माजीविन् १६०	पप्फडित	प्रस्फटित १७१
पडिसेज्जक	शयन ६५	पतुज्ज	वस्त्र १६३	पप्फोडित	प्रस्फोटित १६९
पडिसेधित	प्रतिषेधित १४८	पते	पतेत् ४५	पब्भट्ट	प्रभ्रष्ट १६९-१७१
पडिहारक	प्रतिहारक ७९	पत्तकूर	भोज्य ६४	पमज्जितापमट्ट	प्रमार्जितापमृष्ट २३
पडिहारित	प्रतिहारित १६९-१७१	पत्तगत	दोहदप्रकार १७२	पमदायं	प्रमदायाम् २९
पडिहारी	प्रतिहारी ८८	पत्तभज्जित	भोज्य १८२	पमद्द	योग २०९
पढमकप्पिगो	प्रथमकल्पिकः ८२	पत्तभंड	भाण्ड ६५	पमिलात	प्रम्लान २०३
पढमिल्लक	प्रथमक २५९	पत्तमय	आभू १६२	पमुक्क	प्रमुक्त १६९
पणतालीस	पञ्चचत्वारिंशत् १२७	पत्तरस	१८१	पमुच्छित	प्रमूर्च्छित १६९-१७१
पणतालीसतिवग्गा	५९	पत्तहारक	त्रीन्द्रियजन्तु २६७	पमुट्ट	प्रमृष्ट १७१
पणतीस	१२७	पत्तंग	वर्णमृत्तिका २३३	पमुत्त ?	क्रिया. १३०
पणतीसतिवग्गा	५९	पत्तवेल्लि	भोज्य ७१	पमुहअ	प्रमुखक १६
पणत्तिणी	प्रनप्तृका ६८	पत्ति	भाण्ड ७२	पम्मुअ ?	क्रिया. २१५
पणवमज्झ	पणवमध्य २५७	पत्तुण्ण	वस्त्र १४२-१६३	पम्हुट्ट	प्रस्मृत १३०-१३९-१६९
पणस	वृक्ष ६३	पत्तुण्ण	भाण्ड २३०	पम्हुत	प्रस्मृत १७१
पणस	फल २३१	पत्तेकसो	प्रत्येकशः २१५	पयणु	प्रतनु ११७
पणसक	भाण्ड ६५	पत्तेगपुप्फ	१७७	पयलाइतविभासा	पडलं ४७
पणसक	नकुलिका प्रकार २२१	पत्थरिय	प्रस्तृत ११७	पयलाइताणि	४६-१२९
पणाली	प्रणाली ३२-३३-२२२	पत्थाइत्तु	प्रस्तार्य ७	पयलायमाण	प्रचलायमान ४४-१३५
पणितग्गिह	पणितगृह १३६-१३८	पत्थित	प्रस्थित १९१	पयलायंत	प्रचलायमान ३७
पणिवते	पणिवतेत् ५६	पत्थिवपडिमा	पार्थिवप्रतिमा १८३	पयादार	१४४-१४५
पणुवीसक	१२७	पत्थीणाई	५९-१२४-१२९	पयाविसुद्धी अज्झाय	१६८
पणुवीसतिवग्गा	५९	पत्थुत	प्रस्तृत ११६	पयुका	आभू. ७१
पणुवीसपण्णासवस्ससाधारणाणि	५७	पदक्कमणक	उत्सव ९७	पयुमक	उद्धिज्ज २२९
पणुवीसवस्सप्पमाणाणि	५७	पदग्गाह	पदग्राह १४४	पयुमरत्तक	वस्त्र १६४
पण्णत्तरिवस्सप्पमाणाणि	५७	पदबुद्धी	पदबुद्धि ८	पयोजयिस्सामि	प्रयोजयिष्यामि ८
पण्णत्तरिवस्ससतसाधारणाणि	५७	पदुम	पद्य ३९-६३	परक्का	५८-१२३-१२९
पण्णरस	१२७	पदुम	स्थल-जलचर २२७	परग्घ	१३०-१४४-१४६-१६८
पण्णरसवग्गा	५९	पदुमक	वर्ण १०५	परग्घतरक	परार्घ्यतरक १६
पण्णवोट्टल	दे० पर्णगठरिका ३०	पदे	पतेत् ४५	परग्घम्हि	परार्घ्ये १६
पण्णा	प्रज्ञा ९	पदोलि	प्रतोली २००	परणोल्लणा	परनोदना ४४

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
परत्तिका	वस्त्र ७१	परिलीढ	क्रिया. १३३-१७६-१८६	पल्लदेवया	पल्लदेवता २०५
परभुत	परभुत पक्षी २३८	परिवट्ट	परिविष्ट ? १८९	पल्लंक	शयन १५-२६-६५-२३०
परभुयसद्	परभुतशब्द २४४	परिवत्तते	परिवर्तते ८०	पल्लंकसिका	पल्लङ्कशिविका १६६
पर(रि)मत्थित	परिमथित २१५	परिवद्धित	परिवर्धित १६९	पल्लालु	फल २३८
परमतणू	११७	परिवंदितक	१७०	पल्लालुका	वृक्ष ७०
परमाणू	५८-११७-१२८	परिविट्ट	परिविष्ट १८०	पल्लहत्थिकायो	बावीसं ११-१८
परमासक	आभू ६५	परिविट्टिय	परिवेष्टित १८१	पल्लहत्थिगाविहि	९-१०
परमोधिजिण	परमावधिजिन १	परिविहल	परिविफल २००	पवण	प्लवन २५४
परम्हमावयिता ?	१९४	परिवृढ	परिवृढ ११४	पवर	गोत्र १५०
परंगेणक ?	९७	परिवेडित	परिवेष्टित २१६	पवरुत्तम	प्रवरोत्तम ३६
परंपरकिसाई	५८-११४-११८-१२८	परिसक्कतो	परिष्वक्कतः ३६	पवलित	प्रवलथत् ३८
परंपरतणू	५८-१२८	परिसकंत	परिष्वक्कत् ७७-१३५	पवस्सिस्स	प्रोषितस्य २९
पराघातसद्	१८८	परिसडित	परिशटित १६९	पवा	प्रपा १३८-१९१
परातक	परकीय २१४	परिसप्पक	बाल १७०	पवाणगत	प्रपानगत २२०
परामट्ट	परामृष्ट २६	परिसरणक	वस्त्र १६४	पवादित	क्रिया. १६८
परावत्त	परावृत्त १६९-१७१	परिसाडित	परिशटित १७१	पवायित	प्रवादित १७०
पराहुत्त	पराङ्मुख ३७	परिसाहसतो	परिष्वक्कः ४	पवालक	आभू १६२
पराहूत	पराभूत १०८	परिसुक्क	परिशुष्क १७१	पवालय	रत्न २१५
परिकस	परिकुश ११४	परिसोडित ?	क्रिया. १६९	पवासस्स अद्धाकालं अज्झायं	१९२
परिकेस	परिक्लेश ३८	परिसोववण्ण	देव २०५	पवासो अज्झायो	१९१-१९२-१९४
परिकखेतू	परिक्ष्य ११	परिहायिस्सति	परिहास्यति १६९	पविआत्त	प्रविजात २४९
परिकखेस	परिक्लेश १६२	परिहित	क्रिया. १६८	पवितल्लक	भोज्य १८२
परिखड	क्रिया. १७१	परिहेरक-ग	जङ्घाआभू ६५-११६-१६३	पविभज्जतु	प्रविभज्यताम् ४४
परिग्गहासत्त	१८	परोह	प्ररोह २०१	पविभागसो	प्रविभागशः १५
परिघुमति	परिघूर्णयति ८०	पलक	प्राणी २३७	पवियात	प्रविजात १९४
परिचेट्टति	परिचेष्टते ८०	पलाडोका	पक्षिणी ६९	पविसित	प्रोषित ? १६९
परिच्चकम्मंत	२४९	पलात	पलायित ६१-९८	पवुत्थजोणि	प्रोषितयोनि १३९
परिणिण्णगंभीरा	५८	पलातसंगम	पलायितसङ्गम ६७	पवेक्खति	प्रप्रेक्षते १९३-१९४
परिदेवणा तेरस	११	पलाल	लेह्यभोज्य १८२	पवेक्खयि	प्रप्रेक्षते १९४
परिदेवंत	परिदीव्यत् ३६	पलिकामदुधनक	कर्णआभू १६२	पवेणी	प्रवेणी-वस्त्र १७
परिदेवित	क्रिया. १६८	पलित	श्वेतकेश २०३	पवेदये	प्रवेदयेत् ४२
परिदेवितविधि	९-१०	पलितोवम	पल्योपम कालविशेष २६५	पवेदयेदिति	प्रवेदयेदिति २६९
परिदेवितविभासा पडलं	४३	पलिहित	प्रलिखित १०६	पवेदिज्जा	प्रवेदयेत् ४५
परिधावति	क्रिया. ८०	पलेपक-ग	वर्णमृत्तिका १०४-२३३	पवेदेज्जो	प्रवेदयेत् २४-
परिधावंत	परिधावत् २०१	पलोटित	वर्णमृत्तिका ८१-१६९-१७१	पवेसणो	अज्झायो १९७
परिबाहिरक	८९	पलोटित	प्रलुटित ३०-८१	पवेसियमाण	प्रविश्यमान १९८
परिब्भमे	परिभ्राम्येत् ८०	पलोलोह ?	२०	पवेसो	अज्झायो १९५
परिभीत	क्रिया. १०८	पल्लगत	पल्यगत १६५	पव्वयवा	गोत्र १५०
परिमज्जक	परिमार्जक १९७	पल्लत्थिकाओ	१३८	पसण्णअप्पसण्णा	५८
परिमलित	परिमर्दित २४२	पल्लत्थिकापट्ट	११६	पसण्णतरकाणि	१२८
परिमंडलाणि	५८-११५-११८-१२८-१६१	पल्लत्थिकाविधि	५९	पसण्णता	१३५
परिमंडलाणि	करणमंडलाणि ११६	पल्लत्थिकाकत	पर्यस्तिकाकृत १३५	पसत	सुरा १२८-२२१
					गवय २३८

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
पसती	गवयी ६९	पाअसूचिका	पादआभू. ७१	पापहिक	सर्पजाति ६३
पसत्थं जामाज्झायं	१४६	पाउत	प्रावृत ४१	पामुहिका	पादआभू. ७१
पसत्थो अज्झायो	१४८	पाकटित	प्रकटित २४९	पामेच्छ	वनस्पति ? ९२
पसन्नतरका	११२	पागुत	प्रावृत १३०-१३४-१६८-१७०	पायस	भोज्य १७९
पसन्नाणि	५८-१२८-१८१	पाघट्टिका	पादघट्टिका शिरआभू. ७१	पायुका	पादुका १८३
पसन्ने अप्पसन्ने	११२	पाट्टालिका	पुष्प ७०	पारम्मुह	पराङ्मुख ३३
पसरादि	वस्त्र ७१	पाठीण	मत्स्यजाति ६३	पारावणा	गोत्र १५०
पसलचित्ता	क्षुद्रजन्तु २२९	पाडल	पुष्प ६३	पारावत	वृक्ष ६३
पसल्लिअ	पार्थिक १८४	पाण	वृक्ष ६३	पारावत	फल ६४
पसंखित	प्रसङ्गिप्त १७१	पाणक	सुरा ६४	पारिप्पव	पारिप्लव प्राणी २३९
पसाणम	उपकरण ? १९३	पाणगत	दोहदप्रकार १७२	पारियत्त	पारियात्र पर्वत ७८
पसाधक	कर्माजीविन् १६०	पाणगिह	पानगृह १३८	पारिहत्थी	पुष्प ७०
पसाधणकवट्ट	प्रसाधनकपट्ट ११६	पाणजोणि	३२-४९-१३२-१४०	पारेवत	फल २३१
पसारितामास	१९८	पाणजोणिगत	४२-४८	पालिका	भाण्ड ७२
पसिब्विका	नकुलिकाविशेष १७८	पाणजोणिसमुत्थाण	२७	पालिभट्टग	वृक्ष ६३
पसुवेलिका	२४७	पाणवगिह ?	१३८	पालीक	भोज्य १७९
पसेव्वक	नकुलिकाप्रकार २२१	पाणहरा बामा	१२८	पालु	वृषण १२४-१२५-२१४
पस्स	पार्श्व ४२	पाणि	भाण्डोपकरण ७२	पालोयणी ?	१५७
पस्सवण	निर्झरण १४६	पाणियघरिय	पानीयगृहिक	पावन्न ?	१५५
पस्संतरिया	पार्श्वान्तरिका २२२	कर्माजीविन् १५९-१६०	पावरणक	वस्त्र १७५	
पस्से	पश्येत् १९५	पाणुप्पविट्ठं	१६१	पावार	वस्त्रप्रकार ६४-१६३
पहिज्जते	प्रहीयते ८१	पातरासवेला	२४७-२४९	पावासिक	प्रवासिन् १३४-१३९
पंचकाणि	५९-१२६	पातवगिह	पादपगृह १३६	पावासिय	प्रवासिक १९०
पंचखुत्ते	पंचकृत्वः १८४	पातिक	त्रीन्द्रियजन्तु २६७	पावार्सि	प्रवासिनम् ९६
पंचणवुत्तिवग्गा	५९-१२७	पातिज्ज	उत्सव ९८	पावीर	स्थानविशेष १३६
पंचउत्ते	पञ्च आत्मनि ११	पातुणंत	प्रावृण्वत् ३८	पासातगत	प्रासादगत २१४
पंचपंचासति वग्गा	५९	पाथमक	प्रथमक ३६	पासिकुत्तणक	पार्श्वकोत्तानक ४५
पंचमंडलिक	११६	पादकलापक	पादआभू. ६५-१८३	पासुताणाणि	३६
पंचमिका	९७	पादकिकणिका	पादआभू. १८३	पाहिति	पास्यति ८४
पंचमेजण	उत्सव ९८	पादखड्डुयग	पादआभू. ६५	पांगुहिति	प्रावरिष्यति ८४
पंचवण्ण	१२७	पादगोर ?	१५३	पिअबंभण	प्रियव्राह्मण १०९
पंचसट्ठिवग्गा	५९-१२७	पादजालक	पादआभू. ६५	पिगाणादियवंतरा ?	वस्त्र ७१
पंचसत्तरिवग्गा	५९-१२७	पादपट्ठिओ	पादपट्ठिके ७७	पिचक	मत्स्यजाति २२८
पंचासतिवग्गा	५९	पादपुंछण	पादप्रोञ्छन १४२	पिट्ठरग	भाण्ड १९३
पंचासवस्सप्पमाणाणि	५७	पादपेसणक	उत्सव ९७	पिट्ठरक	भाण्ड ६५
पंचासीतिवग्गा	५९-१२७	पादफल	आसन ६५	पिणंधण	अपिनहन ४०
पंडक	७३	पादबंध	काव्यविशेष १४७	पिणिधण	अपिनहन ३८
पंडराग	सर्पविशेष २३८	पादमुहिका	पादआभू. १६३	पिणेंधण	अपिनहन १४७
पंडु	वर्ण १०४	पादसंडी	अङ्ग ४८	पितरो	देवता २०४
पंडुपडीभागे	१०४	पादीविक	९१	पितकज्जकिच्च	पितृकार्यकृत्य २०८
पंडुवण्णपडिभागा	५८	पादोपक	आभू. १६३	पितुदेवता	देवता २२४
पंथा	पन्थाः २३३	पाधेज्ज	पाथेय १९२	पितुस्सहा ?	६८
पंथोलग	क्षुद्रजन्तु २३८	पापढक	आभू. ६५	पितुस्सिया	पितुःष्वसा ६८-२१९

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
पितुस्सियाधीतर	पितुःष्वसुदुहित् २१९	पुच्छितपडल	३८	पुरोहित	कर्माजीविन् १६०
पितुस्सियाधीतरी	पितुःष्वसुदुहित् २१९	पुच्छितविधिविसेस	५९	पुलअ	रत्न २१५
पित्तप्पगति	पित्तप्रकृति १७४	पुच्छिताणि चउव्वीसं	११-३६-३८	पुलिदि	पुलिन्ददेशजा ६८
पित्तियधीतर	२१९	पुच्छियविहि	९-१०	पुव्वण्ण	पूर्वाह्न १६४-१७८
पिधयिता	पिधाय ४२	पुडिका	पुटिका २५९	पुव्वदक्खिणकाणि	१२८
पिधुलाणि	११६-१४२	पुढविकाइया	५८	पुव्वदक्खिणजोणि	१४०
पिपीलिका	त्रीन्द्रियजन्तु २६७	पुढविधातुगत	१३३	पुव्वदक्खिणभागाणि	११०
पिप्परी	वृक्ष ७०	पुणोइ	पुनः ११	पुव्वदारिक	२०६
पिप्पलफल	२३८	पुण्णा	५८-१२४	पुव्वभवविवाग	२६२
पिप्पलमालिका	आभू ७१	पुण्णामजोणि	१३९	पुव्वामास	१६७
पियंगुका	पुष्प ७०	पुण्णामधेज्जामास	१३०-१४५	पुव्वुत्तरजोणि	१३९
पियाणि	५८-१२८	पुण्णामम्हि	पुंनाम्नि २४	पुसुय ?	१८५
पियाल	प्रियालफल २३१	पुण्णामाणि-णिं	५७-१२६	पुस्सकोकिलक	आभू ६५
पियोभाग	गोत्र १५०	पुण्णामा	पुण्णत्तरि ५९	पुस्सघर	पुष्पगृह २२२
पिरिली	पक्षिणी ६९	पुण्णामास	१३०-१६१	पुस्सतेल्ल	२३२
पिलअ	पक्षी ६२	पुत्तक	बाल १४२	पुस्समाणव	कर्माजीवीन् १४६-१६०
पिलक	रोग २०३	पुत्तंगय	पक्षी ६२	पूक	पूय १७७
पिलक्खक	प्लक्षक २७	पुत्तेयाणि	५९-१२५-१२८	पूतणा	पक्षिणी ६९
पिला	गोत्र १५०	पुत्थव्वा ?	११४	पूता	पूजा २५६
पिल्लक	बालक १७-१४२-१५३-१६९	पुधवी	पृथिवी १२१	पूतिक ?	१५५
पिल्लिका	लघ्वीबाला ६८	पुधुला	५८-१२८-१४२	पूतिकरंज	फल २३२
पिविपिण	मत्स्यजाति ६३	पुधूणि	११७	पूतिकरंज	तेल्ल २३२
पिच्छेला	भाण्ड ७२	पुप्फगत	दोहदप्रकार १७२	पूतिय	पूजित २१०
पिडालुकी	वृक्ष ७०	पुप्फगिह	पुष्पगृह १३६-१३८	पूतिय	५९
पिडिक	जलवाहन १६६	पुप्फजोणी	६४	पूतिल	फल २३२
पीणक	भाण्ड ६५	पुप्फमय	आभू १६२	पूतिगाल	परिसर्पजाति ६३
पीतक	वर्ण १०४	पुप्फरस	१८१-२२१	पूतीणि	१२५-१२९
पीतवण्णपडिभागा	५७	पुप्फाधियक्ख	पुष्पाध्यक्ष १५९	पूप	भोज्य १८२
पीतउल्लोगित	३४	पुप्फितिक	आभू ७१	पूयित	पूजित ४३
पितिक	पुष्प ७०	पुप्फुच्चाग	पुष्पोच्चायक ८९	पूयिय	पूजित ४६
पीडोलकस्स खंभ ?	३०	पुरच्छिमा	५८	पूरिमंसा	गोत्र १५०
पीडक	पीठक १५-१७-१४२	पुरत्थिमजोणी	१३१	पूसित ?	क्रिया १७१
पीडपिडी	भोज्य ७१	पुरत्थिमाणि	१०८-१२८	पेक्खमाण	प्रेक्षमाण १६९
पीडफलक	आसन ६५	पुराण	सिक्कक ६६	पेक्खिताभासा	३५
पीडिका	पीठिका १५	पुरिमभवविभाग	२६३	पेक्खितामास	७२-७३-८०
पीणियतता	१३५	पुरिमंगाणि	१०३	पेचुक	कण्ठआभू १६३
पीलुतेल्ल	२३२	पुरिमा	११५	पेच्छेते	प्रेक्षते १०७
पुक्खरणी	पुष्करणी २३३	पुरिमुत्तराणि	१११-१२८	पेज्ज	पेय १४३
पुक्खरपत्तग	भाण्ड ६५	पुरिसणक्खत्त	२०९	पेडिका	पीठिका ३१-७२-१३६
पुच्छलक	कण्ठआभू १६२	पुरिसपरामास	१३१	पेतक	देवता २०४
पुच्छिज्जमाण	पृच्छमान १९३	पुरिसावस्सय	पुरुषापश्रय २७	पेतकिच्च	प्रेतकृत्य २०८
पुच्छित अज्झाय	१३४-१३८	पुरेक्खड	पुरस्कृत १६-१४८	पेता	देवता २०४
		पुरोहड	अग्रद्वार १३८	पेतिज्ज	पैतृकम् २१९

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
पेयाल	रहस्य ६४-२३७	फ		ब	
पेयालित	क्रिया. २४१	उपकरण ७२-२३०	बक	आभू.	६४
पेलग	आपीड २४२	१५३	बकुल	वृक्ष.	६३
पेलिका	पेटा २२१	स्पर्शयते ८३	बज्जबज्जंतराणि		१२८
पेलितागत	पेटागत २२२	स्प्रक्षयति ८४	बज्जबज्जाणि		१२-१२६
पेला	पेटा १७८-२२१	आसन १५	बज्जर्मडलचारि		९०
पेल्लिका	भाण्ड ७२	कर्माजीविन् १६१	बज्जसा	गोत्र	१५०
पेसणकारक	कर्माजीविन् १६०	आसन १५-१७-२६-७२	बज्जामास		१३०
पेसणिय	७९	फलक्याः ५२	बदरचुण्ण	भोज्य	१८२
पेस्सजोणि	१३९	दोहदप्रकार १७२	बद्ध		५८-१२२
पेस्सणिक	१२०	६४	बब्बरी	बर्बरदेशजा	६८
पेस्सभूया	५८-११९-१२९	फल-पुष्पफोटल फल-पुष्पगठरिका ३०	बरिहिण	बर्हिध्वनि	१७३
पेस्सा	५८-१२९-१३१	आभू. १६२	बलगणक	कर्माजीविन् १५९-१६०	
पेस्सामास	२००	१८१-२२१	बहिरम्भंतराणि		१२८
पेस्सेज्जाणि	११९	कर्माजीविन् १६०	बहुअंतराग		१९४
पेस्सेयाणि	१२०	आभू. ६५	बहुखत	बहुक्षय	२०२
पेंडिका	अङ्ग ११९-१२५	फलाध्यक्ष १५९	बहुभस्स बहुभाष्य बहुवचन १५१-१५७		
पेंडिका	भोज्य १८२	फलापश्रय २७	बहुवाधीत	बहुव्याधिक	१६१
पेंडयाली ?	२३३	१४५	बहुस्सय	कर्माजीविन् १६०	
पेंडित	पिण्डित ११५	५२	बंधणगिह	बन्धनगृह	१३६
पोअड	पोच्चड ? ९८	परिखायाम् १३६	बंधणजोणि		१३९
पोकत्त ?	१४८	परिखा १३७-२३३	बंधनागारिय	कर्माजीविन् १६०	
पोटाकी	पक्षिणी ६९	फलोच्चायक ८९	बंध-मोक्खा		१२९
पोट्टल	दे. गठरिका ३०	१४८	बंधुजीवक	वृक्ष	६३
पोट्टलिका	ग्रन्थिका २१६	गुडविशेष १८२	बंधुज्जे भुत्तं	बंधुभोजन	१८०
पोट्टह ?	६२	क्रिया. १४८	बंधखत्त	ब्रह्मक्षत्र	१०२
पोट्टवद	प्रोष्ठपद २०७	स्फालयत् ३८	बंधखत्तेज्जाणि		५७
पोत	जलवाहन १६६	स्फाटयत् १४४	बंधचारिका	गोत्र	१५०
पोतक	बाल ९७-१४२	१८६	बंधचारिगजोणि		१३९
पोत्थकम्म	पुस्तकर्म २७	५८-१२३-१२८	बंधच्चा	गोत्र	१५०
पोरिस	अङ्ग १५६	स्फिग् ६६-१२१	बंधण	ब्राह्मण	१०२
पोरुपविद्ध ?	क्रिया. १५२	१०६	बंधणजोणि		१३९
पोरुस	६०-१३४	स्फुटित ? ८०	बंधणज्जोसिय		१६१
पोरेपच्च	पुरुषत्य ११२	पुष्पित १४८	बंधणोसण्ण		१६१
पोल्ल	शुचिर १०६	कृमिजाति ७०	बंधण्णू	ब्रह्मज्ञ	१०१
पोवलक	भोज्य १८२	भुंगलिका ७२	बंधत्थल	अङ्ग	१९५
पोवलिका	भोज्य १८२-२४६	भ्रान्त फुक्कित १६८	बंधरिसि	ब्रह्मर्षि	१०१
पोहट्टी	लघ्वी युवती ६८	तुषाकारा वृष्टि २५७	बंधवण्ण		१०५
पोंडज	बोंडज आच्छादन ६५	भोज्य १८२	बंधवत्थ		१०१
प्रोदाहरिष्यामि	१५०	ध्वनि १७३	बंधविस्स	ब्रह्मवैश्य	१०३
प्लव	जलवाहन १६६	स्फोटित १४८	बंधवेस्स	ब्रह्मवैश्य	१०२
			बंधसुद्ध	ब्रह्मशूद्र	१०२-१०३
			बंधेज्जखत्तेज्जाणि		१०२

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
बंभेज्जाणि	५७-१२८	बुद्धि-मेहाओ	देवता २०५	भारदाइ	पक्षिणी ६९
बंभेयाणि	१०१	बुद्धीरमण	५८-१२२	भारधिक	भारतिक २४८
बाढकार	९८	बुवति	ब्रवीति १९५	भारंड	पक्षी ६२
बाधिरंग	बाह्याङ्ग १३	बुवी	अब्रवीत् १७	भावस्सिओ	भावाश्रितः १२०
बारगय	द्वारगत २१४	बेभेलक	फल ६४	भासकुण	पक्षी २३९
बालक	बाल १७०	बोडमच्छक	मत्स्यजाति ६३	भासमाण	भावमाण १६९
बालजोणि	१३९-१९४	बोंडज	दे० कार्पासफल १८	भासा	२३९
बालजोव्वणत्थसाधारणाणि	५७	भ	भासासद्		१८८
बालजोव्वणसामण	१००	भक्ख-भोज्जकधा	भक्ष्य-भोज्यकथा ४०	भाष्य	५७
बालतिलक	तिलकप्रकार २४६	भगवती	देवता ६९	भिउडी	कृमिजाति ७०
बालमुंडिका	भाण्ड २३०	भगवा	गोत्र १५०	भिक्षोदण	भिक्षौदन १८०
बालवीरा	प्राणिजवस्त्र २२१	भगिणिधीतर	भगिनीदुहितृ २१९	भिण्ण	भिन्न ४५-१६८
बालव्वयणी	बालव्वयनी २३०	भग	भग्न १६८	भिण्णं सहस्सं	१२७
बालसाहि	भाण्ड २३०	भगगिह	भग्नगृह १३७	भिन्नमणोघोसं	४३
बाला	९७	भच्छा	भस्त्रा २३०	भिस	भोज्य १८१
बालाभरक ?	१७०	भज्जाय	भार्यायाः १६	भिसकंटक	भोज्य १८२
बालामास	२६	भतिकम्म	भृतिकर्म कर्माजीविन् १५९	भिसमुणाल	भोज्य १८१
बालेपतुंद	कर्माजीविन् १६१	भत्तघर	भक्तगृह २२२	भिसी	आसन १५-१६-७२-१०१
बालेयाणि	५७-९७	भत्तवेला	२४७	भिमणाग	स्थल-जलचर २२७
बालोपणयण	१२१-१८०	भत्तवेलिका	२४७	भिमपत्त	भृङ्गपत्र ९२
बाहिरओ	बहिस्थः ९	भदपीढ	आसन २६-६५	भिमराय	पक्षिन् ६२
बाहिरतुंबिय	८१-९०	भद्दासण	भद्रासन १५-१६	भिगार	भाण्ड २०५
बाहिरबाहिराणि	५७	भयमाभया	८	भिगारिका	भाण्ड ७२
बाहिरब्भंतरा	५७-८६-८७-९१	भोहेते	भरिष्यति ८४	भिगारी	कृमिजाति ६९
बाहिराणि	८९-९२-१२८	भंडगिह	भाण्डगृह १३७	भिगारी	सर्प २३९
बाहिरिकायं	बाहिरिकायाम् १९०	भंजंत	भञ्जत् ३८	भिजिक	त्रीन्द्रियजन्तु २६७
बाहुजालक	आभू ६५	भंजुलिका	वृक्षजाति ७०	भीराहि	सर्पजाति ६३
बाहुणाली	अङ्ग ६६-८१-१२६	भंडण	भण्डन ४०	भीरु	१२६
बाहुपल्लत्थिका	बाहुपर्यस्तिका २०	भंडभायण	६५	भीरुअ	वृक्ष ६३
बाहुपंगुरण	बाहुप्रावरण ४२	भंडवापत	कर्माजीविन् १६०	भीरूणि	५९
बाहुमंडलक	११६	भंडाकारिकिणी	भाण्डागारिणी ६८	भुक्खायं	क्षुधायाम् ४०
बाहुविक	कर्माजीविन् १६०	भंत-भग्गाणि	भ्रान्तभग्नानि ३३	भुक्खित	क्षुधित १४८
बिक	द्विक १२६	भागवता	गोत्र १५०	भुमंतरामास	१३०
बिकारिणि	५९	भागवाती	गोत्र १५०	भुंभलक	मद्यपात्र २५९
बिग	द्विक २१६	भागसो	भागशः १५१	भूतकूर	भोज्य ६४
बिडालक	फल २३८	भागहारक	८१	भूतविज्जिक	कर्माजीविन् १६१
बिभस्स	द्विभाष्य द्विवचन १५७	भागिणेज्ज	भागिनेय ६८-२१९	भूमकंतरवंस	७६
बिल्ल	फल ६४	भातुज्जाया	भ्रातृजाया ६८	भूमिगिह	भूमिगृह १३६
बिल्लतेल्ल	बिल्वतेल्ल २३२	भातुधीतर	भ्रातृदुहितृ २१९	भूमिजाग	भूमियाग २४४
बिह	द्व्यह २६१	भातूणं	भ्रातृणाम् १०९	भूमिबिलासय	२२७
बीतपाल	बीजपाल-कर्माजीवी १६०	भामित	भ्रामित १४८	भूमीकम्म अज्झाअ	९-५६
बीयकाणि	भोज्य १८२	भायणजोणी	भाजनयोनि ३२	भूमीकम्मविही	१०
बुज्जेहं	भोत्स्यामि ४४	भायणापस्सत	२७	भूमीकम्मसत्तसमुद्देशो पडलं	११

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
भूमीकम्पस्स विज्जा	८	मज्झिमजोणि	१३९	मत	मृत १८७
भेदति	भिनत्ति ८३	मज्झिममज्झिमसाधारणाणि	५७-९६	मतकपडिमा	मृतकप्रतिमा १८३
भेदित	क्रिया. १४८	मज्झिममज्झिमाणंतरसाधारणाणि	५७	मतकभोयण	मृतकभोजन १८०
भोगमिच्छी	भोगमैत्री ६८	मज्झिममिह	मध्यमे १७	मताणि	५९-१२५-१२९
भोति	आमन्त्रणम्	मज्झिमवय ०८८	महव्वय ०८८	ससाधारणाणि ५७	मतामास १३०-२०१
भोम्म	भौम १	मज्झिमवयाणि	५७-९९	मर्तिग ?	९२
भोयणगत	दोहदप्रकार १७२	मज्झिमविगाढ	१७२	मत्तिकामय	धातुवस्त्र २२१
भोयणगिह	भोजनगृह १३६-१३८	मज्झिमाणंतरजहणसाधारणाणि	५७-९६	मत्थक	अङ्ग ७६
भोयणी	भोगिनी ६८	मज्झिमाणंतरमज्झिमसाधारणाणि	९६	मत्थक	पुष्पापीड ६४
भोयणो अज्झायो	१७६-१८२	मज्झिमाणंतरा	११७-१२८	मत्थककंटक	मस्तककंटक आभू. ६४
भोयणोपक्खर	भोजनोपस्कर ३२	मज्झिमाणंतराणि-णि	५७-९४-१२७-१२८	मत्थग	आभू. ६४
	म	मज्झिमाणि	५७-९४-७६-१२८	मत्थतक	भोज्य १८२
मउक	मृदुक १८९	मज्झे विगाढा	१२१	मदनसलाका	पक्षी ६९-१९५
मउक्क	मृदुक ५९	मट्टियापीडय	मृत्तिकापीठक २६	मदुक	१२४-१२८
मउड	मुकुट ६४	मडहक	मडभक ११५	मद्धक्खर	१५८
मक	मृग १६६	मडहिया	मडभिका ६८	मधअग्नि	महाअग्नि २५४
मकण्णी	आभू. ७१	मडुहारक	कर्माजीविन् १६१	मधापध	महापथ १४५
मकतण्हा	मृगतृष्णा २४६	मडुहसित	बलाद् हसित ३५	मधित	मथित २००
मकरिका	आभू. ७१	मणवित्तअ	मनोविद् ४	मधु	सुरा ६४
मकसक ?	१६२	मणस्सिला	मनःशिला १४१	मधुरक	सुरा २२१
मक्खित	अक्षित ४५	मणाम	प्रिय १२०	मधुरक	मुखआभू. १८३
मग	मृग ६२-१६६-२३८	मणिओ	मणितः १०	मधुरसेरक	सुरा २२१
मगमच्छ	मत्स्यजाति २२८	मणिक	८०	मधुसिक्ख	मधुसिक्ख १०४
म[ग]यंतिका	पुष्प ७०	मणिकार	कर्माजीविन् १६०	मधुस्सव	मधुस्सवलब्धि ८
मगरक	आभू. ६४	मणित्थवो अज्झाओ	६	मधूग	वृक्ष ६४
मगलुद्धग	मृगलुब्धक १६०	मणिधाउकय	१३३	मयंसल	कृमिजाति ७०
मगवच्छक	वनस्पति २३८	मणिधातुगत	१३३	मयुं	मृदु ३५-३६
मगसक	क्षुद्रजन्तु २३७	मणिबंधहत्था	६०	मयूरगीव	वस्त्र १६४
मच्छबंध	कर्माजीविन् १६०	मणिमय	आभू. १६२	मरकल ?	२३८
मच्छंडिक	शर्कराविशेष १८१	मणिरूवालिता	१४१	मरणजोणि	१३९
मज्जधरिय	१५९	मणिवर	६	मरिअ	फल २३८
मज्जणमालिका	पुष्प ७०	मणिवियारभूमिकम्म	१०	मरुभूतिक	७८
मज्झकल्लाणसोभणा	९९	मणिसण्णिअ	मणिसंज्ञित १०	मलय	पर्वत ७८
मज्झगाढा	१२८	मणिसुत्तं	५९	मलित	मर्दित ११४-१४८
मज्झत्थाणि	१२०	मणिसोमाणक	कण्ठआभू. १६३	मल्लकमूलक	भाण्ड ६५
मज्झरसा	गोत्र १५०	मणीसमुच्चय	१२९	मल्लगत	दोहदप्रकार १७२
मज्झविगाढाणि	५८	मणुज्ज	मनोज्ञ ५	मल्लगभंड	भाण्ड ६५
मज्झंतिक	२२-७७-१७२	मणेय	५८-१२३	मल्लसाडग	वस्त्र ६४
मज्झंतिय	२४९	मणोज्ज	गुल्मविशेष १४१	मल्लिका	पुष्प ७०
मज्झंदीणा	गोत्र १५०	मणोरध	मनोरथ २४१	मल्लुंडी	सर्पिणी ६९
मज्झायं		मणोसिलक	वस्त्र १६४	मसारअ	मसारक ५२
मज्झिमकाणि	१२८	मणोसिलवणपडिभागा	५८	मसारकल्लखारमणी	आभू. १६२
मज्झिमकाया	११७-१२८	मणोसिलाणिभं	वर्ण १०५	मसारगल्ल	रत्न २१५

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
मसूर	धान्य १६४	मंजरीपुष्प	१७७	मातुस्सियाधीतरी	२१९
मसूरक उपकरण	१५-१७-६५-२३०	मंजिद्धा	१४१	मातुस्सियापुत्त	मातुःष्वसुपुत्र २१९
महाघम्हि	महाघ्ये १६	मंजूसा	मञ्जूषा २७-१६५	मायाकारक	कर्माजीविन् १६१
महतरकाणं	महतरकाज्ञाम् २५८	मंजूसिका	मञ्जूषिका ७२	मारुदि	मारुति ८
महतिमहापुरिस	८	मंड	बृहत् ११४	मालाकार	कर्माजीविन् १६०
महतिमहावीर	८	मंडलक	११६	मालायोणि	३२
महतिमहावीरवद्धभाणाय	५९	मंडलास	११६	मालुका	पक्षिणी ६९
महपितुयधीतर	महापितुदुहित् २१९	मंडलि	सर्प २१८-२२७	मास	माषधान्य १६४
महामातुया	पितुर्माता ६८	मंडलिकारिका	कृमिजाति ६९	मासककाकणी	७२
महव्वताणि	५७-९९	मंडव	मण्डप १३८	मासपूरणक	९७
महव्वय	महावयः १८७	मंडवा	गोत्र १५०	मासालग	शयन ५२-६५
महव्वयाणि	१००-१२८	मंडि	वृक्ष ७०	माहकी	गोत्र १५०
महंतकाई	५९	मंडिल्लिका	भोज्य १८२	माहिसिक	वस्त्र ७१
महंताणि	१२५	मंडी	भाण्ड ७२	मार्हिद	८
महाजाति	पुष्प ७०	मंडूकलिआ	मण्डूकिका २३७	मितु	मृद २७
महाण	महाजन १२३	मंत	पर्वत ७८	मितुभागा	५९
महाणपेसक	महाजनप्रेष्यक ११३	मंतिक	कर्माजीविन् १६०	मितूणि	१२८
महाणसगृह	महानसगृह १३७	मंतुलित ?	क्रिया १२१	मित्तजोणि	१३९
महाणसिक	महानसिक ६७	मंथणी	मन्थनी १७	मिदुभागे	१२५
महाणि	१२८	मंथु	भोज्य २२०	मिधो	मिथः ३१
महानिमित्त	१	मंदर	पर्वत ७८	मिधोसंलावजुत्ता	४०
महापरिगह	५८-१२२	मंस	कर्माजीविन् १६०	मिलक्खदेवता	देवता २०६
महापरिगहार्णि	१२८	माउस्सहा ?	६८	मिलक्खु	म्लेच्छ १४९
महामत्त	हस्तिमहामात्र १५९	माउस्सिया	मातुःष्वसा ६८	मिल्लिदक	सर्पजाति ६३
महामंत ?	हस्तिमहामात्र १६०	माकण्णीकण्णिक ?	११६	मिल्लेति	मुञ्जति ४५
महालोक	६२	भागधवेला	२४७	मिस्सका	१२८
महावीर वद्धभाण	१-९-१३०	माढ	गोत्र १४९	मिस्सकेसि	देवता ६९
महासकुण	२३९	माण	लक्षण १७३	मिस्सगामास	१८८
महाहिमवत्त	पर्वत ७८	माणक	भाण्ड ६५	मीण	मत्स्यजाति २२८
महिलापस्सय	महिलापश्रय २७	माणसंपन्न	१७३	मीमंसका	गोत्र १५०
महिलाय	महिलायाः २०	माणिका	भाण्ड ७२	मुकणंदवण	१०४
महिसधातक	कर्माजीविन् १६०	माणितपुव्व	८२	मुगभज्जिय	भोज्य १८२
महिसाहा	आसन ७२	माणुस्सकाणि	१२५-१२८	मुग्गा	नकुलिकाविशेष १७८
महिसीपाल	कर्माजीविन् १६०	माणूसानूक	१७४	मुग्गा	धान्य १६४
मर्हिद	पर्वत ७८	मात ?	११४	मुग्गा	गोत्र १५०
महु	सुरा १८१	मातंग	९२	मुज्जायण	१६१
मंगलवायण	मङ्गलवाचन १४७	मातुलधीतर	मातुलदुहित् २१९	मुट्टिक	कर्माजीविन् १६१
मंगुल	अशुभ ९५	मातुलिग	फल ६४	मुणालिक	मृणालिका फल ७०
मंगुस	पशु २२७	मातुलिगी	वृक्ष ७०	मुणेतूण	ज्ञात्वा ५६
मंचक	शयन १५-२६-६५	मातुलुंग	फल २३१	मुर्तिगमज्झ	मृदङ्गमध्य २५७
मंचातिमंच	शयन १४८	मातुलुंगस्स	२३२	मुत्तामय	आभू १६२
मंचिका	शयन २६-१३७	मातुस्सिया	मातुःष्वसा २१९	मुत्तावल	आभू ७१
मंचुलक	वृक्ष ? २३८	मातुस्सियाधीतर	मातुःष्वसुदुहित् २१९		

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
मुक्तिक	मौक्तिक २१५	मेचक	वर्ण १०४-१६४	युक्तगम्हि	युक्ताध्वे १६
मुक्तिक	भाण्ड २२१	मेज्जुक	पक्षी १४५-२३८	युंजइ	युनक्ति १३
मुक्तिका पडिमा	मृत्प्रतिभा १८३	मेदित	पुष्ट ११४	यूथिकातेल्ल	२३२
मुत्तली	प्राणिविशेष २५३	मेधुण ?	६८	योगवाहा	१५५
मुदितजोणि	१३९	मेयकवण्णपडिभाग	५८	योग्गायरिय	१५९
मुदितसाधारधूभ	२२२	मेरक	सुरा ६४	र	
मुदिताणि	५८-१२१-१२८	मेरा	मर्यादा २४१	रकिगत	भाण्ड २१४
मुदितामास	१३०	मेलक्खु	म्लेच्छ २६३	रच्छागिह	रथ्यागृह १३६
मुहिका	आभू. ११६	मो	पादपूरणे २५६	रच्छाभि(भ)ति	भोज्य ७१
मुहिका	भाण्ड ७२	मोक्ख	५८-१२२	रज्जुक	११५
मुहियाणि-णि	१२५-१२९	मोक्खजोणि	१३९	रण	आरण्य १७९
मुद्दीगा	द्राक्षाफल २३८	मोगरा	पुष्प ६३	रणजोणि	अरण्ययोनि १४०
मुद्देयक	अङ्गुलिआभू. १६३	मोग्गल्ल	गोत्र १५०	रणहक	रज्जुविशेष ११५
मुधुलूक	पक्षी ६२	मोघविखद्धित	क्रिया. १४८	रतीसंपयुत्त	१३७
मुम्मलुक	कृमिजाति ७०	मोदक	भोज्य १८२	रत्त	वर्ण १०४
मुयंग	मृदङ्ग ४१	मोरकंठ	९२	रत्तकंठक	गुल्मजाति ६३
मुरुव	वाद्य २३०	मोरेंडक	भोज्य १८२	रत्तक्खारमणि	आभू. १६२
मुख	मृत्तिका २३३	मोलि	सर्प २३९	रत्तणिप्फाव	धान्य १६५-२३२
मुरुंब	मृत्तिका २३३	मोहणक	१७०	रत्ततिल	धान्य १६४
मुसल	१४२	मोहणगिह	मोहनगृह १३६	रत्तनामाध्यायं	१५०
मुहफलक	मुखआभू. ६४	य		रत्तरज्जक	कर्माजीविन् १६०
मुहवासक	मुखआभू. १८३	यागिक	याज्ञिक (?) ५	रत्तवण्णपडिभाग	५७-१०५
मुहातिमास	१८६	यज्जुवेद	गोत्र १५०	रत्तवीही	धान्य १६४
मुंगसी	चतुष्पदा ६९	यणाणा	गोत्र १५०	रत्तसालि	धान्य १६४
मुंचंत	मुञ्चत् ३८	यणिक	गोत्र १५०	रध	वाहन १४६-१६६
मुंडक	भाण्ड ६५	यण्णेज्जामास	यज्ञेयामर्ष १४८	रधकार	कर्माजीविन् १६०
मुंडलोह	धातु २५९	यत्तप्पवहण	यात्राप्रवहण २४४	रधगिह	रथगृह १३६
मुंदिका	मृद्वीका फल ७०	यत्ताणुयत्त	यत्तानुयत्त १४८	रधजातरत्त	रथजातरत्त १८४
मूलकतेल्ल	२३२	यदाणअ	यदाज्ञक ४	रधणेमिघोस	ध्वनि १७३
मूलकम्म	कर्माजीविन् १६०	यधलाभ	यथालाभ २५६	रधप्पयातकरत्त	१८४
मूलक्खणक	कर्माजीविन् १६०-१६१	यधुत्ताहि	यथोक्ताभिः १८८-२११	रधसालाय	रथशालायाम् १३८
मूलगोत्त	गोत्र १५०	यमगाभास	२१९	रप्पस्सं	रहस्यम् १०
मूलजोणि	३२-४८-१३२-१४०	यमा	१५३-१५५	रमणिज्जाणि	११८
मूलजोणिसमुत्थित	२७	यव	१६४-१८१	रमणीयाणि	५८-१२४-१२८
मूलजोणीमय	१६२	यसवतो	यशस्वतः १३०	रयक	कर्माजीवि-रजक १६०
मूलवाणिय	कर्माजीविन् १६०	यस्स	यस्य ४६	रयणकलावग	आभू. ६५
मूलाभास	२५	यस्सक ?	१४७	रयणगिह	रत्नगृह १३७
मूलिक	कर्माजीविन् १६०	यागहरण	१४७	रयतगिह	रजतगृह १३६
मेखल	आभू. ७१	याचितक	क्रिया. १६६	रययमासअ	सिक्कक ६६
मेखलिका	कटीआभू. १६३	याण	यान २६	रयितपुव्व	८२
मेघडयकायण ?	क्रिया. १८६	याणुस्सय	यानोत्सव ४०	रस	६४
मेघडंतीय ?	९	याव	यावत् २४९	रसजोणि	१४०

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
रसणा	आभू	७१ रिद्धिपत्त	ऋद्धिप्राप्त	८ लकुचि	वृक्ष ६३
रसदब्बी	भाण्ड	१९३ रिसिमंडल	११५ लकुल	फल २३९	
रसधातुगत		१३३ रिगमाणक	रिद्धुत्	२५९ लक्खण	लक्षण १-२
रसायते	क्रिया.	१०७ रुक्खजोणि	७० लक्खणो अज्झायो		१७३
रसाल	भोज्य	७१ रुक्खफल	१७७ लक्खये	लक्षयेत्	१९७
रसालादहि	भोज्य	२२० रुक्खामास	१३० लतागिह	लतागृह	१३८
रसेज्जा		५८ रुगण ?	९२ लतादेवता	देवता	२०६
रसेया	१२३-१२८ रुचक	हस्तआभू	१६३ लतालट्टि	वृक्षजाति	७०
रसोतीगिह	रसवतीगृह	१३६ रुचिका	वृक्षजाति	७० लद्धामास	१९९
रस्स	ह्रस्व	१९१ रुचिकातेल्ल	२३२ लभित्तणं	लब्ध्वा	१९७
रहस्स	गोत्र	१५० रुद्धणि	१२९ लयित	लगित	२००
रहस्सपडलो अज्झाओ		१८६ रुण्ण	रुदित	४३-१५५ लवंगपुप्फ	पुष्प ६३
रंगावचर	नाटकपात्र	१६०-१९१ रुण्णारुत	रुदितारुदित	३४ लसिया	पूय १७७
रंधणक	रन्धनक	२४९ रुदित	क्रिया.	१६८ लंका	अङ्ग ६६
रंधित	क्रिया.	१४८ रुदितविधि	९-१० लंखक	कर्माजीविन्	१६१
राइण्ण	सर्प	२१८ रुदितानि वीसं	११-४२ लंवा(चा)पलि	वृक्षजाति	७०
राजपोरुस	राजपुरुष	१९१ रुद्धा	५९ लाउल्लोपिक	लगितोल्लोपिक	१८३
राजमहोरक	स्थल-जलचर	२२७ रुधिचीक ?	१५५ लाउल्लोयिक	लायितोल्लोचित	१८३-२१०
रातण	राजादन-फल	२३८ रुप्पमय	आभू	१६२ लाजिका ?	६८
राते	रति	१०७ रुप्पियमास	२३९ लाडी	लाटदेशजा	६८
रातोवरेधम्मि	राजोपरेधे	२५८ रुप्पी	पर्वत	७८ लाणी	पुष्प ? १०४
रामायण	ग्रन्थ	२४८ रुरु	चतुष्पद	६२ लाभदारं अज्झायं	१४४
रायजोणि		१३९ रूवपक्खर	कर्माजीविन्	१६१ लाविका	पक्षिणी ६९
रायण्ण	राजन्य	३ रूवाकड	क्रिया.	१६८ लासक	कर्माजीविन् १६१
रायधाणी	राजधानी	१६१-२०१ रूविअग	धातु	२३३ लासित	क्रिया. ८१
रायपध	राजपथ	१३७ रूवेया	५८ लिच्छा	कृमि	२३०
रायपुरिसजोणि		१३९ रेचित	क्रिया.	१४८ लिगिच्छी	वृक्षजाति ७०
रायपोरिस	कर्माजीविन्	१५९ रोगमणाणि	५९-१२५-१२९ लुक्खणिद्ध	वर्ण	१०५
रायप्पसात्त	राजप्रसाद	६७ रोट्ट	लोट्ट	१०६ लुक्खणिद्धाणि	५८-१०६-१२८
रायम्भंतर	राजाभ्यन्तर	८५ रोहणिक	त्रीन्द्रियजन्तु	२६७ लुक्खलुक्खाणि	५८-१०६-१२८
रायमगगसमासु रच्छासु		२१४ रोहिणिक	क्षुद्रजन्तु	२२९ लुक्खवण्णपडिभाग	५८
रायविज्जा		१४३ रोहिणिक	पक्षी	२२५ लुक्खाणि	५८-१०६-१२५-१२८
रायसस्सव	धान्य	१६४ रोहित	रोझ-गवय	६२ लुक्खामास	१६८
रायसासव	धान्य	२२० रोहित	मत्स्यजाति	२२८ लुचित	क्रिया. १३०-१४८
रायाणं	राजाज्ञाम्	२५८ रोहिती	चतुष्पद	६९ लुता	कृमिजाति ७०
रायाणुपायजोणि		१३९ ल		लुलितप्पसादित	क्रिया. १४८
रायिणं	राज्ञाम्	२१३ लइत	लगित	१९८ लेखक	कर्माजीविन् १६०
रायिमंत	सर्पविशेष	२२७ लउच	फल	२३१ लेखा	वस्त्र ७१
रायो पज्जायपत्ति	राज्ञः पर्यायपत्नी	६८ लउसु	फल	२३८ लेज्झ	लेह्य १४३
रालक	धान्य	१६४-२२० लक ?	११६ लेज्झगत	दोहदप्रकार	१७२
रिक्सिक	पक्षी	६२-२३८ लकड	आभू	७१ लेज्झचुण्ण	लेह्यचूर्ण १८२
रिद्धक	वृक्ष	६३ लकुच	वृक्ष	६३ लेवणगिह	लेपनगृह १३८

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
लेहणिक्विखण	लेखनिक्षेपण ९७	वईदबुद्धि	पुष्प ७०	वडभ	१५३
लेहपट्टिकमंडल	११६	वउत्थ	प्रोषित १९६	वडु	बृहत् ११४
लेहिचक ?	२४९	वक	वृक ६२	वडुकि	कर्माजीविन् १६०
लोकविखणो	गोत्र १५०	वक्कभंड	वल्कभाण्ड १४२	वणकम्मिक	८९
लोकमाता	९	वक्कभंड	वस्त्र २२१	वणति	पुष्प ७०
लोकमिह	लोके ३	वक्कय	वल्कज आच्छादन ६५	वणपेलिका	भाण्ड १९३
लोकहितय	लोकहृदय ५७	वक्कल	वल्कल १४२	वणप्फइकाइकाणि	५८
लोणवाणिज्ज	कर्माजीविन् १६०	वक्कितेल्ल	वल्किकतैल २३२	वणप्फती	वनस्पति १२१
लोतेक ?	२०६	वक्खण	वड्खण ६०-९६-१०१-१२३	वणसंड	वृक्ष ६३
लोद्ध	वृक्ष ६३	वक्खस्सामि	व्याख्यास्यामि १८६	वणियप्पधजोणि	वणिक्पथयोनि १३९
लोपक	पशु २२७	वक्खाइस्सामो	व्याख्यास्यामः १३५	वण	लक्षण १७३
लोषा	पशु ?	वक्खामि	वक्ष्यामि ४३	वणजोणि	१४०
लोममंडलक	११६	वक्खायिस्सामि	व्याख्यास्यामि १९२	वण्णधातुगत	१३३
लोमवासी	अङ्ग ६६-७६-१२१	वक्खावत्थद्धरत	वृक्षापस्तब्धरत १८४	वण्णपडीभागा	१०४
लोमसिका	कर्कटिका ७१	वग्घपद	व्वाघ्रपद गोत्र १५०	वण्णमत्तिका	वर्णमृत्तिका २३३
लोमसिग	फल २३८	वचाई	कृमिजाति ६९	वण्णयिस्सामि	वर्णयिष्यामि २३७
लोमहत्थ	लोमहस्त २१०	वच्चगिह	वचोगृह १३६-१३८	वण्णसुत्तक	आभू. १६२
लोयक	चतुष्पद ६२	वच्चदेवता	वचोदेवता ७६-२२४	वण्णा	वस्त्र ७१
लोयक	दे० शटितधान्य ३३	वच्चभूमिय	वचोभूम्याम् २२२	वण्णेय	१२३
लोलित	क्रिया. ८४	वच्चाडक	वचोवत् ? २२२	वतंसक	कर्णआभू. १८३
लोवहत्थपाणिय	भाण्ड १९३	वच्चागत	वचोभूमी २१४	वतिभेदग	क्षुद्रजन्तु २३८
लोहकार	कर्माजीविन् १६०	वच्छ	गोत्र १४९	वत्तणासी	सर्पिणी ६९
लोहजालिका	धातुवस्त्र १६३-२२१-२३४	वच्छक	बाल १७०	वत्तणीपालक	वर्तनीपालक ८९
लोहभाण	भाण्ड २५९	वज्जिहिते	वादयिष्यति ८४	वत्तणीपालमगिय	वर्तनीपालमार्गिक ९०
लोहमय	भाण्ड २२१	वट्टक	पक्षी १९७	वत्तपुव्व	वृत्तपूर्व ८२
लोहमय	आभू. १६२	वट्टक	भाण्ड ६५	वत्तमाणजोणि	१३९
लोहसंधात	१५	वट्टखुर	वृत्तखुर ११६	वत्तमाणाणि	५७-८२-१२८
लोहिच्च	गोत्र १५०	वट्टखेलणक	वृत्तकोडनक ११६	वत्ता	वार्ता १०
लोहितक	आभू. १६२	वट्टज्झाय	वृत्ताध्याय ११६	वत्तुस्सय	वृत्तोत्सव ८१-१००
लोहितक	सर्पजाति ६३	वट्टपीढक	आसन ६५	वत्थगत	दोहदप्रकार १७२
लोहितक्ख	आभू. १६२	वत्तमत्थ	वृत्तमस्तक ११६	वत्थगिह	वस्त्रगृह १३८
लोहितिआ	लोहितिका १८	वट्टमाणग	भाण्ड ६५	वत्थजोणि	१४०
लोहियक्ख	रत्न २१५	वट्टमुह	वृत्तमुख ११६	वत्थजोणी अज्झाअ	१६३
लोहीगत	भाण्ड २१४	वट्टलोह	धातु २३३	वत्थपाढक	कर्माजीविन् १६०
लोहीवारगत	भाण्ड २१४	वट्टलोहमय	धातुवस्त्र २२१	वत्थरिका	भाण्ड ७२
ल्हासेहिहि	लासयिष्यति ८४	वट्टसीस	वृत्तशीर्ष ११६	वत्थाधिगत वस्त्राधिकृत	कर्माजीविन् १६०
व		वट्टा	५८-१२८	वत्थि	बस्ति ९४
वइए	उक्तः ९	वट्टापेल	वृत्तापीड २५९	वत्थित	अवस्तुत ११७
वइत	क्रिया. १९९	वट्टी	वर्ति ६६	वत्थिसीस	अङ्ग ६०-२०४
वइयाकरण	व्याकरण ५७	वट्टण	वस्त्र १६४	वत्थुदेवता	वास्तुदेवता २०६-२२४
वइरमच्छ	मत्स्यजाति २२८	वड	वृक्ष ६३	वत्थुपारिसद	वास्तुपार्षद १५९
वइस्सज्जोसित	वैश्यजोषित १६१	वडक	उद्भिज्ज २२९		

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
वत्थुवापतिक	कर्माजीविन् १६०	वसवा	देवता २०४	वाधुज्ज उत्सव	४०-१२१-१४३-१९०
वत्थोपजीविक	कर्माजीविन् १६०	वसायं	वसायाम् ५	वाधुज्जभंड	विवाहभाण्ड १७५
वदंसक	अवतंसक १४७	वसुमंतो	वसुमान् १०५	वाधेज्ज	विवाह १३४
वधुज्ज	विवाह १४१	वस्सधर	पर्वत ७८	वापण्णा	५८
वधूमज्जण	वधूमज्जन २५५	वस्सारत्तं	वर्षारात्र ६७	वापण्णोपहुता	१२९
वद्धक	आभू ११६	वंजण	व्यञ्जन १	वापद	व्यापत् ६१-८०
वद्धणक	उत्सव ९७	वंजणज्झायो	१७४-१७५	वापदि	व्यापदं ८९
वद्धमाण	वर्धमान १	वंजणात	व्यञ्जनान्त १५१	वापन्न	१२२
वप्प	वप्प १३७	वंजुल	वृक्ष ६३	वामगत्तामास	२०१
वप्पक	बाल १६९	वंत	वान्त १७१	वामणक	१५३
वप्पडी	भोज्य २४६	वंतं ?	१०	वामदेस	७६
वप्पा	वप्ता १०७	वंदहे	वन्दे ६	वामद्वणाहारा	१२८
वप्पति	धुनक्ति १०७	वंदिताणि	११-३८-१३८	वामपक्ख	७६
वमारक	स्थल-जलचर २२७	वंदियविहि	९-१०-५९	वामपार	गोत्र १५०
वम्मिका	आभू ७१	वाइज्जो	वाचयेत् १०	वामभाग	७६
वय	व्रज १३७-२२२	वाउकाणी	वत्त ७१	वामसील	७६
वयसाधारणा	१००	वाउजोणीक	वायुयोनिक १४०	वामाई	११३-१२८
वरइ	परिसर्पजाति ६९	वाउव्वातिक	वातौत्पातिक १९२	वामाणि	५७-७५-११०
वरक	धान्य १६४-२२०	वाकपट्टिका	वल्कपट्टिका १८	वामा धणहरा	५८-११२-१२८
वरक	गोत्र १५०	वाकल	वल्कल ८०	वामा पाणहरा	५८-११२
वरद	बृहत् ११४	वागपट्ट	वत्त २३२	वामामास	१३१
वरत	रज्जुविशेष ११५	वागरणजोणि	६-१०	वामाया	७६
वरमज्जण	उत्सव २५५	वागरणपागड	व्याकरणप्रकट ७	वामावट्ट	७६
वराणि	५९-१२६-१२८	वागरणोदधि	१०	वामा सोवहवा	५८-११२
वराहा	गोत्र १५०	वागरणोपदेसो अज्झाओ	७	वामिस्स	व्यामिश्र ९५-१२८
वरियगंडिया अरहस्स	१८२	वाचि वाकेच्चिक ?	१४४	वामोद्दागं णगरं ?	१६१
वरिसधर वर्षधर-कञ्चुकिन्	१५९-१६०	वाणर	पशु २२७	वायुक्काइकाणि	५८
वरुणक	वृक्ष ६३	वाणाधिगत	कर्माजीविन् १६०	वायुणेय	१२१
वरुणकाइय	देवता २०४	वाणियककम्म	कर्माजीविन् १५९	वायुमुत्ता	कण्ठआभू १६३
वलक्ख ?	१४७	वाणीर	गुल्मजाति ६३	वायेज्जो	वाचयेत् १२९
वलभी	१३६-२००	वात	१३६	वायेहिति	वादयिष्यति ८४
वलुयग	आभू ६५	वातकण्ण	देवता २२४	वारक	भाण्ड ६५
वल्यवाणिय	१०४	वातकुरील	उद्दिज्ज २२९	वारमट्टिअ	फल २३८
वल्लिका	कर्णआभू १८३	वातगुम्म	रोग २०३	वारवाण	कञ्चुकप्रकार ६४
वल्लिपरिपल्लक ?	२४०	वातचक्ककमंडल	११६	वारंग	वृक्ष ६३
वल्लिफल	१७७	वातपाण	२२२	वारिणीला	गोत्र १५०
वल्लीतेल्ल	२३२	वातमणा	५८-१२३-१२९	वारिस	वर्षाकालिक १०१
वल्लूर	भोज्य २२०	वातंड	रोग २०३	वारेज्ज	विवाह ९८-१३४
ववस्संति	व्यवस्यन्ति ११५	वातंडअरिस	रोग २०३	वालक ?	१४२-१७०
वसणंतर	वृषणान्तर १२५	वातंदविस	प्राणी ? २२७	वालकल्लि	भोज्य ७१
व(वा)सवेलिका	२४७	वातंसु	उद्दिज्ज २२९	वालमय	आभू १६२-२१५
वसया	वसता ५	वातिक	७३	वालमय	भाण्ड २२१
		वार्तिगण	फल २३८		

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
वालंवा	गोत्र १५०	विक्षिप्तमनस्कता	विक्षिप्तमनस्कता १३५	विणिक्कोलंत	विनिक्कूजत् ? ३६
वालिका	कर्णआभू. ७१	विक्षिप्तविकधा	विक्षिप्तविकथा ४१	विणिद्दुते	विनिष्ठीवति १०८
वालीणा	मत्स्यजाति २२८	विक्षिन्न	क्रिया. ८०-१६८-१७१	विणियत्त	विनिवृत्त ८१
वालुक्क	फल ६४	विक्षिरे	विकीरेत् ४५	विणीयविणअ	विनीतविनय ४
वालुंक	फल २३८	विखिवंत	विक्षिपत् १३५	विणेच्छति	विनत्स्यति ८४
वालुंकी	वृक्षजाति ७०	विगतस्सर	विकृतस्वर ३५	विण्णातूण	विज्ञाय १२७
वावदारी	गोत्र १५०	विगयसंठाण	विकृतसंस्थान १७	विण्णासणद्धयाय	विन्यासनार्थतथा १३०
वावन्नजोणीआमास	१८८	विगलप्पमाण	२१४	विण्ह ?	१९४
वावारक ?	१६७	विगिलते	क्रिया. १०७	वितड्डीक	वितर्दिक ६
वाविद्ध	व्याविद्ध १०८-१३०	विघोलते	क्रिया. ८०	वितत	क्रिया. ११७
वास	व्यास-विस्तार ४८	विच्छिक	वृक्षिक २१०	वितानक	वख ६४-१६४-२०६
वासकडक	वासकटक १८३	विच्छित्त	विक्षिप्त १६८	वित्तीतोस	वृत्तितोष ९३
वासघर	वासगृह २२२	विच्चित्र	विस्तीर्ण १२२-१७१	वित्थत	विस्तृत ११७-१३४-१९०
वासण	वसन १४२	विच्छुद्ध	विक्षिप्त १६८-१७१	विदू	विद्वान् १०
वासंती	पुष्प ७०-१०४	विच्छुद्धगत	५२	विधत्तेसु	क्रिया. १५५
वासिट्ट	गोत्र १५०	विच्छे ?	४१	विधार	विहार २२७
वासुरुल	स्थानविशेष २२२	विजयद्वार	१४४-१४६	विधावति	क्रिया. ८०
वासुल	गोत्र १४९	विजयिका	विजयवती १९८	विधित्तिक	फलजाति ७०
वासुल	पुष्प ७०-१०४	विजाणीया	विजानीयात् १४	विधीचार	वीथीचार २०६
वाहणगत	दोहदप्रकार १७२	विज्जता	देवता ६९	विधीयति	विधीयते १२९
वाहिज्ज	वाहन १९३	विज्जा	देवता ६९	विपज्जय	विपर्यय ४५
विअडसंवुडे	१२४	विज्जा	विद्यात् १८-४६	विपडंत	विपतत् १२२
विआकरे	व्याकुर्यात् ४७	विज्जादेवता	देवता २२४	विपत्तीसंपदा	१०
विइत	विचित्र ६	विज्जाधारक	कण्ठआभू. १६२	विपाडित	विपातित विपादित
विकड्ढुति	विकर्षति ८०	विज्जासत्थाहिबुत्था	देवता २२४	विपाटित	१६८-१७१
विकरण	१४६	विज्जिस्सति	क्रिया. १७५	विपिक्खियविहि	९-१०
विकलका	२३७	विज्जिहिए	क्रिया. ८८	विपेक्खितविधिविसेस	५९
विकंपण	क्रिया. १३०	विज्जिहिति	क्रिया. ९०	विप्पकड्डित	विप्रकर्षित १९५
विकालिका	आभू. ७१	विज्जिहिते	विवक्ष्यति ८१-८५	विप्पकिण्ण	क्रिया. १०८
विकूणंत	विकूणत् ४२	विज्जु	विद्युत् २०६	विप्पघोलति	क्रिया. ८०
विकूणिअ	क्रिया. १८४	विज्जुता	विद्युत् २५४	विप्पजोयित	विप्रयोजित २००
विकूणित	१२३-१३०-१५५	विज्जुयाय	विद्युति ५	विप्पयोगजोणि	१३९
विकूणित	विकवणित १८३	विज्जेहिते	क्रिया. ११०	विप्परिचेट्टते	क्रिया. ८०
विकस	भोज्य १८२	विज्झवित	विक्षिपित विध्यापित १६८-१७१	विप्परिवत्तते	क्रिया. ८०
विकंदित	विकन्दित १५५	विज्झीयति	विक्षीयते २५०	विप्परिसि	विप्रर्षि १०१
विकंदिधपडलं	४४	विट्ठण	वेष्टन १९०	विप्पलोद्वित	क्रिया. १५५
विकंदियाणि अट्टेव	४४	विट्ठिएअ	विट्पक ६	विप्पलोवण	क्रिया. २००
विक्ष	वृक्ष ५	विणट्ट	विनष्ट १६८-१७१	विप्पसारित	क्रिया. १०८
विक्ष	नपुंसक ७३	विणमंत	विनमत् ३३-३७-१३५	विप्पेक्खियाणंगे दस	११-३४
विक्षरइ	विक्षरति ४५	विणयजोणि	१३९	विप्पोसहिपत्त विपुडैषाधि	लब्धिप्राप्त ८
विक्षिखण्ण	विकीर्ण १०८	विणासित	क्रिया. १४८-१६८	विप्पट्टपडित	विप्रष्टपतित ४४
विक्षिखत्त	विक्षिप्त १२-३८	विणासित	विनाशयत् ३८	विभत्तीअ	विभक्त्या ४०
				विभाएज्जो	विभाजयेत् ४४

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
विभावेतूण	विभाव्य ८६	विसतिथिका	कर्माजीविन् १६१	वेणु	विष्णु २२३
विमट्ट	विमृष्ट २१	विसमाणि	५८-१२४-१२९	वेतालिक	वैतालिक १४७
विमरिस	विमर्ष ५७	विसलाइत	विशलाकित ? ८०	वेतिया	वेदिका १५२
विमिलीसेलणालिक ?	५	विसंधित	क्रिया. १६८	वेती	वेदी १३६
विमिसित	दे० प्रकाशित ६	विसाणमत्तिका	वर्णमत्तिका २३३	वेतोपकरण	वेदोपकरण २३९
विमुक्कायं	विमुक्तायाम् २०	विसाह	विशाखा २२३	वेदज्झाई	वेदाध्यायिन् १०१
विपडप्पकास	विकटप्रकाश १३७	विसिण्ण	विशीर्ण ८१	वेदपुट्ट	गोत्र १५०
विपडसंवुडा	५९-१२८	विसेसक	तिलकविशेष ६४	वेधण	वस्त्र ६४
वियागरिज्ज	व्याकुर्यात् ७	विसेसकिया	ओकुंतणक १८३	वेधव्व	वैधव्य १९७
वियागरे	व्याकुर्यात् ४२	विस्सत्थ	विश्वस्त १४३	वेमणंसा	वैमनस्यात् ४३
वियाजिज्जमाण ?	क्रिया. १९८	विस्ससुद्ध	वैश्यशूद्र १०३	वेयाकरण	गोत्र १५०
वियाणक	वितानक ११७	विस्सुअ	विश्रुत १९२	वेलविक	वस्त्र ७१
वियाणिज्जो	विजानीयात् २४	विस्सोदण	भोज्य १७९	वेलंबक	कर्माजीविन् १६१
वियाणीया	विजानीयात् ३३	विहक	विहग १४७	वेलंबित	क्रिया. ८१
वियाणेज्जो	विजानीयात् १९६	विहि	१२१	वेलंबेति	विडम्बयति ८३
वियाणेय	विजानीयात् १६	विझ	पर्वत ७८	वेलातिक	भोज्य १८२
विरुम्भति	विरुणद्धि १९७	वी	अपि ३०	वेलु	जलवाहन १६६
विरुद्धतरक	११८	वीजणी	उपकरण २३०	वेलुमय	२२१
विरोध	विरुह ९	वीणा	वाद्य २३०	वेल्लरि	वृक्षजाति ७०
विरोह	विरुह ९	वीयणी	उपकरण २०५	वेल्लिका ?	१४२
विरोहते	विरोहति (स० ए०) ३३	वीयणीया	व्यज्निका १९८	वेसगिह	वेश्यागृह १३८
विलका	विलया-वनिता ६८-२०२	वीरल्ल	पक्षिनाम ६२-२३९	वेसण	स्थानविशेष २२२
विलंधित	क्रिया. १४८	वीवाह	१४५	वेसमणकाइय	देवता २०४
विलात	वस्त्र १६३	वीस	१२७	वेसिक	वैशिक १६७
विलाल	पशु २३८	वीसतिवग्गा	५९	वेसियागत	वेश्यागत २०८
विलालु	पशु २२७	वीहि	धान्य १६४	वेसेज्जसुद्धेज्जाणि	५७-१०३
विलित	व्रीडित ४५	वुक्खाधिउत्था	देवता २२४	वेसेज्जाणि	५७
विलियंध	वृक्ष ६३	वुख	वृक्ष २२२	वेस्स	वैश्य १०२
विलिंजरा	पुष्प ७०	वुद्धिदार	१४६	वेस्स	द्वेष्य १२०-२५३
विलेपिका	भोज्य ६४-१७९-२४६	वुद्धिदार	१४४	वेस्सखत्त	वैश्यकर्त १०२
विलोकंत	विलोकयत् ४२	वुद्धिजोणि	१३९	वेस्सजोणि	१३९
विल्लरी	पक्षिणी ६९	वुप्पसुत्त	कण्ठआभू. १६३	वेस्सप्पकतिओ	१०१
विवट्टणग	भाण्ड १९३	वूहित	बृहित १४८	वेस्सबंभ	१०२
विवरा	५८-१२४-१२९	वेइया	वेदिका ३१	वेस्सवण	देवता २०५
विवाडित	वस्त्र १६३	वेइल्लपुप्फिका	विचकिलपुष्पिका १०४	वेस्सेयाणि	१०२
विवाडेंत	विपादयत् १४४	वेकच्छा	आभू. ६५	वेस्सोसण्ण	१६१
विवाडेंती	विपादयती १६९	वेकंतकलोह	धातु २४८	वेहायस	१९२
विवादजोणि	१३९	वेजयंती	वृक्षजाति ७०-१४६	वेंटक	अङ्गुलिआभू. १६३
विवाह	उत्सव २२३	वेजयंती	पुष्प ७०	वोकसित	व्यपकृष्ट १४८
विविय ?	क्रिया. १९१	वेडुण	वेहन १३४-२४२	वोक्कितक	भोज्य १८२
विवेक्खित	विप्रेक्षित २०५	वेडसी	वृक्ष ७०	वोमीक	सर्पिणी ६९
		वेढक	आभू. ६५-११६	वोसट्टमाण	विकसत् १४८

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
स		सण्णरोध		सन्निरोध	३८
सअंसूग	साश्रुक ३५	सण्हमच्छ		मत्स्यजाति	६३
सक	स्वक १२३	सण्हाणि	५९-१२४-१२८	सबरी	शबरदेशजा ६८
सकड	वाहन १६६	सत	१२७	सबल	१५३
सकडचक्र	शकटचक्र २४२	सतधोत	१०४	सबुद्धिरमणाणि	१२८
सकडपट्टक	११६	सतपत्त		सभंडणमुल्लक	सभण्डनोल्लाप ? ४०
सकडी	वाहन ७२	सतपत्त	पक्षिनाम ६२	समखेताणि	२०७
सकडीक	वाहन ७२-१६६	सतपदि	पुष्पजाति ६३	समगिरेस ?	२३५
सकपरक्का	५८	सतप्याय	बहुपदा २२७	समगुण्हक	भोज्य ७१
सकलदसद	वस्त्र १६३	सतवगे	त्रीन्द्रियजन्तु २६७	समजुंजं	समयुज्जन् (?) १५
सकविगतगोत	गोत्र १५०	सतविसय	५९	समणिम्मट्ट	समनिर्मृष्ट २३
सकस्स	स्वकस्य २४	सतसहस्स	शतभिषग् २०८	समणुवत्तति	समनुवत्तति १९५
सकाणि-णि	५८-१२८	सतसहस्सवगे	१२७	समतिच्छिअ	समतिक्रान्त २५८
सकित (कसित)	गोत्र १४९	सता	५९	समतुंव	परिपूर्ण ११४
सकुचिका	मत्स्यजाति २२८	सतीमता	सदा ५६	समयमंडल	११५
सकुणि	पक्षिणी ६९	सतीरक	स्मृतिमता २५	समल्लिकंति	५५
सकृत	सत्कृत ३७	सत्त	सिक्कक ६६	समंछणी	समन्थनी ७२
सक्कुलिका	भोज्य १८२	सत्तक	लक्षण १७३	समागमदार	१४४-१४५
सगड	शकट २६	सत्तखुत्तो	१२६	समाणए	समापयेत् ५
सगडी	शकटी २६	सत्तमिक	सप्तकृत्वः १८४	समाणक्खराणि	१५३
सगलिकारस	२२१	सत्तरि	९७	समाणयंतो	सम्मानयन् ३७
सगुण	शकुन १४५	सत्तरिवग्गा	१२७	समाणि	५८-१२४-१२८
सगोता	गोत्र १५०	सत्तिवण्ण	५९	समाणित	क्रिया १६८-१७०
सच्चपडिहार	९	सत्तुपिंडि	५९	समाधिअण	क्रिया १९३
सज्ज	वृक्ष ६३	सत्थंधिवुत्था	वृक्ष ६३	समामट्ट	१२१
सज्जलस	रस २३२	सत्थाण	सत्कुपिण्डी ७१	समाय	उत्सव १३४-१४३-२२३
सज्जा	शय्या १०९	सत्थावरण	देवता २२४	समारोधण	समारोहण १९३
सज्जिज्जमाण	सज्जमान १९८	सत्थिआयमणी	संस्थान २१८	समालभणक	क्रिया १७०
सज्झ	पर्वत ७८	सत्थिक	शस्त्रावरण २०१	समास	उत्सव ९८-१२१
सट्ठि	१२७	सत्थिक	भाण्ड २१४	समासज्ज	समासाद्य ५७
सट्ठिवग्गा	५९	सत्थिक	आसन ६५	समासेयणक	समासेचनक ९८
सडिका	पक्षिणी ६९	सत्थिण्णा ?	स्वस्तिक १४७	समिज्झतु	समिध्यताम् ११२
सड्ढकभोयण	श्राद्धभोजन १८०	सत्थिसंघातमंडल	आभू. ६५	समिद्धजोक	समृद्धयोग २४८
सडिक्क	शडिक्क ६७	सदिवारित	निपन्नप्रकार ५२	समिद्धविहि	समृद्धविधि ९-१०
सण	गुल्मजाति ६३	सद्दया	११६	समुज्ज	समुद्यत (?) १५-३६
सणिच्छर	शनैश्चर २१०	सद्दया	क्रिया २००	समुज्जत	समुद्यत (?) १४३
सणिचर	शनैश्चर १०४-२१०	सद्देया	५८-१२३	समुज्जुग	समर्जुक ३४
सण्णाखंधावार	सनस्कन्धावार १३९	सन्निकासिय	गोत्र १५०	समुद्दकाक	पक्षी २२५
सण्णाहपट्टक	६४	सन्निवेस	उद्भिज्ज २२९	समुद्दकुमार	देवता २२४
सण्णिकुट्टित	क्रिया १५२	सप्पक	५८-१२३-१२८	समुद्दकुमारी	देवता २२४
सण्णिरुद्ध	क्रिया ११५	सप्फ	२०१	समुद्दवल्लो	वृक्षजाति ७०
			बाल १४५-१७०	समुद्दावक ?	२०५
			पुष्प ६३	समुपलविखअ	समुपलक्ष्य १३
				समुम्मट्ट	समुन्मृष्ट २२
				समुस्सवण	समुत्सवन १९३

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
समोखिण्ण	समुत्क्षिप्त १९५	सव्वचलामास	१३०	संकोसक	नलुलिकाप्रकार २२१
समोवयितगत	१११	सव्वट्ठक	कृमि २२९	संख	द्वीन्द्रियजन्तु २६७
सम्मई	सन्मति-वीरजिन १०	सव्वणीहारगत	१६८	संखअ	संस्कृत १७६
सम्मज्जित	सम्मार्जित २१	सव्वतोभद	आसन ३१-६५	संखकार	कर्माजीविन् १६०
सम्मट्ठ	सम्मृष्ट २४	सव्वत	सर्वत्र १५८	संखचुण्ण	१०४
सम्मिका	कर्णआभू १८३	सव्वत्थीक ?	३०-४८-५१	संखणग	द्वीन्द्रियजन्तु २६७
सम्मोई	सम्मुद् १२-४०-१११	सव्वत्थीभावप्पदेसदंसक	५७	संखणा	उद्भिज्ज २२९
सम्मोदी	सम्मुत् १९८	सव्वपल्हत्थिका	सर्वपर्यस्तिका १८	संखणाभि	१०४
सम्मोयिआ	सम्मुद् ३९	सव्वपादोवक	सर्वपादोषक १४२	संखता	संस्कृता २२०
सयओ	सयतः ६	सव्ववाहिरबाहिर	८९	संखभंड	२१५
सयणगत	दोहदप्रकार १७२	सव्वरंगावचरगत	१३०	संखमय	आभू १६२
सयणगिह	शयनगृह १३८	सव्ववेद	गोत्र १५०	संखमल	१०४
सयणपाली	कर्माजीविनी ६८	सव्वसज्जीवपरामास	१३०	संखवल्लय	१०४
सयणावत्थद्धरत	सयनापस्तब्धरत १८४	सव्वसप्पसु	१५५	संखवाणियक	शङ्खवाणिजक १०४
सयसाह	शतशाख ९	सव्वोधिजिण	१५८	संखा	अङ्ग ७७-१२४
सयसाहस्समुख	शतसहस्रमुख २	सव्वोसहिपत	सर्वावधिजिन १	संखागवलमय	भाण्ड २२१
सयसाहस्ससाधि	शतसहस्रशाखिन् २	सस	सर्वौषधिप्राप्त ८	संखागोत	गोत्र १५०
सयाहिजुत्त	सदाऽभियुक्त १३	ससपतिकाय	पशु २३८	संखावम्माणि	१२८
सयितव्वजोणि	१३९	ससबिंदुक	सस्वपतिकया १८५	संखावामा	५८-११२
सर	लक्षण १७३	ससबिंदुकिणी	फल ६४	संखिक	१०४
सर	स्वर १५३	ससित	वृक्षजाति ७०	संखेणा	गोत्र १५०
सरक-ग	भाण्ड ६५	ससिस्स	क्षसित १४८	संगमजोणि	१३९
सरगपतिभोयण	भाण्ड १९३	सस्सकचुण्णक	सच्छिष्य ५	संगमत्तिका	वर्णमृत्तिका २३३
सरजालक	आभू ६५	सस्सप	२३३	संगमित	सङ्गमित ४१
सरंट	शरट २२७	सस्सयित	धान्य १६५	संगलिका	साङ्गरिका ७१
सरसंपण्ण	१७३	सस्सावित	संशयित १९९	संगलिकावत्थ	सिङ्गिका १६६-१७९
सरस्सती	देवता २२३	सहकारस	क्रिया १३३	संघतण	संहनन लक्षण १७३
सरिक	भाण्ड ७२	सहत्थकारी	२३२	संघमालिका	आभू ७१
सलार्कजणी	शलाकाज्जनी ७२	सहवरपुप्फ	स्वहस्तकारी ९८	संघाड	जलवाहन १६६
सलिलयत्ता	सलिलयात्रा १४८	सहस्स	पुष्प ६३	संघायमंडल	११६
सल्लईहि	सल्लकीभिः १७७	सहस्सदंत	१२७	संचित	क्रिया १४८
सल्लकत्ता	कर्माजीविन् १६१	सहस्सदारजुत्त	मत्स्यजाति ६३	संजुकारक	कर्माजीविन् १६०
सल्लिका	श्यालिका ६८	सहस्सपत्त	सहस्रद्वारयुक्त २	संज्झडित	संशोर्णः ११८
सल्ली	श्यालिका २१९	सहस्सवग्गे	पुष्पजाति ६३	संज्झादंसण	२०६
सवणगिह	सवनगृह १३८	सहस्सवागरणा	५९	संठाण	लक्षण १७३
सवल्लहिक	स्थल-जलचर २२७	सहिगिणी ?	सहस्रव्याकरणा ८	संडिल्ला	गोत्र १५०
सवाहत	क्रिया २०२	सहितमहका ?	६८	संड	७३
सव्वअज्जीवपरामास	१३०	संकधा	१५३	संतत्थ	संत्रस्त २५४
सव्वअसकारित	क्रिया १३०	संकम	सङ्कथा ४०	संताणका	क्षुद्रजन्तु २२९
सव्वअसारगत	१३०	संकर	१३६	संतिट्ठिस्सति	संस्थास्यति १७६
सव्वगोसिधण्ण	१६६	संकुचणुद्धित	७३	संथडिय	संस्तृत ११६
			सङ्कोचनोत्थित ४५	संथित	संस्तृत ११६

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
संज्ञ	वाहन १९३	संस्तरणगिह	१३८	सालयगय	स्वालयगत १८१
संदर्भाणिका	यान ७२-१६६	संसरित	क्रिया १४८	सालंकायण	गोत्र १५०
संधाणिदंसण	सन्ध्यानिदर्शन १५५	संसावित	क्रिया १८६	सालाका	पक्षिणी ६९
संधावति	क्रिया ८०	संसिञ्जमाण	संशीयमान १९८	सालाकालिक	भोज्य १८२
संधिपाल	कर्माजीविन् १५९	संहित	क्रिया ११५	सालाकी	कर्माजीविन् १६१
संधिवाल	कर्माजीविन् ८८	सा	स्यात् ११-२२-३६-४७	सालि	धान्य १६४-२१९
संधी	१३६	साकरस	२२०	सालिका	जलवाहन १६६
संपडिका	आभू ७१	साकिजा	गोत्र १५०	सालिभ	पशु २२७
संपडिपेक्खिता	सम्प्रतिप्रेक्ष्य ४१	साखानगर	१६१	सालिभज्जिय	भोज्य १८२
संपदा	साम्प्रताः १८७	सागरस	२२१	सालिमालिणी	देवता ६९
संपदाकालिय	१९०	सागरोवम	कालविशेष २६५	सालिया	पक्षिणी ६९
संपभिण्ण	सम्प्रभिन्न १५४	साट्टक	शाटक १८	सास	कर्ण आभू १८३
संपवेदये	सम्प्रवेदयेत् १४-१२६	साडक	बाल १६९	सासक ?	१४७
संपवेदेज्जो	सम्प्रवेदयेत् ५०	साडक	वस्त्र ६४-१७०	सासवकूर	भोज्य ६४
संपसस्सते	सम्प्रशस्यते ३९	सातिक	मायाप्रकार २६३	सासवतेल्ल	२३२
संपादेत्	सम्पादयत् ३८	सातिज्जित	स्वादित १७०	साहवो	साधवः ५
संपावित	सम्प्राप्त १७६	साधारणजोणि	१३९	साहाअवस्सितरत	१८४
संबाधंतरातिमास	१८६	साधुजुत्त	साधूद्युक्त ४	साहावामे	११२
संबुक्क	द्वीन्द्रियजन्तु २६७	साधूणिज्ज	साधुयोग्य ५	साहिक	त्रीन्द्रियजन्तु २६७
संभिक	श्लेष्मरोग २०३	सापस्सत	सापश्रय ३१	साहुसंपन्न	साधुसम्पन्न ४
संभिन्नसोय	सम्भिन्नश्रोतस्-लब्धि ८	सामकण्हाणि	५७-९२	सिण्णिअ ?	१९५
संभुच्चविजय	संभूयविजय २००	सामकाल	१११	सिकुत्थी	सर्पिणी ६९
संल	श्यालक २१९	सामली	१५३	सिकुवलिका	प्राणी २३७
संलापजोणी अज्झाय	१६७	सामवेद	गोत्र १५०	सिकूवाली	सर्पिणी ६९
संलावजोणीओ	संलापयोनयः ४०	सामंत	सामन्त-समीप ५	सिगिला	सर्पिणी ६९
संलाववन्दित	संलापवन्दित ३९	सामाग	धान्य १७८	सिगिलि	प्राणी २३७
संलावविधिपडलं	४१-४८	सामाणि	५७-१५३	सिगुक्कतेल्ल	२३२
संलावितविधिविसेस	५९	सामाणिय	देवता २०५	सिचकत	वस्त्र १४१
संलाविताणि	११-१३८	सामासवेलिका	२४७	सिज्जति	सीदति ५६
संलावियविहि	९-१०	सामिद्धि	१३०	सिण्हक	वृक्ष ६३
संवच्छर	कर्माजीविन् १६०	सामेलक्ख	कर्माजीविन् १६०	सिता	स्यात् २८
संवत्तमणोरध	संवृत्तमनोरथ १२१	सामोई	सम्मुद् ४०-१११	सितीयं	दे० निःश्रेण्याम् ३१-३३
संवलिका	नकुलिकाविशेष १७८	सामोवाताणि	६८-९१-१२८	सित्थमच्छक	मत्स्यजाति २२८
संविजाणिया	संविजानीयात् ३२	सार	लक्षण १७३	सिद्ध	१७७
संविताणक	पुष्प ६४	सारस्सत	देवता २०४	सिद्धत्थिक	आभू ७१
संविद्धविधी	१०	[सारा] सारो अज्झातो	२१३	सिद्धत्थिका	भोज्य १८२
संविधाणक	१९३	सारिकोपकरण	१३४	सिद्धयत्त	सिद्धयात्र १४७
संविभावये	संविभावयेत् ३६	साल	वृक्ष ६३	सिप्पगिह	शिल्पगृह १३६-१३७
संविमट्ठाणि	२२-१२१-१२६	सालका	पक्षिन् २३८	सिप्पपागतं	कर्माजीविन् १६१
संवुट्टिका	कृमि २३०	सालफलरस	२३२	सिप्पिका	द्वीन्द्रियजन्तु २६७
संवेञ्चित	क्रिया ११५			सिबिका	यान ७२-१४६-१६६-१९३

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
सिब्भ	श्लेष २०३	सीकाहारक	कर्माजीविन् १६१	सुज्जुगमवणपडिभागा	५८
सिरिकंठ	पक्षिनाम ६२	सीकुंडी	मत्स्यजाति २२८	सुज्जोदअ	सूर्योदय २४५
सिरिकंसग	भाण्ड ६५	सीडा	फल २३८	सुज्झिय	शुद्धित ६
सिरिकुण्ड	कुण्ड ६५	सीत	१२४	सुट्टियम्हि	सुस्थिते १७
सिरिधर	२२२	सीतपेटुक	कर्माजीविन् १६०	सुट्टियायं	सुस्थितायाम् १८
सिरियक	गुल्मविशेष १४१	सीतभोयण	१८०	सुणवारक	रोग २०३
सिखिच्छ	आभू ६५	सीतल	७३	सुणहि	चतुष्पदा ६९
सिखिवटुकसद्	१७७	सीतला	५८	सुण्णिक ?	९८
सिखिवटुक	रस २३२	सीता	अङ्ग ६६	सुण्हा	स्नुषा २८
सिखिवटुक	उद्भिज्ज २२९	सीपिजुला	पक्षिणी ६९	सुतर्वितोहि	सुतपद्भिः ४
सिरी	देवता २०५	सीमंतक	अङ्ग ७६	सुतवी	श्रुतविद् ५६
सिरीस	वृक्ष ६३	सीमंतिका	सीमा २१४-२४१	सुतीसोल	शुचीशील १९४
सिरीसमालिका	आभू ७१	सीथा	शिबिका २६	सुतीसोपक	२३९
सिरीसिव	सरीसृप १९१	सीवण	फल ६४-२३८	सुत्तक	आभू ६५
सिरोमुहपरामास	२६	सीवण्णी	श्रीपर्णीवृक्ष ७०	सुत्तकिय	सूत्रकृत १
सिरोमुहामास	१३२	सीसमय	आभू १६२	सुत्तगुणविभासा पडलं	५६
सिलातल	शयन ६५	सीसवत्तिया	वृक्षजाति ७०	सुत्तवत्त	कर्माजीविन् १६१
सिलापट्टपासाणा	२३४	सीसारक्ख	कर्माजीविन् १५९-१६०	सुत्तवाणिय	कर्माजीविन् १६०
सिलिध	वृक्ष ६३	सीसावक	शीर्षआभू २४२	सुत्तिका	शुक्तिका १७३
सिलोच्चय	पर्वत ७८	सीसेकरण	वत्स १६४	सुत्तेरक ?	२३९
सिवाणि	५८-११३-१२८	सीसोपक	शीर्षआभू १६२	सुत्थियागत	स्वस्तिकागत ४१
सिविण	स्वप्न १८८	सीहक	बाल ? कोमल ? १४५	सुद	शूद्र १०३
सिक्खणी	अङ्ग ६६	सीहविजंभित	सिंहविजृम्भित ४७	सुदखत्त	शूद्रक्षत्र १०२-१०३
सिस्सजोणि	१३९	सीहस्सभंडक	आभू ६४	सुदजोणि	१३९
सिस्सोपक्खावण	५	सुउत्तम	श्रुतोत्तम १	सुदज्जोसिय	१६१
सिह	शिखा ६६	सुकुमालाणि	५९-१२४	सुदबंभ	१०२-१०३
सिगक	बाल ९७-१४२-१६९	सुक	वर्ण १०५	सुदवेस	शूद्रवैश्य १०३
सिगमय	भाण्ड २२१	सुकपडीभाग	शुक्लप्रतिभाग १०३	सुदेज्जाणि	५७
सिगारवाणिया	कर्माजीविन् १६०	सुकपण्डुपडीभागा	१२८	सुदोसण	१६१
सिगालक ?	२३८	सुक्कल	शुष्क ? ११४	सुद्धरजक	कर्माजीविन् १६०
सिगि	नकुलिकाविशेष १७८	सुकवण्णपडिभागा	५७-१०४	सुद्धवसिअ	शुद्धवसितिक ७
सिगिका	लघ्वी बाला ६८	सुकामास	२०२	सुद्धसुतसाम	९१
सिगी	शम्बा १६६	सुक्किल	शुक्ल १०४	सुद्धाकारी	९०
सिघाडक	भोज्य १८१	सुक्ख	शुष्क ४१	सुद्धामास	१३०-१३३
सिघाडक	शृङ्गाटक-मार्ग १३७-१८४	सुक्ख-मलाणसु	शुष्क-म्लानयोः १४	सुपतिटुक	भाण्ड ६५
सिदीवासी	वृक्षजाति ७०	सुक्खामास	१६७	सुप्प	शूर्य १४२
सिधुवार	गुल्मजाति ६३-१०४	सुगंधाणि	५८-१२२-१२८	सुप्पतिभाणवं	सुप्रतिभानवान् ५६
सिवितालित ?	क्रिया १७१	सुगंधामास	२०२	सुभिक्षदुब्भिक्ष	सुभिक्षदुर्भिक्ष ७
सीउक	आभू ६४	सुधरा	गोत्र १५०	सुभिक्षयोगक्खेम	१६२
सीउण्हाणि	१२८	सुचिम	शुचिमत् ९०	सुमंगल	द्वीन्द्रियजन्तु २६७
सीकवल्लोकी	वृक्षजाति ७०	सुज्जुगम	वर्ण १०५	सुयवेद	गोत्र १५०
				सुरगोपक	शुद्रजन्तु २३८

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
सुराधरित	कर्माजीविन् १६०	सेड	श्वेत १५३	सेदकंठक	गुल्मजाति ६३
सुरादेवी	देवता २०५	सेडककंद	१०४	सोकत्त	शोकार्त १२१
सुरालायुल्लोधिकमच्छक ?	२०९	सेडकणवीर	श्वेतकर्णिकार १०४	सोणिय	शोणित १७७
सुवण्णक	सिक्क १८९	सेडकफलिका	श्वेतफलिका १०४	सोणियओघायण	श्रोणिउपघातन १८५
सुवण्णकाकणी	सिक्क ७२	सेडगहभक	श्वेतगर्दभक चन्द्रविकाशिकमल	सोणिसुत्त	आभू. ६५
सुवण्णकार	कर्माजीविन् १६०		१०४	सोणीआ	श्रोणिका ८५
सुवण्णखयित	धातुवस्त्र २२१	सेडि	सेटिका १०४	सोतगुल	गुडप्रकार १७६
सुवण्णखसित	धातुवस्त्र १६३	सेडिका	पक्षी २२५	सोतसा	श्रोतसा ५६
सुवण्णगुंजा	७२	सेडिल	१५३	सोतिया	गोत्र १५०
सुवण्णजूधिया	पुष्प ७०	सेडीका	पक्षी २३८	सोदरिय	सोदरिक १६८
सुवण्णपट्ट	धातुवस्त्र १६३-२२१-२३४	सेणा	पक्षिणी ६९	सोपरत्त	२२१
सुवण्णपडिपोगल	१४२	सेणायपतिणी	सेनास्वामिनी ६८	सोमकाइय	देवता २०४
सुवण्णमासक	सिक्क ६६-२३९	सेणिका	गोत्र १५०	सोमणाम	१०१
सुवण्णाधियक्ख	सुवर्णाधिपाख्य १५९	सेणही	पक्षिणी ६९	सोमपा	१०१
सुवर्णक	कर्माजीविन् १६०	सेत	वर्ण १०४	सोमपाइ	सोमपायिन् १०१
सुवरी	चतुष्पदा ६९	सेतगुलिका	उद्भिज्ज २२९	सोमाण	सोपान ३१-३३-१३६
सुविण	स्वप्न १	सेतणिप्फाव	धान्य १६५-२३२	सोमाणि	५९-१२५-१२८
सुविणो अज्झायो	१८६-१९१	सेततिला	धान्य १६४-२२०-२३२	सोमिचिकी	वस्त्र ७१
सुसाणदेवता	देवता २०६-२२४	सेतवीही	धान्य १६४	सोवण्णमय	आभू. १६२
सुस्सवमाण	शुश्रूषमाण ५	सेतसासय	धान्य २२०	सोवण्णसुत्तग	आभू. ६५
सुहस्सहा	आसनविशेष १७	सेतसुरा	सुग १८१	स्वरपिता	९
सुही	सुहत् १९	सेतस्सतरा	गोत्र १५०	स्वरविज्जा	९
सुंकसाला	शुल्कशाला १३८	सेतुकम्म	१३८	स्वरान्त	स्वरान्त १५१
सुंकसालिय	शुल्कशालिक १५९	सेद	श्वेत २१८	स्वाहाडंडपडीहार	८
सुंसुमारा	मत्स्यजाति ६२-२२८	सेदणिम्मज्जण	क्रिया १४८	स्सा	स्यात् २५
सुंसुमारी	परिसर्पजाति ६९	सेदपरामास	१४६		
सूकमिदा	कृमि २३०	सेदसाड	श्वेतशाटक ६४		
सूकर्मिडा	कृमि २२९	सेधक	पशु २२७		
सूकरिका	वृक्ष ? २३८	सेलबिलासया	२२७		
सूचिकाणि	१२६	सेलमय	धातुवस्त्र २२१		
सूचीका	हस्त आभू. १६३	सेलुफल	२३८		
सूणावावत	सूनाव्यापृत १५९	सेलूडक	फल ६४		
सूतमागध	कर्माजीविन् १६०	सेवणारत	१८३		
सूय ?	३९	सेवपूति	वृक्षजाति ७०		
सूयोणि	५९-१२८	सेवालय	सेवालक २१८		
सूराइ	५९-१२६	सेवितविधिविसेस	५९		
सूरुग्गमिक	वर्ण १०५	सेवितविधासापडलं	५६		
सूवेदण	सूपोदन भोज्य १९७	सेविताणि	११-५३-१३८		
सेज्जा	शय्या २६	सेवियविहि	सेवितविधि ९-१०		
सेट्टिणो	गोत्र १५०	सेसा	शेषा १४७-१६८		

ह

काष्ठबन्धन	११५
हनु	११४
हनुके	१२७
हस्त आभू.	१६३
हस्त आभू.	६५
हस्त आभू.	६५
हस्त आभू.	६५
हस्तसंलग्न	४१
त्रीन्द्रियजन्तु	२६७
कर्माजीविन्	१५९
कर्माजीविन्	१६०

शब्द	पत्र	शब्द	पत्र	शब्द	पत्र
हत्थिअधिगत	हस्त्यधिकृत १५९	हंदोलक	हिंदोलक ८०	हत्थिय	स्थल-जलचर २२७
हत्थिक	आभू ६४	हातु	धातु ६	हृदयत्ताणक	आभू ६५
हत्थिखंस	कर्माजीविन् १६०	हार	कण्ठआभू ६५-१६२	हृदयाणि	५८
हत्थिमच्छा	मत्स्यजाति २२८	हारकूडग	धातु २३३	हिमगिह	१३६-१३७
हत्थिमहामत्त	कर्माजीविन् १६०	हारकूडमय	धातुवस्त्र २२१	हिमवन्त	पर्वत ७८
हत्थिमैठ	कर्माजीविन् १५९	हारावलि	आभू ७१	हिरण्णपडिपोग्गल	१४१
हतु(नु)मूलजिह्ममूलीय	१५३	हारित	क्रिया १४८	हिसेत ?	क्रिया १४८
हयगिह	हयगृह १३६-१३८	हारित	गोत्र १४९-१५०	हिगुलकप्पभ	वर्ण १०५
हरित	चतुष्पद ६२	हारीहड	पक्षिनाम ६२	हिगुलकवण्णपडिभागा	५८
हरित	वर्ण १०५	हारीडणिप्फाव	धान्य १६५	हिछाघोडा	वृक्षजाति ७०
हरितवण्णपडिभाग	५७	हाल	गोत्र १४९	हुतासिणा सिहा	हुताशनीशिखा ९१
हरितापस्सत्त	हरितापश्रय ३०	हालक	परिसर्पजाति ६३	हुंडित	क्रिया १४८
हरिताल	१४१	हासहासित	३५	हेट्टामुह	अधोमुख १४३
हरितालवण्णपडिभागा	५८	हिज्जो	ह्यः २३८	हेट्टिम	अधस्तन १११
हरितालसमप्पभ	वर्ण १०५	हिड्ड	हृष्ट १२-१४७	हेट्टिमजोणि	१४०
हरितावस्सअ	हरितापश्रय २७	हिड्डता	हृष्टता १३५	हेडित	क्रिया १४८
हसितविधि	९-१०-५९	हितयाकूत	हृदयाकूत ११८	हेतिबद्ध	२१६
हसितविभासा	३६	हितयागूत	हृदयाकूत २४१	हेरण्णिक	कर्माजीविन् १६०
हसियाणि चउद्दस	११-३५	हितयाणि	हृदयाणि ११८	हेलण्डाय	४८
हसीयमाण	हसमान ३५	हितयाणुम्मज्जिताणि	१२८	हेलणत्थाय	हेलनार्थाय ४२
हसुडोलक	आभू ६५	हितयामास	१३०	होक्खति	भविष्यति ८४-९०-९१
हस्सा किंचि दिग्घा	५८	हित्यत	व्रस्त, लज्जित ४१	हस्साणि	११५-१२८
				हस्सा य किंचि दिग्घा	११५

तृतीयं परिशिष्टम्
अंगविज्जान्तर्गतानां प्राकृतधातुप्रयोगाणां सङ्ग्रहः

धातुरूपम्	अ	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्
अकोडित			अपकङ्कित	१६९	अभिवंदहे	६
अकर्मन्ती		१४८	अपकङ्कित	१६९	अभिवंदिरुण	६
अक्खारित		१६९	अपक्खित	१६	अभिसंगत	१६८
अक्खोडित		१४८	अपक्खुद्ध	१६९-१७१	अभिसंश्रुत	१७०
अग्घायते		२५१	अपणत	१६९-१७१	अभिहट्ट	३७-१३०
अग्घाहित		८३-१०७	अपणामंत	३७	अलंकरमाण	३८
अग्घाहित		८४	अपणामित	१७१	अलंकरेति	८३
अच्चल्लीण		८७	अपणासण	१४८	अलंकरेहि	८४
अच्छाइत		१३०	अपणासित	१६९	अलंकित	१३०-१६८
अच्छादण		१९३	अपत्थद्ध	१३५	अल्लीण	८७
अच्छायित		१६८	अपमज्जित	१११-१७६	अवकङ्कित	१०८
अज्जिहिते		८४	अपमट्ट	१७१-१७६	अवकङ्कित	१०८
अज्झावए		३	अपलिखित	१७१	अवकरिसेत	३७
अज्झेणणासित		१४८	अपलोलित	१६९-१७१	अवकिण्ण	१०८
अणभियित		३०	अपवट्टित	१७१	अवक्खित	१६-३८
अणवत्थद्ध		१३५	अपवत्त	१७१	अवच्चत	१०८
अणुगंतूण		८०	अपविट्ट	१७१-२००	अवज्जेयमाण	१९८
अणुतुरित		२३५	अपसारित	१६९-१७१	अवणामित	२१७
अणुपविट्ट		८७	अपहित	१६९-१७१	अवणेत	३८
अणुलित		१३०-१६८	अपंगुत	१९८	अवमट्ट	२१५
अणुलेवण		१९३	अपावुणंत	३८	अवमाणित	१०८
अणुवक्खइस्सामि		७	अप्फालित	१४५	अवयक्खंत	४२
अणुवक्खाइस्सामि		७	अप्फोडित	१६९-२१५	अवलोकित	१३०
अणुवक्खामि		१	अब्भंगण	१९३	अवलोणित	१७६
अणोक्कंत		४१	अब्भुक्कदित	१०६	अवलोकित	२१५
अण्हेते		१०७	अब्भुत्तिट्टित	१४१	अवसक्कंत	१३५
अतिक्कंत		८१	अब्भुत्थित	१४५-१९८	अवसक्कित	१९८-२१७
अतिगत		१०७	अब्भुप्पवति	१४१	अवसक्किय	१६
अतिवत्त		८१	अभिजाणइ	४	अवसरित	१३०
अतिसरित		८६	अभिज्जिय	१९२	अवसारित	१९८
अतिहरित		१०७	अभिणंदित	१६८	अवस्सित	१९८
अधिज्जमाण		१४७	अभिणिदिसे	१४	अवंगुत	२४५
अधिवसिस्सति		१९२	अभिणिस्सित	१५२	अवाहणंत	३८
अधीयता		५	अधिणीयमाण	१९८	अव्वोकङ्क	८६
अधीयाण		५६	अभिनिदिसे	८९	अस्साएति	८३
अन्नोसक्कित		१४८	अभिमट्ट	१३०	अस्सात	१७६
अपकङ्कित		१४४	अभिमिल्लंत	३४	अस्सादेहि	८४
अपकङ्कित		१६९	अभिवट्टित	३४	अस्सायेति	१०७

धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्
अस्सावित	१३३-१८६	आबधति	८३	उज्झंत	१४८
अहिजुत	१३	आमसंत	१६९	उज्झित	१५२
अहिधावति	८०	आमसित्ता	१७०-२५७	उज्झीयति	२५०
अहियाण	१	आरुभंत	१३५	उद्धित	१११
अंदोलंति	८०	आलद्ध	७९	उद्धित	१३३
आ		आलिगित	१४८-१९३	उद्धित	१३५
आउंडित	१९८	आलोकित	१३०	उडुज्झिहिसि	१९२
आकुंचित	१५५	आवातंत	३६	उण्णत	१११
आकुंडित	११५	आविद्ध	१५५	उण्णमंत	३३-१३५
आकोडित	१७१	आविधिहित	८४	उण्णामित	१६८
आगच्छते	८४	आवेदिय	२	उत्त	३८-८०
आगच्छतो	३६	आसज्जित्ता	२५१	उत्तरंत	१३६
आगण्णेति	१०७	आसते	८३	उत्थत	१४८
आगत	१०७	आसाइत	१०७	उत्थित	१६८
आगमिस्सति	६०-८३	आसासण	१४८	उदाहरिस्सामि	४३
आगमिस्सं	१०८	आसित	२४३-२५५	उदीरण	१४८
आगमेहिति	८४	आहारित	१७६	उदीरंत	१०८
आगम्म	१९२	आहारेति	८३-१०७	उदीरंति	७०
आगहिति	८४	आहारेमाण	१४४	उद्वित	१४८
आगरेति	१०७	आहित	२१	उहुत	१४८
आचिकखति	८३-१०७	आहिंचति	८३	उद्धचित	१४७
आच्चेयणीय	१४७	आहु	३६	उद्धीरमाण	१९८
आहत्त	२३५	उ		उद्धुज्जमाण	१४७
आणंदित	१४७	उक्कड्ड	८६	उपकड्डंती	१६९
आणित	१०७	उक्कड्डति	८०	उपकड्डित	१६८
आणीय	१०७	उक्कड्डिय	१०८	उपकड्डित्ता	१६९
आणेति	८३	उक्कं(उक्तं)	१	उपगूहित	१६८
आतिअ[ति]	१०७	उक्कंदित	१४८	उपधातित	१४८
आतिगंछिति	८४	उक्कासित	१७६-२१५	उपणत	१६८-१७०
आदिसे	६६-८३	उक्कूणित	१४८	उपणद्ध	१६८-१७०
आधायित	२१५	उक्खर्णत	३८	उपणामित	१६८
आधारइत्ता	८४	उक्खलित	२५४	उपदासित	१६८
आधारण	१०-८०	उक्खंभमाण	४२	उपलद्ध	१६८-१७०
आधारतित्ता	८१	उक्खित	१११-१७१	उपलोलित	१६८-१७०
आधारयइ	११	उग्गहित	१४८-१७१	उपवत्त	१६८-१७०
आधारये	८०	उग्घाडित	१४८	उपवप्पित	१६८
आधारिज्जमाण	१९३	उज्जते	६८	उपविद्ध	१७०
आधारित	१४९	उच्चंपति	१०७	उपवेसण	१४८
आधारे	१२७	उच्चारित	१३२-१७०	उपसद्ध	१४८
आधुत	८०	उच्छंदण	१९३	उपसरित	१७०
आपडित	१७१	उच्छाडित	१०६	उपसारित	१६८
आबद्ध	१६२	उच्छुद्ध	३०-१७१	उपसेवण	७९

धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्
उप्यज्जति	२४६	उवसक्ति	१८४	ओतिण्ण	३३-१७१
उप्यज्जते	८३	उवादिण्ण	२१७	ओधावति	८०
उप्यज्जिहिति	८४	उवेडु	१८४	ओधुत	८०-१४४
उप्पुत	३७	उवेसंत	१३५	ओमत्थित	२१५
उब्धिण्ण	२४५	उव्वट्टण	१९३	ओमथित	१६९
उम्मज्जित	१११-१४८	उव्वरित	१११	ओमधिय	१६२
उम्मज्जितूण	२३९	उव्वलित	१०६	ओमुक्क	१६२-१७१
उम्मत्थित	१४८	उव्वलेंत	३८	ओमुंचमाण	३८
उम्महित	१४८	उव्वात	१२२	ओरिक्क	१४८
उम्मुक्क	१४८	उव्वेस्सित	१०८	ओरुज्झ	३९
उल्लंघित	१४८	उव्वेहासित	१४८	ओरुभंत	३३
उल्लंहित	१४८	उस्ससित	१४८	ओरूढ	१४८-१८६
उल्लालित	१४८	उस्सारित	११५	ओरेंचित	१४८
उल्लोइत	१६८	उस्सासैंत	३७	ओलकित	१४८
उल्लोकिता	१४५-१४८	उस्सित	१३२-१६८	ओलमित	२३५
उल्लोकेति	१४१	उस्सिघण	१९३	ओलंबित	१४८
उल्लोगित	३४-१७६	उस्सिघित	१४८-१८६	ओलोइत	३४
उल्लोयंत	४२		ऊ	ओलोकिता	१६९-१८४
उल्लोयित	१९७	ऊहस्सित	१७६	ओलोयंत	४२
उल्लोहित	१०६		ए	ओलोलित	८१-१६९
उवकड्ढंत	१४४	एति	१०७	ओवट्टित	१६९
उवकसित	१९८	एमि	१०७	ओवत्त	१६९-१७१
उवक्खलित	२५१	एहिति	७४-८४	ओवयित	२५८
उवगूढ	८६	एहिती	८४	ओवारित	१४८
उवट्टिय	१९८		ओ	ओवालित	१४८
उवणामेति	८३	ओकट्ट	१६	ओसरित	१६९-१९५
उवणामेंत	३७	ओकट्टित	१७१-१९५	ओसारित	१४८-२१५
उवणिमिल्लंत	३४	ओकड्ड	८६	ओसुद्ध	१४८-१९७
उवत्त	१२२	ओकड्डित	१६९	ओहत	१४८
उवहित	१४८	ओकुणंत	४२	ओहसित	८१-२१५
उवहुत	१५५	ओखिन्न	१९५	ओहिज्जंत	८१
उवधारण	१०७	ओगूढ	८६	ओहित	३४
उवधारये	७९-१०७	ओघट्टित	१४८		क
उवपेक्खित	३४	ओचक्खति	८३	कड्डित	१४८
उवप्परिसते	१०७	ओछुद्ध	१६९	कड्डिति	८०
उवलक्खये	१९७	ओणत	३३-१७१	कत	८१
उवलद्धव्व	९	ओणमंत	३७-१३५	कधेति	८३
उववसित	१९३	ओणामित	१४८-२००	करिस्सति	९१
उवविट्ट	१४५	ओणिपीलित	१४८	कस्सामो	२३६
उववित्त	१५	ओतरंति	१	कंदित	४६-१६२
उवसक्कंत	१३५	ओतारिअ	१६९	कंपंत	३६
उवसक्किअ	१६	ओतारित	१११-१७१	कारयिस्सति	१७५

धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्
कासमाण	१३५	गज्जित	१६८-२५५	छद्देमाण	१४४
कासित	१३०-१६८	गमिस्सति	१७५-१९२	छंदेति	१३
कासेत	३७	गय	८०	छात	३८-१२१
काहिति	६७-८४	गरहिअ	१०	छादित	१४८
कित्तण	१४८	गलिअ	८०	छिण्ण	१७०
कित्तइस्सामि	११	गहेतूण	३९	छित्त	७९
कित्तयिस्सं	३६-६२	गंदित	१४८	छिन्न	१४८
कित्तयिस्सामि	६३	गायते	८३	छिवित	१८४
कित्तिय	६५	गायमाण	३६	छिदंत	३८
कितेसं	६५	गालित	१४८	छिदंती	१६९
किलकिलायिअ	१८६	गाहये	३-४	छीत	१६८
किलेसित	१४८	गिज्जिहिते	८४	छीयमाण	१३५
कुट्टित	१५५	गीत	१४५	छुद्ध	१०८-२००
कुरुते	१०७	गीय	८१	छुम्भ	१४८
कुव्वत	३६	गुलखित	१४८	छेस्त	१३५
कुंचित	१५५	गूहित	१४८	छेलित	१४८
कुंजित	१६२	गेज्झ	३९	छेलित	४६
कूवित	१५५	गोवित	१४८		
केसणिम्मज्जण	१४८				
कोट्टित	१६२-१९४	घट्ट	१६२	जज्जरित	१४८
कोडित	२१५	घसेत	३८	जणयिस्सति	८९
		घंसित	१४८	जणये	११०
खइत	८१	घात	१४८	जतिस्सति	६०
खणंत	३८	धायति	१०७	जयिस्सति	६०-६६
खमते	२५०	धिघिणोपित	१४८	जहिता	१०८
खलित	१४८	घुण्णित	१४८	जंपति	८३
खंडित	१२१-१४८	घुमति	८०	जंभमाण	३६
खाति	१०७	घेतूण	३९	जंभाइत	४७
खाहिति	८४	घोट्टेति	२५८	जंभायमाण	१३६
खिरे	४५	घोडित	४६	जंभित	१५५-१८४
खिसित	१४८	चमुत	१५५	जाणिज्जो	१५
खुडित	११५	चलित	८०-१४८	जाणिता	१२
खुधित	१३०-२१५	चालित	१४८	जाणे	७९-८९
खुवित	१७६	चियेतूणं	२३५	जाणेज्जो	४४-९८
खुविय	१५५	चित्तेति	८३	जाणेषु	६५
खुव्वति	२४५	चित्तेहिति	८४	जायति	१०८
खुसित	१४८	चुक्किहिसि	२६५	जावण	२५५
खुहित	१६२	चुंबित	३७-१८४	जीवति	१९७
खोडित	१४८-२१५	चेट्टित	१५५	जुगुच्छित	१४८
				जुज्जे	२५७
गच्छंत	१३५	छड्डित	८०-१५२	जुण्ण	८१
गच्छे	१०	छड्डेत	३७	जोइज्जमाण	१९८

धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्
झणित	१४७	णिगगलित	१०६	णिम्मज्जित	१५७-१८४
झरण	२५५	णिगिगण	१०७-१७६	णियक्खेति	१०७
झवित	२५५	णिच्छालित	१६८	णिराकत	१६९
झंझणित	१४७	णिच्छुद्ध	१०८-१६८	णिराणत	१६९
झामित	३०-१४८	णिच्छोडण	१०६	णिरिक्खति	१०७
झोण	८१-१४७	णिच्छोलित	१६८-१७१	णिलिक्खति	१०७
झुझुरायित	१४८	णिज्जायंत	१९९	णिलुलित	१७१
झुपित	१४८	णिज्झाय	३४	णिलुंचित	१६८
झोसित	१४८	णिज्झायति	१०७	णिलूचित	१६८
		णिट्टित	८१	णिल्लिक्खत	१७१
ठवित	१९८	णिट्टुत	१४८-१९७	णिल्लिक्खण	१०६
ठवेतूण	१९७	णिट्टुभमाण	१३६	णिल्लिक्खत	१६२-१९८
		णिट्टुभंत	३७-१३५	णिल्लिहित	१५७
डज्झति	२५४	णिट्टुंचति	८०	णिल्लुवित	१७१
डहंत	३८	णिट्ठील	१६९	णिल्लुहित	१७६
		णिणादित	४६	णिल्लेलेउ	१०८
णच्चति	८३	णिणयण	१९८	णिल्लोकिंत	१९८
णच्चित	८१	णिणयामित	१६८	णिल्लोलित	१६८-१९८
णफडित	२१७	णिणपीत	१७१	णिवज्जंत	३६
णमंसित	२५८	णिण्णेत	१९८	णिवण्ण	३६-१३५
णमोक्कत	१५५	णित्थणित	१७१	णिवसिहित	८४
णसिज्जति	५६	णित्थुद्ध	१७१	णिवसेंत	३८
णाहित	८४	णिद्वहति	२४६	णिवुद्ध	१११
णाहिसि	२६५	णिदिज्जति	२४३	णिवेसंत	१३६
णिकड्डति	८०-१०८	णिदिसे	१४-३६	णिवेसित	१४७
णिकायित	१९८	णिद्वीण	१७१	णिवोल्लए	१०८
णिकुज्ज	१८४	णिद्धावति	८०	णिवोल्लित	१७१
णिकुज्जित	१६९-१७१	णिद्धाडित	१६८-१७१	णिव्वट्टिज्जमाण	१९८
णिकुंजण	१३०	णिद्धोत	१०६	णिव्वट्टित	१७१-१९८
णिकूजित	१५७	णिप्पतित	१६९	णिव्वत्तते	८३
णिक्कट्टित	१९८	णिप्पोलित	२५५	णिव्वाडित	१६८
णिक्किट्टु	१९८	णिप्फज्जते	२५७	णिव्वामण	२६०
णिक्खणंत	३८-१४४	णिप्फाडित	१६९	णिव्वामित	१६९
णिक्खणंती	१६९	णिप्फावित	१७१	णिव्वासित	१७१
णिक्खणण	१७१	णिप्फलीलित	१६८	णिव्वाहित	१५५
णिक्खिण	१०८	णिप्फेडित	१७१	णिव्विट्टु	१७१
णिक्खित	१४८-१६८	णिबोधंत	२	णिव्वुत	१२१-१९२
णिक्खिन्न	८०	णिब्भग	१६२	णिसण्ण	३६-३८
णिक्खिण्णमाण	१९८	णिब्भामित	१०६	णिसरति	१०८
णिक्खुत्सति	१०८	णिमिलंत	३७	णिसामेति	१०७
णिगलित	२५५	णिमीलित	३६	णिसारेति	१०८
णिगगत	१०८	णिम्मज्जण	१४८	णिसित	१६८
णिगगमिस्सति	७६			णिसीदंत	३६-३८

धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्
णिसुद्ध	१९७	थ	पगलित	२५५	
णिसेवति	१२३-१९७	थकित	२४५	पगलेंत	३८
णिस्सरित	१०८-१६९	थक्केंत	३८	पघंसण	१९३
णिस्ससति	१०८-२४६	थणंत	३६	पघंसंत	३९
णिस्ससंत	३७-१३५	थंधित	१४८	पघातण	१४८
णिस्ससित	१५५-१६८	थेज्विद्ध	१४८	पचलायण	४४
णिस्संघति	१०८	द	पचलित	३८	
णिस्सारित	१०८-१६८	दहुमण	१४७	पच्चालंबिज्जमाण	१९८
णिस्सावित	१७१	दलायते	८३	पच्चालंबित	१९८
णिस्सित	१६२-१७१	दलिय	८०	पच्छादित	१४८
णिस्सिधित	१७१-१८६	दस्सामो	२३६	पच्छेलित	१४५-१८४
णिस्सिधेमाण	१३५	दायते	८३	पच्छेलित	१६८
णिस्सुंधित	२५५	दालित	८०-१४८	पजायति	२९
णिहित	१११-१४८	दाहिति	८४-२३६	पजायते	११०
णीणित	१९८	दिज्जिस्सति	१७५	पजायिस्सति	१६९
णीणीयमाण	१९८	दिज्जिहित	२३६	पजाहिति	६६-७९
णीरक्कअ	१७१	दिस्सठ	८	पज्जुवासंत	१९७
णिहरति	१०८	दिस्सते	८३-१०८	पज्जोवत्त	२४७
णीहरेत	१३६	दिस्सहिति	८४	पडिओधुत	१६९
णीहारेति	१०८	दीसति	८७	पडिगमिस्ससि	१९२
णीहित	१०७	दुसिस्सति	१७५	पडिच्छह	२३६
णुमज्जु	३९	देति	८३	पडिच्छित	१६८-१७०
णूण	१४८	ध	पडिच्छुद्ध	१६९-१७१	
णेष	१८	धणित	२३९	पडिणामित	१७१
णोल्लण	४४	धमित	१४८	पडिणायित	१६९
णोल्लति	८०	धंत	१६८	पडित	१२१-१६९
ण्हाण	१९३	धंसित	१४८-१९७	पडिदिण्ण	१७१
ण्हात	८१	धावति	८०	पडिदिन्न	१६९
ण्हाधिति	८४	धावित	१४८	पडिपिक्खिया	१५
ण्हायमाण	३८	धाहिति	८४	पडिबुज्जते	८३
ण्हाहिते	८४	धुत	८०-१४८	पडिबुद्ध	१७१
तच्छेमाण	३८	धूमायत	२५४	पडिमुंडित	१७१
तणित	१४७	धेत सं.हेय	३२	पडिलोलित	१६९
तण्हाइत	१२१-२४६	धोवमाण	३८	पडिविक्खिज्ज	१३
तरे	१०	न	पडिसरित	१६९-१७१	
तंडित	१४८	निवेसए	११	पडिसामिज्जमाण	१९८
तासित	१४८	निवेसेति	८३	पडिसामित	२४५
तिरिण	१४७	य	पडिसिद्ध	१७१-१९८	
तिलेमाण	१६९	पकिण्ण	८०-१६९	पडिसेधित	१४८
तुच्छित	१४८	पकुट्ट	२१५	पडिहरित	१६९
तूरित्थ	२६०	पखलित	२५४	पडिहारित	१७१
तेणित	१४८	पगलित	८०	पढति	८३

त

धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्
पद्धित	८१	परिचेष्टुति	८०	पविट्टु	८६
पदिहिति	८४	परिदेवंत	३६	पवियात	१९४
पणामयंती	१६९	परिदेवित	१५५-१६८	पविसित	१६९
पणीवते	५६	परिधावति	८०	पविसित्तु	२६५
पतंत	३६	परिपुच्छेज्ज	७६-७९	पवेक्खति	१९३
पतिगिण्हंती	१६९	परिपुच्छेज्जा	६०	पवेक्खयि	१९४
पतित	१५५	परिभमे	८०	पवेखति	१९४
पतिसिज्जति	१२६	परिभीत	१०८	पवेदये	६७
पते	४५	परिमज्जित	२४५	पवेदिय	१
पत्थरिय	११७	परिमत्थित	२१५	पवेदेज्ज	४३
पत्थाइत्तु	७	परिमदित	१६२	पवेदेज्जो	२४-४७
पदे	४५	परिलोढ	१३३-१७६	पवेसित	१०७-१९८
पधावति	८०	परिवत्तते	८०	पवेसियमाण	१९८
पधोवण	१९३	परिवद्धित	१६९	पसस्सई	१७
पधोवंत	३९	परिसक्कतो	३६	पसस्सए	११
पपतण	१४८	परिसक्कंत	१३५-३७	पसस्सति	२४
पपुत	१५५	परिसडित	१६९	पसस्सते	६७-८७
पप्फडित	१७१	परिसाडिय	८०	पसंखित	१७१
पप्फोडित	१६९	परिसुक्क	१७१	पसाधेहिति	८४
पब्भट्टु	१४८-१७१	परिसोडित	१६९	पसायति	८३
पमुक्क	१६९-१७६	परिस्संत	१२१	पसारित	१०८
पमुच्चति	१०८	परिहायति	२५०	पसारति	१०८
पमुच्छ्रित	१६९-१७१	परिहायिस्सति	१६९	पसुत्त	१५५
पमुट्टु	१७१	परिहित	१३०-१९३	पस्से	१९५
पमुत्त	१३०	पलित	१५५	पहत	२००
पम्मुय	२१५	पलिहित	१०६	पहिज्जते	८१
पम्हुट्टु	१३०-१७६	पलोद्वित	८१-१९७	पाउणेति	८३
पम्हुत्त	१७१	पलोयंत	४२	पाउत्त	४१-१९३
पयत्ताइत्त	१५५	पलोलित	१६९-२१७	पागाडिय	२४५
पयलायमाण	१३५	पलोलिय	८१	पागुत्त	१३०-१६८
पयलायंत	३७	पवक्खामि	५९-८१	पाढेति	८३
पयहिऊण	७	पवज्जे	९	पातित	१४८
पयाहिति	७६-९८	पवट्टित	२५५	पातुणंत	३८
पराजित	१०८	पवडंत	१३५	पावइ	५
परामसति	२५७	पवत्तउ	८	पावति	८३-१२३
परावत्त	१६९-१७१	पवयण सं० प्रपत्तन	४५	पाविस्सति	१९२
परावत्तिय	२००	पवविस्सामि	९	पाविस्ससि	१९२
पराहूत्त	१०८	पवसित	१९३	पाहिति	८४
परिक्कित्तित	६२	पवादित	१६८	पांगुहिति	८४
परिक्खीण	१४७	पवायण	१४८	पिणिद्धंत	३८
परिखड	१७१	पवायित	१७०	पिणेंधण	१४७
परिक्खेत	११	पवासण	१९३	पित	८१
परिघुमति	८०	पविजाणिया	५६	पिधयित्ता	४२

धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्
यिबति	८३	भ	मालित	४१	
पिवासित	१२१	भक्खण	१९३	मिल्लेति	४५
पिहित	१९८	भक्खते	१०७	मुच्चति	८७
पीणित	३८	भग्ग	३०-१६८	मुच्चिहिति	९९
पीत	१८४	भज्जिज्जते	२५४	मुज्झइ	४
पीलित	१४८	भट्ठ	१४८	मुणेतूण	५६
पुच्छिज्जमाण	१९३	भणति	८३	मुदित	१२१
पुच्छित	३६-८७	भणित	१४५	य	
पुच्छे	७९	भणितु	२६५	युंजइ	१३
पुच्छेज्जा	३६	भमते	८०	र	
पुप्फिय	३०	भरेति	८३	रज्जति	१४८
पूयित	३६-१५५	भरेहते	८४	रमेहिति	८४
पूयिय	४६	भविस्सति	६६-९८	रसायते	१०७
पूरण	१४८	भविस्सते	८४	रंधित	१४८
पूसित	१७१	भजंत	३८	राते	१०७
पेक्खति	१०७-१४१	भजंति	२५४	रिगमाणक	२५९
पेक्खते	१०७	भामित	१४८-१५५	रुण्ण	१५५-१६२
पेक्खमाण	१६९	भासमाण	१६९	रुण्णारुत	३४
पेक्खंत	४२	भिण्ण	१२१-१६८	रुदित	१६८
पेक्खित	१४५	भिन्न	३०-१४८	रुद्धापित	२५४
पेच्छति	८४	भुक्खित	१४८	रूवाकड	१६८
पेच्छते	१०७	भुत्त	१८४	रेचित	१४८
पेंडित	११५	भुजति	६६-८३	रोजयिस्सति	१७५
पोरुपविद्ध	१५२	भुजते	१०७	रोदंत	३६-१३५
पोसित	८७-२४३	भुंजति	८४	रोवंत	३७
फ		भुंजते	४१	रोहण	२५५
फरिसायते	८३-१०७	भुंजिस्सति	८३	ल	
परिसाहिति	८४	भूसित	१४८	लक्खये	१२७-१९७
फलिय	३०	भेदति	८३	लग	८०-२००
फालित	१४८	भेदित	१४८	लब्भति	७७
फालित	३८	म	८३	लभिताणं	१९७
फालेंत	१४४	मज्जति	८१	लभिस्सति	६०-९८
फालेंती	१६९	मज्जिय	८०	लयित	१९८-२००
फासित	१५५	मत	२००	लंछित	२४५
फुलित	८०	मधित	८०	लासित	८१
फुल्लित	१४८	मय	१६९-१७५	लीण	८६
फूमित	१६८	मरिस्सति	८१-१४८	लुचित	१३०-१४८
फोडित	१४८	मलित	१४७	लुलित	१४८
ब		मंडित	१२१	लूहित	१०६
बद्ध	८७	मंतुलित	८३	ल्हासेहिति	८४
बुज्झते	८३	मंतेति	८४	व	
बुवति	१९५	मंतेहिति	८४	वइए	९
बूया	१४-६९	माणेहिति	२४५	वक्खस्सामि	१४८-१८६
बूवी	१७	मारमरीति			
बोधिज्जमाण	१४७				

धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्
वक्खामि	१०८	विकखरइ	४५	वित्थिण्ण	११७
वक्खायिस्सामि	१९२	विकखण्ण	१०८	विदू	१८
वज्जिहिते	८४	विकिखत्त	१९९	विद्ध	१४८
वट्टति	६६	विकिखत्त	३८	विधत्त	१५५
वट्ठिहिति	८४	विकिखन्न	८०-१६८	विधावति	८०
वड्ढए	९	विकिखरे	४५	विधीयति	६३-१०७
वड्ढीयत्त	२३६	विकिखवमाण	१३६	विधीयते	१११
वत्तते	८३	विकिखवे	१०८	विपडंत	१२२
वत्थित	११७	विखद्धित	१४८	विपाडित	१६८-१७१
वदे	६६	विखिक्खंत	१३५	विप्पकड्डित	१९५
वधिस्सति	७९	विगलिय	८०	विप्पकिण्ण	८०-१०८
वन्नयिस्सामि	२३६	विगिलते	१०७	विप्पधोलति	८०
वष्फति	१०७	विघोलते	८०	विप्पजोयित	२००
वयंत सं० पतत्	४५	विचलित	८०	विप्पमुक्क	१९५
ववस्संति	११५	विच्छिण्ण	१२२	विप्परिचेट्ठते	८०
वंत	१७१	विच्छित्त	१६८	विप्परिवत्तते	८०
वंदहे	६	विच्छिन्न	१७१	विप्पलोडित	१५५
वंदामि	६	विच्छुद्ध	१६८-१७१	विप्पसारित	१०८
वंदिऊण	६	विच्छोभण	१४८	विभाएज्जो	४४
वंदित	१५५	विआणेज्जो	२३५	विभावेतूण	८६
वाइय	८१	विजाणेति	८३	विमाणित	१०८
वादित	१४५	विज्जा	१८-२१	विमिसंत	६
वापण्ण	१२२	विज्जिस्सति	८३-१७६	वियंभंत	३७
वायए	१०	विज्जिहिति	९०	वियाकरे	६१
वायंत	२५४	विज्जिहिते	८१-९८	वियागरंति	१०
वायेज्जो	१२९	विज्जेहिति	७५-७९	वियागरिज्ज	७
वायेहिति	८४	विज्जेहिते	११०	वियागरे	३६-६०
वाविद्ध	१०८-१३०	विज्झावित	१६८-१७१	वियागरेज्ज	१४९
वासति	२५७	विज्झीयति	२५०	वियाजिज्जमाण	१९८
वासित	८३	विणट्ठ	१६८	वियाण	१९
वाहरति	१०७	विणत्त	१५५	वियाणिज्जो	२४
वाहित	१५२	विणमंत	३७-१३५	वियाणिया	१४-८४
विआकरे	४७	विणास्सिस्सति	१६९	वियाणीया	२२
विआगरे	१२-६१	विणासण	१४८	वियाणेज्जो	२४६
विकड्डति	८०-१०८	विणासिज्जमाण	१९८	वियाणेय	१६
विकड्डित	१०८	विणासित	१०८-१६८	विरुम्भति	१९७
विकंदित	१५५	विणिट्ठत्त	१०८	विरोहंत	३३
विकंपण	१३०	विणिक्कलंत	३६	वित्तंघित	१४८
विकंपिय	१७	विणेच्छति	८४	विलित	४४
विकुणंत	४२	विण्णातूण	१२७	विलिपति	८३
विकुणित	१५५	विण्ह	१९४	विलिपंत	३७
विकूणिअ	१८४	वित्त	११७		
विकूणित	१३०	वित्थ	११७		
विक्कदिय	४४				

धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्	धातुरूपम्	पत्रम्
विलिपिहति	८४	समारोधण	१९३	संसरित	१४८
विलूहित	१०६	समाहरंति	१०७	संसावित	१८६
विलोकंत	४२	समिञ्जये	५	संसिञ्जमाण	१९८
विलोचित	३४	समुद्देति	८७	संसित	१०७
विवज्जये	५	समुद्देहति	६७-८०	संहरमाण	१३६
विवद्धये	५	समुदीरति	१०-८७	संहरंत	१३५
विवाडेंती	१६९	समुपेक्खय	१४९	संहित	११५
विसज्जेति	१०८	समुस्सवण	१९३	सा सं. स्यात्	४७
विसलाइत	८०	समेहति	८४	सातिज्जित	१७०
विसंधित	१६८	समोखिन्न	१९५	सातिट्ठिस्सति	१७५
विसिण्ण	३०-८१	सम्मज्जित	८१-१९५	सिक्खइ	५
विसोधह	१०८	सम्मदित	८१	सिक्खहिते	८४
विहत	१२२	सयते	८३	सिञ्जतु	८
वूहित	१४८	ससित	१४८	सिंवितालित	१७१
वेदयति	१०७	सस्सावित	१३३	सुञ्जति	२४५
वेदयते	८३	संकापित	२५४	सु[ण]ते	१०७
वेलांबित	८१	संचिद्धते	८३	सुणेति	१२३
वेलांबेति	८३	संचिद्धिस्सति	१७५	सुयित	१२२
वेवित	१५५	संचित	१४८	सुस्सति	२५४
वोकसित	१४८	संजाणति	८३	सुहित	१२१
वोच्छं	२३६	संजायते	८३	सूयए	६३
वोच्छामि	२३६	संजोगेति	२४६	सूयते	६९-८३
वोसट्टमाण	१४८	संजोयेति	२४६	सेविता	८७
		संतप्पते	२४७	सोभंते	२५७
		संतिट्ठिस्सति	१७६	सोभिहिते	८४
सक्कारित	१३०	संधावति	८०	स्सा सं. स्यात्	२५
सक्कारेमाण	१४४	संधुत	८०		
सण्णिकासिय	११५	संपकप्पते	१२३	हणति	७९
सण्णिकुट्टित	१५२	संपडिपेक्खिता	४१	हणे	७९
सण्णिरुद्ध	११५	संपतिवत्तते	८३	हवति	२३५
सज्जिज्जमाण	१९८	संपधारए	११	हसते	८३
सण्णद्ध	११५	संपरिकित्तिय	२	हसंत	३६-१३५
सदिवारित	२००	संपवेदये	१४	हसित	३५-१४५
समक्खात	२३९	संपवेदेज्जो	५५	हसीयमाण	३५
समणुवत्तति	१९५	संपादंत	३८	हायति-ते	१४
समतिकंत	२३५	संपावित	१७६	हारित	१४८
समतिच्छिय	२५८	संपिडित	११५	हित्थत	४१
समभिजाणइ	४	संपीलित	२२-११५	हिसेत	१४८
समल्लिकंति	५५	संभवति	८३	हुंडित	१४८
समाचरे	८३	संभंत	३७	हेडित	१४८
समाणयंत	३७	संविद्ध	१९८	होक्खति	८४-९०
समाणये	५	संविभावये	३६	होति	१०७
समाणित	१६८-१७०	संवेल्लित	११५	होहिति	८४-२३५

स

ह

चतुर्थ परिशिष्टम् (१)

अंगविज्ञानवमाध्यायमध्यगतानामङ्गनाम्नां कोशः

अंगनाम	श्लोकांकः	अंगनाम	श्लोकांकः	अंगनाम	श्लोकांकः
२ अक्खक	४	२ अंसकूड	३७६	२ कणवीरक	२-९६७-१२८७-१७५६
२ अक्खि	११८१-१२४६-१२८५- १२९८-१५२९-१६४१-१७२१- १७३७-१७३८-१७६२	१ अंसपीढ	११९४-१६०८-१७२९	२ कणिल्लिका	१७५३
२ अक्खिअब्भंतर	७३६-१२४६	१ अंसवीफणिय	११२८	२ कण्ण	२-९६७-११८१-१२९८- १४६९-१५३९-१५७७-१६०२- १६२४-१६४१-१६७३-१७०४- १७१७-१७२१-१७२८-१७६३
२ अक्खिकण्ण	१४७०	१ आस	१७३३	२ कण्णचूलिगा	१९३
२ अक्खिकूड	३७६-१७२६	१ उदर	५-४८२-९९७-१०९६-१२००- १२८४-१६६८-१६९८-१७०४	२ कण्णपस्स	६५७
२ अक्खिगुलिका	१९४	१ उदरपुरिम	६९८	२ कण्णपाली	१९४-१७४५
२ अक्खिपम्ह	१५९९	१ उदरब्भंतर	७३८	२ कण्णपीढ	१५६३
२ अक्खिवत्तिणी	१९४	१ उर	४-४८१-५२२-११९४-१५००- १५६३-१६०१-१६४१-१६५७- १६६८-१७१८-१७२०-१७२५-१७६०	२ कण्णपुत्तक	२-९६६
२ अगगकण्ण	१७४५	१ उरपुरिम	६९८	२ कण्णभंतर	७३७
१ अगगकेस	१५७८	१ उरब्भंतर	७३८	२ कण्णसक्कुली	१७६३
२० अगगणह	१५७८	१ उरब्भंतर	७३८	२ कण्णसंधि	५६५-१५१२
२ अक्खिअब्भंतर	१२८६	१ उवत्थग	१५१२	२ कण्णसोत	१७०९-१७२६
२ अच्छी	२-१४६९-१७२०-१७७४	२ उवत्थगपच्छिमभाग	६१८	१ कण्णुधरिका	१७२१
२ अणामिका	१७५३	१ ऊरु	१२००	२ कमतल	५६७-१७२५
२ अधर	१५०९-१५२९-१६२३-१६६८	२ ऊरु	५-१५००-१५२१-१६६७- १७३८-१७४७-१७६३	२ करतल	१५३९-१७२५
१ अधिद्वाण	१७५८	२ ऊरुअब्भंतर	७३६	२ करमज्झ	५२४
१ अधोमंसु	१५९१	२ ऊरुअंतर	१७७३	२ कवोल	२-११४९-११८१
२ अपंग	९६७-१२८४	२ ऊरुपच्छिमभाग	६१८	१ कंठपुरिम	६९७
१ अवडु	१५१३	२ ऊरुपस्स	६५८	कंठेस्स	१२८७
अवह	१९५	२ ऊरुपुरिम	६९८	कंडरा	१९७
२ अवहत्थग	३	२ ऊरुमज्झिम	५२३	४ कंडरा	१६३२
२ अवंग	२-१२८७-१७५६	२ ओडु	३-४८१-९६७-११४९- ११८१-१२८५-१२८७-१५१०- १६०१-१६२३-१६२४-१६४१- १७४०-१७४५-१७५२-१७५६	१ कुकुंदल	१७२७
१ अवंगब्भंतर	१२४६	१ ककाडिका	१९५-१४७०-१६७३	२ कुक्कुड	१५१२
२ अंखी	१७०४	२ ककखा	१४७०-१५९१-१७१८- १७२६-१७४६-१७५८	१ कुक्खंतर	३७६
२ अंगुट्ट	१७५३-१७५६	२ ककखाअब्भंतर	७३६	२ कुक्खि	५
४ अंगुट्ट	४-१५१०-१५११-१५२९- १७४५-१७५२	१ कडि	१९५-१०९६-१४६९-१६६८	२ कुक्खिपस्स	१२००
१६ अंगुलि	१९७-१५१०-१५११- १५२१-१७४५-१७५२	२ कडितल	१५६९	१ केस	३७७-१५१९-१५२१- १५९१-१६७३-१७०५- १७५७-१७६७
२० अंगुलि	१६७३	२ कडिपस्स	१०९६-१२००-१६६८	१ केसमंसु	१७१८
१ अंगुलिअंतर	३७६			१ केसलोम	१२८५
१२ अंगुलिअंतर	१७७३			१ केसलोमणह	१५८३
१६ अंगुलिअंतर	१७३५			२ कोप्पर	३-१५१९-१६७३-१७२९- १७४३
२० अंगुलिपोट्ट	१६०१				
२ अंजलि	१७३३				
२ अंस	३-९९८-१६६७				

अंगनाम	श्लोकांकः	अंगनाम	श्लोकांकः	अंगनाम	श्लोकांकः
२ खलुक	१५१९-१६३२-१७२९	२ जंतुतरपुरिम	६९७	१ तल	१६६८
२ खंघ	४-५२४-११९४-१२४६	२ जाणु	१२८४-१५१९-१६०८-	२ तल	१४६९-१७२०
२ गंड	२-१९३-५२४-९६७-११४९- ११८१-१५००-१५३९-१५६३- १६२४-१६४१- १७२५-१७३३- १७४०	२ जाणुपच्छिम	१६०८	२ तारक	१९४
२ गंडधस्स	६५७	२ जाणुसीस	१५३८	१ तालु-क	१९४-१२८५-१२८७-१७५६
२ गंडम्भंतर	७३८	१ जिम्मा	१९५-१२८५-१२८७- १३३१-१३४९-१५२९-१५६३- १५७७-१६२४-१६४१-१७०९- १७२०-१७३८-१७४०-१७५६	२ तिक्क	१७२०
१ गीवम्भंतर	७३८-१२८६	२ डेल्लिक	१५१९	२ थण	४-११२९-११७७-११९४- १२४६-१२९८-१५००-१५३८- १६४१-१७३३-१७४०
१ गोवा	१९५-१७४९-१२४६-१२८४	२ गयण	१७०९-१७५९	२ थणपाली	१९६
१ गोवापच्छिमभाग	६१७	१ गह	१२८५	१ थणंतर	४८२-९९७-१६४१-१६५७
२ गोवाहेट्ट	१७२६	२० गह-ख	१२४६-१५७७-१६०१	२ थविका	१५२९
१ गुदम्भंतर	७३७	२० गहसिहा	१७४३	१ थूणा	१९४
१ गुदा	१९५-१७१७-१७३७	१ गहसेट्टि	१७५०	१ धूरक	१९६
२ गोप्फ	६-१०१५-१०६७-१०७३- १२०६-१४७०-१५१२- १६३२	१ गणी(गामि ?)	४८२	१ दंत	१२८५
२ गोप्फण	१२८४	१ गामि	१९६-१०९६-१४६९-१५३८- १७२७	१ दंत	९६७-११८१-१२४६- १६२४-१७७४
१ घाण	१३३१-१३४९	१ गामिअम्भंतर	७३६	२ दंत	५२४-११४९-१६०१-१६४१
१ चक्खु	१३३१-१३४९-१७२४	१ गामि	१७१७	१ दंतमंस	३-१२८७
२ चल्ल	५	२ गामिअम्भंतर	७३६	१ दंतवेढी	१९५
१ चिबुक	१५१०	१ गामिअम्भंतर	७३६	१ दंतवेला	३
२ चूचुक	१९६	१ गामिअम्भंतर	७३६	१ दंतसिहा	१७५०
१ छगली	१९३	२ गामिअम्भंतर	७३६	१ दंतसेट्टिका-ढी	१७४५-१७५०
१ छिा	१९७	१ गामिअम्भंतर	७३६	१ दाढा	१९५
२ जण्णुक-ग	१७२९-१७४३	१ गामिअम्भंतर	७३६	१ देहफरिस	१३३१-१३४९
२ जण्णुगसंधि	१५१२	१ गामिअम्भंतर	७३६	१ धमणी	१९७
२ जतु	४-५२२-११७९	१ गामिअम्भंतर	७३६	२ पओट्ट	१९६
२ जतुमज्झ	५२४	१ गामिअम्भंतर	७३६	१ पट्टि	१९५-११९४-१५००- १५१२-१५२१-१५६३- १६०८-१७१८-१७६०
१ जतु	१६६८	१ गामिअम्भंतर	७३६	२ पट्टीपच्छिमभाग	६१७
२ जतु	१०३८-११२९-११९४-१५२९	१ गामिअम्भंतर	७३६	२ पट्टीपस्स	१०९६
१ जतुअंतर	९९७	१ गामिअम्भंतर	७३६	२ पण्हिका	१९७
१ जतुत्तर	४८१	१ गामिअम्भंतर	७३६	२ पण्ही	१६३२-१६७३
२ जंघम्भंतर	७३६	१ गामिअम्भंतर	७३६	२ पण्हीतल	१५६९
२ जंघा	१९६-१०१५-१०७३-१२०६- १५०९-१५२१-१६३२- १६६७-१७४७-१७६३	१ गामिअम्भंतर	७३६	२ पण्हीपच्छिमभाग	६१८
२ जंघापच्छिमभाग	६१८	१ गामिअम्भंतर	७३६	२ पदेसिणी	१७५४
२ जंघापस्स	६५८	१ गामिअम्भंतर	७३६	२ पन्नाहु	३-९९८-१५२१-१६६७
२ जंघापुरिम	६९८	१ गामिअम्भंतर	७३६	३० पव्वंतरंगुल	१५६९
२ जंघामज्झ	५२३	१ गामिअम्भंतर	७३६	२ पस्स	४-५२२-११९४-१४६९- १६९८-१७६०
जंघोरुद्धेसंतरभाग	३७५	१ गामिअम्भंतर	७३६	२ पाणितल	१२८७-१५६३-१५६९- १५७७-१६०१-१६०८-१७५६
२ जंतुअम्भंतर	७३८	१ तया	१७१०-१७६७	२ पाणितलम्भंतर	७३६

अंगनाम	श्लोकांकः	अंगनाम	श्लोकांकः	अंगनाम	श्लोकांकः
२ पाणितलहितय	१५८६	२ भुम	११८१-१५२९-१५९९- १६९८-१७४५	१ [वत्थि] सीसपुरिम	६९८
६ पाणिलेहा	१५२९			वली	१९७
२ पद	६-१३३१-१३३९-१४७०- १६६७-१६९८-१७०४- १७३७-१७५९	१ भुमक	१९४	२ वसण	१७२९-१७६१
१० पादणह	१६३२	१ भुमकंतर	११४९	२ वसणंतर	१७५८
२ पादतल	६-१०७३-१२०६-१२८७- १५६३-१५६९-१५७७-१६०१- १६०८-१६३२-१७५६	१ भुमकंतरवंस	४८१	१ वंस	१६५७
२ पादतलहितय	१५८६	२ भुमगब्भंतर	७३८	२ संख	२-५२४-९६६-११८१-१४६९- १४७०-१५१२-१५३९- १६४१-१७१८-१७४५
२ पादपट्टि	५२३	१ भुमंतर	३७६-१६२४-१६५७	२ संधि	१४६९
२ पादपण्ह	१०१५	२ भुमासंधि	५६५-१५१२	१ सिखंड	१
२ पादपस्स	६५८	१ मज्झ	१०९६	१ सिर	५२२-११५०-११८१-१५००- १५०९-१५२९-१५३९- १६२३-१६६८-१७६०
२ पादहितय	१०१५	२ मज्झिमिया	१७५३	सिक्खणी	१९७
२ पादगुट्ट	१०१५-१०७३-१२०६- १६६७	२ मणिबंध	१५१२-१७२९	१ सिहा	१९३
२ पादगुलि	१०७३-१२०६	२ मणिबंधहत्थसतल	४	सीता	१९४
१० पादगुलि	१६३२-१७४४	१ मत्थक-ग	१-४८०-९६६-१५३८- १६२४-१६४१-१६५७- १७२१-१७२५-१७३०	१ सीमंतक	१-४८०
१० पादगुलिपव्व	१५५८-१६१३	१ मत्थकब्भंतर	७३८	१ सीस	१-९६६-१३३१-१३४९- १६२४-१६४१-१६६८-१७२१
१० पादगुलिपोट्टिया	१६३२	१ मंस (मंसु)	१५८३	१ सीसकूड	१७३०
१ पालु	१७३५-१७३८-१७६१	१ मंसु	३७७-१५९१-१७०५-१७५७	१ सीसपच्छिमभाग	६१७
२ पेंडिका	१६३२-१७६३	१ मुह	३-१२९८-१६५७-१६६८- १६९८-१७०४-१७१७-१७२०- १७२१-१७२८-१७३३-१७३५- १७६२	२ सीसपस्स	६५७
१ पोरुस	५-१७१०	१ मुहपुरिम	६९७	१ सोणि	१६०२-१७२४
२ फल	१०९७-१२००	१ मेड्ड	१२००-१२९८-१७३५-१७३७	१ सोणिअब्भंतर	७३७
२ फिजा	१९५	१ मेहण	४८२-१०९७-१६०२-१७१७- १७३८-१७५८-१७६१	१ सोत्त	१३३१-१३४९
२ फिजापच्छिमभाग	६१८	१ मेहणब्भंतर	७३६	१ हण(णह)	१५१९
२ फिया	१५००-१५३८-१६३३- १६७३-१७२९-१७४७-१७६३	१ मेंढ	१५२९	१ हणु	१९५-११४९
२ बाहा	११२८	१ रोम	१५१९	१ हत्थ	१३३१-१३४९
१ बाहु	१३३१-१३४९	१ ललाट-ड	२-४८१-१५३९-१५६३- १७६०	२ हत्थ	९९८-११२८-१४७०-१६९८- १७०४-१७३७-१७५९-१७६२
२ बाहु ३-९९८-११८१-११९४-१५०९- १५२१-१६६७-१७२८-१७४७		लंका	१९७	१० हत्थणह	१७७४
२ बाहुणाली	१९६-११२८	लेहा	१९७	२ हत्थतल	९९८
२ बाहुणालीपच्छिमभाग	६१८	१ लोम	३७७-१५२९-१७०५-१७५७ १७६७	२ हत्थपाद	१५०९
२ बाहुणालीपस्स	६५८	१ लोमग	१६७३	२ हत्थंगुट्टक	११२८
२ बाहुणालीपुरिम	६९८	१ लोमवासी	१९६-४८२-१०९६- १५९९-१६६८	११ हत्थंगुलि	१७४४
२ बाहुणालीमज्झ	५२३	२ वक्खण	५-१०५९-११७५-१२००- १२८४	१ हत्थंगुलिकोदर	११२८
१ बाहुपस्स	६५८	२ वक्खणब्भंतर	७३६	११ हत्थंगुलिपव्व	१५५८-१६१३
२ बाहुमज्झ	५२३	वट्टी	१९५	१ हितय	१२४६-१४६९-१५८६- १६५७-१७१०-१७२०- १७२५-१७७४
२ बाहुसंधि	१४७०-१६६७	१ वत्थि	१०९७-१२००-१५७१	१ हिदय	४८२
२ बाहुसीस	१५३८	१ वत्थिपुरिम	६९८	१ हिदयपुरिम	६७७
१ भमुह	१३३१-१३४९	१ वत्थिसीस	५-४८२-१०९७-१२००- १५७१-१७१८	१ हियय	९९७-११९४-१४७०
२ भुजंतर	१७७३				

(२)

अंगविज्ञानवमाध्यायप्रारम्भे निर्दिष्टानां २७० अङ्गविभाजकद्वाराणां सङ्ग्रहः

द्वारनाम	द्वारांकः	द्वारनाम	द्वारांकः	द्वारनाम	द्वारांकः
अ		इ		च	
१० अगणिकाइकाणि	१४४	१४ इस्सरभूता	१३६	९ गंभीरा	१८२
१० अग्नेया	१७६	१० इस्सरा	१३४	४ गोञ्जा	२२३
७ अचपला	२२२	उ		४१ चउरंसा	१२०
१६ अणागताणि	११	१० उज्जुका	२०२	८ चतुक्काणि	२४२
७५ अणायकाई	२३२	१४ उण्णता	१८५	२ चत्तालीसतिवग्गा	२५४
१० अणिस्सरा	१३५	१० उण्हा	१८७	६ चपला	२२१
२ अणू	१२५	२ उत्तममज्झिमसाधारणाणि	२९	२८ चलाणि	८
५० अण्णजणाई	२३५	२० उत्तमाणि	२५	३६ चंडाणता	२०३
५० अतिकण्हाणि	२४	१७ उत्तरपच्चत्थिमा	९२	ज	
१६ अतिवत्ताणि	९	१७ उत्तरपुरत्थिमा	९३	१० जण्णेया	१७७
२ अदंसणिया	१७९	१७ उत्तरा	८९	१० जम्मणा	१७५
१३ अधोभागा	९५	५ उताणुम्मथका	२२४	१० जहण्णाणि	२८
१ अपरिमिते	२७०	१२ उद्धभागा	९४	२० जंगमाणि	१४७
५० अपसण्णअपसण्णा	९८	५ उवग्गहणाणि	१२९	२५ जुत्तोपचया	१०७
४ अप्पपरिग्गहा	१६१	९ उवथूला	१०६	२ जुवतेया	२१६
५० अप्पसण्णा	९७	५० उवहुता	१५४	२ जोव्वणत्थमज्झिमवयसाधारणाणि	३८
२६ अप्पिया	१४०	ए		१४ जोव्वणत्थाणि	३४
२० अप्पोपचया	१०८	५० एक्ककाणि	२३९	ठ	
४ अबुद्धीरमणा	१५९	ओ		६ ठिआमासे	२४४
५० अब्भंतरअब्भंतराणि	१३	५० ओवातसामाणि	१९	७ ठिआमासे	२४५
५० अब्भंतरबाहिराणि	१५	५० ओवाताणि	१८	८ ठिआमासे	२४६
५० अब्भंतराणि	१२	क		९ ठिआमासे	२४७
२६ अवत्थिया	१४१	२ कण्णेया	२१४	१० ठिआमासे	२४८
१९ अविवरा	१९३	१० कण्हवण्णपडिभागा	५९	ठिआमासे असितवण्णपडिभागा	६८
५० अव्वोआताणि	२३	५ कण्हाणि	२२	ठिआमासे कोरैटवण्णपडिभागा	६९
२ असीतिवग्गा	२६२	१४ करणमंडला	११७	ठिआमासे चित्तवण्णपडिभागा	७०
३३ अंता	१५०	५ काया	१२२	ठिआमासे णिद्धलुक्खवण्णपडिभागा	७३
१६ अंबराई	२३६	१० किलिद्धा	२२९	ठिआमासे णिद्धवण्णपडिभागा	७१
आ		१७ किंसा	११०	ठिआमासे पंडुवण्णपडिभागा	६३
१२ आकासा	१३१	१० कुडिला	२०१	ठिआमासे मणोसिलवण्णपडिभागा	६४
२३ आतिमूलिकाणि	१४८	१ कोडिवग्गे	२६९	ठिआमासे लुक्खवण्णपडिभागा	७२
६ आयता	२०४	ख		ठिआमासे सुज्जुग्गमवण्णपडिभागा	६७
४ आययमुद्धिता	२०५	२ खत्तेज्जवेसेज्जाणि	४५	ठिआमासे हरितालवण्णपडिभागा	६५
१० आयुक्कायिकाणि	१४३	१४ खत्तेज्जाणि	४१	ठिआमासे हिगुलकवण्णपडिभागा	६६
२० आयुप्पमाणे वस्ससत्तप्पमाणाणि	४७	२४ खरा	२००	ण	
१० आवुणेया	१८९	ग		५८ णपुंसकाणि	३
१० आहारणीहारा	८३	२ गततालुगवण्णपडिभागा	६१	२ णवुतिवग्गा	२६४
१० आहारा	८०	५ गहणाणि	१२८	२० णातिकिसा	१०९
१० आहारहारा	८२	२ मंथेया	१६९	७५ णायकाई	२३१

चतुर्थ परिशिष्टम्

३३७

द्वारनाम	द्वारांकः	द्वारनाम	द्वारांकः	द्वारनाम	द्वारांकः
५ गिण्णा	१८१	प		ब	
१० गिद्धगिद्धा	७५	१६ पच्चत्थिमा	८७	१९ बद्धा	१६२
१० गिद्धलुक्खा	७९	२ पणतालीसतिवग्गा	२५५	२ बंधखत्तेज्जाणि	४४
१० गिद्धा	७४	२ पणतीसतिवग्गा	२५३	२० बंधेज्जाणि	४०
७५ गिरत्थिकाई	२३४	२ पणुवीसतिवग्गा	२५१	२ बालजोव्वणत्थसाधारणाणि	३७
५० णीयाई	२३३	२ पणुवीसपण्णासवस्ससाधारणाणि	५१	१० बालेयाणि	३३
२० णीलवण्णपडिभागा	५७	१० पणुवीसवस्सप्पमाणाणि	५०	५० बाहिरबाहिराणि	१७
१० णीहारणीहारा	८५	१४ पण्णत्तरिवस्सप्पमाणाणि	४८	५० बाहिरम्मंतराणि	१४
१० णीहारा	८१	२ पण्णत्तरिवस्ससतसाधारणाणि	५३	५० बाहिराणि	१६
१० णीहाराहारा	८४	२ पण्णरसवग्गा	२४९	२५ बिकाणि	२४०
१० णेइया	२०९	२ पण्णासपण्णत्तरिवस्ससाधारणाणि	५२	९ बुद्धीरमणा	१५८
त		४ पत्थीणा	१९८	भ	
२७ तणू	१२३	५० परक्का	१६५	३ भीरूणि	२३८
१० तता	२२५	१ परमाणू	१२६	म	
१२ तंबा	२१८	११ परंपरकिसा	१११	५ मउक्का	१९७
२ तंसा	१२१	२१ परंपरतणू	१२४	३३ मज्झविग्गाढाणि	१४९
१० तिकाणि	२४१	९ परिणिण्णगंधीरा	१८३	२ मज्झिममज्झिमसाधारणाणि	३०
२० तिक्खा	१५३	१२ (१०) परिमंडला	११६	२ मज्झिममज्झिमाणंतरसाधारणाणि	३१
१४ तिरिक्खजोणिका	२०८	५० पसण्णअप्पसण्णा	९९	२ मज्झिमवयमहव्वयसाधारणाणि	३९
२ तीसतिवग्गा	२५२	५० पसण्णा	९६	१४ मज्झिमवयाणि	३५
७५ तुच्छा	१९१	६ पंचकाणि	२४३	२ मज्झिमाणंतरजहण्णसाधारणाणि	३२
थ		२ पंचणवुतिवग्गा	२६५	१४ मज्झिमाणंतराणि	२७
१० थला	१८०	२ पंचपंचासतिवग्गा	२५७	१७ मज्झिमाणि	६
७५ थीणामाणि	२	२ पंचसट्ठिवग्गा	२५९	१४ मज्झिमाणि	२६
४ थीभागा	२१५	२ पंचसत्तरिवग्गा	२६१	१ मणेये	१७२
११ थूला	१०५	२ पंचासतिवग्गा	२५६	१० मता	२२६
द		१४ पंचासवस्सप्पमाणाणि	४९	२० महव्वताणि	३६
१७ दक्खिणपच्चत्थिमा	९१	२ पंचासीतिवग्गा	२६३	१२ महंतकाई	२२७
१७ दक्खिणपुरत्थिमा	९०	३ पंडुवण्णपडिभागा	६०	११ महापरिग्गहा	१६०
१७ दक्खिणा	८८	२६ पिया	१३९	१४ माणुसा	२०७
१७ दक्खिणाणि	४	३ पीतवण्णपडिभागा	५५	२२ मितुभागा	२१२
२८ दढाणि	७	१२ पुढविकाइया	१४२	५० मुदिता	१५१
५६ दहरचलणा	१३२	८४ पुण्णा	१९०	२ मेयकवण्णपडिभागा	६२
५६ दहरथावरेज्जा	१३३	७५ पुण्णामाणि	१	२७ मोक्खा	१६३
२ दंसणिया	१७८	२ पुत्तेया	२१३	र	
४ दारुणा	१९६	१२ पुधुला	११९	१५ रत्तवण्णपडिभागा	५६
२६ दिग्धा	११२	१६ पुरच्छिमा	८६	५६ रमणीयाणि	१३०
२६ दिग्धा जुत्तप्पमाणा	११३	६ पूतियं	२२०	१ रसेज्जा	१७०
२० दिव्वा	२०६	५० पेस्सभूया	१३८	७५ रुदा	२१०
५० दीणा	१५२	५० पेस्सा	१३७	२ रूवेया	१६८
२६ दुग्गथाणा	२१७	फ		४ रोगमणा	२१९
२ दुग्गंधा	१५६	२ फासेया	१७१		

દ્વારનામ	દ્વારાંકઃ	દ્વારનામ	દ્વારાંકઃ	દ્વારનામ	દ્વારાંકઃ
લ		૧૯ વિવરા	૧૧૨ ૩૦	સંઘા વામા	૧૦૩
૧૦ લુક્ખણિદ્ધા	૭૮	૧૫ વિસમા	૧૮૪ ૫૦	સામકળ્હાણિ	૨૧
૧૦ લુક્ખલુક્ખા	૭૭	૨ વીસતિવગ્ગા	૨૫૦ ૫૦	સામાણિ	૨૦
૧૦ લુક્ખા	૭૬	૨ વેસેજ્જસુદેજ્જાણિ	૪૬ ૧૧	સિવા	૧૦૪
વ		૧૪ વેસેજ્જાણિ	૪૨ ૧૦	સીતલા	૧૮૮
૨૦ વટ્ટા	૧૧૮	સ	૭ સુકુમાલા		૧૧૫
૧૦ વળપ્પફાઈકાઈકાણિ	૧૪૬ ૫૦	૫૦ સકપરક્કા	૧૬૬ ૭૨	સુક્કવળ્ળપડિભાગા	૫૪
૧૬ વત્તમાણાણિ	૧૦ ૫૦	૫૦ સકા	૧૬૪ ૨	સુગંધા	૧૫૭
૭૫ વરાઈ	૨૩૦ ૨	૨ સટ્ઠિવગ્ગા	૨૫૮ ૧૦	સુદેજ્જાણિ	૪૩
૪ વાતમણા	૧૭૩ ૫૬	૫૬ સળ્હા	૧૧૧ ૨૮	સૂયી	૨૨૮
૫૦ વાપળ્ળા	૧૫૫ ૧	૧ સતવગ્ગે	૨૬૬ ૧૧	સૂરાઈ	૨૩૭
૧૭ વામાણિ	૫ ૧	૧ સતસહસ્સવગ્ગે	૨૬૮ ૨	સોમ્મા	૨૧૧
૧૬ વામા ધળ્હરા	૧૦૧ ૨	૨ સત્તરિવગ્ગા	૨૬૦ ૬	હ	
૧૬ વામા પાળ્હરા	૧૦૦ ૨	૨ સદ્દમણા	૧૭૪ ૧૮	હરિતવળ્ળપડિભાગા	૫૮
૫૮ વામા સોવહ્વા	૧૦૨ ૨	૨ સદેયા	૧૬૭ ૧૬	હસ્સા કિંચિદિગ્ધા	૧૧૪
૧૨ વાયુક્કાઈકાણિ	૧૪૫ ૧૨	૧૨ સમા	૧૮૬ ૫	હિદયાણિ	૧૨૭
૨૮ વિયડસંવુઢા	૧૧૪ ૧	૧ સહસ્સવગ્ગે	૨૬૭ ૧૬	હસ્સા	૧૧૫

(૩)

અંગવિજ્ઞાનવમાધ્યાયે વિભાગશો નિર્દિષ્ટાનામઙ્ગનામ્નાં યથાવિભાગં સંગ્રહઃ

અઙ્ગસંખ્યા	અઙ્ગનામ	સર્વસંખ્યા	અઙ્ગસંખ્યા	અઙ્ગનામ	સર્વસંખ્યા	અઙ્ગસંખ્યા	અઙ્ગનામ	સર્વસંખ્યા
૭૫	પુંજાતીય અંગ પૃષ્ઠ ૫૧	૨	૨	બાહુ	૩૦	૨	ઝરુ	૬૯
૧	સિખંડ	૧ ૨	૨	પબાહુ	૩૨	૨	ગોપ્પ	૭૧
૧	મત્થક	૨ ૨	૨	કોપ્પર	૩૪	૨	પાદ	૭૩
૧	સીસ	૩ ૨	૨	અવહત્થગ	૩૬	૨	પાદતલ	૭૫
૧	સીમંતક	૪ ૨	૨	મળિબંધહત્થસતલ	૩૮	૭૫	સ્ત્રીજાતીય અંગ પૃ. ૬૬	
૨	સંઘ	૬ ૪	૪	અંગુઢ	૪૨	૧	છગલી	
૧	સલાટ	૭ ૨	૨	ચંધ	૪૪	૧	સિહા	
૨	અચ્છી	૯ ૨	૨	જતુ	૪૬	૨	ગંઢ	
૨	અવંગ	૧૧ ૨	૨	પસ્સ	૪૮	૨	કળ્ળચૂલિકા	
૨	કળ્ળવીરક	૧૩ ૨	૨	અક્કલક	૫૦	૨	ધુમક	
૨	કળ્ળ	૧૫ ૧	૧	ઝર	૫૧	૨	અક્કલગુલિકા	
૨	ગંઢ	૧૭ ૨	૨	થળ	૫૩	૨	તારકા	
૨	કવોલ	૧૯ ૫	૫	હિતય	૫૮	૨	અક્કલવત્તિણી	
૨	કળ્ળપુત્તક	૨૧ ૨	૨	કુક્કિલ	૬૦	૧	ખાસિકા	
૨	ઓઢ	૨૩ ૧	૧	ઝદર	૬૧	૨	કળ્ળપાલી	
૧	દંતવેલા	૨૪ ૨	૨	વક્કળ	૬૩		ધૂળા	
૧	દંતમંસ	૨૫ ૧	૧	પોરુસ	૬૪		સીતા	
૧	મુહ	૨૬ ૧	૧	બત્થિસીસ	૬૫	૧	તાલુક	
૨	અંસ	૨૮ ૨	૨	ચલ્લ	૬૭	૨	દાઢા	

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या	अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या	अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	दंतवेदी		१	दक्खिणअक्खि	३	१	धणंतर	१२
	वट्ठी		१	दक्खिणभमु	४	१	णाणी (पाभि)	१३
१	जिब्भा		१	दक्खिणहणु	५	१	लोमवासी	१४
१	हणु		१	दक्खिणगंड	६	१	उदर	१५
१	अवह		१	दक्खिणगीवा	७	१	मेहण	१६
१	ककाडिका		१	दक्खिणअंस	८	१	वत्थिसीस	१७
१	गीवा		१	दक्खिणबाहु	९		२८ दृढ अंग पृ. ७७	
१	कडी		१	दक्खिणथण	१०	१	सिर	१
१	पट्ठि		१	दक्खिणहत्थ	११	१	णिडाल	२
२	फिजा		१	दक्खिणपस्स	१२	२	जतु	४
१	गुदा		१	दक्खिणवसण	१३	१	उर	५
२	पओट्टु		१	दक्खिणऊरु	१४	२	पस्स	७
२	बाहुणाली		१	दक्खिणजाणु	१५	२	बाहुणालिमज्झ	९
२	चूचुक		१	दक्खिणजंघा	१६	२	बाहुमज्झ	११
२	थणपाली		१	दक्खिणपाद	१७	२	जंघामज्झ	१३
१	णाभि		१७ वाम अंग पृ. ७५		२	ऊरुमज्झ	१५	
१	लोमवासी		१	वामसीस	१	२	पादपट्ठि	१७
२	जंघा		१	वामकण्ण	२	२	दंत	१९
	थूरुक		१	वामअक्खि	३	२	संख	२१
	कंडरा		१	वामभुम	४	२	गंड	२३
२	पण्हिका		१	वामहणु	५	२	करमज्झ	२५
२	लंका		१	वामगंड	६	१	खंध	२६
१६	अंगुलि		१	वामगीवा	७	२	जतुमज्झ	२८
१	लेहा		१	वामअंस	८		२८ चल अंग पृ. ७९	
१	छिरा		१	वामबाहु	९	२	कण्णसंधि	२
१	धमणी		१	वामथण	१०	२	भुमासंधि	४
१	वली		१	वामहत्थ	११			
१	सिब्बणी		१	वामपस्स	१२			
५८ नपुंसकजातीय अंग पृ. ७२			१	वामवसण	१३	२	कमतल	२८
२	जंघोरुउदेसंतरभाग	२	१	वामऊरु	१४		१६ अतिवृत्त अंग पृ. ८१	
२	अक्खिकूड	४	१	वामजाणु	१५	१	सीसपच्छिमभाग	१
२	अंसकूड	६	१	वामजंघा	१६	१	गीवापच्छिमभाग	२
१	कुक्खंतर	७	१	वामपाद	१७	२	पट्ठिपच्छिमभाग	४
१	भुमंतर	८	१७ मध्यम अंग पृ. ७६		२	बाहुणालीपच्छिमभाग	६	
१	अंगुलीयंतर	९	१	मत्थक	१	२	उवत्थपच्छिमभाग	८
१२	णिण्णअंग	२१	१	सीमंतक	२	२	फिजापच्छिमभाग	१०
१	केस	२२	१	ललाड	३	२	ऊरुपच्छिमभाग	१२
१	मंसु	२३	१	भुमकंतरवंस	४	२	जंघापच्छिमभाग	१४
२०	णह	४३	१	णासापुत्त	५	२	पण्हिपच्छिमभाग	१६
१	लोम	४४	१	णासा	६		१६ वर्तमान अंग पृ. ८२	
१४	मज्झिमअंग	५८	२	ओट्टु	८	२	सीसपस्स	२
१७ दक्षिण अंग पृ. ७३			१	उर	९	२	कण्णपस्स	४
१	दक्खिणसीस	१	१	जतुत्तर	१०	२	गंडपस्स	६
१	दक्खिणकण्ण	२	१	हिदय	११	२	बाहुणालीपस्स	८

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या	अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या	अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	बाहुपस्स	१०	२०	उत्तम अंग पृ. ९३		१४	यौवनस्थ अंग पृ. ९७	
२	जंघापस्स	१२	१	मत्थक	१	१	उदर	१
२	ऊरुपस्स	१४	१	सीस	२	१	कडि	२
२	पादपस्स	१६	२	संख	४	१	णाभि	३
१६	अनागत अंग पृ. ८३		१	णिडाल	५	२	कडिपस्स	५
१	मुहपुरिम	१	२	कण्णपुत्तक	७	२	पट्टिपस्स	७
१	णिडालपुरिम	२	२	कण्ण	९	१	पट्टिमज्झ	८
१	कंठपुरिम	३	२	गंड	११	१	लोमवासी	९
१	हृदयपुरिम	४	२	ओडु	१३	१	मेहण	१०
२	जंतुतरपुरिम	६	१	दंत	१४	१	वत्थि	११
१	उरपुरिम	७	१	णासा	१५	१	[वत्थि]सीस	१२
२	बाहुणालीपुरिम	९	१	णासपुड	१६	२	फल	१४
१	वत्थिपुरिम	१०	२	कणवीरक	१८			
१	सीसपुरिम	११	२	अपंग	२०			
१	उदरपुरिम	१२		१४ मध्यम अंग पृ. ९४		२	बाहा	२
२	जंघापुरिम	१४	१	जंतुअंतर	१	२	बाहुणाली	४
२	ऊरुपुरिम	१६	१	थणंतर	२	१	हत्थंगुलीउदर	५
			१	हियय	३	२	हत्थंगुट्ट	७
५०	अभ्यंतर अंग पृ. ८४		१	उदर	४	२	हत्थ	९
२	पादतलभ्भंतर	२	२	अंस	६	१	अंसवीफाणिय	१०
२	पाणितलभ्भंतर	४	२	बाहु	८	२	जंतु	१२
२	जंघभ्भंतर	६	२	पबाहु	१०	२	थण	१४
२	ऊरुभ्भंतर	८	२	हत्थ	१२			
२	कक्खभ्भंतर	१०	२	हत्थतल	१४	१	२० महावयः अंग पृ. ९९	
२	अक्खिअभ्भंतर	१२				१	गोवा	१
२	वक्खणभ्भंतर	१४	२	१० जघन्य अंग पृ. ९४		१	हणु	२
१	णाभिअभ्भंतर	१५	२	अंगुट्ट	२	२	दंत	४
१	मेहणभ्भंतर	१६	२	पादपणिह	४	२	ओडु	६
५	हितयसमूहभ्भंतर	२१	२	जंघा	६	१	णासा	७
२	कण्णभ्भंतर	२३	२	गुप्फ	८	२	णासापुड	९
१	णासिकभ्भंतर	२४		पादहितय	१०	२	गंड	११
२	बाहुणालीअभ्भंतर	२६	२	२ उत्तममध्यमसाधारणअंग पृ. ९५		२	कवोल	१३
२	हत्थभ्भंतर	२८		जंतु	२	१	धुमकंतर	१४
१	सोणिअभ्भंतर	२९		२ मध्यमानंतरमध्य-		१	णिडाल	१५
१	गुदभ्भंतर	३०	२	साधारण अंग पृ. ९६		१	सिर	१६
१	मत्थकभ्भंतर	३१		वक्खण	२			
१	णिडालभ्भंतर	३२		२ मध्यमानंतरजघन्य-				
१	गोवभ्भंतर	३३	२	साधारण अंग पृ. ९६				
२	गंडभ्भंतर	३५		गोप्फ	२	२	२ बालयौवनस्थसाधारणअंग पृ. १००	
२	धुमगभ्भंतर	३७	२	१० बालेय अंग पृ. ९७			वक्खण	२
२	जंतुअभ्भंतर	३९	२	पादंगुट्ट	२		२ यौवनस्थमध्यमवयः-	
१	उरभ्भंतर	४०	२	पादगुलि	४	२	साधारण अंग पृ. १००	
१	उदरभ्भंतर	४१	२	गोप्फ	६		थण	२
			२	जंघा	८		२ मध्यमवयोमहावयः-	
				पादतल	१०	२	साधारण अंग पृ. १००	
							जंतु	२

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या	अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या	अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२०	ब्राह्मणेय अंग पृ. १०१		७२	शुक्लवर्णप्रतिभाग अंग पृ. १०३		१	बाहु	९
१	दंत	१	२८	दह	२८	१	भमुह	१०
२	ओष्ठ	३	१६	पुरिम	४४	१६	वामप्राणहर अंग पृ. ११२	
२	कण्ठ	५	२०	णख	६४	२	अच्छि	२
२	गंड	७	१	हितय	६५	२	कण्ठ	४
२	कवोल	९	२	थण	६७	२	संख	६
२	अक्खि	११	१	दंत	६८	१	हितय	७
२	भुम	१३	१	गीवा	६९	१	णाभि	८
१	णासा	१४	१	खंध	७०	१	कडि	९
१	णिडाल	१५	२	अक्खि	७२	२	पस्स	११
२	संख	१७	३	पांडुप्रतिभाग अंग पृ. १०४		१	संधि	१२
१	सिर	१८	१	अवंगम्भंतर	१	४	तल	१६
२	बाहु	२०	२	अक्खिअम्भंतर	३	१६	वामधनहर अंग पृ. ११२	
१४	क्षत्रिय अंग पृ. १०१		१०	स्निग्ध अंग पृ. १०५		१	हियय	१
२	खंध	२	१	मुह	१	२	बाहुसंधि	३
१	अंसपीठ	३	२	णासापुड	३	२	कक्खा	५
२	बाहु	५	२	कण्ठ	५	२	हत्थ	७
२	जत्तु	७	१	मेड्ड	६	१	ककाडिका	८
१	उर	८	२	अक्खि	८	२	गोप्फ	१०
२	थण	१०	२	थण	१०	२	अक्खिकण्ठ	१२
१	हियय	११	१०	आहार अंग पृ. १०७		२	संख	१४
२	पस्स	१३	१	चक्खु	१	२	पाद	१६
१	पट्ठि	१४	१	सोत्त	२	३०	शाखावाम अंग पृ. ११२	
१४	वैश्येय अंग पृ. १०१		१	घाण	३	४	अंगुट्ट	४
२	कुक्खिपस्स	२	१	देहफरिस	४	१६	अंगुलि	२०
२	कडीपस्स	४	१	जिब्भा	५	१०	बाल	३०
१	उदर	५	१	हत्थ	६	११	शिव अंग पृ. ११३	
२	ऊरु	७	१	पाद	७	१	णिडाल	१
१	मेड्ड	८	१	सीस	८	१०	णिद्ध	११
२	वक्खण	१०	१	बाहु	९	११	स्थूल अंग पृ. ११३	
१	वत्थि	११	१	भमुह	१०	२	ऊरु	२
१	[वत्थि]सीस	१२	१	नीहार अंग पृ. १०७		१	उर	३
२	फल	१४	१	चक्खु	१	१	पट्ठि	४
१०	शूद्रेय अंग पृ. १०२		१	सोत्त	२	१	सिर	५
२	पादंगुट्ट	२	१	घाण	३	२	गंड	७
२	पादंगुलि	४	१	देहफरिस	४	२	थण	९
२	गोप्फ	६	१	जिब्भा	५	२	फिया	११
२	जंघा	८	१	हत्थ	६	१	उपस्थूलअंग पृ. ११४	
२	पादतल	१०	१	पाद	७	२	जंघा	२
			१	सीस	८	१	सिर	३

अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या	अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या	अङ्गसंख्या	अङ्गनाम	सर्वसंख्या
२	अधर	५	१	मैढ	९	२	त्र्यस्त्र अंग पृ० ११७	
२	बाहु	७	२	थविका	११	१	वत्थि	१
२	हृत्थपाद	९	१	सिर	१२	१	[वत्थि]सीस	२
२५	युक्तोपचय अंग पृ. ११४	२	अधर	१४	५	काय अंग पृ० ११७		
४	अंगुट्ट	४	१	जिब्भा	१५	१	कायवंत	१
१६	अंगुलि	२०	४	अंगुट्ट	१९	१	मज्झिमकाय	२
१	णिडाल	२१	१	लोम	२०	१	मज्झिमार्णतरकाय	३
१	चिबुक	२२	६	पाणिलेहा	२६	१	जधण्णकाय	४
२	ओट्ट	२४	१०	परिमंडल अंग पृ० ११५	१	१	जधण्णतरकाय	५
१	णासा	२५	१	मत्थग	१	२७	तनु अंग पृ० ११७	
१७	कृश अंग पृ. ११४	२	बाहुसीस	३	२	पादतल	२	
२	गोप्फ	२	२	जाणुसीस	५	२	पाणितल	४
२	जण्णुगसंधि	४	२	धण	७	२	कण्ण	६
२	मणिबंध	६	१	णाभि	८	१	जिब्भा	७
१	उवत्थग	७	२	फिया	१०	२०	णह	२७
२	[कण्ण]संधि	९	१४	करणमंडल अंग पृ० ११६	२१	परमतनु अंग पृ० ११७		
२	भुमसंधि	११	१	दक्खिणबाहुमंडल	१	२०	अगणह	२०
२	संख	१३	१	वामबाहुमंडल	२	१	अगकेस	२१
१	पट्टि	१४	१	बाहुसंघातमंडल	३	२	अणु अंग पृ० ११७	
१	कुक्कुडा	१५	१	सत्थिसंघातमंडल	४	१	केसलोमणह	१
२	अवडु	१७	८	अंगुलिमंडल	१२	१	मंसु	२
११	परंपरकृश अंग पृ. ११४	१	१	अंगुट्टंगुलिमंडल	१३	५	हृदय अंग पृ० ११८	
२	खलुक	२	१	संघायमंडल	१४	२	पादतलहितय	२
२	जाणुक	४	१०	२० वृत्त अंग पृ० ११६	१०	२	पाणितलहितय	४
२	ढेल्लिक	६	१०	हत्थंगुलिपव्व	२०	१	हितय	५
२	कोप्पर	८	१२	पादंगुलिपव्व	२०	५	ग्रहण अंग पृ० ११८	
१	केस	९	१	१२ पृथु अंग पृ० ११६	१	१	केस	१
१	रोम	१०	१	उर	२	१	मंसु	२
१	हण (णह)	११	१	ललाड	३	१	अधोमंसु	३
२६	दीर्घ अंग पृ. ११४	२	२	पट्टि	५	२	कक्खा	५
२	बाहु	२	२	पादतल	७	२	५ उपग्रहण अंग पृ० ११८	
२	पबाहु	४	२	पाणितल	९	२	भुम	२
२	जंघा	६	२	कण्णपीढ	११	२	अक्खिपम्ह	४
२	ऊरु	८	१	गंड	१२	१	लोमवासी	५
१६	अंगुलि	२४	४१	जिब्भा	१	५६	रमणीय अंग पृ० २१८	
१	केस	२५	१	णिडाल	३	२	ओट्ट	२
१	पट्टि	२६	२	पस्स	५	२	दंत	४
२६	युक्तप्रमाण दीर्घ अंग पृ० ११५	२	२	पादतल	७	१	णिडाल	५
२	भुम	२	२	पाणितल	९	२	पादतल	७
२	अक्खि	४	२	पण्हितल	११	२	पाणितल	९
२	णासा	६	३०	कडितल	४१	१	उर	१०
२	जत्तु	८		पव्वंतरंगुल				

२०	अंगुलिपोट्ट	३०	१०	पादंगुलिपोट्टिया	३०	२	ऊरु	१०	
२०	नह	५०	२	[पाद]तल	३२	२	जाणु	१२	
१	णासा	५१	२	पण्ह	३४	२	अंस	१४	
१	णासपुड	५२	२	खुल	३६	२	बाहु	१६	
१	सोणि	५३	२	गोप्फ	३८	२	पबाहु	१८	
२	कण्ण	५५	४	कंडग	४२	२	बाहुसंधि	२०	
१	मेहण	५६	२	जंघा	४४	१	उदर	२१	
१२ आकाश अंग पृ. ११८				२	पेंडिका	४६	१	कडि	२२
१	णिडाल	१	२	जाणु	४८	२	कडिपस्स	२४	
२	अंसपीढ	३	२	फिया	५०	१	लोमवासी	२५	
२	जाणु	५	२६ प्रिय अंग पृ. १२०			१	उर	२६	
२	जाणुपच्छिम	७	१	णिडाल	१	१	सिर	२७	
२	पादतल	९	१	मत्थक	२	२	अधर	२९	
२	पाणितल	११	१	सीस	३	१	जत्तु	३०	
१	पट्टि	१२	२	संख	५	१	मुह	३१	
५६ दहरचल अंग पृ. ११९				२	कण्ण	७	१	सीस	३२
२८	हत्थंगुलिपव्व	२८	२	अक्खि	९	१	तल	३३	
२८	पादंगुलिपव्व	५६	१	णासिका	१०	३३ अंत अंग पृ. १२१			
५३ दहरस्थावरेय अंग पृ. ११९				२	दंत	१२	२०	अंगुलिअग	२०
२८	हत्थंगुलिपव्वंतर	२८	२	ओट्टु	१४	१	केसग	२१	
२८	पादंगुलिपव्वंतर	५६	१	जिब्बा	१५	१	लोमग	२२	
दहरस्थावरेय अंग १३ मतान्तरे				२	गंड	१७	२	कण्णग	२४
२	जंघामज्झ	२	१	उर	१८	२	णासग	२६	
२	ऊरुमज्झ	४	२	थण	२०	२	कोप्पर	२८	
२	बाहुमज्झ	६	१	थणंतर	२१	२	पण्हक	३०	
१	पट्टि	७	२	हत्थंगुट्ट	२३	२	फिया	३२	
२	पस्स	९	२	हत्थ	२५	१	ककाडिका	३३	
२	कर	११	१	णाधि	२६	२० तीक्ष्ण अंग पृ. १२२			
२	कम	१३	२६ मध्यस्थ अंग पृ. १२०			२०	अगदंत	२०	
१० ईश्वर अंग पृ. ११९				१	भुमंतर	१	२ दुर्गंध अंग पृ. १२२		
१	णिडाल	१	१	वंस	२	२	पिहित णासापुड	२	
१	मत्थक	२	१	मत्थक	३	२ सुगंध अंग पृ. १२२			
१	सीस	३	१	णासिका	४	२	अवंगुत णासापुड	२	
१	कण्ण	४	१	मुह	५	१ बुद्धिरमण अंग पृ. १२२			
१	गंड	५	१	उर	६	२	हत्थ	२	
१	भुमंतर	६	१	थणंतर	७	२	पाद	४	
१	दंत	७	१	हितय	८	२	मुम	६	
१	ओट्टु	८				२	अक्खि	८	
१	णासा	९	३३ आतिमूलिक अंग पृ. १२१			१	मुह	९	
१	जिब्बा	१०	२	पादंगुट्ट	२	४ अबुद्धिरमण अंग पृ. १२२			
५० प्रेक्ष्येय अंग पृ. ११९				२	पाद	४	२	पस्स	२
१०	पादंगुलि	१०	२	गोप्फ	६	१	उदर	३	
१०	पादणह	२०	२	जंघा	८	१	पट्टि	४	

११ महापरिग्रह अंग पृ. १२२			२ शब्दवत् अंग पृ. १२३			१२ निम्न अंग पृ. १२३			
१	उदर	१	१	गुदा	१	२	चक्खण	२	
२	हृत्थ	३	१	मेहण	२	२	कक्खा	४	
२	पाद	५	१० वर्ण्य अंग पृ. १२३			२	अक्खिकूड	६	
२	कण्ण	७	१	केसमंसु	१	२	कण्णसोत	८	
१	णासा	८	१	उर	२	२	गीवाहेट्ट	१०	
२	अंखि	१०	१	पट्टि	३	१	कुकुंदल	११	
१	मुह	११	२	जंघा	५	१	णाभि	१२	
४ अल्पपरिग्रह अंग पृ. १२२			२	कक्खा	७	९ गंभीर अंग(?) पृ. १२४			
१	केस	१	१	वत्थिसीस	८	१	मुह	१	
१	लोम	२	२	संख	१०	१	णासा	२	
१	णह	३	१० अग्नेय अंग पृ. १२३			२	कण्ण	४	
१	मंसु	४	१	मुह	१	२	बाहु	६	
१९ बद्ध अंग पृ. १२२			२	अच्छि	३	१५ विषम अंग पृ. १२४			
	हृत्थ	१	१	उर	४	१	णासा	१	
	पाद	१	१	हितय	५	२	अंसपीढ	३	
	सिहा	२	१	तल	७	२	वसण	५	
	कण्ण	१	१	जिब्भा	८	२	फिया	७	
२७ मोक्ष अंग पृ. १२२			२	तिक	१०	२	कोप्पर	९	
	हृत्थ			प्रकासन्तरेण		२	जत्तुग	११	
	पाद	२		अक्खि	२	२	खलुक	१३	
	सिहा	१		णासिका	३	२	मणिबंध	१५	
	कण्ण	२		कण्ण	५	८४ पुण्ण अंग पृ. १२४			
२ शाब्देय अंग पृ. १२३			१	णिडाल	६	२	गंड	२	
२	कण्णसोत	२	१	मुह	७	२	थण	४	
२ रूपेय अंग पृ. १२३			१	मत्थग	८	१	उदर	५	
२	णयण	२	१	कण्णुप्परिका	९	१	आस	६	
२ गंधेय अंग पृ. १२३			१	सिस्स	१०	२	अंजलि	८	
२	णासापुड	२		२ दर्शनीय अंग पृ. १२३			१	मुह	९
१ रसेय अंग पृ. १२३			१	चक्खु	१	७५	पुण्णाम	८४	
१	जिब्भा	१	१	सोणि	२	१९ विवर अंग पृ. १२४			
२ स्पर्शेय पृ. १२३				१० स्थल अंग पृ. १२३			१	मुह	१
१	तया	१	१	मत्थक	१	२	पालु	३	
१	पोरिस	२	१	णिडाल	२	१६	अंगुलिअंतर	१९	
१ मननीय अंग पृ. १२३			१	गंड	४	८ विवृतसंवृत अंग पृ. १२४			
१	हितय	१	२	हितय	५	२	अक्खि	२	
४ वातवत् अंग पृ. १२३			१	उर	६	२	हृत्थ	४	
१	मुह	१	१	करतल	८	२	पाद	६	
१	आसम्म	२	२	कमतल	१०	१	गुदा	७	
२	कण्ण	४	२			१	मेड्ड	८	

७ सुकुमाल अंग पृ. १२४

१	जिब्भा	१
२	अक्खि	३
२	ऊरु	५
१	पालु	६
१	मेहण	७

७ मृदुक अंग पृ. १२४

१	जिब्भा	१
२	अक्खि	३
२	ऊरु	५
१	पालु	६
१	मेहण	७

२४ खर अंग पृ. १२४

२०	णहसिहा	२०
२	कोप्पर	२२
२	जण्णुक	२४

१० कुटिल अंग पृ. १२४

१०	पादअंगुलि	१०

१० उजुक अंग पृ. १२४

१०	हत्थंगुलि	१०

३६ चंडानत अंग पृ. १२४

१	णिडाल	१
२	अगकण्ण	३
२	भुम	५
२	ओट्ट	७
१	दंतसेढी	८
२	संख	१०
२	कण्णपाली	१२
४	अंगुट्ट	१६
१६	अंगुलि	३२
२	कक्ख	३४
२	णासापुड	३६

६ आयत अंग पृ. १२५

२	जंघा	२
२	ऊरु	४
२	बाहु	६

४ आयतमुद्रित अंग पृ. १२५

२	जंघा	२
२	फिया	४

१५ रुद्र अंग पृ. १२५

७५	उवहुत	७५
२०	तिक्ख	१५
२२	मृदुभाग अंग पृ. १२५	
२	ओट्ट	२
४	अंगुट्ट	६
१६	अंगुलि	२२

२ पुत्रेय अंग पृ. १२५

२	अंगुट्ट	२

२ कर्ण अंग पृ. १२५

२	कण्णिल्लिका	२

४ स्त्रीभाग अंग पृ. १२५

२	अणामिका	२
२	मज्झिमिया	४
२	युवती अंग पृ. १२५	
२	पदेसिणी	२

१४ तंब पृ. १२५

२	पादतल	२
२	पाणितल	४
२	ओट्ट	६
२	अवंग	८
१	जिब्भा	९
१	तालुक	१०
२	कणवीरक	१२
२	अंगुट्ट	१४

४ रोगमण अंग पृ. १२५

१	केस	१
१	लोम	२
१	णह	३
१	मंसु	४

६ पूति अंग पृ. १२५

२	कक्खा	२
२	वसणंतर	४
१	अधिट्ठाण	५
१	मेहण	६

६ चपल अंग पृ. १२५

२	हत्थ	२
२	पाद	४
२	णयण	६

७ अचपल अंग पृ. १२५

१	सिर	१
१	ललाड	२
१	पट्टी	३
२	पस्स	५
१	उदर	६
१	उर	७

४ गुह्य अंग पृ. १२५

१	मेहण	१
१	पालु	२
२	वसण	४

५ उत्तानोन्मस्तक अंग पृ. १२५

२	हत्थ	२
१	मुह	३
२	अक्खि	५

१२ तत अंग पृ. १२५

२	कण्णसकुली	२
२	कण्ण	४
२	फिया	६
२	जंघा	८
२	ऊरु	१०
२	पेडिक	१२

१० क्लिष्ट अंग पृ. १२६

६	पूति	६
१	केस	७
१	लोम	८
२	णह	१०

१६ अंतर अंग पृ. १२६

२	भुजंतर	२
२	ऊरुअंतर	४
१२	अंगुलिअंतर	१६

११ शूर अंग पृ. १२६

१	दंत	१
१०	हत्थणह	११

३ भीरु अंग पृ. १२६

२	अच्छि	२
१	हितय	३

(५)

पञ्चमं परिशिष्टम्

अंगविज्जामध्यगतानां विशिष्टवस्तुनाम्नां विभागशः सङ्ग्रहः

मनुष्यविभागः

(१) चतुर्वर्णविभाग पृष्ठ १०२-३

बंधण	बंधवेस्स	सुद्धबंध	वेस्सखत्त	वेस्ससुद्ध	सुद्धबंध
बंधखत्त	वेस्सबंध	खत्तिक	खत्तसुद्ध	सुद्धवेस	
खत्तबंध	बंधसुद्ध	खत्तवेस्स	सुद्धखत्त	सुद्ध	

(२) जातिविभाग पृष्ठ १४९

अज्ज	सुद्धवण्ण	ववहारोपजीवी	दीववासि	ओवात	अज्जदेसंतर
मिलक्खु	साम	सत्थोपजीवी	जणपदवासि	पुरत्थिमदेसीय	अणज्जदेसिज्ज
बंधण	कालक	खेतोपजीवी	चेट्टितक	दक्खिणदेसीय	
खत्तिय	महाकाय	णिक्खुडवासि	आपेलचिंध	पच्छिमदेसीय	
वेस्स	मज्झिमकाय	णिक्खुडदेसिज्ज	कण्ह	उत्तरदेसीय	
सुद्ध-मिलक्खु	पच्चवरकाय	पव्वतवासि	कंचुर्कचिंध	अज्जदेसणिस्सित	

(३) गोत्रविभाग पृष्ठ १४९-५०

गहपतिक	संडिल्ल	वराह	मुज्जायण	लोहिच्च	इतिहास
दिजाति	कुंभ	डोहल	कत्थलायण	पियोभाग	रहस्स
माढ	माहकि	कंडूसी	गहिक	पव्वयव	सुयवेद
गोल	कस्सव	भागवाती	णेरित	संडिल्ल	सामवेद
हारित	गोतम	काकुरुडी	बंधच्च	आपुरायण	यजुर्वेद
चंडक	अग्गिरस	कण्ण	काप्पायण	वावदारी	अहव्वेद
सकित(कसित)	भगव	मज्झंदोण	कप्प	वग्घपद	एकवेद
वासुल	भागवत	वरक	अप्पसत्थभा	पिल	दुवेद
वच्छ	सद्य	मूलगोत्त	सालंकायण	देवहच्च	तिवेद
कोच्छ	ओयम	संखागोत्र	यणाण	वारिणीलं	सव्ववेद
कोसिक	लोकक्खि	भेदानुजोग	आमोसल	सुधर	छलंगवि
कुंड-कौंड	कचक्खि	कढ	साकिज्ज	थीणव	सेणिक
सगोत्त	चारायण	कलव	उपवति	वेयाकरण	णिरागति
सकविगतगोत्त	पारावण	वालंव	डोभ	मीमंसक	वेदपुट्ट
बंधचारिक	अग्गिवेस	सेतस्सतर	थंभायण	छंदोक	सोत्तिय
पवर	मोग्गल्ल	तेत्तिरिक	जीवंतायण	पण्णायिक	अज्झायी
मंडव	अट्टिसेण	मज्झरस	दढक	ककितजाण	आचरिय
सेट्टि	पूरिमंस	बज्झस	धणजाय	यण्णिक	जावक
वासिद्ध	गद्दभ	छंदोग	संखेण	तिक्खक	णगति
				जोतिसिक	वामपार

(४) योनिविभाग-अटक पृष्ठ १३८-४०

धम्मजोणि	रायाणुपायजोणि	मरणजोणि	मज्झिमजोणि	उत्तरजोणि	मूलजोणि
अत्थजोणि	रायपुरिसजोणि	सयितव्वजोणि	उत्तमजोणि	पच्छिमजोणि	आभरणजोणि
कामजोणि	वणियप्पधजोणि	छिण्णजोणि	पच्चवरजोणि	दक्खिणजोणि	धण्णजोणि
संगमजोणि	कारुकजोणि	णट्टजोणि	अब्भंतरजोणि	दक्खिणपच्छिमजोणि	वत्थजोणि
विप्पयोगजोणि	अणुयोगजोणि	विणयजोणि	बाहिरजोणि	पच्छिमउत्तरजोणि	रण्णजोणि
मित्तजोणि	अज्जजोणि	बंधचारिगजोणि	साधारणजोणि	पुव्वुत्तरजोणि	आरामजोणि
विवादजोणि	सिस्सजोणि	बंधणजोणि	णपुंसकजोणि	पुव्वदक्खिणजोणि	अधमजोणि
पावासिकजोणि	पेस्सजोणि	खत्तिथजोणि	पुण्णामजोणि	उपरिट्ठिमजोणि	उण्णतजोणि
पवुत्थजोणि	बंधणजोणि	वेस्सजोणि	धोणामजोणि	हेट्ठिमजोणि	णिण्णजोणि
आंगमणजोणि	मोक्खजोणि	सुद्धजोणि	अणागतजोणि	आहारणीहारजोणि	स्सजोणि
णिग्गमजोणि	मुदितजोणि	बालजोणि	अतिक्कंतजोणि	णीहाराहारजोणि	वण्णजोणि
रायजोणि	आतुरजोणि	जोव्वणजोणि	वत्तमाणजोणि	पाणजोणि	गंधजोणि
			पुरिस्थिमजोणि	धातुजोणि	उड्डुजोणि

(५) सगण्यण (सगण)

पृष्ठ ६८	णत्ती	पृ० २१९	संल	मातुस्सियाधीतर	जोणिभगिणी
पज्जिया	पणत्तिणी	अज्जय	संली	पितुस्सियाधीतर	सोदरियभगिणी
अज्जिया	सुण्हा	पितर	मेधुण	पित्तियधीतर	भागिणेज्ज
नानिका	सावत्ती	पेत्तिज्ज	देवर	जातर	जोणिपुत्त
महमातुया	सल्लिका	मातुल	पतिजेट्ट	णणंदर	भत्तिअ
चुल्लमाता	मेधुणा	मातुस्सिया	भातुवयस्स	सही	भातुपुत्त
माउस्सिया	भातुज्जाया	पितुस्सिया	भगिणिपति	भातुज्जा	भगिणिपुत्त
पितुस्सिया	भगिणी	चुल्लमातुया	मातुलपुत्त	सल्ली	धीया
भज्जा	भागिणेज्जा	अज्जिया	मातुस्सियापुत्त	महपितुकधीतर	भातुधीतर
सही	पितुस्सहा	भाता	भज्जा	मातुलधीतर	भगिणिधीतर
धूता	मातुस्सहा	भगिणी	साली	सोदरी	ण्डुसा

(६) कर्मविभाग-व्यापारविभाग

पृष्ठ ७९	पृष्ठ ८१	उज्जाणपालक	गीतकारि	मंगलवायण	सीसारक्ख
पडिहारक	उक्खिततुंबिक	वणपालक	णट्टक	पृ० १५९	पडिहारक
जंघावाणियक	बाहिरतुंबिय	पुप्फुच्चाग	अग्गिक्क	रायपोरिस	सूत (सूद)
दिसावाणियग	पक्खच्छयक	फलुच्चाग	जाणक	ववहार	महाणसिक
छत्तहारग	कव्वुड	वत्तणीपालग	आजीवाणिक	कसिगोरक्ख	मज्जघरिय
सासणहारग	भागहारक	अंतपाल	पृ० ९२	कारुककम्म	पाणघरिय
पेसणिय	साधिवक्खर	पच्चंतपाल	णीलीकारक	भतिकम्म	हत्थाधियक्ख
आदिट्टभूमिय	पृष्ठ ८८	पृष्ठ ९०	इंगालकारक	वाणियककम्म	महामत्त
णिज्जामक	पडिहारि	उल्लायक	णीलहारक	राया	हत्थिमेंठ
कुक्खिधारक	संधिवाल	कंसिक	णीलवाणियक	राथमच्च	अस्साधियक्ख
णाविक	अब्भागारिक	सुद्धाकारि	इंगालवाणियक	अमच्च	अस्सारोध
डुपहारक	पृष्ठ ८९	पृ० ९१	पृ० १४७	अस्सवारिक	अस्सबंधक
पग्गाहक	वणकम्मिक	दिविकाहारिक	घटिक	आसवारिय	छागलिक
कंतिकवाहक	णाविकम्म	पादीविक	चक्कि	णायक	गोपाल
तंबाधावक	कट्टहारक	उज्जालक	सत्थिक	अब्भाकारिय	पृ० १६०
अब्भाकारिक	आरामपालक	कावकर	वेतालिक	भांडगारिय	महिमीपाल

उट्टपाल	पाणियधरिय	लोहकार	छत्तधारक	दारुकआधिकारिक	फलकारक
मगलुद्धग	ण्हाणधरिय	सीतपेट्टक	पसाधक	सामेलक्ख	सीकाहारक
ओरब्भग	सुराधरिय	कुंभकार	हत्थिखंस	हत्थारोह	मडुहारक
अहिनिप	कट्ठाधिकत	मणिकार	अस्सखंस	अस्सारोह	कोसेज्जवायक
हत्थिमहामत्तो	तणाधिगत	संखकार	अग्गिउपजीवी	पेस्स	दियंडकंबलवायक
गोसंखी	बीतपाल	कंसकार	आहितग्गि	बंधनागारिय	कोलिक
गजाधिपति	ओपेसेज्जिक	पट्टकार	कुसीलक (व ?)	चोरलोपहार	वेज्ज
कोसरक्ख	आरामाधिगत	दुस्सिक	रंगवचर	मूलकखाणक	कायतेगिच्छक
लेखक	णगरक्ख	रयक	गंधिक	मूलिक	सल्लकत्ता
गणक	असोकवणिकापाल	कोसेज्ज	मालाकार	मूलकम्म	सालाकी
पुरोहित	वाणाधिगत	वाग	चुण्णकार	सत्थक	भूतविज्जिक
संवच्छर	आभरणाधिगत	साम	सूतमागध	हेरण्णिक	कोमारभिच्च
दाराधिगत	उदकवड्डिक	महिसधातक	पुस्समाणव	सुवण्णिक	विसत्तिथिक
दारपाल	मच्छबंध	उस्सणिकामत्त	पुरोहित	चंदण०	सिप्पपारगत
बलगणक	नाविक	छत्तकारक	धम्मट्ट	दुस्सिक	चम्मकार
सेणापति	बाहुविक	वत्थोपजीविक	महामंत	संजुकारक	ण्हाविय
गणिकाखंसक	सुवण्णकार	फलवाणिय	दपकार	गोवज्झभतिकारक	गोहातक
वरिसधर	अलत्तकारक	मूलवाणिय	बहुस्सय	पृ. १६१	चोरथात
वत्थाधिगत	रत्तरज्जक	धण्णवाणिय	मणिकार	ओयकार	मायाकारक
णगरगुत्तिय	देवड	ओदणिक	कोट्टाक	ओडु	गोरीपाढक
दूत	उण्णवाणिय	कम्मासमंसवाणिज्ज	वत्थुपाढक	कुंभकारिक	लंखक
जइणक	सुत्तवाणिय	तप्पणवाणिज्ज	वत्थुवापतिक	इडुकार	मुट्टिक
पेसणकारक	जतुकार	लोणवाणिज्ज	मंतिक	बालेपतुंद	लासक
पत्तिहारक	चित्तकार	आपूषिक	मंडवापत	सुत्तवत्तथ	वेलंबक
तरपअट्ट	चित्ताजीवी	खज्जकारक	तित्थवापत	कंसकारक	गंडक
णावाधिगत	तट्टकार	पण्णिक	आरामवावत	चित्तकारक	घोसक
तित्थपाल	सुद्धरज्जक	सिंमारवाणिय	रधकार	रूक्कखर	

(७) स्थानाध्यक्षविभाग

पृ. १५९	गयाधियक्ख	गणिकखंस	पतिआरक्ख	पुरोहित	तारावति
राया	मज्जधरिय	बलगणक	सुंकासालिय	आयुधाकारिक	गहवति
रायकम्मिक	पाणियधरिय	गायक	रज्जक	सेणापति	जोतिपति
अमच्च	णावाधियक्ख	वरिसधर	पधवावत	कोट्टाकारिक	जोतिसपति
अमच्चकम्मिक	सुवण्णाधियक्ख	वत्थुपारिसद	आडविक	पृष्ठ २३९	जगपति
णायक	हत्थिअधिगत	आरामपाल	णगराधियक्ख	सुरवति	गणपति
आसणत्थ	अस्सअधिगत	पच्चंतपाल	सुसाणवावत	धणवति	कुलपति
भांडागारिक	योग्गायरिय	दूत	सूणावावत	जलवति	जूहपति
अब्भागारिक	गोवयक्ख	संधिपाल	चारकपाल	पोतवति	मिगपति
महाणसिक	पडिहार	सीसारक्ख	फलाधियक्ख	णरवति	गोपति
			पुप्फाधियक्ख	णइवति	पथापति

(८) यानविभाग

पृष्ठ ७१	गिल्ली	जलचरयान	पृष्ठ १६६	पल्लंकसिका	जुग्ग
सकडी	सिबिका	णावा	स्थलचरयान	रध	गोर्लिंग
सकडिका	संदमाणिका	कोटिंव	सिबिका	संदमाणिका	सकड
थिल्ली	पृष्ठ १४६	डआलुय	भद्दासण	गिल्लि	सकडी

उल्लाघित	प्लव	कटु	मक सं. मृग	सक जाण	सिबिका
अणुल्लाघित	पिडिका	सजीवयान	सिंगी	णव जाण	रध
जलचरयान	कंड	अस्स	असिंगी	जुण्ण जाण	जाण
णावा	वेलु	हत्थि	बलिवद्	दुद्धित जाण	जुग
पोत	तुंब	उट्ट	अय	सुद्धित जाण	कटुमुह
कोट्टिब	कुंभ	गो	एलम	कीतक जाण	गिल्लि
सालिका	दति	महिस	याचितक जाण	विक्रीत जाण	संदण
तप्पक	संधाड	खर	आधावितक जाण	पडिरूव जाण	सकड
		अयेलक	अपहरितक जाण	पृष्ठ १९३	सकडी

(१) नगर-विभाग

पृष्ठ १६१	चिरनिविट्टनगर	परिमंडलनगर	उद्धनिविट्टनगर	बहुपरिकखेस	बहुवुट्टिकणगर
बंधणज्झोसियणगर	अचिरनिविट्टनगर	चतुस्सणगर	पव्वतणगर	कारामणणगर	बहूदकवाहनगर
बंधणोसण्णणगर	बहुउदकनगर	कट्टपागारपरिगतणगर	निव्विगंदिणगर	पुरत्थिमदिसणगर	बहुमकसकणगर
खत्तियज्झोसियणगर	बहुवुट्टीकनगर	इट्टपागारपरिगतणगर	पाणुप्पविट्टणगर	पच्छिमदिसणगर	सत्थप्पवातबहुलणगर
खत्तियोसण्णणगर	अप्पोदगनगर	दक्खिणोद्दणणगर	बहुवाधीतणगर	दक्खिणदिसणगर	आसण्णणगर
वइस्सज्झोसितणनगर	अप्पवुट्टीकणगर	वामोद्दणणगर	अव्वाधितणगर	उत्तरदिसणगर	जुतोपकट्टणगर
वेस्सोसण्णणगर	चोरवासणगर	पविट्टणगर	पृष्ठ १६२	बहुअण्णपाणणगर	पच्चत्तिमणगर
सुद्धज्झोसियणगर	अज्जवासणगर	वित्थिणणगर	अप्पुज्जोणगर	बहुवातकणगर	सुभिक्षयोगक्खेम-
सुद्धोसण्णणगर	अप्पणगर	गहणणिविट्टणगर	अत्तिक्खदंडणगर	बहुवातोवद्दवणगर	गतणगर
रायहाणी	परणगर	आरामबहुलणगर	अप्पपरिक्खेसणगर	बहुउण्हणगर	अणभिवुत्तणगर
साखानगर	दीहणगर		बहुविग्गहणगर	आलीपणगबहुलणगर	विस्सुतकित्तियणगर
				बहूदकणगर	रमणीयणगर

(१०) गृह-शाला घर-निलय विभाग

पृष्ठ १३६	उपलगिह	रसोतीगिह	भंडगिह	सवणगिह	चित्तगिह
गब्भगिह	हिमगिह	हयगिह	ओसधगिह	उज्जाणगिह	सिरिघर
अब्भंतरगिह	आदंसगिह	रधगिह	चित्तगिह	जाणसाला	ण्हाणघर
भत्तगिह	तलगिह	गयगिह	पृष्ठ १३८	वेसगिह	पुस्सघर
वच्चगिह	आगमगिह	पुप्फगिह	लतागिह	ण्हाणगिह	दासीघर
उदगगिह	चतुक्कगिह	जूतगिह	दगकोट्टगिह	अंगणगिह	देवागार
अगिगिह	रच्छागिह	पातवगिह	कोसगिह	आतुरगिह	पृष्ठ २२३
भूमिगिह	दंतगिह	खलिणगिह	पाणगिह	संसरणगिह	अगिघर
मोहणगिह	कंसगिह	बंधणगिह	सयणगिह	सुकसाला	णागघर
दुवारसाला	पडिकम्मगिह	जाणगिह	गयसाला	करणसाला	पृष्ठ २५८
उवट्टणजालगिह	कंससाला	पृष्ठ १३७	रधसाला	पृष्ठ २२२	तणसाला
सिप्पगिह	आतवगिह	भग्गगिह	जूतसाला	भत्तघर	तेमगिह
कम्मगिह	पणियगिह	जलगिह	पाणगिह	वासघर	कारुगिह
रयतगिह	आसणगिह	महासणगिह	वत्थगिह	पडिकम्मघर	पधिकणिलय
ओधिगिह	भोयणगिह	रयणगिह	लेवणगिह	असोयवणिया	

(११) स्थान-प्रदेश गृह-प्राकारादिवयव प्रादेशिकसंकेत विभाग

पृष्ठ १३६	विमाण	पागार	सयण	णिकूड	सोमाण
अरंजरमूल	गगण	चरिका	वलभी	फलखा	अब्भंतरपरियरण
कोट्टक	संधि	वेति (दि)	रासि	पावीर	गिहदुवारबाह
णकूड	समर	गयवारि	पंसु	पेढिका	अच्छणक
रुक्खमूल	कडिकतोरण	संकम	णिद्धमण	ओसर	पृष्ठ १३७

ચચ્ચર	કૂપ	ચિત્ત	અંગળ	સયપધ	ઉદુપાળ
અંગળ	તલાક	આશમ	પૃષ્ઠ ૨૨૧	મહારચ્છા	ઉદિયપટ્ટ
વિયડપ્પકાસ	વિકરણ	તલાગ	અરંજર	ઉસ્સાહિયા	જણ્ણવાડ
સયપધ	પસ્સવળ	સેતુ	ઉદિયા	પાસાદ	દેવાયતળ
સિંધાડગ	પૃષ્ઠ ૧૪૮	પૃષ્ઠ ૨૧૪	પલ્લ	ગોપુર	સંગામભૂમી
ચેત્ત	જૂવ	પાસાય	કુડ્ડ	અટ્ટાલગ	પૃષ્ઠ ૨૩૩
અટ્ટાલય	ચિત્તિ	માલ	કિજ્જર	પકંઠ	ચેત્ત
ઉદકપધ	સેતુબંધ	પટ્ટીવંસ	ઉચ્ચલિકા	તોરણ	વત્થુ
વય	આયતળ	આલગ્ગ	પૃષ્ઠ ૨૨૨	બાર	ગામ
વપ્પ	પૃષ્ઠ ૧૫૨	પાગાર	માલ	પવ્વત	જગર
પઝલી	પવ્વત	ગોપુર	વાતપાળ	વાસુરુલ	સન્નિવેસ
અસ્સમોહળક	સાગર	અટ્ટાલગ	કુડ્ડ	થૂમ	આવાસ
ચંમ	મેદિણી	પવ્વત	બિલ	એલુય	કુંડ
આગમળસંરોધ	ળદી	ધય	ળાલી	પવાત	ળદી
પૃષ્ઠ ૧૩૮	ચેતિય	દેવતાયતળ	થંમ	વપ્પ	તલાગ
આએસળ	આયાળ	ગિહ	અંતરિયા	તલાક	પુલ્લરણી
મંડવ	પૃષ્ઠ ૨૦૦	કૂવિયા	પસ્સંતરિયા	દહપલિકા	કૂવ
પવા	દેસ	આકાસ	કોટ્ટાગાર	ળદી	સર
સેતુકમ્મ	ળિગમ	જળપદ	અસ્સ	પલિહા	પલિહ
પુરોહડ	ળગાર	અરળ	આવુપધ	પાકાર	સેડ
પૃષ્ઠ ૧૪૫	પટ્ટળ	સીર્મંતિકા	પળાલી	વય	પાગાર
ચચ્ચર	ચેડ	ચેત્ત	ઉદકચાર	પરિચ્છા	પેંડપાલી
મહાપધ	આગર	રચ્છા	વચ્ચાડક	ધય	એલુગ
તિત્થ	ગામ	ળિવેસળ	અરિટ્ટુગહળ	વુલ્લ	ચેતિ
ઉદુપાળ	સળ્ણિવેસ	સયમળ	વેસળ	પાલી	પવા
પૃષ્ઠ ૧૪૬	પૃષ્ઠ ૨૦૧	કુડ્ડ	અંતેપુર	સુસાળ	પંથ
જલસ્થાન	સયધાળી	ળિવ્વ	તિય	વચ્ચભૂમિ	પવ્વત
ળદી	પાસાદ	પળાલી	સિંધાડગ	મંડલભૂમી	પૃષ્ઠ ૨૩૪
સમુદ્ધ	ગિહ	વચ્ચાડ	ચઠ્ઠ	પવા	ઉદુપાળ
					ચીતી

(૧૨) સિક્કક વિભાગ

પૃષ્ઠ ૬૬	દીળારમાસક	ચત્તપક	પૃષ્ઠ ૭૨	સુવળ્ણગુંજા
સુવળ્ણમાસક	ઠળમાસક	પુરાળ	સુવળ્ણકાકળી	દીળારી
સયયમાસક	કાહાપળ	સતેરક	માસકાકળી	

(૧૩) ભાળ્ણડોપકરળવિભાગ

પૃષ્ઠ ૬૫	વારક	સિપ્પમય	કાલંચી	માળિકા	પેલ્લિકા
પુંજાતીય ધંડો-	કલસ	સેલમય	કરકી	ળિસકા	ધૂતુલ્લિકા
વગરળ	ગુલમળ	પૃષ્ઠ ૭૨	કુઠારિકા	આયમળી	પિચ્છોલા
અરંજર	પિદરક	થીજાતીય ધંડો-	થાલી	ચુલ્લી	પળિકા
અલિદ	મલ્લગધંડ	ગરળ	મંડી	ફૂમળાલી	દોળી
કુંડળ	પત્તધંડ	અલંદિકા	ધડી	સમંછળી	ઉકુલિળી
માળક	લોહમય	પતી	દવ્વી	મંજૂસિકા	પાળી
ધડક	મળિમય	ઉચ્ચલ્લી	કેલા	મુદ્ધિકા	અમિલા
કુદારક	સંચમય	થાલિકા	ઉદ્ધિકા	સલાકંજળી	પડાલિકા

तवी	दविउलंक	सयण	वीजणी	धूमणाली	करक
वत्थरिका	रसदव्वी	आसण	दंडा	अगिगकारिका	कुंडिका
कुदाली	छत्त	जाण	धूमणत्त	अगिगकुंड	पृष्ठ २६२
वासी	उपाणह	वाहण	वीजणिया	जगंतक	छत्त
छुरिका	पाउगा	वत्थ	चामर	संदीपण	भिगार
कवल्ली	उब्भुभंड	आभरण	अस्सभंड	दीव	पडागा
दीविका	उभिखण	परिच्छद	भच्छ	चुडली	लोमहत्थ
कडच्छकी	फण	सत्थावरण	दितिका	मधअगि	वासणकडक
पृष्ठ १९१	खपसाणग	पृष्ठ २२१	अजीण	चुल्लक	चामर
उवाहण	वणपेलिका	मुत्तिक	पृष्ठ २५४	चुल्ली	वीजणी
छत्तक	विवट्टणग	संखागवलमय	इंगालकोटुक	चितका	पृ० २२१
तप्पण	अज्जणी	दंतमय	इंगालसकडिका	फुफुका	स्थगिका
कत्तरिका	पसाणग	सिगमय	कडुच्छ	अहिमकरिका	संपुड
कुंडिका	आदसग	अट्टिकमय	धूपघडिका	अगिगपखंडक	पेला
उक्खलिका	पृष्ठ १९८	वालमय	धूमकरणाक	पृष्ठ २५५	पेलिका
पादुका	छत्त	लोहमय	धूपण	कुड	करंडग
उपाणह	भिगार	चम्ममय	पिसायक	घडाग	संकोसक
पृष्ठ १९३	वीयणिया	पृष्ठ २३०	धूमणेत्त	अरंजर	पणसक
उक्खुली	तालवेट	अंजणी	खारापक	उट्टिक	थइया
पिट्ठराग	पृष्ठ २०१	फणिका	वीजणक	आचमणिक	पसेव्वक

(१४) भाजनविभाग

पृष्ठ ६५	सिरिकंसग	मुंडक	पाणजोणिमय	रुप्पमय	लोहीवार
पुंभायण	थालक	पीणक	धातुजोणिमय	तंबमय	उट्टिक
तट्टक	दालिमपूसिक	पृष्ठ ७२	मूलजोणिमय	कंसमय	आयमणी
सरक	णालक	थीभायण	पाणजोणिमय	काललोहमय	सत्थीआयमणी
थाल	मल्लकमूलक	करोडी	सिप्पिपुड	सेलमय	चरुक
सिरिकुंड	करोडक	कंसपती	संखमय	मत्तिकामय	ककुलुंडी
पणसक	घट्टमाणग	पालिका	मूलजोणिमय	पृष्ठ २१४	पृष्ठ २२१
अडकविट्ठग	अलंदक	सरिका	कट्टमय	लोही	कट्टमय
सुपतिट्टक	जंबुफलक	भिगारिका	फलमय	कडाह	पुप्फमय
पुक्खरपत्तग	भंडभायण	कंचणिका	पत्तमय	अरंजर	फलमय
सरा	खोरक	कवचिका	धातुजोणिमय	उक्खली	पत्तमय
मुंडग	वट्टक	पृष्ठ १८०	सुवण्णमय	रकि	

(१५) भोजनविभाग

पृष्ठ ६४	पायस	पत्तकूरक	पृष्ठ ७१	तक्कुली	रसाला
पुंभोयण	परमन्न	कुलत्थकूरक	दुद्धण्हिका	कुम्मासपिंडी	पडिमट्टा
कूर	दधिताव	मुग्गकूरक	उदकुण्हिका	सत्तुपिंडी	चोराली
ओदण	विलेपिक	मासकूरक	समगुण्हिका	तप्पणपिंडी	अंबपिंडी
अन्न	दधिकूरक	ओदणकूरक	जागू	इतिपिंडी	अंबकधूवी
असण	दुद्धकूरक	अतिकूरक	कसरी	ओदणपिंडी	उल्लूरधूविता
भोयण	धतकूरक	तिल्लकूरक	अंबेली	तिलपिंडी	अंबाडगधूवी
जेमण	सासवकूरक	भूतकूरक	पत्तंबेली	पीढपिंडी	भोजन
आहार	गुलकूरक	थीआहार	वालकल्ली	रच्छाभती	पृष्ठ १७६

पाणजोणिगत	फलरस	कसाय	पाणजोणिमयभायण-	सोवच्चिका	पलाल
मूलजोणिगत	धण्णरस	अंबिल	भोयण	पिप्पली	तंबाराग
धातुजोणिगत	अग्गगत	कटुक	धातुजोणिमयभायण-	खारलवण	लेज्जचुण्ण
पाणजोणिगत	पत्तगत	लवण	भोयण	वट्टभोयण	भोजन
दुद्ध	पुप्फगत	पृष्ठ १७९	मूलजोणिमयभायण-	मोदक	पृष्ठ २२०
दधि	फलगत	विस्सोदण	भोयण	पेंडिक	दुद्ध
णवणीत	पुप्फगत	अतिकूरक	जवागू	पप्पड	दधि
तक्क	पत्तेगपुप्फ	गुलकूरक	दुद्धजवागू	मोरिडक	तक्क
घत	गुलुकपुप्फ	घतकूरक	घयजवागू	सालाकालिक	णवणीत
मंस	मंजरीपुप्फ	विलेपि	तेल्लजवागू	अंबट्टिक	कुचिया
वसा	फलगत	पायस	अंबिल्लजवागू	वित्थडभोयण	आमधित
मधु	रुक्खगत	कसरि	उण्हयजवागू	पोवलिक	गुलदधि
संखयआहार	गुम्मगत	दधिताव	ओसधजवागू	वोक्कितक	रसालादहि
असंखयआहार	वल्लीगत	तक्कलि	आलुक	पोवलक	मंधु
सोतगुल	छुपगत	अंबेल्लि	कसेरुक	पप्पड	परमण
सक्करा	पृष्ठ १७८	अंबिलक	सिथाडक	सकुलिका	दधिताव
अग्गेयआहार	सालि	पालीक	मिस	पूप	तक्कोदण
अणग्गेयआहार	कोह्व	पक्खिमंस	भिसमुणाल	फेणक	अतिकूरक
पृष्ठ १७७	वोहि	परिसप्पमंस	चाय	अक्खपूप	मंस
मूलजोणिगत	कंगु	चतुप्पदमंस	मच्छंडिका	अपडिहत	रुधिर
मूलगत	रालक	सिगिचतुप्पदमंस	गुल	पवितल्लक	वसा
खंधगत	वरक	असिगिचतुप्पदमंस	खण्णगगुल	वेलातिक	कुसण
अग्गगत	सामाग	पृष्ठ १८०	इक्कास	पत्तभज्जित	कोलत्थ
कंदगत	तिल	अहमंस	पृष्ठ १८२	उल्लोपिक	तंबलिक
तजगत	मास	सुक्कमंस	तप्पणा	सिद्धत्थिका	साकरस
णिज्जासगत	मुग्ग	उस्सयभोयण	बदरचुण्ण	बीयक	थूणिकाखल
णिज्जासगत	चणक	मतकभोयण	विकस	उक्कारिका	अंबिल
सिरिविट्टकसद्	कलाव	सडुकभोयण	कलायभज्जिया	मंडिल्लिका	उपसेक
लता	णिप्फाव	दासीभोयण	मुग्गभज्जिया	दीहभोयण	पृष्ठ २४६
सल्लकि	मसुर	बालोपणयणभोयण	जवभज्जिया	दीहसकुलिका	दुद्धण्हिका
कास	कुलत्थ	देवताभोयण	गोधुमभज्जिया	खारवट्टिक	दधिताव
सोणिय	तुवरि	मंतगहणभोयण	सालिभज्जिया	खोडक	अंबेल्लि
पूक	यव	मंतसमावणभोयण	तिलभज्जिया	दीवालिक	विलेपिका
लसिया	गोधूम	विज्जागहणभोयण	अणग्गेयलवण	दसिरिका	कक्करपिडग
जवागू	कुसुंभ	विज्जासमत्तिभोयण	सामुद्	भिसकंटक	गंगावत्तग
उच्छुरस	सासव	अभिणवभोयण	सैंधव	मत्थतक	चुक्कितक
गोलोय	अत्तसी	सीतभोयण	सोवच्चल	लेज्जभोयण	वप्पडी
पत्तरस	मधुर	भिकखोदण	पंसुक्खार	फाणित	अंबट्टिग
पुप्परस	तित्त	असामण्णभोयण	अग्गेयलवण	कक्कव	घतउण्ह
		सहभोयण	जवखार	तिलक्खली	पोवलिका

(१६) पेयविभाग

पृष्ठ ६४	अरिडु	गोधसालक	खलक	दधि	दधि
पुपेय	आसव	पाणक	पाणीय	पय	घित
अपक्करस	मेरक	रस	खीर	गुल	तेल
पक्करस	मधु	जूस	दुद्ध	णवणीत	फाणित

सुरा	सेतसुरा	जगल	जयकालिका	रस	चंदनरस
पृष्ठ १८१	पृष्ठ २२१	मधुरसेरक	पृष्ठ २५८	पृष्ठ २३२	तेलवणिणकरस
पसण्णा	पसण्णा	अरिद्ध	बहुपिट्टिया	गुग्गुलविगत	कालेयकरस
अयसा	णिट्टिता	अट्टकालिका	पक्खा	सज्जलस	सहकाररस
अरिद्ध	मधुरक	आसवासव	जातिकसण्णा	इक्कास	मातुलुंगरस
महु	आसव	सुरा	अरिद्ध	सिरिवेदक	करमंदरस
		कुसुकुंडी			सालफलरस

(१७) वस्त्रविभाग

पृष्ठ १६३	सुवण्णपट्ट	वधुवत्थ	मेचक	आविक	बालमुंडिका
वत्थ	सुवण्णखसित	मतकवत्थ	जातिपट्टणुगत	अविकपत्तुण	बालव्वयणी
कोसेज्ज	काललोहजालिक	विलात	पट्टिक	अजीणपट्ट	अजिणगकंचुका
पत्तुज्ज	सकलदस	आतवितक	वट्टण	अजीणप्पवेणी	चम्मसाडी
आविक	बहियदस	ओमदित	सीसेकरण	चम्मसाडी	पृ० २३२
पत्तुण्ण	छिण्णदस	पृ० १६४	उत्तरिज्ज	बालवीर	खोमक
खोम	विवाडित	सेवालक	अंतरिज्ज	पृ० २३०	दुगुल्ल
दुकुल्ल	सिक्खित	मयूरगंगीव	पच्चत्थरण	सजीवक	जग्गिक
चीणपट्ट	पावारक	करेणूयक	विताणक	पत्तुण्ण	चीणपट्ट
कप्पासिक	कोतवक	कप्पासिकपुप्फक	परिसरणक	अजीणप्पवेणी	वागपट्ट
पट्ट	उण्णिक	पउमरत्तक	पृ० २२१	अजीणकंबल	कप्पासिक
लोहजालिका	अत्थरक	मणोसिलक	कोसेज्जक	बालसाडी	

(१८) आच्छादनविभाग

पृष्ठ ६४	साडक	कप्पास	थीअच्छादण	लेखा	सण्हा
पुंअच्छादण	सेदसाड	कंचुक	पउण्णा	वाउकाणी	थूला
पडसाडग	कोसेयपारय	वारवाण	पएणी	वेलविका	सुवुता
खोमदुगल्लग	कंबलक	विताणक	वण्णा	परत्तिका	दुव्वुत्ता
चीणसुग	उत्तरिज्ज	पच्छत	सोमित्तिकी	माहिसिका	अप्पग्घा
चीणपट्ट	अंतरिज्ज	सण्णाहपट्टक	अद्धकोसिज्जिका	इल्ली	महग्घा
पावार	उरसीस	मल्लसाडग	पसरादी	जामिलिका	अहता
पड	वेधण	पृष्ठ ७१	पिगाणा	थीअच्छादणएकार्थक	धोतिका
			दियवंतरा		

(१९) भूषण-आभरण-अलंकारविभाग

पृष्ठ ६४-६५	झंकक	कुरबक	हत्थखड्डुग	सुत्तक	पापढक
पुंजातीयभूषण	कडग	कण्णकोवग	अणंत	सोवण्णसुत्तग	पादखड्डुग
तिरीड	खड्डुग	कण्णपील	खुड्डुग	तिर्गिच्छिग	परमासक
मउड	णिडालमासक	कण्णधूरक	हत्थभंडक	हृदयत्ताणक	पादकलावग
सीहभंडक	तिलक	कण्णखीलक	कंकण	सत्थिक	सरजालक
अलकपरिक्खेव	मुहफलक	कण्णलोडक	वेढक	सिरिवच्छ	बाहुजालक
मत्थककंटक	विसेसक	केज्जूर	हार	अट्टमंगलक	ऊरुजालक
गरुलक	अवंग	तलभ	अद्धहार	सोणिसुत्त	पादजालक
मगरक	कुंडल	कंदूग	फलहारक	रयणकलावग	अक्खक
उसभक	बक	परिहेरग	वेकच्छा	गंडूपक	पुस्सकोकिलक
सीउक	मत्थग	आवेढग	गेवेज्ज	खत्तियधम्मक	कंचीकलावक
हत्थिक	तलपत्तक	वलयग	कट्टु	णीपुरग	हसुडोलक
चक्कमिहुणग	दक्खणक	हत्थकलावग	कडक	अंगजक	पृ. ७१

थीजातीयभूषण	कण्णवलयक	सिरआभरण	हत्थाभरण	अंजण	रुप्य
सिरा समालिका	खडुक	ओचूलक	हत्थकडग	चुण्णक	तंब
णलियमालिका	मुदिका	णंदिविणद्धक	कडग	अलत्तक	हारकूड
मकरिका	वेढक	अपलोकणिका	रुचक	गंधवण्णक	तपु
ओराणी	कण्णपालिक	सीसोपक	सूचीक	कण्णसोधणक	सीसक
पुष्फितिका	णीपूर	कर्णाभरण	हत्थोपक	अंजणी	काललोह
भकण्णी	कण्णप्पलक	तलपत्तक	अंगुलिआभरण	सलाका	वट्टलोह
लकर	पृष्ठ १६२	आबद्धक	अंगुलेयक	कुच्चटावण	सेल
वालिका	प्राणयोनिगत	पलिकामदुघनक	मुदेयक	कुंच	मत्तिका
कण्णवल्लीका	धातुयोनिगत	कुंडल	वेढक	सूची	कट्टमय
कण्णिका	मूलयोनिगत	जणक	कटिआभरण	धूपण	पुष्फमय
कुंडमालिका	प्राणयोनिगत	ओकासक	कंचिकलापक	गंधविधी	फलमय
सिद्धत्थिका	संखमय	कण्णपूरक	मेखलिका	सासा	पत्तमय
अंगुलिमुदिका	मुत्तामय	कण्णुप्पीलणक	कडिउपक	सम्मिका	पृष्ठ २४२
अक्खमालिका	दंतमय	अक्षिआभरण	जंघाआभरण	वतंसक	चुभलक
संघमालिका	गवलमय	अंजण	गंडुपयक	ओवास	पेलक
पयुका	वालमय	भ्रुकुटिआभरण	णीपूर	कण्णपीलक	मुकुड
णितरिणी	अट्टमय	मषी	परिहेरक	कण्णपूरक	वेट्टण
कंटकमालिका	मूलयोनिगत	गण्डाभरण	पादाभरण	णंदीविणद्धक	मालिका
घणपिच्छिलिका	कट्टमय	हरिताल	खिखिणिक	कूलोयंधक	वट्टा
विकालिका	पुष्फमय	हिंगुलुय	खत्तियधम्मक	तिलक	सीसावक
एकावलिका	फलमय	मणस्सला	पादमुदिका	कुंडल	पृष्ठ २५९
पिप्पलमालिका	पत्तमय	ओष्ठभरण	पादोपक	वल्लिका	भुं (चुं)भलक
हारावली	धातुयोनिगत	अलत्तक	तिलक	तलपत्तक	उरच्छक
मुत्तावली	सोवण्णमय	कण्ठाभरण	पृष्ठ २४६	पृष्ठ १९३	आपेलग
कंची	रुप्यमय	वण्णसुत्तक	बालतिलक	अंजण	मालिका
रसणा	तंबमय	तिपिसाचक	कण्णातिलग	ण्हाण	वट्टापेल
जंबूका	सीसमय	विज्जाधारक	तवणिज्जतिलग	पधोवण	मुकुड
मेखला	लोहमय	असीमालिका	पदुमतिलग	पव्वासण	तेल्ल
कंटिका	तपुमय	हार	पृष्ठ १८३	अणुलेवण	पृष्ठ २३२
संपडिका	काललोहमय	अद्धहार	पादकलाप	विसेसकाय	कुसुंभतेल्ल
पामुदिका	आरकूडमय	पुच्छलक	पादकिंकिणीका	धूमाधिवास	अतसीतेल्ल
वम्मिका	गोमेयक	आवलिका	खत्तियधम्मक	परिधान	रुचीकातेल्ल
पाअसूचिका	लोहितक्ख	पृष्ठ १६३	पायुका	उत्तरासंग	करंजतेल्ल
पाघट्टिका	पवालक	मणिसोमाणक	उपाणह	सोणिसुत्त	उण्हीपुण्णामतेल्ल
खिखिणिका	रत्तक्खारमणि	अट्टमंगलक	मल्ल	मल्ल	बिल्लतेल्ल
पृ. ११६	लोहितक	पेचुका	मुकुड	सुरभिजोग	उसणीतेल्ल
माकण्णीकण्णिक	सुक्कफलिक	वायुमुत्ता	कूचकणलीखावण(?)	हत्थोपक	वल्लीतेल्ल
लक	विमलक	वुप्पसुत्त	ण्हाण	संविधाण	सासव्रतेल्ल
उद्धलक	सेतक्खारमणि	पडिसराखारमणि	पधोवण	भिगार	पूतिकरंजतेल्ल
तलकण्णिक	मसारकल्ल	कट्टेवट्टक	विसेसकिया	छत्त	सिग्गुकतेल्ल
वद्धक	कालक्खारमणि	बाहुआभरण	ओकुंतणक	पतागा	कपित्थतेल्ल
तलपत्तक	अंजणमूलक	अंगय	हरिताल	लोवहत्थ	तुरुक्कतेल्ल
परिहेरक	णीलक्खारमणि	तुडिय	हिंगुलुक	पृष्ठ २२१	मूलकतेल्ल
तलभ	खारमणि	सव्वबाहोवक	मणसिल	सुवण्ण	

अतिमुक्तकतेल
तिलतेल

इंगुदीतेल
पधकलीतेल

चंपकतेल
चंदणिकापुस्सतेल

जातीतेल
पीलुतेल

यूथिकतेल
ओसधतेल

वक्किकतेल
पुस्सतेल

(२०) आसनविभाग

पृष्ठ १५
पल्लक
फलक
कट्ट
पीढिका
आसंदक

फलकी
भिसी
चिफलक
मंचक
भट्टासण
पीढग

कट्टुखोड
महट्टिका
उप्पल
सोहसंघात
दंत
अट्टिक

भूमीमय
तणमय
छगणपीढग
पुप्फ
फल
बीय

तण
साहा
मही
पृष्ठ १७
डिप्फर
खट्ट

अत्थरक
पवेणी
कंबल
सुहस्सहा
कट्टपीढ
खेडुखंड
समंथणी

(२१) शयनासनविभाग

पृष्ठ ५२
सयणासण
पल्लक
मसारय
मंचक
खट्ट
फलिक
मंचिक
कणक
तलिय

भूमि
सिलातल
फलपुप्फहरितसेज्जा
तिणसेज्जा
सुक्ककट्टसेज्जा
जाणसेज्जा
बीयसेज्जा
धणधणसेज्जा
पहरणावरणसेज्जा
सेलसेज्जा

तुससेज्जा
लोहसेज्जा
अंगारछारिकासेज्जा
झामसेज्जा
मासालग
पृष्ठ ६५
पुंजातीयसयणासण
आसण
सव्वतोभट्ट
सयणासण

आसंदग
भट्टपीढ
पादफल
वट्टपीढक
डिप्फर
पीढफलक
सत्थिक
तलिय
मसूरक
अत्थरक

कोट्टिम
सिलातल
मासाल
मंचक
पल्लक
पडिसेज्जक
पृष्ठ ७२
थीजातीय सय-
णासण

सेज्जा
खट्ट
भिसी
आसंदी
पेढिका
महिसाह
सिला
फलकी
इट्टका

(२२) अपश्रयविभाग--टेका--तकिया

पृष्ठ २६
आसणापस्सय
आसंदय
भट्टपीढ
डिप्फर
फलकी
भिसी
कट्टपीढ
तणपीढ
मट्टियापीढ
छगणपीढ
सयणापस्सय
सयण
आसण
पल्लक
मंच
मासालक
मंचिका

खट्ट
सेज्जा
जाणापस्सय
सीया
आसंदण
जाणक
घोलि
गल्लिका
सगड
सगडी
याण
पृष्ठ २७
पुरिसापस्सय
मणुस्स
गय
वाजी
वसभ
करभ

दारप्पिधणापस्सय
कीडिका
दारकवाड
रस्सावरण
कुट्टुपस्सय
लित्तकुट्टु
अलित्तकुट्टु
लित्तचेलिम
अलित्तचेलिम
लित्तफलकमय
अलित्तफलकमय
लित्तफलकपासित
अलित्तफलकपासित
खंभापस्सय
खंभ
पाहाण
धरणिखंभ
पिलकखंभ

णावाखंभ
छायाखंभ
दीवरुक्खंभ
दगलट्टिखंभ
सेलखंभ
कट्टुखंभ
अट्टिकखंभ
रुक्खापस्सय
कंटकीरुक्ख
खीरुक्ख
चेतितापस्सय-
पडिमापस्सय
सेलपडिमा
लोहपडिमा
अट्टिपडिमा
कट्टपडिमा
पोत्थकम्पपडिमा
चित्तकम्पपडिमा

अधोगागर-
संधितापडिमा
मितुपडिमा
दारुपडिमा
हरितापस्सय
तणभारय
पत्तभारय
फलभारय
पुप्फभारय
भायणापस्सय
कुंभकारकत
लोहमय
पडल
कोत्थकापल
मंजूसा
कट्टभायण
पृष्ठ ३०
झयक्खंभ
पीडोलकखंभ

चेतितपादव
पण्णवोट्टल
फलपोट्टल
मूलपोट्टल
पुप्फपोट्टल
धतकेला
तेल्लकेला
सुरकुंभ
अरंजर
पृष्ठ ३१
सोमाण
सिती
सव्वतोभट्टआसण
दारपिड
कवाड
अरंजरपेढिका
वेइया
णिरसेणि
चेतिक

(२३) रतविभाग

पृष्ठ १८३	गंधव्वीरत	णपुंसकरत	वक्खावत्थद्ध	उदुणीरत	मुदितारत
दिव्वरत	असुरक्कन्नारत	विगततरत	पृष्ठ १८५	अणुदुणीरत	विस्सुयकित्तिरत
माणुस्सरत	असुररत	अविगततरत	गुदेरत	विसदारत	पक्खात्तारत
तिरिक्खजोणियरत	मतकपडिमारत	पृष्ठ १८४	णाभिरत	दुस्सीलारत	दंसणीयरूवसंपण्णारत
पुरिसरत	पत्थिवपडिमारत	उद्धितरत	थणंतररत	अद्धसंवुत्तारत	सुगंधारत
थीरत	मुत्तिकपडिमारत	उवविट्ठरत	पाणिरत	सभज्जारत	इट्ठथीरत
णपुंसकरत	चित्तपडिमारत	संविट्ठरत	उवात्तारत	परभज्जारत	भित्तीरत
चुंबितरत	तिरिक्खजोणि-	अवत्थद्धरत	सामारत	मित्तभज्जारत	णिकाणितरत
आलिगितरत	यरत	दक्खिणपस्सरत	कालिकारत	रायपुरिसभारियारत	खयरत
सेवणारत	सगुणिरत	वामपस्सरत	दीहारत	परिचारिकारत	णक्खपदरत
अभारिकपुरिसरत	कक्कडिरत	उत्ताणरत	रस्सारत	परूढणखकक्खरोमारत	दंतखयरत
सभारिकपुरिसरत	टिट्ठिभीरत	णिकुज्जारत	थूलारत	अचिरपरूढणहरोमारत	गीतरत
अपतिकथीरत	पारेवतीरत	ओणत्तरत	किसारत	सुपरिभज्जितणहकक्ख-	हसितरत
सपतिकथीरत	छिन्नगालिरत	उम्भरत	बालारत	वत्थिसीसरत	आहारितरत
अणपत्तपुरुसरत	गोरत	एकभगगरत	वयत्थारत	पुधुउपधारत	पुसुयरत
वंझाथीरत	महिसरत	पसल्लियवेलुफालियरत	मज्झिमारत	संखित्तभगारत	सोणियओघायणरत
दिव्वरत	अयेलकरत	उत्ताणरत	महव्वयारत	परिमंडलभगारत	सुद्धारत
अच्छयरत	अस्सरतरित	उभयोसंविट्ठ	बंभणीरत	चतुरस्सभगारत	पडियारत
देवरत	सुणिकारत	अद्धसंविट्ठ	खत्तिकारत	तंसभगारत	विवादरत
णागकण्णारत	वराहीरत	एक्कापविट्ठ(द्ध)	वेस्सीरत	अमेखलारत	रत्तिरत
णागरत	वलवारत	पणत्तरत	सुदीरत	समेखलारत	दिवारत
किन्नरितरत	उट्ठीरत	कडिगहित	कस्सिगोरक्खभज्जारत	कुमारीरत	संझाकालरत
किन्नररत	गद्भीरत	चतुप्पद	कारुकभज्जारत	जुवतीरत	पदोसरत
पिसाईरत	गावीरत	रधप्पयात्त	ववहारिभज्जारत	उत्तानभगारत	अवरण्णरत
पिसायरत	महिस्तीरत	उपविट्ठरत	पउत्थपत्तिकारत	णिण्णभगारत	मज्झंतिथरत
रक्खसरत	माणुस्सरत	सयणावत्थद्ध	अविधवारत	पसण्णारत	अद्धरत्तरत
रक्खसीरत	थीरत	आसणावत्थद्ध	अवट्ठितारत	कुद्धारत	पच्चूसरत
गंधव्वरत	पुरिसरत	साहावत्थद्ध	चलाचित्तरत	चित्तरत	

(२४) दोहदविभाग

पृष्ठ १७१	अरण्णगत	सद्गतदोहद	धूपगत	वाहणगत	पक्खसंधीसु वत्त
रूवगतदोहद	भूमिगत	मणुस्ससद्गत	मल्लगत	गहगत	अब्भंतरपंचमीवत्त
मणुस्सगत	णगरगत	पक्खिसद्गत	पुष्पगत	वत्थगत	परमपंचमीवत्त
चतुप्पदगत	खंधावारगत	चतुप्पदसद्गत	फलगत	आभरणगत	अब्भंतर
पक्खिगत	जुद्धगत	पृष्ठ १७२	पत्तगत	जाणगत	दसमीवत्त
परिसप्पगत	किद्धुगत	परिसप्पसद्गत	आहारगत	समयदोहद	परमदसमीवत्त
कीडकिविल्लगत	पुष्पगत	दिव्वघोसगत	रसगतदोहद	सरदे वत्त	पायरसे वत्त
पुष्पगत	फलगत	वादित्तघोसगत	पाणगत	घिम्हे वत्त	पदोसे वत्त
विद्धिगत	महासरगत	आभरणघोसगत	भोयणगत	पाउसे वत्त	मज्झंतिके वत्त
णदीगत	पुढविगत	गंधगतदोहद	खज्जगत	वासारते वत्त	अट्ठरते वत्त
समुद्गत	पव्वतगत	णाणगत	लेज्जगत	हेमंते वत्त	अपरण्हे वत्त
तलावगत	आरामगत	अणुलेवणगत	फासगतदोहद	वसंते वत्त	अतिवत्तसद्गत
वापिगत	देवगत	अधिवासगत	आसणगत	सुक्कपक्खे वत्त	अणागतसद्गत
पुक्खरणिगत	संगमगत	पधंसगत	सयणगत	कालपक्खे वत्त	वत्तमाणसद्गत

(२५) रोगविभाग

पृष्ठ २०२	बहिर	पलित	पीलक	सूल	सामदंत
छेज्ज	कण्णच्छेज्ज	खरड	गलुक	छट्ठि	गीवारोग
विलक	णासारोग	चम्मकील	गंड	फिका	सीसवाधि
तिलकालक	णासाछेज्ज	कीडिग	दट्ठ	अवयि	अक्खिवाधि
णत्थक	जिब्भारोग	किलास	कोढिक	गलगंड	वातिक
पृष्ठ २०३	जिब्भाछेज्ज	कट्ट	कोट्टित	कट्टंसारुक	पेतिक
कीडिभक	तथादोस	सिब्भ	वातंड	(कंठमालक)	सेभिक
कुणिणख	फासोवघात	खत	अंहरि	पट्टीरोग	पृष्ठ २०४
गंठि	कुंठ	सुणवारक	वातंडअरिस	खंडोड्ड	सण्णिवारित
वण	गंडीपाद	कामल	भगंदल	गुरुल	
काण	खंज	णील	कुच्छिरोग	करल	
अंध	कुणीक	कण्हतिल	वातगुम्भ	खंडदंत	

(२६) उत्सवविभाग

पृष्ठ १७	पच्चाहरणक	गिण्वहण	अधिक्रमणक	चेट्ट	गोसग्गण्हाणक
बालक	चोलक	अधिक्रमणक	पृष्ठ १४७	आवाह	वरपंचमज्जण
जाणक	उपणयण	तोप्पारुभणा	बलि	वीवाह	तिरिक्खजोणिमज्जण
ठियपडिया	लेहणिकिखवण	पातिज्ज	मंगल	चोलोपणयण	पृष्ठ २५६
पंचमिका	गणितापढपणक	णवण	यागहरण	तिथि	वाधुज्ज
सत्तमिका	पृष्ठ १८	पंचमेजण	सेसा	उत्सव	चोल
उट्ठाणक	गुलभक्खण	वारेज्ज	पृष्ठ २०८	समाय	उवणयण
मासपूरणक	बाढक्कार	अण्णोण्ण	पितुकज्ज	जण्ण	उज्जाणभोज्ज
पिंडवद्धणक	समासेयणक	जामातुकीय	पेतकिच्च	पृष्ठ २४९	पृष्ठ २६२
उवणिग्गमण	सुणिणका	दसमीण्हाणक	पृष्ठ २२३	उज्जवणिगा	सेसा
पादपेसणक	उपमाणक	पृष्ठ १२९	जायणविवद्धी	पृष्ठ २५५	जोग
परंगेणक	गोसग्गण्हाणक	बालोपणयण	पडिभोगकम्भ	वरमज्जण	जण्ण
पदक्कमणक	पडिवज्जक	वाधुज्ज		वधूमज्जण	बलि

(२७) वादित्रविभाग

पृ० २३०	मसूरका	दहरक	मुख
वीणा	पखर	आलिंगा	

(२८) पर्वतविभाग

पृष्ठ ७८	रुप्पि	केलास	सज्झ	मलय	चित्तकूड
हिमवंत	मेरु	वस्सधर	विझ	पारियत	अंबासण
महाहिमवंत	मंदर	वेयड्ड	मंत	महिंद	मेरुवर
णिसद	णेलवंत	अच्छदंत			

(२९) खनिजविभाग

रत्न	गोमेदक	खारमणी	काललोह	सीसक	वर्णमृत्तिका
पृ० २३३	अंकामलक	धातु	वट्टलोह	लोह	पृ० २३३
वेरुलिय	सासक	पृ० २३३	कंसलोह	तंब	सुधा
फालिय	सिलप्पवाल	सुवण्णक	हारकूडग	हारकूडक	सेडिका
मसारकल्ल	पवालक	तवुक	रुवियग	सुवण्ण	पलेपक
लोहितक्ख	वइर	तंबक	पृ० २५८	काललोह	णेलकता
अंजणमू(पु)लक	मरगत	सीसक	तवु	तिक्खलोह	कडसक्करा
				मुंडलोह	गेरुग

मणोसिल	वण्णमत्तिका	पंडुमत्तिका	देवताययणमत्तिका	सुवण्ण	खीरपक
पत्तम	णीलकधातुक	णदिमत्तिका	तंबभूमी	जातरूव	अब्भवालुका
हिंगुलक	सस्सकचुण्णक	संगमत्तिका	मुरंब	मणस्सिला	लवण
पज्जणी	कण्हमत्तिका	विसाणमत्तिका	कडसकरा	गोकंटक	सुद्धभूमी

(३०) वर्ण-रङ्गविभाग

पृ० १०४	कण्ह	मेचक	कार्कडवण	मणोसिलाणिभ	चित्तवण्ण
सुक्क	रत्त	पृष्ठ १०५	सुरुगामिक	हरितालवण्ण	भिस्सवण्ण
पंडु	पीतक	गयतालुकवण्ण	पदुमक	हिंगुलक	कोरैटकणिभ
णील	सेत				

(३१) मण्डलविभाग

पृष्ठ ११५	णापुण्णमंडल	उद्धलक	कण्णपालिक	लेहपट्टिकमंडल	मज्झिममंडल
अद्दमंडल	अट्टमंडल	तलकण्णिक	णीपुर	सत्थिसंघातमंडल	खुडुलगमंडल
णक्खत्तमंडल	मंडलास	वद्धक	कण्णप्पलक	अंगुलिमंडल	णक्खत्तमंडल
जोइस	छेत्तमंडल	तलपत्तक	पण्णेलिक	संघायमंडल	अद्दमंडल
आदित्त	उवलेवमंडल	परिहेरक	सकडपट्टक	करणमंडल	चंदमंडल
चक्क	किमिमंडलिक	तलभ	पल्लित्थिकापट्ट	पृष्ठ २३९	सूरमंडल
समयमंडल	पंचमंडलिक	कण्णवलयक	अकरपट्टक	जोतिसमंडल	पृष्ठ २४२
रिसिमंडल	अपंचमंडल	खडुक	अस्समंडल	पुढवीमंडल	पल्लंकचक्कलग
संखमंडल	माकणीकण्णिक	मुद्दिका	वातचक्कमंडल	पृष्ठ २४१	धाडीचक्क
मंडलक	लक	वेदक	झल्लरिमंडल	महामंडल	सकडचक्क

(३२) नक्षत्रविभाग

पृष्ठ २०६	उत्तरदारिक	जातिणक्खत्त	धीणक्खत्त	गामणक्खत्त	उपकुलणक्खत्त
पुव्वदारिक	समखेत्त	आदाणक्खत्त	णपुंसकणक्खत्त	खेडणक्खत्त	कुलोपकुलणक्खत्त
दक्खिणदारिक	दिवड्डुखेत्त	मित्तणक्खत्त	णगरणक्खत्त	कुलणक्खत्त	पमद्दणक्खत्त
पच्छिमदारिक	अद्दखेत्त	पुरिसणक्खत्त	देवणक्खत्त		

(३३) कालविभाग

पृष्ठ २३५	उस्सास	पुव्वण्ह	मागधवेला	जागुवेला	जामवेला
मुहुत्त	कट्ठा	अवरण्ह	दुद्धवेलिका	वासवेलिका	चोरवेला
दिवस	लव	मागधअ	आलोलीवेलिका	णागवेला	गोसग्गवेला
पक्ख	कला	पातरास	आणुतासवेला	पसुवेलिका	पृष्ठ २५७
मास	पृष्ठ २४६	अणुमज्झण्ह	कूरवेला	दीववेलिका	धातक
वस्स	मज्झण्ह	पृष्ठ २४७	पातरासवेला	सामासवेलीका	छातक
निमिसंतर	अहोरत्त	भत्तवेलिका	गंडीवेला		

(३४) व्याकरणविभाग

पृष्ठ १५३	अंतत्थ	उप्पाणः	अनुस्वार	णामिस्सर	पृष्ठ १५७
व्याकरण	जोगवह	विसर्जनीय	अनुनासिक	अधोस	एकभस्स
सर	अजोगवह	उपध्मानीय	समाणक्खर	घोसवंत	बिभस्स
फरिस	यम	जिह्ममूलीय	संधिअक्खर	हनुमूलजिह्ममूलीय	बहुभस्स

(३५) तिर्यग्जातिविभाग

पृष्ठ ६२	कवल	सूअर	मंगुस	मनुष्यतिर्यक्सा-	सुसुमारी
चतुष्पद	कोसक	मग	णउल	धारण	असालिका
हत्थी	पृष्ठ ६९	पसत	उंदुर	वाणर	जलचर
अस्स	चतुष्पदी	विलाळ	कालक	णरसीह	पृष्ठ २२७
उट्ट	कणेरु	वाणर	पयल	अस्सपूतण	कहमग
गद्दभ	हत्थिणी	सस	कातोदूक	णीलमिग	हित्थिय
घोडग	गावी	लोपा	सरंत	गायगोकण्ण	कच्छभक
उसभ	महिंसी	पृष्ठ २३९	घरधूला	पृष्ठ ६२	आणावचरणिग
बलिवद्	वडवा	हय	थलचर	पुंजातीयमत्स्य-	पदुम
वच्छक	किसोरी	गय	वुक्खचर	जाति	भिगणाग
तण्णक	घोडिका	खर	बिलसाइ	मच्छ	वमारक
सीह	अजा	उट्ट	सेलबिलासय	कच्छभ	राजमहोरक
वग्घ	अविला	गो	भूमिबिलासय	णाग	सवलाहिक
वक	कण्हेरी	माहिस	वृक्षचर	मगर	कुक्कुड
खग्ग	रोहिती	वग्घ	विराल	सुसुमार	देवपुत्तक
रोहित	एणिका	अच्छभल्ल	उंदुर	तिमी	समाणाहिय
दीबिक	पसती	दीपिक	थालक	तिर्मिगिल	पृष्ठ २२८
अच्छभल्ल	कुरंगी	तरच्छ	घरपूपल	गिल	दुपदमच्छ
तरच्छ	मिगी	खग्ग	अहिणूक	मंडुक	हित्थिमच्छ
महिस	भल्लुंकी	वग	तोडुक	कुलीर	मगमच्छ
गय	सुण्ही	रोहित	पचलाक	बोडमच्छक	गोमच्छ
लोयक	सीही	पसत	शैलबिलाश्रय	पाठीण	अस्समच्छ
सस	वग्घी	वराह	दीहवग्घ	गागरक	णरमच्छ
कंटेण	विकी	पृष्ठ २२६	अच्छभल्ल	सण्हमच्छ	णदीपुत्तक
धण्णक	अच्छभल्ली	गो	तरच्छ	महामच्छ	चतुष्पदमत्स्य
कडुमाय	मज्जारी	महिस	सालिभ	कालाडग	कच्छभ
कुरंग	मुंगसी	अय	सेधक	गाधमक	सुसुमार
सियाल	उण्हाली	एलक	दिपिक	पिविपिण	मंडुक
सूकर	अडिला	उट्ट	विलातु	स्त्रीजातीयमत्स्य-	उदकाय
सुणय	मूसिका	खर	अजीणविलाल	जाति	बहुपदमत्स्य
विराल	छुंछिका	सुणक	सलभ	मल्लुंडी	कुमारिल
णकुल	ओवुलीका	सीह	गोधा	अहिणूका	सकुचिक
कुक्कुर	उंदुरी	वग्घ	उंदुर	जलूका	दीर्घपदमत्स्य
मूसग	वाराही	तरच्छ	अयकर	अहिणी	चम्मिर
सरभ	सुवरी	अच्छल्लभ	पृष्ठ २२७	वोमीका	घोहणुमच्छ
रुरु	कोली	दीविक	भूमिबिलाश्रय	सिकूवाली	वइरमच्छ
वाणर	दीपिका	गज	लोपक	कुलीरा	तिमि
गजपुंगव	खारका	चमरी	णउल	कच्छभी	तिर्मिगिल
मेस	घरकोइला	खग्ग	गोधा	वत्तणासी	वालीण
ऊरणक	चतुष्पद	हत्थी	अहिणूका	सिगिला	सुसुमार
मैदग	पृष्ठ २३८	अस्स	तोडुक	सिकुत्थी	कच्छभमगर
छाल	अय	वराह	ताडक	वरई	गद्दभकपमाण
हरित	अमिल	वग		ओवातिका	रोहित
मग	सुणग	सियाल		मंडुक्की	पिचक

णल	भिगारी	गहर	णंतुका	टेटीवालक	रिक्सिक
मीण	अरका	कुलल	उलूकी	णवूहक	काक
चम्पिराज	वचाई	सेण	मालुका	णदीसुत्तक	कपोत
कल्लाडक	इंदगोविगी	बास(ज)	सेणा	कारंडव	कर्पिजल
सिकुंडी	तूका (यूका)	सुय	सिर्पिजुला	काकमज्जुक	वच्छ
उष्पातिक	लिक्खा	वंजुल	कीरी	कातंब	कोट्टकवास
इंचक	फुसी	सतपत्त	मदणसलाका	णदीकुकुडी	सतपत्त
कुडुकालक	मुम्मुलका	कपिलक	सालाका	उक्कोस	वंजुल
सिस्थमच्छक	जाला	पारेवय	कोकिला	कोंच	कलहिभी
परिसर्प	लुता	कपोत	पिरिली	गीवा	सूकरिका
पृष्ठ २२६	भिउडी	हारीड	कुडपूरी	रोहिणिक	मंचुलक
अजगर	किणिही	कुक्कुड	भारद्वाई	समुदकाक	आडवक
असालिका	तला	तित्तिर	लाविका	बक	काक
गोधा	कभेइका	लावक	वट्टिका	चक्रवाक	मेज्जुक
तोडुका	उण्हणाभी	कयर	सेण्ही	आसीविस	सेडीका
सरंत	काणटिट्टी	कर्विजल	कुक्कुडी	तिण्हविस	टेट्टि
पयलाक	भयंसला	कातंब	पलाडीका	पृष्ठ २२६	कालक
अहिणुक	किपिल्लिका	दंडमाणव	पोटाकी	मयूर	णाइकुक्कुडिका
घडोपल	सर्पजाति	आसवाय	सउणिगा	कंक	कातंब
णकुल	पृष्ठ २२७	कोंच	आडा	छिण्णालिगा	पृष्ठ २३९
उंदुर	दब्बीकर	कधामज्जक	टिट्टिभिका	गद्ध	हंस
पृष्ठ ६३	मंडलि	सरभ	णडिकुक्कुडिका	वीरल्ल	कोंच
पुंजातीय सर्प-	रायिमंत	उपक	सडिका	सेण	किण्णर
कीटजाति	आसीविस	मयूर	बलाका	उलूक	कुक्कुड
भिराही	तिण्हविस	कारंडय	चक्रवायी	सालक	मयूर
गोणस	वातंदविस	पिलय	पृष्ठ १४५	कपोत	कलहंस
अज	णिव्विस	सिरिकंठ	पक्षी	वायस	भासकुण
अजगर	पृष्ठ २३९	पुत्तंगय	हंस	सुक	महासकुण
मिलिंदक	दोहकील	भिगराय	कुरर	कोकिल	दिग्धगीव
लोहितक	दब्बीकर	जीवजीवक	चक्रवाक	तित्तिर	दिग्धपाद
धापहिक	मोलि	मुधुलूक	कारंडक	वातिक	पारिप्पव
पूतिंगाल	भिगारी	कुधुलूक	कातंब	तेल्लपातिक	ढंकराली
तित्तिल	गोणस	पृष्ठ ६९	काकाक	सगुणिक	गद्द
गोमयकीडग	पृष्ठ ६२	पक्षिणी	मेज्जुक	परसउणिक	कुरल
कोड	पक्षी	विह्वरी	पृष्ठ १९५	चम्मडिल	दलुक
पतंग	गरुल	रायहंसी	मदणसलाका	चित्तकपोतक	भास
संख	रायहंस	कलहंसी	कवी	वणकुक्कुड	वीरल्ल
खुलुक	कलहंस	कोकी	मोर	वह्यक	समघाती
हालक	चास	सालिया	पृष्ठ २२५	पृष्ठ २३८	छिण्णंगाला
पृष्ठ ६९	रिक्सिक	पूतणा	हंस	तित्तिर	ककी
स्त्रीजातीय सर्प-	वीरल्ल	सकुणी	सेडिक	वट्टक	जंतु
कीटजाति	सारस	गिद्धी	चक्रवाक	लावक	पृष्ठ २२७
गोधा	चक्रवाग	सेणी	चक्रवाकयी	परभुत	बहुपद
गोमी	बग	काकी	आडा	सुक	गोम्मी
मंडलिकारिका	भारंड	धूकी		सालक	

सतपदी	अगिकीड	णदीमच्छक	फलकीड	सुरगोपक	सिपिका
इंदगोपिका	पतंग	जलायुमच्छक	धण्णकीड	इंदकाइय	जलाड
चसणिका	अदिज्ज	आसालिक	सुत्तजगलिका	उंदुर	दककिमि
पृष्ठ २२९	संखण	कीमिक	कुंथु	सरड	णीपुर
भमर	काकुंधिक	चुरु	उरणी	खालग	सुमंगल
मधुकरी	वडक	गंडूपय	सुयमुत्ता	खुडुलग	संबुक्क
मसग	सिरिवेट्टक	सव्वट्टक	लूता	पंधोलग	तेइंदिय
मक्खिका	करिण्हक	सूकमिड	कोलिक	वतिभेदग	जुंगलिका
किविल्लिका	पयुमक	पृष्ठ २३०	घरपोपलिका	गहकंडुग	उप्पाडक
ओपविका	सद्द	लिच्छ	अहिलूका	कुंभकारीअ	उप्पातक
कुंथु	बिलासय	संवुट्टिक	भिगारी	चोलाडिग	तणहारक
इंदगोपक	कण्हगुलिक	सूकमिद्द	आलका	कुलिग	पत्तहारक
पसलचित्त	सेतगुलिक	पृष्ठ २३७	भमर	धम्मणग	कुंथु
कण्हकीडिका	खुल्लिक	खुल्लक	मधुकर	पंडराग	पिपीलिका
यूका	आहाडक	वराड	तोडु	पृष्ठ २६५	उपचिक
मंकुण	कसक	संखणग	पतंग	एगिंदिय	रोहिणिक
उप्पातका	वातपुरील	सिप्पि	मच्छिका	पुढविक्काइक	तेवरुक
रोहिणिका	वातंसु	गंडूपद	मगसक	आवुक्कायिक	तपुस
जुगलिका	कुतिपि	जलूका	छिर	तेनुक्कायिक	भिजिक
कण्हपिपीलिका	बहुपद	आसालिका	कुस्लि	वायुकायिक	पातिक
कण्हविच्छिका	ईलिका	बास्वत्त	सिगिलि	वणप्फतिकायिक	साहिक
घूण	सीकूणिक	पाणायिक	मंडूकलिआ	पृष्ठ २६६	सतप्पाय
संताणक	णंदी	धिकुण	पृष्ठ २३८	बेइंदिय	गोम्मि
उंडणाही	उब्भणाभि	लिक्खा	गोम्मी	संख	हत्थसोंडक
धुक्कभरध	तंतुवायक	घुण	कीडग	संखणग	कडमच्छ
		चम्पकीड	विच्छिय		

(३६) वनस्पतिविभाग

पृष्ठ २०२	असोग	पालिभद्ग	चिल्लक	सिरीस	पृष्ठ ६३
पुप्फ	तिलक	सज्ज	बंधुजीवक	छतोध	पुंजातीय गुल्म
फल	लकुची	अज्जुण	दधिवण्ण	णल	कोरेंट
रुक्ख	साल	कतंब	सत्तिवण्ण	मधुग	कणवीर
गुच्छ	बकुल	णिब	कोसंब	चंदण	सिधुवार
गुम्फ	वंजुल	कुडज	भीरुय	लोद्ध	अणंगण
लता	पुण्णाग	उटुंबर	अयकण्ण	उण्होलक	अणोज्ज
वल्ली	णागरुक्ख	अप्फोय	अस्सकण्ण	वारंग	कुंट
पत्त	कुरबक	णगोध	धम्मण्ण	खदिर	सेदकंठक
पवाल	अंकोल्ल	वड	धव	अयमार	रत्तकंठक
अंकुर	कोलिक	सिण्हक	दालिम	कर	वाणीर
परोह	णगोध	सिलिध	णालिकेर	पुरुक्खएकार्थक	छिक्क
पृष्ठ ६३	अतिमुत्तक	विलियंध	कविट्ट	पादव	णीलकंठक
पुंजातीय वृक्ष	अहिरण्णक	णिवुर	रिडुक	डुम	तिमिरक
अंब	कण्णिंकार	साग	पारावत	रुक्ख	सण
अंबाडक	चार	असण	णत्तमाल	अगम	तलकोड
पणस	वरुणक	पाण	कोविराल	थावरकाय	
लकुच	किंसुग	कोविडाल	वणसंड	विडवी	णागमालक

पृष्ठ ६३	तपुसेल्लालुक	टक्कारी	थीपुष्फ	कसेरुका	अस्सोत्थ
पुंजातीय पुष्प	दालिम	वेजयंती	चंपयजाति	मुणालिका	वड
पदुम	णालिकेर	कंगूका	महाजाति	विधित्तिका	घील
पुंडरीक	बिल्ल	सीसवतिया	सुवण्णजूधिका	लोमसिका	पियाल
पंकय	आमलक	अप्फोतिका	जूधिका	अक्खोला	फरुस
सहस्सपत्त	तिंदुक	धवासी	तक्कुली	कुक्कुडिका	चम्मणडोला
सतपत्त	बदर	सिंदीवासी	तलुसी	सिंगलिका	कोलक
सप्फ	सेलूडक	समुद्दवल्ली	वासंती	थीफलएकार्थक	करमंद
कुमुद	तलपक्क	कप्पासी	वासुला	फलपिंडी	कलायस
उप्पल	सीवण्ण	रुचिका	वइंदबुद्धी	फलगोच्छ	पारेवत
कुवलय	धम्मण	उंगुणी	जयसमणा	फला	लउच
गद्दभा	तोरण	मातुलिङ्गी	णवमल्लिका	फलिका	मातुलुंग
तणसोल्लिक	करमंद	णिहू	मल्लिका	फलमाला	बउल
तामरस	बेभेलक	आफकी	णितण्णिका	फलमिजा	जंबु
इंदीवर	कंटासक	अरंजरवल्ली	तिगिंछी	फलपेसिका	दालिम
कोज्जक	जंबुफल	उदकवल्ली	पीतिका	पृष्ठ १०४	पृष्ठ २३२
पाडल	अक्खोल	कूभंडी	मगयंतिका	सुक्किलपुष्फ	अयकण्ण
कंदल	मातुलिङ्ग	तवुसी	पियंगुका	सेडकणवीर	पूतिकरंज
चंपगपुष्फ	खज्जूर	पल्लालुका	कंगुका	वासंती	अहिमार
इरिकाक	कलिमाजक	तुंबी	कुरुडूका	वासुला	पुतिला
लवंगपुष्फ	पृष्ठ ७०	कालिङ्गी	वण्णी	वेइल्लपुष्फिका	कुंभकंडक
भोगरा	स्त्रीजातीय वृक्ष	वालुंकी	अंबमंजरी	जाती	पृष्ठ २३८
अंकोलपुष्फ	गुल्मादि	कक्खारुणी	थीपुष्फएकार्थक	लाणी	आमलग
सहवरपुष्फ	पिप्परी	णलिणी	पुष्फमंजरी	जूधिका	जंबु
पुंपुष्पएकार्थक	वेडसी	पउमिणी	पुष्फपिंडिया	णवमालिका	लप्फल
कंटेगुण	जंबू	कमलिणी	पुष्फगोच्छी	मल्लिका	अंबाडग
संविताणक	अंबिलिका	उप्पलिणी	थीपुष्फसंजोग	चंपकाली	करमंद
उरणा	चिंचिणिका	पिंडालुकी	चंदा	तणसोल्लिक	सीवण्ण
चुंभल	मंडी	घोसाडकी	तीसालिका	सेडकफलिका	उंबर
आमेलक	सीवण्णी	ससर्बिदुकिणी	पारिहत्थी	पुंडरिक	रातण
मत्थक	कज्जूरी	भंजुलिका	कुभिधी	सेडगद्दभक	तोडण
गोच्छक	केतभी	कसकी	धम्मी	सेडककंद	सीडा
पुष्फरासी	कडूकीका	कारियल्लिका	जागी	सिंधुवार	लउसु
पुष्फणिगर	तिंबुरुकी	णिली	विलिजर	रुक्ख	तुंबुरु
पुष्फपोट्टल	धकंटी	कालिका	पोट्टालिका	पृष्ठ २३१	पिप्पल
पृष्ठ ६४	वेल्लरी	अंजणेकसका	वेजयंती	पणस	सेलुफल
पुंजातीय फल	तेरणी	स्त्रीवृक्षादि	मज्जणमालिका	तुंब	कोलफल
कुभंड	अरलूसा	एकार्थक	जंगमाला	कूभंड	वारमट्टिअ
तुंब	आमली	लता	खोलकमाला	अंब	घरिफल
कालिङ्ग	सेवपूती	लट्ठी	पृष्ठ ७०-७१	अंबाडक	करिलेग
कक्खारुग	लंचापली	छमिणी	थीफल	णीप	लोमसिक
ससर्बिंदुक	सीकवल्लोकी	काणवी	मुंदिका	तिंदुक	बिडालक
वालुक	लिङ्गिच्छी	दुमगुम्मलता	चलिका	उदुंबर	वार्तिगण
	हिंछाघोडा	पृष्ठ ७०			वालुंका

पूगफल	मरकल	कक्खारुक	कूभंड	रुक्ख	मूल
कक्कोलग	मगवच्छक	तवुसक	पृष्ठ २४३	लता	खंध
लवंग	सिंगालक	पृष्ठ २३९	अज्जुण	गुम्प	अग
जातीफल	अंधक	तलपक्क	कुडय	गुच्छ	पत्त
मुदीगा	दालिम	णालिक	कतंब	वलय	पुष्प
खज्जूर	तीतिणी	कपिट्ट	सिलिध	उदाण	फल
मरिय	बिल्ली	लकुल	कंदलि	तण	बीज
वासिका	पलालु	कालिंग	कुडुंबक	थलज	जलज
फला	केयवसक	तुंब	पृष्ठ २६६	कंद	थलज
दिरुल	मूल				

(३७) धान्यविभाग

पृष्ठ ६६	पृष्ठ १६४	रायसस्सव	भाजनगत धान्य	कोसीधण्ण	जव
पुंधण	सालि	वरक	मंजूसागत धान्य	तिल	गोधूम
सालि	वीहि	चणव	पल्लगत धान्य	मास	मास
वीहि	कोह्व	सेतवीहि	जाणगत धान्य	मुग्ग	मुग्ग
तिल	कंगु	सेततिल	णिवेसणगत धान्य	चणक	अलसंदक
कोह्व	रालक	रत्तसालि	ओवारिगत धान्य	कलाव	चणक
वरक	तिल	रत्तवीहि	अरणगत धान्य	णिप्फाव	णिप्फाव
उरालक	मास	रत्ततिल	कीत धान्य	कुलत्थ	कुलत्थ
चीण	मुग्ग	कण्हवीही	विक्रीत धान्य	मसूर	चणविका
मुग्ग	चणक	कण्हरालक	सक धान्य	तुवरि	मसूर
णिप्फाव	कलाय	कण्हतिल	मित्त धान्य	पृष्ठ २२०	तिल
जव	णिप्फाव	पृष्ठ १६५	जाचितक धान्य	सालि	अतसी
गोधूम	कुलत्थ	सेतणिप्फाव	णिकखेवपरिगतधान्य	वीहि	कुसुंभ
मास	जव	रत्तसासव	पोराण धान्य	कोह्व	सामात
मूढत्थ	गोधूम	रत्तणिप्फाव	नव धान्य	कंगु	सेततिल
चणक	कुसुंभ	हारीडणिप्फाव	पत्र १७८	रालक	सेतसासव
कुलत्थ	अतसी	सस्सप	कोसीधण्ण	मरक	तंबणिप्फाव
सण	मसूर		अकोसीधण्ण		रायसासव

(३८) देवविभाग

पृष्ठ ६२	पिसाय	कप्पोपक	जक्खी	इला	मिस्सकेसी
देव	जक्ख	वेमाणिक	किन्नरका	सिता	मीणका
असुरलोक	रक्खस	गोज्झग	वणप्फती	विज्जा	मियदंसणा
असुरेद	चंद	गोज्झगपति	दिसा	विज्जता	अचला
णाग	सूर	पृष्ठ ६९	तारका	चंदलेहा	अणादिता
सुवण्ण	बुध	देवी	हिरी	उक्कोससा	अइराणी
णागलोक	सुक्क	असुरी	सिरी	अब्भराया	मिस्सकेसी
भवणवासी	बहस्सति	असुरभज्जा	लच्छी	देवकण्णा	तिथिणी
महालोक	राहु	असुरकण्णा	कित्ती	असुरकण्णा	सालिमालिणी
किंपुरुस	धूमकेउ	णागी	मेधा	इंदग्गमहिंसी	तिलोत्तिमा
गंधव्व	लोहियक	णागकण्णा	सती	असुरग्गमहिंसी	चित्तरधा
किन्नर	सणिच्छर	भवणालया	धित्ती	अइरिका	चित्तलेहा
मरुत	विमाणिद	गंधव्वी	धी	भगवती	देव
भूत	कप्पपती	रक्खसी	बुद्धी	अलंबुसा	पृष्ठ २०४

सुर	अग्नि	णवमिगा	पल्लदेवया	बलदेव	अच्छरसा
जक्ख	मारुय	सुरादेवी	बुद्धी	वासुदेव	अज्जाधिउत्थ
गंधव्व	पृष्ठ २०५	णागी	मेहा	पज्जुण	वुक्खाधिउत्थ
पितर	इंदगि	सुवण्णा	पृष्ठ २०६	णाग	गिरिकुमारी
पेत	बंभा	असुर	लतादेवता	अलणा	समुद्धकुमार
दारुण	इंद	णाग	वत्थुदेवता	अज्जा	दीवकुमार
वसव	उवेद	सुवण्ण	णगरदेवता	अइराणी	मारुत
आदिच्च	बलदेव	दीवकुमार	सुसाणदेवता	माउया	वातकण्णा
अस्सि	वासुदेव	समुद्ध	वच्चदेवता	सउणी	वरुण
अव्वाबाध	काम	दिसा	उक्कुरुडिकदेवता	एकाणंसा	सोम
देवदूत	उदलादला	अग्नि	आरियदेवता	सिरी	इंद
अरिद्ध	गिरी	वाउकुमार	मिलक्खदेवता	बुद्धी	पुधवी
सारस्सत	सिव	थण्णिकुमार	सुवण्ण	मेधा	सत्थधिवुत्था
गद्धोय	जमा	विज्जुकुमार	पृष्ठ २२३	किती	विज्जासत्थाधिवुत्था
वणिह	वेस्सवण	सामाणिय	वेस्समण	सरस्सती	कुलदेवता
अच्छस	वरुण	आभिओगिक	वेण्ह	रक्खस	वत्थुदेवता
वरुणकाइय	सोम	परिसोववण्ण	सिव	गंधव्व	वच्चदेवता
वेसमणकाइय	सिरी	समुद्धदेवता	खंद	किंपुरिस	सुसाणदेवता
सोमकायिय	अइराणी	णदीदेवता	विसाह	जक्ख	पितुदेवता
खंद	पुढवी	कूवदेवया	बंभा	पृष्ठ २२४	विज्जादेवता
विसाह	एकाणसा	तलागदेवया		वेमाणित	

(३९) एकार्थकविभाग

पुंएकार्थक	वीर	कुमारी	सामिणी	भगिणी	सत्थवाही
पृष्ठ ६१	विसारद	धिज्जा	वल्लभी	भागिणेज्जा	इब्भी
अहोपुरिस	विक्खात	पत्ती	पज्जिया	कोहुंबिणी	भोगमिती
महापुरुस	लद्धमाण	वधू	अज्जिया	पितुस्सहा	भडी
पुरुससीह	महाबल	उपवधू	नानिका	माउस्सहा	पाडी
पधानपुरुस	महापरक्कम	इत्थिया	महमात्तुया	जेयातुकासहा	कारुगिणी
कुलपुरुस	स्त्रीएकार्थक	पमदा	चुल्लमात्ता	इत्थीरयण	सहिगिणी
रायपुरुस	पृष्ठ ६८	अंगणा	माउस्सिया	महादेवी	लाडी
पुरिसिस्सर	अहोमहिला	महिला	पितुस्सिया	रायपत्ती	जोणिगा
विज्जापुरिस	महिला	णारी	भज्जा	रायग्गमहिंसी	चिलाती
जुवाण	सुमहिला	पोहट्टी	जारी	रायोपज्जायपत्ती	बब्बरी
जोव्वणत्थ	अहोइत्थी	जुवती	सही	सेणापतिणी	पुलिंदी
पोअंड	सुइत्थी	जोसिता	धूता	भोयणी	अंधी
पुरिस	इत्थी	धणिता	णत्ति	तलवरी	दमिली
गड्डिक	दारिया	विलका	पणत्तिणी	रट्टिणी	लाजिका
पोट्टह	बालिया	विलासिणी	रमा	गामिणी	उवधाइणी
अट्टग	सिगिका	इट्टा	सुण्हा	अमच्ची	दासी
सुभग	पिल्लिका	कंता	सावती	दल्लभी	कम्मकरी
विकंत	वच्छिका	पिया	सल्लिका	पडिहारी	पेसी
विस्सुय	तण्णिका	भणाभा	मेधुणा	इस्सरिगिणी	नत्तिका
सूर	पोतिका	हितइच्छिता	भातुज्जाया	भोइणिगी	पयावती
धीर	कण्णा	इस्सरी	सगोत्ता	घरिणी	अणे

भोति	बंध	कमंडलु	शीलुप्पल	उपल	उत्सवएकार्थक
माणिणी	सयंधु	दब्भ	पामेच्छा	मणि	पृष्ठ १८
मातुस्सा	पयावति	सज्जा	णेलकंठक	सिलापट्ट	उस्सय
ओवातिका	बंधण	भिसी	मसी	गंडसेल	समास
सामोवाता	बंधरिसि	दंड	आरिदुक्क	गिरिक	जण्ण
कालस्सामा	बंधवत्थ	जण्णोपइतक	कण्हाल	वइर	छण
कालका	बंधण्णु	कृष्णवर्णएकार्थक	कण्हमोयक	मेरुक	अब्भुदय
दिग्घमडहिया	पियबंधण	पृष्ठ १२	दृढएकार्थक	मरुभूतिक	भोज्ज
खुज्जमडहिया	दिजाति	कण्ह	पृष्ठ ७८	धुवक	मज्जणक
आयतमडहिया	दिजातिवसभ	नील	हिमवंत	अचलित	पृष्ठ १२१
चतुरस्सा	दिजातिपुंगव	कालक	महाहिमवत	थावरक	उस्सय
अंतोपुरिका	दिजाइपवर	असित	णिसड	सिवणाम	समास
अभोगकारिणी	विप्प	असितकिसिण	रुप्पि	गुत्तणाम	विहि
सयणपाली	विप्परिसि	हरित	मंदर	भव	जण्ण
भंडाकारिकिणी	विप्पवर	अंजण	णेलवंत	अभव	छण
तणुकी	जण्ण	कज्जल	केलास	धित	लक्षण पृष्ठ १७३
मज्झिमिका	जण्णोकत	रुगण	वस्सधर	सुत्थित	वण्ण
काणा	जण्णकारि	भंग	वेयड्ड	ठाणत्थित	सर
नपुंसकएकार्थक	जण्णमुंड	खंजण	अच्छदंत	अकंप	गति
पृष्ठ ७३	सोम	भिगपत्त	सज्ज	णिप्पकंप	संठाण
णपुंसक	सोमपा	गवल	विंश	णिप्पर	संघतण
अपुरुस	सोमपाइ	सूगर	मंत	सुहत	माण
चिल्लिक	सोमणाम	कोकिला	मलय	वामएकार्थक	उम्माण
सीतल	अग्गिहोत्त	गोपच्छेलक	पारियत्त	पृष्ठ ७६	सत्त
पंडक	आहितग्गि	भमर	महेंद	वाम	आणुक
वातिक	अग्गिहोत्तहुत्त	भोरकंठ	वित्तकूड	वामावट्ट	पगति
किलिम	वेद	वायस	अंबासण	वामसील	छाया
संकर	वेदज्झाइ	मातंग	मेरुवर	वामायार	सार
कुंभीपंडक	वेदपारक	मर्तिग	णग	वामपक्ख	अष्टाङ्गनिमित्त पृ. १
इस्सापंडक	चतुवेद	गय	पव्वत	वामदेस	अंग
पक्खापक्ख	वारिस	महिस	सेल	वामभाग	सर
विकख	पुव्वमास	बलाहक	सिलोच्चय	वामतो	लक्खण
संद	चतुम्मास	मेघ	सिहरि	अपवाम	वंजण
भरेतर	जुव	जलहर	पासाण	अपसव्व	सुविण
पृष्ठ १०१	चिति	कण्हकराल	पत्थर	अवसव्व	छिण्ण (दिव्व)
ब्राह्मणएकार्थक	अग्गिचयणी	कण्हतुलसी		अप्पघ	भोम्म
पितामह					अंतलिकख

